

મળવાનું ઠેકાણું
 ૧. બા. ૨વું સ્થાનકવાસી
 શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
 રૂડિયા કુવા રોડ, શ્રીનંદ બોલ
 રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
 Shri Akhil Bharat S S
 Jain Shastroddhara Samiti,
 Garedia Kuva Road, RAJKOT,
 (Saurashtra), W Ry, India

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,
 जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
 उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
 कालो ह्ययं निरवधिर्निपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥

हरिगीतचन्द्र

करते अज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
 जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
 जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
 है काल निरवधि निपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

મુલ્ય રૂ. ૨૫=૦૦

૧ આગતિ પ્રતિ ૧૨૦૦
 ૧૨ મવત્ ૨૪૮૯
 વક્રમસવત્ ૨૦૧૯
 સિવસન ૧૯૮૩

અદ્રક
 મણિલાલ છગનલાલ શાહ
 નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
 ધીકાટા રોડ : અમદાવાદ

दिल्लीनिवासी श्रीमान् लालाजी क्रिशनचंदजी सा, जौहरीजी के वंश का संक्षिप्त जीवन

परिचय

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में श्री नेमीचंदजी चौरडिया का जन्म हुआ। आप बहुत हीनहार व्ययमायी और धर्मप्रेमी थे। आप वत्तीसों शास्त्र के ज्ञाता थे। आप जैन एवं वैदिक साहित्यके भी ज्ञाता थे। आपके पास अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त धार्मिक साहित्य का विशाल भंडार था। अल्प वय में ही आप स्वर्गारोहण कर गये। आपके सत्र से ठोटे पुत्र श्री कपूरचंदजी चौरडिया भी आप ही की भाँति निर्भीक उत्साही रमणील एवं धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले थे। बीमारी की अवस्था में भी आपने सामायिक जो कि आप का नित्य नियम था, कभी नहीं छोड़ा। मृत्यु के अंतिम दिन तक आपने सामायिक व्रत की आराधना की थी। लाला कपूरचंदजी ने अपने व्यापार को बहुत बढ़ाया था। दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों में आपका नाम था। अनेक वर्षों तक आप समाज के प्रेसीडेंट रहे। आपके नेतृत्व में दिल्ली श्री सघ ने बहुत उन्नति की।

आपके सुपुत्र श्री क्रिशनचंदजी चौरडिया भी आप ही की भाँति उद्योगी, विवेकवान एवं श्रद्धालु श्रावक हैं। प्रतिदिन सामायिक, व हर सप्ताह आयंत्रित अवकाश उपवास का तप करते हैं और अनेक प्रकार के धार्मिक नियम पालते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में सदा दिलचस्पी से भाग लेते हैं। स्थानीय सघ की कार्यभारिणी के आप सदस्य हैं।

लाला क्रिशनचंदजीकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवी चौरडिया प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, एवं अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से सघ्न रखनेवाली हैं और बड़ी श्राविका हैं, आपका धार्मिक ज्ञान बहुत गंभीर है। आप निचक्षण बुद्धिवाली एवं साहित्यप्रेमी हैं। आपके निजी पुरतकालय में अनेक जमूल्य हस्त लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग पाँच हजार पुस्तकों का स्रष्ट है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना आपका दैनिक नियम है। अनेक महासतीजी महाराज भी आपके धार्मिक ज्ञान का लाभ उठाते हैं।

श्रीमती नगीना देवी के पिता लाला धनमोल मुजती दिल्ली के प्रसिद्ध रईसों में से थे। धर्म के प्रति एवं जैन धर्म के प्रति

मरी हुई थी। अनेक दीक्षाएँ आपने कराईं। तन, मन, धन से साधु-
यों की सेवा करने में आपको अपूर्व आनंद मिलता था। आपका स्वर्गवास
ही हो गया था।

स्व. लाला धनोमलजी की धर्मपत्नी एव श्रीमती नगीनादेवीजी की माता
फूलमतीजी महाराज साहब को जैनदीक्षा अंगीकार किये हुए ३१ वर्ष हो
है। आप वयोवृद्ध, सरलस्वभावी, घोरसयमी (कठिन सयम पालने वाले) हैं,
तो चौथे आरे की बानगी ही हो। अनेक वर्षों से आप दिल्ली में स्थवि-
र किये हुए हैं। आपके सद्गुणदेश से दिल्ली के अनेक व्यक्ति अपनी शास्त्री
समिति के सदस्य बने हैं।

श्रीमती नगीना देवीकी भाति उनकी पुत्री सुश्री विजयकुमारी बड़ी निर्भीक
पुत्रपत्नी, एव धार्मिक रुचि वाली हैं। आपके सुपुत्र सरलस्वभाव विनयशील
महतावचद भी बड़े धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, विनयवान एव सुशिक्षित नवयुवक हैं।

श्रीमती नगीनादेवीके दो पुत्रियाँ और भी हैं। एक-सुश्री विनयकुमारी,
सका विवाह जोधपुरनिवासी श्रीमान् हुक्मचंदजी साहब जैन एडवोकेटके सुपुत्र
श्री जनेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट से हुआ है। वि० अनिलकुमार जैन, जिनका
वक्तव्य इस पुस्तक में है-इन्हीं के सुपुत्र है। श्री अनिलकुमार अपनी समिति के
दस्य हैं। दूसरी पुत्री सुश्री विमलकुमारी का विवाह दिल्लीनिवासी प्रसिद्ध
ग्रेसी कार्यकर्ता स्व० श्री मुकुन्दलालजी जौहरी “कोमीनारा” (यह उपनाम
धान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उह दिया था) के सुपुत्र श्री हुक्मचंदजी
जौहरीके साथ हुआ है। श्रीमती विमलकुमारी भी अपनी समिति की सदस्या हैं।

परंपरा से ही चौरडिया परिवार धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि रखनेवाला रहा
। और सुस्तस्थानकवासी हैं। तन मन व धन से समाज व धर्म की खूब सेवा
करता आया है, यही सदा से इस परिवार का कर्तव्य रहा है।

ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के दूसरा भाग की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठ
	अध्ययन-५	
१	पाचवे अध्ययन की अवतरणिका	१
२	द्वारावति नगरी का वर्णन	२-७
३	नदनवन-उद्यानका वर्णन	७-८
४	कृष्णवासुदेवका वर्णन	९-१०
५	स्थापत्यापुत्र गाथापतिका वर्णन	११-१२
६	अरिष्टनेमीअद्वैतप्रभुका समवसरण	१४-१६
७	समवसरणमे कृष्णका आगमन आदिका वर्णन	१७-२३
८	स्थापत्यापुत्र गाथापतिके निष्क्रमणका वर्णन	२४-५८
९	शैलकराजका वर्णन	५८-६२
१०	सुदर्शनसेठका वर्णन	६३-१११
११	शुरपरित्राजकके दीक्षाग्रहणका वर्णन	११२-११५
१२	स्थापत्यापुत्रके निर्वाणका निरूपण	११६-११७
१३	शैलकराजके चरित्रका वर्णन	११८-१६७
	छठा अध्ययन	
१४	महावीरस्वामीका समवसरण	१६८-१६९
१५	इन्द्रभूतिका जीवकेविषयमे प्रश्न	१७०-१७७
	सातवां अध्ययन	
१६	ध य सार्थवाहके चरित्रका वर्णन	१७८-२३४
	अठवा अध्ययन	
१७	आठवे अध्ययनका अवतरण	२३५
१८	वलराजके चरित्रका वर्णन	२३६-२४०
१९	वलराजके दीक्षाग्रहणका वर्णन	२४०-२४२
२०	महाबल आदिछह राजाओंके=चरित्रका वर्णन	२४३-२८२
२१	प्रभावतीदेवीके दोहदका वर्णन	२८३-२८८
२२	तीर्थकरके जन्मनिमित्त दिशाकुमारि आदिका उत्सवकरनेका वर्णन	२८९-२९२
२३	मोहयुद्धके निर्माणका वर्णन	२९३-२९६

पुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७-३००
ति के स्वरूपका वर्णन	३००-३२०
चारित्रिका वर्णन	३२१-३३४
चित्रमे तालपिशाचका वर्णन	३३४-३५०
चरित्रमे अरहन्तक श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०-३७२
चरित्रका वर्णन	३७२-३८५
पति रुक्मी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५-३९६
“ शख ” राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७-४१०
राजके चारित्रिका वर्णन	४१०-४३५
राजाके चरित्रका वर्णन	४३५-४५७
भोके युद्धका वर्णन	४५७-४६५
केयुद्धका वर्णन	४६६-४७१
गरीके निरोधका वर्णन	४७१-४८०
मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०-४९१
ओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१-५०१
गानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२-५१५
वान के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५-५३९
आदि छहों राजाओंके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०-५५२
नवर्चा अध्ययन	
रारकके चरित्रका वर्णन	५५३-६५५
दशवा अध्ययन	
शुद्धि और हानिकानिरूपण	६५६-६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
ह आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८-६७८
बारहवा अध्ययन	
कके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत	६७९-७२७
तेरहवा अध्ययन	
अध्ययनके सवधका निरूपण	७२८-७३०
गिनारभयका निरूपण	७३१-७८८

आद्यमुखी श्री-



बीचमें बैठे हुए

लालाजी किशनलालजी सा. जोहरी

खड़े हुए इनके सुपुत्र—

वि. महेतावचन्दजी सा जैन

छोटे-अनिलकुमार जैन (दोयत्ता)

२४ मणिनिर्मितपुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७-३००
२५ कोसलाधिपति के स्वरूपका वर्णन	३००-३२०
२६ अद्भुतराजके चरित्रका वर्णन	३२१-३३४
२७ अद्भुतराज चरित्रमें तान्त्रपिशाचका वर्णन	३३४-३५०
२८ अद्भुतराजके चरित्रमें अरुन्धतु श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०-३७२
२९ अद्भुतराजके चरित्रका वर्णन	३७२-३८५
३० कुणालाधिपति स्वामी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५-३९६
३१ काशिराज "शख" राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७-४१०
३२ अदीनशत्रु राजके चरित्रका वर्णन	४१०-४३५
३३ जितशत राजाके चरित्रका वर्णन	४३५-४५७
३४ छहराजाओके युद्धका वर्णन	४५७-४६५
३५ कुम्भराज केयुद्धका वर्णन	४६६-४७१
३६ मिथिलानगरीके निरोधका वर्णन	४७१-४८०
३७ सुवर्ण निर्मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०-४९१
३८ छहों राजाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१-५०१
३९ मल्लीभगवानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२-५१५
४० मल्लीभगवान के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५-५३९
४१ जितशत्रु आदि छहों राजाओके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०-५५२
नवर्चा अध्ययन	
४२ माकदीदारकके चरित्रका वर्णन	५५३-६५५
दशर्चा अध्ययन	
४३ जीवोंके वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६-६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
४४ जीवोंके आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८-६७८
बारहवा अध्ययन	
४५ खातोदकके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत	६७९-७२७
तेरहवा अध्ययन	
४६ तेरह अध्ययनके सब धका निरूपण	७२८-७३०
४७ नन्दमणिकारभवाका निरूपण	७३१-७८८

- ૧૬ શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી હુણીયા ચડાવલવાળા અમદાવાદ ૫૫૦૨
- ૧૭ શેઠ રામજીભાઈ રામજી વીરાણી અને સમરતળેન
રામજી વીરાણી ટ્રસ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૧
- ૧૮ એક નૈન ગૃહસ્થ અમદાવાદ ૫૪૨૫
- ૧૯ શેઠ મુળચંદજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૦ શેઠ મુકુદયજી બાલીયાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોહનલાલજી બાલીયા (બાલીવાળા) અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૧ બા પ્ર શ્રી વિનોદમુનિના સ્મરણાર્થે હા શ્રી શામજી
વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૨ શ્રી શામજી વલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ
વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી ડેશવલાલ વીરાણી રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૩ શ્રીમતિ મણીબાઈ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ
ટ્રસ્ટ ફંડ હા પારેખ વૃજલાલ હુલ્લેજી રાજકોટ ૫૨૫૧
- નોટ — ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફતી અમદાવાદમાં
પાલકી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ નં ૨૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો વાર
જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેતુ રજીસ્ટર તા ૨૩-૩-૬૦
ના રોજ થઇ ગયેલ છે

મુરખખીશ્રીઓ-૨૮

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૯૧૧-૧૧
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ	બામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ હા શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઈ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર માહેખ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦

આધમુરખીશ્રીઓ-૨૩

(ઓછામાં ઓછી રૂા ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતિલાલ મગજદાસભાઈ બણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચદભાઈ, નગીનભાઈ, વૃજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણુવડ	૬૦૦૦
૩	કેઠારી જેચદ અજરામર હા હરગોવિંદભાઈ જેચદભાઈ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવણભાઈ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી લોગીલાલ છગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૧૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જોશીગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હા શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતિલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી રાજકોટ સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી		૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીબાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ દુર્લભજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી રાજકોટ		૫૦૦૦
૧૩	શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રીમતિ મણીકુવરબેન દુર્લભજી વીરાણી રાજકોટ		૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી છોટાલાલ શામજી વીરાણી રાજકોટ		૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર લોગીનાથ છગનલાલ અને કુટુંબીજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો--૧૩૨

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ઝુઝાભાઈ વેલશીભાઈ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	નેરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા ગોરધનભાઈ	ભમભોધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણુદ હા અમીચદભાઈ	ખાખીનળીયા	૫૨૭
૫	મોરખીવાળા સઘવી દેવચદ નેણશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ મણીબાઈ તરફથી		
	હા મુળચદ દેવચદ સઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વેરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચદ તથા અ પાળેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહે મનહરલાલ પ્રાણીવનદાસ	મુખઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ધર્મચરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શેઠ શીવલાલ ડભરભાઈ (કરાચીવાળા)	લીંબડી	૫૦૧
૧૨	કામદાર તારાચદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૩	મહેતા મોહનલાલ કપુરચદ	,,	૫૦૦
૧૪	શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૫	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	સ્વ પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચદ શાતિલાલ		
	(બળુઆવાળા) મેઘનગર		૫૦૧
૧૭	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૮	શેઠ તારાચદ પુખરાજજી	ઔરગાખાદ	૫૦૦
૧૯	શ્રી સ્થા નૈન સઘ	,,	૫૦૦
૨૦	મહેતા મુળચદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ પ્રાફા		૭૫૦
૨૧	શેઠ હરખચદ પુરુષોત્તમ હા ઈન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૨	શેઠ કેસરીમલજી વસ્તીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૩	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ખાટવીયા અમીચદ ગીરધરભાઈ ખાખીનળીયા		૫૦૧
૨૪	શ્રી ખીમજીભાઈ ખાવાભાઈ કુલચદભાઈ શુભામચદભાઈ		
	નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઈ મુખઈ		૫૦૧

૮ શેઠ લહેરચંદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચંદ દહેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯ શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા મોહનભાઈ		
તથા મોતીલાલભાઈ	મુળાઈ	૨૦૦૦
૧૦ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા શેઠ ચંદ્રકાન્ત વીક્રમચંદ મોરબી		૧૯૬૩
૧૧ મહેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની		
અ સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨ મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	ભામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૩ દોશી કપુરચંદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	ભામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪ બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫ શેઠ માણેકલાલ ભાણુજીભાઈ	પોરણદર	૧૦૦૧
૧૬ શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા (રેલ્વે મેનેજર) કલકત્તા		૧૦૦૧
૧૭ મહેતા સોમચંદ નેણુસીભાઈ (કરાચીવાળા)	મોરબી	૧૦૦૧
૧૮ શાહ હરીલાલ અનોપચંદ	ખભાત	૧૦૦૧
૧૯ મોદી કેશવલાલ હરિશ્ચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦ કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુળાઈ	૧૦૦૧
૨૧ કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨ શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ સૌ સમરતોને અમદાવાદ		૧૦૦૩
૨૩ શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમૈયા હા અ સૌ સાકરજેન મુળાઈ		૧૦૦૦
૨૪ શેઠ પોપટલાલ ચત્રજી કોઠારી	મુરૈન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫ શ્રી સ્થા જૈન લીળડી સપ્તદાયના ક્ષમાગુણ નિધિ		
પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રખર પડિત		
રતન શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે		
પૂજ્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હા		
શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
૨૬ શ્રીમતિ આશાજેન હંસરાજ મુરાણા	મુળાઈ	૧૦૦૧
૨૭ શાહ શાંતિલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૮ શ્રીચુત વીક્રમાર C/o મહેતાખચંદ જૈન	દિલ્હી	૧૦૦૧

- ૫૨ શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુળધં ૫૦૧
- ૫૩ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના
પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
ધર્મપત્ની અ સૌ વસત બહેનના અદ્વાઈતય નિમિત્તે
હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
- ૫૪ સ્વ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
શીવકુવરબાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૫ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ (માટુ ગા) ૫૦૧
- ૫૬ શ્રી લીંબડી સપ્રદાયના ગચ્છાધિપતિ પૂ આચાર્ય
મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા
શેઠ જેરંગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજ શ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૭ સ્વ શ્રી વિનયમુર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના
સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેરંગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૮ બા ધ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉન્નજેનવાળા તરફથી
તેમની દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
- ૫૯ શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયચંદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૦ શેઠ પોપટલાલ હ સરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૧ અ સૌ લીલાવતીબેન ધંધરલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૨ હેમાણી પ્રભુદાસ લ જીજી કલકત્તા ૫૫૧
- ૬૩ શેઠ લક્ષ્મણદાસ સેઝરામ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૪ શ્રી સ્થા જૈન મોટા સ ધ રાજકોટ ૫૦૧
- ૬૫ શેઠ આદમલ ખીરધીચંદ નાસિક સીટી ૫૦૧
- ૬૬ ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છજલાણી
હા ધનવતીબેન તથા કિરણબેન દિલ્હી ૫૦૧
- ૬૭ શેઠ હ સરાજજી પૂર્ણમલજી કાકરીયા ગોએળાવ ૫૦૧
- ૬૮ શ્રી પ્રવે સ્થા જૈન સભા કલકત્તા ૫૦૧
- ૬૯ શેઠ તેજસિંહજી કુતેલાલજી છાજેડ ઉદેપુર ૫૦૧
- ૭૦ શેઠ રતનચંદ લક્ષ્મીચંદ મુમઇ ૫૦૦

૨૫ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુંબઈ	૫૦૧
૨૬ સ્વ કાતિલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ ખાલચંદ સાકરચંદ ,,	૫૦૧
૨૭ કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	૫૦૧
૨૮ શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ ૫૦૧
૨૯ વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,, ૫૦૧
૩૦ શેઠ ગુલાબચંદ બ્રુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચંદ ખારરોડ	૫૦૧
૩૧ મહાન ત્યાગી બેન ધીરજીકુવર ત્રુનીલાલ મહેતા	ધ્રાક્ષ ૫૭૧
૩૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ	ધ્રાક્ષ ૫૦૧
૩૩ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ ૫૦૧
૩૪ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નંદકુવરબેન	ભામનગર ૫૦૩
૩૫ શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૬ શ્રી સ્થા નૈન સઘ (બેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૭ વકીલ વાડીવાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ ૫૦૧
૩૮ મહેતા શાન્તિલાલ મણીલાલ હા કમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ ૫૫૬
૩૯ શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીરાબેન	,, ૫૦૧
૪૦ શેઠ મોહનરાજજી મુકુન્દચંદજી બાલીયા	,, ૫૦૧
૪૧ સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના	
ધર્મપત્ની લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાબેન	
તથા મણુબેન	અમદાવાદ ૫૦૧
૪૨ પારેખ જયતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હ વિનુભાઈ	,, ૫૦૧
૪૩ શ્રી-સ્થા નૈન સઘ	વાકાનેર ૫૦૧
૪૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ	ખોટાદ ૫૦૧
૪૫ શેઠ શુદ્ધમલજી શેવમલજી બેવર	(બરાર) પીપળગાવ ૫૦૧
૪૬ સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમના	
ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા ભાઈ જયતીલાલ	
તથા પુનમચંદભાઈ	વડોદરા ૫૦૧
૪૭ શાહ અચલદાસ શુકનરાજજી હા શુકનરાજજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૪૮ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ	ધ ધ્રુકા ૫૦૧
૪૯ અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા	ઘાટકોપર ૫૦૧
૫૦ મહેતા શાંતિલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદમાવતી	
શાંતિલાલ મહેતા	અમદાવાદ ૫૦૦
૫૧ શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કટારીયા	હુણલી ૫૦૧

- ૮૮ શ્રીમાન લાલાજી કપુરચંદ્રજીના ગોચગના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી વમતદેવી હા લાલા રાજમલજી હેમચંદ્ર
તરફથી (મહાસતી શ્રી મુદર્શનામાતજી તથા ફૂલ
મતિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૮૯ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી ન સા ના સ્મરણાર્થે
શ્રી એસ એસ જૈન મકિલા મ ઘ તરફથી (અનેક ગુણાલકૃત
મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ મા ની પ્રેરણાથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૦ સ્વ લક્ષ્મીચંદ્રજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી
હા સ ઘવી હેમ તકુમાર જૈન દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૧ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘત્નોમલજી સુજતીના સ્મરણાર્થે
હા શ્રીમતી નગીનાદેવી દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૨ લાલાજી કસ્તુરચંદ્રજી ખુશાવચંદ્રજી સ ચેતી હા જ્ઞાનચંદ્રજી અલવર ૫૦૧
- ૯૩ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સોમચંદ્ર દક્ષતરી
હા ગૌરીશંકર દુર્લભજી દક્ષતરી સુખર્ષી ૫૦૦
- ૯૪ શેઠ સોમચંદ્ર જેઠાલાલ ગોલાણી
હા ચુનીલાલભાઈ બેડીયાવાળા સુખર્ષી ૫૦૬
- ૯૫ શેઠ ફ્રાન્સિસજી સુલતાનસિંહજી બોરદીયા અમદાવાદ ૫૦૧
- ૯૬ શેઠ છાનલાલ શામજી વીરાણી તથા
શ્રીમતી વૃજકુવરબેન છગનલાલ વીરાણી ટ્રસ્ટફંડ
તરફથી શેઠ છગનલાલભાઈના સ્મરણાર્થે રાજકોટ ૫૦૧
- ૯૭ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક મ ઘ
હા પ્રમુખ બસીવાલ કટારીયા હિંગણધાટ ૫૦૧
- ૯૮ લાલાજી રામલાલજી રોગનલાલજી (અનેક ગુણાલકૃત
મહાસતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૯ સ્વ મહેતા મગજી મણીલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની ગુણવતીબેન મહેતા પાટચેરી ૫૫૧
- ૧૦૦ ખાટવીયા વનેચંદ્ર અમીચંદ્ર (મહાવીર ટેક્સટાઈલ મોર્સ) બેંગલોર ૫૫૩
- ૧૦૧ શ્રીચુત તારાચંદ્ર ગેલડા ટ્રસ્ટ મદ્રાસ ૫૦૧
- ૧૦૨ શેઠ ગુલરાજજી પુનમચંદ્ર મહેતા કીસનગઢ ૫૫૧
- ૧૦૩ શેઠ અગસ્ત્યજી ત્રીકમચંદ્રજી ઈંદોર સીટી ૫૫૧

- ૭૧ શાહ ઉમરશી લીમશીભાઈ (સ્વ પિતાશ્રી લીમશીભાઈ
તથા માતૃશ્રી પાલાબાઈ તથા ધર્મપત્ની પાનબાઈના સ્મરણાર્થે) મહાડ ૫૫૨
- ૭૨ શાહ શામલાલભાઈ અમરસીભાઈ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૭૩ મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નૌતમલાલ મુબઈ ૫૦૧
- ૭૪ શેઠ લીખચંદ્ર લાલચંદ્ર પીપલગામ ૫૦૧
- ૭૫ બેન મોહનીબેન મહેતા મુબઈ ૫૦૧
- ૭૬ શ્રીમતી મોધીબેન નવલચંદ શાહ લીમડી (સીરાઈ) ૫૦૧
- હા મોતીબેન
- ૭૭ શ્રીમતી વિમલાલ સૂરજમલ મહેતા બેવગામ ૫૦૧
- ૭૮ ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચંદ્ર વડીલ
બી એ એલ એલ બી રાજકોટ ૫૦૧
- ૭૯ સ્વ ઠોઠારી મગનલાલલ કુન્દનમલલના
સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન સતારા ૭૫૧
- ૮૦ શેઠ મોહનલલ મછાલાલ હા રમણીકલાલ
(પૂ મુનિશ્રી કૃતેચંદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી
કનૈયાલાલ મ ના ઉપદેશથી) જયપુર ૫૦૧
- ૮૧ શેઠ કનૈયાલાલ મોહનલાલ કાવેડિયા ધારડી ૫૦૧
- ૮૨ શેઠ પ્રતાપમલલ કપુરચંદલ સાદરાવાળા (પૂજ્ય
કૃતેચંદલ મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલલ મ ના
શિષ્ય ચાદમલલ મ ના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૮૩ શ્રીમાન લાલાલ રોશનલાલલ સમન્દરલાલલ બડોત ૫૦૧
- ૮૪ શ્રીમાન ભૂરમલલ હલીચંદલ સાકરિયા (પૂ મ શ્રી
સ્વામીદાસલના સ પ્રદાય પૂ મ શ્રી કૃતેચંદલ મ ના
શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલલ મ ના ઉપદેશથી) સાદરાવ ૫૦૧
- ૮૫ સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેસાઈના સ્મરણાર્થે
હા ભૂપતલાલ ગૌરીશંકર ઇદાર ૫૦૧
- ૮૬ શેઠ શ્રી નરસેરામભાઈ હંસરાજભાઈ કમાણી જમશેદપુર ૫૦૧
- ૮૭ સ્વ મહાસતીલ શ્રી ધનદેવીલ મ સા ના સ્મરણાર્થે
સ્વ જૂળચંદલ સ ખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જયદેવી
તરફથી (મહાસતીલ શ્રી સુદર્શનામતીલ તથા
કુલમતીલના ઉપદેશથી) દિલ્લી ૫૦૧

૧૨૩ શેઠ જીમરલાલજી-સીરાયા	ઉદેપુર ૫૦૧
૧૨૪ શેઠ મનસુખલાલ ત્રીલોવનદાસ	કોઇમ્બતુર ૫૦૧
૧૨૫ શ્રી દશા શ્રીમાળી મ્યા નૈન સઘ	જમશેદપુર ૫૦૧
૧૨૬ શ્રી નૈન રત્ન પુસ્તકાલય	જેધપુર ૫૦૧
૧૨૭ શેઠ અણતમલ કનૈયાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૦
૧૨૮ શેઠ વસ્તીમલજી જોરાવરમલજી જુરટ	હુબલી ૫૦૧
૧૨૯ શેઠ ચાદમલજી હરખચંદજી કોઠારી	
હા ખમાબેન મુળચંદજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૩૦ બાટવીયા શુભાખચંદ લીલાધર	ખાખીનગીયા ૫૦૨
૧૩૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ પુર્વમલ મહેતા	પાલનપુર ૫૦૧
૧૩૨ શ્રીવીર વર્ધમાન પુસ્તકાલય	
હા શેઠ હીરાલાલજી ગણેશલાલજી	કુવારીયા ૫૦૧

૫૮૨-લાઈફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા ફકીરચંદભાઈ	૨૫૧
૩	શાહ કાતિલાલ ત્રીલોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ	૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મેગળદાસ	૨૫૧
૮	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે, હા કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીલોવનદાસ	૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચંદ તથા ઉમાકાત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા નૈન ઉપાશ્રય હા વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧

૧૦૪ કાનુગા ધીંગડમદલણ મુલતાનમલણ

કવાડ ગઢસીયાણાવાળા

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૫ લાલાણ નવરતનચંદણ ચોરડીયાના ધર્મપત્ની

શ્રીમતી રાજકુમારીબેન

દિલ્હી ૫૦૧

૧૦૬ શેઠ ચીમનલાલ રૂપભચંદ

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૭ શેઠ કાનણ બીમાણી દ્રસ્ટ

કલકત્તા ૫૦૧

૧૦૮ શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી

" ૫૦૧

૧૦૯ અનેક શુભાંક કૃતિ મહાસતી મોહમદેવીના ઉપદેશથી

અધર્મી બધુઓ તરફથી

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૦ સ્વ વિનયદણ પારેખના અંરણાચે લાલા

પૂર્ણચંદણ રતનચંદણ પારેખની વતી હ

શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાત્રુજીવાળી મહાસતી)

કુલકુવરબાઈના ઉપદેશથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૧ શ્રીમતી બદામબાઈ મીશ્રીલાલણ હુલિયા ચડાવલવાળા

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૨ શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ

" ૫૫૧

૧૧૩ શાહ હરખચંદ અમરચંદ

" ૫૦૧

૧૧૪ શાહ જગજીવનદાસ વન્દ્રાવનદાસ

" ૫૦૧

૧૧૫ શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી જૈનભુવન

કલકત્તા ૫૦૧

૧૧૬ પૂ દાદાણ સ્વ કપુરચંદણ તથા દાદીણ

કેસરબેન ચોરડીયાના અંરણાચે હા લાલા

કુલચંદણ અને શ્રીમતી વીમલકુવરી ઝવેરીની

વતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતી)

કુલમતીના ઉપદેશથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૭ શેઠ નગીનદાસ છોરાલાલ :

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૮ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શેઠ ગણેશમલ શુભાખચંદ

બરોડા ૫૦૧

૧૧૯ શ્રી સ્થા જૈન સઘ

ભદ્રેસર ૫૦૧

૧૨૦ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય

કુમારડી ૫૦૧

૧૨૧ ગાધી ભુરાલાલ નાનચંદ

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૨૨ શ્રીમાન હિંમતસિંહણ સાહેબ ગણુડીયા

એડીસનલ કમિશ્નર અજમેર હીવીઝનવાળાના

ધર્મપત્ની અ સૌ માણેકકુવરબેન તરફથી

હા પુરાણસિંહણ ગણુડીયા

નવપુર ૫૫૧

૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર ઘોઠાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ સૌ અ પાબેન તરફથી તથા વસતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિગ્રાબેન વનેચદ દેસાઈ વર્ણિતપ તથા અદાઈ પ્રસગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચદ દેસાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની)	૩૦૯
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ સુનદાબેન (રમણલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૧ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૨ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઈ	૨૫૧
૫૩ પટવા સુમેરમલજી અનોપચદજી બેધપુરવાળા	૩૦૧
૫૪ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે હા રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૫૫ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા ઝનૈયાલાલ ધનરાજજી	૩૦૧
૫૬ શ્રી સારંગપુર દ આ કેા સ્થા નૈન સઘ હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ	૨૫૧
૫૭ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીભાઈ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે હા દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા	૨૫૧
૫૮ શાહ પુનમચદ કૃતેચદ	૨૫૧
૫૯ શ્રીયુત ચતુરભાઈ નદલાલ	૫૨૧
૬૦ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા	૨૫૧
૬૧ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઈ	૨૫૧
૬૨ અ સૌ બેન લાલુબેન મગનલાલ હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ વઢવાણુ રાહેરવાળા	૩૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા નૈન સઘ	
હા શેઠ ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઈ મહામુખલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉજ્જમશા	૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી શેઠ હા ડા કુ સરન્વતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ કાતિલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ પોચાલાલ પિતાબરદાસ	૨૫૧
૨૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદાસ ઉમેચંદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ	૨૫૧
૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ પ્રાગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચ પાલાલજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા નૈન ઉપાશ્રય	
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હનરીમલજી	
ખરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચંદ જવાહરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બાલાભાઈ (મગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી સ્વજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી સુળીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા કકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ બખડાવાળા હા પાર્વતીબેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧

- ૮૬ ભાવસાર કતુભાઈ સાકરચ દ ૨૫૧
- ૮૭ શેઠ લેડમલજી સાહેબ જોધપુરવાળા ૨૫૧
- ૮૮ સ્વ યેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુદણીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ શાંતિલાલ વર્ધમાન ૨૫૧
- ૮૯ સ્વ કચરાભાઈ લહેરભાઈના સ્મરણાર્થે
હ શાંતિભાઈ કચરાભાઈ ૨૫૧
- ૯૦ એક સ્વધર્મી બન્ધુ હ શાહ ગીખલદામજી જયતીલાલજી ૨૫૧
- ૯૧ અ સૌ સરન્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ ગાહ
(સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૯૨ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરીયાપુરી ગ પ્રદાયના પૂ તપસ્વી '
મહારાજશ્રી માણેકચંદ્રજીના શિષ્ય યુનિશ્રી મગનલાલજી '
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
- ૯૩ બેન જેકુવર મજલાલ પારેખ ૨૫૧
- ૯૪ શેઠ પુનમચંદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
- ૯૫ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા
ઠે ઠે ધીરજલાલ ત્રીજમલાલ મહેતા ૩૦૧
- ૯૬ શેઠ રાજમલજી ધામીલાલજી ડોઠાગી કોશીયલવાળા ૨૫૧
- ૯૭ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી ઠે રતીલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
- ૯૮ ભાગ્યવતી અર્પાદિતુમાર ઠે અર્પાદિતુમાર સરભાઈ ભાવસાર ૨૫૧
- ૯૯ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ
હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા ૨૫૧
- ૧૦૦ સ્વ આસીબાઈ તથા વસંતીમલજી બોંમાજીના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચંદજી ઓસવાલ કેરવાળા ૨૫૨
- ૧૦૧ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે
હા શીરેમલજી કીશનમલજી મોજતવાલા ૨૫૨
- ૧૦૨ સ્વ શેઠ વકતારમલજીના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ ધીસાલાલજી મુકનરાજજી ચીયારીયા (જોધપુરવાલા) ૨૫૨
- ૧૦૩ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનદી પડિત યુનિશ્રી
છોટાવાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૧૦૪ અ સૌ ઝાન્તાબેન કાળીદાસ ઠે કુમાર બુકઆઈન્ડીગ વર્ક્સ ૨૫૧
- ૧૦૫ સ્વ હિંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે
- તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદામ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૫૧

૬૩ અ સૌ બેનવાન્તાબેન ગોરધનદાસ (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૬૪ દોશી કુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે હા દોશી છળીલદામ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૬૫ લાલાજી રામકુવરજી બેન	૨૫૧
૬૬ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા	૨૫૧
૬૭ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ	૨૫૧
૬૮ સઘવી સુર્યકાન્ત યુનીલાલના સ્મરણાર્થે હા સઘવી જીવણલાલ યુનીલાલ	૨૫૧
૬૯ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય	૨૫૧
૭૦ મહેતા મુળચંદ મગનલાલ	૨૫૧
૭૧ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના-ધર્મપત્ની રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે હા હરીલાલ નરસિંહદાસ	૨૫૧
૭૨ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હા હંસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૭૩ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૭૪ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ જયવતલાલ લલ્લુભાઈ	૨૦૧
૭૫ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૬ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૭ કુમારી નલીનીબેન જયતીલાલ	૨૫૧
૭૮ સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઈના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૯ સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દીવાળીબાઈના સ્મરણાર્થે હ રતીલાલ માણેકલાલ (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૦ મહેતા દેવીચંદજી સુખચંદજી-ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના સ્મરણાર્થે હ મહેતા યુનીલાલ હરમાનચંદ	૨૫૧
૮૧ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કેઠારી કે લક્ષ્મી પુસ્તક-ખંડાર	૨૫૧
૮૨ સ્વ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે અનુનાબેન તરફથી હ કરશનભાઈ (આદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૩ શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૪ ભાવસાર જયતીલાલ લોગીલાલ	૨૫૧
૮૫ ભાવસાર સમણલાલ લોગીલાલ	૨૫૧

અમલનેર

- ૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાડાલાલ બીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

- ૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુગરવાલ ૨૫૧

અલ્લવર

- ૧ શ્રીમતી અપાદેવી ઠે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ શેઠ આદમલજી મહાવીરપ્રમાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂપભદ્રમાર સુમતિકુમાર નૈન ૨૫૧

આસનસોલ

- ૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
મણીભાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વિનોદરામ ૨૫૧

આટકોટ

- ૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણજી ૩૪૧

આણંદ

- ૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનચુખલાલભાઈ ૨૫૧

આકોલા

- ૧ શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા ઠે, મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ
કા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઈગતપુરી

- ૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ નૈન ૩૫૧

ઈન્દોર

- ૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા
(અ સૌ બેન વિદ્યાબેનનાવધી તપ નિર્મિતે)
હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાર્ગલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૩૫૧

ઉદયપુર

- ૧ શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી મોહિનીબાઈ ઠે રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧

૧૦૬ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે

હા ભાવસાર નાગગદામ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૧૦૭ શ્રી ઉમેદચંદ કાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાણી એન્ડ મન્સ ૩૫૧

૧૦૮ પૂ માતૃશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧

૧૦૯ શાહ શાતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧

૧૧૦ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧

૧૧૧ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા શાહ જુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

૧૧૨ ૨૫ પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે

હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૧૩ શેઠ પરસોતમદાસ અમરસીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવીતાબેનના માસખમણુના નિમિત્તે

હા શેઠ સોમચંદ પરસોતમદાસ (પોર્ટ મુદાનવાળા) ૩૦૧

૧૧૪ શ્રીમાન જોશવરમલજી ધર્મચંદ્રજી ડુંગરવાલ

રાજજી કાકેરડાવાળા (મુનિશ્રી મામીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૧૧૫ ડા ધનજીભાઈ પરમોતમદાસ ૨૫૧

૧૧૬ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૭ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૯ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૨૦ શેઠ કનૈયાલાલજી મુરાણા ખીપલોદાવાળા ૨૫૨

૧૨૧ કામદાર વાઢીલાલ રતીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨

૧૨૨ કુમારી અપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦

૧૨૩ કુમારી ઉપાબેન જ્યતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૪ કુમારી અદ્રાબેન જ્યતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૫ કુમારી જ્યશ્રી રમણુલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૬ શાહ ડાહ્યાભાઈ અબાલાલ ૩૫૧

૧૨૭ ખરડીયા ચાદમલજી જવાહીરલાલજી ૨૫૧

૧૨૮ શ્રી વીજયદાન સુરેન્દ્રજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા ૩૫૧

૧૨૯ શેઠ પાનાચંદ ઝોરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ

હા વકીલ બાબુભાઈ હીમતલાલ ૩૫૧

૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરસોતમદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી	૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા નૈન પ્રવે સ્થા (ગુજરાતી) સઘ	૨૫૧
--	-----

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જોશીભાઈના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ	૨૫૧
૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ	૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ	૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે	
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ	૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરસોતમદાસના સ્મરણાર્થે	
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ	૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ	૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ	૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી નૈન સઘ	
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇન્દિરલાલભાઈ	૨૫૧
૨ પાવંતીબેન ઠે જેસીંગભાઈ ઇન્દિરલાલભાઈ	૨૫૧

કરજણુ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી નૈન સઘ મીયાગામ કરજણુ	૨૫૧
--	-----

કઠોર

૧ સ્થા નૈન સઘ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ તરફથી (માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	
હા કાકોરભાઈ રાયચંદ્ર	૨૫૧

કત્રાસગઢ

૧ શ્રી પ્રવે સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ	૨૫૧
---	-----

કલ્યાણુ

૧ સઘવી કાકરશીભાઈ સઘજીના સ્મરણાર્થે	
હા શાહ હીમતવાલ હરખચંદ	૨૫૧

૩ અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરનાં	
ધર્મપત્ની હા શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ડિગડરખા	
૪ શેઠ છગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૬ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ દોલતમિહજી લોઢા	૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ પ્રતાપભલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે	
હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા	૨૫૧
૮ શેઠ ભીમરાજજી ચાવરચદજી બાફળા	૨૫૧
૯ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મહેતા	૨૫૧
૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૧૧ શેઠ દીપચદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧
૧૨ શેઠ કેતુરચદજી નાફમલજી	૨૫૧
૧૩ શ્રી યુ એલ કોઠારી	૩૦૧
૧૪ બાબુ પરશુરામ છગનલાલજી શેઠ	૨૫૦
૧૫ શેઠ કનૈયાલાલ કાફલાલજી નૈન	૨૫૧
૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન આવક સહ આમડ	૩૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨ સ્વ બેન સતોકબેન કચરા હા આતમચદભાઈ, છોટાલાલભાઈ	
તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કસ્યાણુવાળા)	૨૫૧
૩ શેઠ ખુશાલચદ કાનજીભાઈ હા પ્રતાપભાઈ	૨૫૧
૪ દોરી વીઠ્ઠલજી હંરખચદ	૨૫૧
૫ સઘાણી મુળશકર હંરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો	
જયતીલાલ તથા રમણીકલાલ	૨૫૧

ઉમરગાવ રોડ

૧૭ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા	૨૫૧
ઐડન કેમ્પ	

૧ મહેતા પ્રેમચદ માણેકચદના સ્મરણાર્થે	
હા રાયચદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ	૨૫૧

ખાલાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ	૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીલોચનદાસ મ ગળદાસ	૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા નૈન સગ	૨૫૧
૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ	૨૫૧
૫ શાહ સાકળચંદ મોહનલાલ	૨૫૧
૬ શાહ શકરાભાઈ દેવચંદ	૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ	૨૫૧
૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૯ બેન લલિતા માણેકલાલ	૨૫૧

મોંધીધામ

૧ શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કંપની	૨૫૧
--------------------------------	-----

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ	૨૫૧
---------------------	-----

ગુલાબપુરા

૧ શ્રી સ્થા નૈન વર્ધમાન સઘ	
હ માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા	૨૫૧
૨ શ્રી ઓસવાલ પચાયત હ ગુલાબચંદજી ચૌરડીયા	૨૫૧

ગોંડલ

૧ સ્વ ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપતિ કમલભાઈ	
તરફથી હા માણેકચંદભાઈ તથા 'કર્પુરચંદભાઈ'	૨૫૧
૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ	
લીલાવતી આકરચંદ ડોઠારીના બીજા વર્ષીતપની ખુશાલીમા	૩૦૧
૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા	
હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર	૩૦૧
૪ સ્વ કેઠોરી કૃપાશંકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરબેન	૨૫૧
૫ કેઠોરી ગુલાબચંદ રાયચંદ રશુનવાળા	૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ

૩૦૦

કુંદણી-(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી

૨૫૧

કોલકી

૧ ચટેલ જોવિહલાલ ભગવાનજી

૨૫૧

૨ ચટેલ ખીમજી, જેઠાભાઈ વાઘાણી (તેમના સ્વ સુપુત્ર
રમણભાઈના સ્મરણાર્થે)

૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ પ્રાક્ષવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ

૨૫૧

૨, શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ પ્રાક્ષવાળા

૨૫૧

કુશાળગઢ

૧ શેઠ ચ પાલાલજી દેવચંદજી

૨૫૧

કોટહાપુર

૧- વઢીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ
હા હરીલાલભાઈ

૨૫૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ. સૌ બેન જમકુભાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હા નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ

૨૫૧

૨ સ્વ શેઠ ઝોષઠલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા ભાઈચંદ ઝોષઠભાઈ

૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીસનલાલ પૃથ્વીરાજ માહુ

૩૫૨

ખુરદરોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા

૩૦૦

૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાતિલાલજી જોશવાળા

(મુનિશ્રી ચાદમલજીના ઉપદેશથી) ,

૨૫૧

જામખભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણુદ	૨૫૧
૩ સઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઈ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડા સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧
---	-----

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જોઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કાઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ બેન મુરજકુવર વેણીલાલ કાઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભોરામભાઈ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જળકબેન તરફથી હા શાંતિવાલભાઈ જોડલવાળા	૨૫૧

- ૬ જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા નીલાચુલભાઈ ૨૫૧
 ૭ માસ્તર હંકમીચંદ દીપચંદ શેઠ ૨૫૧

ગોદાયા

- ૧ સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચંદ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી) ૨૫૦

ગોધરા

- ૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧
 ૨ કવ પ્રેમચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૧

ઘટકણુ

- ૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

ઘોસવડ (થાણા)

- ૧ મહેતા શુભાખચંદ ગણીરમલજી ૩૦૦

ઘોડનદી

- ૧ શેઠ ચંદ્રભાણુ શોભાચંદ ગાદીયા ૨૫૧

ચુડા

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા રતીલાલ મગનલાલ ગાધી ૨૫૧

ચોટીલા

- ૧ શાહ વનેચંદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા નૈન સઘને લેટ ૩૦૧

ચારભુજરાંડ

- ૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચંદજી બાબેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

- ૧ દોશી ઝવેરચંદ વલ્લભજી ૨૫૧

જલેસર (ખાલાસોર)

- ૧ સઘવી નાનચંદ પોપટભાઈ થાનગઢવાળા ૨૫૧

જયપુર

- ૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્ની જી સૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવતગઢ

- શ્રીમાન સુન્દરલાલજી નેમીચંદતલેસર ૩૫૧

જામખ ભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણુદ	૨૫૧
૩ સઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઈ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડો સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧
---	-----

જામજોડપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેત્રીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ ખાવનજી જોઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ ઠોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ જોન સુરજકુવર વેણીલાલ ઠોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભેરામભાઈ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જળકામેન તરફથી હા ગાતિકાલભાઈ ગોડલવાળા	૨૫૧

જોષપુર

- ૧ શેઠ નવરતમલલ ધનવ તસિહલ ૨૫૦
 ૨ શેઠ હસ્તીમલલ મનરૂપમલલ સામસુખા ૨૫૧
 ૩ શેઠ પુખરાજલ પદમારાજલ ભડારી ૨૫૧
 ૪ શેઠ વરતીમલલ આનદમલલ સામસુખા ૨૫૧

જોરાવરનગર

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ ૨૫૧
 ઝરીયા

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ ઠનૈયાલાલ બી ગોદી ૨૫૧
 ડોંડાયયા

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ ૨૫૦

ઢસા

- ૧ ઢસાગામ સ્થા નૈન સઘ હા એક સદગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
 ૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા બગડિયા નરભૈરામ જોડાલાલ (ઢસા જ કશન) ૨૫૧

તાસગાંવ

- ૧ ૨૩ યુનીલાલલ દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની ૩૫૧
 ઢોહુબાઈ તરફથી હા શેઠ રામચંદલ

થાનગઢ

- ૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનલ ૨૫૧
 ૨ શેઠ જોડાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
 ૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા મુખલાલભાઈ ૨૫૧
 ૪ હસામેન અરવીંદ હા ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

દહાણુરોડ

- ૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ બધાર (કરાચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

- ૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ જોગારલ ૨૫૧

દીંદહી

- ૧ લાલાલ પૂર્ણચંદલ નૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧

- ૨ શ્રીયુત કીશનચદણ મહેતાખચદણ ચોરડીયા
 -હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાખચદ નૈન ૨૫૧
- ૩ અ સૌ સન્નખેન ધરમલણ પારેખ ૨૫૧
- ૪ લાલાણ મીઠનલાલણ નૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
- ૫ લાલાણ શુલશનલાલણ નૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
- ૬ બેન વિજયાકુમારી નૈન ઠે મહેતાખચદ નૈન
 (વયોવૃદ્ધ સરલ ગ્વભાવી કૃલમતીણ મહાસતીણની ગ્રેરણાથી) ૨૫૧
- ૭ શ્રીમાન લાલાણ રતનચદણ નૈન ઠે આઈ સી હોઝીયરી ૨૫૧
- ૮ સ્વ શ્રી લાલાશ્રીચદણ હુગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી
 હુકમચદણ નૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર -
 તરફથી લેટ હા વિનયકુમારી ૩૫૧
- ૯ સ્વ લાલાણ ચપાલાલણ ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાલચદણ
 તથા હીરાલાલણ તરફથી હા શાત દેવી ૩૫૧
- ૧૦ એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી હા મહેતાખચદણ નૈન ૩૦૧
- ૧૧ એક સ્વધર્મી બધુ તરફથી હા વિજયાકુમારીબેન ૩૦૧
- ૧૨ બાબુ નિરજનસિંહણ નૈન ૨૫૧

ધ્રાક્ષ

- ૧ શેઠ મણીલાલ જેચદસાઈ ૨૫૧

ધાર

- ૧ શેઠ સાગરમલણ પનાલાલણ ૨૫૧

ધ્રાગધ્રા

- ૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હિંમતવાલ સઘવીની તપશ્ચર્યાથે
 સઘવી ચીમનલાલ પુરમોતમદામ સઘવી તરફથી ૩૦૫
- ૨ સઘવી નરસિંહદામ વખતચદ ૩૦૧
- ૩ શ્રી સ્થા નૈન મોટા સઘ હા મગળણ જીવગજ ૨૫૧
- ૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિંદદામ ૨૫૧
- ૫ કોઠારી કપુરચદ મગળણ ૨૫૧

ધોરાણ

- ૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૩૫૧
- ૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઈ ૨૫૧

૭ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઝોઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ	૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જેચંદભાઈ	૨૫૦
૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હા કુમારી હસુમતી	૨૫૧
૭ એક સદ્ગૃહસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા	૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન ઠચરાલાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ ભમખલાળીયાવાળા	૨૫૧

ધ ધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨ સ્વ શુભાભયદેભાઈના સ્મરણાર્થે હા ચોરા પોપટલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ	૨૫૧
--	-----

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧
-----------------------	-----

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧
--	-----

નંદુરબાર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ	૨૫૧
---	-----

નાગોર

૧ શ્રીપાલભાઈ જોન્ડ કા સાગરમલજી લુકડ ડેરવાળા તરફથી	૨૫૧
---	-----

નાગપુર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ	૨૫૧
-----------------------------------	-----

પાલનપુર

૧ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પ્રસ્તાકાલય હા કેશવલાલ જી શાહ	૨૫૧
---	-----

પાણસણા

૧ સ્થા જૈન સઘ હા શાહ છોટાલાલ પુખભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સઘવીના સ્મરણાર્થે
હા લાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

માંતીજ

૧ સ્થા જૈન સઘ હા શ્રીયુત અબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદળ કેવળચંદળ ધોડા ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજળ હસ્તીમલળ સાહડીવાલા ૩૦૧

૨ મહેતા કુદનમલળ અમરચંદળ સાહડીવાલા ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવળ રાયડીવાળા
હા માનસ ધ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧

૨ સ્વ માતુશ્રી જબકબાઈના સ્મરણાર્થે
હા દેસાઈ વૃજલાલ ઠાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા-ધેલાશા

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારળ ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હા. મિશ્રીલાલ જૈન વડીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલળ હસ્તીમલળ ભગવાનદાસળ ભણસારી ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનળ શામળભાઈ ૨૫૧

૨૮
બીકાનેર

૧ શેઠ લેફ્ટનન્ટ શેઠીયા ૨૫૪

બેરાબ

૧ શેઠ ગાગલ કેશવલ (જ્ઞાનભડાર માટે) ૨૫૧

બેસારી

૧ શ્રી સ્થા નેન સઘ હ શેઠ હનરીમવલ હન્ટીમલલ રાંકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા નેન સઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગસોર

૧ શેઠ કીશનલાલ કુલચંદ સાહેબ ૨૫૧

૨ અંબેસા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનવાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા ૨૫૧

૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ જેચંદલાઈ માણેકચંદલાઈ ૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવલ ૨૫૧

૩ શેઠ લાલલ માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧

૪ શેઠ રામલ જીભાલાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી લીમલ ફેફરીયા ૨૫૧

૬ ફેફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ ચાતાબેન વસનલ ૨૫૧

૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ચુ)

ભાવનગર

- ૧ સ્વ કુવરજી બાવાજીના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ દુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

ભીલવાડા

- ૧ શ્રી ગાતિ નૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રલાલજી ૩૦૧

ભીમ

- ૧ ચપકલાલજી નૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ ઇગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુમાવળ

- ૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલસ્ટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજાગ

- ૧ શાન મદિરના સેક્રટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

- ૧ શેઠ મેઘરાજજી દેનીચદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચદ ૨૫૧
૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચદ ૨૫૧
૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચદ ૨૫૧

મનકર

- ૧ સ્થા છકોડી સ્થા નૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

- ૧ શાહ શેરમલજી દેનીચદજી જયવતગઢવાળા
હા પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

- ૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચદ (માનકુવા સ્થા નૈન સઘ માટે) ૨૫૧

ખાકાનેર

૧ શેઠ લોકદાનજી શેઠીયા

૨૫૪

ખેરાબ

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી (જ્ઞાનલહાર માટે)

૨૫૧

ખેસારી

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હ શેઠ હબરીમવજી હસ્તીમલજી રાકા

૨૫૧

ખેરમો

૧ શ્રી ખેરમો સ્થા નૈન સઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ

૨૫૧

ખેગણેર

૧ શેઠ કીશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ

૨૫૧

૨ અન્નમેરા છોટાલાલ માનસિંગ

૩૫૧

ખોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરજોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે

હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન

૨૫૧

ખોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા

૨૫૧

૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ

૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ જ્યેષ્ઠભાઈ માણેકચંદભાઈ

૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવજી

૨૫૧

૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા

૨૫૧

૪ શેઠ રામજી ભૂલ્લાભાઈ

૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી લીમજી ફોફરીયા

૨૫૧

૬ ફોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ ચાતાબેન વસનજી

૨૫૧

૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ લવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ગુદાવાળા)

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચઢ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઈ ગવેરભાઈ ૨૫૧

લીલનાડા

૧ શ્રી શાંતિ નૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ લીમરાજજી મીશ્રલાલજી ૩૦૧

લીમ

૧ ચપકલાલજી નૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ દોગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલસાટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજાગ

૧ જ્ઞાન મદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચઢ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચઢ ૨૫૧

૪ મહેતા જાપાલાલ ભાઈચઢ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા છકોડી સ્વા નૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતમઢવાળા
હા પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચઢ (માનકુવા સ્થા. નૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માંડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મહેતા ચુનીલાલ વેલણ ૨૭૭

માંડવા

૧ શ્રી માંડવા સ્થા જૈનન સઘ
હ અ સૌ કચનગૌરી રતીલાલ ગોસલ્લીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાંવ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ ફતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

માગરોલ

૧ શાહ ત્રીલોવનદાસ નાનણ ૨૫૦
૨ દોશી ગીરધરલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦

મુખર્ધ તથા પરાઓ

- ૧ શાહ શ્રી પિતાશ્રી કુદનમલણ મોતીલાલણ મુથાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલણ જુબરમલણ (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
- ૨ વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ હ કામનાર રૂપચંદ શીવલાલ (અ ઘેરી) ૨૫૧
- ૩ અ સૌ કમળાબેન કામદાર હ કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અ ઘેરી) ૨૫૧
- ૪ સ્વ માતુશ્રી કડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હ તેમના પૌત્ર
હકમીચંદ તારાચંદ દોશી (અ ઘેરી) ૨૫૧
- ૫ શાહ હરજીવન કેશવણ ૨૫૧
- ૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
- ૭ સઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
- ૮ વોરા પાનાચંદ સઘળના સ્મરણાર્થે
હ જીભકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
- ૯ શાહ રામજી કરશનજી ચાનગઢવાળા ૨૫૧
- ૧૦ સ્વ જટાશંકર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી ૩૦૧
- ૧૧ ઘેલાણી વલ્લભજી નરભેરામ હ નરસીંહદાસ વલ્લભજી ૨૫૧
- ૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૩ ત્રીલોવનદાસ માનસિંગભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હરખચંદ ત્રીલોવનદાસ ૨૫૧
- ૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડિયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧

૧૫ સ્વ પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા વૃજલાલ શામળજી બાવીસી	૩૦૧
૧૬ શાહ રવિચંદ્ર સુખલાલભાઈ (દાદર)	૩૫૧
૧૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ	
આશારામ વતી જશવંતલાલ શાંતિલાલ	૨૫૧
૧૮ ગાંધી કાતીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુ (કાદીવલી)	૨૫૧
૨૦ અ સૌ લાહુબેન હા રવજીભાઈ શામળ	૨૫૧
૨૧ સ્વ માતૃશ્રી માણેકબાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ વલ્લદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨ એક સદ્ગૃહસ્થ હા શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઈ ખેગારભાઈ	૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫ સ્વ માતૃશ્રી ગોમતીબાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૨૬ કોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭ વોરા ઠાકરશી જસરાજ	૨૫૧
૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારસોડ) ૨૫૧
૨૯ અ સૌ બેન કુદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી	,, ૨૫૧
૩૦ કોઠારી રમણિકલાલ કસ્તુરચંદભાઈ	૨૫૧
૩૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે	
હા દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૩૨ સ્વ ત્રીલોવનદાસ મજપાળ વીધીયાવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા હરગોવિંદદાસ ત્રીલોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩ તેજણી કુબેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાલા)	
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખલાતવાળા હા ભાઈ જેઠાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૩૬ શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઈ	૩૦૧
૩૭ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર) ૨૫૧
૩૮ દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	,, ૪૦૧
૩૯ દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	,, ૪૦૧

૪૦ દોશી પ્રવિણચંદ્ર ચત્રભુજ	(ઘાટકોપર) ૩૮૧
૪૧ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા ઝાટકીયા નરભોરાગ મોરરજી	,, ૨૫૧
૪૨ શાહ કાતીલાલ મગનલાલ	,, ૨૫૧
૪૩ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર ૨૫૧
૪૪ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ	૨૫૧
૪૫ શાહ શીવજી માણેકભાઈ	૨૫૧
૪૬ મેમસાં સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કુ હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૪૭ શાહ નગીનદાસ કંઠ્યાણજી (વેરાવળવાળા)	૨૫૧
૪૮ મહેતા રતીલાલ ભાઈચંદ	૨૫૧
૪૯ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા	૨૫૧
૫૦ બેન કેશરભાઈ ચંદુલાલ જેઠીંગભાઈ શાહ	૨૫૧
૫૧ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ માયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ સૌ ચચળભાઈના સ્મરણાર્થે હા સારાભાઈ ચીમનલાલ	૨૫૧
૫૨ ધી મરીના મોડેન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી	૨૫૧
૫૩ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા	૨૫૧
૫૪ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાચંદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના માતૃશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૫૫ શ્રીયુત જસવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા	૨૫૦
૫૬ શાહ કુવરજી હંસરાજ	૨૫૧
૫૭ દડીયા જેઠીંગલાલ ત્રીકમજી	૨૫૧
૫૮ મોદી અભેયંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાવાલ અભેયંદ	૨૫૧
૫૯ શાહ જેઠાલાલ ઠામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ	૨૫૦
૬૦ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તથા કેડાનલાલભાઈ	૩૫૧
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે હા શાહ બાપાલાલ અબાલાલ	૨૫૧
૬૨ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની જયેરબેન મર્જનવાત વતી જય તીલાલ કસ્તુરચંદ મશકરીયા (ચુડાવાળા)	૨૫૧
૬૩ શેઠ ડુગરશી હંસરાજ વીસરીયા	૨૫૧
૬૪ શાહ રતનશી મોણચીની કુ	૨૫૧
૬૫ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા	૨૫૧
૬૬ શાહ ચંદુલાલ કેડાવલાલ	૨૫૧

- ૬૭ અ પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ, શેઠ તખતરવાળાના અમરણથે
હા કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
- ૬૮ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧
- ૬૯ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ
હા કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા (મલાઠ) ૨૫૧
- ૭૦ અ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના અમરણથે
હા શાહ કાનજી પતુભાઈ ,, ૨૫૧
- ૭૧ અ સૌ પનખાઈ હા શેઠ પદમચી નરસિંહભાઈ ,, ૨૫૧
- ૭૨ અ નાગશીભાઈ મેજપાલના અમરણથે રામજી નાગચી ,, ૩૦૧
- ૭૩ અ ગોડા વજારશી ત્રીભોવનદાસ અમરસેઈવાળાના અમરણથે
હા જગજીવન વજારશી ગોડા ,, ૨૫૧
- ૭૪ અ કાનજી મુળજીના અમરણથે તથા માતુશ્રી દિવાળીભાઈના
૧૬ ઉપવામના પારણા પ્રસંગે હા જયતિલાલ કાનજી ,, ૨૫૧
- ૭૫ શાહ પ્રેમજી માલશી ગગઝ ,, ૨૫૧
- ૭૬ શાહ વેલચી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
અ નાનખાઈના અમરણથે ,, ૩૦૧
- ૭૭ અ પિતાશ્રી રામચી વેલચીના અમરણથે
હા શાહ દામજી રામચીભાઈ ,, ૩૦૧
- ૭૮ શાહ વરજીભાઈ શીવજીભાઈ ,, ૨૫૧
- ૭૯ શાહ ખીમજી મુળજી પુનજી ,, ૨૫૧
- ૮૦ અ સૌ સમતાએન શાતિલાલ હા શાતિલાલ ઉજમશી શાહ ૨૫૧
- ૮૧ અ કેશવલાલ વજારજી કોઠારીના અમરણથે સુરજએન તરફથી
હા તનમુખલાલભાઈ ,, ૨૫૧
- ૮૨ અ પિતાશ્રી હાસરાજ હીરાના અમરણથે
હા દેવશી હાસરાજ જીજી ખીદડાવાળા ,, ૨૫૧
- ૮૩ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીજમજી (જેરીવલી) ૨૫૨
- ૮૪ શેઠ ત્રણકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર રાજાભાઈને લેટ (માટુગા) ૨૫૧
- ૮૫ અ સૌ જૈન રજનગૌરી કે શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ ,, ૨૫૧
- ૮૬ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
અ ચૌ મુગીલાએનના વર્ધાતપની ખુશાલીમા ,, ૨૫૧
- ૮૭ દોશી બીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા ,, ૨૫૧
- ૮૮ શાહ ગોપાળજી માનસંગ ,, ૨૫૧

- ૮૬ દોશી મુલચંદ માણેકચંદ માટુંગા, ૨૫૦
 ૯૦ શેઠ ચપકલાલ ચુનીલાલ દાદલાવાળા ૨૫૧
 ૯૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ
 હ શાહ રવિચંદ સુખલાલ (દાદર) ૨૫૧
 ૯૨ શાતીલાલ ડુંગરશી અદાણી ,, ૨૫૧
 ૯૩ શાહ કરશન લઘુભાઈ ,, ૨૫૧
 ૯૪ ક્રીમનલાલ સી મહેતા (શીવ) ૨૫૧
 ૯૫ માતુશ્રી જીવીબાઈના સ્મરણાર્થે
 હ. શામજી ગીવજી કરંજી ગુઢાળાવાળા (ગોરેગાવ) ૨૫૧
 ૯૬ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
 નેણુબાઈની વતી હ જેઠાલાલ રાયશી સુંબઈ ૨૫૧
 ૯૭ સુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે નવીનચંદ્ર વસતલાલ શાહ (વીલેપાલે) ૨૫૧
 ૯૮ જૈન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા ૨૫૧
 ૯૯ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે
 હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા) ૩૦૧
 ૧૦૦ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ સૌ જૈન કસુંબા
 ત્રીભોવન (ધાનગઢવાળા) (શીવ) ૨૫૧
 ૧૦૧ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ લોગીલાલના ધર્મપત્ની) (દાદર) ૨૫૧
 ૧૦૨ ભાવસાર દીનુભાઈ લોગીલાલ ,, ૨૫૧

મુળી

- ૧ શેઠ ઉજ્જમશી વીરપાળ હ શેઠ કેશવલાલ ઉજ્જમશી ૩૦૧

ભોરબી

- ૧ દોશી માણેકચંદ ચુંદરજી ૩૫૧

મોમ્બાસા

- ૧ ધ્રીચુત નાયાલાલ હી મહેતા ૨૫૧
 ૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦

મહેસાણા

- ૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદમશી ૨૫૧

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી-બેકર્સ ૨૫૦

રતલામ

૧ અનેક લક્ષ્મણો તરફથી હે શ્રીમાન ડેશરીમલજી ડક
(શ્રી દેવળયદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઈના સ્મરણાથે
હે ડો નરોત્તમદાસ યુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમજીના સ્મરણાથે
હે શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઈ વસાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચદજી હા બાબુ રીખબચદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાથે
હે શાહ ગીવલાલ ગુલાબચદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
૨ કાળુરામજી ચાદમલજી સચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ ડાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચદ ચીત્તલીયા ૨૫૧
૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચદ (એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧
૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ-પ્રસંગે ૨૫૧
૫ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
૬ બેન સચુબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૭ મોદી સૌભાગ્યચદ મોતીચદ ૨૫૧
૮ બઢાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧
૯ દોશી મોતીચદ ધારશીલાઈ ૨૫૧

- ૧૦ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (પ્રાગધાવાળા) ૨૫૦
 ૧૧ હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧
 ૧૨ દક્તરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧
 ૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરૂષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની
 હેમકુવરબાઈ તરફથી હે જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
 ૧૪ પારેખ શીવલાલ જીગ્જાભાઈ મોગળાસાવાળા હે અ સૌ કચનબેન ૨૫૨

રાપર

- ૧ પૂન્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદલાઈ ૨૫૧

રામપુરા

- ૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેકર ૩૫૧

રાવટી

- ૧ શેઠ ખીયાચંદજી જીહરમલજી કટારિયા ૩૫૧

લાખતર

- ૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હે શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧
 ૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે ૨૫૧
 હે ત્રીલોચનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
 ૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે
 હે ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
 ૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
 ૫ શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હે ગાંધિલાલ જાદવજી ૨૫૧
 ૬ દોશી ઠાકરશી શુભાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
 સમરતબેન તરફથી હે જયતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

- ૧ નેમચંદ સવજી મોદી હે ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧
 ૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ તથા જેસીંગભાઈ ૨૫૧

લાકડીયા

- ૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા જૈન સંઘ હે શાહ રતનસી કરમણ ૨૫૧

લીબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

- ૧ શાહ ચકુભાઈ શુભાબચંદ ૨૫૧

લીબડી (પચમહાલ)

૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચંદ	૨૫૧
૨ છાન્ડેઠ ધાસીરામ ગુલાબચંદ	૨૫૧
૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ	૨૫૧
૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હં શાહ શાતિલાલ ગુલાબચંદ	૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા	૨૫૧
-----------------------------	-----

લુધીયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર નૈન દીલ્હીવાળા	૨૫૧
--------------------------------------	-----

વઢવાણુ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઈલાલ ઠે શાહ સવાઈલાલ ત્રભડલાલ	૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોહલદાસ હં રવીલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩ સઘવી મુળચંદ ખેચરભાઈ હં જીવણલાલ ગફલદાસ	૨૫૧
૪ શેઠ કાતિલાલ નાગરદાસ	૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ	૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરજી	૨૫૧
૮ વોરા ડાસાભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ	૨૫૧
હં વોરા નાનચંદ શીવલાલ	૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ	
હં વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ	૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હં દોશી નાનચંદ ઉજમશી	૨૫૧
૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ હં વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોગ્ધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની	
અ સૌ કમળાબેન રશુનવાલા	૨૫૧
૧૪ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ	૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ ગ્રેફેસર	૨૫૧
-----------------------------------	-----

૨ વક્રીલ મણીલાલ ઠેશવલાલ શાહ	૨૫૧
૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચંદ્ર પુનલાઈના સ્મરણાર્થે	
હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ્ર	૨૫૧
વડિયા	
૧ શેઠ લવાનભાઈ કાળાભાઈ પચમીયા	૨૫૧
વલસાડ	
૧ શાહ ખીમચંદ્ર મુલજીભાઈ	૨૫૧
વણી	
૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચચળબેન	
તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા	૨૫૧
વટામણ	
૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ ડાહ્યાભાઈ હંદુભાઈ	૨૫૧
વડગાવ	
૧ શેઠ માણેકચંદ્ર રાજમલજી બાફણા	૨૫૧
વાકાનેર	
૧ ખ ઢેરીયા કાતીલાલ ત્રબકલાલ	૨૫૧
૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરબીવાળા	
હા પ્રાણલાલ ચુનીલાલ દફતરી	૨૫૧
વીછીયા	
૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા અજમેરા રાયચંદ્ર મજપાળ	૨૫૧
વીરમગામ	
૧ માસ્તર વીઠલભાઈ મોહી	૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ્ર	૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા	૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ બેન લીલાવતીના	
વર્ષિતપ નિમિત્તે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ	૩૦૦
૫ સ્વ શેઠ ઉજ્જમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે	
હા ચુનીલાલ નાનચંદ	

- ૬ સ્વ શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ્ર ખાગઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે
તેમના પુત્રો તરફથી હં ખીમચંદભાઈ ૨૫૧
- ૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદામના સ્મરણાર્થે હં અનુભાઈ ૨૫૧
- ૮ સ ઘવી જ્યેષ્ઠભાઈ નારણદામ ૨૫૧
- ૯ સ્વ શાહ વેલગીભાઈ માકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે
હં ચીમનલાલભાઈ ૨૫૧
- ૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોડીખેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
- ૧૧ શાહ નારણદામ નાનજીભાઈના પુત્ર વાડીલાલભાઈના ધર્મપત્ની
અ સૌ નારગીખેનના વર્ણિતપ નિમિત્તે હં શાતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧
- ૧૨ સ્વ છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
કમળાખેન તરફથી હં મનુલાકુમારી ૨૫૧
- ૧૩ શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવિકા સઘ હં રભાખેન વાડીલાલ
હં ડો હિમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
- ૧૪ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હં શાહ નાગરદાસ ઝોઘડભાઈ ૨૫૧
- ૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિતામહદાસ હં ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ ૨૫૧
- ૧૭ શ્રીમતી હીરાખેન નથુભાઈના વર્ણિતપ નિમિત્તે
હં નથુભાઈ નાનચંદ શાહ ૩૦૧
- ૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૯ સ્વ મણીયાર પરસોતમદાસ સુદરજીના સ્મરણાર્થે
હં સાકરચંદ પરસોતમદાસ ગાહ ૨૫૧
- ૨૦ સ્વ મોહનદાસ ધુલાભાઈના સ્મરણાર્થે હં તેમના ધર્મપત્ની
નાથીભાઈ તરફથી હં શકરલાલ તથા શાતિલાલ ૨૫૧

વિજયનગર

- ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્વે સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ
હં છોટુમલ અજીતસિંહ ૨૫૧

વેરાવળ

- ૧ શાહ કેશવલાલ જ્યેષ્ઠભાઈ ૨૫૧
- ૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ ૨૫૧
- ૩ સ્વ શેઠ મદનજી જ્યેષ્ઠભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
લાકડુ વરખાઈ તરફથી હં ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હ' શાહ શોભેચઢ કરશનજી	૨૫૧
૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચઢ કાનપુરવાળા	૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા નૈન સઘ હ' દોશી પાનાચઢ સોમચઢ	૨૫૧
---	-----

સાણુઢ

૧ શાહ હીરાચઢ છગનલાલ હ' શાહ ચીમનલાલ હીરાચઢ	૩૦૧
૨ અ સૌ. ચંપ બેન હા દોશી જીવરોજ લાલચઢ	૨૫૧
૩ પટેલ મહામુખલાલ ડાસાભાઈ	૨૫૧
૪ શાહ સાકરચઢ કાનજીભાઈ	૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કંઠ્યાણુજી સઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણુથે	
હા વાડીલાલ મોહનલાલ ઠાઠારી	૨૫૧
૬ પારેખ નેમચઢ મોતીચઢ મુળીવાળાના સ્મરણુથે	
હા પારેખ બીખાલાલ નેમચઢ	૨૫૧
૭ સઘની નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણુથે હા જયતીલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૮ શાહ કેતુરચઢ હ' હરજીવનદાસ	૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માપુકચઢ ગાધી ચુડાવાળા તરફથી	
તેમના ધર્મપત્ની મછાબેન લલુભાઈના સ્મરણુથે	૩૦૧
૧૦ સઘવી ઝાન્તીલાલ હરખચઢ	૩૦૧
૧૧ શાહ બીખાલાલ નાગરદાસ	૨૫૧

સાલખની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચઢ	૨૫૦
----------------------	-----

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનગીયા	૨૫૧
--------------------------------	-----

સાસવડ

૧ ચદનમલજી મુયાના ધર્મપત્ની અ સૌ રજુબાઈ મુયા તરફથી	
હા અમરચઢ મુયા	૨૫૧

સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચદ વછરાજ

૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા

૨૫૧

૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા નૈન સઘ હા ખાણલાલ છોટાલાલ

૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ આપશીભાઈ સુખલાલ

૨૫૧

૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ

૨૫૧

૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતભાઈના સ્મરણાર્થે

હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ

૨૫૧

૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ

૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ

૨૫૧

૬ શ્રી સ્થા નૈન સઘ

૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનદી નૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી

મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા નૈન સઘ જ્ઞાન બહારને લેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ

હા એન્જનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ

૨૫૧

સંજેલી

૧ શાહ હુણજી ગુલામચંદભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ

૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીસામેન લાલચંદ મહેતા (ક્ષેત્રેનગર સઘને લેટ)

૩૫૧

હાંગીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રગથચંદ અમુલખભાઈ

૩૦૧

૨ સ્વ જેન ચંદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ

૩૦૧

૪ શ્રી સ્થા નૈન સંઘ હા શાહ શોભેચદ કરચમિજી	૨૫૧
૫ શાહ હરકિરાનદાસ કુલચદ કાનપુરવાળા	૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા નૈન સંઘ હા દોશી પાનાચદ સોમચદ	૨૫૧
--	-----

સાણુદ

૧ શાહ હીરાચદ છગનેલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચદ	૩૦૧
૨ એ સૌ ચાપ બેન હા દોશી જીવરાજ લાલચદ	૨૫૧
૩ પટેલ મહામુખલાલ ડોસાભાઈ	૨૫૧
૪ શાહ સાકરચદ કાનજીભાઈ	૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા વાડીલાલ મોહનલાલ ઠાકરી	૨૫૧
૬ પારેખ નેમચદ મોતીચદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા પારેખ ભીખાલાલ નેમચદ	૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમરાંના સ્મરણાર્થે હા જયતીલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૮ શાહ કસ્તુરચદ હા હરજીવનદાસ	૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચદ ગાધી ચુડાવાળા તરફથી	
તેમના ધર્મપત્ની મંછાબેન લલ્લુભાઈના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચદ	૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ	૨૫૧

સાલખની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચદ	૨૫૦
----------------------	-----

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનગીયા	૨૫૧
--------------------------------	-----

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુયાના ધર્મપત્ની આ સૌ રજુખાઈ મુયા તરફથી	
હા અમરચદજી મુયા	૨૫૧

સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચદ વછરાજ

૨૫૧

મુરત

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી કલ્યાણચદ માણેચદ હડાલાવાળા

૨૫૧

૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી મ્થા નૈન સઘ હા બાબુલાલ છોટાલાલ

૨૫૧

મુરૈન્દ્રનગર

૧ શેઠ આપશીભાઈ સુખલાલ

૨૫૧

૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચદ

૨૫૧

૩ સ્વ દેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતભાઈના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈલાલ દેશવલાલ શાહ

૨૫૧

૪ શાહ ન્યાલચદ હરખચદ

૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચદ

૨૫૧

૬ શ્રી સ્થા નૈન સઘ

૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદ્દાનદી નૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી

મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા નૈન સઘ જ્ઞાન બહારને લેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ

હા એન્જનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ

૨૫૧

સજેલી

૧ શાહ હુણજી ગુલાબચદભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચદ દલીચદ

૨૫૧

સોજત

૧ અ. સો. ધીસાળેન લાલચદ મહેતા (કુતેહનગર-સઘને લેટ)

૩૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચદ્ર અમુલખભાઈ

૩૦૧

૨ સ્વ બેન ચદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ

૩૦૧

હાટીના માળીવા

૧) શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ

૨૪૦

૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે

હા તેમના નાનાળેન અ સૌ મજુલાળેન ભગવાનદાસ

૨૫૧

*

તા. ૧-૧-૬૨ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરબીશ્રી

૩૧ ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાભયદ જીન

દિલ્હી

મુરબીશ્રી

૩૧ ૧૦૦૧ શેઠ ત્રીલોચનદાસ જગજીવનદાસ

મુંબઈ

૧૧ ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાભયદ ચૌરડીયા તથા

વિજયાકુમારી બહેન

દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪ આદ્ય મુરબીશ્રી

૩૦ મુરબીશ્રી

૧૩૨ સહાયક મેમ્બરો

૫૮૪ હાઇફ મેમ્બરો

૫૧ બીજા કક્ષાસના બુના મેમ્બરો

૮૨૧

સમિતી વતી સૌ હાતાઓનો આભાર માનું છું

લી સેવક,

રૌજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩

સોઠજેથદ ભાઈજેથદ શેઠ
મંત્રી

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સંમિતી

રાજકોટ

શાસ્ત્રોની ૧૫૪ી માહિતી.

ગયા સત્તરમા વાર્ષિક રિપોર્ટમાં બતાવેલ ૨૧ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં પછી નીચે મુજબ વધુ કામકાજ થયેલ છે

- ૧ હાલમાં ભગવતી ભાગ બીજો, સમવાયગ સૂત્ર તથા પ્રશ્ન વ્યાકરણ એમ ત્રણ સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયા છે
- ૨ ભગવતી ભાગ ૩ નો બહાર પડવાની તૈયારીમાં છે
- ૩ ભગવતી ભાગ ૪ થો તથા ૫ મો હાલમાં છપાય છે
- ૪ જ્ઞાતા સૂત્ર ભાગ ૧ લો, ૨ નો તથા ૩ નો છપાય છે
- ૫ કુલ્લે લગભગ ૩૦ સૂત્રો પૂર્ણ ચુરુદેવે લખીને પૂરા કરેલા છે તેમાંના છપાયા વગરના જે સૂત્રો બાકી છે તેનું અનુવાદનું તેમજ સંશોધનનું કેટલુંક કામ ચાલુ છે અને કેટલુંક બાકી છે
- ૬ નિશીય સૂત્ર, સૂર્ય પન્નતી તથા ચંદ્ર પન્નતી સૂત્ર એ બાકી રહેલા ત્રણ સૂત્રો લખવાનું કામ અત્યારે ચાલે છે
આવા આગમ શાસ્ત્રોના મહદ્ કાર્યમાં જ્ઞાનદાનના શોખીનો, દાનવીરો બનતી મદદ મોકલાવે તેમ વિનંતિ કરવામાં આવે છે

હાટીના માળીવા

૧, શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ	૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના નાનાળેન અ સૌ મનુલાળેન ભગવાનદાસ	૨૫૧

✽

તા. ૧-૧-૬૨ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરખખીશ્રી

રૂા ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ જૈન	દિલ્હી
----------------------------	--------

મુરખખીશ્રી

રૂા ૧૦૦૧ શેઠ ત્રીભોવનદાસ જગજીવનદાસ	મુંબઈ
,, ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ ચોરડીયા તથા વિજયાકુમારી બહેન	દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪	આદ્ય મુરખખીશ્રી
૩૦	મુરખખીશ્રી
૧૩૨	સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪	હાઇફ મેમ્બરો
૫૧	બીજા કક્ષાસના જુના મેમ્બરો
<hr/>	
૮૨૧	

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનું છું

લી સેવક,

રાજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩

સોકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ
મંત્રી

શ્રીગીતરાગાય નમઃ

જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાન્સર-પ્રજ્વશ્રી-વામીલાલ-ત્રિતિ-વિરચિતયા
અનગારધર્મામૃતવર્ષિગ્યારયયા વ્યાખ્યયા સમલકૃત

શ્રી-જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રમ્

(દ્વિતીયો ભાગ.)

॥ અથ શૈલકાલ્ય પશ્ચમાધ્યયનમ્ ॥

અભિઠિત કૃર્મકાલ્ય ચતુર્થમધ્યયન તત્રાગુપ્તેન્દ્રિયસ્ય નરકાદિપ્રાપ્તિ ગુપ્તે-
ન્દ્રિયસ્ય તુ નિર્વાણાદિ પ્રાપ્તિર્ભવતીત્યુક્તમ્ । इह पञ्चमाध्ययने तु-पूर्वमप्रतिसली
નેન્દ્રિયોડપિ યઃ પશ્વાત્ સગીનેન્દ્રિયો ભવતિ સ આરાધકો ભવતીત્યુચ્યતે, इत्येव
पूर्वेण सहास्य सम्बन्धः । जगूस्वामी सुधर्मस्वामिन पृच्छति-‘जइ ण भते !’ इ०

પાંચવો અધ્યયન પ્રારમ્ભ ।

કૃર્મક (કચ્છપ) નામકા ચતુર્થ અધ્યયન કહ દિયા ગયા હૈ ।
उस में अगुप्तेन्द्रियवाले मायु साध्वी आदि के नरकादि की प्राप्ति तथा
गुप्तेन्द्रियवाले सायु सा वी आदि के लिये निर्वाण आदि की प्राप्ति होती
है यह कहा गया है । अब इस पंचम अध्ययन में यह कहा जायगा की
जो पहिले अप्रतिसलीन इन्द्रियवाला (अगुसइन्द्रिय) होता है और
बाद में फिर नही सलीनइन्द्रियवाला (गुसइन्द्रियवाला) बन जाता है
तो वह आराधक होता है इस तरह पूर्व अध्ययन के साथ इसका
संबन्ध है । जगू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि—

—પાચમુ અધ્યયન—પ્રાગ્ ભ.—

કર્મક (કાચખો) નામે ચોથુ અધ્યયન પુરુ થઈ ગયુ છે, તે અધ્ય-
યનમા અગુપ્તેન્દ્રિયવાળા સાધુ માધ્વી વગેરે ને નરક વગેરેની પ્રાપ્તિ તેમજ
ગુપ્તેન્દ્રિય વાળા માધુ માધ્વીઓને નિર્વાણ વગેરેની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વત
કહેવામા આવો છે પાચમા અધ્યયન મા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે
કે જે પહેલા અપ્રતિ સલીન ઈન્દ્રિયવાળો (અગુપ્તેન્દ્રિય) હોય છે, અને
ત્યારબાદ તે સલીન ઈન્દ્રિય વાળો (ગુપ્તેન્દ્રિયવાળો) થઈ જાય છે ત્યારે
તે આરાધક હોય છે આ ગીતે ચોથા અધ્યયનનો સંબંધ છે જગૂ સ્વામી,
સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે-‘જયાણ મતે ! ઇત્યાદિ ॥

સમિતિને મદદ કરવા તથા મેમ્બર થવાના

નિયમો



૧. રૂા ૫૦૦૧૫ પાચ હજાર એક હરનાર સદ્ગૃહસ્થ આદ્યમુરખીશ્રી તરીકે દાખલ થઈ શકે છે તેમના નામથી એક સૂત્ર પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે તેમજ તેઓશ્રીનુ જીવનચરિત્ર અને ફોટો શાસ્ત્રમા છપાય છે તેમને બધે કોપી દરેક શાસ્ત્રની મળે છે
૨. રૂા ૧૦૦૧૫ એક હજાર એક હરનાર વ્યક્તિ મુરખી તરીકે ગણાય તે અત્યારે ફક્ત ૮૦ આવા મેમ્બરો દાખલ કરવાનો ગઈ કમીટીએ ઠરાવ કરેલ છે, પાછળથી મેમ્બરો દાખલ કરી શકાય તેમ નથી રૂા ૧૦૦૧૫ હરનારને રૂા ૧૨૦૦૫ ની કિંમત ઉપરના શાસ્ત્રો લેટ મળે છે માટે જેમને દાખલ થવુ હોય તેમણે દીલ ન કરવી
૩. ૨૫૫ વાળા તથા ૫૦૧૫ વાળા મેમ્બરો હવે લેવાનું બધ છે
૪. દાખલ થયેલા મેમ્બરોની ક્ષીમાથી, શાસ્ત્રો લેટ આપતા સમિતિને જે નુકશાની વેઠવી પડે છે તે બાધ પૂરી કરવા માટે મેમ્બરો પાસેથી તેમજ અન્ય વ્યક્તિ તરફથી પાચ વર્ષ સુધી લેટની રકમ મેળવવામા આવે છે જે રકમ ઓછામા ઓછી રૂા ૨૫૫ ની હોવી જોઈએ, અને તે રકમ પાચ વર્ષ સુધી દર વર્ષે હસાથી મોકલી શકાય છે .

समये 'वारवई' द्वारावतीनाम द्वारकाऽपरनाम्नी नगर्यासीत्, सा कीदृशी
इत्याह—'पाईणपरीणायया' प्राची प्रतीच्यायता प्राचीतः प्रतीच्यामायता पूर्वस्या
दिशः समारभ्य पश्चिमाया दिशि दीर्घेत्यर्थः । 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' उदगं
दक्षिणविस्तीर्णा उत्तरम्या दिशः समारभ्य दक्षिणस्यां दिशि विस्तीर्णा, 'नवजो-
यणवित्थिन्ना' नवयोजनविस्तोर्णा, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजना-
यामा=द्वादशयोजनदोर्धा, 'धणवडमइनिम्मिया' धनपतिमतिनिर्मिता धनपतिः=
कुबेरस्तस्य मत्या=बुद्ध्या निर्मिता, 'चामीयर-पवर-पागार-णाणामणि-पचवन्न
—कवि—सीसग—सोहिया' चामीरपवरप्राकारनामानिपञ्चवर्णरूपिशीर्षक
शोभिता, चामीरस्य पवर' प्राकारस्तस्य यानि नानामणिपञ्चवर्णरूपिशीर्षकानि तैः
शोभिता, सुवर्णमयप्रकृष्टप्राकारस्य यानि चन्द्रकान्तादिविविधमणिमयानि पञ्च-
वर्णानि कपिशीर्षकाणि 'रगुरा' इति भाषाप्रसिद्धानि, तैः शोभिता 'अवयापुरि-
है—(तेण कालेण तेण समणण वारवईनाम नयरी होत्था) उस समय
और उस काल में द्वारावती नामकी नगरी थी (पाईण परीणायया)
यह नगरी पूर्व दिशासे पश्चिम दिशा तक लगी थी और (उदीणदाहिण
वित्थिन्ना) उत्तरदिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक विस्तर्ण थी।
(नवजोयणवित्थिन्ना) नौ योजन का इसका विस्तार था (दुवालसजोय-
णायामा) १२ बारह योजन की यह लगी थी। (धणवडमइ निम्मिया)
धनपति—कुबेर ने इसे अपनी बुद्धि से बनाया था (चामीयर पवरे
पागारणाणामणि पचवन्न कविसीसग सोहिया) इसका जो प्राकार (दिवा-
र) था वह सुवर्ण से निर्मित हुआ था। तथा हमके जो कगूरे थे वे
पचवर्णवाले नाना मणियों से बनाये गये थे। अतः प्राकार और उसके
कगूरों से यह नगरी बड़ी सुहावनी लगती थी। (अलपापुरी सकासा)

छे, (तेण कालेण तेण समणण वारवई नाम नयरी होत्था) ते काले अने ते
समये द्वारावती नामे नगरी હતી (पाईण परीणायया) આ નગરી પૂર્વથી
માડીને પશ્ચિમ ત્રિયા સુધી લાખી અને (उदीण दाहिण वित्थिन्ना) उत्तर दिशाથી
માડીને દક્ષિણ દિગા સુધી પહોળી હતી (नव जोयणवित्थिन्ना) नव योजन
सुधी ते नगरीने विस्तार હતો (दुवालसजोयणायामा) બાર યોજન લગી તે
લાખી હતી (धणवडमइनिम्मिया) धनपति—कुबेरે આ નગરી ને પોતાની બુદ્ધિથી
બનાવી હતી (चामीयरपवरपागार—णाणामणि—पचवन्नकविसीसगसोहिया) તે
શહેરને ડોટ (नागर) સોનાથી બનાવવામા આવેલો હતો તેના કાગરાઓ
પાંચ રંગના અનેક અણિઓ વડે બનાવવામા આવ્યા હતા કોટ અને કાગ
રાઓથી તે નગરી ગોલની હતી (अलपापुरी सकासा) अलपापुरी (कुबेरनगरी)

મૂલમ્—જહ ણં મંતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણ ચ-
ઉત્થસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે, પંચમસ્સ ણં મંતે
ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—‘જહ ણ’ ઇત્યાદિ । યદિ સ્વલ્પ મદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા-
વીરેણ ચતુર્થસ્ય જ્ઞાતા યયનસ્ય અયમ્=ઉક્તરૂપ, અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત, પંચમસ્ય સ્વલ્પ
મદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય કોર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ ઇતિ । સર્વ સુગમમ્ ॥ ૧ ॥

શ્રી સુધર્મા સ્વામી જમ્બુસ્વામિનમાહ—

મૂલમ્ એવ સ્વલ્પ જન્નુ । તેણં કાલેણં તેણ સમયેણં બારવઈ
નામ નયરી હોસ્થા, પાઈણપડીણાયયા ઉદ્દીણદાહિણવિરિથિન્ના
નવજોયણવિરિથિન્ના દુવાલસજોયણાયમા ધણવડમડ્ડનિમ્મિયા
ચામીયરપવરપાગારણાણામણિપચવન્નકવિસીસગસોહિયા અલયા-
પુરિસકાસા પમુડ્ડયપક્કીલિયા પચ્ચક્કલ દેવલોચભૂયા ॥સૂ.૨॥

ટીકા—‘એવ સ્વલ્પ’ ઇત્યાદિ । ‘એવ સ્વલ્પ જમ્બુ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્

‘જહ ણ મંતે !’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જહ ણ મંતે !) હે મદન્ત ! યદિ (સમણેણ ભગવયા મહા
વીરેણ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને (ચઉત્થસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે
પન્નત્તે) ચતુર્થ જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ ઉક્ત રૂપ અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત (પ્રરૂપિત)
કિયા હૈ તો—(પચમસ્સ ણ મંતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પણ્ણત્તે)
પચમ જ્ઞાતાધ્યયન કા કયા અર્થ કહા હૈ ? “ ૧ ”

‘એવ સ્વલ્પ જન્નુ !’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવ સ્વલ્પ જન્નુ) હે જન્નુ ! તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર

ટીકાર્થ—(જહ ણ મંતે !) હે મદન્ત ! જ્ઞે (સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ)
શ્રમણભગવાન મહાવીરે (ચઉત્થસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે) ચોથાજ્ઞાતા-
ધ્યયનનો પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે, ત્યારે (પચમસ્સ ણ મંતે ! ણાયજ્ઞ-
યણસ્સ કે અદ્દે પણ્ણત્તે) પાચમા અધ્યયનનો શો અર્થ બતાવ્યો છે ? । “સૂ. ૧” ॥

એવ સ્વલ્પ જન્નુ, ? ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(એવ સ્વલ્પ જન્નુ !) હે જન્નુ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આપનારો

कीदृश इत्याह—तद्वः=अत्युन्नतः, 'गगनतलमणुलिहतसिहरे' गगनतलमणुलिह-
च्छिखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावलि-
परिगण' नानाविधगुच्छगुम्मलयावल्लीपरिगत = नानाविधागुच्छादयः परिगताः =
सर्वत समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुम्मलयावल्लीशब्दा. पूर्वं व्याख्याता, 'हसमि-
गमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण' हसमृगमयूरकोचसारस-
चक्रवाकमदनसालकोइलकुलोपपेत हसादि-कोमिलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः
=युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धाः । 'अणेगतडङ्ग-
गिवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे' अनेकतटमटक विवरोज्जरप्रपातमाग्भार-
शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विपराणि = कन्दराश्च,
उज्जरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-
स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, माग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागश्च, शि-

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था
(तुगे गगनतलमणुलिहतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था । इस की चोटी
आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावलिपरिगण)
नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से लताओं से और वल्लियों से यह
सर्व प्रकार से युक्त था । इन गुच्छादि शब्दों का अर्थ पहिले लिखा जा
चुका है । (हसमिगमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलो-
ववेण) हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मेना
और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था । (अणेगतडङ्ग
डगविवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-
को (मेखला) से, अनेक कंदराओं से, अनेक उज्जरको से, निर्झरनों
से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित
निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

के ईशान कोणमा रैवतक नामे पर्वत छते । (तुगे गगनतलमणुलिहतसिहरे)
ते णुहुण् उंचे छते । तेना शिखरे आकाशने स्पर्शता छते । (णाणाविहगुच्छ
गुम्मलयावलिपरिगण) अनेक लतना गुच्छे, गुम्मे, लताओ अने वल्लीओ
थी ते ढक्काओछे छते । गुच्छ वगेरे गण्डोना अर्थो पडेला स्पर्श करवाभा
आओ । (हसमिगमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण) छस,
उरणा, मेर, कोय, सारस, चक्रवाक मेना अने कोयलोना मण्डोथी ते युक्त
छते । (अणेगतडङ्गडगविवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेक तटो मेखला
ओ । (कटको) अनेक कंदराओ, अनेक उज्जरको—(उरणाओ) पर्वतो उपरथी
नीचे वडेना पाछीना प्रवाहो, अनेक प्रपातो—तट वगरना निराधार स्थानो

सकासा ' अलकापुरीसकाशा = कुबेरनगरीपट्टी ' पमुइयपक्कीलिया ' प्रमुदित-
प्रक्रीडिता ' पमुइय ' प्रमुदिताः=प्रमोदयुक्ताः, ' पक्कीलिया ' प्रक्रीडिताः विविध
क्रीडनपराः लोका यत्र सा, पच्चक्ख देवल्लोयभूया ' प्रत्यक्ष देवल्लोकभूता प्रत्यक्षी-
भूतदेवल्लोकवत् प्रतीयमानेत्यर्थ ॥ २ ॥

मूलम्—तीसे णं वारवईए नयरीए वहिया उत्तरपुरस्थिमे
दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलि-
हंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिणए हसमिगमयूर-
कोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोवव्वेए अणेगतडकडग-
वियरउज्झरयपवायपव्वभारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारण-
विज्जाहरमिहुणसविचित्रे निच्छञ्चणए दसारवरवीरतेल्लोकवल-
वगाणं, सोमे सुभगे पियदसणे सुरुवे पासाईए ॥ सू०३॥

टीका—' तीसे ण ' इत्यादि । तस्या खलु द्वारावत्या नगर्या बहिरुत्तर-
पौरस्थे दिग्भागे ' रेवतगे ' रेवतको नाम ' पव्वए ' पर्वतः ' होत्था ' आसीत् , स
अलकापुरी (कुबेर की नगरी जैसी सुन्दर होती है ठीक वैसी ही यह
भी सुन्दर थी (पमुइयपक्कीलिया) इस में निवास करनेवाले जन सदा
हर्षित रहते थे और विविध प्रकार की क्रीडाओं में तत्पर रहते थे
(पच्चक्ख देवल्लोयभूया) इसलिये प्रत्यक्ष में यह नगरी देवल्लोक के
समान प्रतीत होती थी । सूत्र " २ "

' तीसेण वारवईए ' इत्यादि

टीकार्थ—(तीसेण वारवईए नयरीए वहिया) उस द्वारावती नगरी के
बाहिर (उत्तरपुरस्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था) उत्तर

जेवी सुद्ध डोय छे तेवी न नगरी पण सुद्ध डती (पमुइयपक्कीलिया)
तेभा रडेनारा नागरिके डमेसा प्रसन्न रडेता डता, अने नत नतनी रभतो
(क्रीडाओ) भा ० रस्त रडेता डता (पच्चक्ख देवल्लोयभूया) तेथी भा नगरी
प्रत्यक्ष देवल्लोक जेवी लागती डती ॥ सूत्र " २ " ॥

' तीसे ण वारवईए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तीसे ण वारवईए नयरीए वहिया) ते द्वारावती नगरीनी बाहिर
(उत्तरपुरस्थिमे दिसीभाए रेवतगनामपव्वए होत्था) उत्तर पूर्व दिशाभा जेजे

कीदृश इत्याह—तद्गः=अत्युन्नतः, 'गगनतलमणुलिहृतसिहरे' गगनतलमणुलिह-
 च्छिखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावलि-
 परिगण' नानाविधगुच्छगुल्मलतागल्लीपरिगत =नानाविधागुच्छादयः परिगताः=
 सर्वत समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतागल्लीशब्दा. पूर्वं व्याख्याता, 'हसमि-
 गमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण' हसमगमयूरकोच्चसारस-
 चक्रवाकमदनसालकोमिलकुलोपपेत हसादि-कोमिलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः
 =युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धाः । 'अणेगतटडक-
 विवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे' अनेकतटडक विवरोज्झरप्रपातप्राग्भार-
 शिखरमचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च,
 उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-
 स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था
 (तुगे गगनतलमणुलिहृतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था । इस की चोटी
 आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावलिपरिगण)
 नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से लताओं से और बल्लियों से यह
 सर्व प्रकार से युक्त था । इन गुच्छादि शब्दों का अर्थ पहिले लिखा जा
 चुका है । (हसमिगमयूरकोचमारसचक्रवायमयणसालकोइल कुलो-
 ववेण) हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मेना
 और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था । (अणेग तडक
 डगविवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-
 को (मेखला) से, अनेक कदराओं से, अनेक उज्झरको से, निर्झरनों
 से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित
 निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

के ईशान कोणमें रैवतक नामे पर्वत छेतो । (तुगे गगनतलमणुलिहृतसिहरे)
 ते बहुत उंचे छेतो तेना शिखरे आकाशने स्पर्शता छेतो (णाणाविहगुच्छ
 गुम्मलयावलिपरिगण) अनेके लताना गुच्छे, गुल्मे, लताओ अने बल्लीओ
 थी ते ढकाओछेतो गुच्छ वगेरे गण्डोना अर्थो पडेलो रूपट करवामा
 आओ छे (हसमिगमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण) हस,
 उरुणा, मोर, कोय, सारस, चक्रवाक मेना अने कोयलोना समूहोथी ते युक्त
 छेतो (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेके तटो मेखला
 ओ (कटको) अनेके कदराओ, अनेके उज्झरको—(उरुणाओ) पर्वतो उपरथी
 नीचे वडेलो पाछीना प्रवाहो, अनेके प्रपातो—तट वगरना निराधार स्थानो

वराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, तर्त' तर्मधारयः । ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-संविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसघ-चारण-विद्याधरमियुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवस' राश्च, चारणा' गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषा', विद्याधराणा मियुनानि च तैः' सविचीर्णः=आसेवित, ' निच्चच्छणएदसारवरवीरपुरिसतेलोकवलवगाण' नित्य सणरुः- दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यवलवता, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषा' ते चामी-त्रैलोक्यादपि वलवन्त, अतुलवल- नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यसणरुः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषा सर्वे उत्सवा स्तत्र भवन्तीति भावः । दशदशार्हाणां नामानि यथा-

“समुद्रविजयो अस्त्रोभो यिमिओ सांगरो हिमरो ।

अयलो धरणो पूरणो अभिचदो वसुदेवोति ” ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे । (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओं के गणों से, देवसघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मियुनों से यह सदा सेवित रहता था । (निच्चच्छणएदसारवरवीरपुरिसते लोकवलवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था । उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे । दश दशार्हों के नाम इस प्रकार हैं— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

अथवा गर्ती, थोडा आगणना लागथी नभता अनेक पवत लागे तेमन धाणु शिपरोथी ते प्रयुरइपथी युक्त हुतो ओटले के तट, कटक वगेरे ते पर्वतमा पुष्कण प्रमाणुमा हुता (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओना गल्लोथी, देवसघोथी गगन भागे गमन करता मुनि विशेषोथी, अने विद्याधरोना सुगलोथी ते पर्वत सदा सेवित रहनेो हुतो (निच्चच्छणएदसारवरवीरपुरिसतेलोकवलवगाण) समुद्र विजय वगेरे दश दशार्होमा उत्तम धीर वीर पुरुषोना-के ओओ अतुल गणशाणी नेमिनाथथी युक्त होवाने कारणे त्रणे होउथी गणवान हुता-आ नित्योत्सव भाटेनु स्थान हुतु तेमना अधा उत्सवे अर्ही न यता हुता दश दशार्होना नामो आ प्रमाणु छे-१ समुद्रविजय, २ अक्षोभ ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान, ६ अयल,

पुनरसौ पर्वतः ? कीदृश ? इत्याह—‘सोम्मे’ सौम्यः=मनोहरः, सुभगः=आनन्दजनकः प्रियदर्शनः=दृष्टिसुखद, सुरूपः=शोभनाकृतिकः, प्रासादीय-
अत्र-प्रासादीय इत्यनन्तर दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूप इति त्रयाणां पदानां
संग्रहः प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=नयनानन्दजनकत्वेन पुन
पुनः प्रेक्षणीयः अभिरूपः=सुन्दराकृतिकः । यद्वा-अभि=प्रतिक्षण नव नवमिवरूप
यस्य सोऽभिरूपः । प्रतिरूपः-प्रतिविशिष्टम् असाधारण रूप यस्य स प्रतिरूपः,
उत्कृष्टरूपवानित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामते एत्थ ण नदणवणे
नाम उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नदणव-
णप्पगासे पासाईए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमःझदेसभाए
सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ ॥ सू० ४ ॥

५, हिमवान् ६ अचल, ७ धरण, ८ प्ररण ९, अभिचद, १० वसुदेव ।
(सोम्मे) यह पर्वत बड़ा मनोहर था (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे,
प्रासादीय) सुभग या—आनन्दजनक था, प्रिय दर्शन या दृष्टि को
सुखप्रद था, सुरूप या—शोभन आकृति से सपन्न या, प्रासादीय या,
दर्शनीय था, अभिरूप था प्रतिरूप था । दर्शकजन के मन को मोहित
करनेवाला होने से प्रासादीय, नयनो को आनन्दजनक होने से दर्श-
नीय, सुन्दर आकृतिवाला होने से अभिरूप अथवा इसको रूप हर
एक क्षण में नवीन नवीन जैसा प्रतीत होता था इसलिये अभिरूप
और असाधारणरूप सपन्न होने के कारण प्रतिरूप था । सूत्र “३—”

७ धारण, ८ पूरण, अलिप्त, १० वसुदेव, (सोम्मे) आ पर्वत
अत्यंत श्रेष्ठ होता (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे, प्रासादीय) सुभग होता,
प्रियदर्शी होता ओटले के आगेने गभे ओवे होता सुरूप होता, प्रासादीय
होता, दर्शनीय होता अलिप्त होता, प्रतिष्ठ होता जेनाराओना मनने प्रम-
न्न करना होवाथी प्रासादीय, आगेने आनन्द आपन र होवाथी दर्शनीय,
सुन्दर आकारवाणे होवाथी अलिप्त अथवा तो तेनु रूप दरेक क्षणे नव नव
वाशतु हुतु तेथी ते अलिप्त होता, असाधारण रूप सपन्न होवाने काणे
ते प्रतिष्ठ होता ॥ सूत्र ३ ॥

स्वराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, तर्त' कर्मधारयः । ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-सविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसंघ-चारण-विद्याधरमिथुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवसंघाश्च, चारणाः गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषा', विद्याधराणा मिथुनानि च तैः सविचीर्णः=आसेवित, ' निचचच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोक्कलवगाण ' नित्यक्षणकः-दशार्हवरवीरपुरुषपैल्लोक्यलवता, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषाः ते चामी-ल्लोक्यपादपि बलवन्त, अतुलवर्ण-नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषा सर्वे उत्सवास्त्वेव भवन्तीति भावः । दशदशार्हाणां नामानि यथा-

“समुद्रविजयो अश्लोभो धिमिओ सागरो हिमैर ।

अयलो धरणो पूरणो अभिचदो वसुदेवोति” ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे । (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओं के गणों से, देवसंघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से यह सदा सेवित रहता था । (निचचच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोककलवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था । उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे । दश दशार्हों के नाम इस प्रकार हैं— १, समुद्र विजय २, अश्लोभ ३, स्तिमित ४, सागर

अथवा गर्तो, थोडा आगजना लागथी नभता अनेक पवत लागे तेमन्न धण्णा शिण्णदेथी ते प्रचुरइपथी युक्त हतो ओटले के तट, कटक वगेरे ते पर्वतभा पुष्कण प्रमाणुभा हता (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्सराओंना गण्णोथी, देवसंघोथी गगन भागे गमन करता मुनि विशेषोथी, अने विद्याधरेना युगलोथी ते परत सदा सेवित रहनेो हतो (निचचच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोककलवगाण) समुद्र विजय वगेरे दश दशार्होभा उत्तम धीर वीर पुरुषोना-के ओओ अतुल गणशाणी नेमिनाथथी युक्त होवने कारेण्णेत्रे होकथी गणवान हता-आ नित्योत्सव भाटेलु स्थान हतु तेमना अधा उत्सवे ओही व यता हता दश दशार्होना नामो आ प्रमाणे छे-१, समुद्रविजय, २ अश्लोभ ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान, ६ अश्वत्थ,

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्विजयपामोक्खाणं दसण्ह
दसाराण, बलदेवपामोक्खाणं पचण्ह महावीराण, उगसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं
अधुट्ठाण कुमारकोडीण, संवपामोक्खाण सट्ठीए दुदितसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणि,
महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुप्पिणी-
पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-
गाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसि च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिईणं वेयड्डु गिरिसायरपेरतस्स दाहिणड्डुभरहस्स
य वारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ णं ’ इत्यादि । तत्र तस्या खलु द्वारागत्या नगर्या ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेव राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति । स खलु तत्र
‘ समुद्विजयपामोक्खाण ’ समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना ‘ दसाराण ’ दशार्हाना
बलदेवप्रमुखाना ‘ पचण्ह ’ पञ्चाना महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि

टीका—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी मे (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खंड के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण)
वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाण

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीका—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके त्रैलोक्ये अधिपति राजा रहता
है । (से ण तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्या समुद्र
विजय वगेरे हजारोंने । (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) अण

ટીકા—‘તસ્સ ણ’ હત્યાદિ । તસ્ય સ્વલ્પ રૈવતકસ્ય અદૂરસામતે અથ્થ સ્વલ્પ નન્દનવન નામોદ્યાનમાસીત્ તત્ કીદશમિત્યાહ—‘સવ્વોડયપુપ્ફફલસમિદ્ધે’ સર્વેર્તુ વપુષ્પફલસમૃદ્ધમ્ સર્વેપામ્ ઋતૂના પુષ્પે, ફલૈશ્ચ સમૃદ્ધ = સમન્વિતમ્, ‘રમ્મે’ રમ્ય=રમણીય ‘નદનવનપ્રકાશ’ નન્દનવનતુલ્યમ્, પ્રાસાદીયમ્ ૪, તસ્ય સ્વલ્પદ્યાનસ્ય ‘વહુમજ્જદેસમાણ’ વહુમખ્યદેશમાગે ‘સુરપ્પિણ નામ’ સુરપ્રિય નામં, ‘જક્ખાચયણે’ ચક્ષાયતનમ્ ‘હોત્થા’ આસીત્ તત્ કીદશમિત્યાહ—‘દિવ્વે’ દિવ્ય=રમ્ય, વર્ણકઃ=વર્ણનગ્રન્થોઽન્યત્રાભિહિતઃ । અન્યત્ સુગમમ્ ॥ સૂ.૪ ॥

મૂલમ્—તત્થ ણ વારવર્ણે નયરીણે કણ્હે નામ વાસુદેવે

‘તસ્સ ણ રેવચગસ્સ’—હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ણ રેવચગસ્સ) ડસ રૈવતક પર્વતકે (અદૂરસામતે) ન થદ્ધત દૂર ઓર ન પાસ કિન્તુ ડચિન સ્થાન પર (ણ્ણ નદણવણે નામં ડડ્ડાણે હોત્થા) યહાં ંક નદન વન નામ કા ડધ્યાન થા (સવ્વો ડય પુપ્ફફલસમિદ્ધે) યહ સમસન ઋતુઓ સવન્ધી પુષ્પો ઓર ફલો સે સમૃદ્ધ રહતા થા । (રમ્મે ણદણવણપ્પગાસે) નદનવન કે જૈસા થા । (પાસાઈ ૪) દર્શક જન કે મન કો પ્રમોદિત કરને વાન્ઝા થા । સુભગ પ્રિયદર્શન આદિ ઓર ઃી વિશેષણ હસમે લગા લેના ચાહિયે યહી વાત “પામાઈ ૧” કે સાથ રહે દુણ યહ ૪ પદ સૂચિન કરતા હૈ । (તસ્સ ણ ડડ્ડાણસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ખાચયણે હોત્થા દિવ્વે વલ્લઓ) ડસ ડવાન કે ઢીક ઃીચો ઃીચ કે સ્થાન મે સુરપ્રિય નામ કા યક્ષાયતન યા । યહ દિવ્ય થા । હસકા ઓર વર્ણન દૂસરી જગહ કિયા હુઆ હૈ । સૂત્ર “૪”

(તસ્સ ણ રેવચગસ્સ) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ણ રેવચગસ્સ) રૈવતક પર્વતી (અદૂર સામતે) અત્યંત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (ણ્ણ નદણવણે નામ ડડ્ડાણે હોત્થા) ત્યાં ‘નદનવન’ નામે એક ઉદ્યાન હતું, (સવ્વોડય પુપ્ફફલસમિદ્ધે) તે ઓછી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (રમ્મે ણદણ વણપ્પગાસે) નદનવન એવું હતું (પાસાઈ ૧) દર્શકોના મનને હરિત કરનાર હતું (પાસાઈ ૪) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂક્યો છે તે એમ સૂચવે છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે ળીજ પણ વિશેષણો અહીં સમજવા બોધ્યો (તસ્સ ણ ડડ્ડાણસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ખાચયણ હોત્થા દિવ્વે વલ્લઓ) તે ઉદ્યાનની ળરાળર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનું આચતન હતું તે દિવ્ય હતું તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામા આવ્યું છે ॥ સૂ. “૪” ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्विजयपामोक्खाणं दसण्हं
दसाराणं, बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराणं, उग्गसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं
अधुट्ठाण कुमारकोडीण, सवपामोक्खाणं सट्ठीए दुइतसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एक्कवीसाए वीरसाहस्सणिं,
महासेनपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुपिणी-
पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-
गाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिईणं वेयडू गिरिसायरपेरतस्स दाहिणद्धभरहस्स
य वारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ ण ’ इत्यादि । तत्र तस्यां गच्छ द्वारास्ती नगरी ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेव राजा=त्रिगुण्डाधिपति परिवसति । य गच्छ तत्र
‘ समुद्विजयपामोक्खाण ’ समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां ‘ दसाराणं ’ दशाहोणां
बलदेवप्रमुखानां ‘ पचण्ह ’ पञ्चानां महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखानां ‘ सोलसण्हं ’

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड्ग के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराणं)
वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशाहों का (बलदेव पामोक्खाणं

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके त्रयोऽथ उना अधिपति राजा रहता
हता (से ण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्यां समुद्र
विजय वगेरे ५॥१॥ (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) णण

टीका—‘तस्स ण’ इत्यादि । तस्य खलु रैवतकस्य अदूरसामते अत्र स्व
नन्दनवन नामोद्यानमासीत् तत् श्रीदशमित्याह—‘सब्बोउयपुष्पफलसमिद्धे’ सर्व
कपुष्पफलसमृद्धम् सर्वेषाम् ऋतूनां पुष्पैः फलैश्च समृद्ध = समन्वितम्, ‘रम्मे
रम्य=रमणीय ‘नन्दनवनमकाश’ नन्दनवनतुल्यम्, पासादीयम् ४, तस्य खलुद्या
नस्य ‘बहुमज्झदेसभाए’ बहुमध्यदेशभागे ‘सुरप्पिए नाम’ सुरप्रिय नाम
‘जक्खाययणे’ यक्षायतनम् ‘होत्था’ आसीत् तत् श्रीदशमित्याह—‘दिव्वे
दिव्य=रम्य, रणकः=वर्णनग्रन्थोऽन्यत्राभिहितः । अन्यत् सुगमम् ॥ सू०४ ॥

मूलम्—तत्थ ण वारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे

‘तस्मिन् रेवयगस्स’—इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स ण रेवयगस्स) उस रैवतक पर्वतके (अदूरसामते) ।
बहुत दूर और न पास किन्तु उचित स्थान पर (एतथ नदणवणे ना
उज्जाणे होत्था) यहाँ एक नदन वन नाम का उद्यान था (सब्बो उ
पुष्पफलसमिद्धे) यह समस्त ऋतुओं समन्धी पुष्पों और फलों
समृद्ध रहता था । (रम्मे णदणवणप्पगासे) नदनवन के जैसा था
(पासाइए ४) दर्शक जन के मन को प्रमोदित करने चाहता था । सुभ
प्रियदर्शन आदि और भी विशेषण इसमें लगा लेना चाहिये यही बा
“पासाईए” के साथ रहे हुए यह ४ पद सूचिन करता है । (तस्स
उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खाययणे होत्था दिव
वन्नओ) उस उद्यान के ठीक बीचो बीच के स्थान में सुरप्रिय नाम व
यक्षायतन था । यह दिव्य था । इसका और वर्णन दूसरी जगह कि
हुआ है । सूत्र “४”

(तस्मिन् रेवयगस्स) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स ण रेवयगस्स) रैवतक पर्वती (अदूर सामते) अत्य
दूर पक्ष नहीं तेमज् अत्यंत नष्टक पक्ष न कहेवाय तेम (एतथ नदणवणे
नाम उज्जाणे होत्था) त्था ‘नदनवन’ नामे ओके उद्यान હતુ, (सब्बोउ
पुष्पफलसमिद्धे) ते णधी ऋतुओना पुष्पो अने ફળોથી સમૃદ્ધ (રમ્મે ણદણ
વણપ્પગાસે) નદનવન જેવુ હતુ (પાસાઈએ) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરના
હતુ (પાસાઈએ ૪) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂક્યો છે તે એમ સૂચવે
છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા જોઇએ
(તસ્સ ણ ઉજ્જાણસ્સ બહુમજ્ઝદેસભાએ સુરપ્પિએ નામ જક્ખાયયણે હોત્થા દિવ
વન્નઓ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનુ આયતન હતું તે દિવ
હતું તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામા આવ્યુ છે ॥ સૂ. “૪” ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्हं
दसाराण, बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण, उग्रसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पञ्जुन्नपामोक्खाणं
अधुट्टाण कुमारकोडीण, संवपामोक्खाण सट्ठीए दुइतसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एकवीसाए वीरसाहस्सणिं,
महासेनपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुपिणी-
पामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-
गाण गणियासाहस्सीणं, अन्नेसि च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिर्डणं वेयड्डु गिरिसायरपेरतस्स दाहिणड्डुभरहस्स
य वारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ ण ’ इत्यादि । तत्र तस्या खलु द्वारावती नगर्या ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेव राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति । स खलु तत्र
‘ समुद्रविजयपामोक्खाण ’ समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना ‘ दसाराण ’ दशार्हाणा
बलदेवप्रमुखाना ‘ पचण्ह ’ पञ्चाना महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ णं वारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी मे (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण)
वे वरा समुद्र विजय आदि दश दशाहों का (बलदेव पामोक्खाण

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके त्रेण्ण अउना अधिपति राजा रहता
हता (से ण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्या समुद्र
विजय वगेरे ह्याऐनि । (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) अण

राजसहस्राणा=पोडशमहस्रप्रमिताना राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां
 कुमारकोटीना=सार्धत्रिकोटिसख्यकाना यादवकुमाराणाम् । शाम्भुप्रमुखानां
 षष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणा=षष्टिसहस्रसख्यकाना शाम्भादीना दुर्दान्तानाम् । वीर
 सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणा=एकविंशतिसहस्रप्रमाणाना वीरसेना
 दीना वीराणाम् । महासेनप्रमुखाना पट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणा=पट्पञ्चा-
 शत् सहस्रप्रमिताना महासेनादीना बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखाना द्वात्रिंशतो
 महिलासाहस्रीणा=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेना
 प्रमुखानामनेकासां गणिकासहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसख्यासमितानां
 गणिकानाम् अन्येषां च बहूना राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां,
 यावत् सार्धबाह्वभृतीना वैतादृगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य
 च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्य यावत् — अत्र यावच्छ दा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका वज्रसेन प्रमुख १६
 सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साढे तीन करोड़ यादव
 कुमारों का (संय पामोकखाण सट्टीए दुदत साहस्सीणं) ६० साठ हजार
 दुर्दान्त शाम्भ आदिकों का (वीरसेणपामोकखाण एकवीसाए वीरसाह-
 स्सीण) २१ हज़ीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोकखाण
 छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६ छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का
 (रुक्मिणीपामोकखाण बत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ बत्तीस हजार
 रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोकखाण अणेगाणं
 गणिया साहस्सीण) अनगसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का
 निवास था । (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिर्णवे-
 यड्डुगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्डुभरहस्स य वारवहए नयरीए

हेव प्रमुअ पाअ महावीरेणे, उअसेन प्रमुअ सेण डब्बर राजाओणे,
 प्रद्युम्न प्रमुअ साडा तेषु करेड थादव कुमारेणे (सयपामोकखाण सट्टीए
 दुदतसाहस्सीण) साठडे डब्बर दुर्दान्तसाण वगेरे ने । (वीरसेणपामोकखाण
 एकवीसाए वीरसाहस्सीणं) जेकवीश डब्बर वीरसेन प्रमुअ वीरेणे । (महासेन पामो-
 कखाण छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) छप्पन डब्बर अणवान महासेन वगेरेने ।
 (रुक्मिणी पामोकखाण बत्तीसाए महिलासाहस्सीण) तन्नीस डब्बर रुक्मिणी प्रमुअ
 भड्डिवाओणे । (अणगसेणापामोकखाण अणेगाण गणियासहास्सीण) अने
 अतगसेना प्रमुअ डब्बर गणिकाओणे निवास डते । (अन्नेसिंच, बहूण इसर
 तलवर जाव सत्थवाहपभिर्णवे यड्डुगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्डु भरहस्स य वारवहए

दय पाठोऽनुसन्नेयः—‘ पोरैवच्च ’ पालयन् विहरति = आस्तेस्म । पौरपत्य
पुरवासिनामग्रसरत्न, ‘ सामित्त ’ स्वामित्व, ‘ भत्तित्त ’ भर्तृत्व, महत्तरगत ‘
महत्तरकत्व, ‘आणाईसरसेणावच्च’ आज्ञेश्वर सेनापत्य ‘करेमाणे’ कुर्वन् इति ॥५॥

मूलम्—तत्थ णं वारवईए नयरीए थावच्चा णाम गाहावे-
इणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, नीसेण थावच्चाए
गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तएण सा थावच्चागाहा-
वइणी त दारय सातिरेगअड्ढवासजायय जाणित्ता सोह-
णंसि तिहिकरणदिवसणखत्तमुहुत्तंसि कलायारियस्स
उवणेइ, जाव भोगसमत्थ जाणित्ता वत्तीसाए इव्वकुल-
वालियाण एगदिवसेणं पाणि गेह्हावेइ वत्तीसओ दाओ
जाव वत्तीसाए इव्वकुलवालियाहि सद्धिं विपुले सद्धफरिसर-
सरुववन्ने गधे जाव भुजमाणे विहरइ ॥ ६॥

टीका—‘ तत्थण इत्यादि । तत्र=तस्यां खलु द्वारावत्या नगर्या ‘ थावच्चा-

आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ) अन्य और भी अनेक राजेश्वर,
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठीसेनापतियों का यावत् सार्थवाह
आदिकों का, वैताढथ गिरिएव सागर पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत का तथा
द्वारका नगरी का आधिपत्य पौरपत्य, स्वमित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व,
आज्ञेश्वर सेनापत्य करते हुए रहते थे अर्थात् द्वारका नगरीमें कृष्ण
वासुदेव राज्य करते थे । सूत्र “ ५ ”

‘तत्थ वारवईए नयरीए’ इत्यादि ।

टीका—(तत्थण वारवईए नयरीए) उस द्वारका नगरी में (थावच्चा-

नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ) अने भीजा पणु घणु राजेश्वरे,
तलवरे, माडम्बिके, कौटुम्बिके श्रेष्ठी सेनापतियों सार्थवाह वगेरे उपर वैताढथ
गिरि अने समुद्र सुधीना दक्षिण भारतनु, नगरीनु आधिपत्य पौरपत्य,
भर्तृत्व महत्तरकत्व आज्ञेश्वर सेनापतित्व करता रहेता छेता अटलेडे द्वारका
नगरीभा कृष्ण वासुदेव राज्य करता छेता ॥ सूत्र ५ ॥

(तत्थण वारवईए नयरीए इत्यादि ।

टीका—(तत्थण वारवईए नयरीए) से द्वारका नगरीभा (थावच्चा णाम गाहा

राजसहस्राणा=पोडशसहस्रप्रमिताना राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां
कुमारकोटीना=सार्धत्रिकोटिसख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्भुप्रमुखानां
पृथुया दुर्दान्तसाहस्रीणा=पष्टिसहस्रसख्यकानां शाम्भुादीनां दुर्दान्तानाम् । वीर
सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणा=एकविंशतिसहस्रप्रमाणानां वीरसेना
दीना वीराणाम् । महासेनप्रमुखानां पट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणा=पट्पञ्चा
शत् सहस्रप्रमिताना महासेनादीना बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखानां द्वात्रिंशतो
महिलासाहस्रीणा=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेना
प्रमुखानामनेकांशं गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसख्यासमितानां
गणिकानाम् अन्येषां च बहूनां राजेश्वरतलवरमाडम्यरुक्मिणीरुक्मिणीश्रेष्ठिसेनापतीनां,
यावत् सार्धबाह्वधृतीनां वैताड्यगिरिसायरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य
च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्यं यावत् - अत्र यावच्छब्दा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका उग्रसेन प्रमुख १६
सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साठे तीन करोड़ यादव
कुमारों का (संव पामोकखाण सट्टीए दुदत साहस्सीण) ६० साठ हजार
दुर्दान्त शाम्भ आदिकों का (वीरसेणपामोकखार्ण एकवीसाए वीरसाह-
स्सीण) २१ ह्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोकखार्ण
छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६ छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का
(रुक्मिणीपामोकखाण बत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ बत्तीस हजार
रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोकखाण अणेगाणं
गणिया साहस्सीण) अनगसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का
निवास था । (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्यबाह्वभिर्हणवे-
यद्वगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणदुभरहस्स य बारवहए नयरीए

देव प्रमुंभ पाय भडावीरेने, उग्रसेन प्रमुंभ सोण ह्णर शल्लओने,
प्रद्युम्न प्रमुंभ साडा प्रद्यु करोड यादव कुमारेने (सबपामोकखाण सट्टीए
दुदतसाहस्सीण) सार्ध ६० ६० २ दुर्दान्तसांभ वजेरे ने (वीरसेणपामोकखाण
एकवीसाए वीरसाहस्सीण) ऐकवीश ह्णर वीरसेन प्रमुंभ वीरेने (महासेन पामो
करवाण छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) छप्पन ह्णर अणवान भडासेन वजेरेने।
(रुक्मिणी पामोकखाण बत्तीसाए महिलासाहस्सीण) भत्रीस ह्णर रुक्मिणी प्रमुंभ
भडिलाओने (अण गसेणापामोकखाण अणेगाण गणियासाहस्सीण) अने
अत गसेना प्रमुंभ ह्णरे गणिकाओने निवास ह्ते। (अन्नेसिंच, बहूण इसर
तलवर जाव सत्यबाह्वभिर्हण वेयद्वगिरिसायरपेर तस्स य दाहिणद्व

जातक, विचित्रधिकाष्टवर्षजात ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते ' कलायरियस्स ' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा वलाः शिक्षयति मेघ कुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशय । भोगसमर्थ यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्न ज्ञात्वा द्वात्रिंशता ' इम्भकुलपालियाण ' इम्भकुल वालिकानाम् महाधनाढ्यसार्धराधाना द्वात्रिंशत्सख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहण कारयति । द्वात्रिंशत्पायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्य द्वात्रिंशत् सुवर्णकोटयः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्य । यावत् तदनन्तर स्थापत्यापुनः द्वात्रिंशता इम्भकुलपालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्शरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुजान् अनुभूयन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समर्थ जाणिता वत्तीसाए इम्भकुलपालियाण एगदिवसेण पाणि गेह्हावेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२वहत्तर कलाओं को सीखलिया । यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद में उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित संस्कार एकही दिनमें ३२ महाधनाढ्य सार्धवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया । (वत्तीस ओदाओ जाव वत्तीसाए इम्भकुलपालियाहिं सद्धिं विपुळे सदफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२वत्तीस हिरण्य कोटि ३२ वत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला । इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इम्भकुल वालिकाओं के साथ

गाथा पत्नीके पोताना पुत्रने आठवर्ष थी थोडा भोटा थयेलो जालीने शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्त्तमा (कलायरियस्स) कलाचार्यनी पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोगसमर्थ जाणिता वत्तीसाए इम्भकुलपालियाण एगदिवसेण पाणि गेह्हावेइ) मेघकुमारनी जेम ते स्थापत्य पुत्र पशु ओत्तर कलाओ शीणीनीरी जेने ते युवावन्थ स पत्त थाने विषयोप लोगने लायक थये त्यारे गाथापत्नीके ओत्तर दिवसमा तेनु लग्ग अत्रीस महाधनाढ्य सार्धवाडोनी कन्याओनी साथे उरावडोन्थु (वत्तीस ओदाओ जाव वत्तीसाए इम्भकुलपालियाहिं सद्धिं विपुळे सदफरिसरूवगधे जाव भुजमाणे विहरइ) अत्रीस हिरण्य कोटि, अत्रीस सुवर्ण कोटि वगेरे दडोज भेनकुमारनी जेमज तेने पशु भगी त्तिार पछी स्थापत्य पुत्र अत्रीस विरकुण भजालेनी

णाम 'स्थापत्या नाम 'गाहावहणी' गाथापत्नी परिवसति । सा कीदृशीत्याह—
आढ्या=धनधान्यादि परिपूर्णा, यावत् अपरिभूता—अयैः परामवितुमशक्या, तस्याः
खलु स्थापत्यायाः गाथापत्याः पुत्रः 'थावच्चापुते णाम 'स्थापत्यापुत्रो नाम
सार्धवाहदारकोऽभूत् । स कीदृश इत्याह—सुकुमारपाणिपाद' यावत् मरुपः अत्र
यावच्छब्दकरणादयपाठोऽनुसन्नेयः—' अहीणपडिपुणपचिदियमरीरे, लक्खण
वेजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाणपडिपुणसुजायमव्वंगसुदरगे, ससिसोमा-
कारे कते पियदसणे इति एतानि पदानि प्रागेव व्याख्यातानि ततः खलु सा
स्थापत्या गाथापत्नी त दारक 'सातिरेगअट्ठमासजायय ' सातिरेकाष्टवर्ष

णाम गाहावहणी परिवसइ) स्थापत्य नामकी गाथा पत्नी रहती थी ।
(अड्डाजाव अपरिभूया) यह धन धान्य आदि से परिपूर्ण यावत् अप-
रिभूत अन्ध व्यक्तियों द्वारा परीभूत अशक्य थी । (तीसेण थाव-
च्चाए गाहावहणीए पुत्ते थावच्चा पुत्ते णाम सत्थवाहदारए होत्था)
उस स्थापत्य गाथापत्नी का पुत्र था जिस का नाम स्थापत्य पुत्र था ।
वह सार्धवाहदारक कहलाता था । (सुकुमालपाणिपाएजाव मुरुवे)
इसके हाथपैर सुकुमार थे । यावत् यह अच्छे रूपवाले थे । यहा यावत्
शब्द से " अहीणपडिपुणपचिदियमरीरे, लक्खणवजणगुणोववेए,
माणुम्माणपमाण पडिपुणसुजायसव्वंग सुदरगे समि सोमाकारे कते,
पियदमणे " इस पाठ का समग्र हुआ है । इनपदों का अर्थ इहिले कहा
जा चुका है (तण्ण सा थावच्चा गाहावहणी त दारय सातिरेग अट्ठ
मासजायय जाणिता सोहणसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तसि)

वहणी परिवसइ) स्थापत्य नामे ओके गाथापत्नी रहेती હતી (अड्डाजाव अपरिभूया)
ते धनधान्य वगैरेથી परिपूर्ण तेમજ ખીલ કેઈ વ્યક્તિથી પરાભૂત ન થાય એવી
હતી (તીસેણ થાવચ્ચાણે ગાહાવહણીએ પુત્તે થાવચ્ચાપુત્તે ણામ સત્થવાહદારણે હોત્થા)

जातक, त्रिचिदत्रिकाष्टवर्षजात ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते ' कलायरियस्स ' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा कलाः शिक्षयति मेघ कुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशय । भोगसमर्थ यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्न ज्ञात्वा द्वात्रिंशता ' इम्भकुलबालियाण ' इम्भकुल बालिकानाम् महाधनाढ्यसार्धवाहाना द्वात्रिंशत्सख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहणं कारयति । द्वात्रिंशदायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्य द्वात्रिंशत् सुवर्णकोटयः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्य । यावत् तदनन्तरं स्थापत्यापुनः द्वात्रिंशता इम्भकुलबालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्शरूपरसगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जान अनुभवन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गोया पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तत्र शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समर्थ जाणित्ता बत्तीसाए इम्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेह्हावेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२४८८८ कलाओ को सीखलिया । यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद मे उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित संस्कार एकही दिनमे ३२ महाधनाढ्य सार्धवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया । (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इम्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सदफरिसखगवे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२बत्तीस हिरण्य कोटि३२ बत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला । इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इम्भकुल बालिकाओ के साथ

गाथा पत्नीओ पोताता पुत्रने आठवर्ष थी थोडा थोडा थथेलो जालीने शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्त्तमा (कलायरियस्स) कलाचार्यनी पासे (उवणेइ) भेजदेलो (जाव भोगसमर्थ जाणित्ता बत्तीसाए इम्भकुलबालियाण एगदिवसेण पाणिं गेह्हावेइ) मेघकुमारनी जेभ ते स्थापत्य पुत्रे पशु ओत्तर कलाओ शीणीनीनी ७२४८८८ ने युवावस्था सपन्न थईने विषयोप भोगने लायक थयो त्थारे गाथापत्नीओ ओकर दिवसमा तेनु लग्न भत्रीस महाधनाढ्य सार्धवाहोनी कन्याओनी साथे करावडाओ (बत्तीस ओदाओ जाव बत्तीसाए इम्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सदफरिसखगवे जाव भुजमाणे विहरइ) भत्रीस हिरण्य कोटि, भत्रीस सुवर्ण कोटि वगेरे दडेअ मेरकुमानी जेभले तेने पशु भणी त्थार पछी स्थापत्य पुत्र भत्रीस इम्भकुल बालिकाओनी

મૂઢમ્—તેણં કાલેણ તેણ સમણં અરહા અરિટ્ટનેમી સો
 ચેવ વણ્ણઓ દસધણુસેહે નીલુપ્પલગવલણુલિયઅયસિકુસુમ-
 પ્પગાસે અટ્ટારસહિ સમણસાહસ્તીહિ સદ્ધિ સપરિવુડે ચત્તાલી-
 સાણ અજ્ઞિયાસાહસ્તીહિસદ્ધિ સપરિવુડે પુઠ્ઠાણુપુઠ્ઠિ ચરમાણે
 જાવ જેણેવ વારવઠ્ઠિ નયરી જેણેવ રેવયગપઠ્ઠણ જેણેવ નદન-
 વણે ઉજ્જાણે જેણેવ સુરપ્પિયસ્સ જમ્મસ્સ જમ્મલાયયણે જેણેવ
 અસોગવરપાયણે તેણેવ ઉવાગચ્છડ્ઢ, ઉવાગચ્છિત્તા અહાપડિરૂવ
 ઉગ્ગહ ઓગિણિહિત્તા સંયમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરહ
 પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्ट
 नेमिर्द्वाविंशतितमस्तीर्थकरः समवसृत इति भावः, स एव वर्णकः = अन्यतीर्थक
 राणा यो वर्णकः ‘आइगरे तित्थगरे’ इत्यादि रूप कथितः स एवारिष्टनेमि
 भगवतोऽपि वर्णको वो-य इत्यर्थः, नवर—‘दसधणुस्सेहे’ दशयनुरु सैधः=दश

વિપુલ શબ્દ રૂપ ગધરસ ઓર સ્પર્શ પાચો હૃદયોં કે વિષયોં કો યાવત્
 ભોગતે હુણ અપના સમય આનન્દ કે સાથ વ્યતીત કરદિયા ॥સૂત્ર “૬”

તેણ કાલેણ તેણ સમણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) उस काल और उस समय में (अरिहा
 अरिष्टनेमी) उस द्वारावती नगरी में बावीसवें तीर्थकर अर्हत नेमीनाथ
 भगवान् आये (सो चैव वण्णओ) अन्यतीर्थकरो का जैसा “आइगरे
 तित्थगरे” इत्यादिरूप से वर्णन किया गया है उसी प्रकार का वर्णन

સાથે પુષ્કળ રાખ્ખ, રૂપર્થ, રૂપ વર્ણ અને ગદ્ય રૂપ પાથે ઇન્દ્રિયોના વિષયો
 ને ભોગવતા પોતાનો વખત સુખેથી ખસાર કરવા ગયો ॥ સૂત્ર “૬” ॥

તેણ કાલેણ તેણ સમણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) ते काले અને તે સમયે (अरिहा अरिष्टनेमी
 તે દ્વારકા નગરીમાં બાવીસમાં તીર્થ કર અર્હત નેમીનાથ ભગવાન પધાર્યા
 (સો ચૈવ વણ્ણઓ) “આઈગરે તિથ્થગરે” ના રૂપમાં જેમ બીજા તીર્થ કરેલા
 વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અરિષ્ટનેમિ પ્રથમ વર્ણ । પછી બીજી

धनु परिमित उत्सेध उच्छायो यस्य सः, पुनः कथं भूतौऽसावित्याह—'नील
प्लगवलगुलियअयसिकुसुमपण्णासे' नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशः
नीलोत्पल = नीलरमल, गवल=माहिष शृङ्ग गुलिका=नीली, यद्वा-गवलगुलिका
=माहिषशृङ्गस्य त्वग्भागेऽपसारिते सति तदन्तरालवर्तिनी गुलिका 'अतसी' अलसी
नाम्नामसिद्धो धान्यविशेषस्तस्य कुसुम=पुष्प, तेषां प्रकाश इव प्रकाशो वर्णो यस्य
स तथा, अष्टादशभिः श्रमणसाहस्रीभिः अष्टादशसहस्रपरिमितैः श्रमणैः मुनिभिः
सार्धं सपरिवृतः चत्वारिंशता आर्यिकासाहस्रीभिः=चत्वारिंशत्सहस्रपरिमिताभि-
रार्यिकाभिः साध्वीभिः सार्धं सपरिवृतः, पूर्वानुपूर्वी=पूर्व्यानुपूर्व्या तीर्थं क्रूरपरप-
रया चरन्=विहरन् यावत् यत्रैव द्वारावती नगरी वर्तते यत्रैव रैवतकपर्वतः
यत्रैव नन्दनवनं नामोद्यानमस्ति, यत्रैव सुरप्पियस्य यक्षस्य यक्षायतनं, यत्रैव,

इन अरिष्टनेमि प्रभुका भी जानना चाहिये । परन्तु उनके वर्णन की अपेक्षा
इनके वर्णन में इतनी विशेषता है कि ये (दसधणुस्सेहे, नीलुत्पलगवल-
गुलियअयसिकुसुमपण्णासे) इनके शरीर की ऊँचाई दश धनुष की थी ।
शरीर का वर्ण नीलकमल के गवल-माहिष केशृङ्ग के अन्दरभाग
जैसा गुलिका-नील के जैसा अथवा गवल तुलिका-त्वग्भाग के दूर
करने पर तदन्तरालवर्तिनी माहिष शृङ्ग की गुलिका के-अलसी के पुष्प
के वर्ण के समान था । (अट्टारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे
चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे पुब्बाणुपुर्व्विचरमाणे
जाव जेणेव वारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नदनवणे उज्जाणे
जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव
उवागच्छइ) ये अर्हन्त अरिष्टनेमि प्रभु १८ अट्टारह हजार श्रमणों के साथ
और ४० चालीस हजार आर्यिकाओं के साथ २ पूर्वानुपूर्वी से-तीर्थं क्रूर

लेवु नेधये इत्थं अरिष्टनेमि भगवान् नी विधे आट्ठु विशेषं समञ्जसु नेधये
३-(दसधणुस्सेहे नीलुत्पलगवलगुलियअयसि कुसुमपण्णासे) तेभन्तु शरीर
दश धनुष षेट्ठु उंचु इत्तं तेभन्ता शरीरन्ता २० नील कमल गवलमहिषना
शीगडाना मध्यसाग जेवे, गुलिका-नील जेवे, अथवातो गवल गुलिका-उपर
नी यामडीने उपाडी वीधापछी तेनी अट्टरना महिषना शीगडानी गुलिका
अने अलसीना पुष्पना २० जेवे इतो (अट्टारसहिं समणसाहस्सीहिं
सद्धिं सपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे पुब्बाणुपुर्व्वि चर
माणे जाव जेणेव वारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नदनवणे उज्जाणे जेणेव
सुरप्पियस्स जक्खस्साययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) अर्हन्त
अरिष्टनेमि प्रभु अट्टार इत्थं श्रमणानां साथे अने आलीस इत्थं आर्यिका

अशोकवरपादपः=अशोकनामा महावृक्षः, तत्रेयोपागच्छति, उपागत्य 'अहापडि
रूव' यथाप्रतिरूप=मुनिजनकल्पानुसारम् अवग्रह=स्थित्यर्थं वसतेराज्ञां अवष्टु
=गृहीत्वा समयेन तपसा चात्मान भावयन् वासयन् विहरति=आगतेस्म । तदा
वनपालक समागत्य कृष्णाय वासुदेवाय वर्धापनिम्ना प्रदत्ता । परिपन्निर्गता=
द्वारावती नगरी निवासिनां जनानां परिपत् समूहः निर्गता अरिष्टनेमिर्भगवन्
समागत इति श्रुत्वा तं वन्दितुं द्वारावतीनगरीतो निःसृत्येत्यर्थः । सा परिपद्
भगवन्तं वदित्वा धर्मं श्रोतुं भगवतः पुरोऽपरिथता धर्मः कथितः अरिष्टनेमिना
भगवता धर्मकथा कथिता ॥ सू-७ ॥

परपरा के अनुसार-विहार करते हुए यावत् जहां वह द्वारावती नगरी
थी उसमें जहां रैवतक पर्वत था-नन्दवन नामका उद्यान था । उसमें भी
जहां सुरप्रिययक्ष का यक्षायतन था ओर उस में भी जहां अशोक का
उत्तम वृक्ष था, वहां पधारे (उवागच्छित्ता अहापडिरूव उरगह ओगि-
ण्डित्ता समयेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ) आकर के उन्हीं ने
मुनिजन के कल्पानुसार वनपाल से वसति की आज्ञा प्राप्त की-और
प्राप्त कर वे वहां तप और समय से आत्मा को भावित करते हुए
विराजमान हो गये उस समय वनपालकने आकर के कृष्ण
वासुदेवको वर्धाई दी । (परिसा निगगा धम्मो कहिओ) द्वारावतीनगरी
के समस्त जनों का समूह-(अरिष्टनेमि भगवान आये हुए हैं) ऐसा
सुनकर उनको वदना करने के लिये द्वारावती नगरी से निकले ।

औनी साथे पूर्वांशु पूर्वोधी-ओटले डे तीर्थंकर परपरा ने अनुसरता विहार
करता न्या ते द्वारावती नगरी હતી, ન્યા રૈવતક પર્વત હતો, ન્યા નન્દનવન
નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમા ન્યા સુરપ્રિય યક્ષનું યક્ષાયતન હતું અને તેમા
પણ ન્યા અશોકનું શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું ત્યા પધાર્યા (ઉવાગચ્છિત્તા અહાપડિરૂવ
સગહ ઓગિણ્ડિત્તા સયમેણ તવસા અપ્પણ ભવેમાણે વિહરइ) ત્યા પધારીને
મુનિ જનોચિત પ્રણાલિકા મુજબ વનપાલક પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને આજ્ઞા
મેળવીને ત્યા તપ અને સયમથી ચેતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિરાજ્યા
તે વખતે વનપાલકે કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે જઈને તેમને શુભ સમાચારો આપ્યા
(પરિસા નિગગા ધમ્મો કહિઓ) દ્વારવતી નગરીન બધા નાગરીકોએ “અરિ
ષ્ટનેમિ ભગવાન અને પધાર્યા છે ” એવું સાલણીને તેમની વદના કરવામાટે
આગવી ની માંગણી કરી અને આજ્ઞા મેળવીને વદના કરીને પધાર્યા

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लच्छट्टे समाणे कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्व कोमुदीयं भेरि तालेह, तएणं ते कोडुंविय पुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं बुत्ता समाणा हट्ट जाव मत्थए अंजलिं कट्ठु-एव सामी । तहत्ति जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्ख-मित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता त मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्वं कोमु-दियं भेरिं तालेति । तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारएइण वलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ॥सू०८॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर, खलु स कृष्णो वासुदेवोऽनया भगवानरिष्टनेभिः समागत इत्येव रूपया कथया = वनपालकथितया कथया ‘ लच्छट्टे ’ लब्धार्थः लब्धः=प्राप्तः, भगवदागमनरूपोऽर्थो येन स तथा, सन् कौडुम्बिकरूपरुपान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवा-

भगवान को वदना कर वे सब धर्म सुनने की अभिलाषा से भगवान के सामने बैठ गये । प्रभुने उन्हें धर्म का उपदेश दिया । “ सूत्र “ ७ ”

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (इमीसे कहाए लच्छट्टे समाणे) वनपाल के मुख से अरिष्ट नेमि प्रभुका आगमन रूप अर्थ विदित कर (कौडुवियपुरिसे सदावेइ) कौडुम्बिक

सावणवानी ध्विच्छाथी तेमनी सामे जेसी गया प्रभुजे पधु तेमने उपदेश आये ॥ सूत्र “ ७ ” ॥

तएण से कण्हे वासुदेवे ध्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाद (से कण्हे वासुदेवे) कृष्ण वासुदेवे (इमीसे कहाए लच्छट्टे समाणे) वनपालकना भाथी अरिष्टनेमि प्रभुनी पधराभणीनी वात जा ३

दीप्त-भो देवानुप्रिया 'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव=क्षिप्रमेव सुधर्मायां सभायांगत्वा
 'मेघोघरसिय' मेघोघरसिता=मेघोघाना मेघसमूहानां रसितमिव रसित ध्वनिरिव
 ध्वनिर्यस्यास्तां गभीरा=सा द्रां 'महुरसद्' मधुरशब्दां 'कोमुदीय' कौमुदिकां
 उत्सवसूचनासमये वादनीया कौमुदिका नागनी श्रीकृष्णवासुदेवस्य मेरी तां, भेरि=
 कुन्दुभि 'तालेह' ताडयत=वादयत । ततः=तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा
 कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टाः यावत् हर्षवशविसर्पद् हृदया मरतकेऽ-
 झलि कृत्वा 'एव स्वामिन् तथेति' यावत् 'हे स्वामिन् एवमेव तथाऽस्तु'
 इत्युक्त्वा प्रतिश्रुत्वन्ति=स्वीकुरुन्ति । प्रतिश्रुत्य आज्ञा स्वीकृत्य कृष्णस्य वासुदे-
 वस्यान्तिकात्=समीपात् 'पडिनिक्खमति' प्रतिनिक्रामन्ति=नि सरन्ति । प्रति-

पुरुषोंको बुलाया (सहावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा-
 (खिप्पामेव भो देवानुप्रिया सभाए सुहम्माए) भो देवानुप्रियो !
 तुम लोग शीघ्र ही सुधर्मा नाम की सभा में जाकर (मेघोघरसियं
 गभीरमहुरसद् कोमुदीय भेरि तालेह) मेघोंके समूह जैसी सान्द्र मधुर
 शब्दवाली कौमुदिक नामकी मेरी को कि जो उत्सव की सूचना के
 समय बजाई जाती है बजाओ । (तएण ते कौटुबियपुरिस्ता कण्हेण वासु-
 देवेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अजलिं कट्टु एव सामी !
 तहसि जाव पडिसुणेति) कृष्णवासुदेव की इस प्रकार आज्ञा सुनकर
 वे कौटुम्बिक पुरुष अधिक हर्षित एव सतुष्ट हुए और मस्तक पर
 अजलि रखकर हे स्वामिन् ! जैसी आपकी आज्ञा है हम वैसा ही करेंगे
 ऐसा कहकर उन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली (पडिसुणिस्ता
 कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्खमति) आज्ञा स्वीकार कर

साक्षणीने (कौटुबियपुरिसे सहावेह) कौटुम्बिक पुरुषोंने गोलाव्या (सहावित्ता
 एव वयासी) गोलावीने तेमण्णे ण्हु-(खिप्पमिव भो देवानुप्रिया ! सभाए
 सुहम्माए) हे देवानुप्रियो ! सत्तरे तमे सुधर्मा नामनी सभाभा ण्धने (मेघोघ
 रसिय गभीरमहुरसद् कोमुदीय भेरि तालेह) मेघसमूहना गम्भीर नेवी
 सान्द्र मधुर शब्दवाणी तेमण्ण उत्सवना वण्णते वगाडवामा आवती कौमुदिक
 नामनी मेरी ने वगाडो (तएण ते कौटुबियपुरिस्ता कण्हेण वासुदेवे ण एव
 वुत्तासमाणा हट्ठ जाव मत्थए अजलि कट्टु एव सामी ! तहसि जाव पडिसुणेति)
 कृष्ण वासुदेवनी आवी आज्ञा साक्षणीने कौटुम्बिक पुरुषों भूषण हर्षित अने
 सतुष्ट तथा, तथा मस्तके अजलि रखीने कडेवा लाव्या, "हे स्वामिन् !
 आपनी नेवी आज्ञा छे, ते प्रमाणेअ अमे करीशु आम कहीने तेओअ तेमनी
 आज्ञा स्वीकारी लीधी " पडिसुणिस्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्ख

નિષ્કામ્ય યત્રૈવ સુધર્માસભા, યત્રૈવ કૌમુદિકા ભેરી, વિદ્યતે તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તર્ત મેઘોઘરસિતા=ગમ્भीરા મધુરશબ્દા કૌમુદિકા ભેરી તાડયન્તિ=વાદ-યન્તિ । તતઃ = તદનન્તર ' નિદ્ધમહુરગમીરપડિસુણપિવ ' સ્નિગ્ધમધુરગમ્भीર પ્રતિશ્રુતેનૈવ-સ્નિગ્ધ=હૃદયહર્ષજનક મધુર ગમ્भीર પ્રતિશ્રુત=પ્રતિ-વનિર્યસ્ય સ તથા, તેનેય કેન ? ' સારદ્વણ ' શારદિકેન શરન્કાલસમુદ્ભૂતેન ' ચલાદ્વણ પિવ ' ચલાદ્વકેનેવ=મેઘેનેવ ' અણુરસિય ' અનુરસિતમ્-અનુગર્જિત ભેર્યા, શાર-દિકમેઘગર્જિતવદ્ ભેરીધ્વનિર્જાત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ૦૮ ॥

મૂલમ્-તદ્વણ તીસે કોમુદ્યાદ ભેરિયાદ તાલિયાદ સમા-
ળીદ વારવડ્દદ નયરીદ નવજોયણવિત્થિન્નાદ દુવાલસજોય-
ણાયામાદ સિંધાડગતિયચડકચચ્ચરકંદરદરી વિવરકુહરગિરિસિ-
હર નગરગોડરપાસાયદુવારભવણદેડલપડિસુયસયસહસ્સ સંકુલં
કરેમાળે વારવડ્દ નયરિ સભિતર વાહિરિય સ્વવઓ સમંતા સે

ફિર વે કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પાસ સે ચલદિયે । (પડિનિકલમિત્તા જેણેવ સમા સુદ્ધમા જેણેવ કોમુદિયા ભેરી-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ચલકર વે હસ સુધર્મા સભા મેં જહા વહ કોમુદિક નામની ભેરી રહી હુઈ થી વહાં ગયે, (ઉવાગચ્છિત્તા ત મેઘોઘરસિય ગમ્भीરમહુરસદ્કોમુદિય ભેરિ તાલેતિ) વહા જાકર ઉન્હોને હસ મેઘો કે સમૂહ જૈસી સાન્દ્ર ગમ્भीર મધુર શબ્દ વાલી કૌમુદિક ભેરી કો વજાયા (તઓ નિદ્ધમહુરગમીરપડિ-સુણ પિવ સારદ્વણ ચલાદ્વણ પિવ અણુરસિય ભેરીદ) વજતે હી હસ ભેરી કી વ્વની શરત્કાલીન મેઘ કી ગર્જના કે સમાન હુઈ । ॥સૂ-૮॥

મતિ" આજ્ઞા કાયાં ણાદ તેઓ કૃષ્ણની પાસેથી બહાર નીકળ્યા " " પડિકિલ્લ મિત્તા જેણેવ સમા સુદ્ધમા જેણેવ કોમુદિયા ભેરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ- " અને ત્યાથી તેઓ સુધર્મા સભામા બ્યા કૌમુદિક નામની ભેરી મૂકેલી હતી ત્યા ગયા " ઉવાગચ્છિત્તા ત મેઘોઘરસિય ગમ્भीર મહુરસદ્ કોમુદિય ભેરિ તાલેતિ " ત્યા બધને તેમણે મેઘસમૂહના જેવી સાન્દ્ર ગભીર અને મધુર શબ્દવાળી કૌમુદિક ભેરીને વગાડી " તઓ નિદ્ધમહુરગમીરપડિસુણ પિવ સારદ્વણ ચલાદ્વણ પિવ અણુરસિય ભેરીદ " તે ભેરીમાથી શરદ કતુના મેઘની જેમ ગભીર સાન્દ્ર ધ્વનિ થોભે પ્રસરી ગયો ॥ સૂ. ૮ ॥

सहे विप्पसरित्था । तएणं वारवईए नयरीए नवजोयणवि-
त्थिन्नाए वारसजोयणायामाए समुद्धविजयपामोक्खा दसदसारा
जाव गणिया सहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सहं सोच्चा णिसम्म
हट्टुट्टु० जाव ण्हाया आविद्ध वग्धारियमल्लदामकलावा अह-
तवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एव गयगया
रहसीया संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसव-
ग्गुरापारिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्धविजयपामोक्खे दसदसारे
जाव अंतियं पाउब्भमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु जाव कोडुं-
वियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवा-
णुप्पिया । चाउरंगिणी सेणं सज्जेह, विजय च गधहत्थिं
उवट्टवेह । ते वि तहत्ति उवट्टवेति, जाव पज्जुवासंति ॥सू०९॥

टीका—‘तएण तीसे’ इत्यादि । ततः खलु तस्यां कौमुदिकाया भेर्या ताडि-
ताया सत्या द्वारावत्या नगर्या नवयोजनविस्तीर्णाया द्वादशयोजनायामाया
‘सिंघाडगतियचउक्कचच्चर’ कदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउर पासाय दुवार

‘तएण तीसे कोमुइयाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तीसे को मुइयाए) उस कौमुदी (भेरियाए
तालियाए समाणीयाए) भेरी के बजने पर (वारवइए नयरीए नवजोजन
वित्थिन्नाए) द्वारावती नगरी के कि जो नव ९ योजन विस्तीर्ण (चौड़ी)
तथा (दुवालसजोयणायामाए) १२ बारह योजन लंबी थी—(सिंघाडगतिय
चउक्क चच्चरकदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

“त एण तीसे कोमुइयाए” इत्यादि ॥

टीकार्थ—“तएण” त्या० भा० “तीसे कोमुइयाए” ते कौमुदी “भेरियाए
तालियाए समाणीयाए” भेरीने “वारवइए नयरीए नवजोजन वित्थिन्नाए” नव
योजना विस्तार “भांमेही तेभए” “दुवालसजोयणायामाए” १२ योजना लंबी
“सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

भवनदेउलपडिसुयसयसहससकुल ' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरकन्दरादरीविवर-
कुहरगिरिशिखरनगरगोपुरमासादद्वारभवनदेवकुलप्रतिश्रुतशतसहससकुला शृङ्गा-
टकादि देवकुलान्ताः शब्दाः प्रसिद्धाः, तेषु प्रतिश्रुताना प्रतिवर्त्तनीना यानि
शतमहत्ताणि तैः सकुला = परिपूर्णं ता तथाविधा कुर्वन् द्वारावतीं नगरीं
' सन्निभतरवाहिरिय ' साम्यन्तरमासा सर्वतः-समन्तात् स शब्दः=भेरी शब्दः
' विष्णसरित्या ' विप्रासत्=विशेषेण प्रसृतः ।

ततः खलु द्वारावत्या नगर्यां नवयोजनविस्तीर्णया द्वादशयोजनयामाया
समुद्रविजयपमुखा दशदशार्हा-यावत् गणिकासहस्राणि अत्र यावच्छब्दादयमर्थोऽ-
वगम्यते-बलदेवपमुखा पञ्च महावीराः, उग्रसेनादयः षोडशसहस्रप्रमिता राजान
सार्धत्रिकोटिसख्यका यादवकुमाराः, पट्टिसहस्रसख्यकाः श्राम्वादयो दुर्दान्ताः,
वीरसेनपमुखा एकविंशति सहस्रप्रमितावीराः, महानलसेनादयः पट्पञ्चाशत् सह-
स्रप्रमाणा बलवन्तः, तथा-रुक्मिणीपमुखा द्वाविंशत्सहस्रपरिमितामहिला अनङ्गसे-
नादयोऽनेकसहस्रमुखका वाराङ्गनाश्चेति । कौमुदीकायामेर्याः शब्द श्रुत्वा

षण देउलपडिसुयसयसहससकुल करे माणे बारवइ नयरि सन्निभतर-
वाहिरिय सव्वओ समता से सहे विष्णसरित्या) शृगाटक, त्रिक,
चतुष्क, चत्वर, कदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरीशिखर, नगर, गोपुर,
प्रसादद्वार, भवन, देवकुल, इन सब स्थानों में लाखों प्रति ध्वनियां
उठी उन लाखों प्रति-ध्वनियों से उस द्वारावती नगरी को भीतर
बाहिर सब प्रकार से सब तरफ से परिपूर्ण करता हुआ वह भेरी का
शब्द बहुत जल्दी धधर धधर फैल गया । (तएण बारवईए नयरीए नव
जोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाण समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा
जाव गणियासहस्साइ कोमुदियाए भेरीए सह सोच्चा निसम्म हट्ट
तुट्ट जावण्हाया) इस के बाद ९ नव योजन चौड़ी और १२ बारह
योजन लंबी उस द्वारावती नगरी में समुद्रविजय आदि दश दशार्हा

देउलपडिसुयसयसहससकुल करेमाणे बारवइ नयरि सन्निभतरवाहिरिय सव्वओ
समता से सहे विष्णसरित्या " द्वाशवती नगरीना शृगाटक त्रिक, चतुष्क,
चत्वर, कदरा, दरी विवर, कुहर, गिरिशिखर, नगर, गोपुर, मासाद
द्वार, भवन देवकुल आ अथा स्थानोभा लाणो पडधाओ पडया लेरीने
ध्वनि से कडा पडधाओथी द्वाशवती नगरीनी अदर णडार ओभेर पूणु इपे
असरीने अथे व्याप्त थर्थ गये " तएण बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए
बारसजोयणायामाण समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइ कोमु
दियाए भेरीए सह सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जाव ण्हाया " त्थार भाट नव
योजन पडोणी अने बार योजन लाणी द्वाशवती नगरीमा समुद्र विजय

નિશ્ચય=હૃદયેઽવધાર્ય હૃદાસ્તૃણ યાવત્ સ્નાતાઃ 'આવિદ્વગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા' આવિદ્વગ્ધારિયમાલ્યદામકલાવા આવિદ્ઃ પરિધૃત 'વગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા' પ્રલમ્બિત પુષ્પમાલ્યમુક્તાદિ દારાણા કલાપોયેતૈ પ્રલમ્બિતપુષ્પમાલ્યા મુક્તાદિ દારધારિણ इत्यर्थः । 'વગ્ધારિય' इति देशीशब्दः प्रलम्बितार्थकः । अह तवत्थचदणोक्किन्नगायसरीरा 'अहतवत्तचन्दनोत्तिलघ्नगात्रशरीरा-अहतवत्त्राणि चन्दनोत्तिलिन्नगात्राणि येषु तानि तथाभूतानि शरीराणि येषां ते तेषां शरीराणि नूतनवसनयुक्तानि चन्दनानुलिप्तावयवकानि आसन्नित्यर्थ । नूतनवसनचन्दनानुलेपधारिण इति यावत् । अप्येकके=अप्येके=केचन हयगताः अश्वारूढाः एव=एके ने यावत् ગણિકા સાહસ્ર ને ખેરી કે શબ્દ કો સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં અવધારિત કર ઘટુત હી અધિક હર્ષ સે એવ સતોષ સે યુક્ત હો સ્નાન કિયા-સ્નાન કર (આવિદ્વગ્ધારિયદામકલાવા) ઉન્હોં ને લભી ૨ પુષ્પ માલાઓ સે યુક્ત મુક્તાદિ દારો કો પહિરા "વગ્ધારિય" શબ્દ પ્રલમ્બિત અર્થ કા વાચક દેશીય શબ્દ હૈ । (અહતવત્થ ચદણોક્કિનગાયસરીરા) નવીન ૨ વસ્ત્રોં સે એવ ચદન કે લેપ સે શરીર કો સજ્જિત કિયા । "જાવ ગણિયાસહસ્રાઈ" મેં જો (યાવત્) પદ આયા હૈ-બહુ હસ વાત કો કહતા હૈ કિ સમુદ્ર વિજય આદિ દશ દશાહોં કે સાથ (બલદેવ પ્રમુખ, પાંચમહાવીરો ને ઉગ્રસેન આદિ ૧૬સોલહ હજાર રાજાઓને, ૩૥ સઠે ત્રીનક્રોડ યદવકુમારોને, ૬૦સાઠ હજાર હુર્દાન્ત શામ્બાદિકોને ૨૧હક્કીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોં ને, ૫૬છપ્પન હજાર બલવત મહાસેનાદિકોને તથા રુક્મિણી પ્રમુખ ૩૨ વત્તીસ હજાર મહિલાઓને

વગેરે દશ દશાહોંએ અને ગણિકા સાહસ્રોંએ લેરીને અવાજ સાલળીને અને તેને હૃદયમા અવધારિત કરીને બહુજ હર્ષ તેમજ સતોષ યુક્ત થઈને સ્નાન કર્યું, સ્નાન કરીને "આવિદ્વગ્ધારિયદામકલાવા" તેમણે લાખી લાખી પુષ્પમાળાઓ વાળા મોતી વગેરેના હારો ધારણ કર્યા-વાગ્ધારિય, શબ્દ પ્રલમ્બિત (લટકતી), અર્થને સૂચવનાર દેશીય શબ્દ છે "અહતવત્થ ચદણોક્કિનસરીરા" નવા નવા વસ્ત્રો તેમજ ચદનના લેપોથી પોતાના શરીરને તેમણે શણગાર્યું "જાવ ગણિયાસહસ્રાઈ" માં જે, "યાવત્" શબ્દ છે, તે એમ સૂચવે છે કે સમુદ્રવિજય, વગેરે દશ દશાહોંની સાથે બળદેવ પ્રમુખ પાંચમહાવીરોએ, ઉગ્રસેન વગેરે, સોળ-હજાર રાજાઓએ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોએ, છ, હજાર હુર્દાન્ત શામ્બાદિકોએ એકવીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોએ, છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન, વગેરેએ તેમજ રુક્મિણી પ્રમુખ બત્રીસ હજાર મહિલાઓએ પણ તેઓની જોડાકિર્મિત અને સમુદ્ધ થઈને સ્નાન

केचिद् गजगताः गजारूढाः, रहसीयासदमाणीगया' रथशिघिकास्यन्दमानीगता
केचिद् रथारूढाः, केचित् 'सदमाणीगया' स्यन्दमानीगताः स्यन्दमानी=पाल
खीनाम्ना प्रसिद्धो वाहनविशेषः, तामारूढाः, अप्येवके=केचित् पादविहारचारेण
'पुरिसवगुरापरिक्लिता' पुरुषवगुरापरिसिक्ताः पुरुषवृन्देन युक्ताः सभूय कृष्णस्य
वासुदेवस्यान्तिके प्रादुर्बभूवुः समागताः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः समुद्र-
विजयप्रमुखान् दशदशार्हान् यावत् अन्तिके प्रादुर्भवतः समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा
दृष्टतुष्टोऽतिशयेन प्रमुदित कृष्णवासुदेव कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा
चैव वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-भो देवानुप्रिया ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, चतुरङ्गिणीं

भी उनके जैसा ही हर्षित एव सतुष्ट हो सय कुछ किया । (अप्येगइया
हय गया एव गयगया रहसिया सदमाणीगया) इनमें कितनेक घोडो
पर बैठकर कितनेक हाथियोंपर बैठकर, कितनेक रथोंपर बैठकर कितनेका
शिघिका, स्यन्दमनी-पालखी-पर बैठकर (अप्येगइयापायविहरचारेण
पुरिसवगुरापरिक्लिता) कितनेक अनेक पुरषो से युक्त होकर पाद
विहार चारीगण-पैदल ही (कृणहस्स वासुदेवस्स अतिय पाउव्वभवित्था)
कृष्ण वासुदेव के पास प्रादुर्भूत हुए-आ गये । (तएण से कण्हे वासु-
देवे समुद्रविजयपामोस्सले दस्स दसार जाव अतिय पाउव्वभमाणे पासइ)
इस तरह जब उन कृष्ण वादेवने समुद्रविजय आदि दश दशार्हों को
यावत् अपने पास में प्रादुर्भूत हुआ देखा तो (पामित्ता) देखकर
(दृष्ट तुष्ट जाव कोडुवियपुरिसे सदावेड) हर्षित हो यावत् कौटुम्बिक
पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा

कथुं, अने नान पछी पोताना शरीरने वज्जो, लेपो तेभज्जं डाशे वगेरेथी
थी शलुगार्था अप्येगइया हयगया एव गयगया रहसिया सदमणीगया"
आभाथी डेटलाक घोडाओ उपर सवार थअने डेटलाक हाथीओ उपर भेगीने
डेटलाक रथोभा भेगीने डेटलाक शिघिका, अने पालभीभा भेगीने "अप्येगइया
पायविहरचारेण पुरिसवगुरा परिक्लिता" डेटलाक अनेक भाणुमेनी साथे
पगे आनीने- "कणहस्स वासुदेवस्स अतिय पाउव्वभवित्था" कृष्ण वासुदेवनी
पामे डाअर थरा "तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोस्सले दसदसार
जाव अतिय पाउव्वभमाणे पासइ" आ रीते कृष्णवासुदेवे समुद्रविजय वगेरे
दश दशार्हो वगेरे ते पोतानी पासो उपस्थित थयेला नेथा अने "पामित्ता"
नेधने "दृष्टतुष्ट जाव कोडु वियपुरिसे सदावेड" हर्षित थअछे कौटुम्बिक पुरुषोने
भोलाओ "सदावित्ता एव वयासी" भोलावीने तेभणे आ प्रभाणे कथुं "खिप्पा

ગજાશ્વરથપદાદિયુક્તાં સેનાં સજ્જયત, વિજય = વિજયનામાન ચ ગ.ધર્મરિતનમ્
' ઉવદ્વેહ ' ઉપસ્થાપયત = મળનાદિના મુસજ્જીકૃત્ય હમાનયત । તેઽપિ = કૌડુ-
મ્બિન પુરુષા અપિ, કૃષ્ણવાસુદેવાર્જ્જ્ઞાં શ્રુત્વા ' તથાસ્તુ ' ઇત્યુવત્તા તથૈવોપસ્થાપ-
યન્તિ = આનયન્તિ, યાવત્ પર્યુપાસતે ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલ્-થાવચ્ચાપુત્તે વિ ણિગ્ગણ જહા મેહેતહેવ ધમ્મં સોચ્ચા
ણિસમ્મ જેણેવ થાવચ્ચા ગાહાવડ્ડણી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવા-
ગચ્છિત્તા પાયગ્ગહણ કરેઈ, જહા મેહરસ તહા એવ ણિવેયણા,
જાહે નો સચાણ્ઠ વિસયાણુલોમાહિ ય વિસયપડિકૂલાહિ ય
બહૂહિ આઘવણાહિ ય પન્નવણાહિય સન્નવણાહિ ય વિન્નવણાહિ
ય આઘવિત્તણ વા ૪ તાહે અકામિયા એવ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ
નિકલમણમણુમન્નિત્થા ।

તણ સા થાવચ્ચા આસણાઓ અબ્બુદ્દઈ, અબ્બુદ્ધિત્તા મ-
હત્થ મહગ્ગ મહરિય રાયરિહ પાહુડ ગેળહઈ, ગિણિહત્તા મિત્ત
જાવ સપરિવુડા જેણેવ કર્ણહસ્સ વાસુદેવસ્સ ભવણવરપડિદુવાર-

(ચિત્પામેવ ભો દેવાણુપ્પિયા । ચાતરગિણી સેણ સજ્જેહ) ભો દેવાનુપ્રિ-
યો ! તુમ લોગ શીઘ્ર હી ચતુરગિણી સેના કો સજ્જિત કરો (વિજય ચ
ગધર્મરિથ ઉવદ્વેહ) ઔર વિજય નામ કે ગધ હસ્તી કો વેષ ભૂષા સે
મહિત કર ઉપસ્થિત કરો (તે વિ તહત્તિઉવદ્વેતિ) ડન કૌડુમ્બિકપુરુષો
ને ભી કૃષ્ણ વાસુદેવ કી ઓજા સુન (તથાસ્તુ) એસા કહકર વેસા હી
કિયા યાવત્ ડનકી પર્યુપાસના કી ॥ સૂ-૧ ॥

મેવ ભો દેવાણુપ્પિયા ! ચતુરગિણી સેણ સજ્જેહ ” ડે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે
ચતુરગિણી સેના તૈયાર કરો “ વિજય ચ ગધર્મરિથ ઉવદ્વેહ ” અને વિન્ય
નામક ગધ હાથીને સુદર વેષમાં સજ્જ કરીને ઉપસ્થિત કરો “ તે વિ તહત્તિ
ઉવદ્વેતિ જાણ પઞ્જુવાસતિ ” તે કૌડુખિક પુરુષોએ કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા
સાલણીને (તથાસ્તુ) આમ કહીને તેમની આજ્ઞા મુજબ કર્યું અને તેમની
પર્યુપાસના કરી ॥ સૂત્ર ૯ ॥

देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं
मग्गेणं जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
करयल० वज्झावित्ता तं महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुडं
उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी ॥ १० ॥

टीका—‘यावच्चापुत्ते वि’ इत्यादि । अथ स्थापत्यापुत्रोऽपि निर्गतः =
मगवन्तमरिष्टनेमिं वदितुं स्मृदाभिःसृत इत्यर्थः । यथा मेघ = मेघकुमारः, तथैव
धर्मं श्रुत्वा निश्चयः, यत्रैव स्वजननी स्थापत्या गाथापत्नी वर्तते, तत्रैवोपागच्छति
उपागत्य पादग्रहणं करोति मातृशरणयोः पततिस्मृत्यर्थः । यथा मेघस्य = मेघकुमा-
रस्य प्रवृत्त्यर्थं निवेदना प्रार्थनाऽभूत् तथैव स्थापत्यापुत्रस्य निवेदना मातुर-
न्तिकेऽभवदित्यर्थः ।

‘यावच्चापुत्ते वि निगमए’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(यावच्चापुत्ते वि निगमए) स्थापत्यापुत्र भी भगवान् अरि-
ष्टनेमि प्रभुके वदना करनेके लिये अपने घरसे निकला (जहां मेहे तहेव
धम्म सोच्चा निसम्म जेणेव यावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पायगगहण करेइ, जहामेहस्स तहा चेव निवेयणा) जिस
प्रकार मेघकुमार ने धर्म की श्रमण किया था उसी प्रकार स्थापत्या
पुत्र ने प्रभु अरिष्टनेमी भगवान् के पास धर्मोपदेश सुना और सुनकर
जहां अपनी माता स्थापत्या गाथापत्नी थी वहां गया । जाकर उसने
उसके दोनो चरण पकड़ लिये—उसके दोनो चरणोंमें वह गिर गया—
और जिस प्रकार प्रवृत्त्या के लिये मेघ कुमार ने प्रार्थना की थी उसी

“यावच्चापुत्ते वि निगमए” इत्यादि ॥

टीकार्थ—“यावच्चापुत्तं वि निगमए” स्थापत्या पुत्र पक्षु भगवान् अरिष्टनेमिने
वदन् कर्त्तव्य भाटे पोताने घेरथी नीकल्लये “जहामेहे तहेव धम्म सोच्चा निसम्म
जेणेव यावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायगगहण करेइ, जहामेहस्स
तहाचेव निवेयणा” मेघ कुमार ने जेभ धर्मंतु श्रवणु कथुं छंतु तेभज्ज स्थापत्या
पुत्रे पक्षु प्रभुने अरिष्टनेमि भगवान् नी पासथी धर्मने उपादेश साल्लये । अने
साल्लया पछी त्या तेनी माता स्थापत्या गाथा छती त्या गये । जधने तेछे
माताना अने पण पडती वीधा ते तेना पणोमा आणोटी गये अने जेभ मेघकुमार
प्रवन्त्या भाटे पोताना मातापिताने विनती करी छती तेभज्ज तेछे पक्षु करी

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो संचाएइ' नो शक्नोति अस्य
'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुकूलोभाभि = विषयानुकूलभिः-
र्वाग्भिश्च, तथाहि - विषयभोग एव मनुष्यलोके साराशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः
प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

“यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।

तनये तनयोत्पत्तिः, सुखरनगरे विमाधिवयम् ॥ १ ॥”

तथा—विषयप्रतिकूलभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलस्तत्प्रतिषेधेन
सद्भाविनस्तपः सयमास्तत्सर्वन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः
प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु बालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारो
परिगमनमिव सिक्थकदन्तैर्लोहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव
मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाभ्या समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयम-
भयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । वहीभिराख्यापनाभि = बहुविधैराख्यानैः
सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभिः सगोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहेणो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पडीकू-
लाहि य बहूहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि
य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा
विषयो के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह
उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानों द्वारा-सामान्य
कथनों द्वारा-प्रज्ञापनाओं द्वारा विशेष कथनों द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा
-सबोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस बृद्धावस्था
में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा
उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये,
विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई-

“जाहेणो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पडिकूलाहिय, बहूहि आयवणाहिय पन्न
वणाहिय सन्नवणाहिय विन्नवणाहिय आघवित्तए वा” ४ स्थापत्या गाथा पत्नीजे
पोताना पुत्र विषयानुकूल तेभज विषयेने प्रतिकूलजेवी धखी वाते। कहीने पूण
समज्जो, पण ते विषयानुकूल विषयप्रतिकूल अनेक आख्याने वडे, सामान्य
कथने वडे, प्रज्ञापनाजो वडे, विशेष कथने वडे, सज्ञापनाजो वडे, सगोधन
पूर्वक कथने वडे, विज्ञापनाजो वडे, (तमेज्जा धउपणुमा भादे आधार छे)
वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचने वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपी समज्जववा
भाटे, विशेष रूपी समज्जववाने भाटे, विज्ञापित करवाने भाटे सज्ञापित
करवा भाटे समर्थ थई शकी नहि जेटवे के आख्यान वगेरे थार जतना

सबोध्य कथनैश्च, विज्ञापनाभिः त्वमेव ममास्या वृद्धावस्थायामाधारोऽसि अवलम्बनमसीत्यादि रूपेण सप्रेमदीनवचनेन पुनः पुनर्विज्ञप्तिपूर्वककथनैः, अत्र-विषया नुकूलाभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिस्तथा विषयप्रतिकूलाभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिरिति भावः । 'आघवित्त ए वा' आख्यातु वा, प्रज्ञापयितु वा, विज्ञापयितु वा सज्ञापयितु वा । यदा स्थापत्या स्वपुत्रमाख्यानादिभिः प्रतिबोधयितु प्रव्रज्यातो निवर्तयितु न शक्नोति स्मेति सन्निप्तार्थः । तदा सा 'अकामिया चेव' अकामिकैव=अनिच्छावत्येव स्थापत्यापुत्रस्य-स्थापत्यापुत्रनाम्नः स्वतनयस्य निस्त्रमणमणुमन्त्रित्या' निष्क्रमणमन्वमन्यत = अनिच्छया प्रव्रज्याग्रहणार्थमाज्ञा प्रदत्तवतीत्यर्थः ।

ततः=तदनन्तर खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय, 'महत्थ' महार्थ=महाप्रयोजनक, 'महग्घ' महार्घ=बहुमूल्यक, 'महरिह' महार्ह=महता श्रेष्ठपुरुषाणा योग्य, 'रायरिह' राजार्ह=राज्ञा योग्य, 'पाहुण्ड' प्राभृतमु=उपहार 'भेट' इति भाषा प्रसिद्ध गृह्णाति, गृहीत्वा मित्र-यावत् संपरिवृता=अत्र यावच्छब्देन-ज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनैरित्यस्य सग्रहः यत्रैव

अर्थात् आख्यान आदि चतुर्विधवचनों द्वारा जो कि विषयानुकूलता तथा विषयप्रतिकूलता के प्रदर्शक थे जय वह स्थापत्या गाथापत्नी उसे समझाने एवं प्रव्रज्या से निवर्तित करने के लिये असमर्थ हुई (तह अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निस्त्रमणमणुमन्त्रित्या) तब उसने बिना इच्छा के ही स्थापत्यापुत्र को प्रव्रज्या गृहण करनेकी आज्ञा दे दी (तएण सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेह) बाद में वह स्थापत्या अपने आसन से स्थान से-उठी-(अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) उठकर उसने महार्थसाधक, श्रेष्ठ पुरुषों के, तथा राजाओं के योग्य बहुत कीमती-उपहार लिया-(गिण्हित्ता) लेकर वह (मित्तजाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र आदि परिजनों

वचनो द्वारा के जेओ विषयने अनुकूल तेमज विषयने प्रतिकूल हुता स्थापत्या पत्नी समझवीने प्रव्रज्यादेता पोताना पुत्रने अटकाववामा समर्थ थई थडी नहि "तह अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निस्त्रमणमणुमन्त्रित्या" त्यारे तेणे धर्या न होवा छता प्रव्रज्या अहंछ करवानी तेने आज्ञा आपी त्यारे स्थापत्या थडी पोताना आसनेथी उली थई (अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) जेथी थईने भडार्थसाधक, उत्तम पुत्रोने तेमज रान्जोने योग्य अहु किमती लेट लीथी (गिण्हित्ता) लईने ते (मित्तजाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र वगेरे परिजनोनी साथे

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो सचाण्ड' नो शक्नोति अस्य
'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभि = विषयानुकूलभिः-
र्वाग्भिश्च, तथाहि - विषयभोग एव मनुष्यलोके साराशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः
प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

“यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।

तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे विमाधिवयम् ॥ १ ॥”

तथा—विषयप्रतिकूलभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलस्तत्प्रतिषेधेन
सद्भाविनस्तपः सयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः
प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु बालुका कवलवग्निरास्वादम् असिधारो
परिगमनमिव सिक्थकदन्तैर्लोहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव
मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाग्यां समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयम-
भयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । वहीभिराख्यापनाभि = बहुविधैराख्यानैः
सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभिः सवोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहे णो सचाण्ड विसयाणुलोमाहि य पड्डीकू-
लाहि य बहूहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि
य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा
विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह
उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानों द्वारा-सामान्य
कथनों द्वारा-प्रज्ञापनाओं द्वारा विशेष कथनों द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा
-सवोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था
में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा
उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये,
विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई-

“जाहे णो सचाण्ड विसयाणुलोमाहि य पड्डीकूलाहिय, बहूहि आयवणाहिय पन्न
वणाहिय सन्नवणाहिय विन्नवणाहिय आघवित्तए वा” ४ स्थापत्या गाथापत्नीजे
पोताना पुत्र विषयानुगूण तेमज्ज विषयेने प्रतिकूलजेवी धल्ली वाते। कहीने भूण
समज्जये, पण ते विषयानुगूण विषयप्रतिकूल अनेक आख्याने वडे, सामान्य
कथने वडे, प्रज्ञापनाजे वडे, विशेष कथने वडे, सज्ञापनाजे वडे, सवोधन
पूर्वक कथने वडे, विज्ञापनाजे वडे, (तेमज्ज आ धउपणुमा भासे आधार छे)
वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचने वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपथी समज्जववा
भाटे, विशेष रूपथी समज्जववाने भाटे, विज्ञापित करवाने भाटे सज्ञापित
करवा भाटे समर्थ थई शकी नहि जेटेले के आख्यान वगेरे यार नतना

मूलम्-एवं खलु देवाणुप्पिया। मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते
नाम दारए इट्ठे जाव सेणं ससारभयउव्विग्गे इच्छइ, अरहओ
अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए, अहण्ण निकखमणसक्कारं करेमि,
इच्छामि णं देवाणुप्पिया। थावच्चापुत्तस्स निकखममाणस्स
छत्तमउडचामराओ य त्रिदिन्नाओ, तएणं कण्हे वासुदेवे
थावच्चा गाहावइणी एव वयासी-

अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए सुनिव्वुया वीसत्था,
अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि,
तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं
हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावड्ढणीए भवणे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी-
मा ण तुमे देवाणुप्पिया । मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं
देवाणुप्पिया । विउले माणुस्सए कामभोए मम वाहुच्छायाप-
रिग्गहिए, केवल देवाणुप्पियस्स अह णो संचाएमि वाउकायं
उवरिमेण गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे
किंचिवि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएति तं सब्ब निवारोमि ॥११॥

टोका—‘एव खलु’ इत्यादि। एवम् = अमुना प्रकारेण, खलु निश्चये हे देवान्प्रिय ! समैकः=एक एव पुत्रः स्यात्पुत्रो नाम दारक अङ्गजात, इष्ट

‘एस खल देवाणुप्पिया’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! (एब खलु) मैं आप के पास इसलिये आई हूँ- कि (मम एगे पुत्ते यावच्चा पुत्ते नाम दारए) मेरा

(एस खलु देवाणुपिया इत्यादि) ।

टीका- (देवानुचिया ।) हे देवानुग्रह ! (एव सखु) हू, आपनी यासे
 ओटला भाटे आवी छु-उ (मम पगे पुते यावच्चा पुते नाम दारप) भारे स्था-

કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય ' ભવળવરપહિદુવારદેસમાણ ' મનવરપતિદ્વારદેશભાગઃ મન-
વરસ્ય મધાનપ્રાસાદસ્ય પ્રતિદ્વારં વૃહદ્ દ્વારત્તરલવર્તિલઘુદ્વાર તસ્ય દેશભા-
ગોઽસ્તિ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા પ્રતીદ્વારદેશિતેન દ્વારપાલપ્રદર્શિતેન
માર્ગેણ યતૈવ કૃષ્ણવાસુદેવસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા કરતલપરિગૃહીતદશ-
નસ્યા મસ્તકે અઙ્ગલિ કૃત્વા જયેન વિજયેન ચ વર્ધાપતિ, વર્ધાપયિત્વા તન્મહાર્થ
મહાર્થ મહાર્થે રાજાર્થે પ્રાપ્તમ્ ઉપનયતિ=કૃષ્ણવાસુદેવસ્યામિમુખે સ્થાપયતિ, ઉપ-
નીય = ઉપહાર કૃષ્ણવાસુદેવસ્યાગ્રે નિધાય, એવ=અધ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ =
ઉક્તવતી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સે યુક્ત હોકર જરા કૃષ્ણ વાસુદેવ કે (ભવળવરપહિદુવારદેસમાણ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) પ્રધાન પ્રાસાદ કા વડે દરવાજે અન્દર લઘુદ્વાર કા દેશ ભાગ થા ચહાઈ (ઉવાગચ્છિત્તા પહિદ્વારદેસિણ મગેણ જેણેવ કળે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) વહા જાકર દ્વારપાલ દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ સે હોકર વહ જરા કૃષ્ણ વાસુદેવ થે વહાઈ (ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ વદ્ધાવેઈ) વહા જાકર ઉસને દોનોં હાથો કો અઙલિ રૂપ મેં જોડકર ઔર ઉસ મસ્તક પર રલ્લ કર જય વિજય શબ્દો કા ઉચ્ચારણ કરતે હુઈ ઉન્હેં વધાઈ દી (વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ મહગ્ધ મહરિહ રાયરિહ પાહુડ ઉવળેઈ) વધાઈ દેકર ઉસને ફિર મહાર્થસાધક મહાર્થ મહર્તા યોગ્ય એવ રાજાઓં કે લાયક ઉસ મેટ કો રાજાકે સમક્ષ રલ્લ દિયા । (ઉવણિત્તા એવ વયાસી) રલ્લ કર ફિર ઉનસે એસા કહા— સૂત્ર “ ૧૦ ”

કૃષ્ણ વાસુદેવના (ભવળવરપહિદુવારદેસમાણ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) ન્યા પ્રધાન મહેલ ના મુખ્ય દરવાજાની અંદરના લઘુદ્વારનો દેશ ભાગ હતો ત્યાં ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા, પહિદ્વારદેસિણ મગેણ જેણેવ કળે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) ત્યાં જઈને તે દ્વારપાલવડે ખતાવવામા આવેલા મર્ગથી ન્યા કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા ત્યાં ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ વદ્ધાવેઈ) ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથોને અંજલીના આકારે ખનાવીને તેમને જય વિજય શબ્દો બોલતા કૃષ્ણ વાસુદેવને વધાવ્યા (વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ મહગ્ધ મહરિહ રાયરિહ પાહુડ ઉવળેઈ) વધાવ્યા પછી સ્થાપત્યાએ મહાર્થસાધક મહાર્થ—યોગી ભાણુસેને યોગ્ય— અને રાજાઓને લાયક તે ભેટને તેમની સામે મૂકી (ઉવણિત્તા એવ વયાસી) મૂકીને તેણે તેમને કહ્યું ॥ સૂ-૧૦ ॥

इति सम्बन्धः । अहं खलु स्वयमेव स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमणसत्कारं करिष्यामि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवश्चतुरङ्गिण्या सेनया सह विजय=विजयनामान गन्धहस्तिरत्नं यस्य गन्धसमाधाय पलायन्ते गजाः परे । दूरुढ=समारुढः सन् यत्रैव स्थापत्याया गाथापत्या भवनं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च स्थापत्यापुत्रम् एव = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—देवानुप्रिय ! त्वं मुण्डो भूत्वा मां खलु प्रज, दीक्षाग्रहणं मा कुरु इति सम्बन्धः । हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु विपुलान्=बहुतरान् मानुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् = शब्दादिविषयानुभवान्

गाहावहणीं एव वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी की इस घात को सुनने के बाद कृष्णवासुदेव ने स्थापत्यागाथापत्नी से इस प्रकार कहा— (अच्छा ही न तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निष्क्रमणसत्कारं करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तुम इस विषय में निश्चिन्त होकर—स्वस्थ और विस्वस्थ होकर—बैठो, मैं स्वयं स्थापत्या पुत्र का निष्क्रमण सत्कार करूँगा । (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हात्थिरयण दुरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ऐसा कहने के बाद वे कृष्ण वासुदेव चतुरगिणी सेना के साथ विजय नामके हस्तिरत्न पर आरुढ हो कर जहाँ स्थापत्यागाथापत्नी का भवन था वहाँ गये । (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) जाकर उन्होंने स्थापत्या पुत्र से इस प्रकार कहा— (माण तुमै देवाणुप्पिया ! मुडे भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! तुम मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण मत करो

गाहावहणीं एव वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी आवातने सालाणीने कृष्णवासुदेवे स्थापत्यागाथापत्नीने कहु (अच्छा ही न तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निष्क्रमणसत्कारं करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तमे आ विषे निश्चित, स्वस्थ अने विस्वस्थ रहो । तुम स्थापत्यापुत्रने निष्क्रमण उत्सव करीश (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हात्थिरयण दुरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) त्थार पछी कृष्णवासुदेव चतुरगिणी सेनानी साथे विजयनामाना उत्तम हाथी उपर सवार थई ते न्या स्थापत्यागाथापत्नीनु भवन छत्तु त्या गया (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) त्या जधने तेमहे स्थापत्या पुत्रने आ प्रभावे कहु—(माण तुमे देवाणुप्पिया ! भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! मुंडित थई ने तमे दीक्षा स्वीकारे नहि (मुजाहि न देवाणुप्पिया !

વલ્લભઃ યાવત્=અત્ર યાવચ્છન્દેનાય પાઠોડ્નુસન્ધેયઃ-ક્રાન્તઃ=કમનીયઃ, પ્રિયઃ= પ્રીતિકારકઃ, મનોજઃ = હૃદયાવસ્થિતઃ, ઉદુમ્બરપુષ્પદર્શનમિત્ર દુર્લભઃ, વર્તતે, સ મમ પુત્રઃ સ્વલ્પ સસારભયોદ્વિગ્નઃ સન્ન ઇચ્છતિ અર્હતોડરિષ્ટનેમેઃ સમીપે યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ । અહ સ્વલ્પ નિષ્ક્રમણસત્કાર દીક્ષોત્સવં કરોમિ, હે દેવાનુપ્રિય ! હે સ્વામિન ! અહમિચ્છામિ સ્વલ્પ સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય નિષ્ક્રામનઃ = દીક્ષાગ્રહણ કુર્વતઃ છત્રચામરાણિ=છત્રચામરમુકુટાદીનિ ત્રિતીર્ણાનિ ભવદ્વિઃ પ્રદત્તાનિ મનન્તુ ઇતિ, અહમેતદર્થે મરતાં સમીપે સમાગતા યન્ તસ્મૈ છત્રચામરાદીનિ મનન્તો વિતરન્તુ ઇતિ ભાવઃ ।

તત સ્વલ્પ કૃષ્ણવાસુદેવઃ સ્થાપત્યાગાથાપત્નીમેત્રમવાદીત્ । હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્વ સ્વલ્પ મુનિર્ઘૃતા=સ્વસ્થા, વિસ્વસ્થા=વિશેષતઃ સ્વસ્થા, સુધીરા, આસ્ત્વ=તિષ્ઠ,

એક હી અજ્ઞજાત સ્થાપત્ય પુત્ર નામ કા પુત્ર હૈ । વહ (હટ્ટે જાવ સેળ સસારભયઽન્વિગ્ને) મુક્તે યલ્લભ હૈં । યાવત્ શબ્દ સે હસ પાઠ કા યહા સગ્રહ હુઆ હૈ- વહ ઘટત અધિક કમનીય હૈ પ્રીતિકારક હૈ, મનો- જ હૈ, મેરે હૃદય મેં સ્થાન કિયે હુએ હૈ । ઓર ઉદમ્બર પુષ્પ કે દર્શન કે સમાન દુર્લભ હૈ । વહ મેરા પુત્ર સસારભય સે ડવિગ્ન હોકર (ઇચ્છા અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહત્તપ) અહત્ અરિષ્ટ નેમિ પ્રભુ કે પાસ દીક્ષિત હોના ચાહતા હૈ (અર્હણ નિક્કલમણસકકાર કરેમિ, ઇચ્છામિળ દેવાનુપ્રિયા ! યાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિક્કલમમાણસ્સ છત્તમ ઉદ્ધચામરાઓ ય વિ વિદિન્નાઓ) સો મૈ ઉસકા દીક્ષોત્સવ કરના ચાહતી હૈં । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! મૈ આપસે યહ ચાહતી હૈં કિ આપ મુક્તે ઉસ નિમિત્ત-નિષ્ક્રમણ સ્થાપત્ય પુત્ર કી દીક્ષોત્સવ કે નિમિત્ત છત્ર, ચામર ઓર મુકુટ આદિ દે દેવેં । (તપ્પણ કળ્હે વાસુદેવે યાવચ્ચા

પત્યાપુત્ર નામે એકનો એક પુત્ર છે તે (હટ્ટે જાવ સેળ સસાર ભય ડન્વિગ્ને) મને પ્રિય છે અહીં (યાવત્) શબ્દથી આપાઠનો સગ્રહ થયો છે-તે ખૂબજ કમનીય (ઇચ્છવાયોગ્ય) છે, પ્રીતિકારક છે, મનોજ છે, મારા હૃદયમા તે સ્થાન પામેલો છે તેમજ ઉમરડાના પુષ્પના દર્શનની જેમ તે દુર્લભ છે તે સસારના ભયથી વ્યાકૂળ થઈ (ઇચ્છા અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહત્તપ) અહત્ અરિષ્ટનેમિ પ્રભુથી દીક્ષિત થવા ચાહે છે (અર્હણ નિક્કલમણસકકાર કરેમિ, ઇચ્છામિળ દેવાનુપ્રિયા ! યાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિક્કલમમાણસ્સ છત્તમ ઉદ્ધચામ રાઓ ય વિવિદિન્નાઓ) હું તેના દીક્ષાનો ઉત્સવ ઉજવવા ઇચ્છુ છું એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! આપ મને તે ઉત્સવ નિમિત્ત નિષ્ક્રમણ-સ્થાપત્યાપુત્રના દીક્ષોત્સવ માટે છત્ર ચામર અને મુકુટ વગેરે આપો (તપ્પણ કળ્હે વાસુદેવે યાવચ્ચા

मृतम्—तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी—जइ णं तुम देवाणुप्पिया ! मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरीर-रूबविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवारसि, तएण अह तव वाहुच्छाया परिग्गहिण विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-माणे विहरामि ॥ सू० १३ ॥

टीका—‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि । तत् खलु स स्थापत्यापुत्रं कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमादौत—हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्व मम “जीवियतकरण” जीवितान्तकरण जीवनविनाशकारक, ‘मच्चु’ मृत्यु=मरणदुःख, ‘एज्जमाण’ एवमानन्=जागच्छन्त, निवारयसि, ‘जर वा’ कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा। मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। क्यों व्यर्थ मैं परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो—छोड़ो इसे। सूत्र “११”

‘तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इन प्रकार कहा—(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरीर-रूबविणासिणि मरीरवा अइवलमाण निवारसि) हे देवानुप्रिय ? यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

रक्षित्यमा रहैता तमने केउ पणु जतनी तऽवीइ थगे नडि छ भेशा हु तमारी भदइ भाटे पडजे छिओधु शु जम व्यर्थ उठ माव्य-उठणु-दीक्षा अडणु करवा तैया थया छे छोडी आ लपने । सूत्र “११”

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

टीकार्थ—(त एण) त्याग पछी (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव पडेआ गीते उडेवाओला स्थापत्या पुत्रे, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्ण वासुदेवने आ प्रभाए उछु—(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा मरीररूबविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवारसि) हे देवानुप्रिय ! जो तमे भारा उपन ने नाश करना मृत्यु ते

मम बाहुच्छाया परिशृहीतः=बाहुच्छायां समाश्रित सन् 'शुजाहि' शुश्रूष्व, आसेवस्व पुन पुनर्विषयावादासुखेन विहरन् गृहे तिष्ठेत्यर्थः । केवल तव देवानुप्रियरयाह नो इवनोमि वायुकायमपरितो गच्छन्त निवारयितुम्, वायुपर्शव्यतिरेकेण प्रतिकूलतया तव शरीरस्य स्पर्शने कौञ्चपि समर्थो नास्तीति भाव । अन्य खलु देवानुप्रियस्य यत् किञ्चिदपि आवाधां वा ईपत् पीडा वा व्यावाधां वा विशेषपीडा वा उत्पादयति, तत्सर्वं निवारयिष्यामीत्यर्थः । मम राज्ये तव किमपि दुःख नो भविष्यति, साहाय्य ते करिष्यामि, अल परमकष्टसाध्येन दीप्ताग्रहणेनेति भाव ॥ सू-१२,॥

(-शुजाहि ण देवानुप्पिया ! बिउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिगगहिए) हे देवानुप्रिय ! मेरी बाहुच्छाया में रहते हुए तुम तो विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगो को भोगो । (केवल देवानुप्पियस्स अह णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए) हे देवानुप्रिय ! प्रतिकूल होकर तुम्हारे शरीर को मेरी छत्रच्छाया में रहते हुए कोई स्पर्श तक भी नहीं कर सकता है-परन्तु वायुकाय को तुम्हारे ऊपर से जाते हुए मृन्म में रोकने की शक्ति नहीं है । अर्थात् वायु के सिवाय और किसी प्राणी में ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी छत्रच्छाया में रहे हुए तुम्हें विरुद्ध बन कर स्पर्श तक भी कर सके । (अण्णे ण देवानुप्पियस्स जे किञ्चि वि आवाह वा वावाह वा उप्पाएति त सव्व निवारेमि) वायुकाय के सिवाय यदि कोई दूसरी व्यक्ति देवानुप्रिय तुम्हारे लिये थोड़ी सी भी किसी भी प्रकार की पीडा या विशेष पीडा उत्पन्न करेगा तो वह सब मैं निवारित करता रहूंगा ।

बिउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिगगहिए) हे देवानुप्रिय ! मेरी बाहुच्छाया भा रहेता तमें मनुष्यलवना पुष्कल काम लोग लोगवे । (केवल देवानुप्पियस्स अह णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए) हे देवानुप्रिय ! मेरी छत्र छायाभा रहेता तमने प्रतिकूल थधने केह स्पर्शवानी पणु हिम्मत करे नहि इत्त वायुकायने के जे तमारी उपर थधने पसार थाय छे-रोडवानी ताकत माराभा नथी जेटले के पवन सिवाय जीन केह पणु प्राणी नी जेवी हिम्मत नथी के मारी छत्र छायाभा रहेता, प्रति कुण थधने तमारो स्पर्श पणु करी शके (अण्णे ण देवानुप्पियस्स जे किं वि विआवाह वावावाह वा उप्पाएति त सव्व निवारेमि) वायुकायना सिवाय जीन व्यक्ति तमने थोड़ी के वधादे पीडा आपसे तो तेने हु भटाडीश मारा

मृत्म्-तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते
समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी-जइ णं तुम देवाणुप्पिया ।
मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरीर-
रूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवारसि, तएण अह
तव बाहुच्छाया परिग्गहिण विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-
माणे विहरामि ॥ मू० १३ ॥

टीका-‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि । ततः खलु स स्थापत्यापुत्र-
कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! यदि
खलु त्व मम “जीवियतकरण” जीवितान्तरकरण जीवनविनाशकारक, ‘मच्चु’
मृत्यु=मरणदुःख, ‘एज्जमाण’ एवमानन=आगच्छन्त, निवारयसि, ‘जर वा’
कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा ।
मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा । क्यों व्यर्थ मे परम कष्ट
साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो- छोड़ो इसे । सूत्र “११”

‘तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण)
कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यापुत्र ने (कण्ह
वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(जइण तुम
देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरी-
ररूवविणासिणि सरीरवा अइवलमाण निवारसि) हे देवानुप्रिय ! यदि
आपमेरे जीवन का अन्त करने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

रख्येगा तबने डाल पक्षु जलनी तःदीक्ष यथे नडि ड भेशा डु तभारी
भदद भाटे पडणे डेलोछु गु जम व्यर्थ डण्ड भावन-डडण-दीक्षा अडण्ड डरवा
तैयार यथा डो छोडी आ लपने । सूत्र “११”

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

टीकार्थ-(तएण) त्याग पक्षी (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव
पडेआ गीते डडेवायेला स्थापत्या पुत्रे, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्ण
वासुदेवने आ प्रभाणे डधु-(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु
एज्जमाण निवारसि जर वा सरीररूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवा-
रेसि) हे देवानुप्रिय ! जे तबे भाग जवन ने नाश डरनार मृत्यु ते

નરા વા=વૃદ્ધાવસ્થા વા શરીરરૂપપિનાગિની, શરીર યા (વર્તમાનશરીર) 'અણ્વયમાર્ણ'
 પ્રતિપત્તમ્=આત્મનઃ સકાશાત્ સર્વથા વિયુજ્યમાન નિગારયસિ, તતસ્તદા સ્વલ્પ
 અહ તવ વાહુચ્છાયા-પરિગૃહીતઃ શુજવલમાશ્રિતઃ સન્ ત્રિપુલ્યાન્ માનુષ્યાન્ કામ-
 ભોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરામિ=ગૃહે વત્સ્યામીત્યર્થઃ ।

સસારાઽસક્તસ્ય જરામરણાદિ દુઃસ્વલ્પયો ન મયતીતિ સંસારસ્વરૂપમિદં
 સક્ષેપેણ નિરૂપ્યતે-આત્મકલ્યાણાર્થી જનઃ સ્વલ્પેવ વિભાગ્યતિ—

एतत् खलु ससारसुखं तुच्छम्, अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिनं प्राणिनं केवल
 मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

કર સકતે હો તથા શરીર કે સ્વરૂપ નો વિનાશ કરનેવાલી આત્મી હુઈ
 જરાવસ્થા નો નિવારણ કર સકતે હોવે યો નિયમત. આત્મા કે સાથ
 સર્વથા વિયુજ્યમાન હસ શરીર નો આપ રોક સકતે હોવે (તણ અહ
 તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિણ વિઝલે માણુસસણ કામભોગે શુજમાણે વિહ-
 રામિ) તો મેં આપની શુજચ્છાયા નાં સહારાલેકર વિપુલ મનુષ્યમવ-
 સમ્બધી કામભોગોં નો ભોગતા હુઆ ઘર મે રહ સકતા હું ! સસાર
 મેં આસક્ત હુણ પ્રાણી કે જરા મરણ આદિ કે દુઃખો ના ક્ષય નહીં
 હોતા હૈં હસલિયે સસાર ના સ્વરૂપ સક્ષેપ સે યહાં નિરૂપિત કિયાજાતા
 હૈં જો આત્મકલ્યાણ કે અર્થી મોક્ષાભિલાષી જન હોતે હૈં વે હસ પ્રકાર
 સે વિચાર કરતે હૈં-યહ સાસારિક સુખ તુચ્છ હૈં । હસ સસાર મેં કર્મ
 વશવર્તી હુણ પ્રાણી કેવલ મરણ પ્રાપ્ત કરને કે લિયે હી જન્મતે હૈં ઓર
 જન્મ ધારણ-કરને કે લિયે હી મરતે હૈં । જિતને મી કામભોગ

મારાથી ફર ઢરી શકો છો, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને
 મટાડી શકો છો, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા
 નહિ દો (તણ અહ તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિણ વિઝલે માણુસસણ કામભોગે
 શુજમાણે વિહરામિ) તે હુ તમારી બાહુઓની છાયામા રહીને પુણ્ય મનુષ્ય
 ભવના કામભોગો ભોગવતા ઘરમા જ રહી શકુ તેમ છુ સસારમા આસ
 ક્ષિત રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે હુ જો નો ક્ષય થતો
 નથી તેથી અહીં તુ કમા સસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામા આવે છે જે આત્મ
 કલ્યાણ ને જખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર
 કરે છે આ સસારનુ સુખ નગણ્ય છે આ સસારમા કર્મ વશ થઈને જીવ
 નારા પ્રાણીઓ શક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ
 મેળવવા માટે જ મૃત્યુને લેટે છે સસાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

आस्रवरूपा विपदा पदानि सन्ति । लोभमर्तिनः सर्वेऽपि पदार्थाः सिकृताकण
वत् परस्परमसंग्रहाः, तेषां भोगोऽपि जीवस्य पन्थनाय पुनः पुनर्मोहजननाय
भवति । मोहं खलु महागर्तस्तत्राज्ञानिनो जीवा निरर्थकमेव निपतन्ति । एतस्मिन्
सुखाभासे ससारे ममकः सम्पन्नः । अज्ञानरजन्या विवेकदृष्टो मोहदृताया सत्यां
पञ्चेन्द्रियत्रयो विंशति विषय तदीय शतद्वयाधिकरुचत्वारिंशद्विभाररूपास्तस्करा
आत्मगुणरूपाणि धनान्यपहरन्ति । यथा पथिकेभ्यो न रोचते निर्जला भूमि-
स्तथा ममेदं ससारसुख प्रमोदाय न प्रभवति । यथा वा-शैलशिखरावस्थितपाद-
पानां मूलानि वायुर्विशोर्णयति, तथोन्मूलयति भोगोऽपि जीवानां मनासि, यथा

हैं-वे सब क्षणभंगुर हैं तथा हमकेद्वारा ही जीव नवीन कर्मों का आ-
स्रव करता है-इसलिये ये आस्रवरूप है-विपदाओं के स्थानभूत हैं ।
इस लोक में जितने भी पदार्थ हैं वे सब बालु के कण के समान पर-
स्पर में असंग्रह हैं । इनका भोग भी जीव के लिये नवीन नवीन कर्मों
का यधदाता होता है और धार २ मोहका जनक होता है । मोह एक
बड़ा भारी गर्त (खड्डा) है । इसमें आत्मज्ञान से रहित हुए प्राणी नि-
रर्थक ही गिरते रहते हैं । इस असारससार में मेरा किस से क्या नाता
है । अज्ञान रात्रि में विवेकदृष्टि के मोहाब्जदूषित होने पर पाँचो इन्द्रियों
के २३, विषय और इन विषयों के भी २४०, विकार रूप तस्कर (चौर)
आत्म गुण रूप धन का अपहरण करते रहते हैं । जिस तरह पथिक जनों
के लिये निर्जल भूमि नहीं रुचती है उसी प्रकार मुझे यह ससार सुख
नहीं रुचता है । अथवा जैसे पर्वत की चोटी पर रहे हुए वृक्षों की जड़ों

सर्वे क्षण लघुर छे, तेमज्ज ओमना वडे ज्ज एव उमेत्ति आस्रव (उभंनु आत्मा
हाभल थवु) उदे छे ओटला भाटे आ जधा आस्रवइप्प छे अने विपत्तिओनु
स्थान छे आ जगतमा ओटला पदार्थो छे तेओ सर्वे देतीना उल्लानी जेम पर
स्पर अन्न जद्ध छे ओमनो उपलोग पणु नवा नवा उमेत्ति ज धनमा प्राप्तिने
इसापनार छे ते वार वार मोहज्जनड डोय छे मोह (अज्ञान) जने ओक मोटो पाटो
(गर्त) छे आत्मज्ञान पगरना प्राप्तिओ व्यर्थआमा पड्या उदे छे आ नि मार
जगतमा भादे कोनी साथे डेवो स जद्ध छे ? अज्ञान रात्रिमा न्यादे विवेकनी
दृष्टि अज्ञानथी ढकार्थ जय छे त्यादे पाय धन्दिओना त्रेरीर विपथो अने
आ विपथोना पापु जसो आक्षीश विकार इपी चोर (तस्कर) आत्मगुण इपी
धन ने चोरता रहे छे जेम मुसाक्षराने निर्जण प्रदेश गमतो नथी तेम ज्ज
भने पणु आ स माज सुभ मारु लागतु नथी जेम पर्वतो पणु रहेवा वृक्षोना
शिभरे मूण पवन विशोर्ण (छिन्नविच्छिन्न) उरी नाथे छे तेमज्ज स सार

જરા વા=વૃદ્ધાવસ્થા વા શરીરરૂપવિનાશિની, શરીર વા (વર્તમાનશરીર) 'અદ્વયમાણં' અતિપતતમ્=આત્મનઃ સકાશાત્ સર્વથા વિયુજ્યમાન નિવારયસિ, તતસ્તદા खलु अह तव बाहुच्छाया-परिगृहीतः भुजबलमाश्रितः सन् विपुलान् मानुष्यान् काम-भोगान् भुञ्जानो विहरामि=गृहे वत्स्यामीत्यर्थः ।

સસારાડસક્તસ્ય જરામરણાદિ દુઃખક્ષયો ન ભવતીતિ સંસારસ્વરૂપમિદં સક્ષેપેણ નિરૂપ્યતે-આત્મકલ્યાણાર્થી જનઃ સ્વલ્ભેય વિભાગ્યતિ—

एतत् खलु ससारसुखं तुच्छम्, अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिनः केवलमरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुराः कर सकते हैं तथा शरीर के स्वरूप को विनाश करनेवाली आती हुई जरावस्था को निवारण कर सकते होवें या नियमत आत्मा के साथ सर्वथा वियुज्यमान इस शरीर को आप रोक सकते होवें (तएण अह तव बाहुच्छाया परिगृहिण विउल्ले माणुस्सए कमभोगे भुजमाणे विहरामि) तो मैं आपकी भुजच्छाया का सहारालेकर विपुल मनुष्यभवासम्बन्धी कामभोगों को भोगता हुआ घर में रह सकता हूँ । ससार में आसक्त हुए प्राणी के जरा मरण आदि के दुःखों का क्षय नहीं होता है इसलिये ससार का स्वरूप सक्षेप से यहाँ निरूपित किया जाता है जो आत्मकल्याण के अर्थी मोक्षाभिलाषी जन होते हैं वे इस प्रकार से विचार करते हैं-यह सासारिक सुख तुच्छ है । इस ससार में कर्मवशवर्ती हुए प्राणी केवल मरण प्राप्त करने के लिये ही जन्मते हैं और जन्म धारण-करने के लिये ही मरते हैं । जितने भी कामभोग

મારાર્થી દૂર કરી શકે છે, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને મટાડી શકે છે, આત્માર્થી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા નહિ દો (તएण अह तव बाहुच्छाया परिगृहिण विउल्ले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि) તે હું તમારી બાહુઓની છાયામાં રહીને પુણ્ય મનુષ્ય ભવના ઝામભોગો ભોગવતા ઘરમાં જ રહી શકું તેમ છું સસારમાં આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે હું જો નો ક્ષય થતો નથી તેથી અહીં દૂકમાં સસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામાં આવે છે જે આત્મ કલ્યાણને જખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સસારનું સુખ નગણ્ય છે આ સસારમાં કર્મ વશ થઈને જીવનાર પ્રાણીઓ ફક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાં જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે સસાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

કાષ્ઠ ધુન ઇવ મૃત્યુઃ શરીરમુત્વનતિ । મૃત્યુતક્ષાઃ શ્વાસોચ્છ્વાસક્રુચેન શરીરવૃક્ષ છિન્નતિ । મૃત્યુ સલ્લ રાગદ્વેષપિપ્પલાવ્યાકુલ્તયા તપાર્ત ઇમાઽઽયુ-
પ્યજલ પિપતિ । યયા તૈલયન્ત્ર તિલ્લન નિષ્પીડયતિ, તથા મૃત્યુ. પ્રાણિના શરી-
રાણિ નિષ્પીડ્ય નાશયતિ । સ લોકત્રયવર્તિનઃ પ્રાણિનઃ ક્ષોભયતિ । મૃત્યોપરા
ગમન પ્રાગેવ પશ્માસતઃ સુરાણામપિ કલ્પતરુપુષ્પરચિતમાલા મુકુલયતિ, ચેતાસિ
તેષાં શોકસાગરે નિમજ્જયતિ । મૂર્ઝાન્વકાર પદ્યન્ મૃત્યુરુપ ઉલ્લકો ધાવન્
સમાયાતિ ।

દિમાનીય રમલગનાનિ જરા પચ્ચેન્દ્રિયાણિ વિકૃતાનિ કુર્વતી શિથિલયતિ ।
સા મક્ષિતધિપત્ત ત્વરિતમેવ શરીર સહરતિ । માર્યાઽપિ જરાવસ્થ પુરુષમ્—‘અય-

કાષ્ઠકો ધુન કી તરહ મૃત્યુ મેરે શરીર કો ધુના રહી હૈ । મૃત્યુરુપી
વઢૈ શ્વાસોચ્છ્વાસરુપ આરે સે હસ શરીરરુપ વૃક્ષ કો રાત દિન કોટ
રહા હૈ । યહ મૃત્યુ રાગદ્વેષરુપ વિપકી જ્વાલા સે વ્યાકુલ જૈસી બના હુઆ
તૃપાર્ત કી તરહ આયુરુપીજલ કો પી રહા હૈ જૈસે તૈલ યન્ત્ર-કોલ્ફ-તિલો
કો પેલ ઢાલતા હૈ ઉસી પ્રકાર મૃત્યુ પ્રાણિયોકે શરીર કો નિષ્પીડિત
કર ઢાલતા હૈ । એસા ત્રીન લોક મે કોઈ મી પ્રાણિ નહી હૈ જો હસ
મૃત્યુસે ક્ષુભિત ન હો રહા હો । મૃત્યુકે આગમન કે છઠ્ઠમાસ કે પહિલે સે
દેવતાઓ કી મી કલ્પવૃક્ષો કે પુષ્પો કી રચિત માલા કુમ્હલા જાતી હૈ
ઉનકા મન શોક સાગર મે હસ કારણ સે ડૂબ જાતા હૈ । મૂર્છારુપી
અધકાર કો દેલકર મૃત્યુરુપી ઉલ્લક દૌડતા હુઆ આ જાતા હૈ । હિમ
સતતિ (હિમ સમ્રહ) જિસતરહ રમલ વનો કો વિકૃતકર શિથિલકર
દેતી હૈ ઉસી તરહ જરાવસ્થા મી પચ્ચેન્દ્રિયો કો વિકૃત કર શિથિલ કર

ની જેમ મૃત્યુ મારા શરીરને નષ્ટ કરી રહ્યા છે મૃત્યુ રૂપી સુધાર શ્વાસો
શ્ચ્વાસ રૂપા ઝવત વડે શરીર રૂપા વૃક્ષને રાત દિવસ કાપી રહ્યો છે આ
મૃત્યુ રાગદ્વેષ રૂપી વિપની જ્વાળા વી વ્યાકુળ થઈને તરખ્યાની પેઠે આયુષ્ય
જળને પી રહ્યું છે જેમ વાણી તલોને પીલી નાખે છે તેમજ મૃત્યુ
પ્રાણીઓના શરીરોને નિષ્પ્રાણ બનાવીને નષ્ટ કરીનાખે છે તથે લોકમા એવું
કોઈ પ્રાણી મને દેખાતું નથી કે જે મૃત્યુથી ક્ષોભ પામતું ન હોય મૃત્યુના
છ મહિના પૂર્વે દેવોની પણ કૃત્ય વૃક્ષના પુષ્પોની માળાઓ ચીમળાડ બધ
છે તેમજ મન શોક સાગરમા ડૂબી બધ છે મૂર્છા રૂપી અધારાને બોધને
મૃત્યુ રૂપી ધુવડ દોડતા આવે છે આકળો જેમ ડમળ વનોને નષ્ટ કરી નાખે
છે, શિથિલ બનાવીદે છે તેમજ ઘડપણ પાચે ધન્દ્રિયોને વિવૃત કરીને

પુરાતનાસ્તરવ સ્વકોટરસ્થાનલેન દહમાના અન્તે નિપતન્તિ તદ્વદિદ્ જીવાઃ
 કપાયાનલેન પરિતપ્તા અશાન્તા અન્તે નરકાદો નિપતન્તિ । અહમપિ સમારદાવા
 નલેન પરિતપ્તાન્તઃકરણઃ કયાપિ ત્રિપયમુખે શાન્તિ ન પશ્યામિ । સપ્રતિ મામકી
 નમન્તઃકરણ જન્મજરામરણદુઃખપાપાણૈ પરિપૂર્ણેર્તતે, તસ્માત્ સાશ્રુમુક્તરુઠ્ઠ ચ
 રોદન કર્તુકામોઽપિ ન રોદિમિ, ઇમે હિ સ્વજના રુદન્ત મામપ્રલોચ્યરોદિપ્યન્તિ ।
 તસ્માદસારેઽસ્મિન્ સસારે પ્રવ્રજ્યૈવ મમ શરણમ્ । અપર ચૈવમસૌ મૃત્યુજરાસ્વભાવ
 વિમાવયતિ—

કો વાયુ વિશીર્ણ કર દેતી હૈ उसी तरह सासारिक भोग भी जीवोंके
 मन को विशीर्ण करदिया करता है अपने कोटर में अवस्थित अग्नि से
 जैसे पुराने वृक्ष जलकर अन्त में जमीन पर गिर पड़ते हैं उसी तरह
 इस ससार में कषायरूपअग्निसे परितप्त होकर अशान्त हुए ये जीव
 भी अन्त में नरकादि दुर्गतियों में जाकर गिरजाते हैं । मैं भी ससार
 दावानल से परितप्त अन्तःकरण होकर किसी भी वैपयिकसुख में
 शान्ति नहीं देख रहा हूँ । इस समय मेरा अन्त करण जन्म जरा
 और मरण के दुःख रूप पापानों से परिपूर्ण बना हुआ है । अतः मैं
 चाहता हूँ कि मैं गला फाड़ २ कर खूब जोर ० से रोऊँ परन्तु नहीं रो
 सकता हूँ । कारण ये मेरे पीछे लगे हुए जो जन हैं वे मुझे रोता देख-
 कर रोने लग जावेंगे । इस लिये सार विहीन इस ससार में कोई शर
 ण भूत मेरे लिये है तो वह एक प्रव्रज्या ही है । मृत्यु और जराके
 स्वभाव को यह आत्म कत्याणार्यी इस प्रकार से विचारता है—

ના બોગો પશુ જીવોના મનને વિશીર્ણુ (જીર્ણુ) કરી નાખે છે પોતાની
 બખોલમાં સળગતો અગ્નિ જેમ જુના વૃક્ષોને બાળીને ડેરે જમીન દોસ્ત
 કરી નાખે છે, તેમજ આ સસારમાં કષાય રૂપ અગ્નિમાં સતત થઇને અશા
 ન્ત થયેલા જીવો પશુ અન્તે નરક વગેરે દુગતિઓમાં જઈને પડે છે સસાર
 દાવાનળથી સતત થયેલુ માફ મન કોઈ પણ વિષય સુખમાં શાંતિ જોતુ
 નથી અત્યારે માફ મન જન્મ જરા (ઘડપણ) અને મરણના દુખ રૂપી
 પથ્થરોથી પરિપૂર્ણ થઇ ગયુ છે એથી મને તો જોમ થાય છે કે હું મોટેથી
 બૂમો પાડી પાડીને ખૂબ રડુ પણ મારાથી રડાતુ પણ નથી કેમકે મારા
 સ્વજનો મને રડતો જોઇને પોતે પણ રડવા માડશે એટલે નિસાર જગતમાં
 મારો કોઈ આધાર છે તો તે પ્રવ્રજ્યા જ કહી શકાય મૃત્યુ અને ઘડપણની
 લય કરતા વિષેનો વિચાર તે સ્થાપત્યાયુગ કહે છે “લાડામાં બાંધ

સમાધિરૂપઃ કલ્પતરુરૂપઘટે ચ । વૈરાગ્યજલાઽઽગમનમાર્ગરૂપા નાલિકા તત્ર સદ્ભાવના । જ્ઞાનદર્શનરૂપાણિ તત્ર પુષ્પાણિ, સ્વર્ગાપવર્ગરૂપાણિ ફલાનિ । દેવલોકે યત્ સુખ, યત્ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્તસ્થાનન્તસુખ, તદેવ તત્ફલસ', ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

મૂલમ્—તણેં સે કળહે વાસુદેવે થાવચ્ચાપુત્તેણ એવ ઘુત્તેસમાણે થાવચ્ચાપુત્તં એવ વયાસી—એણ દેવાણુપ્પિયા । દુરતિક્રમણિજ્ઞાણો સ્વલુ સક્કા સુવલિણાવિ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિવારિત્તેણ ન્નતથ અપ્પણો કમ્મવ્વણં, તણેં મે થાવચ્ચાપુત્તે કળહ વાસુદેવ એવ વયાસી જઈણ એ દુરતિક્રમણિજ્ઞાણો સ્વલુ સક્કા જાવ ન્નતથ અપ્પણો કમ્મવ્વણં તદ્દિચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા । અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરિક્કસાયસચિયસ્સ અત્તણો કમ્મવ્વણં કરિત્તેણ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

ટીકા—‘ તણે સે કળહે ’ ઇત્યાદિ । તતઃ=તદનન્તર સ્વલુ મ કૃષ્ણવાસુદેવઃ સ્થાપત્યાપુત્રેણેનમુક્તઃ સન્ સ્થાપત્યાપુત્રમ્ એવ=વશ્માણમકારેણ અવાદીત્—

સમાધિ રૂપ કલ્પતરુ ઉત્પન્ન હોતાં હૈં ઓર ઘટતા હૈં । વૈરાગ્યરૂપ જલ કે આને કે લિયે માર્ગરૂપ નાલી કે સમાન વહા સદ્ભાવના હૈં । જ્ઞાનરૂપ વર્ત્ત પુષ્પ હૈં । સ્વર્ગ એવ અપવર્ગ (મોક્ષ રૂપ હસકે ફલ હૈં દેવલોક મેં જો સુખ હૈં તથા સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવ કો જો અનન્ત સુખ હૈં વહી સય હસકે ફલોં કા રમ હૈં ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

‘ તણે સે કળહે વાસુદેવે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણે) હસકે ઘાડ (સે કળહે વાસુદેવે ડન કૃષ્ણ વાસુદેવ ને (થાવચ્ચાપુત્તેણ એવ ઘુત્તે સમાણે) સ્થાપત્યા પુત્ર કે હસ પ્રકાર કળહે પર (એવ વયાસી) ડમસે એસા કહા—(એણ દેવાણુપ્પિયા !

જળના મિચનથી સમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી પાણીને લાવવામા સદ્ભાવનાઓરૂપી નાળી છે જ્ઞાન દર્શન જ ત્યા પુષ્પ છે દેવલોકમાનુ સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવને જે અનન્ત સુખ છે તેજ આ બધા રૂપોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

(તણે સે કળહે વાસુદેવે ઇત્યાદિ ॥)

ટીકાર્થ—(તણે) ત્યાર પછી (સે કળહે વાસુદેવે) રૂપ વાસુદેવે (થાવચ્ચાપુત્તેણ એવ વચ્ચે —ણે) સ્થાપત્યા પુત્રની આ વાત સાંભળીને (એવ વયાસી)

મુષ્ટ્ર' इति मन्यते, पुत्रादयोऽपि नाद्रियन्ते । जराज्वाला-श्वासकासधूमैर्जीवं व्याकुलयन्ती यस्मिन् शरीरे प्रज्वलति, तद् भस्मसाद् ऋरोति । जरा खलु सर्वाप दामास्पद प्रवृत्तानलशिखेव सरलमुखमनोरथ विनाशिनी । अत्रमधिकेन मृत्यु जरादि ससारस्वभावचिन्तनेन । मृत्युजरानलप्रतप्तस्य मम निष्क्रमणेन शरण भविष्यति, यतः—

સસારમહારણ્યે મનુષ્યદેહઃ खलु समाधिरूपस्य कल्पतरो क्षेत्रम् । तच्च विशिष्ट पुण्यपुञ्जरूपहलेन कृष्टम् । निष्क्रमण तस्य वृक्षस्य बीजम् । वैराग्यजलाभिषेकेण डालता है । भक्षित विष की तरह तुरंत ही शरीर को नष्ट कर देती है भार्या भी जरावस्थापन्नपुरुष को “ यह उष्ट्र है ” ऐसा मानने लगती है । पुत्रादिक उसका अपमान करने लगजाते हैं । वे इसका जरा भी सम्मान नहीं करते । यह जरारूपी ज्वाला श्वास कासरूपी धूम से जीव को व्याकुल करती हुई जिस शरीर में प्रज्वलित होजाती है उसे भस्मसात ही कर डालती है । यह जरावस्था समस्त आपत्तियों का एक स्थान है । प्रबल अग्नि की ज्वाला के समान समस्त सुखों के मनोरथों को नाश करने वाली है । मृत्यु, जरा, आदिरूप ससार के स्वाभाव के चिन्तन से अब घस रहो । मृत्यु तथा जरा रूप वह्नि की शिखा से प्रतप्त हुए मुझे तो अब निष्क्रमण (दीक्षा) ही एक शरण भूत होगा । कारण ससाररूप इस गहनवन में यह मनुष्य देह समाधि रूप कल्पवृक्ष का क्षेत्र है । यह विशिष्ट पुण्य पुञ्जरूप हल से जोता गया है । निष्क्रमण (दीक्षा) उस वृक्ष का बीज है वैराग्यरूपा जल के सिंचन से

શિથિલ કરીનાખે છે આધેલા વિષની જેમ તે શરીરને જલ્દી નષ્ટ કરે છે પત્ની પણ ઘરડા પુરુષને ‘ આ ઉટ છે ’ એમ માને છે પુત્ર વગેરે પણ તેમને તિરસ્કારે છે તેઓ થોડુપણ તેમનું સન્માન કરતા નથી આ ઘડપણની જ્વાળા શ્વાસ, કાસરૂપી ધુમાડાથી જીવને વ્યાકુળ કરીને જે સગીરમા સળગી ઉઠે છે તેને ભસ્મીભૂત કરી નાખે છે ઘડપણ બધી આફતોનું એકમાત્ર ધ્યાન છે વિકરાળ અગ્નિની જ્વાળાઓની પેઠે બધા સુખોનો તેમજ મનરથોનો મૃત્યુ નાશ કરનાર છે મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ના સ્વભાવ જાણા આ જગત વિષે મારે હવે કંઈ વિચાર કરવો નથી મૃત્યુ તેમજ ઘડપણ રૂપી અગ્નિની જ્વાળાઓથી સતત થયેલા મારામાટેતા હવે નિષ્ક્રમણ એટલે કે - દીક્ષાગ્રહણ કરવી-જ શરણુ ભૂત થશે કેમકે સસારરૂપી ભયકર વનમાં આ મનુષ્ય શરીર સમાધિ રૂપી કલ્પવૃક્ષનું ક્ષેત્ર છે આ વિશિષ્ટ પ્રકરના ઉત્તમ પુણ્યરૂપી હળથી ખેડવામાં આવ્યું છે નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) તે વૃક્ષનું (કલ્પવૃક્ષનું) બી છે વૈરાગ્યરૂપી

समाधिरूपः कल्पतरुत्पद्यते च । वैराग्यजलाऽऽगमनमार्गरूपा नालिका तत्र सद्भा
वना । ज्ञानदर्शनरूपाणि तत्र पुष्पाणि, स्वर्गापमर्गरूपाणि फलानि । देवलोके
यत् सुख, यच्च सिद्धावस्थां प्राप्तस्थानन्तसुखं, तदेव तत्फलरसः, इति ॥ सू० १२ ॥

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एव वुत्तेसमाणे
थावच्चापुत्त एव वयासी—एएण देवाणुप्पिया । दुरतिक्रमणिज्जा
णो खलु सक्का सुवल्लिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए
णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तएणं मे थावच्चापुत्ते कण्ह
वासुदेव एव वयासी जइण एए दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सक्का
जाव नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण तइच्छामि णं देवाणुप्पिया ।
अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसायसच्चियस्स अत्तणो कम्मक्खय
करित्तए ॥ सू० १३ ॥

टीका—‘तएण से कण्हे’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर खलु स कृष्णवासु
देवः स्थापत्यापुत्रेणोत्पन्नः सन् स्थापत्यापुत्रम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्—
समाधि रूप कल्पतरु उत्पन्न होता है और यद्वता है । वैराग्यरूप जल
के आने के लिये मार्गरूप नाली के समान बहा सद्भावना है । ज्ञान
रूप वर्तमान पुष्प हैं । स्वर्ग एव अपवर्ग (मोक्ष रूप इसके फल है देवलोक
में जो सुख है तथा सिद्धावस्था प्राप्त जीव को जो अनन्त सुख है वही
सय इसके फलों का रस है ॥ सू० १२ ॥

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे उन कृष्ण वासुदेव
ने (थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्र के इस प्रकार
कहने पर (एव वयासी) उमसे ऐसा कहा—(एएण देवाणुप्पिया !

जणना भिन्नथी ममाधिइपी कल्पतरु उत्पन्न थाय ते अने वधे छे वैराग्यइपी
पाणीने लाववामागे सहसावनाओइपी नाणी छे ज्ञान दर्शन ज त्या पुष्प छे
देवलोकाभानु सुख तेमज सिद्धावस्था प्राप्त भवने जे अन त सुख छे तेज
आ यथा इणोने रस छे ॥ सूत्र १२ ॥

(तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥)

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी (से कण्हे वासुदेवे) कृष्ण वासुदेवे (थावच्चा
पुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्रनी आ वात भावणीने (एव वयासी)

हे देवानुप्रिय ! एते मृत्युजरादयः खलु दुरतिक्रमणीयाः=दृःपरिहरणीया, दुर्नि-
 वारा इत्यर्थः । एयमेवार्थं स्पष्टीकृत्यन्नाह—‘ णो खलु मय्या ’ इत्यादि । नो
 खलु शक्या सुबलिकेन अनन्तचलता देवेन=तीर्थकरेणाऽपि, यद्वा—महाबलवता
 केनापि देवेन, दानवेन वा निवारयितुं निर्वर्तयितुं नो खलु शक्याः, मृत्युजरादय
 इत्यन्वयः । देवो वा दानवो वा मृत्युजरादीन् रिपून् वारयितुं समर्थो नास्तीत्यर्थः ।
 नान्यथात्मन कर्मक्षयेण आत्मसंचितमङ्गलकर्मक्षयं विनाऽन्योपायेन मृत्युजरादि
 परिहारो नैव भविष्यतीति भावः ।

ततः खलु म स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवमेवमवादीत्—यदि खलु एते दुर-
 तिक्रमणीया नो खलु शक्या—यावत्—यावत्करणादत्र—‘ सुबलिकेन देवेन दान-
 दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिकेणानि देवेण वा दानवेण वा
 निवारित्तण णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खण्ण) हे देवानुप्रिय ! ये मृत्यु
 जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं दुःपरिहरणीय हैं । इसका निवारण करना
 ससारावस्था जीव के लिये सर्वथा अशक्य है । इसी अर्थ को सूत्रकार
 स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि सुबलिक अनन्त चल के स्वामी तीर्थकर
 देव भी अथवा महाबलवान कोई भी देव या दानव इन मृत्यु जरा
 आदि को निवारण करने के लिये सामर्थ्य शाली नहीं हो सके
 हैं । केवल आत्म संचित सकल कर्मों का क्षय ही एक ऐसा उपाय है
 जो इनका निवारण कर सकता है । इनके सिवाय और कोई दूसरा
 उपाय नहीं है । (तएण से यावत्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एव वयासी)
 कृष्ण वासुदेव की इस बात को सुनकर स्थापत्यापुत्र ने तब उन से
 इस प्रकार कहा—(जइण एण दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सक्का जाव न-

तेभे ळु (एए ण देवानुप्पिया ! दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलि
 एणा वि देवेण वा दानवेण वा निवारित्तण णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खण्ण)
 हे देवानुप्रिय ! आ मृत्यु वगेरे दुरतिक्रमणीय छे ससारमा रडैता प्राणीने
 भाटे तेनु निवारण अशक्य छे “ सूत्रकार अही ओण अर्थने स्पष्ट करता
 छे छे के सुबलिक ओटवे के अनन्त अणशानी तीर्थकर देव अथवा तो महा-
 अणवान केछ देव के दानव पण आ मृत्यु धडपण वगेरे ने हर करवानु साम-
 थ्य धरावी शक्य नथी इकत आत्म संचित सकल कर्मोना क्षय ओक मात्र
 उपाय छे के ले आ मृत्यु धडपण वगेरेनु निवारण करी शके ओना सिवाय
 भीन केछ उपाय अभने देखाता नथी (तएण से यावत्चापुत्ते कण्ह वासुदेव
 एव वयासी) कृष्ण वासुदेवनी आ बात सालणीने स्थापत्या पुत्रे तेभने आ
 प्रभावे ळु (जइण एए दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सक्का जाव नत्थ

वेन वा निवारयितुम्' इति पूर्वोक्तपाठस्य संग्रहः । अन्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण, तद्=तस्मात्, हे देवानुप्रिय । 'अज्ञानमिच्छत अविरट्-कसायमचियस्स' अज्ञानमिच्छात्वाविरतिरूपायमचित्तस्य=अज्ञानम्—ज्ञानावरणीयोदयजनिततात्मपरिणामरूप सशयविपर्ययादिदृक्षण मिच्छावान, मिच्छात्व=मिच्छात्वमोहनीयोदयजनिततात्मपरिणामरूप तत्त्वार्थश्रद्धान कुदेवादिषु सुदेवादिबुद्धिर्मा, अविरतिः=विरतिर्विपरीताऽविरति, अनिवृत्ति हिंसाणि पापस्थानेभ्यो परिणामाभाव, सावध प्रवृत्तिरित्यर्थः । उपाया=क्रोधमानादय, तैः सचित्तस्य युक्तस्य आत्मनः कर्मक्षय ज्ञानावरणीयाद्यष्टनिष्क्रमणा नाश कर्तुमिच्छामि खलु इत्यन्वय ॥ सू० १३ ॥

अथ अप्पणो कम्मक्खण त इच्छामि ण देवानुप्पिया । अज्ञानमिच्छत अविरट्कसाय मचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तण) यदि ये जन्म जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं इन्हें दूर करने के लिये सुबलिक देव दानव भी समर्थ नहीं हैं केवल कर्म क्षय ही इनकी निवृत्ति का उपाय है—जब ऐसी बात है तो हे देवानुप्रिय । मे ज्ञानावरणीय के उदय से जनित आत्म परिणामरूप अज्ञान से—सशय विपर्यय आदि रूप मिथ्या ज्ञान से—मिच्छात्व मोहनीय के उदय से जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धा न रूप आत्मपरिणाम से—अथवा कुदेव आदि से सुदेव आदि की विपरीताभिनिवेश रूप बुद्धि से हिंसादिक पापस्थानो से अनिवृत्ति रूप परिणाम से सावध कार्यो मे प्रवृत्ति से क्रोधमान आदि रूप कपायों से सचित्त किये गये इन ज्ञानावरणीय आदि रूप आठ प्रकार के कर्मों को क्षय करने की इच्छा कर रहा हूँ । सूत्र " १३ "

अप्पणो कम्मक्खण त इच्छामि ण देवानुप्पिया । अज्ञानमिच्छत अविरट् कसाय सचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तण) जो जो कर्म जरा (धडपणु) वगेरे दुरती उभलीय छे, ओभनाथी बुद्धि भेणववानी सुणसिद्ध देव दानव पणु आभथ्य वरानता नथी इच्छत उर्भ-क्षय ज ओभनी निवृत्तिनो उपाय छे, त्यारे छे देवानुप्रिय । हु ज्ञान वरणीयता उदयनी जनित आत्मपण्डितमउप अज्ञानथी सशय विपर्यय वगेरेना मिथ्या ज्ञानथी, मिथ्यात्व मोहनीय । उदयनी जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धान रूप आत्म पण्डितमथी, अथवा तो कुदेव वगेरेमा सुदेव वगेरेनी विपरीताभिनिवेशउप बुद्धिबी, हिंसावगेरे पपना स्थानोथी, अनिवृत्तिरूप परिणामथी, सावध उभोम प्रवृत्तिथी बोध, मान वगेरे व्यायोथी नचित्त प्रवाम अवेला ज्ञानावरणीय वगेरे ना आठ प्रकारना उभोना क्षय थार छ ॥ सूत्र १३ ॥

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे कोडुबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया। वारवइए नयरीए सिघाडगनियग चउ-क्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सदेणं उग्घोसे माणा २ उग्घोसण करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया । थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मणसरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वाईसरे वा तलवरे वा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठि-सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयत-मणुपव्वयंति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्स-विय से मित्तनाइ । नियगसव्वधि परिजणस्स जोगखेम वट्ट-माण पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—‘तएण से कण्हे’ इत्यादि । तत खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या पुत्रेणैवमुक्तं सन् कौटुम्बिकं पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्पियाः । यूयं गच्छत द्वारवत्या नगर्या

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब (थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारों (एव वुत्ते समाणे) इस प्रकार कहने पर उन्होंने ने (कोडुबिय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागणाइ (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवने न्याये (थावच्चापुत्तेण) स्थापत्या पुत्रे (एव वुत्त समाणे) आ रीते कथु त्याये तेभ्ये (कोडुबिय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुत्रेणो जेलाव्या (सदावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु-राजमार्गेषु ' हत्थिकधवरगया ' हस्तिस्फन्धवरगता गजस्कन्धाख्ढा महता गहता शब्देन उद्घोषयन्तः २ ब्रुवन्त उद्घोषणं कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह- ' एव खलु ' इत्यादि ।

एव खलु हे देवानुप्रियाः । अयं स्यापत्यापुत्र ससारमयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिया ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी-राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तत्त्वरो वा कोटुमिकमाडमिकेभ्यश्चेष्टितेनापति-

(गच्छह ण देवानुप्पिया चारचडण नयरी ण सिंघाडग तियग चउक्कच च्चरजावहत्थिखधवरगया महया महया सहेण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) हे देवानुप्रियो । तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमें-राजमार्गोंमें- हाथी के स्कन्ध पर चढ़े हुए तुम सब लोग बड़े जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एव खलु देवानुप्पिया । यावच्चा पुत्ते ससारमउद्विगो भीण जम्म मरणा ण इच्छह अरहओ अरिद्धनेमिस्स अतिण मुडे भवित्ता पव्वइत्तण) हे देवानुप्रियो ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र ससार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा हैं-(त जो खलु देवानुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोटुमिय माडमिय इमसेट्टिसेणायड सत्थवाहे व थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणड) मो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एव वयासी) અને બેલાવને તેમને કહ્યું- (ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા । ચારચડણ નયરીણ સિંઘાડગતિયગચઉક્કચચ્ચર જાવ હત્થિસધવરગયા મહયા મહયા સહેણ ઉગ્ગોસેમાણા ૨ ઉગ્ગોસણ કરેહ) હે દેવાણુપ્રિયો ! તમે બાળો અને દ્વારવતી નગરીના શ્રંગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપથોમા, રાજમાર્ગોમા હાથી ઉપર સવાર થયેલ તમે બધા મોટા નાદે આમ ઘોષિત કરો- (એવ ચલુ દેવાણુપ્પિયા । યાવચ્ચાપુત્તે સસારમઉદ્વિગો ભીણ જમ્મમરણાણ ઇચ્છહ અરહઓ અરિદ્ધનેમિસ્સ અતિણ મુડે ભવિત્તા પવ્વઈત્તણ) હે દેવાણુપ્રિયો ! માલગો આ સ્થાપત્યાપુત્ર સસારભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ અને મૃત્યુથી ભયગ્રસ્ત થઈને અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે મુડિત બની દીક્ષાગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે (ત જો ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! રોયા વા જુવરા યા વા દેવી વા કુમારે વા ઈસરે વા તલવરે વા કોટુમિય માડમિય ઇમસેટ્ટિસેણાવડસત્થવાહે વ થાવચ્ચાપુત્તે પવ્વયતમણુપવ્વયતિ તસ્સ ણ કણ્હે વાસુદેવે અણુજાણડ) તો હે

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाने कोडुबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया। वारवइए नयरीए सिंघाडगनियग चउ-क्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सदेण उग्घोसे-माण २ उग्घोसण करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया । थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वाईसरे वा तलवरे वा कोडुबिय माडबिय इब्भसेट्ठि-सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयत-मणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्स-विय से मित्तनाइ । नियगसवधि परिजणस्स जोगखेम वट्ठ-माण पडिवहति त्तिकट्ठु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—‘तएण से कण्हे’ इत्यादि । तत् खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या पुत्रेणैवमुक्तं सन् कौटुम्बिकं पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्पिया’ । गृय गच्छत द्वारवत्या नगर्या

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब (थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारे (एव वुत्ते समाने) इस प्रकार कहने पर उन्होंने ने (कोडुबिय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्पारणाइ (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवने न्यादे (थावच्चापुत्तेण) स्थापत्या पुत्रे (एव वुत्त समाने) आ गीते उद्धु त्यादे तेभ्ये (कौडुबिय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुत्रोने बोलाव्या (सदावित्ता,

શુદ્ધાટકત્રિક ચતુષ્કચત્વરેષુ યાવત્-મહાપદેષુ=રાજમાર્ગેષુ 'હૃત્વિકૃત્ત્વરગયા' હૃત્વિકૃત્ત્વરગતા ગજસ્કન્ધાસ્કન્ધા મહતા મહતા શબ્દેન ઉદ્ધોષયન્તઃ = ગુપ્ત ઉદ્ધોષણ કુરુત । તદુદ્ધોષણસ્વરૂપમાહ-'એવ સ્વલુ' ઇત્યાદિ ।

એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! અય મ્યાપત્યાપુત્ર સસારમયોઢિગ્નઃ મીતો જન્મમરણેભ્યઃ અર્હતોઽરિષ્ટનેમેરન્તિકે મુળ્હો ભૂત્તા પ્રત્જિતુમિન્ડતિ, તદ્ તસ્માત્ કારણાત્ હે દેવાનુપ્રિયા ! યઃ ક્ષિત્ સલુ-રાજા યા યુવરાજો વા દેવી=રાણી વા રાજકુમારો યા ઈશ્વરો વા તત્ત્વરો યા કોઢુમ્મિકમાઢમિકેભ્યશ્રેષ્ઠિસેનાપતિ- (ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા ચારવહ્ણ નયરી ણ સિંઘાહમ તિયગ ચઙ્કકચ- ચ્ચરજાવહૃત્વિકૃત્ત્વરગયા મહયા મહયા સદ્દેણ ડગ્ધોસેમાણા ૨ ડગ્ધોસણ કરેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ જાઓ ઓર દ્વારાવતી નગરી કે શૃગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર યાવત્-ઓદિ-મહાપદોમે-રાજમાર્ગોમે- હાથી કે સ્કન્ધ પર ચઢે હુએ તુમ મન લોગ વઢે જોર ૨ વોલતે હુએ એસી ઘોષણા કરો (એવ સ્વલુ દેવાનુપ્પિયા ! યાવચ્ચાપુત્તે સસારમઙ્ગિગ્ને મીણ જન્મ મરણા ણ ઇચ્છહ અરહ્ઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ અતિએ મુઢેમવિત્તા પવ્વહ્સણ) હે દેવાનુપ્રિયો ! સુનો-યહ સ્થાપત્યાપુત્ર સસાર કે ભય સે ડહિગ્ન તથા જન્મમરણ સે ભયમીત હોકર અર્હત અરિષ્ટનેમિપ્રભુ કે પાસ મુઢિત થન દીક્ષા ગ્રહણ કરને કી ઇચ્છા કર રહા હૈં-(ત જો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા રાયા વા જુવરાયા વા દેવી વા કુમારે વા ઈમરે વા તલવરે વા કોઢુમ્મિય માઢમિય ઇમ્મસેઢિસેણાવહ્સત્ત્વવાહે વ યાવચ્ચાપુત્તે પવ્વયનમણુપવ્વયતિ તસ્સ ણ કણ્હે વાસુદેવે અણુજાણદ્) સો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો તોઈ રાજા,

પવ્વ વચાસી) અને ઝોલાવાને તેમને ડહુ-(ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચારવહ્ણ નયરીએ સિંઘાહમતિયગચઙ્કકચ્ચર જાવ હૃત્વિકૃત્ત્વરગયા મહયા મહયા સદ્દેણ ડગ્ધોસેમાણા ૨ ડગ્ધોસણ કરેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બાળો અને દ્વારવતી નગરીના શૃગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપદોમા, રાજમાર્ગોમા હાથી ઉપર મવાર થયેલ તમે બધા મોટા માદે આમ ઘોષિત ડરો-(એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! યાવચ્ચાપુત્તે સસારમઙ્ગિગ્ને મીણ જન્મમરણાણ ઇચ્છહ અરહ્ઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ અતિએ મુઢે મવિત્તા પવ્વહ્સણ) હે દેવાનુપ્રિયો ! માલજો આ મ્યાપત્યાપુત્ર મ આરભયથો બ્યાઢુગ તેમજ જન્મ અને મત્યુથી ભયત્રસ્ત થઈને અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પામે મુઢિત વઈને દીક્ષાગ્રહણ ડગ્ધાની ઇચ્છા રાખે છે (ત જો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! રાયા યા જુવરા યા વા દેવી વા કુમારે વા ઈમરે વા તલવરેવા કોઢુમ્મિય માઢમિય ઇમ્મસેઢિસેણાવહ્સત્ત્વવાહેવા યાવ ચ્ચાપુત્ત પવ્વયનમણુપવ્વયતિ તસ્સ ણ કણ્હે વાસુદેવે અણુજાણદ્) તો હે

સાર્થવાહા સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રવ્રજન્તમનુપ્રવ્રજતિ સ્થાપત્યાપુત્રેણ સહ યઃ કોઽપિ નિષ્ક્રમણ વર્તુમિચ્છતિ તસ્મૈ સ્વલુ કૃષ્ણવાસુદેવ 'અણુજાણડ' અનુજાનાતિ, આજ્ઞા દદાતિ । 'પન્ચાટુરસ્સત્રિય' પથ્થાદાતુરસ્યાપિ ચ-પથ્થાત્ જાતુરસ્ય=દ્રવ્યા-દ્યભાવાદ્ દુઃસ્વિતસ્ય તસ્ય=તત્સમ્પન્નિધનઃ મિત્રજ્ઞાતિનિજકસમ્પન્નિપરિજનસ્ય 'જોગશેમ' યોગક્ષેમ અલબ્ધલાભો યોગ લબ્ધપરિરક્ષણ ક્ષેમ તયોઃ સમાહારદ્વન્દ્વ યોગક્ષેમ વર્તમાન પ્રતિવહતિ યે પ્રવ્રજ્યાયા પ્રવૃત્તા મરિચ્ચન્તિ, તત્સમ્પન્નિમિત્રા-દીના યત્ સ્વલુ યોગક્ષેમરૂપકાર્ય કર્તવ્યતયા વર્તતે, તત્ સર્વ કૃષ્ણવાસુદેવઃ સપાદયિષ્યતીત્યર્થ । ઇતિ કૃત્વા ઇત્યેવ વિજ્ઞાપન મનસિ નિધાય ઘોષણા=વાર્તા-રૂપા, ઘોષયત યયેય વાર્તા દ્વારાવતીનગરી નિવાસિના સર્વેષા કર્ણગતા ભવેત્,

યુવરાજ, દેવી, રાજી, રાજકુમાર ઈશ્વર, તલવર, કૌટુમ્બિક, માળ્ડબિક, ઇન્દ્રિયશ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અથવા સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્ર કે સાથ દીક્ષા લેનાં ચાહતે હો ઉસલિયે કૃષ્ણવાસુદેવે આજ્ઞા પ્રદાન કરતે હૈં (પન્ચાટુર-સ્સ વિચ સે મિત્તનાઈનિયગસવધિપરિજનસ્સ જોગશેમ વદ્ધમાણ પઢિવહતિ ત્તિ કદ્દુઘોસણ ઘોસેહ જાવ ઘોસતિ) જો દીક્ષા લેનેવાલે કે કુટુબી જન કિસી મીં પ્રકાર સે દુઃસ્વી હોંગે તો उनके सबधी मित्र, ज्ञाति, निजक, सबधी परिजन के योग क्षेम को भी कृष्ण वासुदेव करेगे तात्पर्य इसका यह है कि जो जन प्रव्रज्या में प्रवृत्त होंगे उनके सम्पन्धी मित्रादिको का जो कर्तव्यतया योग-अलब्ध का लाभ, क्षेम-लब्ध का परिरक्षण रूप कार्य होगा वह सब कृष्ण वासुदेव सपादित करेगा " इस प्रकार की इस घोषणा को हे देवानुप्रियो ! तुम अपने चित्त में अच्छी तरह धारण कर जिस प्रकार यह बात द्वारावती नगरी

દેવાનુપ્રિયો ? જે ડોઠ રાજા, યુવરાજ, દેવી, રાજકુમાર, ઇન્દ્રિય, તલવર કૌટુમ્બિક, માળ્ડબિક ઇન્દ્રિય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ કે સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે દીક્ષા ગ્રહણ કરવા આહ્વા છે તેમના માટે કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા પ્રદાન કરે છે (પન્ચાટુરસ્સ વિચ સે મિત્તનાઈનિયગસવધિપરિજનસ્સ જોગશેમ વદ્ધમાણ પઢિવહતિ ત્તિ કદ્દુ ઘોસણ ઘોસેહ જાવ ઘોસતિ) દીક્ષાલેનાર કુટુબીઓ જે તેમની દીક્ષાભાદ ગમેતે પ્રકારે દુઃખી હશે તો તેમના સબધી, મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક સબધી પરિજનોનું યોગક્ષેમ પણ કૃષ્ણ વાસુદેવ કરશે આનો ભાવાર્થ એ પ્રમાણે છે કે જે માણસો પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરશે તેમના સબધી મિત્ર વગેરેનું જે કર્તવ્યતયાયોગ-અલબ્ધનો લાભ, ક્ષેમ-લબ્ધનું પરિરક્ષણરૂપ કાર્ય થશે-ને બધું કૃષ્ણ વાસુદેવ પુરૂ કરશે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોષણાને તમે સારીપેઠે ચિત્તમા ધારણ કરો જેથી દ્વારાવતી નગરીના દરેકે દરેક માણસ

तथोच्चैः स्वरेण दुन्दुभ्याद्विगतैः सह भारणं कुरुतेत्यर्थः । यावद् घोषयन्ति । कृष्णवासुदेवस्यादेशानुसारेण आदेशकारिणः पुरुषाः द्वारावत्यां नगर्यां घोषणा कृतवन्त इत्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तएण थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हाय सव्वालकारविमूसिय पत्तेयं २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरुद्धं समाणं मित्तणाइपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउव्भूय, तएण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउव्भवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—

जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि (कलसेहि) ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहतो अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागातिपडाग पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहइ ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । स्थापत्यापुत्रस्य अनुरागेण=स्नेहेन पुरुषमहस्स निष्क्रमणाभिमुख्यं स्नातं सर्वालङ्कारनिभूषितं प्रत्येकं प्रत्येकं पुरुषसहस्रवाहिनीषु के समस्त मनुष्यो के कणे गोचर हो सके इस तरह से बड़े २ जोर से डुडुभि आदि बाजो के साथ करो । इस तरह कृष्णवासुदेव की इस आज्ञा को उन आदेशकारी पुरुषो ने प्रमाणभूत मान कर उसे द्वारावती नगरी में घोषित करके सुना दिया । सूत्र “१४”

‘तएण थावच्चा पुत्तस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) स्थापत्यापुत्र के अनुराग से (पुरिससहस्स) १ हजार पुरुष (निक्खमणाभि

मुख्यी आ वात सारा गीते पछोखी राके तमे मोटेथो डुडुलि वगेरे वाज्ज ओ पगाडो अने आ वातनी घोषण्णो उरो कृष्ण वासुदेवनी आज्ञाने कौटुणिक पुरुषोओ सप्रभाण्ण भानीने द्वाशवता नगरीभा तेनी घोषण्णो उरो ॥ सूत्र १४ ॥

(तएण थावच्चापुत्तस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्यागणाह (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) स्थापत्यापुत्र प्रथे विशेष प्रेम डोवाने जरण्णे (पुरिस सहस्स) ओके डेनर पुरुषो (निक्ख

शिविकासु दुरूढ=समारूढ सत् मित्रज्ञातिपरितृप्त स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम् । तत खलु सकृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउञ्चवमाण' प्रादुर्भूयत् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अगदीत्-यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिप्रेतः, तथैव 'सेयापीएहि' श्वेतपीतैः जलपूर्णैरुष्णसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुकः पुरुषमहस्रसहित-स्थापत्यापुत्रं स्नपयति, स्नपयित्वा यागद्वमर्चालङ्कारविभूषित कृत्वा पुष्पसहस्रवाहिनीं शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेवः द्वारायतीनगरीम् यभागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमेः उग्रोपरि-उग्र छत्रत्रय, पताका निपताका=पताकोपरिपताका पुरुषवृन्दैः सह पश्यति । 'विज्जाहरचारणे' विज्जाहरचारणान् विद्यापराण्=

सुह) निष्क्रमण के सम्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (पहाय) उन्होंने स्नात करके (सञ्वालकरविभूषित) सब प्रकार के अलंकारों से अपने २ शरीरों को विभूषित किया (पत्तेय २ पुरि ससहस्रवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समान मित्तणाडपरिवुड) बाद में मित्रादि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेंसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिविकापर आरूढ होकर (यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउञ्चभूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रसमनिय पाउञ्चवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा ता (पासित्ता कौटुम्बिय पुरिसे सदावेइ) देखकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा— (जहा मेहस्स निस्सखमणाभिसेओ तहेव सेया पीएहि पहावेइ, पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ - पासित्ता

मणाभिमुह) निम्नभक्षु (दीक्षा) भाटे तैयार थछ गया (पहाय) तेओ नडाया, (सञ्वालकरविभूषित) भधी जतना धरेखाओथी तेभने पोताना शरीर शलुगार्या (पत्तेय २ पुरिससहस्रवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समान मित्तणाई परिवुड) त्थार णाड मित्र वगेरे परिज्जनेनी साथे तेओभाथी दरेड दीक्षार्थी ओक डणर पुरुषो वडन डरे ओरी पावणी उपर सवार थछने (यावच्चा पुत्तस्स अतिय पाउञ्चभूय) स्थापत्या पुत्रनी पाने आव्यो (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रसमनिय पाउञ्चवमाण पासइ) कृष्णवासुदेवे ज्य रे ओकडणर पुरुषोने स्थापत्यापुत्रने त्या आवेला ओया (पासित्ता कौटुम्बिय पुरिसे सदावेइ) तेभल्ले कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या (सदावित्ता एव वयासी) बोलायीने तेभने कल्लु (जहा मेहस्स निस्सखमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि पहावेइ पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा

चारणश्रमणां यावत्-अत्र 'जम ए य देवे ओष्यमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्धेयः, जृम्भरुदेवाश्च गगनादपतरतः पश्यति, दृष्ट्वा क्षिप्रकान् 'पञ्चोरुह' प्रत्यवरो-
हति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्त पुरओ काउं
जेणेव अरिहा अरिष्टनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेस
सव्वं तं चेव आभरणं तएणं से थावच्चागाहावइणा हसल-
कखणेणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारि
धारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाति असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
वयासी-

विज्ञाह्यचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहइ) जिस प्रकार भैरव
कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ या उसी प्रकार
जलपूर्ण वेतपीतकलशों द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव
ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक
किया। अभिषेक कर के फिर उन्होंने उसे सर्व प्रकारके अलकारोंसे
विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका
पर आरुढ़ कराकर द्वारावती नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर लेनले।
चलते - जब उन्होंने ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के उन्नोपरिछत्र-तीन छत्रों
हो और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दों के साथ देखा-तथा विद्याधरों
को चारणश्रमणों को आकाश से उतरते हुए जृम्भक देवों को देखा-
तो देख कर वे शिबिका से नीचे उतरे ॥ सू० १७ ॥

ह्यचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहइ) जेभ भेधकुमारने निष्क्रमण
मणुनिषेक थये तेभज्जणणी परिपुष्पुं सइइ पीणा कण्ठो वडे तेभज्ज याही
मोताना धडाओ वडे कृष्णवासुदेवे दीक्षार्थी स्थापत्या पुत्र तेभज्ज तेनी साधेना
ओउ हन्तर पुरुषोना अभिषेक थये अभिषेक पछी तेभजे तेने भधा धरेण्णो
थो मणुगार्थी मणुगार्थी ग्राह तेओ पुरुष सहस्र वाहिनी पावणी उपर स्था
पत्या पुत्रने जेमाडीने द्वारावती नगरीनी नगणर वच्चे ना भार्गे थर्धने साध्या
रता रता न्यारे तेओओ अर्द्धन अर्द्धनेमि प्रभुना छत्र उपर छत्र आभ
त्रणु उपरा उपनी छत्रो, पताजानी उपर पताजओने तेभज्ज पुरुष समान्ने
जेथो अने विद्याधरेने थारणु श्रमणोने आज्ञाभाधी नीचे उतरता, ते ज
जृम्भकदेवोने जेथो त्यारे जेधने तेओ पावणी उपरथी नीचे उतरती पड्या ॥१५॥

शिविकासु दुरुद्ध=समारुद्ध सत् मित्रज्ञातिपरिवृत स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम् । तत् खलु सकृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउम्भवमाण' प्रादुर्भवन् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्भिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् गच्छयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणकारेण अगादीत्-यथा मेरुस्य निष्क्रमणाभिपेक्ष, तथैव 'सेयापीपहि' श्वेतपीतैः जलपूर्णैरप्यसुवर्णमयैः कल्पैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुक पुरुषमहस्रसहित-स्थापत्यापुत्र स्नपयति, स्नपयित्वा यात्रामर्वालङ्कारविभूषित कृत्या पुनःपसहस्रवाहिनीं शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेव द्वारागतीनगरीम यमागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमे' उग्रोपरिच्छत्र उन्नयय, पताकातिपताका=पताकोपरिपताका पुरुषवृन्दै सह पश्यति । 'विज्ञाहरचारणे' मित्राग्रचारगान् विद्याधरान्=

मुह) निष्क्रमण के समुत्पन्न हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (पहाय) उन्होंनेस्नात करके (सन्वालकरविभूषित) सभ प्रकार के अलंकारों से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तय २ पुरि ससहस्रवाहिणीसु सित्रियासु दुरुद्ध समान मित्तणाडपरिवुड) बाद में मित्रादि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेंसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिविकापर आरुद्ध होकर (यावच्चापुत्तस्र अतिय पाउम्भूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रसमतिय पाउम्भवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा ता (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सहावेइ) देखकर उन्होंने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा— (जहा मेहस्र निस्समणाभिसेओ तहेव सेया पीपहि पहावेइ, पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ - पासित्ता

मणाभिमुह) निष्क्रमण (दीक्षा) भाटे तैयार थछ गया (पहाय) तेओ नडाया, (सन्वालकरविभूषित) अच्छी नतना धरेछाओथी तेभने पोताना शरीर शयुगार्थी (पत्तय २ पुरिससहस्रवाहिणीसु सित्रियासु दुरुद्ध समान मित्तणाई परिवुड) तयार ग्राह मित्र वगेरे परिजनोंनी साथे तेओभाथी दृष्ट दक्षार्थी ओछ छल्लर पुरुषो वडन उरे ओवी पालणी उपर सत्तार थछने (यावच्चा पुत्तस्र अतिय पाउम्भूय) स्थापत्या पुत्रनी थाने आव्यो (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रसमतिय पाउम्भवमाण पासइ) कृष्णवासुदेवे व्य रे ओछल्लर पुरुषोने स्थापत्यापुत्रने त्या आवेत्ता जेथा (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सहावेइ) तेभले कौटुम्भिक पुरुषोने ओलाव्या (सहावित्ता एव वयासी) ओलावीने तेभने छल्लु (जहा मेहस्र निस्समणाभिसेओ तहेव सेयापीपहि पहावेइ पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्ञा

चारणश्रमणान् यावत्-अ 'जभण य देवे जोवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्नेयः, जृम्भकदेवाश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिविकात् 'पच्चोरुहड' प्रत्यवरो-
हति अवतरति ॥ १५ ॥

मूल्म-तएणं से कणहे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं
जेणेव अरिहा अरिट्टिनेमी तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता सेस
सव्व तं चेव आभरण० तएणं से थावच्चागाहावइणा हसल-
क्खणेणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारि
धारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाति असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
वयासी-

विज्ञाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहड) जिस प्रकार मेघ
कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ या उसी प्रकार
जलपूर्ण वेतपीतकलशों द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव
ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्वापत्यापुत्र का अभिषेक
किया। अभिषेक कर के फिर उन्होंने उसे सर्व प्रकारके अलकारोंसे
विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका
पर आरुढ़ कराकर द्वागवती नगरी के ठीक बीचो बीच से होकर लेचले।
चलते २ जब उन्हो ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के उत्रोपरिछत्र-तीन छत्रों
को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दों के साथ देखा-तथा विद्याधरों
को चारणश्रमणों को आकाश से उतरते हुए जृम्भक देवों को देखा-
तो देख कर वे शिविका से नीचे उतरे ॥ सू० १५ ॥

हरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहड) जेभ मेवडुमारनेो निष्क
मण्णालिषेक थये तेमज्ज जणथी परिपूर्णं सईद पीणा ढण्णो वडे तेमज्ज थाही
नेनाना धडाओ वडे कृष्णवामुदेवे दीक्षार्थी स्थापत्या पुत्र तेमज्ज तेनी साथेना
ओक ढण्णर पुरयोनेो मलिषेक उर्यो अभिषेक पटी तेमखे तेने जरा धरेण्णोओ
थी गण्णार्थो शण्णार्थो भाद तेओ पुरुष मड्ठव वाडिनी पावथा उपर स्था
पत्या पुत्रने जेमाडीने द्वागवती नगरीनी जगज्ज वड्ठे ना भागे थरने थाह्या
जता जता न्नारे तेओओ अह त अज्जिनेमि प्रभुना जत्र उपर छत्र आम
त्रण्ण उपरा उपरी छत्रो, पताजानी उपर पताजओने तेमज्ज पुरुष गमान्ने
नेथो अने विद्याधरने चारण श्रमणोने आजागभाथी नीचे उतरता, ते
जृम्भकदेवोने नेथो त्थारे नेधने तेओ पालथी उपरथी नीचे उतरी पड्या ॥१५॥

જહ્યવ્વં જાયા ! ઘડિયવ્વ જાયા ! પરિઘમિયવ્વ જાયા !
અસિ ચ ણં અદ્દે ણોપમાણ્યવ્વ જામેવાદિસિ પાઠવ્મૂતા તામેવ
દિસિ પડિગયા ॥ સૂ. ૧૬ ॥

‘ તણ સે કળ્હે ’ इत्यादि ।

ટીકા—તતઃ સ્વલ્પ સ કૃણવામુદેવઃ સ્થાપત્યાપુત્ર પુત્ર, ‘ કાઠ ’ કૃત્વા
યત્રૈવ અર્હન્ અરિષ્ટનેમિઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ અમુશ્ચતિ । ઉપાગમ્ય શેષ સર્વં તદેવ
શેષ=આદક્ષિણપ્રદક્ષિણાદિક સર્વં ચરિત યત્ સ્વલ્પ મેઘકુમારસ્ય, તદેવાત્ર વાચ્યમ્ ।
સ્થાપત્યાપુત્રોઽર્હતોઽરિષ્ટનેમે. સમીપાદીશાનકોણદિગ્ભાગે સ્વયમેવ ‘ આમરણમ
હ્લાલકારે ’ આમરણમાલ્યાલકારાન્ ‘ ઓમુયડ ’ અમુશ્ચતિ અતારયતિ । તતઃ
સ્વલ્પ સા સ્થાપત્યાગાથાપત્ની હમલક્ષણેન હસસ્વરૂપેણ શુક્લવર્ણેન ‘ પટગસાહણ
ણ ’ પટશાટકેન પૃથુલસ્ત્રેણ આમરણમાલ્યાલકારાન્ પ્રતોચ્છતિ પ્રતિગૃહ્ણતિ ।

તણ સે કળ્હે વાસુદેવે इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्णवासुदेवे
(थावच्चा पुत्त) स्थापत्या पुत्र को (पुरओकाठ) आगे करके (जेणेव
अरिहा अरिष्टनेमि तेणेव उवागच्छइ) जहा अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु थे
बहा गये (उवागच्छित्ता सेस मव्व त चेव आभरण०) वहा जाकर
उन्होंने ने प्रभु की आदक्षिण प्रदक्षिणा पूर्वक वदना की । मेघकुमार
ने दीक्षा अंगीकार करते समय जो कुछ किया वह सब वहा स्थापत्या
पुत्र ने भी किया बाद मे स्थापत्या पुत्रने अरिष्टनेमि प्रभु के पास से
ईशानकोण में जाकर स्वय ही अपने माला और अलकारो को उत्सारा
(तण से) इस समय वहां उपस्थित रही हुई उसकी माता गाथा
पत्नी ने इस के जैसी शुक्लवर्णवाली अपनी पटशाटिका में उनअवता-

(तण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि) ॥

ટીકાર્થ—(તણ) त्पारभाट (से कण्हे वासुदेवे) कृष्णवासुदेव (थावच्चा पुत्त)
स्थापत्या पुत्रने (पुरओ काठ) आगण राभीने (जेणेव अरिहा अरिष्टनेमी
तेणेव उवागच्छइ) तथा अर्हं त अरिष्टनेमि प्रभु इति तथा जया (उवागच्छित्ता
सेस सव्व त चेव आभरण०) तथा जयने तेभल्ले प्रभुनी आदक्षिण प्रद
क्षिणनी साथे वदना करी मेघकुमार दीक्षा वणते जे कथं कथुं इति ते णधु
स्थापत्यापुत्रे पणु कथु त्पार भाट स्थापत्यापुत्रे अरिष्टनेमी प्रभुनी पासेथी
ईशान ओणुमा जयने जते ज भाणा अने धरेण्णओ उतार्या, (तण से) ते
वणते तेनी माता स्थापत्यागाथापत्नी त्या इती तेभणे इ स जेवी स्वच्छ भइइ

‘ हारवारिधारिष्ठिमुत्तावलिप्पगामाड ’ हारवारिगाराणिमुत्तारणी प्रकाशानि
 ‘ असूणि ’ असूणि ‘ विणिम्मुचमाणी २, विनिमुञ्चन्ती २ मुक्ताहारजलगरा वि
 कीर्णमुक्तावत्स्वत्राश्रुविन्दन पुन. पुनर्निपातयन्तीत्यर्थः, एव=वक्ष्यमाण प्रकारेण
 अवादीत्-यत्तितव्य जात ! = हे पुत्र ! सयमारागनायं यत्नं कुरु, प्रदितव्य जात !
 हे वत्स ! सयमे सलग्नोभव, पराक्रमितव्य जात ! = हे जङ्ग ! सयमप्रतिकूलान्
 आलस्यादीन् वारयितुं कायादियल प्रदर्शय, आस्पृश्य अर्थे ‘ णो पमाएयव्व ’ नो
 प्रमादितव्यम्=प्रमादस्य वशे नृदापि मा भू, इत्युक्त्वा = इति कथयित्वा, स्थाप
 त्यापुत्रस्य माता स्थापत्या गाथापत्नी यस्यादशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आयाता
 तस्यामेवदिशि प्रतिगता ॥ सू० १६ ॥

रित माला अलकारों को लेकर रखलिया। रखते समय वह (हार
 वारिधार छिन्न मुत्तावलिप्पगामाड असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
 वयासी) हारवारिधारा और छिन्नमुक्तावली के समान आसुओं को
 धार २ बहाती जानी थी। इसी स्थितिमें उनी हुई उस स्थापत्या गाथा
 पत्नी ने फिर अपने पुत्र से उस प्रकार कहा—(जड़यव्व जाया ! घडियव्व
 जाया ! परिक्कमियव्व जाया ! अस्मि च ण अट्टे णो पमाएयव्व जामेव
 दिसिपाउम्भूया तामेव दिसि पडिगया) हे पुत्र ! सयम की आराधना
 के लिये तुम प्रयत्नशील रहना। हे पुत्र ! तुम सयम में सलग्न रहना।
 हे पुत्र सयम के प्रतिकूल आलस्य आदिको को निवारण करने के लिये
 अपने शारीरिक आदि बल को प्रस्फुरित करते रहना। इस सयम रूप
 अर्थमें हे बेटा ? तुम कभी भी एरुक्षण भी प्रमादके वशवर्ती मत होना।
 ऐसा कहकर वह माता स्थापत्यागाथा पत्नी जिस दिशा से आई थी
 उसी दिशा में वापिस चली गई ॥ सू० १७ ॥

साडीमा ते उतारेली भाणा अने धरेणुआ वगेरे लार्थ लीधा भाणा अने धरेणु।
 ओ! माडीमा भूकती वणते (हारवारिधारिष्ठिमुत्तावलिप्पगामाड असूणि विणिम्मुच
 माणी २ एव वयासी) तेनी आणोमाथी नीकणता आसुओ। डार पाणीनी
 धारा अने छिन्न मुक्तावलीनी जेम सतत टपकी ग्हा हुता आम आसुलीनी
 आणोमाथी स्थापत्यागाथा पत्नी पोताना पुत्रने कडेवा लागी—जड़यव्व जाया ! घडि
 यव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया अस्मि च ण अट्टे णो पमाएयव्व जामेव
 दिसि पाउम्भूया तामेव दिसि पडिगया) हे पुत्र ! सयमनी साधना माटे तमे
 सहा सावध रहजे हेवत्तम् । सयमनी साधना माटे प्रतिकूल आणस्थ वगेरेना
 निवारण माटे पोताना शारीरिक वण प्रस्फुरित करता रहजे जे आ सयमनी
 साधनामा तमे डोह पणु वणते प्रमाद करता नहि आ प्रमाद सणोधीने
 स्थापत्यापत्नी तमाथी पोताने जे पाछी वणी सूत्र ॥ १६ ॥

मूकम्—तएण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ जाव पव्वइए । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्टनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ चउदसपुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वट्ठहि जाव चउत्थेणं विहरति ।

तएण अरिहा अरिट्टनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इब्भाइयं अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्टनेमि वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते तुब्भेहि अब्भणुन्नाउ समाणे सहस्सेण अणगारेणं सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरित्तिए, अहासुह देवाणुप्पिआ । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धि तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिणं वहिया जणवयविहार विहरइ ॥ सू० १७ ॥

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि ।

टीका—ततः तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषमहस्त्रेण सार्धं स्वयमेव

‘तएण से थावच्चा पुत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) हमके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्टिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोका पचमुट्ठी लोंच किया—(जाव पव्वइए) यावत्

(तएण से थावच्चा पुत्ते) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्पराभाइ (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससहस्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ) दीक्षा पायेला ओक हजार पुरुषोनी साथे पोताना वाणतु पाथ खुणी लुयन कथुं (जाव पव्वइए) अनेर

પશ્ચમુષ્ટિક લોચ કરોતિ કૃત્યા ચ યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સહસ્રપુરુપે સહ સ્થાપત્યાપુત્રો
 ઈદરિષ્ટનેમેઃ સમીપે ચત્વારિમહાવ્રતાનિ ઉચ્ચારિત્યાન્ । તતસ્તદનન્તર સસ્થાપત્યા
 પુત્રઃ ‘અણગારે’ અનગારઃ દ્રવ્યતો ભાવતશ્ચ મુનિર્જાતઃ, સ કીદૃશ્ય ઇત્યાહ-‘ઈરિ-
 યાસમિ’ ઈર્યાસમિત ઈર્યાસમિતિઃ યતનાપૂર્વક ગમન, તયા સમન્વિત, યથા
 કથમપ્યન્યજીવિરાધના ન સ્યાત્તથોપયોગપૂર્વકગમનવાનિત્યર્થઃ, ‘ભાસાસ-
 મિ’ ભાસાસમિતઃ ભાસાસમિતિયુક્ત યાવત્ વિહરતિ=યાવન્હન્દેન ‘અણાસ-
 મિ’, આયાણમહમત્તનિક્ષેવણાસમિ’, ઉચ્ચારપાસવળખેલજલ્લસિધાણપરિદ્વા
 વણિયા સમિ’ ” ઇત્યાદિ વાન્યમ્ । અણાસમિત,=અણાસમિતિયુક્તઃ નિર્દોષ-
 મિસાગ્રહણશીલ, આદાનમાણ્ડામનિક્ષેપણાસમિતઃ= માણ્ડામાત્રાદ્યુપકરણાનામ્
 આદાને ગ્રહણે નિક્ષેપણાયા રથાપને ચ યા સમિતિસ્તયા યુક્ત, ઉચ્ચારમસ્રવળ

પ્રવ્રજિત હોકર ડસને સહસ્ર પુરુષોંકે સાથ અરિષ્ટનેમિ પ્રભુકે સમીપ ફિર
 પચમહાવ્રતોંકા ઉચ્ચારણ ક્રિયાં । ઇસ તરહ વે સ્થાપત્યાપુત્ર અથ દ્રવ્ય ઔર
 ભાવ દોનોં રૂપસે અનગારાથસ્થાપન્ન વન ગયે । યહી વાત (તણ સે યાવ
 ચ્ચા પુત્તે અણગારે જાણ) ઇન પદો દ્વારા વ્યક્ત કી ગઈ હૈ । (ઈરિયા-
 સમિ, ભાસાસમિ જાવ વિહરઈ) વે યતના પૂર્વક ચલને લગે ઈર્યા
 સમિતિ સે યુક્ત વન ગયે- જિસ તરહ કિસી ભી અન્ય જીવ કી વિરાધના
 ન હો ઇસ તરહ ઉપયોગ પૂર્વક ચલને લગે ભાપા સમિતિ આદિ
 સમિતિ સે યુક્ત હો ગયે । યદા યાવત્ શબ્દ સે અણાસમિ, આયાણમહમત્તનિક્ષેવણાસમિ, ઉચ્ચારપાસવળખેલજલ્લસિધાણ-
 પરિદ્વાવળિયા સમિ’ ” ઇન અવશિષ્ટ સમિનિયોં આદિ કા ગ્રહણ હુઆ
 હૈ । નિર્દોષ મિસા લેના અણા સમિતિ હૈ । માણ્ડામત્રાદિ ઉપકરણોં
 કે આદાન મેં ગ્રહણ મેં ઔર નિક્ષેપણ મેં ઉપયોગ પૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરના

પ્રવ્રજિત થઈને તેણે એક હજાર પુરુષોની સાથે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની નામે પથ
 મહાવ્રતોનું ઉચ્ચારણ કર્યું આ ગીતે તે સ્થાપત્યા પુત્ર દ્રવ્ય અને ભાવની
 અપેક્ષાએ અનગાર અવસ્થાપત્ત થઈ ગયા આ વાત (તણ સે યાવચ્ચાપુત્તે
 અણગારે જાણ) આ પદો વડે પ્રકટ કરવામા આવી છે તેઓ એવા અણગાર
 થયા તે નીચેના સૂચથી જાણે છે (ઈરિયા સમિ, ભાસા સમિ, જાવ વિહરઈ)
 ઈર્યાસમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા એટલે કોઈપણ જીવને વિરાધના (ડબ્ડ) થાયનહિ
 એવી રીતે જતનથી ચાલવા લાગ્યા તે ભાસાસમિતિ વગેરે સમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા
 ‘યાવત્ રાખવી (અણાસમિ આયાણમહમત્તનિક્ષેવણાસમિ, ઉચ્ચાર
 પાસવળખેલજલ્લસિધાણપરિદ્વાવળિયા સમિ) આ સમિતિઓ વગેરેનું ગ્રહણ
 થયું છે નિર્દોષ મિસા સ્વીકારથી ‘અણા-સમિતિ’ છે ભાસામત્રાદિ ઉપકરણોના
 આદાન એટલે ગ્રહણમા અને નિક્ષેપણ મૂકવામા ઉપયોગ પૂર્વક-પ્રવૃત્તિ થવી તે

मूलम्—तएण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ जाव पव्वइए । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिण भासासमिण जाव विहरइ, तएण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइ चउदसपुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वडूहि जाव चउत्थेण विहरति ।

तएण अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इव्भाइय अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते तुव्वहेहि अव्वभ गुन्नाउ समाणै सहस्सेण अणगारेण सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिआ । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिणं वहिया जणवयविहार विहरइ ॥ सू० १७ ॥

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि ।

टीका—तत* तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्र* पुरुषमहस्त्रेण सार्धं स्वयमेव

‘तएण से थावच्चा पुत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) हमके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पचमुट्ठी लोच किया—(जाव पव्वइए) यावत्

(तएण से थावच्चा पुत्ते) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्पारणाद (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ) दीक्षा पाभेत्ता ओष्ठ उन्नत पुरुषोन्नी साथे पोताना वाणनु पाथ भुञ्जीं वुत्थन कथुं (जाव पव्वइए) अनेर

रहित अनास्रय', हिंसादिवर्जितः, अममः, ममत्वरहित, अकिंचन द्रव्यभावपरिग्रहवर्जितः उन्मग्न्यन्धः, स्नेहरहितः, निरुपलेपः—द्रव्यभावलेपवर्जितः, कास्यपात्रमिष मुक्ततोयः तोयरूपस्नेहरहितत्वात्, शङ्ख इव नीरञ्जनः रागमम्बन्धरहितत्वात्, जीवत्वापतिहतगतिः सर्वदशविहारित्वात्, जात्यकनकमिष जातरूप निरतिचारसयमरत्नात्, गगनमिष निरालम्बनः देशग्रामकुलाद्यान्मन्धरहितत्वात्, आदर्शफलक इव प्रकटस्वभावः दर्पणवन् स्वच्छस्वभावत्वात्, वायुरि वा प्रतिबद्धः क्षेत्रादिषु प्रतिबन्धरहितत्वात्, शारदमल्लिमिवशुद्धहृदय = शरदतुल्यवन्निर्मलहृदयः

से वर्जित हृण-परिनिवृत्त हो गये—मनवचनकाय के सन्ताप से रहित बन गये। अनास्रव- हिंसादि पापों से रहित हो गये, अममता भाव से रहित हो गये, अकिंचन हो गये, द्रव्य और भावरूप परिग्रह से मुक्त बन गये। स्नेह रहित हो गये निरुपलेप हो गये द्रव्य भाव लेप से रहित हो गये। तोय जलरूप स्नेह से रहित होने के कारण कास्य पात्र की तरह वे मुक्ततोय बन गये। राग के सम्बन्ध से रहित होने के कारण वे शङ्ख की तरह निर्मल हो गये। सर्व देश में विहारी होने के कारण वे जीव की तरह अप्रतिबन्ध विहारी बन गये। निरतिचार सयम के पालक होने के कारण वे शुद्धसुवर्ण की तरह वे जातरूप हो गये। देश, ग्राम आदि के आलम्बन से रहित होने के कारण वे गगन की तरह निरालम्ब हो गये। दर्पण की तरह स्वच्छ स्वभाव से युक्त होने के कारण वे प्रकट स्वभाव हो गये। क्षेत्रादिकों में प्रतिबन्ध रहित

सन्तापथा रहित यथा अनास्रव—हिंसा वगैरे पापकायोंकी रहित यथा, अममता भावधी रहित यथा, अकिंचन यथा, तेमज्ज ४०५ ने लावना परिग्रहवी मुक्त यथा, स्नेहरहित यथा, निरुपलेप यथा, द्रव्य ने भाव लेपधी रहित यथा, तोय (पाणी) इष स्नेह वगैरे होवाने वरिष्ठे ते कास्यपात्रनी जेम मुक्त तोय " यथा रागना सम्बन्ध वी रहित होवा जल ते गगनी जेम निर्मल यथा सर्व देशोभा विहार करनार होवावी ते जीवनी जेम अप्रतिबद्ध गतिवाणा (जेनी गति व्याय देशाय नहि उ अवा) यथा निरतिचार समय ने पाणनाग होवा वी ते शुद्ध मोनानी जेम जल इष यथा, शङ्ख, गाम वगैरे ना आलम्बन वी रहित होवा जल ते आलम्बन पीठे निरालम्ब यथा अरीसाना जेम निमज्ज स्वभावना होवावी ते ' प्रकट स्वभाव ' वागा यथा, श्रेय वगैरेभा प्रतिबन्ध वगैरे होवावी ते पननानी जेम अप्रतिबद्ध विहारी यथा, कपायो

શ્લેષ્મજલ્લશિઘ્વાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ ઉચ્ચારાદીના પરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ =
 ઉત્સર્જને શાસ્ત્રોક્તવિધિપ્રવૃત્તિ, તથા યુક્ત ઇત્યર્થ । સ મનઃ મમિત વચ સમિત
 કાયસમિતઃ, મનોગુપ્તઃ વચનગુપ્તઃ કાયગુપ્ત ગુપ્તેન્દ્રિયઃ ઇન્દ્રિયાણામસત્પ્રવૃત્તિનિ
 વર્તનાત્ ગુપ્તબ્રહ્મચર્યઃ અક્રોધઃ અમાનઃ અમાયઃ અલોભ અતએવ શાન્તઃ, પ્રશાન્તઃ
 પ્રશશભાવસમ્પન્નઃ, ઉપશાન્તઃ, કપાયકારણર્જિત. પરિનિર્વૃતઃ, યોગત્રયસન્તાપ-

इसका नाम भाण्डामन्त्रानिक्षेपणा समिति है तथा उभयकाल प्रतिलेखना
 करना उच्चार, प्रस्त्रवण, श्लेष्म, जल्ल शिङ्घाण इनके परिष्ठावन
 करने में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार प्रवृत्ति करना यह उच्चार प्रस्त्रवण
 श्लेष्म जल्ल शिङ्घाण परिष्ठापनिका समिति है । इसी तरह वे
 स्थापत्यानगार मनः ममिति से, वचन समिति से कायसमिति से
 मनोगुप्ति से वचन गुप्ति से कायगुप्ति से युक्त हो गये तथा इन्द्रियों
 की असत् विषयो में प्रवृत्ति के निवर्तन से, गुप्तेन्द्रिय हो गये । मन,
 वचन और काय से पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले होने से गुप्त
 ब्रह्मचारी हो गये क्रोध कपाय से सर्वथा रहित होने से अक्रोध मान
 कपाय के अभाव से अमान, मायाकपाय के अभाव से अमाय,
 लोभकपाय के अभाव होने से अलोभ परिणति वाले बन गये । इसी
 लिये वे शान्त प्रशान्त प्रशम भाव सम्पन्न, उपशान्त- कपायों के कारणों

ભાડામન્ત્રાનિક્ષેપણા સમિતિ છે, તેમજ બંને કાળમાં પ્રતિ લેખના કરવી આ ચોથી
 સમિતિ છે ઉચ્ચાર, પ્રસ્ત્રવણ શ્લેષ્મ, જલ્લ, શિઘ્રાણ એમનું પરિષ્ઠાવન કરવામાં
 શાસ્ત્રમાં કહ્યા મુજબ પ્રવૃત્તિ કરવી આ ઉચ્ચાર પ્રસ્ત્રવણ શ્લેષ્મ જલ્લ શિઘ્રાણ પરિ
 ષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે આ સમિતિથી પણ તેઓ યુક્ત હતા આ રીતે સ્થાપત્યા
 નગાર મન સમિતિથી, વચન સમિતિથી, કાય સમિતિથી, મનોગુપ્તિથી કાય
 ગુપ્તિથી યુક્ત થયા તે ઇન્દ્રિયોની અસત વિષયોમાં પ્રવૃત્તિના નિવર્તનથી
 ગુપ્તેન્દ્રિય થયા તે મન વચન અને કાય (શરીર) થી પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યનું
 પાલન કરનાર હોવા બદલ ગુમ-બ્રહ્મચારી થયા તે સપૂર્ણ રીતે ક્રોધ-કપાય
 વગર હોવા બદલ અક્રોધ માન કપાયના અભાવથી અમાન, માયા કપાયના
 અભાવથી અમાય, લોભ-કપાયના અભાવથી અલોભ પરિણતિવાળા થયા
 અટલા માટે જ તે શાન્ત, પ્રશાન્ત પ્રશમભાવ સમ્પન્ન, તેમજ ઉપશાન્ત કપાયો
 ના કારણેથી વર્જિત થયા-પરિનિર્વૃત થયા-મન, વચન, અને કાયાએ ત્રણ યોગના

सूर्य इव दीप्ततेजाः परेषा क्षोभत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दस्वप्नप्ररूपः परीपहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभ इव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्यात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुधरेव सर्वस्पर्शवि-सहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेश्यादिलब्धि-मत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगरस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति । प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदान्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः—सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽऽरण्यादिषु, कालतः—समयावलिक्कादिषु, भावतः क्रोधभयहास्यादिषु । स

से युक्त हो गये । दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये । उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गम्भीर हो गया । परीपह और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरु की तरह अप्ररूप बन गये । गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये । उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये । शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवी) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये । तेजो लेश्यादि लब्धि सपन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (मग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था । यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है । द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

क्षेत्र, पमाउनर तेजथी युक्त होवाथी ते सूर्यनी पेटे हीस तेज वाजा थया उदार हुता तेथी सागरनी जेम तेमतु डैयु गभीर थध गयु परीपहो अने उपमगोना आकरा प्रहारेथी पक्ष ते विचलित थता नहि तेथी सुमेरु पर्वत नी जेम ते अप्ररूप थया स्वीकारेता कर्तव्येना बारने छेउ सुधी पार लछ जवा माटे ते गण्ड नी जेम मविशेष गति शाणी थया उपसर्ग इपी डरशु थी पगजित न थवाथी ते सिंहनी पेटे दुर्धर्ष थया ंडी, गरभी वगेरे गधु सहन करवाथी ते वसुधरा (पृथिवी) नी जेम सर्व स्पर्श थया तेजो लेश्या वगेरेनी सिद्धि युक्त होवाथी ते गणगता अग्नि नी जेम मविशेष तेजथी प्रगणित थया स्थापत्यापुत्र प्रतिबन्ध रहित थया आ प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षाओ बार प्रकारने छे द्रव्यनीअपेक्षाओ सचित्त, अचित्त तेमज मिश्र वस्तुओमा, क्षेत्रनी दृष्टिओ ग्राम, नगर, अरण्य (वन)

કપાયોપશમિતત્વાત્, પુષ્કરપત્રમિતિનિરુપલેપઃ=ભોગાભિલાપરૂપલેપશર્જિતત્વાત્, કૂર્મઇવ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ વશીકૃતેન્દ્રિયત્વાત્, સદ્વિવિપાણમિત્ત એકજાતઃ સદ્ગુણી=વન્ય જન્તુવિશેષ 'ગેંડા' इतिभाषाप्रसिद्ध. तस्य विपाण शूद्र तद्वदंशजात स्वात्माव लम्बितत्वात्, विहगश्च विप्रमुक्तः पक्षिवत् सनिधिमज्जितत्वात्, भारण्डपक्षीव-अप्रमत्तः=भारण्डपक्षिणो हि एकोदराः पृथग्ग्रीवा अन्योन्यफलभक्षिणो जीवद्वयरूपा भवन्ति, ते च सर्वदा चकितचित्तास्तिष्ठन्ति, तद्वत् प्रमादरहितत्वात् कुजरश्च शूरः कर्मशत्रु पराजेतु दृढोत्साहमत्त्वात्, चन्द्रश्च सौम्यलेश्यः शुभपरिणाममत्त्वात्,

होने के कारण वे चायु की तरह अप्रतिबद्ध विहारी बन गये। कपायों के उपशमिit हो जाने से शरत् काल के जल के समान वे निर्मल हृदय से युक्त हो गये। भोगाभिलाष रूप लेप से रहित होने के कारण वे पुष्कर (कमल) पत्र की तरह निरुपलेप हो गये। कच्छप की तरह वे अपनी इन्द्रियों को गुप्त करने वाले होने से गुप्तेन्द्रिय बन गये। केवल अपनी आत्मा के ही अवलम्बन करने वाले होने से वे गेंडाहाथी के विपाण की तरह एक जात हो गये। सनिधि से वर्जित होने के कारण पक्षी की तरह वे विप्रमुक्त हो गये। भारण्ड पक्षी की तरह वे अप्रमत्त रहने लगे। ये भारण्ड पक्षी एक उदरवाले होते हैं, ग्रीवा इसकी पृथक् होती है, अन्योन्य फल भक्षी होते हैं-दो जीव होते हैं। ये सर्वदा चकित चित्त रहा करते हैं। कर्मरुग् शत्रु को पराजित करने के लिये दृढ उत्साह संपन्न होने के कारण ये कुजर (हाथी) की तरह शूर बन गये। शुभ-परिणामो से युक्त होने के कारण ये चन्द्रमण्डल की तरह सौम्य लेश्या

ના ઉપશમનથી શરદ ઋતુના પાણીના જેમ તે સ્વચ્છ હૃદયવાળા થયા, ભોગ વિલાસ રૂપ લેપથી રહિત હોવાથી પુષ્કર ઢમળપત્ર નો જેમ નિરુપલેપ થયા ત્રાયણાની જેમ તે પોતાની ઇન્દ્રિયોને શુભ ઢગ્નાર હોવાથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા કેવળ પોતાના આત્માને જ અવલમ્બ આપનાર હોવાથી તે ગેંડા હાથીના વિપાણ (શીંગડા) ની જેમ એક જાત થયા સનિધિ વગર હોવાથી પક્ષી ની જેમ તે વિપ્રમુક્ત થયા ભારડપક્ષીની જેમ તે અપ્રમત્ત (મદ વગર) રહેવા લાગ્યા, આ ભારડ પક્ષી એક પેટ વાળા હોય છે તેમની ઠોક પૃથક્ હોય છે અન્યોન્ય રૂણ ભક્ષી હોય છે-તેમજ બે જીવ હોય છે તે હમેશા ચકિતચિત્ત રહે છે તે સ્થાપત્યાપુત્ર કર્મના શત્રુને પરજિત કરવા માટે દૃઢ ઉત્સાહ સપન્ન હોવાથી કુજર (હાથી) ની જેમ શૂર થયા શુભ પરિણામોથી યુક્ત હોવાથી તે ચન્દ્રમણ્ડલ ની જેમ સૌમ્ય લેશ્યા વાળા થયા બીજા જીવોને

सूर्येण दीप्ततेजाः परेया क्षोभस्त्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दस्वप्नप्रकम्प' परीपहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभ इव जातस्थामा गृहीतभारपार गत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शवि- सहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेख्यादिलब्धि- मत्वात्, तस्य म्यापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति । प्रतिबन्धो द्व्यक्षेत्रकालभावभेदान्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः-सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामन गाराऽऽरण्यादिषु, ज्ञानतः-समयावलिक्रादिषु, भावतः क्रोधभयहास्यादिषु । स

से युक्त हो गये । दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये । उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गम्भीर हो गया । परीपह और उप सर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरुकी तरह अप्रकम्प बन गये । गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति डाली हो गये । उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये । शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवी) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये । तेजो लेख्यादि लब्धि सम्पन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (मग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था । यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है । द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

क्षेत्र पभारनर तेजथी युक्त होवाथी ते सूर्यनी पेटे दीप्त तेज वाणा थया उदार हुता तेथी सागरनी जेम तेमनु डैयु गलीर थध गयु परीपहो अने उपमर्गोना आकण प्रहारोथी पण ते विचलित थता नहि तेथी सुमेरु पर्वत नी जेम ते अप्रकम्प थया म्बीकारेला कर्तव्योना लारने छेड सुधी पार लध जवा माटे ते जणह नी जेम मविशेष गप्ति शाणी थया उपमर्ग इपी डुरणो थी पगजित न थवाथी ते सिंहनी पेटे दुर्धर्ष थया ंडी, गम्भी वगेरे जधु सहन करवाथी ते वसुधरा (पृथिवी) नी जेम नर्व उपर्ग थया तेने लेख्या वगेरेनी सिद्धि युक्त होवाथी ते मग्निता अग्नि नी जेम मविशेष तेजथी प्रगणित थया म्यापत्यापुत्र प्रतिबन्ध रहित थया आ प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षाओ आण प्रक्रान्ते छे द्रव्यनीअपेक्षाओ अचित्त, अचित्त तेमज मिश्र वस्तुओमा, क्षेत्रनी दृष्टिओ नाम, नगर, अण्डय (वन)

समत्पणमणिलोष्टमाञ्चन', समसुखदुःखः, इहलोकपरलोकाऽप्रतिपद', जीवित मरणकाङ्क्षा वर्जित, ससारपाशगामी कर्गनिर्गतनार्यमभ्युत्थित, एव च खलु मोक्षमार्गे विहरति । ततः गलु स स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्थविराणान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते, अधीत्य च बहुभिर्याव चतुर्थेन=चतुर्थभक्तादिनोऽऽत्मान भावयन् विहरति ।

नगर, अरण्य आदिको में काल की अपेक्षा समय आवलिक्रमादिकों में भाव की अपेक्षा क्रोध, भय, तथा हास्यादिको में, उन स्थापत्या पुत्र को किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था । उन की दृष्टि में तृण, मणि, लोण्ड और काँचन समान थे । सुख और दुःख समान थे । इह लोक और परलोक से वे अप्रतिपद थे । जीविताशसा और मरणा शसा से वे रहित बन चुके थे । मसार से रहित हो चुके थे कर्मों के नाश करने में ही उनका पुरुषार्थ लगा हुआ था । इस तरह वे समिति आदि को से समित हो कर मुक्ति के मार्ग में सावधान होकर विचरण करने लगे । (तृण से यावच्चापुत्ते अरहओ अरिष्टनेमिस्स तहा रुवाण थेराण अतिण सामाइयमाइयाइ चौदसपुग्वाइ अहिज्जइ) धीरे २ उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के तयारूप म्भविरो के पास सामयिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन भी कर लिया (अहिज्जित्ता बहुहिं जाव चउत्थेण विहरइ) उनका अध्ययन करके फिर उन्होंने चतुर्थ भक्तादि तपस्या से अपने को भावित किया

वगेरेभा, काणनी अपेक्षाअे समय आवलिग वगेरेभा, लावनी दृष्टिअे क्रोध, लय तेमअ डास्य वगेरेभा ते स्थापत्या पुत्रने काईपणु जतने प्रतिअध डते नडि तेना भाटे ते तृण, मणि, लोण्ड (मानीतु ठकु) अने काचन (सोतु) आ अधा मरणा अ डता मुअ डुअ अने सरणा डता छंड लोड अने पर लोडथी ते अप्रतिअद (म्वतत्र) डता लुविताशसा तेमअ भगुआशसाथी ते रडित थना ससारना विअयेथी रडित थमने कर्मेना विनाशमाअ तेअो पुरुषार्थ सलग्न डता आ अभाअे ते स्थापत्यापुत्र मभिनि वगेरेथी समित थमने मुक्तिमार्गमा भावधान थमने त्रिअणु करवा लाग्ना (तृण से यावच्चा पुत्ते अरहओ अरिष्टनेमिस्स तहारुवाण थेराण अतिण सामाइयमाइयाइ चौदस पुग्वाइ अहिज्जइ) धीमे धीमे स्थापत्या-पुत्र अनगारे अरिष्टनेमि प्रभुनी पासे थी तेमअ तथाउअ स्थविरेनी पासेथी माभयिक वगेरे औदपूर्वोतु अध्य यन पणु कथुं (अहिज्जित्ता बहुहिं जाव चउत्थेण विहरइ) अध्ययन कयां पाद स्थापत्या पुत्रे अतुर्थ लडत वगेरे तपस्याथी पोताना आत्माने भावित कये

ततः खलु अर्हन्तरिष्टनेमि स्थापत्यापुत्रस्यानगारस्य त=सहागत 'इन्भाइय' इत्यादिष्व् उभ्यश्रेष्ठिसेनापतिप्रभृतिकम् अनगारसहस्रं शिष्यतया ददाति । स्थापत्यापुत्रेण सह ये सहस्रपुरपा दीक्षा गृहीतवन्तस्ते सर्वे तस्यैव शिष्याः कृता इति भावः । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित् अर्हन्तमरिष्टनेमिं व दत्ते वाचा रतोति, नमस्कृति, कायेन प्रणमति वन्दित्वा नमस्कारं च कृत्वा एवं =वक्ष्यमाणप्रकारेण अगदीत्—

इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवन् युष्माभिः 'अब्भणुत्ताए' अभ्यनुज्ञातः सन् आज्ञां प्राप्य सहस्रेणानगारेण साधं वहिः द्वारावतीं नगरीं तो वहिनिःसृत्य जनपदविहारं देशे ग्रामानुग्रामविचरणं, विहर्त्तुं=कर्त्तुम्, भवदाज्ञया देशे विहारं कर्त्तुं मिच्छामीत्यर्थः । हे देवानुमिय यथासुखं=विहरेत्यर्थः ।

यावत् शब्द से उक्त अर्थ लिया गया है । (तएण अरिहा अरिट्ठेनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इन्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) इसके बाद अर्हन्त अरिष्टनेमि प्रभु ने उन अनगार स्थापत्या पुत्र के लिये उनके साथ आये हुए उस, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति आदि अनगार सहस्र को शिष्यरूप से दे दिया । (तएण से थावच्चापुत्ते अज्जया कयाइ अरह् अरिट्ठेनेमिं वदइ नमसइ) इसके बाद उन स्थापत्या पुत्र ने किसी समय अर्हन्त अरिष्टनेमि को वदना की और उन्हें नमस्कार किया— (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वन्दना नमस्कार करके फिर उन्होंने से उन्होंने ऐसा कहा— (इच्छामि ण भत्ते ! तुव्भेहिं अब्भणुत्ताये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरित्ते) भदन्त ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं इन हजार अनगारों को साथ लेकर द्वारावती नगरी से बाहर जनपद विहार करना चाहता हूँ ।

'यावत्' शब्दों का उक्त अर्थ नो मश्रुं थये ठे (तएण अरिहा अरिट्ठेनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इन्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) त्थार पछी अर्हन्त अरिष्टनेमि प्रभुअे अनगार स्थापत्यापुत्रने तेमनी साथे आवेला अने प्रनल्या अहणु करेला उभ्य, श्रेष्ठी सेनापति वगैरे अनगार सहस्र ने शिष्य रूपे आभ्या (तएण से थापत्त्यापुत्ते अज्जया कयाइ अरह् अरिट्ठेनेमि वदइ नमसइ) त्थार जाइ थापत्त्या पुत्रे कोइ वणत अर्हन्त अरिष्टनेमि प्रभुने वदन तेमन् नमस्कार कथी (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वदन अने नमस्कार करीने तभत्ते तेमने विनती करी— (इच्छामि ण भत्ते ! तुव्भेहिं अब्भणुत्ताये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरित्ते) ठे भदन्त ! तमारी आज्ञा थाय तोहु अेक हत्तर अनगारो नी साथे द्वारावती

તત્ત્વ સ્થાપત્યાપુત્રોઽનગારસહસ્રેણ સાર્ધં તેનોદારેણ=પ્રધાનેન-પદ-
જીવનિકાયરક્ષણપરત્વાત્, ઉગ્રેણ=તીવ્રેણ પરીપદોપસર્ગ સહિષ્ણુત્વાત્, પ્રયત્નેન=
યતનાપ્રધાનત્વાત્ વર્દિર્જનપદવિહાર વિહરતિ ॥ ૧૭ ॥

મૂલમ્-તેણ કાલેણં તેણ સ્મરણં સેલગપુરે નામં નગરં
હાત્યા, સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે, સેલણ રાયા, પડમાવડ દેવી,
મંદુણ કુમારે જુવરાયા । તસ્સ ણં સેલગસ્સ પથગપોમોવસા પચ-
મંતિસયા હોત્યા, ઉપ્પત્તિયાણ વેણહયાણ કમ્મિયાણ પારિણા-
મિયાણ ઉવવેયા રજ્જધુર ચિંતયતિ, થાવચ્ચાપુત્તે સેલગપુરે
સમોસઢે રાયા ણિગ્ગતો ધમ્મવહા, ધમ્મ સોચ્ચા જહાણ દેવા-
ણુપ્પિયાણં અતિણ વહેવે ઉગ્ગા ભોગા જાવ ચડ્ડત્તા હિરન્નં જાવ

(અહાસુદ્ધ દેવાણુપ્પિયા' તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે અનગારસહસ્રેણ
સદ્ધિ તેણ ઉરાલેણ ઉગ્ગેણ પચત્તેણ પગ્ગહિણ વહિયા જળવય-
વિહાર વિહરહ) પ્રભુ ને વનસે કહા-યથાસુખ દેવાનુપ્રિય ! પ્રભુ કી
હસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર વે સ્થાપત્યાપુત્ર પદ્મજીવનિકાય કી રક્ષા
કરને મે તત્પર હોને કે કારણ ઉદાર, પરીપદ્ધ અને ઉપસર્ગો કો સહન
કરને કે કારણ ઉગ્ર, યતના પ્રધાન હોને કે કારણ પ્રયત્ન અને અજ-
વાન કી આજ્ઞા કો પ્રધાન રૂપ સે અગીકાર કરને કે કારણ પ્રગૃહીત
એસે ૧૧૬૫ હજાર શિષ્યો કો સાથ લેકર' વહા સે બાહિર દેશો મેં
વિહાર કિયા । સૂત્ર " ૧૭ "

નગરીની બહાર જનપદ વિહાર કરવા ગાહુ છુ (અહાસુદ્ધે દેવાણુપ્પિયા' તણ
સે થાવચ્ચ અનગારસહસ્રેણ સદ્ધિ તેણ ઉરાલેણ ઉગ્ગેણ પચત્તેણ પગ્ગહિણ
વહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) પ્રભુએ તેને કહ્યું-હેદેવાનુપ્રિય સુએથી વિહાર
કરે, આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્રે આજ્ઞા મેળવીને પદ્મજીવનિકાયના રક્ષણમા સદા તૈયાર
હોવાથી ઉદાર, પરીપદ્ધ અને ઉપસર્ગોને સહન કરવાથી ઉગ્ર, યતના પ્રધાન
હોવાથી, પ્રયત્ન અને અજવાનની આજ્ઞા પ્રધાન રૂપથી સ્વીકારવાથી પ્રગૃહીત એવા
એક હજાર શિષ્યોની સાથે ત્યા થી બહારના દેશોમા વિહાર કર્યો ॥ ૨૪-૧૭ ॥

पव्वइया, तहाणं अहं नो सचाएमि पव्वइत्ताए, अहन्न देवाणु-
प्पियाण अंतिए पचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहि-
गयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं
भावेमाणे विहरामि। पथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया
जाया, थावच्चापुत्ते वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १८ ॥

‘ तेण कालेण ’ इत्यादि ।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये शैलरूपुर नाम नगरमासीत् । नगराद् वहिः
सुभूमिभाग नामोद्यानम् । तस्मिन् नगरे शैलको नाम राजाऽभूत् । पद्मावतीदेवी=प-
द्मावतीनाम्नीदेवी पट्टराज्ञो । मण्डरुवारो युवराजोऽभवत् । तस्य खलु शैलकस्य
राज्ञः पान्थरुप्रमुखाः पञ्चशतानि मन्त्रिणः अमात्याः आसन्, कीदृशास्ते मन्त्रिण
इत्याह-‘ उत्पत्तियाए ’ औत्पत्तिकया शास्त्राभ्यासादि निमित्त विनैव सद्भाविनी
तथाविधयोपशमजन्या मति रौत्पत्तिकी तया, ‘ वेणइयाए ’ वैनयिमया=विनय-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(सेलगपुरे नाम नगर होत्या) शैलक पुर नाम का नगर था (सुभूमि
भागे उज्जाणे सेलए राया पडभावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया)
उस में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । शैलक पुर राजा का नाम
शैलक था । उसकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था । मंडूक नाम का
इसका युवराज कुमार था । (तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा पच
मंतिसयहोत्या) इस शैलक राजा के पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्री थे ।
(उत्पत्तियाए वेणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, उववेया रज्जधुर चित्त-

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (सेलगपुरे
नाम नगर होत्या) शैलक पुर नामे नगर હતુ (सुभूमिभागे उज्जाणे सेलए
राया पडभावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया) त्या सुभूमि भाग नामे उद्यान
હતુ શૈલક પુરના રાજાનુ નામ શૈલક હતુ પદ્માવતી તેની પટ્ટરાણી હતી
મંડૂક નામે તે રાજાનેા યુવરાજ હતો (તસ્સ ણ સેલગસ્સ પથગ પામોક્ખા
પચમત્તિસય હોત્યા) આ શૈલક રાજાને પાંચક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રીઓ હતા
(ઉત્પત્તિયાએ વેણइयाए कम्मियाए परिणामियाए उववेया रज्जधुर चित्तयति) આ

પાસકો જાત । શ્રમણોપાસકાના ધર્મ સવિસ્તરુપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસજીવની ટીકાયા વર્ણિતસ્તત એવ વિજ્ઞેયઃ । યાત્ ‘અદિગયજીરાજીવે’ અધિગત જીવાજીવઃ, જીવાજીવસ્વરૂપાવિજ્ઞઃ, યાત્ યથા પરિગૃહીતૈસ્તપઃકર્મભિરાત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ । પાન્યક્રમમુખાઃ પચ્ચશત મન્ત્રિણઃ શ્રમણોપાસકા જાતા દ્વાદશવ્રતધારિણઃ શ્રાવકા અમૂઝન્ । સ્થાપત્યાપુત્રઃ વહિઃ=શૈલકપુર નામ્નો નગરાદ્ વહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ=કરોતિ સ્મ ॥ ૧૮ ॥

દ્વારા અભ્યનુજ્ઞાત હોકર શૈલકરાજા ને ૧૨ વારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર લિયા-વે શ્રમણોપાસક બન ગયે । શ્રમણોપાસકોં કે ધર્મ કા વિસ્તાર પૂર્વક વર્ણન હમને ઉપાસકદશાઙ્ગ સૂત્ર કી અગાર ધર્મસજીવની નામ કી ટીકા મેં કિયા હૈ । સો વહા સે જાન લેના ચાહિયે । જીવ ઓર અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ હસ વાત કો ભી વે જાન-ને વાલે બન ગયે । અનેક પ્રકાર કી તપઃચર્યા ભો વે કરને લગે । હસ તરહ યથા પરિગૃહીત, તપ કર્મોં દ્વારા વે અપને આપકો ભાવિત કરતે હુએ રહને લગે । (પથગપામોક્ત્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા-થાવચ્ચાપુસે વહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજા કે જો પાથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રી થે-વે ભી શ્રમણોપાસક બન ગયે-૧૨ વ્રત ધારી હો ગયે-સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ઉસ શૈલકપુર નગર સે વાહર જનપદ મેં વિહાર કર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

સુખ થાય તેમ કરો આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આશાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ શ્રમણોપાસક થયા શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અને ઉપાસકદશાઙ્ગસૂત્રની અગાર ધર્મ સજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે ત્રિશાસુ જન તેમાંથી બહારી શકે છે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયું અનેક બ્રાહ્મણો તપસ્થાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની બ્રાહ્મણતા બાવિત કરતા રહેતા લાગ્યા (પથગપામોક્ત્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા થાવચ્ચાપુસે વહિયા જળવયવિહાર) રાજાના પાથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રી હતા તેઓ પણ શ્રમણ બન ગયા આ ૧૨ વ્રત ધારી થઈ ગયા ત્યાર બાદ સ્થાપત્યા પુત્ર બહાર બીજા જનપદોમાં વિહાર કરવા માંડે

मूलम्-तेण कालेण तेण समएणं सोगधिया नाम नयरी
होत्था, वन्नओ, नीलासोए उज्जाणे वन्नओ, तत्थ ण सोगधि-
याए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव
अपरिभूए ।

तेणं कालेण तेण समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था,
रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठिततकुसले सखस-
मए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलय दसप्पयारं परि-
व्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवे
माणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए, तिदंडकुंडियछत्त-
छल्लुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं सपरि-
बुडे जेणेव सोगधियानयरी जेणेव परिव्वायगावसहसि भंडगनि-
क्खेवं करेइ, करित्ता संखसमणेणं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

तएणं सोगधियाए नयरीए सिघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु
वहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ । एव खलु सुए परिव्वा-
यए इह हव्वमागए जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदसणो
निग्गए, तएण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुंदसणस्स
य अन्नेसिं च वहुण सखाणं धम्मं परिकहेइ-एव खलु सुदंसणा
अम्ह सोयमूलए धम्म पन्नत्ते, सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते
त जहा-दव्वसोए य, उदएण मट्ठियाए य, भावसोए दव्वेहि
य मतेहि य, जन्न अम्हं देवाणुप्पिया किंचि असुइ भवामो, त
सव्व सज्जो पुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा
पवखालिज्जइ. तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा

પાસકો જાત । શ્રમણોપાસકાનાં ધર્મ સવિસ્તરમુપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસંજીવની ટીકાયા વર્ણિતસ્તત એવ ગ્રિહ્યેયઃ । યાત્ ‘ અદિગયજીગીવે ’ અધિગત જીવાજીવઃ, જીવાજીવસ્વરૂપાવિદ્ઃ, યાત્ યથા પરિગૃહીતૈસ્તપઃકર્મભિરાત્માર્ન ભાવયન્ વિહરતિ । પાન્યકપ્રમુખાઃ પચ્ચશત મન્ત્રિણઃ શ્રમણોપાસકા જાતા દ્વાવશવ્રતધારિણઃ શ્રાવકા અભૂન્ । સ્થાપત્યાપુત્રઃ બહિઃ=શૈલકપુર નામ્નો નગરાદ્ બહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ=કુરોતિ સ્મ ॥ ૧૮ ॥

દ્વારા અભ્યનુજ્ઞાત હોકર શૈલક રાજા ને ૧૨ બારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર લિયા-વે શ્રમણોપાસક બન ગયે । શ્રમણોપાસકો કે ધર્મ કા વિસ્તાર પૂર્વક વર્ણન હમને ઉપાસકદશાઙ્ગ સૂત્ર કી અગાર ધર્મસંજીવની નામ કી ટીકા મે કિયા હૈ । સો વહા સે જાન લેના ચાહિયે । જીવ ઓર અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ હસ બાત કો ખી વે જાન ને વાલે બન ગયે । અનેક પ્રકાર કી તપઃચર્યા ખો વે કરને લગે । હસ તરહ યથા પરિગૃહીત, તપ કર્મો દ્વારા વે અપને આપકો ભાવિત કરતે હુએ રહને લગે । (પથગપામોક્ષ્યા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા-થાવન્ચાપુત્તે બહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજા કે જો પાથક પ્રમુખ પાચસૌ મંત્રી થે- વે ખો શ્રમણોપાસક બન ગયે- ૧૨ વ્રત ધારી હો ગયે- સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ઉસ શૈલકપુર નગર સે બાહર જનપદ મે વિહાર કર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

સુખ થાય તેમ કરે । આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ શ્રમણોપાસક થયા શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપાસકદશાઙ્ગસૂત્રની અગાર ધર્મ સંજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે જિજ્ઞાસુ જન તેમાંથી બાણી શકે છે એવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયું અનેક બ્રાહ્મણો તપસ્થાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા । આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની બ્રાહ્મણતાને ભાવિત કરતા રહે । લાગ્યા (પથગપામોક્ષ્યા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા થાવન્ચાપુત્તે બહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજાના પાથક પ્રમુખ પાચસૌ મંત્રી હતા તેઓ પણ શ્રમણોપાસક તેમજ બાર વ્રત ધારી થઈ ગયા ત્યાર બાદ સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર શૈલકપુર નગરથી બહાર બીજા જનપદમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડ્યા ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

स कीदृश इत्याह—आद्यः विभनशाली, यावत् अपरिभूतः=केनापि पराभ वितुमशक्यः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुको नाम परिव्राजक आसीत् । सकीदृश इत्याह “रिउव्वेयज्जुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसद्धितंतकुसले” ऋग्वेद यजुर्वेदसामवेदाथ वेवेदपण्डितन्त्र-कुशलः सर्ववेदसर्वतन्त्रनिपुण इत्यर्थः, ‘सखसमये लद्धट्टे’ साख्यसमये लब्धार्थः सांख्यशास्त्राभिमतसकलतत्त्वार्थामिग्नः’ पञ्चयमपञ्च नियमयुक्त, तत्र=अहिंसा सत्यास्तेदब्रह्मचर्यापरिग्रहाः पञ्चयमाः, शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि-

का नगर सेठ रहता था । यह विशेष विभूतिशाली था और अपरिभूत था—कोई भी व्यक्ति इसका तिरस्कार (अपमान) नहीं कर सकता था । (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) उसी काल और उसी समयमें शुक नाम का परिव्राजक था (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, सख समए लद्धट्टे पचजम पच नियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दागधम्मच सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आचवमाणे पणवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए) यह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद पण्डितत्र इनमें कुशल था—निपुण था । सांख्य सिद्धांत प्रतिवादित सकल तत्त्वों के अर्थका ज्ञाता था । पचयम और पचनियम से युक्त तथा शौच मूलक दश प्रकारके परिव्राजक धर्मका दान रूपधर्म का शौच रूप धर्मका तीर्थाभिषेकका उपदेश देता था उसका प्रचार करता था । अहिंसा, सत्यअस्तेय ब्रह्मचर्य और परिग्रह ये पाच यम हैं । शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वरप्रणि-

शेठ रहते। होते। ते भूषण औश्वर्य संपन्न अने अपरिभूत होते। केवल पण्य व्यक्ति तेमने। तिरस्कार न करी सकती होती (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) ते काले अने ते समये ओके शुक नामे परिव्राजक होते। (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, सख समए लद्धट्टे पचजमपचनियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दागधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आचवेमाणे पणवेमाणे धाउरत्तवत्थ पवरपरिहिए) ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तेमने पण्डितत्रमा कुशल होते, निपुण होते। सांख्यसिद्धान्तमा कडेवा गधा तत्त्वोंने। ते गण्य नार होते। ते पाय यम तेमने पाय नियम थी युक्त होते। ते शौचमूलक दश गतना परिमाणक धर्मने, दानरूप धर्मने शौचरूप धर्मने तीर्थाभिषेक (तीर्थस्नान) ने। उपदेश आपते। होते। अने पोताना धर्मने प्रचार करते। होते। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने परिग्रह ओ पाय ‘यम’ ॥

જલાભિસેય પૂથપાણે અવિ-ધેર્ણ સર્ગ ગચ્છતિ, તણે સે સુદ-
સણે સુયરસ આતિષ ધર્મ સોચ્ચા દટ્ટે સુયરસ આંતિષ સોયમૂ-
લય ધર્મ ગિળહર, ગેળિહત્તા પરિટ્વાયણ વિપુલેણ અસળપાણ-
સ્વાદમસાદમેણ વત્થપરિગ્ગહેણ પરિલાભેમાણે જાવ વિહરહ ।
તણે સે સુણ પરિટ્વાયગે સોગધિયાઓ નયરીઓ નિગચ્છહ,
નિગચ્છિત્તા વહિયા જળવય વિહારંવિહરહ ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥
“ તેણ કાલેણ ” इत्यादि ।

ટીકા-તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે સૌગન્ધિકા નામ નગરી આસીત્ વર્ણક
સૌગન્ધિકાનગર્યા વર્ણન ઔપપાતિકમુત્રોક્ત ચમ્પાનગરીવદ્ વાચ્યમ્ નીલાશોક
મુદ્યાન=નીલાશોકનામકમુપવન તત્રાસીત્ । વર્ણક-અસ્યોદ્યાનસ્ય વર્ણન પૂર્વવદ્
વોધ્યમ્ । તત્ર સ્વલુ સૌગન્ધિકાયા નગર્યા સુદર્શનો નામ નગર શ્રેષ્ઠી પ્રતિવસતિ ।

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણ’ इत्यदि ॥

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) ઉસ કાલ ઔર ઉસ સમય મે
(સોગધિયા નામ નગરી હોત્થા) સૌગધિકા નામ કી નગરી થી-
(વન્નઓ) હસ નગરી કા વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્ર મે જિસ પ્રકર
ચપાનગરી કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ ઉસી તરહ કા જાનના ચહિયે ।
(નીલાસોણ ઉડજાણે) હસ નગરી મે ઉદ્યાન થા જિસકા નામ નીલા-
શોક થા । (વન્નઓ) પૂર્વકી તરહ હસ ઉદ્યાને કા વર્ણન જાન
લેના ચહિયે । (તત્થ ણ સોગધિયાણ નયરીણ સુદસણે નામ નયરસેટ્ટી
પરીવસહ અહ્ઠે જાવ અપરિભૂણ) ઉસ સૌગધિકા નગરી મે સુદર્શન નામ

તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) તે કાળે અને તે સમયે (સોગધિયા
નામ નગરી હોત્થા) સૌગધિકા નામે નગરી હતી (વન્નઓ) ઔપપાતિક
મૂત્રમા જે પ્રમાણે ચપાનગરીનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અહીં
પણ બધી લેખે બોધ્યે, (નીલાસોણ ઉડજાણે) આ નગરીમા એક ઉદ્યાન હતું
જેનું નામ નીલાશોક હતું (વન્નઓ) પહેલાની જેમ આ ઉદ્યાનનું વર્ણન
પણ બધી લેખે બોધ્યે (તત્થ ણ સોગધિયાણ નયરીણ સુદસણે નામ નયરસેટ્ટી
પરિવસહ, અહ્ઠે જાવ અપરિભૂણ) તે સૌગધિકા નગરીમા સુદર્શન નામે નગર

યત્રૈવ સૌગન્ધિકા નગરી યત્રૈવ પરિવ્રાજકાવસથ, તત્રૈવોપાગન્ઠતિ, ઉપાગત્ય પર્વિવ્રાજકાવસથે માણ્ડકનિક્ષેપ કરોતિ = ત્રિદૃષ્ટાદીન્યુપકરણાનિ સ્થાપયતિ, કૃત્વા સામ્યસમયેન સામ્યસિદ્ધાન્તાનુસારાચારેણ આત્માન ભાવયન્ વિહરતિ ।

તતઃ સ્વલ્પ સૌગન્ધિકાયા નગર્યા શૃંગાટકત્રિકચતુષ્કચત્વરેણ યાવદ્ રાજ-પથેણ વહુજનોઽન્યોન્યસ્ય પરસ્પરમ્-एवमाख्याति - કથયતિ, એવ સ્વલ્પ શુકો નામ પરિવ્રાજક હૃદ અસ્યાં સૌગન્ધિકાયા નગર્યા હૃવ્યમાગતઃ=સમાગતઃ યાવદા-સ્માન ભાવયન્ વિહરતિ । પરિપન્નિર્ગતા । સુદર્શનોઽપિ નિર્ગત । તતઃ સ્વલ્પ સ

આશ્રમ યા વહા આયા । (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ મહલ નિક્ષેવ કરેહ, કરિત્તા સઘ્વ સમણેણ અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરહ) આકર ઉસને ઉમ પરિવ્રાજકાશ્રમ મેં અપને ખાડોં કો રત્વ દિયા । ઓર રત્વ કર સાંખ્ય સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર અપની પ્રવૃત્તિ ચાલૂ રત્વતા હુઆ ઠહર ગયા । (તણ્ણ સોગધિયાણ નયરીણ સિંધાહગતિગચ્ઠકચ્ચચ્ચરેસુ વહુજનો અન્નમન્નસ્સ एवमाइक्खइ) હસકે યાદ ઉસ સૌ-ગધિકા નગરી મેં શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર યાવત્ રાજમાર્ગ મેં અનેક જન પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર વાત ચીત કરને લગે (एव स्वल्पं सुए परिन्वायण इह हव्यमागण जाव विहरइ) ઘધુઓ ! શુક નામ કા પરિવ્રાજક હસ અપની સૌગધિકા નગરી મેં અમી ૨ આયા હૈ । - વહુ સામ્ય સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર અપની પ્રવૃત્તિ રત્વતા હુઆ પરિવ્રાજકા શ્રમ મેં ઠહરા હુઆ હૈ । હમ વાત સે પરિચિત્ત હોકર (પરિમા નિગ્ગયા, સુદસણો, નિગ્ગા, તણ્ણ સે સુણ પરિવ્વાયણ તીસે પરિસાણ સુદસણસ્સ

સૌગધિકાનગરી હતી અને ત્યાં પર્વિવ્રાજકોનો આશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ મહાનિક્ષેવ કરેહ, કરિત્તા સઘ્વ સમણેણ અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરહ) તે પરિવ્રાજકોના આશ્રમમાં પહોંચીને તેને પોતાની ધર્મી વસ્તુઓ મૂકી દીધી અને ત્યાં સામ્યસિદ્ધાન્તને અનુસરીને પોતાના ધર્મને પ્રચાર કરતો રહેવા લાગ્યો (તણ્ણ સોગધિયાણ નયરીણ સિંધાહગતિગચ્ઠકચ્ચચ્ચરેસુ વહુજનો અન્નમન્નસ્સ एवमाइक्खइ) ત્યારબાદ સૌગ-ધિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક ચત્વર અને રાજમાર્ગમાં ઘણાં માણસો આ ગીતે વાતો કરવા લાગ્યા- (એવ સ્વલ્પ સુણ પરિવ્વાયણ હૃદ હવ્યમાગણ જાવ વિહરહ) મિત્રો ! આપણી આ નગરીમાં શુક નામે એક પરિવ્રાજક હમણાં જ આવ્યો છે સામ્યસિદ્ધાન્ત અનુસાર તે પોતાની પ્રવૃત્તિઓ આચર-તો પરિવ્રાજક આશ્રમમાં રોકાયો છે આ વાતની જાણ થતા જ (પરિસા

ધાનાનિ પશ્ચનિયમાઃ સૈર્યુક્તમ્ શૌચમૂલક દશપ્રકાર=યમનિયમસમેલનેન દશત્રિષ
 પરિવાજરુધર્મ દાનધર્મ=દાનરૂપધર્મ ચ શૌચધર્મ=મૃદારિજનિત શૌચરૂપ ધર્મ ચ તી-
 થાંભિષેક=ગદ્ગાદિ તીર્થોદકસ્નાનં ચ આગ્ન્યાપયન્ પ્રત્યાપયન્ પ્રવર્તયન્ પ્રપાપયન્
 બોધયન્ 'ધાતુરક્તવસ્ત્રપરપરિદિષ્' ધાતુરક્તવસ્ત્રપરપરિદિષ્તઃ=ગૈરિકધાતુરક્તવસ્ત્ર
 પ્રવરપરિધાનઃ, ગૈરિકરક્તવસ્ત્રધારીત્યર્થ, 'તિદ્દ-કુડિય - ઉત્ત - ઊન્નાલય -
 કુસ-પવિત્તય-કેસરી હત્યગળ' ત્રિદણ્ડ-કુણ્ડિકા-છત્ર-પદ્મના-લક્ષ્મણ-પવિ-
 ત્રક-કેસરી હસ્તગતઃ, ત્રિદણ્ડાદીનિ સપ્ત હસ્તગતાનિ યસ્ય સ તથા, તત્ર ત્રિદ-
 ણ્ડ=મનોવાક્યાયદણ્ડત્રયપરિજ્ઞાનાર્થ દણ્ડત્રય, કુણ્ડિકા=કમળહલ, ઊત્ત, પ્રસિદ્ધ,
 પદ્મનાલક = ત્રિકાષ્ઠિકા, અકુશઃ - પ્રસિદ્ધઃ-વૃક્ષપલ્લવહેદનાર્થ, પવિત્રક=
 તામ્રમયમગુલીયક, કેસરી = ચીવરચ્છદ, પરિવાજકસહસ્રેણ સાર્થ સપરિવૃત
 ધાન યે પાચ નિયમ હૈ । મિટ્ટી ઓર પાની સે શુદ્ધ કરના હસકા નામ
 શૌચ હૈ । ગંગા આદિ તીર્થકે તલમેં સ્નાન કરના હસકા નામ તીર્થાંભિષેક
 હૈ । इन धातों को आग्न्यापन-कथन करता हुआ प्रत्यापन प्ररूपणा
 करता हुआ यह शुक जिन वस्त्रों को पहिरता था वे गैरिक धातु से रंगे
 हुए थे । अर्थात् गैरिक धातु से रंगे हुए वस्त्रों को ही यह पहिरता था ।
 (તિદ્દકુડિય, ઉત્ત છલુયકુસપવિત્તયકેસરીહત્યગળ પરિવાયગસહસ્સે
 ણ સદ્ધિ સપરિવુદે જેણેવ સોગધિયા નયરી જેણેવ પરિવાયગાવસહે
 તેણેવ ઉવાગચ્છદ) મન, વચન ઓર કાય इन तीन दंडों के परिज्ञान
 के लिये यह दण्ड त्रय का गारी था । कमण्डल, छत्र, त्रिकाष्टिका,
 अकुश, ताम्रमय अगुलीयक, (अगुठी) और चीवर छद ये सब उस
 के हाथ में थे । १ एक हजार साधु मंडल से यह परिवृत था । सो जहां
 वह सौगधिका नगरी थी और उस में भी जहां परिव्राजकों का

શૌચ, સતોષ, તપ, સ્વાધ્યાય, ધૃધિરપ્રભિવાન એ પાત્ર નિયમો છે માટી
 અને પાણીથી શુદ્ધ કરવું તે ગૌચ કહેવાય છે ગંગા વગેરે તીર્થ જળોમા
 નાહવું તે તીર્થાંભિષેક કહેવાય છે આ યમ નિયમોનુ આગ્યા વચન તેમજ
 પ્રશ્નથી કરતો તે શુક પરિવાજક ગૈરિક (ગેરુઆ) વસ્ત્રો પહેરતો હતો એટલે
 કે ગેરુ થીરગેલા વસ્ત્રો જ તે પહેરતો હતો (તિદ્દ કુડિય, ઉત્ત, છલુયકુસપ
 વિત્તયકેસરીહત્યગળ પરિવાયગસહસ્રેણ સદ્ધિ સપરિવુદે જેણેવ સોગધિયા
 નયરી જેણેવ પરિવાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છદ) મન, વચન અને કાય આ
 ત્રણ દેહના પરિજ્ઞાન માટે તે દડત્રય (ત્રણદડ) ધારણ કરતો હતો કમણ્ડ
 છત્ર, ત્રિકાષ્ઠિકા, અકુશ તામ્રાની વીટી અને ચીવરચ્છદ આ બધા તેના હાથ
 મા હતા એક હજાર સાધુઓ તેની આથે હતા તે કરતો કરતો જ્યા

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परित्राजकाग्रमय, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परित्राजकाग्रस्ये भाण्डकनिक्षेपं करोति = त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा साख्यसमयेन साख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मानं भावयन् विहरति ।

ततः खलु सौगन्धिकाया नगर्यां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राजपथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - कथयति, एव खलु भुक्तो नाम परित्राजक इह अस्या सौगन्धिकाया नगर्यां इव्यमागतः = समागतः यावदात्मानं भावयन् विहरति । परिपन्निर्गता । सुदर्शनोऽपि निर्गतः । ततः खलु स

आश्रमं यावत् आया । (उवागच्छित्ता परिव्यायगावसहसि मण्डलं निक्षेपेव करोइ, करित्ता सख समणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) आकर उसने उस परित्राजकाश्रम में अपने भाइयों को रख दिया । और रख कर साख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता हुआ ठहर गया । (तण्ण सौगन्धियाय नयरीण सिंघाडगतिगचउक्क चच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौगन्धिका नगरी में शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में अनेक जन परस्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एव खलु सुए परिव्यायए इह इव्यमागए जाव विहरइ) बन्धुओ ! शुक्र नाम का परित्राजक इस अपनी सौगन्धिका नगरी में अभी आया है । - वह साख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परित्राजकाश्रम में ठहरा हुआ है । इस बात से परिचित होकर (परिसा निग्गया, सुदमणो, निग्गए, तण्ण से सुए परिव्यायए तीसे परिसाण सुदसणस्स

सौगन्धिकानगरीं हत्ती अने न्या परिव्यायजोने आश्रमं हत्ती त्या आओ (उवागच्छित्ता परिव्यायगावसहसि भडगनिस्सेव करोइ, करित्ता सख समणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) ते परिव्यायजोना आश्रमभा पडोथीने तेने पोतानी णधी वन्तुओ भूडी दीधी अने त्या साख्यसिद्धान्तने अनुसरीने पोताना धर्मने प्रथा करतो रहेवा लाओ (तण्ण सौगन्धियाय नयरीण सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) त्यारथाइ सौगन्धिका नगरीभा शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क चत्वर अने गजमार्गभा धणु भाणुओ आ गीते वातो करवा लाओ - (एव खलु सुए परिव्यायए इह इव्यमागए जाव विहरइ) भिन्ना ! आपणी आ नगरीभा शुक्र नामे ओक परिव्यायक हमणु न आओ छे साख्यसिद्धात अनुसार ते पोतानी प्रवृत्तिओ आथर तो परिव्यायक आश्रमभा देओ छे आ वातनी णणु यता न (परिस्स

શુરુઃ પરિત્રાજકસ્તસ્યા પરિપદ સુદર્શનસ્ય ચ અન્યેષા ચ વહુના જનાના પુરસ્તાત્ સાહ્યાના=સાહ્યમતાનુયાયિના ધર્મ પરિકથયતિ-હે સુદર્શન ! એવ વક્ષ્યમાણ પ્રકારેણ સ્વલુ અસ્માક શૌચમૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ, તદપિ ચ શૌચ દ્વિવિધ પ્રજ્ઞ તથા-દ્રવ્યશૌચ ચ, ભાવશૌચ ચ । દ્રવ્યશૌચ ચ ઉદકેન=જલેન મૃત્તિકયા ચ ભવતિ । ભાવશૌચ 'દબ્ધે હિ ય' દર્મ્ય, 'મતે હિ ય' મન્ત્રૈશ્વ ભવતિ । હે દેવાનુમિય ! યત્ સ્વલુ અસ્માક કિંચિત્=કરચરણકમળહલ પ્રમૃતિ અશુદ્ધ ભવતિ તત્ સર્વં 'સજ્જો પુદ્ગવી' સઘઃ પૃથિવ્યા=શુદ્ધનવીનમૃત્તિકયા, આલિપ્યતે અનુ-લિપ્ત ક્રિયતે, તતઃ પશ્ચાત્ શુદ્ધેન=પવિત્રેણ, વારિણા=જલેન પ્રક્ષાલ્યતે તતસ્તદશુદ્ધ ઉપહત વસ્તુ શુદ્ધ ભવતિ । એવ સ્વલુ જીવાઃ 'જલામિસેયપૂયપ્ષાણો' જલા-

ય અન્નેસિંચ વહૂણ સત્ત્વાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નગર નિવાસી પરિષદ્ ઉસકે પાસ જાને કે લિયે અપને ૨ ઘર સે નિકલી । સુદર્શન મી નિકલા । હસકે બાદ ઉસ શુક પરિત્રાજક ને ઉસ આગત પરિપદ્ કો સુદર્શન સેઠ કો તથા ઔર મી એકત્રિત હુણ અનેક મનુષ્યો તો સાહ્યોં કે ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉસમેં ઉસ ને હસ પ્રકાર કહા (એવ સ્વલુ સુદસણા અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લસે) હે સુદર્શન ! મારા ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ (સે વિ ય સોણ દુવિહે પળ્લસે) વર શૌચ મી દો પ્રકાર કા કહા હુઆ હૈ- (દવ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧ દ્રવ્ય શૌચ ૨ ભાવ શૌચ । (દવ્વસોણ ય ઉદણ મદિયાણ ય) જલ ઔર મિટ્ટી સે દ્રવ્ય શૌચ હોતા હૈ । (ભાવસોણ દબ્ધેહિં ય મતે હિં ય) ભાવશૌચ દર્મ ઔર મત્રોં સે હોતા હૈ । (જન્ન અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! કિંચિ અશુદ્ધ ભવહ ત સન્વ

નિગાવા, સુવક્ષણો નિમાણ તણ સે સુણ પરિવ્વાયણ વીસે પરિસાણ સુદસણસ્સ ય અન્નેસિંચ વહૂણ સત્ત્વાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નાગરીકોની પરિષદ તેની પાસે જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતાના ઘેરથી ત્યા જવા માટે બહાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિત્રાજકે ઉપસ્થિત થયેલી નાગરીકોની પરિષદ સુદર્શન તેમજ બીજા એકઠા થયેલા માણસોની સામે સામ્યધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ આપતા શુક પરિત્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યું (એવ સ્વલુ સુદસણા અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લ) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞસ થયો છે (સેવિય સોણ દુવિહે પળ્લસે) શૌચના બે પ્રકાર છે (દવ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (દવ્વસોણ ય ઉદણ મદિયાણ ય) અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય છે (ભાવસોણ દબ્ધેહિં ય મતેહિં) અને મત્રોવડે થાય છે (જન્ન અમ્હં

भिपेक पूतात्मानः=जलेनाभिपेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते,
प्राणिनः 'अविग्रेण' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन 'सग' स्वर्गं गच्छन्ति ।
ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म=
शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा 'हृष्टे, हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौच
मूलक धर्मं गृह्णाति । सारथ्यमतस्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः,
शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि
वस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ)
हे देवानुप्रिय । जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-
अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज लेते
हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई
भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्रेण सग गच्छति)
इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार
जीव भी जलाभिपेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत
जल्दी बिना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । (तएण से
सुदसणे सुयस्स अतिण धम्म सोच्चा हृष्टे सुयस्स अतिण सोयमूलय
धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर
बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म
अंगीकार कर लिया । (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइम-
साइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवानुप्रिया ? किं चि असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ
पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय । अभास डाय, पग कम-
इणु वगेरे अपवित्र थं नय छे तो पड़ेला तेने नवीन माटीथी अमे उटकी
अ छीअे अने त्यार पछी शुद्ध पाणी थी साइ करी लधअे छीअे (तओ
स असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्रेण सग
गच्छति) अ प्रभ । ते अपवित्र पदार्थ पवित्र थं नय छे आ रीते एव
पणु पाणीथी स्नान करी । पवित्रात्मा थंने सत्तरे ठोर्ष पणु नतना अट
काव डे मुश्डेदी वगर रगे पड़ेथी नय ७ (तएण से सुदसणे सुयस्स
अतिण धम्म सोच्चा ह सुयस्स अतिण सोयमूलय धम्म गिण्हइ) अ रीते
ते सुदर्शन नगर शैठ शुकनी पासेथी धर्मं श्रमण करीने पूअअ डं पाभ्या
अने तेनी पासेथी तेभणु शौच मूलक धर्म स्वीकार्यो (गेण्हित्ता परिव्वायए
विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विह-

શુકઃ પરિવ્રાજકસ્તસ્યા પરિપદ સુદર્શનસ્ય ચ અન્યેષા ચ વહનાં જનાના પુરસ્તાત્
 સાહ્યાના=સાહ્યમતાનુયાયિના ધર્મ પરિકથયતિ-હે સુદર્શન ! એવ વક્ષ્યમાણ
 પ્રકારેણ સ્વલુ અસ્માક શૌચમૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદપિ ચ શૌચ દ્વિવિધ પ્રજ્ઞપ્તં
 તદ્વથા-દ્રવ્યશૌચ ચ, ભાવશૌચ ચ । દ્રવ્યશૌચ ચ ઉદકેન=જલેન મૃત્તિકયા ચ
 ભવતિ । ભાવશૌચ ' દબ્મે હિ ય ' દર્મશ્ચ, ' મતે હિ ય ' મન્ત્રૈશ્ચ ભવતિ । હે
 દેવાનુમિય । યત્ સ્વલુ અસ્માક કિંચિત્=રુચરણરુમળહલ પ્રમૃતિ અશુદ્ધ ભવતિ
 તત્ સર્વ ' સજ્જો પુદ્ગીણ ' સઘઃ પૃથિવ્યા=શુદ્ધનવીનમૃત્તિકયા, આલિપ્યતે અનુ-
 લિપ્ત ક્રિયતે, તતઃ પથાત્ શુદ્ધેન=પવિત્રેણ, વારિણા=જલેન પ્રસાલ્યતે તતસ્તદશુદ્ધ
 ઉપદત વસ્તુ શુદ્ધ ભવતિ । એવ સ્વલુ જીયાઃ ' જલાભિસેયપૂયપ્પાણો ' જલા-

ય અન્નેસિંચ વહૂણ સલાણ ધમ્મ પરિકહેઠ) નગર નિવાસી પરિષદ
 ઉસકે પાસ જાને કે લિયે અપને ૨ ઘર સે નિકલી । સુદર્શન બી નિકલા
 હસકે બાદ ઉસ શુક પરિવ્રાજક ને ઉસ આગત પરિપદ્ કો સુદર્શન સેઠ
 કો તથા ઔર બી એકત્રિત હુએ અનેક મનુષ્યોં તો સાહ્યોં કે ધર્મ કા
 ઉપદેશ દિયા । ઉસમેં ઉસ ને હસ પ્રકાર કહા (એવ સ્વલુ સુદસણા
 અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લન્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ શૌચ મૂલક
 પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ (સે વિ ય સોણ દુવિહે પળ્લન્તે) વહ શૌચ બી દો પ્રકાર
 કા કહા હુઆ હૈ- (દવ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧ દ્રવ્ય શૌચ ૨ ભાવ
 શૌચ । (દવ્વસોણ ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) જલ ઔર મિટ્ટી સે દ્રવ્ય શૌચ
 હોતા હૈ । (ભાવસોણ દબ્મેહિં ય મતે હિં ય) ભાવશૌચ દર્મ ઔર મન્ત્રોં
 સે હોતા હૈ । (જન્મ અમ્હં દેવાણુપ્પિયા ! કિંચિ અસુદ્ધ ભવદ્ ત સન્વ

નિગ્ધા, સુવસણો નિગ્ધા તણ સે સુણ પરિવ્વાયણ તોસે પરિસાણ સુદસણસ્સ
 ય અન્નેસિંચ વહૂણ સલાણ ધમ્મ પરિકહેઠ) નાગરીકોની પરિષદ તેની પાસે
 જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતાના ઘેરથી ત્યા જવા
 માટે બહાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજકે ઉપસ્થિત થયેલી નગરીકો
 ની પરિષદ સુદર્શન તેમજ બીજા બેકઠા થયેલા માણસોની સામે સાખ્યધર્મ
 નો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ આપતા શુક પરિવ્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યું (એવ
 સ્વલુ સુદસણા અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લ) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ
 મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે (સેવિય સોણ દુવિહે પળ્લન્તે) શૌચના બે પ્રકાર છે
 (દવ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (દવ્વસોણ ય
 ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) પાણી અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય (ભાવસોણ
 દબ્મેહિં ય મતેહિં ય) ભાવ શૌચ હર્ષ અને મત્રોપદે થાય છે (જન્મ અમ્હં

भिपेक पूतात्मानः=जलेनाभिपेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते,
प्राणिनः 'अविग्धेण' अविग्नेन प्रतिबन्धरहितेन 'सग्ग' स्वर्गं गच्छन्ति ।
ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म=
शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा 'हृष्टे, हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौच
मूलक धर्मं गृह्णाति । सांख्यमतस्योक्तस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः,
शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि
वस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा बह्व

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण चारिणा पक्खालिज्जइ)
हे देवानुप्रिय । जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-
अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज छेते
हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई
भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्धेण सग्ग गच्छति)
इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार
जीव भी जलाभिपेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत
जल्दी बिना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । (तएण से
सुदसणे सुयस्स अतिण धम्म सोच्चा हृष्टे सुयस्स अतिए सोयमूलय
धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर
बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म
अंगीकार कर लिया । (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइम
साइमेण बत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवानुप्रिया ? किं च असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ
पच्छा सुद्धेण चारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय । हमारा हाथ, पाग कम-
ण्डलु वगैरे अपवित्र थध् नथ छे तो पछेला तेने नवीन भाटीथी अमे छट्टी
अे छीअे अने त्थार पछी शुद्ध पाणी थी साइ करी लधअे छीअे (तओ
त असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्धेण सग्ग
गच्छति) अे प्रभ । ते अपवित्र पदार्थ पवित्र थध् नथ छे आ रीते एव
पणु पाणीथी स्नान करी । पवित्रात्मा थधने सत्तरे कोर्ध पणु नतना अट
काव के मुक्केली वगर सजे पछोथी नथ छे (तएण से सुदसणे सुयस्स
अतिण धम्म सोच्चा ह सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) अ रीते
ते सुदर्शन नगर शेठ शुद्धनी पासेथी धर्मानु श्रमणु करीने भूणअ् डधं पाअ्था
अने तेनी पासेथी तेभणु शौच मूलक धर्म स्वीकथी (गेण्हित्ता परिव्वायए
विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण बत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विह-

प्रतिग्रहेण प्रतिलाभयन् सत्कारयन् समानयन् यायद् विहरति=विचरति । ततस्त-
दनन्तर खलु स शुकः परिव्राजकः सौगन्धिकाया नगर्या निर्गच्छति, निर्गत्य
च बहिर्जनपदविहार विहरति=करोतिस्म ॥ १९ ॥

मूलम्-तेण कालेण तेण समएणं थावच्चापुत्तस्स समोस-
रण, परिसा निग्गया सुदसणो वि णिग्गओ, थावच्चापुत्तं वदइ
नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-तुम्हाणं कि मूलए
धम्मे पन्नत्ते ? तएणं थावच्चापुत्ते सुदसणेण एव वुत्ते समाणे
सुदसण एव वयासी-सुदसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते
सेवि य विणए दुविहे पन्नत्ते त जहा-अगारविणए अणगार
विणए य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं चत्तारि अणुव्वयाइं
सत्त सिक्खावयाइ, एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थण जे
से अणगारविणए से ण चत्तारि महाव्वयाइ, त जहा-सव्वाओ
पाणाइवायाओ वेरमणसव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ

अ गीकार करके उन्होंने फिर अशन पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चारों
प्रकार के आहार से और वस्त्र के प्रदान से उस शुक परिव्राजक को
लाभान्वित किया सत्कारित किया, -सन्मानित किया । (तएण से
सुए परिव्वायगे सौगंधियाओ नगरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता बहिया
जणवयविहार विहरइ) इसके बाद वह शुक परिव्राजक सौगंधिका
नगरी से निकला और निकल कर बाहर अन्य देशों की ओर विहार
कर गया । “ सू-१९ ”

रइ) शौच मूलक धर्म स्वीकारीने तेमणे शुक परिव्राजकने अशन, पान, याय
अने स्वाद्य रूप आदि प्रकारना आहारो तेमण पन्नो अपाने लाभान्वित कथ्यो
अने सन्मान कथुं (तएण से सुए परिव्वायगे सौगंधियाओ नगरीओ निग-
च्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) त्याइ पजी शुक परिव्राजक
सौगंधिका नगरीथी छोडरना भील देशो तरइ बिहार करवा नीकिया ॥ सू० १९ ॥

अदिज्ञादाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ
राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादसणसह्वाओ वेरमण,
दसविहे पचक्खाणे चारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेण
विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता
लोयग्गपइट्ठाणा भवति ॥ सू० २० ॥

(तेण कालेण) इत्यादि

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिकार्या नगर्या थावच्चापुत्तस्स
समवसरणमागमनमभूत्, तदा परिपन्निर्गता = सौगन्धिका नगरी निवासिनो
लोकाः स्थापत्यापुत्र वन्दितु निर्गता, सुदर्शनोऽपि = सुदर्शनाम्ना नगरश्रेष्ठी अपि,
निर्गतः, तत्रागत्य थावच्चापुत्र उन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नत्वा च एव = वक्ष्य
माणप्रकारेण, अवादीत्-हे भगवान् ! गुप्ता किं मूलको धर्मः प्राप्तः ? ततस्त-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ- (तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
उस सौगन्धिकानगरी में विहार करते हुए (थावच्चापुत्तस्स समोसरण)
स्थापत्यापुत्र अनगर का आगमन हुआ। (परिसा निग्गया, सुदसणो वि
णिग्गओ) स्थापत्यापुत्र का आगमन सुनकर सौगंधिका नगरीके निवासी
जन उनको वदना करनेके लिये चले सुदर्शनसेठ भी चला। (थावच्चा-
पुत्त वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) उसने वहाँ पहुँचकर
स्थापत्या पुत्र अनगरको वचन से स्तुति करने रूप वदना की तथा काय
से उन्हे नमन किया। वदना नमस्कर करके फिर उसने उनसे इस प्रकार

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये ते सौग
धिका नगरीमा विहार करता (थावच्चा पुत्तस्स समोसरण) स्थापत्यापुत्र अन
गार आया (परिसा निग्गया सुदसणा वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रने आप्त्यानी
नष्ट यता न सौगंधिका नगरीना नागरिको तेमने वदन उरवा नीउण्या पडया
सुदर्शन सेठ पण तेमने वदन उरवा नीउण्या (थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ
वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी) त्या पछोन्हीने तेमणे स्थापत्या पुत्र अनगार
ना वचनयी स्तुति उनीने वदन कर्था तेमण कायाथा नगीने तेमने नमस्का
कर्था वदन अने नमस्का उनीने सुदर्शन सेठ तेमने विनती उरी (तुम्हाण

દનન્તરં સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનેનૈવમુક્તઃ સન્ સુદર્શનમેવમવાદીત્—

હે સુદર્શન ! અસ્માક ધર્મ દુર્ગતૌ પતતો જન્તૂન્ ધરતિ રક્ષતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતિ ઇતિ ધર્મઃ આચાર, વિનયમૂલઃ=વિનયતિ અપનયતિ નાશયતિ સકલ-લ્લેશકારકમષ્ટવિધ કર્મ યઃ સ વિનય કર્માપનયનસમર્થચારિત્રલક્ષણોઽનુષ્ઠાન વિશેષઃ સ એવ મૂલ કારણં યસ્ય સ તથા,—ઉક્ત ચ—

કર્મણા દ્રાગ્ વિનયનાદ્ વિનયો વિદુષાં મત ।

અપવર્ગ ફલાદ્યસ્ય મૂલ ધર્મતરોરયમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

ચારિત્રમાશ્રિત્ય લઘ્વરિથતિક્ સ્વર્થ, યદ્વા વિનયો વિનીતતા દ્રવ્યભાવાભ્યાં નમ્રતા તન્મૂલકઃ, પ્રજ્ઞસઃ=તીર્થંકરૈ પ્રરુપિતઃ । સોઽપિ ચ વિનયો દ્વિવિધઃ તથા—

કહા (તુમ્હા નાં કિ મૂલે ધર્મે પત્તે) હે ભગવાન ! આપકા ધર્મ કિ મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (તણ થાવન્ચાપુત્ત સુદસણેણ તવ વુત્તે સમાણે સુદસણ એવ વચસી) હસ પ્રકાર સુદર્શન સેઠ કે દ્વારા હસ પ્રકાર પૂછે ગયે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસસે હસ પ્રકાર કહા (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પત્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ-વિનય મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । દુર્ગતિમે જાને સે જો પ્રાણિયો કો બચાતા હૈં ઓર શુભ સ્થાન મેં ઉન્હે પહુંચાતા હૈં ઉસકા નામ ધર્મ-આચાર હૈં । સકલ લ્લેશોંકા દાતા જો અષ્ટ પ્રકાર કા કર્મ હૈં ઉસે જો નાશ કરતા હૈં ઉસકા નામ વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ હૈં । યહ વિનય હી ધર્મ કા મૂલ કારણ કહા ગયા હૈં-કહા મિ હૈં જિસકે દ્વારા જીવ જ્ઞાતિતિ કર્મોં કા નાશ કર દેતા હૈં તથા અપવર્ગ રૂપ ફલ સે યુક્ત હુએ જો ધર્મરૂપી વૃક્ષકા મૂલ હૈં-વહી વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ હી માના ગયા હૈં

કિં મૂલે ધર્મે પત્તે) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શુ છે (તણ થાવન્ચાપુત્ત સુદસણેણ એવ વુત્ત સમાણે સુદસણ એવ વચાસી) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમા તેમને કહ્યું (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પત્તે) હે સુદર્શન ! અમાગ ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમા જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમા તેમને લઈ બાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમ સ્ત કહેશેને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનું નામ ‘વિનય’ છે એવું જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે ‘વિનય’ જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (સે વિનય વિનય દ્વિવિધે પળ્લે) તે વિનય

અગારવિનયોઽનગારવિનયશ્ચ । તત્ર સ્વલુ ય સ અગારવિનયઃ સ સ્વલુ ચતવારિઅણુ
વ્રતાનિ, સપ્ત શિક્ષાવ્રતાનિ, એકાદશોપાસકપ્રતિમા. । અગારવિનયવિષયે સવિસ્તર
વર્ણનમુપાસકદશાદ્વેદીકાયામગારધર્મસંજીવન્યા દ્રષ્ટવ્યમ્, તત્ર ચતુર્વિંશતિતમતીર્થ
કર શ્રી મહાવીરશાસનત્વેન આનન્દગાથાપતિવર્ણને પશ્ચાણુવ્રતાનિ પશ્ચમહાવ્રતાનિ
વર્ણિતાનિ । અત્રારિષ્ટનેમેઢ્ઢાવિંશતિતમતીર્થકરશાસનચતુર્થત્રતમ્ય પરિગ્રહવિરમણ-

(સે વિ ય વિણયે હુવિહે પળણત્તે) વહ વિનય મી દો પ્રકાર કા પ્રજ્ઞસ
હુઆ હૈ । (તજહા) વહ ઇસ પ્રકાર સે-(અગારવિણણ અણગારવિણણ) ૧
અગાર વિનય-દૂસરા અનગાર વિનય । યે દો ભેદ ચારિત્ર પર વિનય કો
લક્ષ્ય મેં રલ્લકર ક્રિયે ગયે હૈ । જપ વિનય કા અર્થ વિનીતતા-નમ્રતા
હોતી હૈ ઉસ સમય દ્રવ્ય કી અપેક્ષા નમ્રતા ઓર માવ કી અપેક્ષા નમ્રતા
ઇસ તરહ મી ઉસકે દો ભેદ હો જાતે હૈ (તત્થ ણ જે સે આગારવિણણ
સેણ ચત્તારિ અણુવ્વયાહ સત્તાસિલ્લાવયાહ ઇત્તકારસડવાસગપહિ
માઓ) અગારવિનય ચાર અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તથા ૧૧ ઉપાસક
પ્રતિમા રૂપ હૈ । ઇસ વિષયકા વિસ્તૃત વર્ણન ઉપાસક દશાંગકી ટીકા
અગારધર્મ સંજીવની મે ક્રિયા ગયા હૈ અતઃ યહવિષય વહા સે જાનહેના
ચાહિયે । વિગ્રોપ કેવલ ઇતના હી હૈ-વહા ચૌવીસવે તીર્થકર શ્રી મહા-
વીર સ્વામી કા શાસન હોને સે ઉપાસક દશાંગસૂત્ર મે આનન્દગાથાપતિ
કે વર્ણન મેં પાચ અણુવ્રત ઓર પાચ મહાવ્રત કહે ગયે હૈ કિન્તુ યહાં
ચાઈસવે તીર્થકર શ્રી અરિષ્ટનેમિ ભગવાન કે શાસન મેં ચૌથે વ્રત કા

ના પણુ જે પ્રકાર કહેવામા આવ્યા છે (ત જહા) તે પ્રકારે આ પ્રમાણે
છે (અગારવિણણ અણગારવિણણ) ૧, આગાર વિનય, ૨, અનગાર વિનય
આ બંને વિનયના પ્રકારે ચારિત્ર ગત વિનયને અનુલક્ષીને જ કરવામા
આવ્યા છે બ્યારે વિનય રાખ્દનેા અર્થ 'વિનીતતા' (નમ્રતા) થાય છે ત્યારે
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ નમ્રતા તેમજ લાવની અપેક્ષાએ પણુ નમ્રતા આ રીતે
પણુ તેના જે ભેદ થાય છે (તત્થ ણ જે સે અગારવિણણ સે ણ ચત્તારિ અણુવ્વયાહ
સપ્ત સિલ્લાવયાહ, ઇત્તકારસડવાસગપહિમાઓ) આગાર વિનય પાચ અણુ
વ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તેમજ અગિયાર ઉપાસક પ્રતિમા રૂપ છે આ વિષે સ
વિસ્તર માહિતી ઉપાસક દશાંગનુવ્રતની અગારધર્મસંજીવની ટીકામા આપે
લી છે જિજ્ઞાસુ જનોએ ત્યાથી બાણી લેવુ જોઈએ વિશેષ ડેવણ એટલુ જ
છે કે ત્યા ચોવીસમા તીર્થ કર શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ શાસન હોવાથી આન
ન્દ ગાથાપતીના વર્ણનમા પાચ અણુવ્રત અને પાચ મહાવ્રત કહેલા છે પરતુ
અહીં મહાવીરમા તીર્થ કર શ્રી અરિષ્ટનેમિ ભગવાનના આશનમા ચોથાવ્રતને

દનન્તર સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનેનૈવમુક્તઃ સન્ સુદર્શનમેવમવાદીત્-

હે સુદર્શન ! અસ્માક ધર્મઃ દુર્ગતૌ પતતો જન્તુન્ ધરતિ રક્ષતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતિ ઇતિ ધર્મઃ આચાર, વિનયમૂલઃ=વિનયતિ અપનયતિ નાશયતિ સકલ-લ્લેશકારકમષ્ટવિધ કર્મ યઃ સ વિનય કર્માપનયનસમર્થચારિત્રલક્ષણોઽનુષ્ઠાન વિશેષઃ સ એવ મૂલ કારણ યસ્ય સ તથા,-ઉક્ત ચ-

કર્મણા દ્રાગ્ વિનયનાદ્ વિનયો વિદુષાં મતઃ ।

અપવર્ગ ફલાદ્યસ્ય મૂલ ધર્મતરોરયમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

ચારિત્રમાશ્રિત્ય સ્વધરિથતિક્ક સ્થર્થ, યદ્વા વિનયો વિનીતતા દ્રવ્યભાવાભ્યાં નમ્રતા તન્મૂલક, પ્રજ્ઞસઃ=તીર્થકરૈ પ્રરુપિતઃ । સોઽપિ ચ વિનયો દ્વિવિધઃ તથા-

કહા (તુમ્હા ણ કિ મૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) હે ભગવાન ! આપકા ધર્મ કિં મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (તણ થાવ્ચ્ચાપુત્તે સુદસણેણ એવ વુત્તે સમાણે સુદસણ એવ વયસી) હસ પ્રકાર સુદર્શન સેઠ કે દ્વારા હસ પ્રકાર પૂછે ગયે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસસે હસ પ્રકાર કહા (સુદસણા અમ્હાણ વિણયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ-વિનય મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ । દુર્ગતિમે જાને સે જો પ્રાણિયો કો બ્ધાતા હૈ ઓર શુભ સ્થાન મેં ઉન્હે પહુંચાતા હૈ ઉસકા નામ ધર્મ-આચાર હૈ । સકલ લ્લેશોંકા દાતા જો અષ્ટ પ્રકાર કા કર્મ હૈ ઉસે જો નાશ કરતા હૈ ઉસકા નામ વિનય હૈ । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ હૈ । યહ વિનય હી ધર્મ કા મૂલ કારણ કહા ગયા હૈ-કહા મિ હૈ જિસકે દ્વારા જીવ જ્ઞદિતિ કર્મોં કા નાશ કર દેતા હૈ તથા અપવર્ગ રૂપ ફલ સે યુક્ત હુએ જો ધર્મરૂપી વૃક્ષકા મૂલ હૈ-વહી વિનય હૈ । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ હી માના ગયા હૈ

કિં મૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શું છે (તણ થાવ્ચ્ચાપુત્ત સુદસણેણ એવ વુત્ત સમાણે સુદસણ એવ વયસી) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાલણીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમાં તેમને કહ્યું (સુદસણા અમ્હાણ વિણયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) હે સુદર્શન ! અમારા ધર્મના આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમાં જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમાં તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમસ્ત કલેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનું નામ 'વિનય' છે એવું જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે એવ જલદી કર્મોના નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (સે વિય વિણય દુવિદ્ધે પન્નત્તે) તે વિનય

પ્થાનાઃ=મોક્ષપદાવસ્થિતા ભવન્તિ । લોકાગ્રે સિદ્ધિપદે પ્રતિષ્ઠાન સ્થિતિર્યેષા તે તથા સિદ્ધા ભવન્તિ ॥ ૨૦ ॥

મૂલમ્—તएण થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી—તુબ્ભેણં સુદસણા । કિં મૂલએ ધમ્મે પન્નત્તે ? અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા । સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે જાવ સગ્ગં ગચ્છંતિ, તएण થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી—સુદસણા । સે જહાનામએ કેઙ્ પુરિસે ઇગ મહ રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેજા તएણ સુદંસણા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પમ્મલાલિજ્જમાણસ્સ અત્થિ કાઙ્ સોહી ? ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એવામેવ સુદસણા । તુબ્ભપિ પાણાઙ્વાણં જાવ મિચ્છાદસણસહ્ણેણં નત્થિ સોહી જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પમ્મલાલિજ્જમાણસ્સ નત્થિ સોહી, સુદસણા । સે જહા ણામએ કેઙ્ પુરિસે ઇગં મહ રુહિરકય વત્થ સજ્જિયાચ્ચારેણં અણુલિપ્પઙ્, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઙ્ આરુહિત્તા ઉપહ ગાહેઙ્, ગાહિત્તા તત્તો પચ્છાસુદ્ધેણવારિણા ધોવેજા સે ણૂણં સુદસણા । તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાચ્ચારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉપહ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ વારિણા લોચગ્ગપદ્ધાગા ભવતિ)

ઇસ પ્રકાર ઢિવિધ વિનયમૂલક ધર્મ કી કી આરાધના સે જીવ ક્રમ ૨ સે અષ્ટ વિધ કર્મો કી પ્રકૃતિયો કો ચપાકર લોકકે અગ્ર ભાગમેં ચિરાજમાન હો જાતે હૈ ।—સિદ્ધ પદકે મોક્ષાવન જાતે હૈ । સૂત્રા॥૨૦॥

લોચગ્ગપદ્ધાગા ભવતિ) આ રીતે વિનયના બને પ્રકારે જે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ જાતની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને લોચગ્ગનાર થાય છે, ॥ સૂ-૨૦ ॥

વ્રતેન્તર્ભાવાત્ ચાઉજ્જામો ધમ્મો ઇતિ વચનાત્ ચત્તારિ ઝણુવ્રતાનિ, ચત્તારિ મહાવ્રતાનિ આસન્ ઇતિ ત્રિશેષઃ । તત્ર સ્વલુપ્તયઃ સોઽનગારવિનયઃ સ સ્વલુપ્ત પચ્ચ મહાવ્રતાનિ, તદ્યથા-સર્વસ્માત્ પ્રાણાતિપાતાદ્ વિરમણઃ, સર્વસ્માદ્ મૃપાગાદાદ્ વિરમણઃ, સર્વસ્માદ્ અદત્તાદાનાદ્ વિરમણઃ, સર્વસ્માત્ પરિગ્રહાદ્ વિરમણઃ । સર્વસ્માદ્ રાત્રિભોજનાદ્ વિરમણઃ, યાત્રન્મિત્યાદર્શનલ્પાદ્ વિરમણઃ, દશવિધ પ્રત્યાખ્યાન ટાદશભિક્ષુપ્રતિમા, ઇત્યેતેન દ્વિવિવેન, વિનયમૂલકેન ધર્મેણ 'અણુપુવ્વેણ' અણુપૂર્વેણ ક્રમેણ 'અટ્ટકર્મપગડીઓ' અટ્ટકર્મપ્રકૃતીઃ જ્ઞાના વરણીયાદ્યટ્ટકર્મપ્રકૃતીઃ 'સ્વેત્તા' ક્ષપયિત્વા 'લોચગ્ગપહ્વાણા' લોકાગ્રપતિ પાચવે પરિગ્રહચિરમણવ્રત મેં અન્તર્ભાવ હોને સે 'ચાઉજ્જામો ધમ્મો' ।

(તત્થ ણ જે સે અણગારવિણે સે ણં ચત્તારિ મહવ્વયાહ ત જહા) ।
 इसी तरह जो अनगार विनय है वह चार महाव्रत रूप है जैसे (सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ सुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदि-
 न्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ परिग्राहाओ वेरमण, सव्वाओ भोयणाओ वेरमण जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण) समस्त प्राणातिपात से विरमण, समस्त मृपागाद से विरमण समस्त अदत्तादान से विरमण, समस्त परिग्रह से विरमण होना इन चार प्रकार के महाव्रतरूप तथा समस्त रात्रि भोजन से विरमण यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से विरमण होना इन रूप तथा (दसविहे पच्चक्खाणे चारसमिक्खुपडिमाओ दस विध प्रत्याख्यान रूप और १२ चारह भिक्षु प्रतिमा रूप है (इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएण धम्मेण अणुपुव्वेण अट्ट कर्मपगडीओ स्ववेत्ता

પાચમા પરિશ્રદ્ધ વિશ્વભુ વ્રતમા અન્તર્ભાવ હોવાથી "ચાઉજ્જામો ધમ્મો" એ વચનથી ચાર અણુવ્રત અને ચાર મહાવ્રત કહ્યા છે (તત્થ ણ જે સે અણગાર વિણે સે ણ ચત્તારિમહવ્વયાહ ત જહા) આ રીતે જ અનગાર વિનય પણ ચાર મહાવ્રત રૂપ છે જેમકે (સવ્વાઓ પાણાઈવાયાઓ વેરમણ સવ્વાઓ સુસાવાયાઓ વેરમણ સવ્વાઓ અદિન્નદાણાઓ વેરમણ સવ્વાઓ પરિગ્રહાઓ વેરમણ સવ્વાઓ રાહ ભોયણાઓ વેરમણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લાઓ વેરમણ) સકળ પ્રાણાતિપાતથી વિરમણ સકળ મૃપાગાદ (અસત્યભાષણ) થી વિરમણ, સકળ અદત્તાદાનથી વિરમણ, અને સકળ પરિગ્રહથી વિરમણ આ ચાર વ્રતના મહાવ્રત રૂપ છે રાત્રિ ભોજનથી વિરમણ યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી વિરમિત થયું, (દસવિહે પચ્ચ ક્ષણે ચારસમિક્ખુપડિમાઓ) દશવિધ પ્રત્યાખ્યાનરૂપ અને ચાર પ્રતિમારૂપ છે (ઈચ્છેણં દુવિહેણ વિણયમૂલેણ ધમ્મેણ અણુપુવ્વેણ અટ્ટકર્મપગડીઓ સ્વેત્તા

ષ્ટાનાઃ=મોક્ષપદાવસ્થિતા ભવન્તિ । લોકાગ્રે સિદ્ધિપદે પ્રતિષ્ઠાન સ્થિતિર્યેવા તે તથા સિદ્ધા ભવન્તિ ॥ ૨૦ ॥

મૂલમ્-તएण થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-તુબ્ભેણ સુદસણા । કિં મૂલમ્ ધમ્મે પન્નત્તે ? અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા । સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે જાવ સગ્ગ ગચ્છંતિ, તएण થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-સુદસણા । સે જહાનામમ્ કેઙ્ પુરિસેણમ્ મહ રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેજ્ઞા તएણં સુદસણા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પમ્મલાલિજ્ઞમાણસ્સ અતિથિ કાઙ્ સોહી ? ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એવામેવ સુદસણા । તુબ્ભંપિ પાણાઙ્વાણં જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણં નતિથિ સોહી જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પમ્મલાલિજ્ઞમાણસ્સ નતિથિ સોહી, સુદસણા । સે જહા ણામમ્ કેઙ્ પુરિસેણમ્ મહ રુહિરકય વત્થ સજ્જિયાચારેણં અણુલિપ્પિ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઙ્ આરુહિત્તા ઉપ્પહ ગાહેઙ્, ગાહિત્તા તત્તો પચ્છાસુદ્ધેણવારિણા ધોવેજ્ઞા સે ણૂણ સુદસણા । તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાચારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉપ્પહ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ વારિણા લોચગ્ગપદ્ધાગા ભવતિ) ઇસ પ્રકાર દ્વિવિધ વિનયમૂલક ધર્મ કી કી આરાધના સે જીવ ક્રમ ૨ સે અષ્ટ વિધ કર્મો કી પ્રકૃતિયો કો લખાકર લોકકે અગ્ર ભાગમે વિરાજમાન હો જાતે હૈ ।-સિદ્ધ પદકે ભોક્તાવન જાતે હૈ । સૂત્રા॥૨૦॥

લોચગ્ગપદ્ધાગા ભવતિ) આ રીતે વિનયના બને પ્રકારો બે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ બલની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને ભોગવનાર થાય છે, ॥ સૂ-૨૦ ॥

પક્ષાલિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઈ ? હંતા ભવઈ, એવામેવ સુદં-
સણા ! અમ્હપિ પાણાઙ્ગવાયવેરમણેણં અત્થિ સોહી, જહા વા
તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં વારિણા પક્ષાલિજ્જમા-
ણસ્સ અત્થિ સોહી, તણ્ણ સે સુદંસણે સવુદ્ધે થાવચ્છાપુત્ત વદઈ,
નમસઈ, વદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી-ઙ્ગચ્છામિણં ભંતે ! ધમ્મ
સોચ્છા જાણિત્તણ્ણ જાવ સમણોવાસણ્ણ જાણ્ણ અહિગયજીવાજીવે
જાવ પડિલાભેમાણે વિહરઈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

(તણ્ણ થાવચ્છા ૦) इत्यादि ।

ટીકા- તતઃ સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનમેવમવાદીત્-તત્ત્વ ગ્વલુ સુદર્શનઃ
કિં મૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ ? એવ સ્થાપત્યાપુત્રેણ પૃષ્ઠઃ સન્ સુદર્શનો વદતિ-‘ અમ્હા-
ણ ’ इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माक शौचमूलो धर्मः प्रज्ञसः, यावत् स्वर्गं गच्छन्ति
अत्र यावच्छब्देन-‘ सेऽपि य सोऽहं दुग्धिं पन्नत्ते त जहा दव्वसोऽहं य भाव

तण्ण थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ્ણ થાવચ્છાપુત્તે) હસ પ્રકાર કહનેકે બાદ સ્થાપત્યાપુત્ર
અનગાર ને પુનઃ (સુદસણ એવ) સુદર્શન સે હસ પ્રકાર કહા-(તુમ્હેણ
સુદસણા કિ મૂલક ધમ્મે પન્નત્તે હે સુદર્શન ! તુમ્હારા ધર્મ કિ મૂલક
પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ (અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા ! સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) તત્ત
સુદર્શનને કહા હે દેવનુપ્રિય ! હમારા ધર્મ શૌચમૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ ।
(જાવ સગ્ગ ગચ્છતિ) હસ સુદર્શન કે કથન “ મેં સ્વર્ગ જાતે હૈ ” યહા
તક કા પાઠ લગા લેના ચાહિયે-જેસે-“સોવિયસોઽહં દુગ્ધિહે પન્નત્તે તજહા

‘ તણ્ણ થાવચ્છા પુત્તે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ્ણ થાવચ્છાપુત્તે) (સુદસણ એવ) આ રીતે ઉપદેશ આપતા સ્થા
પત્યાપુત્ર અનગારે ફરી, (સુદસણ એવ) સુદર્શનને અગોષધતા કહ્યું-(તુમ્હેણ સુદ
સણા ! કિં મૂલક ધમ્મે પન્નત્તે) હે સુદર્શન તમારા ધર્મનું મૂળ શું પ્રાપ્ત થયું છે ?
(અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા ! સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) જવાબ આપતા સુદર્શને કહ્યું
“ હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનું મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે ” એટલેકે મારા ધર્મ
શૌચ મૂલક સગ્ગ ગચ્છતિ) ‘યાવત્’ સ્વર્ગમા પહોંચે છે ” સુદર્શનના
કથનમા “ સો વિય સોઽહં દુગ્ધિહે પન્નત્તે ત જહા

सोए य इत्यादि एव खलु जीवा जलामिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण ' इति पर्यन्त
वाच्यम् । ततः खलु स्वात्पापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः
कश्चित् पुरुष एक महद् ' रुहिरकय ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधरेण चैव=
शोणितेनैव ' धोवेज्जा ' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन । तस्य रुधिरकृतस्य
वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता,
' णो इण्ठे समट्ठे ' नायमर्थः समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधरेणैव प्रक्षालित सन्
पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकी बुद्धिमुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः ।
हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भपि ' तत्रापि ' पाणाद्वाएण ' प्राणातिपातेन याव-
न्मिवादर्शशल्येन नास्ति शोधि, सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुत्रः

द्वसोए य भावसोए य " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जला
मिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " (तएण धावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी)
इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्वापत्पापुत्र अनगारने उस
सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(सुदसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एग
मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहि-
रकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !)
हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बड़े भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर
से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि
होती है जैसे (णो इण्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं होता-रुधिर
से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है-जैसा यह
अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा माय नहीं होता है (एवामेव सुदसणाऽ
तुब्भपि पाणाद्वाएण जावमिच्छादमणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स
रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

द्वसोए य भावसोए य " अहीथी " एव खलु जीवा जलामिसेयपूयप्पाणो
अविग्गेण " अही मु'नी सुदर्शननु कथन सम'लु लेध'ले (तएण धावच्चा
पुत्ते सुदसणएव वयासी) आ गीते सुदर्शननी शौथ भूवड धम विधेनी वात
सावणीने स्वापत्पा पुत्र अनगारे तेभने आ प्रभाए कहु- (सुदसणा ! से जहा
नामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ?
तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !)
हे सुदर्शन ! हे ध पुत्र बोहीणीनु मोटु दूगडु बोहीथी न भाइ करे तो ते
बोहीथी भाइ करेले दूगडु शु शुद्ध थरे । (णो इण्ठे समट्ठे) नेम बोही
णीनु दूगडु बोहीथी -व'ल थाय नहि आ वात आभाणिड बुद्धिथी गमे
तेने करीअेतो पणु भा य थाय नहि (एवामेव सुदसणा ? तुब्भपि पाणा-
द्वाएण जाव मिच्छादमणसल्लेण नत्थि सोही) ते रीते सुदर्शन ! तारी पणु

પચ્ચાલિજ્ઞમાણસ્સ સોહી ભવઈ ? હંતા ભવઈ, એવામેવ સુદ-
સણા ! અમ્હપિ પાણાઙ્ગવાયવેરમણેણં અત્થિ સોહી, જહા વા
તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં વારિણા પચ્ચાલિજ્ઞમા-
ણસ્સ અત્થિ સોહી, તણં સે સુદસણે સવુદ્ધે થાવચ્ચાપુત્ત વદઈ,
નમસઈ, વંદિત્તા નમસિત્તા એવં વયાસી-ઙ્ગચ્છામિણ ભંતે ! ધમ્મ
સોચ્ચા જાણિત્તણ જાવ સમણોવાસણ જાણ અહિગયજીવાજીવે
જાવ પહિલાભેમાણે વિહરઈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

(તણ થાવચ્ચા ૦) इत्यादि ।

ટીકા- તત. સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનમેવમરાતીત્-તવ સ્વલુ સુદર્શનઃ
કિં મૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ ? એવ સ્થાપત્યાપુત્રેણ પૃષ્ઠઃ સન્ સુદર્શનો વદતિ-‘ અમ્હા-
ણ ’ इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माक शौचमूलो धर्मः प्रज्ञसः, यावत् स्वर्गं गच्छन्ति
अत्र यावच्छब्देन-‘ सेऽपि य सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा दक्खसोए य भान

तएण थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ થાવચ્ચાપુત્તે) इस प्रकार कहनेके बाद स्थापत्यापुत्र
अनगार ने पुनः (सुदसण एव) सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(तुम्हेण
सुदसणा कि मूलए धम्मे पन्नत्ते हे सुदर्शन ! तुम्हारा धर्म कि मूलक
प्रज्ञस हुआ है (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) तव
सुदर्शनने कहा हे देवनुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक प्रज्ञस हुआ है ।
(जाव सग्ग गच्छति) इस सुदर्शन के कथन “ मैं स्वर्ग जाते है ” यहा
तक का पाठ लगा लेना चाहिये-जैसे-“सोवियसोए दुविहे पन्नत्ते तजहा

‘ तएण थावच्चा पुत्ते ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ થાવચ્ચાપુત્તે) (सुदसण एव) आ शीते उपदेरा आपता स्था
पत्यापुत्र अनगारे इरी, (सुदसण एव) सुदर्शनने अनगोधता क्खु-(तुम्हेण सु
सणा ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते)हे सुदर्शन तमाश धर्मानु भूण शु प्रज्ञप्त थयु छे ?
(अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) देवाण आपता सुदर्शने क्खु
“हे देवानुप्रिय ! माश धर्मानु भूण शौच (पवित्रता) छे ” अटलेके भारे धर्मा
शौच मूलक छे (जाव सग्ग गच्छति) ‘यावत्’ स्वर्गमा पछेये छे ” सुदर्शनना
कथनमा अडी सुधी लेवु लेध्थे लेभ ” सो विय सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा

सोए य इत्यादि एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण ' इति पर्यन्त वाच्यम् । ततः खलु स्वात्पापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एक सहद् ' रुहिरकय ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधरेण चैव= शोणितेनैव ' धोवेज्जा ' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता, ' णो इण्ठे समट्ठे ' नायमर्थः ' समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधरेणैव प्रक्षालित सन् पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकी बुद्धिमुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भपि ' तत्रापि ' पाणाइवाएण ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शशल्येन नास्ति शोधिः, सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

दन्वसोए य भावसोणय " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जला भिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " (तएण धावन्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्वापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(सुदसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बड़े भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे (णो इण्ठे समट्ठे) यह अर्थ समायित नहीं होता-रुधिर से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है-जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा माय नहीं होता है (एवामेव सुदसणाऽ तुब्भपि पाणाइवाएण जावमिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

दन्वसोए य भावसोए य " अहीथी " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " अही सुग्री सुदर्शननु कथन अभयबु नेष्टमे (तएण धावन्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) आ गीते सुदर्शननी शीथ भूला धर्मविषेनी वात सावणीने स्वापत्या पुत्र अनगारे तेभने आ प्रभाणु कल्लु-(सुदसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! ठेछ पुत्थ बोहीलीनु भाट्टु लूगडु बोहीथी ज माइ ठरे तो ते बोहीथी माइ करेनु लूगडु शु शुद्ध थये । (णो इण्ठे समट्ठे) जेम बोहीलीनु लूगडु बोहीथी म्पण थाय ज नडि आ वात प्रामाणिक बुद्धिथी गमे तेने ठरीयेतो पणु माय थाय ज नडि (एवामेव सुदसणा ? तुब्भपि पाणा इवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही) ते रीते सुदर्शन ! तारी पणु

एक महद् रुधिरकृत उत्त ' सज्जियाखारेण ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिपि ' अनुलिपति अनुलिप्य ! ' पयण ' पचन पाकस्थान ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्त उत्तक्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्वा क कर्मिश्चिम् मृमयादिपात्रे निधाय तत्पात्र चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आत् ' उण्ह गाहेइ ' उण्ण ग्राहयति उण्णीकरोति ग्राहयित्वा तत् पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत्, हे सुदर्शन ! स नून तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योण्ण ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र

इसी तरह हे सुदसण ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नहीं होती है । जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नहीं होती है । (सुदसणा ? से जहाणामए केइपुरिसे एग मह रुधिरकयवत्त सज्जियाखारेण अणुलिपिइ, अणुलिपित्ता पयण आरुहेइ, आरुहिता उण्हे गाहेइ, गाहिता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा । तस्स रुधिरकयस्स वत्तस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण सुद्धेण वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे, अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के बर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है—रखकर फिर उसे गर्म करता है—गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી ડે યાવત્ મિથ્યાદર્શન ચલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ કે લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે જહા ણામએ કેઈ પુરિસે એગ મહ રુધિરકયવત્ત સજ્જિયાખારેણ અણુલિપિઈ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઈ, આરુહિતા ઉણ્હે ગાહેઈ, ગાહિતા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુધિરકયસ્મ વત્તસ્સ સજ્જિયાખારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્મ ઉણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્કલા લિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઈ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સી પહેલા લોહીથીનાં વસ્ત્રને માણસ સાથળખાર ના પાણીમા બોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને બિનુ કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાથળખારમા બોળવાથી

क्षाल्यमानस्य 'सोही' शोधिर्भवति । इन्त । भवति । एतमेव सुदर्शन । अस्माकपि 'पाणाइवायवेरमणे' प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनयल्यविरमणेना स्ति शोधिः, आत्मन पवित्रता भवति, यथा वा तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य यावत् शुद्धेन वारिणा प्रक्षाल्यमानस्यास्ति शोधिः । वस्त्ररूपोऽयमात्मा रुधिररूप प्राणातिपाताद्यष्टादशपापस्थानोपल्लिप्तः सम्यक्त्वरूपया क्षारमृत्तिभ्यामुत्तुलेप प्राप्य शरीरभाण्ड जिनरूपस्थविरकरूपरूपचनस्थानोपरी सस्थाप्य तपोऽग्निना परितापितः समयरूपशुद्धजलेन प्रक्षालितः सन् निर्मल स्पर्शदर्पणवत्प्रकाशमानो भवति नान्ययेत्यर्थः । ये तु प्राणातिपातादि परायणा जीवाः शुद्धयर्थं मृद्वारिज नित शौच जलाभिपेक च कुर्वन्तः सन्ति, तान् प्रतिदयन्ते खलु जीवाजीवतत्त्ववे दिनो विद्वाम्—अहो ! प्राणातिपातादि सेवनजनित ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधमर्म-मलनिरन्तरलेपानुलेपसग्रहपरायणा अपि इमे जीवा पुनः प्राणातिपातादिभिरेव-शुद्धिमिच्छन्ति अहो ! कीदृशो मोहस्य महिमा वरीरर्गि ।

उस रुधिरलिप्त वस्त्र की सर्जिका खार से अनुलिप्त होने पर, पाकस्थान पर रखे जाने पर गर्म किये जाने पर, और शुद्ध जल से प्रक्षालित हो जानेपर शुद्धि होती है ? (हता भवइ) हाँ होती है (एवामेव सुदसणा ! अम्हे पि पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणमल्लवेरमणेण अत्थि सोही) तो इसी तरह हे सुदर्शन ! हमारी भी प्राणातिपातविरमण से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से शुद्धि होती है अर्थात् आत्मा की पवित्रता होती है । (जहा वा तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) जैसे उस रुधिरलिप्त वस्त्र को यावत् शुद्ध जल से प्रक्षालित करने पर शुद्धि हो जाती है । (तएण

बूला उपर अढावीने गरम, करवाथी तेमज्ज शुद्ध पाणीथी साइ उवा थी न्वच्छ थं जय ठे के नडि (हता भवइ) सुदर्शने जवाणभा कहु " न्वच्छ थं जयछे " (एवामेव सुद सणा ! अम्हेपि पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छा दसणसल्लवेरमणेण अत्थिसोही) तो आ प्रभाणु ज्ज प्राणातिपात विरमणुथी यावत् मिथ्यादर्शन नान्यना विरमणुथी शुद्धि थाय ठे ओटवे ठे ओमनाथी आत्मा पवित्र थाय ठे (जहा वा तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही) जेम ठे बोहीलीना वज्ज साण्णार तेमज्ज शुद्ध पाणीथी शुद्ध थं जय छे (तएण से सुद सणे सुवुद्धे वावन्चापुत्त वडइ नमसइ, वदिता नमसिता एव वयासी) आ रीते उपदेश अपाओला सुदर्शन शेठे न्यापत्यापुत्र अनगरने विनती करता कहु ' हे लगवान ! श्रुतधारित्र इय धर्मा आराधइ तमने धन्य छे " आ रीते कहुनि तेमने व दन तेमज्ज नमस्कार

एक महद् रुधिरकृत वस्त्र 'सज्जियाखारेण' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया 'अणुलिपि' अणुलिपति अनुलिप्य ! 'पयण' पचन पाकस्थान 'आरुहेइ' आरोहयति रुधिरलिप्त वस्त्र क्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्या क कर्मिश्चिम् मृमयादिपात्रे निधाय तत्पात्रं चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आरोह 'उण्ह गाहेइ' उष्णं ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा तत् पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत्, हे सुदर्शन ! स नूनं तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योष्णं ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा 'पक्खालिज्जमाणस्स' प

इसी तरह हे सुदसण ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नहीं होती है । जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नहीं होती है । (सुदसणा ? से जहाणामए केइपुरिसे एगं मह रुधिरकयवत्थ सज्जियाखारेण अणुलिपिइ, अणुलिपित्ता पयण आरुहेइ, आरुहित्ता उण्ह गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण सुद्धेण वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे, अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के बर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है—रखकर फिर उसे गर्म करता है—गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન રાત્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ કે લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે જહા ણામએ કેઈ પુરિસે એગ મહ રુધિરકયવત્થ સજ્જિયાખારેણ અણુલિપિઈ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઈ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેઈ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુધિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાખારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ડુણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્કા લિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઈ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલા લોહીથીના વસ્ત્રને માણસ સાથખાર ના પાણીમા યોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊંચુ કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પછે સાથખારમા યોળવાથી

દષ્ટાન્તકી યોજનાઠસ પ્રકાર દાષ્ટાન્તમે કરની ચહિયે-વસ્ત્ર કે જેસા
 યહ અત્મા હૈ રુધિરકે જેસે પ્રાણાતિપાતાદિક ૧૮અઠાઠ પાપસ્થાન હૈં ।
 હન સે યહ મલીન હો રહા હૈં । ક્ષાર મૃત્તિકા જેસા સમ્યક્ત્વ હૈં । સો જય
 યહ આત્મા ઠસ સમ્યક્ત્વ રૂપ ક્ષાર મૃત્તિકા સે અનુલિસ હો જાતા હૈં ઓર
 અપને શરીર રૂપ માઢકો જિનકલ્ય તથા સ્વવિર કલ્ય રૂપ પચન સ્થાન
 પર સ્થાપિત કરતા હૈં તપ, રૂપ અગ્નિસે અપને આપકો તપાતા હૈં તપ
 યહ સ્વચ્છ દર્પણકી તરહ પ્રકાશમાન હોને લગતા હૈં । ઠસ શુદ્ધિ માર્ગ
 કે અતિરિક આત્માકી શુદ્ધિ ઓર કિસી માર્ગ સે નહીં હો સકતી હૈં ।
 જો પ્રાણાતિપાતાદિકોમેં પરાયણ વને હુણ જીવ શુદ્ધિકે લિયે મૃત્તિકા
 એવ જલ કા ઉપયોગ કરતે હૈં ઓર ઠસસે આત્માકી શુચિતા મનતે હૈં
 ગગાદિ તીર્થોમેં સ્નાન કરને સે પાપોંકી નિવૃત્ત હોના માનતે હૈં ઠનકે
 પ્રતિ જીવ ઓર અજીવકે સ્વરૂપકો જાનનેવાલે વિઠ્ઠજ્જન સદય હો કર
 કહતે હૈં કી દેખોતો મહી યહ કેસીમોહ કી પ્રચલ મહિમા હૈં જો
 પ્રાણાતિપાત આદિ સેવન સે જનિત જાનાવરણીય આદિ અષ્ટવિધ
 કર્મમલ કે નિરન્તર લેપાનુલેપ કે સગ્રહ કરને મેં પરાયણ વને હુણ ખી

આ ઉક્ત દષ્ટાન્ત દષ્ટાન્તિઠ રૂપે આ ગીતે મમજ્જુ ભોજ્યિ-આ આત્મા
 વસ્ત્ર રૂપે છે પ્રાણાતિપાત વગેરે અઠાર પાપસ્થાનો લોહીની જેમ છે એમનાથી
 આત્મા મલિન થઈ રહ્યો છે માણખારના રૂપમા મમ્યક્ત્વ છે, ત્યારે
 આત્મા મમ્યક્ત્વ રૂપ માણખારથી અનુલિપ્ત થાય છે અને પોતાના શરીર
 રૂપી વાસણુને જિનકલ્ય તેમજ સ્થાવિરકલ્યરૂપ પચન સ્થાન (ચૂલા)
 ઉપર મૂકે છે તપ રૂપ અગ્નિ વડે શરીર રૂપી વાસણુને તપાવે છે ત્યારે તે
 સ્વચ્છ દર્પણ ના રૂપમા પ્રકાશિત થાય છે આત્માની શુદ્ધિનો આ ઢેવણ
 એજ માર્ગ છે કે જેનાથી આત્મશુદ્ધિ ચોક્કસ પછે સંભવિત થાય છે
 એના મિવાય બીજા કોઈ ઉપાયથી આત્મ-શુદ્ધિ થવી અસંભવિત છે જે પ્રાણા-
 તિપાત વગેરેમા લીન વયેલા છવો શુદ્ધિને માટે માટી અને પાણીનો ઉપ
 યોગ કરેછે, અને તેમનાથી આત્મ શુદ્ધિ માને છે-ગગા વગેરે તીર્થ સ્થાનોમા
 સ્નાન કરવાથી પાપો નષ્ટ થાય છે એમ માને છે તેમના પ્રત્યે છવ અને
 અછવના સ્વરૂપને બાણુનારા વિદ્વાનો સદય થકને કહેડે-જુઓ તો ખરા,
 અજ્ઞાનનો આ કેવો પ્રમણ મહિમા છે ? કે જેઓ પ્રાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી
 જનિત જાનાવરણીય વગેરે આઠ પ્રકારના ઈર્મ રૂપી જળને હમેશા લેપાનુ

ततः स्थापत्यापुत्रचनश्रयणानन्तरं खलु स सुदर्शः सम्यक्त्वमाहूः सन् स्थापत्यापुत्रं यन्दते श्रुतचारित्रलक्षणसद्धर्ममाराधनेन धन्योऽसि भगवन्-
त्यादिवाक्येन स्तोति इत्यर्थः । नमस्यति स्वापरूपं योधयन् श्रद्धेयचनतया गुरु
भावेन विनयं प्रकृत्यन् कायेन प्रणमतीत्यर्थः । यन्दित्वा नत्वा एव=वक्ष्यमाण
प्रकारेणावादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवान् ! धर्म=विनयमूलकं भवदुक्तं
श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा ज्ञातुम्, जीवाजीवपुण्यपापास्त्रयसत्तरनिर्जरासन्मोक्षरूपाणि
तत्त्वानि सम्यक् सर्वथा वेत्तुमित्यर्थः यावत्-यावत् करणादत्र धर्मश्रवणजीवाजी
वादितत्त्वज्ञानानन्तरं श्रावकधर्मस्वीकारेण, श्रमणोपासको जातः, स कीदृश इत्याह
-अधिगतजीवाजीवो यावत् प्रतिलाभयन् सत्कारयन् समानयन् विहरति ॥२१॥

से सुदर्शणे समुद्धे थावद्या पुत्तं यदहं नमसहं, यदित्ता नमसित्ता एव
वयासी) इस प्रकार संयोजित हुए सुदर्शन सेठने स्थापत्यापुत्र अनगार
की हे भगवान् श्रुतचारित्र रूप धर्म के आराधन करने वाले होने से
आपको धन्य है इत्यादि वचनो द्वारा वदना की नमस्कार किया । वदना
नमस्कार कर फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा (इच्छामि ण भते !
धम्म सोच्चा जाणित्तणं जाव समणोवासए जाए-अहिगया जीवा
जीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) हे भदन्त ! विनय मूलक श्रुतचारित्र
रूप धर्म को सुनकर मैं जीव, अजिव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर, निर्जरा
एव मोक्ष इन तत्त्वों को जानना चाहता हूँ । इस प्रकार वह धर्म-
श्रवण और जीवाजीवादितत्त्वों के बाद श्रावक धर्मस्वीकार कर श्रमणो
पासक बन गया । श्रमणोपासक बनकर फिर उसने स्थापत्यापुत्र अनगार
का आहार आदि प्रदान कर सत्कार किया-सन्मान किया ।

कथं वदना अने नमस्कार करीने तेमझे स्थापत्यापुत्र अनगारने विनति करी
-(इच्छामि ण भते ! धम्म सोच्चा जाणित्तणं जाव समणोवासए जाए अहिगय
जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ) हे भदन्त ! विनयमूलक श्रुतचारित्र
इय धर्मनी बात सावणीने हुं हवे एव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर,
निर्जरा, अध अने मोक्ष या आ तत्त्वोने स्पष्ट रूपे समझवानी इच्छा राखु
छु आ प्रभाजे स्थापत्यापुत्र अनगार ना मोढेथी आ अधा एव अलव
वगेरे तत्त्वो विचे सावणीने शेठ श्रावक धर्म स्वीकारीने श्रमणोपासक थय
गया श्रमणोपासक थयने शेठे स्थापत्यापुत्र अनगारने आहार वगेरे
अधीने सत्कार कथी सन्मान कथुं

तएण से सुदसणे सुयेणं परिवायएणं एवं वुत्ते समाणे
आसणाओ अवमुट्टेइ, अवमुट्ठित्ता करयल० सुयं परिवायग
एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स
अतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव
नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्मे
पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तस्य भुक्तस्य परिव्राजकस्य
'इमीसे कहाए' अम्याः कथायाः 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमे-
यारूवे' अयमेतद्रूपः पश्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आ-यात्मिक आत्मगतोविचारः,
यावत् समुपपद्यत=प्रादुर्भूतः—एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म 'विप्पजहाय'
विप्रजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्म. 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=त-
स्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टि=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धान 'वामेत्तए'
वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलकं धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल

'तएण तस्म सुयस्स' इत्यादि ।
टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्म सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको
जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह ससचार विदित हुआ
सुदर्शन से अनणोपासक बन गया—यह खबर मिली—तब (अयमेयारूवे
अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार
उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय
मूले धम्मे पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मको परित्याग कर
विनयमूलक धर्म कोस्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स
दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे आधवित्तए) सो अब मुझे

'तएण तस्म सुयस्स' इत्यादि ।
टीकार्थ (तएण) त्थारणाद (तस्म सुयस्स) शुक परिव्राजके न्याये (इमीसे
कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) आ वात आलणिके सुदर्शन श्रेष्ठ श्रमणोपासक
थय गयाउ त्थारे (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) तेना मनभा
विथार रुकुर्यो—(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्मे
पडिवन्ने) के सुदर्शन श्रेष्ठ शौच मूलक धर्म त्यागने विनय मूलक धर्म स्वी
कार्यो छे (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्मे
आधवित्तए) तो हुवे भारे सुदर्शननी विनय मूलक धर्म उपरथी श्रद्धा भटा

મૂલમ-તણે તસ્સ સુયસ્સ પરિવાયગસ્સ ઇમીસે કહાણ
 લઘ્ઘસ્સ સમાણસ્સ અયમેયારૂવે અજ્ઞતિથિણ જાવ સમુપજિતથા,
 એવ સ્વલ્લુ સુદસણેણં સોયમૂલ ધમ્મ વિપ્પજહાય વિણયમૂલે
 ધમ્મે પઢિવન્ને, તં સેય સ્વલ્લુ મમ સુદંસણસ્સ દિઢિં વામેત્તણ
 પુણરવિ સોયમૂલણ ધમ્મે આઘવિત્તણ ત્તિકદ્ધુ એવ સપેહેહ, સં-
 પેહિત્તા પરિવાયગસહસ્સેણં સઢ્ઢિં જેણેવ સોગધિયા નગરી જેણેવ
 પરિવાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પરિવાય-
 ગાવસહસિ ભડનિક્ખેવ કરેહ, કરિત્તા ધાઉરત્તવત્થપરિહિણ પવિ-
 રલપરિવાયગેહિ સઢ્ઢિં સપરિવુડે પરિવાયગાવસહાઓ પઢિ-
 નિક્ખમહ, પઢિનિક્ખમિત્તા સોગંધિયાણ નયરીણ મજ્ઞ મજ્ઞેણં
 સુદંસણસ્સ ગિહે જેણેવ સુદસણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ।

તણે સે સુદસણે ત સુય એજ્ઞમાણ પાસહ, પાસિત્તા નો
 અબ્બુદ્દેહ, નો પચ્ચુગ્ગચ્છહ ણો અઢાહ નો પરિયાણાહ નો વદહ
 તુસિણીણ સચ્ચિટ્ઠહ, તણે સે સુણ પરિવાયણ સુદસણ અણ-
 વ્બુટ્ઠિયં પાસિત્તા એવ વયાસી-તુમં ણં સુદસણા ! અન્નદા
 મમ એજ્ઞમાણ પાસિત્તા અબ્બુદ્દેસિ જાવ વદસિ ઇયાણિસુદસણા !
 તુમ મમ એજ્ઞમાણ પાસિત્તા ત કસ્સ ણં તુમે જાવ ણો વદસિ
 સુદસણા ! ઇમેયારૂવે વિણયમૂલે ધમ્મે પઢિવન્ને ।

ये जीव पुनः उन्ही प्राणातिपातादिको के सेवन से अपनी शुद्धि की
 कामना कर रहे हैं ॥ सूत्र २१ ॥

દેવને સશ્રદ્ધવામાં લીન થયેલા એ જીવો ફરી તેજ પ્રાણાતિપાત વગેરેના
 સેવનથી પોતાની શુદ્ધિ ઇચ્છે છે ॥ સૂત્ર “ ૨૧ ” ॥

तएणं से सुदसणे सुयेणं परिवायएणं एव वुत्ते समाणे
आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिवायगं
एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स
अतेवासी थावच्चापुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव
नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्म
पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तस्य शुकस्य परिव्राजकस्य
'इमीसे कहाए' अस्याः कथाया, 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमे-
याख्वे' अयमेतद्रूपः रक्ष्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आ यात्तिक आत्मगतोविचारः,
यावत् समुपपद्यत=प्रादुर्भूतः—एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म 'विप्पजहाय'
विपजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्मः, 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=त-
स्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टि=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धान 'वामेत्तए'
वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलक धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल-

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको
जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह ससंचार विदित हुआ
सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया—यह खबर मिली—तब (अयमेयाख्वे
अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार
उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय
मूले धम्म पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मको परित्याग कर
विनयमूलक धर्म को स्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स
दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्म आधवित्तए) सो अब मुझे

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ (तएण) त्थारणाद (तस्स सुयस्स) शुक परिव्राजके न्याये (इमीसे
कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) आ वात भाषणीके सुदर्शन गे० श्रमणोपासके
थय गथाठे त्थारे (अयमेयाख्वे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) तेना मनभा
विचार स्फुर्यो—(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्म
पडिवन्ने) के सुदर्शन श्रेष्ठ शौच मूलक धर्म त्यज्जने विनय मूलक धर्म स्वी
कार्यो छे (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्म
आधवित्तए) तो हुवे भारे सुदर्शननी विनय मूलक धर्म उपरथी श्रद्धा भटा

કર્મવિષયક શ્રદ્ધાન તદપનીય પુનરપિત શોચમૂલકે ધર્મે સ્થાપયિતુ મમોચિતમિ
ત્યર્થઃ । ‘ત્તિકદ્દુ’ ઇતિકૃત્વા=ઇદ મનસિ ધૃત્વા, એવમ્=ઉક્તપ્રકારેણ ‘સપેહેહ’
સપ્રેક્ષતે વિચારયતિ, ‘સપેહિત્તા’ સપ્રેક્ષ્ય ઇત્યેવ મનસિ વિચાર્ય, પરિત્રાજકસહસ્રેણ
સાર્થં યત્રૈવ સૌગધિકાનગરી યત્રૈવ પરિત્રાજકાવસથઃ=પરિત્રાજકાનામાવસથ આશ્રમ
તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પરિત્રાજકાવમયે માણ્ડનિક્ષેપમ્ ત્રિદण्डाद्युપकरणानां
સ્થાપન કરોતિ, કૃત્વા ધાતુરક્તવત્પરિહિતઃ ગૈરિકરાગરજિતનસ્યારી પ્રવિરલ-
પરિત્રાજકૈઃ કતિપથપરિત્રાજકાશ્રમાત્ ‘પઢિનિસ્ત્રલમર્દ’ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ=નિઃ
સરતિ । પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિઃસૃત્ય સૌગન્ધિકાયા નગર્યાં ‘મજ્ઞ મજ્ઞેણ’ મધ્યમધ્યેન
મધ્યમ-મધ્યમાગેન યત્રૈવ સુદર્શનસ્ય ગૃહ, યત્રૈવ સુદર્શનસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ ।

યહી યોગ્ય છે કે મેં સુદર્શન કી વિનય મૂલક ધર્મની દૃષ્ટિકો હટાકર
ઉસે સમજાકર સ્થાપિત કરું । (ત્તિકદ્દુએ સપેહેહ જેસા મનમેં ધારણ
કર ઉસને પૂર્વોક્તરૂપ સે ઉસે સમજાને કા વિચાર કિયા-(સપેહિત્તા
પરિવ્વાયગસહસ્રેણ સદ્ધિ જેણેવ સોગધિયા નગરી જેણેવ પરિવ્વાયગા
વસહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વિચારકર વહ ફિર પરિત્રાજક સદસ કે
સાથ જહા વહ સૌગધિકા નગરી ઓર ઉસ મેં મી જહાં પરિત્રાજકાશ્રમ
થા વહા આયા । (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ મહનિસ્ત્રલેવ
કરેહ) આકર ઉસને ઉસ પરિત્રાજકાશ્રમ મેં અપને માંડોકો રલ દિયા
(કરિત્તા ધાતુરક્તવત્પરિહિં પવિરલપરિવ્વાયગેહિં સદ્ધિ સપરિવુહે
પરિવ્વાયગવસહીઓ પઢિનિસ્ત્રલમર્દ) રલકર ફિર વહ ગૈરિક ધાતુ સે
રગે હુએ વલ્લો કો પહિરે હુએ કુલેક પરિત્રાજકો કે સાથ ૨ ઉસ
પરિત્રાજકાશ્રમ સે બાહર નિકલા (પઢિનિસ્ત્રલમિત્તા સોગધિયા

હીને ફરા સૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી બેધએ (ત્તિકદ્દુએ
સપેહેહ) આ રીતે મનમા વિચાર કરીને તેણે પહેલાની બેમ તેને સમજાવવાનો
વિચાર કયો (સપેહિત્તા પરિવ્વાયગસહસ્રેણ સદ્ધિ જેણેવ સોગધિયા નગરી
જેણેવ પરિવ્વાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વિચાર કરીને તે ફરી બેક સહસ
પરિત્રાજકોની સાથે જ્યા તે સૌગધિકા નગરી અને તેમા પશુ જ્યા પરિત્રાજ
કાશ્રમ હોતો ત્યા આબો (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ મહનિસ્ત્રલેવ કરેહ)
આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યા મૂકી (કરિત્તા ધાતુરક્તવત્પરિહિં
પવિરલપરિવ્વાયગેહિં સદ્ધિ સપરિવુહે પરિવ્વાયગાવસહાઓ પઢિનિસ્ત્રલમર્દ) મૂકીને
તે ગૈરિકધાતુથી રગાબેલા વસ્તો પહેરીને થોડા પરિત્રાજકોને સાથે લઇને
આશ્રમની બાર નીકળ્યો (પઢિનિસ્ત્રલમિત્તા સોગધિયા નગરીએ મજ્ઞ મજ્ઞેણ

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुकमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भु-
द्वेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्ग-
च्छति अभिमुख न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदर न कुरुते 'नो'
परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमन नानुमोदयति, नो वन्दते न स्तौति,
'तुसिणीए सच्चिद्वइ' तूष्णीकः सतिष्ठति ।

ततः खलु स शुक परित्राजकः सुदर्शनमनभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्-त्व
खलु सुदर्शन ! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्-

नयरीए मज्झ मज्झे ण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव
उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से
होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमे भी जहा सुदर्शन था वहा
गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते
हुए परित्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो
आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सच्चिद्वइ) परन्तु देखकर
वह उठा नही उसके सामने नही गया, उसका आदर नही किया, उस
के आगमन की उसने सराहना नही की । स्तुति भी नही की केवल
चुपचाप बैठा रहा । (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्वियं
पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नही
उठा हुआ, सामने नही आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर
उसने उससे इस प्रकार कहा- (तुम ण सुदसणा ! अन्तया मम एज्ज-
माण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा ! तुम मम

जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) भहार नीकणीने
सौगधिका नगरीनी भराभर वच्चे थधने तथा सुदर्शनतु घर अने तेमा पछु
तथा सुदर्शन छतो त्या गथे (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ)
सुदर्शन ने पछु परित्राजकने आपता जेथा (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चु
गच्छइ, णो आढाइ, णो परियाणाइ, नो वदइ, तुसिणीए सच्चिद्वइ) परन्तु जेध
ने ते उठा थथा नहि, स्वागत भाटे तेनी सामे गया नहि, तेने आदर
आये नहि, तेना आगमननी तेमछे सराहना करी नहि, तेनी स्तुति पछु
करी नहि इत्ता तेओ चुपचाप पोतानी जग्याओ जेनी न रह्या (तए ण से
सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्वियं पासित्ता एव वयासी) शुक
परित्राजके शेधने भहार भाटे पोतानी सामे नही आपता जेधने छु- (तुम ण
सुदसणा ! अन्तया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि

કર્મવિપયક શ્રદ્ધાન તદપનીય પુનરપિત શોચમૂલકે ધર્મે સ્થાપયિતુ મમોચિતમિ-
ત્યર્થઃ । 'ત્તિકદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા=ઇદ મનસિ ધૃત્વા, એવમ્=ઉક્તપ્રકારેણ 'સપેહેહ' સપ્રેક્ષતે વિચારયતિ, 'સપેહિતા' સપ્રેક્ષ્ય ઇત્યેવ મનસિ વિચાર્ય, પરિત્રાજકસહસ્રેણ સાર્થં યત્રૈવ સૌગધિકાનગરી યત્રૈવ પરિત્રાજકાવસથઃ=પરિત્રાજકાનામાવસથ આશ્રમ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પરિત્રાજકાશ્રમયે ભાણ્ડનિક્ષેપમ્ ત્રિઢ્ણ્યાધુપકરણાનાં સ્થાપન કરોતિ, કૃત્વા ધાતુરક્તવત્પરિહિતઃ ગૈરિકરાગરક્ષિતપત્ન્યારી પ્રવિરલ-
પરિત્રાજકૈઃ કતિપયપરિત્રાજકાશ્રમાત્ 'પઢિનિસ્ખમઈ' પ્રતિનિષ્ક્રામતિ=નિઃ સરતિ । પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય નિઃસૃત્ય સૌગન્ધિકાયા નગર્યાં 'મજ્ઞ મજ્ઞેણ' મધ્યમધ્યેન મધ્યમધ્યભાગેન યત્રૈવ સુદર્શનસ્ય ગૃહ, યત્રૈવ સુદર્શનસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ ।

યહી યોગ્ય હૈં કિં મૈં સુદર્શન કી વિનય મૂલક ધર્મકી દૃષ્ટિકો હટાકર
હસે સમજાકર સ્થાપિત કરું । (ત્તિકદ્દુ એવ સપેહેહ એસા મનમેં ધારણ
કર હસને પૂર્વોક્તરૂપ સે હસે સમજાને કા વિચાર કિયા—(સપેહિતા
પરિત્રાજકસહસ્રેણ સદ્ધિ જેણેવ સૌગધિયા નગરી જેણેવ પરિત્રાજકા
વસહે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) વિચારકર વહ ફિર પરિત્રાજક સદ્ધિ કે
સાથ જહા વહ સૌગધિકા નગરી ઔર હસ મેં મી જહાં પરિત્રાજકાશ્રમ
થા વહા આયા । (ઉવાગચ્છિતા પરિત્રાજકાવસદ્ધિ મહનિસ્ખેવ
કરેઈ) આકર હસને હસ પરિત્રાજકાશ્રમ મેં અપને માંડોકો રખ દિયા
(કરિતા ધાતુરક્તવત્પરિહિત પવિરલપરિત્રાજકોર્હિ સદ્ધિ સપરિવુઢે
પરિત્રાજકાવસદ્ધિઓ પઢિનિસ્ખમઈ) રખકર ફિર વહ ગૈરિક ધાતુ સે
રગે હુઈ વહોં કો પહિરે હુઈ કુઢેક પરિત્રાજકો કે સાથ ૨ હસ
પરિત્રાજકાશ્રમ સે બાહર નિકલા (પઢિનિસ્ખમિતા સૌગધિયાઈ

હીને ફરી શીચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઈએ (ત્તિકદ્દુ એવ
સપેહેહ) આ રીતે મનમા વિચાર કરીને તેણે પહેલાની જેમ તેને સમજાવવાને
વિચાર કર્યો (સપેહિતા પરિત્રાજકસહસ્રેણ સદ્ધિ જેણેવ સૌગધિયા નગરી
જેણેવ પરિત્રાજકાવસદ્ધિ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ્ર
પરિત્રાજકોની સાથે જ્યાં તે સૌગધિકા નગરી અને તેમા પણ જ્યાં પરિત્રાજ
કાશ્રમ હોતો ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિતા પરિત્રાજકાવસદ્ધિ મહનિસ્ખેવ કરેઈ)
આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યાં મૂકી (કરિતા ધાતુરક્તવત્પરિહિત
પવિરલપરિત્રાજકોર્હિ સદ્ધિ સપરિવુઢે પરિત્રાજકાવસદ્ધિઓ પઢિનિસ્ખમઈ) મૂકીને
તે ગૈરિકધાતુથી રંગાએલા વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિત્રાજકોને સાથે લઈને
આશ્રમની બાર નીકળ્યો (પઢિનિસ્ખમિતા સૌગધિયાઈ નગરીઈ મજ્ઞ મજ્ઞેણ

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुक्रमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भु-
द्वेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्ग-
च्छति अभिमुख न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदर न कुरुते 'नो'
परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमन नानुमोदयति, नो वन्दते न स्तौति,
'तुसिणीए सच्चिद्वइ' तृष्णीकः सतिष्ठति ।

ततः खलु स शुक परिव्राजकः सुदर्शनमनभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्-त्व
खलु सुदर्शन ! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्-

नयरीए मज्झ मज्झे ण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव
उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से
होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमें भी जहा सुदर्शन था वहा
गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते
हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो
आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सच्चिद्वइ) परन्तु देखकर
वह उठा नहीं उसके सामने नहीं गया, उसका आदर नहीं किया, उस
के आगमन की उसने सराहना नहीं की । स्तुति भी नहीं की केवल
चुपचाप बैठा रहा । (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्विय०
पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नहीं
उठा हुआ, सामने नहीं आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर
उसने उससे इस प्रकार कहा- (तुम ण सुदसणा ! अनया मम एज्ज-
माण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा ! तुम मम

जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) भङ्गार नीकणीने
सौग धिका नगरीनी भराभर वन्ने थरने न्या सुदसानु धर अने तेमा पणु
न्या सुदर्शन छतो था गये (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ)
सुदर्शन ने पणु परिव्राजकने आपता जेया (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चु
ग्गच्छइ, णो आढाइ, णो परियाणाइ, नो वदइ, तुसिणीए सच्चिद्वइ) परन्तु जेध
ने ते उला थया नहि, स्वागत माटे तेनी सामे गया नहि, तेने आदर
आये नहि, तेना आगमननी तेमणे सराहना करी नहि, तेनी स्तुति पणु
करी नहि इत्त तेजो चुपचाप पोतानी जयाजे जेभी न रह्या (तए ण से
सुए परिव्वायण सुदसण अणब्भुद्विय० पासित्ता एव वयासी) शुक
परिव्राजके शेकने सत्कार माटे पोतानी सामे नही आपता जेधने छु- (तुम ण
सुदसणा ! अनया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि

अत्र यावच्छब्देन—'परिगुण्यसि' आढासि, परिजाणासि' इति वाच्यम्, चन्दसे, इदानीं सुदर्शन ! त्वं मामेजमानं दृष्ट्वा यावद् नो रन्दसे, अभ्युत्थानादिकं करोषीत्यर्थः तत्तत्स्य खलु त्वया सुदर्शन ! अयमेतद्रूपो विनयमूलधर्मः प्रतिषन्धः हे सुदर्शन ! मम धर्मं परित्यज्य त्वया कस्य धर्मः स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततः खलु स सुदर्शनः शुक्रेण परिव्राजकेनैवमुक्तः सन् आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय करतलपरिगृहीत—शिर आहतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा शुकं परिव्राजकमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्—एव खलु देवानुप्रिया ? अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तेवासी=शिष्यः, स्थापत्यापुत्रनामाऽनगारं यावद्—पूर्वानुपूर्वावरन् ग्रामानुग्राम

एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मं पडिवन्ने) सुदर्शन ! जय तुम किसी समय मुझे आता हुआ देखता था तो देखकर उठता था—यावत् वदना करता था । परन्तु अब इस समय सुदर्शन ! तुम मुझे आता हुआ देखकर यावत् उठे नहीं तुमने मेरी वदना नहीं की । तो हे सुदर्शन ! तुमने किसका यह इस रूप विनयमूलक धर्म स्वीकार कर लिया है । (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव पुत्ते समणे आसणाओ अब्भुद्वेइ, अब्भुद्वित्ता करयलं सुय परिव्वायग एव वयासि) इस प्रकार शुक परिव्राजक के द्वारा कहा गया वह सुदर्शन अपने स्थान से उठा और उठकर उसने दोनों हाथों को अञ्जलिरूप में कर और उसे मस्तक पर रख उससे इस प्रकार कहा कि (एव खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिष्टनेमिस्स अतेवासी यावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीला सोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! अर्हन्त अरिष्टनेमि प्रभु के

सुदसणा ! तुम मम एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मं पडिवन्ने) हे सुदर्शन ! पड़ेला तु गमे त्पारे भने आवता जेतो त्पारे स्वागत भाटे उल्लो थतो अने साभे आवीने वदन विगेरे करेनो छेतो पथु अत्पारे भने जेधने तु उल्लो थथो नथी तेमज ते भने वदन पथु त्यो नथी हे सुदर्शन ! ते आ केवाप्रजारनो विनयमूलक धर्म स्वीकार्यो छे ? (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव पुत्ते समणे आसणाओ अब्भुद्वेइ अब्भुद्वित्ता करयलं सुय परिव्वायग एव वयासी) शुक परिव्राजकनी बात सावणीने सुदर्शन पोताना स्थानेथी उल्लो थथो अने उल्लो थधने णन्ने छायणी अज्जलीने मस्तके भूझीने तेने छल्लु—(एव खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिष्टनेमिस्स अतेवासी यावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीला सोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय !

द्रुम् सुख सुखेन विहरन् . इति सग्रहः । उह=सौगन्धिकानगर्यामागतोऽस्ति, इहैव
अस्यामेव नगर्या रट्टिभागे नीलाशोके नीलाशोरुनाम्नि उद्याने विहरति, तस्य=
स्थापत्यापुत्रस्य खलु अन्तिके=समीपे विनयमूलो वर्मः प्रतिपन्नः मया स्वीकृत ।
यदा स्थापत्यापुत्र इहागतस्तदाऽहमपि वदितुं तत्रगतस्तदा तदुपदिष्टधर्मकथा श्रुत्वा
विनयमूलमार्हत्तवर्म समीचीन विज्ञाय स एव धर्मः स्वीकृतो मयेतिभाव ॥२२॥

मूलम्—तएणं से सुए परिव्वाचए सुदसणं एव वयासी-
त गच्छामो सुदसणा । तव धम्मारियस्स थावच्चापुत्तस्स
अंतिय पाउव्वभवामो इमाइ च णं एयारूवाड अट्टाइं हेउइ
पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो, त जइणं मे से इमाड
अट्टाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमस्सामि अहमेसे
इमाइ अट्टाइं जाव नो से वाकरेइ, तएण अह एएहि चेव
अट्टेहि हेउहिं निप्पट्टपसिणवागरणं-करिस्सामि ॥ सू० २३ ॥

अतेवासी स्थापत्या नाम के अनगार मुनि परपरा के अनुसार चलते
हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए सुरु पूर्वक इस सौगधिका नाम
की नगरी में आये और उन वे नीलाशोरु नाम के उद्यान में ठहरे
हुए हैं । (तस्सण अतिए विणयमूले धम्मं पडिबन्ने) उनके पास
मैंने विनयमूल वर्म समीचीन समझ कर स्वीकार कर लिया है ।
तात्पर्य इसका यह है कि मैं भी उनको वदना करने के लिये गया था ।
उन के मुख से जब मैंने धर्मकथा सुनी तब मुझे उनका सिद्धान्त
निर्दोष युक्ति शास्त्र से अविरुद्ध प्रतीत हुआ अतः मैंने उनसे उनके उस
धर्म को अंगीकार कर लिया है । सूत्र ॥ २२ ॥

अहं त अरिहनेमि प्रबुद्धा अतेवासी (गिण्य) स्थापत्यापुत्र नामना अन
गार मुनि पर पशने अनुसरता ओउ गामथी णीरे गाम विहार कणा सौग धिका
नगरीमा सुपेथी आग्या अने डमण्णा नीलाशोउ उद्यानमा उतथी छे (तस्स
ण अतिए विणयमूले धम्मं पडिबन्ने) तेमनी पामे मे आगी पेउ ममछने
विनय मूलउ धर्म स्वीकरीये छे तात्पर्य ओ छे छे छे पण तेमने वदन
कणा गयी छे तेमना श्रीमुअथी मे धर्मकथा आबणी मने तेमना सिद्धा-
न्तो निर्दोष तेमअ शास्त्र सम्मत वाग्या ओथी मे तेमनी पामेथी आ
धर्म स्वीकरीये छे ॥ सूत्र २२ ॥

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीका-ततः खलु म शुकः परित्राजकः सुदर्शननामकं त्रेष्ठिनम् एव= वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छाम’ खलु सुदर्शन ! तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ‘इमाइ च’ इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाण तथा सनिष्ठान्, च शब्दादन्याश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्=अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अथ अप्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नवि-पयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्पात्रक्युक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विपयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाण व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि पृच्छाम’ । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए)उसशुक (परिव्वायए) परिव्राजक ने (सुदसण एव वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(त गच्छामो ण सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ अट्ठाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि, अहमे से इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमें पूछूँगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

‘तए ण से सुए इत्यादि’

टीकार्थ (तएण) त्थार आइ (से सुए) शुक (परिव्वायए) परिव्राजके (सुदस ण एव वयासी) सुदर्शनने आ प्रभाष्टे उद्धु-(त गच्छामो ण सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) हे सुदर्शन ! तो उवे आड़ी थी हु भीधा तारा धर्मशुरु स्थाप यापुत्रनी पासे जठे छु (इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ, अट्ठाइ, जाव वागरइ तएण अह वदामि, नमसामि, अहमेसे इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) तेभनी साथे हु अर्थों, हेतुओं, प्रश्नों, कारणों, अने व्याकरणों “ । - । ते भारा अर्थों, हेतुओं, प्रश्नों,

त्यापुनः इमान् अर्थान् यावद् व्याकरोति=मम प्रज्ञाना समीचीन समाधान करिष्यति ततस्तदनन्तर खलु षष्ठं वन्दे=वन्दिष्ये, नमस्यामि=नमस्करिष्यामि । अथ मम स इमान् अर्थान् यावद् व्याकरणानि नो व्याकरोति=न स्पष्टीकरिष्यति, ततस्तदा खलु अहम् एतैरेव अर्थैर्हेतुभिः ' निष्पट्टपस्त्रिणागरण ' निःस्पष्टप्रश्नव्याकरण=निःस्पष्टानि अव्याख्यातानि प्रश्नव्याकरणानि प्रश्नोत्तराणि येन स तथा तम्, प्रश्नोत्तरकरणासमर्थ करिष्यामि ॥ २३ ॥

मूढम्—तएणं से परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्टिणा सच्चि जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता थावच्चापुत्त एवं वयासी-जत्ता ते भते । जवणिज्ज ते अव्वावाह पि त, फासुयं विहार ते ? ।

तएण से थावच्चापुत्ते सुएण परिवायगेण एव वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायग एव वयासी—सुया । जत्तावि मे जवणिज्जं पि मे अव्वावाहपि मे फासुय विहारं पि मे, ॥

तएण से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी—कि भंते । जत्ता ॥

सुया । जन्न मम णाणदसणचरित्ततवानियमसजममाइ-एहि जोएहि जवणा से तं जत्ता ।

से कि त भते । जवणिज्ज ? ।

विशेष का अच्छी तरह से समाधान कर दोगे तो मैं उन्हें नमस्कार करूँगा । यदि वे मेरे इन अर्थों से लेकर व्याकरणों तक की बातों का कोई ठीक २ स्पष्टीकरण नहीं करेगे । तो मैं उन्हें उसी समय इन्हीं अर्थ हेतुओं द्वारा प्रश्नोत्तर करने में असमर्थ कर दूँगा ॥ सू० २३ ॥

कारणो तेमज्ज व्याकरणो विधेना प्रश्नो ना माग्गी चेठे समाधान दशे तो हु तेमने वदत करीश अने ने ते भाग अर्थो व्याकरणो वगेरे ना विधे सारी शीते स्पष्टी करण नहि करी जके तो हु तेमने तस्त ज प्रश्नोत्तर दवामा

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीका-ततः खलु म भुक्ः परित्राजकः सुदर्शननामकं त्रेष्टिनम् एव= वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छामः खलु सुदर्शन । तत्र धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ‘इमाइ च’ इमान् अनन्तमेव वक्ष्यमाण तथा सनिकुण्डान्, च शब्दादन्याथ खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्=अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थान् भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीपादयस्तदन्ये हेतून्=अन्यव्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वाद् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्प्राथम्यव्यक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाण व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि. पृच्छाम’ । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजक ने (सुदसण एव वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(त गच्छामो ण सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउअवामो) तो हे सुदर्शन ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउअवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइ च ण एयारुवाइ अट्टाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ अट्टाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि, अहमे से इमाइ अट्टाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं वेव अट्टेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमें पूछूँगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

‘तए ण से सुए इत्यादि’

टीकार्थ (तएण) त्थारणाद् (सेसुए) शुक (परिव्वायए) परिव्राजके (सुदसण एव वयासी) सुदर्शनने आ प्रभाषे उद्धु (त गच्छामो ण सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउअवामो) हे सुदर्शन ! तो उधे अट्टी थी हु भीधो तारा धर्मशुक् स्थापयापुत्रनी पासे उठि छु (इमाइ च ण एयारुवाइ अट्टाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ, अट्टाइ, जाव वागरइ तएण अह वदामि, नमसामि, अहमेसे इमाइ अट्टाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं वेव अट्टेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) तेभनी साथे हु अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो, कारणो, अने व्याकरणो ना विधे अर्थो करीथ, ने ते भारा अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो,

पन्नत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्डियया सहपसुकीलि
यया, ते णं समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे
ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा सत्थप-
रिणया य असत्थ परिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थ-
परिणया ते समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे ते
सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा फासुगा य अफासुगा
य, अफासुया णं सुया । नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया
ते दुविहा पन्नत्ता, । जहा-जाइया य अजाइया य, तत्थ णं
जे ते अजाइया ते अभक्खेया तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा
पन्नत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जे
ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा
ते दुविहा पन्नत्ता, लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा
ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गथाणं
भक्खेया, एएणं अट्टेणं सुया । एव बुच्चंति—सरिसवया भक्खेया
वि, अभक्खेया वि, एव कुलत्था वि भाणियव्वा, नवर इम
णाणत्त—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य इत्थि कुलत्था तिविहा
पन्नत्ता त जहा—कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ
य, धन्नकुलत्था तहेव, एव मासा वि, नवरं इम नाणत्त-
मासा तिविहा पन्नत्ता, त जहा-कालमासा य अत्थमासा य,
धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा
पन्नत्ता त जहा-सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया
अनगारधर्मासूत्रवर्णिनी टीका अ० ५ सुदर्शनश्रेणीवर्णनम्

सुया । जवणिजे दुविहे पन्नत्त, तजहा इदियजवणिजे
य नो इदियजवणिजे य से किं तं इदियजवणिजे ? ।

सुया । जन्नं ममं सोइंदिय-चविखादिय-घाणिटिय-
जिर्विभदिय फासिदियाइ निरुवहयाइ वसे वटंति, से तं
इंदियजवणिजं ।

से किं तं नो इंदियजवणिजं ? ।

सुया । जन्न कोहमाणमायालोभा खीणा उपसंता नो
उदयति से तं नो इंदियजवणिजे ।

से किं तं भते । अवावाहं ?

सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिमिय सन्निवाइया विविहा
रोगायंका णो उदीरंति से तं अवावाहं ।

से किं तं भते फासुयविहारं ? ।

सुया । जन्न आरामेसु वा उज्जाणेषु वा देवकुलेसु वा
सभासु वा पव्वणसु वा हत्थीपसुपंडगविवज्जिएसु वसहंसु
पाडिहारिय पीठफलगसेजासथारय उग्गिण्हत्ताण विहरामि, से
न फासुयविहार ।

सरिसवया ते भंते । किं भक्खेया अभक्खेया ? ।

सुया । सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्टेणं भंते एव वुच्चइ ? सरिसवया भक्खेया वि
अभक्खेया वि ।

सुया । सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, त जहा- मित्तसरिसवया
धन्नसरिसवया य, तत्थ ण जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा

મતે ! ' હે મદન્ત ! તે તવ યાત્રા વર્તેતે ? ' જવણિજ્જ તે ' યાપનીય તે તવ વર્તેતે ? ' અવ્યાગાહ પિ તે ' અવ્યાગાગમાપિ તે વર્તેતે ? ' ફાસુયવિહાર તે ' પ્રાસુક વિહારસ્તે તવ વર્તેતે ? ।

તતસ્તદનન્તર સ સ્થાપત્યાપુત્રઃ શુકેન પરિત્રાજકેનૈવ મુક્તઃ સન્ શુક પરિત્રાજકમેયમવાદીત્-હે શુક ! ' જત્તા વિ મે ' યાત્રાઽપિ મે મમાઽસ્તિ, ' જવણિજ્જપિ મે ' યાપનીયમપિ મે મમાઽસ્તિ, ' અવ્યાગાહપિ મે ' અવ્યાવાધમપિ મે મમ વર્તેતે, ' ફાસુયવિહાર પિ મે ' પ્રાસુક વિહારોઽપિ મે મમાઽસ્તિ ।

તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ શુકઃ સ્થાપત્યાપુત્રમેયમવાદીત્ ' કિં મતે ! જત્તા ' ફા મદન્ત યાત્રા હે મદન્ત ! ફા=કિં સ્વરૂપા તવ યાત્રા ? ।

સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર થા વહા ગયા । (ઉવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) વહા જાકરડસને સ્થાપત્યાપુત્ર સે, એસા કહા-(જત્તાતે મતે ! જવણિજ્જ તે અવ્યાગાહ પિ તે ફાસુયવિહાર) તો હે મદન્ત ! આપકી યાત્રા હૈ કયા ? આપકે યાપનીય હૈ કયા ? આપકે અવ્યાવાધ હૈ કયા ? આપકે પ્રાસુક વિહાર હૈ કયા ? (તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે સુણ પરિવાયગેણ એવ બુત્તે સમાણે સુય પરિવાયગ એવ વયાસી) હસ પ્રકાર શુક પરિત્રાજક સે પૂછે ગયે બન સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને હસ-શુક પરિત્રાજક સે એસા કહા-(સુયા ! જત્તા વિ મે, જવણિજ્જપિ મે અવ્યાગાહપિ મે ફાસુયવિહારપિ મે) હે શુક હમારા યાત્રા મી હૈ, યાપનીય મી હૈ હમારા અવ્યાવાધ મી હૈ હમારે પ્રાસુક વિહાર મી હૈ । (તણ સે સુણ થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) જય સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને શુક પરિત્રાજક સે હસ પ્રકાર કહા-તથ ઉસને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર

(ઉવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) ત્યા જઈને તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર ને કહ્યું-(જત્તા તે મતે ! જવણિજ્જતે અવ્યાગાહ પિ તે ફાસુયવિહાર) હે ભદન્ત ! શુ તમારી યાત્રા છે ? યાપનીય છે ? અવ્યાવાધ છે ? તમારે પ્રાસુક વિહાર છે ? (તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે સુણ પરિવાયગેણ એવ બુત્તે સમાણે સુય પરિવાયગ એવ વયાસી) શુક પરિત્રાજકની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શુક પરિત્રાજકને કહ્યું-(સુયા ! જત્તા વિ મે જવણિજ્જપિ મે અવ્યાગાહપિ મે ફાસુયવિહાર પિ મે) હે શુક ! અમારી યાત્રા પણ છે, યાપનીય પણ છે, અવ્યાવાધ પણ છે અને અમારે પ્રાસુક વિહાર પણ છે (તણ સે સુણ થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) અમારે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શુક પરિત્રાજકને આ પ્રમાણે કહ્યું, ત્યારે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું-(કિં

એગે ભવ દુવે ભવ અણેગે ભવ અક્ષણે ભવ અઠ્ઠણે ભવ
અવાટ્ટિણે ભવ અણેગભૂયભાવભવિણિ ભવ ? ।

સુયા ! એગે વિ અહ દુવેવિ અહં જાવ અણેગભૂયભાવ
ભવિણિ અહ ।

સે કેણદ્દેણં ભતે । એવં વુચ્ચઈ એગે વિ અહં જાવ અણેગ-
ભૂયભવિણિ અહ ।

જણં સુયા ! દઠ્ઠદ્દયાણે એગે અહ નાણદસણદ્દયાણે દુવેવિ
અહ પપ્પસદ્દયાણે અક્ષણેવિ અહં અઠ્ઠણેવિ અહં અવાટ્ટિણે વિ
અહ ઉવઓગદ્દયાણે અણેગભૂયભાવ ભવિણિ અહં ।

एत्थ णं से सुएसवुद्धे थावच्चापुत्तं वदइ नमंसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी-इच्छामि णं भते ! तुव्भ अंतिण केवलि-
पन्नत्त धम्म निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा ॥सू० २४॥

‘તણ સે સુ’ ઇત્યાદિ-

ટીકા- તતસ્તદનન્તર ા શુક પરિવ્રાજકસહસ્રેણ સુદર્શનેન શ્રેષ્ઠિના ચ
સાર્થ યત્રૈવ નીલાશૌરુનામોદ્ધાન યત્રૈવ સ્થાપત્યાપુત્ર નામાઽનગાર આસીત્, તત્રૈવો
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સ્થાપત્યાપુત્રમેત્ત=વક્ષ્યમાણપ્રકારેનાત્રાદીત્- ‘જત્તા તે

‘તણ સે સુ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ) इसके बाद (से सु) वह शुक परिव्राजक (परिव्रा
यगसहस्त्रेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव
थावच्चा पुत्तो अणगारे तेणेव उवागच्छइ) १ एक हजार परिव्राजको
के-और सुदर्शन के साथ जहा नीलाशोक उद्यान तथा उसमें जहा

‘તણ સે’ સુ’ ઇત્યાદિ !

ટીકાર્થ(તણ) ત્યાર બાદ (સે સુ) શુક પરિવ્રાજક (પરિવ્રાજકસહસ્ત્રેણ
સુદસણેણ ય સેટ્ઠિણા સદ્ધિં જોણેવ નીલાસોણ ઉજ્જાણે જોણેવ થાવચ્ચાપુત્તે અણગારે
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) એક હજાર પરિવ્રાજકો અને સુદર્શન શેઠની સાથે જ્યા
નીલાશોક ઉદ્યાન હોતો અને તેમાં જ્યા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર હતા ત્યા ગયો

પરિણામઃ, તપઃ=અનશનાદિકં દ્વાદશત્રિધર્મ, નિયમઃ=દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવતોઽભિગ્રહ
ગ્રહહણમુત્તરગુણરૂપમ્, સયમઃ=ચારિત્રગ્રહણેનૈવ સયમે પ્રતિવોધિતે પુનઃસયમ
પદોપાદાનાદુભયકાલપ્રતિલેખનરૂપ, કાલચતુષ્ટા યે સ્વાધ્યાયાદિકરણરૂપશ્ચ
સયમો ગ્રાહ્યઃ । આદિપદાદ્ ધ્યાનાવશ્યકાદિઃ તત્ર ધ્યાન=ધર્મ-યાનાદિ, આવશ્યક
પટ્ટિધ તેષુ, 'જોષ્ટિ' યોગેષુ મનોવારુકાયવ્યાપારેષુ, 'જયણા' યતના પ્રવૃત્તિ,
સૈપાયાત્રા મમ વર્તતે । નાન્યા શત્રુજયાદિયાત્રા વીતરાગમાર્ગે વર્તતે इत्यर्थः ।

एवमेव भगवतीसूत्रेऽष्टादशशतकस्य दशमोद्देशके भगवता सोमिल ब्राह्म
णाय प्रोक्तम्—

શુકો વદતિ—‘સે કિં ત મતે જવણિજ્ઞે’ અથ કિં તદ્ ભદન્ત ! યાપનીયમ્ ? ।

ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે અથવા ક્ષય સે જો સ્થૂલ તથા
સૂક્ષ્મ પ્રાણાતિપાત આદિ પાપોં સે નિવૃત્તિ રૂપ આત્મા કા પરિણામ હોતા
હૈવહ ચારિત્ર હૈ । તપ-અનશન આદિ કે ભેદ સે ૧૨ પ્રકાર કા હૈ । દ્રવ્ય,
ક્ષેત્ર, કાલ, ઓર ભાવ કો લેકર ઉત્તર ગુણરૂપ જો નાના પ્રકાર કે
નિયમ-અભિગ્રહ-ગ્રહણ સે હી સયમ બી ગ્રહીત હો જાતા હૈ—ફિર બી
જો યહાં સયમ કા સ્વતત્ર ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ વહ “ ઉભય કાલ મેં
પ્રતિલેખના કરના ઓર કાલ ચતુષ્ટય મેં સ્વાધ્યાય કરના ઇસ રૂપ સયમ
હૈ, યહ વાચ્ય ઇસ અર્થ કો સૂચિત કરતા હૈ । આદિ પદ સે “ધ્યાન આવ
શ્યક” યે ગ્રહીત હુણ હૈ । ધર્મ યાન આદિકા નામ ધ્યાન તથા આવશ્યક
કરને યોગ્ય કર્તવ્ય કા નામ આવશ્યક હૈ । યહ આવશ્યક ૪ પ્રકાર હૈ ।
इन ज्ञानादिकों मे तथा योगों मे जो यतना है यही यात्रा है—अन्य कोई
यात्रा नहीं है यह बात भगवती सूत्र में भगवान् ने अठारहवां शतक के

પ્રાણાતિપાત વગેરે પાપો થી નિવૃત્તિ રૂપે આત્મા નો પરિણામ થાય છે તે
ચારિત્ર છે તપ, અનશન વગેરેના લેધથી બાર પ્રકારનું છે

द्रव्य, क्षेत्र, काल और लवणी साथे उत्तर शुष्क उप ने अनेक नतना
नियम-(अभिग्रह) ग्रहणથી જ સયમનું પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે, છતાં એ
અહીં જે સયમનું સ્વતત્ર રૂપે ગ્રહણ કરવામા આવ્યું છે, તે બને વખત
પ્રતિ લેખના કરવી અને તાલ ચતુષ્ટયમા સ્વાધ્યાય કરવો તે ‘સયમ’ છે,
આ વાક્ય એજ અર્થ અહીં સચવે છે, આદિપદ વડે “ધ્યાન આવશ્યક”
પદોનું સૂચન થાય છે ધર્મ વિષે ધ્યાન વગેરે ‘ધ્યાન’ કહેવાય છે, તેમજ
આવશ્યક રૂપે કરવા યોગ્ય કર્તવ્યનું નામ ‘આવશ્યક’ છે આ આવશ્યકના છ
પ્રકારો છે અજ્ઞાનાદિજો વગેરેમા તેમજ યોગોમા જે યતના છે તેજ યાત્રા
છે બીજી કોઈપણ જાતની યાત્રા છે જ નહિ આ વાત “ભગવતી સૂત્ર”
ના અઠારમા નાતકના દશમા ઉદ્દેશકમા ભગવાને સોમિલ બ્રાહ્મણને કહી છે,

શુરુસ્ય પ્રશ્ન શ્રુત્વા સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ—‘મૃયા’ इत्यादि । हे शुरु । ‘जन्म यत् खलु मम ’ णाणदसणचरित्ततनियमसज्जमाइएहिं ’ ज्ञानदर्शनचारित्र तपोनियमसयमादिकेषु ज्ञान=ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा प्रादुर्भूतो जीवाजीवादि तत्त्वनिर्णयलक्षणआत्मपरिणामः, दर्शन=दर्शनमोहनीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा ऽऽविर्भूतस्तत्त्व श्रद्धानरूपआत्मपरिणामः, चारित्र=चारित्रमोहनीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा जातः सुलभमृक्षमपाणातिपातादि विरमणलक्षण आत्म

સે इस तरह पुनः पूछा (किं भते जत्ता) हे भदन्त ! यात्रा शब्द का अर्थ क्या है ? (सुया जन्म मम णाणदसणचरित्त तव नियम सज्जमाइ एहिं जोएहिं जयणा से त जत्ता) स्थापत्यापुत्र अनंगार ने कहा है शुक ‘ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, सयम, आदि सों में एव मन बचन और काय इनके व्यापारों में जो हमारी यतनाचार पूर्वक प्रवृत्ति है वही यात्रा है—और ऐसी यात्रा हमारी आनंद के साथ हो रही है । अन्य शत्रुजयादि तीर्थों की यात्रा वीतराग मार्ग में नहीं है । ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से, अथवा क्षय से जीवअजीव आदि तत्त्वों के विषय में जो उनके स्वरूप आदि का निर्णय रूप आत्म परिणाम उत्पन्न होता है वह ज्ञान है ।

दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से, जीव के जो तत्त्व श्रद्धान रूप आत्म परिणाम होता है वह दर्शन है ।

મહે જત્તા) હે ભદ્રત ! યાત્રા સખ-નેા અર્થ શુ છે (સુયા જન્મ મમ ણાણ દસણચરિત્તતનિયમસજ્જમાइएहिं જોરહિં જયણા સે ત જત્તા) સ્થાપ ત્યાપુત્ર અનંગારે કહ્યું—હે શુક ! જ્ઞાન દર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, મયમ, વગેરે મા અને મન, વચન અને કાયાના વ્યાપારોમા જે અમારી જતન પૂર્વક આચરણ કરવાની પ્રવૃત્તિ છે, તેજ યાત્રા છે, અને એ યાત્રા અમારી સુખેથી પસાર થઈ રહી છે, શત્રુજય વગેરે તીર્થોની યાત્રા વીતરાગ માર્ગને અનુસરનારાઓ માટે નથી જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી એવ અણવ વગેરે વિષયમા જે તેમના સ્વરૂપ વગેરેના નિર્ણય રૂપ આત્મ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે જ્ઞાન છે

દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જન્મતા જે તત્ત્વ શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મપરિણામ હોય છે તે દર્શન છે

ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા કાયથી જે સ્થૂપ તેમજ સૂક્ષ્મ

शुकः पृच्छति-‘से किं’ इत्यादि । अथ किं तद् नोऽन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह-‘सुया’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोडमानमाया लोभाः क्षीणा क्षय प्राप्ताः, उपशान्ता उपशम प्राप्ताः सन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रिययापनीय नोऽन्द्रिय मनस्तस्य विकाराः रुपाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषां यापनीय वशीकरण समास्ति ।

शुको वदति-‘से किं’ इत्यादि । अथ किं तद् भदन्त अव्याघाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह-‘सुया’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिकर पैत्तिकश्लैष्मिकसानिपातिका= ! वातिकः वातप्रकोपजनिता पैत्तिकाः प्रकोप समुद्भवाः, श्लैष्मिकाः कफप्रकोपप्रभवाः, सान्निपातिकाः=वातपित्त श्लेष्मणा समूहसनिपातः, तत्र भवाः विविधा ‘रोगायका’ रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति इन्द्रिय यापनीय है । (से कि त नो इन्द्रियजवणिज्जे) भदन्त ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्म कोहमाण माया लोभा खीणा उदयन्ता नो उदयन्ति से त नो इन्द्रियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार रूपाये क्षयावस्थापन्न होकर यों उपशम अवस्थावाली होकर उदय में नहीं आ रही हैं यही नो इन्द्रिय यापनीय है । नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार रूपाये हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए हैं । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कर्पाये मेरे वश में हो रही हैं - यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है । (से कि भते अव्याघाह) भदन्त ! अव्याघाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्म मम वाङ्मयपित्तिय सिंभियसन्निवाडया

इन्द्रिय यापनीय छे (से कि त नो इन्द्रियजवणिज्जे) छे भदन्त ! नो इन्द्रिय यापनीयना शा अर्थ थय छे (सुया जन्म कोहमाण मायालोभा खीणा उदयन्ता नो उदयन्ति से त नो इन्द्रियजवणिज्जे) छे शुक ! क्रोध, मान, माया, अने दोष अने आगे उपाय क्षय पावने अथवा तो उपशमित थाने इरी इहय प्राप्तती नहीं अथ नो इन्द्रिय यापनीय छे नो इन्द्रिय अटखे मन, अने क्रोध, मान, माया, अने दोष अने आगे मननाज विकारो छे अथी आ जधानो इन्द्रिय जगन्धी गृहीत थना छे यापनीय शब्दना अर्थ वश करवु छे आ जधा जनाले भारे वश थयेला छे अथ नो इन्द्रिय यापनीयने हु वर्ती गह्यो छु (से कि भते अव्याघाह) छे भदन्त ! अव्याघाध ना शा अर्थ छे ? (सुया जन्म मम वाङ्मयपित्तिय सिंभियसन्निवाडया विविधा

સ્થાપત્યાપુત્રઃ કથયતિ-હે શુક ! યાપનીય દ્વિવિધં પ્રજ્ઞપ્ત, તદ યથા ઇન્દ્રિયયાપનીય નોઇન્દ્રિય યાપનોય ચ ।

શુકો વ્રૂતે-અથ કિં તદ ઇન્દ્રિયયાપનીયમ્ ? ।

સ્થાપત્યાપુત્રઃ સમાધત્તે-‘ સુયા ! ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ મમ શ્રોત્રેન્દ્રિ-ચક્ષુરિન્દ્રિય-ગ્રાણેન્દ્રિય-જિહ્વેન્દ્રિ-સ્પર્શેન્દ્રિયાણિ નિરુપહ-તાનિ વશે વર્તન્તે, તદ્ ઇન્દ્રિયયાનીમ્=ઇન્દ્રિયાણા વશીકરણ મમ પત્તે. । ‘ ત ’ ઇતિવાક્યાલક્ષ્ણે, એવમન્યત્રાપિ ।

દશમેઽદેશક મેં સોમિલ વ્રાહ્મણ સે કહી હૈ । (સે કિં ત ભતે જવણિજ્જ) હે ભદત ! યાપનીય શબ્દ કા કયા અર્થ હૈ ? (સુયા ! જવણિજ્જે દુવિહે પળ્લસે ત જહા-ઇદિયજવણિજ્જે ય ણો ઇદિયજવણિજ્જે ય) હસ પ્રકાર શુક પરિત્રાજક કે પૂછને પર સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસે સમ-ક્ષાયા કિ હે શુક ! યાપનીય દો પ્રકાર કા કહા હુઆ હૈ —જૈસે ૧ ઇન્દ્રિયાપનીય ૨ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય । (સે કિં ત ઇદિયજવણિજ્જ) ઇન્દ્રિય યાપનીય કા કયા સ્વરૂપ હૈ હસ પ્રકાર શુક કે પૂછ ને પર સ્થાપત્યાપુત્ર ને કહો (સુયા ! જન્ન મમ સોઇદિય ચક્ષિલદિય જિવિમદિય ફાસિદિયાઈ નિરુવહયાઈ વસે વટ્ટતિ, સે ત ઇદિયજવણિજ્જ) શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુઇન્દ્રિય, ગ્રાણેન્દ્રિય, જિહ્વાઈન્દ્રિય, સ્પર્શનઈન્દ્રિય નિરુપહત બન કર જો મેરે વશ મેં હો રહી હૈં યહી ઇન્દ્રિય યાપનીય હૈ અર્થાત્ વિના કિસી વાધા કે અપને વિપયો કો ગ્રહણ કરને મેં સમર્થ હોને પર ભી યે પાચો ઇન્દ્રિયાં જો મેરે વશ મેં વર્ત રહી હૈં યહી

(સે કિં ત ભતે જવણિજ્જ) હે ભદન્ત ! યાપનીય શબ્દનો અર્થ શુ છે ? (સુયા ! જવણિજ્જે દુવિહે પળ્લસે ત જહા ઇદિયજવણિજ્જે ય ણો ઇદિય જવણિજ્જે ય) શુકપરિત્રાજકના પ્રશ્નને સાભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેને સમભવતા કહ્યું કે-હે શુક ! યાપનીયના બે પ્રકારો કહ્યા છે (૧) ઇન્દ્રિય યાપનીય અને (૨) નો ઇન્દ્રિય યાપનીય (સે કિં ત ઇદિયજવણિજ્જ) ઇન્દ્રિય યાપનીયનું સ્વરૂપ શુ છે ? શુક પરિત્રાજકના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં સ્થાપત્યાપુત્રે કહ્યું-(સુયા ! જન્ન મમ સોઇદિય ચક્ષિલદિય જિવિમદિય ફાસિદિયાઈ નિરુવહયાઈ વસે વટ્ટતિ, સે ત ઇદિયજવણિજ્જ) હે શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુ ઇન્દ્રિય, ગ્રાણુ ઇન્દ્રિય, જિહ્વા ઇન્દ્રિય, સ્પર્શ ઇન્દ્રિય, નિરુપહત થઇને મારા વશમાં થઇને તેજ ઇન્દ્રિય યાપનીય છે અટલે કે કોઇપણ ભૂતન વાધા વગર વિષયોને ગ્રહણ કરવાની તાકત હોવા છતાં એ પાચે ઇન્દ્રિયો મારે વશ થયેલી છે તેજ-

શુકઃ પૃચ્છતિ—‘સે કિં’ ઇત્યાદિ । અથ કિં તદ્ નોઽન્દ્રિયયાપનીયમ્ । સ્થાપત્યાપુત્ર આહ—‘સુયા ’ ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ સ્વલુ ક્રોડમાનમાયા લોભાઃ ક્ષીણા ક્ષય પ્રાપ્તા, ઉપશાન્તા ઉપશમ પ્રાપ્તાઃ સન્તો નો ઉદયન્તે=નોદીર્યન્તે, નો ઇન્દ્રિયયાપનીય નોઽન્દ્રિય મનસ્તસ્ય વિકારાઃ રૂપાયા ઇદ્ધ નો ઇન્દ્રિયશબ્દેન ગૃહ્યન્તે, તેષા યાપનીય વશીકરણ મમાસ્તિ ।

શુકો વદતિ—‘સે કિં’ ઇત્યાદિ. । અથ કિં તદ્ ભદન્ત અવ્યાપાધમ્ ? । સ્થાપત્યાપુત્ર આહ—‘સુયા ’ ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ સ્વલુ મમ વાતિક પૈત્તિકશ્લેષ્મિકસાનિપાતિના= ! વાતિકાઃ ચાતપ્રકોપજનિતા પૈત્તિકાઃ પ્રકોપ-સમુદ્ભવા, શ્લેષ્મિકાઃ રૂક્ષપ્રકોપપ્રભવા, સાન્નિપાતિકા=ચાતપિત્ત શ્લેષ્મણા સમૂહઃ સનિપાતઃ, તત્ર મયાઃ વિવિધા ‘રોગાયકા’ રોગાતઙ્કા=રોગાશ્વાતકાથેતિ

ઇન્દ્રિય યાપનીય હૈ । (સે કિ ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) ભદત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીય કા કયા અર્થ હૈ ? (સુયા જન્ન કોહ માણ માયા લોભા ક્ષીણા ઉદયસતા નો ઉદયનિ સે ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) હે શુક જો ક્રોધ, માન, માયા, ઓર લોભ ચે ચાર કપાયે ક્ષયાવસ્થાપન્ન હોકર યા ઉપશમ અવસ્થાવાલી હોકર ઉદય મે નહી આ રહી હૈ યહી નો ઇન્દ્રિય યાપનીય હૈ । નો ઇન્દ્રિયકા અર્થ મન હોતા હૈ । મન કે વિકાર ચે ક્રોધ, માન, માયા, ઓર લોભ ચે ચાર રૂપાયે હૈ । ડસલિયે ચે નો ઇન્દ્રિય શબ્દ સે ગૃહીત છુ હૈ । યાપનીય શબ્દ કા અર્થ વશ કરના હૈ । ચે સઘ કપાયે મેરે વશ મેં હો રહી હૈ — યહી નો ઇન્દ્રિય યાપનીય મેરે વર્ત રહા હૈ । (સે કિ મતે અવ્યાપાધ) ભદત ! અવ્યાપાધ કા તાત્પર્ય કયા હૈ ? (સુયા જન્ન મમ વાઙ્મયપિત્તિય સિંભિયસન્નિવાહ્યા

ઇન્દ્રિય યાપનીય છે (સે કિ ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) હે ભદત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થય છે (સુયા જન્ન કોહ માણ માયાલોભા ક્ષીણા ઉદયસતા નો ઉદયનિ સે ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કપાયે ક્ષય પામીને અથવા તેા ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય છે નો ઇન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે એથી આ બધાનો ઇન્દ્રિય ગણથી ગૃહીત થયા છે યાપનીય ગણ્દનો અર્થ વગ કરવુ છે આ બધા ડસારો મારે વગ થયેલા છે એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીયને હુ વર્તી રહ્યો છુ (સે કિ મતે અવ્યાપાધ) હે ભદત ! અવ્યાપાધ નો શો અર્થ છે ? (સુયા જન્ન મમ વાઙ્મયપિત્તિય સિંભિયસન્નિવાહ્યા વિવિદ્યા

દ્વન્દ્વઃ રોગા દાહજ્વરાદયઃ, આતઙ્કાઃ શીઘ્રઘાતિનઃ શૂલાદયઃ નો ઉદીયન્તે, તદ્ અવ્યાવાધ=અવ્યાનાધાના શરીરપીડાનામભાવઃ મમ વર્તતે. ।

શુકઃ પૃચ્છતિ-‘સે કિં’ ઇત્યાદિ । અથ કોઽસૌ ભદ ત’ પ્રાસુક વિહારઃ । ?

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા’ ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્ યસ્માત્ સ્વલ્પ આરામેષુ=ઉપવનેષુ, ઉદ્યાનેષુ પુષ્પપ્રધાનેષુ રાજયનેષુ, દેવકુલેષુ વ્યન્તરાયતનેષુ, સમાસુ પરિપત્સુ ‘પન્વણસુ’ પર્વતેષુ હ્રદયુપલક્ષણ તેનાષ્ટાદશરથાનેષુ ઇત્યર્થ । સ્ત્રી-પશુપન્ડકવિવર્જિતાસુ વસતિષુ પ્રાતિહારિક=પુનઃ સમર્પણીય, પીઠફલગશ્યાસ-

વિવિદ્ધા રોગાયકા નો ઉદીરેતિ સે ત અવ્યાગ્રાહ સે કિં ત ભતે ફાસુયવિહાર આરામેષુ હજ્જાણેષુ દેવહલેષુ, સમાસુ, પન્વણસુ, ઇત્યી પશુપન્ડગ વિવર્જિયાસુ વસતીસુ પ્રાતિહારિય પીઠફલગ સથારય હગ્નિગ્નિહતા ણ વિહરામિ સેત્ત ફાસુયવિહાર) શુક ! જિસ કારણ સે વાત, પિત્ત ઓર કફ સે જનિત તથા હન તીનોં કે સન્નિપાત સે જનિત જો વિવિધ પ્રકાર કે દાહજ્વર આદિ રોગ શીઘ્ર ઘાતક શૂલાદિક આતક મુક્કે ઉદિત નહીં હો રહે હૈં યહી અવ્યાવાધ મેરે વર્ત રહા હૈં । વ્યાવાધ શબ્દ કા અર્થ શારીરિક પીડા હૈં- ઓર હસ કા અભાવ હસ સમય મેરે મેં વર્ત રહા હૈં । યહી અવ્યાવાધ કા સ્વરૂપ હૈં । હે ભદન્ત ! પ્રાસુક વિહાર કા વચ્ચા સ્વરૂપ હૈં ? ઉત્તર-હે શુક ! જિસ કારણ મેં ઉપવનો મે પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનો મેં દેવઘરોં મેં અર્ધાન્ વ્યન્તરાયતનો મેં પરિષદો મેં પર્વતોં મેં ઉપલક્ષણ સે અઠારહ સ્થાનોં મેં, સ્ત્રી, પશુ, પન્ડક-નપુસકોં સે વિહીન વસતિઓ મેં મઠોં મેં

રોગાયકા નો ઉદીરેતિ સે ત અવ્યાગ્રાહ સે કિં ત ભતે ફાસુયવિહાર આરામેષુ હજ્જાણેષુ દેવહલેષુ સમાસુ પન્વણસુ ઇત્યી, પશુપન્ડગવિવર્જિયાસુ વસતીસુ પ્રાતિહારિય પીઠફલગસેજ્જાસથારય હગ્નિગ્નિહતા ણ વિહરામિ સેત્ત ફાસુયવિહાર) હે શુક ! વાત, પિત્ત અને કફથી જન્મતા તેમજ આ ત્રણેના સન્નિપાતથી ઉદ્ભવતા અનેક દાહજ્વર વગેરે, રોગો શીઘ્રઘાતક શૂળ વગેરે આતક મારા શરીરમા ઉદ્ભવતા નથી એજ અવ્યાવાધ મારામા વર્તી રહ્યો છે અવ્યાવાધનુ સ્વરૂપ એજ છે શુકે સ્થાપત્યાપુત્રને બીજે પ્રશ્ન ય્યો-હે ભદત ! પ્રાસુક વિહારનુ સ્વરૂપ શુ છે ? તેના ઉત્તર આપતા સ્થાપત્યાપુત્ર કહે છે-હે શુક ! હું ઉપવનોમા, પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનોમા, દેવ ઘરોમા એટલે કે વ્યતરાયતનોમા, પરિષદોમા પર્વતોમા-ઉપલક્ષણથી અઠાર સ્થાનોમા સ્ત્રી, પશુ, પન્ડક, નપુસક વગરની વસ્તીઓમા મઠોમા પ્રાતિહારિક

સ્તારન્મગ્નગૃહ=યાચિત્વા વિહરામિ=વિચરામિ, સ પ્રાસુરુનિહારઃ । 'ત' ઇતિ વા
ક્યાલક્ષ્ણારે । શુક્ર પુનરપ્યુપહાસાર્થે પૃચ્છતિ-‘સરિસવયા’ ઇત્યાદિ । હે ભદન્ત !
‘સરિસવયા’ તે તવ કિં ભક્ષ્યા, ઉત અભક્ષ્યાઃ કિમ્ ? સ્થાપત્યાપુત્ર’ સમાધત્તે
-‘સુયા !’ ઇત્યાદિ । હે શુક્ર ! ‘સરિસવયા’ સરિસવયશ્વદ્યર્થઃ । ભક્ષ્યા અપિ,
અભક્ષ્યા અપિ, ‘સરિસવયા’ ઇતિ પદસ્વાર્થભેદાદ્ ભક્ષ્યા અભક્ષ્યા ભવન્તીતિ
ભાવઃ । શુક્રઃ પુનરાહ-‘સે કેળટ્ટેણ’ ઇત્યાદિ । ભદન્ત ! હે ભગવન્ તત્ કેના
ર્યેન એવમુચ્યતે-‘સરિસવયા’ ભક્ષ્યા અપિ, અભક્ષ્યા અપીતિ ।

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા !’ ઇત્યાદિ । ‘સરિસવયા’ સરિસવયશ્વ-
શ્વદ્યોષ્યા અર્થાં દ્વિવિગ પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા ‘મિત્તસરિસવયા વન્નસરિસવયા ય’

પ્રાતિહારિક-પુનઃ સમર્પણીય-પીઠ, ફલક, શય્યા સસ્તારક કો યાચિ-
ત કર વિચરણ કરતા હું-યહી મેરા પ્રાસુક વિહાર હૈ । ઉપહાસ કરને
કે અભિપ્રાય સે પુન શુક પરિત્રાજક પૂછના હૈ કિ (સરિસવયા તે
મતે કિં ભક્ષ્યેયા અભક્ષ્યેયા ?) ભદત ! “સરિસવય” તુમ્હારે
સિદ્ધાન્તાનુસાર ભક્ષ્ય હૈં યા અભક્ષ્ય હૈં ? (સુયા સરિસવયા ભક્ષ્યેયા
વિ અભક્ષ્યેયા વિ) સ્થાપત્યા પુત્ર ને કહા-શુક ! સરિસવય ભક્ષ્ય મી
હૈં ઓર અભક્ષ્ય મી હૈં । (સે કેળટ્ટેણ મતે ! એવ બુચ્ચહ સરિસવયા
ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા વિ) શુક ને ડનસે પુન પૂછા ભદત ! આપ યહ
કિસ અર્થ કી અપેક્ષા હેકર એસા કહતે હે કિ સરિસવય ભક્ષ્ય મી હૈં
ઓર અભક્ષ્ય મી હૈં । (સુયા સરિસવયા દુવિહા પન્નત્તા તજહા મિત્ત સરિ
સવયા ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રને ડસે સમજાયા કિ શુક ! સરિસવય

-એટલે કે યાચના ડેલી વસ્તુ કે જે યાછી અપાય જેમડે પીઠ, ફળક,
શય્યા સસ્તારકની યાચના ડગી ને વિચર છુ એજ મારો પ્રાસુક વિહાર છે
શુક પરિત્રાજક ઉપહાસના અભિપ્રાયથી ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે (સરિસવયા તે
મતે કિં ભક્ષ્યેયા અભક્ષ્યેયા ?) હે ભદત ! ‘સરિસવય’ તમારા શાસ્ત્ર પ્રમાણે
ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય ? (સુયા સરિસવયા ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા વિ) સ્થાપત્યા
પુત્રે તેના ઉત્તરમા કહ્યું-હે શુક ! ‘સરિસવય’ ભક્ષ્ય પણ છે અને અભક્ષ્ય
પણ છે (સે કેળટ્ટેણ મતે ! એવ બુચ્ચહ સરિસવયા ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા
વિ) શુકે તેમને ફરી પ્રશ્ન કર્યો-કે હે ભદત ! તેમ “સરિસવય” તે ભક્ષ્ય
તેમજ અભક્ષ્ય કયા અર્થની અપેક્ષાએ ડહી રહ્યા છે । (સુયા સરિસવયા દુવિહા
પન્નત્તા ત જહા મિત્તસરિસવયા ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રે તેને સમ-
જાવતા કહ્યું કે હે શુક ! ‘સરિસવય’ શબ્દનો અર્થ જે રીતે થાય છે ૧

મિત્ર સદશવયમ, ધાન્યમર્પકાશ્ચ । ‘સરિસવયા’ इत्यस्य द्वित्रिधोऽर्थः सदशवयस सर्पपकाश्चेति । तत्र सदशवयसो मित्ररूपा सर्पपकास्तु धान्यरूपा इति भावः । तत्र खलु ये ते मित्र सदशवयसः=मित्ररूपाः समानवयसस्ते त्रिभिधाः प्रज्ञप्ताः प्रतिबोधिप्ताः तद् यथा-‘सहजायया’ सहजातका समानकालजन्मानः, ‘सहवर्द्धियया’ सह वर्धितकाः समानकाले वृद्धिं प्राप्ताः, ‘सहपसुकीलियया’ सह पासु क्रीडितकाः सहैव वूलिक्रीडाकारिणश्चेति । ये सर्वे मित्ररूपाः सदशवयस्काः खलु श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः भोक्तुं न कल्पन्ते । तत्र खलु ये ते धान्यसर्पप-

કો પ્રકારસે પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ છે—૧ મિત્રસરિસવય દૂસરા ધાન્ય સરિસવય—। સરિસવય શબ્દ કી ‘સદશવય’ ઔર સર્પપક ” इस प्रकार संस्कृत छाया होती है। जब सदशवय—समान आयुवाले मित्रजन—ऐसा छायार्थक “सरिसवय” पद लिया जाता है—तब उस पक्ष के अनुसार सरिसवय अभक्ष्य है ऐसा अर्थ बोध होता है—तथा सर्पपक छायार्थक जब सरिसवय पद लिया जाता है तब “सरिसवय” भक्ष्य भी है ऐसा अर्थबोध होता है। इसी विषय को अधिक और स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि- (तत्थ ण जे त मित्त सरिसवया चे तिविहा पन्नत्ता, जहा- सहजायया, सहसवर्द्धियया, सहपसुकीलियया ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया) इनमे जो मित्र सरिसवय हैं वे तीन प्रकार के प्रज्ञप्त हुए हैं—जैसे सह जातक, सहवर्धितक, सह पासुक्रीडितक अपने साथ जिनका जन्म हुआ हैं वे सहजातक हैं। अपने साथ २ जो वृद्धि को प्राप्त हुए हैं वे सहवर्धित हैं। तथा जो

મિત્ર, સરિસવય, ૨ ધાન્ય, ‘સરિસવય’ શબ્દની સંસ્કૃત છાયા ૧, સદશવય, અને ૨, સર્પપક જે રીતે થાય છે બ્યારે સરિસવય નો ‘સદશવય’ (સર ખી આયુષ્ય ધરાવનારા મિત્ર જન) આવેો અર્થ અંહણુ કરવામા આવે છે ત્યારે ‘સરિસવય’ અભક્ષ્ય છે આવેો અર્થ જણાય છે તેમજ ‘સરિસવય’ પદ સર્પપક (સરસિયુ) અર્થમા લેવાય છે ત્યારે તે ભક્ષ્ય છે આવેો પણ અર્થ થાય છે એજ વાતને વિશેષ સ્પષ્ટ કરના સૂત્રકાર કહે છે કે (તત્થણ જે સ મિત્ત સરિસવયા ચે તિવિહા પન્નત્તા, તજજા-સહજાયયા, સહસવર્દ્ધિયયા, સહપસુકીલિયયા તેણ સમણાણ નિગ્ગથાણ અમક્ખેયા) આમા બ્યારે સરિસવય શબ્દનો અર્થ મિત્ર હોય છે, ત્યારે તેના ત્રણ પ્રકાર સમજવા નોંધએ જેમકે ૧, સહજાતક, ૨, સહવર્ધિતક, અને ૩, સહપાસુકીડિતક આપણી સાથે જન્મ લેનાર સહજાતક કહેવાય છે અપણા સાથે મોટા થનાર સહવર્ધિત

કાસ્તે દ્વિવિધા=દ્વિપ્રકારા પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા શસ્ત્ર પરિણતાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ યે તે અશસ્ત્રપરિણતાઃ સચિત્તાસ્તે શ્રમણાના નિર્ગ્રન્થાનામમક્ષ્યાઃ અસ્વાધા. તત્ર ચ્છલુ યે શસ્ત્રપરિણતાઃ શસ્ત્રપરિણત્યાઽચિત્તાસ્તે દ્વિવિધા પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્ યથા-પ્રાસુકાશ્ચ અપ્રાસુકાશ્ચ । અપ્રાસુકાઃ ચ્છલુ હે શુક્ર ! નો મક્ષ્યા =અસ્વાધાઃ । તત્ર ચ્છલુ યે તે પ્રાસુકાસ્તે દ્વિવિધા. પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા-‘ જાહ્યા ય અજાહ્યા ય ’ યાચિતાશ્ચ, અયાચિતાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ-યે તે અયાચિતાસ્તે અમક્ષ્યાઃ અસ્વાધા । તત્ર ચ્છલુ યે તે યાચિતાસ્તે દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્ યથા એપનીયાશ્ચ અનેપનીયાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ

સાથ ૨ ધૂલિ મેં છેલે હેં વે મહ પાસુ ક્રીડિતક હૈ । યે સઘ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો કો અમક્ષ્ય હૈ । (તત્થળ જે તે ધન્નસરિસવય તે દુવિહા પળ્લતા, તજહા સત્થપરિણયા ય અસત્થ પરિણયા ય) જો ધાન્ય સરિસવય હૈ વે દો પ્રકાર કે હૈ-જૈસે ૧ શસ્ત્ર પરિણત ૨ અશસ્ત્ર પરિણત- (તત્થળ જે તે અસત્થ પરિણયા તે સમણાળ ણિમ્મયાળ અમક્ષેયા તત્થળ જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા ફાસુગાય અફાસુગાય) હન મેં જો અશસ્ત્ર પરિણત સચિત્ત- ધાન્યસરિસવય હૈ વે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો કો અમક્ષ્ય હૈ- અસ્વાધ્ય હૈ । જો શસ્ત્ર પરિણત અચિત્ત હૈ વે પ્રાસુક ઔર અપ્રાસુક કે ભેદ સે દો પ્રકાર કે હૈ (અફાસુયાળ સુયા ણો મક્ષેયા તત્થળ જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા જાહ્યાય અજાહ્યા ય તત્થળ જે તે જાહ્યા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા એસણિજ્ઞા ય અણેસ-ણિજ્ઞા ય) હન મેં જો અપ્રાસુક ધાન્ય સરિસવય હે વે હે શુક લાને

કહેવાય છે, તેમજ જેઓ એકી સાથે માટીમાં રમતા રમતા મોટા વયા છે તેઓ સહપાસુકીડિતક મિત્ર કહેવાય છે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે આ બધા અમક્ષ્ય છે (તત્થળ જે તે ધન્નસરિસવય તે દુવિહા પળ્લતા, ત જહા સત્થ પરિણયાય અસત્થ પરિણયાય) ધાન્ય એટલે કે જે અનાજના રૂપમાં સરિસવય (સરસિયુ) છે તેના બે પ્રકાર છે-૧ શસ્ત્ર પરિણત, ૨, અશસ્ત્ર પરિણત, (તત્થળ જે તે અસત્થપરિણયા તે સમણાળ ણિમ્મયાળ અમક્ષેયા તત્થળ જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા-ફાસુગાય અફાસુગાય) આમાં જે અશસ્ત્ર પરિણત-‘ સચિત્ત ’ ધાન્ય સરિસવય છે તે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે અમક્ષ્ય છે, અપ્રાધ્ય છે તેમજ શસ્ત્રપરિણત-અચિત્ત છે તે પ્રાસુક અને અપ્રાસુક આમ બે પ્રકારના છે (અફાસુયાળ સુયા ણો મક્ષેયા-તત્થળ જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા જાહ્યાય અજાહ્યાય તત્થળ જે તે જાહ્યા તે દુવિહા પળ્લતા ત જહા એસણિજ્ઞાય અણેસણિજ્ઞાય) આમાંથી આ પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયુ (સરિસવય) છે, તે અપ્રાધ્ય છે પ્રાસુક ધા ય સરસિયા (સરિસવય) ના બે

યે તે 'અણેસણિજ્ઞા' અનેપણીયાસ્તે સ્વલ્પ અભક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલ્પ યે તે 'એસ-
ણિજ્ઞા' એપણીયા, તે દ્વિવિધા પ્રાપ્તાઃ-તદ્ યથા-લઘ્વાશ્ચ અલઘ્વાશ્ચ । તત્ર
સ્વલ્પ યે તેમલઘ્વાસ્તે અભક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલ્પ યે તે લઘ્વાસ્તે શ્રમણાના નિર્ગ્રન્થાના
ભક્ષ્યાઃ હે શુક ! એતેનાર્થેન-ઉક્તરૂપેણ અર્થેન ઉક્તાર્થમાદાયેત્યર્થ, એવમુચ્યતે
'સરિસવયા' સરિસવયશ્ચદ્વાન્યા અર્થા ભક્ષ્યા અપિ અભક્ષ્યા અપીતિ ।

'એવ કુલત્યા વિ ભાણિયન્વા' એવ ઉક્તપ્રકારેણ કુલસ્થા અપિ ભણિતન્વાઃ,
'નવેર' વિશેષ. હદ નાનાત્વ સ્ત્રીકુલસ્થાશ્ચ ધાન્યકુલત્યાશ્ચ । સ્ત્રીકુલસ્થા સ્ત્રિવિધા

યોગ્ય નહીં હૈં । પ્રાસુક ધાન્ય સરિસવય દો પ્રકાર કે હૈં જૈસે યાચિત
ઔર અયાચિત । હન મૈં મી જો અયાચિત હૈં વે અભક્ષ્ય હૈં-શ્રમણ
નિર્ગ્રન્થોં નો રાને યોગ્ય નહીં હૈં । યાચિત એપણીય ઔર અનેપણીય કે
ભેદ સે દો પ્રકાર કે હૈં (તત્થણ જે તે અણેસણિજ્ઞા તે ન અમક્ષેયા)
હન મે જો અનેપણીય ધાન્ય સરિસવય હૈં વે અસ્વાદ્ય હૈં । (તત્થણ જે
તે એસણિજ્ઞા તે દુવિદ્યા પત્રસ્તા લઘ્વાય અલઘ્વાય, તત્થણ જે તે અલઘ્વા,
તે અમક્ષેયા, તત્થણ જે તે લઘ્વા તે સમણાણ નિગયાણ મક્ષેયા)
જો એપણીય સરિસવય હૈં વે લઘ્વ ઔર અલઘ્વ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કે
હૈં-અલઘ્વ અમક્ષ્ય ઔર લઘ્વ શ્રવણ નિર્ગ્રન્થોં નો ભક્ષ્ય હૈં । (એણ
અટ્ટેણ સુયા એવ વુચ્ચતિ-સરિસવયા-મક્ષેયા વિ અમક્ષેયા વિ
એવ કુલત્યા વિ ભાણિયન્વા) હે શુક ! સરિસવય પદ કે હન પૂર્વોક્ત
અર્થોં નો લેકર એસા મૈં કહના હૈં કિ સરિસવય ભક્ષ્ય મી હૈં ઔર અ-
ભક્ષ્ય મી હૈં । હસી તરહ "કુલત્યા" કે વિષય મૈં મી એસા હી સમ-
જ્ઞાના ચાહિયે । (નવેર હમ નાણત્ત) પરન્તુ હસ મે હસ તરહ વિશેષતા

પ્રકાર છે-યાચિત અને અયાચિત, આમા અયાચિત સરિસવય અલક્ષ્ય ગણાય
છે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો આહારમા અયાચિત સરિસવયનો પ્રયોગ કરતા નથી
(તત્થણ જે તે એસણિજ્ઞા તે દુવિદ્યા પત્રસ્તા લઘ્વાય અલઘ્વાય, તત્થણ જે તે
અલઘ્વા, તે અમક્ષેયા, તત્થણ જે તે લઘ્વા તે સમણાણ નિગયાણ મક્ષેયા)
એપણીય (એપણીય) સરિસવયના લઘ્વ અને અલઘ્વ બે પ્રકારે છે નિર્ગ્ર-
ન્થોને માટે અલઘ્વ સરિસવય (સરશિયુ) અલક્ષ્ય છે અને લઘ્વ સરિસવય
લક્ષ્ય છે (એણ અટ્ટેણ સુયા એવ વુચ્ચતિ સરિસવયા મક્ષેયા વિ અમક્ષેયા
વિ એવ કુલત્યા વિ ભાણિયન્વા) હે શુક ! આ પ્રમાણે સરિસવય ને પૂર્વોક્ત
રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કરતા તેને લક્ષ્ય અને અલક્ષ્ય આમ બે રીતે કહી શકાય
આ રીતે 'કુલત્યા' ના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ (નવેર હમ નાણત્ત)

प्रज्ञप्ताः, तदयथा कुलवधूका इति च कुलमातृका इति च, कुल दुहितर इति च । धान्य कुलस्थास्तथैव ।

एव मासाः मापा अपि, नवरं विशेषः—इदं नानात्वम् मासा मापा त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तदयथा—कालमासाश्च अर्थमापाश्च धान्यमापाश्च । तत्र खलु ये ते काल मासास्ते खलु द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः, तदयथा—श्रावणो यावद् आपादः, ते खलु अभक्ष्याः । अर्थमापा द्विविधाः—हिरण्यमापाश्च, सुवर्णमापाश्च, ते खलु अभक्ष्या धान्यमापास्तथैव ॥

है— (इत्थी कुलस्था य धन्न कुलस्था य) एक स्त्री कुलस्था दूसरी धान्य कुलस्था । तात्पर्य इसका—कुलस्था की छाया कुलस्था है— इसका अर्थ स्त्री कुलस्था और धान्य कुलस्था है । कुलथी जात का अन्न विशेष जो होता है वही यह धान्य कुलस्था से ग्रहण हुआ है । (इत्थी कुलस्था त्रिविहा पन्नस्ता त जहा कुल वधूयाड य कुल माउयाइ य, कुल वूयाडय) इन में जो कुलस्था का वाच्यार्थ स्त्री कुलस्था है वह तीन प्रकार का हैं जैसे— १ कुलवधू २ कुलमातृ का ३ और कुल दुहिता (लड़की) (धन्न कुलस्था तहेव) धान्यकुलस्था अर्थ का निरूपण धान्य मरिसवय के समान जानना चाहिये । (एव मासा वि नवर इम नाणत्त— मासा त्रिविहा पन्नस्ता, त जहा— काल मासाय, अत्य मासाय, धन्न मासाय, तत्थ ण जे ते काल मासा ते ण दुवालसविहा पन्नस्ता, त जहा— साव णे जाव आसाढे ते ण अभक्खेया, अत्य मासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्ण मासा य ते ण अभक्खेया धन्न मासा तहेव) इसी तरह “मासा”

आनु स्पष्टीकरण्णं अवी गीते ठे (इत्थी कुलस्था य धन्न कुलस्था य) ओक स्त्री कुलस्था अने णीउ धान्य (अनाज) कुलस्था नी छाया ‘ कुलस्था ’ थाय छे तेना जे रीते अर्थ समस्त गद्याय ठे स्त्री ने पणु कुलस्था छडेवाय छे अने कुलस्था ओक अलतु टोण पणु छे तेने ‘ कणवी ’ छडे छे (इत्थी कुलस्था त्रिविहा पन्नस्ता त जहा कुलवधूयाइ य कुल माउयाइ य कुल वूयाडय) स्त्री कुलस्थाना त्रय प्रकार छे जेम ठे—(१) कुल वधू, (२) कुल मातृका, अने (३) कुल दुहिता (लड़की) (धन्न कुलस्था तहेव) धान्यार्थवाची कुलस्था गणत्तु निरूपण धान्य मरिसवनी जेम समस्तु जेधये (एव मासा वि नवर इम नाणत्त मासा त्रिविहा पन्नस्ता त जहा—काल मासाय, अत्य मासाय, धन्न मासाय तत्थ ण जे ते कालमासा ते ण दुवालसविहा पन्नस्ता त जहा सावणे जाव आसाढे ते ण अभक्खेया अत्यमासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्णमासाय ते ण अभक्खेया पन्नमासा तहेव) आ प्रमाणे ज ‘ मास ’ गण्ड विधे पणु

સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય તત્ત્વજ્ઞાનજિજ્ઞાસયા શુરુઃ પૃચ્છતિ-‘એમે ભવ’ ઇત્યાદિ. ।
 ‘એમે ભવ’ એકો ભવાન્ ? અય માયઃ-આત્માન એકત્વસીકારે શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાન-
 નાનામવેયવાના ચાત્મડનેકતોપલબ્ધ્યા એકત્વ દૂપયિષ્યામીતિ. ।

- ‘દુવે ભવ’ દ્વૌ ભવાન્ ? અયમાશયઃ- આત્મનો દ્વિત્વામ્યુપગમેડહમિત્યેકે
 ત્વવિશિષ્ટાર્થસ્ય દ્વિત્વવિરોધેન દ્વિત્વ દૂપયિષ્યામીતિ. । ‘અનેમે ભવ’ અનેકે
 ભવાન્ ? -આત્માનોડનેકત્વસીકારેડહમિત્યેકત્વવિશિષ્ટાર્થસ્યાનેકત્વવિરોધેનાનેક-
 ત્વ દૂપયિષ્યામીતિ માયઃ. । ‘અવસ્થાભવ’ અસ્થયો ભવાન્ ? ‘અવ્યભવ’ અ-
 વ્યયો ભવાન્, ‘અવદ્વિભવ’ અવસ્થિતો ભવાન્, આત્માન્તિય ઇતિ ભગતા સ્ત્રી
 ક્રિયતે ઇતિપશ્ચન્નયામિમાય. ।

શબ્દાભિધેય કે વિષય મેં મી જાનના ચાહિયે. કિન્તુ વિશેષતા ઇસ
 પ્રકાર હૈ-માસ ત્રીન તરહ કે હૈ-જૈસે-કાલમાસ અર્થમાપ, ધાન્યમાપ ઇન્
 મે જો કાલમાસ હૈ વે ૧૨દ્વારહ પ્રકાર હૈ. જૈસે શ્રાવણ માસ સે લેકર
 આષાઢ માસ તક. યે સચ અભક્ષ્ય હૈ. હિરણ્ય માપા ઓર સુવર્ણમાપા
 કે ભેદ સે અર્થમાપ દો પ્રકાર હૈ. યે મી અભક્ષ્ય હૈ. ધાન્યમાપ કે
 વિષય મે ધાન્યસરિસવ કે સમાન પ્રરૂપણા જાનની ચાહિયે. અથ સ્થા-
 પત્યા પુત્ર અનગાર સે શુરુ પરિવાજક તત્ત્વજ્ઞાન કી જિજ્ઞાસા સે પ્રશ્ન
 કરતા હૈ કિ- (એમે ભવ દુવે ભવ અનેમે ભવ અસ્થવ એ અવ્યવ
 ભવ અવદ્વિભવ અનેગમ્યમાયભવિવ વિ ભવ ?) આપ એક કૈસે
 હૈ ? અર્થાત્ આત્મા મેં યદિ એકત્વ માના જાવે તો શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનો
 એ અવયવો કી અપેક્ષા જો ડસમે અનેકતા કી ઉપલબ્ધિ હોતી હૈ ડસ
 સે ડસમેં એકતા નહી ઘનતી હૈ. યહા “ભવ” આત્મા કા ઘોષક હૈ

વિશેષાર્થો લાભુવા બેઠએ ‘માસ’ ગણનેા અર્થ ત્રણ રીતે થાય છે જેમ
 કે કાળ માસ, (૧) અર્થ માપ, (૨) ધાન્ય માપ, (૩) કાળ વાચક માસ
 (મહિના) ના શ્રાવણ થી માડીને આષાઢ સુધી ગાર પ્રકારે છે આ બધા
 અલક્ષ્ય છે હિરણ્યમાપ અને સુવર્ણ માપ આ બને અર્થમાપના બે
 પ્રકારે છે એ પણ અલક્ષ્ય છે અનાજના રૂપમા બે ધાન્ય માપ (અડદ)
 છે તેના માટે ધાન્ય સરિસવની જેમજ નિરૂપણ સમજવુ બેઠએ શુક પરિ-
 મલક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસાથી તેમને પ્રશ્ન કરે છે કે (એમે ભવ દુવે ભવ અનેમે
 ભવ અસ્થવ ભવ અવ્યવ ભવ અવદ્વિભવ અનેગમ્યમાયભવિવ વિ ભવ ?)
 તમે એક દો, એ કેવી રીતે ? એટલે કે આત્મા મા બે એકત્વ મનાય તો
 શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનો અને અવયવોની અપેક્ષાએ તેમા અને તા ઉપવબ્ધ
 હોય છે તેથી આત્મામા એકત્વ સિદ્ધ થતું નથી અહીં ‘ભવ’ ગણ આત્મ

‘अणेगभूयभावभगिए वि भव’ अनेक भूतभावभगिकोऽपि भवान् ? अनेके अशा अवयवाभूता = भतीताः, भावा वर्तमाना भगिका = भाविनश्च यस्य स तथा, आत्मा अनित्य इति पक्षो भवता स्वीक्रियत इत्यर्थः । अनयोर्नित्यानित्यक्षयोरेकत-

आत्मा एक है- इस सिद्धान्त को लेकर शुक्र स्थापत्या पुत्र अनगार से कहता है कि यह आत्मा का एकत्व पक्ष युक्ति सगत नहीं बैठता है कारण श्रोत्रादि इन्द्रियों से जो भिन्न २ विज्ञान उत्पन्न हुए हैं एव जो भिन्न अवयवों की उपलब्धि होती है उस से आत्मा में एकत्व बाधित होता है । इसी तरह यदि आत्मा में द्वित्व माना जावे तो यह भी पक्ष युक्ति युक्त प्रतीति नहीं होता है कारण “अह्” ‘अह्’ इत्याकार-रूप जो आत्मा में एकत्व की प्रतीति होती है उससे एकत्व विशिष्ट अर्थ की ही प्रतीति होती है इसलिये इस प्रतीति से उस में द्वित्व (दो) का विरोध आता है । “अणेगे भव” आत्मा को अनेक भी इसी लिये मानना युक्ति सगत प्रतीति नहीं होता है कि उस में फिर ‘अह्’ ‘अह्’ इत्याकारक एकत्व प्रतीति नहीं बन सकती है । इस प्रतीति से उस में एकत्व (एकपन) का ही मान होना है अनेकता के साथ इस प्रतीति का विरोध है । इसलिये यह पक्ष भी दूषित ठहरता है । ‘अक्ख-ए भव’ आत्मा अक्षय है ‘अव्वए भव’ अव्यय है अवद्विए भव आत्मा

ने भाटे छे आत्मा ओक छे आ सिद्धान्तने विषे शुक्र परित्राजक स्थापत्या पुत्र अनगारने उहे छे के आत्मा विषे ओकत्वपक्ष युक्ति सगत लागते। नथी कारण उ श्रोत्र वगेरे इन्द्रियो थी ने जुही जुही जतना विज्ञानो उ प न्न थया छे अने ने जुहा जुहा अवयवोनी उपलब्धि थाय छे तेथी आत्मा भा ओकत्व बाधित थाय छे आ रीते ज जो आत्माभा द्वित्व मानवाभा आवे तो आ बात पणु उचित लागती नथी, केभके ‘अह्’ ‘अह्’ आ रीते ने आत्माभा ओकत्वनी प्रतीति थाय छे तेथी आत्मा ओकत्व विशिष्ट छे ओ अर्थ ज रूप छे थाय छे आ रीने आत्माभा द्वित्व विषे पणु बाधो उलो थाय छे “अणेगे भव” आत्माने अनेउ पणु मानी न राकाय केभके तेमा पछी ‘अहु’ ‘अहु’ आ जतनी ओकत्वनी प्रतीति मलवित थछ् शकती नथी ओनाथी तेमा ओकत्वनी प्रतीति थाय छे आ रीते अनेकता नी साथे आ प्रतीति नो बाधो उलो थाय छे आ प्रमाणे आ पक्ष पणु सहेप ज उहेवाय (अक्खए भव) आत्म अक्षय छे (अव्वए भव) अव्यय

સ્પષ્ટપરિગ્રહોઽન્યતર દૂષયિષ્યામીત્યાશયઃ । સ્થાપત્યાપુત્રો યદતિ-‘સુયા’ ઇત્યાદિ ।
 હે શુક ! એકોઽપ્યહમ્, દ્વાપ્યહમ્, યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ । પુનઃ
 શુકઃ પૃચ્છતિ-‘ સે કેળદ્વેળ મતે ! ’ ઇત્યાદિ । તત્ કેનાર્થેન ભદન્ત । એવમુચ્યતે
 -એકોઽપ્યહ યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ ?

અવસ્થિત હૈ, નિત્ય હૈ ‘ અણેગભૂયભાવભવિણ વિ ભવ ’ અનેક ભૂત,
 ભાવ ઓર ભવિક પર્યાયોં ચાલા હૈ અનિત્ય હૈ ભૂત શબ્દ કા- અર્થ
 -અતીત,-ભાવ કા અર્થ વર્તમાન એવ ભવિક કા અર્થ ભવિષ્યત-કાલીન
 હૈ-અર્થાત્ આત્મા કે ભૂત પર્યાય રૂપ અશ વર્તમાન પર્યાય રૂપ અશ
 તથા ભવિષ્યત કાલ મેં હોને વાલે પર્યાય રૂપ અશ ઉસ કે અવયવ, રૂપ
 હૈ-।-હસસે- આત્મા મેં અનિત્યતા સિદ્ધ હોતી હૈ । હસ તરફ શુક ને
 સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર કે હન સમસ્ત પક્ષોં કો દૂષિત ક્રિયા । નિત્ય
 પક્ષ અનિત્ય પક્ષ સાથ વિરુદ્ધ પડતો હૈ ઓર અનિત્ય પક્ષ નિત્ય પક્ષ
 કે સાથ વિરુદ્ધ પડતો હૈ ઇત્યાદિ । અપ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્યાદ્વાદ
 સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર ઉત્તર દેતે હૈ । (સુયા ણ્ગે વિ અહ દુવેવિ અહ
 જાવ અણેગ ભૂયભાવ ભવિણવિ અહ) હે શુક ! મેં એક મી હૂં, મેં દો
 મી હૂં, યાવત્ અનેક ભૂત ભાવ ભવિક પર્યાયોં વાલા મી હૂં (સે કેળ
 દ્વેળ મતે એવ વુચ્ચહ, ણ્ગે વિ અહ જાવ અણેગભૂયભાવભવિણ વિ

છે (અવદ્વિણ ભવ) આત્મા અવસ્થિત છે નિત્ય છે, (અણેગભૂયભાવભવિણ
 વિ ભવ) અનેક ભૂત, ભાવ અને ભાવિક પર્યાય વાળો છે અનિત્ય છે, ભૂત
 શબ્દનો અર્થ ભૂતકાળ છે ભાવ શબ્દનો અર્થ વર્તમાનકાળ અને ભાવિક શબ્દનો
 અર્થ ભવિષ્ય કાળ થાય છે, એટલે કે આત્માના ભૂત પર્યાય અર્થ, વર્તમાન
 પર્યાય અર્થ તેમજ ભવિષ્યમા થનારા પર્યાય રૂપ અર્થ તેના (આત્માના)
 અવયવ રૂપ છે એથી આત્મમા અનિત્યતા સિદ્ધ થાય છે આ રીતે શુક
 , પરિવ્રાજકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના બધા પક્ષોને સદોષ સિદ્ધ કર્યા, આત્મા
 વિષે નિત્ય અને અનિત્ય આમ બને પક્ષો એક બીજાથી વિરુદ્ધ છે આ પ્રમાણે
 જ અનિત્યપક્ષ નિત્યપક્ષ ની સાથે વિરુદ્ધ છે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્યાદ્વાદ
 સિદ્ધાન્ત મુજબ શુકપરિવ્રાજકને જવાબ આપતા કહે છે—(સુયા ણ્ગે વિ
 અહ દુવેવિ અહ જાવ અણેગભૂયમાવિમાવિણવિ અહ) હે શુક ! હું એક
 પણ છું, હું બે પણ છું, અને હું અનેક ભૂત, ભાવ તેમજ ભવિક પર્યાય
 વાળો પણ છું (સે કેળદ્વેળ મતે એવ વુચ્ચહ, ણ્ગે વિ અહ જાવ અણેગભૂય
 ભાવભવિણ વિ અહ) શુકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને કહ્યું કે હે ભદન્ત ।

અથ સ્થાપત્યાપુત્ર સ્યાદ્વાદમવલમ્બ્યોત્તર કરોતિ 'જળ્ણ સુયા !' इत्यादि । यत् खलु हे शुक्र ! ' द्रव्यद्वयाए एगे अह ' द्रव्यार्थतया एकोऽहम् । द्रव्यत्वेनामेकोऽस्मि जीवद्रव्यपरय एकत्वात् , न तु प्रदेशाभिप्रायेण ।

- ' नाणदसणद्वयाए दुवेवि अह ' ज्ञानदर्शनार्थतया द्वावप्यहम् । ज्ञानदर्शनार्थद्वयाभिप्रायेण द्विस्वभावकोऽहमस्मीत्यर्थः । द्वावप्यहमित्यनेन अनेकोऽपि भगान्तिप्रश्नस्याप्युत्तर प्रदत्तम् , उक्तरीत्या द्विस्वभावरूपां श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकत्वाच्च । यथा एको देवदत्त एरुस्मिन्नेवकाले पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वादीननेकान् स्वभावान् प्राप्नोति ।

अह) सो भदत् । आप ऐसा किस अर्थ को लेकर कह रहे हैं कि मैं एक भी हूँ यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायो वाला भी हूँ हे शुक्र ! ऐसा जो मैं कह रहा हूँ सो किस अर्थ की अपेक्षा को लेकर कह रहा हूँ यह सुनो (जળ્ણ સુયા ! દ્રવ્યદ્વયાએ એગે અહ નાણદસણદ્વયાએ, દુવેવિ અહ, પસદ્વયાએ, અક્ષણે વિ અહ અવ્વણે વિ અહ અવદ્વિ-વિ અહ ઉવઓગદ્વયાએ અણેગભૂયભાવભવિણે વિ અહ) મੈં એક હૂં એસા જો મેરા કહના હૈ વહ હૈ શુક્ર ! દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષા હૈ । (દ્રવ્યાર્થિક નય કા વિષય એક અલખંડ દ્રવ્ય હોતા હૈ । અતઃ ઉસ દૃષ્ટિ સે મૈં દ્રવ્ય કો એક હોને કી વજહ સે એક હૂં । પ્રદેશોં કી અપેક્ષા સે એક નહીં હૂં । જ્ઞાન, દર્શન કી અપેક્ષા સે મૈં દો રૂપ ભી હૂં દો સ્વભાવવાલા ભી હૂં । આત્માકા લક્ષણ ઉપયોગ હૈ । યહ ઉપયોગ જ્ઞાન ઓર દર્શન કી અપેક્ષા સે દો પ્રકાર કા હૈ । ઇસ દૃષ્ટિ સે મૈં એક હોતા હુઆ ભી દો રૂપ હૂં । ઇસ કથન સે મૈં અનેક ભી હૂં ઇસ પ્રદન

તમે ડયા આધારે કહી રહ્યા છોટે હું એક પણ છું અનેક પણ છું અને હું અનેક ભૂત, ભાવ અને ભવિક પર્યાય વાળો પણ છું ? સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર શુક્ર પરિત્રાજક ને જવાબ આપતા કહેવા લાગ્યા કે—(જળ્ણ સુયા ! દ્રવ્યદ્વયાએ એગે અહ નાણદસણદ્વયાએ દુવેવિ અહ પસદ્વયાએ અક્ષણે વિ અહ અવ્વણે વિ અહ અવદ્વિ-વિ અહ ઉવઓગદ્વયાએ અણેગભૂયભાવભવિણે વિ અહ) હે શુક્ર ! “ હું એક છું ” માફ આ કહેવું દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાઓથી છે દ્રવ્યાર્થિક નયનો વિષય એક અમડ દ્રવ્ય હોય છે, દ્રવ્ય એક હોવાથી, આ દૃષ્ટિએ હું એક છું, પ્રદેશોની અપેક્ષાથી હું એક નથી જ્ઞાન દર્શનની દૃષ્ટિએ મારા બે રૂપ પણ છે હું બે જાતના સ્વભાવવાળો પણ છું આત્માનું લક્ષણ ઉપયોગ છે જ્ઞાન અને દર્શનની દૃષ્ટિએ ઉપયોગના બે પ્રકાર થાય છે આમ હું એક રોવા છતાં પણ બે રૂપ વાળો છું આથી ‘ હું

‘પણસદ્વ્યાપ્ત અસ્ત્યપિ અહ અવ્યપિ અહ અપ્રતિપિ અહ’ પ્રદેશાર્થ-
તયા-અણ્યોઽપ્યહમ્ અસંખ્યાતાનામાત્મપ્રદેશનામેઋણ્યાપિ કેનાપિ પ્રકારેણ ક્ષયા
ઽભાવાત્ । અણ્યોઽપ્યહમ્-કેનાપિ પ્રકારેણૈઋણ્યાપ્યાત્મપ્રદેશસ્ય નાશાભાવાત્ ।

કાં બી ઉત્તર હો જાતા હૈ । હસ તરહસે માનને પર બી વહા અહ
પ્રત્યય હોને મેં કોઈ ઘાધા નહીં ઓતી હૈ । ઓર ઉક્તરીતિ સે આત્મા
મેં દ્વિત્વ ભાવતા આને પર ડસમેં શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનોં કી તથા અવયવો
કી અનેકતા બી વિરુદ્ધ નહીં પડ સકતી હૈ । યહ વિરુદ્ધતા તો આત્મા
મેં એક સ્વભાવતા માનને પર હી આતી હૈ । મુલ મેં એક હોને પર બી
અનેક સ્વભાવ કી માન્યતા ઘાધિત નહીં હોતી હૈ । જૈસે દેવદત્ત એક
પદાર્થ મેં પિતૃત્વ, પુત્રત્વ, ભ્રાતૃત્વ આદિ અનેક સ્વભાવ એક હી કાલ
મેં હોતે હુએ પ્રતીતિ હોતે હૈ । એક આત્મા કે અસંખ્યાત પ્રદેશ શાસ્ત્ર-
કારોં ને કહે હૈ । હન મેં સે કોઈ બી એસા પ્રદેશ નહીં હૈ જિસકા
કિસી બી પ્રકાર સે ક્ષય હો સકે અતઃ હસ પ્રદેશ કી અપેક્ષા સે મેં
આત્મા અક્ષય હૈ । હસી તરહ એક બી આત્મા કે પ્રદેશ કા કિસી બી
તરહ સે નાશ નહીં હો સકુ ને કે કારણ મેં આત્મા અવ્યય હૈ । અવ્યય
શબ્દ કા જો કિન્હી ૨ ને એસા અર્થ કિયા હૈ કિ કિનનેક પ્રદેશોં કા
વ્યય નહીં હોના હૈ સો વહ આગમ સે વિરુદ્ધ પડતા હૈ કારણ હસ

અનેક છુ’ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પણ પુછ થાય છે આ માન્યતાથી ત્યાં ‘અહંની
પ્રતીતિમાં કોઈપણ જાતનો વાધો જણાતો નથી અને આ રીતે આત્મામાં
દ્વિત્વભાવની સ્થાપન થી તેમાં શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનોની તેમજ અવયવોની અને
કતામાં પણ કોઈ પણ જાતનો વિરોધ જણાતો નથી આત્મામાં એક સ્વભાવતા
માનવામાં જ આ વાધો જોવા થાય છે આ પ્રમાણે મૂળ રૂપે એક હોવા છતાં
પણ અનેક સ્વભાવની માન્યતા કોઈ પણ રીતે બાધિત થતી નથી જેમકે
દેવદત્ત આ એક પદાર્થમાં પિતૃત્વ પુત્રત્વ ભ્રાતૃત્વ વગેરે ઘણા સ્વભાવોની
પ્રતીતિ એકજ કાળમાં થાય છે એક આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો શાસ્ત્રકારો
એ કહ્યા છે આ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાંથી કોઈ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે
જેનો કોઈપણ રીતે નાશ થઈ શકે એથા આ પ્રદેશની અપેક્ષાએ હું ‘આત્મા’
અક્ષય છુ આ રીતે આત્માના એક પણ પ્રદેશનો ગમેતે સંજોગમાં કોઈપણ
રીતે નાશ નહિ થવાથી હું ‘આત્મા અવ્યય છુ અવ્યય શબ્દનો અર્થ’ કોઈ
એ એવી રીતે કર્યો છે કે ‘કેવલાક પ્રદેશો નો વ્યય થતો ન હોય તે
અવ્યય’ તો આ અર્થ આગમથી વિરુદ્ધ છે કારણકે આ અર્થને માનવાથી
‘કેવલાક પ્રદેશોનો નાશ થાય છે’ આવો અર્થ પણ નીકળે છે ‘ત્રિકાળમાં

યત્તુ-અવ્યયઃ ક્રિયતામપિ ચ વ્યયાભાગાદિત્યુક્ત, તદાગમવિરુદ્ધમ્-ક્રિયતામપી
ત્યુક્ત્યા ક્રિયતાના નાશોભવતીત્યર્થસ્થાપિ વોધાપત્તિસમગ્રાત્ । અવસ્થિતોઽપ્ય-
હમ્-અમરુયાતપ્રદેશત્ત્વ કદાચિદપિ ન વિનશ્યતિ તેન મમ સ્વરૂપમવિચલ સદાઽ
વસ્થાયીત્યર્થઃ । તસ્માન્નિત્યસ્વરૂપોઽપ્યહમસ્મીતિ ભાવઃ । શિષ્યબુદ્ધિર્નિર્મલીકર
પાર્થમેકસ્મિન્નેવાર્થેઽનેકપર્યાયશબ્દાના પ્રયોગ' ।

‘ ઉવઓગદ્વ્યાપ અણેગભૂયમાવમવિપ વિ અહ ’ અનેકભૂતભાવમવિકોઽપ્ય
હમ્ । અનેકે વિષયભેદાદ્ ગ્રહુવિયા ઉપયોગા ભૂતાઃ=અતીતાઃ, ભાગાઃ વર્તમાના,
સ્તથા મવિકાઃ=માવિનશ્ચ યસ્ય સ તથા, અતીતકાલે ગ્રહવ-ઉપયોગા' શ્રોત્રાદિ

પ્રકાર કે કથન મેં “ કિનનેક પ્રદેશોં કા નાશ હોતા હૈ ” એસા અર્થ
ભી હો જાતા હૈ । અસરુયાત પ્રદેશોં સે યુક્ત પના આત્મા મેં ત્રિકાલ મેં
ભી નષ્ટ નહી હોના હૈ અત યહ અસરુયાત પ્રદેશોં સે યુક્ત રહને રૂપ
જો આત્મા કા સ્વરૂપ હૈ ઉસસે યહ આત્મા અવિચલ હૈ સદા અવસ્થિત
હૈ । હસસે યહ સ્પષ્ટ હો જાતા હૈ કિ મૈ નિત્ય સ્વરૂપ વાલા હૂં । મૈ
અક્ષય હૂં, અવ્યય હૂં, અવસ્થિત હૂં એસે જો યે સય પર્યાય શબ્દ એક હી
આત્મા રૂપ અર્થ મેં પ્રયુક્ત ક્રિયે ગયે હૂં વે શિષ્ય કી બુદ્ધિ કો નિર્મલ
કરને કે લિયે પ્રયુક્ત હુપ હૈ એમા જાનના ચાહિયે । “ ઉવ ઓગદ્વ્યાપ
અણેગભૂયમાવમવિપ વિ અહ ” ઘરા અનેક શબ્દ વિષય ભેદ કી
અપેક્ષા અનેકવિધ ઉપયોગોં કા વાચક હૂં યે અનેકવિધ ઉપયોગ જિસ
કે પરિલે હો જુકે હૂં તયા વર્તમાન મે જિસ મેં હો રહે હૈ ઓર મવિષ્ય
મેં જિસ મેં હોંગે અર્થાત્ અતીતકાલ મેં શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાન રૂપ ઉપયોગ
જિસ મેં ઉત્પન્ન હુપ હૈ, નષ્ટ હુપ હૂં, વર્તમાન કાલ મેં જિસ મેં

પણુ આત્મામા અસખ્યાત પ્રદેશોના યુક્ત ભાવ નષ્ટ થતો નથી એટલા
માટે અસખ્યાત પ્રદેશોથી યુક્ત રહેનાર આત્માનુ-વરૂપ છે તેનાથી આ
આત્મા અવિચળ છે હું મેલા અવસ્થિત છે એનાથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે હું
નિત્ય સ્વરૂપ વાળો છું હું અક્ષય છું હું અવ્યય છું હું અવસ્થિત છું,
અને આ બધા એક અર્થ વાચક પર્યાય શબ્દો આત્મા રૂપ અર્થમા પ્રયુક્ત
રવામા આના છે, તે શિષ્યની બુદ્ધિને નિર્મળ બનાવવા માટેજ, આમ
સમજ લેવું જોઈએ (ઉવઓગદ્વ્યાપ અણેગભૂયમાવમવિર વિ અહ) અહીં
જે અનેક શબ્દ છે તે વિષય લેહની અપેક્ષાથી અનેક વિધ ઉપયોગોના
વાચક છે આ અનેકવિધ ઉપયોગો જેના પહેલા થઈ ગયા છે, વર્તમાન
કાળમા જેમા થઈ રહ્યા છે અને ભવિષ્યમા જેમા થશે એટલે કે શ્રોત્ર વગેરે
વિજ્ઞાન રૂપ જેમા ભૂતકાળમા ઉત્પન્ન થયા છે, વર્તમાન કાળમા પણ જેમા

વિજ્ઞાનરૂપા ઉત્પન્ના વિનષ્ટાશ્ચ વર્તમાનકાલેऽપિ ઉત્પન્નન્તે વિનશ્યન્તિ ચ, તથા મ
 વિષ્યત્ કાલે ઉત્પત્સ્યન્ત વિનશિષ્યન્તિ ચ, ત ઉપયોગા આત્મનઃ=રુચિદમિદ્ધા
 સ્તેનાનેકભૂતભાવમવિકોઽપ્યદમસ્મીત્યેયમનિત્યપક્ષોપિ મમ દોષાય નાસ્તીત્યર્થઃ ।
 પતુ-અન્નભાવાઃ સત્તાઃ પરિણામા યા ઇતિ વ્યાખ્યાત તદયુક્તમ્-

અતીતાના ભાવિના ચ ભાવાનામનેકાન્વયિતયાઽતીતાર્થરૂપભૂતશબ્દાત્ પ્રાગેવ
 પ્રયોક્તવ્યસ્ય ભાવશબ્દસ્ય તદનન્તર પ્રયોગો ન સમચ્છત્તે અપિ ચ-તન્મતેઽતીત
 મવિકાના ભાવાન્વયિતયા તતઃ પૂર્વમ્ વા સદૈવ પ્રયોક્તવ્યયોરતીતમવિકશબ્દ-

ઉત્પન્ન હોતે હે નષ્ટ હોતે હે ત.ગા મવિષ્યત્ કાલ મેં જિસ મેં ઉત્પન્ન
 હોગે ઓર નષ્ટ હોગે વે ઉપયોગ આત્મા સે કયચિત્ અભિન્ન હેં ।
 અતઃ હેસં ઉપયોગ કી અપેક્ષા મેં આત્મા અનેક ભૂત, ભાવ, મવિક
 વાલો મી હૂં હસ તરહ આત્મા મેં અનિત્યતા મી આ જાતી હેં સો યહ
 અનિત્યતાં કા પક્ષ મી હમારે લિયે દોષાયહ નહી હોતા હેં । યહા પર
 જો, કિન્હી ૨ ને ભાવ શબ્દ કા અર્થ સત્તા યા પરિણામ હસ રૂપ સે
 કિયા હેં વહ ઠીક નહીં હેં । ભાવ શબ્દ યહ વર્તમાન કાલાર્થ કા હી
 વાચક હેં સત્તા યા પરિણામ કા વાચક નહીં । કારણ જો અતીત ઓર
 માર્ગો ભાવ હોતે હેં વે અનેકાર્થાન્વયી હોતે હેં હમલિયે અતિતાર્થક
 ભૂત શબ્દ સે પરિહી હી પ્રયોક્તવ્ય ભાવશબ્દ કા હસ કે વાદ પ્રયોગ
 કરના સમત પ્રતીત નહી હોતા ।

અપિચ- સત્તા યા પરિણામવાદિયોં કે મત મે અતીત ઓર મવિ
 ષ્યત્ મોર્ગો કો ભાવાન્વયી હોને કે કારણ અતીત ઓર મવિષ્યત્

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમા પણ જેમા ઉત્પન્ન થશે
 અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી ઘટિત અલિપ્ત છે એટલા માટે
 આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હું ‘ આત્મા ’ ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભાવિક
 વાળો પણ છું આ રીતે આત્મામા અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ
 અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સંદોષ ઝહી યકાય નહિ કેટલાક ભાવ
 શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી અહી ભાવ
 શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક
 નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય છે તે અનેકાર્થાન્વયી
 હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત કરવામા આવેલા
 ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે
 પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા બદલ

योर्भावशब्दव्यवधानेन प्रयोगो न सगच्छते, तस्माद् भावशब्दोऽत्र वर्तमानकालार्थपर इत्येव भगवदाशयोऽवगम्यते ।

अत्रः=अस्मिन् स्थाने स्थापत्यापुत्ररय वचनानि श्रुत्वा स शुकः संबुद्धः सम्यग्बोध प्राप्तः सन् स्थापत्यापुत्रमनगार वन्दते स्तौति, नमस्यति प्रणमति, वदित्वा नत्वा चैवमवादीत् हे भदन्त । इच्छामि खलु युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्त धर्मे निशामयतु=श्रोतुम् ।

(भूत, भविक) ये दोनों शब्द भाव के पहिले या भाव के बाद साथ २ प्रयुक्त होने चाहिये भाव शब्द से व्यवहित होकर प्रयुक्त नही होने चाहिये परन्तु यहाँ तो वे दोनों शब्द भाव शब्द से व्यवहित होकर ही प्रयुक्त हुए हैं इसलिये भावशब्द यहा वर्तमान कालार्थ परक है ऐसा ही भगवान् का आशय ज्ञात होता है । (एतत्त एव से सुए संबुद्ध धावच्चा पुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, एव वयासी, इच्छा मिणं भते ! तुम्हे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए धम्मकहा भाणियच्चा) इस स्थान में स्थापत्यापुत्र अनगार के वचनों को सुनकर वह शुक परिव्राजक सम्यक् बोध को प्राप्त हो गया और उसने फिर उन स्थापत्यापुत्र अनगार को वदना की स्तुति की उन्हें नमस्कार किया । वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगा हे भदन्त ! मैं आप से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहता हूँ । शुक परिव्राजक की इस प्रकार प्रार्थना सुन कर स्थापत्या पुत्र ने उसे धर्म

अतीत अने अविध्य (भूत, भाविक) आ जाने गण्डो भाव पडेवा के भाव, पुत्री साथे साथे प्रयुक्त थवा जेधमे भाव गण्ठो व्यवहित (युक्त) थाने प्रयुक्त थवा न जेधमे पड्ठ अही तो ते जाने शण्डो भाव शण्डनी व्यवहित (युक्त) धधने न प्रयुक्त थवा छे ओथी अही भाव शण्ड वर्तमान कालने अर्थ भतावे छे लज्जानने अलिप्राय ओवो न ज्ञाय ७ (एतत्त से सुए संबुद्ध धावच्चा पुत्त वदइ नमसइ उदित्ता नमसित्ता एव वयासी इच्छामिण भते ! तुम्हे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए धम्मकहा भाणियच्चा) आ प्रभावे स्थापत्या पुत्र अनगारना पथने सालणीने शुक परिव्राजकने सम्यक्त्वबोध थयो अने तेले स्थापत्यापुत्र अनगारने वदना कथा स्तुतिकरी अने तेभने नमस्कार कथा वदना अने नमस्कार करीने तेले तेभने उछु के छे लदत । हु तभारा श्री सुअथी केवली प्रज्ञप्त धर्म ने सालज्जानी जिआ शयुछु शुक परिव्राजक नी आवी पिनती सालणीने स्थापत्यापुत्रे तेने धर्मकथा सालज्जानी थ्या

વિજ્ઞાનરૂપા ઉત્પન્ના પિનષ્ટાથ વર્તમાનકાલેऽપિ ઉત્પદ્યન્તે વિનશ્યન્તિ ચ, તથા મ
 વિવિધત્ કાલે ઉત્પત્સ્યન્ત પિનશિષ્યતિ ચ, ત ઉપયોગા આત્મનઃ=કથચિદમિદ્ધા
 સ્તેનાનેકભૂતભાવમવિકોઽપ્યહમસ્મીત્યેયમનિત્યપક્ષોપિ મમ દોષાય નાસ્તીત્યર્થઃ ।
 યત્તુ-અવ્રભાવા. સત્તાઃ પરિણામા યા ઇતિ વ્યાખ્યાત તદ્યુક્તમ્-

અતીતાના ભાવિના ચ ભાવાનામનેકાન્વયિતયાઽતીતાર્થરૂભૂતશઙ્કાત્ પ્રાગેવ
 પ્રયોક્તવ્યસ્ય ભાવશબ્દસ્ય તદનન્તર પ્રયોગો ન સગચ્છતે અપિ ચ-તન્મતેઽતીત
 મવિકાના ભાવાન્વયિતયા તતઃ પૂર્વત્ર વા સદૈવ પ્રયોક્તવ્યયોરતીતમવિકશબ્દ-

ઉત્પન્ન હોતે હૈ નષ્ટ હોતે હૈ તથા મવિવિધત્ કાલ મૈ જિસ મૈ ઉત્પન્ન
 હોગૈ ઔર નષ્ટ હોગૈ વે ઉપયોગ આત્મા સે કથચિત્ અભિન્ન હૈ ।
 અતઃ ઈસ ઉપયોગ કી અપેક્ષા મૈ આત્મા અનેક ભૂત, ભાવ, મવિક
 વાલો મી હૈ ઈસ તરફ આત્મા મૈ અનિત્યતા મી આ જાતી હૈ સો યહ
 અનિત્યતા કા પક્ષ મી હમારે લિયે દોષાવહ નહી હોતા હૈ । યહા પર
 જો કિન્હી ૨ ને ભાવ શબ્દ કા અર્થ સત્તા યા પરિણામ ઈસ રૂપ સે
 કિયા હૈ વહ ઠીક નહી હૈ । ભાવ શબ્દ યહ વર્તમાન કાલાર્થ કા હી
 વાચક હૈ સત્તા યા પરિણામ કા વાચક નહી । કારણ જો અતીત ઔર
 મવો ભાવ હોતે હૈ વે અનેકાર્થાન્વયી હોતે હૈ ઈમલિયે અતિતાર્થક
 ભૂત શબ્દ સે પહિલે હી પ્રયોક્તવ્ય ભાવશબ્દ કા ઉસ કે બાદ પ્રયોગ
 કરના સગત પ્રતીત નહી હોતા ।

અપિચ- સત્તા યા પરિણામવાદિયોં કે મત મે અતીત ઔર મવિ
 વ્યત્ ભવોં કો ભાવાન્વયી હોને કે કારણ અતીત ઔર મવિવિધત્

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિધ્ય કાળમા પણ જેમા ઉત્પન્ન થશે
 અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી ડથયિત અભિન્ન છે એટલા માટે
 આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હું ' આત્મા ' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભાવિક
 વાળો પણ છું આ રીતે આત્મામા અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ
 અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સંદોષ ઝઢી યાકાય નહિ કેટલાક ભાવ
 શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી ઝઢી ભાવ
 શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક
 નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય તે અનેકાર્થાન્વયી
 હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત નરવામા આવેલા
 ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે
 પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિધ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા પદ્ય

‘तएणसे इत्यादि ।

टीका—तत्तरतदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय एव तक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भन्त । परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहीतुमिच्छामित्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुखं यावत्= ईप्सितं कार्यं दीक्षाग्रहणरूपे निश्चयं मा कुरु, इत्येवमुक्तः सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्यायए इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्यायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका अवण कर (णिसम्म) उसे हृदय मे अवधारित कर (एव वगामी) उन से इस प्रकार कहा— (इच्छामि ण भते । परिव्यायगसहस्रेण सद्धिं सपरिवुडे देवानुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्राजको के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिडडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवानुप्रिय । तुम्हे जैसे सुख हो वैसा करो—उच्छित्तं कार्यं जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्यायए इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्सार भाद (से सुए) शुक (परिव्यायए) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री सुभ थी श्रुत चारित्र रूप धर्मनु श्रवण करीने (णिसम्म) तेने सारी पेठे हृदयमा अवधारित करीने (एव वगामी) तेमने आ रीते कछु— (इच्छामि ण भते । परिव्यायगसहस्रेण सद्धिं सपरिवुडे देवानुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदत । तमारी पासेथी ओउ हंनर परिव्राजकोनी साथे हु मुडित थधने दीक्षित थवा याहु छु (अहासुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए तिडडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ एडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिम ७कनी दीक्षित थवानी एउठा साभणीने स्थापत्यापुत्र अनगारे तेमने उछु ‘हे देवानुप्रिय । तमने जेम गजे तेम कशे उच्छित्तं कार्यंमा ओठवे के दीक्षाग्रहण करवाभा भोउ कजे नाछ आ रीते

અથ સ્થાપત્યાપુત્રો ધર્મકથા રથયતિસ્મ । નનુ મીદૃશી ધર્મકથા મગત્તોષ-
દિપ્તેતિ જિજ્ઞામાયામાહ—‘ ધમ્મકથા માણિયન્વા ’ ઇતિ । ધર્મકથા મણિતથ્યા
ઔપપાતિકસૂત્રોક્તા ધર્મકથાઽત્ર યાચ્યા સા ચોપાસન્દશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસત્તી-
વ્ત્રનીટીયાયા મયા વિસ્તરતો વ્યાખ્યાતા તતોઽગન્તવ્યા ॥ ૨૪ ॥

મૂલમ્—તણં સે સુણ પરિવ્વાયણ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ અતિણ
ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ એવં વયાસો—ઇચ્છામિ ણં મતે । પરિ-
વ્વાયગસહસ્સેણં સદ્ધિં સપરિવુડે દેવાણુપ્પિયાણં અંતિણ મુડે
ભવિત્તા પવ્વહિત્તણ, અહાસુહં જાવ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ
તિહિલ્લયં જાવ ધાઉરત્તાઓ ય ણંતે ણ્હેહિ, ણ્હિત્તા સયમેવ
સિહ ઉપ્પાહેહિ, ઉપ્પાહિત્તા જેણેવ થાવચ્ચાપુત્તે અણગારે તેણેવ
ઉવાગચ્છહિ, ઉવાગચ્છિત્તા મુંડે ભવિત્તા જાવ પવ્વહિણ સામાહ-
યમાહિયાહિ ચઉદસપુવ્વાહિ અહિજ્જહિ । તણં થાવચ્ચાપુત્તે
સુયસ્સ અણગારસહસ્સ સીસત્તાણ વિયરહિ । તણં સે થાવ-
ચ્ચાપુત્તે સોગધિયાઓ નીલાસોયાઓ પહિનિક્ખમહિ, પહિનિ-
ક્ખમિત્તા વહિયા જણવયવિહારં વિહરહિ ॥ સૂ૦ ૨૫ ॥

કથાં સુનાઈ । કિસ પ્રકાર કી ધર્મકથા સ્થાપત્યા પુત્ર ને શુક પરિવ્રાજક
કો સુનાઈ સો યહ કથા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં વર્ણિત હુઈ હૈ । વહી કથા
યહ સમજની ચાહિયે । ઉપાસકદશાંગસૂત્ર કી જો અગારધર્મ સ
જીવની ટીકા હૈ ઉસમે મૈને હસ કથા કો વિસ્તાર સે વ્યાખ્યાત
કિયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૨૪ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સભાવાવી તેણ
વર્ણન “ઔપપાતિક સૂત્ર” મા કરવામા આણ્યુ છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાથી
જાણી લેવી જોઈએ “ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર” ની અગારધર્મસંજ્ઞાની ટીકામા
પણ એ આ કથાણુ સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ‘ ૨૪ ’ ॥

‘तएणसे इत्यादि ।

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजकं स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धम्मं श्रुत्वा निश्चय्य एव वक्ष्यमाणं प्राकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भन्त ! परिव्राजकसहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा भवजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्जनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षां ग्रहीतुमिच्छामित्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुखं यावत्= ईप्सितं कार्यं दीक्षाग्रहणरूपे विद्मन्व मा कुरु, इत्येवमुक्तं सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्यायण इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्यायण) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिण धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय में अवधारित कर (एव वयानी) उन से इस प्रकार कहा— (इच्छामि ण भते । परिव्यायणसहस्से ण सद्धिं सपरिवुडे देवानुप्पियाण अतिण मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्राजको के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहामुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाण तिदटय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, णडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवानुप्रिय । तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो—इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्यायण इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्पार बाद (से सुए) शुक (परिव्यायण) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अतिण धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री भुज थी श्रुत चारित्र रूप धर्मनु श्रवण करीने (णिसम्म) तेने सारी चेठे हृदयभा अवधारित करीने (एव वगसी) तेभने आ गीते कछु— (इच्छामि ण भते । परिव्यायणसहस्रेण सद्धिं सपरिवुडे देवानुप्पियाण अतिण मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदत ! तभारी पासेथी ओउ छंनर परिव्राजकोनी साथे हुं मुडित यधने दीक्षित थवा याहुं छु (अहामुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाण तिदटय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ णडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजकी दीक्षित यवानी धम्मा सावणीने स्थापत्यापुत्र अनगारे तेभने कछु ‘हे देवानुप्रिय ! तभने जेभ गमे तेभ करे । इच्छित कार्यभा ओटवे के दीक्षाग्रहण करवाभा भोडु करे नाई आ रीते

અથ સ્થાપત્યાપુત્રો ધર્મકથા મથયતિસ્મ । નનુ શ્રીદશી ધર્મકથા ભગવતોષ
દિપ્તેતિ જિજ્ઞામાયામાદ-‘ ધમ્મફહા માણિયવ્યા ’ ઇતિ । ધર્મકથા મણિતવ્યા
ઔપપાતિકસૂત્રોક્તા ધર્મકથાઽત્ર યાચ્યા સા ઔપાસકદર્શાગમૂત્રસ્યાગારધર્મસત્ત્વ
વનીટીયાયા મયા વિસ્તરતો વ્યાખ્યાતા તતોઽયમન્તવ્યા ॥ ૨૪ ॥

મૂલમ્-તદ્દર્શનં સે સુદ પરિવ્રાજકે થાવચ્ચાપુત્તસ્સ અંતિષ
ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ એવં વયાસી-ઇચ્છામિ ણં મતે । પરિ-
વ્રાજકસહસ્તેણં સદ્ધિં સપરિવુદે દેવાણુપ્પિયાણં અતિષ મુદે
ભવિત્તા પવ્વઙ્ગણ, અહાસુહં જાવ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ
તિહિય જાવ ધાઠરત્તાઓ ય એગંતે એદેઙ્, એદિત્તા સયમેવ
સિહ ઉપ્પાદેઙ્, ઉપ્પાદિત્તા જેનેવ થાવચ્ચાપુત્તે અણગારે તેનેવ
ઉવાગચ્છઙ્, ઉવાગચ્છિત્તા મુદે ભવિત્તા જાવ પવ્વઙ્ગણ સામાઙ્-
યમાઙ્ગાઙ્ ચુદસપુવ્વાઙ્ અહિજ્ઞઙ્ । તદ્દર્શનં થાવચ્ચાપુત્તે
સુયસ્સ અણગારસહસ્સં સીસત્તાણ વિયરઙ્ । તદ્દર્શનં સે થાવ-
ચ્ચાપુત્તે સોગધિયાઓ નીલાસોયાઓ પડિનિક્કલમઙ્, પડિનિ-
ક્કલમિત્તા વહિયા જણવયવિહાર વિહરઙ્ગ ॥ સૂ. ૨૫ ॥

કથા સુનાઈ । કિસ પ્રકાર કી ધર્મકથા સ્થાપત્યા પુત્ર ને શુક પરિવ્રાજક
કો સુનાઈ સો યહ કથા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં વર્ણિત હુઈ હૈ । વહી કથા
યહ સમજતી ચાહિયે । ઉપાસકદર્શાગમૂત્ર કી જો અગારધર્મ સ
જીવની ટીકા હૈ ઉસમેં મૈને હસ કથા કો વિસ્તાર સે વ્યાખ્યાત
કિયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૨૪ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું
વર્ણન “ઔપપાતિક સૂત્ર” માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાથી
જાણી લેવી જોઈએ “ઉપાસકદર્શાગમૂત્ર” ની અગારધર્મ સંબંધની ટીકામાં
પશુ મેં આ કથાનું સંવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ‘ ૨૪ ’ ॥

‘तएणसे इत्यादि ।

टीका—ततस्तदनन्तरं सल्लसं शुकः परिव्राजकं स्थापयामासुः स्यान्निकं च
श्रुत्या निश्चय एव वक्ष्यमाणं प्राकारेणावादीत्—अत्रामि मयं मन्त्र ! परिव्राजक-
सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुग्रियाणामन्तिके मृगो वरा मयिदृष्टः । अत्र
समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्जनेन मृगो वरा मीवा श्रुति-
मीत्यर्थः । ततः स्थापयामासुः स्यान्निकं देवानुग्रियं यथाशक्तं गच्छेत्
कार्यं दीक्षाग्रहणरूपे प्रिलम्भ मा कुन्, इत्येवमुक्तः तत्र शुकः परिव्राजकं गच्छ

तएण से सुए परिव्राजक इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) हमके बाद (से मृग) उस शुक, (परिव्राजक) ब्राजकने
(थावच्चापुत्तस्स अतिणं धम्म सोन्हा) १० अक्षरों में श्रुति-
के मुखसे श्रुत चारित्र्य रूप धर्मका श्रवण कर (परिव्राजक, २० अक्षरों में
अवधारित कर (एव वगामी) उन में हम प्रकार प्रवृत्त
भते । परिव्राजकसहस्रेण मन्त्रिं सपरिवृतं देवानुग्रियं मीवा श्रुति-
भवित्ता पव्वइत्ताण) हे भद्र ! मैं आप देवानुग्रियं देवों के
हजार परिव्राजकों के साथ २ मृगिन शंकर देवानुग्रियं देवों के
(अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे निमीयणं देवानुग्रियं देवों के
य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिद्धं देवानुग्रियं देवों के
च्चापुत्ते तेणेव उवागच्छह) शुक, परिव्राजक
जान कर स्थापयामासुः अनगार ने शुक देवानुग्रियं देवों के
जैसे मुख हो वैसा करो—इत्येवमुक्तः

(तएण से सुए परिव्राजक इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्याग मा (तएण)

पुत्तस्स अतिणं धम्म सोन्हा)

चारित्र्य रूप धर्मको श्रवण

धारित करीने (एव वगामी)

परिव्राजकसहस्रेण मन्त्रिं

इत्तए) हे भद्र ! तथा

यधने दीक्षितं यथा

तिष्ठत्य जाव धाम्म

जेणेयं यावच्चापुत्ते

साधनीने स्थापय

तेम केश धर्मा

॥ ११ ॥

उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गत्वा त्रिदण्डिका यावत् त्रिदण्डादीनि सप्तोपकरणानि यावत्
गैरिकधातुरक्तानि वस्त्राणि चैकान्ते एकान्तप्रदेशे 'पडेइ' एवमिति-त्यजति एडि-
त्ता=त्यक्त्वा 'सयमेव सिंह उप्पाडेइ' सयमेव स्वहरतेनैव शिखां जटारूपात्
उत्पादयति=लुञ्चति ।

यत्तु-दीपिकाकारेण कस्तूरचन्द्रगणिना-यतिना 'सयमेव यसहि उप्पाडेइ'
इति स्वरूपोलकल्पित मूल प्रदर्श्य, दीपिकाया- 'स्वयमेव=स्वहस्ताभ्यामेव परिव्रा-
जकवसतिः त्रिदण्डिकानां निवासार्हं यन्मठं तावत्पादयतिस्मिन् समूलं विनाशितवा-
नित्यर्थः' इत्युक्तं, तदसमीचनम्-हस्तलिखितेषु मुद्रितेषु च प्राचीनपुस्त-
केषु तदुक्तमूलपाठानवलोकनेन, सर्वत्र 'सिंह' इत्येव पाठस्य दर्शनेन च उत्सूत्र प्र-
विलम्ब्य मतं करो-इस प्रकार स्थापत्यापुत्र फे कहने पर उस शुक परि-
व्राजकने ईशान कोण में जाकर अपने त्रिदण्डिका आदि सात उपकरणों
को तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को एकान्त स्थान में रख दिया
उन्हें छोड़ दिया-और जोड़करफिर अपने आप अपनी जटारूप शिखा
का उत्पादन किया । दीपिका कार कस्तूर चन्द्र जी गणिने (सयमेव वसहि
उप्पाडेइ" ऐसा कपोलकल्पित मूल पाठ दिखा कर दीपिका में जो
ऐसा लिखा है कि उसने अपने हाथों से त्रिदण्डिकों के निवास
योग्य मठ को समूल उगवाट डाला " यह ठीक नहीं है कारण ऐसा पाठ
हस्त लिखित एवं मुद्रित हुई प्राचीन प्रतिग्रो में देखने में नहीं आता है ।
वहां तो "सिंह" यही पाठ लिखा हुआ मिलता है । इस तरह से अपनी
कपोलकल्पना से पाठ को कल्पित कर रखना यह उत्सूत्र प्ररूपणा
है अपनी शिखा को उत्पादित कर-लुञ्चितकर-वह शुक परिव्राजक

स्थापयथा पुत्रनी आशा माहाजीने शुक परिव्राजके ध्यान डालुमा नथ ने पोताना
त्रिदंड वगेरे मात उपकरणो तेमज्जे अइ रगना वेओने ओक तरङ्ग भूझी दीधा
ओटले के आ गंधी वस्तुओने तेणे सदाने माटे त्याग करी दीधा ओना
पछी तेणे जटा इय पोतानी शिखानु लुञ्चन कथुं दीपिकाकार कस्तूर यद्रज
गण्डिओ " सयमेव वसहि उप्पाडेइ " आवो कपोलकल्पित मूल पाठ
जतावता दीपिकामा ओ प्रमाणे लब्धुं छे ते तेणे (परिव्राजके) पोताना
हाथोथी त्रिदंडिकोना निवास (मठ) ने समूल नष्ट करी नाथ्यो छतो
आ वात ठीक कही शक्य नहि केम के आ जतने पठ हस्तलिखित तेमज्ज
मुद्रित (छपाओली) नूनी प्रतोमा ओरा भणने नथी ते प्रतोमा तो 'सिंह'
पाठज लओखो भणे छे आवी रते पोतानी कपोलकल्पना भूवक असत्य
वातोथी पाठकोने भ्रममा भूकवाना प्रयासो करवा ते भरेभर " उत्सूत्रपत्र

रूपणा जनिता नन्तससारित्वापत्तेः । उत्पाद्य यत्रैव स्थापत्यापुत्रोऽनगरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मुण्डोभूत्वा यावत् प्रजितः दीक्षां गृहीतवान् । सामायिकादीन्येकादशाङ्गानि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते स्म । तदा-शुकस्य सार्यभूताः सहस्रपरिव्राजका अपि दीक्षां गृहीतवन्तः । ततस्तदनन्तरं खलु स्थापत्यापुत्रोऽनगरसहस्रं तदानीं दीक्षितान् सहस्रमनगारान् शुकस्य शिष्यत्वात् वितरति, दत्तवान् । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रं सौगन्धिकायां नगर्याः नीलाशोमात् नीलाशोकनामकादुद्यानात् प्रतिनिष्कामति, निर्गच्छति स्म, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं देशमध्ये विहारं विहरति करोति स्म ॥ २५ ॥

जहा स्थापत्यापुत्र अनगर विराज मान ये वहा गता- (उवागच्छित्ता मुडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयाडं चउदमपुत्राह अहिउजइ) जाकर वह मुडिन हो उनके पान दीक्षित हो गया । सामायिक आदि ग्यारह अङ्गों को और चतुर्दश पूर्वोंको उसने उनके पास पहा । शुक के साथ रहे हुए उन १ हजार परिव्राजकों ने भी भगवनी दीक्षा धारण करली । (तएण यावच्चा पुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए विहरइ) स्थापत्यापुत्र अनगर ने इन १ एक हजार साधुओं को शुक परिव्राजक का शिष्य बना दिया । (तएण से यावच्चापुत्ते सौगन्धिका नीला सोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) इसके बाद स्थापत्यापुत्र अनगर उस सौगन्धिका नगरी से, नीला शोक उद्यान से निकले और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने लगे ॥ सू० २५ ॥

पणु ॥ ४ छे पोतानी शिष्यानु लुथन ढरीने शुः परिवाजक न्या २१॥ पत्या पुत्र अनगर होता त्या गया (उवागच्छित्ता मुडे भवित्ता जाव पव्वइए समाइयमाइयइ चउदमपुत्राह अहिउजइ) या ४धने मुडिन यधने तेमनी पासेथी दीक्षा भेगरी दीधी सामयिक वगेदे अगियार अगे नो तेमन अतुंश पूवेनो तेले स्थापत्यापुत्र अनगर पासे रहीने अअथाम कथो शुः नी आथे रहैर रा ओड डगर परिवाजकेओ पणु लागवती दीक्षा भवीजारी दीधी (तएण यावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए विहरइ) स्थापत्यापुत्र अनगारे ते ओड डगर आधुओने शुः परिवाजकना ४ शिष्यो जनाओया (तएण से यावच्चापुत्ते सौगन्धिका नीला सोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ) त्या ४ पाद स्थापत्यापुत्र अनगर सौगन्धिका नगरी अने नीलाशोक उद्याननी जहा अधने थील जन पद (देश) आ विहार करवा नीकल्या ॥ सूत्र २५ ॥

मूलम्-तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धिं संप-
रिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पुंडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसनिगास
देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टय जाव पाओवगमण णुवन्ने,
तएणं से थावच्चापुत्ते वट्ठणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउ
णित्ता मासियाए सलेहणाए सद्धिं भत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता
जाव केवलवरनाणदंसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे
जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । तत्तस्तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारहस्तेग
साधं सपरिवृतो ग्रामानुग्राम विहरन् यत्रैव पुण्डरीक पुण्डरीकनामक पर्वतस्त
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीक पर्वत शनैः शनैर्दूरोदति-आरोदति, दूरुह्य
‘मेघघणसनिगास’ मेघघनसनिकाश मेघाना घन समूहस्तद्वत् कालत्रणं ‘देवस-

तएण से थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ- (तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र
अणगार सहस्सेणं सद्धिं सपरिवुडे) हजार अनगार के साथ२ ग्रामानु
ग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुंडरीए पव्वए) जदा पुंडरीक पर्वत था
(तेणेव उवागच्छइ) वहा आये (उवागच्छित्ता पुंडरीय पव्वय सणिय
२ दुरुहइ) वहा आकर वे उस पुंडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरु
हित्ता मेघघणसनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय जाव पाओव

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ ।’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्या२भाद(से थावच्चापुत्ते) स्थाप यापुत्र (अणगारसहस्सेण
सद्धि सपरिवुडे) ओके ऊपर अणुगारनी साथे ओके गामथी पीने गाम
विहार करता (जेणेव पुंडरीए पव्वए) ज०या पुंडरीक पर्वत डते। (तेणेव
उवागच्छइ) त्या आ०या (उवागच्छित्ता पुंडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ) त्या
पडोयीने तेओ पुंडरीक पर्वतपर धीमे धीमे चढवा माडया (दुरुहित्ता मेघघण
सनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय जाव पाओवगमण णुवन्ने) यहीने तेमछे

ત્રિપાય ' દેવસનિપાત=નિર્વાણાદ્યુત્સવસમયે યત્ર દેવા સમાગત્ય મિલન્તિ, દેવા
ના સનિપાતઃ સમિલન યત્ર ત ' પૃથ્વિસિંચાપટ્ટય ' પૃથ્વીશિલાપટ્ટક પ્રતિલેખ
યિત્વા યાન્ત ' પાઓપગમણ ણુવન્ને ' પાદપોપગમનમનુપાસ. સદ્મશિષ્યૈ સદ્
પાદપોપગમનસસ્તારક કૃતવાન્ । તત્ત્વલુ સ સ્થાપત્યાપુત્રો ગૃહનિર્વાણિસામાન
પરિયાગ ' શ્રામણ્યપર્યાય=ચારિત્રપર્યાય ' પાણિત્તા ' પાલયિત્વા માસિચ્યા
સલેખનયા પઠિત્તકાનિ અનશનેન ઊચ્ચા યાન્ત - કેવલચરિત્તદર્શને સતિ
' સમુપ્પાહેત્તા ' સમુપ્પાદ્ય અન્તસમયે કેવલજ્ઞાના કેવલદર્શન ચ સપાધ્ય તતઃ
પથાત્ સકલકર્મક્ષયે સિદ્ધઃ સુક્તિં પ્રાપ્તઃ યાવત્ બુદ્ધો મુક્તઃ સર્વદુઃખ પ્રહીણઃ
જન્મજરામરણાદિદુઃખરહિતો જાત ॥ ૨૬ ॥

ગમણ ણુવન્ને) ચદકર ઉન્હોં ને મેઘ સમ્રટ્ કે સમાન કૃષ્ણ વર્ણવાહે
તથા નિર્વાણ આદિ કે ઉત્સવ કે સમય જહાં દેવ એકત્રિત હોતે હૈં તેસે
પૃથ્વી શિલાપટ્ટક પર પ્રતિલેખના કર યાવત્ પાદપોપગમન સથારા
ધારણ કર લિયા । સાય કે ડન ૧ હજાર સાયુઓં ને ખી પાદપોપગમન
સથારા લે લિયા । (તળણં સે યાવચ્ચાપુત્તે વહુણિ વાસાણિ સામન પરિ
યાગ પાણિત્તા માસિચ્યા સલેહ્ણાણ સદ્ધિં મત્તાહ અણસણાણ હેદિત્તા
જાવ કેવલચરનાણદસણ સમુપ્પાહેત્તા તઓ પચ્છા સિદ્ધે જાવ પરીણે)
હસ તરહ ડન સ્થપત્યાપુત્ર અનગાર ને અનેક વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય
કા પાલન કરકે ઠક માન કી સલેખના સે સાઠ મત્તો કા અનશન
દ્વારા હેદન કર યાવત્ અન્ત સમય મે કેવલ જ્ઞાન કેવલ દર્શન પ્રાપ્ત
કર લિયા । ઉન્હોં પ્રાપ્ત કર ફિર યે સકલ કર્મોં કે ક્ષય હોને પર સિદ્ધ
બન ગયે । યહા યાન્ત શબ્દ સે બુદ્ધ મુક્ત સર્વ દુઃખ પ્રહીણ જન્મજરા
મરણાદિ દુઃખ રહિતો જાતો " ડન પદોં કા સમ્રટ્ હુઆ હૈં । સૂ. ૨૬ ॥

મે. સમૂહ એવી કાળી તેમજ નિર્વાણ વગેરેના ઉત્સવના વખતે દેવો નયા એકા
થાય છે એવી શિલાપર પ્રતિલેખના કરીને પાદપોપગમન સથારે ખીકાયોં તેમની
સાથે એક હજાર સાધુઓએ પણ (તળણ સે યાવચ્ચાપુત્તે વહુણિ વાસાણિ સામનપ
રિયાગ પાણિત્તા માસિચ્યા સલેહ્ણાણ સદ્ધિં મત્તાહ અણસણાણ હેદિત્તા જાવ કેવલચર
નાણદસણ સમુપ્પાહેત્તા તઓ પચ્છા સિદ્ધે જાવ પરીણે) આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્ર
અનગારે ઘણા વર્ષોં સુધી શ્રાવણ્ય પર્યાય પાલન કરીને એક મહિનાની
સલેખનાથી સાઈઠ ભક્તોનુ અનશન વડે હેદન કરીને છેવટે કેવળ જ્ઞાન કેવળ
દર્શન મેળવ્યુ ત્યાર બાદ બધા ડમો ક્ષય થયા ત્યારે તેમને સિદ્ધ પદ મળ્યુ
અહીં એ 'યાવત્' ગત્ત આગ્યોં તેથી (બુદ્ધ મુક્ત સર્વદુઃખપ્રહીણ જન્મ
જરામરણાદિદુઃખરહિતો જાત) આ પદોનો સમ્રટ્ થયો છે ॥ સૂ. ૨૬ ॥

मूलम्-तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि संप-
रिवुडे जेणेव पुडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पुडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसनिगासं
देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमण णुवन्ने,
तएण से थावच्चापुत्ते वहुणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउ
णित्ता मासियाए सलेहणाए सद्धि भत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता
जाव केवलवरनाणदसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे
जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु म स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण
साधे सपरिवृतो ग्रामानुग्राम विहरन् यत्रैव पुण्डरीक पुण्डरीकनामक पर्वतस्त
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीक पर्वत शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह
‘मेघघणसनिगास’ मेघघनसनिगास मेघानां घन समूहस्तद्वत् कालवर्णे ‘देवस

तएण से थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ- (तएण) ईसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र
अणगार सहस्सेणं सद्धि सपरिवुडे) हजार अनगार के साथ २ ग्रामानु
ग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुडरीए पव्वए) जदा पुडरीक पर्वत था
(तेणेव उवागच्छइ) वहा आये (उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय
२ दुरुहइ) वहा आकर वे उस पुडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरु
हित्ता मेघघणसनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय जाव पाओव

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ १’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्पारभाह (से थावच्चापुत्ते) स्थाप यापुत्र (अणगारसहस्सेण
सद्धि सपरिवुडे) ओके ऊँकार अणुगारनी साथे ओके गामथी भीजे गाम
विहार करता (जेणेव पुडरीए पव्वए) जया पुडरीक पर्वत डतो (तेणेव
उवागच्छइ) त्या आव्या (उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ) त्या
पडोचीने तेओ पुडरीक पर्वतपर धीमे धीमे चढवा भाड्या (दुरुहित्ता मेघघण
सनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय जाव पाओवगमण णुवन्ने) चढीने तेमणे

त्रिपाय ' देवसनिपात=निर्याणाद्युत्सवसमये यत्र देवा समागत्य मिलन्ति, देवा
ना सनिपातः समिलन यत्र त ' पृथ्विस्तिलापट्टय ' पृथिवीशिलापट्टक प्रतिलेख
यित्वा यावत् ' पाओपगमण शुग्ने ' पादपोपगमनमनुपाप्त. सहस्रशिष्यै सह
पादपोपगमनसस्तारक कृतवान्.। तत खलु स स्थापत्यापुत्रो गृहनिर्वाणि सामान्न
परियाग ' श्रामण्यपर्याय=वारिपर्याय ' पाउणिता ' पालयित्वा मासिकया
सलेखनया पण्डित्तानि अनशनेन छिन्ना यावत् - केवलवरज्ञानदर्शने सति
' समुप्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञाना केवलदर्शन च समाप्य ततः
पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्तिं प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्तः सर्वदुःख प्रहीणः
जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जात ॥ २६ ॥

गमण शुवन्ने) नहकर उन्हों ने मेघ सप्तह के समान कृष्ण वर्णवाले
तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहा देव एकत्रित होते हैं ऐसे
पृथिवी शिलापट्टक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोपगमन सथारा
धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोपगमन
सथारा ले लिया। (तएणं से यावच्चापुत्ते बहुणि वासाणि सामन्न परि
याग पाउणिता मासियाण सलेहणाण सद्धिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता
जाव केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे)
इस तरह उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय
का पालन करके एक मास की सलेखना से साठ भक्तों का अनशन
द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय मे केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त
कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध
पन गये। यहा यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा
मरणादि दुःख रहितो जाता " इन पदों का मग्नह हुआ है । सू० २६॥

मे० समूह जेवी ढाणी तेमज निर्वाणु वगेत्ता उत्तपना वणते देवे नया ओऽह
थाय छे जेवी शिलापट्ट प्रतिलेखना करीने पादपोपगमन सथारे स्वीक्रिये तेमनी
साथे ओऽहजार साधुओओ पणु (एण से यावच्चापुत्ते बहुणि वासाणि सामन्नप
रियाग पाउणिता मासियाए सलेहणाए सद्धिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवर
नाणदसण समुप्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे) आ रीते स्थापत्यापुत्र
अनगारे धव्वा वर्षा सुनी श्रावण्य पर्यायनु पालन करीने ओऽह भडिनानी
सलेखनाथी साईठ शक्तोनु अनशन पडे छेदन करीने छेवटे केवण ज्ञान केवण
दर्शन मेणवु त्थार भाद गथा कर्मो क्षय यया त्थारे तेमने सिद्ध पद भवु
आही जे 'यावत्' शब्द आओओ छे तेथी (बुद्ध मुक्त सर्वदुःखप्रहीण जन्म
जरामरणादिदुःखरहितो जात) आ पदोने सअह थयो छे ॥ सू० २६ ॥

मूलम्—तएण से सुए अन्नया कथाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए परिसा निगया से-लओ निगओ धम्म सोच्चा देवाणुप्पिया । पथगपामोक्खाइ पंच मंतिसयाइ आपुच्छामि मंडुयं च कुमार रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अण-गारयं पव्वयामि, अहासुह, तए ण से सेलए राया सेलागपुरं नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पंच मति-सए सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मए सुयस्स अंतिए धम्म णिसंतंते सेविय धम्मो इच्छिए पडि च्छिए अभिरुइए अहण देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भ णं देवाणुप्पिया । कि करेह कि ववसाह कि वा ते हियइच्छति ?

तएण ते पथगपामोक्खा सेलगराय एव वयासी—जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाण देवा-णुप्पिया । किमन्ने आहारे वा आलवे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया । अम्ह वहुसु कज्जेरु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाण वि समणाण वहुसु जाव चक्खुभूए ।

तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमत्तिए एव वयासी

जइणं देवाणु० तुब्भे ससार जाव पव्वयह त गच्छह णं देवा०
सएसु २ कुडुंवेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुवमज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स
वाहिणिओ सीयाओ दुरुढा समाणा मम अंतियं पाउवभव-
हत्ति, तहेव पाउवभवति ।

तएणं से सेलए राया पच मत्तिसयाइं पाउवभवमाणाइं
- पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुविय पुरिमे सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । मड्डयस्स कुमारस्स महत्थ
जाव रायाभिसेय उवट्ठवेह० अभिसिचइ जाव राया यावट्ठ
विहरइ ॥ सू० २७ ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकोऽन्यदा=अन्यस्मिन् काले, कदाचित्
कस्मिंश्चित् समये यनैव शैलकपुर नाम नगर यत्रैव सुभूमिभाग=सुभूमिभागनामकम्
उद्यान 'तेणेव समोसरिण' तनैव समवसतः समागत । परिपन्निर्गता=शैलकपुर
नगरनिरासिना जनानासहतिः शुकनामाऽनगर समागत श्रुत्वा त वन्दितु शैलक
पुरनगराद्वर्हिर्नि स्रुतेत्यर्थ । शैलकोऽपि निर्गतः शैलकनामा नृपोऽपि शुकमनगार
वन्दितु नगराद्वर्हिर्नि.स्रुत' । निर्गत्य यत्रैव शुकोऽनगरस्तत्रैवोपागच्छति । अथ

'तएणं से सुण' इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुण)वे शुक अनगर(अनया कयाइ)
किसी एक समय (जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिण)
जहा शैलकपुर नाम का नगर और उस में भी जहा सुभूमिभाग नाम
का उद्यान था वहा विहार करते २ आये (परिमा निगया सेलओ
निगओ, धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमत्तिस

(तएण से सुण धृत्यादि ।

टीकार्थ—'तएण' त्यागणाद (से सुण) शुक अनगा० (अनया कयाइ) डो।
ओक पभते (जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समा
सरिण) न्या शैलक पुर नामे नगर अने तेमा पणु न्या सुभूमि भाग नामे
उद्यान छंतु त्या विहार करता करता आव्या (परिमा निगया सेलओ निग
ओ धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमत्तिसयाइ आणु

शुक्रनाम्नाऽनगाणेन धर्मकथा कथिता । परिपत् प्रतिगता । तत शैलको राजा-धर्म
श्रुत्वा यावत्-समुद्रः शुरुमेवमादीत्-देवानुप्रिय ! पाथकप्रमुखानि पञ्च मन्त्रि
शतानि पञ्चशतसंख्यकान् पाथकादीन् मन्त्रिणः आपृञ्जामि, मन्दूक च कुमार
स्वपुत्र राज्ये स्थापयामि, ततः पथात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डोभूताऽगारादन
गारता मन्त्रजामि=स्वीकरोमि । शूफ जाह-यथामुख=प्रज्यापहणे मिलम्बो न
करणीय इत्यर्थः । तत खलु स शैलको राजा शैलकपुर नगरमनुप्रविशति, अनुपवि-
श्य यत्रैव स्वकृ=निज गृह यत्रैव गत्वा 'उद्धाणसाला' उपस्थानशाला=सभा

याह आपुच्छामि महुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवानुप्पियाणं
अतिप मुढे भनिस्ता आगाराओ अणगारय पव्वयामि) इनका आगमन
सुनकर शैलकपुर नगर निवासी जनों का समूह उनके वदना करने
के लिये नगरसे बहार निकला । शैलकपुर राजा भी निकले । ये सब
चलकर वहा आये जहा वे शुक अनगार विराज मान थे । शुक अन
गार ने सब को धर्म कथा सुनाई । सुनकर सबलोग वापिस चले गये ।
शैलक राजा धर्म का उपदेश सुनकर यावत् प्रतिबुद्ध हो गया । उसने
शुक अनगार से इस प्रकार कहा—देवानुप्रिय । मैं पाथक प्रमुख
पाच सौ मन्त्रियो से पूछलेता हूँ और अपने पुत्र मडूक कुमार को
राज्यमे स्थापित कर देता हूँ । बाद में मैं देवानुप्रिय आपके पास
मुडित होकर अगार अवस्था से अनगार अवस्था धारण करलगा ।
(अहामुह तएण सेसेलए राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ, अणु

च्छामि महुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवानुप्पियाण अतिप मुढे
भनिस्ता आगाराओ अणगारय पव्वयामि) तेभनु आगमन सालणीते शैलक
पुरना नागरिकेना समूहो तेभनी वदना करवा भाटे भडार नीकल्या शैलक
पुरना राजा पण वदन भाटे भडार जवा नीकल्या तेओ भधा जया शुक
परिज्ज जठ विराजमान हुता त्या पडोव्या शुक परिज्जाजके भधाने धर्मकथा
सालणावी धर्मकथा सालणी ने भधा पोत पोताने स्थाने जता रक्षा धर्म
कथा सालणीने शैलक राजा ने बोध थयो तेभणु शुअ अनगारने विनती
करता कछु ठे—“ देवानुप्रिय । हु मारा पायसे मन्त्रीओने पूछी लउ छु अने
मारा पुत्र मडूक कुमारने राज्यमिडासने जेसाडी दई त्यार प ग्री तमारी
पासे मुडित थधने हु अगार अवस्था त्यलने अनगार अवस्था धारण
करीश (अहामुह तएण सेसेलए राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ अणुपवि

स्थान, तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य सिंहासने 'सन्निसन्ने' सन्निपण = उपविष्टः । ततः खलु स शैलको राजा पान्थकप्रमुखानि पञ्चमन्त्रिशतानि = पञ्चगतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिण शब्दयति = आह्वयति, शब्दयित्वा = आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-एव खलु हे देवानुमियाः ! मया शुकस्य = शुकनाम्नोऽनगरस्यान्तिके = समीपे धर्म = श्रुतचारित्र्यलक्षण 'णिसते' निगन्तः = श्रुतः, सोऽपि च धर्मः 'इच्छि' इष्ट = वाञ्छितः, 'पडिच्छि' प्रतीप्सितः = प्रणीतुमभिलषितः 'अभिरुद्ध' अभिरुचितः = प्रत्यात्मप्रदेशे रचिविपयीभूतः, अहं खलु हे देवानुमिया ! 'ससारभयउव्विगे' समारभयोद्विग्न जन्मजरामरणेष्टवियोगानिष्टसयो गादिभयोद्विग्नः सन् यावद् प्रव्रजामि = दीक्षा ग्रह्णिष्यामि । हे देवानुमिया ! यूय किं करिष्यथ किं व्यवमायिष्यथ = कीदृश व्यवसायमुद्यम करिष्यथ, किं वा युष्माकं हृदययेप्सित इति, भयता मनोगतोविचार कीदृशो वर्ततो इत्यर्थः । ततः खलु ते

पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेन उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पचमत्तिमए सहावेइ) शैलक राजा के इस प्रकार के विचार सुन कर शुक अनगर ने उनसे कहा-यथा सुख-अर्थात् शुक-अनगर की इस तरह दीक्षा ग्रहण करने में अनुमति प्राप्त कर शैलक राजा वहा से शैलक पुर नगरमें आये । आकर वे जहा अपना घर और जहा अपनी बाहिर उपस्थानशाला समास्थान-या वहा गये-वहा जाकर उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पांचसौ पांथक प्रमुख मन्त्रियों को बुलाया-(सहावित्ता एव वयासी-एव खलु देवानुमिया मए सुयस्स अतिण धम्मे णिसते से विय धम्मे इच्छि' पडिच्छि'ण, अभिरुद्ध' अहं ण देवानुमिया ! समारभयउव्विगे जाव पव्वयामि तुब्भे ण

सित्ता जेणेव मए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेन उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पचमत्तिमए सहावेइ) शैलक राजाना आ जातना विगारे सालणीने शुद्ध अनगाउ तेभने उल्लु- " यथासुण " ऐटवे उ तपने जेमा सुण भणे ते करे शुद्ध पणिनाउकनी दीक्षा ग्रहण करवागाटेनी अनुमति भेजवीने शैलक राजा त्याथी शैलकपुर नगरमा आल्या त्या आवीने तेओ भीधा पोताना भडेलनी अहर उपस्थान गाणा ऐटवे के मत्ता १११ हुतु त्या पडाव्या त्या जधने तेभणे सिंहासन उपर जेगीने पायसा पायड प्रमुण भत्राओने पोताव्या (सहावित्ता एव वयासी एव खलु देवानुमिया ! मए सुयस्स अतिण धम्मे णिसते से वि धम्मे इच्छि' पडिच्छि'ण अभिरुद्ध' अहं ण देवानुमिया ! समारभयउव्विगे जाव पव्व-

પાન્યરૂપમુખા પાન્યકાદયો મન્ત્રિણઃ શૈલક રાજાનમેવમદન યદિ સ્વલુ યૂય દેવા
 નુપ્રિયા ! સસારભયોદ્વિગ્નાઃ યાત્રત્ પ્રવ્રજત=પ્રવ્રજિવ્ય, તર્હિ અસ્માક હે દેવાનુ
 પ્રિય ! =હે રાજન્ ! કોડન્ય આધારઃ=આશ્રયો યા, આલમ્ય=હુ તાટો પ્રપતતાં-
 ધારકઃ વા ભવિષ્યતિ, યતોડસ્માક ભગનેયશરણમ્, ઇત્યર્થઃ । વયમપિ ચ સ્વલુ
 હે દેવાનુપ્રિય । સમારભયોદ્વિગ્ના યાત્રત્ ભવન્તિ સાર્ધમેય પ્રવ્રજામઃ=દીક્ષા ગ્રહી-
 દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિંવચસહ, કિં યા તે હિચહચ્ચતિ ?) બુલાકર
 ઉનસે એસા કહા-હે દેવાણુપ્રિયો ? મૈને શુક્ર અનગાર કે પાસ શ્રતચારિત્ર
 રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુના હૈ-વહ મુક્ષે વહુત અચ્છા લગા હૈ । મેરી
 હચ્છા ઉસે ગ્રહણ કરને કી હો રહી હૈ હર ઇક આત્મપ્રદેશમેં વહ મેરી
 રુચિકા વિપયભૂત બન ગયા હૈ । હે દેવાનુપ્રિયો ! મૈ સસાર કે ભય સે
 જન્મ જરા મરણ હૃષ્ટ વિયોગ અનિષ્ટ સયોગ આદિ કે ડર સે હસ
 સમય ઉદ્વિગ્ન હો રહા હૈ અતઃ મૈ સયમ ધારણ કરુંગા । અતઃ હે દેવા-
 નુપ્રિયો ! તુમ કયા કરોગે, કેસા ઉચ્ચમ કરોગે-આપલોગોં કા મનોગત
 વિચાર કેસા કયા હો રહા હૈ ? (તણ તે પથગપામોવલા સેલગ રાય
 એવ વયાસી) રાજા કી હસ પ્રકાર વાળી સુનકર ઉન પાથક પ્રમુલ
 પાચસૌ મન્ત્રિયોં ને ઉસ શૈલક રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(જહ્ણ તુઝમે
 દેવાણુપ્પિયા ! સસારભડવિગ્ના જાવ પવ્વચહ, અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા !
 કિમન્ને આહારે વા અલવે વા અમ્હે વિ ય ણ દેવાણુપ્પિયા ! સસારભડ
 વિગ્ના જાવ પવ્વચામો) હે દેવાનુપ્રિય ! યદિ આપ સસાર ભય સે

યામિ તુઝમેણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિંવચસહ કિંગતે હિચહચ્ચતિ !) બ્રાહ્મણી
 ને રાજાએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે શુક્ર અનગર પાસેથી શ્રુતચારિત્ર
 રૂપ ધર્મને ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તેનાથી હું બહુજ પ્રભાવિત થયો છું શ્રુત
 ચારિત્ર રૂપ ધર્મને સ્વીકારવાની ભારી તીવ્ર ઇચ્છા છે, મારા આત્માના પ્રત્યેક
 ભાગમાં શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ વ્યાપ્ત થઈ ગયો છે હે દેવાનુપ્રિયો ! હું
 સસારના ભયથી જન્મ જરા (ઘડપણ) ઇષ્ટજનને વિયોગ, અનિષ્ટ સયોગ
 વગેરેની બીકથી અત્યારે વ્યાકુળ થઈ રહ્યો છું તેથી હું સયમ ધારણ કરીશ
 હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શુ કરશો ? તમે શે ઉદ્યોગ કરશો ? આ વિષે તમારા
 મનમાં કંઈ બંતના વિચારો આવવા માંડ્યા છે ? (તણ તે પથગપામોવલા સેલગ
 રાય એવ વયાસી) રાજાની વાણી સાંભળીને પાથક પ્રમુખ પાચસૌ મન્ત્રીઓએ
 શૈલકરાજને આ પ્રમાણે કહ્યું—(જહ્ણ તુઝમે દેવાણુપ્પિયા ! સસારભડવિગ્ના જાવ
 પવ્વચહ અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા ! કિમન્ને આહારે વા અલવેવા અમ્હે વિ ય ણ દેવાણુ
 પ્પિયા ! સસારભડવિગ્ના જાવ પવ્વચામો) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જો સસાર ભયથી ભય

प्यामः । हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन् ! यथाऽस्माकं बहुषु कार्येषु=राज्याधिकृत-
कार्येषु च कारणेषु=राज्यरक्षणोपायेषु च यावत्-तथा - खलु भवद्भिः सार्धं
प्रवृजितानामपि श्रमणानां नहुषु यावत् कार्यादिषु चक्षुर्भूतः । यथाऽस्माकमधिकृ-
तेषु भवान् त्रिव्रामस्यान, राज्यकार्येषु भवानेव नेत्रतुल्यो नेताऽस्ति तथा चारित्र
पालनकार्येष्वपि भवानेव नेताभविष्यतीतिभावः ।

उद्भिन्न हो कर दीक्षित होना चाहते हैं तो हे देवानुप्रिय ! अब हमलोगों
का और कौन आपके सिवाय दूसरा आचार हो सकेगा कौन दुःखा
दिक के समय हमलोगों के लिये आलस्य देने वाला होगा, क्यों कि
हमारे लिये तो आपही एक शरण भूत हैं । अतः जब आप दीक्षित
होना चाहते हैं तो हम लोग भी ससार भय से उद्भिन्न हो कर आप
के साथ ही दीक्षा सधन धारण करेंगे । (जहां देवानुप्रिया ! अम्ह
बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव तहाण पव्वतियणवि समणा णं
बहुसु जाव चक्षुभूए) हे देवानुप्रिय ! जोस तरह आप हमलोगों के
लिये अनेक राज्याधिकृत कार्यों में अनेक कारणों में-राज्य सरक्षण
के उपायों में-चक्षुर्भूत रहे हैं उसी तरह आपके साथ प्रवृजित हुए
हमलोगों के चारित्र पालन कार्य में भी आप ही नेता रहेंगे । (तएण से
सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) मन्नि मडल की इस
प्रकार बात सुनकर उस शैलक राजा ने उन पाँचक प्रमुख पाचसौ
मन्त्रियों से इस प्रकार कहा:-

अस्त थउने दीक्षा भेजववानी छिछा राभोछो तो तभारा सिवाय अमारे
भीने कोणु आचार यथे ? आइतना वणते अमने आश्रय आपनार कोणु यथे ?
अमारे भाटे तो तमे न शणु इय छो, ओटले न्यारे तमे दीक्षित थवानी
छिछा राभो छो त्यारे अमे लोडो पणु आस साअथी उटाणी गया छीअे तभारी
साथे अमे पणु ओअम दीक्षा अथम धारणु उरीशु (जहां देवानुप्रिया !
अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव तहाण पव्वतियाणवि समणाण
बहुसु जाव चक्षुभूए) हे देवानुप्रिय ! तमे नेम अई अभाग भाटे
घणु गणवहीटना उभोभा घणु उरखोभा-गन्थ सण्डणु विपेना उपा
योभा अणुसूत रह्या छे तेथी अमारी साथे प्रवृजित थउने पणु अमे लोडो
आरित्रपालन कार्यभा पणु तमे न अभाग नेता थओ ओवी अभागी छिछा
छे, (तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) मन्नीओ
आ नतना विचारो साक्षणीने शैलक राजाओ ते पाथक प्रमुअ पाथओ

ततः खलु स शैलकः पाथरुप्रमुखं पञ्चमन्त्रिगत=पञ्चशतसङ्गयकान् पान्यका
दीन् मन्त्रिणः, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणादादीत्-यदि खलु ह देवानुप्रियाः । यूय
ससारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत प्रव्रजिष्यथ दीक्षा ग्रहीष्यथ, तत् तर्हि गच्छत
खलु हे देवानुप्रियाः । सकेषु सकेषु कुटुम्बेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् कुटुम्बम ये स्था-
पयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिकाः दुरूढाः आरूढाः सतो ममान्तिक प्रादु-
र्भवतेति । तयैव प्रादुर्भवन्ति=ते पञ्चशतानि मन्त्रिणः स्य स्य ज्येष्ठपुत्र कुटुम्ब
म ये स्यस्थाने स्थापयित्वा शिबिकामारूढाः सन्तः शैलकनृपस्य समीपे उपस्थिता
अभूवन्तित्यर्थः ।

ततः खलु स शैलक राजा पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतानि मन्त्रिणः प्रादुर्भवतः=
समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टः कौटुम्बिकपुरुषान् = आज्ञाकारिणः पुरुषान्

(जइण देवाणु० तुम्हे ससार जाव पवययह त गच्छह ण देवाणु०
सएसु २ कुडुबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुबमज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्सवाहिणिओ
सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तिय पाउब्भवहत्ति तहेव पाउब्भवति)
हे देवानुप्रिय । यदि आप लोग ससार भय से उछिन्न हैं और यावत्
प्रव्रजित होना चाहते हैं तो जाओ और अपने २ कुटुम्बों में अपने २
स्थानों पर ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित करके पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं
पर आरूढ़ हो कर फिर मेरे पास आजाओ इस प्रकार राजा के
कथन को सुनकर उनसबने अपने २ कुटुम्बों में अपने २ स्थान पर
अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित किया-और बाद में फिर वे सब
शैलक राजा के पास में पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ़ हो
कर उपस्थित हो गये । (तएण से सेलए राया पचमत्ति सयाइ पाउब्भ
वमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठे कोडु बिय पुरिसे सदावेइ सदावित्ता

भत्रीओने आ प्रभाणु ४६- (जइण देवाणु० तुम्हे ससार जाव पवययह त
गच्छह ण देवाणु० सएसु २ कुडुबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुबमज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्स
वाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तिय पाउब्भवहत्ति तहेव पाउ
ब्भवति) हे देवानुप्रियो । अरेपर जे तमे ससारभयथी सवस्त डो तो
जओ आने पोतपोताना कुटुबोभा पोताना स्थाने ज्येष्ठ पुत्रो ने भूझीने
पुरुषसहस्रवाहिनी पावणीओभा जेनीने भारी पासे आवो आ रीते राजनु
कथन आसणीने तेओ जधा पोतपोताने स्थाने ज्येष्ठ पुत्रोने भूझीने पुरुष
सहस्रवाहिनी पावणीओभा भवार थध राजनी पाने आओ (तएण से
सेलए राया पचमत्ति सयाइ पाउ भवमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठे कोडु बिय

शन्दयति, आह्वयति । शन्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणायादीत्-विप्रमेव
=शीघ्रमेव भो ' देवानुप्रिया ' ! मण्डूकस्य कुमारस्य महार्थ=महाप्रयोजनक यावत्-
राज्याभिषेक ' उवद्वेह ' उपस्थापयत कुरु । ' अभिसिंचति ' अभिषिञ्चन्ति,
ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः सुवर्णरजतकण्ठैर्मण्डूककुमार स्नापयित्वा सर्वाङ्कार
विभूषित कृत्वा, तस्य राज्याभिषेक कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः । यावद् मण्डूको राजा
जात विहरति=भास्ते ॥ सू० २७ ॥

मूलम्-तएण सी सेलए राया मडुयं राय आपुच्छइ, तएणं
से मंडुए राया कोडुवियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एव वया-
सी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सेलगपुर नगर आसित्त
समज्जिओवलित्त गधोदयसित्तं गधवट्ठिभूत करेह य कारवेह य,

एव वयासी) इसके बाद उस शैलक राजा ने जब उन पाचसौ मन्त्रियों
को अपने समीप उपस्थित हुआ देखा-तो देखकर वह बहुत अधिक
प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुआ और उसी समय उसने कौटुम्बिक पुरुषों को
बुलाया-बुलाकर उनसे कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । मडुयस्स
कुमारस्स महत्थ जाव रायामिसेय उवद्वेह, अभिसिंचइ जाव राया
यावत् विहरइ) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही मडूक कुमार का
महार्थ साधक-महाप्रयोजन भूत-यावत् राज्याभिषेक करो । उन्हो ने
उसका राज्याभिषेक किया अर्थात् सुवर्ण रजत के कलशों से मडूक
कुमार का अभिषेक कर और उसे समस्त अलंकारों से विभूषित कर
राज्य पद में अभिषिक्त किया । इस तरह मडूक कुमार राज्य पदासीन
हो गया ॥ सूत्र २७ ॥

पुरिसे सहावेइ सहावित्ता एव वयासी) त्थार भाड पोताना पाथमे भन्नीओने
आवेला जेधने राजा भूणञ्ज प्रमत्त थया अने सन्तुष्ट थया राज्याये तरत ज
पोताना कौटुम्बिक पुरुषोंने बोलाव्या अने बोलावीने तेभने उछु- (खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया । मडुयस्स-कुमारस्स महत्थ जाव रायामिसेय उवद्वेह अभिसि
चइए जाव राया यावद् विहरइ) हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वर मडूक राज
कुमारने महार्थसाधक महाप्रयोजन भूत-गन्त्याभिषेक करे । कौटुम्बिक पुरु
षोंने राजानी आज्ञा प्रभाषे ज मडूक राजकुमारने राज्याभिषेक क्यो जेट्ठे ते
तेओअे मोना उपाना उज्जेशी मडूक कुमारने अभिषेक क्यो अने अधा अल
कादेशी तेने रापगारीने गन्थ निहावन उपर जेमाउयो ॥ सूत्र " २७ " ॥

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं से
 मडुए राया दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावित्ता एव
 वयासो-खिप्पामेव भो । सेलगस्स रत्तो महत्थ जाव निम्ब-
 मणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णवर पउमावतीदेयी अग्ग
 केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरुहति, अवसेस
 तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ,
 अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलय-
 स्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइं पच्च अणगारसयाइ
 सोसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ
 नयराओसुभूमिभागाओ पडिनिम्बमइ, पडिनिम्बमित्ता वहि
 या जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया
 कयाइ तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुवि
 चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए
 जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

‘तएण से सेलए’ इत्यादि ।

टीका-तत स शैलको राजा मण्डूक राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अह
 दीक्षा ग्रहीष्यामीती । तत खलु स मण्डूको राजा कौडुम्बिफुरुषान् आदेश
 कारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आह्वय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

‘तएण से सेलए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने
 (मडुए राय आपुच्छइ) मण्डूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय !
 मैं दीक्षा समय लूंगा (तएण से मडुए राया कोडुविय पुरिसे सदावेड)

(तएण से सेलए राया) ध्यादि

टीकार्थ-(तएण, त्थार भाइ (सेलएराया) से-नर रायने (मडुए राय आपु
 छइ) मडुए राजने छलु-छे छे देवानुप्रिय । हु दीक्षा ग्रीवागीरा (तएण से
 मडुए राया कोडुवियपुरिसे सदावेड) त्थार पत्री मडुए राजने छोट गिड

णायादीत् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः शैलकपुर नगरम् 'आसित्तसम-
ज्जिओवलित' आसित्त समार्जितोपलिप्त=आसित्तम् जलेनाऽऽर्द्धीकृत, समार्जित
समार्जन्या कचवरायपमारणेन सथुद्ध', उपलिप्त गोमयादिना सलिप्त,
गन्धोदकसित्त पुनर्गन्धोदकेन प्रसित्त गन्धवर्तिभूत अगरवर्तिरूप सुगन्धमय यूय
कुरुत, अन्यैश्च कारयत कृत्वा च कारयित्वा च 'एयमाणत्तिय' एतामाज्ञासिका=एता
ममाज्ञा प्रत्यर्पयत = भगदादिष्ट कार्य सर्व सपादितमस्माभिरित्यावेदयतेत्यर्थः ।
तत खलु स मण्डूको राजा 'दोच्चपि' द्वितीयमपि द्वितीयवारमपि कौटुम्बिक-
पुरूपान्=आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति= आहति. शब्दयित्वा एवमवादीत्-

इसके बाद मण्डूक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहायिता एव
वयासी) बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवानुप्रिया !
सेलगपुर नगर आसित्त समज्जिओवलित्त गधवट्टिभूत्त करेह्य
कारवेह्य) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही शैलकपुर नगर
को जल से छिड़को- मिचित्त करो, कचवर आदि के अपनयन से
उसे साफ करो, गोमयादि से उसे लीपो गधोदक से उसे बार २ सित्त
प्रसित्त करो गधवर्तिरूप करो- सुगन्धमय करो, तथा दूसरो से कर
वाओ । (करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) कर के
और करा के पीछे हमें इस आज्ञा के पालन की खबर दो हमने आप
की आज्ञानुसार सब कार्य सपादित कर दिया है- ऐसा पीछे हमे
समाचार दो (तण्ण से मण्डूक राया दोच्चपि कौटुम्बियपुरिसे सहा-
वेह, सहावित्ता एव वयासी) इसके बाद मण्डूक राजा ने दुबारा भी

पुरुषोने बोलाव्या (सहावित्ता एव वयासी) बोलायीने आ प्रभाणे कहु-
(खिप्पामेव भो देवानुप्रिया ! सेलगपुर नगर आसित्तसमज्जिओवलित्त
गधवट्टिभूत्त करेह्य कारवेह्य) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलकपुरने पाणीथी
सत्तरे सिथित करे अथरे वगेरे साक्ष करीने, छाणु वगेरेथी लीपो तेमन्
सुवासित पाणीथी बारबार तेने सिथित करे अने तेने गधवर्ति ओटवे डे
धूपमणीनी नेम सुवाग्नि भनावो तेमन् नीलओथी सुवासमय भनावडावो
(करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) आ प्रभाणे लते करीने अने
भीलओनी पानेथी उपावडावीने डाम पुइ थयानु अमने जणाने (तण्ण से
मण्डूक राया दोच्च पि कौटुम्बियपुरिसे सहावेह, सहावित्ता एव वयासी)
त्यार भाट मण्डूक गज्जओ नील पणत कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या अने

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं से मडुए राया दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासो-खिप्पामेव भो । सेलगस्स रत्तो महत्थ जाव निम्ब-मणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णयरं पउमावतीदेवी अग्ग केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरुहति, अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिजित्ता बहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलय-स्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच्च अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओसुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहि-या जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुवि चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

‘तएण से सेलए’ इत्यादि ।

टीका-तत स शैलको राजा मण्डूक राजानमापृच्छति, हे देवानुमिय ! अह दीक्षा ग्रहीष्यामीति । तत खलु स मण्डूको राजा कोटुमिरपुम्पान् आदेश कारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

‘तएण से सेलए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने (मडुए राय आपुच्छइ) मण्डूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुमिय ! मैं दीक्षा समय लगा (तएण से मडुए राया कोडुविय पुरिसे सदावेइ)

(तएण से सेलए राया) इत्यादि

टीकार्थ-(तएण, त्थार भाव (सेलएराया) शैलक राजा ने (मडुए राय आपु च्छइ) मण्डूक राजा ने प्रश्न-के हे देवानुमिय ! हे दीक्षा ग्रहीष्यामीति (तएण से मडुए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ) त्थार पृ० मण्डूक राजा ने कोटुमि

‘पडिग्गह’ पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधान्यादयः
रजोहरणपात्रादिक शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अपशेषं
तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमराजीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान् । तथैव
शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च
शतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखस्तत्रैव प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्याच
सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुमिश्रतुर्थभक्तादिभिस्त
पोभिः यावत्-आत्मान भावयन् विहरति । तदनन्तर स शुकः शैलकस्याऽनगा
रस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाङ्गारशतानि-तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशत-
संख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने बत्ताञ्चल में लिया था । (सच्चेव पडिग्गह गहा य सीयं
दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहि-
ज्जइ) शैलक राजा उसके मन्त्री तथा उसकी अम्बधान्यादि ये सब के
सब रजोहरण एवं पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) में आरूढ़
हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या
ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या
धारण की । नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियोंने भी
वही पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक-
राज ऋषिने सामायिक आदि ऋारह अंगो का अध्ययन किया ।
(अहिज्जित्ता बह्हिं चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स
अणगारस्स ताइ पयगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए
वियरइ) अ पयन करने के बाद उन्होंने ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त
आदि की तपस्या की बाद में शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

पटशाली पद्मावती देवीके शैलक राजाना वाणो आर आगण छोडीने आगणना
वाणोने पोताना पञ्चायणभा लीधा (सच्चेव पडिग्गह गहाय सीयं दुरुहति
अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ) शैलकराज
तेमना मन्त्रीके तेमजे शैलक राजनी अम्बधानी वगेरे जधा रजोहरण अने
पात्रो वगेरे लधने पालणीभा भवार थई गया लगवान महावीरनी पासे
जेम मेघकुमारने प्रव्रज्या लीधी હતી તેમજ શુક અનગારની પાસે શૈલક
રાજાએ પ્રવ્રજ્યા સ્વીકારી રાજની માથે તેમના પાથસો પાથક પ્રમુખ મન્ત્રીઓ
એ પણ ત્યા જ દીક્ષા લીધી , દીક્ષા લીધા બાદ જૈવડ રાજાએ સામયિક
વગેરે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું (અહિજ્જિત્તા બહ્હિં ચઉત્થ જાવવિહરइ,
तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पयगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ
सीसत्ताए वियरइ) अ अनन पत्री तेमछे अनेक जतना यतुर्थलज्जा वगेरेनी
तपस्या की शुड अनगारे शैलक अनगारने पाथक प्रमुख पाथसो अन

ક્ષિપ્રમેયમ્ । શૈલકસ્ય રાજ્ઞો મહાર્થ=મહાપયોજનક મોક્ષફલક યાવત્ નિષ્ક્રમણા
 મિપેકમ્=દીક્ષોત્સવમ્ ઉપત્થાપયત=કુસ્ત, યથા મેઘસ્ય મેઘકુમારસ્ય પ્રથમાધ્યયને
 નિષ્ક્રામણામિપેકો વર્ણિત તથૈવ=તદ્વદગ્રાપિ વાચ્ય इत्यर्थः । મળ્ટકનૃપાઽઽગ્રયા
 કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ શૈલકનૃપસ્ય નિષ્ક્રમણામિપેક મેઘકુમારયત્ કૃતયન્ત ઇતિ ભાવઃ
 નવર તત્રૈતાયાન્ ભેદઃ યત્-પદ્માવતી દેવી પદ્માવતી નામ્ની રાજ્ઞી શૈલકનૃપસ્ય સ્વ
 માર્યા, અગ્રકેશાન્ = અગ્રભૂતાન્ કેશાગ્રમાગરૂપાન્ ચતુરગુલવર્જિતાર નાપિતમ-
 તિતાન્ કેશાન્ પ્રતીચ્છતિ=વસ્ત્રાશ્ચલે ગૃહ્ણતિ, મેઘકુમારસ્ય તુ સ્વમાતા ધારિણી-
 દેવી કેશાન્ ગૃહ્ણતિસ્મેતિભાવઃ સચ્ચેવા તદિવ=તદ્વત્ = મેઘકુમારવદિત્યર્થઃ,

કૌટુમ્બિક પુરુષો કો બુલાયા, ઓર બુલાકર ડન સે એસા કરા (ત્રિપ્પા
 મેવ મો સેલગસ્મ રન્નો મહત્થ જાવ નિષ્ક્રમણામિસેય જહેવ મેહસ્સ
 તહેવ- જવર પડમાવતી દેવી અગ્રકેસે પઢિચ્છડ) તુમ લોગ શીધ્ર
 હી શૈલક રાજા કો મોક્ષફલ સાધક યાવત્ નિષ્ક્રમણામિપેક દીક્ષો-
 ત્સવ- મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી તરહ કરો । મેઘકુમાર કા દીક્ષોત્સવ
 જૈસા પ્રથમ અધ્યયન મેં વર્ણિત કિયા હૈ વૈસા હી યહા પર બી સમજ
 લેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર મહૂક રાજા કી આજ્ઞા સુનકર ડન કૌટુમ્બિક
 પુરુષો ને શૈલક રાજા કા દીક્ષોત્સવ મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી
 તરહ અચ્છી તરહ સે કિયા । ડસમેં ઓર હસમેં કેવલ ડતના હી ભેદ
 રહા કિ હસ દીક્ષોત્સવ મેં પદ્માવતી દેવી જો શૈલક રાજા કી મુખ્ય
 રાની થી ડસને ડસકે નાપિત કર્તિત ચતરગુલવર્જિત અગ્ર કેશોં કો
 અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં લિયા ઓર મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સ મેં મેઘકુમાર કે
 નાપિત કર્તિત ચતુરગુલવર્જિત કેશોં કો ડસ કી માતા ધારિણી દેવી

બાવાબીને તેમને કહ્યું-કે (ત્રિપ્પામેવ મો સેલગસ્મ રન્નો મહત્થ જાવ નિષ્ક્રમણા
 મિસેય જહેવ મેહસ્સ તહેવ જવર પાડમાવતી દેવી અગ્રકેસે પઢિચ્છડ) તેમ
 મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમ મોક્ષદાયક શૈલક રાજાને દીક્ષોત્સવ થોળે
 પ્રથમ અધ્યયનમા મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવ વિષે જેમ વર્ણન કરવામા આવ્યું
 છે તેમ જ અહીં પણ સમજવું જોઈએ આ રીતે મહૂક રાજાની આજ્ઞા
 પ્રમાણે જ કૌટુમ્બિક પુરુષોએ મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમજ સરસ રીતે
 દીક્ષોત્સવ ઊજાવ્યો મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવમા અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમા
 તદાવત આટલોજ સમજવો કે-મેઘરાજાના દીક્ષોત્સવ વખતે જનારે તેમના
 માતા ધરિણીદેવીએ આર આગળ છોડીને બાકીના બધા નાપિત વડે કપાએલા
 વાળો પોતાના અથળામા લીધા હતા, અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમા તેમના

‘पडिगह’ पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधाज्यादयः रजोहरणपात्रादिकं शैलकराज्यं तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अनशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमराजीरस्यामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान् । तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च शतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखान्स्तरां प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुमिश्रतुर्भक्तादिभिस्त पोभिः यावत्-आत्मानं भाषयन् विहरति । तदनन्तरं स शुकः शैलकस्याऽनगारस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽङ्गारशतानि=तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशत-संख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने चखाञ्चल में लिया था । (सच्चेव पडिगह गहा य सीय दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाहयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जह) शैलक राजा उनके मन्त्री तथा उसकी अम्बधात्रादि के सन के सय रजोहरण एवं पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) में आरूढ़ हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की । नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियोंने भी वही पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक राजा ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । (अहिज्जिता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोस्साइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अ पयन करने के बाद उन्होंने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद में शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

पठराणी पक्षावती देवीओ शैलक गज्जना वाणे आर आगण डोडीने आगणना वाणेने पोताना पञ्चायणभा लीया (सच्चेव पडिगह गहाय सोय दुरुहति अवसेस तहेव जाव सामाहयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जह) शैलकगज्ज तेमना मन्त्रीओ तेमज्ज शैलक २ गज्जनी अम्बधात्री वगेरे अधा रजोहरण अने पात्रो वगेरे लसिने पालखीभा भवार थई गया लगवान भडापीरनी पासे जेम मेघकुमारे प्रव्रज्या लीधी हुती तेमज्ज गुड अनगारनी पासे शैलक राज्ञओ प्रव्रज्या स्वीकारी २ गज्जनी साथे तेमना पाथसो पाथउ प्रमुण मन्त्रीओ ओ पणु त्या ज दीक्षा लीधी , दीक्षा लीधा बाद जैवउ राज्ञओ सामायिक वगेरे अगियार अ जोनु गपयन कथुं (अहिज्जिता बहूहिं चउत्थ जावविहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोस्साइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अ पयन पत्री तेमणे अनेउ लतना अतुईलल्ल वगेरेनी तपस्या की गुड अनगारे शैलक अनगारने पाथउ प्रमुण पाथसो अन

ततः खलु सशुरुः शुरुनामानगर, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्
 काले शैलकपुरावगरात् सुभूमिभागादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति=प्रतिनिर्गच्छति,
 प्रतिनिष्क्रम्य=प्रतिनिर्गत्य बहिः= बाह्ये जनपदविहार विहरति । ततस्तदनन्तर
 खलु सशुरोऽनगारोऽन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले तेन=पूर्वोक्तेन
 स्वशिष्येण अनगारसहस्रेण साथं सपरितृतः पूरानुपूर्व्यां तीर्थं करगणधरपरपरया
 चरन् ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीक=पुण्डरीकनाम्नाप्रसिद्धः पर्वतः यावत्
 तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं पर्यतमारुह्य पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख्य

लिये पांथक प्रमुख आदि ५०० सौ अनगारों को शिष्य रूप से वितरित
 कर दिया । (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ
 सुभूमिभागाओ पडिनिक्खइ, पडिनिक्खमिस्सा बहिया जणवयविहार
 विहरइ,) इस के बाद किसी एक समय वे शुरु अनगार शैलक पुर
 नगर से और उस सुभूमिभाग नाम के उद्यान से निकले और निकल
 कर उन्हीं ने वहां से बाहर जनपदों की ओर विहार कर दिया ।
 (तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं
 सपडिबुडे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणु गाम विहरमाणे जेणेव पोंड-
 रीए पव्वए जाव सिद्धे) ग्रामानुग्राम विहार करते २ वे किसी एक
 समय उस अपने शिष्य अनगार सहस्र के साथ तीर्थकर, गणधर
 परररा के अनुसार चारित्र की आराधना करते हुए जहां पुण्डरीक नाम
 का प्रसिद्ध पर्वत था वहां आये वहां आकर उन्हीं ने वहां के पृथिवी
 शिलापट्टक की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर के फिर उन्हीं ने उस

गाइने शिष्य इपे आत्था (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ
 सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमिस्सा बहिया जणवयविहार विहरइ)
 त्थार भाइ केहिं ओक वण्णते शुरु अनगार शैलकपुरना सुभूमिभाग उद्यानथी
 भइर नीज्जीने त्थायी भइरना भीअ जनपदोमा विहार कर्यो (तएण से
 सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं सपडिबुडे पुब्बाणुपुब्बि
 चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) शुरु परि
 त्राज्ज ओक गामनी भीअे गाम विहार करता करता केहिं वण्णते पोताना
 ओउ उन्नर अनगार शिष्योनी साथे तीर्थकर, गणधरानी परपगने अनु
 सरता चारित्रनी आराधना करता करता जना पुण्डरीक नामे प्रसिद्ध पर्वत
 इतो त्था गया पडोशीने तेमछे त्था पृथिवी शिलापट्टकनी प्रतिलेखना कर्यो
 पथी तेमछे तेना उपर पोताना ओक उन्नर शिष्योनी साथे पादोपागमन

सहस्रशिष्यैः सह पादपोषगमनमस्तारक कृतवान्, ततः खलु स शुक्रो ऋद्धिनि वर्पाणि
श्रावण्यपर्याय पालयित्वा केवलरज्ञानदर्शने समुत्पाद्य सकलकर्मक्षये मति सिद्धः
—मुक्तिं प्राप्त इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएणं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहि अतेहि य पतेहि
य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि ये सीएहिय उण्हेहि
य कालातिक्रतेहि य पमाणाइक्कतेहि य णिच्च पाणभोयणेहि
य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगसि वेयणा पाउ-
वभूया, उज्जला जाव दुरहिया सा कडुयदाहपित्तज्जरपरिगय-
सरीरे यावि विहरइ, तएणं से सेलए तेणं रोयायकेण सुक्के
जाए यावि होत्था, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणु-
पुवि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ, परिसा
निग्गया मडुओ वि निग्गओ सेलय अणगारं जाव वंदइ, नम-
सइ, वदित्ता नमस्सित्ता पज्जुवासइ, तएण से मंडुए राया
सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्क भुक्कं जाव सव्वावाह सरोग
पासइ, पासित्ता एव वयासी—अह णं भते । तुवभ अहापवत्तेहिं
तिगिच्छएहि अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेणं तिगिच्छ
आउट्ठावेमि, तुवभे ण भते मम जाणसालासु समोसरह फासुअ

पर अपने सहस्र शिष्यों के साथ २ पादपोषगमन सथारा किया । इस
तरह उन शुक्र अनंगार ने अनेक वर्षों तक श्रावण्य पर्याय का परिपा-
लन कर के अन्त समय में केवलज्ञान केवल दर्शन प्राप्तकर सकल
कर्मों के क्षय होने पर मुक्ति को प्राप्तकर लिया । ॥ सू० २८ ॥

सथारो कर्थो आ रीते ते शुक्र परित्राजके धरुवा वर्षो सुधी श्रावण्य पर्यायानु
परिपालन करीने छेवटे केवलज्ञान केवल दर्शन भेजवीने पधा कर्मो न्याइ
नाश करवा करे मुक्ति भेजवी ॥ सूत्र “ २८ ” ॥

एसणिजं पीढफलगसेज्जासथारग ओगिणित्ताण विहरइ, तएणं
से सेलए अणगारे मंडुयस्स रत्तो एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ,
तएणं से मडुएसेलय वंदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता जामेव
दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—‘तएण तस्स’ इत्यादि । तत्तस्तदनन्तर खलु तस्य श्लोकस्य
राजपेक्षैः=अनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ‘अतेहि’ अन्तैः=बल्लवणकादिभिः,
‘पतेहि, प्रान्तैः=पर्युपितैः, ‘तुच्छेहि’ तुच्छे अल्पैश्च ‘लूहेहि’ रुक्षैः अस्ति

‘तएण तस्स सेलगस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण)इसके बाद (पयइ सुकुमारयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति
सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स)
उस शैलक राजारूपि के (सरीरगसि) शरीर में (तेहि अतेहि य
पतेहि य तुच्छे हि य लूहे हि अरसे हि य विरसेहि य सीएहि य,
उण्हेहि य कालाइक्कते हि य पमाणाइक्कते हि य, णिच्च पाणभोयणे
हि य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रुक्ष,
अरस्स, विरस्स, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य
पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई । बल्ल
वणक आदि का नाम अत हैं । पर्युपित (वासी) अब का नाम प्रान्त है ।
अल्प आहार का नाम तुच्छ है । स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएण तस्स सेलगस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्था २ भा ६ (पयइ सुकुमारयस्स सुहोचियस्स) शरीरની પ્રકૃતિ
સુકુમાર તેમજ આરામ ભોગવવા યોગ્ય (તસ્સ સેલગસ્સ રાયરિસિસ્સ) રાજ
રૂપિ શૈવક (સરીરગસિ) ના શરીરમાં (તેહિ અતેહિય પતેહિ ય તુચ્છેહિ ય
લૂહેહિ અરસેહિ ય વિરસેહિય સીએહિ ય ઉણ્હેહિય કાલાઈક્કતેહિય પમાણાઈ
ક્કતેહિય, ણિચ્ચ પાણભોયણેહિય) અનગાર ધર્મ મુજબપ્રાપ્ત થયેલા અન્ય,
પ્રાત, તુચ્છ, રુક્ષ, અરમ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અસમય (કાલાતિક્રાન્ત)
માં હંમેશા પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉબ્ભૂયા) વેદના
થવા વાગી બાલ ચણક (ચણા) વગેરે ‘અત’ કહેવાય છે વાસી આહાર
નુનામ ‘પર્યુપિત’ છે થોડા આહારનું નામ તુચ્છ છે સ્નિગ્ધતા (ધી રહિત)
વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે હિંગ વગેરેના વધાર વગરના આહારને

ધૈશ્વ, 'અરસેદિય' અરસો દિદ્ગમાદિવ્યાગાર રહિતૈશ્વ, 'વિરસેદિય' વિરસૈ. પુરાણ ત્વાદ્ વિગતરસૈશ્વ 'સીયેદિય' શીતૈઃ શીતલૈશ્વ 'ઉળ્હેદિય' ઉળ્ળૈશ્વ 'કાલાતિક્રાન્તેદિય' કાલાતિક્રાન્તૈ ક્ષુધાપિપાસા કાલેષ્વમાસૈશ્વ 'પમાણાઙ્કતેદિય' પમાણાતિક્રાન્તૈશ્વ બુધ્ધાપિપાસાઽનુકૂલૈશ્વ=બુધ્ધાપિપાસા યત્રપમાણા વર્તતે, તામતિક્રાન્તૈઃ તન્નિગારણાઽમમયૈઃ સ્વલ્પલઙ્ગૈરિત્યર્થઃ । નિત્યપાનભોજનૈશ્વ પ્રતિદિવસ પ્રાપ્તૈરન્નપાનૈશ્વ નિત્ય પ્રતિકૂલપાનભોજન કુર્વતઇતિ ભાવ । પ્રકૃતિસુકુમારકસ્ય સ્વભાવક્ષોમલસ્ય, સુગ્ધોચિતસ્ય=સુહાર્દસ્ય, લેશતોઽપિ ક્લેશાસહસ્યેત્યર્થઃ, શરીરે વેદના=વ્યાધિઃ પ્રાદુર્ભૂતા=ઉત્પન્ના, સા વેદના કીદૃશીત્યાદિ-ઉજ્જલા=દુઃસ્વાસ્થ્યેન પ્રલયાગ્નિવજ્જાજ્વલ્યમાના યાવત્-અત્ર યાવત્કરુણેન-વિડલા, પગાઢા, इत्यनयो:

નામ રુક્ષ હૈ । હિંગ આદિ કે વધાર સે રહિત હુએ નીરસ આહાર કા નામ અરસ હૈ । પુરાને નીરસ અન્ન કે ઘને હુએ આહાર કા નામ વિરસ આહાર હૈ । ઘનાકર રહે હુએ શીતલ-ઠંડે-આહાર કા નામ શીત હૈ । ગરમ ર કા નામ ઉળ્ળ હૈ । ક્ષુધા પિપાસા કે સમય મેં નહી પ્રાપ્ત હુએ આહાર કા નામ કાલાતિક્રાન્ત હૈ । અથવા ક્ષુધા પિપાસા કે અનુસાર નહી પ્રાપ્ત હુઆ આહાર મ્હી કાલાતિક્રાન્ત કહા જાતા હૈ । જિતની ભૂલ લગી હો, જિતની પ્યાસ લગી હો ઉતને આહાર પાની વા નહી મિલના યોડા સા મિલના હસસે શરીર મેં અશક્તિ આદિ ઉત્પન્ન હો જાની હૈ । અનગાર અવસ્થા મેં સાધુ કો અનુકૂલ આહાર પાની નહી મિલતા હૈ । અતઃ પ્રતિકૂલ આહાર પાની કે સેવન સે શરીર મેં વિવિધ પ્રકાર કી વાધાઈ ઉપસ્થિત હો જાતી હૈ । એસા હી રાજકપિ શૈલક અનગાર કે લિયે હુઆ । ડનકે શરીર

અરસ કહે છે જૂના થઈ ગયેલા અનાજનો આહાર બનાવવામા આવે તે 'વિરસ' નામે ઓળખાય છે બહુ વખત પહેલા બનાવીને મૂકી રાખેલા ઠંડા થઈ ગયેલા આહારને 'શીત' કહેવામા આવે છે એકદમ ગરમ આહારને ઉળ્ળુક કહે છે ભૂખ અને તરસના વખતે આહાર ન મળે તેને કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે અથવા ભૂખ અને તરસને યોગ્ય આહાર ન મળવો તેને પણ કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે ભૂખ અને તરસના પ્રમાણમા આહાર અને પાણી મળે નહિ થોડા પ્રમાણમા મળે તો એનાથી ગરીબા શિથિલતા આવી જાય છે અનગાર અરખ્યામા સાધુને અનુકૂળ આહાર પછી મળતુ નથી એથી પ્રતિજ્ઞા આહાર પછીના મેવનથી શરીર અનેક રીતે નબળુ થઈ જાય છે રાજકપિ અનગારની હાલત પણ આવી જ

एसणिजं पीढफलगसेज्जासथारग ओगिणिहत्ताण विहरइ, तएणं
से सेलए अणगारे मंडुयस्स रत्तो एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ,
तएणं से मडुएसेलयं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव
दिसिं पाउव्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—‘तएण तस्स’ इत्यादि । तवस्तदनन्तर खलु तस्य शैलकस्य
राजर्षेस्तैः=भनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ‘अतेहि’ जन्तैः=बल्लवणकादिभिः,
‘पतेहि, पान्तैः=पर्युपितै, ‘तुच्छेहि’ तुच्छै अल्पैश्च ‘लूहेहि’ रुक्षैः अस्मि

‘तएण तस्स सेलगस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति
सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स)
उस शैलक राजारूपि के (मरीरगसि) शरीर में (तेहिं अतेहिं य
पतेहिं य तुच्छे हिं य लूहे हिं अरसे हिं य विरसेहि य सीएहिं य,
उण्हेहिं य कालाइक्कते हिं य पमाणाइक्कते हिं य, णिच्च पाणभोयणे
हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रुक्ष,
अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य
पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउव्भूया) वेदना प्रकट हुई । बल्ल
वणक आदि का नाम अत हैं । पर्युपित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है ।
अल्प आहार का नाम तुच्छ है । स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएण तस्स सेलगस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त્યાર બાદ (પયઈ સુકુમાલયસ્સ સુહોચિયસ્સ) શરીરની પ્રકૃતિ
સુકુમાર તેમજ આરામ લોગવવા યોગ્ય (તસ્સ સેલગસ્સ રાયરિસિસ્સ) રાજ
રૂપિ શૈવક (સરીરગસિ) ના શરીરમાં (તેહિં અતેહિંય પતેહિં ય તુચ્છેહિં ચ
લૂહેહિ અરસેહિં ય વિરસેહિંય સીએહિં ય ઉણ્હેહિંય કાલાઈક્કતેહિંય પમાણાઈ
ક્કતેહિંય, ણિચ્ચ પાણભોયણેહિંય) અનગાર ધર્મ અનુસાર પ્રાપ્ત થયેલા અન્ય,
પ્રાત, તુચ્છ, રુક્ષ, અરસ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અસમય (કાલાતિક્રાંત)
માં હમેશા પાન, ભોજન (આહાર) ડરવાથી (વેયણા પાઠ્ઠમૂયા) વેદના
થવા વાગી બાલ ચણક (ચણા) વગેરે ‘અત’ કહેવાય છે વાસી આહાર
નુનામ ‘પર્યુપિત’ છે થોડા આહારનું નામ તુચ્છ છે સ્નિગ્ધતા (ધી રહિત)
વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે હિંગ વગેરેના વધાર વગરના આહારને

वस्मिंश्चित् काले पूर्वानुपूर्व्या चरन् यावत्-यत्रैव शैलकपुर नामनगर यत्रैव सुभूमि
भाग नामोद्यान तत्रैवोपागच्छति उागत्यच यावद् सयमेन तपसा स्वात्मान
भावयन् विहरति । परिन्निर्गता मण्डकोऽपि निर्गतः, यत्र शैलकोऽनंगारस्तत्रा-
गत्य शैलकमनंगार यावद् वन्दते नमस्यति, वदित्वा नत्वा स मण्डकः
पर्युपास्ते=सेवते स्म ।

ततः खलु स मण्डको राजा शैलकम्यानंगारस्य शरीर शुष्क रूक्ष यावत्-सन्धा-
वाध=पीडित सरोग=रोगाक्रान्त पश्यति दृष्ट्वा एवमनादीत्-अह खलु भदन्त ।

खाने पीने की रुचि जानी रही । (तएण से सेलए तेण रोगायकेण सुक्के
जाए यावि होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे
जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) इससे वे शैलक अनंगार उस
रोग से-सामान्य ज्वरादि व्याधि से, आतग से-प्रचलित मस्तक
शूलादि शीघ्रघातक व्याधि से-सूख गये-निलकुल दुबले पतले शरीर
वाले हो गये । किसी एक समय पूर्वानुपूर्वी से विहार करते हुए ये
जहाँ शैलक पुर नगर और उसमें भी जहाँ सुभूमि भाग नाम का
उद्यान था वहाँ आये । तप और सयम से अपने आत्माको भावित
करते हुए ये वहाँ ठहर गये । (परिसा निग्गया मड्डओ वि निग्गओ, से
लय अणगारे जाव वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, पज्जुवासइ)
जनता वदना करने के लिये आई मंडूक भी आया । सचने शैलक
राजकपि को वदना की नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके मंडूक
राजा ने उन की सेवा की । (तएण से मड्डए राया सेलयस्स अणगा-

गमे थधं गये। डते। (तएण से सेलए तेण रोगायकेण सुक्के जाए यावि
होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमि
भागे जाव विहरइ) तथी शैलक अनंगार सामान्य रोगथी आतक अटले डे
सम्मत रोगथी सूडाँ गया साव दूणणा थधं गया डोर्ध वधते पूर्वानु पूर्व
थी विहार करता शैलक अनंगार शैलक पुर नगरना सुभूमिभाग उद्यानभा
आग्या, अने तप अने सयमथी पोताना आत्माने भावित डत्ता तेओ।
त्या रोकाया (परिसा निग्गया मड्डओ वि निग्गओ सेलय अणगारे जाव वदइ,
नमसइ वदित्ता, पज्जुवासइ) तेभने वदन करवा भाटे नागरीडोनी परिपद
नगरनी णडार नीकणी त्या पडोथीने णधा नागरिकोओ शैलक गणकपिने वदन
अने नमस्कार ड्याँ वदन अने नमस्कार करीने मडूक राजाओ तेभनी नेवा
डो / मड्डए राया सेलयस्स अणगारस्स शरीरय सुक्क सुक्क जाव

સપ્રહઃ । વિપુલા-નિસ્તીર્ણા આત્મપ્રતિપદેગવ્યાપિની, પ્રાગાઢા પ્રવર્ધમાના તોવ્રતરા, અતएव-દુરધ્યામા=દુઃસહા । વેદનાયાઃ પરિણામ પ્રદર્શયતિ—‘ કઙ્કુદાહ ’ ઇત્યાદિ । ‘ કઙ્કુદાહ પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે, કણ્ઠકદાહપિત્તજ્વરપરિગતશરીરઃ= કણ્ઠકેન=કણ્ઠિત્યા, દાહેન હૃદયઋચરણનયનજ્વલ્નેન પિત્તજ્વરેણ ચ પરિગત વ્યાપ્ત શરીર યસ્ય સ તથા, ચાપિ મિહરતી=શાસ્ત્રે । તતઃ સ્વલુ સ શૈલઋસ્તેન રોગા તદ્દેન રોગેણ સામાન્યેન વ્યાધિના, આતદ્દેન પ્રચલતરેણ વ્યાધિના, ચ શુષ્કો જાત શ્વાપ્યાસીત્ । તતઃ સ્વલુ સ શૈલઋ ‘અન્નયા કયાઈ’ અન્યદા કદાચિન્ અન્યસ્મિન્

મેં જો વેદના ઉત્પન્ન હુઈં વહ (ઝજ્જલા જાવ દુરહિયા) વદ્ધત અધિક વુ સ્વાતિશય સે વર્ધિન થી અતઃ પ્રલય કાલીન અગ્નિ કી તરહ શરીર કો જલા રહી થી । યહા યાવન્ શબ્દ સે “ વિઝલા પગાઢા ” ઇન પદો કા સપ્રહ હુઆ હૈ । આત્મા કે પ્રતિ પ્રદેશ મેં વ્યાપ્ત હોને સે વહ વેદના વિપુલ થી તથા તીવ્રતર થી વદ્ધત અધિક દિન પ્રતિદિન વઢને સે વહ પ્રગાઢ થી । હસલિયે દુરધ્યાસથી પડી તકલીફ કે સાથ વહ સહન કરને યોગ્ય થી । હસ વેદનાજન્ય શરીર મેં કયા ર પરિણામ હુઆ હસ ઘાત કો સૂત્રકાર (કઙ્કુ દાહપિત્તજ્વરપરિગયસરીરે) ઇન પદો દ્વારા પ્રકટ કરતે હૈં વે કહતે હૈં કિં ઉન રાજઋપિ શૈલઋ અનગાર કા શરીર કઙ્કુયન-સ્વજલી- કે દાહસે ઓર પિત્તજ્વર સે વ્યાપ્ત હો ગયા । હૃદય મેં, હાથો મેં, ચરણો મેં ઓર નેત્રો મેં ઉનકે જલન હોને લગ ગઈં । પિત્તજ્વર સે પિત્ત મેં અધિકાધિક ગર્મી આ ગઈં- હસ સે લિયા હુઆ આહાર ઉન્હેં નહીં પચના ઓર વમન દ્વારા વહ બાહિર નિકલ જાતા

થઈ ગઈ તેમના શરીરમા (ઝજ્જલા જાવ દુરહિયા) વેદના ખૂબજ થવા માડી હતી તેથી પ્રલયના અગ્નિની જેમ તેમના શરીરમા બળતરા થતી હતી અહીં ‘ યાવત્ ’ શબ્દ થી (વિઝલા પગાઢા) આ પહોનો સમજ થયો છે આત્મા ના બધા પ્રદેશોમા વેદના વ્યાપ્ત થઈ હતી તેથી તે ‘ તીવ્રતર ’ હતી દિવસે દિવસે વેદના વધતી જ જતી હતી તેથી તે ‘ પ્રગાઢ ’ હતી એટલા માટે, જ વેદના દુરધ્યાસ એટલે કે બહુ કષ્ટથી સહ્ય હતી વેદનાને લીધે રાજ ઋષિના શરીરની હાલત કેવી થઈ તે સૂત્ર કાર અહીં સ્પષ્ટ કરતા કહે છે (કઙ્કુ દાહપિત્તજ્વરપરિગયસરીરે) કે તે રાજઋપિ અનગારનુ શરીર કઙ્કુયન-ખર જવાની પીડાથી અને પિત્તના જવથી બાસ થઈ ગયું તેમની છાતીમા હાથોમા, પગોમા અને આંખોમા બળતરા થવામાડી પિત્તજ્વર થી પિત્તમા ગરમીનુ પ્રમાણ વધી જવાથી કરેલા આહારનુ પાચન થતું નહિ અને તે ઊલટી થઈને બહાર નીકળી જતો હતો આવાપીવા તરફ તેમને સાવ અણ

स्वीकुरुतेस्म । ततस्तदनन्तरं स मण्डूको राना शैलक वन्दते नमस्यति, वदित्वा
नत्वा च यस्यादिशं प्रादुर्भूतः आगतः, तामेव दिशं प्रतिगतं स्वप्रासादं संप्राप्तः ॥ २९ ॥

मूलम्—तएण से सेलए कल्ल जाव जलते सभंडमत्तो वगरणमा-
याए पन्थयपामोक्खेहि पचहि अणगारसएहि सद्धि सेलगपुरम-
णुपविसइ अणु पविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासुय पीढ जाव विहरइ ।
तएणं से मंडुए विगिच्छए सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-
तुब्भे ण देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं
आउट्ठेह, तएणं ते तेगिच्छया मडुएणं रन्ना एव वुत्ता हट्ठतुट्ठा
समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जभत्तपाणेहि ते-
गिच्छ आउट्ठेति, मज्जपाणय च से उवदिसति, तएण तस्स
सेलयस्स अहापवत्तेहि जाव मज्जमाणेण रोगायके उवसंतं होत्था
हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायके, तएण से सेलए तंसि
रोगायं कसि उवसंतमि समाणसि तसि विपुलसि असणं पाण
खाइमसाइम, मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झो-

कह कर उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । (तएण से मडुए सेलय
वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव
दिसि पडिगए) इसके बाद वे मण्डूक राजा शैलक अनगार को वदना
नमस्कार कर जिस दिशा से प्रकट हुए ये-आये ये-उसी दिशा तरफ
चले गये । अर्थात् वहा से अपने राज महल में वापिस आ गये ॥ सूत्र २९ ॥

विनति आसणीने सैवक अनगारे तेमनी विनतिने “तहत्ति” आस कहीने
स्वीकारी कीधी (तएण से मडुए सेलय वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव
दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए) तयार आइ मण्डूक राजा शैलक अनगारने
वदत अने नमस्कार करीने जनाथी आठ्या इत्ता त्या जत्ता गद्या ओटवे के
तेओ पोताना राजभवनमा गया ॥ सूत्र २९ ॥

युष्माक यथाप्रवृत्तैः=यथायोग्यै रोगोपशमनपरमर्थः चिकित्सकैः वैद्यैः यथाप्रवृत्तेन
 =यथायोग्येन प्रासुकेन औषधभैषज्येन औषधम्-एकद्रव्यनिर्मित, भैषज्य=द्रव्य
 समुदायनिर्मित तेन, भक्तपानेन निरवधाशपानेन, चिकित्सामार्तयामि कार-
 यामि । हे भदन्त ! यूय खलु मम यानशालासु रथाद्रिशालासु समवसरत=आग-
 च्छत तत्र सुखेन तिष्ठता प्रासुकभेषणीयं पीठफलकशय्यासस्तारकमवगृह्य
 विहरति । ततः खलु स शैलकोऽनगारो मण्डूरकस्य राज्ञ-एवमर्थं तथेति प्रतिश्रुतिं

रस्त सरीरय सुम्भु सुम्भु जाय सन्वावाह सरोग पासइ) इस के
 बाद ज्यों ही मझुक राजा ने शैलक राजऋषि के शरीर को शुष्क रक्ष
 यावत् पीडित एव रोगाक्रान्त देखा तो (पासित्ता एव वयासी) देख
 कर उन से इस प्रकार कहा-(अहं ण भते ! तुब्भ अहापवत्तेहिं तिगिं
 च्छण्हिं अहापवत्ते ण ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेण तिगिच्छ आउट्ठावेमि)
 हे भदन्त ! मैं आपकी यथा योग्य-रोगोपशमन करने में समर्थ-वैद्यों
 द्वारा-उचित प्रासुक (निर्दोष) औषध और भैषज्य से तथा निरवध अन्न-
 पान से चिकित्सा करवाना चाहता हूँ-इसलिये (तुब्भे णं भते ! मम
 जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्ज पीठफलकसेज्जासथारग
 ओगिण्हित्ता णं विहरइ) आप मेरी रथशाला में पधारे और वहा धिराजे
 सुख शान्ता से बहा ठहरे, प्रासुक एषणीय, पीठफलक शय्या सस्तारक
 को मुनि के कल्पानुसार याचित कर लेले । (तएण सेलए अणगारे
 मडुयस्सरणो एयमट्ठ तह स्ति पडिसुणेइ) इस प्रकार मझुक राजा
 के प्रार्थना करने पर उन शैलक अनगार ने उसकी " तहस्ति " ऐसा

सन्वावाह सरोग पासइ) त्थार आइ मझुक राजाके राजऋषिना शरीरने शुष्क
 रक्ष यावत् पीडित तेमज्ज रोगाक्रान्त जेथु तो (पासित्ता एव वयासी) जेधने
 तेमने आ प्रभावे कछु-(अहं ण भते ! तुब्भ अहापवत्तेहिं तिगिच्छण्हिं
 अहापवत्ते ण ओसहभेसज्ज ण भत्तपाणे त तिगिच्छ आउट्ठावेमि) हे भदन्त !
 भारी दुखिछ छे के हु शरीरने भटान्नार योग्य वैद्योनी उचित प्रासुक औषध
 अने लैषज्येद्वारा तेमज्ज निरवध अन्नपान थी तमारी चिकित्सा (धलाज)
 करावडावु ओट्ला भाटे (तुब्भेण भते ! मम जाणसालासु समोसरह फासुअ
 एसणिज्ज पीठफलकसेज्जासथारग ओगिण्हित्ता णं विहरइ) तमे तमारी रथ
 शालाभा पधारे अने सुण शाति पूरव त्था रहे। मुनि जेनायित प्रासुक
 ओषणीय, पीठफलक शय्या सस्तारक त्थाथा आगी लेजे (तएण सेलए अण
 गारे मडुयस्सरणो एयमट्ठ तह स्ति पडिसुणेइ) मझुक राजांनी आ प्रभावे

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयनि आह्वयति । शब्दयित्वा=आह्वय, एव
=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-युय खलु देवानुप्रियाः । शैलकस्य राजर्षेः ' फासु
एसणिज्जेण ' प्रासुकैपणीयेन यावत् औपधभेपजेन ' तेगिच्छ ' चिकित्सा
रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदन्तर चिकित्साः वैद्यामण्डुकेन
राजैवपुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः मतः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुकल्पैः प्रासुकैप-
णीयैरित्यर्थः, औपधभेपज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम्. आवर्तयति
=करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पान
च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से महुण चिगिच्छए सद्दावेह) इसके
बाद महुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर
उनसे ऐसा कहा (तुम्हे ण देवानुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण
जाव चिगिच्छ आउट्ठेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि
अनगार की प्रासुक एपणीय औपध भेपज से चिकित्सा करो । (तएण
ते तेगिच्छया महुण रत्ता एव बुत्ता हट्ट तुट्ठा समाणा सेलयस्स अहा-
पवत्तेहिओसहभेसज्जमत्तपाणेहि चिगिच्छ आउट्ठे ति) इस प्रकार
महुक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एव सतोप से युक्त होकर
उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औपध भेपजों से तथा
भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारम्भ कर दिया । (मज्ज पाणयच से उव
दिंसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया ।
यहां यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं
है । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु

भेजवीने तेओ त्या राजया (तएण से महुए चिगिच्छए सद्दावेह) त्थार भाह
महुक राजाये वैद्योने भोलाओया (सद्दावित्ता एव वयासी) भोलावीने तेभने
आ प्रभावे कधु (तुमेण देवानुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जे ण जाव
तेगिच्छ आउट्ठेह) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलक राजऋषि अनगारनी प्रासुक
एपणीय औपध अने लेपज यी चिकित्सा करो (तएण ते तेगिच्छया महुण
रत्ता एव बुत्ता हट्ट तुट्ठा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिओसहभेसज्जमत्तपाणेहि
चिगिच्छ आउट्ठेति) आ रीते महुक राजाणी वात सालाणी ने उर्पित तेभ
महुए थयेवा वैद्यो शैलक राजऋषिनी उचित औपध अने लेपजोथी तेभ
लेपपानोथी चिकित्सा (धत्ता) करवा लाग्या (मज्जपाणयच से उवदिंसति)
अने निद्रावश थर्ध गत्ताय तेवा पदार्थ विशेषने पीवानी विवि तेभने मम-
नोथी अर्धी (मज्ज) मद्य शब्द आओये छे ते मदिरा (दारु) ना अर्थ

वृषन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे, २ पासत्थविहारी
कुसीले २ कुसीलविहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्धपीठफलगसेज्जा-
सथरण पमत्ते यावि विहरइ । नो सचाएइ फासुएसणिज्जं
पीठ पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता वहिया जणव-
यविहार अट्ठुज्जएण पयत्तेण, पग्गहिएण विहरित्तए॥ सू०३०॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु स शैलकः कल्पे=प्रभाते यावत्
तेजसा ज्वलति=सूर्ये उदिते सतीत्यर्थः ‘सभडमत्तोवगरणमायाए’ स भाण्डामत्रो
पकरणमादाय भाण्डामत्राणि अशनपानादिपात्रादि तैः सहोपकरण रजोहरणादिकम्
आदाय=गृहीत्वा, पान्यकप्रमुखैः पञ्चभिरनगरशतैः सार्धं शैलपुरमनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य यत्रैव मण्डूकस्य यानशाला वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्रासुक
पीठफलकशय्या सस्तारक गृहीत्वा यावद् विहरति । ततस्तदनन्तर खलु स मण्डूको

‘तएण से मेलए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए) वे राजकृपिशैलक अनगार
(कल जाव जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथय पामोक्खेहिं पच्च
हिं अणगारसएहिं सद्धि सेलगपुरमणुपविसइ) प्रातः काल जब सूर्य
उदित होकर तेज से चमक ने लगा था “सभडमत्तोवगरणमायाए”
भाण्डोपकरणको लेकर पाथक प्रमुख पाचसौ अनगारों के साथ शैलक-
पुर नगर में प्रविष्ट हुए । (अणुपविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला-
तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट हो कर जहा मडूक राजा की यान शाला थी
वहा पहुँचे- (उवागच्छित्ता-फासुय पीठ जाव विहरइ) पहुँच कर वहाँ
से मुनिके कल्पानुसार एषणीय पीठ फलक शय्या सस्तारक की याचना

(तएण सेलए) इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्थार भाड (सेलए) शैलक अनगार (कल जाव
जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथयपामोक्खेहिं सद्धि सेलगपुरमणुपविसइ)
सवारे सूर्य उदय पाभ्यो त्थारे (सभडमत्तोवगरणमायाए) भाण्डोपकरण
लेकर पाथक प्रमुख पाचसौ अनगारों की साथ शैलक पुर नगरमा प्रविष्ट थया
(अणुपविसित्ता तेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ) प्रवेशीने तेओ
थया मडूक राजा की यथाशाला छती त्था पडोथ्या (उवागच्छित्ता फासुय पीठ
जाव विहरइ) त्था पडोथीने शैलक अनगारे मुनि कल्पानुसार एषणीय, पीठ
फलक शय्या सस्तारक की याचना करी अने ते जधी वस्तुओ तेभए आश

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयति आहयति । शब्दयित्वा=आहूय, एव
=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-युय खलु देवानुप्रियाः । शैलकस्य राजर्षेः ' फासु
एसणिज्जेण ' प्रासुकैपणीयेन यावत् औषधभेषजेन ' तेगिच्छ ' चिकित्सा
रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदान्तर चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन
राजैवमुक्ताः हृष्टपुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुऋष्यैः प्रासुकैप-
णीयैस्तिर्य्यः, औषधभेषज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम् आवर्तयति
=करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पान
च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मडुण विगिच्छए सदावेह) इसके
बाद मडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर
उनसे ऐसा कहा (तुम्हे ण देवानुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण
जाव विगिच्छ आउट्हे) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि
अनंगार की प्रासुक एपणीय औषध भेषज से चिकित्सा करो । (तएण
ते तेगिच्छया मडुण रत्ता एव वुत्ता हट्ट तुट्ठा समाणा सेलयस्स अहा-
पवत्तेहिंओसहमेसज्जभत्तपाणेहिं विगिच्छ आउट्हे ति) इस प्रकार
मडुक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एव सतोप से युक्त होकर
उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औषध भेषजों से तथा
भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारम्भ कर दिया । (मज्ज पाणयच से उव
दिसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया ।
यहा यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं
है । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु

भेजवीने तेओ त्या राजाया (तएण से मडुए विगिच्छए सदावेह) त्थार भाड
मडुक राजाओ वैद्योने भोलाओ (सदावित्ता एव वयासी) भोलावीने तेभने
आ प्रभाणे उहु (तुम्हेण देवानुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जे ण जाव
तेगिच्छ आउट्हे) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलक राजऋषि अनंगारनी प्रासुड
एपणीय औषध अने लेषण थी चिकित्सा करे । (तएण ते तेगिच्छया मडुण
रत्ता एव वुत्ता हट्ट तुट्ठा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहमेसज्जभत्तपाणेहिं
विगिच्छ आउट्हे ति) आ रीते मडुड राजाणी वात सालणी ने उर्पित तेभने
सतुष्ट थयेवा वेओ शैलक राजऋषिनी उचित औषध अने लेषणोथी तेभने
भक्तपानोथी चिकित्सा (धलाए) करवा लाग्या (मज्जपाणयच से उवदिसति)
अने निद्राच थड गजाय तेवा पदार्थ विशेषने पीवानी विधि तेभने भभ-
लवी आदी (मज्ज) मद्य शब्द आओये छे ते मदिरा (दारु) ना अर्थ

इह मद्यशब्दो न मदिरार्थकः किंतु निद्राजनन-पानद्वयविशेषार्थकः । साधो चिकित्साया प्राप्तरूपणीयोपधानामेव प्रस्तुतत्वादिह मदिरायाः प्रसङ्गाभावात् साधोर्मद्यपानानधिकारित्वात् आगमेहि साधोर्मद्यपानप्रतिषेधात् मद्यपानस्य चारित्र विवसरुत्वाच्च, साधोः सुरापानेन साधुत्वप्रज्ञापत्तेश्च, यथा दशवैकालिकसूत्रे-

सुर वा मेरग वापि अन्नं वा मज्जग रस ।

ससक्ख न पिवे भिक्खू जम सारस्खमप्पणो ॥ अ० ५, उ० २, गा० ३६ ।

વડુઈ સુહિયા તસ્સ માયા મોસં ચ ભિક્ખુણો ।

આજસોય અનિવ્વાણસયય ચ અસાહુયા ॥ ૫ ૩ ૨, ગા ૩૮

जनों की चिकित्सा में प्राप्तुक एषणीय औषधियों का ही विधान है और यही कारण यहा चल रहा है । यहा मदिरा का तो कोई प्रकरण ही नहीं चल रहा है । दूसरे साधुओं को मद्यपान का अधिकार ही नहीं है । वे उसके शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार अनधिकारी हैं । आगम में साधुओं को मद्यपान करने का निषेध किया गया है । कारण वह चारित्र का विवसरुत होता है । जहा चारित्र नहीं वहां साधुता कैसी सुरापान से साधुता का भग होता है यह बात आगम में स्पष्ट है- जैसे दश वैकालिक सूत्र में "सुर वा मेरग वापि अन्न वा मज्जग रस, ससक्ख न पिवे भिक्खू जम सारस्खमप्पणो" अ० ५ उ० २ गा ३६ वडुई सुहिया तस्स माया मोस च भिक्खुणो अजसोय अनिवा

ને જતાવવા માટે નહિ પણ નિદ્રાવગ થવાય તેના પેટા પદાર્થ વિશેષ ને સૂચવવા માટે પ્રયુક્ત થયે છે કેમકે-સાધુઓની ચિકિત્સામાં પ્રાપ્તુક ઔષણ્ણીય ઔષધીઓજ શાદ્ય સમબ્ધ છે અહીં પ્રવરણુ પણ ઔષધીઓનુ જ ચાલી રહ્યુ છે મદિરા વિષે ની તો અહીં કંઈ વાત જ નથી બીજી વાત એ પણ છે કે સાધુઓને મદ્યપાન નો અધિકાર પણ નથી, શાસ્ત્રીય વિધિવિધાનની દૃષ્ટિએ તેઓ મદ્યપાનની બાબતમાં અનધિકારી ગણાય છે આ ગમે તે સાધુઓને મદ્યપાન કરવાની મના કહી છે કેમકે મદ્યપાનથી ચારિત્ર નષ્ટ થાય છે જ્યા ચારિત્ર નથી ત્યા સાધુતાની કલ્પના ટરવીજ વર્થ છે દાટ પીવાથી સાધુતા નાશ પામે છે આ વાત આગમમાં સ્પષ્ટ રીતે સમજાવવામાં આવી છે દા ત ' દશ વૈકલ્પિક સૂત્ર = મા સ્પષ્ટ પણે કહેવામાં આવ્યુ છે કે-(સુરવા મેરગવા વાપિ અ ન વા મજ્જગરસ, સસક્ખ ન પિવે ભિક્ખૂ જમ સારસ્ક મપ્પણો) અ ૫, ૩ ૨, ગા ૩૬ વડુઈ સુહિયા તસ્સ માયા મોસચ

‘મિસ્ત્રુ’ મિષ્ટુ ‘અપ્પણો’ આત્મન. સ્વસ્ય, ‘જસ’ યશ’ સયમ ‘સાર
ક્લ’ સરક્ષન ‘સુર’ સુરા મદિરાના ‘મેરક’ મેરક સરકાનામવેય મધ ‘વાપિ’
વાડપિ ‘અન્ન વા’ અન્યદ્વા=અન્યમપિમદિજાત ‘મજ્જગ’ માધક મદનનક
રમ ‘સસક્લ’ સસાક્ષિ ‘ન પિવે’ ન પિવેત્ સાક્ષિભિ કૈચલ્યાદિભિઃ સહેતિ સસાક્ષિ,
કેચલ્યાદિક સાક્ષીકૃત્યેત્યર્થ । એકાન્તેડપિ ન પિવેદિતિ ભાવઃ । ૩૬ ॥

‘તસ્સ’ તસ્ય સુરાપાયિનઃ ‘મિસ્ત્રુણો’ મિષ્ટોઃ માધોઃ ‘સયય’ સતત
‘સુણ્ડિયા’ મધપાનવિષયાડસક્તિ, ચ પુનઃ માયા=કપટ ‘મોસ’ મૃષા
અસત્યભાષણ, ચ પુનઃ ‘અજસો’ અયશઃ અપરીતિઃ અસયમશ્ચ ‘અનિવ્વાણ’
અનિર્વાણમ્-અનુપશન્તિ, ચ પુનઃ ‘અસાહુયા’ અસાધુતા સાધુ પદાનર્હત્વ વર્ણતે ।
સર્વાનર્થમૂલ મધપાનમિતિ ભાવઃ ॥ ૩૮ ॥

અનયોર્વિસ્તૃતવ્યાख्या દશવૈકાલિકામૂત્રસ્ય મત્કૃતાડચારમણિમજ્જૂપાતોડવ
ગન્તવ્યા ।

વૈદ્યકેડપિ-બુદ્ધિભ્રશકરત્વાન્મધ્ય પ્રતિપિદ્ધમિતિયો યતે । ‘શાલિગ્રામનિઘડુ’

ળ સમય ચ અસાહુયા” અ ૫ ઉ ૨ ગાથા ૩૮ ઇન દો ગાથાઓ દ્વારા
યહ કહા ગયા હૈ કિ જો સાધુ અપને સયમ રૂપ યજ્ઞ કી રક્ષા કરના
ચાહતા હૈ વહ મદિરા મેરક-સરકા તથા ઓર મી જો માદક દ્રવ્ય હૈ
ઉનકા સેવન ન કરે । હસ કે સેવન કરને સે સેવન કરને વાલે મેં
મધપાન વિષયક આમત્તિ ચઢતી હૈ, કપટ અસત્ય ભાષણ અસમભાવ
કી વૃદ્ધી હોતી હૈ ઓર પરિણામો મેં શાન્તિ નહીં રહતી હૈ । અસાધુતા
જગતી હૈ-ચઢતી હૈ । મધપાન સમસ્ત અનયોં કા મૂલ કારણ હૈ । ઇન
દોનો ગાથાઓં કી વિસ્તૃત વ્યાખ્યા મેંને દશ વૈકાલિ સૂત્ર કે આચાર
મણિ મજૂપા મેં કી હૈ । વહા સે જાન લેની ચાહિયે । વૈદ્યક ગ્રન્થ જો
શાલિગ્રામ નિઘડુ હૈ ઉસ મેં મી બુદ્ધિ કો વસ કરને વાલી હોને કે

મિસ્ત્રુણો અજસોય અનિવ્વા ણ સમય ચ અસાહુયા) અ ૫ ઉ ૨, ગાથા ૩૮
આ બે ગાથાઓ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે જે સાધુઓ
પોતાના સયમ રૂપ યજ્ઞને રક્ષવા ચાહે છે, તે મદિરા (દારૂ) મેરક (સરંગે)
અને ઊંખ પણ કેટલાક મદક પદાર્થો છે તેમનું સેવન કરે નહિ એમના
સેવનથી સેવન કરનારમા મધપાન વિષેની આસક્તિ વધે છે કપટ અસત્ય વચન
અને અસયમ જેવા લાવોની પણ વૃદ્ધિ થાય છે, અને છેવટે એનાથી
જીવનમા ગાતિલગ થાય છે અસાધુતા (દુષ્ટતા) વધે છે ખરેખર મધપાન
જગતના બધા અનર્થોનું મૂળકારણ છે ઉક્ત બંને ગાથાઓની અવિસ્તર
વ્યાખ્યા ‘દશવૈકાલિકા મૂત્ર’ ની આચાર મણિ મજૂપામા આવી છે જિસા
જાણી લેવું જોઈએ ‘શાલિગ્રામ નિઘડુ’ નામે વૈદ્યક ગ્રંથમા

કય તર્હિ સમ્યગ્દર્શનાદિરત્નત્રયસરક્ષકસ્ય સાધોચિકિત્સાયા મધપાનાધિકારઃ સ્યાત્ ।

આચારાન્ન સૂત્રેઽપિ (શુ૦૨, ૩૦૨) મધપાનસ્ય સમ્પલ્પેનાપિ સાધુઃ પ્રાયશ્ચિત્તભાગી ભવતીતિ પ્રતિરોધિતમ્ ઉક્ત ચાન્યગ્રાપિ યથા—

અજ્ઞાનાદ્ વારુણીં પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ ।

મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુ૦અ૦૧૧-શ્લો૦૧૪૬ ।

મદિરામજ્ઞાત્યા યદિ પિવેત્ તર્હિ પુનરુપનયનસંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, નાન્યથેતિ ભાવ । યદિ મદિરા જ્ઞાત્યા પિવેત્ તર્હિ પ્રાણાન્તકરણેનૈવ શુદ્ધયતિ નાન્યથેતિ સ્થિતિર્ધર્મસ્ય મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ ।

કારણ મધપાન નિપિદ્ધ ક્રિયા છે । અતઃ વિચાર ને જૈસી જ્ઞાન છે કે સાધુ જો તપસજમ કા સરક્ષક હોના છે વહ અપની ચિકિત્સા કરાને મેં મધપાન કા અધિકારી કેસે હો સકતા છે । આચારાન્ન સૂત્ર મેં બી (શુ૦ ૨ ૩૦૨) મધપાન કરને કો સકન્પ બી સાધુઓ કો ત્યાગ દેના ચાહિયે । યદિ વહ એસા કરતા છે તો ઉસે પ્રાયશ્ચિત્ત કા ભાગી બનના પડતા છે । અન્ય સિદ્ધાન્ત કારોં ને બી “અજ્ઞાનાત્ વારુણીં પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિક મિતિસ્થિતિઃ । મનુ સ્મૃતિ૦ અ૦ ૧૧ શ્લોક ૧૪૬, હસ શ્લોક દ્વારા વિષય સમજાયા છે કે યદિ કોઈ અજ્ઞાન ભાવ સે મદિરા કો પી લેના છે તો વહ પુનઃ ઉપનયન સસ્કાર સે હી શુદ્ધ હો સકતા છે અન્યથા નહીં । યદિ વહ જ્ઞાનબૂક્ષ કર મદિરા કા સેવન કરતા છે તો વહ અપને પ્રાણ અપેણ કર હી શુદ્ધ હો

પણ મદિરાને ખુદિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિષેધ સૂચ થો છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુઓ પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પાન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવું કરેતો તેમને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કાવું પડે છે બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતા કહેછે (અજ્ઞાનાત્, વારુણીં પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ । મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિ ॥ મનુસ્મૃતિ અધ્યાય ૧૧ શ્લોક-૧૪૬ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યું છે કે જો કોઈ બ્રહ્મણુમા પણ મદિરાનું સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોધ) સન્ધારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે જોણી જૂજને મદિરાનું સેવન કરે તો પોતાના પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેગીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઈ પણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનું એજ વિધાન

अत्रत्य पूर्वापरमूलपाठसमालोचनतोऽप्यत्र मद्यशब्दस्य मदिरार्थत्वं न सिध्य-
ति तथाहि-यथाप्रवृत्तैश्चित्समैर्यथाप्रवृत्तेनौषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सामा-
वर्तयामीति स्वीकृत्य मण्डूकेन शैलकानगर इत्यप्रार्थितः-यूय खलु प्रासुकमेपणीय
पीठफलकादिकमद्युह्य विहरतेति, शैलकानगरस्तयेति प्रतिश्रुत्य मण्डूकस्य यान-
शालाया तथैव विहरतिरम ततोमण्डूकेन चिकित्समा आदिष्टा-प्रासुकैपणीयेन
यावत् चिकित्सामावर्तयतेति ततश्चिकित्सका मण्डूकस्याज्ञानुसारेण प्रासुकै
पणीचैरेवोषधादिभिश्चिकित्सा कुर्वत साधोरवलप्य प्रवचननिषिद्ध मण्डूकेनाप्यना
दिष्ट तदाज्ञाविरुद्ध मत्र पाययितुं कथं प्रवृत्ताः स्युः ! कथमपि न ।

सकना है अन्यथा नहीं । यही धर्म की मर्यादा है । यहां पर के पूर्वा पर
के मूल पाठ के समालोचन से भी मद्यशब्द में मदिरा अर्थ सिद्ध नहीं
होता है । जब मण्डूक राजा ने शैलक राजकृपि के समक्ष यह प्रार्थ
ना की-कि मैं 'यथा प्रवृत्तेन औषध भैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा आव-
र्तयामि' रोगोपशमन करने में समर्थ वैद्यों के द्वारा यथा योग्य निर्दोष
प्रासुक औषध भैषज्य से आपकी चिकित्सा कराऊंगा आप मेरी यान
शाला में प्रासुक एपणीय पीठ फलक आदि की याचना करके वहां रहें
तब इस मण्डूक राजा की प्रार्थना को सुनकर वे शैलक अनगर 'तथेति'
कहकर उसे स्वीकार कर के वहां उनकी यानशाला में आए । इनके
आते ही मण्डूक ने वैद्यों को बुलाकर यह आदेश दिया कि आप लोग
प्रासुक एपणीय आदि औषध भैषज्य से इनकी चिकित्सा करें । तब
उन वैद्यों ने मण्डूक की आज्ञानुसार प्रासुक एपणीय औषध आदि से
उनकी चिकित्सा करने लगे । फिर सोचने की बात है कि जब साधु

छे अर्द्धा पूर्वापरना भूणपाठथी पणु भद्यशब्दथी मदिरा विषेने। अर्थ सिद्ध
थतो नथी जेभके मण्डूके राज्ञे शैलक राज कृपिनी सामे विनती करता
छे- (यथाप्रवृत्तै चिकित्सकै यथाप्रवृत्तेन औषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा
मावर्तयामि) रोगोने भटाडनारा समर्थ वैद्योद्वारा हुं यथोचित प्रासुक
औषध औषध्यथी तमादी चिकित्सा (धलाज) कृपावीश भागी रथगाणामा तमे
प्रासुक औषणीय पीठ फलक वगैरेनी याचना करीने त्या रोगोने त्यारे मण्डूक
राजनी विनतीने स्वीकारता 'तथेति' (आइ) उहीने तेजो तेमनी रथगाणामा
आव्या शैलक अनगरनी चिकित्सा भाटे मण्डूके वैजोने जालाव्या अने जाला
वीने जेम आज्ञा करी के तमे प्रासुक औषणीय वगैरे लेपन्या जेमनी
चिकित्सा करु करे वैद्योपणु मण्डूक राजनी आज्ञा प्रमाणे प्रासुक औषणीय
रथी तेमनी चिकित्सा (धलाज) करवा लाव्या जेमनी माथे साथे

કથ તર્હિ સમ્યગ્દર્શનાદિરત્નત્રયસરક્ષકસ્ય સાધોચિકિત્સાયા મધપાનાધિકારઃ સ્યાત્ ।

આચારાઙ્ગ સૂત્રેઽપિ (શ્રુ૦ ૨, ૩૦૨) મધપાનસ્ય સમ્પ્રત્તેનાપિ સાધુ પ્રાયશ્ચિત્તભાગી ભવતીતિ પ્રતિરોધિતમ્ ઉક્ત ચાન્યત્રાપિ યથા—

અજ્ઞાનાદ્ વારુણીપીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ ।

મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુ૦ અ૦ ૧૧—શ્લો૦ ૧૪૬ ।

મદિરામજ્ઞાત્વા યદિ પિવેત્ તર્હિ પુનરુપનયનસંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, નાન્યથેતિ ભાવ । યદિ મદિરા જ્ઞાત્વા પિવેત્ તર્હિ પ્રાણાન્તકરણેનૈવ શુદ્ધયતિ નાન્યથેતિ સ્થિતિર્ધર્મસ્ય મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ ।

કારણ મધપાન નિપિદ્ધ ક્રિયા છે । અતઃ વિચાર ને જૈસી બાન છે કિ સાધુ જો તપસજમ કા સરક્ષક હોના છે વહ અપની ચિકિત્સા કરાને મેં મધપાન કા અધિકારી કેસે હો સકતા હૈ । આચારાઙ્ગ સૂત્ર મેં ઓ (શ્રુ૦ ૨ ૩૦૨) મધપાન કરને કો સકન્પ ઓ સાધુઓ કો ત્યાગ હેના ચાહિયે । યદિ વહ એસા કરતા હૈ તો ઉસે પ્રાયશ્ચિત્ત કા ભાગી બનના પડતા હૈ । અન્ય સિદ્ધાન્ત કારોં ને ઓ “અજ્ઞાનાત્ વારુણી પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિક મિતિસ્થિતિઃ । મનુ સ્મૃતિ૦ અ૦ ૧૧ શ્લોક ૧૪૬, હસ શ્લોક દ્વારા વિષય સમજાયા હૈ કિ યદિ કોઈ અજ્ઞાન ભાવ સે મદિરા કો પી લેના હૈ તો વહ પુનઃ ઉપનયન સસ્કાર સે હી શુદ્ધ હો સકતા હૈ અન્યથા નહી । યદિ વહ જાનબૂઝ કર મદિરા કા સેવન કરતા હૈ તો વહ અપને પ્રાણ અપેણ કર હી શુદ્ધ હો

પણ મદિરાને પુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિષેધ સૂચ થો છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવું કરેતો તેમને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો વિષેધ કરતા કહેછે (અજ્ઞાનાત્, વારુણી પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ । મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિ ॥ મનુસ્મૃતિ અધ્યાય ૧૧ શ્લોક—૧૪૬ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યું છે કે જો કોઈ બ્રહ્મણ્યમા પણ મદિરાનું સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોધ) સસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે બ્રહ્મણ્યમા મદિરાનું સેવન કરે તો પોતાનો પ્રાણોને અપણું કરીને એટલે કે મૃત્યુને બેઠીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઈપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનું એજ વિધાન

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरहकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिकं प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं शिरसा तच्चरणसम्पर्शे कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः । ततोऽमौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयतिस्म-क्षमन् मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति । मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थस्त्वेतु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षिर्विशेषणं नोपपद्यते, पान्थकानगारकृतं तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते ।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पड़ता है । किं च मद्य के पान करने से पूर्वा-पराहकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजकपि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थ मस्तक से चरणों का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध आ गया । पान्थक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणों को छूकर प्रार्थना की महाराज ! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अत्र नहीं करूंगा । यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजकपि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजकपि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नहीं बनता है और न पान्थक अनगार कृत उन के प्रति वन्दना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते हैं ।-यदि यहाँ मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

होवा गइल पाथक अनगारनी तेमनी भाटेनी वैयावृत्ति पळु उचित गळ्यात न न्हि अने जीतु ठे न्ह्यारे मद्यपान करीने पूर्वापराह कालमा शैलक राज कपि सुषेधी सत्ता हुता त्यारे चातुर्मासि प्रातिक्रमण कर्वाणी धर्मशायी न्ह्यारे क्षमापना ताटे पाथके तेमना थरळोभा पोताना भरतकने स्पर्श कर्यो त्यारे तेजो नम्रत धर्ष गया अने आयिता निद्रालग थता तेजो जोधा विष्ट धर्ष गया पाथके तेमने शुस्मे थयेला नेजि इनी तेमना थरळु मा भरतक नमात्रीने विनती कर्ता कळु ठे छे लगवान । भारे शुने भाइ करे इरीथी आवु न्हि थाय ले मद्य गण्ड मदिराना अर्थने सूचवनारे होयते भूणसूत्रमा शैलकना भाटे राजकपि शब्दने प्रयोग कर्वाभा आव्यो छे, तेमने राजकपिना विशेषणथी अगोधवामा आया छे ते केवा रीते अने ? पाथक अनगारे तेमना प्रत्ये क्षमापना रूप वदन विनय वगेरे गताव्यो ते पळु उचित केवी रीते इनी गनय ? जीतु ठे ले मद्य गण्डने मदिराना अर्थमा नीजारीये तो नैव अनगार पश्चात्तापना द्वायी विशुद्ध आरिना आराधन

અગ્નિમૂલપાઠાવલોચનેન ચ મૂલગુણનાશક નિષિદ્ધમગ્નિમિદ નૈવ વિજ્ઞાયતે, તથાહિ-ચતુર્વિધાઽઽહારે મધપાને ચ મૂર્ચ્છિતસ્યાપિ ઈન્દ્રિય પ્રમાદદોષવશાત્ કેવલ જનપદવિહારાનર્હતા નાતા, ન તુ મૂલગુણનાશસ્તમ્યાભૂદિતિ વિજ્ઞાય પાન્યકપ્રમુલેષુ પચ્ચશતાનગારેષુ મધાનતયા મુરય પાન્યકમનગારં તસ્ય વૈયાટ્યચકરણાર્થ સ્દાપયિત્યાપા યકપર્જિતાસ્તે સર્વેઽનગારાવર્જિજનપદવિહાર વિહરન્તિસ્મેતિ વસ્યતે । યદિ શૈલકેન નિષિદ્ધમધ સેવિત સ્યાત્ તર્હિ તસ્મિન્ મૂલગુણરહિતેઽનગારધર્માત્ પ્રચ્યુતે ચ સતિ પાન્યકાનગારસ્ય તદ્વૈયાટ્યચકરણ વિરુદ્ધયતે ।

મર્યાદા કે અનુસાર અકલ્પ્ય તથા પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ કે દેને કે લિયે મટ્ટક રાજા ને ડન સે નહી કહા તો મલા લે ડસકી આજ્ઞા કે વિરુદ્ધ મધ ડન્ને કૈસે પિલાને મેં સમર્થ હો સકતે થે । તથા આગે કા મૂલ પાઠ લેલ ને સે ખી યહી વાત પુષ્ટ હોતી હૈ કિ મૂલ ગુણોં કા વિના શક નિષિદ્ધ મધ હસ મધ શબ્દ કા વાચ્યાર્થ નહીં હો સકના હૈ । તથા હિ- “ ચતુર્વિધ આહાર ઇવ મધપાને મેં મૂર્ચ્છિત બને હુખ ખી શૈલક કો પ્રમાદ દોષ કે વશ સે કેવલ જન પદોં મેં વિહાર કરને કી ઓર સે હી અશક્તિ આ ગઈ હૈ, ડનકે મૂલગુણો કા નાશ નહી હુઆ હૈ ઇસા સમઘ્ન કર પાંચક કો છોડ ઓર સમસ્ત મુનિજન વહા સે બાહિર જન પદોં મેં વિહાર કર ગયે ઓર પાંચક કો લે ડનકી વ્યાટ્કરણ કરને કે લિયે ડોડ ગયે । ઇસા સૂત્રકાર આગે કહેંગે । યદિ શૈલક ને નિષિદ્ધ મધકા સેવન કિયા હોતા તો લે મૂલગુણો સે ખી રહિત હો જાતે ઓર હસ તરહ અનગાર ધર્મ સે રહિત હાને પર પાંચક અનગાર કો ડનકી

ખીજી વાત ઓ પછી છે કે જ્યારે સાધુમર્યાદા મુજબ અકલ્પ્ય તેમજ પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ ને આપવા માટે મટ્ટક રાજાએ વૈદ્યોને આદેશ આપ્યો નહિ તો વૈદ્યોની શી તાકાત કે તેઓ તેમની આજ્ઞાને ઓળખીને શૈલક અનગારને મધ પીવડાવે ? તેમજ આગળના “ મૂળ પાઠને ” જોવાથી પણ આવાત સિદ્ધ થાય છે કે ગુણોને નષ્ટ કરનાર મધ અહીં મધ-શબ્દનો વાચ્યાર્થ થઈ શકે જ નહિ જેમકે- ચાર ભતના આહાર અને મધ પાનમા મૂર્ચ્છાવશ થયેલા શૈલકને પ્રમાદ દોષથી કૃત્ર જનપદો વિહાર કરવા માટેની અશક્તિ જ આવી ગઈ છે તેમના મૂળગુણોના નાશ થયો નથી આલુ સમજીને જ પાંચકને ત્યા મૂકીને બધા મુનિઓ ત્યાથી ખીજા બહારના જન પદોમા વિહાર કરવા માટે નીકળી પડ્યા પાંચકને શૈલકની વૈયાટ્કરણ માટે જ મુનિઓ મૂકીને ગયા હતા આ સૂત્રકાર આ પ્રમાણે આગળ વર્ણન કરવાના જ છે હવે જો શૈલકે આગમનિષિદ્ધ મદિહાલુ સેવન કર્યું હોતતો તેઓ મૂળ ગુણોથી પણ હીન થઈ ભત અને આ પ્રમાણે અનગાર ધર્મ રહિત

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरहकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिके प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं गिरसा तच्चरणसम्पर्शे कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः । ततोऽमौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयतिस्म-क्षमन् च मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति । मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थस्त्वेतु-मूलशूत्रे शैलकस्य राजर्षित्रिशेषण नोपपद्यते, पान्थकानगारकृत तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते ।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पड़ता है । किं च मद्य के पान करने से पूर्वा-पराहकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजऋषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थ मस्तक से चरणों का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध आ गया । पान्थक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणों को छूकर प्रार्थना की महाराज ! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अब नहीं करूंगा । यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजऋषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजऋषि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नहीं बनता है और न पाथक अनगार कृत उन के प्रति वन्दना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते हैं ।-यदि यहाँ मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

होवा भद्रे पाथक अनगारनी तेमनी भाटेनी वैयावृत्ति पणु उचित गणुत न नडि अने भीणु के न्यारे मद्यपान करीने पूर्वापराह कालमा शैलक राज ऋषि सुषेधी सूता डता त्यारे आतुर्मासि प्रातिक्रमण करवानी ध्वजार्थी न्यारे क्षमापना ताटे पाथके तेमना चरणोभा पोताना भस्तकने स्पृश कर्यो त्यारे तेओ नव्रत थर्छ गया अने आचिता निद्राभग थता तेओ क्रोधा विष्ट थर्छ गया पाथके तेमने शुभे थयेला जेने करी तेमना अण्णु मा भस्तक नमात्रीने विनती कर्ता कछु के छे लगवान । भारे शुने भाइ करे करीधी आवु नडि थाय जे मद्य शब्द मदिराना अर्थने सूचवनागे होयतो भूणभूत्रमा शैलकना भाटे राजऋषि शब्दने प्रयोग करवामा आव्यो छे, तेमने राजऋषिना विशेषणधी न मोधवामा आव्या छे ते केवी रीते अने ? पाथक अनगारे तेमना प्रत्ये क्षमापना रूप वदन विनय वगेरे भताव्यो ते पणु उचित केवी रीते उनी गजाय ? भीणु के जे मद्य शब्दने मदिराना अर्थमा स्वीकरीओ तो जैव अनगार पश्चात्तापना उदारी विशुद्ध आश्रितना आराधन

ચારિત્રારાધનાર્થ કૃત પ્રતિજ્ઞસ્ય કૃતનિશ્ચયસ્ય તદનન્તરદ્વિતીયેદ્ધિ પ્રભાતકાલે આનુ-
પૂર્વ્યા ગ્રામાનુગ્રામવિહારાર્થ પ્રવૃત્તિરપિ પુનઃ પ્રાયશ્ચિત્તગ્રહણમન્તરેણ નોપપદ્યતે ।
તસ્માદત્ર મધ્યશબ્દો નાસ્તિ મદિરાર્થકઃ । કિં તુ—‘મજ્જપાણય પીએ પુઞ્ઞાવરણ્હકા
લસમયસિ સુહૃપ્પસુત્તે’ इत्यग्रिममूलपाठप्रामाण्यात् निद्राजनकपानद्रव्यविशेषार्थक-
एवेति निश्चीयते ।

तत्त्वतः पूर्वापरमूलपाठपर्यालोचनेन ‘मज्जपाणय च से उपदिसति’ ‘जाव-
मज्जपाणेण’ ‘मज्जपाणए य मुच्छिए’ ‘सुबहु मज्जपाणय पीए’ इति -पाठाः
प्रसिप्ता एवेति सुधियो विमर्शयन्तु ।

ततस्तदनन्तर तस्य शैलकस्य यथामवृत्तैः प्रासुकैपणीयैर्यागत्-औषधभैषज्यैर्ष-
ध्याहारैश्च रोगातङ्काः उपशान्ता अभूवन्, हृष्टः=प्रसन्नचित्तः, मल्लशरीरः=मल्लवत्

उदय होने पर विशुद्ध चारित्र आराधन के लिये कृत निश्चय देखा-
जाता है और उसके बाद जो द्वितीय दिन प्रातःकाल में आनुपूर्व्या ग्रामा-
नुग्राम विहार की उनमें प्रवृत्ति पाई जाती है वह भी नहीं घटित हो
सकती है । कारण प्रायश्चित्त ग्रहण के बिना ऐसी प्रवृत्ति होती नहीं
है । इसलिये यहां मध्य शब्द मदिरार्थक नहीं हैं किन्तु यह “मज्ज
पाणय पीए पुञ्जावरण्हकालसमयसि सुहृप्पसुत्ते” इस अग्रिम मूल
पाठ की प्रमाणता से निद्राजनक पान द्रव्य विशेष अर्थवाला ही है
ऐसा निश्चित होता है । तत्त्वतः विचार किया जावे तो पूर्वापर मूल पाठों
की पर्यालोचना से “मज्जपाणय च से उपदिसति जाव मज्जपाणेण-
मज्जपाणए य मुच्छिए, मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहु मज्जपाणय पीए”
ये सब पाठ प्रक्षिप्त ही ज्ञात होते हैं ऐसा बुद्धिमान् जन विचार करें ।
(तएण तस्स सेलयस्स अहापयत्तेहि जाव मज्जणपाणेण रोयायके उवसत्ते

માટે કૃત પ્રતિજ્ઞ દેખાય છે અને ત્યાર બાદ તેઓ બીજા દિવસે સવારે જ
પૂર્વપરપરા અનુસાર એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવાની ઇચ્છા કરે છે
ને આવું હોતતો તેમનામાં આવી ઇચ્છા પણ પ્રકટ કેવી રીતે થાત ? તેમકે
પ્રાયશ્ચિત્ત વગર આવું તે કરી શકે જ નહિ એટલા માટે, અહીં મધ્ય શબ્દ
મદિરાનો અર્થ સૂચવતો નથી પણ (મજ્જપાણય પીએ પુજ્જાવરણ્હકાલસમયસિ
સુહૃપ્પસુત્તે “ મધ્ય શબ્દ મૂળપાઠને અનુલક્ષી તે નિદ્રા જનક પાન દ્રવ્ય
વિશેષ ” અર્થ ને જ સૂચવનારો છે (મજ્જપાણય ચ સે ઉપદિસિ તિ જાવ મજ્જપાણેણ
મજ્જપાણએ ય મુચ્છિએ મજ્જપાણએ મુચ્છિએ, સુબહુ મજ્જપાણય પીએ) પૂર્વાપરની
અપેક્ષાએ મૂળપાઠ વિષે આપણે ગભીર પણે વિચાર કરીએ તો ઉક્ત પાઠ
પ્રક્ષિપ્ત જ લાગશે (તएण तस्स सेलयस्स अहापयत्तेहि जाव मज्जणपाणेण रोया

पुष्टशरीर, जात, व्यपगतरोगातङ्कः=सर्वव्याधिरहितो जात इत्यर्थः । ततः खलु स शैलकस्तस्मिन् रोगातङ्के उपशान्ते सति तस्मिन् विपुले=अतिशये अशनपानखाद्यस्वाद्ये=चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपानके च निद्राजनकपानद्रव्यविशेषे च मूर्च्छितः आसक्तः प्रयितः=स्नेहरज्जुभिर्वद्धः गृद्धो=लोलुप 'अज्ज्ञोववन्ने' अयुपपन्नः, सरसाहाराद्यधीनजीवन । 'ओसन्नो' अवसन्नः=अवसन्न इवावसन्नः श्रान्ततुल्यः, आरुच्य-स्वाध्यायप्रतिलेखन-यानादिक्रियासु शैथिल्येन श्रान्तश्चमोक्षमार्गे शि-

होत्या) इस प्रकार इस शैलक राजकृपि के यथा प्रवृत्त प्रासुक पपणीय यावत्-औषध भैषज्यो से और पञ्चाहार से रोगातक उपशमित हो गये (हृद्रे मल्लसरीरे जाण ववगयरोयायके, तण्ण सेलए तसि रोगायकसि उवसतसि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्ज्ञोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थ विहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उववद्वपीठफलकसेज्जासधारए पमत्ते यावि विहरइ) वह प्रसन्न चित्त हो गया शरीर से भी मल्ल की तरह पुष्ट हो गये । इस प्रकार रोग और आतको से सर्वव्या रहित हो गये । इस के बाद वह राजकृपि विविध प्रकार के विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार में एव मद्यपान में आसक्त हो गये । उन में स्नेह रूपी रज्जु से बन्ध गये-गृद्ध-लोलुप-हो गये और सरस आहार के आधीन जीवन वाले बन गये । यके हुए व्यक्ति की तरह वह स्वाध्याय,

यके उपसते होत्या) आ भ्रमाणु यथा प्रवृत्त प्रासुक औषणीय यावत् औषध औषधैथी अने औषध पथ्य आहारथी शैलक राजकृपिना रोगो भटी गया (हृद्रे मल्लसरीरे जाण ववगयरोयायके, तण्ण सेलए तसिरोगायकसि उवसतसि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्ज्ञोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थ विहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उववद्वपीठफलकसेज्जासधारए पमत्ते यावि विहरइ) तेज्जा शरीरथी पुष्ट तेमल्ल प्रसन्न चित्त भई गया आ रीते रोग अने आतको थी तेज्जाज्जे जेज्जम मुक्ति भेजणी दीधी त्याशनाड तेज्जा जत जतना पु कण भ्रमाणुमा जनाववामा आवेला अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप यऽ प्रकारना आहारमा तथा मद्यपानमा आसक्त भई गया तेज्जा स्नेहरूपी होरीधी बंधाई गया गृद्ध-जेठले के लोलुप यधने सऽ आहाराना सेवनमा तेज्जा टेवार्थ गया श्रान्त व्यक्तिनी पेठ स्वाध्याय प्रति

थिल इत्यर्थः । 'ओसन्नविहारी' अथ सन्नविहारी शिथिलाऽऽचारी आलस्यवशेन मन्दीभूतचरणकरण इत्यर्थः । एव=अनेन प्रकारेण 'पाश्वर्ये' पार्श्वस्थ-साधुगणानां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वम्यः ज्ञानादीनां न सम्यगाराधनः । पार्श्वस्थविहारी=पार्श्वस्थानां यो विहारस्तथावर्तन पार्श्वम्यविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः=उत्तरगुणविराधनया सज्ज्वलनरूपायोदयेन च कुत्सिताऽऽचारः । कुशीलविहारी=कुत्सिताचारशीलः । 'प्रमत्ते' प्रमत्तः=प्रमादयतिस्म-मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावात् सज्ज्वलनरूपायनिद्राविकृताऽन्यतमप्रमादयोगेन सयमाराधनेषु सीदति-स्मेति प्रमत्तः । कर्तरि क्त । 'ससत्ते' ससक्तः गौरवत्रयाश्रयेण सक्रीर्णाचारः, कृतवद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तश्चापि विहरति, शेषमालेऽपि कारणमन्तरेण

प्रति लेखन, ध्यान आदि मोक्ष मार्ग में भी शिथिल हो गये । अब सन्न विहारी हो गये-शिथिलाचारवाले बन गये-आलस्य के वश से चरण सत्तरी और करण सत्तरी के आराधना ढीले पड़ गये इस प्रकार वह पार्श्वस्थ हो गये-साधु गुणों के पास में रहने वाला बने रहे-ज्ञानादिकों का सम्यक् आराधन कर्ता वह नहीं रहे । पार्श्वस्थों के विहार जैसा इनका वर्तन हो गया । उत्तर गुणों की विराधना से और सज्ज्वलन कपाय के उदय से वह कुत्सित आचार वाले हो गये । कुशील विहारी हो गये । मोहनीय आदि कर्मों के उदय के प्रभाव से यह सज्ज्वलन कपाय निद्रा विकृता रूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के योग से सयम की आराधना करने में शिथिल परिणामी हो गये । गौरवत्रय के आश्रय से उनका आचार शिथिल हो गया । हर एक समय कारण के बिना भी पीठ फलकादि का सेवन करने वाले बन गये सदा इन

लेखन ध्यान वगैरे कियाओभा तेमज्ज भोक्षभार्गभा तेओ शिथिल थय गया अब सन्न विहारी थय गया, -शिथिल आचारणु वाणा थय, अणसने दीधेयरणु मत्तरी अने काणुसत्तरी रहिन थय गया आभ तेओ पार्श्वस्थ थय गया सहगुणोभा रम्यापम्या णनीने रहनेनारा णनी गया ज्ञान वगैरेनी सम्यक् आराधना तेमनाथी हवे नहोती थती पार्श्वस्थाना विहारनी जेम तेमनु आचारणु थय गयु उत्तर गुणोनी विराधनाथी अने सज्ज्वलन कपायना उदयथी तेओ कुत्सित आचार वाणा थय गया कुशील विहारी थय गया मोहनीय वगैरे कर्मोना उदयने दीधे तेओ सज्ज्वलन कपाय निद्रा विकृता रूप प्रमादोभा थी कोय पणु ओक प्रमादना योगथी सयमने आराधनाभा शिथिल थय गया गौरवत्रयना आश्रयथी तेमनो आचार शिथिल णनी गया कारण वगर पणु तेओ गमे ल्यारे पीठ इलक वगैरे नु सेवन करवा लाग्या तेओ हभेशा तेना उपर पड्या ज

પીઠકઠકાદિસેવી સજાત્વેત્યર્થઃ । ' નો સંવાણ્ ' નો શ્વનોતિ, અસ્ય વિહર્તુમિ-
ત્યત્રાન્વયઃ, પ્રાસુકૈષ્ણીય પીઠ=પીઠાદિકં પ્રત્યર્પ્ય મળ્લક ચ રાજનમાપૃચ્છ્ય
વહિર્જનપદવિહાર ' અબ્ધુજ્જણ ' અબ્ધુદ્યતેન-ઉત્તમયુક્તેન, ' પયત્તેણ ' પ્રદત્તેન
મગ્ધનુજ્ઞાતેન પ્રમાદરહિતેન, ' પગ્ગહિણેણ ' પ્રગૃહીતેન તીર્થકરૈરપિ સ્વીકૃતેન;
વિહર્તુ=કર્તુમ્ । સજ્વલનકપાયનિદ્રાવિક્રાન્તમપમાદવશગત શૈલકો વહિર્જન
પદવિહાર કર્તુમસમર્થો જાત્વેત્યર્થઃ ॥ ૩૦ ॥

મૂલમ્-તણ તેસિ પથયવજ્ઞાણ પચ્છહ અણગારસયાણં
અન્નયા કયાઈ એગયઓ સહિયાણ જાવ પુઠ્ઠવરત્તાવરત્તકાલસમ-
યસિ ધમ્મજાગરિય જાગરમાણાણ અયમેયારૂવ અવ્ભાત્થિય જાવ
સમુપ્પજિત્થા-એવ યલ્લુ સેલણ રાયરિસી ચડત્તા રજ્જ જાવ પઠ્ઠ-

પર પડા રહને લગે (નો સંવાણ્ ફાસુણ્સણિજ્જ પીઠે પચ્ચપ્પિણિત્તા
મહુય ચ રાયા અપુચ્છિત્તા વહિયા જળવયવિહાર-અબ્ધુજ્જણ પયત્તેણ
પગ્ગહિણેણ વિહરિત્થે) પ્રાસુકૈષ્ણીય પીઠ આદિ કો પ્રત્યર્પિત કર
(દેકર) તથા મલ્લકરાજ સે પૂઠ્ઠકર યહ બાહર જનપદો મેં વિહાર કરને
કે લિયે સમર્થ નહીં હુણ । જો વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ સે યુક્ત
હોકર કિયા જાતા હૈ અર્થાત્ જિસમેં પ્રમત્ત દશા નહીં રહતી હૈ-
જિસકે કરને કી મગવાન્ કી આજ્ઞા હૈ । તથા તીર્થકરો ને મી જિસે
કિયા હૈ । તાત્પર્ય હિસકા યહ હૈ કિ સજ્વલન કપાય, નિદ્રા તથા વિ-
કથારૂપ પ્રમાદો મેં સે કિસી એક પ્રમાદ કે વશગત હોકર વહા સે
વિહાર કરને કે લિયે અસમર્થ બન ગયે । સૂત્ર ॥ ૩૦ ॥

રહેતા હતા (નો સંવાણ્ ફાસુણ્સણિજ્જ પીઠ પચ્ચપ્પિણિત્તા મહુય ચ રાયા અપુ-
ચ્છિત્તા વહિયા જળવયવિહાર અબ્ધુજ્જણ પયત્તેણ પગ્ગહિણેણ વિહરિત્થે) પ્રાસુકૈ-
ષ્ણીય પીઠ ફલક વગેરે પાછા આપી તેમજ મહુય રાજને પૂછીને બહારના
બીજા જનપદો મા વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ સમર્થ થઈ શક્યા નહિ
જે વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ વડે કરવા મા આવે છે, એટલે કે જેમા
પ્રમત્ત દશા રહેતી નથી તેમજ જે વિહારને કરવાની ભગવાને આજ્ઞા આપી
છે, અને તીર્થકરો પણ જેને કરતા આવ્યા છે તેમા તેઓ અસમર્થ થઈ
ગયા તાત્પર્ય એ છે કે આ મજ્જલન કપાય, નિદ્રા તેમજ વિકથા રૂપ પ્રમાદો
માથી કોઈ પણ એક પ્રમાદના વશગત થઈને ત્યાંથી બહાર વિહાર કરવા
સમર્થ થઈ શક્યા નહિ ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

इए, विउलेणं असण० ४ मज्जपाणए मुच्छिए नो संचाएइ
जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया । समणाणं निग्ग-
थाण जाव पमत्ताणं विहरित्तए, त सेय खलु देवानुप्पिया ।
अम्ह कल्ल सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढफल-
गसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथयं
अणगारं वेयावच्चकर ठवेत्ता वहिया अब्भुज्जएण जाव पवत्तेण,
पग्गहियेण जणवयविहार विहरित्तए, एवं सपेहेति, संपेहित्ता
कल्लं जाव जलंते सेलय आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसे-
ज्जासथारय पच्चप्पिणित्ति, पच्चप्पिणित्ता पथय अणगार वेया
वच्चकरं ठावति ठावित्ता वहिया जाव विहरति ॥ सू०३१ ॥

टीका—‘ तएण तेमि ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेषा पान्यक-
वर्जाना पञ्चानामनगारशताना=१२शतानगाराणाम्, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन्
कस्मिंश्चित् काले, एकतः सहितानाम्=एकत्रसमिलिताना यावत् पूर्वरात्रापर-
रात्रकालसमये= धर्मज्ञागरिका=धर्मध्यानप्रोधिनी कथा जाग्रता=कुर्वताम्

‘ तएण तेसि पथयवज्जाण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसि पथयवज्जाण पचण्ह अणगार
सयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुब्बावरत्तकालसमयसि
धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेवाहुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)
उन पाचसो, पाथक अनगार वर्ज मुनियों को किसी एक समय मध्य
रात्रि मे जब कि वे धर्मध्यान प्रोधिनी कथा को एकत्र समिलित होकर

(तएण तेसि पथयवज्जाण) ध्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार भा६ (तेसि पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाण
अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुब्बावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय
जागरमाणाण अयमेवाहुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था) पाचसो पाथक अन
गार वर्ज मुनियोने केह ओक वप्पते मध्यरात्रिमा न्थारे तेओ भधा ओकहा
थप्पने धर्मध्यान प्रोधिनी कथा निवे यथा करी रह्ता छता त्थारे तेओने आ

अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारक 'अन्मर्तिण' अभ्यर्थितः प्रवचनसंमतः यावत्-
यावत् करणेन-चित्तिण, पत्तिण, मनोगण इत्येषां सङ्ग्रहः । चिन्तितः प्रार्थितः
मनोगतः सरल्पः= विचारः 'समुपज्जित्या' समुदपद्यत=अभवत्-एव अमुना
प्रकारेण खलु=निश्चये शैलको राजर्षिः 'चडत्ता' त्यक्त्वा, 'रज्ज' राज्य यावत्
प्रजित= दीक्षा गृहीतवान् स चेदानीं 'विउलेण' विपुलेन अतिशयेन अशन
पानखाद्यस्त्राणे चतुर्विधाहारे निद्राजनकपानद्रव्यविषे च मूर्च्छितः=आसक्तः
नो शक्नोति यावद् कुनापि विहर्तुम् । नो खलु कल्पते देवानुप्रियाः !
श्रमणानां यावत् प्रमत्तानां विहर्तुम्, हे देवानुप्रिया ! प्रमादिनो भूत्वा श्रमणानां
सयममार्गं विहर्तुं न कल्पते, किंतु अभ्युद्यतेन इत्यर्थः । 'त सेय' तच्छ्रेयः=तत्
तस्मात् श्रेयः खलु देवानुप्रिया अस्माकं कल्ये प्रभाते शैलक राजर्षिमापृच्छय

कर रहे थे । इस तरह का प्रवचन समत चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत
सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ । (एव खलु सेलण रायरिसी चडत्ता रज्ज
जाव पव्वइण विउलेण असण ४ मज्जपाणे मुच्छिण नो सचाण्ड जाव
विहरित्तण, नो खलु कप्पइ देवानुप्पिया ! समणाणं निग्गथारण जाव
पमत्ताण विहरित्तण) शैलक राजा ने राज्य का परित्याग कर भगवती
दीक्षा अंगीकार की हैं-इस तरह वे राजरूपि बने हैं-परन्तु अब वे
विपुल अशन पान खाद्य और स्वाद्वरूप चतुर्विध आहार में तथा निद्रा
कारक पान द्रव्य विशेष में आसक्त हो रहें हैं । कही पर भी बाहर
विहार नहीं करना चाहते हैं । इस तरह हे देवानुप्रियों ! श्रमणों को
प्रमत्त बनकर सयम मार्ग में विहार करना रहना-उचित नहीं है ।
(त सेय खलु देवानुप्पिया ! अम्ह कल्ल सेल्य रायरिसि आपुच्छित्ता

गतने। प्रवचन समत, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत सकल्प विचार उत्पन्न-
(एव खलु सेलण रायरिसि चडत्ता रज्ज जाव पव्वइण विउलेण ४ मज्जपाणे मुच्छि
ण नो सचाण्ड जाव विहरित्तण नो खलु कप्पइ देवानुप्पिया ! समणाण निग्गथारण
जाव पमत्ताण विहरित्तण) शैलक राजा ने राज्य परित्याग कर भगवती दीक्षा
स्वीकारी छे अथी तेओ राजरूपि तरीके प्रसिद्ध थया छे पणु अत्यारे तेओ
पुण्डण प्रमाणुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य आहार तेमन् निद्राकारक
पानद्रव्य विशेषमा आसक्त थय रह्या छे भीन्ने कथ विहार कव्वानी पणु
तेओनी ध्विज लागती नथी छे देवानुप्रिया ! आ रीते श्रमणाने प्रमत्त
थयने सयमभागमा रह्येने विहार करवे। योग्य लागतु नथी (त सेय
खलु देवानुप्पिया ! अम्ह कल्ल सेल्य रायरिसि आपुच्छित्ता पाविहारिय पीढ

‘पाडिहारिय’ प्रातिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्प्य, शैलक-
स्यानगारस्य पान्थक्रमनगार ‘वेयावच्चकर’ वैयावृत्त्यकर=सेवाकारक, स्थापयि-
त्वा बहिरभ्युद्यतेन यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन=सोऽग्नेन प्रदत्तेन=तीर्थ-
करानुज्ञापितेन, प्रगृहीतेन तीर्थकराङ्गीकृतेन जनपदविहार इत्यस्य सग्रहः । विहर्तुम्
-कर्तुम् शैलकानगारस्य वैयावृत्त्यार्थं पान्थक्रमनगार बहिर्विहर्तुमस्माकं श्रेय इत्यर्थं
एवम्-उक्तप्रकारेण ‘सपेहेति’ सप्रेक्षन्ते, विचारयन्ति । ‘सपेहिता’ सप्रेक्ष्य
विचार्य, कल्पे यावज्जलति=मूर्त्ये उदिते सति शैलकमापृच्छ्य प्रातिहारिक=प्रत्य-
र्पणीय पीठफलकशय्यासस्तारक ‘पञ्चप्पिणति’ प्रत्यर्पयन्ति प्रत्यर्प्य पान्थक्रमनगार
‘वेयावच्चकर’ वैयावृत्त्यकर, ‘ठावति’ स्थापयन्ति, ‘ठापिता’ स्थापयित्वा
बहिर्यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन जनपदविहार इत्यस्य
सग्रहः, विहरन्ति । शैलकानगारस्य ये पञ्चशतसख्यकाः पान्थक्रममुत्ता अन

पाडिहारिय पीठफलकसेज्जासथारग पञ्चप्पिणित्ता सेलगस्स अण-
गारस्स पथय अणगार वेयावच्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव
पवत्तेण पग्गहिणण जणवयविहार विहरित्तेण) इसलिय हे देवानुप्रियो !
हम लोगों को यही कल्याण कारक है कि प्रातः होते ही हम लोग शैलक
राजकृपि से पूछकर और प्रत्यर्पणीय पीठ फलकशय्यासस्तारक को
रखकर वापिस देकर तथा शैलक राजकृपि की वैयावृत्ति करने के लिये
पान्थक अनगार को रखकर यहा से सोचम के साथ प्रदत्त तीर्थकर की
दी हुई आज्ञा के अनुसार प्रगृहीत तीर्थकर की आज्ञा को अंगीकार
कर ऐसा बाहिर देशों में विहार करें । (एव सपेहेति, सपेहिता कल्ल
जाव जलते सेलय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलकसेज्जासथा
रय पञ्चप्पिणति, पञ्चप्पिणित्ता पथयअणगार वेयावच्चकर ठावति

फलकसेज्जासथारग पञ्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथय अणगार, वेयाव-
च्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेण पग्गहिणण जणवयविहार
विहरित्तेण) ओठवे हे देवानुप्रियो ! आपल्ला भाटे कट्यालुने भागं ओके
रह्यो छे के सवारै शैलक राजकृपिनी आज्ञा भेजलीने पीठफलक, शय्या सस्ता
रक वगेरै पाछा आवीने शैलक राजकृपिनी वैयावृत्ति करवा भाटे पान्थक अन-
गारने नीभीने उद्यमपूर्वक आपल्ले अहीथी तीर्थकरानी आज्ञा सुज्जण तेमज्ज
तीर्थकरानी आज्ञानु पालन करता गढारना गील्ल देशेमा पिढार करवा नीकणी
पडीओ एव सपेहेति सपेहिता कल्ल जाव जलते सेलय आपुच्छित्ता, पाडिहारिय
पीठफलकसेज्जासथारय पञ्चप्पिणित्ता पथयअणगार वेयावच्चकर ठावति

गाराः शिष्यरूपेण सहचरा आसन् तेषु पान्थक शैलकानगारसेवार्थं स्थापयित्वा
पान्थकवर्जास्ते सर्वेऽनगाराः पीठफलकादिक प्रत्यर्प्य बहिर्जनपदविहार कुर्वन्ति
स्मेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

मूलम्-तएण से पंथए सेलयस्त सेज्जासथारयउच्चार-
पासवणखेलसिघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण अगिलाए
विणएण वेयावडिय करेइ, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ क-
त्तिय चाउम्मासियसि विउल असण० आहारमाहारिए सुवहु
मज्जपाणय पीए पुब्बावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते, तएणं
से पन्थए कत्तियचाउम्मासियसि, कयकाउस्तग्गे देवसियं पडि-
क्कमण पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलय रायरिसिं
खामणट्टयाए सीसेण पाएसु सघट्टेइ, तएण से सेलए पंथएणं
सीसेणं पाएसु सघट्टिए समाणे आसुस्ते जाव मिसिमिसेमाणे
उट्टेइ, उट्टित्ताएव वयासी-सं केस ण भो एस अप्पत्थियपत्थिए
जाव परिवज्जिए जेणं मम सुहप्पसुत्त पाएसुसंघट्टेइ? तएणं से
पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसियं करयल०क

ठावित्ता बहिया जाव विहरति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-
विचार करके प्रातःकाल जब सूर्य अपनी प्रभा से प्रकाशित होने लगा
तब उन्होंने शैलक राजकपि से पूछकर प्रतिहारिक-प्रत्यर्पणी पीठ फलक
शय्या सस्तारक को वापिस दे दिया-वापिस देकर फिर उन्होंने उन
की वैयावृत्ति करने के लिये पाथक अनगार को रख दिया । रखकर फिर
वे वहा से बाहर दूसरे देशों में विहार कर गये । सूत्र ॥ ३१ ॥

ठावित्ता बहिया जाव विहरति) आ प्रभाणु तेओओ विचार कर्यो, विचार
करीने न्यारे सवारे सूर्य उदय पाओ। तयारे शैलक राजकपिनी अज्ञाभेणवीने
प्रत्यर्पणीय ओटले डे पीठक शय्या सस्तारकने पाछा ओपीने राजकपिनी
वैयावृत्ति माटे पाथक अन०ने त्ना नियुक्त करीने तेओ त्याथी गडारना
पीठ देशेभा विहार करवा नीडवया ॥ सूत्र ३१ ॥

एवं वयासी-अहण्णं भन्ते । पंथए कायकउस्सग्गे देवसिय पडि-
क्कमणं पडिक्कते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे
सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, त खमंतु मं देवाणुप्पिया । खमतु मेऽ
वराहं तुम्मण्णं देवाणुप्पिया णाइभुज्जो एवं करणयाए त्तिकट्ठु
सेलयं अणगार एतमट्ठु सम्मं विणएण भुज्जो २ खामेइ ।

तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएण एवंवुत्तस्स
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खल्ल अहं रज्ज च जाव
ओसन्नो जाव उउवद्धपीठफलगसेज्जासंधारणं गिण्हित्ता
विहरामि, त नो खल्ल कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं
जाव विहरित्तए, तं सेय खल्ल मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता
पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंधारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएण अण-
गारेणं सद्धि वहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारेण विहरि-
त्तए । एव सपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ ॥ सू० ३२॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर खल्ल स पान्थकः शैलकस्य
‘सेज्जासंधारयउच्चारपासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण’ शय्यास
स्तारकोच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणमल्लौपधभैषज्यभक्तपानेन ‘अगिलाए’ अग्लान’ सव

‘तएण से पथए इत्यादि’ ॥ सूत्र ॥ ३२ ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पथए) वह पाथक (सेलयस्स)
शैलक अनगार की (सेज्जासंधारयउच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणमल्ल
ओसहभेसज्जभत्तपाणएण) शय्या स स्तारक के द्वारा उच्चार प्रस्र-
वण, खेल, जल्ल सिंघाण मल आदि की परिष्ठापना द्वारा औपध भैषज्य
द्वारा, भक्त पान लाने के द्वारा (अगिलाए) बिना कोई ग्लानभाव के

(तएण से पथए) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार आदि (से पथए) पाथक (सेलयस्स) शैलर राज्ञःपिनी
(सेज्जासंधारयउच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणमल्ल-ओसहभेसज्जभत्तपाणएण)
शय्या स स्तारक द्वारा, तेभञ्ज उच्चार प्रस्रवण, खेल, सिंघाण मल्ल वगैरे नी

વિનયેન વૈયાટ્ય સેવા કરોતિ । તતઃ સ્વલ્પ સ શૈલકઃ ‘અન્નયા કયાહ’ અન્યદા કદા-
ચિત્ અન્યસ્મિન્ કર્મિર્માથન્ કાલે ‘કત્તિયચાઝ્માસિયસિ’ કાર્તિકચાતુર્માસિકે
વિપુલમ્=અધિકમ્, ‘અસગ૦’ અશનપાનસ્વાદ્યસ્વાદ્યમ્ ‘આહારમાહારિણ’ આહારમા-
હારિતઃ ચતુર્વિધાહારમતિશયેન કૃત્વેત્યર્થઃ સુત્રહુ ‘મજ્જપાણય’ મધ્યપાનક=નિદ્રા-
જનકપાનકદ્રવ્યવિશેષ ‘પીણ’ પીતઃ પીત્વેત્યર્થઃ । ‘પૂર્વાપરાહકાલસમયસિ’
પૂર્વાપરાહકાલસમયે=દિવસસ્ય ચતુર્થે પ્રહરે સુત્રપ્રસુત્તઃ મનોહ્રપ્રણીતઃ મોજનાતિશ-
યેન નિદ્રાકારકપાનકદ્રવ્યસેવનેન ચ ગાઢનિદ્રા પ્રાપ્ત ઇત્યર્થઃ । યત્તુ સમાધિના
સુત્રેન સુત્ત ઇત્યર્થ ઇત્યુક્ત તત્ત યુક્તમ્ પ્રમાદસદ્ભાવે સમાધેરસમ્ભવાત્ અમર્યાદિતનિ-
દ્રાતાઃ સમાધેર્દૂરવર્તિત્વાચ્ચ । તતસ્તદનન્તર સ પાન્યકઃ ‘કત્તિયચાઝ્માસિયસિ’

(વિણણ) બહે વિનય કે સાથ (વૈયાવહિય કરેહ) વૈયાવૃત્તિ કરને
લગા । (તણ સે સેલણ અન્નયા કયાહ) એક દિન કી બાત હૈ કિ વે
શૈલક અનગાર (કત્તિય ચાઝ્માસિયસિ વિઝલ અસગ૦ આહારમાહા
રિણ સુત્રહુ મજ્જપાણય પીણ પુવ્વવરણ્હકાલસમયસિ સુહૃપ્પસુત્તે)
ચતુર્માસકે કાર્તિક મહિને મેં ઘટ્ટત અધિક અશન, પાન, સ્વાદ્ય, ઔર
સ્વામ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર કર કે ઔર નિદ્રાકારક પાનક દ્રવ્ય વિશેષ
‘કો પી કરકે દિવસ કે ચતુર્થ પ્રહર મેં સુત્ર સે સોયે હુણ થે । યહાં પર
જો કોઈ ૨ એસા પાઠ કહતે હૈં કિ વે સમાધિ પૂર્વક સુત્ર સે સોયે હુણ
થે વહ ઠીક નહીં હૈ । કારણ પ્રમાદ કે સદ્ભાવ મેં સમાધિ કા હોના
બનતા નહીં હૈ । અમર્યાદિત નિદ્રા ઔર સમાધિ ઇનકા પરસ્પર વિરોધ
હૈ એસી સ્થિતિ મેં તો સમાધિ ઘટ્ટત દૂર રહા કરતી હૈ । (તણ સે

પરિણાપના દ્વારા (અગિલાણ) ડોઠપણ બાતને અણગમો કે ઘણા વિનાના
બનીને (વિણણ) ખૂબજ નાશ થઈને (વૈયાવહિય કરેહ) વૈયાવૃત્તિ કરવા
લાગ્યા (તણ સે સેલણ અન્નયા કયાહ) એક દિવસ શૈલક રાજકવિ
(કત્તિયચાઝ્માસિયસિ વિઝલ અસગ — આહારમાહારિણ સુત્રહુ મજ્જપાણય પીણ
પુવ્વવરણ્હકાલસમયસિ સુહૃપ્પસુત્તે) ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમા ખૂબજ પ્રમાણ
મા અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર બાતના આહાર કરીને અને નિદ્રા
કારક આપાનક દ્રવ્ય વિશેષનું પાન કરીને સાજના છે. ત્રાપહોરના વખતે સુખેથી
સુતા હતા અહીં ‘ઘણા ઢોઢો સમાધિ પૂર્વક સુખેથી શૈલક રાજકવિ સૂતા
હતા ’ એ પ્રમાણેનો પાઠ ઢોવાનું કહે છે તે યોગ્ય ગણાય જ નહિ કેમકે
પ્રમાદઅવગ્નામા સમાધિ થઈ શકતી નથી અમર્યાદિત નિદ્રા અને સમાધિ
આ બંને વચ્ચે વિરોધ છે આવી સ્થિતિમા સમાધિ થઈ શકતી જ નથી

કાર્તિકચાતુર્માસિકે ' કાયકાઊસ્સગે ' -કૃતયાયોત્સર્ગે ' દેવસિય ' દૈવસિક પ્રતિક્રમણ પરિક્રાન્તઃ=કૃતવાન , ચાતુર્માસિક ' પઢિકમિઝ કામે ' પ્રતિક્રમિતુ-કામઃ શૈલક રાજર્ષિ ' સ્વામણદ્વયાઈ ' ક્ષમાપનાર્થાય શીર્ષેણ મસ્તકેન પાદયો સઘટ્ટયતિ સ્પૃશતિ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ શૈલકઃ શૈલકરાજર્ષિ પાન્થકેન=પાન્થકાનગારેણ શીર્ષેણ પાદયો સપટ્ટિતઃ સંસ્પૃષ્ટઃ સન્ ' આસુરુત્ત ' આશુરુત્તઃ ક્ષટ્વિકોપયુક્તઃ, યાવત્ ક્રોધાનલવેગેન ' મિસિમિસેમાણે ' મિસમિસન્ દેદીપ્યમાનઃ ' ઉદ્દેહ ' ઉત્તિષ્ઠતિ, ' ઉદ્વિત્તા ' ઉત્થાય ઇવ=રક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ' સે ' સઃ ' કેસ ' ઇષઃ ઇતાદૃશઃ કોઽસ્તિ સ્વલુ ભોઃ ! ' ઇસ ' ઇપઃ ' અપ્પત્થિયપ-ત્થિય ' અપાર્થિતપાર્થકઃ, યાવત્ પરિવર્જિતઃ શ્રી ડી ધી રહિતઃ, યઃ સ્વલુ માં

પથઈ કત્તિય ચાઊમ્માસિયસિ કય કાઊસ્સગે દેવસિય પઢિકમણ પઢિકકતે ચાઊમ્માસિય પઢિકકામિઝકામે સેલય રાયરિસિ સ્વામણદ્વયાઈ સીસેણ પાઈસુ સઘટ્ટેહ) હસી સમય પાંથક અનગાર ને ડસી ચતુર્માસકે કાર્તિક મહીને મેં કાયોત્સર્ગ કરકે દેવસિક પ્રતિક્રમણ કિયા । ફિર ચાતુર્માસિક પ્રતિક્રમણ કરને કી ઇચ્છા સે ડસને શૈલક રાજઋષિ કે અપને કૃત દોપો કી ક્ષમા યાચના નિમિત્ત મસ્તક સે દોનોં ચરણોં કા સ્પર્શ કિયા । (તઈણ સે સેલઈ પથઈણ સીસેણ પાઈસુ સઘટ્ટેહ સમાણે આસુરુત્તે જાવ મિસિમિસે માણે ડદ્દેહ) પાંથક અનગાર કે મસ્તક સે દોનોં ચરણોં મેં સ્પૃષ્ટ હુઈ વે શૈલક રાજર્ષિ ઇકદમ કોપ સે લાલ હો ગયે । ઓર મિસ મિસાતે હુઈ યાવત્ ક્રોધાનલ કે વેગ સે દેદીપ્યમાન હોતે હુઈ-વે ડઠકર બેઠ ગયે । (ઉદ્વિત્તા ઇવ વયાસી) બેઠકર ઇમ પ્રકાર કહને લગે- (સે કેસણ ભો ઇસ અપ્પત્થિય પત્થિય જાવ પરિવ-

(તઈણ સે પથઈ કત્તિયચાઊમ્માસિયસિ, કયકાઊસ્સગે દેવસિય પઢિકમણ પઢિકકતે ચાઊમ્માસિય પઢિકકામિઝકામે સેલય રાયરિસિ સ્વામણદ્વયાઈ સીસેણ પાઈસુ સઘટ્ટેહ) આ વખતે ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમા જ પાંથક અનગારે કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રાતિક્રમણ કર્યું ત્યાર પછી ચાતુર્માસિક પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી તેમણે પોતાના દેવોની ક્ષમાપના માટે શૈલક રાજઋષિના ચરણોમા પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ ડયો તઈણ સે સેલઈ પથઈણ સીસેણ પાઈસુ સઘટ્ટેહ સમાણે આસુરુત્તે જાવ મિસિમિસેમાણે ડદ્દેહ) પાંથક અનગારના મસ્તકના બને પગોમા થયેના સ્પર્શથી શૈલક રાજઋષિ એકદમ લાલ થોઈ થઈ ગયા, અને ક્રોધ ની જવાણોમા સંગના તેઓ ઢીંઢીને બેઠા થઈ ગયા (ઉદ્વિત્તા ઇવ વયાસી) બેઠા થઈને તેઓએ આ પ્રમાણે

सुखप्रसुप्त पादयोः सघट्टयति ? ततः खलु स पाथकः शैलकेनैवमुक्तः सन् भीतः
 =भययुक्तः त्रस्तः=उद्विग्न, त्रस्तितः कम्पितः करतलपरिग्रहीत शिरआवर्तं मस्त-
 केऽञ्जलिं कृत्वा एव=उक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्- 'अहण्ण' अह खलु भदन्त !
 पान्थकः कृतकायोत्सर्गं 'देवसिय' दैवसिक=प्रतिक्रमण प्रतिक्रान्तः । हे भदन्त !
 अह खलु पान्थकनामो भवदीयशिष्यः कायोत्सर्गं कृत्वा दैनिक प्रतिक्रमण कृत-
 वान् , अधुना चातुर्मासिक क्षमापयन् देवानुप्रियं वन्दमानः शीर्षेण पादयोः सघट्ट-
 यामि, हे देवानुप्रियाः तत् तस्माद् क्षमन्व माम् , क्षमन्व मे ममापराध, 'तुम-
 जिज्ज' अरे ! यह कौन ऐसा हैं जो श्री ह्री से रहित बुद्धिवाला हुआ
 यहा बिना बुलाये आ गये हैं और (ण मम सुहृप्पसुत्त पाएसु
 सघट्टेइ) सुख पूर्वक सोए हुए मुझे पैरों मे स्पर्श कर रहा है । (तएण
 से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल०कट्टु एव
 वयासी) इस प्रकार शैलक के द्वारा कहे जाने पर वह पाथक अनगार
 डर गया, उद्विग्न हो गया, रोम २ उसका कप गया । उसी समय उसने
 दोनों हाथों की अजलि जोड़कर और उसे मस्तक पर रखकर इस
 प्रकार कहा-अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसिय पडिक्कमणं
 पडिक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवानुप्पिय ! वदमाणे सीसेणं पाएसु
 सघट्टेमि) हे भदन्त ! मैं हूँ आपका शिष्य मैं पांथक ने कायोत्सर्ग करके
 दैवसिक प्रतिक्रमण कर लिया है । अब चातुर्मासिक दीर्घों की क्षमा
 कराने निमित्त हे देवानुप्रिय आपकी वदना करते हुए मैं आपके चरणों
 का स्पर्श किया है । (त खमत्तु म देवानुप्पिया ! खमत्तु मेऽवराह तुमणं

४६- (से केसण भो एस अणत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए) अरे ! आ डेव
 छे ? ने श्री ह्री थी रहीत भूर्भ भोलाव्या वगर न् अडी आवतो रहो छे
 (ण मम सुहृप्पसुत्त पाएसु सघट्टेइ) के ने सुप्रेथी विश्राम करनाश भने पगोभा
 स्पर्श करी रहो छे (तएण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय
 करयल० कट्टु एव वयासी) शैलक राजकृपिनी आ वात सालणीने पाथक
 अनगार डरी गया, उद्विग्न थर गया अने तेभना अण्ण अणुभा लय व्याप्त
 थर गयो तत न् तेओ अने हाथोनी अण्वि भग्नके भूझीने आ
 प्रभाछे डडेवा लाव्या- (अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसियपडिक्कमण
 पडिक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवानुप्पिय ! वदमाणे सीसेण पाएसु सघट्टेमि)
 छे भदन्त ! आतो हु छु आपनो शिष्य पाथक ने कायोत्सर्ग करीने दैवसिक
 प्रतिक्रमण करी लीधु छे आतुर्मासिक दीर्घोनी क्षमापना भाटे तभाश थरखोभा
 मे भस्तउनो स्पर्श कर्यो छे (त खमत्तु म देवानुप्पिया ! खमत्तु मेऽवराह

ण 'यूय खलु । हे देवानुप्रियाः 'णाइ भुज्जो ' न भूयः एव करणाय प्रवर्तिष्ये
इति कृत्वा=इत्युक्त्वा शैलकमनगारमेतदर्थं मम्यगु प्रियेन 'भुज्जो भुज्जो ' भूयो
भूयः पुन पुनः 'खामेइ' क्षमयति शैलकस्य राजर्षे क्रोयोपशमनार्थं पुनः पुनः
स्वापराध क्षमयति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेः पान्यकेनैवमुक्तस्य अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाण-
रूपः यावत् सकल्प समुदपद्यत=अभयत्-एवम्=अमुना प्रकारेण खलु निश्चये, अह
सर्वं राज्य त्यक्त्वा च यावत् दीक्षा गृहीत्वा पुनर्गिणुलाशनपानादौ मूर्च्छितः गृद्धः
अध्युपपन्नः अवसन्नः, यावत् असन्नविहारी, पार्श्वस्थविहारी कुशीलः कुशीलविहारी
प्रमत्तः ससक्तश्चतुर्मासापगमेऽपि ऋतुवद्धपीठफलकशय्यासस्तारक गृहीत्वा विह-
देवाणुप्रिया ! णाह भुज्जो एव करणयाण त्ति कद्दु सेलय अणगार
एयमट्ट सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप
मुझे क्षमा कीजिये । अय मै हे देवानुप्रिय ! पुनः ऐसा नहीं करूँगा ।
इस प्रकार कहकर उसने चार २ शैलक अनगार से अपने इस अपराध
की बड़े विनय के साथ क्षमा मागी । (तएण तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स
पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारू वे जाव समुप्पज्जित्ता) इस प्रकार पांथक
अनगार के कहने पर उस शैलक राजर्षि के मन में यह इस प्रकार का
यावत् सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव
उड वद्धपीठफलकसेज्जासथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ
समणाण ओसन्ना ण पासत्था ण जाव विहरित्तए) मैंने समस्त राज्यका परि-
त्याग कर यावत् जिनदीक्षा धारण की है परन्तु अय मै पुन विपुल अशन

तुमण्ण देवाणुप्रिया ! णाह भुज्जो एव करणयाण त्ति कद्दु सेलय अणगार
एयमट्ट सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) ओथी डे देवानुप्रिय ! तमे भने क्षमा
करे। डे देवानुप्रिय ! डेवेथी भाराथी आवु डेअपिण्ण द्विस्स थसे नडि आ
प्रभाण्ण पाथक अनगारे शैलक राज्ञ्जिनी पे ताना अपराध णडल वारवार
विनम्र थधने क्षमा याचना करी, (तएण तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पथएण
एव वुत्तस्स अयमेयारू वे जाव समुप्पज्जित्ता) आ प्रभाण्ण पाथक अनगारनी
पात सासणीने शैलक राज्ञ्जिनी भनभा आ नतने सक्कप-विचार स्सुथी
डे (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उडवद्धपीठफलकसेज्जा
सथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ समणाण ओसन्ना ण पासत्थाणं
जाव विहरित्तए) सक्कण राज्ञ्जिनीने त्याग करीने मे जिनदीक्षा भेगवी डे
पण्ण अत्थारे करी डे पुण्ण प्रभाण्ण अशन, वान वजेरेना सेवनभा आभ

रामि । तद्=तरमात् नो खलु कल्पते श्रणानाम् अनगाराणा 'पास्त्याण' पार्श्वस्थाना यावत् करणेन—'असन्नाण कुशीलाणं पमत्ताण ससत्ताण इत्येषा सग्रह । 'अवसन्ना' पार्श्वस्था कुशीलाः प्रमत्ताः ससक्ताश्च भूत्वाऽनगाराणा विहर्तुं न कल्पते इत्यर्थः ।

'त सेय' तन्त्रेयः=तत् तरमात् श्रेयः खलु मे मम कल्पे प्रभातकाले मण्डूक राजानमापृच्छ्य प्रतिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्प्य पान्यकेनानगारेण सार्धं वटिः 'अवभृज्जपण' अभ्युद्यतेन=उत्तमसहितेन, यावत्—इह यावत् करणात्—'पञ्चत्तेण, पग्गहियेण' इत्यनयो सग्रह । 'पञ्चत्तेण' प्रदत्तेन, तीर्थकरानुज्ञापितेन गुरुपदिष्टेन इत्यर्थः, 'पग्गहियेण' प्रगृहीतेन, तीर्थकराङ्गीकृतेन, गुरुसकाशान्मयाङ्गीकृतेनेत्यर्थः जनपदविहारेण विहर्तुम् । नव-

पान आदि में सृच्छित बन रहा हूँ । उन में स्नेहरूपी रज्जु से बंध गया हूँ । लोलुप हो गया हूँ । सरस आहार आदि के अधीन मेरा जीवन हो गया है । स्वा याय प्रतिलेखन आदि आवश्यक क्रियाओं से मैं शिथिल हो रहा हूँ । मेरी चरण सत्तरी और करण सत्तरी दोनों ही आलस्य के बश से मदीभूत हो रही हैं । इसलिये मैं पार्श्वस्थ हो रहा हूँ । पार्श्वस्थों के जैसा मेरा विहार वर्ताव हो गया है । कुशील-कुत्सित आचार वाला बन गया हूँ । कुशील विहारी हो रहा हूँ । प्रमत्त दशाधीन होकर गौरवत्रय से सकीर्ण आचारवाला बना हुआ हूँ । ऋतुणद्ध पीठ फलक शय्या सस्तारक का से वी हो रहा हूँ । अतः अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील प्रमत्त एव ससक्त होकर अनगार रूप से रहना यह श्रेयस्कर नहीं है । (त सेय खलु मे कल्ल महुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठ

कत थर्ध रह्यो छु स्नेहइपी डोरीमा हु ण धार्ध गयो छु हु लोलुप थर्ध गयो छु भाइ एवन सरस आहारने आधिन थर्ध गयु छे स्वाध्याय प्रतिक्षेपन वगेरे आवश्यक क्रियाओमा हु शिथिल थर्ध गयो छु भारी अरण्य सत्तरी अने करण सत्तरी णने आणसने लीधे मढ थर्ध रही छे ओथी हु पार्श्वस्थ थर्ध रह्यो छु भारो विहार अने आचरण्य पण पार्श्वस्थोनी जेम न थवा भाड्यो छे कुशील-ओटले के हु कुत्सित आचरण्य वाणो थर्ध गयो छु कुशील-विहारी थर्ध रह्यो छु प्रमत्तना जेवी दशावाणो हु, गौरवत्रयथी सकीर्ण आचार वाणो थर्ध रह्यो छु हु ऋतुणद्ध पीठ फलक शय्या सस्तारक ने सेवनारो थर्ध गयो छु ओथी अवसन्न, पार्श्वस्थ कुशील प्रमत्त अने ससक्त थर्धने अनगार इधे रह्यो ने श्रेयस्कार नहीं (त सेय खलु में कल्ल महुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलक शय्या सस्तारक पञ्चविणिता पथण

કલ્પિવિહારેણ દેશમધ્યે વિહાર મર્તુ શ્રેય इत्यर्थ । एवम्=उक्तप्रकारेण, 'संप्रेक्षते स्व मनसि विचारयतिस्मेत्यर्थः । ' संपेक्षिता 'संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावद्विहरति । अत्र यावच्छब्देन-' जलंतेमद्भुय राय आपुच्छिता, पाङ्गिहारिय, पीठफलग सेज्जासंधारय पच्चप्पिणह, पच्चप्पिणिता पथएण अनगारेण सद्धि बहिया अब्भुज्जएण जाव जणवयविहारेण ' इतिपाठस्य संग्रहः ॥ ३२ ॥

फलગ सेज्जा સંધારય પચ્ચપ્પિણિતા પંથણ્ણ અળગારેણં સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજણ્ણ જાવ જણવયવિહારેણ વિહરિત્તા એવ સંપેહેહ, સંપેહિત્તા કલ્લ યાવ વિહરહ) મેરા હિતતો અથ હસી મેં હું કિ પ્રાત કાલ મહુક-રાજા સે પૂછકર પ્રતિહારિકા-જો યે પીઠ ફલગ શય્યા સસ્તારક હૈ ઉન્હે પીછે દેકર પાથક અનગાર કે સાથ ઉત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમ સે યુક્ત-અપ્રમત્તદશા વિશિષ્ટ-તીર્થ કરાદિ દ્વારા આચરિત ઔર ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ-પેમા વિહાર યહા સે કરદું । અર્થાત્ નવ કલ્પિત વિહાર સે અન્ય દેશોં મે વિહાર કરના હી મુક્ષે અથ હિતકારક હૈ । હિસ પ્રકાર કા વિચાર શૈલક અનગાર ને કિયા । યાદ મે વે હસી વિચાર કે અનુસાર વહાં સે વિહાર કર ગયે । યહા યાવત્ શબ્દ સે “ જલતે-મહુય રાય આપુચ્છિતા પાઙ્ગિહારિય પીઠફલગ સેજ્જાસંધારય પચ્ચપ્પિણહ, પચ્ચપ્પિણિતા પથણ્ણ અળગારેણ સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણ્ણ જાવ જણવય વિહારેણ ” હિસ પાઠ કા સંગ્રહ હુઆ હૈ । હિસકા અર્થ ઉપર લિખા જા ચુકા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૨ ॥

અળગારેણ સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજણ્ણ જાવ જણવય વિહારેણ વિહરિત્તા એવ સંપેહેહ સંપેહિત્તા કલ્લ યાવ વિહરહ) હવે મારા પોતાને માટે તો એજ શ્રેયસ્કાર ગણાય કે સવારે મહુકરાગને જણાવી પીઠ ફલગ શય્યા સસ્તારકો સોપીને પાથક અનગારની સાથે ઉત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમથી યુક્ત-અપ્રમત્તદશાવિશિષ્ટ અને તીર્થ કર વગેરે દ્વારા આચરિત અને ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ વિહાર કરે એન્હો કે નવ કલ્પિત વિહારથી બીજાદેશોમા વિહાર કરવો જ હવે અત્યારના સંલેગોમા મારે માટે હિતાવહ છે આરીતે શૈલક અનગારે વિચાર કયો ત્યાર પછી એ વિચાર પ્રમાણે જ ત્યાથી તેઓએ બીજે વિહાર કયો અહીં 'યાવત્' શબ્દથી “ જલતે મહુય રાય આપુચ્છિતા પાઙ્ગિહારિય પીઠફલગસેજ્જા સંધારય પચ્ચપ્પિણહ, પચ્ચપ્પિણિતા પથણ્ણ અળગારેણ સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણ્ણ જાવ જણવયવિહારેણ) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે આના અર્થ પહેલા ૨૫૦૮ ડરવામા આબો છે ॥ સૂત્ર “૩૨” ॥

મૂલમ્-એવામેવ સમણાસો જો અમ્હં નિગ્ગથો વા નિગ્ગંથી
વા આયરિય ઉવજ્ઞયાણ અંતિય પવ્વહ્ણ સમાણે ઓસન્ને જાવ
સથારણ પમત્તે વિહરહ્, સે ણ હહલોણ ચેવ વહૂણં સમણાણ ૪
હીલણિજ્જે સસારો માણિયવ્વો ॥ સૂ૦ ૩૩ ॥

ટીકા-‘એવામેવ’ इत्यादि-एवमेव अनेन प्रकारेणैव यथा शैलको राजर्षिः प्रमादी
जातस्तथैव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आवर्चोपा
ध्यायानामन्तिके समीपे प्रव्रजितः गृहीतप्रव्रज्यः सन् अवसन्न यावत्-सस्तारके-
अत्र यावच्छब्देन-अवसन्ननिहारी, पार्श्वस्थः पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः कुशीलविहारी
प्रमत्तः ससक्तः ऋतुपद्धपीठफलकशय्या’ इत्यन्तः पाठ’ सगृह्यते । एव चावसन्नत्वादि
विशिष्ट सन् ऋतुपद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तः=प्रमादीभूत्वा विहरति अव-
तिष्ठते, स खलु इहलोके चैव गृह्णा श्रमणानां ४ श्रमणीना आवकाणा आविकाणा

‘ એવામેવ સમણાસો ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(એવામેવ) जिस तरह शैलक राजर्षि प्रमादी हुवे उसी
तरह (समणासो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्ह निगगंथो वा
निगगंथी वा आयरिय उवज्झयाण अतिण पव्वह्ण समाणे ओसन्ने जाव
सथारण पमत्ते विहरह इह लोण चैव वहुण समाणण ४ हीलणिज्जे
ससारो माणियव्वो) जो कोई हमारा निर्ग्रन्थ वा निर्ग्रन्थी जन आचार्य
उपोध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ अवसन्न बन जाता है यावत् ऋतु
पद्ध पीठ फलकशय्या सस्तारक में प्रमत्त होकर बैठा रहता है वह इस
लोक में अनेक श्रमण, श्रमणी आवक, आविकाओ द्वारा हीलनीय होता

(એવામેવ સમણાસો) इत्यादि

ટીકાર્થ-(એવામેવ) જેમ શૈલકરાજ ઋષિ પ્રમાદવશ થયા તેમ (સમણાસો)
હે આયુષ્મન્ત શ્રમણે ! (જો અમ્હ નિગગંથોવા નિગગંથીવો આયરિય ઉવજ્ઞયાણ
અતિણ પવ્વહ્ણ સમાણે ઓસન્ને જાવ સથારણ પમત્તે વિહરહ્, હહ લોણ ચેવ
વહૂણં સમાણાણ ૪ હીલણિજ્જે સસારો માણિયવ્વો) જે કોઈ અમારા નિર્ગ્રંથકે
નિર્ગ્રંથી જન આચાર્ય ઉપોધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને અવસન્ન થઈ બાથ
છે યાવત્ ઋતુ પદ્ધ પીઠ ફલક શય્યા સસ્તારકમાં પ્રમત્ત થઈને બેસી રહે
છે તે આ લોકમાં ઘણા શ્રમણો શ્રમણીઓ અને આવક શ્રાવિકાઓ દ્વારા

હીલનીયઃ નિન્દનીયઃ સ્તિસનીયઃ ગર્હણીયઃ પરિભ્રમનીયઃ, મયતિ । પરલોકેऽપિ ચ
 સ્વલુ આગચ્છતિ, પ્રાપ્નોતિ વત્તુનિ દણ્ડાનાનિ 'સસારો માણિયગ્ગો' સસારો મણિ
 સવ્યઃ । સંસારે સ પરિભ્રામ્યતિ અત્ર સસારપરિભ્રમણપાઠો ગાન્ય -યદા- 'અ
 ણાહય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ' અનાદિકમ્ અન-
 વદગ્રમ્ અનન્ત દીર્ઘોદ્ધ દીર્ઘકાલ, દીર્ઘોઘ્યાન વા દીર્ઘમાર્ગ, ચાતુરન્ત ચતુર્વિભાગ,
 ચતુર્ગતિક, સસારએવ કાન્તાર દુર્ગમમાર્ગ તત્, તથા અનુપર્યટતિ પુનઃપુન
 ભ્રામ્યતીત્યર્થઃ ॥ ૩૩ ॥

મૂલમ્-તથા તે પથગવજ્ઞા પંચ અણગારસયા ઇમીસે
 કહાણ લદ્ધદ્ધા સમાણા અન્નમન્ન સદાવેતિ, સદાવિત્તા એવં
 વયાસી-સેલણ રાયરિસી પંથણં અણગારેણં સદ્ધિં વહિયા જાવ
 વિહરઈ, ત સેયં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । અમ્હ સેલયં ઉવસપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરિત્તણ, એવં સંપેહેતિ, સપેહિત્તા સેલય રાય ઉપસંપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરંતિ ॥ સૂચ ૩૪ ॥

હૈ, નિંદનીય હોતા હૈ, સ્તિસનીય હોતા હૈ, ગર્હણીય હોતા હૈ, પરિભ્ર-
 મનીય હોતા હૈ । તથા પરલોક મેં મી અનેક દણ્ડો કો પાતા હૈ । સસાર
 મેં વહ પરિભ્રમણ કરતા હૈ ।

સસાર પરિભ્રમણ સવન્ધી પાઠ યદા હસ પ્રકાર સે લગા લેના ચાહિયે ।
 "અણાહય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ"
 હસકા માર્ગ હસ પ્રકાર હૈ-એસા જીવ અનાદિ અનતરૂપ સસાર કાન્તાર
 મેં કિ જો ચતુર્ગતિરૂપ વિભાગ વાલા હૈ ઓર જિસકા માર્ગ યા કાલ
 ઘટુત દીર્ઘ હૈ ડસમેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરતા રહતા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૩ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, સ્તિસનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે,
 પરિભ્રમનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર
 થય છે તે સસારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ લખાયેલો જોઈએ (અણાહય
 અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે
 છે કે-ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનત રૂપ સસાર જાતારમા કે જેનો
 માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

ટીકા-‘તણ’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतमुखका अनगारा एकोनपञ्चशतसखका अनगारा इत्यर्थः । ‘इमीसे कहाए’ अस्या कथाया, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी । इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः । ‘लद्धट्ठा’ त्वभ्यार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः ‘अन्नमन्न’ अन्योन्य परस्पर ‘सदावेति’ शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं वह्नि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अभ्युज्जएण पक्वत्तेण पडिग्गहिएण जणवयविहार इति पाठस्य संग्रह अस्य व्याख्या प्रागुक्ता । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुमियाःअस्माकं शैलक शैलकराजर्षिम् ‘उवसपज्जित्ता उपसद्य=

‘तण ते पथगवज्जा’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(તણ) इसके बाद (ते पथगवज्जा पक्व अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्न सदावेति) वे पांथक वर्ज(५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजकृपि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए राघरिसी पथएण अणगारेण सद्धि वहिया जाव विहरइ) शैलक राजकृपि पांथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं ।

यहा यावत् शब्द से “ अभ्युज्जएण पक्वत्तेण पडिग्गहिएण जणवय विहार ” इस पाठ का संग्रह किया गया है । इन पदों की व्याख्या

(तण ते पथगवज्जा) इत्यादि !

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યાર બાદ (તે પથગવજ્જા પક્વ અણગારસયા ઇમીસે કહાણ લદ્ધટ્ઠા સમાણા અન્નમન્ન સદાવેતિ) પાથકને બાદ કરતા બીજા આરસો નવાણુ રાજકૃપિ શૈલકના શિષ્યોઓએ બ્યારે આ બધી વિગત બહુ ત્યારે ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિની અસિલાપા રાખતા તેઓએ એક બીજાને એક સ્થાને એકઠા થવા માટે બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને એક જગ્યાએ એકઠા થઈને તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા, (સેલણ રાઘરિસી પથણ અણગારેણ સદ્ધિ વહિયા જાવ વિહરઈ) કે શૈલક રાજકૃપિ પાથક અનગારની સાથે બહાર જનપદોમાં વિહાર કરી રહ્યા છે,

અહીં જે (યાવત્) શબ્દ છે તેનાથી (અભ્યુજ્જણેણ પક્વત્તેણ પડિગ્ગહિણેણ જણવયવિહાર) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે, આ પદોની

હીલનીયઃ નિન્દનીય સ્ત્રિસનીયઃ ગર્હનીયઃ પરિભ્રમનીય', મતિ ૧ । પરલોકેઽપિ ચ
 ચલુ આગચ્છતિ, પ્રાપ્નોતિ ઘટ્નિ દણ્ડાનાનિ 'સસારો માણિયગ્નો' સસારો મણિ
 સત્યઃ । સસારે ન પરિભ્રામ્યતિ અત્ર સસારપરિભ્રમણપાઠો વાચ્ય -યથા- ' અ
 ણાહ્ય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ ' અનાદિકમ્ અન-
 વદગ્મ્ અનન્ત દીર્ઘાદ્ધ દીર્ઘકાલ, દીર્ઘાધ્વાન વા દીર્ઘમાર્ગ, ચાતુરન્ત ચતુર્વિભાગ,
 ચતુર્ગતિક, 'સસારેવ કાન્તાર દુર્ગમમાર્ગ તત્, તથા અનુપર્યટતિ પુનઃપુન
 ભ્રામ્યતીત્યર્થઃ ॥ ૩૩ ॥

મૂલમ્-તથાં તે પથગવજ્જા પંચ અણગારસયા ઇમીસે
 કહાણ લદ્ધટ્ઠા સમાણા અન્નમન્ન સદાવેતિ, સદાવિત્તા એવં
 વયાસી-સેલણ રાયરિસી પંથણં અણગારેણ સદ્ધિં વહિયા જાવ
 વિહરઈ, ત સેયં ચલુ દેવાણુપ્પિયા । અમ્હ સેલયં ઉવસપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરિત્તણ, એવ સંપેહેતિ, સપેહિત્તા સેલય રાયં ઉપસપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરંતિ ॥ સૂણ ૩૪ ॥

હૈ, નિંદનીય હોતા હૈ, સ્ત્રિસનીય હોતા હૈ, ગર્હનીય હોતા હૈ, પરિભ્ર-
 મનીય હોતા હૈ । તથા પરલોક મેં મી અનેક દણ્ડો કો પાતા હૈ । સસાર
 મેં વહ પરિભ્રમણ કરતા હૈ ।

સસાર પરિભ્રમણ સવન્ધી પાઠ યદા હસ પ્રકાર સે લગા લેના ચાહિયે ।
 " અણાહ્ય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ "
 હસકા ભાવ હસ પ્રકાર હૈ-એસા જીવ અનાદિ અનતરૂપ સસાર કાન્તાર
 મેં કિ જો ચતુર્ગતિરૂપ વિભાગ વાલા હૈ ઓર જિસકા માર્ગ યા કાલ
 ઘટુત દીર્ઘ હૈ ડસમેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરતા રહતા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૩ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, સ્ત્રિસનીય હોય છે, ગર્હનીય હોય છે,
 પરિભ્રમનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર
 થય છે તે સસારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ બહુવેળે બોધ્યો (અણાહ્ય
 અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઠરત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટઈ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે
 છે કે-ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનંત રૂપ સસાર કાતારમા કે જેનો
 માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારંવાર એવ પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે ॥ સૂત્ર ૩૩ ॥

टीका-‘तएण’ इत्यादि-ततस्तदनन्तरं पान्थकवर्जः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतमुख्यका अनगारा एकोनपञ्चशतसख्यका अनगारा इत्यर्थः । ‘इमीसे कहाए’ अस्या कथाया, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी । इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः । ‘लद्धा’ लब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः ‘अन्नमन्न’ अन्योन्य परस्पर ‘सदावेति’ शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं गृहि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अबहुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिण जणवयविहार इति पाठस्य संग्रह अस्य व्याख्या प्राशुक्ता । तत्=तस्मात्, श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माकं शैलक शैलकराजर्षिम् ‘उवसपज्जित्ता उपसद्य=

‘तएण ते पथगवज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (ते पथगवज्जा पञ्च अनगारसया इमीसे कहाए लद्धा समाणा अन्नमन्न सदावेति) वे पाथक वर्ज५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ थे साधु जो शैलक राजकपि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पथएण अनगारेण सद्धि पहिया जाव विहरइ) शैलक राजकपि पाथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं ।

यहा यावत् शब्द से “अबहुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिण जणवय विहार” इस पाठ का संग्रह किया गया है । इन पदों की व्याख्या

(तएण ते पथगवज्जा) इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्थार भा६ (ते पथगवज्जा पञ्च अनगारसया इमीसे कहाए लद्धा समाणा अन्नमन्न सदावेति) पाथकने भा६ करता भीन्ना आरसेो नवाल्लु राजकपि शैलकना शिष्योओओ व्यारे आ भधी विगत नल्लो त्थारे धन्धित अर्थनी प्राप्तिनी अल्लिवापा राणता तेओओ ओक भीन्नाने ओक र्थाने ओकठा थरा भाटे ओलाव्या (सदावित्ता एव वयासी) ओलावीने ओक जग्ग्याओ ओकठा थधने तेओ विचार कग्वा लाव्या, (सेलए रायरिसी पथएण अनगारेण सद्धि पहिया जाव विहरइ) के शैलक राजकपि पाथक अनगारनी साथे भडार जणपदोभा विडार करी रह्या थे,

अही ने (यावत्) शब्द छे तेनाथी (अबहुज्जए ण पवत्तेण पडिग्ग हिण जणवयविहार) आ पाठनेो सअड थयो छे, आ पदोनी

ઉપગત્ય તદાજ્ઞામદ્વીકૃત્ય વિહર્તુ જનપદવિહાર ક્તુમિત્યર્થઃ । એવ યમુના પ્રકા
રેણ સપ્રેક્ષન્તે, પરસ્પર પર્યાલોચયન્તિ, સપ્રેક્ષ્ય પર્યાલોચ્ય શૌલક 'રાય' રાજાન
રાજર્ષિમિત્યર્થ ઉપસપથ-ઉપેત્ય તદાજ્ઞામાદાય વિહરન્તિ ॥ ૩૪ ॥

મૂલમ્-તદ્દેશં સેલય પથગપામોક્ત્વા પંચ અણગારસયા
વહૂણિ વાસાણિ સામન્તપરિયાગ પાઠગિત્તા જેનેવ પોંડરીયે પઠ્વય
તેનેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા જહેવ યાવચ્ચાપુત્તે તહેવ
સિદ્ધા । એવામેવ સમણાસો જો અમ્હ નિગ્ગંથો વા નિગ્ગંથી
વા જાવ વિહરિસ્સઙ્ગ ।

એવ ચ્છલુ જંબૂ । સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સંપ-
ત્તેણં પંચમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પપ્પત્તેત્તિ વેમિ ॥૩૫॥

॥ પચમ ણાયઙ્ગયણ સમત્ત ॥

પહિલે કર દી ગઈ હૈ ! (ત સેય ચ્છલુ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હ સેલય ઉવ
સપગ્ગિત્તા ણં વિહરિત્તણ) હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! અવ હમ લોગો કો
યહી ઉચિત્ત-કલ્યાણ કારક-માર્ગ હૈ કિ હમ સવ ઉન્ શૌલક રાજક્રષિ
કી આજ્ઞા કો અગીકાર કર બાહર જનપદોં મે વિહાર કરેં ।

(એવ સપેહેતિ) હસ પ્રકાર ઉન્હોને વિચાર ક્રિયા- (સપેહિત્તા
સેલય રાય ઉપસપગ્ગિત્તાણ વિહરતિ) વિચાર કર વે સવ કે સવ
શૌલક રાજા-રાજક્રષિ કે પાસ પહુંચે ઓર ઉનકી આજ્ઞા લેકર વિહાર
કરને લગે । સૂત્ર ॥ ૩૪ ॥

બ્યખ્યા પહેલા કરવામા આવી છે (ત સેય ચ્છલુ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હ સેલય
સવસપગ્ગિત્તાણ વિહરિત્તણ) એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા માટે એજ
હિતાવશ છે કે અમે બધા તે શૌલક રાજક્રષિની આજ્ઞા મેળવીને બહાર ના
જનપદોમા વિહાર માટે નીકળીએ

(એવ સપેહેતિ) આ પ્રમણે વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા સેલય રાય ઉપસપ
ગ્ગિત્તાણ વિહરતિ) વિચાર કરીને તેઓ બધા શૌલક રાજક્રષિની પાસે ગયા
અને તેમની આજ્ઞા મેળવીને વિહાર કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु 'सेलए' शैलकराजर्षिः 'पथगपामोक्त्वा' पान्थकप्रमुखाः, 'पच' पञ्च, 'अणगारसया' अनंगारशतानि, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियाग' श्रामण्यपर्याय 'पाउणिता' पालयित्वा यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकपर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथैव स्थापत्यापुत्रः सिद्धस्तथैव सिद्धः । मासिकीं सलेखना कृत्वा केवलीभूता सिद्धा मुक्ता जाता इत्यर्थः ।

एवमेव शैलकराजर्षिदेव, हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावद् प्रमाद परित्यज्य अभ्युद्यतेन सोद्यमेन प्रदत्तेन तीर्थकरानुज्ञा

‘तएणं सेलए पथगपामोक्त्वा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके पाद (सेलए) वे शैलक राजऋषि और (पथगपामोक्त्वा पच सय अणगारसया) पाथक प्रमुख पाँचसौ अनंगार (बहूणि वासाणि) अनेक वर्षों तक (सामन्नपरियाग पाउणिता श्रामण्यपर्याय का पालन करके (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) जहाँ पुण्डरीक पर्वत था वहाँ आये । (उवागच्छित्ता जहेव धावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) वहाँ आकर स्थापत्यापुत्र अनंगार की तरह १ मास की सलेखना कर केवली होकर मुक्त हो गये । अर्थात् सिद्ध हो गये ।

(एवा मेव समणाउसो जो अम्म निर्गन्धो वा निग्गन्धी वा जाव विहरिस्सइ) इसी तरह शैलक राजऋषि की तरह—(समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्म निर्गन्धो वा निग्गन्धी वा जाव विहरिस्सइ) जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण और निर्ग्रन्थ सा बीजन यावत् प्रमाद

(तएण सेलए पथगपामोक्त्वा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार आइ (सेलए) शैलक राजऋषि अने (पथगपामोक्त्वा पच अणगारसया) पाथक प्रमुख पाथसो अनंगार (बहूणि वासाणि) धण्डा वर्षों सुधी (सामन्नपरियाग पाउणिता) श्रामण्य पर्यायतु पालन करीने (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) जहाँ पुण्डरीक पर्वत छेतो त्था आओ (उवागच्छित्ता जहेवयावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) त्था आपीने स्थापत्यापुत्र अनंगारनी जेम ओक मासनी सलेखना करीने जेवणी थई मुक्ता थई गया ओटले के तेओ सिद्ध थया

(एवामेव समणाउसो जो अम्म निर्गन्धो वा निग्गन्धी वा जाव विहरिस्सइ) आ प्रमाणे शैलक राजऋषिनी जेम (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्म निर्गन्धो वा निग्गन्धी वा जाव विहरिस्सइ) जे अमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अने निर्ग्रन्थ साध्वी जन प्रमाद वेगेरेने त्यज्जने मोक्ष प्रदत्त-तीर्थकरानुज्ञा

વિતેન ગુરુપદિષ્ટેન, પ્રગૃહીતેન તીર્થકરૈરગ્નીકૃતેન જનપદવિહારેણ વિહસિષ્યતિ સો
 ડનગાશ્ચતુર્વિધસધસ્યાર્ચનીયો ચન્દનીયોભૂત્યા યાવત્ સસારસ્થાન્ત કૃત્યા મોક્ષ-
 ગામી ભવિષ્યતિ ॥

एव खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् समाप्तेन सिद्धिगतिं
 गतेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=उत्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्त=रूपित । इति ब्रवी-
 मि=अस्य व्याख्यापूर्वम् ॥

જો ઓસનો ય પાસ થો કુમીઓ ત્રિ પમાયઓ ।

સવેગા ઉઝ્જઓ દોઝના સિદ્ધો સો શેઝઓ જહા ॥ ૧ ॥

छाया-योऽवसन्नश्च पार्श्वस्थः कुशीजोऽपि प्रमादतः ।

સવેગાદુદ્યતથેત્ સ્યાત્ પિદ્ધોઽમૌ શૈલકો યયા ॥ ૧ ॥ ૩૬ ॥

इति श्री-विश्वखित्वात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलितकलितक-
 लापालापक-प्रविशुद्धगयपद्यनैरुग्रन्यनिर्माणक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूठ
 त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज
 गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाह-
 त्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-
 षिण्याख्याया व्याख्याया पञ्चममध्ययन सपूर्णम् ॥

કા પરિત્યાગ કર સોચમ પ્રદત્ત-તીર્થ કરાનુજાપિત-ગુરુપદિષ્ટ ઓર
 પ્રગૃહીત-તીર્થ કરો દ્વારા અગીકૃત ક્રિયે ગયે એસે જનપદ વિહાર સે યુક્ત
 હોગા વહ જનગાર ચતુર્વિધ સધકા અર્ચનીય વદનીય હોકર યાવત્
 સસાર કા અન્ત કર મોક્ષ ગામી હોગા ।

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवता महावीरेण जाव सपत्ते ण
 पंचमस्स णायज्झयगस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिवेमि) इस प्रकार हे जम्बू !
 श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धगति को प्राप्त कर चुके हैं
 इस पांच वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त किया है ।
 ऐसा मैं कहता हूँ “ इति ब्रवीमि ” इन पदों की व्याख्या पहिले की

ગુરુપદિષ્ટ અને પ્રગૃહીત તેમજ તીર્થ કરો દ્વારા સ્વીકૃત એવા જનપદ વિહારથી
 યુક્ત થશે તે જનગાર ચતુર્વિધ સધનો અર્ચનીય, વદનીય થઇને યાવત્
 સસારનો અન્ત કરીને મોક્ષપદ મેળવશે

एव खलु जम्बू ! समणेण भगवता महावीरेण जाव सपत्ते ण पंचमस्स णाय
 झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) આરોતે હે જમ્બૂ ! સિન્ધ ગતિ પામેલા
 ભગવાન મહાવીરે આ જ્ઞાતા અધ્યયનના પાથમાં અધ્યયનનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત
 કર્યો છે આમ હું તને વહુ છું ‘ इतिब्रविमि ’ આ પદોની વ્યાખ્યા

गई व्याख्या के अनुसार ही जानना चाहिये । इस सग्रह श्लोक का अर्थ इस प्रकार है—जो प्रमाद से अवसन्न पार्श्वस्थ तथा कुशील हो जाता है वह साधु-अनगार-सवेगभाग से अपने चरित्र में उद्यमशील होकर शैलक राजऋषि की तरह सिद्ध पदका भोक्ता हो जाता है । सूत्र ॥ ३५ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत “ज्ञानाधर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का पाचवा अ-ध्ययन समाप्त ॥ ५ ॥

પહેલા કરવ મા આવી છે આ મગ્ધ શ્લોકનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કે જે પ્રમાદથી અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ તેમજ કુશીલ થઈ જાય છે, તે માધુ (અનગાર) સવેગ ભાવની પોતાના ચરિત્રમાં ઉદ્યમશીલ થઈને શૈલક રાજઋષિની જેમ સિદ્ધ પદને મેળવનાર થાય છે ॥ શૂત્ર ‘ ૩૫ ’ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘામીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાનાધર્મકથાંગ સૂત્રની અનગાર ધર્માભૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ પાચમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૫॥

અથ ષષ્ઠમધ્યયન પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પञ્ચમાધ્યયન-સપતિ ષષ્ઠમારમ્ભ્યતે અસ્યાય પૂર્વેણ મહામિસમ્બન્ધઃ પञ્ચ
માધ્યયને પ્રમાદવતોઽનર્થપાત્તિઃ અપમાદયતશ્રગુણઃઅત્રાપિ તાવેવ દોષગુણી કથ્યે
તે इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिमसूत्रम् ।

મૂલમ્—જહ્ણં ભતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પંચમસ્સ
ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે છદ્દસ્સ ણં ભતે ! નાયજ્ઞ-
યણસ્સ સમણેણં જાવ સપત્તેણં કે અદ્દે પન્નત્તે ?, એવ ચ્છલ્લ
જંદુ ! તેણં કાલેણં તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણં પરિસા
નિગ્ગયા । તેણં કાલેણ તેણં સમણ સમણસ્સ જેદ્દે અતેવાસી
ઇદમ્મૂઠ્ઠં અદૂરસામતે જાવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ ॥સૂ.૦૧॥

છઠા અધ્યયન કા પ્રારમ્ભ-

પાંચવાં અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા હૈ । અવ છઠા અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ કિ
પાચવે અધ્યયન મેં જો એસા કહા ગયા હૈ કિ પ્રમાદ યુક્ત અનગાર કો
અનેક અનર્થો કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ તથા જો પ્રમાદ સે રહિત હોતે હૈ ઉન્હૈ
અનેક ગુણો કા લાભ હોતા હૈ સો હસ અધ્યયન દ્વારા ઉન્હૈં દોષ ઓર
ગુણો કા કથન કિયા જાવેગા હસી સબધ કો લેકર યહ અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હુઆ હૈ । હસ કા આદિ સૂત્ર યહ હૈ—(જહ્ણં ભતે ! સમણેણં इत्यादि ।

છઠા અધ્યયનનો પ્રારભ-

પાચમા અધ્યયન પછી આ છઠ્ઠા અધ્યયન પ્રારભ થાય છે પાચમા
અધ્યયનમા આ પ્રમાણે નિરૂપણ કરવામા આન્યુ છે કે પ્રમાદિ અનગાર ઘણા
અનર્થો મેળવે છે તેમજ જે આ પ્રમાદિ હોય છે તે ઘણા ગુણો પ્રાપ્ત કરે
છે તો હવે આ અધ્યયનમા તે ગુણો અને દોષોનુ કથન વર્ણવવામા આવશે
પાચમા અધ્યયનની સાથે આ છઠ્ઠા અધ્યયનનો એ જ સબધ છે આ સ
બધને વિચારવાના ઉપક્રમથી જ આ અધ્યયન શરૂ થયું છે છઠ્ઠા અધ્યયન
નુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—જહ્ણં ભતે ! સમણેણં इत्यादि ।

टीकार्थ—‘जइण भंते इत्यादि, यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः पष्ठस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरण, परिपत् निर्गता, तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ३ ज्येष्ठेऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धर्मध्यानोपगतो विहरति ॥सू० १॥

टीकार्थ—(भते) हे भदन्त (जइण) यदि (जाव सपत्तेण समणेण) भुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने (पचमस्स णायज्झयणस्स) पाचवे ज्ञाता ययन का (अयमट्ठे पन्नत्ते) यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते) वही भुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ।

(एव खलु जम्बू ।) इस प्रकार जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उन से इस तरह कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—

(तेण कालेण तेण समणं रायगिहे समोसरणं परिस्स निग्गया) उस काल और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ । भगवान् के आगमन की बात सुनकर राजगृह नगर से परिपद उन को बदना करने के लिये उनके समिप पहुँची (ते ण कालेण तेण समणं) उक्तकाल और उस समय में (समणस्स जेट्ठे अत्तेवासीइ

टीकार्थ—(भते) हे भदन्त ! (जइण) ने (जाव सपत्तेण समणेण) भुक्ति भेगवेला श्रमण भगवान् महावीर (पचमस्स णायज्झयणस्स) पाचमा ज्ञाताध्ययनने (अयमट्ठे पन्नत्ते) आ पूर्वोक्त अर्थ निरूपित कर्था ठे तो (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?) भुक्ति भेगवेला श्रमण भगवान् महावीर छठे ज्ञात व्ययनने शो अर्थ प्ररूपित कर्था छे ? (एव खलु जम्बू !) जम्बू स्वामीना आगतना प्रश्नने आलणीने जवाण आपता सुधर्मा स्वामी तेभने उडेवा लाज्या छे छे जम्बू ! तभारा प्रश्न ने उत्तर सालणे।

(तेण कालेण तेण समणं रायगिहे समोसरणं परिस्स निग्गया) ते काले आने ते साथे राजगृह नगरमा भगवान् महावीर पधायो भगवान् महावीर स्वामीना आगमननी जालु थता तेभने बदना करवा भाटे राजगृह नगरथी परिपद नी गी (तेण कालेण तेण समणं) ते काले आने ते वअने (समणस्स जेट्ठे अत्तेवासी इदमई अदूरसाग्गे जाव धम्मज्झाणोवगप

मूलम्—तएण से इंदभूई जायसहुं० समणस्स३ एवं वयासी
 —कहणं भते। जीवा गुरुयत्त वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छति?
 गोयमा । से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्क तुव णि-
 च्छिड्ड निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं
 लिपइ लिपित्ता उण्हे दलयइ, सुक्कं समाण दोच्चपि दब्भेहि
 य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेण लिपइ लिपित्ता उण्हे
 सुक्क समाणं तच्चपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टि-
 यालेवेण लिपइ । एवं खलु एएणुवाएणं अतरा वेढेमाणे
 अंतरा लिपेमाणे अतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्टहि मट्टियालेवेहि
 आलिपइ, अत्थाहमत्तारमपोरिसियसि उदगसि पविस्सवेज्जा, से
 णूण गोयमा । से तुवे तेसि अट्टण्ह मट्टियालेवाण गुरुयत्ताए
 भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए उप्पि सलिलमाइवइत्ता अहे
 धरणियलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा । जीवा वि पाणाइ-
 वाएण जाव मिच्छादसणसल्लेणं अणुपुब्बेण अट्टकम्मपग-
 ढीओ समज्जिणति, तासि गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारिय-
 त्ताए कालमासे काल किञ्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरग-
 तल पइट्ठाणा भवति, एव खलु गोयमा । जीवा गुरुयत्त
 हव्वमागच्छति ॥ सू० २ ॥

दभूई अदूरसामते जाव घम्मज्झाणोवगए विहरइ) अमण भगवान्
 महावीर के प्रधान अ तेवासी जिनका नाम इन्द्रभूतिथा उचित स्थान परबेठे
 हुए धर्म ध्यान में तल्लीन थे । सूत्र-१

विहरइ) श्रमणु भगवानना प्रधान अ तेवासी इन्द्रभूति उचित स्थाने जेठेला
 धर्म ध्यानमा तल्लीन छेता ॥ सूत्र १ ॥

टीकार्थ—ततः खलु स इन्द्रभूतिः जातश्रद्धः ० श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण—अवादीत् कथं खलु भदन्त ! जीवाः 'गुर्यत्त' गुरुकत्व—अधोगमनस्वभावकत्वं च 'लहुयत्त' लघुकत्व—उर्ध्वगमनस्वभावकत्वं 'हव्व' मागच्छइ हव्वमागच्छन्ति = भगवान् महावीरस्वामी दृष्टान्तप्रदर्शनं पुरः सरमुत्तरमाह—' गोयमा ' इत्यादि । गौतम ! ' से ' अथ, ' जहानामए ' यथानामकः=यत्किंचिन्नामकः, एकं महत् शुष्कं तुम्बं निच्छिद्द=च्छिद्वर्जितं ' निरुवह्य निरुपहत=वातादिकृतविकाररहितम् । अविशीर्णम् अविदारितमित्यर्थः दम्भेः= डाभनाम्ना मसिद्धैस्तृणविशेषैः, कुशैः स्वनामविख्यातैस्तृणविशेषैः, वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकाशेपेन ' लिपड ' लिम्पति=लिप्तं करोति ' लिपित्ता ' लिप्त्वा ' उण्हे ' उण्णे—' सूर्यातपे ' ददाति=धारयति, शुष्कं सत् द्वितीयं मपि=द्वितीयं

' तएणसे इदभूई जाय सड्डे ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इनके बाद (से इदभूई जाय सड्डे०) उन इन्द्रभूति ने कि जिन्हें प्रभु के ऊपर-अपूर्व श्रद्धा है (समणस्स ३ एव वयासी) श्रमण भगवान् महावीर से इस प्रकार पूछा—(कहण्ण भते ! जीवा गुर्यत्तवा लहुयत्तवा हव्वमागच्छति) हे भदन्त जीव कैसे भारी अधोगमन करने के स्वभाव को और कैसे लघु स्वभाववाले उर्ध्व गमन करने के स्वभाव को प्राप्तकरते हैं ? उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् दृष्टान्त पूर्वक इस प्रकार देते हैं—

(गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग मह सुक्क तुव निच्छिद्द निरुवह्य दम्भेहिं कुसेहिं वेडेइ, वेडित्ता मड्डियालेवेण लिपड, लिपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष एक बड़ी सी निच्छिद्द, वातादि

' तएण से इदभूई जाय सड्डे ' इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाह (से इदभूई जाय सड्डे) प्रभु उपर श्रद्धा धरावनार इन्द्रभूतिओ (समणस्स ३ एव वयासी) श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे प्रश्न पूछयो (कहण्ण भते ! जीवा गुर्यत्तवा लहुयत्तवा हव्वमा गच्छति) हे भदन्त ! लारे अधोगमन करनार स्वभावने तेमज उर्ध्वगमन करनार लघु स्वभावने एव उची रीते भणवे छे ? तेमना आ प्रश्नो जवाण भगवान् महावीर स्वामी दृष्टान्त साथे आ प्रमाणे आपे छे

(गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह सुक्क तुव निच्छिद्द निरुवह्य दम्भेहिं कुसेहिं वेडेइ वेडित्ता मड्डियालेवेण लिपड लिपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जेभ केई भाणुस जेक भेटी निच्छिद्द वातादिविकार

પારમપિ દર્ભેશ્વ કુશૈશ્વ વેદ્યપિ, વેદ્યિત્વા મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ. । લિમ્પ્યા ઉપ્પે
દદાતિ, શુષ્ક સત્ તતીયમપિ=તૃતીયપારમપિ દર્ભેશ્વ કુશૈશ્વ વેદ્યપિ, વેદ્યિત્વા
મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ । એ સ્વલુ 'એણુવાણં' પનેનોપાયેન, અન્તરા=મધ્યે,
વેદ્યન, અન્તરા=મધ્યેન લેપયન, અન્તરા=મ'યે શોષયન, યાત્ અટ્ટમિર્મૃત્તિ
કાલેપૈઃ આલિમ્પતિ=સમન્તાલિપ્ત કરોતિ, 'અત્યાહ' અન્તાયે=સ્તાથ યાતિજલે
નાસિકા ન ઘટતિ તાત્ સ્તાથ ગાથ, સ્તાપમિતિ નન્મમાસ' તસ્મિન્ અગાધે
ઽતિ ગમ્ભીરે ઇત્યર્થઃ, અથવા-'અત્યાહ' અય દેશીશન્દ અગાધાર્થઃ', આર્પત્વાત્
સમ્પ્રયર્થે પ્રથમા, 'અતાર' અતારે તરીતુમશન્યે, 'અપોરિસિયસિ અપોરુપિકે=
પુરુષઃ પ્રમાણમસ્યેતિ પૌરુષિક, ન પૌરુષિકમિત્યપૌરુષિક તસ્મિન્ પુરુષપ્રમાણાદ
ધિકે, પુરુષૈરગાથે 'ઉદગંતિ' ઉદકે=જલે 'પવિત્રવેજ્ઞા' પ્રસિપતિ ।

કૃતવિકાર રહિત, પેસીપૂરી-૦કિ જો ફટી તુઝી નહિં હૈ તુઝી કો દર્મા
સે ઓર કુશોં સે વેદિત કરતા હૈ, ઓર વેદિતકર ફિરઉસે મિટ્ટી કે
લેપ સે લપેટ દેતા હૈ-લપેટ કર ઉસે ધૂપ મે સુકાના હૈ (સુષ્ક સમાણ
દોચ્ચપિ દઃખેહિય કુસેહિય- વેદેહ, વેદિત્તા મદિયાલેવેળલિપહ, લિપિત્તા
ઉળે સુષ્ક સમાણ તચ્ચપિ દઃખેહિય કુસે હિય વેદેહ, વેદિત્તા
મદિયા લેવેળે લિપહ) જન વહ અચ્છી તરહ શુષ્ક હો જાતી હૈ
તથ દુબારા મી વહ ઉસે દર્મ ઓર કુશોં સે પરિ વેદિત કરતા હૈ
ઓર પરિવેદિત કર કે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ-
લેપકર પહિલે કી તરહ ફિર ઉસે ધૂપ મે સુઘવને કે લિયે રખ દેતા
હૈ । સુઘ જાને પર ઉસે પુનઃ તૃતીય વાર દર્મ ઓર કુશોં સે વેદિત
કરતા હૈ । વેદિત કરકે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ (એ
સ્વલુ એણ વાણ અતરા વેદેમાણે અતરા લિપેમાણે અતરા સુષ્કવે-
માણે જાવ અટ્ટહિં મદિયાલેવેહિ આલિપહ, અત્યાહમતારમપોરિસિયસિ

રહિત વગર તૂટેલી તુળીને દાલ તેમજ કુશથી વીટી લે છે અને ત્યાર
બાદ માટીથી તેની આસ પામ લેપ કરે છે અને તેને તાપમા
સુકવે છે (સુષ્ક સમાણ દોચ્ચપિ દઃખેહિય કુસેહિય વેદેહ, વેદિત્તા મદિયાલે
વેળલિપહ, લિપિત્તા ઉળે સુષ્ક સમાણ તચ્ચપિ દઃખેહિય કુસેહિય વેદેહ, વેદિત્તા
મદિયાલેવેળ લિપહ) બ્યારે તુળી સારી રીતે સુકાઈ જાય ત્યારે
બીજી વખત પણ તેને દાલ અને કુશથી વીટાળીને ફરી તેના ઉપર માટીનો
લેપ કરે છે લેપ ક્યાં બાદ તેને તાપમા મૂકે છે આમ સુઘ ગયા બાદ
ત્રીજી વખત દાલ અને કુશથી વીટાળીને માટીનો લેપ કરે છે (એ સ્વલુ
એણુવાણ અતરા વેદેમાણેઅતરા લિપેમાણે અતરા સુષ્કવેમાણે જાવ અટ્ટહિં
મદિયાલેવેહિ આલિપહ અત્યાહમતારમપોરિસિયસિ વ્યવધિ પવિત્રવેજ્ઞા) આ

અવ=નૂન=નિશ્ચયેન । તત્તુમ્ય તેપામટાના મૃત્તિકાલેપાના સમ્બન્ધાદ્ ‘ગુરુ-
યયા’ ગુરુકૃતયા ‘મારિયયા’ મારિકૃતયા દર્મકુશમૃત્તિકાનાં ભારેણ મારા
ક્રાન્તાતયા, અતઃ—‘ગુરુમારિયયા’ ગુરુમારિકૃતયા ઉક્ત હેતુદ્વયસ્ય
સદ્ભાવેન શીઘ્રનિમજ્જનસ્વભાવતા પ્રદર્શિતા ઉપરિ સલિલમતિવ્રજ્ય=અતિક્રમ્ય
પરિત્યજ્ય અધો=નીચે ધરણીતલપ્રતિષ્ઠાન=પૃથ્વીતલ પ્રતિષ્ઠાનમાગારો यस્ય તત્
ભવતિ=ભૂમિતલમાશ્રિત્ય તિષ્ઠતીત્યર્થઃ ।

અથએવ ગૌતમ ! જીવા અપિ પ્રાણાતિપાતેન યાવદ્ મિચ્છાદર્શનશલ્યેન આનુ-
પુર્યા અષ્ટકર્મપ્રકૃતિઃ સમર્જયન્તિ, તામા ગુરુકૃતયા મારિકૃતયા ગુરુમારિકૃ

ઉદગસિ પક્ષિલેખા) આ તરફ કે ઉપાયસે ઘીચ ૨ મેં લેખિત કર
ઘીચ ૨ મેં લિપકર ઘીચ ૨ મે સુકા કર જન આઠ ચાર મિટ્ટી કે લેપ
સે ઉસે વહ લિપ કર ચુકતા હૈ ઓર વાદ મે ઉસે અગાધ ગહરે પાની
મેં કિ જો અતાર તયા પુરુષ પ્રમાણ સે અધિક હૈ ઢાલ દેતા હૈ ‘અત્યાહ’
યહ દેશીય શબ્દ હૈ ઓર ઇસકા અર્થ અગાધ હોતા હૈ (સે જૂળ ગોયમા
સે તુલે તેસિ અટ્ટહ મદિયાલેવાળ ગુરુયાત્તાય મારિયત્તાય ગુરિયમારિ
યત્તાય ઉપિ સલિલમદ્વચ્છા અહે ધરણિયલપદ્મોળે ભવહ) તો
નિશ્ચય સે હૈ ગૌતમ ! વહ તુમી ડન આઠ ચાર કે મિટ્ટી કે લેપો કે
સઘર સે ગુરુ હો જાને કે કારણ ઓર ૮ ચાર કે દર્મ કુશોં કે માર
સે વજન દાર હો જાને કે કારણ જૈસે શીઘ્ર હી ડપર મેં પાની કો
છોડ કર નીચે પાની કે બેઠ જાતી હૈ (અવામેય ગોયમા !) ઇસી
તરફ હૈ ગૌતમ ! (જીવા ત્રિ પાણાદિવાણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણ
અણુપુન્નેણ અદ્દકમ્મ પગહીઓ સમજ્જિજાતિ) જીવ મી પ્રાણાતિપાતયા

પ્રમાણે તુળીને આઠ વખત દાહ અને કુશોળી વીટાળીને તયા આઠ વખત
માટીને લેપ કરીને તાપમા સુઢવે છે ત્યાર બાદ તેને ઉડા ‘અતાર’ તેમજ
પુરુષ પ્રમાણ કરતા વધારે ઘેરા પાણીમા નાખીદે છે (અત્યાહ) આ દેશીય
શબ્દ છે અને તેનો અર્થ અગાધ હોય તે (સે જૂળ ગોયમા ! સે તુલે તેસિ
અટ્ટહ મદિયાલેવાળ ગુરુયાત્તાય મારિયત્તાય ગુરિયમારિયત્તાય ઉપિ સલિલમદ્વ
ચ્છા અહે ધરણિયલપદ્મોળે ભવહ) હૈ ગૌતમ ! પાણીમા નાખેલી તે તુળી
આઠ વખત માટીના લેપથી ભારે થઈ જવાને કારણે તેમજ આઠ વખત દાહ
તયા કુશળા ભારથી ભારે થઈ જવાને લીધે પાણીમા નાખતાની સાથે જ
પાણીમા નીચે જતી રહે છે અર્થાત્ ડૂબી બય છે (અવામેય ગોયમા !) આ
પ્રમાણે હૈ ગૌતમ ! (જીવા ત્રિ પાણાદિવાણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણ
અણુપુન્નેણ અદ્દકમ્મ પગહીઓ સમજ્જિજાતિ) એવ પશુ પ્રાણાતિપાત યાવત્

તયા કાલમાસે કાલ કૃ-યા ધરણીતલમતિગ્રજ્ય યો નરમત્તમપ્રતિષ્ઠાના ભવન્તિ, નરકાદૌ પતન્તીત્યર્થઃ, એવં સ્વલુ ગૌતમ ! જીવા ગુરુત્વ હવ્યમાગચ્છતિ શીઘ્ર માપ્નુવન્તિ, યસ્મિન્સમયે પ્રાણાતિપાતાદિક કુર્વન્તિ, તસ્મિન્નેવ સમયે ગુરુત્વ મા પ્તુવન્તીતિ હવ્ય શબ્દો દ્યોતયતિ ॥ સૂત્ર ૨ ॥

મૂલમ્—અહણં ગોયમા સે તુવે તાસિ પઢમિલ્લુગસિ મદ્દિ યાલેવસિ તિન્નંસિ કુહિયસિ પરિસડિયસિ ઇસિ ધગણિયલાઔ ઉપ્પઙ્ગત્તાણ ચિટ્ઠઙ્ગ, તણ્ણતર ચ ણં દોઞ્ચપિ મદ્દિયાલેવે જાવ ઉપ્પઙ્ગત્તાણ ચિટ્ઠઙ્ગ, એવં સ્વલુ ણ્ણં ઉવાણ્ણ તેસુ અદ્ધસુ

વત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય સે ક્રમર કર અષ્ટકર્મોંની પ્રકૃતિયોંનો ઉપાર્જન કરતો રહે જિત કરતે રહેતે હૈં । અર્થાત્ ઉન સે વધતે રહેતે હૈં—(તાસિ ગુરુત્ત્વાય ભારિયત્તાય ગુરુયભારિત્તાય કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલ મદ્વદ્વત્તા અદ્દ નરગતલપદ્ધાના ભવતિ, એવં સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુત્ત્વ હવ્ય-માગચ્છતિ) ઉન પ્રકૃતિયોંનો પૌદ્ગલિક હોનેકે કારણ ગુરુ ઓર ભારી હોને સે યે કર્મ વધ વાલે જીવ ભી ગુરુ ઓર ભારી હો જાતે હૈં ઇસ લિયે વે કાલ માસ મે કાલ કરતે હૈં તય ધરણિયલ નો અતિક્રમણ કર નીચે નરકતલ મે પ્રતિષ્ઠિત હોજાતે હૈં ।

ઇસ તરહ હે ગૌતમ । જીવ જિસ સમય પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મોંનો કરતે હૈં ઊસી સમય મેં વે ગુરુત્વ અવસ્થા નો પ્રાપ્તહો જાતે હૈં યહ્યાત હવ્ય શબ્દ સે દ્યોતિત હોતી હૈં । સૂત્ર “ ૨ ”

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોંની પ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કરતો રહે છે એટલે કે આઠ કર્મોંથી જીવ બધાનો બચ છે (તાસિ ગુરુત્ત્વાય ભારિયત્તાય ગુરુયભારિત્તાય કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલમદ્વદ્વત્તા અદ્દ નરગતલપદ્ધાના ભવતિ એવં સ્વલુ ગોયમા ! જીવા ગુરુત્ત્વ હવ્યમાગચ્છતિ) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોંની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એવા માટે તેમનાથી આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ બચ છે એથી તે જીવો કાળ માસમા કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનું અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે નરક તાગમા અવસ્થિત થઈ બચ છે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મોં કરે છે તે સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત ‘હવ્ય’ શબ્દ થી જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્કવધને અહે ધરણિયલમહવ-
ઇત્તા ઉપ્પિ સલિલતલપટ્ટઢાણે ભવહ ।

एवामेव गोयमा । जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव
मिच्छादसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ
खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग्गपट्टाणा भवांति, एव
खलु गोयमा । जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छंति, एव खलु जंबू ।
समणेण भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे
पन्नत्ते त्ति वेमि ॥ सू० ३ ॥

॥ छट्ठं नायज्झयणं सम्मत्त ॥ ६ ॥

ટીકા—અથ સ્વલુ ગૌતમ ! તત્તુમ્બ તસ્મિન્ ‘ પઢમિલ્લુગસિ ’ પ્રથમે મૃતિ
કાલેપે ‘ તિન્નસિ ’ સ્થિતિમિતે-આર્દ્રતા પ્રાપ્તે તતઃ ‘ કુહિયસિ ’ કથિતે-વિનષ્ટે
‘ પરિસહિયસિ ’ પરિશદિતે-વન્ધનમુક્તે સત્તિ, ઈષત્=સ્તોક ધરણીતલાદ્ ઉત્પત્ય-
ઉર્ધ્વોઘ્રૂય સ્વલુ તિષ્ઠતિ । તતોઽનન્તર ચ સ્વલુ દ્વિતીયેઽપિ મૃત્તિકાલેપે યાવદુત્પ-

‘અર્હ્ણ ગોયમા’ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ- (अहण गोयमा) हे गौतम । जैसे (से तुवे तसि पढमि
ल्लुगसि मदियालेवसि तिन्नसि कुहियसि परिसहियसि ईसिं धरणिय
लाओ उप्पइत्ताण चिट्ठह) वह तुची अपने ऊपर का पहेला लेप जब
आर्द्र (गिला) हो जाता है, कूथित-विनष्ट-हो जाता है-परिशदित
वधन मुक्त हो जाता है तब नीचे से कुछ ऊपर को उठ जाती
है (तयणतरच्च ण दोच्चपि मदियालेवे जाव उप्पाइत्ताण चिट्ठह

(અહણ ગોયમા ।) ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ- (अहण गोयमा) हे गौतम ! जेभ (से तुवे तसि पढमिल्लु
गसि मदियालेवसि तिन्नसि कुहियसि परिसहियसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताण
चिट्ठह) पाणीभा रूणी गयेली तुणीनी उपरने पडेले लेप न्यारे पाणीथी आर्द्र
थई नय छे-कूथित-नाश-प्राप्ते छे, परिशदित-वध मुक्ता थई नय छे त्यारे
ते नीचेथी कछक थोडी उपर आवे छे, (तयणतर च ण दोच्चपि मदियालेवे

તયા કાલમાસે કાલ કુ-યા ધરણીતલમતિવ્રજ્ય અથો નરકતલપ્રતિષ્ઠાના ભવન્તિ, નરકાદૌ પતન્તીત્યર્થઃ, એવ સ્વલુ ગૌતમ ! જીવા ગુરુત્વ હવ્યમાગચ્છતિ શીઘ્ર પ્રાપ્નુવન્તિ, યસ્મિન્સમયે પ્રાણાતિપાતાદિક કુર્વન્તિ, તસ્મિન્નેવ સમયે ગુરુત્વ મા પ્રુવન્તીતિ હવ્ય શબ્દો ધોતયતિ ॥ મૂ૦૨ ॥

મૂલમ્—અહણં ગોયમા સે તુવે તંસિ પઢમિલ્લુગસિ મદ્દિ-
યાલેવસિ તિન્નંસિ કુહિયસિ પરિસડિયંસિ ઇસિં ધગ્ણિયલાઔ
ઉપ્પઙ્ગત્તાણ ચિટ્ઠઙ્ગ, તણ્ણંતર ચ ણં દોઙ્ગંપિ મદ્દિયાલેવે જાવ
ઉપ્પઙ્ગત્તાણ ચિટ્ઠઙ્ગ, એવ સ્વલુ એણ ઉવાણ તેસુ અદ્ધસુ

વત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય સે ક્રમર કર અટકમોં કી પ્રકૃતિયોં કો ઉપા-
ર્જિત કરતે રહતે હૈ । અર્થાત્ ઉન સે વધતે રહતે હૈ—(તાસિં ગુરુત્ત્વા
ભારિયત્તાણ ગુરુભારિત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલ મહ્વઙ્ગત્તા
અહે નરગતલપદ્ધટ્ટાના ભવતિ, એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુત્ત્વ હવ્ય
માગચ્છતિ) ઉન પ્રકૃતિયો કો પૌદ્ગલિક હોનેકે કારણ ગુરુ ઓર ભારી
હોને સે યે કર્મ વધ વાલે જીવ મી ગુરુ ઓર ભારી હો જાતે હૈં ઇસ લિયે
વે કાલ માસ મે કાલ કરતે હૈ તથ ધરણિતલ કો અતિક્રમણ કર
નીચે નરકતલ મે પ્રતિષ્ઠિત હોજાતે હૈં ।

ઇસ તરહ હે ગૌતમ । જીવ જિસ સમય પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મોં કો
કરતે હૈ ડસી સમય મેં વે ગુરુત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્તહો જાતે હૈં યદ્વાત
હવ્ય શબ્દ સે ધોતિત હોતી હૈ । સૂત્ર “ ૨ ”

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનુ ઉપાશન કરતો રહે
છે એટલે કે આઠ કર્મોથી જીવ બધાતો બધ છે (તાસિં ગુરુત્ત્વા ભારિત્તાણ
ગુરુભારિત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલમહ્વઙ્ગત્તા અહ નરગતલપદ્ધટ્ટાના
ભવતિ એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુત્ત્વ હવ્યમાગચ્છતિ) તે જ્ઞાનાવસ્થાદિ કર્મો
ની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એવા માટે તેમનાથી
આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ બન છે એથી તે
જીવો કાળ માસમા કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનુ અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે
નરક તળમા અવસ્થિત થઈ બધ છે

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ । જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મો કરે છે તે
સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત ‘હવ્ય’ શબ્દ થી
જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

દ્રવ્યમાગચ્છન્તિ શીઘ્ર પ્રાપ્નુવન્તિ, અસ્મિન્નેવ સમયે કર્મક્ષયે પ્રવૃત્તા ભવન્તિ તસ્મિન્નેવ સમયે લઘુસ્ત્વ પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થઃ ।

एव खलु जम्त्रः श्रमणेन भगवता महावीरेण पण्डस्य ज्ञाताध्ययनस्य
अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ज्ञीमि, शेष सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभाषाकलितकलितक-
लापालाप-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्मापक-वाग्दिमानमर्दक-श्रीशाहूठ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-धामीलाल-
व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञातार्धर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया षष्ठमध्ययन संपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एव खलુ ગોચમા ! જીજ્ઞાસુ હુયત્ત દ્રવ્ય માગચ્છન્તિ-एव खलु जम्त्र ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते
त्तिवेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम ! जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र
प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते
हैं उसी समय में वे लघुस्त्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार
हे जम्त्र ! श्रमण भगवान महावीरने ठठे अ ययन का यह अर्थ कहा है । सू० ३ ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री धामीलालजी महाराज कृत “ज्ञाता
धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का छट्ठा
अ ययन समाप्त ॥ ६ ॥

(एવ ડત્તુ ગોચમા ! જીજ્ઞાસુ હુયત્ત દ્રવ્ય માગચ્છન્તિ-एव खलु जम्त्र ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि । ३ ।
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! હવ ઉર્ધ્વ ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી
લે છે એટલે કે બ્યારે હવ કમોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ
તે લઘુસ્ત્વ સ્વભાવને મેળવે છે હે જમ્બુ આમ લગવાન મહાવીરે છટ્ટા અ-
ધ્યયનનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ધામીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાંગ
મૃતની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ બટ્ટુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૬ ॥

ત્ય સ્વલ્પ તિષ્ઠતિ, એવ સ્વલ્પ એતેન ઉપાયેન તેષુ અદૃશુ મદિયાલેપેષુ સ્તિમિતેષુ યાત્ત વિમુક્તવધને સત્તિ-અથો ધરણીતત્ત્વમતિપ્રગ્વ-ઉત્પન્ન ઉપરિ સલિલતલમતિ પ્થાન મરતિ ।

એવમેવ ગૌતમ ! જીવાઃ પ્રાણાતિપાતવિરમણેન યાત્ત મિથ્યાદર્શનશલ્ય-વિરમણેન આનુપૂર્વ્યા અદૃશ્મપ્રકૃતિ સ્પર્શિત્વા ગગનતલમુત્પત્ય ઉપરિ લોકાગ્રે પ્રતિષ્ઠાનાં સિદ્ધસ્વરૂપાવસ્થિતા મરન્તિ । એવં સ્વલ્પ ગૌતમ ! જીવા લઘુરુત્વ

એવ સ્વલ્પ ત્વેણ ઉચ્ચાણ તેસુ અદૃશુ મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્ત વધને અહે ધરણિયલમદ્વદ્વત્તા ઉપ્પિ સલિલતલપદ્મદ્વાણે ભવદ્વ) હસી તરદ્વ દ્વિતીય મિદ્ધી કા લેપ જવ ગીલા હોઠર નટ્વ હો જાતા હૈ પરિજાદિત (સુલ્લ) જાતા હૈ તવ વદ્વ તુષી પરિલે કી અપેક્ષા ઓર કુટ્વ વદ્વ સે ઝૂંચી ઉઠ જાતી હૈ । હસી તરદ્વ હોતે ૨ જવ ઉસ તુષી કે વે આઠોં હી લેપ ગીલે કથિત એવ પરિજાદિત હો જાતે હૈં તવ વદ્વ તુષી તિલકુલ ધરિતલ સે ઉઠકર ઝપર પાની મેં આ જાતી હૈ (એવામેવ ગોચમા ! જીવા પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણ અણુપુન્નવેણ અદ્વ કમ્મપગડીઓ સ્વવેત્તા ગગનતલમુપ્પદ્વતા ઉપ્પિ લોચગ્ગ પદ્મદ્વાણા ભવતિ) હસી તરદ્વ હૈ ગૌતમ ! જીવ પ્રાણાતિપાત કે વિરમણ સે યાદત્ત મિથ્યાદર્શન શલ્ય કે વિરમણ સે ક્રમશઃ અદૃ કર્મોં કી પ્રવૃત્તિયો કો નટ્વ કર ઝપર કી ઓર ગગનતલ મેં ઉઠ કર લોક કે અગ્રભાગમેં સિદ્ધ સ્વરૂપ સે અવસ્થિત હો જાતા હૈ ।

જાવ ઉપ્પાદિત્તાણ ચિદ્વદ્વ એવ સ્વલ્પ ત્વેણ ઉચ્ચાણ તેસુ અદૃશુ મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્તવધને અહે ધરણિયલ મદ્વદ્વત્તા ઉપ્પિ સલિલતલ પદ્મદ્વાણે ભવદ્વ) આ રીતે તુબડીના ઉપરનો બીજો વખતનો લેપપણુ બીનો થધને આ ગળી બય છે, નદ્વ થધ બય છે અને પરિજાદિત થધ બય છે ત્યારે તે પહેલા કરતા પાણીમા કદ્ધક થોડી વધારે ઉપર આવી બય છે આમ તુબડીના આઠે આઠ લેપ બીના થધને ઝોગળી બય છે ત્યારે તુબડી પોતાની મેળે જ પાણીની ઉપર તરવા માડે છે (એવામેવ ગોચમા ! જીવા પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણ અણુ પુન્નવેણ અદ્વ કમ્મ પગડીઓ સ્વવેત્તા ગગનતલમુપ્પદ્વતા ઝાપ્પલોચગ્ગપદ્મદ્વાણા ભવતિ)

આ પ્રમાણે જ હૈ ગૌતમ ! એવ પ્રાણાતિપાત ના વિરમણથી ય વત મિથ્યા દર્શન શલ્યના વિરમણથી અનુક્રમે આઠ કર્મોની પ્રવૃત્તિઓના નાશ કરી ને ઉપર ગગનતળમા પહેલોની લોકના અગ્ર ભાગમા સિદ્ધ સ્વરૂપથી અવસ્થિત થાય છે

હવ્યમાગच्छन्ति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकृत्वा प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एव खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण पण्डितस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति प्रवीमि, शेषं सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पतिश्रद्धापाकलितकलितक-
लापालापर-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकरुपन्यनिर्माणरु-वादिमानमर्दरु-श्रीशाहूछ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-गालग्रहचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाट-
प्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्माમૃતવ-
ર્ષિણ્યાર્યાયા વ્યાખ્યાયાં પઠ્યમધ્યયન સપૂર્ણમ્ ॥ ૬ ॥

(एव खलु गोयमा ! जीशालहुयस्त हव्य मागच्छति-एव खलु जम्बू ।
समणेन भगवता महावीरेण छट्टस्त नायज्जुयणस्त अयमट्ठे पन्नत्ते
त्तिवेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम ! जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र
प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते
हैं उसी समय में वे लघुकृत्य स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार
हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने उठे अ अध्ययन का यह अर्थ कहा है । सू० ३ ।
श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री वासीलालजी महाराज कृत “ज्ञाता
धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का छट्ठा
अध्याय समाप्त ॥ ६ ॥

(एव છલુ ગોયમા ! જીશાલહુયસ્ત હવ્યમાગચ્છતિ-એવ છલુ જમ્બૂ ।
સમણેન ભગવતા મહાવીરેણ છટ્ટસ્ત નાયજ્જુયણસ્ત અયમટ્ઠે પન્નત્તે ત્તિવેમિ ॥ ૩ ॥
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ ઉર્ધ્વ ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી
લે છે એટલે કે જ્યારે જીવ કર્મોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ
તે લઘુકૃત્ય સ્વભાવને મેળવે છે હે જમ્બૂ આમ ભગવાન મહાવીરે છટ્ટા અ
ધ્યયનનો અર્થ નિર્ણયિત કર્યો છે ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી વાસીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાધર્મકથાંગ
સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનાનુ ઇટ્ઠુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૬॥

અથ સપ્તમમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પઠમધ્યયનમ્ સામ્પત સપ્તમમારમ્ભ્યતેઽમ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમધિસમ્બન્ધઃ
 શ્વાનન્તરાધ્યયને પ્રાણાતિપાતાદિ ક્રિયાયતા કર્મગુરુતા પ્રોક્તા, તદભિન્નાના કર્મ
 લઘુતા તત્તથાનર્થાર્થપ્રાપ્તિરુપોઽર્થે દ્વિતુ પ્રાણાતિપાતાદિ વિરતિ સ્વલિતસર
 ક્ષકાણામનર્થાર્થપ્રાપ્તિઃ પ્રોચ્યેતે । તત્રાઘ સૂત્રમાહ—

મૂલમ—જડ્ઘં ભતે । સમણેણં જાવ સપત્તેણં છટ્ટસ્સ નાય
 જ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પત્તત્તે સત્તમસ્સ ણ મંતે । નાયજ્ઞયણસ્સ
 કે અદ્દે પન્નત્તે ? એવં સ્વલ્લુ જંબૂ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં
 રાયગિહે નામ નયરે, હોત્થા, સુમ્મમિભાગે ઉજ્જાણે, તત્થણં રાય-

સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ—

છઠા અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો જુકા—અવ સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
 હૈ । હસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ—
 છઠે અધ્યયન મેં પ્રાણાતિપાત આદિ કરનેવાલે પ્રાણિયોં મે કર્મ ગુરુતા
 કરી ગઈ હૈ ઓર નહીં કરને વાલોં મેં કર્મલઘુતા કરી ગઈ હૈ—તથા હન
 દોનો કા ફલ ક્રમશઃ અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા ગયા હૈ । અબ
 હસ અધ્યયન મેં યહ કહા જાવેગા કિ જો પ્રાણાતિપાત આદિ સે
 વિરતિ ધારણ કરકે ભી ઉસસે સ્વલિત હો જાતે હૈં વે જીવઅનર્થ પર-
 પરા કો ભોગતે હૈં ઓર જો ઉસકી રક્ષા કરતે હૈં વે અભીષ્ટ-ઈચ્છિત
 અર્થ કો પ્રાપ્ત કર છેતે હૈં ।

સાતમુ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય-
 યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબન્ધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા
 પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની ગુરુતા કહેવામા આવી છે અને
 પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે
 તેમજ અનુક્રમે આ બંનેનુ ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી
 આ વિષે કહેવામા આવ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે
 જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતા તેનાથી સ્વલિત થઇ બચ
 છે, તે જીવો અનર્થપર પરા જોને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા
 કરે છે તેઓ અભીષ્ટ-મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે

गिहे नयरे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसइ० अट्ठे० भद्दा भारिया
अहीण पंचेदिय० जाव सुरूवा तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स
पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था
त जहा—धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए तस्स णं ध-
णस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ
होत्था, त जहा—उज्झिया भोगवइयारक्खइया रोहिणिया॥सू०१॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि—अथ जम्बूस्वामी पृच्छति हे भदन्त ! यदि
खलु धमणेन भगवता महावीरेण यावन् मुक्तिसमाप्तेन पण्डस्य ज्ञाताध्ययनस्याय
मर्थः प्राप्तः, हे भदन्त ! तत्तमस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्राप्तः ? एव जम्बू
स्वामिना प्रश्ने कृते सति सुवर्मास्वामी प्राह एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन्

‘जइण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) जम्बूस्वामी पूछते हैं कि हे भदन्त ! (समणेण
जाव सपत्तेण उट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स ण
भते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) अमण भगवान् महावीर ने
जो मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं छोड़े ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ
प्ररूपित किया है तो हे भदन्त ! तत्तम ज्ञाताध्ययन का उन्होंने क्या
अर्थ प्ररूपित किया है ? (एव खलु जम्बू !) इसका उत्तर देते हुए श्री
सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो अमण भगवान्
महावीर ने जो सातवें ज्ञाताध्ययन का अर्थ प्ररूपित किया है— वह इस
प्रकार है (तेण काउेग तेण समणेण) उस काल और उस समय

‘जइण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) जम्बूस्वामी प्रश्न पूछे थे कि हे भदन्त ! (समणेण
जाव सपत्तेण उट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स ण भते नायज्झ-
यणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) मुक्ति पायेला अमण भगवान् महावीर ने छोड़ा
ज्ञाताध्ययननो अर्थ पूर्वोक्त रीति रीति रीति छोड़े दिया है । तेजोश्रीजो
सातवा ज्ञाताध्ययननो शो अर्थ प्ररूपित कर्था छे ? (एव खलु जम्बू !) आ
प्रश्ननो उत्तर आपता श्री सुधर्मा स्वामी तेभने कडेवा लाग्या के छे जम्बू !
सावणे ! अमण भगवान् महावीर सातवा ज्ञाताध्ययननो अर्थ आ प्रभावे

અથ સપ્તમમધ્યયને પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પઠમધ્યયનમ્ સામ્પત સપ્તમમારમ્ભ્યતેઽસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમધિસમ્બન્ધઃ
 હ્યહાનન્તરાધ્યયને પ્રાણાતિપાતાદિ ક્રિયાયતા કર્મગુરુતા પ્રોક્તા, તદ્મિશ્રાના કર્મ
 લઘુતા તત્તશ્ચાનર્થાર્થપ્રાપ્તિરુપોઽર્થ ઇદ્વતુ પ્રાણાતિપાતાદિ વિરતિ સ્વલિતસર
 ક્ષણાનામનર્થાર્થપ્રાપ્તિઃ પ્રોચ્યેતે । તત્રાઘ સૂત્રમાહ—

મૂલમ—જડ્ડણં મંતે । સમણેણં જાવ સપત્તેણં છટ્ટસ્સ નાય
 ઝઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે સત્તમસ્સ ણં મંતે । નાયઝઙ્ગયણસ્સ
 કે અદ્દે પન્નત્તે ? એવં ચલ્લુ જંવૂ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં
 રાયગિહે નામ નયરે હોત્થા, સુમ્મિમાગે ડજ્જાણે, તત્થણં રાય-

સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ—

છઠા અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા-અવ સાતવા અ યયન પ્રારમ્ભ હોતા
 હૈ । હસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ-
 છઠે અધ્યયન મેં પ્રાણાતિપાત આદિ કરનેવાલે પ્રાણિયોં મેં કર્મ ગુરુતા
 કહી ગઈ હૈ ઓર નહીં કરને વાલોં મેં કર્મલઘુતા કહી ગઈ હૈ- તથા હન
 દોનો કા ફલ ક્રમશઃ અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા ગયા હૈ । અવ
 હસ અધ્યયન મેં યહ કહા જાવેગા કિ જો પ્રાણાતિપાત આદિ સે
 વિરતિ ધારણ કરકે ભી ઉસસે સ્વલિત હો જાતે હૈં લે જીવઅનર્થ પર-
 પરા કો ભોગતે હૈં ઓર જો ઉસકી રક્ષા કરતે હૈં લે અભીષ્ટ-ઇચ્છિત
 અર્થ કો પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં ।

સાતમુ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય
 યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબન્ધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા
 પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની શુદ્ધતા કહેવામા આવી છે અને
 પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે
 તેમજ અનુક્રમે આ બનેલુ ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી
 આ વિષે કહેવામા આવ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે
 જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતાં તેનાથી સ્થલિત થઇ નય
 છે, તે જીવો અનર્થપરપરા ઓને લોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા
 કરે છે તેઓ અભીષ્ટ-મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે .

१ धनपालः, २ धनदेवः, ३ वनगोपः, धनरक्षितश्चेति । तस्य खलु धन्यसार्थवाह
स्य चतुर्णां पुत्राणां भार्याश्चतस्र स्नुषाः—पुत्रपञ्च वभूवुः तद्यथा— १ उज्जिता,
२ भोगवतिका, ३ रक्षिता, ४ रोहिणिकाच. ॥ सू. १ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स अन्नया कयाइ पुठवरत्ताव-
रत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव
खलु अह रायगिहे बहूण ईसर जाव पविभिईणं सयस्स कुडुवस्स
बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसु य मतेसु य गुज्जेसुय
रहस्सेसुय निच्छएसुय ववहारे सुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छ-
णिज्जे मेढीपमाणे आहारे आलंवणे चक्खुमेढीभूए जाव सव
कज्जवड्ढावए तणणज्जइ जमए गयसि वा चुयसि वा मयसि वा
भग्गसि वा लुग्गसि वा सडियसि वा पडियसि वा विदेसत्थं
सि वा विप्पवासियसि वा इम्मस्स कुटुंवस्स किं मन्ने आहारे वा

हुए चार सार्थवाह दारक—पुत्र—थे (त जहा) उनके नाम ये हैं—(धण-
पाले, धणदेवे वणगोवे धणरक्खिए) धनपाल, धनदेव, धनगोप, धन
रक्षित (तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स चऊण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि
सुण्हाओ होत्था) उस धन्य सार्थवाह को उन चारपुत्रोंकी भार्याएँ पुत्र
वधुए—यी (तजहा—उज्जिता, भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) धन
पालपुत्र की भार्या उज्जितायी १ धनदेवकी भार्याभोगवतिका यी २, धन
गोपकी भार्यारक्षितायी ३, धनरक्षित की भार्या रोहिणिका यी ४ ॥ सू० १ ॥

(त जहा) तेमना नामे आ प्रभावे छे—(धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खि
ए) धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित (तस्मण धणस्स सत्थवा
हस्स च उण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) धन्य सार्थवाहना
आ आरे पुत्राने भार्याओ इती (त जहा उज्जिता भोगवइया, रक्खइया,
रोहिणिया) धनपालनी भार्या उज्जिता इती १, धनदेवनी भार्या भोगवतिका
इती, २, धनगोपनी भार्या रक्षिता इती ३, धनरक्षितनी भार्या रोहिणिका
इती ४ ॥ सूत्र १ ॥

समये राजगृह नाम नगरमासीत्, नगरस्य उद्दिः सुभूमिभाग नामकमुद्यान
'तत्थ ण' तत्र खलु राजगृहे नगरे धन्यनामा सार्ववाहः परिवसतिस्म स कीदृश,
'अट्टे' आठयः बहुधनयान्य समृद्ध, तस्य भद्रानामनी भार्या, सा किं भूता? अ
हीनपञ्चेन्द्रियशरीरा 'जाव सुखा' इह यावत्कृष्णादिद ज्ञातव्य 'लक्खण
उज्जण गुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुणसुजायसव्वगसुदरगा, ससि सोमा
कारा काता पियदसणा सुखा' इति एतानि पदानि व्याख्यातपूर्वाणि 'तस्स ण
'तस्य खलु धन्यस्य सार्ववाहस्य पुत्राः भद्राया भार्याया 'अत्तया' आत्मजा
भद्रजा-निजकुक्षिसभया इत्यर्थः चत्वारः सार्ववाहदारका आसन्, तद् यथा

में (रायगिहे नाम नगरे होत्या) राजगृह नाम का नगर था (सुभूमि-
भागे उज्जाणे) वहा घाहिर में एक सुभूमि भाग नाम का उद्यान था।
(तत्थ ण रायगिहे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसद) उस राजगृह में
धन्य नाम का सार्ववाह रहता था। (अट्टे भद्रा भारिया, अहीण पचे
दियं जाव सुखा) यह बहुत अधिक धन धान्य से समृद्ध था। इसकी
भद्रानाम की भार्या थी।

इसका शरीर अहीन पचेन्द्रियो से परिपूर्ण था। सुन्दर अगवाली
थी। "यावत् शब्दसे" लक्खणउज्जण गुणोववेया, माणुम्माणपमाण
पडिपुण-सुजाय-सव्वग सुदरगा, ससिसोमाकारा, कता पियदसणा
सुखा "इस पाठका समग्र किया गया है

कोई बार पहिले इन पदों का अर्थ लिखा जा चुका है। (तस्सण
धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्रा भारिया अत्तया चत्तारि सत्थवाह
दारया होत्या) उस धन्य सार्ववाह के भद्राभार्या की कुक्षी से उत्पन्न

निर्झित कथो छ (तेण कालेण तेण समयण) ते काले अने ते समये
(रायगिहे नाम नगरे होत्या) राजगृह नामे नगर छु (सुभूमिभागे उज्जाणे)
ते नगरनी भहार सुभूमिभाग नामे एक उद्यान छु (तत्थ ण रायगिहे
धण्णेनाम सत्थवाहे परिवसद) राजगृह नगरमा धन्य नामे सार्ववाह रहते
छते। (अट्टे भद्रा भारिया अहीण पचेदिय जाव सुखा) ते धन्य
धान्यथी समृद्ध छते। भद्रा नामे तेनी पत्नी छती तेनु शरीर अहीन पचे-
न्द्रियोथी परिपूर्ण छतु ते सुन्दर अगवाली छती 'यावत्' शब्दथी
अही (लक्खणउज्जणगुणोववेया, माणु माणपमाणपडिपुणसुजायसव्वगसुदरगा,
ससिसोमाकारा, कता पियदसणा सुखा) आ पाठने न भ्रम थये छ आ
पढेना पडेला धरणी वणत अर्थ स्पष्ट करवाभा आव्ये छ (तस्सण धण्णस्स
सत्थवाहस्स पुत्ता भद्रा भारिया अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्या) धन्य
सार्ववाहने भद्रा भार्याना उदर नन्म पायेला आर सार्ववाह दारयो-पत्र-छता,

ઈશ્વરા:-એ ધર્મસમ્પન્ના: ' જાવપન્મર્દેણ ' યાવત્ શબ્દેન ' તલવરમાહવિય કોહુ
વિયહ્મ સેટ્ટસેનાન્સત્થરાહ ' એતેપા સગ્રહઃ, તેન તલવરમાહમ્બિવ કોહુમ્બકેમ્બ-
શ્રેષ્ઠિસેનાપતિ સાર્થવાદપ્રભૃતીના ' સયસ્સ ' સ્વકસ્ય-નિજસ્ય કુટુમ્બસ્ય મહુપુ
' કજ્જેસુ ' કાર્યેપુ-પ્રયોજનેપુચ પુનઃ ' કારણેસુ ' કારણેપુ-કાર્યજાતસમ્પાદક
હેતુપુચ, ' કુહુવેસુ ' કુટુમ્બેપુ વાન્ધવેપુ ચ ' મતેસુ ' મન્ત્રેપુ-વર્ત્તવ્ય નિશ્ચયાર્થ
ગુપ્તવિચારેપુ ચ ' ગુહ્યેસુ ' ગુહ્યેપુ-લજ્જાયા ગોપનીયવ્યવહારેપુ ચ ' રહસ્યેસુ '
રહસ્યેપુ-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારેપુચ ' નિચ્છણેસુ ' નિશ્ચયેપુ=પૂર્ણ નિર્ણયેપુ ચ ' વવહારેસુ '
વ્યવહારેપુચ વાન્ધવાદિ સમાચરિતલોકવિપરીતાદિ ક્રિયા પ્રાયશ્ચિત્તેપુ અત્ર ચકારાઃ
સમુચ્ચયાર્થ કા એતેપુ વિપચેપુ'આપુચ્છણિજ્જે' આપચ્છનીયઃ ' ઇપ્તમ્પદુયોગ્ય' એકાર
મિત્યર્થઃ ' પહિપુચ્છણિજ્જે' પરિપ્રચ્છનીયઃ સર્વતો ભાવેન પ્રવટ્ઠવ્ય । મેઘી' મેધિઃ
પ્રીહિયવાદિકળમર્દનાર્થ પશુચ્છન્નસ્તમ્મ', તત્સાદૃશ્યાદયમપિ મેધિઃ-મેધિરૂપઃ,

કુહુવસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ચ કારણેસુ ચ, કુહુવેસુ ચ, મતેસુ ચ, ગુહ્યે
રહસ્યે નિચ્છણ, વવહારેસુ ચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઘીપ
માણે આહારે આલ્લખે) મેં રાજગૃહ નગર મે અનેક એશ્વર્યશાલી
તલવર, માહનિક કૌટુખિક હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ આદિજનો
કે તથા અપને નિજ કુટુમ્બકે પ્રયોજની ભૂત કાર્યો મે, કાર્યો કે સાધન
ભૂત કારણો મેં વન્ધુજનોં કે વર્ત્તવ્ય કો નિશ્ચય કરને કે લિયે પ્રવૃત્ત
ગુપ્તવિચારો મેં લજ્જાવશ ગોપનીય વ્યવહારો મે-પ્રચ્છન્નવ્યવહારોમે-
પૂર્ણનિર્ણયો મે, વાધવાદિજનો દ્વારા સમાચરિત લોક વિચ્છાદિકાવ્યો
કે પ્રાયશ્ચિત્તો મે અર્થાત્ હન સવ વિષયો મે પૃછા જાતા હૈ, યે સવલોગ
મેરી અચ્છી તરહસે સલાહ લેતે હૈ । મૈ હન સવ કે લિયે મેધી રૂપ હૈ

જાવ પન્મર્દેણ સયસ્સ કુહુવસ વહુસુ કજ્જેસુ ચ કારણેસુચ, કુહુવેસુ ચ,
મતેસુચ, ગુહ્યે રહસ્યે નિચ્છણ વવહારેસુચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઘીપમાણે
આહારે આલ્લખે) રાજગૃહ નગરમા હુ ઘણા એશ્વર્યશાળી, તલવર, માહ-
નિક, કૌટુખિક, હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેના તેમજ પોતાના
કુટુમ્બના જ ખાસ ગામોમા, કાર્યોના સાધન ભૂત કારણોમા મળા વહાલાના
કર્તવ્યોના નિશ્ચય માટે ની ગુપ્ત મત્રણાઓમા છુપાવવા યોગ્ય લગ્નપત્ની
સળધિત ગોપનીય કાર્યોમા-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમા-પૂછું નીવુંથોમા મળા
સમધીઓ વડે આચારથી વિરુદ્ધ અનાચરણીય કરવામા આવેલા કાર્યોમાટે
ની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિમા-એટલે કે આ બધી સામાજિકરાજનીતિક અને ધાર્મિક
બાબતોમા બધા અને પૂછે છે બધા માણુનો મારી સલાહ લે છે આ બધા
જાણેનારો જ બધી રૂપ છુ, પ્રમાણ રૂપ છુ અનાજ વગેરેની હાલણી માટે

आलये वा पडिवधे वा भविस्सइ ? त सेयं खलु मम बल्ल जाव
जलते विउल असणं ४ उववखडावेत्ता मित्तणाइ० चउण्ह
सुण्हाण कुलघरवग्गं आमतेत्ता तं मित्तणाइ णियगसयण०
य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असणं ४ धुवपुप्फ
वत्थ गधजाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह
य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्ह सुण्हाणं परिरक्ख-
णट्टयाए पंचर सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह
वा सारम्भेइ वा संगोवेइ वा सत्रहेइ वा ? ॥ सू० २ ॥

टीका- 'तएण तस्स' इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु तस्य धन्यसार्थवा
इस्य अ यदा कदाचित् 'पुनरुत्तावरत्तकालमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालमये
कुटुम्बजागरणं कुर्वतो 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः
आन्तरोपायसाध्यसुखदुःखादिरूप यावत्सकल्प 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत
'एव' अमुना प्रकारेण खलु 'निश्चयेन अहं रात्रिगृहे नगरे बहूना ईसर'

'तएण तस्स धणस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स धणस्स) उस धन्य सार्थवाद् को
(अज्झया कपाइ) किसीएक समय (पुनरुत्तावरत्तकालमयसि)
सन्ध्यात्रि के समय में जब कि वह कुटुम्ब जागरणासे जागरहा था
(इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का यह
आध्यात्मिक-आन्तर उपाय साध्या सुख दुःखदिरूप यावत् सकल्प
उत्पन्नहुवा (एव खलु अहं रात्रिगृहे बहूना ईसर जाव पम्भईण सयस्स

'तएण तस्स धणस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्थार णाइ (तस्स धणस्स) धन्य सार्थवाडने (अज्झया
कपाइ) केअ वपते (पुनरुत्तावरत्तकालमयसि) अउधी रात्रिना समये
न्यारे ते कुटुम्ब जागरणु करतु छतु (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)
त्यरे आ जातने आध्यात्मिक ओटवे के आन्तरिक उपायथी साध्या सुखदुःख
वगेरे इय यावत् सकल्प उद्भवा- (एव खलु अहं रात्रिगृहे बहूना ईसर

तस्मात्कारणत् 'ण णज्जइ' न ज्ञायते मया 'जं' यत् यदि 'मए' मयि 'गयसि' गते ग्रामादौ 'वा' 'चुयसि' च्युते-स्खलिते वा कर्मवशादनाचरतः स्वपदात्पतिते इत्यर्थ 'मयसि' मृते-प्राणत्रियोगे सति, वा 'भग्गमि' भग्ने-रोगादिना कुञ्ज ग्वञ्ज-त्वेनाऽसमर्थीभूते, वा 'लुग्गमि' रुग्णे-रोगावस्थामाप्तेसति 'सडियसिवा' सटिते व्याधिविशेषेण जीर्णता गते सति, वा 'पडियसि' पतिते प्रासादादितो ग्लानभावाद्वा 'प्रिदेसत्थसि' देशान्तर गत्वा तत्रैव स्थिते वा 'विप्पवसियसि' विप्रोपिते - स्वस्थाननिर्गते-देशान्तरगमनप्रवृत्ते सति वा 'मन्ने' अह मन्ये

आधार, आलम्बन एवं चक्षु इन पदों के साथ सूत्रकार इसी बात को और जोरदार शब्दों से समझाने के लिये उपमा वाचक भूत शब्द का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि यह धन्यसार्थवाह उन सब के लिये मेघिभूत था, प्रमाणभूत था, आधारभूत था, आलम्बनभूत था और चक्षुभूत था। इस तरह यहाँ पुनरुक्ति दोष का सद्भाव भी नहीं माना जा सकता है।

कारण पहिले कथन में उसे स्वयं मेघि आदि रूप कहा गया है और इस कथन में उसे उन २ जैसा कहा गया है। इस-प्रकार पुनरुक्ति दोष का वारण हो जाता है। यह धन्य सार्थवाह समस्त ईश्वर आदि जनों के सर्व कार्यों का सपादक था-इसलिये उसे यह "सर्व कार्य वर्द्धक" कहा गया है। इस प्रकार वह धन्य सार्थवाह अपने में इन समस्त बातों का विचार करके अत्र आगे ऐसा विचार करता है (त ण णज्जइ ज मए गयसि वा चुयसि वा, मयसि वा भग्गसि वा, लुग्गसि वा, सडियसि

साथे सूत्रकार ने ण वातने वधादे अण्ठ उरवा भाटे उपमा वाचक 'भूत' शब्दों का प्रयोग करता कहे छे के धन्य सार्थवाह अधाने भाटे मेघिभूत छे, प्रमाण भूत छे, आधार भूत छे, आलम्बन भूत छे, अने चक्षु भूत छे। अथी अही पुनरुक्ति इय होय उद्बलववानी अक्यताथी उली थती नथी केमके पूर्व कथनमा ण तेने मेघि वगेरे इय अनापवामा आव्यो छे अने आ वल्लनमा पण्ण तेने ते प्रमाणे ण वल्लववामा आव्यो छे आ रीते पुनरुक्ति होयनु निवारण पण्ण थय ण अयु कहेवाय धन्य सार्थवाह अधा ईश्वर वगेरे लोकेना अधा कामेने पार पमाउनार छे। अथी ण तेने "सर्व कार्य वर्द्धक" कहेवामा आव्यो छे आ प्रमाणे धन्य सार्थवाह पोतानी भेजे आ अधी वाने विषे विचार करे। आगण आभ विचार छे छे (त ण णज्जइ ज मए गयसि वा चुयसि वा मयसि वा भग्गसि वा, लुग्गसि वा, सडियसि वा,

અર્થાદેતદચ્છન્નૈવ સર્વસ્યાપિ કુદુમ્બસ્પાસ્થાનમ્ 'પમાણે' પ્રમાણમ્ પ્રત્યક્ષાદિ પ્રમાણમ્ વસ્તુતત્ત્વપ્રતિબોધકઃ 'આધારે' આધાર-આધારમ્ કુદુમ્બાદીનામાશ્રય 'આલમ્બણે' આલમ્બન રજ્યાદિમ્ ત્રિપદગર્તપતઃજનોદ્વારકૃતયાઽવલમ્બનમ્ 'ચક્ષુ' ચક્ષુઃ નેત્ર તદ્વત્ સકલાર્થપ્રદારક, યદુક્ત (મેધિ પ્રમાણમા-ધાર આલમ્બન ચક્ષુરિતિ) તદેવ રપટ્ટયોધાર્થમૌપમ્યગામિભૂતશઽસમેલનેન પુનરાવર્તયતિ મેધિભૂતઃ इत्यादि, યાવદિતિ -- યાવન્ઽન્તેન (પમાણમ્ આધારમ્ આલમ્બણમ્ ચક્ષુમ્) इत्येषा સમગ્રો યોધ્યઃ અર્થત પુનરુક્તિરોપ વારણ તુ પૂર્વમ્ મેધિરિતિ આરોપિત મેધિત્વગાનિત્યાચર્યેન યોગ્યમ્ । સર્વવજ્જવઙ્ગાવૈ 'સર્વ કાર્યર્થક' - સર્વેષા કાર્યાણા, ર્થકઃ=સમ્પાદનોઽસ્મિ, 'ત' તદ્

પ્રમાણરૂપ હૈં । ગ્રીટિ કવ આદિકે કળોં કો મર્દન કરને કે લિયે પશુ જિસ સ્તંભ મેં ઘાધે જાતે હૈં ઉસકા નામ મેધી હૈ । મેધી કે સહારે સે જિસ તરહ પશુઓં કા અવસ્થાન રહતા હૈં ઉસી તરહ ઉસકે સહારે સે સમસ્ત કુદુમ્બકા અવસ્થાન થા ઇમ્લિયે હસે મેધીરૂપ કહા ગયા હૈ । પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ જૈસે વસ્તુતત્ત્વ કે પ્રતિબોધક હોતે હૈં ઉસી તરહ યહ બી સચ કે લિયે વસ્તુ કા વાસ્તવિક સ્વરૂપ સમજા દિગા કરતાં થા અતઃ હસે પ્રમાણ રૂપ પ્રકટકિયા હૈ । મૈં હી કુદુમ્બ આદિકા આશ્રય ભૂત હૈ, રજ્યાદિકા કી તરહ ત્રિપત્તિરૂપ ટાવેં મેં પતિત જનો કા ઉદ્ધારક હોનેકે કારણ મેં ઉનકા અવલમ્બન રૂપ હૈં ।

ચક્ષુ જિસ પ્રકાર સામને કે પદાર્થ કા યથાર્થ પ્રકાશન કરતા હૈં ઉસી તરહ યહ બી મનુષ્યોં કો રાવ લેને પર વાસ્તવિક વસ્તુ કે રહસ્ય સે પરિચિત્ત કરા દેતા થા । અતઃ હસે યહાં ચક્ષુરૂપ કહા ગયા હૈં હસીલિયે (ચક્ષુ મેધીમૂળ જાવ સર્વવજ્જવઙ્ગાવૈ) મેધિ પ્રમાણ,

બળદો જે થાલલાને બાધવામા આવે છે તેનુ નામ મેધી છે મેધી જેમ પશુઓને માટે ખાસ કેન્દ્રરૂપમા રહેલો આધાર હોય છે તેમજ તેપણ બધાને માટે મેધી રૂપ હતો પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણો જેમ વસ્તુના તત્ત્વને બતાવનારા હોય છે તેમજ ધન્યસ થવાહ પણ બધાને દરેકે દરેક વસ્તુનુ સાચુ સ્વરૂપ સમજાવતો હતો તેથી તેને પ્રમાણ કહ્યો છે કુદુમ્બનો હું જ આશરો છું હું જ ઉડા ખાશમા પડેલા માણસોનો દોરીની જેમ ઉદ્ધારક છું એથી હું તેમના માટે અવલમ્બન (આધાર) રૂપ છું ચક્ષુ જેમ સામેની વસ્તુને પ્રકાશિત કરે છે તેમજ તે પણ સલાહ માટે આવેલા માણસોને વસ્તુના સાચા રહસ્યથી વાકેફ કરતો હતો એટલા માટે જ (ચક્ષુમેધીમૂળ જાવ સર્વવજ્જવઙ્ગાવૈ) મેધિ પ્રમાણ આધાર આલમ્બન અને ચક્ષુ પગેની

मित्रज्ञातिनिजकर्मजनसम्पन्नः परिजनांश्च चतस्रः स्नुषा कुलगृहवर्गं च विपुलेन अशनादिना ४ धूपपुष्पवस्त्रगन्धादिभिर्यावत् 'सक्कारेत्ता' सत्कृत्य 'सम्मानेत्ता' सम्मान्य मधुरवचनादिना, तस्यैव मित्रज्ञत्यादेः चतसृणा स्नुषानां कुल गृहवर्गस्य पुरतः समक्ष चतसृणा स्नुषाणां 'परिरक्षणद्वयाए' परीक्षणार्थं पञ्च

आमतेत्ता) तो मेरी अब इसी में भलाई है कि मैं कल सूर्योदय होते ही प्रातःकाल सूर्य के उदय होने पर विपुल मात्रा में अशन पान, स्वाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाति, निजक स्वजन सम्पन्धी जनों को तथा परिजनो को चारों अपनी इन पुत्र वधूओं को, इनके माता पिता आदिको को भोजनार्थ आमन्त्रित करके (त मित्तणाइ णियग सयण० य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुवपुष्पवत्थगघ जाव सक्कारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण परिरक्खणद्वयाए पच २ मालि अक्खण दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह वा सारक्खेइ वा सगोवेइ वा सवड्ढेइ वा) उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सचधियो को परिजनो को चारो इन अपनी पुत्र वधूओ को और इनके माता पिता आदिको को उस विपुल अशनादि से और धूप पुष्प, वस्त्र गन्ध आदि से यावत् सत्कृत करु मधुरवचनादि द्वारा उन्हें सम्मानित करूँ। सत्कृत और सम्मानित करके बाद मे मैं उन्ही मित्र ज्ञाति आदि जनो के चारो ओर अपनी इन पुत्र वधूओ के कुल गृह वर्ग के समक्ष इन चारो पुत्र

चउण्ह सुहाण कुलघरवग्ग आमतेत्ता) हु काल सवार थता ४ सवारे सूर्योदय थता अशन, पान, स्वाद्य अने भाद्य आम आर प्रकारेनो विपुल मात्रामा आहार तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन, सम्पन्धी तेमन् परिजनेनो अने आरे पुत्रो आरे पुत्रवधूओ तथा अेमना मातापिता वगेरेने ४मवा भाटे भोलावीने (त मित्तणाइ णियगसयण य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुव पुष्पवत्थगघ जाव सक्कारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण परिरक्खणद्वयाए पचरसालि अक्खण दलइत्ता जाणामि तावका किण्ह वा सारक्खेइवा सगोवेइवा सवड्ढेइवा) मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सम्पन्धीओनो, परिजनेनो, पोतानी आरे पुत्रवधूओनो, अने तेमना माता पिता वगेरेनो पुष्पगन्धप्रमाणमा जनाववामा आवेला अशन वगेरे आरे प्रकारेना आहारो थी अने धूप, पुष्प वस्त्र गन्ध वगेरेथी सत्कार उइ तथा मधुरवाणी थी तेमनु सम्मान उइ तेमनी सत्कार तेमन् सम्माननी विधि पूरी कर्था भाव हु मित्र, ज्ञाति वगेरे तथा पुत्रवधूओना उडुणीजनेनोनी साथे आरे पुत्र

‘ઇમસ્સ’ અસ્ય કુડુમ્બસ્ય ‘કિં’ ક ‘આહારે’ આધારઃ આશ્રયો ભૂમિરિવ
 ‘વા’ અથવા ‘આલવે’ આલમ્બ-પત્તો રજ્જાદિકમિત્ર અથવા ‘પટિવન્ધે’
 પ્રતિવન્ધઃ પ્રમાર્જનિકા શલાકાદીના પરિરક્ષણાય દયરકડવ ‘ભવિસ્સડ’ ભવિષ્યતિ
 ‘ત’ તદ્-તસ્માત્ ‘સેય’ શ્રેયઃ સ્વલુ નિશ્ચયે મમ ‘ક્લલ’ કલયે-શ્વઃ પ્રમાત-
 સમયે યાવત્-તેજસા ‘જલતે’ જ્વલતિસતિ-દિનકરે ઉદય પ્રાપ્તે ત્રિપુલ-પ્રવુર
 આશન ૪ ‘ઉવક્કલ્હાવેત્તા’ ઉપસ્કાર્ય નિપ્પાદ્ય મિત્રજ્ઞાતિ નિજક સ્વજન સમ્બ-
 ન્ધિન પરિજનાન્ ચતસ્રઃ સ્ત્રુપા ‘કુલધરવર્ગ’ કુટુંબગૃહ, કુંડટ્ટહ-પિતૃગૃહ
 તદ્ વગં માતાપિતાદિક ‘આમતેત્તા’ આમત્ર્ય=ભોજનાર્થમાહૂય ‘ત’ તાન્

વા પઢિયસિ વા વિદેસત્થસિ વા વિપ્પવસયસિ વા ઇમસ્સ કુડુબસ્સ
 કિં મન્ને આહારે વા આલવે વા પઢિયધે વા ભવિસ્સડ ?) કિ જેસા મૈ
 યદિ યહા સે દૂસરે ગ્રામ આદિ કો ચલા જાઝ, યા કર્મવશાત્ સ્વપદ
 સે ચ્યુત હો જા , મરજાઝ કિસી રોગ આદિ કે દ્વારા કુબડા યા
 લૂલા બન જાઝ, રોગ સે પ્રસિત્ત હો જાઝ, કિસી વ્યાધિ વિગ્રોપ સે જીર્ણ
 શરીર હો જાઝ કિમ્ની મકાન આદિ સે અચાનક ગિરજાઝ વિદેશ જાકર
 ઘરોં રહને લગજાઝ, અથવા યહાં સે વિપ્રોપિત પરદેશ રહને ચાલા જાઝનાં
 એસી સ્થિતિ મૈં મુક્કે એસા કોઈ નહીં જાત હોતા હૈ કિ જો ઇસ મેરે કુડુમ્બ
 કા આધાર હોગા આલબનભૂત હોગા ડસકી ઘુરાલુ સમાર્જની કી સીકોં
 કો એકત્ર બાંધ કર રક્ષા કરને વાલે ડોરેકે સામાન રક્ષા કરને વાલા હોગા।
 ઇસલિયે જબ મૈં એસા માનતા હૂં (ત સેય સ્વલુ મમ કલલ જાવ જલતે
 વિવલ અસણ ૪ ઉવક્કલ્હાવેત્તા મિત્તણાહંચડણહ મુદ્દાણ કુલધરવર્ગ)

પઢિય સિવા, વિદેસત્થ સિ વા વિપ્પવસય સિ વા ઇમસ્સ કુડુબસ્સ કિં મન્ને આહારે વા
 આલવે વા પઢિય ધે વા ભવિસ્સડ ?) ને હુ અહીંથી બીજે ગામ જતો રહું કે
 કર્મવશાત્ સ્વપદ (પાતાના અધિકાર) થી બ્રહ્મ થઈ બાઉ કે મરણને લેદુ, રોગ
 વગેરેમા સપડાઈને કૂળડો અથવા અપગ થઈ બાઉ, રોગી થઈ બાઉ કેાઇ વ્યાધિ
 વિશેષમા સપડાઈને સાવ દુર્બળ શરીરવાળો થઈ બાઉ, કેાઇ મેઝાન ઉપરથી
 ઝાચિતો પડીબાઉ, વિદેશમા જાઈને ત્યા રહેવા લાગુ અથવા તો અહીંથી
 વિપ્રોપિત-પરદેશમા રહેનાર થઈ બાઉ ત્યારે એવી સ્થિતિમા મને એવી કેાઈ
 પણ વ્યક્તિ દેખાતી નથી કે જે મારા કુટુંબનો આધાર થઈ શકે, આલબન
 ભૂત થઈ શકે સાવરણીના છુટાપડેલા તણાઓને એકીસાથે બાધનાર દોરીની
 જેમ મારા આ કુટુંબને એકી સાથે સપીને રાખનાર તેમજ તેની રક્ષાકરનાર
 કેાણુ હશે ? ને અત્યારે આવી પરિસ્થિતિ છે તો મારો એ વિચાર કે-
 (ત સેય સ્વલુ મમ કલ જાવ જલતે વિવલ અસણ ૪ -

विसजेइ, तएणं सा उज्झया धणस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसु-
णेइ पडिसुणित्ता धणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालि
अक्खए गेणहइ गेणिहत्ता एगतमवक्कमइ एगतमवक्कमियाए
इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खलु तयाणं कोट्ठागारंसि वहवे
पछा सालिणं पडिपुण्णा चिट्ठति । त जया णं मम ताओ इमे
पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अह पछंतराओ अते
पच सालि अक्खए गहाय दाहामि त्तिकट्ठु एव सपेहेइ सपेहित्ता
ते पच सालि अक्खए एगते एडेइ एडित्ता सकम्मसजुत्ता
जाया यावि होत्था ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘एव सपेहेइ’ इत्यादि—एव उक्तरूपेण सप्रेक्षते मनसि विचार्यते ‘सपेहित्ता
सप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य कल्पे प्रभातसमये, यावत् तेजसा ज्वलति, सूर्य उद्गते सति
मित्रज्ञाति स्वजनप्रमुखान् चतसृणा स्नुषाणा कुलगृहवर्गं च-पितृगृहसम्बन्धिमाता
पितादीन्, आमन्त्रयति निमन्त्रयति, आमन्त्र्य विपुलमशनादिक चतुर्विधाहार उप-

‘एव सपेहेइ सपेहित्ता’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव सपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने इस पूर्वोक्त प्रकार अपने मन
में विचार किया (सपेहित्ता) विचार करके (कल्ल जाव मित्तणाइ०
चउण्ह सुण्हाण कुलधरवग्ग आमतेइ आमत्तित्ता विउल असण ४
उवत्तल्लवावेइ) फिर उसने प्राणकाल होते ही सूर्य के उदय हो जाने
पर मित्र, ज्ञाति, स्वजन आदि को और चारों ही पुत्रवधूओं के कुल
गृह वर्ग को—उनके माता पिता आदिको को आमन्त्रित किया । आमन्त्रिते

एव सपेहेइ, सपेहित्ता’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव सपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने पूर्वोक्त रूपे पोताना मनमा विचार
येथी (सपेहित्ता) विचार करीने (कल्ल जाव मित्तणाइ चउण्ह सुण्हाण कुलधर
वग्ग आमतेइ आमत्तित्ता विउल असण ४ उवत्तल्लवावेइ) अवादे सूर्यउदयपामता
नी साथे ४ तेथे पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन वगेरेने अने अरे था० पुत्र
वधूजाना ४ ४ गीजनोने तेमना मातापिता वगेरेने ४ अवा भाटे आमन्त्रित

પંચ સહ્યકાન્ શાલ્યક્ષતાન્ શાલિકળાન્ દત્વા 'જાણામિ' જાનામિ 'તાવ' તાવત્
 નિશ્ચયેન 'કા' સ્તુપા 'કિઠ' કથ કેન પ્રકારેણ 'સારસ્વતે' મંરસયતિ સગોપયતિ
 -સંચરણતઃ, મજૂપાદિષુ સસ્થાપનેન ગોપન કરોતિ. અથવા કા-વધૂ 'સવદ્વે' 'સમ્વર્ધયતિ' યદુત્વકરણતઃ વપનાદિના ? ॥ સૂ. ૦ ૨ ॥

મૂલમ્—એવં સપેહેઙ્ગ સપાહિત્તા કહ્લં જાવ મિત્તનાઙ્ગ ૦ ચઽઉળ્હ
 સુળ્હાળ કુલઘરવગ્ગ આમતેઙ્ગ આમંતિત્તા વિઽલ અસળં ૪
 ઉવક્ષ્વડાવેઙ્ગ, તઓ પચ્છા પહાણ ભોયળમડવસિ સુહાસળં
 મિત્તનાઙ્ગ ૦ ચઽઉળ્હ ય સુળ્હાળ કુલઘરવગ્ગેણં સદ્ધિ ત વિઽલ
 અસળ ૪ જાવ સક્કારેઙ્ગ સંમ્માણેઙ્ગ સક્કારિત્તા સંમ્માણેત્તા તસ્સેવ
 મિત્તનાઙ્ગ ૦ ચઽઉળ્હ-ય સુળ્હાળ કુલઘરવગ્ગસ્સ ય પુરઓ પચ્
 સાલિ અક્ષણ્ ગેળ્હઙ્ગ ગેળિહત્તા જેઠ્ઠા સુળ્હા ડઙ્ગિયા ત સદ્ધા-
 વેઙ્ગ સદ્ધવિત્તા ઇવ વયાસી—તુમ ણ પુત્તા મમ હત્થાઓ ઇમે
 પચ સાલિ અક્ષણ્ ગેળ્હાહિ ગેળિહત્તા અણુપુઙ્ગેણં સારક્ષેમાણી
 સંગોવેમાણી વિહરાહિ । જયાળ્હ પુત્તા । તુમ ઇમે પચ સાલિ
 અક્ષણ્ જાણ્જા તયાળ તુમ મમ ઇમે પચ સાલિ અક્ષણ્
 પઢિદિજ્જાણ્જાસિ તિકઠ્ઠુ સુળ્હાણ હત્થે દલયઙ્ગ દલયિત્તા પઢિ-

વધૂઓંની પરીક્ષા કે નિમિત્ત ઉન્ને પાંચ પાચ શાલિકળોં કો દૂં-ઔર
 દેકર યહ જ્ઞાત કરૂં કિ ઇન મે સે કૌન પુત્ર વધૂ કિસ તરહ સે ઇનકી
 રક્ષા કરતી હૈ, કૌન પુત્ર વધૂ ઇન્હે મજૂપા આદિ મે રાખકર ગુપ્ત રાખતી
 હૈ ઔર કૌન સી પુત્રવધૂ વપનાદિ ક્રિયા દ્વારા ઉન્હે વઢાતી હૈ । સૂત્ર '૨'

વધૂઓની પરીક્ષા માટે તેઓમાંથી દરેકને પાચ પાચ શાલિકળો (ડાગરના
 કળો) આપુ અને આપીને 'એ વાતની પરીક્ષા કર કે તેઓમાંથી કોણ કેવી
 રીતે તે શાલિકળોને સાચવી રાખે છે' યહ પુત્ર વધૂ શાલિકળોને પેટી વગેરે
 મા મૂકીને ગુપ્ત રાખે છે ? અને કઈ પુત્રવધૂ શાલિકળો ને વાપીને તેમની
 વૃદ્ધિ કરે છે ? ॥ સૂત્ર ૨ ॥

एवमवदत् हे पुत्रि त्व खलु मम हस्तादिगन् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहाण, गृहीत्वा च
'अणुपुत्रेण' 'अणुपुत्र्या-अनुक्रमेण सरक्षन्ती सगोपायन्ती' 'विहराहि' विहर ।
'जया' यदा-पस्मिन् समये खलु हे पुत्रि ! अह 'तुम' तत्रपार्थे इमान् पञ्च
शाल्यक्षतान् 'जाएज्जा' याचय, 'तया' तदा तस्मिन् समये खलु 'तुम' त्व
मम इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जासि' प्रतिदयाः पश्चाद् मद्य समर्पणे,
इतिकृत्वा-इत्युक्त्वा ज्येष्ठया स्नुषायाः हस्ते ददाति, दत्त्वा च प्रतिविसर्जयति,

धन्य सार्थवाह ने अपने मित्र ज्ञाति आदि जनों के तथा उन चारों
जपनी पुत्रवधूओं के कुल गृहवर्ग के सामने पांच शाल्यक्षतो को
लिया और लेकर ज्येष्ठा जो पुत्रवधू थी कि जिसका नाम उज्जिका थी
उसे बुलाया (सदाचित्ता एव वयासी तुम ण पुत्ता ! मम हत्थाओ
इमे पच सालिअक्खण गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुत्रे ण सारक्खेमाणी
सगोवेमाणी विहराहि) बुलाकर उससे ऐसा कहा-पुत्रि ! तुम मेरे हाथ
से इन पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हें सुरक्षित रखो सम्मा
लकर अच्छी तरह से रखो । (जयाण अह पुत्ता ! तुम इमे पच
सालिअक्खण जाएज्जतयाण तुम मम इमे पच सालिअक्खण पडिदि-
ज्जाएज्जासि) जय मै हे पुत्रि ! तुम से इन पाच शालि अक्षतों को
मागू तब तुम मेरे लिये इन्हें पीछे देना ।

(स्क्वहु सुण्हाए हत्थे दलयइ) ऐसा कहकर उसने उस ज्येष्ठ
स्नुषा के हाथ में उन शाल्यक्षतो को दे दिया । (दलयित्ता पडिविस-
ज्जेइ) देकर फिर उसे विमर्जित कर दिया ।

मेढमानेने सत्कार तेमज्ज सन्मान थर् अयु त्थारे धन्य सार्थवाडे पोत ना
मित्र ज्ञाति वगेरे स्वज्जेने तेमज्ज थारे पुत्र वधूओना भातापिता वगेरे
सगावहाला ओनी साथे पाय शाखिकेले (जगन्ना केले) लीया अने
पोताना सौथी भोटा पुत्रनी लाया उज्जिकाने ओलावी (सदाचित्ता एव
वयासी तुम ण पुत्ता ! ममहत्थाओ इमे पचसालि अक्खण गेण्हाहि गेण्हित्ता
अणुपुत्रेण सारक्खेमाणी सगोवेमाणी विहराहि) ओलावीने तेने आ प्रभावे
कहु " हे पुत्रि ! आ पाय शाखिकेलेने तमे म्मीडारे अने जेभने सारी
रति सलाणीने सुरक्षित राजे । (जयाण अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालि
अक्खण जाएज्ज तयाण तुम मम इमे पचसालि अक्खण पडिदिज्जासि) हे पुत्रि !
न्यारे हु तमारी पायेथी शाखिकेले भायु त्थारे तमे भने पाछा आपने

(स्क्वहु सुण्हाए हत्थे दलयइ) आभ कहीने तले भोटा पुत्रनी वधूना
जु ने भूझी दीधा (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) गादीकेले

स्फुरयति=निष्पादयति. ततः पश्चात् स्नातो भोजनमण्डपे सुखासननिष्पन्नः—
सुखेनासने उपविष्टः सन् मित्रज्ञातिस्वजनादिभिः सार्द्धं चतसृणां स्तुपाणां च
कुलवृद्धवर्गेण च सार्द्धं तद्विपुलमशानादिकं भोजयित्वा यावत्सत्कारयति वस्त्रादिभिः
समानयति मधुरवचनादिना, सत्कारं कृत्वा समानयित्वा तस्य धन्यसार्थवाहस्यैव
स्वमित्रज्ञाति प्रमुखाणामग्रे चतसृणां स्तुपाणां कुलवृद्धवर्गस्य पुरतः पञ्चशाल्य
क्षतान्, गृह्णन्ति गृहीत्वा ज्येष्ठां स्तुपां उज्ज्वला नाम्नीं तां शब्दयति शब्दयित्वा

करने के बाद फिर उसने विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध
आहार तैयार करवाया ।

(ततो पच्छा ण्हाए भोजणमडवनि सुहासणं मित्तणाइ० चउण्ह
य सुण्हाण कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ,
सम्माणेइ) जब चतुर्विध आहार निष्पन्न हो चुकी तब वह स्नान करके
भोजनशाला में सुख से आसन पर उपविष्ट (बैठ गया) हो गया
और मित्र, ज्ञाति एवं स्वजनादि को के सा १२ और अपनी पुत्रवधूओं
के माता पिता आदिकों के साथ २ उस चतुर्विध भोजन की विपुल
सामग्री का आहार करने के बाद में उन सबका उस ने वस्त्रादि से
सत्कार किया तथा मधुरवचनादि से सम्मान किया । (सक्कारित्ता
सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य
पुरओ पच्च सालि अक्खण गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्ह उज्झिया त
सदावेइ) जब सबका सत्कार और सम्मान हो चुका तब उस के बाद

कथो आभन्नु आभ्या पछी धन्य सार्थवाडे पुब्बण प्रभञ्जमा अशन वगेरे
नो चार प्रक्षरने आहार जनापडाये।

(ततोपच्छा ण्हाए भोजणमडवासि सुहासण मित्तणाइ चउण्हय सुण्हाण
कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ) अन्धारे
आरे जतने आहार तैय २ थय गये त्थारे ते स्नान करीने रसेाध घरमा
सुपेथी आसन उपर गेसी गये अने मित्र, ज्ञाति अने पोताना स्वजने
वगेरेनी साथे तेभज पोतानी पुत्र वधूयोना सगा वडालाओ मातापिताओ
नी साथे आरे जतना पुब्बण प्रभाञ्जमा तैयार क्त्वा मा आवेला आहारने
ज्भ्यो ज्भ्या पछी तेले वओ वगेरे आपीने ते जधाने सत्कार्या तेज्ज
मधुर वचनेथी ते जधानु सम्मान कर्तुं (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव
मित्तणाइ, चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ पच्चसालि अक्खण
गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्ह उज्झिया त सदावेइ) अन्धारे जधा आभन्ति

तस्मात्-कारणात् यदा यस्मिन् समये खलु मम तात श्वसुर इमान् पञ्च शाल्य
क्षतान् याचिष्यति ' तया ण ' तदानीं तस्मिन्नेव समये खलु अहं 'पल्लतराओ'
पल्लान्तरात्-कोष्ठागारम् ये अन्यतरा पल्लान्तात् 'अने' अन्यान् पञ्चशाल्यक्षतान्
' गहाय ' गृहीत्वा ' दाहामि ' दास्यामि, इति कृत्वा-इति मनसि निधाय ' एव
सपेहेइ ' एव सप्रेक्षते-चिन्तयति ' सपेहिता ' सप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्
श्वसुरप्रदत्तान् पञ्चशाल्यक्षतान् ' एगते ' एकान्ते ' एहेइ ' एडति - प्रक्षिपति-
पातयतीत्यर्थः ' एडिता ' प्रक्षिप्य ' सकम्मसजुत्ता ' स्वकर्म सप्रयुक्ता-जातावाप्य
भवत् स्वगृहादिकार्यकरणे उद्युक्ताऽऽसीदित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-एवं भोगवतियाए वि, णवरं सा छोल्लेइ छोल्लित्ता
अणुगिलइ अणुगिलित्ता जाया, एव रक्खियावि, णवरं गेणहइ
गेणित्ता इमेयारूवे अउज्जत्थिए० एवं खलु मम ताओ इमस्स
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलधरवग्गस्स य पुरओ सदा-
वेत्ता एव वयासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओजाव पडिदिज्जा
त्ति कट्टु पच सालि अक्खए जाइम्मइ तयाण अहं पल्लतराओ अते
पच सालिअक्खए गहाय दहामित्ति कट्टु एव सपेहेइ सपेहिता ते पंच
सालि अक्खए एगते एहेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि
होत्था) जय ऐसा किनने ही पल्यक चावलो के कोष्ठागार में भरे हुए
रखे हैं तो जिस समय श्वशुरजी इन पांच शाली-अक्षतों को मुझसे
मा गेग मैं उसी समय कोष्ठागार के मध्य में से किसी एक दूसरे
पल्यक से लेकर इन पांच शालि-अक्षतों को दे दूँगी । ऐसा उसने विचार
किया । विचार करके बादमें उसने श्वसुरप्रदत्त पांचशालि अक्षतों को
एकान्त में दिया । और ढालकर फिरवह अपने घर के काम करने
में लग गई ॥ सू० ३ ॥

जयाण मम ताओत्ति कट्टु पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अहं पल्लतराओ
अते पच सालि अक्खए गहाय दहामि चिट्ठु एव सपेहेइ, सपेहिता ते
पच सालि अक्खए एगते एहेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था)
न्याये, धण्डा पल्लजो योष्ठा कोठारमा छे तो ते वण्णते ससरा पाथ शादि
छेत्ता भागसे ते वण्णते पाथ शादिकेत्ता कोठारना पयकोमाथी लधने तेभने
आपी छेत्ता " आ प्रमात्ते विचारिने ससगळे आपेत्ता पाथ शादिकेत्ता
भोटा पुत्रनी वधूजे जेक तरक्षे देकी दीधा अने देकीने पोताना ६ मेशाना
धरकाभमा पदेवाछ गध ॥ सूत्र " ३ " ॥

તતસ્તદનન્તરં ચલુ સા-ઉજ્જિઙ્ઘા નામ્ની વધુઃ ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્યૈતમર્યે 'તદ્વત્સિ
તથેતિ કૃત્વા-તથાસ્તિતિ કથયિત્વા ' પઢિસુણેઝ ' પ્રતિશ્રુણોતિ સ્વીકરોતિ ।
' પઢિસુણિત્તા ' પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય ધન્યસ્ય સાર્થવાહમ્ય હસ્તાત્ ' તે ' તાન
પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ ગૃહ્ણતિ ગૃહીત્વા ' એગતમવક્રમઙ ' એગન્તમપક્રમતિ એકાન્ત
સ્થાને ગચ્છતિ ' એગતમવક્રમિયાએ ' એકાન્તમપક્રમિતાયાઃ એકાન્ત ગચ્છન્ત્યા
મનસિ ' હમેયારુએ ' અયમેતદ્વુપ ' અઙ્ગતિયએ ' આધ્યાત્મિક - આત્માશ્રયો યા-
વત્સકલ્પઃસમુદપદ્યત એવમ્મુના પ્રકારેણ ચલુ નિશ્રવેન 'તાયાણ' તાતસ્ય શ્વશુરસ્ય
(તાયાણ) અત્ર આદરાથં ગદ્યુવચન, ' કોઢાગારંસિ ' કોઢાગારે ' વઢવે ' વઢવ
-અનેકસલ્યકાશાલિના ' પલ્લા ' પલ્યકા -પલ્યકામાનવિશેષા તૈઃ ' પઢિપુણા '
પ્રતિપૂર્ણાઃ શ્રુતાસ્તિષ્ઠતિ સાર્દ્દગ્રયમણપ્રમિતાના ધાન્યાનામેક પલ્લકુ હત્યભિધીયતે
તે પલ્લકા વઢવ કોઢાગારે શ્રુતાઃ સતીતિ ભાવઃ । ' ત જયા ણ ' તદ્-

(તએણ સા ઉજ્જિઙ્ઘા ધળ્ણસ્સ-તહસ્સિ એયમદ્ધ પઢિસુણેઝ) ચલતે
સમય ઉસ જ્યેષ્ઠ પુત્ર વધુ ઉજ્જિઙ્ઘા ને ધન્ય સાર્થવાહ કે " તથાસ્તુ "
કહકર હસ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કરલિયા (પઢિસુણિત્તા ધળ્ણસ્સ
સત્થવાહસ્સ હત્યાઓ તે પચ સાલિ અક્કલએ ગેહહ) સ્વીકાર કરકે
ધન્ય સાર્થવાહ કે હાથસે ડન પાચ શાલ્યક્ષનો કો ફિર ડસને લેલિયા ।

(ગેણિહત્તા એગતમવક્રમઙ) લેકર ફિર વહ વહા સે એકાન્ત
સ્થાન મે ચલી ગઈ । (એગતમવક્રમિયાએ હમેયારુએ અઙ્ગતિયએ ૦)
વહા ઓકર ડસને એમા વિચાર કિયા-(પવ ચલુ તાયાણ કોઢાગારસિ
વઢવે પલ્લાસાલિ ણ પઢિપુણા ચિદ્ધતિ) તાત-શ્વશુરજી-કે કોઢાગાર
મે-અનેક ચાવલો કે પલ્યક ભરેહુએ રક્ષે હૈં । યહા પલ્યક એક પ્રમાણ
વિશેષ કા નામ હૈ । યહ ૩॥) મન કા હોતા હૈ । ત જયાણ મન તાઓ

આપીને તેમને જવાની આજ્ઞા આપી (તએણ સા ઉજ્જિઙ્ઘા ધળ્ણસ્સ તહસ્સિ
એયમદ્ધ પઢિસુણેઝ) જતી વખતે મોટા પુત્રની વધુ બિજિઙ્ઘાએ ધન્ય સાર્થ
વાહને ' સાઙ ' (તથાસ્તુ) આન કહાને તેની આજ્ઞાને સ્વીકારી (પઢિસુણિત્તા
ધળ્ણસ્સ સત્થવાહસ્સ હત્યાઓ તે પચ સાલિઅક્કલએ ગેહહ) આજ્ઞા સ્વીકાર્યા પછી
ધન્ય સાર્થવાહના હાથથી તેમણે પાચ શાલિકણ્ણો લઈ લીધા ।

(ગેણિહત્તા એગતમવક્રમઙ) શાલિકણ્ણો ને, લઈને તે ત્યાથી એકાન્ત સ્થાન
તરફ જતી રહી (એગતમવક્રમિયાએ હમેયારુએ અઙ્ગતિયએ ૦) ત્યા એક તરફ
આવીને તેણે વિચાર કર્યો-(એ ચલુ તાયાણ કોઢાગારસિ વઢવે પલ્લાસાલિ
પઢિપુણા ચિદ્ધતિ) " મારા સસરાના કોઢારમા ચોખાના ઘણા પલ્યકો ભરેલા
છે (પલ્યક એક પ્રમાણ વિશેષનું નામ છે તે જા મળતું હોય છે) (ત

ध्यात्मिक-आत्माश्रेय चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सक्त्प. समुदपद्यत, एव खलु
मा तात श्वसुरः ' इमस्स ' एतेषा मित्रज्ञातिप्रमुखाणा ' पुरओ ' पुरतः-समक्ष
पुनश्चतसृणां स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य पुरतोऽग्रे शब्दयित्वा चैवमवादीत् वक्ष्यमाण-
रीत्या मा कथितयान् त्व खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रि ! मम हस्तादिमान् पञ्चशालि-
कणान् गृहाण गृहीत्वा आनुपूर्व्यां सरक्षन्ती सगोपायन्ती निहर, यावद् यदाऽह
पुनर्याचय तदा खलु त्व महामिमान् पञ्चशाल्यक्षतान् ' पडिदिज्जाएज्जासि ' प्रति-
दद्याः प्रति समर्पयेः, इति कथयित्वा मम हस्ते पञ्चशालिकणा ददाति ' त-भवि-
यन्व मेत्थ कारणेण ' तस्माद्भविष्यमत्र किञ्चित्कारणमित्येव ' सपेहेइ ' सपेक्षते
-पर्यालोचयति विचारयतीत्यर्थः ' सपेहिता ' सपेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्

उसने वे छे लिया । लेने के बाद उसे ऐसा विचार आया (एव
खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हा ण कुलघरवग्ग
स्स य पुरओ सदावेत्ता एव वयासी) कि ये मेरे तात-श्वसुर-जो मुझे
इस मित्र ज्ञाति-आदि मडली के समक्ष बुलाकर इसतरह कह रहे हैं
(तुमण पुत्ता ! मम हत्याओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्तिकहुं मम
हत्थसि पच सालि अक्खण दलयइ त भवियन्वमेत्थ कारणेण) कि " हे
पुत्रि । तुम मेरे हाथसे पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हे सु-
रक्षित देखो । जब मैं तुम से इन्हे पीछे वापिस मागू तो तुम इन पांच
शाल्यक्षतोको मुझे समर्पित कर देना । सो ऐसा कहकर जो ये पांच
शाल्यक्षतो को मुझे दे रहे हैं तो इस विषय में कोई न कोई कारण
अवश्य होना चाहिये (त्तिकहुं एव सपेहेइ, सपेहिता ते पच सालि

छेत्ताने ल० लीधा अने त्थार णाह तेने आ नतने विचार उद्भव्यो-(एव
खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ
सदावेत्ता एव वयासी) ' भास ससरा पोताना मित्र, ज्ञाति वगेरे तेभज्ज आरे
पुत्रवधूओ ना मातापिता वगेरेनी सामे अने ओलावीने आ प्रभाणे कडी
रक्षा छे-(तुमण पुत्ता ! मम हत्याओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि त्तिकहुं
मम हत्थसि पचसालि अक्खण दलयइ त भवियन्वमेत्थकारणेण) " हे पुत्रि ।
आ पाच शालिकेत्तु तमे भारी पासेथी हो अने लधने ओमने सलाणीने
राओ । त्यारे हु तमारी पासेथी शालिकेत्तु भागु त्यारे आ पाचे शालिकेत्तु
तमे अने पाछा आपने आम उडीने अने आ शालिकेत्तु आपी रक्षा छे तो
ओनी पाछण गमेते कारण तो होवु अ नेधओ (त्तिकहुं एव सपेहेइ
सपेहिता ते पचसालि अक्खण सुद्धे वत्थे वषइ, वधित्ता रयण करडियाए पक्खिवेइ

एजासि तिकद्दु मम हत्थसि पच सालिअखए दलयइ त भवि-
यव्वमेत्थ कारणेणं तिकद्दु एवं संपेहेइ सपेहिता ते पंच सालि
अखए सुद्धे वत्थे वधइ, वंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ
पक्खिवित्ता ऊसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसइ पडिजागर
माणी विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—एव भोगवतिकामपि—भोगवती नाम्नी स्नुषामप्याह्वयति नवरं
'सा' भोगवती अशुरप्रदत्तपञ्चशालिग्नरूपानक्षतान् स्वस्थाने नीत्वा 'छोल्लेइ'
तुपरहित करोति 'छोल्लित्ता' निप्तुपीकृत्य 'अणुगिल्लइ' अनुगिलति—भक्षयति,
'अणुगिलित्ता' अनुगित्य भक्षयित्वा 'जाया' स्वभार्यसमयुक्ता जाताचा
प्यासीत्—स्वगृहकार्यकरणे लम्नाऽभवदिति भावः । एवमनेनैव प्रकारेण रक्षिता-
मपि—रक्षितानाम्नीं तृतीया स्नुषामप्याह्वयति, आह्वय तेन पचसरूपाः शालिकणा
दत्ताः, नवर सा तान् गृह्णाति, रम गृहीत्वा चायमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आ

‘एव भोगवतिया एवि’ इत्यादि । सूत्र

टीकार्थ—(एव भोगवतियाए वि) उसी तरह भोगवतिका नामकी
अपनी पुत्रवधू थी—उसे भी धन्यसार्थवाहने बुलाया (णवर) इसमें विशेष
पता केवल इतनी रही कि (सा छोल्लेइ) उसने उन शालिकणों को अपने
स्थान पर लेजाकर तुपरहित किया (छोल्लित्ता अणुगिल्लइ) और तुप
रहित कर वहउन्हे खा गई (अणुगिलित्ता जाया) खाकर बादमें
अपने काम में लग गई । (एव रक्खिया वि) इसी प्रकार धन्यसार्थवाहने
अपनी तीसरी रक्षिता नामकी पुत्रवधू को बुलाया (णवर गेण्हइ, गेण्हित्ता
इमेयारूवे अज्झत्थिए०) बुलाकर उसे भी पांच शालिकणों को दिया ।

‘एव भोगवतियाएवि’ इत्यादि

टीकार्थ—(एव भोगवतियाए वि) आ प्रभाते धन्यसार्थवाहे भोगवतिका
नामकी पोतानी श्रील पुत्रवधूने भोलावी (णवर) भोगवतिकाना पिपे वधारानु अ
अणुवु नेधअे वे (सा छोल्लेइ) तेले शालिकणुने पोताना निवास स्थाने लध
अधने तुप (इतरा) वगरना बना०या (छोल्लित्ता अणुगिल्लइ) अने शालिकणु
ना इतरा साइ करीने तेभने आध गध (अणुगिलित्ता जाया) आधा पधी
ते पोताना कामभा परोवाध गध (एव रक्खिया वि) आ रीते धन्यसार्थवाहे
पोतानी श्रील पुत्रवधू रक्षिताने भोलावी (णवर गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे
अज्झत्थिए) भोलावीने तेभने पणु पाय शालिकणु आभ्या रक्षित शालि-

वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेह करित्ता
वाडिपक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणु
पुव्वेणं संवड्ढेह । तएणं ते कोडुविया रोहणीए एयमट्ठ पडि-
सुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हति गिण्हित्ता अणुपुव्वेण
सारक्खति संगोवति विहरति तएणं ते कोडुंविया पढम पाउ-
ससि महावुट्ठिकायसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं
सुपरिकम्मियं करेति करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववति
दुच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेति करित्ता वाडिपरिक्खेव
करेति करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा सवड्ढे
माणा विहरति ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण से धण्णे’ ततस्तदनन्तर खलु स धन्यसार्थवाह ‘तहेव’
तस्यैव मित्रादीन् यावच्चतुर्थी रोहिणिका स्नुषा शब्दयति, शब्दयित्वा ‘जाव’
यावच्छब्देन यथा तृतीया रक्षिका शाल्यक्षतविषये चिंतयति तथैव रोहिणिकापि

‘तएण से धण्णे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से धण्णे) उस धन्यसार्थवाह ने (तहेव
मित्त जाव चउत्थि रोहिणीय सुण्ह सदावेइ) उसी तरह मित्रादि
परिजनो के समक्ष अपनी चतुर्थ पुत्रवधू कि जिमका नाम रोहिणी था
उसे बुलाया (सदावित्ता जाव त भणियव्व) बुलाकर उसे पांच शाल्य-
क्षत देकर उन्हे सुरक्षित रखने के लिये उससे कहा ।

श्वसुर की बात सुनकर जिस प्रकार प्राप्त शाल्यक्षतों के विषय में
तृतीय पुत्रवधू रक्षिका ने विचार किया था उसी तरह इस चतुर्थ पुत्रवधू

‘तएण से धण्णे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाइ (से धण्णे) धन्य सार्थवाह (तहेव मित्त जाव
चउत्थि रोहिणीय सुण्ह सदावेइ) आ प्रभाए ज मित्र वगेरे स भधीओनी साभे
पोतानी ओथी पुत्र वधू रोहिणीने ओलावी (सदावित्ता जाव त भणियव्व)
ओलावीने तेहे पाय शालिक्खे आपीने तेओने सुरक्षित राखवा भाटे कहु-

ससगनी बात सालणीने रोहिणीओ त्रीण पुत्रवधू रक्षिकाओ जेम
विचरो कया तेमज तेहे पणु आ विचे धणु जगना विचरो कया छेवटे ते

પન્નશાલ્યક્ષતાન્ ' સુદે ' શુદ્ધે-પત્રિત્રે ' વત્થે ' વત્થે ' વધદ્ ' વધ્નાતિ-વધિત્તા ' વધ્વા ' રયણકરડિયાણ ' રત્નકરડિકાયા-રત્નડિગ્નિકાયા ' પક્કિલ્લવેદ્ ' પ્રક્ષિ પતિ રક્ષાર્થે સ્થાપયતિ ' પક્કિલ્લવિત્તા ' પ્રતિક્ષિપ્ય સ્થાપયિત્વા ' ઉસીસામૂલે ' ઉચ્છીર્ષકમૂલે-ઉપધાનસ્પાધોભાગે ' ઠાવેદ્ ' સ્થાપયતિ ' ઠાવિત્તા ' સ્થાપયિત્વા ' તિસજ્ઞ ' ત્રિસધ્ય-પ્રાતર્મધ્યાહ્નમાયકાલલક્ષણે ' પઢિજાગરમાળી ' પ્રતિ જાગ્રતી તદ્દરક્ષાર્થે સાવધાનાસતી, ' વિહરદ્ ' વિહરતિ ॥ સુ. ૪ ॥

મૂલમ્-તણ સે ધણે સત્થવાહે તહેવમિત્ત જાવ ચડર્થિ રોહિણીયં સુપ્પહ સદ્દાવેદ્ સદ્દાવિત્તા જાવ તં ભણિયઠ્ઠવ્વ ઇત્થ કારણેણં તં સેય સ્વલુ મમ ઇણ પચ સાલિ અમ્મલ્લ સારક્કલ્લે-માળીણ સગોવેમાળીણ સવઢ્ઢેમાળીણ તિકદ્ધુ ઇવ સપેહેદ્ સંપે-હિત્તા કુલધરપુરિસે સદ્દાવેદ્ સદ્દાવિત્તા ઇવ વયાસી - તુભ્ભેણં દેવાણુપ્પિયા । ઇણ પંચ સાલિ અમ્મલ્લ ગિણ્ણહદ્ ગિણ્ણિત્તા પઢન પાડસંસિ મહાવુટ્ઠિકાયાંસિ નિવ્વડ્ઢયસિ સમાણંસિ સુહ્હાગં કેયાર સુપરિકમ્મિયં કરેહ કરિત્તા ઇમે પચ સાલિ અમ્મલ્લ

અમ્મલ્લ સુદે વત્થે વધદ્, વધિત્તા રયણકરડિયાણ પક્કિલ્લવેદ્, પ્રક્ષિલ્લ વિત્તા ઉસીસામૂલે ઠાવેદ્, ઠાવિત્તા તિસજ્ઞ પઢિજાગરમાળી વિહરદ્) એસા જબ ઉસને વિચાર કિયા તો વિચાર કરકે ઉસને ઉન પાચ શાલ્ય ક્ષતોં કો શુદ્ધ વત્થ મે વાધા વાધકર ઉન્હ ફિર રત્નનિર્મિત્ત એક ડબ્બે મે રલ્લ દિયા । રલ્લકર ઉસ ડબ્બે કો ઉસને ઉસીસે-કે નીચે ભાગ મેં સિરહાને કે અધોભાગ મેં રલ્લ દિયા । ઇસ તરહ વહ પ્રાતઃ મધ્યાન્હ ઔર સાયકાલ મેં ઇન તીનોં કાલો મેં ઉસકી સભાલ મે સાવધાન હોકર રહને લગી । સૂત્ર " ૪ "

પક્કિલ્લવિત્તા ઉસીસા મૂલે ઠાવેદ્ ઠાવિત્તા તિસજ્ઞ પઢિજાગરમાળી વિહરદ્) આમ વિચારીને તેણે માય શાલિકલ્લેને શુદ્ધ વત્થમા બાધીને રત્ન જડેલી એક ડાબલીમા મૂકી દીધા ડાબલીમા મૂકીને તેણે તે ડાબલીને પોતાના બો શીકાની નીચે મૂકી દીધી આ પ્રમાણે તે સવાર બપોર અને સાંજ આમ ત્રણે વખત તે ડાબલીને સલાળીને રાખવા લાગી ॥ સુ. ૪ ॥

‘सुड्ढाग’ क्षुलक ‘कयार’ केदार = क्षेत्र वयारा, इति भाषा प्रसिद्ध ‘सुपरि
कम्मिय’ सुपरिकर्मित = शाल्यक्षतवपनयोग्य ‘करेह’ कुरत, कृत्वा च ‘इमे’
इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् ‘वावेह’ वपत प्ररोहार्य क्षेत्रे प्रक्षिपत, उपत्वा = क्षेत्रे वपन
कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि चार ‘उक्खयनिहए’ उत्त्वातनिहतान् क्षेत्रे जातान्
पुनस्तान् वर्धनार्थं द्वित्रिवारम्-उत्पाटय अन्यत्र क्षेत्रे समारोपितान् ‘करेह’
कुरुत एरुस्मात् स्थानादन्यस्थाने रोपयत ‘करित्ता’ कृत्वा-रोपयित्वा, ‘वाडि-
पडिक्खेव’ वाटिकापरिक्षेप = प्राकारान्तरेण वाटिका कुरुत कृत्वा सरक्षन्त,
सगोपायन्त आनुपूर्व्या = अनुक्रमेण ‘सवड्ढेह’ सर्वर्धयत ।

सुपरिकम्मिय करेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इन पाच शालि अक्षतो
को लो-और लेकर जब सर्व प्रथम वर्षाकाल के प्रारम्भ में जलराशि
रूप अप्काय महा वृष्टिरूप से भूमि पर गिरे तो उस समय तुम छोटी
सी एक क्यारी में शालि अक्षतो को बोने के योग्य करो (करित्ता
इमे पच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए
करेह, करित्ता वाडिपडिक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
अणुपुब्बेण सवड्ढेह) जब वह क्यारी अच्छी तरह से परिकर्मित हो
जावे तो उसमें इन पाच शालि अक्षतों को तुम लोग बो दो ।

बोकर दुबारा तिथारा उन्हें उत्त्वात निहत करो-अर्थात् जब वे
खेत में-क्यारी में-अकुररूप से उत्पन्न हो जावे तब उन्हें वृद्धिगत
करने के लिये वहां से उखाड़ो और फिर दूसरी जगह-क्यारी में उन्हें
आरोपित करो । इस तरह दो तीन बार करो । करके फिर उस खेत
को बाड़ी से परिवृत करो-प्राकार के आकार जैसी काटो की बाड़ से

हे देवानुप्रियो ! तब आ पाच शालिक्खेवा दो अने वर्षाकाल ना प्रारम्भमा
अप्कायमहावृष्टि इमे जण वृष्टि थाय त्थारे तबे नानी सरणी अेक क्यारी
ने आ शालिक्खेवा वावी शके ते रीते थेअ्य णनावणे, (करित्ता इमे पच सालि
अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खइ निहए करेह, करित्ता वाडि
पडिक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा अणुपुब्बेण सवड्ढेह) क्यारी
ज्थारे सरभ रीते तैयार थइ जय त्थारे तेमा आ पाये शालिक्खेवाने वावणे

वावीने भील्ल अने त्रील्ल वण्त उत्थात निहत करे अेटले हे ज्थारे
शालिक्खेवा क्यारीमा जणी जय त्थारे तेजोना वधन भाटे ते स्थानेथी उपा-
डीने करी भीले स्थाने रोपे आ प्रभावे तबे जे त्रल्ल वण्त करे आभ
करीने तबे ते शालिक्खेवाणी क्यारीनी जेअेर काटाओनी वाड णनावे आ

ત્રિવિધપ્રકારેણ ચિન્તયતિ, 'ત મણિયજ્ઞ' તસ્માદ્વિતચ્યમત્ર કિંચિત્કારણેન મમ તાતેન શ્વસુરેણ મદ્મ પચ શાલ્યક્ષતા દત્તા., તત્ર ષોડ્શિ હેતુરસ્તિ । 'ત' તદ્ તસ્માત્કારણાત્ 'સેય' શ્રેય સુલ્ભકરમેતદેવ રુલુ મમ 'एए' एतान् पञ्च शाल्य क्षतान् सरक्षन्त्याः । सगोपायन्त्याः सर्वर्द्धयन्त्याः इति निश्चित्य एव संप्रेक्षते=पर्यालोचयति, संप्रेक्ष्य च बुलगृहपुरूपान्=कृपिकर्मनिपुणनिजकुटुम्बपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा चैव रक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्, हे देवानुप्रियाः यूय खलु एतान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृहीत गृहीत्वा 'पद्मपाउससि' प्रथम महावृषि चर्पाकालप्रारम्भसमये 'महाबुद्धिकायसि' महावृष्टिकाये 'निवह्यसि समाणसि' निपतिते सति महावृष्टिरूपेण जलराशि रूपेऽपकाये भूमौ निपतिते सतीत्यर्थः

રોહિણીકાને भी विविधरूप से विचार किया । अन्त में इस निष्कर्ष पर वह पहुँची कि श्वसुरजीने जो ये पाँच शाल्यक्षत मुझे दिये हैं— और इनकी रक्षा आदि करने के विषय में जो मुझ से कहा है सो इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है । (त सेय खलु मम एए पच सालि अक्खए सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए सबड्डेमाणीए त्तिकट्टुएव सपे हेइ) इसलिये मुझे यही सुखकर है कि मैं इन पाँच शाल्यक्षतों की रक्षा करूँ इन का सगोपन और सर्वर्द्धन करूँ । ऐसा निश्चय कर उसने यह पूर्वोक्त रूप से विचार किया । (सपेहिता कुलघरपुरिसे सहावेइ) विचार कर फिर बाद में उसने कृपिकर्म करने में निपुण अपने कुटुम्ब के पुरुषों को बुलाया । (सहावित्ता एव वयासी) बुला कर ऐसा कहा— (तुव्भेण देवाणुप्पिया ! एए पच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता पढमपाउससि महाबुद्धिकायसि निवह्यसि समाणसि खुड्ढाग केयार

એ નિર્ણય ઉપર આવી કે સસરાએ મને પાંચ ગાલીકણે આપ્યા છે અને તેઓની રક્ષામાટે મને જે કંઈ કહ્યું છે તેની પાછળ કંઈને કંઈ કારણ તો થોડકસ હોવું જ બેઠાએ (ત સેય રુલુ મમ એએ પચ સાલિ અક્ખએ સારક્ખેમાણીર સગોવેમાણીએ સવહ્દેમાણીએ ત્તિ કટ્ટુએવ સપેહેइ) તો મારી એજ દ્રવ્ય છે કે હું તેઓની રક્ષા કરૂં તેઓનું સગોપન તેમજ સર્વર્ધન કરૂં આ પ્રમાણે શેહિણી એ પાંચ શાલિકણે ને માટે વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા કુલઘરપુરિસે સહાવેइ) વિચાર કરીને તેણે કૃપિકર્મ કરવામા એટલે કે એ વામા અતુર એવા પોતાના જ કુટુંબના માણસોને બોલાવ્યા (સહાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને તેણે આ રીતે કહ્યું—

(તુવ્ભેણ દેવાણુપ્પિયા ! એએ પચ સાલિ અક્ખએ ગિણ્હइ ગિણ્હિત્તા પદમ પાઉસસિ મહાબુદ્ધિકાયસિ નિવહ્યસિ સમાણસિ ખુદ્ધાગ કેયાર સુપરિકમ્મિય કરેइ)

मूढम्—तएणं ते साली अणुपुव्वेणं सारविज्जमाणा
संगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्हो भासा
जाव निउरंवभूया पासाईया दरिसणिजा अभिरूवा पडिरूवा ।
तएण साली पत्तिया वत्तिया गड्ढिभया पसूया आगयगंधा
खीराइया वद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरिय-
पव्वकडा जाया यावि होत्था, तएण ते कोडुंविया ते सालिए
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए जाणित्ता तिकखेहिं णव पज्जण-
एहि असियएहि लुणेति लुणि त्ता करयलमलिए करेति, करित्ता
पुणति, तत्थण चोक्खाणं सूयाणं अवखडाणं अप्फुडियाण
छड्डुछडापूयाणं सालीण मागहए पत्थए जाए । तएण ते
कोडुविया ते साली णवएसु घडएसु पविखवति पविखवित्ता

डूमाणा विहरति) जय सर्व प्रथम वर्षा काल के प्रारंभ में जलराशी रूप
अप्रकाय महा वृष्टि के रूप भूमि पर बरसा तब उन लोगो ने शालि
वपन के योग्य एक छोटा क्यारी बनाया । बनाकर उस में उन पांच शालि
अक्षतों को बो दिया । बाद में जब वे अक्षुर के रूप में उत्पन्न हो गये—तब
उन्हें मूलस्थान से उगवाड कर दूसरे स्थान में आरोपित कर दिया । इस
तरह दो तीन बार उन्हें उगवाड और आरोपित किया पश्चात् उस खेत
को याद से परिवृत्त कर दिया । इस प्रकार कर के उन सब ने क्रमशः
उनकी रक्षा की—उपद्रवों से उन्हें बचाया और उन्हें बढ़ाया ॥ मू० ५ ॥

प्रारंभमा न्यारे सो प्रथम अप्रकाय महावृष्टि ना इपमा णव वर्षा धर्ध त्यारे
ते दोडोअे सालिक्खोने वाववा योग्य अेवी अे- नानी सरणी क्यारी जनावी
नानी क्यारी जनावीने तेओअे तेमा पांच सालिक्खोने वाववा न्यारे
सालिक्खे। अ कुरित थया त्यारे तेओअे तेमना पोताना भृण स्थानेथी उपाडीने
भीना स्थाने दोधी दीधा तयार भाद ज्यारीने तेओअे काटानी वाड करी
दीधी आ प्रभावे ते दोडोअे यथाकमे वावेला सालिक्खोनी रक्षा करी, उप
द्रवेथी तेमनी सलाण राणी अने तेमतु वर्धन कथुं ॥ सूत्र “ ५ ”

ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकपुराः रोहिण्याः एतमर्थं शाल्यक्षतसव
र्धनरूपमर्थं प्रति शृण्वन्ति-रोहिणी कथनानुसारेण स्वीकुर्वन्ति स्वीकृत्य च तान्
पञ्च शाल्यक्षतान् गृह्णन्ति गृहीत्या चानुपूर्वेण क्रमेण सरक्षन्ति सगोपायन्ति, 'वि
हरति' आसते । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकाः पुराः प्रथममावृषि महा-
वृष्टिकाये निपतिते सति क्षुल्लक केदार सुपरिष्कृत शाल्यपनयोग्य कुर्वन्ति
कृत्वा च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् उपन्ति द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवार 'उक्त्व
निहण' उखात निहतान् मूलस्थानादुत्पाद्य अन्यत्र स्थाने समारोपितान् कुर्वन्ति
कृत्वा वाटिका परिक्षेपं कुर्वन्ति कृत्वा च आनुपूर्व्या अनुक्रमेण-सरक्षन्तः-सम्यक्
रक्षां कुर्वन्तः सगोपायन्तः सर्वथ्यन्तो विहरन्ति ॥ सू० ५ ॥

उसे घेर दो-और घेर कर उस की रक्षा करो-उपद्रवों से उसे बचावो
इस प्रकार क्रमशः इन शालि अक्षतों को तुम लोग घेराओ । (तएण
ते कौटुम्बिका रोहिणी एयमवृषि पडिसुणति ते पञ्चसालिअक्खए गिण्हति
गिण्हित्ता अणुपुण्वेण सारक्खेति स गोवति विहरति) रोहिणिका के
इस शालि अक्षत वर्धनरूप अर्थ को उन कौटुम्बिक पुराओं ने स्वीकार
कर लिया और उन पांच शालि अक्षतों को उससे ले लिया । लेकर
रोहिणीका के कहने के अनुसार क्रमशः उन सब ने रक्षा की और उप
द्रवों से उन्हें बचाया ।

(तएण ते कौटुम्बिका पढमापाउससि महा बुद्धिक्कायसि निबड्ढयसि
समाणसि खुड्डीय केयार सुपरिकम्मिय करन्ति, करित्ता ते पञ्च सालि
अक्खए ववति दुच्चपि तच्चपि उक्खय निहण करेति, करित्ता वाडि
परिक्खेव करेति, करित्ता अणुपुण्वेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सब-

प्रमाणे तमे ते वावेला शालिक्खेणा निविधं रीते, सत्ताण पूर्वकं रक्षां कर्त्ता
कर्त्ता तेष्सां तु वर्धनं करो । (तएण ते कौटुम्बिका रोहिणी एयमवृषि पडिसुणति ते
पञ्च सालि अक्खए गिण्हति गिण्हित्ता अणुपुण्वेण सारक्खेति स गोवति विहरति)
शालिक्खेणा-शालिक्खेणा, वर्धनं माटेना-पथा सूयने, कौटुम्बिक पुराओं
स्वीकार्या, अने पांचे शालिक्खेने तेमनी पासेथी लधं लीधा-लधने शालिक्खेनी
सूयना सुयण शालिक्खे नी तेमले उपद्रवोथी रक्षा करी ।

(तएण ते कौटुम्बिका पढमापाउससि महाबुद्धिक्कायसि निबड्ढयसि समाण
सि खुड्डीय केयार सुपरिकम्मिय करेति, करित्ता ते पञ्चसालि अक्खए ववति
दुच्चपि तच्चपि अक्खए निहण करेति, करित्ता वाडिपरिक्खेव करेति करित्ता
अणुपुण्वेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सबड्ढेमाणा विहरति) ५५) ४११॥

‘मेह निरुत्तभूया’ मेघनिकुरम्बभूता अन्योन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घन
निरतरच्छायरमणीयमेघाना निकुरवः समूहस्तद्वत् शोभाशालिन इत्यर्थः अतएव
‘पासाईया’ प्रासादीयाः दर्शकमनः प्रसन्नता हेतुत्वात् ‘दरिसणिज्जा’ दर्शनी-
याः नेत्रानन्दकारित्वात् ‘अभिरूवा’ अभिरूपाः कमनीयत्वात् ‘पडिरूवा’
प्रतिरूपा-सर्वथा चित्तहारित्वात् । ततस्तदनन्तर खलु ‘साली’ शालय ‘पत्तिया’
पत्रिता-पत्रयुक्ता जाता ‘वत्तिता’-वृत्ताकारतया वर्तुला जाता नालरूपतया शाखा
दिना समतया वा वृत्तभाव प्राप्ता ‘गम्भिया’ गर्भिता प्रवर्धनानन्तर जातगर्भाः=
अन्तः सञ्जातमञ्जरिका इत्यर्थ ‘पसूयाः’ प्रसूताः=निस्तृतमञ्जरिका ‘आगय-
गधा’ आगतगन्धाः=सर्वतः प्रसरत्सुरभिगन्धाः ‘खीराइया’ क्षीरकिताः=
समुत्पन्नदुग्धा, ‘बद्धफला’ ‘बद्धफलाः क्षीरस्य कणरूपेण परिणामादुत्पन्नफला
‘पक्का’ पक्वाः कणाना परिपाकात् परिपुष्टा ‘परियागया’ पर्यायागताः=
सर्वावयवेन पक्कास्यामुपगताः । ‘सल्लइया’ शलाकिताः=शुष्कपत्रत्वेन

निकुरम्बभूया, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा) वर्ण से वह
काली हो गई आभा भी उसकी काली निकलने लगी । यावत् वह मेघ
निकुरम्ब समूह जैसी हो गई ।

शाखा प्रशाखाओ के परस्पर में प्रवेश से, सान्द्र और अन्तर रहित
छाया से रमणीय मेघों के समूह की तरह वह शोभित होने लगी ।
जो भी कोई उसे देखता तो उसका मन आनन्द से खिल उठता ।
नेत्रों को उसके दर्शन से बहुत अधिक शीतलता प्राप्त होती । इस
लिये वह कमनीय और प्रतिरूप बन रही थी । चित्ताकर्षक थी और
बहुत अधिक मनोज्ञ थी । (तएण साली पत्तिया, वत्तिया, गम्भिया,
पसूया, आगय गधा खीराइया, बद्धफला, पक्का, पडियागया, सल्लइया,
पत्तइया हरियपण्वकडा, जाया यात्रि होत्थो) धीरे २ समयानुसार वह

ते श्याम रगना थउ गया. तेमनामाथी डाणी आला कूटवा लागी यावत्
ते मेघनीकुरण जेवा थउ गया

आ रीते वावेली ते, दागर शाखा प्रशाखज्जेना प्रवेशथी आद्र तेमज्ज
सधन छायाथी रमणीय मेघसमूहो जेवी शोभवा लागी जे केछ तेना सी इर्थ
ने जेतु त्थारे तेनु मन हर्षधेवु थधने नाथी उठतु हुत्तु तेने जेवाथी नेत्रो
शीतलता अनुभवता हुता जेथी ते कमनीय अने प्रतिरूप लागती हुती ते
चित्तने आकर्षनारी तेमज्ज भूणज्ज मनोहर हुती (तएण साली पत्तिया,
वत्तिया, गम्भिया, पसूया आगमगधा, खीराइया बद्धफला पक्कापडियागया, सल्लइया

उवलिपंति, उवलिपित्ता लंछियमुद्दिह करेति, करित्ता कोट्टा-
गारस्स एगदेसंसि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
विहरंति । तएण ते कोडुविया दोच्चंमि वासरत्तसि पढम
पाउसंसि महावुट्टिकायंसि निवइयसि खुड्ढाग केयार सुपरिक-
म्मिय निवइयसि खुड्ढागं केयार सुपरिकम्मियंकरेति ते साली
ववति दोच्चपि तच्चपि उवखयणिहए जाव लुणेति जाव चलण
तलमलिए करेति, करेत्ता पुणंति तत्थण सालीण वहवे कुडवा
जाव एगदेससि ठावेति ठावित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
विहरति तएण ते कोडुविया तच्चंसि वासारत्तसि महावुट्टिकायंसि
निवइयंसि वहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेति लुणत्ता
संवहति सवहित्ता खलय करेति खलय करित्ता मल्लेति जाव
वहवे कुभा जाया, तएण ते कोडुविया साली कोट्टागारंसि
पक्खिवंति जाव विहरति अउत्थे वासारत्ते वहवे कुंभसया
जाया ॥ सू० ६ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते शालय आनुव्या सरक्ष्यमाणाःसंगोप्यमानाः
संवद्धयमानाः शालय ' जाया ' जाताः-निष्पन्नाः किंभूताः ? किण्हा ' कृष्णा-
वर्णतः श्यामाः ' किण्होभासा ' कृष्णावभासाः कृष्णच्छायाः श्यामकान्तयः यावद्

‘ तएण ते साली अणुपुब्बेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से साली) अन्य खेत में आरोपित की
गई वह शाली (अणुपुब्बेण) क्रम २ से (सारक्खिज्जमाणा, सगोविज्ज
माणा सबद्धिज्जमाणा साली जाया) उन लोगो से रक्षितकी जाकर सगो-
पित की जाकर बढ़ाई गई सो खूब बढ़ गई (किण्हा किण्हो भासा, जाव

‘ तएण ते साली अणुपुब्बेण ’ इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्पारणाद (ते साली) नीला जेतुरभा उपाडीने वावेला शालि
कृष्णे (अणुपुब्बेण) यथाक्रमे (सारक्खिज्जमाणा स गोविज्जमाणा, सवद्धिज्जमाणा
सालीजाया) तेजोमयी रक्षित, स जोषित तेभञ्च वर्धित यधने भूषण वृद्धि
भाभ्या (किण्हा किण्होभासा जाव निउर वभूया, पासाईया दरसणिज्जा, अभिरुवा)

पत्रितान् यावत् शल्यक्रित पत्रक्रितान् ज्ञात्वा तीक्ष्णैः 'णवपञ्जणएहि' नवपायनकै-नमानि=नवीनानि पायनक्रानि=लोइकारेण तापितानि कुट्टितानि तीक्ष्णवारी कृतानि कृत्वा पुनस्तापयित्वा जले निमोलनानि येषां तानि, तैः 'असियएहि' 'असिय' इति दात्रार्थकोऽयदेशी शब्दः दात्ररित्यर्थः, लुनन्ति=छेदयन्ति, लवित्वा 'करतलमलिए' करतलमृदितान् कर लपर्पणेतान् कुर्वन्ति, शालिकणान् मज्जरीतो निस्तारयन्तीत्यर्थः 'पुणति' पुनन्ति पलालादीनपसारयन्ति तत्र खलु=

(तपण ते कौडुबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिम्खे हिं णवपञ्जणएहिं आसिएहिं लुणेति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणति, तत्थणं चोक्खाण सयाण अक्खड्डाण अण्णुडियाण उड्डुल्लड्डाप्पयाण सालीण मागहए पत्थए जाए) इस तरह जब वह शालि-सस्य पूर्णरूप पककर तयार हो गई और जब उन कौडुम्बिकपुरुषोंने उसे पत्रित यावत् शल्यक्रित पत्राक्रित-पके हुए पत्तो वाली और शालि से युक्त देखा तो उसे पूर्ण पकी हुई जानकर तीक्ष्ण नवपायनक वाले दात्रों से-हैसियोसे उन लोगों ने उसे काट लिया।

“लुहार के द्वारा जो तापित और कुट्टित कर पहिले तीक्ष्ण धारी वाले बनाये गये थे हैं और बाद में फिर तापित कर जलमे बुझाये गये हैं” यह “नव पायनक” इन शब्द का अर्थ है। यह “आसिएहिं” यह हैसिया (दात्र) वाचक देशीय शब्द है। काटकर फिर उन्होंने उसशालि मजरी मे से हाथो से मर्दित कर शालिकणों को निकाला।

(तपण ते कौडुबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिम्खेहिं णवपञ्जणएहिं आसियएहिं लुणेति लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणति तत्थणं चोक्खाण सयाण अक्खड्डाण अण्णुडियाण उड्डुल्लड्डाप्पयाण सालीण मागहए पत्थए जाए) आ भ्रमाखे व्यापारे ते शालिधान् पूरुड्ढे परिपक्व थर्धने तैथ २ थर्ध गधं त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोऽये तेने पत्रित यावत् शल्यक्रित पत्राक्रित ओट्ठे ठे पाडेला पाड्डा वाणी ओट्ठे त्यारे तेने पूरुड्ढे परिपक्व थयेदी जाणुनि तीक्ष्ण धारवाणी हातरडीथा तेने कापी नाणी

“लुहार वडे तपावी तेमज्जीपीने पडेला तीक्ष्ण धारवणा जनापवाभा आवे अने त्या भाइ इरी तपावाते पाणीभा ठडा करवाभा आवे तेने 'नव पायनक' कडेवाभा आवे छे

‘आमिओहिं’ आ दात्र (हातरडी) वाचक देशी गण्ड छे

डागरने कापीने तेओऽये शालिमजरीओने छथेणीथी भसणीने शालीकणो

एटा पड्या बूसाने तेओऽये त्याथी इर क्युं आ रीते ते स्थान बूसु

शलाकारूपेणावस्थिताः 'पत्तइया' पत्रकिताः=पत्रपत्राणां प्रायश क्षरणादल्प पत्राः, 'हरियपव्वकडा' हरितपर्वाकाण्डाः-हरितानि=परिपक्वतया हरितालवर्णानि आशुक्रानि प्रादुर्भवदकुरत्यपीतवर्णानि - पर्वाकाण्डानि येषां ते तथा, जाताश्चाप्य भवन् सम्पूर्णतया परिपक्वा जाता इत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिका तान् शालीन्

शाली-धान्य-पत्र युक्त होने लगी, आकारमें गोल २ दिखलाई देने लगी । नाल के ऊपर शाखा आदि-अवयव समान रूप से नीचेकी ओर छत्तो के समान झुक गये थे इसलिये वह आकार में गोलाकार दिखलाई देती थी । जब वह अच्छी तरह वर्धित हो चुकी तब उसमें भीतर मजरी आगई और बाहिर निकल आई । चारों ओर सुगंध उसमें से फैलने लगी ।

धीरे २ उस मजरीमें दूध भा उत्पन्न हो गया । और वह दुग्ध कणरूप से परिणम गया इससे उस मजरी में अन्न भी आगये । वे अन्नके दाने भी परिपक्व हो गये सपूर्ण रूप से अच्छी तरह पककर पुष्ट हो गये । इस तरह जब वह शाली-धान्य पककर तैयार हो गई -तब उसके पत्ते शुष्क हो चले और वे शलाई के आकर में उसमें लटकने लगे । धीरे २ कुछ २ पके हुए पत्ते उसमें से क्षरित भी हो गये । इसलिए उसमें बहुत कम पत्ते लगे हुए रह गये । उसके पर्व काण्ड परिपक्व होने के कारण प्रादुर्भविन अकुर के समान पीले हो गये ।

पत्तइया, हरिय पव्वकडा जाया यात्रि होत्वा) समय जता यथाकमे ते अगार पाहडा वाणी धवा भाडी आकारभा ते गोण देभावा लागी अगारनी हाडीनी उपर नानी शाभाओ वगेरे अवयवो सरणी रीते छतरिना आकारभा नीचे नभेला डता ओथी ज ते आकारभा गोण देभाती डती न्यारे ते सारी चेडे मोटी थर्ध गध त्यरे तेभा मजरीओ नीकणी अने तेनी सुवास बोभेर प्रसरी गर्ध

धीमे धीमे मजरीओभा दूध उत्पन्न थयु अने यथा समये ते दूध तेभाज कछुाना इपभा जधावा लाग्यु आम समय जता शालिकछुा सपूर्ण रीते परिपक्व तेमज पुष्ट थर्ध गया आ रीते न्यारे ते शालिधान्य नो पाके तैयार थर्ध गये त्यारे तेना पाहडासूकाध गया अने ते शलाका (सणी) ना आकारे तेभा लटकवा लाग्या तेभा लटकवा लाग्या धीमे धीमे पाकेला पाहडा तेभाथी भरवा लाग्या ओथी जूणज बोडा पाहडा तेनी उपर रह्यी गया तेना पर्वकांड (छाडनी जे गाठ पव्वेनो लाग) परिपक्व थर्ध जवाथी प्रादुर्भवित अकुरनी जेम पीछो थर्ध गये डते।

चिह्नेन चिहिताः, मुद्रिताः = नाममुद्रादिनाऽङ्कितान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्टागारस्त' कोट्टागाहस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारारे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथमप्रावृषि प्रावृष्ट् पारम्भसमये महावृष्टिकाये निषिते महावर्षार्या सत्यां क्षुल्लक केदार 'सुपरिकम्भियं' सुपरिकम्भित=विशिष्ट श्लक्ष्णमृत्तिकादिदानेन हलकुदादिनोत्खनने च सस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्चपि तच्चपि' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिशारमापि 'उक्खयनिहण' उत्खातनिहतान्=उत्पाटितरोपिताच् यावत् लुण्ठन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दो । पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया । समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और सभाल भी करते रहे । (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुद्दाग केयार सुपरिकम्भिय करेति) इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष सम्बन्धी चौमासा जय लगा - तव-सर्वं प्रथम महवृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुहाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया । उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया । (ते शालि वपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहण जाव लुण्ठेति) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया ।

पहिले की तरह जब वह धान्य अकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहां से उखाड़ कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया । इस तरह यह

भूमी दीधा यथा समय तेजो तेमनी सलाण पवु गभता डता (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुद्दाग केयार सुपरिकम्भिय करेति) त्थार पछी कौटुम्बिक पुरुषोंने भील वपे' योभाभाना द्विपेसा आब्बा त्थारे सौ पडेवा महावृष्टिना इपे जणवपथी यथा भाड डण्ठी जेडाने तेमज्ज डेहाणी वगेरे थी जोहीने ओक नानु जेतार तैयार उरु नेमा थिड्ढी अने डोमण भाटी नाणीने तेने भूणज सरस शालि (आगर) वाववा योग्ग जनापी दीधु (ते सालीवपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय-निहण जाव लुण्ठेति) त्थार पछी जेतारमा शालिनेवापी दीधी

पडेवाणी जेम ज्जारे शालिना अकुरे भंडार नीड्ढया त्थारे कौटुम्बिक भावुसे ओ तेना छोडने त्थाथी उपाडीने भील स्थाने रेपी दीधा आ

तस्मिन् स्थाने 'चोखण' चोखण=रुचरनिस्मारणेन स्रञ्जानाम् 'सुडयाण' श्रुतिताना=श्रुतयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः 'अखडण' अखण्डानाम्=अक्षतानाम् 'अफुडियाण' अफुटितानाम्=अत्रुटितानाम् 'उड्डायाण' 'छड छडापूतानाम्'—'छड-उड' शब्दपूर्वक सूर्पादिना शोधितानां शालीनां शालिकणानां 'मागहए' मागधकः—मागधदेशप्रसिद्ध, 'पत्यए' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थः ।

ततः खजु ते कौडुम्बिकास्तान् शालीन् 'नएसु' नवकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकुलशेषु 'पक्खिवति' पक्खिवन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य 'उवलिपति' उपलिम्पन्ति=उटमुखे पिधानरूपस्य गोमयादिना संयोजनेन मुख निरोध कुर्वन्ति, उपलिप्य 'लछिपमुद्दि' लच्छिपमुद्रितान् लच्छिता=रेखादि

उत्तके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान में चोखे-फूटाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शुद्ध युक्त-वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-साधित-टूटे नहीं तथा उड छड शब्द पूर्वक नृपादि से शोधित किये गये शालिकण निकले जो मागध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौडुबिया ते सालि णवणसु, घडएसु, पक्खिवति पक्खिवित्ता उवलिपति, उवलिपित्ता लछियमुद्दि करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खे माणा, सगोवेमाणा विहरति) इस के बाद उन कौडुम्बिक पुरुषोंने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया । भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बंद कर दिया । बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

वगेरे साक्ष करवाथी स्वच्छ शालिकणों शूद्ध युक्त-वाववा योग्य, अण्ड-अक्षत रूप वगेरे, थी छड छड शब्द कथावडावीने साक्षदेखा शालिकणों नीकल्या ते शालिकणों मागधदेश प्रसिद्ध ओक प्रस्थ प्रमाण छता (तएण ते कौडुबिया ते सालिणवणसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता, उवलिपति उवलिपित्ता लछियमुद्दि करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) तयार भाद कौडुम्बिक पुरुषोन्ने शालिकणोंने नवा नाना नाना कणशोभा करीने भूझी दीधा

तयार भाद कणशोभा में ढाकीने तेमने छाबु वगेरेथी लीपीने भध करी दीधा कणशोने भध करीने देखाओ वगेरेथी तेमने चिह्न करीने तेमना छपर नाभनी भडार लगावी दीधी तयार पश्री लडाइमा ओक

चिहनेन चिह्निताः, मुद्रिता = नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्टागारस्स' कोट्टागाहस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारान्ने द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथममावृष्टिं प्रावृष्ट् पारम्भसमये महावृष्टिकाये, निपतिते महावर्षार्या सत्यां शुल्लक केदार 'सुपरिकम्मियं' सुपरिकर्मित=विशिष्ट श्लक्ष्णमृत्तिकादिदानेन हलकुदायादिनोत्खनने च सस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्च पि तच्चपि' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिशारमापि 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान्=उत्पाटितरोपितान् यावत् लुण्ठन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दो । पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया । समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और सभाल भी करते रहे । (तएण ते कौटुबिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुड्ढाग केयार सुपरिकम्मिय करेति । इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष सवन्धी चौमासा जय लगा -तय-सर्व प्रथम महवृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुदाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया । उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया । (ते शालि वपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया ।

पहिले की तरह जब वह धान्य अकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहा से उखाड कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया । इस तरह यह

भूमी दीधा यथा समय तेओ तेमनी सलाण पवु राभता डता (तएण ते कौटुबिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुड्ढाग केयार सुपरिकम्मिय करेति) त्थार पछी कौटु गिक पुरुषोओ भील वपे' थोमानाना द्विसो आवा त्यारे सौ पडेवा महावृष्टिना इपे जणवषा थथा भाड डणधी जेडाने तेमज डेडाणी वगेरे थी जेहीने ओक नानु जेतरे तैथार उथु' नेमा थिकणी अने डेमण भाटी नाभीने तेने भूणज सरस सादि (डागर) वाववा थोग्य जनावी दीधु (ते सालीवपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) त्थार पछी जेतरेमा शाखिनेवावी दीधी

पडेडानी जेम न्यारे शाखिना अकुरे भंडार नीडज्या त्यारे, कौटु गिक भाणुसो ओ तेना छोडाने त्याथी उपाडीने भील स्थाने रे थी दीधा आ

तस्मिन् स्थाने 'चोख्वाण' चोखाण=रुचरनिम्मारणेन स्वच्छानाम् 'मुडयाण' श्रुक्तानाम्=श्रुक्तयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः 'अखडाण' अखडाणाम्=अक्षतानाम् 'अफुडियाण' अफुडितानाम्=अफुडितानाम् 'उड्डाण' उड्डाणाम्=छडछडापूतानाम्- 'छड-उड' शब्दपूर्वक सूर्यादिना शोभितानां शालिकाणां शालिकणानां 'मागहए' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्ध, 'पत्यए' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थः ।

ततः खञ्ज ते कौडुम्बिकास्तान् शालीन् 'नएसु' नरकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुरुल्लेषु 'पम्बिवति' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य 'उवलिपति' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना संयोजनेन मुख निरोध कुर्वन्ति, उपलिप्य 'लछियमुदिए' लच्छियमुद्रितान् लच्छिता=रेखादि-

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान में चोखे-कूडाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त-वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-सावित-टूटे नहीं तथा उड्ड छड शब्द पूर्वक नृपादि से शोभित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौडुमिया ते सालि णवणसु, घडएसु, पम्बिवति पम्बिवत्ता उवलिपति, उवलिपित्ता लछियमुदिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) इस के बाद उन कौडुम्बिक पुरुषोंने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया । भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बंद कर दिया । बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

वगेरे साक्ष करवाथी स्वच्छ शालिकणो शूक युक्त-वाववा योग्य, अण्ड-अक्षत रूप वगेरे, थी छड छड शब्द अक्षत-सावित-टूटे नहीं तथा उड्ड छड शब्द पूर्वक नृपादि से शोभित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुता (तएण ते कौडुमिया ते सालि णवणसु घडएसु पम्बिवति पम्बिवत्ता, उवलिपति उवलिपित्ता लछियमुदिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) त्थार भाह कौडुम्बिक पुरुषोऽपि शालिकणानि नवा नाना नाना कणशेभा लरीने भूरी दीधा

त्थार भाह कणशेभाना भा दाडीने तेभने छावु वगेरेथी लीपीने णध करी दीधा कणशेभाने णध करीने रेणाओ वगेरेथी तेभने थिहिन करीने तेभना उपर नामनी भडोर लगावी दीधी त्थार पत्री लडारभा ओक कणशेभाने

यावत् वहवः=वृहद्घटाः जाताः=अनेकवृहद्घटाः शालिपूर्णा अभूवन्नित्यर्थः ।
ततःखलु ते कौटुम्बिकाः शालीन् कोष्ठागारे प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति यावत् सर्गो
पायन्तो विहरन्ति । चतुर्थे ' सासारत्वे=चतुर्थवर्षसम्बन्धि-चातुर्मास्यकाले वर्षे

चौमासा प्रारभ हुआ और उस में सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जब
जलकी वर्षा हुई तो उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक खेत सुपरिकर्मित किये
उन में उस शाली को बो दिया । यावत् उसे काट लिया । जब
वह सब कट चुकी तब गट्टा के रूपमें बांधा तब मस्तक परस्कध पर भार
रूप से उसे रख कर वे सब खलिहान में ले आये । लाकर वहां उन्हीं
ने धान्यमर्दन के योग्य खलिहान तैयार किया । उस के तैयार हो जाने
पर उस में उस शाली को फैला कर रख दिया । बाद में बैलो द्वारा
उस की दाँव की । यावत् वह धान्य इतना निष्पन्न हुआ कि उससे
बड़े २ घड़े भर गये । (तण्ण ते कौटुम्बिया साली कोष्ठागारसि पक्खि-
वेत्ति, जाव विहरति, चउत्थे वासारत्ते वहवे कुमसया जाया) इसके
बाद उन लोगो ने उन धान्य को कोष्ठागार में रख दिया और समय २
उस की देखभाल करने लगे । इसी तरह जब चौथे वर्ष का चतुर्मास

आ रीते समय पसार यता न्यारे त्रीण वणत वर्षा काल आव्यो अने
भडावृष्टिना इपे प्रथम नण वर्षा यत् त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोअे धण्णा भेतरे।
तैयार थ्या

अथा भेतरेभा तेअोअे शाली वावी अने आम समय नता न्यारे
ते भडेलानी नेम परिचक्र थध गध त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोअे शालिने पाक
कापी दीधा न्यारे लण्णु थध त्यारे लाराअो भाधी भाथे तेमअे भले भूडीने
अथा भेतरेनी शालिने अणामा लध आव्या त्या लावीने तेअोअे धान्य
मर्दन योग्य अणु तैयार क्युं तैयार क्यो आढ तेअोअे शालि ने पाथरी
दीधी अने अणढो इरवीने अणु क्युं आ प्रभाण्णे आगानी पडेलानी
नेम भाधी विधिअो पताव्या आढ भेतरेभाथी शालिधान्य आटलु अणु ययु
के नेनाथी धण्णा भोटा भोट कण्णो लराध गया

(तण्ण ते कौटुम्बिया साली कोष्ठागारसि पक्खिवेत्ति, जाव विहरति च
उत्थे वासारत्ते वहवे कुमसया जाया)

त्यार आढ तेअोअे शालिधान्य थी लरेला कण्णोने कोठारभा भूडी दीधा
अने यथा समय तेमनी सवाण राअवा लाज्या आ प्रभाण्णे न थोथा वर्धना

तत्र खलु शालीना गहयः कुडवाः शान्तिगभृता गहयः कुडवा अभूवन् मंजाताः,
यावत् एगदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरसन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति । ततः
खलु ते कौडुम्यिकास्तृतीये र्गारो महाट्टिक्काये निषतिते सति गहन् केदारोन्
सुपरिकर्मितान् यावद् एनन्ति, अत्रिा सवहन्ति=भाररूपेण तान् उद्ध्या मस्तके
रुक्धेवा निधाय खले स्थापयितु समानयन्ति । तत्रतोऽपनीय तान् गहन्ति, सप्रुष=
समानीय 'खलय' खलय=धान्यमर्दनस्थान 'करेति' कुर्वन्ति शालीन खले
स्थापयन्तीत्यर्थः, कृत्वा=खले सस्थाप्य 'मलेति' खले प्रसार्यन्तीवर्द्धयन्ति

उत्खारु (उत्खारना) निखात (रोपना) रूपक्रिया उन्होने दो तीन बार की
यावत् धीरे २ उसके पूर्णत पकजाने पर उन्होने ने उसे काट लिया । (जाव
चरण तल मल्लिण करेति, करेत्ता पुणति, तत्थण सालीण गहवे कुडवा जाव
एगदेससि ठावेति ठावित्ता सारवखमाणा सगोवेमाणा विहरति) यावत्
उसे अपने २ पैरों के तलियो से मर्दित किया । बाद में उसे पलालभादि
के अपसारण (दूर) से साफ किया । इस तरह वहाँ शालियों के अनेक
कुडव (घडे) उन से भर गये । यावत् उन कुडवो (घडो) को उन्होने
ने ले जाकर पहिले की तरह भंडार में एक तरफ रख दिया ।

रखकर वे समय २ पर उनकी सारस भाल भी करने लगे । (तण्ण
ते कौडुविया तच्चपि वासारत्तसि महा बुड्ढिकायसि निवइयसि गहवे
केयारे सुपरिकम्मिण जाव लुणेंति, लुणित्ता सवहति सवहत्ता खलय
करेति, खलयकरेत्ता मल्लेति, जाव गहवे कुभा जाया) इस तरह
धीरे २ समय निकल ने पर जब तीसरी बार वर्षा काल सम्बन्धी

रीते आ उत्थात (उपाडवु) निष्ठात (रापवु नी डिगा तेभल्ले जे त्रयुवार करी
समय जता यथासमये ज्यारे पाड तैयार थड गथे त्यारे तेओओ तेने कापी दीधे

(जाव चरण तल मल्लिण करेति कोत्ता पुणति, तत्थण सालीण गहवे कुडवा
जाव एगदेससि, ठावेति ठावित्ता सारवखमाणा सगोवेमाणा विहरति)

अने 'यावत्' तेने पोताना पगेथी भन्ति ज्ये त्नार पछी तेभाथी लुधु
वगेरे साइ कथुं आ प्रभावे त्या शालिओ (आगर) ना घण्टा कुडव-कणशे।
-बराध गया आ रीते ते कौटुजिड पुरुषोओ पडेछानी जेम न शालिथी
परिपूणुं कणशेने केडाग्मा ओड तरइ मूकी दीधे यथा समय शालिना कण
शेनी तेओ सलाण पणु राभता हता

(तण्ण ते कौडुविया तच्चपि व सारत्तमि महाबुड्ढिकायसि निवइयसि गहवे
केयारे सुपरिकम्मिण जाव लुणेंति, लुणित्ता, सवहति सवहत्ता खलय, करेति,
खलय करेत्ता मल्लेति जाव गहवे कुभा जाया)

हंता अत्थि । तएणं पुत्ता । मम ते सालि अक्खए पडिनि-
जाएहि । तएणं सा उज्झिया धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ
सम्मं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्टागारं तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालिअक्खए गेणहई, गिणिहत्ता
जेणेव धणो सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं
सत्थवाहं एवं वयासी एएणं ते पंचसालिअक्खए-त्ति कट्ठ
धणस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ ।
तएणं धणो सत्थवाहे उज्झिय सवहसावियं करेइ, करित्ता
एवं वयासी-किं णं पुत्ता । ते चेव एए पंच सालि अक्खए
उदाहु अन्ने ? । तएणं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी-
एवं खलु तुव्वे ताओ । इओ अईए पंचमे सेवच्छरे इमस्स
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि । तएणं
अह तुव्वं एयमट्ठ पडिसुणित्ता ते पंचसालिअक्खए गेणहामि,
गिणिहत्ता एगंतमवक्कमामि । तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए
जाव समुपज्जित्था-एव खलु तायाणं कोट्टागारसि० जाव सर्क-
म्मसपउत्ता जाया, त ण खलु ताओ ते चेवं पंच सालिअक्खए
एएण अन्ने । तएणं से धणो उज्झियाए अत्तिए एयमट्ठ
सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं
तस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ
तस्स कुलघरस्सं छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च
समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च
बाहिरपेसणकारिं ठवेइ ।

तानां शालीनां गृह्णि कुम्भशतानि जातानि बहूनि कुम्भशतानि शालिसंभृतानि जातानि ॥ सू० ॥ ६ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स पचमयंसि संवच्छरसि परि-
णममाणंसि पुब्बरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयांरुवे अज्झात्थिए
जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे
चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पचसालि अक्खया हत्थे
दिन्ना तं सेय खलु मम कल्ल जाव जलते पच सालिअक्खए
पडिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा
संगोविया वा सवड्ढिया जाव त्ति क एवं संपेहेइ, संपेहिन्ना
कल्ल जाव जलंते विउल असणपाणिखाइमसाइम उवक्खडा-
वेइ, उवक्खडावत्ता मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर
जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल-
घरवग्गस्स पुरओ जेट्ठ उज्झिय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
एव खलु अह पुत्ता । इओ अईए पचमासि संवच्छरंसि इम-
स्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ
तव हत्थसि पंचसालि अक्खए दलयामि, जयाणं अह पुत्ता ।
एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा तथाणं तुम मम इमे पंच
सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्ति, से नूणं पुत्ता । 'अट्ठे समट्ठे',

प्रारम्भ हुआ तब उस समय बोई गई और बर्धित हुई उस घान्य के
सैकड़ों कुम्भ तैयार हो गये । अर्थात् वह घान्य इतनी अधिक निपजी
कि जिससे सैकड़ों बड़े २ घड़े उससे भर गये । सूत्र " ६ "

आमासाभा वाववाभा आवेवी शालिथी से कडो भोटों कणशे लराछ गया
ओटवे के शालि घान्यने ओटवे। ओधे संरस पाक तैयार थयो के तेनाथी
से कडो भोग भोटा कणशे लराछ गया ॥ सूत्र " ६ " ॥

तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कसदूस्स विउल धण जाव
साव तेज्जस्स य भडागारिणिं ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो । जाव पच य से महव्वयाइं रक्खि
याइं भवन्ति, से ण इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे
जहा व सा रक्खिया ॥ ३ ॥

रोहिणियावि एवं चेव, नवर तुब्भं ताओ । मम सुवहुय
सगडीसागडं दलाह जेणं अहं तुब्भ ते पच सालिअक्खए पडि-
णिज्जाएमि । तएणं से धण्णे रोहिणि एव वयासी-कहं णं
पुत्ता । तुम मम ते पच सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाइ-
स्ससि ? । तएणं सा रोहिणी धण्ण एव वयासी-एवं खलु
ताओ । तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त० जाव बहवे
कुभसया जाया, तेणेव कमेणं, एव खलु ताओ । तुब्भे ते पच
सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाएमि । तएण से धण्णे सत्थ-
वाहे रोहिणियाए सुवहुय सगडोसागड दलयइ । तएणं सा
रोहिणी सुवहु सगडीसागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारं विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले
उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडीसागड भरेइ, भरित्ता रायगिहे
नगर मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे
तेणेव उवागच्छइ । तएण रायगिहे नयरे सिघाडग जाव बहु-
जणो अन्नमन्ने एवमाइक्खइ - धन्नेण देवाणुप्पिया ! धण्णे
सत्थवाहे, जस्स ण रोहिणिया सुण्हा पच सालिअक्खए सगड-
सागडिएण निज्जाएइ । तएणसे धण्णे सत्थवाहे ते पच सालि-

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा णिग्गंथी
वा जाव पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति सेणं
इह भवे चेव बहूण समणाणं ४ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ जहा
सा उज्झिया ॥ १ ॥

एव भोगवइयावि, नवरं तस्स जाव कडतियं च कुट्टतियं
च पीसितिय च, एव रुधतिय, रधतिय, परिवेसतिय च परि-
भायतिय च अब्भतरिय च पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाओ ! जो अम्हं समणो वा जाव पचयसे
महाव्वयाइ फोडियाइ भवति से णं इह भवे चेव बहूण सम-
णाण ४ जाव हीलणिज्जे ४ जहा व सा भोगवइया ॥ २ ॥

एवं रक्खिइयावि, नवर जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता मजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते
पंचसालिअक्खए गेणहइ, गिणिहत्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवा
गच्छइ, उवागच्छित्ता पचसालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ ।
तएण से धण्णे रक्खिइय एव वयासी—किं ण पुत्ता ते चेव एए
पचसालिअक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति । तएण रक्खिइया धण्णं
सत्थवाह एव वयासी—ते चेव ताया । एए पच सालिअक्खया
णो अन्ने । कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुब्भे इओ पचममि
जाव ‘भवियव्व एत्थ कारणेणं’—ति कहु ते पचसालिअक्खए
सुद्धे वत्थे जाव तिसस्स पडिजागरमाणी २ विहरामि, त एएण
कारणेण ताओ । ते चेव एए पच सालिअक्खया, णो अन्ने ।
तएण से धण्णे रक्खिइयाए अतिए एयमइ सोच्चा हट्टुइ ०

પરીક્ષાર્થે તે પચ્ચ શાલ્યક્ષતા હસ્તે દત્તા આસન્, 'સેય' શ્રેયઃ=ઉચિતમ્ અસ્ય પ્રતિયાચિતુમિત્યનેન સવન્ધ' ! એવં ચલુ મમ કલ્પે યાવજ્જ્વલતિ=સૂર્યોદયે સતિ= પ્રભાતે પચ્ચશાલ્યક્ષતાન્ 'પઢિજાહત્તણ' પ્રતિયાચિતુ=પતિગ્રહીતુમ્, 'જાણામિ' જાનામિ=તદધુના નિર્ણયામિ યત્- 'જાવ' યાવત્=યાવત્સરુચકાઃ શાલ્યક્ષતા મયા દત્તાસ્તે 'તાર' તારત્=તાવન્પરિમિતાઃ કથા સ્તુપયા 'કિહ' કથ=કેન પ્રકારેણ સરક્ષિતાઃ સગોપિતાઃ સર્વર્થિતા યાવત્ 'તિક્કુ' 'ઇતિ કૃત્વા' ઇત્યભિપ્રાય મ્નસિ નિધાય એવ=વક્ષ્યમાગમકારેણ સપેક્ષયતિ=વિચારયતિ, સપેક્ષ્ય કલ્પે યાવજ્જ્વલતિ પ્રભાતસમયે વિપુલમશ્ન પાન સ્વાદ્ય ચતુર્વિધમાહારમ્. ઉપસ્કા

સવચ્છરે ચઉણ્હ સુપ્પહાણ પરિક્ષણદ્વયાણ તે પચ્ચ સાલિ અક્ખયા હત્થે દિન્ના-ત સેય ચલુ મમ કલ્લં જાવ જલ તે પચ્ચ સાલિ અક્ખણ પઢિ-જાહત્તણ) કિ મૈને આજ સે ગત પાંચવે વર્ષ મે ચારોં અપની પુત્રવધૂઓં કે ઉન કી બુદ્ધિ કી પરીક્ષા કે નિમિત્ત હાર્યોં મૈં ઉન પાચ પાંચ શાલિ-અક્ષતોં કો દિયા થા, તો અવ પ્રાતઃકાલ હોતે હી જય સૂર્યોદય હો જાય-ગા-મૈં ઉન પાચ શાલિ અક્ષતોં કો ઉનસે પીછે માગ લૂં યહ ઉચિત હૈં ।

(જાવ જાણામિ તાવ કાણ કિણ્હ સારક્ષિયા વા સગોવિયા વા સવઙ્ઘિયા જાવ ત્તિ કટ્ટુ એવ સપેહેહ) હસસે મૈં યહ નિર્ણય કર લૂંગા કિ જિતને શાલ્યક્ષત મૈંને કેન્હે દિયે થે વે ઉતને શાલ્યક્ષત કિસ પુત્ર વધૂ ને કિસ પ્રકાર સે સરક્ષિત કિયે હૈં, સગોપિત કિયે હૈં ઓર સવ-ર્થિત કિયે હૈં । હસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે ઉસને વિચાર કિયા (સપેહિત્તા

(એવ ચલુ મમ્ હઐં અઈં પચમે સવચ્છરે ચઉણ્હાણ પરિક્ષણદ્વયાણ તે પચસાલિ અક્ખયા હત્થે દિન્ના-ત સેય ચલુ મમ કલ્લતે જાવ જલતે પચસાલિ અક્ખણ પઢિજાહત્તણ)

કે આજથી પાચ વર્ષ પહેલાં મે ચારે પુત્રવધૂઓને તેમની બુદ્ધિ પરીક્ષા માટે તેમના હાથોમા પાચ શાલિકણે આપ્યા હતા તો હવે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાની સાથે જ હું તેમની પાસેથી પાચે શાલિકણે પાઝ માગુ એ જ ઉચિત છે

(જાવ જાણામિ તાવ કાણ કિણ્હ સારક્ષિયા વા સગોવિયા વા સવઙ્ઘિયા જાવ ત્તિ કટ્ટુ એવ સપેહેહ)

એનાથી મને એ વાતની ખબર પડશે કે મે જેટલા શાલિકણે તેમને આપ્યા હતા તેને કદ પુત્રવધૂએ કેવી રીતે સરક્ષિત, સગોપિત તેમજ સર્વર્થિત કર્યો છે આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો

अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ताहट्ठं पडि-
च्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल-
घरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य
जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव सर्व्वकज्जव विव
पमाणभूयं ठावेइ ।

एवामेव समणाउसो । जाव पंच य से महाव्वया संवड्ढिया
भवन्ति से णं इह भवे चेव चहूणं समणाणं० ४ अञ्चणिज्जे जाव
वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणिया ।

एव खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते-त्तिवेमि ॥

॥ सत्तमं नायज्झणं समत्त ॥ ७ ॥

टीका—‘ तएण तस्स ’ इत्यादि । ततः खलु तस्य धर्म्मस्य=धर्म्यसार्थवा
घाहस्य पञ्चमे सगत्तरे ‘ परिणममाणसि ’ परिणम्यमाने=संपूर्यमाणे सति पूर्वरा
श्रापरात्रकालसमये अयमेतद्रूपः— आध्यात्मिकः=आत्मनि विचार यावत्
मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत— एव खलु मया ‘ इओ ’ इतः=अद्यतनादिवसात्प्राग्
अतीते पञ्चमे वर्षे चतसृणा स्नुषाणा ‘ परिकल्पेणट्ठयाए ’ परीक्षणार्थाय=बुद्धि-

‘ तएण तस्स धण्णस्स ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स धण्णस्स) उस धर्म्य सार्थवाह को
(पचमयसि सबच्छरसि परिणममाणसि) पांच वर्ष जब पूर्ण हो चुके,
तब (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि) मध्यरात्रि के समय में (इमेयस्सवे
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत्
मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु मए इओ अईए पच में

“ तएण तस्स धण्णस्स ” इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाह (तस्स धण्णस्स) धर्म्य सार्थवाहने
(पचमयसि सबच्छरसि परिणममाणसि) पाच वर्षोंआरे पूरा थया त्थार(पुव्वरत्तावर-
त्तकालसमयसि) आध्मी रात्रिना वण्णते (इमेयाक्खे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
आ गतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्ने)

यदा खलु अह पुत्रि । एतान पञ्च शाल्यक्षतान् याचेय तदा खलु त्व महामि
मान् पञ्च शाल्यक्षतान् प्रतिदद्या 'इति, स नून पुत्रि । अर्थ. समर्थ' ? उज्झिता
माह- हन्त ! अस्ति=एतत्सत्यमस्ति । श्रेष्ठीमाह- 'त' तत्=तस्मात् खलु
त्व हे पुत्रि । मद्य तान् 'पडिन्ज्जाएहि' प्रतिनिर्यातय=प्रतिममर्पय । तत् खलु
सा उज्झिता धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं सम्यक् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रति
श्रुत्य यत्रैव कोष्ठागारं तत्रोपागच्छति, उपागत्य 'पल्लाओ' पल्लात्=शालि

कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थसि पच सालि अक्खए दलधामि)
पुलाकर उससे ऐसा कहा हे पुत्रि ! आज से गन पाँचवें वर्ष में मैंने जो
इन मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुल गृह-
वर्ग के समक्ष तुम्हारे हाथ में पाच शालि-अक्षतों को दिया था ।
(जयाण अह पुत्ता एए पच सालि अक्खए जाण्जा) और हे पुत्रि
ऐसा कहा था कि जब मे इन पाच शालि-अक्षतों को माँगू (तयाण
तुम मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि त्ति) तब तुम मुझे इन
पाच शालि-अक्षतों को पीछे वापिस दे देना (से णूण पुत्ता अट्ठे समट्ठे)
हे पुत्रि ! कहो यही बात कही थी न ? (हंता अत्थि) तब उज्झिताने
कहा-हाँ यही बात कही थी (तण्ण पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए
पडिदिज्जाएहि) तो पुत्रि ! तुम मुझे उन पाच शालि अक्षतों को अब
पीछे वापिस दे दो । (तण्ण सा उज्झया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ
सम्म पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागार तेणेव उवागच्छइ)

जोलावीने तेले कहु ठे ठे पुत्रि ! आजथी पाच वर्ष पडेला मे
तने आ जथा मित्र ज्ञाति वगेरे परिजने। अने थारे पुत्रवधूओंना सगा
पडेलाओंनी साथे तमारा हाथमा पाच शालिकेले। आप्या इता

(जयाण अह पुत्ता एए पचसालि अक्खए जाण्जा)

अने ओम कहु इतु ठे थ्यारे हु तमाजी पासेथी आ पाच शालिकेले। भाशु

(तयाण तुम मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जएसि त्ति)

त्यारे तमे मने आ पाचे शालिकेले। पाछा आपने (से णूण पुत्ता अट्ठे
समट्ठे) हे पुत्रि ! जोला मे तमने ओम बात कडी इती ने ? (हंता अत्थि)
त्यारे उज्झिताओ कहु- " हा ओम बात कडी इती " तण्ण पुत्ता ! मम ते
सालि अक्खए पडिदिज्जाएहि) तो हे पुत्रि ! ते पाचे शालिकेले। तमे मने
पाछा आपीदे।

(तण्ण सा उज्झया धण्णस्स सत्थवाहस्स, एयमट्ठ सम्म पडिसुणेइ पडिसुणि-
त्ता जेणेव कोट्ठागार तेणेव उवागच्छइ)

रयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतीन् चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गेण सार्द्धं भोजयित्वा याचतान् समान्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतो 'जेद्व' ज्येष्ठां=ज्येष्ठपुत्रवधूम् 'उज्झिय' उज्झिताम् =उज्झितानाम्नी शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीन्- एव खलु अहं पुत्रि ! इतोऽतीते पञ्चमे सप्तसरे अस्य मित्रादेशचतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तत्र हस्ते पञ्च शाल्यक्षतान् 'दलयामि' ददामि=दत्तवान् कथितवाच्य

कल्ल जाव जलते विउल असणपाणग्वाहमसाहम उवक्खडावेइ- उवक्खडावित्ता-मित्तनाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ जेद्व उज्झिय सदावेइ) विचार कर के फिर उसने प्रातःकाल सूर्योदय होने पर विपुलमात्रा में अशन, पान, स्वाद्य एव स्वाद्य रूप से चारों प्रकार का आहार तैयार करवाया ।

जब चारों प्रकार का आहार अच्छी तरह निष्पन्न हो चुका तब उसने अपने समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के साथ भोजन किया । याद में उन भवका सम्मान सत्कार किया । और उन्हीं मित्रादि परिजनों के एव अपनी चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के समक्ष जेठी जो पुत्रवधू थी कि जिस का नाम उज्झिता था उसे बुलाया । (सदावित्ता एव वयासी एव खलु अहं पुत्ता । इओ अईए पचमसि सवच्छरसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण

(सपेहिता कल्ल जाव जलते विउल असण पाणग्वाहम उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ चउण्ह सुण्हाण कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ जेद्व उज्झिय सदावेइ)

विचार करीने तेले सवारे सूर्योदयपात्र्या भाद अशन, पान भाद अने स्पर्ध आभार जतने पुच्छण प्रमाणुभा आहार तैयार करावडोये।

आरे जतने आहार सारी रीते तैयार थछ गये। त्यारे तेले पाताना भादा मित्र ज्ञाति वगेरे परिजने। तेमज आरे पुत्रवधूओना सग वडावाओनी साथे बोजन क्युं जभ्या भाद तेले भाधाने सत्कार-तथा सम्मान क्युं त्यारण्हा मित्र वगेरे परिजने। अने आरे पुत्रवधूओना 'सगावडावाओनी' साथे तेले मोटा पुत्रनी वधू उज्झिताने बोलावी।

(सदावित्ता एव वयासी एव खलु अहंपुत्ता । इओ अईए पचमसि सवच्छरसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ तत्र हत्यसि पव सालि अवक्खए दलयामि)

दत्-एव खलु युय हे तात ! अतीते पञ्चमे सवत्सरे अस्य मित्रज्ञातिपभृतेः, चत-
सृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य 'जाव' यावत् पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् दत्त्वा
कथितवन्तः-हे पुत्रि ! त्वमेतान् पञ्चशाल्यक्षतान् संरक्षन्ती सगोपायन्ती विह-
रति । ततः खलु अहं युष्माकमेतमर्थं प्रतिश्रुणोमि प्रतिश्रुत्य तान् पञ्चशाल्य-
क्षतान् गृह्णामि, गृहीत्वा-एकान्तमपक्रामामि, ततः खलु तदा मम मनसि अयमे-
तद्वै आन्यात्मिक-विचार यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत एव खलु 'तायाण'

एव वयासी एव खलु तुभ्ये ताओ ! इओ अईए पचमे सवत्सरे इमस्स
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुल० जाव विहराहि) उन पांच शालि
अक्षतो को हाथ मे लेकर धन्य सार्थवाह ने उसे शपथ दिलाई-और
दिलाकर उससे ऐसा पूछा पुत्रि ! कहो-ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं
या और दूसरे हैं ? इम प्रकार धन्य सार्थवाह के कथन को सुनकर
उज्जिताने उससे ऐसा कहा है तात ! आपने आज से गत पांचव वर्ष
में मित्र जाति आदि परिजनों के और अपनी पुत्रवधूओं के कुल गृह-
वर्ग के समक्ष पांच शालि अक्षतों को देकर ऐसा कहा था-हे पुत्रि !
तुम मेरे इन पांच शालि अक्षतों की रक्षा करती रहो-इन्हे उपद्रवों से
बचाकर सुरक्षित रखो-(तएण अहं तुभ्य एयमद्व पडिसुणेमि पडिसु-
णिता ते पच सालि अक्खए गेहामि गिहिता एगतमवक्कमामि-तएण
मम इमेयाख्वे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) मैंने आपके इस कथन
को स्वीकार कर लिया था । और उन पांच शालि अक्षतों को ले लिया

सत्यवाहे एव वयासी एव खलु तुभ्ये ताओ ! इओ अईए पचमे सवत्सरे इमस्स
मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण कुल जाव विहराहि)

ते पांच शालिकछोने हाथमा रणावीने धन्यसार्थवाहे तेने शपथ (सम)
आपीने इरी पूछ्यु के छे पुत्रि ! जालो, आ पांचे शालिकछो। भारा
आयेला न छे के पीज आ रीते धन्यसार्थनी वान सालणीने उज्जिताये
तेमने कछु-" छे तात ! आगथी पायवप' पूर्वे मित्र जाति वगेरे परिजने।
तेमज आरे पुत्रवधूओना सगारहालाओनी सामे भने पाय शालिकछो। आ-
पता तमे कछु छतु के छे पुत्रि ! तमे भारा आ पाय शालिकछोनी रक्षा
करै। अने ओओने उपद्रवोथी जयावे।

(तएण अहं तुभ्य एयमद्व पडिसुणेमि, पडिसुणिता ते पचसालि अक्खए
गेहामि, गिहिता एगतमवक्कमामि-तएण मम इमेयाख्वे अज्झत्थिए जाव
समुप्पज्जित्था)

मे तमारी आत्ता प्रभु ते शालिकछो। लथ लीधा तयार जाइ हु

કોષ્ઠાત્ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શુક્લાતિ, શુક્લીત્વા યત્રૈય ધન્ય સાર્થવાહમત્રૈવોપાગ
ચ્છતિ, ઉપાગત્ય ધન્ય સાર્થવાહમેવમવાદીત્- एते खलु ते पच शाल्यक्षताः, इति
કૃત્વા=શ્ત્યુકૃત્વા ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય હસ્તે તાન્ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ દદાતિ ।
તત્ત્વે ચલુ ધન્ય ઉજ્જિતા પુત્રપદ્ધુ 'સવહસાચિય' ગપથગાપિતા = શ્રપયપુત્રાં
કરોતિ-શ્રપથં કારયતિ, કૃત્વા એવમવદત્-કિં ચલુ પુત્રિ ! ત એવ-એતે પચ્ચ
શાલ્યક્ષતાઃ, ઉદાહુ=અયમ અન્યે ? । તતઃ ચલુ ઉજ્જિતા ધન્યસાર્થવાહમેવમવ-

इस प्रकार उज्जिताने उस धन्य सार्थवाह के इस कथन रूप अर्धको स्वी-
कार कर लिया । और स्वीकार करके जहां कोष्ठानगर था-वहां पर गई ।

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पच सालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता
जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) वहा जाकर उसने शालि
कोष्ठ से पाच शालि-अक्षतों को ले लिया और छे जाकर जहां धन्य
सार्थवाह था वहां आई । (उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह एव वयासी)
आकर उसने धन्यसार्थवाह से ऐसा कहा-(एण ण ते पच सालि अक्खए
त्ति कट्ठु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच सालि अक्खए दलयइ)
आपके वे पाच शालि अक्षत ये हैं । ऐसा कहकर उसने धन्यसार्थवाह
के हाथ में उन पांच शालि अक्षतों को दे दिया (तएण धण्णे सत्थवाहे
उज्जिअय सवहसाचिय करेइ करित्ता एव वयासी-किं ण पुत्ता ! ते चेव
एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण उज्जिअया धण्ण सत्थवाहे

ઉજ્જિતાએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા સ્વીકારી અને ત્યાર પછી તે જ્યાં કોષ્ઠા-
હતો ત્યાં ગઈ

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पचसालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા જાહેને તે શાલિકોષ્ઠમાંથી પાચ શાલિકણો લઈ લીધા અને લઈને
તે ધન્યસાર્થવાહની પાસે પહોંચી (ઉવાગચ્છિત્તા ધણ્ણ સત્થવાહ એવ વયાસી)
ત્યા આવીને તેણે ધન્યસાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યું

(एण ते पचसालि अक्खए त्ति कट्ठु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच
सालि अक्खए दलयइ)

“ તેમે આવેલા પાચ શાલિકણો આ રહ્યા ” આમ કહીને તેણે પાચ
પાચ શાલિકણો ધન્યસાર્થવાહને આપી દીધા

(तएण धण्णे सत्थवाहे उज्जिअय सवहसाचिय करेइ करित्ता एव वयासी किं
पुत्ता ते चेव एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण)

जाज्वल्यमान उज्झिता तस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्ता तस्य=स्वस्य कुलगृहस्य 'छारुज्झियच' क्षारोज्झिका भस्मप्रक्षेपिकाम्, 'छाणुज्झिय च' छगणोज्झिका=गोमयप्रक्षेपिकाम् 'कयवरुज्झिय' कचवरो-ज्झिका=गृहकचवरप्रक्षेपिकाम्, 'समुच्छियच' समुक्षिप्ता=गृहाङ्गणे जलच्छटक दायिकाम्, 'सम्मज्झियच' समार्जिका=गृहसमार्जनकारिकाम्, 'पाओवदाइय पादोदकदायिकां=पादप्रक्षालनजलदायिकाम्, 'ण्हाणोवदाइय' स्नानोदकदा-यिका=स्नानार्थजलदायिकाम्, 'बाहिरपेसणकारिय बाह्यपेषणकारिक' बाह्यपे-पणकार्यकारिकाम्, 'ठवेइ' स्थापयति=तादृशकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः।

माणे उज्झितिय तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मज्झिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च बाहिर पेसण कारिठवेइ) इस तरह वह धन्य सार्थवाह उज्झिताके मुख से इस कथन रूप अर्थको सुनकर और उसे हृदय में अवधारण कर शीघ्र ही क्रुपित हो गया। मिस मिसाने लग गया—क्रोधरूपी अग्निसे जलने लगा। उसने उसी समय उज्झिता को उस मित्र ज्ञाति आदि कों के तथा चारो पुत्र वधूओं के कुलगृहवर्ग के समक्ष अपने घर की राख डालने वाली गोबर फेंकने वाली कड़ाकर कट साफ करने वाली, घरके आगण में पानी छिड़कने वाली घुहारु देने वाली, पाद प्रक्षालन तथा स्नान के लिये जल देने वाली, बाहर जाने का काम करने वाली बना दिया।

अर्थात् बाहिरी काम करने वाली दासी के पद पर उसे रख दिया।

पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मज्झिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ)

आ प्रभाणु ते धान्य सार्थवाह उज्झिताना मुपेथी आ वात सासणीने तेने हृदयमा अवधारणु करीने अेकहम शुस्से थधं गये।

क्रुपितावस्थामा ते क्रोधनी ज्वाणाम्भा सगगवा लाग्थे। तेणु तेज्झणु उज्झिताने मित्र ज्ञाति वगेरे परिज्जेने तेमज्झ आरे पुत्रवधूओ ना कुण्ठा माणुमोनी साग्गे वरनी राण साइ करनारी, छाणु साइ करनारी, उयरे वगेरे साइ करनारी, घग्गना आगणुमा पाणुी छाटनारी, सावरणुी थी उयरे वाणनारी, पग धोवामाटे तेमज्झ स्नानकरवा भटे पाणुा तैयार राबनारी अने धरनी ण्हारना काम करनारी गनावी दीधी

अेट्ठे ण्हारना काम करनारी दासीनाइये धन्यसार्थवाहे तेनी निमणुक्क करी,

તાતાનામ્ આદરાર્થે વહુપચનમ્ તાતસ્યેત્યર્થઃ, શ્વશુરસ્ય કોઠાગારે વેદવઃ પછાઃ શાલીનાં પ્રતિપૂર્ણારિતઘ્નિન્તિ, તદ્ યદા સ્વલુ મમ સયાશાત્ તાત ઇમાન્ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ યાચિષ્યતે તદા સ્વલુ અઃ પછ તરાત્=કોઠાભ્યન્તરાદ્ અન્યાન્ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ ગૃહીત્વા દાસ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા પુનઃક્રાન્તેઽપક્રામ્ય તાન્ પ્રસિષ્ય સ્વ કર્મસયુક્તો=સ્વકાર્યસલગ્નો સમભવત્ 'ત' તત્=તસ્માત્ કારણાત્ નો સ્વલુ તાત ! તપ્ચ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાઃ, મિતુ એતે સ્વલ્યન્યે=કોઠાભ્યન્તરાદાનીતાઃ સન્તીત્યર્થઃ । તત સ્વલુ સ ધન્યઃ સાર્થગાહ ઉજ્જિતાયા અન્તિકે એતર્મ્ય શ્રુત્વા 'આસુરુત્તે' આશુરુત્તઃ=શીઘ્રકોપાન્વિતઃ યાવત્ 'મિસમિસેમાણે' મિસમિસન્=ક્રોધામ્નિના

થા । છેકર ફિર મૈં આપકે પાસ કિસી પુનઃક્રાન્ત સ્થાન મૈં ચલી આઈ—વહાં આતે હી મુજે હસ પ્રકાર કા વિચાર આયા—

(એવ સ્વલુ તાયાણ કોઠાગારસિન્ જાવ સકમ્મ સપડત્તા જાયા ત ણો સ્વલુ તાઓ તે ચેવ પચ સાલિ અસ્સલ્લ, ઇણ ણ અન્ને) મેરે શ્વશુર જી કે યહા કોઠાગાર મૈં તો વહુત સે પલ્લશાલિયોં કે ભરે પડે હૈં—તો જિસ સમય શ્વશુર જી હન પ્રદત્ત પાચ શાલિ અક્ષતોં કો મુજ સે પીઠે વાપિસ માગે ગે તો મૈં દુસરે શાલિ કોઠ કે ભીતર સે અન્ય પાચ શાલિ અક્ષતોં કો ઉઠાકર દે દૂંગી । હસ પ્રકાર વિચાર કર મૈંને આપકે દ્વારા દિયે હુપ પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો હધર ઉધર ઢાલ દિયા ઓર અપને દૈનિક કાર્ય કરને મૈં લગ ગઈ । અતઃ હે તાત । ચે શાલિ-અક્ષત વે પાંચ શાલિ અક્ષત નહીં હૈં—કિન્તુ ડનસે મિત્ર દુસરે હી હૈં । (તણ સે ઘણે ઉજ્જિયાણ અતિણ એવમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ આસુરુત્તે જાવ મિસિ મિસે

તમારી પાસેથી એક તરફ ગઈ ત્યાં આવતા જ મને વિચાર શુર્યો

(એવ સ્વલુ તાયાણ કોઠાગારસિન્ જાવ સકમ્મ સપડત્તા જાયા ત ણો સ્વલુ તાઓ તે ચેવ પચ સાલિ અસ્સલ્લ, ઇણ ણ અન્ને)

મારા સસરાના કોઠારમાં શ્વશુરથી લેરેલા ઘણા પડેલા છે તે બધાં પછુ તેઓ મારી પાસેથી ફરી પાંચ શાલિકણે માગશે ત્યારે કોઠારમાંથી બીજા પાંચ શાલિકણે તેમને આપીશ આમ વિચાર કરતા મેં તમારા આપેલા પાંચ શાલિકણેને આમ તેમ ફેંકી દીધા અને ત્યાર બાદ હું મારા હોમશાના ઘર કામમાં પરવાર્ડ ગઈ એથી હે તાત ! આ શાલિકણે તમે જે આપેલા હતા તે નથી પછુ આ તો બીજા જ છે

(તણ સે ઘણે ઉજ્જિયાણ અતિણ એવમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ આસુરુત્તે જાવ મિસેમિસે માણે ઉજ્જિતિય તસ મિત્તગાઠઃ ચ ઉહય મુદ્ધાણ કુલપરવગ્ગસપ

શ્રીવર્ધમાનસ્વામીપ્રાહ- એમેવ હે શ્રમણાઃ ! અયુગ્મન્તઃ । યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થીવા યાત્મપ્રજિતઃ સન્નિદરતિ યદિ પત્ર ચ તસ્ય મહાપ્રતાનિ ઉજ્જિતાનિ=પરિત્યક્તાનિ ભવન્તિ તર્હિ સંસ્કૃત્વં હિ મવેન્ન વહુના શ્રમગાનાઽચતુર્વિધસઃ સ્વસ્ય હીલનીયઃ, નિન્દનીયઃ, ગર્હણીયઃ, યાત્ ચાતુરન્તસસારકાન્તારમનુપર્યટિપ્યતિ યથા સા ઉજ્જિતા ।

એવ ભોગવતિકાઽપિ=ભોગવતિકાનામ્ની શાલ્યક્ષતમશ્નિકા દ્વિતીયા પુત્રવધૂરપિ । નવર=ત્રિશેષસ્ત્રયમ્ તામોગવતિકા તસ્ય=નિજસ્ય કુન્નગ્રહસ્ય યાત્ 'કઢતિયચ' યન્દન્તિકામ્=ઉદ્વલ્લાદી તથાપસારણાર્થ મુશલાદિનાઽવધાતિનીમ્, 'કુદ્યતિયચ' કુદ્યન્તિકા=તિલાદિચૂર્ણકારિકામ્, 'પીસતિયચ' 'પેપયતિકા=પરદાદી ગોધૂમાદીના પેપણકારિકામ્, 'રુધતિયચ' રુધ્યન્તિકા

(એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયો વા જાવં પવ્વહ્ણ પચ ય સે મહવ્વયાહ ઉજ્જિયાહ ભવન્તિ, સે ણ હિ મવેન્ન વહુણ સમણાણે ઽ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસ્સઽ જહા સા ઉજ્જિયા) શ્રી વર્ધમાનસ્વામી હસકા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હૈં કિ હે આયુગ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સયમ લેતે સમય પચ મહોવ્રત લેતે હૈં ઓર યદિ વહ અપને મહાવ્રતોં કા પરિત્યાગ કર દેતો હૈં તો વહ ઉજ્જિતા કી તરહ હેસ મવ મેં હી અનેક શ્રમણજનોં કે દ્વારા તથો ચતુર્વિધ સઘ કે દ્વારા હીલનીય હોતા હૈં, નિન્દનીય હોતા હૈં, ગર્હણીય હોતા હૈં-યાવત્ વહ ચતુર્ગતિરૂપ હેસ સસાર મે પરિભ્રમણ કરતા રહના હૈં । (એવ ભોગવહ્યાવિ નવર જાવ કઢતિયચ, કુદ્યતિયચ, પીસતિયચ, એવ રુધતિયચ, રુધનિય પરિવેસતિય પરિભાય

(એવામેવ સમણા ડસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયોવા જાવં પવ્વહ્ણ પચ યસે મહવ્વયાહ ઉજ્જિયાહ ભવન્તિ, સેણ હિ મવેન્ન વહુણ સમણાણ ઽ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસ્સઽ જહા સા ઉજ્જિયા)

શ્રી વર્ધમાન સ્વામી આવિષે ઉપસહાર કરતા કહે છે કે હે આયુગ્મન્ત શ્રમણો ! અમારા જે કોઈ નિર્ગ્રન્થ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સયમ લેવાના વખતે પાંચ મહાવ્રતો સ્વીકારે છે અને લવિચ્ચમા સ્વીકારેલા તે મહાવ્રતો નો પરિત્યાગ કરે છે તો તે ઉજ્જિતા ની જેમજ આ લવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેરજ ચતુર્વિધ સઘ વડે હીલનીય હોય છે, નિન્દનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે-યાવત-તે ચતુર્ગાનિ વાળા આ સસારમા પરિભ્રમણ કરતો રહે છે

(એવ ભોગવહ્યાવિ, નવર જાવ કઢતિયચ કુદ્યતિયચ પીસતિયચ, એવ

यन्त्रे चणककोद्रवादीनां तुपापसारिकाम्, 'रुधतिय च' रन्धयन्तिकाम्=ओदनादि पाचिकाम् 'परिवेसयति च' परिवेषणकारिकाम् 'परिभायति च' परिभाजयन्तिकाम्=पर्वदिनादौ सृजनगृहेषु खण्डखाद्यादीनां सविभागकारिकाम् 'अन्धिरिय च' पेसणकारिय 'आभ्यन्तरिका च' प्रेषणकारिका=गृहाभ्यन्तरप्रेषणकार्यकारिकाम् 'महाणसिर्णि' महानसिका=महानससम्बन्धिसम्प्रकार्यकारिणी 'ठवेइ' स्थापयति-गृहाभ्यन्तरकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः । श्री वर्धमानम्बामी

तिय च अब्भतरिय च पेसणकारिं महाणसिर्णि ठवेइ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपने जो दूसरी पुत्रवधु भोगवतिका नाम की थी कि जिसने उन पांच शालि अक्षतों को खा लिया था उसे बुलाया- और उससे भी उद्दिष्टता की तरह दिये हुए पांच शालि अक्षतों को चापिस मागा-उसने " वे पांच शालि अक्षत मैंने खा लिया है जब ऐसा कहा-तब उस धन्य सार्थवाहने उन मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के समक्ष और पुत्रवधूओ के कुलगृह के व्यक्तियों के समक्ष अपने घर के भीतरी काम पर रख दिया ।

उसके अधीन में घर का भीतर का यह काम दिया गया- ओखली में मृशाल से धान्य कूटना और चावल तैयार करना, तिल आदि का चूर्ण करना, चक्की से गेहूँओ आदि पीस कर आटा तैयार करना, चना आदि की दाल रनाना तथा क्रोद्रव आदि को फर्श से दल कर उनके तिल के दूर कर उन की कुदई बनाना ? चावल पकाना, रुधतिय च रुधतिय परिवेसयति, परिभायति च अब्भतरिय च पेसणकारिं महाणसिर्णि ठवेइ)

આ પ્રમાણે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ખીણ પુત્રવધૂભોગ વતીકા-
જે પાચે શાલિકણે ખાઈ ગઈ હતી-તેને બોલાવી અને તેની પાસેથી પચ્ચ
ઉજ્જિજતાની જેમ પાચે રાવિકણે માયા જવાબમાં ભોગવતીકાએ બ્યારે
એમ કહ્યું " કે તે પાચે શાલિકણે હું ખઈ ગઈ છું ત્યારે ધન્યસાર્થવાહે
તેને મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ આરે પુત્ર વધૂઓના કુટુંબીઓની
સામે તેને ઘરની બહારના કામોમાં તેની નિમણૂક કરી

ધન્યસાર્થવાહે ઘરના નીચે મુજબના કામો તેને સોંપ્યા હતા ખાદ્યિયા
સાબેલાથી શાળ (ધા ય) ખાડવી અને ચોખા તૈયાર કરવા, તણ વગેરેને
બૂકો કરવો ઘટીમાં ઘઉં વગેરે દળીને લોટ તૈયાર કરવો આખા ચણા વગેરે
ની દાળ તૈયાર કરવી તથા ડોદણ વગેરેને ઘટીથી ભરડીને તેના દોતરા ફર

પ્રાહ એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ ! શ્રમણાઃ ! યોઽસ્માક શ્રમણો વા શ્રમણીવા પ્રવ્રજિત સન્ વિહરતિ, યદિ પચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ 'ફોહિયાઈ' સ્ફોટિતાનિ=સ્વણ્ડિતાનિ ભવતિ તર્હિ સ ચત્તુરેણ રૂપમે ચૈવ વહુનાં શ્રમણાનાં ૪ ચતુર્વિધસઘસ્ય હીલનીય, યાવત્ સમારમત્રુપર્યટિપ્યતિ યથા ચ સા ભોગવતિકા ધન્યસાર્થવાહસ્ય દ્વિતીય પુત્રવધૂઃ ।

એવ રશ્ચિનાઽપિ=રસિતાનામ્ની ધન્યસાર્થવાહસ્ય તૃતીયપુત્રવધૂરપિ, નવર-ધન્યસાર્થવાહેન સ્વદત્તશાલ્યક્ષતાન્ પ્રત્યર્પયિતુ યાચિતા સતો યથૈવ વાસગૃહ તર્ગે ભોજન કરને ચાલોં કો ભોજન પરોસના, સ્વજન કે ઘરોં મેં સ્વણ્ડ-સ્નાના સ્નાય આદિ કા વિભાગ કરના રસોઈ ઘર કા સમસ્ત કાર્ય કરના । (એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ સમણો વા જાવ પચય સે મહવ્વયાઈ કોહિયાઈ ભવતિ સેં જો રૂપ મેવે ચૈવ વહુણ સમણાણ ૪ જાવ હીલણિજ્જો ૪ જહાવ સા ભોગવદયા) ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણી જન પ્રવ્રજિત હોકર પચ મહાવ્રતોં કા સ્વજન કરતા હૈ વહ ભોગવતિકા કી તરહ રૂપ મેં હી અનેક શ્રમણોં દ્વારા તથા ચતુર્વિધ સઘ દ્વારા હીલનીય હોતા હૈ, યાવત્ અનાદિ અનન્ત રૂપ સસાર મેં પરિભ્રમણ કરતા હૈ । (એવ રશ્ચિવદયાવિ નવર જેજેવ વાસ ઘરે તેજેવ ઉવાગચ્છિત્તા મજૂસ વિહાડેઈ, વિહાડિત્તા રચનકરડગાઓ તે પચ સાલિ અક્ષય જેણહૈ) ઇસી તરહ ધન્ય સાર્થવાહ ને અપની તૃતીય પુત્રવધૂ સે જિસ કા નામ રક્ષિત થા અપને દ્વારા દિયે હુપ ૫ શાલિ અક્ષતોં કો માગા-સો વહ જહા અપના વાસગૃહ થા વહા આઈ -

કરી તેમાથી ડોહરી બનાવવી, લાત તૈયાર કરવા, જમનારાઓને પીરસવું સગા સબધીઓના ઘરેમા પીરસણુ વગેરે મોઠલણુ રસોઈધરનુ બધુ કામ કરવું (એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ સમણોવા જાવ પચય સે મહવ્વયાઈ કોહિયાઈ ભવતિ સે જો રૂપ મેવે ચૈવ વહુણ ૪ જાવ હીલણિજ્જો સમણાણ, ૪ જહાવ સા ભોગવદયા) આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણુ કે શ્રમણીજન પ્રવ્રજિત થઈને પાંચ મહાવ્રતોનુ ખડન કરે છે તે ભોગવતીકાની જેમ આ ભવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સઘદ્વારા હીલનીય હોય છે યાવત્ અનાદિ અનન્ત આ સસારમા પરિભ્રમણુ કરે છે

(એવ રશ્ચિવદયાવિ નવર જેજેવ વાસઘરે તેજેવ ઉવાગચ્છિત્તા મજૂસ વિહાડેઈ વિહાડિત્તા રચનકરડગાઓ તે પચસાલિ અક્ષય જેણહૈ)

આ ગીતે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા પાસેથી પોતે આપેલા પાંચ શાલિકણે માગ્યા તે ત્યાંથી પોતાના નિરાશ

वोपागच्छति, उपागत्य मञ्जूषा 'विदाडेः' विप्रटयति=उद्धाटयति विघटय्य
मञ्जूषाभ्यन्तरस्थात् रत्नकरण्डकात् तान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा
यत्र धन्य. सार्थवाहस्तैवोपागच्छति उपागत्य पञ्च शाल्यक्षतान् धन्यसार्थवाह-
स्य हस्ते ददाति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिता रक्षिताभिधा तृतीयपुत्र
वधूमेवमवदत्- किं खलु पुत्रि ! त एवैते पञ्चशाल्यक्षताः उदाहृ- अथवा अन्ये,
इति । ततः खलु रक्षिता धन्य सार्थवाहमेवमवदत् त एव तात ! एते पञ्च
शाल्यक्षताः, नो अन्ये धन्यः सार्थवाह आह कथं खलु पुत्रि ! रक्षितान्माह-एव
खलु तात ! यूपमित पञ्चमे समस्तरे 'जाव' यामत् सर्वेषा मित्रज्ञातिमभृतीना

वहा आकर उसने अपनी पेटी खोली-उस में से रखी हुई रत्न की
डिबिया निकाली-निकाळ कर उसमें रखे हुए पाच शालि अक्षतों को
लिया (गिण्हस्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छह) और लेकर जहा
धन्य सार्थवाह थे-वह वहा आई (उवागच्छित्ता पचसालि अक्खए
धण्णस्स हत्थे दलयइ) वहा आकर उसने पाच शालि अक्षतों को धन्य
सार्थवाह के हाथ में सौंप दिया । (तएण से धण्णे रक्खइय एव
वयासी) धन्य सार्थवाह ने उन्हें लेकर रक्षिता से ऐसा कहा (किंण
पुत्ता ! ते चेव एण पच सालि अक्खया उदाहृ अन्ने ? स्ति) हे पुत्रि ! ये
पाच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे ? (तएण रक्खइया धण्णे
सत्थवाह एव वयासी ते चेव ताया ! एण पच सालि अक्खया णो
अन्ने) तब रक्षिता ने धन्य सार्थवाह से कहा-हे तात ! ये पाच शालि
अक्षत वे ही हैं अन्य नहीं हैं । (कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुम्हे

अथाने आपी त्या तेणे पेटी खोलीने अदस्ता रत्नरुडित डाणली भंडार हादी
डाणलीभायी तेणे पाये गालिउणे लीधा (गिण्हस्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छह)
अने लधने धन्यसार्थवाह न्या छतो त्या आपी

(उवागच्छित्ता पचमालि अक्खए धण्णस्महत्थे दलयइ)

त्या आपीने तेणे पाये गालिउणे धान्यसार्थवाहने आपी दीधा
(तएण से धण्णे रक्खइय एव वयासी) धन्यसार्थवाहने गालिउणे लधने रक्षि
ताने उद्यु (किं ण पुत्ता ! तेचेव एण पचसालि अक्खया उदाह अन्ने ! स्ति)

" हे पुत्रि ! आ पाय शालिउणे ते व छे के णीण ? "

(तएण रक्खइया धण्णे सत्थवाहने एव वयासी ते चेव ताया ! एण पच
सालि अक्खया णो अन्ने)

त्यारे रक्षिताओ धन्यसार्थवाहने उद्यु-" हे तात ! आ पाय शालिउणे
ते व छे णीण नहि

પુરતઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ મથ દત્તવન્તસ્તદા મમ મનમિ મકલ્પ્યો જાતઃ-યત્તાતઃ
 સર્વેષાં પુરતઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ દદાતિ તત્ ' મવિયવ્વ ઇત્થ કારણેણ ' ' મન્નિત
 વ્યમત્ર કેનાપિ કારણેન=અસ્મિન્ ત્રિપયે કિમપિ કારણમવશ્ય વિદ્યતે ' તિક્કહુ '
 ઇતિ કૃત્વા ઇતિવિચાર્ય તાન્ પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ શુદ્ધે=મ્વચ્છે નિર્મલે વસ્ત્રે વદ્ધ્વા
 રત્નકરુણ્ડકે નિક્ષિપ્ય ઉન્ઝીર્પકપૂલે સ્થાપયિત્વા ' તિસદ્ધ ' ત્રિસન્ધ્ય=પ્રમાતે
 મધ્યાહ્ને સાયકાલેવા ' પઢિજાગરમાણી ૨ પ્રતિજાગ્રતી ૨=પુનઃ પુનર્નિરીક્ષમાણા

હાઓ પચમસિ જાવ (મવિયવ્વ ઇત્થ કારણેણ) ત્તિ કદ્દુ તે પચ સાલિ
 અક્ષણ સુદ્ધે વત્થે જાવ તિસદ્ધ પઢિ જાગર માણી ૨ વિહરામિ) હસ
 પ્રકાર રક્ષિતા કી વાત સુનકર ધન્ય સાર્થવાહ ને ઉસસે પૂજા-પુત્રિ !
 યે હસી તરહ સે અમી તક કૈસે રક્ષે રહે-તથ રક્ષિતા ને કરા-સુનો
 મૈં યતાતી હૈં-આપને આજ સે ગત પાચવૈં વર્ષ મૈં જો યે પાંચ શાલિ
 અક્ષત સુદ્ધે મમસ્ત મિથ્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે તથા પુત્રવધૂઓં કે
 કુલગૃહ વર્ગ કે સમક્ષ દિયે યે ઉસ સમય મેરે મન મૈં એસા વિચાર
 આયા કિ યે તાત જો સુદ્ધે સબ જનોં કે સામને હન પાચ શાલિ અક્ષતોં
 કો દે રહે હૈં ઓર હન કી રક્ષા આદિ કે વિષય મૈં કર રહે હૈં-સો હસ
 મૈં કોઈ ન કોઈ કારણ અવશ્ય હૈં-એસા વિચાર કર મૈંને હન પાચ શાલિ
 અક્ષતોં કો સ્વચ્છ-નિર્મલવસ્ત્ર મૈં વાન્ધ કર ફર રત્ન કી ઢિલિયા મૈં
 રખ દિયા-ઓર ઉસે અપને સિરહાને મૈં રત્નકર આજ તક મૈં ઉસકી
 હર સમય સન્માલ કરતી આ રહી હૈં ।

(કહણ પુત્તા એવ સ્વલ્લ તાઓ ! તુમ્હે હાઓ પચમસિ જાવ ' મવિયવ્વ ઇત્થ
 કારણેણ ' ત્તિ કદ્દુ તે પચસાલિ અક્ષણ સુદ્ધે વત્થે જાવ તિ સમ્મ પઢિ જાગર-
 માણી ૨ વિહરામિ)

આ રીતે રક્ષિતાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને પૂછ્યું " હે પુત્રિ !
 અત્યાર સુધી કેવી રીતે આ શાલિક્ષોને રાખવામા આવ્યા ત્યારે રક્ષિતાએ
 જવાળા આપતા કહ્યું ' સાંભળો, હું બધી વિગત તમારી સામે રજુ કરે છું આજથી
 પાંચ વર્ષ પહેલા બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ આરે પુત્રવધૂઓના
 કુટુંબીજનોની સામે તમે મને શાલિક્ષો આપ્યા હતા હે તાત ! તમે મને બધા
 સ્વજનોની સામે પાંચ શાલિક્ષો આપીને તેઓની રક્ષામાટે મને આજ્ઞા આપી
 હતી જેથી મે વિચાર કર્યો કે આમા કોઈ રહસ્ય એકસ છુપાયેલું છે આમ
 વિચાર કરીને પાંચે શાલિક્ષોને સ્વચ્છ નિર્મળ વસ્ત્રમાં બાંધીને એક રત્નની
 ડાબલીમા મૂકી દીધા, અને તેને જોશીકાની નીચે મૂકીને આજ (દિવસ) સુધી
 તેની રક્ષા કરતી રહી છું

विहरामि=अद्यावधि तिष्ठामि तदेतेन कारणेन हे तात ! त एवैते पञ्च शाल्य-
क्षताः, नो अन्ये । ततःखलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिताया अन्तिके=समीपे
एतमर्थं श्रुत्वा हृष्ट तुष्ट तस्य=निजस्य कुलगृहस्य ' हिरण्यस्य ' हिरण्यस्य च=
रजतस्य यावत् कास्यदृष्य विपुल यावत्स्वापतेयस्य=हिरण्यादि यावन्मात्रधनस्य
' भण्डागारिणि ' भण्डागाराधिष्ठात्री ' ठवेइ ' स्थापयति=मर्वधनाधिकारिणी
त्वेन नियोजयतीत्यर्थः । श्रीवर्धमानस्वामी प्राह एवमेव हे श्रमणा, ! आयुष्मन्त
योऽस्माकं श्रमणो वा श्रयणी वा प्रव्रजितः सन् विहरति, यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि

(त एएण कारणेण ताओ ! ते चेव एए पच सालि अक्खए णो
अन्ने) इस कारण हे तात ! वे पाच शालि अक्षत ये हो हैं, दूसरे नहीं
हैं । (तएण से धण्णे रक्खइयाए अतिए एयमद्व सोच्चा हट्टतुट्टं तस्स
कुलधरस्स हिरन्नस्स य जाव कसद्वस विउलधण जाव सावतेज्जस्स य
भडागारिणि ठवेइ) इस तरह उस धन्य सार्थवाह ने रक्षिका के मुख
से इस अर्थ को सुन कर बहुत अधिक प्रसन्न और सतुष्ट होकर वसे
अपने घर में जितना भी सोना चादी आदि धन था उसकी अधिकारि
णि बना दिया ।

(एवामेव समणाउसो जाव पच य से महव्वयाइ भवति, सेण इह
भवे चेव वट्ठण समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खिया) इसी
तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा श्रमण और श्रमणी जन प्रव्र
जित होकर इतस्सन' विहरण करता है यदी उस के पाच महाव्रत

(त एएण कारणेण ताओ ! ते चेव एए पचमालि अक्खए णो अन्ने)

ओटवे डे तात ! ते पाच शालिक्खे। ओए छे, पील नथी

(तएण से धण्णे रक्खइयाए अतिए एयमद्व सोच्चा हट्टतुट्टं तस्स कुल
धरस्स हिरन्नस्स य जाव कसद्वस विउलधण जाव तेज्जस्स य भडागारिणि ठवेइ)

आ रीते धान्यसार्थवाहे रक्षिकाना भुज्येथी भधी विगत सालणीने
पूज्ज प्रसन्न तेमञ्च सतुष्ट यता तेने पे ताना घरमा ओटवु सोनु याही वगेरे
धन डतु तेनी अधिकारीणी भनावी दधी

(एवामेव समणाउसो जाव पचयसे महव्वयाइ रक्खियाइ भवति सेण
इहभवे चेव वट्ठण समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खिया)

आ प्रभावे छे आयुष्मन्त श्रमणो ! जे आभारा श्रमणु तेमञ्च श्रमणी
जनो प्रव्रजित अर्थने आभ तेम विहार करता रहे छे तेम करता जे तेमना

રક્ષિતાનિ ભવન્તિ સ સ્વલુ રૂઢમયે ચૈવ યદના શ્રમણાનાઃ ચતુર્વિધસયસ્ય અર્ચનીય યાવન્ સમાનનીયો ભવતિ યથા સા રક્ષિતા=ધન્યસાર્થગાઢસ્ય તૃતીયા પુત્રવધૂઃ ।

રોહિણિકાઽપ્યેવમેવ=રોહિણિકાનામ્ની ધન્યસાર્થગાઢસ્ય ચતુર્થપુત્રવધૂરપિ પૂર્વ વદેવ વિશેયા, નવર વિશેષસ્તમ્-ત્રેષ્ઠિના સમાહૃય 'મદતાન્ પચ્ચશાલ્યક્ષતાન્ સમર્પય' ઇત્યેવ કથિતા સતી રોહિણિકા ત્રેષ્ઠિન મત્યાદ-હેતાત 'યુય મમ સુવહુકમ્=અનેકસહ્યક 'સગઢીસાગઢ શકટીશાકટ શકટયઃ=લઘુગાઢિકાઃ શાકટ=શકટસમૂહઃ, શકટયશ્ચ શાકટ ચેતિ સમાહારે શકટીશાકટમ્=અનેકગાઢી શકટસમૂહ 'દલ્હ' દત્ત=મયન્હત, યેન શકટયાદિનાઽહ 'તુઞ્મ' યુષ્માક તાન્

સુરક્ષિત રહતે હૈ તો વહ ઇસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણાદિ જનોં દ્વારા તથા ચતુર્વિધ સઘ દ્વારા અર્ચનીય હોતા હૈ યાવત્ સમાન નીય હોતા હૈ । જૈસે વહ ધન્ય સાર્થવાહ કી તૃતીય પુત્રવધૂ રક્ષિતા હુઈ હૈ । (રોહિણિયાવિ એવ ચેવ નવર તુઞ્મે તાઓ ! મમ સુવહુય સગઢી સાગઢ દલાહ જેણ અહ તુઞ્મ તે પચ સાલિ અઝઘણ પઢિણિજ્ઞાણમિ) ઇસી તરહ ધન્ય સાર્થવાહ કી ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણી કા મી ચરિત્ર જાનના ચાહિયે પરન્તુ ઇસમે જો વિશેષતા હૈ-વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-નવ ધન્યસાર્થવાહને ચૌથી અપની પુત્રવધૂ રોહિણિકા કો ઘુઝાયા-ઔર ઘુલાકર ડસસે એસા કહા કિમૈને આજ સે ગત પાચવે વર્ષ જો તુઞ્મે પાંચ શાલિ-અક્ષત દિયે થે-ઁન્હે તુમ ઘાપિસ સુઞ્મે આજ દો-તવ રોહિણિકાને ડનસેકહા હૈ તાત ! આપ મેરે લિયે અનેક છોટી ગાઢિયા ઔર ઘઢી ૨ ગાઢિયા દીજિયે-કિ જિનકે દ્વારા મૈ આપકે ડન પાચ શાલિ અક્ષતો કો ભર-

પાય મહાજતો સુરક્ષિત રહે છે તો આ ભવમા તે અનેક શ્રમણો દ્વારા અર્ચનીય હોય છે યાવત્ સન્માનનીય હોય છે, ધન્યસાર્થવાહની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા જેમસન્માનીત થઇ તેમજ તે પણ સન્માનીત થાય છે

(રોહિણિયાવિ એવ ચેવ નવર તુઞ્મે તાઓ ! મમ સુવહુય સગઢીસાગઢ દલહ જેણ અહ તુઞ્મ તે પચ સાલિ અઝઘણ પઢિણિજ્ઞાણમિ)

આ પ્રમાણે હવે આપણે ધન્યસાર્થવાહની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણીના ચરિત્ર વિશે પણ જાણુ જોઈએ તેના ચરિત્રની વિશેષ વાત આ પ્રમાણે છે કે—ન્યારે ધન્યસાર્થવાહે પેતાની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણીને બોલાવી અને બોલાવીને તેને એમ કહ્યું કે આજથી પાંચ વર્ષ પહેલા મેં તને પાંચ શાલિકણે આપ્યા હતા તેમને પાછા આપો ત્યારે રોહિણીએ તેમને કહ્યું કે હે તાત ! તમે મને અનેક નાની મોટી ગાડીઓ આપો કે જેથી તમે આપેલા પાંચ શાલિકણે તેમા ભરાવીને અહીં લાવુ અને તમને પાછા

पञ्च शाल्यक्षतान् 'पडिणिज्जाएमि' प्रतिनिर्यातयामि=प्रतिसमर्पयामि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणीमेवमवदत्- कथं खलु हे पुत्रि ! त्वं मम तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशकटेन 'पडिणिज्जाइस्ससि' प्रतिनिर्यातयिष्यसि=प्रति-समर्पयिष्यसि ? ततः खलु सा रोहिणी धन्य सार्थगाहमेवमवदत्-एव खलु हे तात ! यूयम् इतः पञ्चमे सवत्सरे-अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः पुरतः सरक्षणार्थं सगोपनार्थं पञ्च शाल्यक्षतान् मया दत्तवन्तः, तान् गृहीत्वा मया चिन्तितम्-अत्रकेनापि

वाकर यहा ला सकू-और आपको पीछे वापिस करसके (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) रोहिणिका की इस प्रकार बात सुनकर धन्यसार्थवाहने उससे ऐसा कहा-(कहण पुत्ता ! तुम मम ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाइस्ससि) पुत्रि ! किस तरह तुम मुझे वे पाच शालि अक्षत शकटी और शकट समूह में भरने लायक कर पीछे वापिस देना चाह रही हो ? (तएण सा रोहिणि धण्ण एव वयासी-एव खलु ताओ ! तुम्हे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तं जाव बह्वे कुमसया जाया-तेणेव कमेण एव खलु ताओ ! तुम्हे ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि) धन्यसार्थवाह का ऐसा कहना सुन कर रोहिणिका ने कहा-तात ! आजसे पांचवें वर्ष में आपने मुझे मित्र ज्ञाति आदिपरिजनों के समक्ष बुला कर पाच शालि अक्षत दिये थे-और उनके सरक्षण सवर्धन आदि विषय में आपने शिक्षा की थी ।

आपी शब्द (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) शब्दिल्लिङ्गानी आ रीते बात सावणीने धन्यसार्थवाहने तेने आ प्रभावे कहु

(कहण पुत्ता ! तुम ते पचसालि अक्खए सगडीसागडेण निज्जाइस्ससि)

हे पुत्री ! मे आपेला पाच सालिकेलेने तमे नानी भोटी धली गाडी ओभा लशवने हेरी रीते आपका भागो छे

(तएण सा रोहिणी धण्ण एव वयामी-एव खलु ताओ ! तुम्हे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तं जाव बह्वे कुमसया जाया तेणेव कमेण एव खलु ताओ तुम्हे ते पचसालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि)

धन्यसार्थवाहनु कथन सावणीने शब्दिल्लिङ्गानी तेमने कहु- 'हे तात ! आ नथी पाच वर्ष पछेला मित्रज्ञाति वगेरे परिज्जेना नी आमे मने ओलावीने तमे पाच सालिकेले आम्हा छेना अने आपती वप्पते तमे तेमना सरक्षण सवर्धन वगेरेनी जावतमा सूचने कर्था छेता

तमारी पालेवी सालिकेले लधने मे आम विद्या कर्था छे आ पाच सालिकेले ताते आम्हा छे अने तेमना सरक्षण तथा सवर्धन दिसे ले

कारणेन भवितव्यमिति, तदनु पितृगृहपुरुषान् समाह्वय मया वर्द्धयितुं तेभ्यस्ते पञ्च शाल्यक्षता दत्ताः । ते सुपरिकर्मित केदारेषु उपनादि क्रियाभिः परिवर्द्धिता जातास्ते प्रथमे वर्षे मगधप्रस्थपरिमिता शाल्यः । एव क्रमशो द्वितीये वर्षे शालीना बहव कुडवाः सजाताः । तृतीये वर्षे बहवः कुम्भा । चतुर्थे सवत्सरे बहूनि कुम्भशतानि शालीना सजातानि । तेनैव क्रमेण एव खलु हे ताव । युष्माकं तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शरटीशकटैः प्रतिनिर्यातयामि=समर्पयामिः । तत खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणिनायै सुबहुम्=अनेकसङ्ख्यक शरटी शकट ददाति, ।

મને उन्हें लेकर ऐसा विचार किया—कि तातने जो ये पाच शालि अक्षत दिये हैं और उनके सरक्षण आदि के विषय में जो कहा है सो नियमतः इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है—ऐसा विचार कर मैंने पितृगृह (पीयर) के पुरुषों को बुलाया—और उन्हें उन पाच शालि अक्षतों को बढ़ाने के लिये दिया ।

उन लोगों ने उन्हें लेकर सुपरि कर्मित खेतों में चपनादि क्रिया द्वारा खून बढ़ाया प्रथम वर्ष में वे मगधदेश प्रसिद्ध प्रस्थप्रमाण निपजे । द्वितीय वर्ष अनेक कुडव प्रमाणजोने पर हुए । तृतीय वर्ष में वे अनेक कुम्भप्रमाण हुए । चौथे वर्ष सैकड़ों कुम्भप्रमाण हुए । इस तरह आपके द्वारा दिये हुए वे पाच शालि अक्षत आज अनेक गाड़ी और गाड़ा प्रमाण हुए हैं—इसलिये मैं आगे लिये आज उन्हें अनेक गाड़ी और गाड़ा प्रमाण करके पीछे वापिस देरही हूँ । तएण से धणणे सत्थवाहे रोहिणिनाए सुबहुय सगडी सागड दलयइ, तएण सा रोहिणिं सुबहु

કઈ મને કહ્યું છે, જેથી ચોક્કસ આ વાતમા કઈક સહસ્ત્ર હોવું જોઈએ એમ વિચાર કરીને મેં પિયરના માણસોને જોલાવ્યા અને તેમને વર્ધન માટે પાંચ શાલિકણે આપ્યા

તેમણે શાલિકણે લઈ લીધા, અને સુપરિકર્મિત ખેતરોમા વાતીને તે કણોની ખૂબ વૃદ્ધિ કરી પહેલા વર્ષે મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ પ્રસ્થ પ્રમાણુ જેટલા શાલિકણે થયા । બીજા વર્ષે વાવવાથી ઘણા કળશે ભરાય તેટલા થયા, ત્રીજા વર્ષે બીજા વર્ષ કરતા પણ વધારે કળશે ભરાય તેટલી શાલિ થઈ ચોથા વર્ષે વાવવાથી સેકડો કળશે ભરાય તેટલી શાલિ થઈ આ પ્રમાણુ તમે આપેલા પાંચ શાલિકણે આજે ઘણી નાની મોટી ગાડીઓમા લાય તેટલા થઈ ગયા છે, તેથી જ હું આપને તે પાંચ શાલિકણે અનેક ગાડીઓમા ભરાય તેટલા પ્રમાણુમા વર્ધન કરાવે પાછા આપી રહી છું

(તएण से धणणे सत्थवाहे रोहिणिनाए सुबहुय सगडी सागड दलयइ,

ततः खलु सा रोहिणी मुच्युः शकटीशकट मृदीत्वा यत्रैव स्वक कुलगृह=पितृगृह
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कोष्ठागाराणि=कोष्ठगृहाणि ' विहाडे ' विघटयति=
उद्घाटयति, विघट्य पल्लान्=शालिकोष्ठान् ' उन्मिदे ' उन्निनति=उन्मुद्रितान्
करोति, तेषा मुद्रामपनयतीत्यर्थः, उद्भिद्य शकटीशकट भरति, मृत्वा राजगृह
नगर मध्य मध्येन यत्रैव स्वक गृह यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति. । तत्र
खलु राजगृहे नगरे शृङ्गाटक यावत्-महापथपथेषु बहुजनोज्ज्वो न्यमेयमाख्याति

सगडी सागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवाग
च्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ) इस तरह रोहिणिका के वचन सुनकर
धन्यसार्थवाहने उसे अनेक शकटी और शकटों को दिया वह रोहिणि
का उन अनेक शकटी और शकटों को लेकर जहा अपना कुलगृह था
वहा पहुँची-पहुँच कर उसने वहाँ के कोष्ठागार को उगडा (विहाडि-
त्ता परल उन्मिदइ)-उघाड कर वहा रखले हुए शालि कोष्ठों को खोला
उन्हें मुद्रा रहित किया-(उन्मिदित्ता सगडीसागड भरेइ) बाद में
उनसे अनेक शकटी और शकटों को भरा (भरित्ता रायगिह नयर
मज्झ मज्जेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)
भर कर राजगृह नगर के ठीक बीचो बीच के मार्ग से होकर वह जहाँ
अपना घर था और जहा धन्य सार्थवाह थे वहा पहुँची-(नएण राय-
गिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्न एवमाइक्खइ, एण्णेण

तएण सा रोहिणीं सुवहु सगडीसागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ)

आ शीते शैल्लिङ्गिकानी वात सालणीने धन्यसार्थवाहे तेने धण्णी न नी
भोटी गाडीओ आपी शैल्लिङ्गिकाते बधी नानी भोटी गाडीओने लधने नग
पोतानु पियर छुत्तु त्या आवी त्या आवीने तेछे त्याने केठार उधाउये (विहाडित्ता
परल उन्मिदइ) त्यारमाद त्या भूकेला थ निना केठारोने उधाउया (उन्मिदि-
त्तासगडीसागड भरेइ) अने तेमनाथो नानी भोटी धण्णी गाडीओने बरी

(भरित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्जेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

बरीने राजगृह नगरना ठीक मध्य भागे थधने न्या तेनु पोतानु धर
अने न्या धन्यसार्थवाह छना त्या पछोथी

(तएण रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्न एवमाइक्खइ,

ધન્યઃ=ધન્યવાદપાત્રં સ્વલુદે દેવાનુપ્રિયાઃ ધન્યઃ સાર્થવાહઃ યસ્ય સ્વત્તુ રોહિણિકા
સ્તુપા=ચતુર્થપુત્રવધૂ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશારુટેન નિર્યાતિયતિ । તતઃ સ્વલુ
સ ધન્યઃ સાર્થવાહઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશારુટેન નિર્યાતિતાન્=મમર્પિતાન્
પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા હૃષ્ટઃ યાત્ 'પડિન્ઝઈ' પ્રતીન્ઝતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતીપ્ય=સ્વી
કૃત્ય તસ્યૈવ મિત્રજ્ઞાતિમશ્રુતે, ચતસ્રગા ચ સ્તુપાણાં કુલગૃહસ્ય પુરતો રોહિણિકાં
સ્તુપા તસ્ય=નિજસ્ય કુલગૃહસ્ય=કુડુમ્બસ્ય વહુપુ કાર્યેષુ ચ યાવદ્ રહસ્યેષુ ચ

દેવાણુપ્રિયા । ધણે સત્યવાહે તે પચ સાલિ અક્ષત્ત સગડી સાગહેણ
નિજાઈપ પાસઈ પાસિત્તા દૃઢ તુદ્ધ પડિન્ઝઈ, પડિન્ઝિત્તા તસ્સેવ મિત્ત-
ણઈ૦ ચડણ્ઠ ય સુણ્ઠાણ કુલધરસ્સ પુરઓ રોહિણિય સુણ્ઠ તસ્સ કુલ
ધરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ય જાવ રહસ્સેસુ ય અપુન્ઝણિજ્જ જાવ સન્ઠક
જ્જ વહ્ઠાવિય પમાણભૂય ઠાવેઈ) જય વે ગાડી ઔર ગાઢે ઔરે હુપ
રાજગૃહ કે મધ્યમાર્ગ સે હોઠર જા રહે થે-તથ લોગો ને દેલ્લઠર નગરમેં
શ્રુ ગાટક આદિ માર્ગોં કે ડપર પરસ્પર ઇસ પ્રકાર સે યાત ચિત કરના
પ્રારંભ કિયા " દેવાણુપ્રિયો ! દેવો ધન્ય સાર્થવાહ કિતના અધિક ધન્ય
વાદ કા પત્ર હૈ કિ જો ચતુર્થ પુત્ર વધૂ રોહિણિકા કે દ્વાગ પાચ શાલિ
અક્ષતોં કી ગાડી ઔર ગાડો સે ઔરકર પીછે લૌટાયે હુપ દેલ્લ રહા હૈ ।
ઔર દૃષ્ટ તુષ્ટ હો ડન્હે સ્વીકાર કર રહા હૈ । તથા સ્વીકાર કરકે ડસ
રોહિણિકા કો મિત્રજ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે ચારો પુત્રવધૂઓં કે કુલ
ધણેણ દેવાણુપ્રિયા ! ધણે સત્યવાહે તે પચસાલિ અક્ષત્ત સગડીમાગહેણ નિ
જાઈપ પાસઈ પાસિત્તા દૃઢ તુદ્ધ પડિન્ઝઈ પડિન્ઝિત્તા તસ્સેવ મિત્તણાઈ ચડણ્ઠ
ય સુણ્ઠાણ કુલધરસ્સ પુરઓ રોહિણિય સુણ્ઠ તસ્સ કુલધરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ય
જાવ રહસ્સેસુ અપુન્ઝણિજ્જ જાત સન્ઠકજ્જ વહ્ઠાવિય પમાણભૂય ઠાવેઈ)

જ્યારે તે નાની ભોટી ગાડીઓ રાજગૃહ નગરના મધ્યમાર્ગે થઈને
પસાર થઈ રહી હતી ત્યારે નગરના શ્રુગાટક વગેરેમા એકઠા થયેલા લોકો
પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા " દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ ધન્યસાર્થવાહ
કેટલો બધો ભાગ્યશાળી છે કે જે આજે એથી પુત્રવધૂ રોહિણિકા વડે પાંચ
શાલિક્ષોના ગાડાઓ અને ગાડીઓ ભરીને ફરી પાછા આવતા જોઈ રહ્યો છે
અને પ્રસન્ન થઈને તુષ્ટ થઈને તેને સ્વીકારી રહ્યો છે તે આ બધું સ્વીકારીને
રોહિણિકાને મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ આરે પુત્રવધૂઓના કુડુબી

આપચ્છનીયા યાવત્ મર્મકાર્યવર્દિકા પ્રમાણભૂતા 'ઠવેડ' 'સ્થાપયતિ=સર્વ કુદુમ્પાધિષ્ઠાત્રીત્વેન તા નિયોજયતીત્યર્થઃ ।

एवमेव हे श्रमणाः । आयुष्मन्तः । योऽस्माक श्रमणोवा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि सर्वर्दितानि भवन्ति स खलु इहभवे एव बहूनां श्रमणानां ४=चतुर्विंशस्य अर्चनीयः—यावत् चातुरन्तर्गसारकान्तार 'वीईवइस्सइ' वप्रतिव्रजिष्यति=पारयिष्यति यत्र च सा रोहिणिका=न्यसार्थवा इत्य चतुर्थी पुत्रपू. । उक्तञ्च—

गृह वर्ग के समक्ष अपने कुदुम्प के अनेक कार्यों में यावत् रहस्यों में पूजने योग्य यावत् समस्त कार्यों में प्रमाणभूत उसे बना रहा है ।

तथा सपूर्ण कार्यों की उढाने वाली उसे मान रहा है—कारण इस का केवल यही है कि धन्य सार्थवाह ने उस रोहिणिका को अपने समस्त कुदुम्प की अधिष्ठात्री बना दिया । (एवामेव समाणाउसो ! जाव पच य से महव्वया सवड्डिया भवति सेण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयम पन्नस्से त्ति वेमि) इस तरह हे आयुष्मन् श्रमणो ! जा हमारा श्रमण तथा श्रमणीजन दीक्षित होता हुआ अपने पच महाव्रतों को बढाता रहता है वह रोहिणिका की तरह हम भयमें ही अनेक श्रमण आदि महानु भावों द्वारा तथा चतुर्विध सध द्वारा अर्चनीय आदि होता हुआ चतु

બોની સાથે પોતાના કુદુબની ઘણી બાબતોમા યાવત બીજી પણ ઘણી રહે સ્થની મહત્વપૂર્ણ વ તોમા તેની મલાહ લઇને તેને પ્રમાણ ભૂત બનાવી રહ્યો છે તેમજ શેહિલિકાને તે બધા કામોને સંપૂર્ણ રીતે પાર પાડનારી માની રહ્યો છે તેમ કે ધન્યસાર્યવાહે કે હિલિકાને પોતાના આખા કુદુબની અધિષ્ઠાત્રી બનાવી દીધી છે

(एवामेव समाणाउसो ! जाव पचय से महव्वया सवड्डिया भवति से ण इह भवे चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमहे पन्नस्से त्तिवेमि)

આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમાગ શ્રમણ તેમજ શ્રમણીજન દીક્ષિત થઇને પોતાના પચમહાવ્રતોનુ વર્ધન કરતા રહે છે—તે શેહિલિકાની જેમ આ જગતમા જ ઘણા શ્રમણ વગેરે મહાનુભાવો દ્વારા તેમજ ચતુર્વિધ સધદ્વારા અર્ચનીય હોય છે અને તે ચતુર્જાતિ રૂપ આ અનાદિ

“ જહસેદ્ધી તદ્ ગુરુણા, જહણાજગો તદ્ સમણમયોય ।

જહ વહુયા તદ્ ભવ્યા, જહ સાલિકુણા તદ્ વયાઈ ॥ ૧ ॥” ઇતિ

છાયા—“ યથાશ્રેષ્ઠી તથા ગુરવઃ, યથાજ્ઞાતિજનસ્તથા શ્રમણસઘથ્ ।

યથા વસ્તથા ભવ્યાઃ (શ્રમણાઃ) યથા શાલિકુણાસ્તથા વ્રતાનિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ

एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष समाप्तेन

सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तः अर्थ=भाव प्रज्ञप्त =प्ररूपितः । ’ इति ब्रवीमि

इति पूर्ववत् ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलितछलितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगद्यधनैरुग्रन्यनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ

अपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-

गुरु-गलब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाट-

प्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्मामृतव

ર્પિण्याख्याયા વ્યાખ્યાયા સપ્તમમધ્યયન સર્પૂર્ણમ્ ॥ ૭ ॥

ર્ગતિ रूप इस अनादि ससार कान्तर को पारकरदेताहै । कहा भी है-
श्रेष्ठी के स्थानापन्न यहा गुरुजन हैं ज्ञातिजनों के स्थानापन्न श्रमण सघ
है, बधुओं के स्थानापन्न भव्यजन है और शालिकुणों के समान पाच
महाव्रत है ।

इस प्रकार हे जबू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर
ने इस सप्तम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा
मैं तुम से कहता हूँ ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासी लालजी महाराज कृत “ ज्ञाता-
धर्मकथाङ्गसूत्र ” की अनगारधर्माમૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા का सातवा
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૭ ॥

સસાર કાતાર (જગલ) ને પાર થઈ બચ છે અહીં શ્રેષ્ઠીના સ્થાને શુર
જનો છે જ્ઞાતિજનોના સ્થાને શ્રમણસઘ છે સંગાવડાલા ઝોના સ્થાને ભવ્ય
જનો છે અને શાલિકણા ના સ્થાને પચમહાવ્રતો છે

આ રીતે હે જબૂ ! મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા
જ્ઞાતા ધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપે નિરૂપિત કર્યો છે આમ હું તમને ઠીક ઠીક રહ્યો છું
શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘામીલાલજી મહારાજકૃત ‘ જ્ઞાતાધર્મકથાંગ ’

સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૭॥

॥ अथाष्टममध्ययन प्रारभ्यते ॥

उक्त सप्तमाध्ययन सम्प्रत मल्लीनामकमष्टमाध्ययनमुच्यते, एव रूपेण सहा-
स्य सम्बन्धः—पूर्वाध्ययने 'महाव्रतानां विराजनायामर्थो भवति, तथा तत्समारा-
धनाया शिवसुखावाप्तिरूपः परमार्थो भवती' त्युक्तम्, अस्मिन्मध्ययने तु तेषां
महाव्रतानामेव स्तोकेनापि मायाशल्येन मालिन्ये सति यथावत् स्वफलजनकत्वं
नास्तीति प्रतिगोध्यते, इत्येव प्रसंगतः प्राप्तस्यैतस्याध्ययनस्य प्रथम सूत्रमाह—

—: अष्टम अध्ययन प्रारभ —

सातवा अध्ययन का भाव सपूर्ण हो गया है—अब मल्ली नामका
अष्टम अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ
इस प्रकार से संबंध है कि पूर्व अध्ययनमें जो यह विषय कहा गया
है कि जो साधुमहाव्रतों की विराधना करता है वह अनेक अनर्थों का
भोक्ता होता है और चतुर्गति संसार में परिभ्रमण करता है जो इनकी
रक्षा करता है—अच्छी तरह से आराधना करता है—वह शिव सुख
प्राप्तिरूप परमार्थका भोक्ता होता है।

अब इस अध्ययन में सूत्रकार इस बातका स्पष्ट कहते हैं कि उन
महाव्रतों में यदि थोड़ीसी भी मायाशल्य से मलिनता आजाती है तो
वे यथावत् अपने फलके जनक नहीं होते हैं। इसीसंबंध से प्राप्त हुए
इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है जइण भते इत्यादि

आठम अध्ययन

सातम अध्ययन पुरे થઈ ગયું છે હવે મલ્લી નામે આઠમું અધ્યયન
પ્રારંભ થાય છે આ અધ્યયનનો પૂર્વ અધ્યયનની સાથે સંબંધ એવી રીતે છે
કે—સાતમા અધ્યયનમા એ પ્રકારે ચર્ચા થઈ કે જે સાધુ મહાવ્રતોની વિરાધના
કરે છે તે ધણા અનર્થોને લોગવના હોય છે, અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ
સંસારમા પરિભ્રમણ કરે છે જે પરમહાનતોની રક્ષા કરે છે—સારી પેઠે તેમની
આરાધના કરે છે તે શિવસુખ પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થને લોગવતા હોય છે

હવે આઠમા અધ્યયનમા સૂત્રકાર એ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે કે
મહાવ્રતોમા જે થોડી પણ માયા શલ્યથી મલીનતા આવી જાય તો તેમનું
ફળ મૂળ પછે મળતું નથી એજ સંબંધની ચર્ચા માટેના આઠમા અધ્યય-
નનું આ પહેલું સૂત્ર છે 'જઈણ ભતે' इत्यादि—

मूलम्—जङ्घणं भन्ते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स
णं भन्ते । के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

एवं खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबू-
दीवे दीवे महाविदेहेवासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निस-
ढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए महाणइए दाहि-
णेण सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिमल-
वणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थणं सलिलावतीनाम विजए
पन्नत्ते, तत्थ ण सलिलावती विजए वीयसोगानामं राय-
हाणी पण्णत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोग-
भूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसि-
भाए इंदकुभे नामं उज्जाणे, तत्थ ण वीयसोगाए रायहाणीए
बल्ले नाम राया तस्स धारणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे,
होत्था, तएण सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे
पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव महव्वले नाम दारए जाव उम्मुक्क
जाव भोगसमत्थे ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—‘ जङ्घण भन्ते ! ’ इत्यादि ‘ जङ्घ ’ यदि
‘ ण ’ खलु ‘ भन्ते ! ’ हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण श्रीवर्धमान स्वा

टीकार्थ—(जङ्घण भन्ते !) श्री जम्बूस्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं
कि (जङ्घण भन्ते !) हे भदन्त ! यदि (समणेण भगवया महावीरेण जाव
संपत्तेण सत्तमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स ण भन्ते ! के

टीकार्थ—(जङ्घण भन्ते !) श्री जम्बूस्वामी पूछे छे के (जङ्घण भन्ते !) हे भदन्त ! ने
(समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्तमस्स णायज्झयणस्स अय-
मट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स ण भन्ते ! के अट्ठे पण्णत्ते)

મિના યાવત્- સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સપાત્તેન સપ્તમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાય
મર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, અષ્ટમસ્ય ચલુ હે મદન્ત । કોડર્ય પ્રજ્ઞસઃ ?

एव श्रीजम्बू स्वामिना पृष्ठः श्री सुधर्मास्वामी त कथयति- ' एव खलु जम्बू
इत्यादि । एव खलु हे जम्बू ' तस्मिन् समये- इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बू
द्वीपे महाविदेहे वर्षे महाविदेहनामके क्षेत्रे मन्दरस्य पर्वतस्य=मेरुगिरेः ' पञ्चत्थि
मेण ' पश्चिमे पश्चिमाया दिशि ' निसदस्स ' निपथस्य=निपथपर्वतस्य ' वामहरप
व्ययस्स ' वर्षधरपर्वतस्य ' उत्तरेण ' उत्तरस्मिन् उत्तरस्या दिशि ' सीयोयाए
महाणइए ' शीतोदाया महानया. ' दाहिणे ' दक्षिणे दक्षिणस्या दिशि सुहाव
अट्टे पणत्ते) अमण भगवान् महावीरने कि जो मोक्षको प्राप्त हो चुके हैं
सातवें ज्ञाता ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदत् ।
उन्होंने आठवे ज्ञाताध्ययन का क्या भाव प्ररूपित किया है । (एव खलु जम्बू
तेण कालेण तेण समएण इहेवजम्बू द्वीवे दीवे महाविदेहे वासे मदरस्स
पव्वयस्स पञ्चत्थिमेण निसदस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए
महाणइए दाहिणेण सुहावहस्स वक्खारव्वयस्स पञ्चत्थिमेण पञ्चत्थि
मलवणसमुदस्स पुरत्थिमेण एत्थण सलिलावड नाम विजए पन्नत्ते)
इस प्रकार जम्बू स्वामी के द्वारा पूछे गये श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते
हैं हे जम्बू । तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इसप्रकार है उस काल में और उस
समय में इस जम्बूद्वीप नामके द्वीप में स्थित महाविदेह नामका क्षेत्र में
सुमेरुपर्वत की पश्चिमदिशामें, निपथपर्वत की उत्तरदिशा में शीतोदा म

મોક્ષ પામેલા અમણ ભગવાન મહાવીરે સાતમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત
રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તો હે ભદત । તેમણે આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો
શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે

(एव खलु जम्बू तेण कालेण तेण समएण इहेव जम्बू द्वीवे दीवे महाविदेहे
वासे मदरस्स पव्वयस्स पञ्चत्थिमेण निसदस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयो
याए महाणइए दाहिणे ण सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पञ्चत्थिमेण पञ्चत्थिमलव
णसमुदस्स पुरत्थिमेण एत्थण सलिलावड नाम विजए पन्नत्ते)

श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामीने जम्बाण आपता कहे छे के छे जम्बू ।
तमारा प्रश्ननो उत्तर आ प्रमाणे छे के-ते काले अने ते समये आ जम्बू
द्वीप नामे द्वीपमा स्थित महाविदेह नामे क्षेत्रमा सुमेरुपर्वतनी पश्चिमदिशामा
निपथपर्वतनी उत्तर दिशामा, मडानदी शीतोदानी दक्षिणे, सुजेत्पादक वक्खार
पर्वतनी पश्चिमे, पश्चिम ववणु समुद्रनी पूर्वदिशामा सलिलावती नामे विजय
छे पश्चिम समुद्रमा भगवारी मडानदी शीतोदानी दक्षिण दिशामा सलिला

હસ્ય સુખોત્પાદકસ્ય 'અસ્વારપન્થમ્સ' અક્ષસ્કારપર્વતસ્ય પશ્ચિમે પશ્ચિમાયાં
દિશિ પશ્ચિમલવણસમુદ્રસ્ય 'પુરત્થિમેણ' પૌરસ્ત્યે પૂર્વે, અત્ર અસ્મિન્ સ્થાને સ્વલુ
સલિલાવતી નામા વિજયઃ પ્રજ્ઞતઃ— પશ્ચિમ સમુદ્રગામિન્યાઃ શીતોદામહાનદ્યા દક્ષિ
ણતઃ સલિલાવતીનામક ચક્રાતિના વિજેતવ્ય ક્ષેત્રસ્વળ્દમાસીત્, તદેવ સલિલાવ
તીવિજય इत्युच्यते इत्यर्थः ।

તત્ર સ્વલુ સલિલાવતીવિજયે વીતશોકા નામ રાજયાની પ્રજ્ઞતા કથિતા ।
સા કીદશો— ઇત્યાદિ—નયયોજનવિસ્તીર્ણા યાત્મ દ્વાદશ યોજનાયામા પ્રત્યક્ષ દેવ
લોકભૂતા સાક્ષાત્ સ્વર્ગસ્વરૂપા । તસ્યા સ્વલુ વીતશોકાયા રાજયાન્યા ઉત્તર પૌર
સ્ત્યે=દિશ્માને ઈશાનકોણે ઇન્દ્રકુન્ભ નામોદ્યાનમામીત્ । તત્ર સ્વલુ વીતશોકાયા
રાજયાન્યા વલો નામ રાજાઽભૂત્ । તસ્ય પ્લરય રાજ્ઞો ધારણી પ્રમુખ દેવીસદસ્યમ્.

હાનદી કી દક્ષિણ દિશામેં, સુખોત્પાદક વક્ષસ્કારપર્વત કી પશ્ચિવદિશામેં,
પશ્ચિમલવણસમુદ્ર કી પૂર્વ દિશા મેં સલિલાવતી નામ કા વિજય હૈ ।

પશ્ચિમ સમુદ્ર મેં જાનેવાલી શીતોદા મહાનદી કી દક્ષિણદિશા મેં
જો સલિલાવતી નામકા વિજય હૈ—જિસે ચક્રવતી જીતા કરતે હૈં । ડસી
કા નામ સલિલાવતી વિજય હૈ ।

(તત્થણ સલિલાવતી વિજય વીયસોગા નામ રાયહાણી પળ્ણત્તા)
ડસ સલિલાવતી વિજય મેં વીતશોકા નામ કી રાજયાની હૈ
(નવ જોયણવિત્થિન્ના જાવ પચ્ચક્કલ દેવલોય યા) હસકા નૌ યોજન
કા વિસ્તાર હૈ ઔર ૧૨ યોજન કા આયામ હૈ । યહ પ્રત્યક્ષ મેં દેવલોક
—અમરાવતી—જૈસી પ્રતીત હોતી હૈ । (તીસેણ વીયસોગા રાયહાણી
ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીઆણ હદકુમે નામ ઉજ્જાણે) ડસ વીતશોકા નગરી
કે ઈશાન કોણ મે ઈક ઇન્દ્રકુભ નામકા ઉદ્યાન થા । (તત્થણ વીયસોગા

વતી નામે એક ક્ષેત્ર—ખડ—છે જેને ચક્રવર્તી સામ્રાટો જીતતા આવ્યા છે—તેનું
નામ સલિલાવતી વિજય છે

(તત્થણ સલિલાવતી વિજય વીયસોગા નામ રાયહાણી પળ્ણત્તા) સલિ
લાવતી વિજયમા વીતશોકા નામે એક રાજયાની છે (નવ જોયણ વિત્થિન્ના
જાવ પચ્ચક્કલ દેવલોય યૂયા) તેનો વિસ્તાર નવ યોજન જેટલો તેમજ તેનો
આયામ ૧૨ (બાર) યોજન જેટલો છે તે પ્રત્યક્ષ દેવલોક—અમરપુરી—જેવી
સુદર છે (તીસેણ વીયસોગા રાયહાણી ઉત્તરપુરત્થિમે દિશિમાણ હદ કુમે નામ
ઉજ્જાણે) તે વીતશોકા નગરીના ઈશાન કોણમા ઇન્દ્રકુલ નામે એક ઉદ્યાન હતો

(તત્થણ વીયસોગા રાયહાણી બલે નામ રાયા, તસ્સ પામોક્કલ

अवरोधे=अन्तः पुरे आसन्. बलनामकस्य तस्य राज्ञो धारणीप्रमुखा एकसहस्र
सख्यकाः देव्यआमन्नित्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचित्- अन्यस्मिन् कस्मि
श्चित् समये मिह स्वप्ने स्वप्नास्थयायां दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता, यावद् महा-
बलो नाम दारको जातः इह यावच्छब्देन-सा स्पष्टतः भर्तृरग्रे निवेदयति, ततः
स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफल्गुतिस्ततः सा गर्भवती जाता सपूर्णेष्ट मासेषु महा
बल नामकः पुत्रो जात इत्यर्थो बोद्धव्यः । सा कीदृश इत्याह उम्मुक्त-यावद्

रायहाणीण बले नाम राया, तस्स धारणी पामोक्ख देवी सहस्स ओराहे
होत्था) उस चीत शोका नाम की राजधानी में बल नामका राजा रहता
था । उसके अन्तः पुर में धारणी प्रमुख १ हजार रानियां थीं । (तएण
सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सिहे सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा
जाव महव्वले नाम दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे) एक दिन की
रात है कि जब धारिणी देवी अपनी शय्या में आनन्द के साथ सोयी
हुई थी उस समय उसने रात्रिके पश्चिम प्रहरमें स्वप्नमें एक सिंह देखा ।
स्वप्न देखने के साथ साथ वह जग गई । स्वप्न का वृत्तान्त उसने अपने
पतिसे निवेदिन किया । उसने स्वप्न पाठकों को बुलाया और उनहोगोने
स्वप्न फलका रहस्य उसे सुनाया रानीने भी वह सब सुना । वह गर्भवती
हो गई । गर्भ के नौ मास रात्रि सगडे सात और आनन्द के साथ
उसके व्यतीत हुई । बाद मे महाबल नामका पुत्र उससे उत्पन्न हुआ ।

देवी सहस्स ओराहे होत्था)

ते चीतथोका नामनी राज नीमा बल नामे राज रहेतो हने।

तेना रणवामभा धारणी १ ण ओउ हंवार राणीओ हती

(तएण सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सिहे सुमिणे पासित्ताण पडिबुद्धा
जाव महव्वले नाम दारए जाए उम्मुक्कजाव भोगसमत्थे)

ओउ वणतनी पात छे के धारिणीदेवी पोतानी शय्या छपर सुजेथी सती
ते समये रात्रिना छेटला पडारभा तेहे स्वप्नभा ओउ सिंह जेथे। स्वप्न
जेतानी साथैए ते जगी गध, अने स्वप्ननी विगन पोताना पतिने कडी सल
जावी स्वप्न पाठोने जेलाव्या अने तेमहे राजने स्वप्नना इग रिधे भरी
पात कडी राणीओ पण स्वप्नना रहस्थने स्वप्न पाठोना सुजेथी सलज्यु
ते सगलां थर गर्भना नव मास अने साडा मात द्विसे सुजेथी पमार
थया तयार जाइ थया समये तेने महाबल नामे पुत्रोने जन्म थये।

ભોગ સમર્થઃ = ઉન્નુક્તવાલમાય વિજ્ઞાતપરિણતમાયઃ સર્વકલ્યાણકુશલો ભોગસમર્થો જાત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલ્મ-તણ તં મહાવલં અમ્માપિયરો સરિસિયાણં કમલસિરી પામોક્ખાણં પચ્છહ રાયવરકન્નાસયાણં એગદિવસેણં પાણિં ગેણ્હાવેતિ, પચ પાસાયસયા પચસયદાઓ જાવ વિહરહ, થેરાગમણં, હદકુભે ઉજ્જાણે સમોસઢા । પરિસા નિગ્ગયા, બલો વિ નિગ્ગઓ ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ જં નવરં મહાવલ કુમારં રજ્જે ઠાવેહ જાવ એકારસંગવી વહૂણિ વાસાણિ સામણ્ણપરિયાય પાઉણિત્તા જેણેવ ચારુપઠવે માસિણં ભત્તેણં સિદ્ધે ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં સ્વલુત 'મહાવલ' મહાવલનામક કુમારમાતાપિતરૌ 'સરિસિયાણ' સદ્દશીના કુલેન વયમા યોગ્યાના કમલશ્રીપમુલાણા, પશ્ચાનાં રાજવરકન્યાશતાના=પશ્ચશતાના રાજવરકન્યાનામ્ એકદિવસે પાણિ ગ્રાહયતઃ, પચ

ધીરે ૨ વર મહાવલ પુત્ર વાલ્યકાલ કો પૂરા કરકે યૌવન અવસ્થો કો પ્રાપ્ત હુઆ । અવસ્થાનુસાર વર વિકસિતજ્ઞાન વાલા મી હોગયા સર્વકલાઓં મે કુશલમતિ ઘન ગયા ઓર-પચેન્દ્રિયોં કે ભોગ ભોગને લાયક મી હો ગયા । સૂત્ર " ૧ "

‘ તણ ત મહાવલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) હસકે વાદ (ત મહાવલ અમ્માપિયરો) હસ મહાવલ કા માતા પિતાને (એગદિવસેણ) એક હી દિન કે મીતર (સરિસિયાણ કમલસિરી પામોક્ખાણ પચ્છહ રાયવરકન્નાસયાણ) સમાન કુલ, વય વાલી કમલશ્રી આદિ પાચસૌ શ્રેષ્ઠ રાજકન્યાઓ કે સાથ (પાણિ

સમય જતા મહાવલ અથવા વળાવીને જુવાન થયો ઉમરના વધારાથી વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો તે બધી ડળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ વાળો અને પચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

‘ તણ મહાવલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યારબાદ (ત મહાવલ અમ્માપિયરો) મહાવલને તેના માતા પિતાએ (એગદિવસેણ) ફક્ત એક દિવસમા જ

(સરિસિયાણ કમલસિરીપામોક્ખાણ પચ્છહ રાયવર કન્નામયાણ)

સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસૌ ઉત્તમ રાજકન્યાઓની સાથે (પાણિ ગેણ્હાવેતિ) પરણાવી દીધો (પચ પાસાય સયા પચ સય

प्रासादशतानि पञ्चशतवधूना निवासार्थं पञ्चशतानि प्रसादान् कारयतः। पञ्च
शतदाय = पञ्चशतप्रमितो दायः = योतुक 'दहेज' इति भाषा प्रसिद्धः श्वसुरेण
तस्मै महावलकुमाराय प्रदत्त इत्यर्थः। स महावलकुमारः यावद् = उपरि प्रासादे
मानुष्यकान् कामभोगान् उपभुञ्जानः, विहरति = आस्तेस्मः। अथ - 'थेरागमण'
स्थविरागमनम् = तत्र वीतशोकाया नगर्या स्थविराणामागमनमभूदित्यर्थः। ते स्थ-
विराः इन्द्रकुम्भे = इन्द्रकुम्भनामके 'उज्जाणे' उद्याने 'समोसोढा' समवसृताः - अव-
गृहमवगृह्यावस्थिता। परिपन्निर्गता = वीतशोकानगरी निवासीनो लोकाः स्थविराण
वन्दनार्थं बहिर्निःसृता इत्यर्थः। उलोऽपि निर्गतः = उलनामा नृपोऽपि नगर्या नि-
सृतः। स्थविराणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चयः, राणा बलः प्रतिबुद्धः सन्नयादीत्-

गेण्हावेति विवाह कर दिया। (पच पासायसया पचसयदाओ) और
पाच सौ प्रासाद उन ५०० पाच सौ वधूओं के निवास के लिये बन-
वादिये। महावल कुमारके लिये उसके श्वसुर ने ५०० प्रमाण दहेज
दिया। अर्थात् दहेज में भी वस्तुएँ महावल कुमारको मिली-वे सब
५०० ५०० सौ थी। (जाव विहरइ) इस तरह वह महावल कुमार
यावत् महलो के ऊपर रहता हुआ मनुष्य अब सबधी काम भोगों को
भागने लगा (थेरागमण इदकुमे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया
बलो वि निग्गओ) वीतशोका नामकी उसनगरी में एक समय स्थविरो
का आगमन हुआ वे सब वहा के इन्द्रकुम्भ नाम के उद्यान में मुनिप
रपरा के अनुसार अवग्रह प्राप्तकर विराजमान हुए। नगरी के
परिषद मुनि वदना के लिये अपने अपने घर से निकल कर
उस उद्यान में आई। बल राजा भी आया। (धम्म सोच्चा निसम्म

दाओ) अने पायसो भडेल ते पायसो नववधूओ ने जडेवा भाटेबनावी
दीधा भडावल कुमारना ससराओ पायसो प्रभाण्ण देज आप्थु ओटले डे
भडावलकुम्भाने देजभा ओटली वस्तुओ मणी ते तमाभ पायसोनी सभ्या-
वाणी छती (जाव विहरइ) आ प्रभाण्ण भडावल कुमार 'यावत्' यथा भडे
लोभा रहिने मनुष्य बनना यथा लोगोभोगववा लाग्ये

(थेरागमण इदकुमे उज्जाणे समोसढा परिसा निग्गया बलो वि निग्गओ)
अेक वषते वीतशोका नामनी ते नगरीभा स्थविरोनु आगमन यथु
तेओ यथा त्याना इन्द्रकुलना उद्यानभा मुनिपरपराने अनुमरता अवग्रह
भेजवीने विराजमान यथा नागरिकोनी परिषद पोत पोत्ताना धेस्सी नीकणीने
मुनिज्जोनी वदना भाटे उद्यानभा आवी बलराज पण्ण त्या आया,

મોગ સમર્થઃ = ઉચ્ચુક્તચાલમાય વિજ્ઞાતપરિણતમાયઃ સર્વકલાકુશલો મોગસમર્થો જાત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૦૧ ॥

મૃત્મ-તણ ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો સરિસિયાણં કમ-
લસિરી પામોક્ષ્ણાણં પંચણ્હ રાયવરકન્નાસયાણં એગદિવસેણં
પાણિં ગેણ્હાવેતિ, પંચ પાસાયસયા પંચસયદાઓ જાવ વિહરઈ,
થેરાગમણં, ઇદકુંભે ઉજ્જાણે સમોસઢા । પરિસા નિગ્ગયા, થલો
વિ નિગ્ગઓ ધમ્મં સોચ્ચા નિસમ્મ જં નવરં મહવ્વલ કુમારં
રજ્જે ઠાવેઈ જાવ એકારસંગવી વહૂણિ વાસાણિ સામણ્ણવરિયાયં
પાઠણિત્તા જેણેવ ચારુપવ્વણે માસિણં ભત્તેણં સિદ્ધે ॥સૂ. ૦૨॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં સ્વલુત 'મહવ્વલ' મહાવલનામક કુમાર માતાપિતરૌ 'સરિ
સિયાણ' સદશીના કુલેન વયમા યોગ્યાના કમલશ્રીપમુલ્લાણા, પશ્ચાના રાજવરક
ન્યાશતાના=પશ્ચશતાના રાજવરકન્યાનામ્ એકદિવસે પાણિ ગ્રાહયતઃ, પશ્ચ

ધીરે ૨ વર મહાવલ પુત્ર બાલ્યકાલ કો પૂરા કરકે ચૌવન અવસ્થો
કો પ્રાપ્ત હુઆ । અવસ્થાનુસાર વર વિકસિતજ્ઞાન ચાલા ખી હોગયા
સર્વકલાઓં મેં કુશલમતિ વન ગયા ઓર-પચેન્દ્રિયોં કે મોગ મોગને
લાયક ખી હો ગયા । સૂત્ર " ૧ "

‘ તણ ત મહવ્વલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) ઇસકે બાદ (ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો) ડસ મહા
વલ કા માતા પિતાને (એગદિવસેણ) એક હી દિન કે ખીતર (સરિસિયાણ
કમલસિરી પામોક્ષ્ણાણ પંચણ્હ રાયવરકન્નાસયાણ) સમાન કુલ, વય
ચાલી કમલશ્રી આદિ પાચસૌ શ્રેષ્ઠ રાજકન્યાઓં કે સાય (પાણિ

સમય જતા મહાવલ બચ રાણુ વગાવીને જુવાન થયો ઉમરના વધારાથી
વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો તે બધી કળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ
વાળો અને પચેન્દ્રિયોના લોભોને લોભવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

‘ તણ મહાવલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યારણાદં (ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો) મહા મલને તેના
માતા પિતાએ (એગદિવસેણ) ફક્ત એક દિવસમા જ

(સરિસિયાણ કમલસિરીપામોક્ષ્ણા ન પંચણ્હ રાયવર કન્નાસયાણ)

સરખા કુળ અને સરખી આયુધ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસૌ ઉત્તમ રાજ
કન્યાઓની સાથે (પાણિ ગેણ્હાવેતિ) પરણાવી દીધો (પંચ પાસાય સયા પંચ સય

मूलम्—तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव वल-
भदो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स ण महाव-
लस्स रत्तो इमे छप्पियवालवयसगा रायाणो होत्था, त जहो
अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचदे सहजायया सहवड्ढि-
या जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकट्ठु अन्न-
मन्नस्सेयमट्ठु पडिसुणेंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं । इदकुभे
उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, महव्वले णं
धम्म सोच्चा ज नवर छप्पियवालवयंसए आपुच्छासि
वलभइ च कुमार रजे ठावेमि, जाव छप्पिय वालवयसए आपु-
च्छइ । तएणं ते छप्पियवालवयसगा महव्वल राय एवं
वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । तुव्वे पव्वयह अम्ह के अन्ने
आहारे वा जाव पव्वयामो । तएणं से महव्वले राया ते
छप्पिय वालवयसए एव वयासी—जइण तुव्वे मए सद्धि जाव
पव्वयह तो ण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रजेहि ठावेह—
पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउव्वभवति, तए
णं से महव्वले राया छप्पियवालवयसए पाउव्वभूते पासइ,
पासित्ता, हट्ठुट्ठे कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, वलभ-
इस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महव्वले जाव माहिड्ढीए
जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वट्ठुहिं चउत्थ जाव
भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

अत्र पूर्ववद् वर्णन मोक्षम् यथा हे देवानुप्रियाः महाबलकुमार राज्ये स्थापित्वा पुष्पाकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि. ततः स्थविरेः— 'विलम्ब माकुरु' इत्युक्तो ऽसौ बल यन्मन्त्र=विशेषतृत्तमाह—महाबल महाबलनामक स्वपुत्र राज्ये स्थापयति स्थापयित्वा स्थविराणा समीपे प्रव्रजितः ।

यावद् एकादशाह्निद् एकादशाह्नान्यधीते स्म । नृनि र्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यत्रैव चारुपर्वतस्तत्रोपागत्य मासिकेन भक्तेन=मासिकभक्तप्रत्याख्यानं न मासिकमनशन कृत्वेत्यर्थः, सिद्धं=मुक्तिं प्राप्तः ॥ सू०२ ॥

ज नवर महाबल कुमार रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसगवी बहूणि वासाणि सामण्यपरियाय पाउणिता जेणेव चारुपव्वए, मासिएण भत्तेण सिद्धे) स्थविरो से श्रुतचारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर, उसें हृदय में धारण कर राजा बल प्रतिबुद्ध हो गया । और कहने लगा— हे देवानुप्रियो ! मैं महाबल कुमार को राज्य में स्थापित कर आपके पास दीक्षा लेना चाहता हूँ । इस तरह जब राजा ने कहा—तो उन स्थविरो ने “ विलम्ब मत करो ” ऐसा उससे कहा—इस प्रकार उन से आज्ञापित होता हुआ वह महाबल राजा वापिस नगर में आया वहाँ आकर उसने महाबल कुमार को राज्य में स्थापित किया ।

बाद में स्थविरो के पास जाकर दीक्षित हो गया । धीरे २ उसने ११ अर्गों का अध्ययन कर लिया । इस तरह उसने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया । पालन करके फिर वह जहाँ वह चारु पर्वत था वहाँ आया । वहाँ आकर उसने १ मास का भक्त प्रत्याख्यान किया । और अन्त में मुक्ति को प्राप्त कि । सूत्र “ २ ”

(धम्म सोच्चा निसम्म ज नवर महाबल कुमार रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसगवी बहूणि वासाणि सामण्यपरियाय पाउणिता जेणेव चारुपव्वए मासिएणभत्तेण सिद्धे)

स्थविरो पासे श्री श्रुतचारित्र रूप धर्मनु व्याख्यान मालगोने तेने सारी पेडे हृदयमा धारण करीने राजा बल प्रतिबुद्ध थई गये, अने ते छडेवा लाये— ‘ हे देवानुप्रियो ! हु महाबल कुमारने राज्यासने स्थापित करीने तमारी पासेथी दीक्षित थवा थाहु छु राजा नी आ वात सावणीने स्थविरो के तेने छहु ‘विलम्ब करे नहि’ आ रीते तेमनी आज्ञा जेवनीने राजा नगरमा आग्या त्या आवीने तेले महाबल कुमारने राज्यासिद्धासन उपर जेसाउये ।
त्यारभाइ राजा स्थविरोनी पासे आवीने दीक्षित थई गये धीमे धीमे तेले अगियार (११) अर्गोनु अध्ययन करुं आरीते तेले धव्वा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन करुं पालन करीने ते न्या चारुपर्वत छेतो त्या आवीने तेले अक मासनु भक्त प्रत्याख्यान करुं अने अन्ते मुक्ति मे ॥

मूलम्—तएण सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव वल-
 भदो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स ण महाव-
 लस्स रत्तो इमे छप्पियवालवयसगा रायाणो होत्था, त जहो
 अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचदे सहजायया सहवड्ढि-
 या जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकट्ठु अन्न-
 मन्नस्सेयमट्ठ पडिसुणेति, तेण कालेणं तेणं समएणं । इदकुभे
 उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, महव्वले णं
 धम्मं सोच्चा ज नवर छप्पियवालवयसए आपुच्छामि
 वलभद च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय वालवयसए आपु-
 च्छइ । तएणं ते छप्पियवालवयसगा महव्वल रायं एव
 वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । तुव्वे पव्वयह अम्ह के अन्ने
 आहारे वा जाव पव्वयामो । तएणं से महव्वले राया ते
 छप्पिय वालवयसए एव वयासी—जइणं तुव्वे मए सद्धि जाव
 पव्वयह तो ण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहि २ रज्जेहि ठावेह—
 पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउव्वभवंति, तए
 णं से महव्वले राया छप्पियवालवयसए पाउव्वभूते पासइ,
 पासित्ता, हट्ठुट्ठे कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, वलभ-
 दस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महव्वले जाव माहिड्ढीए
 जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वड्ढहि चउत्थ जाव
 भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं सा कमलश्री राज्ञी महाबलस्य भार्या, अन्यदा अन्यस्मिन् काले सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा । यावत् बलभद्रः कुमारो जातः अत्र यावत्तरुणेनायमर्थोऽप्यगन्तव्यः—सा स्वप्नवृत्तं भर्तुरग्रे निवेदयति ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रवणं यावत्—तदनन्तरं सा गर्भवती जाता, सपूर्णेषु मासेषु बलभद्रनामकः कुमारः उत्पन्न इति । तं युवराजश्चाप्यभवत् । तस्य खलु महाबलस्य राज्ञ इमे=रक्ष्यमाणा पठपि च बालवयस्यसा बालमित्राणि

‘तएण सा कमलसिरी’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्नया) किसी एक समय (सींह) सिंह को (सुमिणे) स्वप्न में (जाव बलभद्रो कुमारो जाओ) देखा और देव कर वह प्रतिबुद्ध हो गई—जग गई—। यावत् उस के बलभद्र कुमार उत्पन्न हुआ यहा यावत् शब्द से इस पाठ का सग्रह हुआ है—कमल श्री ने स्वप्न में जो सिंह देखा था उस स्वप्न को उस ने अपने पति महाबल से कहा—महाबल ने स्वप्नपाठकों को बुलाया उन्हो ने इस दृष्ट स्वप्न का क्या फल है यह बात उसे सुनाई । सुनकर सब को बड़ा आनन्द हुआ । कमल श्री गर्भवती हुई । नौ मास साढे सात दिन जब गर्भ को पूर्ण हो गया—तब कमल श्री के बलभद्र नाम का कुमार उत्पन्न हुआ ।

(जुवराया यावि होत्था) धीरे २ वह कुमार युवराज भी बन गया ।
(तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयसगा रायाणो होत्था)

‘तएण सा कमलसिरी’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) तयारपाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की राज्ञी कमल श्री ने (अन्नया) कौन एक वખते (सींह) सिंह ने (सुमिणे) स्वप्नमा (जाव बलभद्रो कुमारो जाओ) जेयो अने जेधने ते जगो गध ‘यावत्’ समय जाता तेने जलभद्र नामे कुमार जन्मयो अही ‘यावत्’ शब्दधी आ पाठोनी सग्रह थयो छे के—उमलश्री ने जे स्वप्नमा सिंह जेयो उतो ते स्वप्न विधेनी थर्या तेणे पोताना पति महाबलने दुगी महाबलने स्वप्नपाठकेने बोलाव्या स्वप्नपाठकेने तेने स्वप्ननु इण जताव्यु स्वप्नइणने जालीने अधाने पूजण आनइ थयो कमलश्री जगली थध जलने ज्यारे नवमास अने साडा सात हिस पूरा थया तयारे कमलश्रीना उदरथी जलभद्रनामे कुमारने जन्म थयो

(जुवराया यावि होत्था) समय पसार थता कुमार जलभद्र युवराज पण थध गया (तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयसगा रायाणो होत्था) महाबल राजने ६ बालमित्र राजाओ पण उता

રાજાન આસન્, તદ્ યથા-(૧) અચલ, (૨) ધરણ, (૩) પૂરણ, (૪) વસુઃ (૫) વૈશ્રમણ, (૬) અભિચદ્રઃ, તે કીદૃશા ઇત્યાહ-‘સહજાયયા’ સહજાતકાઃ સહ સમાનકાલે સમુત્પન્નાઃ, સહવર્ધિતાઃ, સમાનકાલે વર્ધિતા, યાવત્-‘તેસિં અન્નયા કયાઈ એગયઓ સહિયાણ સમુવાગયાણ સન્નિસન્નાણ સન્નિવિદ્ધાણ ઇમેયારૂવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજ્જિત્યા-જન્ન દેવાણુણિયા ! અમ્હ સુહ વા દુક્ખ વા પવજ્જા વા વિદેસગમણ વા સમુપજ્જઈ, તન્ન, ’ ઇત્યન્તસ્ય પાઠસ્ય સગ્રહ. । તેપામ્ અન્યદા કદાચિત્ એકતઃ સહિતાનાં સમુપાગતાનાં સનિવણ્ણાના સનિવિદ્ધાનામ્ અયમેત દ્રૂપઃ મિથઃ કથાસમુલ્લાપઃ સમુદપ્પત્ત ઇતિહાયા । એકતઃ=એકત્ર-એકસ્મિન્ સ્થાને સહિતાના=મિલિતાના, સમુપાગતાના સપ્તાના મન્થે એકસ્ય કસ્યચિદ્ ભવને કાર્યવશાત્ સપ્રાપ્તાના, સનિવણ્ણાનામ્=ઉપવિદ્ધાના, સનિવિદ્ધાના=સ્થિરસુખા-સનસ્થિતાનામ્-અયમેતદ્રૂપઃ=વશ્યમાણસ્વરૂપ મિથઃ કથાસમુલ્લાપઃ=પરસ્પરવાર્તા લાપઃ સમુદપ્પત્ત=અભવત્, ઇત્યર્થઃ । યત્ સ્વલુ દેવાનુમિયા । અસ્માક સુખ વા દુઃખ વા પ્રવજ્જ્યા વા વિદેસગમન વા સમુત્પદ્ધતે, તત્ સ્વલુ અસ્મામિ. ‘ એગયઓ

હસ મહાબલ રાજા કે યે હહ બાલ મિત્ર રાજા થે । (તંજહા અચલે, ધરણે, પૂરણે, વસુ, વેસમણે અભિચદે સહજાયયા, સહવદ્ધિયા જાવ કમ્હેર્હિ એગયઓ સમેચ્ચા ણિત્વરિયન્વ ત્તિ કદ્દુ અન્નમન્નસ્સેયમદ્દ પહિસુણેતિ) હનકે નામ યે હૈં-(૧) અચલ, (૨) ધરણ (૩) પૂરણ (૪) વસુ (૫) વૈશ્રમણ (૬) યે અભિચદ્ર । સબ મહાબલ રાજા કે સાથર ઉત્પન્ન હુણ થે, ઔર હન્ટી કે સાથર બઢે હુણ થે । એક સમય સન યે સબકે સબ કિસી કાર્યવશ એક સ્થાન પર એકત્રિત હુણ તો પરસ્પર મેં હન સબ ને એસા વિચાર કિયા-કિ ચાહે સુખ કારક કાર્ય હો યા દુઃખ કારક કાર્ય હો, પ્રવજ્જ્યા લેના હો યા પરદશ જોના હો ચાહે હનમેં સે કોઈ મી

(તજહા અચલે, ધરણે, પૂરણે, વસુ, વેસમણે, અભિચદે સહજાયયા સહ વદ્ધિયા જાવ અમ્હેર્હિ એગયઓ સમેચ્ચા ણિત્વરિયન્વ ત્તિ કદ્દુ અન્ન મન્ન સ્સેયમદ્દ પહિસુણેતિ તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-(૧) અચલ, (૨) ધરણ, (૩) પૂરણ, (૪) વસુ, (૫) વૈશ્રમણ, (૬) અભિચદ્ર આ બધા મહાબલ રાજાની સાથે જ જન્મ્યા હતા, અને તેમની સાથે જ મોટા થયા હતા, એક વખતે બધાને બધા કોઈ કાર્યવશ એક સ્થાને એકઠા થયા ત્યારે તેઓએ વિચાર કર્યો કે હુ ખ કારક કે સુખ કારક ગમે તેવું કામ હોય પ્રવજ્જ્યા ગ્રહણ કરવી હોય કે પરદેશ ખેડવું હોય, તો આપણે બધાએ સંમતિ જ તે કામ સાથે રહીને કરવું

समेचा ' एकतः समेत्य ' णित्वरियञ्च ' निस्तरितव्यम् इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अस्माभिः सर्वमित्रैर्मिलित्वा सर्वं कार्यं संपादनीयमिति निश्चित्य परस्परमेतमर्थं प्रतिज्ञातवन्त इत्यर्थः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये इन्द्रकुम्भे उद्याने स्थविराः समवसृताः समागतवन्तः । परिपन्निर्गताः स्थविरान् यदि तु गीतशोका नगरी निवासिनो लोका बहिर्निःसृताः, महाबलो राजाऽपि वन्दनार्थं निर्गत । महाबलः खलु धर्म श्रुत्या प्रतिबुद्धः सन् स्थविरानेवमवादीद् युष्माकमन्तिके प्रजितुमिच्छामि यन्नत्र पदपि च बालवयस्यकान् आपृच्छामि बलभद्र च कुमार राज्ये स्थापयामि, तवः

कार्यं करना हो तो हम सब लोग मिलकर ही वह कार्य करेंगे इस प्रकार से 'आपस में वे सब वचन बढ़ हो गये । (तेण कालेण तेण समएण) इतने में उस काल और उस समय में (इन्द्रकुम्भउज्जाणे थेरा समोसदा) उस इन्द्रकुम्भ उद्यान में स्थविरों का आगमन हुआ— (परिस्ता निग्गया महव्वलेण धम्म सोच्चा ज नवर छप्पिय बालवयसण आपु च्छामि बलभद्र च कुमार रज्जे ठावेमि) स्थविरों का आगमन सुनकर वीतशोका नगरी की परिपद मुनियों को वदना करने के लिये अपने २ घर से निकल कर उद्यान में आई, महाबल राजा भी गये । धर्म का उपदेश हुआ महाबल राजा धर्म का उपदेश सुन कर प्रतिबोध को प्राप्त हो गया ।

उसने उसी समय स्थविरों से कहा—भद्र ! मैं आप लोगों के पास दीक्षा धारण करना चाहता हूँ—परन्तु मेरे जो बालसखा हैं मैं उन से

आ प्रभाञ्जे तेऽस्मा प्रतिज्ञा (वचन) भद्रं यथा (दण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये इन्द्रकुम्भे उज्जाणे थेरा समोसदा) इन्द्रकुम्भ उद्यानम् । स्थविरे पधायी

(परिस्ता निग्गया महव्वले ण धम्म सोच्चा जन वर छप्पिय बालवयसण आपृच्छामि बलभद्र च कुमार रज्जे ठावेमि)

स्थविरेऽनु, आगमन सालणीने पोत पोताना आनेथी नीकणीने वीत शोका नगरीना नागरिकेऽनी परिपद मुनियोनी वदन् भाटे उद्यानमा आयी महाबल राजा पणु त्या गया मुनियोऽये धर्मोऽ उपदेश आये धर्मोपदेश श्रवण करीने राजा महाबलने प्रतिबोध थयो अट्टवे के वैराग्य थयो ।

महाबले ते समये ज स्थविरेऽने विनति करी " छे लहत ! हु तमारी पासेथी दीक्षित थवा आहु छ पणु ते पढेला आ विचे भारा बालसाभाओने

स्थविरै—‘ मा विलम्ब कुरु ’ इत्येवमुक्तं सन् स्वभवेन समागत्य यावत् तान् पडपि बालवयस्यकान् अपृच्छति । तत खलु ते पडपि च बालवयस्यका महाबल रोजानमेवमवादीत्—यदि खलु देवानुमियाः । यूय प्रव्रजिष्यथ, अस्माक कोऽन्य आंधारो वा आलस्यो वा भविष्यति यावत्—तस्माद् युष्माभि सहैव वय प्रव्रजामः । तत खलु स महाबलो राजा तान् पडपि च बालवयस्यकान् एवमवादीत् यदि खलु यूय मया साधं यावत् प्रव्रजिष्यथ, तर्हि खलु स्व स्वभवन गच्छत ज्ये-

हस विषय में पूछ लें और बलभद्र कुमारको राज्य में स्थापित कर दें पीछे आपके पास समय लूंगा । इस प्रकार राजा का कथन सुनकर स्थविरों ने उससे “ मा विलम्ब कुरु ” विलम्ब मत करो ऐसा कहा—स्थविरों द्वारा अनुमत हो कर राजा अपने घर पर वहां से वापिस आया और आते ही उस ने (जाव छप्पिय बालवयसए आपुच्छइ) अपने बाल काल्य के उन छह मित्रों से पूछा ।

(तएण ते छप्पिय बालवयसगा महव्वल राय एव वयासी) अपने मित्र महाबल की बात सुनकर उन मित्रों ने उससे ऐसा कहा— (जइण देवा० जाव पच्चयामो) मित्र । यदि आप दीक्षा लेना चाहते हैं तो फिर हमारा आपके बाद और कौन दूसरा आलयन तथा आधार होगा—इसलिये हम भी आप ही के साथ दीक्षा समय धारण करेंगे । (तएण एव वयासी) इस प्रकार अपने बाल कल्य के मित्रों की बात सुनकर राजा महाबल ने उन से कहा (जइण तुव्मे मए सद्धि जाव

हु पूछी इउ अने भलभद्र कुमारने राज्यासने भेसाडी इउ तयार भाइ तमारी पासैथी सयम अइणु करीश “ आ रीते राजनी विनती सालणीने स्थविशेअ तेने कहु—“ मा विलम्ब कुरु, भोडु करे नहि ” आभ स्थविशेअनी आज्ञा भेगवीने ते राज पोताने घर पाछो वण्यो घर आवीने तेणै (जाव छप्पियबालवयसए आपुच्छइ पोताना छये आलसभाओने पूछु

(तएण ते छप्पियबालवयसगा महव्वल राय एव वयासी) पोताना मित्र महाबलनी बात सालणीने ते मित्रोअ तेने कहु—“ जइण देवा जाव पच्चयामो) हे मित्रवर ! तमे ने दीक्षित थरा खाडो छे तो अभादे केणु आलयन अने आधार थशे ? ओथी अमे पणु तमारी साथे न दीक्षा सयम धारणु करीशु (तएण एव वयासी) आ रीते पोताना आल सभाओनी बात सालणीने महाबले तेभने कहु—

(जइण तुव्मे मए सद्धि जाव पण्यह तोण गच्छइ जेहे पुत्ते सपदि २ रज्जे

पुत्रान् पुत्रान् स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका दुरुद्धाः समारुद्धाः सन्तो यायत्=ममान्तिके प्रादुर्भवन्त, ततस्ते षडपि बालवयस्यकाः स्व स्व गृहे गत्वा स्व स्व ज्येष्ठपुत्र राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः समारुद्धाः सन्त महाबलस्य राज्ञोऽन्तिके प्रादुर्भवन्ति । ततः खलु स महाबलो राजा षडपि च बालवयस्यकान् प्रादुर्भूतान् पश्यति । दृष्ट्वा दृष्ट्वा=अतिशयेन तृष्टः सन् कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति । शब्दयित्वा =आहूय बलभद्रस्य बलभद्रकुमारस्य अभिषेकः कारितः । ततो महाबलो बलभद्र

पञ्चयत् तो ण गच्छत् जेठे पुत्ते सण्हिं २ रज्जेहिं ठावेत्) यदि आप लोग मेरे साथ प्रव्रजित होना चाहते हैं तो अपने २ घर पर जाओ-और जाकर ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ राज्यपद पर स्थापित करो-बाद में पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकाओ पर आरुढ होकर मेरे पास यहा आओ (पुरिससहस्रवाहिणीओ सीयाओ दुरुद्धा जाव पाउब्भवति) इस प्रकार महाबल राजा की धान सुनकर वे छहों मित्र चहा से अपने २ घर पर आये-और अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ पद पर स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरुढ हो महाबल राजा के पास आये । (तएण से महाबले राया छप्पिय बाल वयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता इद्व तुट्ठे कोट्टु विय पुरिस सदावेड, सदावित्ता बलभद्रस्स अभिसेओ, आपुच्छइ) महाबल राजा ने जब अपने इन छहों बाल सखाओं को अपने पास आया हुआ देखा-तो देखकर वे बहुत अधिक

जे तमे जघा भुशीथी भारी साथे दीक्षित थवा आहुताडो छो तो सत्तरे पोत पोतानी राजधानीओ जधने पोत पोताना भोटा पुत्रो ने राजगादीओ भेसाडीने डमर पुरुषो पहन करे ओवी ' पुरुष सहस्रवाहिनी ' पावणीओ । उपर भेसीने अर्द्धा आवो (पुरिससहस्रवाहिणीओ सीयाओ दुरुद्धा जाव पाउब्भवति) आ रीते महाभव राजनी वात सालणीने छओ मित्रा त्याथी पोतपोताने घेर आव्या अने पोताना स्थाने भोटा पुत्रोने राज गादीओ भेसाडीने पुरुष सहस्र वाहिनी पावणीओ उपर भेसीने थधने महाभव राजनी पासे आव्या ।

(तएण से महाबले राया छप्पिय बालवयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता इद्व तुट्ठे कोट्टुवियपुरिस सदावेड सदावित्ता बलभद्रस्स अभिसेओ, आपुच्छइ) पोताना छओ पावमित्रोने पोतानी प से आवी गयेला जेधने राजा महाबल अत्यंत क्षाणित दीमज सत्तुष्ट थयो राजाओ सत्तरे ते अभये ज कीट्टु भिक पुत्र

राजानम् आपृच्छतिस्म । आपृच्छय स महाबलो यायत् महद्दय्यं महाद्युत्या पुरुष
सहस्रवाहिनी शिविकामास्त्रं यायत् स्थविराणामन्तिके भत्रजितः दीक्षा गृहीत-
वान् । एकादशाङ्गानि-आचाराद्वादीनि अधीतेस्म । बहुभिश्चतुर्थ्यादि भक्तैः यावत्
आत्मानं भावयन् विहरति आस्ते स्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएण तेसि महव्वलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगा-
राण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो
कहासमुल्लावे समुप्पजित्था-जण्ह अम्ह देवाणुप्पिया । एगे
तवोकम्म उवसपजित्ताण विहरइ, तण्ण अम्हेहिं सव्वेहि तवो-
कम्म उपसपजित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्ठु अपणमण्णस्स न एयमट्ठ
पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता बट्ठहिं चउत्थ जाव विहरति, तएण
से महव्वले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणामगोय कम्म
निव्वत्तिसु ॥ सू० ४ ॥

इति एव सत्तुष्ट हुण । उसी समय उन ने कौटुम्बिक पुरुषों को
बुलाया-बुलाकर बलभद्र कुमार का अभिषेक करवाया ।

इस तरह बलभद्र कुमार अब राज्य पद आसीन हो गया- ।
महायल राजा ने बलभद्र से पूछा-पूछकर फिर वे पुरुष सहस्र वाहिनी
शिविका पर आरुढ़ हो गये-और महाक्रुद्धि एव महाद्युति के साथ २
चलते हुए वे स्थविरों के पास उद्यान में आये । उन्होंने ने समय ले लिया ।
आचारांग आदि ११ अंगों का अध्ययन किया और चतुर्थभक्त आदि
विविध प्रकार की तपस्याओं से अपने आत्मा को भाविन किया ॥सू० ३॥

येने जेलाव्या अने जेलावीने जलभद्र कुमारने राज्याभिषेक करावडाव्ये ।

आ रीते जलभद्र कुमार राज्यामने गिराश्रित थर्छ गया राजा महायले
अनन्या विधे जलभद्रने पूछथु अने पूछीने पुरुष सहस्रवाहिनी पावणी
उपर जेभीने महाक्रुद्धि अने महाद्युतिनी साथे शैलता तेजो उद्यानमा अर्थ
विशानी पासे आव्या अने तेजोअे मयम स्वीकार्यो तेभक्षे आचारंग वगेरे
अगिथार अजोनु अध्ययन कथुं अने चतुर्थभक्ता वगेरे अनेक प्रकारनी
तपस्या जेवां पोताना आत्माने भावित कथो ॥ सूत्र " ३ " ॥

टीका—तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर तेषां महाबलप्रमुखाणां सप्तानां मनगाराणाम् अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले एकतः सहितानाम् एकत्रोपविष्टानाम् अयमेतद्वचः=वक्ष्यमाणस्वरूपः ' मिहो ' मिथः=परस्पर ' कथा समुल्लावे ' कथासमुल्लापः- वार्तालापः ' समुपज्जित्या ' समुदपद्यत- अभवत् हे देवानुमियाः ! अस्माक मध्ये ' एगे ' एकः=कोऽप्येकः यत् खलु तपः कर्म ' उवसपज्जित्ता ' उपसंपद्य अङ्गीकृत्य खलु विहरति=विहरिष्यति, अस्माभिः सर्वैः तत् खलु तपः कर्म उपसंपद्य खलु विहर्तुं=विहर्तव्यम्, इति कृत्वा ' अभ्रममस्स ' अन्योन्यस्य परस्परस्य एतमर्थं ' पडिसुणेति ' प्रतिशृण्वन्ति=प्रतिजानन्ति प्रतिज्ञां

‘ तएण तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं महब्बलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण अन्नया कयाइ) उन महाबल प्रमुख स्नात अनगारोंको किसी एक समय (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहा समुल्लावे समुप जित्था) जब कि ये एक जगह बैठे हुए थे इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ—परस्पर में उनकी ऐसी घात चीत चली—(जण्ह अम्ह देवाणुप्पिया । एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुमियों ! हम लोगों में से जो भी कोई तप कर्म को अगीकार कर अपने आप को आवित करेगा—हम सब भी वही तप कर्म आचरित करेंगे । (तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कइहु अण्ण-

‘ तएण तेसिं महब्बलपामोक्खाण ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारथाइ (तेसिं महाब्बलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण -अन्नया कयाइ) केहिं वण्णते भइआबल प्रमुण्ण ते आते अनगारोने (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुपज्जित्था)—अथारे तेओ आ ओक स्थाने ओकठा थधने ओठा छता थारे आ प्रभाणे विचार खुयो—ओटले के तेओ आ रीते अरस परम वातथीत करवा लाग्या—(जण्ह अम्ह देवाणुप्पिया । एगे तवो कम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुमियों ! आपआभाधी गमेते थ्यज्जित्ते ओ नतनु तप कर्म स्वीकारीने चोत्ताना आत्माने आवित करेशे आपणे अथा पणु तेअ तप आचरीशु

(तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कइहु अण्णमणस्स एयमइ पडिसुणेति)

કુર્વન્તિ । પ્રતિશ્રુત્ય વહુભિશ્ચતુર્થ- યાવદ્ ચતુર્થભક્તાદિભિરાત્માન માયયન્તો વિહરન્તિ । તતસ્તદનન્તર સ મહાબલોડનગારો ' હમેણ ' અનેન વક્ષ્યમાણેન 'કારણેણ' કારણેન પ્રતિજ્ઞા કૃત્વા તદન્યથા કરણરૂપેણ માપિત્વાતદન્યથા કરણ હિ માયા સાચ સ્ત્રીત્વસ્ય કારણમ્, હ્ય માયાઽભિમાનાત્ પ્રાદુર્ભવતિ, અભિમાન ચાત્ર-' અહ મેતેર્પાં નાયકોઽસ્મિ, એતે મદધીના અનુનાયકાઃ સન્તીતિ. યદિ મમોત્કૃષ્ટતા ન સ્યાત્તર્હિ નાયકાનુનાયકાના કો વિશેષ સ્યાદિત્યેવ ભાવનયા અભિમાનો માયા

મણસ્સ ઇયમદ્ધ પહિસુર્ણેતિ) હસ પ્રકાર વિચાર કર ઉન્હોં ને પરસ્પર મેં હસ વિચાર કો સ્વીકાર કર લિયા ।

(પહિસુર્ણિત્તો વહૂર્હિ ચડત્થ જાવ વિહરતિ) સ્વીકાર કર ફિર ડન સવને સાય હી સાય ચતુર્થ ભક્ત આદિ કી તપશ્ચર્યા કરના પ્રારંભ કર લી- (તણ સે મહ્વચ્છે અગગારે હમેણ કારણેણં હિત્થિનામગોય કમ્મ નિવ્વત્તિસુ) મહાબલ અનગાર ને હસ વક્ષ્યમાણ કારણ સે સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મ કા ઉપાર્જન કિયા અર્થાત્ મહાબલ ને પ્રતિજ્ઞા કરકે સ્ત્રી પ્રતિજ્ઞાનુસાર તપશ્ચરણ નહીં કિયા કિન્તુ-કુટિલભાવ રાખકર અન્યથારૂપ સે તપશ્ચરણ કિયા-કહા કુહ્ઠ ઓર કિયા કુહ્ઠ-હસી કા નામ માયા હૈ । યહ માયા સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિ કા કારણ હોતી હૈ । માયા અભિમાન સે જડ્ભૂત હોતી હૈ-મહાબલ કે હૃદય મે અભિમાન હસ કારણ સે આયા યા- કિ મેં હન સવ કા નાયક હૂં-યે મેરે આધીન હૂં-અનુનાયક હૂં-યદિ મેરે મેં - હનકી અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહીં હો તો ફિર નાયક ઓર અનુનાયકોં મે

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને બધાએ મળાને એ વાતને સ્વીકારી લીધી
(પહિસુર્ણિત્તો વહૂર્હિ ચડત્થ જાવ વિહરતિ) સ્વીકાર કરીને તેઓએ એકી સાથે ચતુર્થભક્ત વગેરે તપશ્ચર્યા શરૂ કરી

(તણ સે મહ્વચ્છે અગગારે હમેણ કારણેણં હિત્થિનામગોય કમ્મ નિવ્વત્તિસુ)

મહાબલ અનગારે જેના કારણ વિષેની ચર્ચા આગળ થશે-તેવા “ સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મનુ ” ઉપાજ્ઞન કર્યું એટલે કે મહાબલે પ્રતિજ્ઞા કરીને પણ તે મુજબ તપનુ આચરણ કર્યું નહિ કુટિલભાવથી તેઓએ બીજી રીતે તપનુ આચરણ કર્યું “ કહેવું કંઈ અને કરવું કંઈ ” તેનું નામ માયા છે એ માયા જ સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિ । કારણ બને છે અભિમાનથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે મહાબલ ના મનમા આરીતે અભિમાન ઉત્પન્ન થયું કે હું બધાનો નાયક છું આ બધા મારે આધીન છે-અનુનાયક છે જે મારામા તેઓની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહિ હોય તો નાયક અને અનુનાયકોમા તફાવત શો રહ્યો ? આ બાતની ભાવના -

સુત્પાદયતિ । ‘ સ્ત્રિનામગોત્ર ’ સ્ત્રીનામગોત્ર યસ્ય કર્મણ ઉદયાત્ સ્ત્રીભાવઃ સ્ત્રીત્વમાપ્યતે તત્ સ્ત્રીનામ કર્મ તથા-ગોત્રં જાતિ કુચ નિર્વર્તક કર્મ અનયો સમાદ્યાઃ સ્ત્રીનામગોત્ર કર્મ ‘ નિર્વર્તિસુ ’ નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાન્ ॥ સૂ૦૪ ॥

મૂળ-જડ્ઢ તે મહવ્વલવજ્ઞા છ અળગારા ચઉત્થ ઉવસપ-જ્ઞિત્તાળ વિહરતિ, તઓ સે મહવ્વલે અળગારે છટ્ટ ઉવસપ-જ્ઞિત્તાળ વિહરઈ । જડ્ઢાં તે મહવ્વલવજ્ઞા અળગારા છટ્ટ ઉવસપજ્ઞિત્તાળ વિહરંતિ, તઓ સે મહવ્વલઅળગારે અટ્ટમ ઉવસપજ્ઞિત્તાળ વિહરઈ । એવ અટ્ટમં તો દસમ, અહ દસમ તો દુવાલસં ઇમેહિ ય ણં વીસાણહિ ય કારણોહિ આસેવિવ વહુલીકણ્હિં તિત્થયરનામગોયં કર્મમં નિવ્વર્તિસુ, ત જહા —

(૧) અરહત (૨) સિદ્ધ (૩) પવયણ (૪) ગુરુ (૫) થેર (૬) વહુસ્સુણ (૭) ક્તવસ્સીસુ । વચ્છલ્લયાઈ (૮) તેસિ અભિક્ખણં ણાણોવઓગે ય ॥૧॥ (૯) દસણ (૧૦) વિણણ (૧૧) આવસ્સણ ય (૧૨) સીલવ્વણ નિરૂયાર । (૧૩) ક્ખણલવ (૧૪) તવ (૧૫) ઘિયાણ (૧૬) વેયાવચ્ચે (૧૭) સમાહીય ॥૨॥ (૧૮) અપ્પુવ્વ-ણાણગહણે (૧૯) સુયમત્તી (૨૦) પવયણે પમાવણયા । ણ્ણહિં કારણોહિ તિત્થયરત્ત લહઈ જીઓ ॥સૂ૦૫॥

કયા ભેદ હોગા-ઇસ પ્રકાર કી માવના ને ઉસ કે હૃદય મેં અભિમાન ઉત્પન્ન કિયા ઓર ઇસ અભિમાન ને માયા કો જન્મ દિયા । જિસ કર્મ કે હૃદય સે જીવ સ્ત્રીત્વપદ પ્રાપ્ત કરતા હૈ વહ સ્ત્રી નામ કર્મ હૈ તથા જાતિકુલ નિર્વર્તક જો કર્મ હોતા હૈ વહ ગોત્ર હૈ । ઇસ પ્રકાર કે કર્મ કો માયા કે સજ્ઞાવ સે અનગાર ને ઉપાર્જિત કિયા । સૂત્ર “ ૪ ”

એજ મહાબલના મનમા અભિમાન ને જન્મ આપ્યો હતો અને એ અભિમાને જ માયાને પણ ઉત્પન્ન કરી હતી જે ડમના ઉદયથી જીવ સ્ત્રીત્વપદ મેળવે છે તે સ્ત્રીનામ કર્મ છે તેમજ જે ડમ જાતિકુલ નિર્વર્તક હોય છે તે ગોત્ર છે માયા ના સજ્ઞાવથી આ પ્રમાણે તે અનગારે આ જાતના કર્મનું ઉપાર્જન થયું ॥ સૂત્ર “ ૪ ” ॥

टीका— 'जडण ते इत्थादि । यदि खलु ते महाबलवज्जा पडनगाराः ' चउत्थ चतुर्थे=चतुर्थभक्तम् एकोपवासमित्यर्थ, उवसपज्जित्ता ' उपसपय=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारः ' उट्ठ ' पण्ठ=पण्ठभक्तमुपवामद्वयमुप-पय खलु विहरति । अयं भाव—यदा ते पडनगारा एकोपवासं कुर्वन्ति, तदा महाबलोऽप्येकोपवासं करोति, परंतु-पारणदिने एव मथयति अथ मे शिरोवाधा ते नाहं पारणं कर्णिष्यामि, भवद्भिरेव पारणं कर्तव्यमित्युक्तं मायया पण्ठ भक्तं करोतीति । यदि खलु ते महाबलवज्जा पण्ठ=पण्ठभक्तमुपसपय=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारोऽष्टम अष्टमभक्तमुपसपय खलु ' विहरइ ' विहरति ।

' जइणं ते महव्वलवज्जा छ अणगारा ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण) यदि वे (महव्वलवज्जा) महाबल अनगार को छोड़कर (छ अणगारा) छह अनगार (चउत्थउवसपज्जित्ताण विहरति) चतुर्थ भक्त की तपस्या करते-तओसे, तो वह (महाबल अणगारे) महाबल अनगार (छट्ठउवसपज्जित्ताण विहरइ) दो उपवास करता-तात्पर्य इसका यह है कि जिस समय वे छह अनगार एक उपवास करते उस समय महाबल अनगार भी एक ही उपवास करता-परंतु जब पारणा का दिन आता तो कहने लगता कि आज मेरे शिरमें दर्द हो रहा है मैं पारणा नहीं करूंगा-आप लोग ही पारणा करलो ।

इस प्रकार भाया को चित्त में रखकर वह दूसरा उपवास करलेता । (जइण ते महव्वलवज्जा अणगारा छट्ठ उपसपज्जित्ताण विहरति ताओ से महव्वले अणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ) इसी तरह वे

' जइण ते महव्वलवज्जा छ अणगारा ' इत्यादि

टीकार्थ—(जइण) ने तेओ (महव्वलवज्जा) महाबल सिंघावना (छ अणगारा) छ अनगारे (चउत्थउवसपज्जित्ताण विहरति) चतुर्थभक्तनी तपस्या करता (तओसे) तारे ते (महाबलअणगारे) महाबल अनगार (छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरइ) ने उपवास करता ओटवे जे न्यारे छ अनगार ओक उपवास करता तारे महाबल अनगार पण्ठ ओकर उपवास करता पण्ठ न्यारे पारणानो दिवस आवतो तारे तेओ कहेता के आने भाइ भायु हुअवा भाउयु छे, हु पारणा करीर नहि तमे दोओ पारणा करे

आरीते भायावरा थाने महाबल अनगार नीने उपवास करता हुता

(जइण ते महव्वलवज्जा अणगारा छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरति, ताओ से महव्वलेअणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ)

एव यदि ते पडनगारा अष्टमम् अष्टमभक्तम् उपसपद्य विहरति 'तो' तर्हि स महाबलोऽनगारः दशम=दशमभक्तमुपसपद्य विहरति । अथ यदि ते पडनगारा दशम=दशमभक्तमुपसपद्य विहरति 'तो' तदा स महाबलोऽनगार 'दुबालस' द्वादश द्वादश भक्तम् उपसपद्य विहरति, एवमधिकाधिकतप करणादहमुत्कृष्टो भविष्यामीति मायाकरणेन स्त्रीनामगोत्र कर्मोपार्जितयान् तदानीं मिथ्यात्व सास्वादन च गुणस्थानमनुभवतिस्म, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुपपत्ति मायाहेतुकत्वादिति महाबल अनगार चर्ज छट्ट की तपश्चर्या-दो उपवास-करते तो यह महा बल अनगार अष्टम की तपश्चर्या-तीन उपवास करता ।

(एव अष्टमतो दसम, अह दसमतो दुबालस इमेहि य ण वीसाए हि य कारणेहि य आसेविय बहुलीकएहि तित्थयरनामगोय कम्म निव्वत्तिस्सु) यदि वे छह अनगार अष्टमभक्त की तपश्चर्या करते तो यह महाबल अनगार दशमभक्त की तपश्चर्या करता यदि वे दशम भक्त की तपश्चर्या करते, तो यह द्वादशभक्त की तपस्या करता । इस तरह अधिकाधिक तप करने से मैं उत्कृष्ट उत्तम-हो जाऊंगा " इस प्रकार माया पूर्वक तपस्या करने से उसने स्त्री नाम गोत्र-जिस कर्म के उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ऐसा स्त्री नाम कर्म तथा जाति कुल निर्वर्तक गोत्र कर्म का बंधकर लिया । इस समय मैं मिथ्यात्व और सास्वादन इन दो गुणस्थानों का जीव अनुभव करता है । क्यों कि मिथ्यात्व और अनतानुबधी माया हेतुकता स्त्री नामकर्म में रहती

આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ બધા છએ અનગારો છટ્ટના તપશ્ચર્યા-એ ઉપવાસ-કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર અકુમની તપશ્ચર્યા-ત્રણ ઉપવાસ કરતા હતા (એ અઠ્ઠમતો દસમ, અહ દસમતો દુબાલસ ઇમેહિં ય ણ વીસાણિય કારણેહિં આસેવિય બહુલીકણેહિં તિત્થયરનામગોય કમ્મ નિવ્વત્તિસ્સુ)

તે બધા છ અનગારો જ્યારે અષ્ટમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દશમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ છ અનગાર દશમભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દ્વાદશ ભક્તની તપસ્યા કરતા હતા આ રીતે વધારે તપ કરવાથી હું આ બધા કરતા ઉત્તમ થઈ જઈશ તેમ તેઓ માનતા પણ આમ માયાવશ તપ કરવાથી તેણે સ્ત્રીનામ ગોત્ર-એટલે કે જે કર્મના ઉદયથી સ્ત્રીત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એવું સ્ત્રીનામ કર્મ તેમજ ભતિકુલ નિર્વર્તક ગોત્ર કર્મના બંધ કર્યો આ વખતે મિથ્યાત્વ અને સાસ્વાદન આ બે ગુણ સ્થાનોને જીવ અનુભવે છે કેમકે મિથ્યાત્વ અને અનતાનુબધી માયા

ભાવઃ । તત્ત્વં સ મહાવલોડનગારઃ 'ઈમેદિ' એમિશ્ચ શાસ્ત્રપ્રસિદ્ધેઃ મ્બલુ વીસા
 પહિય' વિશત્યાચ કારણે વિંશતિસ્થાનકૈઃ 'આસેવિય વહુલીકુર્ણિ' આસે-
 વિતવહુલીકૃતૈઃ પ્રત્યેક સ્થાનસ્ય સકૃત્ કરુણાદાસેવિતાનિ વહુશઃ સેવનાદ્ વહુ
 લી કૃતાનિ તૈઃ ભ્વગ્રોન્કુપ્ટરસાયનપરિણામૈરિત્યર્થઃ । તીર્થકરનામગોત્ર કર્મ 'નિ
 વર્તિસુ' નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાનિત્યર્થઃ । ત જહા તદ્યગા-વિંશતિસ્થાનકાના
 નામાનિ ગાયાત્રયેણ દર્શયતિ (૧-૭) અહંત્-સિદ્ધ-પ્રવચન-ગુરુ-સ્થવિર-
 વહુશ્રુતતપસ્વિષ્ણુ પત્સલતા ભક્તિઃ-યથાઽવસ્થિતે ગુણગ્રામોત્કીર્તનરૂપા (૮)
 'તેતિ' તેપામ્ અર્હદાદીનાં 'અમિલ્લણ' અમીલ્ણ=પુન પુનઃ જ્ઞાનોપયોગઃ જ્ઞાને-
 ધૂપયોગઃ જ્ઞાનોપયોગઃ इत्यष्ट स्थानकानि, (૯) દર્શન=સમ્યક્ત્વ, (૧૦) વિનયો
 ગુરુદેવાદિવિષયકઃ, (૧૧) આપશ્યકમ્-ઉપયગકાલમાપશ્યકકરુણમ્ (૧૨) શીલ
 વ્રત ચ નિરતિચાર, વ્રતપ્રત્યાખ્યાનનિર્મલ પાલનમ્, (૧૩) ક્ષણલવેતિ-કાલોપ

હૈ । इस के बाद उस महावल अनगार ने शास्त्र प्रसिद्ध इन विंशति
 स्थानकों के द्वारा कि जो आसेवित बहुलिकृत थे तीर्थकर नाम गोत्र
 कर्म का धध किया । प्रत्येक स्थान का एक बार सेवन करना इसका
 नाम आसेवित और बहुत बार सेवन करना इसका नाम बहुली कृत
 है । (तजहा) वे बीस स्थान ये हैं अरिहत् (१), सिद्ध (२), प्रवचन (३)
 गुरु (४), रगविर (५), बहुश्रुत (६), तपस्वी इनमें वात्सल्यभाव-भक्ति
 -रखना-अर्थात् इनके यथावस्थित गुणों का उत्कीर्तन करना (७), इन
 के ज्ञान में निरंतर उपयोग रखना (८), दर्शन का विशुद्धि करना (९)
 गुरुदेव आदि के विषय में विनय संपन्नता होना (१०), दोनों काल में
 आवश्यक क्रियाओं को करना (११), शील और व्रतों में आचरित

હેતુકતા સ્ત્રીનામ કર્મમા રહે છે ત્યાર બાદ મહાવલ અનગારે શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ
 વિંશતિ (વીસ) સ્થાનકો વડે-ડે જે આસેવિત બહુલીકૃત હતા -તીર્થ કર નામ
 ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો દરેક સ્થાનનુ એક વાર સેવન કરવું તે આસેવિત
 અને ઘણી વાર સેવન કરવું તે બહુલીકૃત છે (તજહા) વીસ સ્થાનો નીચે
 મુજબ છે-અરિહત, (૧) સિદ્ધ, (૨) પ્રવચન, (૩) ગુરુ, (૪) સ્થવિર, (૫) બહુ
 શ્રુત, (૬) તપસ્વીમા વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ-રાખવી એટલે કે તેમના યથાવસ્થિત
 ગુણોનુ કીર્તન કરવું (૭) તેમના જ્ઞાનમા નિરતર ઉપયોગ કરવા એટલે (૮)
 દર્શનની વિશુદ્ધિ કરવી (૯) ગુરુ દેવ વગેરેની સામે વિનય રાખવો (૧૦)
 બને સમયે (સત્તાર માત્ર) આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવી, (૧૧) શીલ અને

લક્ષણ, ક્ષણલાદિકાલેષુ પ્રમાદ વિદાય શુભધ્યાનકરણમ્ (૧૪) તપઃ= દ્વાદશ વિધમ્, (૧૫) ત્યાગ=દાનમ્ તથા અભયદાન સુપાત્રદાન ચ, તત્રોભયદાન=મયા જુત્પાદન પરિભય પ્રાપ્તસ્ય માર્યમાણસ્ય કચચિન્મ્રીયમાણસ્ય ચ પરિરક્ષણમ્, અમયદાનમિદં કરુણાદાનોપલક્ષણમ્ । સુપાત્રેભ્યો દાન મહાતત્ત્વારિભ્યઃ પ્રતિમાધારિ શ્રાવકેભ્યથ દાનમ્ સુપાત્રદાનમ્ । इदमुपलक्षण तेन चतुर्विधसद्य सुखोत्पादनमित्यर्थः । (૧૬) વૈયાવૃત્ય=આચાર્યોદીના શુશ્રૂષા (૧૭) સમાધિ-સર્વજીવાના સુખોત્પાદનમ્, (૧૮) અર્વજ્ઞાનપ્રદણ=પ્રસિદ્ધમ્, (૧૯) શ્રુતમક્તિઃ=જિનોક્તાગમેષુ

દોષર પ્રવૃત્તિ કરતે રહનાવ્રત, પ્રત્યાર્થ્યાન કો નિર્મલ રૂપસે પાલન કરના (૧૨), ક્ષણ, લવ આદિ કાલોં મેં પ્રમાદ કા પરિહાર (નિવારણ) કરતે હુણ શુભ ધ્યાન કરના, (૧૩), તપ-૧૨ પ્રકાર કે તપોં કા આરાધન કરના (૧૪), ત્યાગ-અભય દાન ઓર સુપાત્ર દાન દેના કિસી કો ભય ઉત્પાદન નહીં કરના યહ અભયદાન હૈ-તથા દૂસરોં દ્વારા ભય કો પ્રાપ્ત હુણ અથવા માર્યમાણ યા કિસી ભી તરહ મરણોન્મુલ્ક હુણ એસે વ્યક્તિ કી અપની શક્તિ કે અનુસાર રક્ષા કરના, ડન પર કરુણા બર-સાના, ડનકે પ્રતિ દયા ભાવ રલ્લના યહ સય અભય દાન હૈ ।

યહ અભયદાન કરુણાદાન કા ઉપલક્ષક હૈ । મહાવ્રતધારી સકલ સયમીજનોં કો અથવા પ્રતિમાધારી શ્રાવકોં કો આહારાદિ દાન કરના યહ સુપાત્ર દાન હૈ । ચતુર્વિધ સધ કે લિયે સુલ્ક કા ઉત્પાદન કરના હસકા યહ ઉપલક્ષક હૈ (૧૫), વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય આદિ કી શુશ્રૂષા કરના (૧૬) સમાધિ-સમસ્ત જીવોં કો સુલ્ક મિલે હસ પ્રકાર કા પ્રય

પ્રતોમા અતિથાર વગર થઇને પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું-વ્રત, પ્રત્યાર્થ્યાન નુ નિમજ્જ રૂપથી પાલન કરવું (૧૨) ક્ષણ, લવ વગેરે કાળોમા પ્રમાદ રહિત થઇને શુભ ધ્યાન ધરવું (૧૩) તપ, -બાર પ્રકારના તપોનુ આરાધન કરવું, (૧૪) ત્યાગ, અભય દાન અને સુપાત્ર દાન આપવું, કોઇને પણ ભયની સ્થિતિમા મૂકવો નહિ તે અભયદાન છે તેમજ બીજાઓ દ્વારા ભયની સ્થિતિમા મૂકાયેલા અથવા તે કોઇપણ રીતે મરણોન્મુલ્ક થતા વ્યક્તિની પોતાની શક્તિ મુજબ રક્ષા કરવી, તેમની ઉપર કરુણા રાખવી, દયાલાવ બતાવવો આપણુ અભયદાન કહેવાય છે

આ અભયદાન કરુણાદાનનો ઉપલક્ષક છે મહાવ્રતધારી બધા સયમી જનોને અથવાતો પ્રતિમાધારી શ્રાવકોને આહાર વગેરે દાન કરવું તે સુપાત્ર દાન છે ચતુર્વિધ સધના માટે સુખનુ મર્જન કરવું આ તેનો ઉપલક્ષક છે (૧૫) વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય વગેરેની સેવા કરવી, (૧૬) સમાધિ-બધા

પરમાનુરાગઃ, (૨૦) પ્રવચને પ્રભાવના=પ્રભૂતમવ્યેભ્યઃ પ્રવ્રજ્યાદાન, ભવકૂપપત-
ત્પ્રાણિનાણસમાશ્વાસનપરાયણજિનશાસનમહિમોપવૃદ્ધણ સમસ્તસ્ય જગતોજિનશાસન
રસિક કરણ મિથ્યાત્વતિર્મિરાપહરણ, ચરણકરણશરણીકરણ ચ ।

एतानी-तीर्थंरुत्तमाप्तिः विंशतिस्थानरूपाणि सर्वनीवसाधारणानि सन्तीति
दर्शयितुमाह-‘एएहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो’ इति । एतैः कारणैस्तीर्थंरुत्त
लभते जीवः ।

તન કરના, (૧૭), અપૂર્વ જ્ઞાન કા પઢના, (૧૮), શ્રુતભક્તિ-જિનેન્દ્ર દ્વારા
પ્રતિપાદિત આગમો મેં પરમ અનુરાગ રાખના, (૧૯), પ્રવચન પ્રભાવના
અનેક ભવ્ય જીવોં કો પ્રવ્રજ્યા ડેના, સસારકૂપ મેં પડતે હુએ પ્રાણીયોં
કો રક્ષા કરને કે આશ્વાસન મેં પરાયણ એસે જિનશાસન કો મહિમા
બઢાના, સમસ્ત જગત કે જીવોં કો જિન શાસન કા રસિક બનાના,
મિથ્યાત્વરૂપ તિમિર કા ધ્વસ કરના, ઓર ચરણ સત્તરી એવ કરણ
સત્તરી કી શરણ મેં રહના યદ સય પ્રવચન પ્રભાવન હૈ (૨૦) ।

ये २० स्थान समस्त जीवों को तीर्थंकर पदकी प्राप्ति में कारण
है । (एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो) इन्हीं बीस स्थानक के
सेवन से जीव तीर्थंकर पद को प्राप्त करता है । अन्यत्रभी यही बात
कही है-जिनागम में अनेक तप प्रसिद्ध हैं परन्तु इन श्री बीसस्थानरूप
तपस्या के समान और कोई तप नहीं है । इन बीस स्थानों में से कोई
एक स्थान की आराधना करके जीव अरिहतो के बीच में उत्तम
जिनेन्द्र के पद को पाता है ।

સુખ મળે તેમ કરવું-(૧૭) અપૂર્વજ્ઞાનનું વાચન કરવું (૧૮ શ્રુતભક્તિ-જિને
ન્દ્રપ્રતિપાદિત આગમો-મા ખૂબજ અનુરાગ રાખવો, ૧૯ પ્રવચન પ્રભાવના
-અનેક ભવ્યજીવોને પ્રવ્રજ્યા આપવી સસાર રૂપી વાવમા પડનાર પ્રાણીઓની
રક્ષા કરવા રૂપ આશ્વાસન મા પરાયણ એવા જિન શાસનનો મહિમા પ્રશન્ત
કરવો જગતના બધા જીવોને જિનશાસનના રસિક બનાવના મિથ્યાત્વ રૂપ
અધકારનો નાશ કરવો, અને ચરણસત્તરી અને ડરણસત્તરીની શરણમા
રહેવું આ પ્રવચન પ્રભાવના છે ૨૦

આ વીસ સ્થાનો બધા જીવોને માટે તીર્થંકર પદની પ્રાપ્તિમા કારણ
ભૂત હોય છે "एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो" આ કારણે દ્વાગ જ
જીવ તીર્થંકર પદ મેળવે છે બીજી ઘણી જગ્યાએ પણ એજ વાત કહેવામા
આવી છે જિનાગમોમા અનેક તપ પ્રસિદ્ધ છે, પણ આ શ્રી વીસ સ્થાન
રૂપ તપસ્યા જેવી બીજી કોઈપણ તપસ્યા નથી આ વીસ સ્થાનોમાથી ગમે
તે એક સ્થાનની આરાધના કરીને જીવ અરિહતોની મધ્યે ઉત્તમ જિનેન્દ્રના
પદને મેળવે છે

યદુક્તમ્—

ભૂયાસ્યપિ તપાંસિસ્યુઃ, પ્રસિદ્ધાનિ જિનાગમે ।

પરશ્રોવિંશતિસ્થાન - તપસ્તુલ્ય તપો નદિ ॥ ૧ ॥

અન્યચ-ગ્રીસાણ અન્નચર, ઠાગ આરાદિક્ષણ જે જીગા ।

અરિહાર્ણ મજ્જે, જિર્ણિદપદમુત્તમ લહ્હ ॥ ૨ ॥

પુનઃ-પુરિમેણ પન્નિમેણય, એ સઘ્વે વિ ફાસિયા ઠાળા ।

મજ્જિમગેહિં જિણેહિં, એ દો તિણિ સઘ્વે વા. ॥ ૩ ॥

इतिवचनादादिनाथजीवेन वर्धमानजीवेन च पूर्वस्मिन् तृतीयभवे सर्वाणि
विंशतिस्थानरूपाणि सेवितानि, अन्यैर्द्वाविंशतितीर्थकरजीवरैरेक द्वे त्रीणि सर्वाण्यपि
स्पृष्टानि, नियमो नास्ति । मल्लीनाथ जीवेन तु सर्वाण्येव सेवितानीति भावः ।

एतेषु विंशति सख्याकेषु ये वसन्ति तदाराधनाया प्रवृत्ता भवन्ति, ते
स्थानरूपासिनः कथ्यन्ते । उक्तं च—

“ तिथ्यगर पयदाइसु, વસઈ ય વીસાસુ ઠાળગેસુ જ ।

આરાહણદ્વમણિસ, ઠાળગવાસી ય સો હવણ ॥ ૧ ॥ ”

छाया-“ तीर्थङ्कर पददायिषु वसति च विंशती स्थानकेषु यत् ।

આરાધનાર્થમણિસ, સ્થાનરૂવાસો ચ સ ભવતિ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

આદિ નાથ પ્રભુ કે જીવ ને ઓર શ્રી મહાવીર પ્રભુકે જીવને પૂર્વ
તૃતીય ભવ મેં સમસ્ત વીસ સ્થાનો કી આરાધના કી થી । બીચ કે
ચાકી ૨૨ તીર્થકરો ને કિન્હીને એક કિન્હીને ૨ કિન્હીને ૩ સ્થાનોં કી
ઓર કિન્હીં ૨ ને સઘ્વે સ્થાનોં કી આરાધના કી । એસા નિયમ નહીં
હૈં કિ તીર્થકર પ્રકૃતિ કે વધ કે લિયે હન વીસો હી સ્થાનો કી આરા
ધના કરની પડતી હો । મલ્હિનાથ કે જીવ ને તો હન વીસોહી સ્થાનો
કી આરાધના કી । વીસ સ્થાનો મેં જો રહ્તે હૈં ડનકી આરાધના
કરને મેં પ્રવૃત્ત હોતે હૈં—વે સ્થાનકવાસી કહલાતે હૈં । ઉક્તચ-તર્થકર

પૂર્વતૃતીય ભવમા આદિનાથ પ્રભુના જીવે અને શ્રી મહાવીર પ્રભુના
જીવે વીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી વચ્ચેના શેષ બાવીસ તીર્થકરો
માથી કોઈએ એક કોઈએ બે, કોઈએ, ત્રણ સ્થાનોની અને કોઈ કોઈએતો
બધા સ્થાનોની આરાધના કરી હતી એવો કોઈ ચોક્કસ નિયમ નથી કે તીર્થ
કર પ્રકૃતિના બધને માટે ઉક્ત વીસે વીસસ્થાનોની આરાધના કરવી જ પડતી
હોય મલ્હિનાથના જીવેતો આ બધાની વીસેવીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી
આ વીસ સ્થાનોમા જે રહે છે તેમની આરાધના કરવામા જે તત્પર રહે છે
તેઓ ‘સ્થાનકવાસી’ કહેવાય છે ઉક્તચ-તીર્થકર પ્રકૃતિને આપનારા વીસ

अन्यच्च—“ तीर्थद्वार पदप्राप्तेः, स्थानकेषु च विंशतौ ।

वसन्त्याराधनार्थं यत्तस्मात् स्थानकमासिनः ॥ १ ॥” इति ।

मूलम्—तएण ते महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताण विहरति, जाव एगराइयं उवसपज्जित्ताण विहरति, तएण ते महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्म उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेति, पारित्ता छट्ठ करेति । करित्ता चउत्थ करेति, करित्ता अट्ठम करेति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता दशम करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता दसम करेति, करित्ता चाउदसम करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता चोदसम करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता सोलसम करेति, करित्ता बीसडम करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता बीसडम करेति, करित्ता सोलसम करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता चोदसम करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता चाउदसमं करेति, करित्ता दसम करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता अट्ठम करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता अट्ठम करेति, प्रकृति के दाता इन २० स्थानों में जो आराधना करने के निमित्त सदा वसते हैं—निवाम करते हैं—वे ही स्थानकवासी कहलाते हैं । दूसरे श्लोक का भी यही भाव है । सूत्र ‘ ५ ’

स्थानोभा आराधना करवाना प्रयोजनथी जेजो उमेशा निवास करे छे—वसे छे, तेजोअ स्थानवासी कहेवाय छे भीन प्रयोजनो पणु जेअ अर्थ छे सूत्र ‘ ५ ’ ॥

करित्ता चंउत्थ करैति करित्ता छट्ठं करैति, करित्ता चंउत्थं करैति, सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेति एव खल्ल एसा खुड्ढागसीह निक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासोह सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ,

तयाणतर दोच्चपि परिवाडीए चउत्थं करैति, नवरं विग-
इवज्ज पारेति, एव तच्चापि परिवाडी नवर पारणए अलेवाड
पारेति, एव चउत्था वि परिवाडी नवर पारणए आयविलेण
पारेति ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । तवस्तदनन्तर खल्ल ते महावल्लप्रमुखा सप्ता-
नगराः ‘मासिय’ (१) मासिकीम् एरुमामपरिमाणं प्रथमा भिक्षुप्रतिमाम्
‘उवसज्जित्ताण’ उपसपद्य स्वीकृत्य, विहरन्तिस्म । एवम् अमुना प्रकारेण ‘जाव
एगराइय’ यावत् एकरात्रिकीम् अत्र यावत् करणात् ‘दो मासिय तेमासिय
चउम्मासिय पचमासिय छम्मासिय सत्तमासिय पढमसत्तराइदिय वीयसत्तराइदिय

‘तएण ते महावल्ल पामोक्खा’ । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते महावल्लपामोक्खा) उन महावल्ल
प्रमुख सातों अनगरों ने (मासिय भिक्षुपडिम उवसपज्जित्ताण
विहरति) १ मास की प्रमाण वाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण की
(जाव एगराइय उवसपज्जित्ताण विहरति) इसी तरह दो मास प्रमाण
वाली द्वितीय भिक्षु प्रतिमा, तीन मास प्रमाण वाली तृतीय भिक्षु
प्रतिमा, ४ चार मास प्रमाण वाली चतुर्थ भिक्षु प्रतिमा, पांच मास

‘तएण ते महावल्ल पामोक्खा’ । इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाइ (ते महावल्लपामोक्खा) महावल्ल प्रमुख सात
अनगरोंने (मासिय भिक्षुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरति) ओके भासनी
प्रमाणवाणी १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण करी (जाव एगराइय उवसपज्जि-
त्ताण विहरति) आ प्रमाणे ४ ओ भास प्रमाणवाणी द्वितीय भिक्षुप्रतिमा,
त्रयमास प्रमाण वाणी तृतीय भिक्षुप्रतिमा, चार चार भास प्रमाण वाणी चतु

तच्चसत्तराह्दिय अहोराह्दिय ' इति पाठस्य सग्रहः । तत्र २ द्वैमासिकी, ३ की, ४, चातुर्मासिकी ५, पचमासिकी, ६, पाण्मासिकी, ७ सप्तमासिकी, सर्मा ८ प्रथम सप्तरात्रिदिवा, ९. द्वितीय सप्तरात्रिदिवा, १० तृतीय सप्तरात्रिदिवा, इमा दश प्रतिमा उपसपथ, एकादशीम्-११ अहोरात्रिकी, १२ द्वादशीम्-एक रात्रिकीम् इत्येव द्वादशप्रतिमा उपसपथ विहरन्ति स्म । आसा वर्णन दशाश्रुतस्कन्धे सप्तमाध्ययने मुनिहर्षिणी टीकायां द्रष्टव्यम् ।

ततस्तदन्तर खलु ते महावलप्रभुसा सप्तानगारा ' खुड्गाग ' भुल्लक ' सीह निक्कीलिय' सिंहनिष्क्रीडित=सिंहनिष्क्रीडितनामक सिंहो यथा विहरन् स्व पथा-

प्रमाण वाली पाचवी भिक्षुप्रतिमा, ३ मास प्रमाण वाली छठी भिक्षुप्रतिमा, ७ मास प्रमाण वाली सप्तमी भिक्षुप्रतिमा, प्रथम सात रात दिन प्रमाण वाली ८ भी भिक्षुप्रतिमा, द्वितीय सात दिन रात प्रमाण वाली १० वी भिक्षुप्रतिमा तथा १ दिन रात प्रमाण वाली ११ वी भिक्षुप्रतिमा और एक रात प्रमाण वाली १२वी भिक्षुप्रतिमा उन सब अनगारोने धारण की ।

इन समस्त प्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कंध में सप्तम अध्ययन में मुनि हर्षिणी नाम की टीका में किया गया है । वहां से देख लेना ।

(तएण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्गाग सीहनिक्कीलिय तवोकम्म उवसपज्जिज्ञाण विहरति) इसके बाद उन महावलप्रमुख सातो ही अनगारो ने लघु सिंह निष्क्रीडित नाम का तप किया । जिस

थं भिक्षुप्रतिमा पाच भास प्रभाषुवाणी पाचमी भिक्षुप्रतिमा, छ भास प्रभाषुवाणी छठी भिक्षुप्रतिमा, सात भास प्रभाषुवाणी सातमी भिक्षुप्रतिमा, प्रथम सात रात द्विस प्रभाषुवाणी आठमी भिक्षुप्रतिमा, गील सात द्विस रात प्रभाषुवाणी नवमी भिक्षुप्रतिमा, त्रील सात द्विस रात प्रभाषुवाणी दशमी भिक्षुप्रतिमा तेमज्ज् अेक द्विस रात प्रभाषुवाणी अगियारमी भिक्षुप्रतिमा, अने अेक रात प्रभाषुवाणी बारमी भिक्षु प्रतिमा, तेअो भधा अनगारो अे धारणु करी

आ भधी प्रतिमाअो विधे विगत वार अर्थ्या ' दशाश्रुतस्कंध ' ना सातमा अध्ययननी मुनिहर्षिणी नामनी टीकाभा करवामा आवी छे जिंसासु अेअे त्याथी मएली वेवु नेधअे

(तएण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्गाग सीह निक्कीलिय तवोकम्म उवसपज्जिज्ञाण विहरति)

त्यार गाद भडाभव प्रभुअ साते सात अनगारोअे लघुसिंहनिष्क्रीडित नामे तप उथुं सिंह नेम पोताना पाछणना लागनी तरइ डोकीयु करते।

જાગ પડયતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાત્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તત્ સિંહનિષ્ક્રી
 ઢિતમિત્યુચ્યતે. । તપ કર્મોપસપથ વિહરન્તિ । તપ ક્ષુલ્લક સિંહનિષ્ક્રીઢિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્ઢ્યાપામાઢ- ' તજહા ' ઇત્યાઢિ ચતુર્થ
 ચતુર્થભક્તમેઢોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ' સન્વકામગુણિય ' સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિધૃતૈતૈલમધુરરૂપા પિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 ઇદ પારણક્રિયાયાપિશેષણ, ' પારેતિ ' પારયન્તિ=પારણ કુર્વન્તિ । પારયિત્વા ષઢ્ઢ
 કુર્વન્તિ, તત પારણ કૃત્વા ષઢ્ઢભક્ત દ્વયુપવાસરૂપ તપ ' કુર્વન્તિ- ઇત્યર્થ કૃત્વા
 તરહ સિંહ અપને પશ્ચાત્ જાગ કા નિરીક્ષણ કરતા આગે ચલતા હૈ ઁસી
 પ્રકાર જો તપ પૂર્વકૃત તપો કો સાથ લેકર આગે ૨ ક્રિયા જાતા હૈ ઁસ
 કા નામ સિંહનિષ્ક્રીઢિત તપ હૈ । (તજહા) યહ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રી
 ઢિત તપ ઁન્હો ને કિસ પ્રકાર સે ક્રિયા ઇસ ઘાત કો અય સૂત્રકાર
 પ્રદર્શિત કરતે હૈ । - (ચઁત્થ કરેતિ, કરિત્તા સન્વ કામગુણિય પારેતિ,
 પારિત્તા છઢ્ઢ કરેતિ, કરિત્તા ચઁત્થ કરેતિ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ, કરિત્તા
 છઢ્ઢ કરેતિ, કરિત્તા, દસમ કરેતિ, કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ, કરિત્તા દુવા
 લસમ કરેતિ, કરિત્તા દસમ કરેતિ, કરિત્તા ચાઁદસમ કરેતિ કરિત્તા
 દુવાલસમ કરેતિ) ઁન્હો ને પહિલે ચતુર્થ ભક્ત-ઁક ઁપવાસ ક્રિયા । ઁક
 ઁપવાસ કરકે વિગય સહિત પારણા ક્રિયા પારણા કરકે ફિર છઢ્ઢભક્ત
 -દો ઁપવાસ ક્રિયે દો ઁપવાસ કરકે ફિર ઁન્હો ને પારણા ક્રિયા ઁાદ
 ને ચતુર્થ ભક્ત ક્રિયા । ચતુર્થભક્ત કરકે પારણા ક્રિયા ફિર-ત્રીન ઁપ

આગળ ઘાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઇને
 આગળ ઢરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીઢિત કહેવાય છે (ત જહા)
 અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીઢિત તપ કેવી રીતે થયું ? તે વિષે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચઁત્થ કરેતિ, કરિત્તા સન્વકામગુણિય પારેતિ, પારિત્તા, છઢ્ઢ કરેતિ
 કરિત્તા ચઁત્થ કરેતિ, કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ, કરિત્તા છઢ્ઢ કરેતિ, કરિત્તા દસમ
 કરેતિ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ, કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ કરિત્તા ચાઁદસમ કરેતિ
 કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત-એક ઁપવાસ કર્યો એક ઁપાસ કરીને
 વિગય સહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ ફરી છઢ્ઢભક્ત-ઁક ઁપવાસ કર્યા
 ઁક ઁપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઁપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

ચતુર્યં કુર્વન્તિ, કૃત્વાષ્ટમમ્, અષ્ટમમ્ ચતુર્યાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પૃથ્વ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ ચતુર્યાસરૂપ દશમમ્ કુર્વન્તિ, કૃત્વાષ્ટમ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ પૃથ્વોવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશ પૃથ્વોવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા પોદશ સપ્તોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ, કૃત્વાષ્ટાદશ અષ્ટોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોદશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા વિંશ

વાસરૂપ અષ્ટમમ્ કૃત્વા અષ્ટમમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર છટ્ઠમ્ કૃત્વા રૂપ દો ઉપવાસ કૃત્વા પૃથ્વ કૃત્વા કરકે પારણા કૃત્વા ફિર દશમ મ્ કૃત્વા ચાર ઉપવાસ કૃત્વા ચાર ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર અષ્ટમ મ્ કૃત્વા રૂપ ત્રીન ઉપવાસ કૃત્વા અષ્ટમ મ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર પૃથ્વ ઉપવાસ રૂપ દ્વાદશ મ્ કૃત્વા દ્વાદશ મ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દશમ મ્ કૃત્વા દશમ મ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર પૃથ્વ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ મ્ કૃત્વા ચતુર્દશ મ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દ્વાદશ મ્ કૃત્વા પાચ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) પાચ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ ૭ ઉપવાસરૂપ સોલસ મ્ કૃત્વા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) ૭ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા-વાદ મે ૬ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા અઢારસમ કરેતિ) પારણા કરકે ફિર અષ્ટાદશ મ્ કૃત્વા ૮ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) આઠ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર ૭ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા વીસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરકે ઉત્તર

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છટ્ઠ ભક્ત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા પૃથ્વ ભક્ત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ ભક્ત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ત્યાર ઉપવાસોના અન્તે પાચણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ ભક્ત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ ભક્ત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ ભક્ત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા ફરી દશમ ભક્ત કર્યા દશમ ભક્ત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ ૭ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ ભક્ત કર્યા

ચતુર્દશ ભક્ત કરીને પારણા કર્યા ફરી દ્વાદશ ભક્ત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) પાચ ઉપવાસો કરીને પાચણા કર્યા કરી સોલસ ભક્ત સાત ઉપવાસ કર્યા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા “કરિત્તા અઢારસમ કરેતિ” પારણા કરીને અષ્ટાદશ ભક્ત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા “કરિત્તા સોલસમ કરેતિ” આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા “કરિત્તા વીસમ કરેતિ” સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

જ્ઞાન પશ્યતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાત્મ્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તત્ મિહનિષ્ક્રી
 ઢિતમિત્યુચ્યતે । તપ કર્મોપસપથ મિહરન્તિ । તત્ ક્ષુલ્લક સિંહનિષ્ક્રીઢિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્લાયામાહ—‘ તજહા ’ ઇત્યાદિ ચતુર્થ
 ચતુર્થમક્તમેકોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ‘ સન્વકામગુણિય ’ સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિદૃતતૈલમધુરરૂપા ત્રિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 ઇદ પારણક્રિયાયાવિશેષણ, ‘ પારેતિ ’ પારયન્તિ=પારણ કુર્વન્તિ । પારયિત્વા પઠ
 કુર્વન્તિ, તત્ પારણ કૃત્વા પઠ્યમક્ત દ્વયુપવાસરૂપ તપઃ કુર્વન્તિ—ઇત્યર્થ કૃત્વા

તરહ સિંહ અપને પશ્ચાત્ ભાગ કા નિરીક્ષણ કરતા આગે ચલતા હૈ ડસી
 પ્રકાર જો તપ પૂર્વકૃત તપો જો સાથ લેકર આગે ૨ ક્રિયા જાતા હૈ ડસ
 કા નામ સિંહનિષ્ક્રીઢિત તપ હૈ । (તજહા) યહ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રી
 ઢિત તપ ડન્હો ને કિસ પ્રકાર સે ક્રિયા હસ યાત કો અવ સૂત્રકાર
 પ્રદર્શિત કરતે હૈ ।—(ચડત્થ કરેતિ, કરિત્તા સન્વ કામગુણિય પારેતિ,
 પારિત્તા છઢ કરેતિ, કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ કરિત્તા અઢમ કરેતિ, કરિત્તા
 છઢ કરેતિ, કરિત્તા, દસમ કરેતિ, કરિત્તા અઢમ કરેતિ, કરિત્તા ઢુવા
 લસમ કરેતિ, કરિત્તા દસમ કરેતિ, કરિત્તા ચાડહસમ કરેતિ કરિત્તા
 ઢુવાલસમ કરેતિ) ડન્હો ને પહિલે ચતુર્થ મક્ત—ઁક ડપવાસ ક્રિયા । ઁક
 ડપવાસ કરકે વિગય સહિત પારણા ક્રિયા પારણા કરકે ફિર છઢમક્ત
 —દો ડપવાસ ક્રિયે દો ડપવાસ કરકે ફિર ડન્હો ને પારણા ક્રિયા ઢાદ
 મે ચતુર્થ મક્ત ક્રિયા । ચતુર્થમક્ત કરકે પારણા ક્રિયા ફિર—ત્રીન ડપ

આગળ આલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઇને
 આગળ ડરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીઢિત કહેવાય છે (ત જહા)
 અનગાશો આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીતિ તપ કેવી રીતે મ્યુ ? તે વિષે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચડત્થ કરેતિ, કરિત્તા સન્વકામગુણિય પારેતિ, પરિત્તા, છઢ કરેતિ
 કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ, કરિત્તા અઢમ કરેતિ, કરિત્તા છઢ કરેતિ, કરિત્તા દસમ
 કરેતિ કરિત્તા અઢમ કરેતિ, કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ કરિત્તા ચાડહસમ કરેતિ
 કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થમક્ત—એક ડપવાસ કર્યો એક ડપાસ કરીને
 વિગય મહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ કરી છઢમક્ત—એ ડપવાસ કર્યા
 એ ડપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ મક્ત કર્યા બાદ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ડપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्त उपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा पष्ठं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं चतुरूपवासरूपं दशमभक्तं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं पञ्चपुवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दशं षडुपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति कृत्वा षोडशं सप्तोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं अष्टोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा विंश

वासरूपं अष्टमभक्तं किया अष्टमभक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये । षष्ठभक्त करके पारणा किया फिर दशमभक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टमभक्त रूप तीन उपवास किये । अष्टमभक्त करके पारणा किया फिर पञ्च उपवास रूप द्वादशभक्त किया द्वादशभक्त करके पारणा किया । पुनः दशमभक्त किया । दशमभक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दशभक्त किया । चतुर्दशभक्त करके पारणा किया पुनः द्वादशभक्त रूप पांच उपवास किये । (करित्ता सोलसमं करेति) पांच उपवास करके पारणा किया पुनः ७ उपवासरूपं सोलसं भक्त किया (करित्ता चोदसमं करेति) ७ उपवास करके पारणा किया—बाद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्टारसमं करेति) पारणा करके फिर अष्टादशभक्त रूप ८ उपवास किये (करित्ता सोलसमं करेति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसहमं करेति) सात उपवास करके उसका

करीने पाण्डु कथां त्वा २ भाद छठ लक्षत इय मे उपवासो कथां पष्ठ लक्षत करीने पारण्डु कथां त्वा २ भाद दशम लक्षत इय त्वा २ उपवासो कथां त्वा २ उपवासोना अन्ते पारण्डु कथां त्वा २ भाद अष्टम लक्षत इय त्रय उपवासो कथां अष्टम लक्षत करीने पारण्डु कथां त्वा २ भाद द्वादश लक्षत पांच उपवास कथां त्वा २ पछी पारण्डु कथां करी दशम लक्षत कथां दशम लक्षत करीने पारण्डु कथां अन्ते त्वा २ भाद छ उपवास इय चतुर्दश लक्षत कथां

चतुर्दश लक्षत करीने पाण्डु कथां करी द्वादश लक्षत इय पांच उपवासो कथां (करित्ता सोलसमं करेति पांच उपवासो करीने पाण्डु कथां करी सोलस लक्षत सात उपवास कथां (करित्ता चोदसमं करेति) सात उपवास करीने पारण्डु कथां त्वा २ भाद छ उपवासो कथां “ करित्ता अट्टारसमं करेति ” पारण्डु करीने अष्टादश लक्षत इय आठ उपवासो कथां “ करित्ता सोलसमं करेति आठ उपवासो करीने पाण्डु कथां त्वा २ भाद आठ उपवासो कथां “ करित्ता वीसहमं करेति ” सात उपवासो करीने तेण्डु पारण्डु कथां, त्वा २

જાગ પડ્યતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાત્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તન્ મિહનિષ્કી
 ઢિતમિત્યુન્યતે. । તપ કર્મોપસપથ વિહરન્તિ । તત્ર ક્ષુલ્લક સિંહનિષ્કીઢિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્યાયામાઢ-‘ તજઢા ’ ઢ્યાદિ ચતુર્થ
 ચતુર્થભક્તમેકોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ‘ સન્વકામગુણિય ’ સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિધૃતતૈલમધુરરૂપા ત્રિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 ઢ્દ પારણક્રિયાયાવિશેષણ, ‘ પારૈતિ ’ પારયન્તિ=પારણ કુર્વન્તિ । પારયિત્વા ષઢ
 કુર્વન્તિ, તત પારણ કૃત્વા પઢ્ઠમક ક્વયુપવાસરૂપ તપઃ કુર્વન્તિ-ઢ્યર્થ કૃત્વા

તરહ સિંહ અપને પશ્ચાત્ ભાગ કા નિરીક્ષણ કરતા આગે ચલતા હૈ ડસી
 પ્રકાર જો તપ પૂર્વકૃત તપો કો સાથ લેકર આગે ૨ ક્રિયા જાતા હૈ ડસ
 કા નામ સિંહનિષ્કીઢિત તપ હૈ । (તજઢા) યત્ર ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્કી
 ઢિત તપ ડન્હો ને કિસ પ્રકાર સે ક્રિયા ઢસ યાત કો અય સૂત્રકાર
 પ્રદર્શિત કરતે હૈ ।- (ચડત્થ કરૈતિ, કરિત્તા સન્વ કામગુણિય પારૈતિ,
 પારિત્તા છઢ કરૈતિ, કરિત્તા ચડત્થ કરૈતિ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરૈતિ, કરિત્તા
 છઢ કરૈતિ, કરિત્તા, ઢસમ કરૈતિ, કરિત્તા અઢ્ઢમ કરૈતિ, કરિત્તા ઢુવા
 લસમ કરૈતિ, કરિત્તા ઢસમ કરૈતિ, કરિત્તા ચાઢઢસમ કરૈતિ કરિત્તા
 ઢુવાલસમ કરૈતિ) ડન્હો ને પહિલે ચતુર્થ ભક્ત-ઁક ડપવાસ ક્રિયા । ઁક
 ડપવાસ કરકે વિગય સહિત પારણા ક્રિયા પારણા કરકે ફિર છઢ્ઢમક
 -ઢો ડપવાસ ક્રિયે ઢો ડપવાસ કરકે ફિર ડન્હો ને પારણા ક્રિયા ઢાઢ
 મે ચતુર્થ ભક્ત ક્રિયા । ચતુર્થભક્ત કરકે પારણા ક્રિયા ફિર-ત્રીન ડપ

આગળ યાલે છે તે પ્રમાણે જ જો તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને
 આગળ કરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્કીઢિત કહેવાય છે (ત જઢા)
 અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્કીઢિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિશે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચડત્થ કરૈતિ, કરિત્તા સન્વકામગુણિય પારૈતિ, પારિત્તા, છઢ કરૈતિ
 કરિત્તા ચડત્થ કરૈતિ, કરિત્તા અઢ્ઢમ કરૈતિ, કરિત્તા છઢ કરૈતિ, કરિત્તા ઢસમ
 કરૈતિ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરૈતિ, કરિત્તા ઢુવાલસમ કરૈતિ કરિત્તા ચાઢઢસમ કરૈતિ
 કરિત્તા ઢુવાલસમ કરૈતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત-એઢ ડપવાસ કર્યો એક ડપાસ કરીને
 વિગય મહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાઢ ફરી છઢ્ઢમક-ઢે ડપવાસ કર્યા
 ઢે ડપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાઢ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાઢ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ડપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्तं युपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा पष्ठं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं चतुरूपवासरूपं दशमभक्तं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं पञ्चपोवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दशं षडुपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति कृत्वा पोटशं सप्तोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं अष्टोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा विंश-

वासरूपं अष्टमभक्तं किया अष्टमभक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये । पष्ठभक्त करके पारणा किया फिर दशमभक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टमभक्त रूप तीन उपवास किये । अष्टमभक्त करके पारणा किया फिर पञ्च उपवास रूप द्वादशभक्त किया द्वादशभक्त करके पारणा किया । पुनः दशमभक्त किया । दशमभक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दशभक्त किया । चतुर्दशभक्त करके पारणा किया पुनः द्वादशभक्त रूप पांच उपवास किये । (करित्ता सोलसम करेति) पांच उपवास करके पारणा किया पुनः ७ उपवासरूपं सोलसभक्त किया (करित्ता चोदसम करेति) ७ उपवास करके पारणा किया—याद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्टारसम करेति) पारणा करके फिर अष्टादशभक्त रूप ८ उपवास किये (करित्ता सोलसम करेति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता बीसइम करेति) सात उपवास करके उसका

करीने पाण्ड्या कथां तयार भाद छट्ठ लकत इप ये उपवासो कथां पष्ठ लकत करीने पाण्ड्या कथां तयार भाद दशम लकत इप यार उपवासो कथां यार उपवासोना अने पाण्ड्या कथां तयार भाद अष्टम लकत इप त्रय उपवासो कथां अष्टम लकत करीने पारणा कथां तयार भाद द्वादश लकत पाच उपवास कथां त्याग पछी पाण्ड्या कथां इगी दशम लकत कथां दशम लकत करीने पारणा कथां अने तयार भाद छ उपवास इप चतुर्दश लकत कथां

चतुर्दश लकत करीने पारणा कथां इरी द्वादश लकत इप पाच उपवासो कथां (करित्ता सोदससम करेति पाच उपवासो करीने पाण्ड्या कथां करी मोक्षम लकत सात उपवास कथां (करित्ता चोदसम करेति) सात उपवास करीने पारणा कथां तयार भाद छ उपवासो कथां “ करित्ता अट्टारसम करेति ” पारणा करीने अष्टादश लकत इप आठ उपवासो कथां “ करित्ता सोलसम करेति आठ उपवासो करीने पाण्ड्या कथां तयार भाद सात उपवासो कथां “ करित्ता बीसइम करेति ” सात उपवासो करीने तेले पारणा कथां, तयार

તિતમ નરોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ । કૃત્વાઽષ્ટાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા વિંશતિતમ કુર્વન્તિ
 કૃત્વા પોઢઃ કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટાદશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોઢઃ
 કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા
 દ્વાદશ કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટમ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા પષ્ઠ કુર્વન્તિ, કૃ

પારણા ક્રિયા-ફિર ૧ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ) ઉસ
 કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૮ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા વીસઢમ કરેતિ) આઠ
 ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૧ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા સોલ
 સમ કરેતિ) ૧ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ
 ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા-૮
 ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ચોઢસમ કરેતિ) ડન આઠ ઉપવાસ કા પારણા
 ક્રિયા-ફિર ૬ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) ૬ ઉપવાસ કા
 પારણા ક્રિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ)
 ૭ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૫ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા
 ઘાઢઢસમ કરેતિ) ૫ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૬
 ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ઢસમ કરેતિ) ૬ ઉપવાસ કરકે પારણા ક્રિયા
 ફિર ૪ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ) ૪ ઉવાસ કા પાર-
 ણા ક્રિયા-પારણા કરકે ૫ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ) ૫
 ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૩ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ઢસમ

ખાઢ ઢરી નવ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ ” ંને તેના પારણા
 ઢર્થા ત્યાર ખાઢ આઠ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા વીસઢમ કરેતિ ” ંઠ ઉપ
 વાસો ઢરીને તેના પારણા ઢર્થા ત્યાર પછી નવ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા
 સોલસમ કરેતિ ” નવ ઉપવાસો ઢરીને તેના પારણા ઢર્થા ત્યાર ખાઢ સાત
 ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસના પારણા ઢરીને
 આઠ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા ચોઢસમ કરેતિ ” ંને આઠ ઉપવાસોના પારણા
 ઢર્થા ત્યાર પછી છ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા સોલસમ કરેતિ ” છ ઉપવાસોના
 પારણા ઢરીને સાત ઉપવાસ ઢર્થા “ કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસ
 ઢરીને તેના પારણા ઢર્થા ત્યાર ખાઢ પાચ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા ઘાઢઢસમ
 કરેતિ ” પાચ ઉપવાસો ઢરીને તેના પારણા ઢર્થા ત્યાર ખાઢ છ ઉપવાસો
 ઢર્થા “ કરિત્તા ઢસમ કરેતિ ” છ ઉપવાસના પારણા ઢર્થા, ંને ત્યાર પછી
 ત્યાર ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા ઢુવાલસમ કરેતિ ” ત્યાર ઉપવાસના પારણા
 ઢરીને પાચ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ ” પાચ ઉપવાસના પારણા
 ઢર્થા ંને ત્યાર ખાઢ ત્રણ ઉપવાસો ઢર્થા “ કરિત્તા ” ત્રણ

ત્વાઽપમ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થે કુર્વન્તિ, કૃત્વા પૃથ્વ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થે કુર્વન્તિ
 સર્વત્ર સર્વકામગુણિતેન પારયન્તિ । ચતુર્થ કુર્વન્તીત્યાદિ-સર્વત્ર સર્વકામગુણિતેન પાર-
 યન્તીત્યન્તસ્યાય નિષ્કર્ષઃ-સિંહનિષ્ક્રીડિતં તપોદ્વિવિધ મહત્ ક્ષુલ્લકચ ।
 તત્રાનુલોમગત્યા-

કરેતિ) ૩ ઉપવામ કા પરણા કિયા ફિર ૪ ઉપવાસ કિયે (કરિત્તા
 છટ્ટ કરેતિ) ૪ ઉપવાસ કા પારણા કિયા-ફિર ૨ ઉપવાસ કિયે (કરિ-
 ત્તા અટ્ટમ કરેતિ) ૨ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૩ ઉપવાસ કિયે
 (કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ) ૩ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૧ ઉપવાસ
 કિયા (કરિત્તા છટ્ટ કરેતિ) ૧ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૨ ઉપ-
 વામ કિયે (કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ) ૨ ઉપવામ કા પારણા કરકે ફિર
 એક ઉપવાસ કિયા (સંવ્વત્થ સંવ્વકામગુણિણ પારેતિ) પારણા
 જો ઇન્હો ને કિયા વહ સર્વત્ર વિગય સહિત કિયા
 (એવ સ્વલ્લુ એસા સુદ્ધાગસીહનિક્કીલિયસ્સ તવોકમ્મસ્સ પદમા પરી-
 વાડી છર્હિ-માસેર્હિ સત્તર્હિ અહોરત્તેર્હિ ય અહાસુત્ત જાવ અહારાહિયા
 મવહ) ઇસ તરહ ક્ષુદ્ર સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કી પ્રથમ પરિપાટી હૈ । યહ
 ઉહ માસ ઓર સાત દિન રાત તક સૂત્રોક્ત વિધિ કે અનુસાર યાવત્
 આરાધિત હોતી હૈ ।

અર્થાત્ ઇસકે કરને મેં સાત દિન રાત અધિક ૬ માસ કા સમય
 લગતા હૈ । યહ “સર્વકામગુણિત” એસા જો પારણા કા વિશેષણ

ઉપવાસોના પારણા કરીને ત્યાર પછી આ ઉપવાસો કયા “કરિત્તા ડ કરેતિ”
 આર ઉપવાસના પારણા કર્યા, ત્યાર બાદ બે ઉપવાસ કયા “કરિત્તા અટ્ટમ
 કરેતિ” બે ઉપવાસના પારણા ત્રણ ઉપવાસ કયા “કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ”
 ત્રણ ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કયો “કરિત્તા છટ્ટ કરેતિ”
 એક ઉપવાસના પારણા કરીને બે ઉપવાસો કયા “કરિત્તા ચડત્થ કરેતિ”
 બે ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કયો “સંવ્વત્થ સંવ્વ કામગુણિ
 ણ પારેતિ” તેઓએ બધા પારણા વિગય સહિત કયો હતા

(એવ સ્વલ્લુ એસા સુદ્ધાગસીહનિક્કીલિયસ્સ તવોકમ્મસ્સ પદમા પરિવાડી
 છર્હિ માસેર્હિ સત્તર્હિ અહોરત્તેર્હિય આહાસુત્ત જાવ અહારાહિયા મવહ)

આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આ પ્રથમ પરિપાટી છે ૭ માસ અને
 સાત દિવસ રાત સુધી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ ‘યાવત્’ તેની આરાધના હોય છે

એટલે કે આ વ્રતને કરવામા ૭ માસ અને સાત દિવસ રાત એટલે
 વખત લાગે છે અહીં “સર્વકામગુણિત” ને પારણાના વિશેષણ રૂપે મૂક-

ચતુર્ભક્તાદિ વિંશતિતમપર્યન્ત, પ્રતિલોમગત્યા ।

વિંશતિતમભક્તાદિતથર્થભક્તપર્યન્ત ચ મિલિત્વા તપઃ શુદ્ધકમિત્યુચ્યતે ।
અનુલોમસમાપ્ત્યનન્તર પ્રતિલોમકરણાત્ પ્રાગ્ મધ્યેષ્ટાદશભક્ત ભવતિ । ચતુર્થ
પષ્ટાષ્ટમાદીનિ તુ એકૈરવૃદ્ધ્યા એકોપવાસ દ્વયુપવાસાદીનિ । ઇદં ચતુર્થપષ્ટાષ્ટમદશમ
દ્વાદશચતુર્દશપોદશભક્તાનિ પ્રત્યેક ચત્વારિ ૨ ત્રિણિ અષ્ટાદશાનિ, કે વિંશતિતમે
એવ તપોદિનાનિ ૧૫૪ ચતુઃપચ્ચાદધિક શત, પારણદિનાનિ ૩૩ ત્રયત્તિશદ્ધવન્તિ ।

રહ્યા હૈં ઉસસે યહ નિષ્કર્પ નિકલના હૈં કિ યહ સિંહનિષ્કીડિત તપ
શુદ્ધક ઓર મહત્ત કી અપેક્ષા સે દો પ્રકાર કા હોતા હૈં-ઇનમેં અનુલોમ
ગતિ સે પ્રથમ ચતુર્થભક્ત સે પ્રારંભ હોકર વિંશતિતમ પર્યન્ત કિયા
જાતા હૈં ઓર પ્રતિ લોમગતિ સે પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્તાદિ સે પ્રારંભ
કર ચતુર્થભક્ત પર્યન્ત સમાપ્ત કિયા જોતા હૈં । ઇસ તરહ અનુલોમ
પ્રતિલોમ વિધિ સે કિયા ગયા યહ તપ શુદ્ધક નિષ્કીડિત તપ માના
ગયા હૈં । અનુલોમ વિધિ કી સમાપ્તિ હોને કે બાદ પ્રતિલોમ વિધિ સે
ઇસે કરને કે પહિલે યીચ મેં અષ્ટાદશ ભક્ત હો જાતે હૈં । યે ચતુર્થ પષ્ટ
અષ્ટમાદિ એક એક ઉપવાસ કી વૃદ્ધિ સે એક ઉપવાસ દો ઉપવાસ ત્રીન
ઉપવાસ આદિ વાલેં હોતે હૈં ।

ઇસમેં ચતુર્થ પષ્ટ અષ્ટમ, દશમ દ્વાદશ ચતુર્દશ ઓર પોદશ ભક્ત
યે પ્રત્યેક ક્રમશઃ ૪-૪-૩-૩ હો જાતે હૈં, તથા વિંશતિતમ ૯ ઉપવાસ
દો હોતે હૈં । તપસ્યા કે દિન ૧૫૪, પારણા કે દિન ૩૩ ઇસ પ્રકાર મિલા

વામા આઘ્રો છે તેના અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે સિંહ નિષ્કીડિત તપ
શુદ્ધક અને મહત્તની દૃષ્ટિએ બે પ્રકારનું હોય છે અનુલોમ ગતિથી પહેલા
ચતુર્થ ભક્તથી આરંભીને વિંશતિતમ સુધી તપ કરવામા આવે છે અને પ્રતિ
લોમ ગતિથી પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્ત વગેરે થી આરંભીને ચતુર્થ ભક્ત સુધી
પુરૂ કરવામા આવે છે, આ રીતે અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિથી કરવામા આવેલું
આ તપ શુદ્ધક નિષ્કીડિત તપ ગણાય છે અનુલોમ વિધિની સમાપ્તિ બાદ
પ્રતિલોમ વિધિથી આ તપ આરંભ કરીને તેના પહેલા વચ્ચે અષ્ટાદશ
ભક્ત થઈ જાય છે આ ચતુર્થ, અષ્ટ, અષ્ટમ વગેરે એક એક ઉપવાસની
વૃદ્ધિથી એક ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને ત્રણ ઉપવાસ વગેરેના હોય છે

આમા ચતુર્થ, પષ્ટ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, ચતુર્દશ અને પોદશ ભક્ત આ
બધા અનુક્રમે ચાર ચાર, ત્રણ ત્રણ, થઈ જાય છે તેમજ વિંશતિતમ નવ
ઉપવાસ બે હોય છે તપસ્યાના દિવસો ૧૫૪, અને પારણ, ૩૩,

ઉભય મિલિત્યા પ્રથમપરિપટયા ૧૮૭ સપ્તાશીત્યધિકેમેકશત દિનાનિ ભવન્તિ પારણક ચ સર્વા સર્વકામગુણિત=સવિકૃતિક કુર્વન્તિ-इत्यर्थः । एव खलु एषा क्षुद्रसिंहनिष्क्रीडितस्य तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी पद्मिमासैः सप्तभिश्चाहोरात्रैश्च यथामूत्र सूत्रोक्तविधिना यावद् आराधिता भवति । उक्तरीत्या क्षुद्रकसिंह निष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमाया परिपाट्या सप्तरात्रिदिवाधिकाः पणमासा भवन्ति पारण च विकृतिसहित भवति ।

इदमस्य तपस प्रथमपरिपाटीयन्त्रम्, एकमेव द्वितिय तृतीयचतुर्थ पदि-
पाटीनामपि यन्त्र यो यम् ।

૧	૨	૧	૩	૨	૪	૩	૫	૪	૬	૫	૭	૬	૮	૭	૯		
૧	૨	૧	૩	૨	૪	૩	૫	૪	૬	૫	૭	૬	૮	૭	૯	૮	

તદનન્તર પ્રથમપરિપાટીરૂપાનન્તર દ્વિતીયાયા પરિપાટયા ચતુર્થ કુર્વન્તિ, નવર વિકૃતિવર્જ પારયન્તિ । પારણ કુર્વન્તિ, એવ તૃતીયાડપિ પરિપાટી, નવર કર પ્રથમ પરિપાટી મેં ૧૮૭, દિન હો જાતે હૈ । પારણા કે દિન વિગય સહિત આહાર લિયો જાતા હૈ । ઇસ પ્રકાર ઇસ ક્ષુદ્ર સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કી પ્રથમ પરિપાટી ૬ માસ ૭ દિન રાત તક સૂત્રોક્ત વિધિ કે અનુસાર આરાધિત હોતી હૈ । ઇસ તપ કી પ્રથમ પરિપાટી કા યન્ત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકા મે દિયા હૈ । ઇસી તરહ, દ્વિતીય, તૃતીય, ચતુર્થ પરિપાટી કામી યજ્ઞ જાનના ચાહિયે ।

(તયાણતર પારેતિ)

જવ પ્રથમ પરિપાટી કે અનુસાર ક્ષુદ્ર સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ આરાધિત હો ચુકના હૈ તય ડસકે ત્રાદ દ્વિતીય પરિપાટી મેં જો ચતુર્થ ભક્ત કી તપસ્યા કરતે હ વે વિકૃતિવર્જ આહાર કા પારણા કરતે હૈ ।

આમ બનેનો અરવાળો પ્રથમ પરિપાટીમા ૧૮૭ દિવસનો હોય છે પારણાના દિવસે વિગય સહિત આહાર ડરવામા આવે છે આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની પ્રથમ પરિપાટી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ છ માસ અને ત્રાત દિવસ રાત મુધી આરાધિત હોય છે આ તપની પ્રથમ પરિપાટીનુ યત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકામા બતાવ્યા મુજબ છે આ પ્રમાણેજ દ્વિતીય, તૃતીય ચતુર્થ પરિપાટીના યત્ર વિષે પણ બાણુબુ ભેધએ

(તયાણતર પારિતિ)

બ્યારે પ્રથમ પરિપાટી મુજબ ક્ષુદ્રસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના પૂરી થઈ નર છે ત્યારે દ્વિતીય પરિપાટીમા ચતુર્થ ભક્તની તપસ્યા ડરનારા વિકૃતિ વર્જ આહારના પારણા કરે છે

પારણકે-અલેપકૃત=અસ્તિગ્ધ=રુક્ષ પારયન્તિ । એવ ચતુર્થ્યપિ પરિપાટી નવર
પારણકે આચામામ્લેન પારયન્તિ=રુક્ષાન્નમચિત્તજલપ્લાવિત કૃત્વા તેન પારણ
કુર્વન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

મૂલમ-તણં તે મહબ્બલપામોક્ષા મત્ત અણગારા खुड्ढागं
સીહનિક્કીલિય તવોકમ્મ દોહિ સંવચ્છેરેહિ અટ્ટાવીસાણ અહો-
રત્તેહિ અહાસુત્ત જાવ આણાણ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવંતે
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવંતે વદતિ નમસંતિ
વદિત્તા, નમસિત્તા એવ વયાસી-इच्छामो णं भते । મહાલય
સીહનિક્કીલિય તહેવ જહા खुड्ढागनवरंचोत्तीसइमाओ नियत्तए
एगाए परिवाडीए कालो एगेणंसवच्छरेणं छहि मासेहि अट्टा-
रसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । સર્વપિ સીહનિક્કીલિય છહિ
વાસેહિ દોહિ ય માસેહિ વારસેહિ ય અહોરત્તેહિ સમપ્પેइ । તણ
તે મહબ્બલપામોક્ષા મત્ત અણગારા મહાલય સીહનિક્કીલિય
અહાસુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ,
ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસંતિ વદિત્તા નમસિત્તા
વહૂણિ ચઉત્થ જાવ વિહરતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है । परन्तु इसमें जो पारणा
होता है वह विगय वर्जित रुक्ष अन्न का होता है । इसी तरह की चौथी
परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि
का घोया हुआ घोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए
रुक्ष अन्न याने आयविल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય
વગરના રુક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે
પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના આસામણુમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી
પ્લાવિત થયેલા રુક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયવિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारा 'सुड्ढाग' क्षुल्लक= लघुक, सिंहनिष्क्रीडित-चतस्रभिः परिषाटीभिर्भुक्त तप कर्म द्वाभ्या सवत्सराभ्या- मष्टाविंशत्याऽहोरात्रैः 'अहासुत्त' यथासूत्र सूत्रोक्तविधिना, यावद्=इह यावत् करणाद् ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोपशमिक्रमागानतिक्रमेण वा 'आणाए' आज्ञया=भगवदाज्ञया प्रवचनानुसारेण आराध्य, यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवो पागच्छन्ति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते=स्तुवन्ति, नमस्यति=प्रणमन्ति, वन्दित्वा नत्वा एवमप्रदन्

हे भदन्त ! वयमिच्छामः खलु 'महालय' महत् सिंहनिष्क्रीडित तपः कर्म कर्तुम्, ततः स्थविराज्ञया महाबलप्रमुखा सप्तानगाराः महासिंहनिष्क्रीडित तपः

'तएण ते महव्वलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा) वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगर (सुड्ढाग सीह निक्कीलिय) लघु सिंह निष्क्रीडित तप कर्म को (दोहि सवच्छरेहि अट्ठाविसाए अहोरेत्तेहि) दो वर्ष २८ दिन रात तक (अहासुत्त) यथा सूत्र (जाव आणाए आ राहेत्ता) यावत् भगवान की इस तप को करने की जैसी आज्ञा है उस के अनुसार आराधित कर (जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) जहाँ स्थाविर भगवान थे वहाँ गये। वहाँ जाकर उन्होंने भगवत स्थ विरो को वदन की-उन्हे नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर वे इस प्रकार बोले (इच्छामो ण भते ! महालय सीहनिक्कीलिय

'तएण ते महव्वलपामोक्खा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्या०भा० 'ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा' महाबल प्रमुख सात अनगरों (सुड्ढाग सीहनिक्कीलिय) लघुसिंह निष्क्रीडित तप कर्म करीने (दोहि सवच्छरेहि अट्ठाविसाए अहोरेत्तेहि) ये वर्ष २८ दिवस रात सुधी (अहासुत्त) सूत्रोक्त विधि मुज्ज्ण (जाव आणाए आराहेत्ता) तेभज तेने आराधवानी भगवाननी जेवी आज्ञा छे, ते मुज्ज्ण आराधीने

(जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी)

ज्या स्थविर भगवान हुता त्या गया त्या जधने तेभजे भगवत स्थ विरोनी वदना करी अने तेभने नमस्कार ज्या वदना अने नमस्कार करीने तेज्या जे विनती करता आ प्रभाजे कछु

પારણકે-અણેપકૃત=અસ્તિગ્ધ=રૂક્ષ પારયન્તિ । એવ ચતુર્થ્યપિ પરિપાટી નવર પારણકે આચામામ્બેન પારયન્તિ=રૂક્ષાન્નમચિત્તજલપ્લાવિત કૃત્વા તેન પારણ કુર્વન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

મૂલમ-તણ તે મહબ્બલપામોક્ષા સત્ત અણગારા खुड्ढागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्मं दोहि संवच्छेरेहिं अट्टावीसाए अहो-रत्तेहिं अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवन्ते वदति नमंसति वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी-इच्छामो णं भते । महालय सीहनिक्कीलिय तहेव जहा खुड्ढागनवरचोत्तीसइमाओ नियत्तए षगाए परिवाडोए कालो एगेणंसवच्छेरेणं छहि मासेहि अट्टा-रसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । सव्वपि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहि दोहि य मासेहि वारसेहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । तएणं ते मહબ્બલપામોક્ષા સત્ત અણગારા મહાલય સીહનિક્કીલિય અહાસુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવંતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદંતિ નમસતિ વદિત્તા નમસિત્તા વહૂણિ ચઉત્થ જાવ વિહરતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है । परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है । इसी तरह की चौथी परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि का घोया हुआ घोवान पानी में अर्थात् अचिस जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयविल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના ઓસામણુમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયવિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્પં તે મહાવલપ્રમુખાઃ સપ્તઅંગારા 'સુઙ્ગા' લઘુક-
લઘુક, સિંહનિષ્ક્રીડિત-ચતસ્રભિઃ પરિપાટીભિર્યુક્ત તપ કર્મ દ્વાબ્યા મવત્તરાભ્યા-
મષ્ટાવિંશત્યાઽહોરાત્રૈઃ 'અહાસુત્ત' યથાસૂત્ર સૂત્રોક્તવિધિના, યાવદ્=ઈહ યાવત્
કરણાદ્ જ્ઞાનાદિમોક્ષમાર્ગાનતિક્રમેણ ક્ષાયોપશમિક્રમાગ્રાનતિક્રમેણ વા 'આણાણ' આજ્ઞયા=મગવદાજ્ઞયા પ્રવચનાનુસારેણ આરાધ્ય, યત્રૈવ સ્થવિરા મગવન્તસ્તત્રૈરો
પાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરાન્ મગવતો વન્દતે=સ્તુવન્તિ, નમસ્યતિ=મણમન્તિ,
વન્દિત્વા નત્વા એવમગદન્

હે મદન્ત ! વ્યમિચ્છામઃ સ્વલ્પં 'મહાલય' મહત્ સિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ
કર્તુમ્, તત્ સ્થવિરાજ્ઞયા મહાવલપ્રમુખા સપ્તઅંગારાઃ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ

'તણ તે મહવલપામોક્ત્તા' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ) ડસકે ધાદ (તે મહવલપામોક્ત્તા સત્ત અણગારા) વે
મહાવલ પ્રમુખ સાતો હી અનગાર (સુઙ્ગા મોહ નિકીલિય) લઘુ સિંહ
નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કો (દોહિં સવચ્છરેહિં અઢાવિસાણ અહોરત્તેહિં)
દો વર્ષ ૨૮ દિન રાત તક (અહાસુત્ત) યથા સૂત્ર (જાવ આણાણ આ
રાહેત્તા) યાવત્ ભગવાન કી હસ તપ કો કરને કી જેસી આજ્ઞા હૈ
હસ કે અનુસાર આરાધિત કર (જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ
ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી)
જહાં સ્થાવિર ભગવાન થે વહા ગયે । વહા જાકર ઉન્હોને ભગવત સ્થ
વિરો કો વદન કી-ઉન્હેં નમસ્કાર કિયા વદના નમસ્કાર કરકે
ફિર વે હસ પ્રકાર બોલે (હચ્છામો ણ મતે ! મહાલય સીહનિકીલિય

'તણ તે મહવલપામોક્ત્તા' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યારબાદ 'તે મહવલપામોક્ત્તા સત્ત અણગારા' મહાવલ
પ્રમુખ સાતે અનગારો (સુઙ્ગા મોહનિકીલિય) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ
કરીને (દોહિં સવચ્છરેહિં અઢાવિસાણ અહોરત્તેહિં) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી
(અહાસુત્ત) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (જાવ આણાણ આરાહેત્તા) તેમજ તેને
આરાધવાની ભગવાનની જેવી આજ્ઞા છે, તે મુજબ આરાધીને

(જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ
નમસતિ, વદિત્તા, નમસિત્તા એવ વયાસી)

જ્યા સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જીને તેમણે ભગવત સ્થ
વિરોની વદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને
તેઓ એ વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું

કર્મ કર્તુ પ્રવૃત્તાઃ, 'તદેવ' તથૈય=મહાર્મિહનિષ્ક્રીડિતમપિ તદ્વદેવ ભવતિ-‘જહા
 સુદ્ધાગ’ યથા ક્ષુલ્લક=લઘુર્મિહનિષ્ક્રીડિત, નવર વિશેષસ્તુ ‘ચોત્તીસદ્માઓ
 નિયત્તણ’ ચતુર્વિંશત્તમાદ્ નિર્વર્તતે-અયમર્થઃ-ચતુર્થમક્તમેકોપવાસરૂપમાદિતઃ
 કૃત્વાનુલોમગત્યા પૂર્વોક્ત-ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિતતપઃ કરમત્ પોઢશોપવાસરૂપ
 ચતુર્વિંશત્તમપર્યન્ત કરોતિ પુનસ્તસ્માન્નિર્વર્તતે=પ્રત્યાવર્તતે, તદ્ યદા-ચતુર્વિંશત્તમ

તદેવ જહા સુદ્ધાગ નવર ચોત્તીસદ્માઓ નિયત્તણ ણગાણ પરિવાદિણ
 કાલો ણગેણ સચચ્છરેણ ઊર્હિ માસેર્હિ અદ્ધારસદ્ધિય અહોરત્તેર્હિ ય
 સમપ્પેદ્) હે ભદત ! હમ લોગ મહાન્ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ
 કરના ચાહતે હે । હસકે ઘાદ વે સ્થવિર ભગવાન્ કી આજ્ઞા સે મહાબલ
 પ્રમુખ સાતોં હી અનગાર વ્રહ્ત્ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરને મેં
 પ્રવૃત્ત હો ગયે ।

યહ મહાર્મિહનિષ્ક્રીડિત તપ મી ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કી
 હી તરહ હોતા હૈ-પરન્તુ હસમે હતની વિશેષતા રહતી હૈ કિ હસ તપ
 કી કરને વાલા સયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ મક્ત કી સર્વ પ્રથમ
 કરતા હૈ ફિરવહ અનુલોમ ગતિ સે પૂર્વોક્ત ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ
 કર્મ કી આરાધિત કરને કે ક્રમ કી તરહ સોલહ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્વિં
 શત્તમ પર્યન્ત હસ તપ કી કરતા હૈ ।

ઘાદ મેં વહા સે લૌટના હૈ-લૌટને કા ક્રમ હસ પ્રકાર હૈ-જબ યહ

(ઇચ્છામો ણ મતે ! મહાલય સીહનિક્કીલિય તદેવ જહા સુદ્ધાગ નવર
 ચોત્તીસદ્માઓ નિયત્તણ ણગાણ પરિવાદિણ કાલો ણગેણ સચચ્છરેણ ઊર્હિ માસેર્હિ
 અદ્ધારસદ્ધિય અહોરત્તેર્હિ ય સમપ્પેદ્)

હે ભદત ! અમે મહાન સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરવા ઇચ્છી
 એ છીએ ત્યાર બાદ સ્થવિર ભગવાનની આજ્ઞાથી મહાબલપ્રમુખ સાતે અન
 ગારો મહાન સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મના પ્રવૃત્ત થઈ ગયા

મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિ પણ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની
 વિધિની જેમજ હોય છે પણ તેના ડરતા તેમા એટલી વિશેષતા હોય છે
 કે આ તપને આચરનાર સયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ લક્ષતને સૌ પહેલા
 આચરે છે ત્યાર બાદ તે અનુલોમ ગતિથી પૂર્વે વર્ણવેલા ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રી
 ડિત તપ કર્મના આરાધન કરમની જેમજ સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્વિંશત્તમ
 મુખી આ તપને કરે છે

કરણાનન્તર પ્રતિલોમગત્યા પ્રત્યાવૃત્તિકાલે મધ્યે પશ્ચદશોપવાસરૂપ દ્વાત્રિંશ ભક્ત
કૃત્વા પુનઃ પોડશોપવાસરૂપ ચતુર્વિંશત્તમ કરોતિ, તતશ્ચતુર્દશોપવાસરૂપ ત્રિંશત્તમ
કૃત્વા દ્વાત્રિંશ કરોતિ એવ પૂર્વોક્તક્રમેણ તતશ્ચતુર્થભક્તપર્યન્ત કરોતિ । इद
મહાસિંહનિષ્ક્રીડિતસ્ય તપસઃ પ્રથમપરિપાટી યન્ત્રત્-

૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪	૧૫	૧૬	૧૭	૧૮	૧૯	૨૦	૨૧	૨૨	૨૩	૨૪	૨૫	૨૬	૨૭	૨૮	૨૯	૩૦	૩૧	૩૨	૩૩	૩૪	૩૫	૩૬	૩૭	૩૮	૩૯	૪૦	૪૧	૪૨	૪૩	૪૪	૪૫	૪૬	૪૭	૪૮	૪૯	૫૦	૫૧	૫૨	૫૩	૫૪	૫૫	૫૬	૫૭	૫૮	૫૯	૬૦	૬૧	૬૨	૬૩	૬૪	૬૫	૬૬	૬૭	૬૮	૬૯	૭૦	૭૧	૭૨	૭૩	૭૪	૭૫	૭૬	૭૭	૭૮	૭૯	૮૦	૮૧	૮૨	૮૩	૮૪	૮૫	૮૬	૮૭	૮૮	૮૯	૯૦	૯૧	૯૨	૯૩	૯૪	૯૫	૯૬	૯૭	૯૮	૯૯	૧૦૦
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

૩મેઝ્ઙ્ઙા ઉપવાસના નિર્ણેશિતાઃ । એવમેવ દ્વિતીયતૃતીય ચતુર્થપરિપાટીના
પ્રત્યેક યન્ત્ર ચો યમ્ ।

इह महासिंह निष्क्रीडितेतपस्येरुस्यां परिपाट्यामनुलोमप्रतिलोमतश्च'तुर्थ-
पष्ठाष्टमादि त्रिंशत्तमपर्यन्तानि चत्वारि चत्वारि 'द्वात्रिंशानि त्रीणि, ' द्वे चतु
ર્વિंशત્તમે ' भवन्ति ।

સોલહ ઉપવાસ કર ચુકતા હૈ-તપ પ્રતિલોમ ગતિ સે પ્રત્યાવૃત્તિ કાલ
મે ઘીચ મે યહ ૧૫ ઉપવાસરૂપ દ્વાત્રિંશત્ ભક્ત કરતા હૈ-પુનઃ સોલહ
ઉપવાસરૂપ ચતુર્વિંશત્તમ ભક્ત કરતા હૈ । ફિર ચતુર્દશ ઉપવાસ રૂપ
ત્રીસ ભક્ત કરતા હૈ-इन्हें कर के फिर १५ उपवास करता है । इस
પ્રકાર પૂર્વોક્ત ક્રમ સે યહ ચતુર્થભક્ત પર્યન્ત તપસ્યા કરતા હૈ । इस
महासिंह निष्क्रीडित तप का प्रथम परिपाटीयत्र उपर संस्कृत टीका
में दिया है । इस प्रकार समझ लेवें ।

यत्र मे जो अरु दिये हैवे अक उपवासों के हैं । इसी तरह द्वितीय
तृतीय और चतुर्थ परिपाटीयों के प्रत्येक के अक जानना चाहिये । इस
महासिंह निष्क्रीडित तप मे एक परिपाटी मे अनुलोम प्रतिलोम की

ત્યાર બાદ તે ત્યાથી પાછો ફરે એ પાછા ફરવાનો ક્રમ આ પ્રમાણે
છે બધાએ તે સોળ ઉપવાસો કરી લે છે ત્યારે પ્રતિલોમ ગતિથી પ્રત્યાવૃત્તિ
કાળમા વચ્ચે પદર ઉપવાસ ૩૫ દ્વાત્રિંશત ભક્ત કરે છે ફરીતે ત્રીણ ઉપવાસ
૩૫ ચતુર્વિંશત્તમ ભક્ત કરે છે ત્યાર બાદ ચતુર્દશ ઉપવાસ ૩૫ ત્રીશ ભક્ત
કરે છે અને ત્યાર પછી પદર ઉપવાસ કરે છે આ રીતે પૂર્વો-ત ક્રમથી તે
ચતુર્થ ભક્ત પર્યન્ત તપસ્યા કરે છે મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપનુ પ્રથમ પરિ-
પાટી યત્ર ઉપર સંસ્કૃત ટીકામા બતાવ્યા પ્રમાણે મમથ લેવુ

આ અકો ઉપવાસો ના છે આ પ્રમાણે જ દરેક બીજી, ત્રીજી અને
ચોથી પરિપાટીઓના અકો બાણવા બેઘએ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપમા એક
પરિપાટિમા અનુલોમ પ્રતિલોમની અપેક્ષા ચતુર્થ, પાંચ, અષ્ટમ, વગેરેથી

इह प्रत्येकपरिपाटया अनुलोमप्रतिलोमत सर्वाणि तपोदिनानि सकलनया ४९७सप्तनवत्यधिकानि चत्वारिंशतानि, तथा पारणदिनानि-६१एकाधिक षष्ठिम-
ख्यकानि भवन्ति, एषामुभयेषामाकलनेन यायान् कालो भवति, त प्रदर्शयितु-
माह 'एगाए परिवाडीए' इत्यादि। एरुस्याः परिपाट्याः कालः-एकेन सवत्सरेण
पश्चिमार्गसैरष्टादशभिश्चाहोरात्रै 'समप्तेइ' समाप्यते मण्णो भवति। 'सव्वपि'
सम्मपि अशेषमपि चतस्रभिः परिपाटीभिर्गुक्तमित्यर्थ, 'सोहनिक्कीलिय' सिंह
निष्क्रीडित तपः- पइभिर्विपेर्द्धाभ्या च मासाभ्या द्वादशभिश्चाहोरात्रै पारण
दिनैः 'समप्तेइ' समाप्यते= सपूर्ण भवति-यथामूत्र यायदाराधित भवतीत्यर्थः

अपेक्षा चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, आदि से लेकर त्रिंशत्तम-१४ उपवासो-तक
सय उपवास चार चार हो जाते हैं। अर्थात् प्रथम भक्त ४, चतुर्थ
भक्त ४ पष्ठ भक्त ४ अष्टम भक्त ४, इत्यादि १४ उपवासों तक जानना
चाहिये। १५ उपवास ३, और १६ उपवास २ हो जाते हैं।

यहां प्रत्येक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम विधि के अनुसार
समस्त तपस्या के दिनों की संख्या मिलाकर ४९७ होती है। पारणा के
दिनों की संख्या ६१। इन दोनों के सकलन से जितना समय होता
है-सूत्रकार उसे "एगाए परिवाडी ए" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते
हैं-वे कहते हैं कि एक परिपाटी का काल एक वर्ष ६ मास और १८ रात
दिनों में समाप्त होता है। (सव्व वि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहिं दोहिं
मासेहिं बारसहिय अहोरेत्ते हिं य समप्तेइ) और समस्त यह सिंह नि
ष्क्रीडित तप ७४ वर्ष दो मास एवं १२ दिन रात में समाप्त होता है।

भाડીને ત્રિંશતમ-૧૪ ઉપવાસો-સુધી બધા ઉપવાસો ચારચાર હોય છે એટલે
કે પ્રથમ ભક્ત ૪ ચતુર્થ ભક્ત ૪, પષ્ઠ ભક્ત ૪, અષ્ટમ ભક્ત ૪, વગેરે
૧૪ ઉપવાસો સુધી બધાંજુ બેઠાં ૧૫ ઉપવાસ ૩ અને ૧૬ ઉપવાસ ૨
થઈ જાય છે

આ પ્રમાણે અહીં દરેકે દરેક પરિપાટિમા અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિ
મુજબ તપસ્યાના બધા દિવસોની ગણતરી કરીએ તો ૪૯૭ થાય છે પારણના
દિવસોની સંખ્યા ૬૧ હોય છે આ બંનેના સરવાળાના જેટલા દિવસો થાય
છે સૂત્રકાર 'એગાએ પરિવાડીએ' વગેરે પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે સૂત્રકાર
કહે છે કે એક પરિપાટીનો કાળ એક વર્ષ ૬ માસ અને અઠાર દિવસોમા
પૂરો થાય છે (સવ્વ વિ સીહનિક્કીલિય છહિં વાસેહિં દોહિં માસેહિ વારસહિય
અહોરત્તેહિય સમપ્પેહ અને આ સિંહ નિષ્ક્રીયડિત તપને સપૂર્ણ પછે પૂરૂ થયામા
છ વર્ષ બે માસ અને બાર દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે

ततस्तदनन्तर खलु ते महाभलप्रमुखाः सप्तानगाराः ' महालय ' महत्, सिंह
निष्क्रीडित यथामूत्र-सूत्रानतिक्रमेण यावद् आङ्गया आराध्य यत्रैव स्थविरा
भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति,
वन्दित्वा नत्वा बहूनि गृहविधानि चतुर्थ यावद् चतुर्थपञ्चाष्टमादीनि तपासि
कुर्वन्तो विहरन्ति. ॥ सू० ७ ॥

मूलम्-तएणं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं
ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खदओ नवर थेरे आपुच्छित्ता
चारुपव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव दोमासियाए सलेहणाए
सवीस भत्तसय चउरासीइं वाससयसहस्साइ सामण्णपरियागं
पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउयं
पालइत्ता जयते विमाणे देवत्ताए उववव्वा । तत्थ णं अत्थेग-
इयाणं देवाणं वत्तसि सागरोवमाइ ठिई तत्थणं महव्वल-

(तएण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सिंह निष्क्री-
लिय अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति)
इस प्रकार वे महाबल प्रमुख सातो ही अनगार इम महासिंह निष्क्री-
डित तप को यथा सूत्र यावत् आराधित करके जहा स्थविर भगवत थे
बहा आये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नम-
सित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरति) वहा आकर उन्होंने ने स्थविर
भगवतो को वदना की नमस्कार किया-और वदना नमस्कार करके
फिर वे चतुर्थ पष्ठ अष्टमादि तपो को करते हुए विहार करने लगे ॥सू० ७॥

(तएण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सिंहनिष्क्रीलिय अहा
सुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति)

आ रीते यथासूत्र अने यावत् यथाविधि महासिंहनिष्क्रीडित तपने आरा-
धीने महाबल प्रमुख साते अनगारे अथा स्थविर भगवत इता त्या आवा

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता, बहूणि
चउत्थ जाव विहरति)

त्या जेधने तेभजे स्थविर भगवतो ने वदन अने नमस्कार क्यो, अने
वदन तेभजे नमस्कार करीने तेज्यो त्यार भाद यतुर्थ पष्ठ अष्टम वगेरे तपोने

वज्राणं छण्हं देवाणं देसूणाइं वत्तीसं सागरोवमाईं ठिईं मह-
व्वलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं वत्तीस सागरोवमाइं ठिईं ॥सू०८॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते महाव्वलपमुत्ताः सप्तानगा
रास्तेनोदारेण इहलोकाद्याशसारहितत्वेन प्रधानेन तपः कर्मणा ‘सुक्का’ शुष्काः
शुष्कशरीराः रक्तमांसशोषणात् ‘शुक्खा’ शुभ्रक्षिताः गृह्यतपस्वित्वात् । ‘जहा
खदओ’ यथा स्कन्दकः स्कन्दकनामकोऽनगरः भगवतीमृत्रे द्वतीयशतके प्रथ
मोद्देशके वर्णितस्तथा सजाता इत्यर्थः, नवर-एतावान् विशेषः—‘थेरे’ स्थविरान्
स्कन्दको महावीरमापृष्टवान् एते तु स्थविरानित्यर्थः आपृच्छय ‘चारुपव्वय’

‘तएण ते महाव्वलपामोक्खा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते महाव्वल पामोक्खा सत्त अणगारा)
वे महाव्वल प्रमुख सातो ही अनगर (तेण ओरालेण सुक्का सुक्खा जहा
खदओ) भगवती सूत्र के द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में
वर्णित स्कन्दक मुनि की तरह उसे इहलोक परलोक आदि की आशसा
से रहित होने के कारण प्रधान तप से शुष्क शरीर एवं शुभ्रक्षित
(भूख युक्त) हो गये । (नवर थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वय दुरुहत्ति)
दुरुहत्ता जाव दो मासियाए सलेहणाए सवीस भत्तसय चउरासीइ
वाससयसहस्साइ सामण्णपरियाग पाउणति) किन्तु स्कन्दक मुनि की
अपेक्षा इन सातों अनगरों में यह विशेषता हुई कि स्कन्दक मुनि ने
महावीर प्रभु से आज्ञा ली और इन्होंने ने स्थविर भगवतो से आज्ञा ली

‘तएण ते महाव्वल पामोक्खा सत्त अणगारा’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थान्नाइ (महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा) भडाअल
प्रभुअ साते अनगारे (तेण ओरालेण सुक्का सुक्खा जहा खदओ) भगवती
सूत्रना भीअ शतनकना पडेला उद्देशकमा वर्णित स्कन्दक मुनिनी जेम तेओ
धड्डोअक अने भरलोअक वगेरेनी अरासा (धम्म) रहित होवा अदल प्रधान
तपथी शुष्क शरीर अने शुभ्रक्षित (भूय्या) भय गया

(नवर थेरे आपुच्छित्ता चारु पव्वय दुरुहत्ति, दुरुहत्ता जाव दो मासियाए
सलेहणाए सवीस भत्तसय च उरासीइ वाससय सहस्साइ सामण्णपरियागं पाउणति)

स्कन्दक मुनिओ न्यारे भगवान् भडावीर पासे आज्ञा भेगवी डती त्थारे
ओ साते अनगारेओ भगवत् स्थविरा पासेथी आज्ञा भेगवी स्कन्दमुनी करता
ओभना विशेष आठवु व वधारे न्णवु न्नेओ आ प्रभाओ साते अनगारे

चारुपर्वत चारुनामक पर्वत 'दुरुहति' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, 'दुरुहिता' दूरस्थ
=आरुह्य यावद् पृथिवीशिलापट्टक प्रमार्ज्य पादपोषगमन स्वीकृत्य द्विमासिभ्यास-
लेखनया सर्वशक्तिः भक्तशत 'चउरासीइ वाससयसहसाइ' चतुरशीति वर्षशतसह-
स्राणि=चतुरशीतिलक्षवर्षाणि, आमण्यपर्याय=चारित्रपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा
चतुरशीति पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि सर्वायुः पालयित्वा जयन्ते
निमाने देवतयोपपन्नाः=देवत्वेनोपपातमुत्पत्तिं प्राप्ताः ।

तत्र खलु अस्त्येरुक्तानां देवानां द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थितिः । तत्र
खलु महाबलवर्जानां पण्णां देवानां देशानां द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः ।
महाबलस्य देवस्य प्रतिपूर्णानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्जाता ॥ सू० ८ ॥

इस तरह ये सानों ही अनगर भगवत स्थविरो से आज्ञा लेकर चारु
नाम के पर्वत पर पहुँचे-वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने वहाँ के शिलापट्टक
की प्रमार्जना की-बाद में पादपोषगमन सधारा धारण कर लिया । दो
मास की सलेखना से १२० भक्तों का छेदन कर उन्होंने ने ८४ लाख वर्ष
तक आमण्य पर्याय का पालक किया ।

इस तरह अपनी ८४ लाख पूर्व की समस्त आयु समाप्त कर अन्त
में देह का परित्याग कर वे पाँच अनुत्तर विमान के अन्दर जयन्त
विमान में (तत्थण अत्ये गइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई
तत्थण महव्वलवज्जाण उण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमा
इ ठिई महव्वलस्स देवस्स पडिपुन्नाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई) वहाँ
कितने क देवों की वत्तीस सागर प्रमाण स्थिति है सो महाबल को
छोड़कर छह देवों की स्थिति कुछ कम वत्तीस सागर की हुई और
महाबल की स्थिति पूर्ण वत्तीस सागर की हुई । " सूत्र ९ "

लगवत स्थविरेऽनी आज्ञा प्राप्त करीने चारु नामे पर्वत उपर पहुँच्य त्या
पट्टेऽग्निने तेजोऽग्ने पादपोषगमन सधारे धारण कर्ये

आ प्रमाणे पोताने ८४ लाख पूर्वसु संपूर्ण आयुष्य पूर करीने
अन्ते देह छोडीने तेजो पाथ अनुत्तर विमानमा जयन्त नामना विमानमा
देवता पर्यायधी जन्म पाभ्या

(तत्थण अत्येगइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई-तत्थण महव्वल
वज्जाण उण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई)

त्यना जेटलाइ देवोनी भत्रीय सागर प्रमाण स्थिति ७ महाबलने
णाइ जस्ता भीज ७ देवोनी स्थिति भत्रीय सागर प्रमाणमा थोडी जोडी
थइ अने महाबलनी स्थिति पूरी भत्रीय सागर जेटली थइ ॥ सूत्र " ८ "

मूलम्-तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देव-
लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं
चइत्ता इहेव जंबूद्वीवे द्वीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवसेसु राय-
कुलेसु पत्तेय पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायायासी, त जहा पडिबुद्धी
इक्खागराया, चदच्छाए अगराया, सखे कासिराया, रुप्पी कुणा-
लाहीवई, अदीणसत्तुकुराया, जितसत्तु पच्चालाहिवई॥ सू०९ ॥

टीका-‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर ते महाबलवज्याः पडपि देवास्त
स्माद् देवलोकान् जयन्ताद् विमानान् । ‘आउक्खएण’ आयुः क्षयेण-देवसम्बन्धि
आयुषर्मदलिकनिर्जरणेन, देवसम्बन्धायुः क्षयेण ‘भवक्खएण’ भवक्षयेण भवनि-
बन्धनभूतकर्मणा गत्यादीना निर्जरण ‘ठिइक्खएणं’ स्थितिक्षयेण=देवसम्बन्धि
स्थितिक्षयेण तेनानन्तर चय=देवशरीर त्यक्त्वा इहेव जम्बुद्वीपे नाम्नि द्वीपे

‘तएण ते महब्बलवज्जा छप्पियदेवा’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते महब्बल वज्जिया) महाबल के
सिवाय वे (छप्पिय देवा) छोटे देव (ताओ देवलोगाओ आउक्खएण
भवक्खएण ठिइक्खएण) उस देवलोक से जयन्त विमान से-देवलोक
सबन्धी आयु कर्म के दलिको की निर्जना हो जाने से अर्थात् देव पर्याय
सबन्धी आयु के क्षय हो जाने से भव के कारण भूत गत्यादि कों की
निर्जना हो जाने से स्थिति के क्षय हो जाने से (अणतर) उसी समय
(चय चइत्ता) देव शरीर को छोड़कर (इहेव जंबूद्वीवे द्वीवे भारहे
वासे) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में, भारतवर्ष में-भरत क्षेत्र में-

‘तएण ते महब्बल वज्जा छप्पिय देवा’ इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यागनाह (ते महब्बल वज्जिया) महाबल सिवाय ते
(छप्पियदेवा) छोटे देव (ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण)
ते देवलोकना जयन्त विमानानी देवलोक सबन्धी आयु कर्मना दलिकानी
निर्जना यथ जवाथी ओटले ते देव पर्याय सबन्धी आयुष्य क्षय यथाथी भवना
कारण भूत गतिवज्जेनेनी निर्जना यथ जवाथी, स्थितिना क्षय होवाथी
(अणतर) ते समयेज (चयचइत्ता) देव शरीरने छोडीने (इहेव जंबूद्वीवे द्वीवे
भारहे वासे) जंबूद्वीप नामना ओज द्वीपमा-भारत वर्षमा-भरत क्षेत्रमा

(मध्यजम्बूद्वीपे) भारते वर्षे भरत-क्षेत्रे, विशुद्धपितृमातृवशेषु राजकुलेषु प्रत्येक २ कुमारतया ' पञ्चायाया' होत्या प्रत्युत्पन्ना अभूवन् तद्यथा-१. प्रतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराज प्रथमो जीव प्रतिबुद्धि नामकः कोशलदेशाधिपतिः । यत्रदेशे-अयोध्यानगरी २ चन्द्रच्छायाः-अद्विराजः द्वितीयो-वरणि जीवः चन्द्रच्छायनामाङ्ग देशाधिपतिः यत्र चम्पानगरी ३ शङ्ख काशिराजः तृतीयोऽभिचन्द्रजीवः शङ्खनामा-काशिदेशाधिपतिः यत्र वाराणसी नगरी । ४ रुक्मी-कुणालाधिपतिः चतुर्थः पूरण जीवः-रुक्मीनामकः कुणालदेशाधिपतिः यत्र श्रावस्ती नगरी । ५ अदीनशत्रुः-कुरुराजः, पञ्चमो वसु जीवोऽदीनशत्रुनामकः कुरुदेशाधिपतिः । यत्र

(विसुद्धपितृमातृवशेषु) विशुद्ध माता पिता के वश वाले राज कुलों में (पत्तय २) पृथक् २ (कुमारत्ताण पञ्चायायासी) पुत्र रूप से उत्पन्न हुए । (तजहा) उनमें (पडिबुद्धी इक्ष्वागराया चन्द्रच्छाया अगराया सखे कासि राया, रुप्पी कुणालाहिर्वह, अदीणसत्त कुरु राया, जितमत्तू पञ्चालाहिर्वह) प्रथम जो अचल का जीव या वह कोशल देश का अधिपति हुआ, जिस में अयोध्या नगरी है-इसका नाम वहा प्रतिबुद्ध हुआ । दूसरा जिसका नाम धरण या वह चन्द्र छाया नाम का अङ्ग देश का अधिपति हुआ । इस अग देश में चपा नगरी है । तीसरा जो अभिचन्द्र का जीव या वह काशी देश का राजा हुआ । वहा, इसका नाम शङ्ख हुआ । हम काशी देश में बनारस नाम की नगरी है । चौथा जो पूरण का जीव या वह कुणाल देश का अधिपति हुआ उसका वहा नाम रुक्मी या । इस कुणाल देश में श्रावस्ती नगरी है । पाचवा जो

“विसुद्धपितृमातृवशेषु” विसुद्ध मातापिताना वशवाता राजकुलोभा (पत्तय २) शुद्ध शुद्ध (कुमारत्ताण पञ्चायायासी) पुत्र रूपे जन्म पाव्या (तजहा) आ गंधाभा

(पडिबुद्ध इक्ष्वागराया चन्द्रच्छाया अगराया सखे कासिराया रुप्पी कुणालाहिर्वह अदीणसत्त कुरुराया, जितमत्तू पञ्चालाहिर्वह)

पडिबुद्धो अचलनो एव कोशल देशनो अधिपति थयो कोशल देशनं पाट नगर अयोध्या नगरी छतु अचलनो एव त्या प्रतिबुद्ध नामे पडायो

गीतो धरण अग देशनो अधिपति थयो तेनु नाम चन्द्रछाय छतु श्रील अक्षिचन्द्रनो एव काशी देशनो राज थयो ते त्या शङ्ख नामे प्रसिद्धि पाव्यो आ काशी देशमा बनारसनामे नगरी छे यथा पूरणनो एव कुणाल देशनो अधिपति थयो त्या तेनु नाम रुक्मी छतु आ कुणालदेशमा

દેશે-હસ્તિનાગપુરમ્ । ૨. જિનશત્રુ પાશ્ચાલધિપતિઃ, પટ્ટો વૈશ્રવણ જીવો જિત શત્રુનામકઃ પાશ્ચાલદેશધિપતિઃ, યત્રદેશે કામ્પિલ્ય નગરમ્ । એવ પટ્ટપિ પૃથક્ ૨ સ્થાનેષુ રાજાનો જાતાઃ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

મૂલમ્-તર્ણાં સે મહાબલે દેવે તીર્હિ ણાણેર્હિ સમગ્ગે ઉચ્ચ-
દ્ધાણદ્ધિસુ ગહેસુ સોમાસુ દિસાસુ વિતિમિરાસુ વિસુદ્ધાસુ
જહ્વણસુ સડણેસુ પયાહિણાણુકૂલસિ ભૂમિસર્પિસિ મારુયસિ
પવાયસિ નિપ્પજ્જસસ્સમેઙ્ગીયસિ કાલંસિ પમુદ્ધપક્કીલિણસુ
જળવણસુ અદ્ધરત્તકાલસમયસિ અસ્સિણીગક્ખત્તેણ જોગમુવા
ગણ જે સે હેમતાણ ચડત્થે માસે અદ્ધમે પક્ખે ફગ્ગુણસુદ્ધે
તસ્સ ણં ફગ્ગુણસુદ્ધસ્સચડત્થિ પક્ખેણ જયતાઓ વિમાણાઓ
વત્તીસ સાગરોવમદ્ધિર્ઘ્યાઓ અણતર ચય ચહિત્તા ઇહેવ જબ્બહીવે
દીવે ભારહે વાસે મિહિલાણ રાયહાણીણ કુભગસ્સ રત્તો પમા-
વર્ઘ્ણ દેવીણ કુચ્છિસિ આહારવક્કંતીણ સરીરવક્કતીણ ભવવક્ક
તીણ ગબ્ભત્તાણ વક્કતે તરયણિ ચ ણં ચોદ્ધસમહાસુમિણાવન્નઓ
ભત્તારકહણ સુમિણપાઢગપુચ્છા જાવ વિહરહ્ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

વસુ કા જીવ થા વહ કુરુ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-વહા ઉસકા નામ
અદીન શત્રુ થા । કુરુ દેશ મેં હસ્તિનાગ પુર હૈ । તથા છઠા જો વૈશ્રવણ
કા જીવ થા પાશ્ચાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-હસકા વહા નામ જિત
શત્રુ પડા થા । હસ મે કપિલા નામ કી નગરી હૈ ।

હસ તરહ ચે છઠો પૃથક્ ૨ સ્થાનો મે રાજા હુણ । સૂત્ર “ ૯ ”

શ્રાવસ્તી નગરી છે પાચમો વસુનો એવ કુરુદેશનો અધિપતિ થયો તેનુનામ
અદીન શત્રુ હતું કુરુ દેશમા હસ્તિનાપુર નગર છે તેમજ છઠો વૈશ્રવણનો
એવ પાચાલ દેશનો અધિપતિ થયો તેનું નામ જિત શત્રુ હતું પાચલ દેશમા
કપિલા નામે નગરી છે

આ પ્રમાણે તેઆ છઠે જુદા જુદા દેશોમા રાજ્ય પદે સુશોભિત
થયા ॥ સૂત્ર “ ૯ ” ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स महाबलो देवस्त्रिभिर्ज्ञानैः
‘समग्गे’ समग्रं सयुक्तः, ‘उच्चट्ठाणट्ठिएसु’ उच्चस्थानं स्थितेषु ग्रहेषु सूर्या-
दिषु सौम्यासु दिग्दाहाद्युत्पातरहितासु ‘दिसासु’=दिक्षु वितिमिरासु तीर्थकर-
गर्भावासप्रभावाद् व्यपगतान्धकारासु विशुद्धासु=ज्ञावातरजः कणादि रहितत्वेन
निर्मलासु ‘जइएसु’ जापिकेषु राजदीना विजयमूचकेषु ‘सउणेसु’ शकुनेषु
काकरुतोदिषु ‘पर्याइणाणुकूलसि’ प्रदक्षिणानुकूले प्रदक्षिणावर्तत्वात् प्रदक्षिणः,
शुभावह सुरभिशीतमन्दत्वादनुकूलश्च तस्मिन् ‘भूमिसप्पिसि’ भूमिसर्पिणी=
भूमौ प्रसरणशीले मारुते वायौ, ‘पवायसि’ प्रवाते वातु प्रवृत्ते ‘निप्पन्नसस्स
मेइणीयसि’ निष्पन्नसस्यमेदिनीके निष्पन्नसस्या मेदिनी भूमिर्यस्मिन् तथाभूते
काले ‘पमुडयपक्खीलिएसु’ प्रमुदितप्रक्रीडितेषु जनपदेषु अर्धरात्रिकालसमये
अश्विनीनक्षत्रेण ‘जोग’ योग चन्द्रयोगम्, उपागतेन प्राप्तेन, यः स=प्रसिद्ध ‘हे
मत्ताण’ हेमन्तानां मार्गशीर्षादि फाल्गुनान्तानां शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थी
मासः, अष्टमं पक्षः कृष्णादि मासस्य शास्त्रसंयमत्पादष्टमत्वं पक्षस्येति भावः
फाल्गुनशुद्धः=फाल्गुनस्य शुद्धः शुक्लः द्वितीयपक्षोऽस्तीत्यर्थः । तस्य फाल्गुन-
शुद्धस्य ‘चउत्थिपक्खे’ चउर्थीपक्षे फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्त-
स्याः पक्षः पार्श्वोऽर्धरात्रिरिति भावः, तत्र-‘ण’ इति याक्पालङ्कारे, जयन्ताद्
विमानाद् द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितकादनन्तरं चय=देवसम्बन्धिं शरीरं त्यक्त्वा-
इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते चर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलाया राजधान्या

‘तएण से महब्बले’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद (से महब्बले देवे) वह महाबल वा
जीव देव (तीर्हि णाणेहि समग्गे) मति ज्ञान श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान
इन तीन ज्ञानों का धारी हो कर (अणतर) उन छहों के बाद अपनी
स्थिति पूर्ण कर (जयताओ विमाणाओ) उम जयत विमान से (चइत्ता)
चल कर (इहेव जम्बूद्वीवे दीवे) इसी जम्बू द्वीप नाम के द्वीप में (भार

‘तएण से महब्बले’ इत्यादि

टीकार्थ-‘तएण’ त्पारभाह “ से महब्बले देवे ” देव महाबलने। एव
“ तीर्हि णाणेहि समग्गे ” मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान आ त्रहे
ज्ञानेने धारण करनार अर्धने “ अणतर ” ते छहोना पछी पोतानी स्थिति
पूरी करीने “ जयताओ विमाणाओ ” व्यत विमानथी “ चइत्ता ” आदीने
“ इहेव जम्बूद्वीवे दीवे ” एव जम्बू द्वीप नामना आण द्वीपमा (भारदे वासे)

‘कुम्भगस्त’ कुम्भरुस्य कुम्भरुनामकस्य राज्ञः प्रभावत्याः=प्रभावतीनाम्न्या देव्यः ‘कुच्छिमि’ कुक्षौ ‘आहारवक्कतीए’ आहारव्युत्क्रान्त्या=आहारपरिवर्तनेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः, ‘सरीरवक्कतीए’ शरीरव्युत्क्रान्त्या=देवशरीरपरिवर्तनपूर्वकमनुष्यशरीरग्रहणेनेत्यर्थः ‘भववक्कतीए’ भवव्युत्क्रान्त्या=देवभवविधाय मनुष्यभरग्रहणेन ‘गव्वमत्ताए वक्कते’ गर्भवत्या व्युत्क्रान्तः=गर्भरूपेण समुत्पन्नः । तस्या रजन्यां च खलु चतुर्दश महास्रमाः प्रभायती देव्या दृष्ट ।

हे वासे) भरत क्षेत्र मे (मिहिलाए रायहाणीण) मिथिला राजधानी में (कुम्भगस्त रन्नो प्रभायण देवीण कुच्छिसि) कुम्भक राजाकी प्रभावती देवी की कुक्षि मे (आहार वक्कतीण) आहार के परिवर्तन से-मनुष्योचित आहार के ग्रहण से, (सरीरवक्कतीण) शरीर की व्युत्क्रान्ति से देव शरीर के परिवर्तन पूर्वक मनुष्य शरीर के ग्रहण से, (भव वक्कतीए) भव की व्युत्क्रान्ति से देव भव को छोड़कर मनुष्य भव के ग्रहण से (गव्वमत्ताए वक्कते) गर्भरूप से उत्पन्न हुए ।

जब यह प्रभावती की कुक्षी मे गर्भ रूप से उत्पन्न हुए तब (गहेसु उच्चट्टाणट्टिणसु) सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे । (दिसासु सोमासु) चारों दिशाये दिग्दाह आदि उपद्रवों से रहित थी (वित्तिमिरासु विसुद्धासु) तीर्थंकर के गर्भावाम के प्रभाव से वे अन्धकार रहित उन गई थीं एवं अज्ञावात रजकण आदि से रहित हो कर निर्मल हो गई थी ।

भरत क्षेत्रमा “मिहिलाण रायहाणीए” मिथिला राजधानीमा कुम्भगस्तरन्नो प्रभावइए देवीए कुच्छिसि ” कुलक राजनी प्रभावती देवीना उदरमा “आहार वक्कतीए ” आहाराना परिवर्तनथी मानवेयित आहारना अड्डथी “ सरीर वक्कतीए ” शरीरनी व्युत्क्रान्तिथी ओट्ठे के देव शरीरना परिवर्तन तेमज्ज मनुष्य शरीरना अड्डथी “ भववक्कतीए ” लवनी व्युत्क्रान्तिथी देव लवने त्यल्लने मनुष्य लवने अड्डथु करवानी आपेक्षायी “ गव्वमत्ताए वक्कते ” गर्भ रूपे जन्म पाव्या

न्यारे तेज्जा प्रभावतीना उदरमा गर्भरूपे अवतयो त्थारे “ गहेसु उच्चट्टाण ट्टिणसु ” सूर्य वगेरे अड्डा उच्च स्थाने छत्ता दिसासु सोमासु थारे दिशाज्जा दिग्दाह वगेरे उपद्रवो वजरनी छत्ती “ वित्तिमिरासु विसुद्धासु ” तीर्थंकर ना गर्भवासना प्रभावथी दिशाज्जा प्रकाश अकृत तेमज्ज अनिद रजकण वगेरेथी रहित अर्थने स्वच्छ भनी गर्भ

ઉસ સમય (સરુણે સુ જહણસુ) કાક આદિ પક્ષી, રાજા આદિ કે વિજય સૂચક શબ્દ ચોલ રહે થે । (મારુયસિ) હવા મી (પયાણુ કૂલસિ) પ્રદક્ષિણાવર્ત હો કર (પવાયસિ) વહ રહી થી । સુરમી ઓર શીતલ મન્દ હોને કે કારણ વહ અનુકૂલ થી । (ભૂમિ સપ્પિસિ) ભૂમિ કા સ્પર્શ વહ કર રહી થી । (કાલસિ) વહ સમય એસા થા કિ જિસમે (નિપ્પન્નસસમેહ્ણીયસિ) નિપ્પન્ન સસ્ય સે મેદિની આચ્છાદિતહરી ભરી ઘની હુઈ થી (જણવણ સુ) જન પદ મી (પમુહયપન્કીલીણસુ) હર્ષ સે હર્ષિત ઘને હુણ થે ઓર વિવિધ પ્રકાર કી ક્રીડાઓ મેં રત થે- (અદ્વરત્તકાલસમયસિ) યહ સમય અર્ધ રાત્રિ કા થા । (અસ્સિણી ણક્કવત્તેણ જોગમુવગણ) હસ મેં અશ્વિની નક્ષત્ર કા ચન્દ્ર કે સાથ યોગ હો રહા થા (જે સે હેમતાણ ચરુત્થે માસે અદ્દમે પન્થે ફગ્ગુણ સુદ્ધે) યહ અર્ધ રાત્રિ કા સમય ફાલગુન માસ કે શુક્લ પક્ષ કા થા । યહ માસ હેમત કાલ કે માસો મેં ચૌથા માસ તથા ૮ વાં પક્ષ હૈ । (તસ્સ ણ ફગ્ગુણસુદ્ધસસ ચરુત્થિ પન્થે ણ) એસી ઉસ ફાલ્ગુન શુક્લ ચૌથ કી અર્ધરાત્રિ કે સમય મેં વે મહાયલ દેવ અપની ૩૨ સાગર કી સ્થિતિ પૂર્ણ કરકે ઉસ જયત નામક વિમાન સે ચવ કર પ્રભાવતી દેવી

તે વખતે (સરુણેસુ જહણસુ) કાગડા વગેરે પક્ષીઓ રાજા વગેરેના માટે વિજયને સૂચવનારા શબ્દો ઉચ્ચારી રહ્યા હતા । (મારુયસિ) પવન પણ (પયાણુકૂલસિ) પ્રદક્ષિણાવર્ત થઈને (પવાયસી) વાતો હતો । શીતળ મન્દ અને સુગંધ યુક્ત પવન અનુકૂળ લાગતો હતો । ‘ ભૂમિસપ્પિસિ ’ તે પૃથ્વીનો સ્પર્શ કરતા વાતો હતો હતો । ‘ કાલસિ ’ આવો સુખદ મગ્ધ હતો કે જેમા (નિપ્પન્નસસમેહ્ણિયસિ) નિપ્પન્ન ધાનથી મેહિની ‘ પૃથ્વી ’ લીલાગમ આવ રહ્યું થી ઠકાઈ રહી હતી । ‘ જણવણસુ ’ જનપદ પણ ‘ પમુહય પક્ષીલીણસુ ’ હર્ષમા તરખોળ થઈ રહ્યું હતું અને બતબતની ક્રીડાઓમા મસ્ત હતું । ‘ અદ્વરત્તકાલસમયસિ ’ અડધી રાતનો વખત હતો । ‘ અસ્સિણીણસ્પત્તેણ જોગમુવગણ ’ અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો । ‘ જે સે હે મતાણ ચરુત્થે માસે અદ્દમે પન્થે ફગ્ગુણસુદ્ધે ’ ફાગણ મહિના નો શુક્લ પક્ષ ચાલતો હતો । આ મહિનો હેમત ઢાળના મહિનામા ચોથો મહિનો તેમજ આઠમો પક્ષ છે । ‘ તસ્સ ણ ફગ્ગુણસુદ્ધસસ ચરુત્થિ પન્થે ણ ’ એવી ફાગણ શુક્લ ચોથના અડધી રાતના વખતે મહાબલ દેવ પોતાની બત્રીશ સાગરની સ્થિતિ પૂરી કરીને ત ન્યત નામક વિમાનમાથી ચીનીને પ્રભાવતી દેવીના ગર્ભમા

वर्णकः= तेषां स्वप्नानां वर्णनं वाच्यं तच्चान्यत्र सविस्तरं द्रष्टव्यम् तेषां नामानि केवलं प्रोच्यन्ते—गज-वृषभ-सिंह-ए०भी-पुष्पमाला-चन्द्र-सूर्य-ध्वज-पूर्णकलश-पद्मसर-समुद्र-देवविमान-रत्नराशिग्रह इति । भर्तृकथनम् स्वप्नवृत्तं भर्त्रे निवेदयतीत्यर्थः । स्वप्नपाठकपृच्छा=स्वप्नफलवाचकानां समाहृत्य भर्त्रा कुम्भकचरणेन स्वप्नफलपृच्छा कृतेत्यर्थः । यावत्-स्वप्नपाठकैः स्वप्नफलं निवेदितं, तत्सर्वं प्रथमाध्ययने धारिणीदेव्या अधिकारे यथा कथितं तथैव बान्यं विशेषस्तु-धारिण्या स्वप्ने गज एव दृष्टः, प्रभावत्या तु चतुर्दश स्वप्ना इति । एव च तैरुक्तम्—

के गर्भे में आये । (त रयणिं च ण चौदस महासुमिणा वन्नओ) उस रात्रि में उस प्रभावतीदेवी ने १४ महास्वप्न देखे । इन महास्वप्नों का सविस्तर वर्णन अन्यत्र से जानना चाहिये हम यहाँ उन के नाम निर्देश करते हैं जो इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र देवविमान, रत्नराशि और अग्नि । इन स्वप्नों को देखकर प्रभावती ने अपने पति कुम्भक राजा से कहा राजा ने उसी समय स्वप्नपाठकों को बुलाया-और उनसे इन स्वप्नों के फल को पूछा ।

उन्होंने ने इन स्वप्नों का क्या फल है यह बात राजा को कही । यह सब विषय इसी के प्रथम अध्ययन में धारिणी देवी के अधिकार में जिस प्रकार से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से यहाँ भी जानना चाहिये । धारिणी देवी ने स्वप्न में केवल एक हाथी ही देखा था । प्रभावती ने तो चौदह महास्वप्न देखे । अन्त में उन स्वप्न पाठकों ने कहा-राजन ! प्रभावती देवी ने जो ये चौदह सुन्दर स्वप्ने देखे हैं-उन

स्थितं थया 'त रयणिं चण चौदसमहासुमिणा वन्नओ' ते रात्रिमा प्रभावती देवीये १४ स्वप्नो जेया आ अथा भडास्वप्नो विषेनु सविस्तर वर्णनं जिशासुओये नीजेथी जाली लेवु जेधओ प्रभावती देवीये अद्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र, देवविमान रत्नराशि अने अग्नि आटली वस्तुओ स्वप्नमा जेधं छती आ स्वप्नोने जेया आठ प्रभावतीये पोताना पति कुम्भक राजने स्वप्न विषे कछु अने तेमणे तरत ज स्वप्नपाठकेने जोलाव्या अने तेमने आ स्वप्नोना इण विषे पूछथु

स्वप्न पाठकेओ आ स्वप्नोनु इण थु थये तेनी अधी विगत राजने कही सलजावी शांताध्ययन ना प्रथम अध्ययनमा धारिणिदेवीना प्रसंगमा आ विषे सविस्तर वर्णन्यु छे अही पणु ते मुज्जण ज समञ्ज लेवु जेधओ स्वप्नमा धारिणी देवीये इकत ओक छथी ज जेयो छतो पण प्रभावतीये तो चौदह भडा स्वप्नो जेया छता स्वप्ननु ।

હે રાજન્ ! પ્રભાવતી દેવ્યા ચતુર્દશ શોભનાઃ સ્વપ્ના અવલોકિતાઃ । તત્પ્રભાવાચ્ચ
ક્રવર્તી વા તીર્થકુરો વા ભવિષ્યતિ । સ્વપ્નફલ શ્રુત્વા સા પ્રભાવતી ગર્ભ સુખસુ-
ખેન વહમાના વિહરતિ=આસ્તે સ્મ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

મૂલમ્-તણં તીસે પમાવઈણ દેવીણ તિણહ માસાણં વહુ-
પહિપુત્તાણં ઇમેયારૂવે ડોહલે પાડબ્ભૂ-ધન્નાઓ પં તાઓ
અમ્મયાઓ જાઓ પં જલથલયમાસુરપ્પમ્ભૂણં દસદ્ધવન્નેણં
મહેણં અત્થુપચ્ચત્થુયંસિ સયણિજ્ઞંસિ સન્નિસન્નાઓ સણિ-
વન્નાઓ ય વિહરંતિ, એગ ચ મહં સિરીદામગડ પાડલમહ્ણિય
ચપય અસોગ પુન્નાગ નાગ મરુયગદમણગઅણોજ્જકોજ્જયપરં
પરમસુહફાસદરિસણિજ્જ મહયાગંધદ્ધણિં મુયંતં અગ્ધાયમા-
નીઓ ડોહલ વિણેતિ ।

તણં તીસે પ્રભાવતીણ દેવીણ ઇમેયારૂવં ડોહલં પાડ-
બ્ભૂય પાસિત્તા અહાસન્નિહિયા વાણમતરા દેવા ચિપ્પામેવ જલ-
થલયં જાવ દસદ્ધવન્નમહ્ણ કુંભગ્ગસો ય મારગ્ગસો ય કુંભગ-
સ્સ રન્નો ભવણસિ સાહરંતિ, એગં ચ પં મહં સિરિદામગડ જાવ
મુયત જાવ ઉવર્ણેતિ, તણ સા પ્રભાવતી દેવી જલથલય જાવ
મલ્લેણં જાવ ડોહલ વિણેઈ, તણં સા પ્રભાવતી દેવી પસત્થ-

કે પ્રભાવ સે ઇસ કે યા તો કોઈ તીર્થકર જન્મ લેગા યા કોઈ ચક્રવર્તી ।
ઇસ પ્રકાર સ્વપ્નોં કા ફલ સુનકર પ્રભાવતી વહી પ્રસન્ન હુઈ ઓર ઉસ
ને આનદ કે સાંચ ગર્ભ કો ધારણ કરતે હુઈ સુખપૂર્વક સમય કો
વ્યતીત કિયા । સૂત્ર “ ૧૦ ”

‘ હે રાજન્ ! પ્રભાવતી દેવીએ ચૌદ ઉત્તમ સ્વપ્નોં જોયા છે, તેના પ્રભાવ
થી એમના ઉ રથી ઓતો તીર્થ કર જન્મલેશે કા કોઈ ચક્રવર્તી ! ’ આ પ્રભાવે
સ્વપ્ન રૂપ સાક્ષીને પ્રભાવતી ખૂબજ પ્રસન્ન થઈ અને સુખેથી ગર્ભ ધ રણ
કરી ને સમય પપાર કરવા લાગી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ડોહલા જાવ વિહરફ, તણે સા પમાવઈ દેવી નવળહ માસાળ
 વહુપડિપુણાણં અહુટમાણ યરત્તિદિયાણ જે સે હેમંતાણં પઢમ
 માસે દોચ્ચે પક્ષે મગસિરસુઢે તસ્સણ એકારસીએ પુઞ્વરતા-
 વરત્તં અસ્સિણી નક્ષત્રેણ જોગમુવાગણેણ ઉચ્ચટ્ટાણાદિએસુ
 ગહેસુ પમુડયપક્ષીલિએસુ જણવએસુ આરોગારોગં એકૂળવીસ-
 ઇમ તિત્થયર પયાયા ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા—‘તણે તીસે’ ‘ઇત્યાદિ—તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તસ્યા પ્રમાવત્યા
 દેવ્યા સ્ત્રિપુ માસેષુ વહુપતિપૂર્ણેષુ=અશેષતઃ સમ્પૂર્ણેષુ સત્ત્વ અયમેતદ્ભૂપ’ દોહદઃ
 ગર્ભસદ્ભાવજનિતાભિભાષઃ પ્રાદુર્ભૂત.—ધન્યાઃ સ્વલુ તા અગ્નિ=પુત્રમાતરઃ યા સ્વલુ
 ‘જલથલયમાસુરપ્પભૂણ’ ‘જલસ્થલજમાસુરપ્પભૂ—તેન જલેપુ સ્થલેપુચ યજ્ઞાત
 માસુર=વિકસિત, પ્રભૂત પ્રચુર, તેન ‘દસદ્ધવન્નેણ’ દશાર્થર્થેણ પચ્ચવર્ણયુક્તેન
 માલ્યેન માલ્યેભ્યો દિત માલ્ય=પુણ્ણજાત, તેન ‘અત્થુયપચ્ચત્થુયસિ’ આસ્નૃત
 પ્રત્યાસ્નૃતે ક્રમશઃ ઉપર્યુપરિ સમાચ્છાદિતે શયનીયે=શય્યાયા ‘સન્નિસન્નાઓ’
 સન્નિપણ્ણા=સન્નિપિટ્ટા ‘સન્નિવન્નાઓ’ સન્નિપણ્ણાઃ સુપ્પાથ વિહરન્તિ સુલેન

‘તણે તીસે પમાવઈ’ ‘ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણે) હસ કે વાદ (તીસે પમાવઈ દેવી) ઉસ પ્રમાવતી
 દેવી કે જવ (તિણ્હ માસાણ વહુપડિપુણાણ) તીન માસ અચ્છી તરહ
 સે પૂર્ણ હો ચુકે—તન (હમેયારૂવે દોહલે પાઠભૂણ) ઉસે હસ પ્રકાર કા
 દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ—(ધન્નાઓ ન તાઓ અમ્મયાઓ) વે માતાઈ ધન્ય
 હૈં (જાઓ ન જલ થલય માસુરપ્પભૂણ દસદ્ધવન્ને ણં મલ્લે ન) જો
 જલ મે એવ સ્થલ મેં ઉત્પન્ન હુએ વિકસિત પચ્ચવર્ણોં કે પ્રભૂતપુણોં સે
 (અત્થુય પચ્ચત્થુયસિ સયણિજ્જસિ સન્નિસન્નાઓ મન્નિવન્નાઓ ય

‘તણે તીસે પમાવઈ ।’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણે) ત્યારણાદ (તીસે પ્રમાવઈ દેવી) પ્રમાવતીદેવીને જ્યારે
 (તિણ્હ માસાણ વહુપડિપુણાણ) ત્રણ મહિના સારી રીતે પસાર થઇ ચુક્યા
 ત્યારે (હમેયારૂવે દોહલે પાઠભૂણ) તેને આ પ્રમાણે દોહલે ઉત્પન્ન થયુ કે
 (ધન્નાઓ ન તાઓ અમ્મયાઓ) તે માતા ઓ ધન્ય છે (જાઓ ન જલ થલય
 માસુરપ્પભૂણ દસદ્ધવન્નેણ મલ્લેણ) જેઓ જળ અને સ્થળમાં ઉદ્ભવેલા
 અને વિકાસ પામેલા પાચરગના પુણ્ય પ્રમાણમાં એકલા કરેલા પુણ્યથી

તિષ્ઠન્તિ તા અમ્વા વન્યા, ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્વ । એ-રુચ મહત્ વિગલ 'સિરિ
દામગડ' શ્રીદામકાણ્ડ શ્રીદામ્ના=શોભાયુક્તમાલાના કાણ્ડ સમૂહ 'પાટલમલ્લિ
યચપય-અસોગ-પુત્રાગ-નાગમરુચગ-દમણગ-અણોજ્જ કોજ્જયપર' પાટલા-
મલ્લિકા-ચમ્પિકા-ડશોક-પુનાગનાગ - મરુચક-દમનકા-ડનવઘકુજ્જ પ્રચુર,
પાટલાદ્યા પુષ્પજાતયઃ- પાટલપુષ્પ, 'ગુલાબ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ મલ્લિકાપુષ્પ=ચમ્પ-
કપુષ્પમ્, ડશોકપુષ્પમ્, પુન્નાગયુષ્પમ્, નાગપુષ્પ, મરુચક પત્રજાતિ વિશેષ,
દમનકપુષ્પમ્, અનવઘ - સુન્દરઃ, કુજ્જક. શતપત્રિકા વિશેષ, એતાનિ પ્રચુરાણિ
યત્ર તત્ તથા, 'પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ' પરમસુખસ્પર્શદર્શનીય પરમસુખદઃ
સ્પર્શોયસ્ય તદ્ તત્ત્વ દર્શનીય દૃષ્ટિસુખદ ચેતિ 'મહયા ગધદ્વાણિ' મહાસુરભિગ
ન્ધદ્વાણિ મહાસુરભિગન્ધશુણ તૃપ્તિહેતુ પુદ્ગલસમૂહ મુશ્વત્ પ્રસારયદ્ તદ્ આજિગ્રન્ત્યઃ

વિહરતિ) હસ તરહ્ એક એક કરકે ક્રમશઃ પુષ્પોં કે અનેક સ્વરો સે
સમાચ્છાદિત હુઈ શય્યા પર બેઠતી હૈં સુખ સે શયન કરતી હૈં । (એગ
ચ મહ સિરીદામગડ પાટલમલ્લિયચપયઅસોગપુત્રાગનાગમરુચગદમ-
ણગઅણોજ્જકોજ્જયપર પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ મહયાગધદ્વાણિમુ-
યત આધાયમાણીઓ દોહલ વિણેતિ) ઓર અઢિતીય શ્રીદામકાંડ
કો-શોભાયુક્ત માલાઓ કે સમૂહ કો કિ જિસમેં પાટલ (ગુલાબ)
મલ્લિકા (મોઘરા) ચપક, અશોક, પુત્રાગ, નાગ, મરુવા, દમનક એવ
સુન્દર કુજ્જક કે પુષ્પોં કા પ્રાચુર્ય હૈ, જિસકા સ્પર્શ પરમ સુખ કારક
હૈ ઓર જો દૃષ્ટિ કો આનદ્ દાયક હૈ તથા તૃપ્તિ કારક મહાસુરભિ ગધ
શુણ ચાલે પુદ્ગલોં કો જો ફેલા રહા હૈ સૂઘતી હુઈ અપને ગર્ભ મનોરથ

(અત્યુચ પશ્ચત્યુચસિ સયણિજ્જસિ સન્નિવન્નાઓ સન્નિવન્નાઓ ય વિહરતિ) આ
રીતે અનુક્રમે પુષ્પોનાં ધરથી ઢકાએલી એવી શય્યા (પયારી) ઉપર એમે છે
અને સુખેથી શયન કરે છે

(એગ ચ મહ સિરીદામગડ પાટલમલ્લિયચપયઅસોગપુત્રાગનાગમરુચ-
ગદમણગઅણોજ્જકોજ્જ પર પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ મહયા ગધદ્વાણિમુયતઆધાય
માણીઓ દોહલ વિણેતિ)

એમા પાટલ (ગુલાબ), મલ્લિકા, ચપક, અશોક, પુત્રાગ, નાગ, મરુવા,
દમનક અને સુદર કુજ્જકના પુષ્પો પુષ્કળ પ્રમાણમા છે, અર્થાત્ એનો અત્યંત
સુખદ છે અને જે દૃષ્ટિને આનંદ આપનાર છે અને તૃપ્તકરનાર મહાસુગંધ
શુભવાળા પુદ્ગલોને જે ફેલાવી રહ્યો છે-એવા અઢિતીય (સર્વોત્તમ)

તેન તથાપિતેન શ્રીદામકાળદેન પ્રાણેન્દ્રિય તર્પયન્ત્યઃ દોહદ = ગર્ભસદ્ભાવજનિત મનોરથ 'પિણેતિ' વિનયન્તિ=પૂર્યન્તિ । તા એવ જનન્યો જગતિ ભાગ્યશાલિન્યઃ પ્રશસનીયા ધન્યાશ્ચ સન્તીત્યર્થઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ- તસ્યાઃ પ્રમાત્યા દેન્યા ઇમેતદ્વેપ દોહદ પ્રાદુર્ભૂત દૃષ્ટા યથા સનિહિતાઃ સમીપસ્થિતા વાનવ્યન્તરાદેયાઃ ક્ષિપ્રમેવ જલસ્થલીત્પન્નાનિ યાવદ્દશાર્ધવર્ણાનિ = પશ્ચવર્ણાનિ માલ્યાનિ = પુષ્પાણિ કુમ્ભાગ્રશ્ચ કુમ્ભ- પરિમાણતઃ, ભારાગ્રશ્ચ ભારપરિમાણતઃ કુમ્ભકસ્ય રાજો ભવને સહરન્તિ= સમાનયન્તિ. । એક સ્વલુ મહત્ શ્રીદામકાળદ યાવદ્ મુશ્ચત્ ઉપનયન્તિ-સમીપે સમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલુ સા પ્રભાવતી દેવીગલસ્થલજ યાવત્- યાત્ચઽન્દેન-

કી પૂર્તિ કરતી હું (બે માતાએ ધન્ય હું જેસાં સયધ યજ્ઞ પર લગા છેનાં વાહિયે) (તણ) હસકે વાર (તીસે પ્રભાવતી દેવી) હમેયારુવ દોહલ પાડુભૂત પાસિત્તા અહાસનિહિયા વાળમતરા દેવા ક્ષિપ્પામેવ જલથલય૦ જાવ દસદ્વવન્નમલ્લ કુમ્ભગસોય ભારગસોય કુમ્ભગસ રન્નો મવળસિ સાહરતિ) ઉસ પ્રભાવતી દેવીકે હસ પ્રકારકે દોહલેકો ઉત્પન્ન હુઆ દેલ કર કે સમીપ મેં રહે હુણ વાનવ્યન્તર દેવોને શીઘ્ર હી જલ મેં ઔર સ્થલ મેં ઉત્પન્ન પચ્ચવર્ણ કે પુષ્પો કો કુમ્ભ પરિમાણ મેં ઔર ભારપરિમાણ મેં કુમ્ભક રાજા કે ભવન પર લાકર રલ દિયા ।

(ણગ ચ ણ મહ સિરિદામગઢ જાવ મુચત જાવ ઉવળેતિ) ઔર સાથ મેં એક વડા ભારી શ્રીદામકાળદ મી કિ જિસમે 'પાટલ ગુલાબ

શ્રી હામકાડ (સુહરમાળાઓના સમૂહ) ની સુવાસ અનુભવતી પોતાના ગર્ભ મનોરથ (દોહદ) ની પૂર્તિ કરે છે (ખરે ખર તે માતાઓ ધન્ય છે) (તણ) ત્યાર બાદ

(તીસે પ્રભાવતી દેવી હમેયારુવે દોહલ પાડુભૂત પાસિત્તા અહાસનિહિયા વાળમતરા દેવા ક્ષિપ્પામેવ જલથલય૦ જાવ દસદ્વવન્નમલ્લ કુમ્ભગસોય ભારગસોય કુમ્ભગસ રન્નો મવળસિ સાહરતિ)

પ્રભાવતી દેવીના આ પ્રભાણેના દોહલાને ઉત્પન્ન થયેલા બાણીને પાસે રહેનારા વાનવ્ય તર દેવોએ તરત જ જળ અને સ્થળમા ઉત્પન્ન થયેલા પાચરગના પુષ્પોને કુલ પરિમાણમા અને ભાર પરિમાણમા કુલકે રાખના લવન ઉપર લાવીને મૂકી દીધા

(ણગ ચ ણ મહ સિરિદામગઢ જાવ મુચત જાવ ઉવળેતિ) પાટલ વળેરે ના પુષ્પો જેમા ચૂથેલા છે, અને જે નેત્રોને માટે સુખદ અને સ્પર્શ પશુ જેનો આનંદ હાયક છે, અને જેમાથી ચોથેર સુગંધી પ્રસરી રહી છે એવો

‘ जल थल इत्यनन्तर ’ भासुरप्पभूषण दसद्वन्नेण ’ इति सग्रह, मात्येन=पुष्प जातेन यावत्-अत्र यावच्छब्देन- ‘ अत्युयपञ्चत्थुयसि ’ इत्यारभ्य ‘ अग्याय माणीओ ’ इतिपर्यन्तस्य ग्रहणम्, दोहद विनयति=पूरयति । ततः खलु सा प्रभावती देवी प्रशस्तदोहदा यावद् सपूर्ण दोहदा समानित दोहदा विहरति ।

अथ भगवतस्तस्य तीर्थरसस्य सकल जगत्कल्याणकरजन्मकदाऽभवदिति जिज्ञासायामाह-‘ तएण ’ इत्यादि ।

ततस्तदन्तर खलु सा प्रभावती देवी नवसु मासेषु बहुपतिपूणेषु=सर्वाथा सपूर्णेषु तदनन्तरम् अर्गष्टमेसु रात्रिदिवेषु व्यतीतेषु योऽसौ हेमन्तानो हेमन्त ऋतु सप्तकाना मार्गशीर्षदिकालगुनान्ताना प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्षः मार्गशीर्ष शुद्धः मार्गशीर्षमासस्य शुद्ध शुक्लः पक्षो वर्तते, तस्य- खलु एकादश्या तिथौ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये मध्यरात्रे अश्विनी नक्षत्रे योग=चन्द्रयोगप्रागते-प्राप्ते

आदिकेपुष्पगुथे हुए हैं और जो नेत्र को सुख देने वाले एव सुखस्पर्श है जिसमें से सुगंध ही सुगंध चारों ओर फैल रही है रानिके पास लाकर उपस्थित किया । (तएण सा प्रभावती देवी जल थलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) इसके अनन्तर उस प्रभावती देवीने जल थलके विकसित पच वर्ण वाले प्रभूत पुष्पों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठकर शयन कर श्रीदामकाण्ड को कि जो पाटल (गुलाब) आदि के पुष्पों से गुथा हुआ था यावत् गंध को फैला रहा या सूत्र कर अपने दोहले की प्रति की । (तएण सा प्रभावती देवी पसत्य दोहला जाव विहरइ, तएण सा प्रभावंई देवी नवण्ह मामाण बहु पडिपुण्णाण अद्वट्टमाण य रत्ति दियाण जे से हेमत्ताण पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त० आस्सिणीनक्खत्तेण जोगमुवागएण उच्चट्ठाणट्टिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिणसु जणवणसु आरोग्गारोग्ग एगू

એક મોટો ભાડે શ્રીદામકાંડ પણ વાનવ્યતરે ત્યા લાવ્યા (તएण सा प्रभावती देवी जलथलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) त्थार आह प्रभावती देवीએ જળના વિકસિત પાચરંગના પુષ્પોથી સમાચ્છાદિત શય્યા ઉપર બેસી ને, શયન કરીને, પાટલ વગેરેના પુષ્પોથી ચૂથાયેલા સુવાસિત શ્રીદામકાંડને સુધીને પોતાના દોહડની પૂર્તિ કરી

(તएण सा प्रभावती देवी पसत्यदोहला विहरइ, तएण सा प्रभावंई देवी नवण्ह मामाण बहुपडिपुण्णात अद्वट्टमाणयरादियाण जे से हेमताण पढमेमासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वत्तावरत्त आस्सिणीनक्खत्तेण जोग

સતિ ઉચ્ચસ્થાનસ્થિતેષુ ઉચ્ચરાગિગ તેષુ ગ્રહેષુ સૂર્યાદિષુ પ્રમુદિત પ્રકીર્ણિતેષુ દૃષ્ટેષુ
ક્રીડાત્મસુ ચ જનપદેષુ=દેશેષુ સત્સુ આરોગ્યારોગરહિતા અનાયાધા પ્રસવેદના
રહિતા સતીત્યર્થઃ આરોગ્ય = અનાયાધ લક્ષ્યર્જિત ઇન્દ્રોર્વિશતિતમ તીર્થકર
પ્રજાતા=પ્રજનિયતી ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ળવીસદ્મ તિત્થયર પયાયા) હસ પ્રકાર પ્રજાસ્ત દોહલા વાલી વહ પ્રમા
ચતી દેવી કિ જિસ કા દોહલા અચ્છો તરહ સે પૂર્ણ હો ચુકા હૈં ઓર
જિસ દોહલે કો રાજા આદિજનો ને મી સન્માનિત કિયા હૈ આનન્દ પૂર્વ
ક રહને લગી । અથ સૂત્રકાર ગ્રહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ ભગવાન્ ઉન તીર્થ
કર કો જગત્ કલ્યાણ કારક જન્મ કિસ સમય હુઆ-વે કહતે હૈં કિ
જય ગર્ભ કે નૌ માસ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે વ્યતીત હો ચુકે ઓર ઉનકે ઉપર
સાઢે સાત રાત કા સમય ઓર અધિક નિકલ ચુકા ઉસ સમય
પ્રભાવતી દેવી ને હેમન્ત કાલ કે પ્રથમ માસ માર્ગશીર્ષ શુક્લ એકાદશી
કે દિન મ ય રાત્રિ કે સમય અશ્વિની નક્ષત્ર મે, જય કિ ઉસકા યોગ
ચન્દ્રમા કે સાથ હો રહા થા ઓર સૂર્યાદિગ્રહ ઉચ્ચસ્થાન પર સ્થિત થે તથા
જનપદો મે આનન્દ કી લહરે છાપી હુઈર્થી-વિવિધ પ્રકાર કી ક્રીડાઓ
મે વે રત થને હુઈ યે યિના કિસી વાધા કે ક્લેશવર્જિત ૧૧ વૈં તીર્થકર
કો જન્મ દિયા ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

મુવાગણ ઉચ્ચદ્વાણદ્વિપસુ ગદેસુ પમુદય પવ્વકીલિપસુ જળવપસુ આરોગ્યારોગ
પ્રજાતાધર્મકથાજ્ઞાને) (

આ રીતે જેનું દોહડ સંપૂર્ણ પછે પૂર થયું છે અને રાત્ર વગેરે શુભ
જનોએ પણ જેના દોહડને સન્માનીત કર્યું છે એવી પ્રશસ્ત દોહડ વાળી
પ્રભાવતી દેવી આનંદની સાથે પેતાના દિવસો પસાર કરવા લાગી હવે
સૂત્રકાર જગત્ ના કલ્યાણ કરનારા એવા ભગવાન તીર્થ કર ને જન્મ ક્યારે
થયો તેનું વર્ણન કરતા કહે છે-કે જ્યારે ગર્ભના નવમાસ પૂરા થઈ ગયા
અને નવમાસ ઉપર માડા માત દિવસરાતનો સમય પમાર થયો ત્યારે હેમ-
તકાળના પ્રથમ મહિનાના શુક્લ પક્ષ અગિયારસના દિવસે અડધી રાતના
સમયે અશ્વિની નક્ષત્રમા-જ્યારે તે નક્ષત્રનો યોગ ચન્દ્રની સાથે થઈ રહ્યો
હતો અને સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને સ્થિત હતા અને આખા જનપદમા
આનંદના મોજાઓ પ્રમતી રહ્યા હતા અને બધા માણસો અને જાતની
રમતો અને ક્રીડાઓમા મસ્ત થઈ રહ્યા હતા ત્યારે પ્રભાવતી દેવીએ કવેશ
અને કુળ રહિત થઈને ૧૬ મા તીર્થ કર ને જન્મ આપ્યો ॥ સૂત્ર " ૧૧ " ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समयेणं अहोलोगवत्थव्वाओ
अट्ट दिसाकुमारीओ मयत्तरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए जम्मणं
सव्वं नवर मिहिलाए कुभयस्स पभावईए अभिलाओ सजो-
एव्वो जाव नन्दीसरवर दीवे महिमा, तथा णं कुभए राया
वहूहि भवणवइ४ तित्थयर जायकम्म जाव नामकरण, जम्हाणं
अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते
त होउणं णामेणं मल्ली, जहा महाव्वले नाम जाव परिवड्डिया
सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदास
परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहि ॥ सू० १२ ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि। तस्मिन् काले चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन्
समये जिन ज मसमयेऽधोलोक वास्तव्या अष्ट दिक्कुमार्य महत्तरिकाः प्रधानाः
भोगङ्करा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, सुवत्सा ५, वत्समित्रा
६, वारिषेणा ७, बलाहका ८, इत्येतन्नामिका समागताः। यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ
भगवत्तत्तीर्यकरस्य जन्मवर्णित, सर्वं तथैव विज्ञेयम्, नवर=एतान् विशेषः

‘तेणं कालेण तेण समएण’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(अहो लोगवत्थव्वाओ) अधोलोक में निवास करनेवाली (अट्ट) आठ
(दिसाकुमारीओ) दिक्कुमारिकाएँ (मयत्तरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए
जम्मणसव्वं) जिनका नाम भोगङ्करा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी
सुवत्सा, वत्समित्रा वारिषेणा और बलाहका है आई। जवूद्वीप प्रज्ञप्ति

‘तेण कालेण तेण समएण’—इत्यादि

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (अहोलोग
वत्थव्वाओ) अधोलोकमा रहनेवाली (अट्ट) आठ (दिसाकुमारीओ) दिशा
कुमारिकाओ (महयरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए जम्मण सव्व) जेभना
नामो लोगकरा लोगवती, सुभोगा, लोगमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा,
वारिषेणा, अने बलाहका—छे—त्या आवी—‘जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति’ मा लगवान

इह मिथिलाया नगर्यां कुम्भकरय राज्ञ प्रभायत्याः अभिलाषः=वर्णनं सयोक्तव्यः
=यक्तव्य', यावत् नन्दीश्वरसरे द्वीपे महिमा=उत्सवः, देवैकृतः । तदा खलु
कुम्भको राजा बहुभिर्भवनपतिवानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकैः जगोत्सवे कृते सति
तीर्थकरजातकर्म यावत् नामकरणं कृतवान् यस्मात् खलु अरमाकम् अस्यां
दारिकाया गर्भगतायां मातुर्माल्यशयनीये कुसुमशय्या विषये दोहदो विनीत =

में भगवान तीर्थकर ने जन्म का जैसा वर्णन किया गया है-वैसा ही
वर्णन यहा जानना चाहिये (नगर) परन्तु उसकी अपेक्षा इसमें इतनी
विशेषता है (महिलाएं कुम्भकर पभाइए अभिलाओ) कि यहाँ
मिथिला नगरी कुम्भक राजा और रानी प्रभावती का सम्बन्ध लिया
गया इसलिये मल्लीनाथ तीर्थकर के जन्म के वर्णन करने में इन सब
का योग लगा लेना चाहिये ।

(जाव नदीसर वरे दीवे महिमा) मल्लिनाथ तीर्थकर के जन्म का
उत्सव नदीश्वर नाम के द्वीप में देवों ने किया । (तयाणं कुम्भए राया
बहूहि भवणवइ ४ तित्थयर जाय कम्म जाव नाम करण) इसके बाद
कुम्भक राजा ने अनेक भवनपति वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक
देवों के द्वारा जन्मोत्सव किये जाने पर तीर्थकर का जातकर्म यावत्
नामकरण किया । (जम्हा ण अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्ल
सयणिज्जसि दोहळे विणीए त होउण णामेण मल्ली) नामकरण

તીર્થકર ના જન્મ વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેવું જ વર્ણન
અહીં પણ જાણવું જોઈએ (નગર) પણ તેના કરતા અહીં ખાટલી વિશેષતા
જાણવી જોઈએ કે (મહિલાएं कुम्भकर पभाइए अभिलाओ) અહીં મિથિલા
નગરી, કુભક રાજા અને રાણી પ્રભાવતીના સંબંધ વિષે વર્ણન કરવામાં આવે
છે એટલે મલ્લિનાથ તીર્થકરના જન્મ વર્ણનમાં આ બધાનો યોગ અપેક્ષિત છે

(જાવ નદીસરવરે દીવે મહિમા) દેવોએ મલ્લિનાથ તીર્થકરનો જન્મો
ત્સવ નદીશ્વર નામના દ્વીપમાં ઊજવ્યો હતો (તયાણ કુમ્ભર રાયા બહૂહિ ભવણ
વइ४ तित्थयर जाय कम्म जाव नाम करण) ઘણા ભવનપતિ વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષક
અને વૈમાનિક દેવોએ બધારે સારી પેઠે ભગવાન તીર્થકરનો જન્મોત્સવ ઊજવી
લીધો ત્યારે કુભક રાજાએ તેમનો જાતકર્મ યાવત્ નામ કરણ સસ્કાર કર્યો

(जम्हाण अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जसि दोहळे विणीए
त होउण णामेण मल्ली)

રાજાએ તેમનું નામ મલ્લિ પાડ્યું કેમકે બધારે તે ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમની
માતાને માલતીના પુષ્પોની માળાની શય્યાનું દોહડું થયું હતું અને તેમના દોહડાની

દેવૈઃ પૂરિત', તદ્ ભયતુ સ્વલુપ્ત્ય નામ્ના મલ્લિઃ માલાયૈ હિત, તત્ર સાધુ વા માલ્ય કુસુમ તદ્વતામિલાપરૂપદોહદપૂર્વકમેતસ્મા દારિકાયા જન્મસજાત તસ્મા દસ્યા નામ 'મલ્લી' ઇતિકૃતમ્ । અસ્યાઃ સ્ત્રીત્વેડપિ જિનસ્તીર્થકરોડર્હદિતિ શબ્દાના વાહુલ્યેન પુસ્ત્ત્વે પ્રવૃત્તિદર્શનાત્પુલ્લિઙ્ગશબ્દેન વ્યવહારઃ । યથા મહાવલો નામ=

મેં ઉનકા નામ મલ્લી રચા ગયા-કયો કિ રાજાને યહ વિચારા કિ જય ચે ગર્ભ મે થી તો હનકી માતાકો પુષ્પોંકી માલ્ય કી શય્યા કે વિષય મેં દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ થા-ઔર ઉસ દોહલે કી પૂર્તિ દેવો ને કી થી અતઃ યહ પુત્રી નામ સે મલ્લી રહો- ઇસી અભિપ્રાય સે રાજા ને ઉસકા નામ મલ્લિ રચા ।

“માલાયૈ હિત તત્ર સાધુ વા માલ્ય” ઇસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર માલ્ય શબ્દ કા અર્થ કુસુમ હોતા હૈ । સો જય ચે માતા કે ગર્ભ મેં થી તત્ર માતા કો ઉસ માલ્ય કે વિષય મેં અમિલાપ રૂપ દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ થા-જિસ કો પૂર્તિ દેવો ને કી થી-અતઃ ઉસ દોહદ પૂર્વક ઇસ લઙ્કી કા જન્મ હુઆ-ઇસ કારણ રાજા ને ઉસકા નામ મલ્લિ રચ દિયા । યદ્યપિ યહ સ્ત્રીરૂપ મેં થી-તૌ ઓ “જિનઃ તીર્થકર અર્હત” ઇત્યાદિ શબ્દોં કી વહુલતા સે પુલ્લિઙ્ગ મેં પ્રવૃત્ત દેખી જાતી હૈ-ઇસલિયે યહા હનકા પુલ્લિઙ્ગ શબ્દ સે વ્યવહાર તીર્થકર કી અપેક્ષા કિયા ગયા હૈ । (જહા મહાવલે નામ જાઘ પઢિવઢિયા “સા વદ્ધતી ભગવતી દિય લોચ ચુતા અળોવમ સિરીયા દાસી દાસ પરિવુઢા પરિકિન્ના પીઢમદેર્હિ ”,

પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એવી જ રાજાએ તે પુત્રીનું નામ મલ્લિય પાડ્યું હતું

“માલાયૈ હિત તત્ર સાધુવા માલ્ય” આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર માલ્ય શબ્દનો અર્થ કુસુમ (પુષ્પ) થય છે જ્યારે મલ્લિ માતાના ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમને માલ્ય ની અમિલાપા રૂપ દોહદ ઉત્પન્ન થયું હતું તે દોહદની પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એથી માલ્યના દોહદથી જન્મેલી તે પુત્રીનું નામ રાજાએ મલ્લિય પાડ્યું એ કે આ સ્ત્રી રૂપે હતી છતાં એ “જિન તીર્થકર અર્હત વગેરે શબ્દો ના બાહુલ્યથી તે પુલ્લિંગથી જ સંબોધિત કરવામાં આવે છે એટલા માટે અહીં જે પુલ્લિંગ શબ્દથી વ્યવહાર કરવામાં આવે છે તે તેમની તીર્થંતરની અપેક્ષાથી જ

(જહા મહાવલે નામ જાઘ પઢિવઢિયા ‘સા વદ્ધતી ભગવતી દિયલોચ ચુતા અળોવમસિરીયા દાસીદામપરિવુઢા પરિકિન્ના પીઢમદેર્હિ “૧”)

ભગવતી સૂત્રના મહાબલના વર્ણનની જેમ જ મલ્લિના વર્ણન વિષયથી

યથા ભગવતી સૂત્રે મહાવલો વર્ણિતસ્તથેય મહી ત્રિજ્ઞેત્યર્થઃ ।

અથ ગાથા દ્વયેન મહિ વર્ણયતિ—‘ સા વદ્ધઃ ’ ઇત્યાદિ

સા વર્ધમાના ભવતી ઘુલોરુચ્યુતા અનુપમશ્રીકા,

દાસીદાસપરિવૃતા પરિકીર્ણા પીઠમર્દ ॥ ૧ ॥

સા મહી વર્ધમાના=અનુદિન વૃદ્ધિ ગતા, ભગવતી=એશ્વર્યાદિગુણયુક્તા,

ઘુલોરુચ્યુતા દેવલોકાદનુત્તરવિમાનાચ્ચ્યુતા=અતીર્ણા, અનુપમ શ્રીકા=અદ્વિતીય

શોભાયુક્તા, દાસીદાસપરિવૃતા, પીઠમર્દઃ=યયસ્યૈઃ પરિકીર્ણા=પરિકરવતી બહુ

સહચરી યુક્તેત્યર્થઃ ।

અસિતશિરોજા સુનયના વિમ્બોષ્ટી ધવલદન્તપદ્ધતિકા ।

વરકમલકોમલાદ્વી ફુલ્લોત્પલગન્ધનિઃશ્વાસા ॥ ૨ ॥

અસિત શિરોજા=અમરવદતિશ્યામવર્ણકેશા, સુનયના = ઘુલોચના, વિમ્બોષ્ટી

=વિમ્બવદ્રક્તવર્ણોષ્ટી, ધવલદન્તપદ્ધતિકા ધવલા કુન્દમુક્તાદિવચ્છુલ્લવર્ણા દન્ત

પદ્ધતિર્દન્તશ્રેણિકા યસ્યાઃ સા તથા, વરકમલકોમલાદ્વી=વરકમલપત્ - અશુષ્ક

કમલપુષ્પપત્ કોમલાનિ મૃદુલાન્યદ્વાનિ યસ્યાઃ સા તથા, ફુલ્લોત્પલગન્ધનિ-

શ્વાસા=વિકસિતનીલકમલપદ્મગન્ધયુક્તનિ શ્વાસવતી જાતા ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

જિસ પ્રકાર ભગવતી સૂત્ર મેં મહાવલ કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ—

ઉસી પ્રકાર સે હન મટલી કા બી વર્ણન જાનના ચાહિયે—સૂત્રકાર હસી

યાન કા વર્ણન “ સા વદ્ધહ ” હસ ગાથા દ્વારા કરતે હૈ—વે કહતે હૈ કિ

વે મલ્લિ નામ કી કન્યા પ્રતિદિન વૃદ્ધિગત હો રહી થી । એશ્વર્ય આદિ

ગુણો સે યુક્ત થી । અનુત્તર વિમાન સે ચલ કર આઈ થી અનુપમ શ્રી સે

સપન્ન થી । દાસી દાસ પરિવૃત્ત થી ઓર અનેક સહચરિયો સે યુક્ત થી ।

ઉનકે બાલ ભ્રમર કે સમાન અતિ શ્યામ વર્ણ વાલે થે । લોચન બહે

સુહાવને થે । વિમ્બ જૈસે લાલ વર્ણ વાલે હનકે દોનો ઓછ થે । દાંતો

કી પદ્ધતિ કુન્દ તથા મુક્તા આદિ કે સમાન બિલકુલ શુભ્ર થી । અશુષ્ક

બાણુવુ બેઠે “ સા વદ્ધહ ” આ ગાથા વડે સૂત્રકાર એજ વાત સ્પષ્ટ કરવા

માગે છે તેઓ વર્ણન કરતા કહે છે કે મલ્લિ નામે કન્યા દિવસે દિવસે

મોટી થઈ રહી હતી તે એશ્વર્ય વગેરે ગુણોથી પૂર્ણ હતી તે અનુત્તર વિમા

નથી ચલીને આવી હતી અને અનુપમ શ્રી સપન્ન હતી તે દાસી દાસોથી

વીટળાયેલી તેમજ ઘણી સહચરીઓથી યુક્ત હતી

તેમના વાળ ભ્રમરા જેવા અત્યંત કાળા હતા તેમના નેત્રો મનોહર

હતા અને હોઠ ગિળકળ જેવા લાલ હતા તેમની દંતપદ્ધતિ કુદ તેમજ મોટી

मूलम्—तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कवाल-
भावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्कि-
ट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं सा मल्ली देसूणवाससय-
जाया ते छप्पिरायाणो विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २
विहरइ । त जहा — पडिबुद्धि जाव जियसत्तु पचालाहिवइ,
तएणं सा मल्ली कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी — तुव्वेणं देवाणुप्पिया । असोगवणियाए एगं मह
मोहणघरकरेह अणेगखभसयसन्निविट्ठ, तस्स णं मोहणघरस्स
वहुमज्झदेसभाए छ गवभघरए करेह, तेसि णं गवभघरगाणं
वहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह, तस्स णं जालघरयस्स वहुम
ज्झदेसभाए मणिपोढिय करेह, जाव पच्चप्पिणति ॥सू०१३॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली मरलीनाम्नी विदेह
रायवरकन्ना ’ विदेहराजवरकन्या=विदेहो मिथिलाजनपद’, तस्य राजा कुम्भ
कस्तस्य वराकन्या=पुत्री ‘ उम्मुक्कवालभावा ’ उन्मुक्तवालभावा, व्यपगतवाल्या
वस्था यावत् रूपेण च योऽनेन च लावण्येन च अतीव अतीवोत्कृष्टा उत्कृष्ट-

कमल पुष्प के जैसा इनका सृष्टुल अग था । विकसित नील कमल के
समान गंध युक्त इनका निश्वास था । सूत्र “ १२ ”

‘ तएण सा मल्ली ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह
राजकी कन्या वह मल्ली (उम्मुक्कवालभावा) वाल्यावस्था का परित्याग
कर (जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्टसरीरा

वगेरे जेवी ओउदम स्वयं छती ताण उमण पुष्पना जेवा तेमना सुओमण
अ गो छता तेमना निश्चाम प्रकुदित नीलकमण जेवा सुवामित छतो ॥ सूत्र “ १२ ”

‘ तएण सा मल्ली ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागभाट (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह राजकन्या
भक्ति (उम्मुक्कवालभावा) अथपणु पटावीने (जाव रूवेण जोव्वणेण य

શરીરા વાપિ જાતા ડડસીદિતિ સમ્યન્ન' = તતસ્તદનન્તર સલ્લ મા મલ્લિદેશોન વર્ષશત જાતા દેશોન = કિશ્ચિદૂન વર્ષશત જાત = ભૂત વ્યતીત યસ્યાઃ સા તથા, દેશોનશતવર્ષત્રયસ્કા સતીત્યર્થ' તાન્ પઢપિ પ્રતિબુદ્ધિયાદીન્ રાજ્ઞો વિપુલેનાવધિના = અધિજ્ઞાનેન આભોગયતી ૨ પુનઃ પુનઃ પશ્યન્તી વિહરતિ, તિષ્ઠતિ સ્મ । તદ્યથા પ્રતિબુદ્ધિ યાત્ જિતશત્રુ પાશ્ચાલ્પાધિપતિમ્ । પ્રતિબુદ્ધિ નામા દ્વિતીયકુવચ્ચો રાજા યોધ્યાધિપતિઃ, ચન્દ્રઞ્ચાપોડ્ગદેશાધિપતિ, શઙ્ખનામા કાશીજનપદાધિપતિઃ, રુક્મીનામા કુળાલ્પાધિપતિ, અદીનશત્રુનામા કુરુદેશરાજઃ, જિતશત્રુઃ પશ્ચાલ્પ

જાયા યાવિ હોત્યા) યાવત્ રૂપ, યૌવન પ્વ લાવણ્ય સે અત્યત ઉત્કૃષ્ટ શરીર યુક્ત હો ગઈ । (તણ સા મલ્લી દેસૂળ વાસસય જાયા-તે છપ્પિ રાયાળો વિપુલેળ ઓહિળા આભોળમાળી ૨ વિહરડ) ઉમ સમય ઉસ કી અવસ્થા શત વર્ષ સે કુછ કમ ગી । પ્રતિબુદ્ધિ આદિ અપને સાથ કે ઉન ૬ રાજાઓં કો ડ્યોંહી ઉનોંને અપને અવધિજ્ઞાન સે જાના તો ઉને માલૂમ હો ગયા કિ (પઢિબુદ્ધિ જાવ જિયસતુ પચાલાહિવડ) અચ્ચલ કા જીવ કોશલ દેશ કો અધિપતિ હુઆ હૈ-વહ દ્વિતીયકુવચ્ચીય હૈ ઓર ઉસકા નામ પ્રતિબુદ્ધિ હૈ ।

ધરણ કા જીવ ચન્દ્રઞ્ચાય નામ કા અગ દેશાધિપતિ હુઆ હૈ । અભિચન્દ્ર કા જીવ કાશી દેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ ઉસકા નામ હસ સમય શલ્પ હૈ । પૂરણ કા જીવ કુળાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ । ઉસકા નામ રુક્મી હૈ । વસુકા જીવ કુરુદેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ ।

હાવન્નેળ ય અતીવ ૨ ઉચ્ચિદ્ગદસરીરા જાયા યાવિ હોત્યા) યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી એકદમ ઉત્તમ શરીરવાળી થઈ ગઈ

(તણ સા મલ્લીદેસૂળ વાસ સમજાયા તે છપ્પિ રાયાળો વિપુલેળ ઓહિળો આભોળમાળી ૨ વિહરડ)

તેમની ઉંમર તે વખતે સો વર્ષ કરતા ઓછી હતી પ્રતિબુદ્ધિ વગેરે પેતાની સાથેના તે છ રાજાઓને તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જાણ્યા ત્યારે તેને જાણ થઈ કે (પઢિબુદ્ધિ જાવ જિયસતુ પચાલાહિવડ) અચલનો એવ કોશલનો અધિપતિ થયો છે તે દ્વિતીયકુવચ્ચીય છે, અને તેનું નામ પ્રતિબુદ્ધિ છે

ધરણનો એવ અગ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ ચન્દ્ર ઞ્ચાય છે અભિચન્દ્રનો એવ કાશી દેશનો અધિપતિ થયો છે અને અત્યારે તેનું નામ રાખ્યું છે પૂરણ નો એવ કુળાલ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ રુક્મી છે વસુનો એવ કુરુ દેશનો અધિપતિ થયો છે અને તેનું

ધેપતિ, એતાન્ પહપિ રાજ્ઞઃ પુનપુનરવધિજ્ઞાનેન વિલોક્યન્તી તિષ્ઠતિસ્મેત્યર્થઃ।
 જ્ઞાનત્રયસપન્ના મલ્લી ભગવતી સ્વકીયાવધિજ્ઞાનોપયોગેનેદ વિદિતવતી-પૂર્વભવ-
 નેદ્વશાત્તે પહપિ રાજાનો મા પરિણેતુમાગમિષ્યન્તીતિ તેષા પ્રતિવોધાર્થમુપાયો
 મયા વિધેય इति भावयति स्मेति भावः । તતસ્તદનન્તર સા મલ્લી કોઢુમ્બિક
 પુરુપાન્ આજ્ઞાકારિણં પુરુપાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ, શબ્દયિત્વા=આહ્વય, એવ=
 વક્ષ્યમાણ પ્રકારેણ, અવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયાઃ । યૂયં સ્વલુ અશોકવનિકાયામેક
 મહત્=વૃહત્ મોહનગૃહ=સમોહનકં ગૃહ ' કરેહ ' કુરુત=નિર્માત, કીદશં તદિત્યાહ
 ' અણેગલ્ખભસયસન્નિવિદ્ધ ' અનેકસ્તમ્મશતસન્નિવિષ્ટમ્ અનેકાનિ સ્તમ્મશતાનિ
 સન્નિવિષ્ટાનિ સલ્લાનિ યસ્મિન્ તત્ તથાવિચમ્ । તસ્ય સ્વલુ મોહનગૃહસ્ય વહુમ-

ઉસકા નામ અદીન શત્રુ હૈ । વૈશ્રવણ કા જીવ પાંચાલાધિપતિ હુઆ
 હૈ । ઉસકા નામ જિતશત્રુ હૈ (તણ સા મલ્લી કોઢુમ્બિય પુરિસે
 સદ્વાવેહ) હિસ પ્રકાર અપને પૂર્વભવ કે સાધિયો કી પરિસ્થિતિ કો જ્ઞાત
 કર ઉસ મલ્લી ભગવતી ને કૌઢુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા- (સદ્વાવિત્તા
 એવ વયામી) ઔર બુલાકર ઉન સે એસા કહા- (તુમ્હે ણ દેવાણુપ્પિયા ।
 અસોગલ્ખણિયાએ એગ મહ મોહનધર કરેહ-અણેગલ્ખભસયસન્નિવિદ્ધ)
 હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ અશોકવનિકા મે સૈકડોં લ્ખઓં સે યુક્ત એક
 વિશાલ સમોહન ગૃહ બનાઓ । હિસ ઘર કો બનાને કો આદેશ ઉન
 મલ્લી ભગવતી હિસલિયે દિયા થા કિ ઉન્હોં ને અપને અવધિજ્ઞાન સે યહ
 જ્ઞાન લિયા થા કિ વે છત્તો રાજા પૂર્વભવ કે સ્નેહ સે મુક્ષ સે વિવાહ
 કરને કે લિયે યહા આવેંગે-અત મુક્ષે ઉન્હે પ્રતિવોધિત કરને કે
 લિયે ઉપાય કરના ચાહિયે ।

નામ અદીનશત્રુ છે વૈશ્રવણ નેા છવ પચાલ દેશનેા અધિપતિ થયો તે અને
 તેનુ નામ જિતશત્રુ છે (તણ સા મલ્લી કોઢુમ્બિય પુરિસે સદ્વાવેહ) આ રીતે
 પોતાના પૂર્વભવના મિત્રોની પરિસ્થિતિ જાણીને મતની ભગવતીએ કૌટુંબિક
 પુરુષોને જોલાળ્યા “ સદ્વાવિત્તા એવ વયાસો ” અને જોલાળીને તેમને ડહુ

(તુમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! અસોગલ્ખણિયાએ એગ મહ મોહનધર કરેહ-અણેગ-
 લ્ખમ સયસન્નિવિદ્ધ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અશોક વનિકામા સેડડો થાભલાઓ વાળુ એક
 મોટુ સમોહન ઘર બનાવો મહત્વી ભગવતીએ મમોહન ઘર એટલા માટે
 બનાવડાળ્યુ હતુ કે પોતાના અવધિજ્ઞાન થી તેમણે જે વાત જાણી લીધી હતી
 કે તેઓ છએ રાજા પૂર્વ ભવના પ્રેમને લીધે તેમની સાથે લગ્ન કરવા અહીં
 આવશે એથી તેમને પ્રતિજ્ઞાધિત કરવાના ઉપાયો તેમણે મતવીને કરવા જ
 ન્હયો કૌટુંબિક પુરુષોને તેમણે આગળ કહ્યુ-

ધ્યદેશભાગે=સર્વથા મન્યસ્થાનભાગે વહ-‘ગર્ભઘરણ’ ગર્ભગૃહાન્ અન્તર્ગૃહાન્ કુરુત । વાસ મરનાનિ તેષા ચ ગર્ભગૃહાણા મહુમન્યદેશભાગે જાલગૃહ અન્તર્ગૃહાન્તર્ગત વસ્તુ વદિ સ્થિતાઃ પડ્યન્તિ, તદર્થ કુડચેપુ દાર્શનિર્મિતજાલકાનિ વર્તન્તે તદ્ જાલગૃહ કુરુત તસ્ય સ્વલ્લ જાલગૃહસ્ય મહુમધ્યદેશભાગે મણિપીઠિકાં મણિમયપીઠિકા, કુરુત, કૃતા યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ મલ્લીભગવત્યા આદેશાત્ કોડુમ્બિકપુરુપા મોહનગૃહ તત્ર મધ્યમાગે પટ્સલ્યક ગર્ભગૃહ તન્મધ્યે મણિમય

(તત્સ ણ મોહનઘરસ્સ મહુમજ્ઞદેસમાણ ડ ગર્ભઘરણ કરેહ)
 ઉસ સમોહન ગૃહ કે ઠીક મન્યમાગ મેં ડ ગર્ભગૃહો કો બનાઓ (તો સેણ ગર્ભઘરણાણ મહુમજ્ઞદેસમાણ જાલઘરણ કરેહ તત્સ ણ જાલ ઘરણસ્સ મહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ, જાવ પન્ચપ્પિણતિ)
 ગર્ભ ગૃહોં કે મન્યમાગ મેં જાલઘર કો બનાઓ । જાલિયોં મેં સે જિસ ઘર કી વસ્તુ કો બાહિર રહે હુએ મનુષ્ય દેવ લેતે હૈં । વહ જાલ ઘર કહ્લાતે હૈં । યે જાલિયા મીતો મેં કાષ્ટ આદિ કી બનાકર લગાઈ જાતી હૈં । જિસ પ્રકાર મકાનો મેં હવા તથા પ્રકાશ આને કે લિયે સ્થિતિયોં હુઆ કરતી હૈં-ઉસી પ્રકાર સે યે જાલિયા મી લગાઈ જાતી હૈં । ઓર ઉસ જાલ ગૃહ કે ઠીક બીચ કે સ્થાન મેં મણિનિર્મિત પીઠિકા કો બનાઓ ।

બનાકર પીઠે હસકી હમે સૂચના દો । હસ પ્રકાર મલ્લી ભગવતી કે આદેશ કો પાકર ઉન કોડુમ્બિક પુરુષોં ને ૧ મોહન ગૃહ, ઉસકે બીચ મેં છ ગર્ભ ગૃહ ઉનકે બીચ મેં ૧ જાલ ગૃહ ઓર ઉસ કે બીચ મેં મણિ

“ તત્સ ણ મોહનઘરસ્સ મહુમજ્ઞદેસમાણ ડ ગર્ભઘરણ કરેહ ” સ મોહન ઘરનેા અધવચ્ચે છ ગર્ભ ગૃહો બનાવો

(તીસેણ ગર્ભઘરણાણ મહુમજ્ઞ દેસમાણ જાવ ઘર ય કરેહ તત્સ ણ જાલ ઘરણસ્સ મહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ જાન, પન્ચપ્પિણતિ)

ગર્ભગૃહાના મધ્ય ભાગમા બાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અંદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની બાજીઓથી બેઠાં લે છે, તે ઘરને બાજી ધર કહે છે બાજીઓ બી તોમા લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ઘરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ બાજીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ બાજી ઘરની બાજી અધવચ્ચે મણિ બિંદુ પીઠિકા બનાવો

આખધુ તૈયાર થઈ બાલ ત્યારે અને સૂચિત કરો આરીતે મટલી લગ વતીની આસા સાબળોંને કૌટુંબિક પુરુષોંએ એક સ મોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક બાજીગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ બિંદુ પીઠિકા

पीठिकां च कृत्वा मल्लीभगवत्या* समीपमागत्यावेदयन्ति स्म. भगवतीयादेशमनु
सृत्य सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः ॥ सू. १३ ॥

मूलम्—तएण मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं
सरित्तय सरिब्बय सरिसलावन्नजोव्वणगुणोववेय कणगमईं
मत्थयच्छिड्डु पउमुप्पलप्पिहाणं पडिम करेइ, करित्ता ज विउलं
असणं पाणं खाइम साइम आहारेइ, तओ मणुन्नाओ असण
४ कल्लाकल्लि एगमेग पिड गहाय तीसे कणगमईए मत्थ-
यच्छिड्डुए जाव पडिमाए मत्थयसि पक्खिक्खमाणी २ विहरइ।
तएणं तीसे कणगमईए जाव मच्छयच्छिड्डुए पडिमाए एगमेगंसि
पिंडेपक्खिक्खप्पमाणे २ तओ गधे पाउवभवइ, से जहानामए
अहिमडेइ वा जावएत्तो अणिट्टनराए अमणामतराए॥सू०१४॥

टीका—‘तएण मल्ली’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु मल्ली=मल्लीकुमारी मणि-
पीठिकाया उपरि आत्मनः सदृशीं सदृशत्व च सदृशयस्का स्वशरीरसदृशप्रमाणा
सदृशलक्षणयौवनगुणौपपेता स्वमदृशलक्षण्यादिगुणैः सहिता, कनकमयी सुवर्णनि

मय पीठिका बनाई-और बनाकर फिर वे मल्ली भगवती के पास
आये-आकर कहने लगे-आपके आदेशानुसार हमने सब बनाकर
यथावत् तैयार कर दिया है । सूत्र “ १३ ”

‘ तएण मल्ली मणिपेढियाए ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (मल्ली) मल्ली कुमारीने (मणिपेढियाए
उवरि अप्पणो मरिसिय सरित्तय सरिब्बय सरिसलावन्न जोव्वण गुणो

अनापी अने अनापीते तेज्जे भट्ठी ललगवतीनी सामे आव्या अने आवीने
कडेवा लाग्या—“ डे देवानुप्रिये। हमारी आज्ञा प्रभाषे अमे यथावत् अधु
तैयार करावी दीधु छे ” ॥ सूत्र “ १३ ” ॥

‘तएण मल्ली मणिपेढियाए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाव (मल्ली) भट्ठी कुमारीजे

(मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसिय सरित्तय सरिब्बय सरिस लावन्न
शा ३८

ધ્યદેશભાગે=સર્વથા મધ્યસ્થાનભાગે પદ-‘ગન્ધધરણ’ ગર્ભગૃહાન્ અન્તર્ગૃહાન્ કુરુત । વાસ ભરનાનિ તેષાં ચ ગર્ભગૃહાણાં વહુમધ્યદેશભાગે જાલગૃહ અત્ર ગૃહાન્તર્ગત વસ્તુ વદિ સ્થિતાઃ પશ્યન્તિ, તદર્થ કુડ્યેષુ દાર્વાદિનિર્મિતજાલકાનિ વર્તન્તે તદ્ જાલગૃહ કુરુત તસ્ય સ્વલુ જાલગૃહસ્ય વહુમધ્યદેશભાગે મણિપીઠિકાં મણિમયપીઠિકા, કુરુત, કૃતાં યાત્ પત્યર્પયન્તિ મલ્લીભગવત્યા આદેશાત્ કૌટુમ્બિકપુરુષા મોહનગૃહ તત્ર મધ્યમાગે પદ્મસ્થાનક ગર્ભગૃહ તન્મધ્યે મણિમય

(તસ્સ ણ મોહણગરસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ છ ગન્ધધરણ કરેહ)
 ઉસ સમોહન ગૃહ કે ઠીક મધ્યમાગ મે છ ગર્ભગૃહો કો બનાઓ (તો સેણ ગન્ધધરણાણ વહુમજ્જદેસમાણ જાલધરણ કરેહ તસ્સ ણ જાલ ધરણસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ મણિપેદિય કરેહ, જાવ પન્ચવ્વિણ્ણંતિ)
 ઉન ગર્ભ ગૃહોં કે મધ્યમાગ મે જાલધર કો બનાઓ । જાલિયોં મેં સે જિસ ધર કી વસ્તુ કો બાહિર રહે હુણ મનુષ્ય દેસ લેતે હેં । વહ જાલ ધર ફરલોતે હે । યે જાલિયાં મીતો મેં કાષ્ટ આદિ કી બનાકર લગાઈ જાતી હે । જિસ પ્રકાર મકાનો મેં હવા તથા પ્રકાશ આને કે લિયે લિલ્હકિયોં હુઆ કરતી હે-ઉસી પ્રકાર સે યે જાલિયાં મી લગાઈ જાતી હેં । ઓર ઉસ જાલ ગૃહ કે ઠીક ધીચ કે સ્થાન મેં મણિનિર્મિત પીઠિકા કો બનાઓ ।

બનાકર પીઠે હસકી હમેં સૂચના દો । હસ પ્રકાર મલ્લી ભગવતી કે આદેશ કો પાકર ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને ૧ મોહન ગૃહ, ઉસકે ધીચ મેં છ ગર્ભ ગૃહ ઉનકે ધીચ મેં ૧ જાલ ગૃહ ઓર ઉસ કે ધીચ મેં મણિ

“ તસ્સ ણ મોહણગરસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ ૭ ગન્ધધરણ કરેહ ” સ મોહન ધરનેા અધવચ્ચે છ ગર્ભ ગૃહો બનાવો

(તીસેણ ગન્ધધરણાણ વહુમજ્જદેસમાણ જાલ ધર ય કરેહ તસ્સ ણ જાલ ધાપસ્મ વહુમજ્જદેસમાણ મણિપેદિય કરેહ જાવ, પન્ચવ્વિણ્ણંતિ)

ગર્ભગૃહોના મધ્ય ભાગમા જાલ ધર બનાવો જે ધરની અદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ધરની જાળીઓથી જોઈ લે છે, તે ધરને જાળધર કહે છે જાળીઓ બીતોમા લોકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ધરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ જાળીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ જાળ ધરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો

આખધુ તૈયાર થઈ જાય ત્યારે અને સૂચિત કરો આરીતે મલ્લી ભગવતીની આજ્ઞા સાલજીને કૌટુમ્બિક પુરુષોએ એક સ મોહન ધર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક જાળગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા

मय्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' प्रादुर्भवति=वर्धनिस्सरति स्म । सद्यप्यन्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूपकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

(से जहा नामण अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणाम तराए) वह दुर्गन्ध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड़ जाने की होती है । यहाँ यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का संग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ हम प्रकार है-वह दुर्गन्ध गाय के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सड़े कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलोब के सड़े कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए घोड़े के सड़े कलेवर की

माथाना छाणुणा नाभती (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) आरीते सोनानी भूतणीमा हररोअ ओक ओक कोणीयो नाभवाथी तेमाथी दुर्गन्ध नीकणवा लागी (से जहा नामण अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) भरेला अने सडेला सापना जेवी ते दुर्गन्ध छती अही यावत् शब्दथी ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' वगेरेना मग्गइ यथे छे आनेा अर्थ आ प्रमाणे थाय छे के भरीने सडी गयेला गायना शरीरना जेवी भरीने सडवा भाडेला इतराना शरीरना जेवी भरीने सडवा भाडेला मिळाउना शरीरना जेवी, भरीने सडवा माणुसना शरीरना जेवी, भरीने सडवा पडाना शरीरना जेवी, भरीने सडवा उरना शरीरना जेवी, भरीने सडवा घोडाना शरीरना जेवी, भरीने सडी गयेला छाथीना शरीरना जेवी,

मिता 'मत्थयच्छिद्र' मस्तकच्छिद्रा मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्ता 'पउमुप्पलप्पिहाणं पओत्तपलपिधानां=रक्तनीलकमलानि पिधानानि मस्तकच्छिद्रस्याच्छादनानि यस्या स्ता प्रतिमा = स्वतुल्यकृतिकपुत्तलिका कारयति = शिल्पकारनिर्माणयति । कार यित्वा सा मल्ली कुमारी यद् 'विउल' विपुल=बहुलम्, अशनपानखाद्य स्वाद्य= चतुर्विधमाहारम् आहारयति=भुङ्क्ते, तत तस्मात्-'मणुन्नाओ' मनोज्ञम् प्रिय रसयुक्तात् अशनपानखाद्यस्वाद्यात् चतुर्विधाहारमभ्यात् 'कल्लाकल्लि' कल्याकल्य दिने दिने, एरुयेरु पिण्ड=ग्राम गृहीत्या, तस्याः जनकमय्याः मस्तकच्छिद्राया यावत् प्रतिमाया मस्तके=मस्तकोपरिभागवर्तिनि रन्त्रे प्रक्षिपन्ती=एकमेकं ग्रास निपातयन्ती 'विहरइ' विहरति=आस्ते नम । ततस्तदनन्तर खलु तस्या कनक

ववेय कणगमइ मत्थयच्छिद्र पउमुप्पलप्पिहाण पडिम करेइ) उस माणिपीठिका के ऊपर अपनी जैसी-अपनी जैसी बयवाली अपने शरीर के सदृश प्रमाणवाली, अपने जैसे लावण्य आदि गुणों वाली एक सुवर्ण निर्मित पुत्तलिका शिल्पियो से बनवाई । उसके मस्तक में एक बड़ा सा छेद रखवाया । वह छेद रक्त नील कमल रूप ढङ्कन से ढका हुआ था । (करित्ता ज विउल असण पाण खाइम साइम आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लि एग द्वारेण पिउगहाय विहरइ) जब इस प्रकार की पुत्तलिका बनकर तैयार हो चुकी-तब उस मल्ली कुमारी ने विपुल मात्रा में अशन, पान, स्वाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया और स्वयं खात्रा-बाद में उस प्रियरसयुक्त आहार में से प्रतिदिन वह एक एक ग्राम को लेकर उस मस्तक छिद्र वाली सुवर्ण की पुत्तलिका के उस मस्तकोपरिभागवर्ती छेद में डालने लगी-(तएण

जोवणगुणोववेय कणगमइ मत्थयच्छिद्र पउमुप्पलप्पिहाण पडिम करेइ)

ते भण्णि पीठिका ऊपर शिल्प शास्त्रीओ पासैथी पोताना जेवी पोताना जेवा आयुधनी, पोताना शरीर जेवा प्रमाणनी पोताना जेवा लावण्य वगेरे शुद्धोपाणी ओक सोनानी पूतणी बनावडावी तेना भायाभा ओक मोठु काण्डु रणाव्यु ते काण्डु रक्तनील कमलना ढाण्णुथी ढाण्डु डंतु

(करित्ता ज विउल असण पाण खाइम साइम आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लि एगद्वारेण पिउगहाय विहरइ)

न्यारे आरीते सोनानी पूतणी तैयार यध गध त्यारे भट्टी कुमारीओ अशन पान आद्य अने स्वाद्य इय आर जतने। पुष्कण प्रमाणमा आहार तैयार करावडाव्यो, अने उभेसा ते आहारभाथी पोते जमती, अने त्यार आइ तेभाथी ओक कोणीओ लधने काण्डावाणी सोनानी पूतणीना

मय्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति 'तओ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ 'मादुर्भवति=वह्निर्निस्सरति स्म । सदृष्टान्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-'अहिमडेइ वा' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-'गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सदग्रहः' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूपकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणाम तराए) वह दुर्गन्ध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड़ जाने की होती है । यहाँ यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का सग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ इस प्रकार है-वह दुर्गन्ध गाय के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सड़े कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलोव के सड़े कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए घोड़े के सड़े कलेवर की

भाथाना छाणुणा नाभती (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) आरीते सोनानी भूतणीमा इदरेण ओक ओक कोणीयो नाभवाथी तेमाथी दुर्गन्ध नीउणवा लागी (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) भरेला अने सडेला सापना जेवी ते दुर्गन्ध डती अही यावत् शब्दथी ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' वगेरेना मग्रउ यथे छे आनेो अर्थ आ प्रमाणे थाय छे के भरीने सडी गथेला गायना शरीरना जेवी भरीने मडवा भाडेला इतराना शरीरना जेवी भरीने सडवा भाडेला मिलाडाना शरीरना जेवी, भरीने सडता भाणुसना शरीरना जेवी, भरीने सडता पडाना शरीरना जेवी, भरीने सडता उदरना शरीरना जेवी, भरीने सडता घाडाना शरीरना जेवी, भरीने सडी गथेला छाथीना शरीरना जेवी,

इति वा, दृक्मृतक इति वा, द्वीपिमृतक इति वा, इति-जया, यथा मृतसर्पादि
कलेवराणा दुर्गन्धः खलु यादृशोऽनिष्टः प्रादुर्भवति ' एतो ' एतस्माद् ' अणि
द्वतराए ' अनिष्टतर अधिकस्तीव्रः, अतएव ' अमणामतराए ' अमनआमतरा-
मनसोऽति प्रतिकूलो दुर्गन्धस्तस्याः पुत्तलिकाया अभयदित्यर्थ ॥ सू० १४ ॥

મૂલમ્—તેણં કાલેણં તેણં સમણં કોસલણામં જણવણ,
તત્થ ણં સાગેણ નામ નયરે, તસ્સ ણં ઉત્તરપુરત્થિમે દિસી-
ભાણ, એત્થ ણં મહ ણમે ણાગઘરણ હોત્થા દિવ્વે સચ્ચે સચ્ચો
વાણ સંનિહિયપાડિહેરે, તત્થ ણ નયરે પડિબુદ્ધિનામં ઇક્કાણુ-
રાયા પરિવસઈ, પડમાવઈ દેવી સુબુદ્ધી અમચ્ચે સામદ્ધમેય-
કુસલે, તણ પડમાવઈણ દેવીણ અન્નયા કયાઈ નાગજન્નણ
યાવિ હોત્થા । તણં સા પડમાવઈ નાગજન્નમુવદ્ધિય જાણિત્તા
જેણેવ પડિબુદ્ધી, તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ
પરિગ્ગહિય સિરસાવત્ત દસનહ મત્થણ અંજલિ કટ્ટુ એવ વયાસી
—એવ ખલુ સામી । મમ કલ્લ નાગજન્નણ યાવિ ભવિસ્સઈ, ત

હોતી હૈ, મરે હુણ હાથી કે સઢે કલેવર કી હોતી હૈ, મરે હુણ સિંહ કે
સઢે કલેવર કી હોતી હૈ, મરે હુણ વ્યાઘ્ર કે સઢે કલેવર કી હોતી હૈ
દ્રુક ઓર દ્વીપિ કે સઢે કલેવર કી હોતી હૈ । ઇન મૃત સર્પાદિકોં કે
સઢે હુણ કલેવરોં કી દુર્ગંધ જિસ પ્રકાર અનિષ્ટ હોતી હૈ ઉસી પ્રકાર
ઇસસે બી અનિષ્ટતર વર પુત્તલિકા સે નિકલતી હુઈ દુર્ગંધ થી—અમન
આમતર થી મન કો જરા સી બી રુચે એસી નહી થી—કિન્તુ મન કે
અતિસર્વથા પ્રતિકૂલ થી । સૂત્ર “ ૧૪ ”

મરીને સડી ગયેલા સિંહના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા વાઘના
શરીરના જેવી મરીને સડી ગયેલા વરુ અને દ્વીપકા (દ્વીપિ)ના શરીરના જેવી,
મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના શરીરના જેવી અનિષ્ટકારી દુર્ગંધ હોય છે
તેવી જ અને તેઓના કરતા પણ વધારે અનિષ્ટતર પૂતળીમાથી નીકળતી
દુર્ગંધ હતી મનને એકદમ અણુગમો થાય તેવી સર્વથા પ્રતિકૂળ તેમાથી
નીકળતી દુર્ગંધ હતી ॥ સૂત્ર “ ૧૪ ” ॥

इच्छामि णं सामी । तुव्भेहि अव्वभणुन्नाया समाणी नागजन्नय
गमित्तए, तुव्भेवि णं सामी । मम नागजन्नयसि समोसरहा
तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ । तएण
पउमावई पडिबुद्धिणा रन्नो अव्वभणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडु
वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
प्पिया । मम कल्ल नागजण्णए भविस्सइ तं तुव्भे मालागारे
सद्दावेह, सद्दावित्ता एवं वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल
नागजण्णए भविस्सइ, त तुव्भे णं देवाणुप्पिया । जलथलय०
दसद्धवन्नं मल्ल णागघरयसि साहरह, एगं च णं मह सिरिदा-
मगंड उवणेह । तएणं जलथलय दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणा-
विह भत्तिसुविरडय हसमियमउरकोच सारसचक्रवायमयणसाल
कोइलकुलोववेय ईहामियजावभत्तिचित्त महग्घ महरिह विपुलं
पुप्फमंडवं विरएह तस्सणं बहुमज्झदेसभाए एग मह सिरिदा-
मगड जाव गधध्धुणिं मुयत उल्लोयंसि ओलंवेह, ओलवित्ता
पउमावई देवि पडिवालमाणा २ चिट्ठह । तएणं ते कोडुविया
जाव चिट्ठति ॥ सू० १५ ॥

टीका--‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कोसला-
नाम जनपदः देश आसीत्, तत्र खलु साकेतनामक नगरमासीत् । तस्य साकेत

‘ तेण काले ण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ--(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस
समय में (कोसला नाम जणवए) कोशल नामका जन पद-देश था ।

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि

टीकार्थ--(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते वप्पते (कोसल नाम
जणवए) कोशल नामे जनपद (देश) छेने । (तव्वण सागेए नाम नयरे)

नगरस्य खलु उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु महदेक नागगृहमासीत्
तत् कीदृशमित्यात-दिव्य=प्रधानं, सत्य कामनापूरस्त्वात् 'सच्चोवाए' सत्यावपात
=सत्यागिलाप, 'सनिहियपाडिहेरे' सनिहितमातिहार्यै=सनिहित विनिवेशित
मातिहार्यै प्रतीहारकर्म व्यन्तरदेवेन यस्मिन् तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः । तत्र
खलु नगरे=साकेतनगरे प्रतिबुद्धिनामा इक्ष्वाकुराजः=इक्ष्वाकुवंशीयो राजा परिव
सति । पद्मावती देवी तस्य भार्याऽऽसीत् । 'सुबुद्धिः अमच्चे' सुबुद्धिनामक
स्तस्यामात्य =मन्त्री, ता कथभूत इत्याह-'सामदडभेयकुसले' सामदण्डभेदकुसलः

(तत्थण सागेण नाम नगरे) उस में साकेत नाम का नगर था । (तस्स
ण उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाण-एत्थ ण मह एगे णागधरए होत्था दिव्वे
सच्चे सच्चोवाए सति हियपाडिहेरे) उस के ईशान कोण में
विशाल नागधर था ।

यह दिव्य और प्रत्येक व्यक्ति की कामना का पूरक होने से सत्य
था । जो भी कोई कामना-अभिलाषा-इसके समक्ष करता वह उस की
सफल हो जाती-सत्य हो जाती-इसलिये यह सत्याभिलाष था । इसके
द्वार पर व्यन्तरदेव प्रतिहार के रूप में खड़े रहते थे इसलिये यह सनिहित
प्रतिहार्य था । (तत्थ ण नगरे पडिबुद्धी नाम इक्खागु राया परिवसइ,
पडमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदडभेयकुसले) उस साकेत (अ
योध्या) नगर में इक्ष्वाकुवंश से उत्पन्न प्रतिबुद्ध नाम का राजा रहता
था । इस की भार्या का नाम पद्मावती था । अमात्य का नाम सुबुद्धि था ।

तेमा साकेत नामे नगर छु

(तस्सण उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाण-एत्थण मह एगे णागधरए होत्था)
दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सतिहिय पडिहेरे)

तेना ईशान कोणमा ओक भोटु नागधर छु

ते दिव्य अने दरेके दरेक भाषुसनी धिछाने पूरी करनार होवाथी सत्य
छु गमे ते व्यक्ति पोतानी धिछा-प्रामना-तेनी सामे प्रकट करतो, तेनी
धिछा ते ओच्छस पूरी पाडतु छु तेनी क मना सक्षण तेमज सत्य थती
छती ओधी ज ते स याभिलाष छु उत्तर देवे तेना द्वारे प्रतिहारना
इयमा जिला रहेता छना ओथीज ते सनिहित प्रतिहार्य छु

(तत्थण नगरे पडिबुद्धीनाम इक्खागुराया परिवसइ, पडमावई देवी सुबुद्धी
अमच्चे सामदडभेयकुसले)

साकेत नगरमा इक्ष्वाकुवंशमा ज-मेवे प्रतिबुद्ध नामे राजा रहेने
छतो तेनी भार्यानु नाम पद्मावती छु तेना अमात्य (मन्त्री) नु नाम
सुबुद्धि छु

સામ=સાન્ત્વનપ્રયોગઃ, દણ્ડ=યુદ્ધ, ભેદ=શત્રુપક્ષે મન્ત્રિસૈનિકાદિભિર્વિરોધોત્પાદ-
નમ્, તેષુ કુશલઃ=નિપુણ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ પદ્માવત્યાદેવ્યા અન્યદા કદાચિત્
નાગયજ્ઞઋશ્યાપ્યાસીત્=નાગમહોત્સવ દિવસ સમાયાત્ इत्यर्थः । તતસ્તદા સ્વલુ
સા પદ્માવતી દેવી નાગયજ્ઞ નાગમહોત્સવદિવસમ્, ઉપસ્થિત=સમાયાત્ જ્ઞાત્વા
યત્રૈવ પ્રતિબુદ્ધિર્નામ ૩૬વાકુરાજસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ । ઉપાગત્ય કરતલ પરિગૃહીત શિર-
આવર્ત્ત દશનશ્ચ મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-હે સ્વામિન્ ।
એ સ્વલુ મમ કલ્પે આગમિદિવસે નાગયજ્ઞઋશ્યાપિ ભવિષ્યતિ, તદ્=તસ્માત્ ઇચ્છામિ

यह अमात्य साम, दण्ड, और भेद नीति में कुशल था । शत्रु को
शांति से वश करना यह साम नीति है, युद्ध से वश करना-उसे परा-
स्त कर अपने आधीन बनाना-यह दण्ड नीति है-शत्रु की सेना में
मन्त्री तथा सैनिकों में विरोध उत्पन्न कराना इस का नाम भेद है ।
(तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था)
एक समय की बात है कि पद्मावती देवी के यहां नागयज्ञ के महोत्सव
का दिन आया । (तएण सा पउमावई नागजन्नं सुवट्ठिय जाणित्ता जेणेव
पडिबुद्धी-तेणेव उवागच्छइ) अतः यह पद्मावती देवी नाग यज्ञ-नागमहो-
त्सव-का दिन आया हुआ जान कर जहाँ अपने पति प्रतिबुद्धि राजा थे
वहाँ गई । (उवागच्छित्ता करयल परिग्गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए
अजलिं कट्टु एव वयासी) वहाँ जाकर उस ने राजा को दोनों हाथों की
अजलि बनाकर और मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-बाद में वह
इस प्रकार कहने लगी-(एव स्वलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए

તે અમાત્ય સામ દંડ તેમજ ભેદ નીતિમાં કુશળ હોતો શત્રુને શાંતિથી
વશકરવો તે સામનીતિ છે યુદ્ધ લડીને વશ કરવો, તેને હરાવવો અને
પોતાને અધીન કરવો તે દંડનીતિ તે શત્રુની સેનામાં મન્ત્રી તેમજ સૈનિકોમાં
વિરોધ ઉત્પન્ન કરવો તે ભેદ નીતિ છે (તएणं पउमावईए देवीए अन्नया
कयाइ नागजन्नए यावि होत्था) એક સમયની વાત છે કે પદ્માવતી દેવીને ત્યાં
નાગયજ્ઞ નો મહોત્સવ દિવસ આવ્યો (तएण सा पउमावई नागजन्नं सुवट्ठिय
जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि तेणेव उवागच्छइ) નાગ મહોત્સવ ના દિવસની બાજુ
થતા પદ્માવતી દેવી પ્રતિબુદ્ધિ રાજાની પાસે ગઈ (उवागच्छित्ता करयल परि-
ग्गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी) ત્યાં જઈને તેણે બંને
હાથોની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી કહ્યું

(एव स्वलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए यावि भविस्सइ त इच्छामि णं

खलु स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञक गन्तु नागमहोत्सव
 कर्तुं=नागगृह गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण रामन्ययः । हे स्वामिन् ! युयमपि खलु
 मम नागयज्ञे=नागपूजाया समवसरत=भागच्छत यत्तु 'मया सार्धं समागच्छत
 इत्यर्थः' इति व्याख्यात तत् प्रमादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चा
 द् गमनपर शास्त्र विरुध्येत । ततस्तदनन्तर खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको
 नृप पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=पार्थनारूप प्रतिश्रुणोति=स्वीकरीतिस्म । ततः
 खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता इष्टा तृष्टा० यावत् कोटुम्बिकपुरुषान्
 आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव=रक्ष्यमाण
 प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः । एव खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

यावि भविस्सह, त इच्छामिणं सामी ! तुभेहि अभ्यनुज्ञाया समानी
 नागजन्मण य गमित्तण) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल
 नाग महोत्सव मनाऊँगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप
 आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे
 स्वामिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें ।

(तण्ण पडिबुद्धी पडमावईण देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पद्मावती
 देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप
 अर्थ को स्वीकार कर लिया (तण्ण पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भ-
 णुत्ताया हट्ठ तुट्ठ जाव कोटुम्बिय पुरिसे सहावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि
 राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एव
 सतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया (सहावित्ता एव
 वयासी एव खलु देवानुप्पिया ! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सह,
 सामी ! तुभेहि अभ्यनुज्ञाया समानी नागजन्मण य गमित्तण)

हे स्वामिन् आवती काले भारे त्या नाग महोत्सव थये हु आवती
 काले महोत्सव उत्सववानी छु ओथी नाग महोत्सव उत्सववानी तभारी पासेथी
 आज्ञा भेजववा आवी छु तभारी आज्ञा थाय तो हु आवती काले नाग
 महोत्सव भाणुवा नागधर भउ हे स्वामि ! उत्सवभा पधारवा तभने पणु
 हु आभ तणु आपु छु

(तण्ण पडिबुद्धि पडमावईण देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पद्मावती पु
 कथन साधनीने प्रतिबुद्धि राजाके तेनी विनती स्वीकारी लीधी " तण्ण
 पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भणुत्ताया हट्ठ तुट्ठ जाव कोटुम्बियपुरिसे सहावेइ "
 प्रतिबुद्धि राजा वडे आज्ञाकित थयेली राज्ञी पद्मावती देवी भूषण हर्षित
 तेभण सतुष्ट थय यावत तेणु कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या

तद्-तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव उदत-एव खलु पद्मावत्या
 देव्याः खल्ये=प्रभाते नागयज्ञक=नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु
 हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्च-
 वर्णमाल्य कुसुमजात माल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदाम-
 काण्डमुपनयत समानयत । तत खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन
 माल्येन 'णाणाविह भत्तिस्तु विरय्य' नानाविव भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकाररुचिररचना
 सुशोभित, पुष्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्ध', पुनः कथभूत तदित्याह-'हसमियमउ
 रकोच सारसचक्रवायमयणमालकोडलकुलोववेव ' हसमृगमयूरकोञ्चसारसचक्रवाक
 मदन शालकोकिञ्च कुलोपपेतम्-इ सादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषां कुलै
 समूहैश्चित्ररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजारमत्तिचित्त' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

त तुम्हे मालागारे सदावेह, सदावित्ता एव वदह एव खलु पडमावईए
 देवीए कल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा
 देवानुप्रियो ! मेरे यहाँ कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग
 मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के
 कल नाग यज्ञ होगा । (त तुम्हेण देवानुप्रिया ! जल थलय० दसद्ववन्न
 मल्ल णागधरयसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल में
 उत्पन्न हुए विकसित पञ्चवर्णों के पुष्पो को नागधर पर पहुँचाओ
 और साथ में एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल०
 दसद्ववन्ने ण मल्लेण णाणा विह भत्तिस्तु विरय्य हँस मिय मउर कोच
 सारसचक्रवायमयणमालकोडलकुलोववेव ईहामिय जाव भत्तिचित्त

“ सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवानुप्रिया मम मल्ल नाग जण्णए
 भविस्सइ, त तुम्हे मालागारे सदावेह सदावित्ता एव वदह एव खलु पडमावईए
 देवीए कल नागजण्णए भविस्सइ ”

गोलावीने तेमने इह- “ देवानुप्रियो ! मादे त्या आवती आवे नाग
 महोत्सव थरे अथी तमे भाणीअने गोलावे अने गोलावीने तेमने अ
 प्रभावे इहो के आवे पद्मावती देवीने त्या नाग महोत्सव थरे (त तुम्हेण
 देवानुप्रिया ! जल थलय दसद्ववन्न मल्ल णागधरयसि साहरह) तो हे
 देवानुप्रियो ! तमे अथा जण थणमा उत्पन्न थयेला पाय गोलान पुष्पेने
 अने श्रीदाम-इने नागधरेमा पढायाडे

“ तएण जल थल० दसद्ववन्ने ण मल्लेण णाणाविह भत्तिस्तु विरय्य हँस
 मियमउर रकोच सारस चक्रवायमयणमाल कोडलकुलोववेव ईहामिय जाव
 भत्ति चित्तमहग्व गहरिह विपुल पुष्पमटव विरएह)

खलु स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञक गन्तु नागमहोत्सव
 कर्तुं=नागगृह गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूरणे समन्वयः । हे स्वामिन् ! युष्मपि खलु
 मम नागयज्ञे=नागएजाया समवसरत=भागच्छत यत्तु 'मया सार्धं समागच्छत
 इत्यर्थः' इति व्याख्यात तत् प्रमादिकम् पद्मान्त्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चा
 द् गमनपरं शास्त्रं विरुध्येत । ततस्तदनन्तरं खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको
 नृप पद्मान्त्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूपं प्रतिश्रुणोति=स्वीकरोतिस्म । ततः
 खलु पद्मानती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता इष्टा तृष्ठा० यावत् कोटुम्बिकपुरुषान्
 आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव=रक्षयमाण
 प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः ! एव खलु मम कलये नागयज्ञको भविष्यति,
 यावि भविस्सइ, त इच्छामिण सामी ! तुम्हेहि अब्भणुन्नाया समाणी
 नागजन्ने ए य गमित्ताण) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल
 नाग महोत्सव मनाऊँगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप
 आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे
 स्वामिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारे ।

(तएण पडिबुद्धी पडमावईए देवीए एयमइ पडिसुणेइ) पद्मावती
 देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप
 अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएण पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भ
 णुन्नाया हइ तुइ जाव कोटुम्बिय पुरिसे सहावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि
 राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एवं
 सतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता एव
 वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सइ,
 सामी ! तुम्हेहि अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्ने ए य गमित्ताण)

हे स्वामिन् आपकी काले भारे त्या नाग महोत्सव थये हुं आवती
 काले महोत्सव उज्जवानी छु ओथी नाग महोत्सव उज्जवानी तभारी पासेथी
 आज्ञा भेजववा आवी छु तभारी आज्ञा थाय तो हुं आवती काले नाग
 महोत्सव भाणुवा नागधर णठि हे स्वामि ! उत्सवमा पधारवा तमने पणु
 हुं आभत्तणु आपुं छु

(तएण पडिबुद्धि पडमावईए देवीए एयमइ पडिसुणेइ) पद्मावती ने
 कथन साधुनीने प्रतिबुद्धि राजासे तेनी विनती स्वीकारी लीधी " तएण
 पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भणुन्नाया हइ तुइ जाव कोटुम्बियपुरिसे सहावेइ "
 प्रतिबुद्धि राजा वडे आज्ञाकित थयेली राणी पद्मावती देवी भूषण हर्षित
 तेमण सतुष्ट थइ यावत् तेणु कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या

तद्=तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव उदत-एव खलु पद्मावत्या
देव्याः मल्ये=प्रभाते नागयज्ञक =नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु
हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्च-
वर्णमाल्य कुसुमजात माल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदाम
काण्डमुपनयत समानयत । ततः खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन
माल्येन 'णाणाविह भक्तिसु विरह्य' नानाविध भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकाररुचिररचना
सुशोभित, पुष्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्धः, पुनः कथंभूत तदित्याह-'हसमियमउ-
रकोच सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेव ' हसमृगमयूरकोश्वसारसचक्रवाक
मदन शालकोकिल कुलोपपेतम्-इ सादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषां कुलै
समूहैश्चिररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजाव भक्तिचित्त ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्तम्

त तुम्हे मालागारे सदावेह, सदावित्ता एव वदह एव खलु पडमावईए
देवीए कल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा
देवानुप्रियो ! मेरे यहाँ कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग
मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के
कल नाग यज्ञ होगा । (त तुम्हेण देवानुप्रिया ! जल थलय० दसद्धवन्न
मल्ल णागघरयसि साहरह) सो तुम सच हे देवानुप्रियो ! जलथल मे
उत्पन्न हुए विकसित पञ्चवर्णों के पुष्पो को नागघर पर पहुँचाओ
और साथ मे एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल०
दसद्धव ने ण मल्लेण णाणा विह भक्तिसु विरह्य हैंस मिय मउर कोच
सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेव ईहामिय जाव भक्तिचित्त

“ सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवानुप्रिया मम कल्ल नाग जण्णए
भविस्सइ, त तुम्हे मालागारे सदावेह सदावित्ता एव वदह एव खलु पडमावईए
देवीए कल्ल नागजण्णए भविस्सइ ”

गोलावीने तेमने धु- “ देवानुप्रियो ! भादे त्या आपती कावे नाग
महोत्सव थये अथी तमे भाणीआने गोलावेो अने गोलावीने तेमने अ
प्रभावे कडे के कावे पद्मावती देवीने त्या नाग महोत्सव थये (त तुम्हेण
देवानुप्रिया ! जल थलय दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) तो हे
देवानुप्रियो ! तमे णागा वण थणभा उत्पन्न थयेता पाय गोना पुष्पोने
अने श्रीदामकाण्डने नागघरभा पडोयाडा

“ तएण जल थल० दसद्धवन्ने ण मल्लेण णाणाविह भक्तिसु विरह्य हैंस
मियमउर साँच सारस चक्रवायमयणमाल कोइलकुलोववेव ईहामिय जाव
भक्ति चित्त महग्ग गहरिह त्रिपुल पूप्फमटव विरएह)

अत्र यावच्छब्देन — ' ईहामृगेत्यनन्तर — वृषभतुरगमकरविहगव्यालकविभररुशरभकुञ्जरवनलतापद्मलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईहामृगो वृहः, रुक्मरभौ मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्-आश्चर्यजनकम्, ' महग्ध ' महार्घ-महामूलक ' महरिह ' महार्ह=महता योग्य, विपुल विस्तीर्णम्, ईदृश पुष्पमण्डप विरचयत कुरुतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु बहुमध्यदेशभागे-सर्पथा मध्यभागे एव महत् श्रीदामकाण्ड यावत् पाटलादिपुष्प समूहसहितगन्धघ्राणि गन्धवर्षिं मुञ्चत्-मददत् ' उल्लोयसि ' उल्लोचे=चन्द्रा तपे वस्त्रनिर्मितगृहाम्यन्तरिकावरणे-' ओलवेह ' अवलम्बयत, ओलवित्ता अब

महग्ध महरिह विपुलं पुष्पमण्डप विरएह) इस के अनन्तर वे सब जल थल के विकसित पचवर्णों के पुष्पो से और अनेक प्रकार के चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मण्डप बनावे, इस मण्डप को वे इस मृग, मयूर, कौच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग-वृक, वृषभ, तुरग, मकर, विहग, व्यालक-सर्प, किलर, एह, शरभ, कुजर-वनलता और पद्मलता इन के चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावें ।

वह पुष्प मण्डप कीमती महारूपों के योग्य, एव विस्तीर्ण हो ऐसा बनावें । (तस्मिन् बहुमज्जदेसभाए एग मह सिरिदामगंड जाव गंधद्वणि सुयत उल्लोलयसिओलवेह, ओलवित्ता पडमावइ देवी पडिवाले माणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुविया जाव चिट्ठति) और उस के ठीक मध्य भाग में तने हुए चंदोवा के नीचे एक बड़ा भारी श्रीदाम

अने त्या २ भाद जणधण ना विकास थयेला पचवर्णोना पुष्पोथी तेमज्ज नत नतना चित्रोनी रचनाथी शोभतो अेक पुष्पे नेा भाडवेा बनावे डस, मृग, मार, कौच, सारस, चक्रवाक मदनशाल अने कोकिल आणधा पशु पक्षीआ ना चित्रो थी भाडवाने शलुगारे तथा छंडामृग, वरु, जणद, घोडो, मगर, पक्षी व्यालक, (सर्प), जिनर, रुक्, शरभ हाथी, वनलता, अने पद्मलताना सुंदर चित्रोथी भाडवाने अद्भुत रीते सुशोभित करे।

पुष्पमण्डप किमती तेमज्ज महापुरुषोने योग्य विशाण डोवो नेधअे

(तस्मिन् बहुमज्जदेसभाए एग मह सिरिदामगंड जाव गंधद्वणि सुयत उल्लोलयसि ओलवेह, ओलवित्ता पडमावइ देवी पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुविया जाव चिट्ठति)

अने ताहेला चदरवानी नीचे ठीक मध्यभागमा नाकने पोतानी सुवास थी नृत्य करानार अेक, णहु मोटो श्रीदामकांड लटकावो।

लम्ब्य पद्मावती देवी 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिका कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-यथापद्मान्त्यासमादिष्ट तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्मा॥सू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी वल्ल० कोडुविए एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सागेय नगर सव्विभतर वाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुविय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्टवेह, तएण तेऽवि तहेव उवट्टवेति । तएणं सा पउमावई देवी अंतो अते उरसि णहाया जाव धम्मिय जाण दुरुढा, तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरिवुडा सागेय नगरमज्झमज्जेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडिया जाइ

काण्ड-पुष्पो का गजरा-किं जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गन्ध निकल रही हो को लटकावे । लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहां प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें । इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियों को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मण्डप की रचना करने को कहा-उन्होंने सब कार्य व्यवस्थित ढंग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहां ठहरे रहे । सूत्र " १५ "

लटकावाने भारी-पद्मावती देवीनी भधा त्या प्रतीक्षा कृता शैकाय आ-प्रभावे पद्मावती देवीके कौटुम्बिक पुरुषोंने नागमण्डोत्पन्न विधे सत्यने आभ्या पद्मावती देवीना आदेश मुज्जण कौटुम्बिक पुरुषोंने भाणीओने ओलाव्या अने ओलावीने तेमने यथायोग्य पुष्पमंडप बनाववानी आना आपी आ-प्रभावे अंधु जम व्यवस्थित रीते पतावीने पद्मावती देवीनी राहु लेता तेओ त्या शैकाया ॥ सूत्र " १५ " ॥

अत्र यावच्छब्देन - ' ईदामृगेत्यनन्तर - एवमतुरगमकरविहगयालकविभररु
 शरभकुञ्जरवनलतापञ्चलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईदामृगो वृक्षः, रुरुक्षरभौ
 मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्-आश्चर्यं
 जनकम्, ' महग्ध ' महार्घ-महामूलरु ' महरिह ' महार्ह=महता योग्य, विपुल
 विस्तीर्णम्, ईदृशं पुष्पमण्डपं विरचयत कुर्वतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु
 बहुमध्यदेशभागे-सर्वथा मध्यभागे एकं महत् श्रीरामरूपं यावत् पाटलादिपुष्प
 समूहसहितगन्धघ्राणि गन्धवृत्तिं मुञ्चत्-प्रदत् ' उल्लोयसि ' उल्लोचे=चन्द्रा
 तपे वल्लनिर्मितमृदाभ्यन्तरिकावरणे-' ओलवेह ' अवलम्बयत, ओलवित्ता अब

महग्ध महरिह विपुलं पुष्पमण्डपं विरचयत्) इस के अनन्तर वे
 सब जल धल के विकसित पंचवर्णों के पुष्पो से और अनेक प्रकार के
 चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मण्डप बनावे, इस मण्डप को वे
 हंस मृग, मयूर, कौच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब
 के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग-वृक्ष, वृषभ, तुरग, मकर, विहग,
 व्यालक-सर्प, किन्नर, एण, शरभ, कुजर-वनलता और पञ्चलता इन के
 चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावे ।

वह पुष्प मण्डप कीमती महारूपों के योग्य, एवं विस्तीर्ण हो ऐसा
 बनावे । (तस्मिन् बहुमज्जदेसभाण एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंध
 द्वाणि मुयत् उल्लोलयसिओलवेह, ओलवित्ता पडमावह देवीं पडि
 वाले माणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुमिया जाव चिट्ठति) और उस के
 ठीक मध्य भाग में तने हुए चंदोवा के नीचे एक बड़ा भारी श्रीराम

अने तयार पाद वज्रथण ना विकास थयेला पञ्चवर्णोना पुष्पोधी तेमज्ज
 नात नातना चित्रोनी रचनाधी शोभते ओउ पुष्पे ने भाउवे बनावे डस,
 भृग, भोर, कौच, सारस, चक्रवाक मदनशाल अने जोगल आणधा पशु
 पक्षीओ ना चित्रो थी भाउवाने शबुगारे तथा छंडाभृग, वरु, वज्र, घोडो,
 भगर, पक्षी व्यालक, (सर्प), किन्नर, रुरु, शरभ इधी, वनलता, अने
 पञ्चलताना सुद्ध चित्रोधी भाउवाने अद्भुत रीते सुशोभित ठरे

पुष्पमण्डप किमती तेमज्ज मंडापुरोधने योग्य विशाल छोवो नेधओ

(तस्मिन् बहुमज्जदेसभाण एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्वानि मुयत्
 उल्लोलयसि ओलवेह, ओलवित्ता पडमावह देवीं पडिवाळेमाणा २ चिट्ठह,
 तएण ते कोडुमिया जाव चिट्ठति)

अने तावेलो अद्धरवानी नीचे ठीक मध्यभागमा नाकने चोतानी सुवास
 थी नृत्य करवनार ओक, जडु भोटो श्रीरामकांड लटकावे

लभ्य पद्मावती देवीं 'पडिवाळेमाणा' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिका कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-यथापद्मान्त्यासमादिष्ट तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्म॥मू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी वल्ल० कोडुविए एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सागेयं नगर सव्विभतर वाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुविय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्टवेह, तएण तेऽवि तहेव उवट्टावेति । तएणं सा पउमावई देवी अंतो अते उरसि णहाया जाव धम्मियं जाण दुरुढा, तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरि-बुडा सागेय नगरमज्झमज्जेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्ख-रणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइ भूया उल्लपडसाडिया जाइ

काण्ड-पुष्पो का गजरा-कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गन्ध निकल रही हो को लटकावे । लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहा प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें । इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियों को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मंडप की रचना करने को कहा-उन्होंने सब कार्य व्यवस्थित ढंग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहा ठहरे रहे । सूत्र " १५ "

लटकावाने भारी-पद्मावती देवीनी भधा त्या प्रतीक्षा कृता शैक्षाय आ-प्रभाणु पद्मावती देवीणे कौटुम्बिक पुरुषोने नागमंडोत्तर विधे सयने आभ्या पद्मावती देवीना आदेश सुश्रण कौटुम्बिक पुरुषोणे भाणीओने ओलाव्या अने ओलावीने तेभने यथायोग्य पुष्पमंडप गनाववानी आजा आपी आ प्रभाणु अधु नाम व्यवस्थित रीते पतावीने पद्मावती देवीनी राहु लेता तेओ त्या शैक्षाय ॥ सूत्र " १५ " ॥

તત્થ ઉપ્પલાહ જાવ ગેણહરૂ, ગિણિહરૂ જણેવ નાગધરૂ તેણેવ
પહારેથ ગમણાણ, તણ, પડમાવરૂણ દાસવંડીઓ વહૂઓ
પુપ્પપડલગહરૂથગયાઓ ધૂવકડુચ્છુગહરૂથગયાઓ પિટ્ટઓસમ-
ણુગચ્છતિ । તણં પડમાવરૂ સઠિવરૂણ જણેવ નાગધરૂ તેણેવ
ઉવાગચ્છહરૂ, ઉવાગચ્છિત્તા નાગધરૂ અણુપવિસહરૂ, અણુપવિસિત્તા
લોમહરૂથગ જાવ ધૂવ હરૂહરૂ, હરૂહિત્તા પઢિવુઢિ પઢિવાલેમાણી
પઢિવાલેમાણી ચિટ્ઠહરૂ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

ટીકા — ‘તણ સા’ ઇત્યાદિ-તત્ત્વમત્તદનન્તર ગલુ સા પદ્માવતી દેવી
કલ્પે દ્વિતીયદિવસે પ્રભાતે કાઠુમ્બિકારૂ=નાગ્ગારિણ. પુન્નપાન્ એવ=વક્ષ્યમાણ-
પ્રકારેણાવાદિત્-મો દેવાનુપ્રિયા । સિપમેય=શીઘ્રમેય, સાકેત નગર ‘સન્નિમતર
વાહિરિય’ માખ્યતરવાણ=અખ્યન્તરેણ-મં યમાગેન મહ ઘાવ વહિર્માગ યત્ર તત્-
‘આસિત્તસમ્મજ્જિઓવલિત્ત’ આસિત્ત સમાર્જિતોપલિપ્ત=આસિત્ત=સુગન્ધિતજલ-
રાદ્રીકૃત સમાર્જિત=માર્જિત્યાદિભિઃ કચરાપસારણેન નિર્મલીકૃતં પશ્ચાદુપલિપ્ત

‘તણં સા પડમાવરૂ દેવી ઇત્યાદિ’ ।

ટીકાર્થ-(તણ) હસ કે વાદ (સા પડમાવરૂદેવી) ઉસ પદ્માવતીદેવીને
(કલ્પ કોઢુવિણ એવ વયાસી) દુસરે દિન પ્રાન કાલ ઉન કૌટુમ્બિક
પુરુષોં સે એસા કહા-(લિપ્પામેય મો દવાણુપ્પિયા ! સામેય નગર
સન્નિમતર વાહિરિય આસિત્ત સમ્મજ્જિઓવલિત્ત જાવ પન્નવપ્પિણેતિ)
મો દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ્ર હી સાકેત નગર કો મીતર વાહિર
સુગન્ધિત જલ સે સીચો, વુહારુ લેકર ઉસે કૂડા કર કેટ કચરા હટાકર
ધિલકુલ સાફ કરો, મોવર આદિસે ઉસે લીપોં હસ પ્રકાર પદ્માવતીદેવી

‘તણ સા પડમાવરૂદેવી’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યાર બાદ (સા પડમાવરૂ દેવી) પદ્માવતી દેવાએ (કલ્પ
કોઢુવિણ એવ વયાસી) બીજે દિવસે સવારે કૌટુમ્બિક પુરુષોને આ પ્રમાણે કહ્યું
(લિપ્પામેય મો દવાણુપ્પિયા ! સામેય નગર સન્નિમતરવાહિરિય આસિત્ત
સમ્મજ્જિઓવલિત્ત જાવ પન્નવપ્પિણેતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્ત્વે સાકેત નગરો ની બહાર અને અદર
સુવાસિત પાણી છાટો સારણીથી ડચરો એકદમ માફ કરો અને છાણુ વગેરેથી
દીપો પદ્માવતી દેવીની આશા સાલણીને કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તે પ્રમાણે જ

गोमयादिनाऽनुलिप्तं कुरुत यावत् प्रत्यर्पयन्ति-यथा-पद्मावती देव्या आदिष्टं तथा कृत्वा ते कौटुम्बिका हे स्वामिन्य' सर्वं साधितमस्माभिरिति-तद्वाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति-आवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं सा पद्मावती देवी ' दोच्चपि ' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयित्वा एवमावदित्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव ' लहकरणजुत्त० ' लघुकरणयुक्त० यावद् युक्तमेव वृषभैर्युक्ता कृत्वा रथमुपस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु तेऽपि कौटुम्बिकपुण्या-पि यथा पद्मावत्या समादिष्टं तथैव रथमुपस्थापयन्ति । ततः खलु सा पद्मावती देवी अन्तोऽन्तःपुरे=अन्तःपुरस्य मध्ये स्नाता यावद् सर्वालंकारविभूषिता धार्मिक यान=रथ, दूरुढा=आरो

के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने वैसा ही सब कुछ कार्य यावत् कर दिया और पीछे पद्मावती के पास जाकर कहा-स्वमिनी ! आपने जैसा काम करने को कहा या हम ने वह काम वैसा ही कर दिया है । (तएण सा पडमावई देवी दोच्चपि कौटुम्बिक० खिप्पामेव लह करण जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्टवेह, तएण ते वि तहेव उवट्टावेंति) इसके बाद पद्मावती देवीने दुवारा भी उन कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया और बुलाकर कहा-भो देवानुप्रियों ! तुम लोग भीघ ही जल्दी २ चाल से चलने वाले बैलों को जोत कर यहा एक रथ को उपस्थित करो । पद्मावती की इस आज्ञा को पाकर वे कौटुम्बिक पुरुष भी पद्मावती के आदेशानुसार रथ को बैलों से युक्त कर ले आये । (तएणं सा पडमावई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जाव वम्मिय जाणं दुरुढा) रथ जब आ चुका-तत्र पद्मावती देवी ने अन्तःपुर के भीतर ही स्नान किया यावत् समस्त अलंकारों से आगने आप को विभूषित कर फिर वह

कथुं अने त्यार भाद तेमनी पासे आवीने कडिवा लाव्या-डे स्वाभिनि । तमे ने काम करवानी अभने आज्ञा आवी डती ते काम अमे ने सरस रीते पूछुं कगी दीधु छे

तएण सा पडमावईदेवी दोच्चपि कौटुम्बिक खिप्पामेव लहकरण जुत्ता० जाव जुत्तामेव उवट्टवेह तएण तेवि तहेव उवट्टावेंति)

त्यार भाद पद्मावती देवीने भीघ वार कौटुम्बिक पुरुषोंने जोला-या अने जोलावीने कछु " हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वरं गीघ्रयति वाणो णणह नेतरिने जोड रथ लावे पद्मावती देवीनी आग्रहाण्णे आज्ञा सालगाने कौटुम्बिक पुरुषो पणु तेमनी आज्ञा भुज्जम गथमा णणह नेतरिने लध अथ्या (तएण सा पडमावई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जत्र धम्मिय जाणं दुरुढा) न्यारे रथ सज्ज थधने आवी गये। त्यारे पद्मावती देवीने रणुवामनी अदर न स्नान कथुं यावत् सर्वं प्रजारना धरेण्णाओधी पोताना गनीरने शणुगाधुं अने त्यार पछी ते धार्मिक रथमा गेमी गध

हतिस्म । ततः खलु सा पद्मावती देवी निजकपरिवारसपरिधृता सख्यादिपरि
 वारेण युक्ता साकेतनगर मध्यमभ्येन निर्याति=निर्गच्छति । निर्याग=निर्गत्य
 यत्रैव पुष्करणी कमलयुक्ता यापी वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुष्करणीमव
 गाहते=प्रविशति । अगमात् जलमज्जन यावत्-स्नानं कृत्वा परमशुचिभूता 'उल्लष-
 ङ्गसाडिया' आर्द्रपटशाटिका, सार्द्रपरिधानीयवस्त्रा यानि तस्या पुष्करिण्यामुत्प
 लानि यावत्पद्मादीनि तानि गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव नागगृह वर्तते तत्रैव प्रधारयति
 प्रवर्तते गमनाय । ततस्तदनन्तरं खलु पद्मावत्या दासवेद्यो बह्व्यः पुष्पपटल-
 कदस्तगताः=हस्तपरिधृतपुष्पकरण्डकाः धूपकडुन्दुकदस्तगताः=वृषाधारपात्राणि

उस धार्मिक यान पर रथ पर आरुढ़ हो गई । (तएण सा पउमावई
 देवी नियगपरिवाल सपरिधुडा सागेय नयर मज्झ मज्झे ण णिज्जाइ
 णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद पद्मावती
 देवी अपने परिवार से घिरी हुई होकर उस साकेत नगर के ठीक बीचों
 बीच के मार्ग से होकर निकली-निकल कर वह जहा कमलों से युक्त
 घापी थी-वहाँ पर आई- (उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ) आकर
 उस ने उस पुष्करिणी में प्रवेश किया - (ओगाहित्ता जलमज्जणं
 जाव परमसुहभूया उल्ल पउ साडिया जाइ तत्थ उप्पलाइ जाव गेण्हइ)
 प्रवेश कर जल स्नान किया यावत् परम शुची भूत बनी हुई उस ने
 गीली साड़ी पहने ली पुष्करिणी से कमल चुन लिये (गिण्हित्ता जेणे
 व नागघरणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) चुन कर फिर वह जहा नाग
 घर था उस ओर चल दी- (तएण पउमावईए दासवेडीओ बह्वओ

(तएण सा पउमावईदेवीनियग परिवालसपरिधुडा सागेय नयर मज्झ
 मज्झेण णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ)

त्यार भाइ पद्मावती देवी चोताना सभूखुं परिवारनी साथे साकेत नग
 रीनी भरा भर मध्यमार्गमा थधने पसार थध भने न्या कमणो युक्त पाव
 डती त्या पडोथी (उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ) त्या पडोथीने ते
 पुष्करिणी (कमलवाव) मा उतरी

ओगाहित्ता जलमज्जण जाव परमसुहभूया उल्ल पउसाडिया जाइ तत्थ
 उप्पलाइ जाव गेण्हइ)

उतरीने तेले पाणीमा स्नान कयुं यावत ते परम पवित्र थधने तेले
 लीना लुगडाथीव पुष्करिणीमाथी कमणो खूया (गिण्हित्ता जेणेव नागघरणे तेणेव
 पहारेत्थ गमणाए) खूया भाइ पद्मावती देवी न्या नागघर डतु ते तरई गई

દસ્તે ધૃતવત્યઃ પૃષ્ઠતઃ સમનુગચ્છન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ મા પદ્માવતી દેવી સર્વદ્યૌર્ધા= સર્વિદાસ્યાદિપરિજનૈઃ સહ યત્રૈવ નાગગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય નાગગૃહ- મનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય રોમહસ્તક્રુ=મયૂરપિચ્છનિર્મિતમાર્જની ગૃહીત્વા નાગગૃહ સમાર્જ્ય યાવદ્ ધૂપ દદતિ, નાગગૃહાભ્યન્તરે સમન્તાત્ ધૂપ દદતિ સ્મ । ધૂપં દગ્ધ્વા પ્રતિબુદ્ધિ=પ્રતિબુદ્ધિનૃપ સ્વપતી પ્રતિપલ્યન્તી પ્રતિપાલયન્તી=પુનઃ પુનઃ પ્રતીક્ષમાણા તિષ્ઠતિ સ્મ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

પુષ્પપટલગદ્ધગયાઓ ધૂવકડુચ્છગદ્ધગયાઓ પિટ્ઠઓ સમનુગ-
ચ્છતિ) ઉસ કે પીછે ૨ ઉસ કી અનેક દાસ ચેટિયા પુષ્પ કરણડો કો
ઑર ધૂપ કે પાત્રો કો હાથો મેં લિયે હુપ ચની । (તણ પડમાવઈ
સન્નિહિત જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા નાગધરય
અણુપવિસઈ, અણુપવિસિત્તા લોમહત્થગ જાવ ધૂવ હહઈ હહિત્તા પઢિ
બુદ્ધિ પઢિવાલેમાણી ૨ ચિટ્ઠઈ) હસ કે અનન્તર પદ્માવતી સચ્ચી, દાસી
આદિ પરિજન રૂપ અપની મમસ્ત ઋદ્ધિ કે સાથ જહા વહ નાગ ઘર
યા વર્હા આઈ-વર્હા આઠર વહ નાગ ઘર કે ખીતર ગઈ ખીતર જાકર
ઉસ ને વહા રચી હુઈ મયૂર પિચ્છ નિર્મિત માર્જની કો ઉઠાયા-ઉઠા કર
ઉસ ને ઉસસે ઉસ નાગધર કો જ્ઞાઢા જ્ઞાઢ કર ફિર ઉસ ને વહા
યાવત્ ધૂપ જલાઈ । ધૂપ જલા કર ફિર વહ અપને પતિદેવ પ્રતિબુદ્ધિ
રાજા કી પ્રતીક્ષા કરતી હુઈ બેઠ ગઈ । સૂત્ર ' ૧૬ '

(તણ પડમાવઈ દાસ ચેટીઓ વહૂઓ પુષ્પપટલગદ્ધગયાઓ ધૂવકડુ-
ચ્છગદ્ધગયાઓ પિટ્ઠઓ સમનુગચ્છતિ)

તેની પાછળ ધણી દાસ-દાસીઓ પુષ્પ-હરણકો તેમજ ધૂપદાનીઓ
હાથોમા ઉચકી ચાલવા લાગી

(તણ પડમાવઈ સન્નિહિત જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા
નાગધરય અણુપવિસઈ અણુપવિસિત્તા લોમહત્થગ જાવ ધૂવ હહઈ હહિત્તા પઢિબુદ્ધિ
પઢિવાલેમાણી ૨ ચિટ્ઠઈ)

આરીતે પદ્માવતી દેવી સચ્ચી દાસી વગેરે પરિજન રૂપ પોતાની સંપૂર્ણ
ઋદ્ધિની સાથે જ્યાં તે નાગધર હતો ત્યાં પહોચી અને ત્યાં પહોચીને તે
નાગધરનાં અદર ગઈ ત્યાં જઈને તેણે મોરપીંછી હાથમા લીધી અને ત્યાર
પછી તેણે નાગધરને સ્વચ્છ જનાવ્યું નાગધરની મદદ કરાને તેણે ધૂપ સળગાવ્યો
અને પછી પોતાના પતિ પ્રતિબુદ્ધિની પ્રતીક્ષા કરતી ત્યાં જ બેસી ગઈ સૂ. ૧૬

मूत्रम्—तएण पडिबुद्धी णहाए हत्थिखधवरगते सकोरट जाव
 सेयवरचामराहिं० हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं सा-
 केयनयरं० णिगच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव नागधरे तेणेव उवा-
 गच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आ-
 लोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता
 पासइ तं एगं महं सिरिदामगंड। तएण पडिबुद्धी त सिरिदाम-
 गड सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि
 जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्चं एव वयासी—तुमन्न देवाणु
 प्पिया । मम दोच्चंण बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिं-
 ङसि बहूणि रायईसर जाव गिहाइं अणुपविससि त अत्थि णं
 तुमं कहिचि परिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुठ्वे जारिसए णं इमं
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धि राय एवं वयासी — एव खलु
 सामी ! अह अन्नया कयाइ तुव्वम दोच्चेण मिहिल रायहाणिं
 गए, तत्थ णं मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए
 अत्तयाए मल्लीए सवच्छरपडिलेहणगसि दिठ्वे सिरिदाम डिं
 दिट्ठपुठ्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदाम
 गडे सयसहस्सतम कल ण अग्घइ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धि
 अमच्च एव वयासी—केरिसिया ण देवाणुप्पिया । मल्ली विदेह-
 रायवरकन्ना जस्स णं सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगंडस्स
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमपि कल न
 अग्घइ ?, तएण सुबुद्धी पडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी—

विदेहरायवरकन्नगा सुपइडियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ,
तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूय सदावेइ, सदावित्ता एवं
वयासी—गच्छाहि णं तुम देवाणुप्पिया । मिहिलं रायहणिं
तत्थ णं कुभगस्स रन्नो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लि
विदेहवररायकण्णग मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा
सयं रज्जं सुक्का, तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रत्ता एवं बुत्ते समाणे
हट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे
आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं
पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरुढे जाव हयगयमहयाभडचड-
गरेण साएयाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए
जेणेव मिलिा रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सू०१८॥

टीकाः—ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको राजा स्नातो
मुकुटाद्यलङ्कारवस्त्रविभूषितः हस्तिस्सन्धवरगतः 'सकोरण्टमल्लदामेण' सको-
रण्टमाल्यदाम्ना कोरण्टाख्य पुष्पन्तमकवन्ति माल्यदामानि पुष्पस्रजस्तैः सहितेन
छत्रेण ध्रियमाणेन यावत् श्वेतमरचामरैरुद्बोजितैश्च सहितः, हयगजरथयोधमहा-

‘तएण पडिबुद्धी णहाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पडिबुद्धी) प्रतिबुद्धि राजाने (णहाए)
स्नान किया बाद से वे मुकुट आदि अलकारों से और राजसी वस्त्रों
से अलंकृत होकर (हस्तिग्वधवरगए) अपने पट्ट हाथी पर बैठ गये—
(सकोरट जाव सेयवरचामराहिं० हयगयरह जोहमहया भड

‘तएण पडिबुद्धिणाए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (पडिबुद्धि) प्रतिबुद्धि राजाने (णहाए) स्नान
कियुं अने मुकुट पगेरे आबूषणो तेमज्ज राजन्नी वओथी अलंकृत थधने
(हस्तिग्वधवरगए) पोताना आस हाथी उपर सवार थया

(सकोरट जाव सेयवर चामराहिं० हयगयरह जोह महया भडचडकरेहिं
साकेयनयर० निग्गच्छइ)

भट चरकरपहरै हय गजादीना सपूँश्च सहितः साकेतनगरस्य मध्यभागेन निर्गच्छति । निर्गत्य स प्रतिबुद्धितृपो यत्रैव नागट्टह उतते तत्रैवोपागच्छति उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=अतर्गति प्रत्यवरण=अधः प्रत्यवतीर्य आलोके=नागदर्शने प्राप्ते सति प्रणाम करोति कृत्वा पुष्पमण्डप पश्चात्पत्नी निर्मापित-पुष्पमयमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पश्यति तदंशं महत् श्रीदामकाण्डम् ।

बड कर पट करेहिं साकेय नयर० निगगच्छइ) उन के बैठते ही छत्र धारी ने उन पर कोरण्ट पुष्प के गुच्छों से निर्मित मालाओं से युक्त छत्र को तान दिया ।

चमर ढोर ने वालों ने उन पर श्वेत उत्तम चमर ढोरना प्रारंभ कर दिया । बाद में वे हय, गज आदि के समुदाय से युक्त होकर साकेत नगर के मध्यभाग से होकर निकले (निगगच्छिता जेणेव नाग घरे, तेणेव उवागच्छइ) निकल कर नागघर की ओर चल दिये (उवागच्छिता हत्थि खधाओ पच्चो रुहइ, पच्चो रुहत्ता आलोए पणाम करेइ) वहाँ पहुँच कर वे उस हाथी से नीचे उतरे-उतर कर ज्यों ही उन्हें नाग प्रतिमा दिखलाई पड़ी तो उसी समय उन्होंने उसे नमस्कार किया ।

(करित्ता पुष्पमण्डप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, त एग मह सिरिदामगडे) नमस्कार कर फिर वे पश्चात्पत्नी देवी द्वारा निर्मापित पुष्प मण्डप में प्रविष्ट हुए । वहाँ उन्होंने ने उस विशाल श्री दाम काण्ड

राज न्याये हाथी उपर सवार थई गया त्यारे छत्र धारीओ तेमना उपर डोरट पुष्पोना गुच्छोथी अनेहु तेमज भाणाओथी शोलितु छत्र तावयु अमर धारीओ तेमना उपर सहइ तेमज उत्तम अमर डोणवा दाव्या आम प्रतिबुद्धि राज डंय, गज वगेरे समुदायनी साथे साकेत नगरना मध्यभागे थंनि (निगगच्छिता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ) ने तरइ नागघर छतु ते तरइ गया

(उवागच्छिता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता आलोए पणाम करेइ) त्या पडोथीने तेओ हाथी उपरथी नीचे उतर्या अने उतरिने न्यारे तेओओ नागप्रतिमाओ ओई त्यारे तरत ज तेमछे तेमने नमन कयु

(करित्ता पुष्पमण्डप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, त एग मह सिरिदाम गडे) नमन कयी आइ राज पश्चात्पत्नी देवी वडे अनाववाभा आवेला पुष्प मण्डपमा प्रविष्ट थया त्या तेमछे ओटा श्रीदामकांडने जेथे

ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिस्त श्रीदामकाण्ड सुचिर काल=बहुकाल निरीक्षते एकाग्रमनसा पश्यतिस्म । निरीक्ष्य तस्मिन् श्रीदामकाण्डे जातविस्मयः ' अपूर्वदृष्टमिदं श्रीदामकाण्ड ' मित्याश्चर्यं प्राप्तः सन् सुबुद्धि=सुबुद्धिनामकममात्य=स्वमन्त्रिणम्, एव=रक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु मम ' दोच्चेण ' दोत्येन=दूतो भूत्वा बहून् यावत् ग्रामाकरनगरसन्निवेशान् अहिण्डसि = परिभ्राम्यसि, बहूनि च राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठी सेनापतिमार्यगणानां यावद् गृहाणि अनुप्रविशसि, तदस्ति खलु त्वया दृष्टपूर्वं

को-देखा । (तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खत्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) देख ने के बाद प्रतिबुद्धि राजा ने बहुत देर तक उस का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया ।

निरीक्षण करने के बाद उसे उस श्रीदामकाण्ड के विषय में बड़ा आश्चर्य हुआ । आश्चर्य युक्त होकर उसने अपने सुबुद्धि मन्त्रीसे फिर इस प्रकार कहा-(तुम एण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि ग्रामागर जाव गिहाइ अणुप्रविशसि-त अत्थि ण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठ पुब्बे जारिसए ण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत होकर अनेक ग्रामों में अनेक आंकों में, अनेक नगरों में अनेक सन्निवेशों में घूमते फिरते हो वहां बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापति और सार्वबाहों के घरों में भी आते जाते रहते हो, तो क्या तुमने ऐसा

(तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खत्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्च एव वयासी)

तेने जेने प्रतिबुद्धि राजाके सूक्ष्म दृष्टिथी बहु वधत सुधी तेनु निरीक्षु कयु

राजने श्रीदामकांड जेने ज्ञान आश्चर्य थयु तेमणे पोताना मन्त्री सुबुद्धिने आ प्रमाणे कयु-

(तुमन् देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि ग्रामागर जाव गिहाइ अणु प्रविशसि त अत्थि ण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुब्बे जारिसएण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

हे देवानुप्रिय ! माराहत यने तमे धरुा गाभो, आकरो नगरो अने सन्निवेशोभा करुा रेडो छो, त्या धरुा राजा ईश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्वबाहोना निवास स्थानभा पयु आवागमन

कुत्रचिदेतादृश श्रीदामकाण्डम्, यादृश खलु इदं पद्मावत्या देव्या श्रीदामकाण्डं वर्तते । ततः खलु सुबुद्धिः सुबुद्धिनामा मन्त्री प्रतिबुद्धिं राजानमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एव खलु स्वामिन् ! अहमन्यदा कदाचित् युष्माकं दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिला राजधानीं गतः ।

तत्र=मिथिलाराजधान्या खलु मया कुम्भकस्य=कुम्भकनाम्नो राज्ञो दुहितृपुत्र्याः प्रभावत्या देव्या आत्मजाया मल्ल्या=कुम्भकनृपस्य पुत्री या प्रभावती देव्या आत्मजा=गर्भजा मल्ली नाम्नो कुमारी वर्तते तस्या इत्यर्थः, 'सर्वच्छरपरिलेहणगसि' 'सर्वत्सरप्रतिलेखनके=वर्षवृत्तिसंख्याकरणदिनसे वार्षिके जन्मदिवसोत्सवकाले इत्यर्थः दिव्यम् आश्चर्यकारक श्रीदामकाण्डं दृष्टपूर्व=पूर्वकाळे दृष्टम् । तस्य खलु श्रीदामकाण्डस्येदं पद्मावत्या श्रीदामकाण्डं श्रुतसहस्रतमा कला

श्रीदामकाण्डं जैसा कि ये श्रीदामकाण्ड पद्मावती देवी का है कहीं देखा है ? (तएव सुबुद्धी पंडिबुद्धिं राय एव वयासी) राजा की इस प्रकार बात सुनकर सुबुद्धि अमाल्य ने उन प्रतिबुद्धि राजा से इस तरह कहा (एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुम्ह दोच्चेण मिहिल राय हाणि गए तत्थ णं मए कुमगस्स रन्नो धूयाए पमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए सर्वच्छरपडिलेहणगसि दिव्वे सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे) स्वामिन् ! मैं किसी एक समय आपका दूत बनकर मिथिला राजधानीमें गया हुआ था । वहाँ मैंने कुम्भक नरेश की पुत्री प्रभावती देवी की आत्मजा-गर्भजा-मल्ली कुमारी की वर्ष गाठ के अवसर पर आश्चर्य कारक श्रीदामकाण्ड को देखा था ।

(तस्स णं सिरिदामगडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगडे सयसहस्सतमे कल्ल ण अग्घइ) उस के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्री

कहे छे, तो तभे पद्मावती देवीना जेवो श्रीदामकाण्ड काण्ड स्थाने जेथे छे ? (तएव सुबुद्धि पंडिबुद्धिराय एव वयासी) राजनी आ प्रभावे व त सालणीने अभात्य सुबुद्धिजे प्रतिबुद्धि राजने आ प्रभावे कहु-

-(एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुम्ह दोच्चेण मिहिल राय हाणि गए तत्थ णं मए कुमगस्स रन्नो धूयाए पमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए, सर्वच्छरपडिलेहणगसि दिव्वे सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे)

हे स्वामिन् ! ओह वण्ठे तमासा दूत तरीके जे हुं, मिथिला राजधानी भा गये छेतो ।

त्या मे कुलक राजनी पुत्री प्रभावती देवीनी आत्मजा-पुत्री-मल्ली कुमारीना जन्मोत्सव प्रसंगे भूषण नवार्धपमाडे तेवो श्रीदामकाण्ड जेथे छेतो ।

नार्हति । मल्लीकुमार्या यदस्ति श्रीदामकाण्ड तस्य शोभासुगन्धादिगुणाना लक्षा-
शमपि प्राप्तुं न शक्नोति पद्मायत्याः श्रीदामकाण्डमित्यर्थः ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिममात्यमेवमादीत्-हे देवानुप्रिय ! मीदृशी खलु मल्ली
विदेहराजवरकन्या यस्याः खलु सवत्सरप्रतिलेखनके श्रीदामकाण्डस्य पद्मा
यत्या देव्या श्रीदामकाण्ड शतसहस्रतमामपि कला नार्हति ? । ततः खलु सुबुद्धिः
प्रतिबुद्धिमिक्ष्वाकुराजमेवमादीत्-हे स्वामिन् । विदेह राजवरकन्यका मल्लीमाम्नी

दामकाण्ड लक्षाश (लाखमा भाग भी सुन्दर और सुगन्धीत में नहीं
है) भी नहीं हैं (तएण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) इस
प्रकार सुनने के बाद प्रतिबुद्धि ने सुबुद्धि अमात्य से ऐसा कहा-
(केरिसियाण देवानुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवर कन्या) हे देवानुप्रिय !
विदेह राजा की वह उत्तम कन्या मल्ली कुमार कैसी है कि
(जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईए देवीए
सिरिदामगडे सयसहस्सत्तमपि कल न अग्घइ) जिस की वार्षिक जय
ती के श्रीदाम काण्ड के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्रीदामकाण्ड
लक्षाश भी नहीं ज्ञात हो रहा है ।

(तएण सुबुद्धिपडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी) हम तरह
सुनकर सुबुद्धि ने इक्ष्वाकु वशों में उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजा से ऐसा कहा
(विदेहरायवरकन्या सुपडिहिय कुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नभो) स्वा

(तस्स ण दिरीदामगडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगडे सय सहस्सत्तमे
कलल ण अग्घइ)

तेनी सामे पद्मावती देवीने आ श्रीदामकाण्ड लक्षाश पणु नथी ओट्ठे
के सुगन्ध के सौध्वं भनेनी इष्टिओ मल्लीकुमागीना जन्मोत्सव प्रसंगना
श्रीदामकाण्डनी सामे आ कथं जनथी (तएण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव
वयासी) आरीते आभाणीने प्रतिबुद्धिओ सुबुद्धि अमात्यने आ प्रभावे कल्लु-
(केरिसियाण देवानुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवरकन्या) हे देवानुप्रिय ! विदेह
राज पुत्री मल्लीकुमागी ओवी देवी छे के

“ जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईएदे वीए सिरि
दामगडे सयसहस्सत्तम पि कल न अग्घइ ”

जेमना जन्मोत्सवना श्रीदामकाण्डनी सामे पद्मावती देवीने आ श्रीदाम
काण्ड लक्षाश पणु लागते नथी

(तएण सुबुद्धि पडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी) आ रीने आभाणीने
इक्ष्वाकुवशमा उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजने सुबुद्धिओ कल्लु (विदेहरायवरकन्या

सुप्रतिष्ठितकर्मोन्नतचारुचरणा, सुप्रतिष्ठितौ=सुष्ठुसंस्थानवती=कर्मोन्नती=कर्म
पृष्ठमनुपपुन्यन्तौ चारु=सुन्दरी चरणी यस्या मा तथा, वर्णक=वर्णन विशेषतो
जम्बूद्वीपमण्डपादौ द्रष्टव्यम् ।

ततः खलु प्रतियुद्धिभूषः सुमुद्रेरमात्यम्यान्तिके एतमर्थं मल्लीकुमारी सौन्द
र्यादि गुणवर्णनरूप श्रुता=श्रवण गोचरीकृत्य, निशम्य=श्रवणतोऽप्यार्य श्रीदामका-
ण्डजनितहर्ष=श्रीदामकाण्डगुणश्रवणमजाऽप्रमोदः सन् दूत शब्दयति आह्वयति,
शब्दयित्वा एवमादीत्-हे देवानुप्रिय ! गच्छ खलु त्व मिथिला राजधानी,
तत्र खलु कुम्भरुस्य राज्ञो दुहितर प्रमायत्वा देव्या आत्मजा मल्लीं विदेहवरायक

मिन् । वह विदेहराज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी अच्छे आकार
वाले, कर्म की पृष्ठ के समान उन्नत सुन्दर चरण वाली है । इस का
विशेष वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि में किया गया है ।

(तएण पडिषुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा
णिसम्म, सिरिदामगडजणितहासे दूय सहावेह) इस प्रकार श्रीदाम
काण्ड के गुणों के श्रवण से अत्यधिक हर्षित हुए प्रतियुद्धि राजा ने
सुबुद्धि अमात्य के मुख से मल्ली कुमारी के सौन्दर्य आदि गुणों का
वर्णन सुनकर और उसे हृदय में निश्चित कर दूत को बुलाया (सहा
वित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छाहिण तुम
देवानुप्पिया ! मिहिल रायहाणि) हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नाम की
राजधानी को जाओ- (तत्थ ण कुम्भरुस्स रण्णो धूय पमायईए देवीए

सुपइट्ठिय कुम्भरुन्तय चारुवरणा वज्जओ) हे स्वाभिन् ! ते विदेह राजनी
उत्तमकन्या मल्लीकुमारी सरस आकारवाला कायजानी पीठना जेवा सुहर
उन्नत शरणावाणी छे (तेभनु विशेष वरुण जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वगेरे भा कर
वामा आण्यु छे

(तएण पडिद्धि सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सिरि-
दामगडजणितहासे दूय सहावेह)

आ प्रमाणे सुबुद्धि अमात्यना मोढेथी श्रीदामकाणा सुबु श्रवणथी
तेमज मल्लीकुमारीना सौदर्य वगेरे सुबुधानी यथा सालागीने तेने हृदयभा
अवधारित करीने श्रवण हर्षित थयेला प्रतियुद्धि राजाजे इतने जेलाये।
(सहावित्ता एव वयासी) जेलावीने तेने कहु- (गच्छाहिण तुम देवानुप्पिया !
मिहिल रायहाणि) हे देवानुप्रिय ! तमे मिथिलानी राजधानीमा जये।

(तत्थण कुम्भरुस्स रण्णो धूय पमायईए देवीए अत्तय मल्लिं विदेहवराय
कण्ठाग मम भरियत्ताए वरेहिं)

ન્યકા મમ માર્યાત્વેન વરય, અયમર્થ -હે દેશાનુપ્રિય ! મિથિલા ગત્વા કુન્ભકન્ટપ
દ્રુહિ-સાકેતનગરાધિપતિઃ પ્રતિબુદ્ધિનામાન્ટપસ્તવ મન્યસા મલ્લીં ધર્મપત્નીત્વેન
ગ્રહીતુમિચ્છતિ, તદનુમન્યસ્વેતિ ।

યદ્યપિ ચ સા સ્વયં રાજ્ય શુલ્ક=મૂલ્ય યસ્યાઃ સા તથા, સ્વસ્ય નિરુપમ
સુશીલાદિગુણવત્તયા સા યદિ સ્વ શુલ્કત્વેન રાજ્યમમિલપેત્તદાઽહ સર્વં રાજ્ય
સમર્પયામીતિ ભાવઃ। તત્ત શ્વલુ સ દૂતઃ પ્રતિબુદ્ધિના રાજા એમુંક્તઃ સન્ હૃષ્ટતુષ્ટો

અત્તય મર્તિલ વિદેહવરરાયકળગમ મમ મારિયત્તાએ વરેહિં) વહાં
કુન્ભક રાજા કી પુત્રી મલ્લી કુમારી કો કિ જો પ્રભાવતી દેવી કે ગર્ભ
સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ મેરી માર્યાં કે રુપ સે વરો અર્થાત્ તુમ મિથિલા રાજ
ધાની મેં જાકર કુન્ભક રાજા સે કહો કિ સાકેતાધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા
આપકી કન્યા મલ્લી કુમારી કો અપની ધર્મપત્ની બનાના ચાહતે હૈ-
સો આપ ઇસ કી સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરો

(જહ વિયળ સા સય રજસુક્ષ્મા) યદ્યપિ મૈં ઇમ બાત કો જાનતા
હૂં કિ વહ કન્યા રાજ્ય હી હૈ શુલ્ક જિસ કા એમી હૈ-અર્થાત્ વહ અનુ
પમ સુશીલાદિ ગુણોં સે યુક્ત હોને કે કારણ અપને શુલ્કપને સે રાજ્ય
કી અભિલાષા યદિ કરેગી તો મૈં ઇસે સમસ્ત અપના રાજ્ય મી
સમર્પિત કર દૂંગા ।

(તણ સે દૂણ પહિબુદ્ધિના રન્ના એવ બુત્તે સમાણે હટ્ટ૦ પહિ
સુણેહ) ઇમ પ્રકાર રાજા કા અભિપ્રાય હૃદયગમ કર વહ સુબુદ્ધિ
અમાત્ય બહા હી અધિક હર્ષિત એવ સતુષ્ટ હુઆ ઓર ઇસ ને મિથિલા
રાજધાની જાના સ્વીકાર કર લિયા । (પહિસુણિત્તા જેણેવ સણ ગેહે

અને પ્રભાવતી દેવીના ઉદરથી જન્મ પામેલી કુલકરાજની પુત્રી કુમારીની
મારી વધૂના રૂપે યાચના કરે, એટલે કે તમે મિથિલા રાજધાનીમા જઇને
કુલક રાજાને કહોકે સાકેતના અધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા તમારી પુત્રી મલ્લી
કુમારી ને પોતાનીવધૂ બનાવવા ચાહે છે તો તમે તેની સ્વીકૃતિ આપો

(જહવિયળ સા સય રજસુક્ષ્મા) મલ્લીકુમારી અત્યન્ત સૌંદર્યવતી તેમજ
રાજ્ય જેતુ શુલ્ક (કિંમત) છે આવી અઢધુન સુશીલ વગેરે ગુણોવાળી કન્યા
છે એ વાત હું સારી પેઠે બાણ છુ એટલે કે અનુપમ ગુણવતી મલ્લી
કુમારી પોતાના શુલ્ક રૂપે મારા રાજ્યને પણ માગશે તો હું માફ આપુ
રાજ્ય તેને સમર્પિત કરવા તૈયાર છુ

(તણ સે દૂણ પહિબુદ્ધિના રન્ના એવ બુત્તે સમાણે હટ્ટ૦ પહિસુણેહ)
આ રીતે રાજાનો અભિપ્રાય હૃદયમા ધારણ કરાને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ખૂબ જ

ડિઠ્ઠેન પ્રમુદિતો ભૂત્યા પ્રતિશ્રુણોતિ આત્મામક્ષીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય
 યત્રૈવ રત્નક ગૃહ યત્રૈવ ચાતુર્ધટોઽશ્વરયો વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગસ્ય ચાતુ
 ધર્ણટમશ્વરથ પ્રતિવલ્પયતિ=સજ્જયતિ, પ્રતિવલ્પ્ય ચાતુર્ધર્ણટમશ્વરથ સત્ત્વકૃત્ય
 દુરુદ્ઘ=સમારુદ્ઘઃ સન્ન ચાતુ-હયગજમદામટ ચટયરેણ સદિતઃ સાકેતાત્ સાકેત
 નગરાદ્ નિગચ્છતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવ પ્રિદેહજનપદઃ યત્રૈવ મિથિલાનગરી તત્રૈવ પ્રધા-
 રયતિ ગમનાય=ગતુ પ્રવૃત્ત પ્રરિથત્ત ઇત્યર્થઃ । ઇતિ પ્રતિતુદ્ધિનામકસ્ય રાણઃ સમ્ય
 ન્ધઃ કથિતઃ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

જેણેવ વાઝગઢે આસરહે તેણેવ વાઝગચ્છદ્ધ) સ્વીકાર કર પહિલે
 વહ અને ઘર ગયા ।

વહા જાકર ફિર વહ જહાં ચાર ઘટો સે યુક્ત અશ્વરથ રાજા થા
 વહાં ગયા (વાઝગચ્છિત્તા વાઝગઢ આસરહ પઢિકપ્પાવેહ) વહાં જાકર
 ઉમ ને વસે વાતુધંટ રથ કો અઠ્ઠી તરહ સજ્જિત કર વાયા (પઢિ
 કપ્પાવિત્તા દુરુદ્ઘે જાત્ર હયગય મહયા મહચઢ ગરેણ સાળયાઓ નિ
 ગચ્છદ્ધ) જત્ર રથ અઠ્ઠી તરહ સજ્જિત હો જુકા તો વહ વાદ મેં વસ
 પર આરુઢ હુઆ-ઔર હય, ગજ, મદામટોં કે સમૂહ સે યુક્ત હોકર
 સાકેત નગર સે વાહિર નિકલા (નિગચ્છિત્તા જેણેવ વિદેહ જનવણ
 જેણેવ મિથિલા રાજધાની તેણેવ પહારેથ ગમનાણ નિકલ કર ફિર વહ
 જહા વિદેહ જનપદ ઔર વસ મેં મી જહા વહ મિથિલા રાજધાની થી
 વસ ઔર ચલ દિયા । સૂત્ર “ ૧૭ ”

હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયે અને તેણે મિથિલા રાજધાની જવાની રાજાની
 આજ્ઞા સ્વીકારી (પઢિમુણિત્તા જેણેવ સદ્ ગેહે જેણેવ વાઝગઢે આસરહે તેણેવ
 વાઝગચ્છદ્ધ) સ્વીકારીતે જો પહેલા પોતાને ઘેર ગયે ।

ઘેર પહોંચીને તે જ્યા ચાર ઘટડીઓ વાળો અશ્વરથ મૂકેલો હતો ત્યાં ગયે ।
 (વાઝગચ્છિત્તા વાઝગઢે આસરહ પઢિકપ્પાવેહ) ત્યાં જઈને તેણે વાતુધંટ
 રથને સારી પેઠે શણગાળ્યો ।

(પઢિકપ્પાવિત્તા દુરુદ્ઘે જાત્ર હયગય મહયા મહચઢગરેણ સાળયાઓ નિગચ્છદ્ધ)

જ્યારે રથ સારી રીતે તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેના પર સવાર થયે અને
 હાથી ઘોડા મહાભટોના હથેલી યોદ્ધાઓની સાથે સાથે સાકેત નગરથી
 બહાર નીકળ્યો ।

(નિગચ્છિત્તા જેણેવ વિદેહ જનવણ જેણેવ મિથિલા રાજધાની તેણેવ પહારેથ
 ગમનાણ)

નીકળીને તે જ તરફ વિદેહ જનપદ અને મિથિલા રાજધાની હતી
 તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર “ ૧૭ ” ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेण समएणं अगनाम जणवए
 होत्था, तत्थण चपा नामं नयरी होत्था, तत्थण चंपाए नय-
 रीए चदच्छाए अगराया होत्था, तत्थ णं चम्पाए नयरीए अर-
 हन्नगपामोक्खा वहवे सजत्ता णावावाणियगा परिवसति अड्ढा
 जाव अपरिभूया, तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था
 अहिगयजीवाजीवे वन्नओ, तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण
 सजुत्ता णावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहिआणं
 इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पज्जित्था—से य खल्ल अम्ह
 गणिम धरिम च मेज्ज च भडग गहाय लवणसमुद्दपोतवहणेण
 ओगाहित्तए त्ति कट्ठु अन्नमन्न एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता
 गणिम च ४ गेण्हंति । गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेति, भरित्ता
 सोहणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तास विपुल असण०४उव-
 क्खडावेति मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुजावेति जाव आपुच्छंति,
 आपुच्छित्ता सगडिसागडिय जोयति, जोइत्ता चपाए नयरीए
 मज्झ मज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता सगडिसागडिय मोयति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति,
 सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउत्विहस्स भडगस्स भरेति, तट्ठु-
 लाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य
 गोरसस्स य उदयस्स उदयमायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण
 य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च
 वट्ठूण पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाण पोयवहणं भरेति । सोहणंसि

तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तसि विपुल असणं उवक्खडावेति,
उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव
पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ॥ सू० १८ ॥

टीका-अथ द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सन्ध प्रस्तीति-‘तेण कालेण’
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अग्न नामा जनपद आसीत् । तत्र खलु
चम्पा नाम नगरी असीत् तत्र खलु चम्पाया नगर्या चन्द्रच्छायोद्गराज असीत् ।
तत्र खलु चम्पार्या नगर्याम् अरहन्नगप्रमुखा गृह्यः सयात्रा नौकावाणिजका =
सगतायाना सयात्रा तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः-पोतवणिजः मिलित्वा देशान्तर
गामिनो नौकया वाणिज्यकारिणः परिवसन्ति, रुयभूतास्ते इत्याह-आदया = धन

‘तेण कालेण तेण समण्ण’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समण्ण) उस काल और उस समयमें
(अगनाम जणवए होत्था) अगनामका जनपद था-(तत्थण) उस जनपद
में (चपानाम नयरी होत्था) चपा नाम की नगरी थी (तत्थ णं चपाए
नयरीए चदच्छाए अगाराया होत्था) उस चपा नगरी में चन्द्रच्छाय
नाम के अग देशाधिपति रहते थे ।

(तत्थ णं चपाए नयरीए अरहन्नग पामोस्त्वा बह्वे सजत्ता णावा
वणियगा परिवसति) और उसी चपा नगरी में अरहन्नक प्रमुख
अनेक पोतवणिक जो साथ २ व्यापार के निमित्त परदेश की यात्रा-
गमना गमन-करते रहते थे । नौकाओ द्वारा जो व्यापार करते हैं वे
पोतवणिक कहलाते हैं । (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्या

‘तेण कालेण तेण समण्ण’ इत्यादि

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समण्ण) ते काले अने ते समये (अगनाम
जणवए होत्था) अगनामे जनपद હતુ (તત્થણ) તે જનપદમાં (ચપા નામ
નયરી હોત્થા) ચપા નામે નગરી હતી (તત્થણ ચપાए नयरीए चदच्छाए
अगाराया होत्था) તે ચપા નગરીમાં ચદ્રચ્છાય નામના અધિપતિ રહેતા હતા

(તત્થણ ચપાए नयरीए अरहन्नगपामोस्त्वा बह्वे सजत्ताणावा वणियगा
परिवसति)

તે ચપા નગરીમાં અરહનનક પ્રમુખ ધણી પોતવાણિકો-કે-જેઓ વેપાર
ખેડવા માટે દેશ પરદેશમાં આવ જા કરતા રહેતા હતા નિવાસ કરતા હતા
નૌકાઓ વડે જેઓ વેપાર કરે છે તેઓ પોતવણિક કહેવાય છે (અડ્ઢા જાવ

धान्यपूर्णा यावद् अपरिभूता परै पराभवितुमशक्याः । ततः=तत्र=तेषु खलु सोऽरहन्नक श्रमणोपासक श्रावकश्चाप्यासीत्, न केवल धनधान्यादियुक्तएवासीत् किंतु-आर्हतागमानुरागी श्रमणानां सेवकश्चाप्यासीदित्यर्थः । पुनः किं भूतोऽसावित्याह-‘ अहिगयजीवाजीवे ’ अभिगतजीवाजीवः = जीवाजीवतत्वज्ञः वर्णकः=अस्य वर्णनमन्यत्रोक्तरीत्याऽवगन्तव्यम् । ततः खलु तेषामहरन्नकप्रमुखाणां संयात्रानौकावाणिजकानां व्यवसायिकानाम्, अन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, एकत्, सहितानाम्=एकत्र समिलिताना अयमेतद्वृत्तिः=वक्ष्यमाणस्वरूप, मिथ कथासलाप परस्परकथालापः समुदपद्यत=अभवत् श्रेयः

दि से परिपूर्ण यावत् दूसरो से पराभवितु अशक्य थे (तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) इन में अरहन्नक श्रमणोपासक भी थे । केवल यह धन धान्यादि से परिपूर्ण ही नहीं था किन्तु आर्हत आगमानुरागी और श्रमण जनों का उपासक भी था ।

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) जीव का क्या स्वरूप है, अजीव का क्या स्वरूप है इस बात का यह ज्ञाता था । इस का विशेष वर्णन अन्यत्र किया गया है ।

(तएण तेहिं अरहन्नगपामोक्खाणं सजुत्ता णावा वाणियगाण अन्नया कयाह एगयओ सहिआण इमे एयारूवे मिहो क्हासलावे समुप्पज्जित्था) किसी एक दिन ये अरहन्नक प्रमुख सायात्रिक पोत वणिक किसी कार्य वश जय सब के सब किसी एक स्थलपर एकत्रित हुए तो उन्हो ने परस्पर से वक्ष्यमाण रूप से ऐसा विचार किया-

अपरिभूया) तेओ भधा धन धान्य वगेरे समस्त पैलवोथी सपन्न हुता तेओ भधा अपराजेय हुता (तएण से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था) आमा ओक अरहन्नक नाये श्रमणोपासक पणु हुतो ते केवण धन धान्यथीज समृद्ध नहुतो पणु ते आहुत्त आगमानुरागी अने श्रमणजनोना सेवक पणु हुतो

(अहिगत जीवाजीवे वन्नओ) एव अने अएव व्वरूप विणे ते स पूणु पणु ज्ञाता हुतो (आ भावतनु विशेष वणुन भीज स्थाने करवामा आन्नु छे)

(तएण तेहिं अरहन्नगपामोक्खाणं सजुत्ता णावा वाणियगाण अन्नया कयाह एगयओ सहिआण इमे एयारूवे मिहो क्हासलावे समुप्पज्जित्था)

ओक दिवसे अरहन्नक प्रमुख भधा सायात्रिक पोतवणिक ओछ स्थले ओकठा थया अने तेओओ परस्पर भणीने आ भभावु विचार कथे

खलु अस्माकं गणिम गणयित्वा व्यवहारयोग्यं यथा नालिकेरपूगीफलादिकं,
धरिमं यत् तुलाधृतं व्यवहारयोग्यं भवति तद् धरिमम्, मेयं यत्-सेटि-
कादिभिर्मीयते तद् मेयम्, परिच्छेद्यं यत्-गुणतः परिच्छेद्यते परीक्ष्यते वस्त्र
रत्नादि, तत् परिच्छेद्यं, च भाण्डकं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा लवणसमुद्रं पोत
वहनेन अवगाहितुम्=उत्तरीतुम्, इति कृत्वा इति निश्चित्य, अन्योन्यं=परस्परम्
एतमर्थं चतुर्विधं क्रयाणकं गृहीत्वा नौकायानेन लवणसमुद्रसतरणरूपमर्थं प्रतिश्रु-
ष्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य गणिम च ४ गृह्णन्ति, गृहीत्वा शकटी
शाकटिकं=लघुशकटमहाशकटानां समूहं च सज्जयन्ति-नूतनरज्ज्वाद्युपकरणैः

(सेय खलु अम्ह गणिम, धरिम, च मेज्ज च परिच्छेज्ज च भडग
गहाय लवणसमुद्र पोतवहणेण ओगाहित्तए) गणिम - गिनती करके
व्यवहार योग्य-जैसे नारियल, पूगीफल आदि, धरिम-तुला पर तौलकर
व्यवहार योग्य-जैसे सस्यादि, मेय सेटिकादि से प्रमाण कर व्यवहार
योग्य, और परिच्छेद्य-गुणसे परीक्षा कर व्यवहार योग्य-जैसे वस्त्र रत्न
आदि इन चार प्रकार के क्रयाणक को दो नौकाओंमें भर कर हम लोग
बाहर लवणसमुद्रको पार कर चलें-इसमें हम लोगोंको बहुत लाभ होगा ।

(त्ति कट्टु अन्नमन्न एयमद्व पडिसुणेति, पडिसुणिता गणिम च
४ गेण्हति, गेण्हित्ता सगडसागडिय भरेति) इस प्रकार परस्पर
विचार कर उन सब ने एक मत हो इस चतुर्विध क्रयाणक को लेकर
नौका से लवण समुद्र को पार करने रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया ।

(सेय खलु अम्ह गणिम, धरिम च मेज्ज च परिच्छेज्ज च भडग गहाय
लवणसमुद्र पोतवहणेण ओगाहित्तए)

ગણિમ- ગણીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમ કે નારિયેળ,
સોપારી, વગેરે ધરિમ-ત્રાજવા માં જેખીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય
જેમકે ધાન વગેરે, મેય-માપના પ્રમાણથી વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય
જેમકે તેલ વગેરે અને પરિચ્છેદ્ય-ગુણથી પરીક્ષા કરીને વ્યવહાર કરી શકાય
જેમકે વસ્ત્ર રત્ન વગેરે આ ચારે જાતની વસ્તુઓ વિક્રય માટે બે નૌકાઓમાં
લાદીને આપણે લોકો બહાર લવણસમુદ્રને પાર કરીએ તો આપણને ખૂબ લાભ થશે

(ત્તિ કટ્ટુ અન્નમન્ન એયમદ્વ પડિસુણેતિ, પડિસુણિતા ગણિમ ચ ૪ ગેણ્હતિ,
ગેણ્હિતા સગડસાગડિય ભરેતિ)

આ રીતે ચારે જાતની વેપારની વસ્તુઓ નૌકાઓમાં મૂકીને લવણસમુ-
દ્રને પાર કરવાની બધાએ સર્વસમ્મતિથી સ્વીકારી અને સ્વીકારીને તેઓએ

परिष्कुर्वन्ति, सञ्जयित्वा गणिमस्य ४ भाण्डकस्य शकटीशकटिक भरन्ति= पूरयन्ति । भृत्वा=पूरयित्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते विपुल=विस्तीर्णम् अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति = निष्पादयन्ति । मित्रज्ञातिप्रमुखान् भोजनवेद्याया भोजयन्ति, यावद् आपृच्छन्ति स्म अरहन्नक प्रमुखाः स-यात्रानौकायाणिजका यात्रासरे मित्रज्ञातीन् भोजयित्वा वाणिज्यार्थं नौकया समुद्रसतरणकामास्तान् मित्रज्ञातीन् स्वस्वानुमति प्रदानार्थं प्रार्थयन्ति स्मेत्यर्थः । आपृच्छथ=समाधाय शकटीशकटिक योजयन्ति वृषभैः सह सयोजयन्ति सयोज्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन यज्ञैव गम्भीरक गम्भीरकारस्य समुद्रतीरवर्ति पोत-

स्वीकार कर के फिर उन सधने चारों प्रकार के ऋयाणक को लिया-लेकर उसे नूतन रज्ज्वादि से परिष्कृत की गई गाड़ी और गाड़ों में भर दिया ।

(भरित्ता सोहणसि तिहिकरण दिवसनक्खत्तमुहूत्तसि विपुल असण ४ उवक्खडावेति) भर कर फिर उन्हो ने शुभतिथि, करण दिवस नक्षत्र रूपमुहूर्त में विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को बनवाया - (मित्तणाइ० भोजनवेलाए मुजावेति जाव आपुच्छति) जब वह बन कर तैयार हो चुका-तो उन्हो ने अपने २ मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों को भोजन के अवसर पर भोजन करवाया और फिर उन से पूछा-हम लोग बाहर व्यापार के लिये जाना चाहते हैं- इसलिये आप लोग इस विषय मे अपनी २ अनुमति प्रदान करे-इस तरह उन से प्रार्थना की- (अपुच्छित्ता) पूछ कर (सगडसागडियं जोजयति, जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्जेण जेणेव गभीरए पोय

आरे जतनी वेआणुनी वस्तुओने नवा दोरडाओवाणी गाडी तेम ७ गाडाओमा भूडी

(भरित्ता सोहणसि तिहिकरणनक्खत्तमुहूत्तसि विपुल असण ४ उवक्खडावेति)

भरीने तेओओ शुभतिथि, ऋषु नक्षत्रउप मुहूर्तमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य आभ आरे जतना आहार पुण्य प्रमाणमा जनावडाओवा (मित्तणाइ ० भोजनवेलाए मुजावेति जाव आपुच्छति) व्यारे आहार तैयार थय गयो त्यारे तेओओ पोताना मित्र ज्ञाति वजेरे परिज्जोने जमवामाटे ओडावीने जमाडया अने जम्या पली तेमने तेओओ पूछथु " अने जधा वेपार जेडवामाटे अडार जवा धन्नीये छीओ "

ओधी तमे जधा अभने अनुमति आपो आरीने तेओओ तेमने विनती करी (आपुच्छित्ता) आशा भेजवाने

(सगडसागडिय जोजयति जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्जेण जेणेव,

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणम्यान् वर्तते तत्रौपागच्छति, उपागस्य शकटी-
शाकटिक मृश्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहाग्रियत क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
मवतारयन्ति, मुक्त्या=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽप्यतार्य पोतपदन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डरुस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नविशेषस्य च तैलकस्य च गुड़स्य च घृत-
स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत चाया-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (चदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडित्ता पोयवर्ण सज्जति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति) वहां आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरण पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

तेभने वेत्थाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने जेतथा अने
त्यार पछी तेओ अथा यथा नगरीनी अराभर वत्थेवत्थना भागंथी पसार
थधने न्यागलीरक नामनु पडाणु पर भेसवानु स्थान (महर) छतु त्या पडोत्था

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मोडित्ता पोयवर्ण सज्जति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

त्या पडोत्थीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेभज गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणेथी पडाणु तैथार क्यु पडाणुने सुदृढ रीते
तैथार करीने तेओओ गाडी तेभज गाडाओनी वेत्थाणुनी अधी वस्तुओ पडाणुभा
यथास्थाने गोडवी द्विधी

(तण्डुलाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ મૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ યોગરૂપાણામ્ ચ ઠણસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આવગ્નાનામ્=અદ્વર્રસકાદીના ચ પ્રહરણાના ચ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનપાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,

ણય તણસ્સ ય, કઠ્ઠસ્સ ય આવરણાણ ય પહરણાણ ય અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહનપાઝગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહન ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ કે આંટે કો ઓર આટે સે નિપ્પન્ન પક્વાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુદ ઘૂત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનો કો ભરા । ત્રિકુટ આદિ ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ મૈષજ્યોં કો ભરા, તૃણોં કો ભરા લકઢિયોં કો ભરા અગસ્સ આદિ આવરણોં કો, સ્વદ્વા, આદિ શસ્ત્રોં કો તથા ઓર મીં અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર સ્થાપિત ઉસ નૌકાયાન કો ભર દિયા । યહા પર જો ઔષધ ઓર મૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુએ હેં ઉન સે એસા મીં અર્થ ઘોધ હોતા હૈં કિ ત્રિકુટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હૈં વે ઔષધ ઓર ઇન કા સમુદાય રૂપ જો દ્રવ્ય હૈં-જૈસે ચૂર્ણ આદિ વહ મૈષજ્ય હૈં । “ પોયવહનપાઝગ્ગાણ ” પદ કા યહ અર્થ હૈં કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અચ્છી તરહ ઢોયા-જા સકે વહ સથ ઉન્હોં ને ઉસ મેં ભર દિયા । (સોહણસિ તિહિ કરણ

રણાણ ય, પહરણાણ ય, અન્નેસિ ચ વહૂણ પોયવહનપાઝગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહન ભરેતિ)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલું પક્વાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ લૈષન્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યવાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર ‘લૈષન્ય’ અને ‘ઔષધ’ આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે લૈષન્ય છે “ પોયવહનપાઝગ્ગાણ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે મારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौमारोहणम्यान पतते तत्रौपागच्छति, उपागस्य शकटी-
शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहाग्रमित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
भवतारयन्ति, मुक्ता=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽग्रतार्यं पोतवहन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डरस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणरस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपकान्नविशेषस्य च तैलस्य च गुडस्य च घृत-
स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकमाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्
पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत बाधा-जुतवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक धीचों धीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडत्ता पोयवहण सज्जंति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरंति) वहां आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
घानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से ढढ़ किया ।
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

तेमने वेयाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने जेतथा अने
त्यार पडी तेओ। अधा अ पा नगरीनी भराभर वन्थोवन्थना भागथी पसार
थअने न्या ग वीरक नामनु वडाणु पर भेसवानु स्थान (महर) छतु त्या पडोन्था।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माडत्ता पोयवहण सज्जंति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरंति)

त्या पडोन्थीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेमज गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणोथी वडाणु तैयार करुं वडाणुने सुदृढ रीते
तैयार करीने तेओओ गाडी तेमज गाडाओनी वेयाणुनी अधी वस्तुओ वडाणुभा
यथास्थाने जोडवी दीधी

(तण्डुलाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ ભૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ યોગરૂપાણામ્ ચ તૃણસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આવગ્નાનામ્=અદ્વરસકાદીના ચ પ્રહરણાના ચ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનપ્રાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,

ણય ત્તણસ્સ ય, કટ્ટસ્સ ય આવરણાણ ય પહરણાણ ય અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહ્ણ ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ કે આંટે કો ઓર આટે સે નિષ્પન્ન પક્વાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુહ છૂત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનોં કો ભરા । ત્રિકુટ આદિ ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો કો ભરા, તૃણોં કો ભરા લકઢિયોં કો ભગ અગસ્સ આદિ આવરણોં કો, સ્વદ્વા, આદિ શસ્ત્રોં કો તથા ઓર મી અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર સ્થાપિત ડસ નૌકા યાન કો ભર દિયા । યહા પર જો ઔષધ ઓર ભૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુણ હેં ડન સે ઇસા મી અર્થ બોધ હોતા હેં કિ ત્રિકુટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હેં વે ઔષધ ઓર ઇન કા સમુદાય રૂપ જો દ્રવ્ય હેં-જેસે વૂર્ણ આદિ વહ ભૈષજ્ય હેં । “ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાણ ” પદ કા યહ અર્થ હેં કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અચ્છી તરહ ઢોયા-જા સકે વહ સય ઉન્હોં ને ડસ મેં ભર દિયા । (સોહણસિ તિહિ કરણ

રણાણ ય, પહરણાણ ય, અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહ્ણ ભરેતિ)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલું પક્વાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ લૈષન્યો, ચારે, લાડકા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા ચોખ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર ‘લૈષન્ય’ અને ‘ઔષધ’ આ બે ગણદે પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે ગુદા ગુદા દ્રવ્યો તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે લૈષન્ય છે “ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાણ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે આરી રીતે લઈ જઈ રાકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रौपागच्छति, उपागस्य शकटी-
शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहायस्थित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
मवतारयन्ति, मुक्ता=सर्पं वस्तुजात शकटेभ्योऽयतार्यं पोतवहन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डरस्य=क्रयाणरस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणरस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपकान्नशेषस्य च तेलस्य च गुडस्य च घृत-
स्य च गोरसस्य च उदरस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत चाया-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (चदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडित्ता पोयवहन सज्जेति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति) वहां आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
सज्जित करके फिर याद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरण पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

तेमने वेयाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने जेतयां अने
त्यार पडी तेओ। अधा अथा नगरीनी अराअर वञ्चोवञ्चना भागथी पसार
थअने न्या गलीरक नामनु वडाणु पर जेसवानु स्थान (महर) छतु त्या पडोअथा

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माँइत्ता पोयवहन सज्जेति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेंति)

त्या पडोअथीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ। तेमअ गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणेथी वडाणु तैयार करुं वडाणुने सुदृढ रीते
तैयार करीने तेओओ गाडी तेमअ गाडाओनी वेयाणुनी अधी वस्तुओ। वडाणुभा
यथास्थाने गोडवी दीधी

(तण्डुलाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ ભૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ-
યોગરૂપાણામ્ ચ તૃણસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આપગ્નાનામ્=અદ્ધરસકાદીના ચ પ્રહરણાના
ચ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનમાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં
દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,

ણય તણસ્સ ય, કટ્ટસ્સ ય આવરણણ ય પહરણણ ય અન્નેસિં ચ
ચહૂણ પોયવહ્ણપાડગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહ્ણ ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ
કે આંટે કો ઔર આટે સે નિષ્પન્ન પક્વાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુદ
ઘૂત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનો કો ભરા । ત્રિકૂટ આદિ
ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યોં કો ભરા, તૃણોં કો ભરા
લકડિયોં કો ભરા અગસ્સ આદિ આવરણોં કો, સ્વદ્વા, આદિ શસ્ત્રોં કો
તથા ઔર ભી અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર
સ્થાપિત ઉસ નૌકા યાન કો ભર દિયા । યહ પર જો ઔષધ ઔર
ભૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુએ હેં ઉન સે એસા ભી અર્થ બોધ હોતા હૈ
કિ ત્રિકૂટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હેં વે ઔષધ ઔર ઇન કા સમુદાય
રૂપ જો દ્રવ્ય હૈ-જૈસે ચૂર્ણ આદિ વહ ભૈષજ્ય હૈ । “ પોયવહ્ણપાડ-
ગ્ગાણ ” પદ કા યહ અર્થ હૈ કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અઠ્ઠી તરહ ઢોપા-
જા સકે વહ સય ઉન્હોં ને ઉસ મેં ભર દિયા । (સોહ્ણસિ તિહિ કરણ

રણણ ય, પહરણણ ય, અન્નેસિં ચ ચહૂણ પોયવહ્ણપાડગ્ગાણ દવ્વાણ પોયવહ્ણ
ભરેતિ)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલુ
પક્વાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો,
ત્રિકૂટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ
વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા
ચોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાગ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા
નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર ‘ ભૈષજ્ય ’ અને ‘ ઔષધ ’ આ બે શબ્દો
પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકૂટ વગેરે
જે ગુદા ગુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે
ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે “ પોયવહ્ણપાડગ્ગાણ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે
કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે મારી રીતે લઈ જઈ સકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान र्वर्तते तत्रौपागच्छति, उपागस्य शक्यो-
 शाकटिक मुञ्चन्ति, शम्भुशकटिका समूहापरिधत्त क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
 मवतारयन्ति, मुक्ता=सर्वं वस्तुजात शम्भुशकटिका पोतयहन=नौकायान
 सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
 दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डरुस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
 चतुर्विधक्रयाणरुस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
 तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपकान्नविशेषस्य च तैलरुस्य च गुडस्य च घृत-
 रुस्य च गोरसस्य च उदरुस्य च उदकमाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेणेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
 और गाड़ों को जुत बाया-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
 के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
 पर सवार होने का स्थान (यदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडत्ता पोयवहण सज्जंति
 सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरंति) वहां आकर
 उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
 यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
 सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
 गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
 पर भर दिया (तण्डुलाणय समिषस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
 घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

तेभने वेयाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने नेतथा अने
 त्या २ पडी तेज्या अधा य पा नगरीनी अशभर वज्जोवज्जता भागंधी पसार
 थधने न्या गभीरक नामनु वडाण पर भेसवानु स्थान (मडर) छेतु त्या पडोय्या

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माडत्ता पोयवहण सज्जंति, सज्जित्ता
 गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरंति)

त्या पडोय्याने तेज्याने पोतपोतानी गाडीज्या तेभज गाडाज्याने छोडीने
 यथोचित नवीन उपकरणेथी वडाण तैयार करुं वडाणुने सुदृढ रीते
 तैयार करीने तेज्याने गाडी तेभज गाडाज्यानी वेयाणुनी अधी वस्तुज्या वडाणुभा
 यथास्थाने गाडवी छीधी

(तण्डुलाण य समिषस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
 उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जाण य तगरस्स य, कट्टस्स य आत्र

त्तसि धूवसि पूइएसु समुद्वाएसु, ससारियासु, वलयवाहासु
उसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वस-
उणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्टिसीहणाय
जंयरवेण पक्खुभितमहासमुद्गरवभूयं पिव मेइणि करेमाणा
एगदिसि सजुत्ता नावा वाणियगा णावं दुरुद्धा ।

तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हभो सव्वेसिमविभे अत्थ
सिद्धीओ उवाट्ठिताइ कल्लाणाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइं, जुत्तो
पूसो विजओ मुहुत्तो अय देसकालाओ, तओ पुस्समाणवेणं वक्के
उदाहिण हट्टतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगम्भज्जसंजाता णावा
वाणियगा वावारिसु तं नाव पुन्नुच्छगं पुण्णमुहि वधणेहिंतो
मुंचंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तेषामरहन्नक प्रभु
खाणा यावत् नौकावाणिजकाना परिजना यावत् तादृशीभिर्वाग्भिरभिनन्दन्तश्चाभि-
सस्तुवन्तधैव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादिषुः—हे आर्य । =हे पितामह । तात । हे पितः
हे मातुल । हे भागिनेय । भगवता महता समुद्रेण ‘अभिरन्विज्जमाणा’ २ अभि-

‘तएण तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा
जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदता य अभिसथुणमाणा य एव वयासी)
उन अरहन्नक यावत् अन्य और पोतवणिजों के परिजनो ने यावत्
उस २ प्रकार की वाणियों द्वारा उन सबका अभिनन्दन एव सस्तवन
करते हुए उन से इस प्रकार कहा—(अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल !
भाइणज्जे ! भगवया समुद्रेण अभिरन्विज्जे माणा २ चिर जीवह भद्

‘तएण तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि

टीकार्थ—“तएण” त्याग्याह “अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा जाव
तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदताय अभिसथुणमाणाय एव वयासी” ते अरहन्नक प्रभु
पोतवणिजिना पणिज्जेने तेभनु अनेक ज्ञातनी भगवणाणीये पडे अभिनन्दन
अने सस्तवन कृत्वा तेभने कडेवा लाग्या (अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल !
भाणिज्जे भगवया समुद्रेण अभिरन्विज्जे माणा २ चिर जीवह भद् च ते) हे आर्य ।

તિથિકરણ દિવસ નક્ષત્રમૂર્તે ત્રિપુલ=વિસ્તીર્ણમ્, અગ્નપાનગ્યાપસ્વાદ્ય=ચતુર્વિ
ધમાહારમુપસ્કારયન્તિ=સપાદયન્તિ, ઉપમ્માર્ય મિત્રજ્ઞાતિત્રમુર્યાન્ મોજયિત્વાઽઽપ્
ચ્છન્તિ, સમુદ્રયાત્રાનુમતિપ્રદાનાર્થે પ્રાર્થયન્તિ આપૃચ્ચ યત્ર પોતસ્થાન=નૌકા
યાનારોહણસ્થાન વર્તતે તત્રોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ચ તત્ર સ્થિતાઃ ॥મૃ ૧૮ ॥

મૂલમ્-તદ્દેશ તેસિં અરહન્નગ જાવ વાણિયગાળં પરિયણા
જાવ તારિસેહિં વમ્મૂહિ અભિણંદંતા ચ અભિસથુણમાણા ચ
એવં વયાસી-અજ્જ તાય માય માઝલ ભાઙ્ગલ્લે ભગવયા સમુદ્દેણં
અભિરવિલ્લજ્જમાણા ૨ ચિરજીવહ ભદ્ધ ચ મે પુણરવિલલ્લદ્ધે કય-
કલ્લે અણહસમગ્ગે નિયગ ઘરં હવ્વમાગણ પાસામોત્તિકદ્ધુ તાહિં
સોમાહિ, નિઙ્ઘાહિ દીહાહિં, સપ્પિવાસાહિ પપ્પુયાહિં દિટ્ઠીહિં
નિરીમ્મલમાણા મુહુત્તમેત્તં સચ્ચિટ્ઠાતિ તઓ સમાણિણસુ પુપ્ફવ-
લિકમ્મે દિઙ્ગેસુ સરસરત્તચ્ચદણદદ્ધર પચંગુલિતલેસુ, અણુવિલ-

દિવસનમ્મલ્લમુહુત્તસિ ત્રિપુલં અસણ ૪ ઉવમ્મલ્લડાવેતિ, ઉવમ્મલ્લડાવિત્તા,
મિત્તળાઈં આપુચ્છતિ, આપુચ્છિત્તા જેણેવ પોયદ્ધાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)
જ્ય સન પ્રકાર કા ચતુર્વિધ ક્રયાણક નૌકાયાન મેં ભરા જા ચુકા તથા
પુનઃ ઉન લોગોં ને અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર નિપ્પન્ન કરવાયા,
ઔર કરવા કર અપને ૨ મિત્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કો જિમાયા જિમા
કર ઉન સે સમુદ્રયાત્રા કર ને કી અનુમતિ માગી-ઔર માગ કર ફિર
વે સવ કે સવ પોત વણિક્ જહા નૌકા પર ચઢને કા સ્થાન થા વહા
આયે-ઔર આકર વહા ઠહર ગયે । મૂત્ર " ૧૮ "

(સોહણસિ તિથિકરણદિવસનમ્મલ્લમુહુત્તસિ ત્રિપુલ અસણ ૪ ઉવમ્મલ્લડાવેતિ, ઉવ
મ્મલ્લડાવિત્તા, મિત્તળાઈં આપુચ્છતિ, આપુચ્છિત્તા જેણેવ પોયદ્ધાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ

જ્યારે જ્યારે જાતની વેચાણ કરવાની વસ્તુઓ જહાજમા લરાઇ ગઇ
ત્યારે તેમણે અશન વગેરે જ્યારે જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવે અને
કરાવડાવીને પોતપોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમાડ્યા અને જમા
ડીને તેમની પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાની આજ્ઞા માગી અને આજ્ઞા મેળવીને
તેઓ બધા પોતપોતાના જ્યા વહાણમા બેસવાનું વપાનું સ્થાન હેતુ ત્યા
આવ્યા અને ત્યા આવીને તેઓ બધા ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર " ૧૮ " ॥

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु रुतलाङ्गनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तरुतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः । अनूत्तिष्ठन्ते=अनुपस्थात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूपे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिनां समानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिवचनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयवाहूपु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छिद्रतेषु उर्ध्वमुखमवस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु चज्राग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुप्रवादितेषु पटुभिः पुन्यैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्पशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवंशासनेषु=समुद्रयात्राय चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापनैषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवसि, पूङ्गसु समुद्रवाएसु ससारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसु क्षयगोसु, पटुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुनः अक्षत दानादिक कर्म जय समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरसरक्तचन्दन के चपेटाकार से हाथे जय लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जय उंस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाएँ जय धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ठ रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जय यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जय उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जय अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादिरूप सर्व शकुन जय अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा काने का आदेश पत्र जय चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्टसी

अणुक्खित्तसि धूवसि पूङ्गसु समुद्रवाएसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु क्षयगोसु पटुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

त्यार णाह पुण्ण अक्षत दान वगेरे नी विधि परीथधं गधं, परिधानीय वस्त्रो णपर भरस लाल चन्दनना थापाओ लगावी लीधा, गुग्गण वगेरे धूप अग्निमा नाणीने धूप करी लीधा, धूप वगेरे अर्पाने समुद्रना पवनोनी अर्थनानु काम पुइ थधंगयु, गील्ल स्थानेथी दीर्घकाष्ठरूप वलय ओटले के सुकान वगेरे वहाएँ णपर यथास्थाने मुडाधं गया, शुलध्वल्लओना अग्रभाग न्यारे उर्ध्वमुखना इये अवस्थापित थधं गया, कुग्गण वान्न वाणाओ वडे सरस वान्न ओ वगाडवानु काम पति गयु, जय पभाडनारा जगडा वगेरे पक्षी ओना भागल्लिज गण्ढो ओटले के सारा शुडन थर्ल गया अने च पानगरीना राज पासेथी समुद्रयात्रा करवानो पयवानो “आदेश पत्र” तेओनी पासे आवी गये। त्यादे

રક્ષયમાણા ૨=સુરક્ષયમાણાઃ ૨ ચિર પ્રકાશ ઝીવત, મદ્રવ યુગ્માક મવતુ પુનર
પિ લઘ્યાર્થાન્ લઘ્વલાભાન્ કૃતકાર્યાન્ સમ્પાદિતસકલકૃત્યાન્ અનગ્રસમગ્રાન્=
અનઘાશ્ચ તે સમગ્રાઃ અનગ્રસમગ્રાસ્તાન્ દોષરહિતત્યાદનગ્રા, અને પુ પરિવારેષુ ચ
હામામાવાત્ સમગ્રાઃ તથાવિધાન્ યુગ્માન્ નિગ્રહ=સ્વકીય, ગૃહ દૃવ્યમાગતાન્
શીઘ્રમાગતાન્ ત્રય પદયમાઃ, ઇતિકૃત્યા=કૃત્યુક્તગ્રા તામિ સૌમ્યાભિર્નિર્નિકારત્વાત્,
સ્નિગ્ધાભિઃ સસ્નેહત્વાત્, દીર્ઘાભિઃ દૂર યાગદગ્લોરુનાત્ ' સપ્તિવાસાર્હિ ' મપિ
પાસામિઃ=દર્શનેચ્છાવતીભિઃ, ' પપ્પુયાર્હિ ' મપ્પુતામિઃ=અશ્રુપૂર્ણાભિઃ દિટ્ટીર્હિ '
દૃષ્ટિમિ નિરીક્ષમાણા અવલોરુમાના મુહૂર્તમાર્ગ સતિષ્ઠન્તે અરહન્નાદીનાં
પરિજના અશ્રુપૂર્ણદૃષ્ટિમિસ્તાન્ પશ્યન્તોમુહૂર્તમાર્ગ નિશ્ચલા અમવન્નિત્યર્થઃ ।
તતઃ ' સમાણિણ્ણુ ' સમાપિતેષુ મમ્યઋ સપાદિતેષુ પુષ્પવેલિકર્મ્મસુ પુષ્પાક્ષત-

ચ.એ) હે આર્ય ! હે તાત ! હે બ્રાતઃ ! હે મામા ! હે ભોગેનેય ! આપલોગ
હાસે ભગવાન્ વિશાલ સમુદ્ર સે વાર૨ સુરક્ષિત હોતે હુણ ચિર કાલ તક
જીવિત રહેં । આપ સયકા કલ્યાણ હો । (પુનરચિ લલ્લદે, કય કજ્જે,
અણહસમગ્ગે નિયગ ઘર હવ્વમાગણ પાસામો) હમ લોગ લાભ સે-યુક્ત
સમ્પાદિત સકલ કાર્યો વાળે વિના કિસી શારીરિક આદિ વાધા સે રહિત
ધન ઔર પરિવારો સે પરિપૂર્ણ હુણ આપ સવ કો ઘર પર શીઘ્ર આયા
હુઆ દેલેં । (ત્તિકદ્દુ) એસા કહ કર વે વહા-(તા હિં સોમાર્હિ, નિદ્ધાર્હિ,
દીહાર્હિ, સપ્તિવાસાર્હિ, પપ્પુયાર્હિ દિટ્ટીર્હિ નિરીક્ષમાણા મુહુત્તમેત્ત
સચિદ્વતિ) સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, દીર્ઘ, દર્શનેચ્છાવતી ઔર અશ્રુપૂર્ણ દૃષ્ટિયો
સે ઉન્હેં દેલ્લતે હુણ ંક મુહૂર્ત તક બેઠે રહે । (તઓ સમાણિણ્ણુ પુષ્પ
બલકર્મ્મેસુ દિન્નેસુ સરસરત્તચદણદહર, પચણ્ણલિતલેસુ, અણુત્તિલત્તિસિ

હિતાત ! હે ભાઈ ! હે મામા ! હે ભાણેજ ! તમે બધા આ ભગવાન
વિશાળ સમુદ્રવડે વારવાર સુરક્ષિત થઇને ચિરકાળ સુખી જીવતા રહો ।
તમારુ કલ્યાણ થાઓ " પુનરવિલલ્લદે, કયકજ્જે, અણહસમગ્ગે નિયગ
ઘર હવ્વમાગણ પાસામો " અમે બધા તમને લાભાન્વિત થયેના, બધા કાર્યોને
પાર પમાડનારા, કોઈ પણ ભતની શારીરિક મુશ્કેલી વગર એટલે કે સ્વસ્થ
શરીરવાળા, ધન તેમજ પરિપૂર્ણ પરિવારથી યુક્ત થઇને ઘેર પાછા આવેલા
ભાઈએ "ત્તિકદ્દુ" આમ કહીને તેઓ ત્યાં ।

(તાર્હિ સોમાર્હિ નિદ્ધાર્હિ દીહાર્હિ, સપ્તિવાસાર્હિ પપ્પુયાર્હિ, દિટ્ટીર્હિ નિરી
ક્ષમાણા મુહુત્તમેત્ત સચિદ્વતિ)

૧ સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, બહુવખત સુખી દર્શનની ઇચ્છાવાળી અને આસુ બીની
દૃષ્ટિએથી તેમને ભેટા એક મુહૂર્ત સુખી બેસી રહ્યા ।

(તઓ સમાણિણ્ણુ પુષ્પ બલિકર્મ્મેસુ દિનેસુ સરસરત્તચદણદહરપચણ્ણલિ તલેસુ,

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्गनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः । अनूत्क्षिप्ते=अनुपश्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूपे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना समानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्प्रग्न्यपवनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयवाहूपु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहूपु, तथा उच्छिन्नतेषु उर्ध्वमुखमवस्थापितेषु सितेषु ध्रुवलेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुप्रवादितेषु पटुभिः पुम्पैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा-प्रवादितेषु तूर्येषु वाग्नेषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्गशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवंशशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रैषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

ध्रुवसि, पूङ्गुसु समुद्रवाणसु ससारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसु क्षयगगेसु, पटुप्रवाडेषु तूरेसु, जडेषु सन्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुनः अक्षत दानादिक कर्म जय समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरसर रक्त चन्दन के चपेटाकार से हाथे जय लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जय उत्स का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाएँ जय धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ठ रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जय अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा करने का आदेश पत्र जय चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्टसी

अणुक्वित्तसि ध्रुवसि पूङ्गुसु समुद्रवाणसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु क्षयगगेसु पटुप्रवाडेषु तूरेसु जडेषु सन्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

त्यार णाड पुष्प अक्षत दान वगेरे नी विपि परीथर्ध गध, परिधानीय वस्त्रो डपर सरस लाड यदनना थापाओ लगावी लीधा, गूगल वगेरे धूप अग्निमा नाणीने धूप करी लीधा, धूप वगेरे अर्पानि समुद्रना पवनोनी अर्थनानु ठाम पुर् थर्धगयु, णील स्थानेथी दीर्घकाष्ठरूप वलय ओटले डे सुकान वगेरे वहाणु डपर यथास्थाने सुकाध गया, शुभध्वन्तओना अग्रभाग न्यारे उर्ध्वमुखता ड्ये अवस्थापित थर्ध गया, डुराण वालावाणाओ वडे सरस वालाओ वगाडवानु काम पति गयु, न्यथ पमाडनारा कागडा वगेरे पक्षी ओना मागलिक गण्डो ओटवे डे सारा शुकन थर्ध गया अने थपानगरीना रान्त पानेथी समुद्रयात्रा करवानो पववानो "आदेश पत्र" तेओनी पासे आवी गयो त्यादे

जयरवेण उच्चस्तरयुक्त जय जय भ्रनिता प्रभुभितमहाममुद्ररवभूतामिव वायु
प्रक्षोभजनितमहासागरध्वनिव्याप्तामिव मेदिनीं = पृथ्विं प्रचुरनादवतीं कुर्वाणा
एकदिशि एरुस्या दिशि सयात्रानौका वाणिजका नाव नौकायान दुरूढाः
आरोहति स्म ।

ततस्तदनन्तर ' पुष्पमाणवो ' पुष्पमाणव = मागधो मङ्गलपाठकः ' वक्कमु-
दाहु ' वाक्कमुदाह-मङ्गलपचनमुक्तयान् तदाह-हभो इत्यादि हे नौकायात्रिका
' सन्वेसिमविभे ' सर्वेषामपि युष्मत्कम् अर्थसिद्धयो भवतु, उपस्थितानि कल्या
णानि भवन्तु तथा प्रतिष्ठितानि सर्वपापानि भवन्तु=सर्वविघ्ना प्रतिहता विनष्टा
भयन्तिवत्यर्थः । ' जुत्तो ' युक्तः ' पूसो ' पुष्पः=पुष्पाख्यो नक्षत्रशेषः अनुकूल
लेन चन्द्रमसा युक्त इत्यर्थः । पुष्पनक्षत्र यात्राया प्रशस्तम् तथ चोक्त-

हणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्ररवभूयपिव मेद्वणिं करेमाणा)
उत्कृष्ट सिंहनाद जैसी जय जय भ्रनि से वायु के प्रक्षोभ से जनित
महासागरकी ध्वनि से व्याप्त हुई की तरह मेदनी को करते हुए (सज्जु
त्ता नावा वाणियगा एगदिसिंणाव दुरूढा) वे सायात्रिक पोत वणिक्
नाव पर सवार हुए ।

(तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु) इतने में ही मंगल पाठक-चार-
ण-ने मंगल भ्रनि की (हभो सन्वेसिं भविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठि
ताह कल्लणाह, पडियाऽ सन्व पावाइ, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो
अयदेसकालो) हे हे नौका यात्रिकों ! आप सब को अर्थ की सिद्धि हो,
सब कल्याण आपके लिये सदा उपस्थित रहें, समस्त प्रकार के विघ्न
आपकी इस मांगलिक यात्रा में नाश हो पुष्प नक्षत्र का अनुकूल चन्द्र-
मा के साथ योग रहा है यात्रा में पुष्प नक्षत्र का योग प्रशस्त होता
(महया उक्किट्ठसीहणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्ररवभूयपिव मेद्वणिं करेमाणा)

पवनथी-क्षुब्ध महासागरना सर्वत्र व्याप्त थयेला वनीनी जेम सिंढनाह
न्य न्य ध्वनिथी पृथ्वीने शब्दि करता (मुज्जुत्तानावा वाणियगा एगदिसिंणाव
दुरूढा) ते सभी मागलिकोंके ओटले के आरंभोंके मंगलध्वनि थीं

(हभो सन्वेसिमविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताह कल्लणाह पडियाइ
सन्वपावाइ, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयदेसकालो)

हे पोतवण्डिके ! तमने अधाने अर्थनी सिद्धि थाय तमने सदा कल्याणो
प्राप्त थाओ, मंगलयात्राना तमारा अधा विघ्नोनाश पाओ अत्यादे अन्धनी
साथे पुष्पनक्षत्रनो अनुकूल योग यई रह्यो छे (यात्राभा पुष्पनक्षत्रनो योग

અપિ દ્વાદશમે ચન્દ્ર પુણ્યઃ સર્વાર્થસાધનઃ ॥ इति ॥

વિજયો મુહૂર્તોઽનુના વિષ્ટે, અય દેશકાલઃ=સમય પ્રસ્થાને શુભાવહ હત્યુ-
ક્ત-માગધેન । તતસ્તદનન્તર ' પુસ્તમાણવેણ ' પુણ્યમાનવેન માગધેન ' વક્ક '
વાક્યે=માદ્ગલિકપ્રચને, ' ઉદાહિષ ' ઉદાહરે ઉક્તે સતિ હૃષ્ટતુષ્ટા અતિશયેન
પ્રમુદિતા ' કુચ્છિધારકન્નધાર ગન્મિજ્જ સજ્જાનાવાવાણિયગા ' કુક્ષિધાર
કર્ણધાર ગર્મજ સયાત્રા નૌવાણિકાઃ=કુક્ષિધારા નૌકાયાઃ પાર્શ્વતો નિયોજિતા
સચ્ચાલકાઃ, કર્ણધાર નાવિકા* પ્રધાનભૂતા નૌકાવાહકાઃ, ગર્મજાઃ=નૌમધ્યે
સ્થિત્વા યથાવસરકાર્યકર્તાર, સયાત્રાઃ=સગતાઃ સમિલિતાઃ સન્તો દેશાન્તર-
ગામિન, નૌ વાણિકાઃ=નૌકયા વાણિજ્યમારિણ માણ્ડપતય, સર્વેતે વ્યાપૃત
વન્ત સ્પ સ્પ વ્યાપારે પ્રવૃત્તા સન્તઃ, તા નાવ પૂર્ણે-સદ્ધા વિવિધક્રયાણમ્જાતૈઃ

है-उक्तश्चअपि द्वादशमे चन्द्रे पुण्यः सर्वार्थसाधन । इस समय विजय
मुहूर्त वर्त रहा है । प्रस्थान के लिये यह समय शुभावह है । (तओ
पुस्तमाणवेण वक्के उदाहिष हट्टतुड्डा कुच्छिधारकन्नधारगन्मिज्ज
सजात्ता णावा वाणियगा वावारिसु) इस तरह पुण्य मानव-चारण जब
मगल ध्वनि कर चुका-तब हर्षित और सतुष्ट हुए कुक्षिधार-नौका के
पार्श्व में नियोजित किये गये सचालक जन, कर्णधार-खेबटियाजन,
गर्मज-नौका के भीतर बैठ कर अवसरानुकूल कार्य कर्त्ता जन, और
सायात्रिक जन-मिलकर परदेश जाने वाले पोतवणिक कि जिन का
क्रयाणक नौका में भरा हुआ था-ये सब के सब अपने २ व्यापार-कार्य
में प्रवृत्त हो गये (त नाव पुन्नुच्छग पुण्ण मुह्विचणेरिंतो मुचति)
और उस नौका को कि जिस का म यभाग विविध क्रयाणकों से पूर्ण

પ્રશસ્ત હોય છે-કહ્યું પણ છે- ' અપિદ્વાદશમે ચન્દ્રે પુણ્ય સર્વાર્થસાધન ")
અત્યારે વિજયના મુહૂર્તનો સમય ચાલી રહ્યો છે પ્રસ્થાન માટે અત્યાર
નો વખત શુભાવહ છે

(તઓ પુસ્તમાણ વેણવક્કે ઉદાહિષ હટ્ટતુડ્ડા કુચ્છિધારકન્નધાર ગન્મિજ્જ
સજાત્તા ણાવાવાણિયગા વાવારિસુ)

આરીતે બ્યારે પુધ્ધમાનનો-ચરણો-નો મગળ પાઠ થઈ ચૂક્યો ત્યારે
હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયેલા કુક્ષિધાર-નૌકાના પાર્શ્વભાગમા નિયુક્ત કરાયેલા
સચાલકો, કર્ણધાર-નૌકાચલાવનારાઓ, ગર્મજ-નૌકાના અંદરના ભાગમા
બેઠીને અવસરાનુકૂળ કામ કરનારાઓ અને સાયાત્રિક-નો-વેપારીઓ-કે
બેઠીને વસ્તુઓને નૌકામા લાદેલી હતી, પોતપોતાના કામમા વળગી ગયા

(ત નાવ પુન્નુચ્છગ પુણ્ણમુહિં વચ્ચણેરિંતો મુચતિ)

અને જેના વચ્ચેના ભાગમા અનેક ભતની વેચાણની વસ્તુઓ ભરેલી

સમૃતાન્તરાલા, પૂર્ણમૂર્તી યથોચિતસમૃતાગ્રભાગા વન્ધનેભ્યઃ તીરસ્થશકુવદરાજ્ય
વન્ધનપ્રન્ધિમુન્મુન્ય મુચ્ચન્તિ=વિસર્જયન્તિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

મૂલમ્—તણં સા નાવા વિમુક્કવંધના પવણવલસમાહયા
ઊસિયસિયા વિતતપક્ષા ઇવ ગરુડજુવઈ ગગાસલિલતિક્ષિ
સોયવેગેહિં સઘુવ્ભમાણીર ઉર્મ્મીતરંગમાલાસહસ્તાઈં સમઈ-
ચ્છમાણી ૨ કઈવઈં અહોરત્તેહિ લવણસમુદ અણેગાઈ જોયણ
સયાઈ ઓગાઢા, તણ તેસિં અરહન્નગપામોક્ષાણં સંજાત્તાના
વાવાણિયગાણં લવણસમુદ અણેગાઈ જોયણસયાઈં ઓગાઢાણં
સમાણાણ વહૂઈ ઉપ્પાડયસયાઈ પાઉલ્ભૂયાઈ, ત જહા—અકાલે
ગજિણ અકાલે વિજ્જુણ અકાલે ધણિયસદે, અભિક્ષણં ૨ આગાસે
દેવયાઓ નચ્ચતિ, ઇગ ચ ણ મહં પિસાયરૂવ પાસતિ, તાલજંધં
દિવંગયાહિ વાહાહિ મસિમૂસગમાહિસકાલગ ભરિયમેહવન્ન
લંબોટ્ટ નિગ્ગયગ્ગદત્ત નિલ્લાલિયજમલજુયલજીહ આઝસિય
વયણગડદેસ ચીણચિવિટનાસિય વિગયમુગ્ગમુમય સ્વજોયગ-
દિત્તચક્કુરાગ ઉત્તાસણગં વિસાલવન્છ વિસાલકુચ્છિ પલવકુચ્છિ
પહસિયપયાલિયપયીડિયગત્ત પણન્નમાણં અપ્પોડત્ત અભિવયત
અભિગજ્જત વહુસો ૨ અટ્ટટ્ટહાસે વિણિમ્મુયત નીલુપ્પલગવલ-

ભરા હુઆ થા તથા અગ્રભાગ મી જિસ કા યથોચિત અનેક પ્રકાર કી
સચાલન સામગ્રી, સે વ્યાપ્ત હો રહા યા તીર પર કી કીલ મે બંધી હુઈ
રસ્સી કે વધન કો ક્ષોલકર છોડ દિયા । સૂત્ર “ ૧૯ ”

હતી અને અગ્રભાગમા યથોચિત બાતબાતની સચાલન સામગ્રી ભરેલી હતી
એવા વહાણને કિનારા ઉપર ના થાલવાનું બંધન ખોલીને મુક્ત કરવામા
આવ્યું ॥ સૂત્ર “ ૨૦ ” ॥

ગુલિય અયસિકુસુમપ્પગાસ ચુરધાર અસિંગહાય અભિમુહમાવ-
યમાણ પાસંતિ ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

ટીકા—‘તણ સા’ ઇત્યાદિ—તતસ્તદનન્તરં સ્વલ સા નૌ વિમુક્તવન્ધના
વન્ધનરહિતા પવનવલસમાહતા=વાયુવેગપ્રેરિતા ‘ઉસ્સિયસિયા’ ઉચ્છિન્નતસિતપટા
નૌકાયા વાયુસમગ્રદ્યૌર્થ વૃહદ્વસ્ત્રમુચ્છિન્ન કૃત્વા નિવધ્યતે, ઉચ્છિન્નશુવલપટેન સા
નૌઃ કીદશીત્યાહ—‘વિતતપક્ષા ઇવ ગરુડજુવર્હ’ વિતતપક્ષેવ ગરુડયુવતિઃ
વિતતપક્ષા=પ્રમારિતપક્ષા ગરુડભાર્યા ગગને ગચ્છન્તી, યથા ભવતિ તદ્વદિત્યર્થઃ,
ગદ્ગાસલિલતીક્ષ્ણસ્રોતોવેગે ગદ્ગાજલસ્ય યે તીક્ષ્ણાસ્તીત્રા સ્રોતોવેગાઃ=પ્રમાદે
ગાસ્તૈઃ સક્ષુભ્યન્તી ૨ પ્રેર્યમાણા ૨ સમુદ્રં પ્રતીતિ ભાવઃ, ‘ઉમ્મીતરગ્ગમાલાસહસ્સાઈ’
ઝર્મિતરગ્ગમાલાસહસ્રાણિ ઝર્મયો મહાફલ્લોલા વૃહત્તરગ્ગા, તરગ્ગાઃ=હસ્વફલ્લોલાઃ
લઘુતરગ્ગાસ્તેષા મારા આવલયઃ તાસા સહસ્રાણિ, સમતિ ક્રામન્તી ૨ સમુત્તરન્તી
૨ કતિપયૈર્વહુભિરહોરાગ્રૈર્દિવસે રાત્રિભિશ્ચ લવણસમુદ્ર અનેકાનિ યોજનશતાનિ

‘તર્ણ સા નાવા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) હસ કે વાદ (વિમુક્કવધના) વન્ધન સે વિમુક્ત
હુઈ (સા નાવા) વહ નૌકા (પવનવલસમાહયા) વાયુ કે વેગ સે પ્રેરિત
હોકર (ગગાસલિલતિક્ષ્ણસ્રોતવેગેહિં સચ્ચુભમાણી ૨) ગંગા જલ
કે પ્રવાહ વેગોં સે ધાર ૨ હધર ઉધર ક્ષુભિત હોતી હુઈ (ઉસ્સિયસિયા)
અપને ઝપર વાયુ સગ્રાહાર્ય થાવે ગયે શુભ્રવન્ત્ર સે (વિતત પક્ષો ગરુડ
જુવર્હિવ) પાલોં કો પસાર કર આકાશ મેં ઉડતી હુઈ ગરુ યુવતી કે
જેસી પ્રતીત હોને લગી । (ઉમ્મીતરગ માલાસહસ્સાઈ સમહચ્છમાણી
૨ કદ્દવર્હિં અહોરત્તેહિ લવણ સમુદ્ર અનેગાઈ જોયણસગાઈ ઓગાઢા)

‘તર્ણ સા નાવા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યાં બાદ (વિમુક્કવધના) વન્ધન મુક્ત થયેલુ (સા નવા)
તે વહાણ (પવનવલસમાહયા) પવનના આઘાતોથી પ્રેરિત થઇને (ગગા
સલિલતિક્ષ્ણસ્રોતવેગેહિં સચ્ચુભમાણી) ગગાના તીવ્રપ્રવાહથી ક્ષુભિત થતું
(ઉસ્સિયસિયા) પવન લગાઇને વહાણને ગતિમળે એવા પોતાના અવસ્થા
સહથી “વિતત પક્ષા ગરુડજુવર્હિવ” પાખો પ્રસારેલી અને આકાશમાં ઉડતી
ગરુડ યુવતીની જેમ લાગતું હતું

(ઉમ્મીતરગ માલા સહસ્સાઈ સમહચ્છમાણી ૨ કદ્દવર્હિં અહોરત્તેહિ લવણ
સમુદ્ર અનેગાઈ જોયણસગાઈ ઓગાઢા)

‘ઓગાઢા’ અગાદિતા તીર્ણાં । તતસ્તદનન્તરં ચ્વલુ તેષામ્ અરહન્ત્રપ્રમુખાણાં
સયાત્રા નૌયાણિજ્ઞાના લવણસમુદ્રમનેકાનિ યોજનશતાનિ અગાદિતાનાં તીર્ણાનાં
સતા વહ્નિ ‘ઉપ્પાડ્યસયાઈ ઉત્પાતશતાનિ પ્રાદુર્ભૂતાનિ । તાચુત્પાદશતાનિ
ઘર્ણયતિ--

‘ત જહા’ इत्यादि । तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकाल-विना मेघध्वनिः,
अकाले विद्युत् अकाले ‘धणियसदे’ स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिभूत्
तथा-अभीक्षण=पुन पुनः आकाशे देवता वृत्त्यन्ति तथा-एक च खलु महत् बृहत्
पिशाचरूप पश्यन्ति अरहन्त्रप्रमुखां संयात्रा नौ याणिज्ज्ञाः अकालमेघध्वनि
घडे वेग के साथ उर्मियों-महालहरों के तरंगों के-ओटी २ लहरों के-
माला सहस्र को उल्लंघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद
लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई । (तएण तेसि अरहन्तग
पामोख्खाणं सज्जानावा चाणियमाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण
सयाइ ओगाढाणं समाणण च्हइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) इस के
बाद उन सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका घणिकों को जब कि वे
लवण समुद्र में अनेक सैकड़ों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से
सैकड़ों उपद्रव सामने आने लगे ।

(त जहा) जैसे- (अकालेगज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले
धणियसदे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण मह
पिसायरूव पासति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

ખૂબજતીવ્ર વેગે નાનામોટા સેકડો મોબાઓ ને વટાવીને ૩૮લાક દિવસો
બાદ વહાણુ લવણસમુદ્રમાં ઘણા યોજનો દૂર સુધી પહોચી ગયુ

(તएण तेसि अरहन्तगपामोख्खाण सज्जानावा चाणियमाण लवणसमुद्द
अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाण च्हइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ)

ત્યાર બાદ સાયાત્રિક અરહન્તક પ્રમુખ પોતાવહિડો લવણ સમુદ્રમાં બ્યારે
સેકડો યોજનો સુધી દૂર પહોચીગયા ત્યારે સેકડો આફતો તેમની સાથે
અખૂમવાલાગી (ત જહા) જેમ કે

(अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले धणियसदे, अभिक्खण २ आगासे
देवयाओ नच्चति, एग च ण मह पिसायरूव पासति)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતા મેઘ ગર્જનાઓ થવા માડી, વીજળીઓ જખૂ
કવા લાગી અને મેઘનો ગભિર ધ્વનિ પણ થવા માડ્યો આકાશમાં વારવાર
દેવતાઓ નાચતા બેવામાં આવવા લાગ્યા.

વિદ્યુદ્વિદ્યોતન પુનઃ પુનર્દેવનૃત્યપ્રદર્શનપૂર્વકમેક વૃદ્ધ પિશાચરૂપ વિલોકયન્તિ ।
સ્મેત્યર્થઃ । કથમ્ભૂત તત્ પિશાચરૂપમિત્યાદિ-‘ તાલજઘ ’ તાલજઘ્ન તાલવૃક્ષવ-
દ્વીર્ધે જઙ્ઘે यस્ય તત્તથા, દિવ ગતામ્યા ગગનસ્પર્શિમ્યા વાહુભ્યા મહાદીર્ઘામ્યાં
વાહુભ્યા યુક્તમિત્યર્થઃ । મપીમૂશ્લકમહિષકાલક મપી-કઙ્ગલ મૂપકો મહિષશ્ચ
પ્રસિદ્ધઃ તદ્વત્ કાલક કૃષ્ણવર્ણ યત્તત્તથા, મરિયમેહવન્ન ’ મૃતમેઘવર્ણ = જલપૂર્ણ-
ઘનીભૂતમેઘઝટાવદતિશ્યામ, લમ્બોઢ, નિર્ગતાગ્રદન્ત નિર્ગતાનિ મુખાદ્વહિર્ભૂતાનિ
અગ્રાણિ અગ્રભાગા યેપા તે નિર્ગતાગ્રાસ્તથા ભૂતાદન્તા यस્ય તથોક્તસ્ત, ‘ નિલ્લા
લિયજમલજુયલજીહ ’ નિર્લાલિતયમલયુગલજિહ્વ નિર્લાલિત - મુખાદ્વહિષ્કૃત
યમલ=સમ યુગલ દ્વય જિહ્વો ર્યેન તત્તથા, ‘ આઝસિયવયણગઢદેસ ’ પ્રવિષ્ટવદન-

લગી, વિજલી ચમક ને લગી, ઓર મેઘ કી ગમીર ધ્વનિ મી હોને લગી ।
ચાર ૨ આકાશ મેં દેવતા નાચતે હુએ દિશ્વલાઈ પડને લગે ।

તથા વિશાલ કાય પિશાચ કા રૂપ મી દૃષ્ટિગોચર હોને લગા ।
(તાલજઘ દિવ ગયાઈં બાહાઈં મસિમૂસગ મહિષકાલગ) હસ પિશાચ
કી દોનોં જઘાઈં તાલવૃક્ષ કે સમાન દીર્ઘ યી । દોનોં વાહુ માનો આકા
શ કો છૂતે થે । કઙ્ગલ, મૂપક, ઓર મહિષ કે સમાન હસ કા વર્ણ
કાલા યા । (મરિયમેહવન્ન, લમ્બોઢ નિગગયગદત નિલ્લલિય જમલજુય
લજીહ, આઝસિય વયણગઢદેસ, ચીળ ચિપિટનાસિય વિગય મુગ-
મગમમય) જલ સે મરી હુઈ ઘની ભૂત મેઘઘટા કી તરહ હસ કો
શરીર અત્યત કાલા યા । ઓઠ ઘડે લહે થે । આગે કે દાંત બાહર નિકલે
હુએ થે । હસ કી જિહ્વા કે દોનો અગ્ર ભાગ એક હી સાથ મુલ સે બાહિર

તેમજ વિશાળ શરીરવાળા પિશાચનુરૂપ ૫૫ બેવામા આવવા લાગ્યું
(તાલજઘ દિવ ગયાઈં બાહાઈં માસિમૂસગ મહિષકાલગ) તે પિશાચની બંને
સાથળે તાલવૃક્ષની જેમ લાળી હતી બંને હાથ બંને આઝાશને સ્પર્શતા
હોય મેરા, ઉદર અને પાડાના બેવા તેના ૨૭ કાળો હતા

(મરિયમેહવન્ન, લમ્બોઢ નિગગયગદત નિલ્લલિયજમલજુયલજીહ, આઝ
સિયવયણગઢદેસ, ચીળચિપિટનાસિય વિગયમુગમમમમય)

પાણીથી ભરતી સાન્દ્ર મેઘ ઘટાઓની જેમ તેનું શરીર ઘણું કાળું હતું
હોઠ ઘણું લાંબા અને નીચે લગડતા હતા આગળના દાંત બહાર નીકળી
ગયેલા હતા તેની જીભના આગળના બંને ટેરવા એક્ટ્રી માથે મોથી બહાર
નીકળી રહ્યા હતા તેના બંને ગાલ મોમા બેનીગયેલા હતા

‘ઓગાઢા’ અગાઢિતા તીર્ણાં । તતસ્તદનન્તર ગ્વલુ તેષામ્ અરહન્નકપ્રમુખાણાં
સંયાત્રા નૌવાણિજકાના લવણસમુદ્રમનેર્યાનિ યોજનશતાનિ અગાઢિતાનાં તીર્ણાં
સતા વહ્નિ ‘ઉપ્પાઈયસયાઈ ઉત્પાતશતાનિ પ્રાદુર્ભૂતાનિ । તાપુત્પાદશતાનિ
ઘર્ણયતિ--

‘ત જહા’ ઇત્યાદિ । તદ્ યથા-અકાલે ગર્જિતં વર્ષાકાલ-વિના મેઘધ્વનિઃ,
અકાલે શિથિત્ અકાલે ‘યણિયસદે’ સ્તનિતશબ્દ’ મેઘસ્ય ગમ્ભીર’વનિરભૂત
તથા-અમીક્ષણ=પુન પુનઃ આકાશે દેવતા નૃત્યન્તિ તથા-એક ચ લલુ મહત્ બૃહત્
પિશાચરૂપ પશ્યતિ અરહન્નકપ્રમુખા’ સયાત્રા નૌ વાણિજસઃ અકાલમેઘધ્વનિ

પહે વેગ કે સાથ ઈર્મિયો-મહાલહરોં કે તરગો કે-ઝોટી ૨ લહરોં કે-
માલા સહસ્ર કો ઉલ્લઘન કરતી હૃઈ વહ નૌકા કિતનેક દિનોં કે બાદ
લવણ સમુદ્ર મેં અનેક યોજનોં તક પહુંચ ગઈ । (તણ તેસિં અરહન્નક
પામોઝલાણં સજત્તાનાવા વાણિયગાળ લવણસમુદ્ર અળેગાઈ જોયળ
સયાઈ ઓગાઢાણં સમાણાળ વહૃઈ ઉપ્પાઈયસયાઈ પાડબૂયાઈ) ઇસ કે
બાદ ડન સાયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ નૌકા વણિકોં કો જબ કિ બે
લવણ સમુદ્ર મેં અનેક સૈકહોં યોજનો કો પાર કર ચુકે થે બહુત સે
સૈકહો ઉપદ્રવ સામને આને લગે ।

(ત જહા) જૈસે- (અકાલેગર્જિજળ, અકાલે વિજ્જુણ, અકાલે
યણિયસદે, અમિક્ષણ ૨ આગાસે દેવયાઓ નચ્ચતિ, એગ ચ ણ મહ
પિસાયરૂવ પાસતિ) વર્ષા કાલ કે વિના હો ઉસ સમય મેઘધ્વનિ હોને

ખૂબજતીય વેગે નાનામોટા સેકડો મોબાઓ ને વટાવીને ડેટલાક દિવસો
ખાદ પહોણુ લવણસમુદ્રમા ઘણા થોજનેા દૂર સુધી પહોચી ગયુ

(તણ તેસિં અરહન્નકપામોઝલાણ સજત્તાનાવા વાણિયગાળ લવણસમુદ્ર
અળેગાઈ જોયળસયાઈ ઓગાઢાણ સમાળ વહૃઈ ઉપ્પાઈયસયાઈ પાડબૂયાઈ)

ત્યાર ખાદ સાયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ પોતવણિકો લવણ સમુદ્રમા બ્યારે
સેકડો થોજનેા સુધી દૂર પહોચીગયા ત્યારે સેકડો આફતો તેમની સામે
અજૂમવાલાગી (ત જહા) જેમ કે

(અકાલે ગર્જિજળ અકાલે વિજ્જુણ અકાલે યણિયસદે, અમિક્ષણ ૨ આગાસે
દેવયાઓ નચ્ચતિ, એગ ચ ણ મહ પિસાયરૂવ પાસતિ)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતા મેઘ ગર્જનાઓ થવા માડી, વીજળીઓ જબૂ
કવા લાગી અને મેઘનો ગલિર ધ્વનિ પણ થવા માડયો આકાશમા વારવાર
દેવતાઓ નાચતા બોવામા આવવા લાગ્યા

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वमेक वृद्धत् पिशाचरूप विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूत तत् पिशाचरूपमित्याह—‘ तालजघ ’ तालजङ्घ तालवृक्ष-दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिव गताभ्या गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या महादीर्घाभ्यां बाहुभ्या युक्तमित्यर्थः । मपीमृशमह्विकालक मपी-वज्जल मूपको मह्विष्व प्रसिद्धः तद्वत् कालक कृष्णवर्ण यत्तत्तथा, भरियमेहवन्न ’ भूतमेघवर्ण = जलपूर्ण-घनीभूतमेघगटावदतिश्याम, लम्पोष्ठ, निर्गताग्रदन्त निर्गतानि मुखाद्वह्निर्भूतानि अग्राणि अग्रभागा येषां ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्त, ‘ निल्ला लियजमलजुयलजीह ’ निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालित — मुखाद्वह्निष्कृत यमल=सम युगल द्वय जिह्वयो र्येन तत्तथा, ‘आऊसियवयणगडदेस’ प्रविष्टवदन-

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गभीर ध्वनि भी होने लगी । चार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगे ।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा । (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) इस पिशाच की दोनों जघाएँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थीं । दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे । कज्जल, मूपक, और मह्विष के समान इस का वर्ण काला था । (भरियमेहवन्न, लम्पोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललिय जमलजुयलजीह, आऊसिय वयणगडदेस, चीण चिपिटनासिय विगय भुग्ग भग्ग भुमय) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यन्त काला था । ओष्ठ बड़े लंबे थे । आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे । इस की जिह्वा के दोनों अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहर

तेभञ्ज विशाण गरीरवाणा पिशाचनुश्य पक्षु जेवामा आववा लाग्गु (तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) ते पिशाचनी जने माथणे तालवृक्षनी जेम लाणी हुती जने छाथ बाण्हे आऊसने स्पर्शता छाय भेग, उँदर जने पाडाना जेवे तेने रग काणे हुते ।

(भरियमेहवन्न, लम्पोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललियजमलजुयलजीह, आऊसियवयणगडदेस, चीणचिपिटनासिय विगयभुग्गभग्गभुमय)

पाणीथी लरेली सान्द्र मेघ घटाज्जेनी जेम तेनु शरीर पक्षु काणु हुतु छेड घण्टा लाणा जने नीथे लज्जता हुता आगणना दात जडार नीकणी गथेला हुता तेनी ललना आगणना जने टेरेवा जेद्री माथे मोथी जडार नीकणी रक्षा हुता तेना जने गाव मोमा जेनीगथेला हुता

गण्डदेश प्रविष्टौ चदने गण्डदेशी कपोलभागो यस्य तत्तथा, 'चीणचिपिटनासियं' चीनचिपिटनासिक, चीना=तुस्वा चिपिटा च नासिका यम्य तत्तथा, 'विगय भुगभगभुमय' विकृतभुग्नभग्नभुवम् विकृते सत्रिकारे भुग्ने भग्ने=अतीववक्त्रे भुवौ यस्य तद् तथा, खज्जोयगदित्तचक्खुराग' रघोतकदीप्तचञ्चुराग, खद्योतकवद्दीप्तचञ्चुरागो लोचनरक्तत्वं यस्य तत्तथा, उत्तासणग' उत्तासनक मयानक विशालवक्त्रक=विस्तीर्णोरः स्थल, विशालकुक्षि=विस्तीर्णोदरम्, पल्लवकुक्षि-दीर्घोदरम्, 'पहसियपयलिय पयडियगत्त' प्रहसितप्रचलितप्रपतितगात्रम्। प्रहसितानि प्रविकासितानि प्रचलितानि=प्रकम्पितानि प्रपतितानि प्रकर्षेण श्लथीभूतानि गात्राणि यस्य तत्तथा, पणचमाण' मन्दृत्यत् 'अप्फोडत्' आस्फोटयत्, अभिवयत् 'अभिवज्जत्', 'अभिगज्जत्' अभिगर्जत्, बहुसो' अट्टहासे विणिम्भयत् 'बहु

निकल रहे थे। दोनों कपोल इसके मुख के भीतर घुसे हुए थे-अर्थात् दोनों गाल इस के पिच के हुए थे।

नाक इस की छोटी और चपटी थी। इस की दोनों भोंहें विकृत भुग्न और भग्न थी। अथवा भुग्न भग्न थी अत्यन्त चक्र थी-(खज्जोयगदित्तचक्खुराग, उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पल्लवकुच्छि पहसियपयलिय, पयडियगत्त) इस की आँखों की ललाई खद्योत (आग्या) के समान दीप्त थी, उरस्थल (छाती) इस का भयोत्पादक था, पेट विस्तीर्ण और लबा था। शरीर इस का प्रहसित प्रचलित एव श्लथी भूत ढीला था। यह उस समय, (पणचमाण अप्फोडत्, अभिवयत् अभिगज्जत्, बहुसो २ अट्टहासे विणिम्भयत्) नृत्य कर रहा था।

अपनी दोनों भुजाओं का आस्फालन (बजाता) कर रहा था। ऐसा ज्ञात होता था कि मानों गर्जना करता हुआ समक्ष (सामने) ही

तेनु नाक नानु अने अपटु हुनु तेनी जने लम्भसे विवृत भडज्याडी अने लज्ज हुती अथवा लुज्जलज्ज अने वक्क-त्रासी-हुती

(खज्जोयगदित्तचक्खुराग उत्तासणग विसालवच्छ, विसालकुच्छि पल्लवकुच्छि, पहसिय पयलिय, पयडियगत्त)

तेनी आभोनी रताश आजिया जेवी यमकती हुती तेनु वक्षस्थण लयकर हुनु पेट विशाल अने लाजु हुनु तेनु शरीर प्रहसित, प्रचलित अने श्लथी भूत ओटवे के लज्जडी गयेहु हुनु तयारे

(पणचमाण अप्फोडत् अभिवयत्, अभिगज्जत्, बहुसो २ अट्टहासे विणिम्भयत्) ते नाथी रह्यो हुती पोटाना जने लुब्धज्जोते ते आस्फालन (अक्षणावपु)

शोऽदृष्टास विनिर्मुञ्चत्, 'नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिकुसुमप्पगास' नीलोत्पल
गवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाश=नीलोत्पल=नीलकमल, गवल=महिषशृङ्ग, गुलिका
=कृष्णवर्णवस्तुविशेषः प्रसिद्धः, अतसीकुसुमम्, अतसी=अलसीनाम्नाप्रसिद्धो धान्य-
विशेषस्तस्य कुसुम=पुष्प, तद्वत् प्रकाशो वर्णो यस्य स तथा तम्, नीलकमलादि-
सदृशवर्णमित्यर्थः, खुरधार क्षुरवार क्षुरस्येव धारा यस्य स तत्तथा तम् अतितीक्ष्ण
धारमित्यर्थः, असि = कृपाण, गृहीत्वा, अभिमुहमावयमाण 'अभिमुखमापतत्
पश्यन्ति सर्वेऽपि सायात्रिकाः अरहन्नकप्रमुखा अवलोकन्ते स्म ॥ सु० १९ ॥

मूलम्—तएण ते अरहण्णगवज्जा सज्जत्ताणावावाणियगा एगं
च णं मह तालपिसाथ पासति तालजंघं दिवं गायाह वाहाहिं
फुट्टसिर भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं भरियमेहवन्न
सुप्पणह फालसरिसजीहं लवोट्ट धवलवट्टअसिलिट्ट तिकख-
थिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं विकोसियधारासिजुयलसमस-

आ रहा है । वार वार तो यह अदृष्टास करता था । (नीलुप्पलगवल
गुलिय अयसि कुसुमप्पगास खुरधार असि गहाय अभिमुह मावय
माण पासति) नीलकमल, गवल-महिष शृङ्ग, गुलिका-कृष्ण वर्णक
विशेष, अलसी पुष्प, के समान इसका सारा शरीर अत्यन्त काला था ।

यह एक तलवार लिये हुए था, जिस की धारा क्षुरा की धारा के
समान तीक्ष्ण थी । उन अरहन्नक प्रमुख सायात्रिकों ने उसे इस
तरह से देखा कि वह उस तलवार को लेकर हम लोगों की ओर
आ रहा है । सूत्र " २० "

करी रह्यो હતો તેને બેઠને એમજ લાગતુ હતુ કે તે બધે ગર્જના કરતો
સામે આવી રહ્યો હોય તે વાર વાર અદૃષ્ટાસ "ખડખડાટ કરીને હસવુ" કરતો હતો

(નીલુપ્પલગવલગુલિયઅયસિકુસુમપ્પગાસ સુરધાર અસિ ગહાય અભિમુહ
માવયમાણ પાસતિ)

નીલકમળ, ગવલ, ડપડાના શલિકા-કૃષ્ણવર્ણક વિશેષ, અળખીના પુષ્પની
જેમ તેનુ શરીર ઘણુ ગળુ હતુ

તેના હાથમા ધરાનીધાર જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવાર હતી અરહન્નક
પ્રમુખ સાયાત્રિકોને એમ થયુ કે તે પિશાચ હાથમા તલવાર લઇને તેમની
તરફ જ ધમી આવી રહ્યો છે ॥ સૂત્ર " ૨૦ " ॥

ગણ્ડદેશ પ્રવિટ્ઠો વદને ગાન્ડદેશો કપોલભાગો यस્ય તત્તથા, 'ચીનચિપિટનાસિયં' ચીનચિપિટનાસિક, ચીનાન્દ્રસ્યા ચિપિટા ચ નાસિકા યમ્ય તત્તથા, 'વિગય ભુગમમ્ભુમય' વિકૃતભુગમમ્ભુવમ્ વિકૃતે સવિકારે ભુને મન્ને=અતીવવક્રે ભુવૌ યસ્ય તત્ તથા, સ્વજ્જોયગદિત્તચક્ષુરાગ' સ્વઘોતમટીપ્તચક્ષુરાગ, સ્વઘોતક-વદીપ્તચક્ષુરાગો લોચનસ્તત્ત્વ યસ્ય તત્તથા, ઉત્તાસણગ' ઉત્તામનક મયાનક વિશાલવક્ષસ્ક=વિસ્તીર્ણોરઃ સ્થલ, વિશાલકુક્ષિ=વિસ્તીર્ણોદરમ્, પ્રલમ્બકુક્ષિ-દીર્ઘોદરમ્, 'પહસિયપયાલિય પયડિયગત્ત' પ્રહસિતપ્રચલિતપ્રપતિતગાત્રમ્ । પ્રહસિતાનિ પ્રવિકાસિતાનિ પ્રચલિતાનિ=પ્રકમ્પિતાનિ પ્રપતિતાનિ પ્રવર્ષેણ શ્લથીભૂતાનિ ગાત્રાણિ યસ્ય તત્તથા, પણચમાણ' પ્રનૃત્યત્ 'અપ્ફોડત' આસ્ફોટયત્, અભિવચત' અભિવજત્, 'અભિગજ્જત' અભિગર્જત્, વહુસો' અટ્ટટ્ટહાસે વિણિમ્મુચત' વહુ

નિકલ રહે થે । દોનોં કપોલ હસકે મુલ્લ કે ખીતર છુસે દુણ થે-અર્થાત્ દોનોં ગાલ હસ કે પિચ કે દુણ થે ।

નાક હસ કી છોટી ઓર ચપટી થી । હસ કી દોનોં મોંહેં વિકૃત ભુગ્ન ઓર મગ્ન થી । અથવા ભુગ્ન મગ્ન થી અત્યન્ત વક્ર યી-(સ્વજ્જોય ગદિત્તચક્ષુરાગ, ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબકુક્ષિ પહસિયપયાલિય, પયડિયગત્ત) હસ કી આંખોં કી લલાઈ સ્વઘોત (આગ્યા) કે સમાન દીપ્ત થી, ઊરસ્થલ (છાતી) હસ કા મયોત્પાદક થા, પેટ વિસ્તીર્ણ ઓર લથા થા । શરીર હસ કા પ્રહસિત પ્રચલિત ઇષ શ્લથી ભૂત ઢીલા થા । યહ ઉસ સમય, (પણચમાણ અપ્ફોડત, અભિવચત અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અટ્ટટ્ટહાસે વિણિમ્મુચત) નૃત્ય કર રહા થા ।

અપની દોનોં મુજાઓં કા આસ્ફાલન (ચજાતા) કર રહા થા । એસા જ્ઞાત હોતા થા કિ માનો ગર્જના કરતા હુઆ સમક્ષ (સામને) હી

તેનુ નાક નાનુ અને અપટુ હતુ તેની અને ભગ્નરો વિદૃત ખડખડી અને ભગ્ન હતી અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર-ત્રાસી-હતી

(સ્વજ્જોયગદિત્તચક્ષુરાગ ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબકુક્ષિ, પહસિય પયાલિય, પયડિયગત્ત)

તેની આંખોની સ્તાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી તેનુ વક્ષસ્થળ લથકર હતુ પેટ વિશાળ અને લાંબુ હતુ તેનુ શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત ઝોટલે કે લખડી ગયેલુ હતુ ત્યારે

(પણચમાણ અપ્ફોડત અભિવચત, અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અટ્ટટ્ટહાસે વિણિમ્મુચત) તે નાચી રહ્યો હતો પોતાના બંને ભુજાઓનુ તે આસ્ફાલન (અર્શનાવનુ)

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूप दृष्ट, तत्रारहन्नकश्रावकवज्रैर्यत्कृत तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष वर्णयन्नाह-‘तएण’ इत्यादि।

ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकवज्र्या सयात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणक पिशाचस्वरूप पश्यति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीना बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृश पिशाचस्वरूप पश्यन्तीत्याह-‘एग च ण मह’ इत्यादि। एग च खलु महान्त तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूत तालपिशाचमित्याह-‘तालजघ’ इति तालवृक्षवदीर्घे जङ्घे यस्य स तावज्ज्वस्तम्, दिवगताभ्या=गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या युक्त, स्फुट शिरस=स्फुट स्फुटित बन्धनरहितत्वाद् विकीर्ण शिरः शिरोजातत्वाद् केशजाल यस्य स तथा च, ‘भमरणिगरवरमा-

‘तएण ते अरहण्णगवज्ज’ इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सायात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के बिना उस विकराल पिशाच को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएण)इसके बाद(अरहन्नगवज्जा)एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सज्जत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सायात्रिक पोत वणिक जनो ने (एग च ण मह तालपिसाय पासति) एक बड़ा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लयी २ जघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

‘तएण ते अरहण्णगवज्जा’ इत्यादि

टीकार्थ-सूत्रकार आही इस पिशाचनु सविशेषवर्णन करवाने की इच्छा थी कहे छे के पिशाचने लेधने अरहन्नक श्रावक सिवायना आहीना भीन पधा सायत्रिकेनी शु स्थिति थध अने ते विकराण पिशाचनु रौद्र भवइप लेधने तेआअे शु शु कथुं ओनु वर्णन करता पडेला ते पिशाचना स्वइपनु विशेष इपथी वर्णन छे अअर्ही उरु छु-

“तएण” त्थार आह “अरहन्नगवज्जा” अरहन्नक श्रावकना सिवाय “सज्जत्ताणावा वाणियगा” पधा सायात्रिक पोतवखिक्क जनो ओ “एग च ण मह तालपिसाय पासति” मोटा तालवृक्ष जेवो अने ताल वृक्ष जेवो मोटी साथेवा पाणे पिशाच जेथे।

तेना पने हाथ आकाशने स्पर्शता छता छुटा पडेला तेना भाथाना पाण

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरंतनिछालियगजीहं
 अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालुय हिंयु-
 लुयसगव्भकदरविलंबअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं
 आऊसियअक्खचम्मउड्डुगंडदेस चोणचिपिडवंकभग्गणासं
 रोसागयधमधमेतमारुतनिट्टुरखरफरुसञ्जुसिर ओभुग्गणासिय-
 पुड घाडुव्भडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत
 विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं
 भिउडितडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणस-
 सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-
 सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकणहसप्पधमधमे-
 तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखध दित्तवुधुयंत घूयकय
 कुंमलसिरं घटारवेण भीम भयकरं कायरजणहिययफोडणं
 दित्तमट्टहासं विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमसमलमलिणपोच्चड-
 तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छता भिन्नणहरोममुहनयण
 कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊस
 वियवाहुजुयल ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ट दित्त असुभ
 अप्पिय अमणुन्न अक्कतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-
 पिसायरूव एज्जमाणं पासति, पासित्ता भीया० संजायभय
 अन्नमन्नस्स कायं समतुरगेमाणा२ बहूणं इदाण य खदाण
 य रुद्धसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ठकि-
 रियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिद्धति ॥१॥

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूपं दृष्ट, तत्रारहन्नकश्चावकवज्रैर्यत्कृतं तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं वर्णयन्नाह-‘तएण’ इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु तेऽरहन्नकवज्र्यां सयात्रानौवाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणकं पिशाचस्वरूपं पश्यन्ति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीनां बहूनि मान्यतां शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृशं पिशाचस्वरूपं पश्यन्तीत्याह-‘एग च ण मह’ इत्यादि। एकं च खलु महान्तं तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, यथम्भूतं तालपिशाचमित्याह-‘तालजघ’ इति तालवृक्षवदीर्घे जङ्घे यस्य स ताज्जङ्घस्तम्, दिवगताभ्यां=गगनस्पर्शिभ्यां बाहुभ्यां युक्तं, स्फुटं शिरसः=स्फुटं स्फुटितं बन्धनरहितत्वाद् विकीर्णं शिरः शिरोजातत्वाद् केशजालं यस्य स तथा च, ‘भमरणिगरवरमा

‘तएण ते अरहण्णगवज्ज’ इत्यादि।

अथ सूत्रकार इत्सी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सांयात्रिक थे उन समने एक अरहन्नक श्रावक के बिना उस विकराल पिशाच को देखकर क्या ? किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएण)इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोट वणिक् जनों ने (एग च ण मह तालपिसाय पासति) एक बड़ा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लची ? जघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

‘तएण ते अरहण्णगवज्जा’ इत्यादि

टीकार्थ-सूत्रकार अच्छी इस पिशाचनु सविशेषवर्णन करवानी धिच्छा थी छडे छे के पिशाचने लेधने अरहन्नक श्रावक सिवायना भाडीना भीन पधा सायत्रिकोनी शु स्थिति थध अने ते विकरण पिशाचनु शैर चक्षु लेधने तेओओ शु शु वरु ओतु वर्णन करता पडेला ते पिशाचना चक्षुषु विशेष रूपथी वर्णन छु अअच्छी करे छु-

“तएण” त्थार भाद “अरहन्नगवज्जा” अरहन्नक श्रावकना सिवाय “सजत्ताणावा वाणियगा” पधा सायात्रिक पोतवणिक जेओ ओ “एग च ण मह तालपिसाय पासति” भोटा तालवृक्ष जेओ अने ताल वृक्ष जेवी भोटी साथेओ वाओ पिशाच जेओ

तेना जने छुथ आकाशने स्पर्शता छेता छटा पडेला तेना भाथाना वाण

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरतनिह्यालियग्गजीहं
 अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्तताट्टयं हिंयु-
 लुयसगव्वभकंदरविलवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं
 आऊसियअक्खचम्मउड्डुगंडदेस चोणचिपिडवंकभग्गणासं
 रोसागयधमधमेतमारुतनिट्टुरखरफरुसज्जुसिर ओभुग्गणासिय-
 पुड घाडुव्वभडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत
 विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं
 भिडाडिताडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंध विचित्तगोणस-
 सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-
 सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियाग भोगकूरकण्हसप्पधमधमे-
 तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखंध दित्तबुधुयत घूयकय-
 कुंमलसिरं घंटारवेण भीम भयंकर कायरजणहिययफोडणं
 दित्तमट्टहास विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमसमलमलिणपोच्चड-
 तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छतां भिन्नणहरोममुहनयण
 कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवत्तणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊस
 वियवाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ट दित्त असुभ
 अप्पिय अमणुन्न अक्कंतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-
 पिसायरूव एज्जमाणं पासति, पासित्ता भीया० सजायभय
 अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा२ वड्डूणं इटाण य खदाण
 य रुइसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोटकि-
 रियाण य वड्डूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिद्धति ॥१॥

पारौ तयोरस्योः खड्गयोर्युगल=द्वय तेन समसदृश्यौ=अतितुल्ये तनुके=प्रतले, चञ्चल यथाभवति, यथाऽविश्रान्त गलन्त्यौ=रसातिलालसत्वात् लालाविन्दूनधः पातयन्त्यौ, अतएव रसलोले=रसास्वादानुरक्ते, चपले चञ्चले, अतएव फुरफुरायमाणे=प्ररुम्पमाने, निर्लालिते मुखाद्वह्निष्कृते, अग्रजिह्वे=अग्रभूतजिह्वे जिह्वाये येन स तथा तम् अतिदीर्घजिह्वमित्यर्थः तथा-‘ अवयच्छिद्यमहल्लविगयवीभच्छ लालपगलतरत्ततालुय ’ प्रसारितमहाविकृतवीभत्सलालाप्रगलद्रक्ततालुक्रम्, प्रसारित मुखप्रसारणेन दृश्यमान महाविकृत वीभत्स लालाभिः प्रगलद्रक्त च तालु यस्य स तथा त मुखप्रसारणप्रकटोभूतमहाविकृतलालापूर्णरक्ततालुवन्तमित्यर्थः तथा-‘ हिङ्गुलुयसगम्भकदरविलवअजणगिरिस्स ’ हिङ्गुलुकसगर्भकन्दरविला-मिवाञ्जनगिरेः=हिङ्गुलुकेन रक्तरणकद्रव्यविशेषेण सगर्भ=सान्तराल कन्दररूप विलमिव अञ्जनगिरेः=कञ्जलपर्वतस्य मुखप्रसारेण रक्तातिदीर्घ जिह्वा तालु युक्तमुख चिरस्य हिङ्गुलुक पुञ्जसम्भूतरुन्दरसादृश्यादति कृष्णवर्णमहाविशालशरीरस्याञ्ज-

भाग म्यान से निकाली हुई तलवार के समान तीक्ष्ण थी । पतलि थी । चञ्चल थी । रस में अतिलालसावाले होने के कारण उन से निरन्तर लार बह रही थी । रस के आस्वादन में वे अनुरक्त थे । चञ्चल होने के कारण वे कप रहे थे । और मुख से बाहिर निकले हुए थे । तात्पर्य-इस की जीभ बहुत लची थी ।

(अवयच्छिद्यमहल्लविगयवीभच्छलालपगलतरत्ततालुय, हिङ्गुलुय सगम्भकदरविलवअजणगिरिस्स अग्गिजालुगिलत्तवयण) तालु इस का मुख के फाड़ते समय दिखलोई पड़ता था । महा विकराल था । वीभत्स था । लार से गीला हो रहा था और लाल था । इसका मुख अजणगिरि (काला पर्वत) के हिङ्गुलुक से भरे हुए कदरा रूप विल के

तेनी ललना अने आगणना टेरेवा म्यानमाथी अङ्गार ढाढेली तलवारनी नेम तीक्ष्णु हुता, पातणा हुता ययण हुता अने विषयना रसेने अङ्गु करवा भाटे अत्यत लोचुप तेमज आतुर होवा अदल तेमाथी सतत लाण टपक्या ज करती हुती तेओ रसास्वादा अणुरुत्त हुता ययण होवाने लीधे तेओ धूणुरह्या हुता, अने मोथी अङ्गार नीङ्गणी रह्या हुता मतलण ओ छे के तेनी लल भूष लाणी हुती

(अवयच्छिद्यमहल्लविगयवीभच्छलालपगलतरत्ततालुय, हिङ्गुलुयसगम्भ कदर-विलवअजणगिरिस्स अग्गिजालुगिलत्तवयण)

मे पडोणु करती पणते तेनु ताणवु देणातु हुतु ते वीभत्स हुतु लाणथीलीनु यध्दु हुतु अने लावयोण हुत तेनु मे अजणगिरि (काला पर्वत) ना हिङ्गोथी लरेली कदराना दर नेवु हुतु ते अहु विद्याण अने

सरासिमहिसकालम् ' भ्रमरनिकरपरमापराशिमहिसकाऋक्=तत्र भ्रमरनिकर इव=
 भ्रमरसमूह इव परमापरापिरिय, महिष इव च यः कालऋक्=कृष्णवर्णकस्त, 'भरि
 यमेहवन्न' भृतमेघवर्ण=जलपूर्णमेघघटादतिनीलम्, 'सुप्पणह' श्रपनम् श्रपवत्
 नखा यस्य स श्रपनखस्त, फालमदगजिह्व, फालमिहाग्नौ प्रतापित बोधम्,
 तत्सादृश्यं च वर्णदैर्घ्यदीप्त्यादिमिरिति, लम्बोष्ठ=दीर्घोष्ठ, 'धवलवट्' अमिलिद्ध
 तिक्वथिरपीणकुडिलदाढोगूढवयण ' धवलवृत्ताश्लिष्टृतीक्ष्णस्थिरपीनकुडिलद
 प्लोपगूढवदन ' धवलाभिः=श्वेताभिः, वृत्ताभिर्भर्तुलाभिरश्लिष्टाभिविरलाभिः ती
 क्ष्णाभिः स्थिराभिर्द्रवाभिः उपचितत्वेन पीनाभिः=स्थूलाभिः उक्तया कुटिलाभिश्च
 दष्टाभिरुपगूढ व्याप्त वदन यस्य स तथा तम् अतिविशालदष्टमित्यर्थः, 'विको
 सियधारासिजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचलचक्रफुरुरेतनिल्लालियग-
 जीह' विकोशितधारासियुगल समसदृशतनुचञ्चलगलद्रसलोलचलचक्रफुरुरायमाण
 निर्लालिताग्रजिह्वम्, तत्र विकोशिता=अपनीताश्रणा धारा ययोस्तौ विकोशित

शिर के बाल बधन रहित होने से इधर उधर बिग्वरे हुए थे ! इस का
 वर्णभ्रमर समूह उड्ड की राशि और महिष के शृंग जैसा काला था ।
 (भरिय मेहवन्न) जल से भरी हुई मेघ घटा के समान अत्यन्त इयाम था ।

(सुप्पणह, फाल सरिस जीह लघोष्ठ, धवलवट् आसिलिद्ध तिक्व
 थिर पीणकुडिलदाढोगूढवयण) नख इस के सूप (सूपडा) जैसे थे ।
 जिह्वा इस की अग्नि में लाल किये गये फाल के समान थी । ओष्ठ
 लवे २ थे । इसका मुख श्वेत, गोल, २ विरली, नुकीली, स्थिर-दृढ-स्थूल
 और कुटिल टेढ़ी २ दाढ़ों से युक्त था ।

(विकोसिय धारासिजुयल समसरिमतणुय चचल गलतर स
 लोल चवलचक्रफुरुरेत निल्लालियगजीह) इस की जिह्वा दोनों अग्र

आभतेम विभेशर्ध गया हुता तेनोऽग लभराओना ठोणा, अउडनेो ढगळे
 अने पाडाना शिंगडा जेवा जणेो हुतो " भरिय मेइवन्न " पाण्ण्थी लरेली
 मेधनी घटाओनी जेम भूणज डाणेो हुतो

(सुप्पणह, फालसरिमजीह लघोष्ठ, धवलवट्, आसिलिद्ध, तिक्वथिरपीण
 कुडिलदाढोगूढवयण)

तेना नणेो सूपडा जेवा हुता तेनी लल अग्निभा लालयेण थर्ध
 गयेली ढणनी ठोस जेवी हुती तेना डोड लाणा हुता तेनु मेो अइद गोण
 भटोण अजियाणी, मज्जुत मेोटी तेमज्ज कुटिल त्रासी दादो वाणु हुतु

(विकोसिय धारासियजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचलचक्र
 फुरुरेत निल्लालियगजीह)

ધારી તયોરસ્યોઃ સ્વદ્ગયોર્ધુગલ=દ્વય તેન સમસદૃશ્યૌ=અતિતુલ્યે તનુકે=પ્રતલે, ચચ્ચલ યથાભવતિ, યથાઽવિશ્રાન્ત ગલન્ટ્યૌ=સ્માતિલાલસત્વાત્ લાલાવિન્દનધઃ પાતયન્ત્યાં, અતએન રસલોલે=રસાસ્વાદાનુરક્તે, ચપલે ચચ્ચલે, અતએવ ફુરફુરાય-માણે=પ્રરુમ્પમાને, નિર્બાલિતે મુલાદ્વહિષ્કૃતે, અગ્રજિહ્વે=અગ્રભૂતજિહ્વે જિહ્વાયે યેન સ તથા તમ્ અતિદીર્ઘજિહ્વમિત્યર્થઃ તથા-‘ અવયચ્છિયમહલ્લવિગયત્રીમન્ડલ લાલપગલતરત્તાલૂય ’ પ્રસારિતમહાવિકૃતત્રીમન્ડલપ્રગલદ્રક્તતાલુકમ્, પ્રસારિત મુલપ્રસારણેન દૃશ્યમાન મહાવિકૃત ત્રીમન્ડલ લાલાભિઃ પ્રગલદ્રક્ત ચ તાલુકસ્ય સ તથા ત મુલપ્રસારણપ્રકટોભૂતમહાવિકૃતલાલાપૂર્ણરક્તતાલુવન્તમિત્યર્થઃ તથા-‘ હિંગુલુયસગન્ધકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ ’ હિંગુલુકસગર્ભકન્દરવિલામિવાજ્ઞનગિરેઃ=હિંદુલકેન રક્તવર્ણકદ્રવ્યવિશેષેણ સગર્ભ=સાન્તરાલ કન્દરરૂપ વિલમિવ અજ્ઞનગિરેઃ=કક્ષલપર્વતસ્ય મુલપ્રસારેણ રક્તાતિદીર્ઘ જિહ્વા તાલુ યુક્તમુલ વિવરસ્ય હિંદુલક પુઞ્જસમ્ભૂતકન્દરસાદૃશ્યાદતિ કૃત્યવર્ણમહાવિશાલશરીરસ્યાજ્ઞ-

ભાગ મ્યાન સે નિકાલી હુઈ તલવાર કે સમાન તીક્ષ્ણ થી । પતલિ થી । ચચલ થી । રસ મે અતિલાલસાચાલે હોને કે કારણ ડન સે નિરન્તર લાર વહ રહી થી । રસ કે આસ્વાદન મે વે અનુરક્ત થે । ચચલ હોને કે કારણ વે કપ રહે થે । ઓર મુલ સે બાહિર નિકલે હુઇ થે । તાત્પર્ય-ઈસ કી જીભ યદ્યુત લગી થી ।

(અવયચ્છિય મહલ્લવિગયત્રીમન્ડલપ્રગલતરત્તાલૂય, હિંગુલુય-સગન્ધકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ અગ્નિજાલુગ્નિલતવયણ) તાલુ ઇસ કા મુલ કે પાડતે સમય દિલ્લોઈ પડતા યા । મહા વિકરાલ થા । ત્રીમન્ડલ યા । લાર સે મીલા હો રહા થા ઓર લાલ થા । ઇસકા મુલ અજનગિરિ (કાલા પર્વત) કે હિંગુલક સે ભરે હુઇ કદરા રૂપ પિલ કે

તેની છલના અને આગળના ટેરવા મ્યાનમાથી બહાર ઝાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતા, પાતળા હતા ચચળ હતા અને વિપયના રસોને શ્રદ્ધા કરવા માટે અત્યંત લોહુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાથી સતત લાળ ટપકવા જ કરતી હતી તેઓ રસાસ્વાદમા અનુરક્ત હતા ચચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રુણરહ્યા હતા, અને માથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા મતલબ એ છે કે તેની છલ ખૂબ લાળી હતી

(અવયચ્છિયમહલ્લવિગયત્રીમન્ડલપ્રગલતરત્તાલૂય, હિંગુલુયસગન્ધકદર-વિલવઅજનગિરિસ્સ અગ્નિજાલુગ્નિલતવયણ)

મે પહોણ ટરતી વળતે તેનુ તાળવુ દેખાતુ હતુ તે ત્રીમન્ડલ હતુ લાળથીભીનુ થઈ ઈશ્યુ હતુ અને લાલચોળ હતુ તેનુ મે અજનગિરિ (કાલા પર્વત) ના હિંગુલોથી ભરેલી કદરાના દર બેધુ હતુ તે બહુ વિશાળ અને

નગિરિસામ્યાદ્ અજનગિરઃ કન્દરમિય તન્મુલ પ્રતિષાતીતિમાય । ‘ અગ્નિજ્વા
 લુગિલતયણ ’ અગ્નિજ્વાલોદ્ગિરદ્ યદનમ્ અગ્નિજ્વાલા ઉદ્ગિરદ્=વહિર્કુર્વદ્=વ
 દન મુલ્લ યસ્ય સ તથા તમ્, યસ્ય મુલ્લાદ્ અગ્નિજ્વાલાનિમ્મરતિ તથાત્રિયમિત્યર્થઃ,
 ‘ આઝસિય અક્લચમ્મઝાદ્ગહદેસ ’ આયુગિતાસચર્માપકૃદ્ ગણ્ડદેશમ્-આયુપિત્ત-
 વલિયુક્તમ્ યદસચર્મ-શ્ચકો જ્વાલારૂપણ કોશસ્તદ્વદપકૃદ્ઐ=અન્ત’ મનિર્ઘો ગણ્ડદેસો
 યસ્ય સ તથા તમ્, ‘ ચીણચિપિટવક્રમગ્ગણાસ ’ ચીનચિપિટવક્રમગ્ગનાસ=ચીના
 =હસ્યા, ચિપિટા=નિમ્ના, વક્રા=કુટિલા, મગ્ગના=મગ્નેઽ અયોયનોપરિકુટ્ટુનેન પ્ર
 સૃતેય નાસા યસ્ય સ તથા ત, ચિપિટનાસિકાઅન્તમિત્યર્થ’ ‘ રોમાગયધમધમેત
 મારુતનિદ્દુરુરુરુરુરુસિર ઓમ્મુગ્ગણાસિયપુહ ’ રોપાગતધમધમાયમાનમારુતનિ

સમાન થા । યદ્ સ્વય અતિ વિશાલ ઔર અત્યત કાલે વર્ણ કા થા
 હસ લિયે અજનગિરિ કે જૈસા થા-તથા હસ કી જિહ્વા ઔર તાલુયે
 દોનોં અતિરમ્ત થે હસ લિયે વે હિંદુલ કે સમાન લાલ થે ।

હસલિયે સૂત્રકાર ને હસ કે મુલ્લ કો અજનગિરિ કી હિંદુલક સે
 ભરી હુઈ કદરા સે ઉપમિત કિયા હૈ । હસ કે મુલ્લ સે અત્યન્ત લાલ
 જિહ્વા ઔર તાલુ ચાલા હોને કે કારણ ણેસા જ્ઞાત હોતા થા કિ
 માનો અગ્નિ કી જ્વાલા હી બાહર નિકલ રહી હૈ । (આઝસિયઅક્લ
 ચમ્મ ઝહ્ગહદેસ, ચીણચિપિટવક્રમગ્ગણાસ રોસાગયધમધમેતમારુત
 નિદ્દુરુરુરુરુરુસિર ઓમ્મુગ્ગણાસિયપુહ, ઘાહુચ્ચમ્મહરહયમીસણમુહ)
 હસ કે દોનોં કપોલ (ગોલ) પાની કો સ્ત્રીચ ને વાલે શુષ્ક વલિ
 યુક્ત ચરસ કે સમાન મીતર કો ઘુસે હુઈ થે । નાસિકા હસ કી હસ્થ
 ચિપટી યી । ટેહી હસ નાસિકા કે છેદો સે જો શ્વાસોચ્છ્વાસ નિકલના

અતિશય કાળારગતુ હંતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવું હંતુ તેની
 જીભ અને તાળવું બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગ્વોલક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગ્વોલકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે
 ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનું તાળવું અને જીભ ખૂબજ
 લાલ હોવાથી એમ લાગતું હતું કે જાણે તેના મોમાંથી અગ્નિની જવાળાઓ
 બહારનીકળી રહી હોય

(આઝસિય અક્લ ચમ્મ ઝહ્ગહદેસ ચીણ ચિપિટવક્ર મગ્ગણાસ રોસાગય ધમ
 મેત મારુત નિદ્દુરુરુરુરુરુરુસિર ઓ મ્મુગ્ગણાસિયપુહ ઘાહુચ્ચમ્મહરહયમીસણમુહ
 તેના બંને ગાલ કોસની જેમ કરચલીયોવાળા જેમ મોમાં પેસી ગયેલા
 હતા નાક તેનું નાનું અને ચપટું હતું ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છ્વાસ

पटुरखरपरुषशुपिरात्रभुग्ननासिकापुटम् रोपात् क्रोधादिवागतः प्रबलतया धमधमा
यमानः धमधमेतिशब्द कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठरस्तीव्रः खरपरुषः=अतिकर्कशः पर
मदुःसहः, शुपिरयो=स्त्रयोः तत्तथा, तदेव भूतम्-अवभुग्न-उक्त नासिकापुट
यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमवमायमानश्चासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाडु-
व्मडरइयभीषणमुह' घाटोद्भूतरचितभीषणमुख=तत्र घाटाभ्यां शिरोऽवयवविशेषा
भ्याम् उद्भट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीषण भयकर, मुख यस्य स तथा
त विकृतभयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलिय' ऊर्ध्वमुखकर्णशङ्कुलीकम्=
ऊर्ध्वमुखे कर्णशङ्कुली कर्णपुटी यस्य स तम् । तथा-'महतविगयलोमसखालगलव
तचलियकन्न' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्भमानवलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि
असुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख =
अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ तस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ
यस्य स तथा तम्, 'पिङ्गलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानों बड़े क्रोध से आ रहा है-और
इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम र शब्द
होते है उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता
था । वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था । दुःसह था । उस का मुख
शिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह
बड़ा भयकर लगता था ।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनों कर्णपुट ऊँचे उठे हुए
थे । (महत्विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न) इन दोनों कानों
के रोम इस के महा विकराल थे शङ्ख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान
फैले हुए थे । इसीलिये ये बड़े लंबे थे और चंचल थे ।

नीक्षणतो હતો તે એમ જણાતો હતો કે બાણે બહુ ક્રોધમા ભરાધને તે સાથે
ધમી આવતો હોય, એથી જ ન્યાયે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા
(ધમણ) માથી જેમ 'ધમ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવેજશ્વનિ થયા
હતો તે તીવ્ર, ઝડપી કઠોર અને હુ મહ હતો તેના મોના કંઠ રૂપા અવય
વોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયકર લાગતો હતો

(ઉદ્ધમુહકન્નસક્કુલિય) તેની બંને તરફની કાનપટ્ટી ઉચે ઉપસેલી હતી
(મહત્ત્વિગયલોમસખાલગલવત્ત્વલિયકન્ન) બંને કાન પરના રૂપાંગ મહાવિક
રાળ હતા આખના ખૂણાઓસુધી તેના બંને કાન ફેલાયેલા હતા એટલા
માટે જ એઓ લાગ્યા અને ચચળ હતા

નગિરિસામ્યાદ્ અજનનગિરેઃ કન્દરમિત્ત તન્મુલ પ્રતિભાતીતિમાત્ર । ‘ અગ્નિજ્વા-
લુગ્નિલતપયણ ’ અગ્નિજ્વાલોદ્ગિરિદ્ યદનમ્ અગ્નિજ્વાલા ઉદ્ગિરિદ્=વહિષ્કુર્વદ્=વ
દન મુલ્લ યસ્ય સ તથા તમ્, યસ્ય મુલ્લાદ્ અગ્નિજ્વાલાનિમ્સરતિ તથાવિધમિત્યર્થઃ,
‘ આઝસિય અક્ષચર્મઃપટ્ટગડદેસ ’ આયુગિતાક્ષચર્માપટ્ટ ગણ્ડદેશમ્-આયુષિત્ત=
વલિયુક્તમ્ યદક્ષચર્મ-શ્લકો જ્વાલાર્પણ કોશસ્તદ્વપરુષ્ટૌ=અન્તઃ પ્રતિષ્ઠૌ ગણ્ડદેશૌ
યસ્ય સ તથા તમ્, ‘ ચીનચિપિટકમ્ભગ્ગણાસ ’ ચીનચિપિટ વક્રમગ્નનાસ=ચીના
=હસ્યા, ચિપિટા=નિમ્ના, યકા=કુટિલા, મગ્ના=મગ્નેઃ અયોગનોપરિકુટ્વનેન પ્ર
સૂતેઽ નાસા યસ્ય સ તથા ત, ચિપિટનાસિકાન્તમિત્યર્થ ‘ રોમાગયધમધમેત
મારુતનિદ્દુરુરુરુરુસપુસિર ઓમુગ્ગણાસિપુડ ’ રોમાગયધમધમાયમાનમારુતનિ

સમાન થા । यह स्वय अति विशाल और अत्यंत काले वर्ण का था
इस लिये अजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये
दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिङ्गुल के समान लाल थे ।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अजनगिरि की हिङ्गुलक से
भरी हुई कदरा से उपमित किया है । इस के मुख से अत्यन्त लाल
जिह्वा और तालु वाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि
मानो अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है । (आऊसियअक्ख
चम्म उइट्टगडदेस, चीणचिपिटवकमग्गणास रीसागयधमधमेतमारुत
निदुदुर खरफुससुसिरओमुग्गणासिपुयड, घाडुम्भडरइयभीसणमुह)
इस के दोनों कपोल (गोल) पानी को खींच ने वाले शुष्क बलि
युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे । नामिका इस की ह्रस्व
चिपट्टी थी । टेढ़ी इस नासिका के छेदों से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળારગતુ હંતુ એટલા માટે જ તે અજનનગિરિ જેવું હંતુ તેની
છલ અને તાળવું બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગ્વોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનનગિરિની હિંગ્વોકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે
ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનું તાળવું અને છલ ખૂબજ
લાલ હોવાથી એમ લાગતું હતું કે બાણે તેના મોમાંથી અગ્નિની જ્વાળાઓ
બહારનીડળી રહી હોય

(આઝસિય અક્ષ ચર્મ ડહટ્ટગડદેસ ચીણચિપિટવક મગ્ગણાસ રીસાગય ધમ
મેત મારુત નિદ્દુરુરુરુરુસ પુસિર ઓ મુગ્ગણાસિપુડ ઘાડુમ્ભડરઇયમીસણમુહ
તેના બંને ગાલ કોસની જેમ ડરચલીયોવાળા જેમ મોમાં પેસી ગયેલા
હતા નાક તેનું નાનું અને ચપટું હતું ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

पटुरखरपरुपशुपिरायभुग्नन।सिकापुटम् रोपात् क्रोधादिवागतं प्रबलतया धमयमा
यमानः धमयमेतिशब्द कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठरस्तीन्द्रः खरपरुपः=अतिकर्कशः पर
मदुःसहः, शुपिरयो=स्त्रयोःस्य तत्तथा, तदेव भूतम्-अवभुग्न-एक नासिकापुट
यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमयमायमानश्चासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाडु-
व्भडरइयभीषणमुह' 'पालोद्धटरचितभीषणमुख=तत्र घाटाभ्यां शिरोऽवयवविशेषा
भ्याम् उद्धट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीषण भयकर, मुख यस्य स तथा
त विकृतभयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलिय' ऊर्ध्वमुखकर्णशङ्कुलीकम्=
ऊर्ध्वमुखे कर्णशङ्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम् । तथा-'महतविगयलोमसखालगलव
तचलियकन्न' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्भमानवलित्रकर्मम्, महान्ति विकृतानि
अमुदराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख =
अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ सस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ
यस्य स तथा तम्, 'पिङ्गलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानो बड़े क्रोध से आ रहा है-और
इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम र शब्द
होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम वम ऐसा शब्द होता रहता
था । वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था । दुःसह था । उस का मुख
जिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह
बड़ा भयकर लगता था ।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनो कर्णपुट ऊँचे उठे हुए
थे । (महत्विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न) इन दोनो कानों
के रोम इस के महा विकराल थे शङ्ख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान
फैले हुए थे । इसीलिये ये बड़े लंबे थे और चञ्चल थे ।

नीकणतो હતો તે એમ જણાતો હતો કે જાણે ખડું ક્રોધમા ભરાઇને તે સામે
ધમી આવતો હોય, એથી જ જ્યારે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા
(ધમણ) માથી જેમ 'ધમ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવોજધ્વનિ થયા
હતો તે તીવ્ર, કર્કશ કઠોર અને દુ સહ હતો તેના મોના કદ રૂપા અવય-
વોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયકર લાગતો હતો

(ઉદ્ધમુહકન્નસક્કુલિય) તેની બંને તરફની કાનપટ્ટી ઉચે ઉપસેલી હતી
(મહત્ત્વિગયલોમસખાલગલવતચલિયકન્ન) બંને કાન પરના રુવાળા મહાવિક
રાળ હતા આખના જીણાઓપુધી તેના બંને કાન ફેલાયેલા હતા એટલા
માટે જ એઓ લાંબા અને ચચળ હતા

નગિરિસામ્યાદ્ અજનગિરેઃ કન્દરમિત્ત તન્મુત્ય પ્રતિમાતીતિમાત્ર । ‘ અગ્નિજા
 લુગિલતપયણ ’ અગ્નિજાલોદ્ધિરદ્ પદનમ્ અગ્નિજાલા ઉદ્ધિરદ્=વહિર્કુર્વદ્=વ-
 દન મુલ્લ યસ્ય સ તથા તમ્, યસ્ય મુલાદ્ અગ્નિજાલાનિસારતિ તથાવિષમિત્પર્થઃ,
 ‘ આઝસિય અક્લચમ્મઽદ્દગ્ગદ્દેસં ’ આયુપિતાલ્લચર્માપકૃષ્ટ ગણ્ડદેશમ્-આયુષિત્ત-
 વલિયુક્તમ્ યદક્લચર્મ-શ્વકો જ્વાલાર્પણ કોશસ્તદ્દપકૃષ્ટૌ=અન્તઃ પ્રપિઠૌ ગણ્ડદેશૌ
 યસ્ય સ તથા તમ્, ‘ ચીળચિપિટાકમ્મગ્ગણામ ’ ચીનચિપિટ વક્રમગ્નનાસ=ચીના
 =હસ્તા, ચિપિટા=નિમ્ના, વક્રા=કુટિલા, મ્મના=મ્મનેઽ અયોગનોપરિકુટ્ટનેન પ્ર
 સ્તેવ નાસા યસ્ય સ તથા ત, ચિપિટનાસિકાપન્તમિત્પર્થઃ ‘ રોમાગયધમધમેત
 મારુતનિદ્દુરુરુરુસચુસિર ઓમુગ્ગણાસિયપુહ ’ રોપાગતધમધમાયમાનમારુતનિ

સમાન થા । યદ્ સ્વય અતિ વિશાલ ઔર અત્યંત કાલે વર્ણ કા ધા
 હસ લિયે અજનગિરિ કે જૈસા ધા-તથા હસ કી જિહ્વા ઔર તાલુયે
 દોનોં અતિરસ્ત થે હસ લિયે વે હિદગુલ કે સમાન લાલ થે ।

હસલિયે સૂત્રકાર ને લમ કે મુલ્લ કો અજનગિરિ કી હિંગુલક સે
 ભરી હુઈ કદરા સે ઉપમિત્ત કિયા હૈ । હસ કે મુલ્લ સે અત્યંત લાલ
 જિહ્વા ઔર તાલુ વાલા હોને કે કારણ ણેસા જ્ઞાત હોતા યા કિ
 માનો અગ્નિ કી જ્વાલા હી વાદર નિકલ રહી હૈ । (આઝસિયઅક્લ
 ચમ્મ ડદ્દગ્ગદ્દેસ, ચીળચિપિટવક્રમગ્ગણાસ રોસાગયધમધમેતમારુત
 નિદ્દુરુરુરુરુસચુસિરઓમુગ્ગણાસિયપુહ, ઘાહુમ્મહરહ્યમીસણમુહ)
 હસ કે દોનોં કપોલ (ગાલ) પાની કો સ્ત્રીચ ને વાલે શુલ્ક વલિ
 યુક્ત ચરસ કે સમાન મીતર કો ઘુસે હુઈ થે । નાસિકા હસ કી હસ્ત
 વિપટી યી । ટેઢી હસ નાસિકા કે છેદો સે જો શ્વાસોચ્છવાસ નિકલતા

અતિથય કાળારગતુ હંતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવું હંતુ તેની
 છલ અને તાળવું બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગળોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગળોકથી લહેલી કદરાની તેના મોની જે
 ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેવું તાળવું અને છલ ખૂબજ
 લાલ હોવાથી એમ લાગતું હતું કે બંને તેના મોમાંથી અગ્નિની જ્વાળાઓ
 બહારનીડળી રહી હોય

(આઝસિય અક્લ ચમ્મ ડદ્દગ્ગદ્દેસ ચીળ ચિપિટવક્ર મગ્ગણાસ રોસાગય ધમ
 મેત મારુત નિદ્દુરુરુરુરુસ ચુસિરઓ મુગ્ગણાસિયપુહ ઘાહુમ્મહરહ્યમીસણમુહ
 તેના બને ગાલ ડોમની જેમ કરગલીયોવાળા જેમ મોમાં પેની ગયેલા
 હતા નાક તેવું નાનું અને ચપટું હતું ત્રાસા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

युक्तप्रसर्पत्सर्पादिमालाधारिणमित्यर्थः । तथा—‘भोगकूरकण्हसप्पधम’मेतलवतकन्न
 पूर’ भोगकूरकण्हसर्पयमयमायमानलम्पमानकर्णपूरम्=भोगैः=फणैःकूरा भयकूरी
 भोगकूरी, तौच कण्हसर्पो च भोगकूरकण्हासर्पो, तौ च धमवमायमानौ=कुत्कुर्वन्तौ
 तावेवलम्पमाने कर्णपूरे=कर्णालङ्कारप्रतिषेधौ यस्य स तथा तम्, तथा—परिवृतकण्हसर्प
 कर्णभूषणमित्यर्थः ‘मज्जारसियाललइयखध’ मार्जारशृगाललगितस्कन्धम्=मार्ज
 रशृगालालगिता सधोजिताः स्कन्धयोरेन स तथा तम्, ‘दित्तधुधुयत धूयकयकुतल-
 सिर’ दीप्तधुधुर्कुर्द्धूककृतकुमलशिरस्कम्=दीप्त-दीप्तस्वर यथाभवत्येव धुधुशब्द
 कुर्वन्तो यौ धूका=उलूका तएव कृतः कुम्भलः शेखरकः शिरोभूषण शिरसि येन
 स तथा तम्, शब्दायमानोलूकशिरोभूषणधारिणमित्यर्थः, तथा—घटारवेण भीम=
 भयकरम्, घटानां शब्देन भीम भयकरम्, अतिभयानकम्, तथा—‘कायरजण-
 हिययफोडण’ कातरजनहृदयस्फोटनम्=कातरजनानां भीरुजनानां यानि हृद

घर्ण सपन्न माला उस ने पहिरी हुई थी । (भोगकूरकण्हसप्पधम
 धमेत लयतकन्नपूर) कर्णपूरो के स्थान पर इसने फणावलि से भयकर
 घने हुए, तथा फुत्कार करते हुए काले दो सर्पों को पहने रखे थे ।
 (मज्जारसियाल लइय खध) अपने दोनों स्कन्धों पर इसने मार्जार
 और शृगालो को बैठा रखा था । (दित्तधुधुयत धूयकयकुतलसिर) दीप्त
 स्वर जिस तरह से हो इस तरह से घू घू करते हुए उल्लुओं को इस
 ने अपने शिर का आभूषण—मुकुट बनाया था । (घटारवेण भीम भय
 कर कायरजणहियय फोडण दित्तमत्तट्टहास विणिम्भुयत वसारुहिर-
 पूयम समलमलिणपोच्चडतणु) घटाओं के शब्द से यह भयकर बना
 हुआ था । कातरजनों के हृदय का भयजनक होने से यह विदारक बना

वाणी भाणा तेछे पड़ेरेली छती (भोगकूरकण्हसप्पधमधमेतलवतकन्नपूर) कुड-
 क्षाना स्थाने तेछे क्षणाब्धौ लयकर तेभन् कुत्कार करता ये जाना आपो पड़े-
 रेला छता (मज्जारसियाललइयखध) पोताना अने भला उपर तेछे भिलाडा अने
 शृगालने भेमाडेला छता (दित्तधुधुयत धूयकयकुतलसिर) मोटा सादे “धू”
 “धू” करनार धूवडोने तेछे पोतना माथाना आभूषणु ओटले के मुकुट बनाव्या छता

(घटारवेण भीम भयकर जणहिययफोडण दित्त मत्तट्टहास विणिम्भुयत
 वसारुहिरपूयममलमलिणपोच्चडतणु)

घटना भीम ध्वनिथी ते लयकर लागतो छतो कातर जनेने टुट्टेथोना
 लयथी निदीछुं करनार होवाथी ते ‘विदारक’ छतो बार बार ते भडा लयकर उअ

દીપ્યમાને=ભાસ્વરે, લોચને યસ્ય સ તથા તમ્, માર્જારવત્પદીપ્તનેષ્ઠ મિત્યર્થઃ, તથા
 =‘ મિઝડિતહિયનિઢાલ ’ શ્રુતિતહિલ્લહટ=શ્રુતિઃ- શ્રૂયતા કોપકૃતા સૈવ
 તહિદ્ યસ્મિન્, તથાવિધ લ્લાટ, માલ યસ્ય સ તથા તમ્ કોપાવેપેન ત્રિપુત્સદ્ધ
 શ્રૂસમુલ્લસિતલ્લામયુક્તમિત્યર્થઃ । તથા-‘ નરસિરમાલપરિણદ્વિધ ’ નરશિરોમાલા
 પરિણદ્વચિન્હ=નરશિરોમાલૈય પરિણદ્વ=પરિધૃત ચિહ્ન=પિશાચત્વ વોધક લક્ષણયેન
 સ તથાત=નરતુણ્ડમાલા ધારિણમિત્યર્થઃ । તથા-‘ વિચિત્તગોણસમુવદ્ધપરિકર ’ વિચિ
 વ્રગોણસમુવદ્ધપરિકર=વિચિત્રૈઃ=મહુર્ણવયુક્તૈઃ, ગોનસૈ=સર્પવિશેષૈઃ, સુવદ્ધઃ પરિ
 કર કવચો યેન સ તથા તમ્, ‘ અવહોલતપ્પુફયાયતસપ્પવિચ્છુય ગધુદરનઝલસરઢ
 વિરદ્યવિચિત્તવેયચ્છમાલિયાગ ’ અવહોલપત્ત્વ ફુત્કાર્ત્ત્વ સર્પટ્થિકગોધોન્દુરનકુલ
 સરઢવિરચિતવિચિત્રવૈકલ્પમાલિકરુ=અવહોલયન્તઃ કિંચિમ્ પ્રસર્પન્તઃ પૃત્તુર્વત્થ
 યે સર્પાઃ ધૃશ્વિકાઃ ગોધા ઝન્દુરા નકુલાઃ સરઢાશ્ચ તૈર્વિરચિતા વિચિત્રા વિવિધ
 વર્ણવતી, વૈરુક્ષમાલિકારુન્ધલમ્પિતમાલા યસ્ય સ તથા તમ્, સ્કન્ધદેશે ફુત્કાર

(પિંગલદિપ્તલોચણ, મિઝડિતહિયનિઢાલનરસિરમાલપરિણદ્વ
 વિધ વિચિત્તગોણસમુવદ્ધપરિકર અવહોલતપ્પુફયાયતસપ્પ વિચ્છુય
 ગોધદરનઝલસરઢવિરદ્ય વિચિત્તવેયચ્છમાલ યાગ) હસ કી દોનો
 આંખે માર્જાર (ચિછી કી તરહ પીલી ઓર ચમકીલી યી । હસ
 કા લ્લાટ શ્રૂ વક્તા રૂપ વિજલી સે યુક્ત થા હસ ને પિશાચત્વ કે થો
 ધક નરસુઢકી માલા રૂપ ચિહ્ન કો ધારણ કર રક્ષા થા । હસ ને જો
 કવચ પહિરા હુઆ થા-વહ અનેક વર્ણવાલે સર્પો સે વ્યાસ હો રહા થા ।
 અથવા-કવચકે સ્થાનાપન્ન હસ ને વિવિધ વર્ણવાલે સર્પો કો અપને
 શરીર પર ધારણ કર રક્ષા થા ।

સ્કન્ધ દેશ મેં, હઘર ડઘર, સરકતે હુઅ તથા ફુત્કાર કરતે હુઅ સર્પો
 કી, ધૃશ્વિકો કી, ગોરો કી, ઝન્દુરો કી, નકુલો કી, સરઢો કી, વિવિધ

(પિંગલદિપ્તલોચણ મિઝડિતહિયનિઢાલ નરસિર-માલપરિણદ્વ વિધ
 વિચિત્તગોણસમુવદ્ધપરિકર અવહોલતપ્પુફયાયતસપ્પવિચ્છુયગોધદરનઝલસરઢવિરદ્ય
 વિચિત્તવેયચ્છમાલયાગ)

તેની બને આખો બિલાડાની જેમ પીળી અને ચમકતી હતી વકલૂ
 (લમ્બર) કે પીળીથી તેનું કપાળ યુક્ત હતું પિશાચપણના પ્રમાણ રૂપે
 તેણે નરસુઢની માળા પહેરેલી હતી ઘણા ગના સાપોથી તે આવેશિત હતો
 અથવા કવચના સ્થાને તેણે જાતજાતના રંગવાળા અનેક સાપોને શરીર ઉપર
 ધારણ કરેલા હતા

ખભા ઉપર આમતેજ હિલચાલ કરતા એટલે કે સચ્ચતા તેમજ ફુત્કાર
 કરતા સાપો, વીછીઓ, ઘો, ઉદરો, નાગિયાઓ, અને સરઢોની અનેક રંગો

ऊर्ध्वीकृतभुजद्वयलम्बमानप्रक्षरदुधिरगजचर्मधारिणमित्यर्थः । तथा—‘ताहिय खर
फरुसअसिणिद्धअणिट्टदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कतवग्गूहि य तज्जयत’ ताभिश्च
खरपरुपास्निग्धनिष्ठदीप्ता शुभा प्रिया मनोज्ञा कान्तवाग्भिश्च तर्जयन्त=ताभिः
=तादृशीभिर्भयकराभिश्च, खरपरुपा=अतिरुर्कशा, अस्निग्धाः=स्नेहरहिता, अनि-
ष्टा=दुःश्रवत्वेनानीप्सिताः, दीप्ता=उपतापजनकत्वादुज्ज्वला, अशुभाः=अमङ्गला,
अप्रियाः=श्रुतिकदुत्वात्, अमनोज्ञा=मनोविकृतिजनकत्वात्, अकान्ताश्च विकृत
स्वरत्वाद् या वाचस्ताभिश्च तर्जयन्त=व्रस्तयन्त पश्यन्तिस्म । अथ पुनस्तत् ताल
पिशाचरूप ‘एज्जमाण’ एज्जमान=नावप्रति अभ्यागन्तु पश्यन्ति, दृष्ट्वा भीता,
व्रस्ताः, व्रसिताः, उद्विग्नाः, सजातभयाः अन्योन्यस्य=परस्परस्य, काय=शरीर,
‘समतुरगेमाणा २’ आश्लिष्यन्तः २ उहूनामिन्द्राणा च स्कन्दाना=कार्तिकेयाणा
च, रुद्रशिववैश्रमणनागाना नागो=भवनपतिविशेष, भूताना यक्षाना च भूतयक्षाः

णिद्ध अणिट्टदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कत वग्गूहि य तज्जयत
पासइ) उस ताल पिशाच को भयकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह शून्य,
अनिष्ट, उपताप जनक, अमंगल रूप अप्रिय अमनोज्ञ, एवं अकान्त
ऐसी अपनी वाणी से दूसरो को दुःखित करता हुआ उन लोगोने देखा ।

(त ताल पिसायरूप एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया०
सजायभया अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा २ बहूण इदाणय खदाण
य रुदसिव वेसमणणागाण भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ट किरि-
याण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठति) और साथ में
यह भी देखा की वह ताल पिशाच का रूप हम लोगों की और आ रहा

(ताहि य खरफरुस असिणिद्ध अणिट्टदित्त असुभअप्पियअमणुन्नअक्कत
वग्गूहि य तज्जयत पासइ)

ताल पिशाचने ते ढोडोओ पोतानी लयकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह
रहित, अनिष्ट उपताप जनक, अमंगलरूप अप्रिय अमनोज्ञ, अने अकान्त
(भीक्षुस) वाणीधी भीक्षुओने त्रास आपतो जेथे ।

(त ताल पिमायरूप एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया० सजायभया,
अन्नमन्नस्स, काय समतुरगेमाणा २ उहूण इदाण य खदाण य रुदसिववेसमण
णागाण भूयाणय जक्खाणय अज्जकोट्ट किरिया य बहूणि उवाइयसयाणि ओवा
इयमाणा २ चिट्ठति)

યાનિ તેષા સ્ફોટન મયજનકત્વેન પ્રિદારક, તથા-દિત્તમદ્દટ્ઠાસ નિગિમ્મુયત ' દિત્તમદ્દટ્ઠાસમ્=અગ્રમદ્દટ્ઠાસ ચિનિર્મુશ્ચન્ત=મકુર્ન્તમ્, તથા-‘ વસારુહિરપૂયમસ મલમલિણપોચ્ચહતણુ ’ વસારુહિરપૂયમાસમલમલિણપોચ્ચહતણુમ્=વસારુહિરપૂયમા સમલૈર્મલિના પોચ્ચહા આદ્રા ‘ પચ પચ ’ કુર્વાણા તનુઃ શરીર યસ્ય ॥ તથાતમ્, તથા-‘ ઉત્તાસણય ’ ઉત્તાસનકમ્=ઉદ્વેજક, વિશાલવક્ષસ્કમ્=વિસ્તીર્ણવક્ષસ્થલકમ્ ‘પેચ્છતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્નરવગ્ધચિત્તરુત્તીણીવસણ’ પ્રેક્ષ્યમાણાઽમિન્નનલ્લરો મમુલ્લનયનરુર્ણવરવ્યાઘ્ર ચિત્ર કૃત્તિનિવસનમ્=તત્ર પ્રેક્ષ્યમાણા-દૃશ્યમાના અમિન્નાઃ =અચ્છિન્નનાનલ્લાથ રોમાણિ ચ મુલ્લ ચ નયને ચ કર્ણો ચ યસ્યા સા પ્રેક્ષ્યમાણાઽ મિન્નનલ્લરોમમુલ્લનયનરુર્ણ સા ચાસૌ વરવ્યાઘ્રસ્ય ચિત્રા-ત્રિવિધરુર્ણકા, કૃત્તિ શ્ચર્મ સૈવ નિવસન-પરિધાન યલ્લ યસ્ય સ તથા તમ્ અલ્લણ્ડવ્યાઘ્રચર્મપરિધાનમિત્ય ર્થઃ, તથા-‘ સસરુહિરગયચમ્મવિતતઝ્ઝમવિયવાહુજુયલ ’ સસરુહિરગયચર્મ વિ તતોચ્છૃતનાહુયુગલ=સસ-રુહિરાદ્રૈં યદ્ ગયચર્મ, તદ્ વિતત-વિસ્તારિત યત્ર તત્ સસરગયચર્મવિતત, તદેવ ભૂતમ્ ઉચ્છૃતમ્ ઉત્થાપિત વાહુયુગલ યેન સ તથા તમ્ હુઆ થા ચાર ૨ યહ મહા ઉગ્ર, અદ્દટ્ઠાસ કર રહા થા । ઇસ કા શરીર વસા-ચર્મી, રુહિર, પૂય-પીપ, માસ ંવ મલ્લ ઇન સે મલિન હો રહા થા । ઔર મસક ને પર પચ પચ ઇસ પ્રકાર કા શબ્દ કરને લગતા થા ।

(ઉત્તાસણય, વિશાલવક્ષ પેચ્છતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્નરવગ્ધચિત્તરુત્તીણીવસણ, સસરુહિરગયચમ્મવિતતઝ્ઝમવિય વાહુ જુયલ) ઇસે દેખતે હી લોગ કાંપ જાતે થે, । ઇસ કા વક્ષસ્થલ (છાતી) બહુત વિશાલ થા । ઇસ ને જો વ્યાઘ્ર કા વિવિધ વર્ણ વાલા ચર્મ રૂપ વલ્લ પહિર રહા થા ડસ મે સ્પષ્ટ રૂપ સે વ્યાઘ્ર કે અચ્છિન્ન નલ્લ, રોમ, મુલ્લ, નયન’ ઔર કાન દૃષ્ટિગત હો રહે થે । અપને ઉત્થાપિત કિયે હુઅ વાહુ યુગલ મે ઇસ ને લમ્બા લૂન સે લથ પથ હુઆ મીલા ગય કા ચમડા ધારણ કર રહા થા । (તાહિયલ્લરુસઅસિ

અદ્દટ્ઠાસ કરતો હતો તેનું શરીર વસા-ચર્મી, લોહી, પીપ, માસ અને મળથી ખરડાયેલું હતું અને બેરથી દબાવાથી (ફસડી જવાથી) ‘પચ’ પચ શબ્દ થતો હતો.

(ઉત્તાસણય, વિશાલવક્ષપેચ્છતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્નરવગ્ધચિત્તરુત્તીણીવસણ, સસરુહિરગયચમ્મ વિતતઝ્ઝમવિયવાહુજુયલ)

તેને બેતાની સાથે જ માણસો મૂંઝવા માડતા હતા તેનું વક્ષસ્થળ ખૂબજ પહોળું હતું અનેક જાતના રંગોના પહેરેલા વાઘના આમડાના વજ્રમા વાઘના આખા નખો, રુવાટા, મો આખે અને કાન સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ રહ્યા હતા ઉઘા કરેલા બે હાથમા તેણે લોહીથી ખરડાયેલું લાળુ હાથીનું આમડું પહેરેલું હતું

कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासाइ
 चालित्तए वा एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा
 उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइणं तुम सीलव्वय जाव
 ण परिच्चयसि तो ते अहं एय पोयवहणं दोहि अगलियाहिं
 गेणहामि, गिण्हित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उव्वि-
 हामि, उव्विहित्ता अतो जलसि णिव्वोलेमि जेणं तुम अट्ट-
 दुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि
 तएणं से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चेव एवं
 वयासी—अह णं देवाणुप्पिया । अरहन्नए णाम समणोवासए
 अहिगयजीवाजीवे नो खल्ल अह सक्के केणइ देवेण वा जाव
 निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा तुम ण जा
 सद्धा त करेहित्तिकट्ठु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने
 अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फदे तुसिणीए धम्मज्झाणोव-
 गए विहरइ ॥ सू० २० ॥

टीका—अरहन्नकज्यै सायात्रिकैर्यथानुष्ठित तदुक्तम्, अधुनाऽरहन्नकेन
 पिशाचरूपमवलोक्य यत् कृत तदाह—‘तएण’ इत्यादि । ततस्तदा खल्ल स अरह-
 न्नकः अरहन्नकनामको मुख्य मायात्रिक, श्रमणोपासक’=श्रावकस्त दिव्यम्

तएण से अरहन्नए इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद मुख्य सायात्रिक अरहन्नक को छोड़ कर
 अन्य सायात्रिकों ने जो २ किया उस के बाद (समणोवासए अरहन्नए)
 श्रमणोपासक अरहन्नक ने (त दिव्व पिसायरूव पासित्ता) जब दिव्य

‘तएण से अरहन्नए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) अरहन्नक सिषायना पीत्वा सायात्रिकोनी आनी डालत थड
 त्यार भा. (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक ने
 पिसायरूव पासित्ता) इत्यादि ते दिव्य अपूर्वदृष्ट-अद्भुत-॥

—व्यन्तरभेदास्तेषाम्, तथा—आर्यकोटक्रियाणां च=आर्याप्रशान्तस्वभावा देव्यः, कोटक्रिया=चण्डिकारूपादेव्यः, तासां वदन्ति उपयाचितशतानि=बहुविधानि मान्यताशतानि उपयाचमानाः २ कुर्वन्त २ स्तिष्ठन्ति ॥सू-२१॥

मूलम्—तएणं अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अत्तत्थे अचल्लिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहराग णयणवन्ने अदीणविमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एव वयासी—नमोत्थुणं अरहताणं जाव सपत्ताण, जइ ण अह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए अहणं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि, तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे त्तिकट्ठु सागार भत्त पच्चक्खाइ, तएणंसे पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी—ह भो ! अरहन्नगा अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया णो खल्लु

है इस बात को देख कर वे सब के सब भयभीत हो गये, डर गये, उद्विग्न हो गये। उन के प्रति प्रदेश मे भय का संचार हो गया। इस तरह होकर वे सब परस्पर में एक दूसरे के शरीर से चिपक गये। और अनेक इन्द्रों की स्कन्द की कार्तिकेय की रुद्र की शिव की वैश्रमण की नाग की भूत की यक्ष प्रशान्त स्वभाव वाली देवियों की तथा चण्डि का रूप देवियों की सैकड़ों प्रकार बार २ मान्यता करने लग गये। सूत्र “२१”

ताल पिशाच ने तेजोअे पोतानी तरङ्ग ज आवतो जेथे आरिते जेधने तेजो जधा लयत्रन्त यधगया, जीगया उद्विग्न यधगया तेमना आत्माना प्रतिप्रदेशमा लयनु सयरणा यध गयु तेजो लयणीत यधने ओक जीजने थोटी पडया, अने तेजोभाथी धृष्टा छन्द्रीनी रुद्रनी, कार्ति डेयनी रुद्रनी, शिवनी, वैश्रमणुनी, नागनी, भूतनी, यक्षनी, प्रशान्त स्वभाववाणी देवीजोनी तेमज यडिडाइय देवीजोनी सेकडो प्रकारनी बारबार मानता मानवा लाग्या ॥ सूत्र “२१” ॥

स्थान संपाप्तेभ्य, यदि खल्वहम् एतस्मादुपसर्गाद् पिशाचकृतसकटात्, निर्वि-
घ्नो भवामि मुञ्चामि, तदा मे तथा=तावत्पर्यन्तं प्रत्याख्यातव्यम्० चतुर्विधभक्त
प्रत्याख्यान मयाऽनुष्ठेयमित्यर्थ, इति कृत्वा साकारभक्त=चतुर्विधमाहार प्रत्या
ख्याति० । ततस्तदनन्तरं खलु स पिशाचरूपधारी देव, यत्रैव अरहन्नक
नामकः श्रमणोपासक = श्रावस्तुत्रैवोपागच्छति, उपागत्यारहन्नकम्-एवं=
वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हमो ! अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! = अप्रार्थित

एव वयासी) बैठ कर उस ने अपने दोनो हाथों की अजलि बनाई ।
और उसे मस्तक पर रख कर आवर्त करते हुए वह इस प्रकार कह ने
लगा- (णमोत्थु णं अरहताण जाव सपत्ताण) यावत् सिद्धगति को
प्राप्त हुए अर्हत प्रभुओं को नमस्कार हो (जइण अह एत्तो उवसग्गाओ
मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए)

यदि मे इस पिशाच कृत उपसर्ग से बच गया तो ही अशनादि
ग्रहण करूँगा (अह ण एत्तो उवसग्गाओ ण मुचामि तो मे तदा पच्च-
क्खाण्यव्वे) यदि मे इस उपसर्ग से नहीं बचा तो मेरे तावत्पर्यन्त
चतुर्विध आहार का त्याग है (त्ति कइहु) ऐसा विचार कर (सागर
भक्त पच्चक्खाइ) उसने साकार चतुर्विध आहारका प्रत्याख्यान कर दिया ।
अर्थात् सागरी सधारा किया - (तण्ण से पिसायव्वे जेणेव अर
हन्नए समणोपासए तेणेव उवागच्छइ) हम के बाद वह पिशाच रूप
धारी देव जहा वह श्रमणोपासक अरहन्नक बैठा था-वहा आया

येस्सीने तेण्णे पाताना णने छाथनी अजलि बनावी अने तेने मस्तक उपर
भूझीने इरवता ते आ प्रभाण्णे कडेवा लाव्थे-“ णमोत्थुणं अरहताण जाव
सपत्ताण ” यावत्-सिद्धगतिने पावेला अर्हत प्रभुओंने भारा नमस्कार छे,

(जइण अह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए)

मे हु आ पिशाचना उपसर्गोत्थी भयी बर्ध्या तोज आहार वगेरे
अहंछु करीग “ अहण एत्तो उवसग्गाओ ण मुचामि तो मे तदा पच्चक्खाण
यव्वे ” आ उपसर्गोत्थी भारी रक्षा नहि थाय तो तावत्पर्यन्त आरततना
आहारने हु त्याग करे छु “ त्ति कइहु ” आभ विचारिने “ सागर भक्त
पच्चक्खाइ ” तेण्णे आहार चतुर्विध आहारनु आत्याख्यान करुं

अटवे के तेणे सागरी सधारा कथी

(तण्ण से पिसायव्वे जेणेव अरहन्नए समणोपासए तेणेव उवागच्छइ)

त्याग आह पिशाच रूप धारीदेव जहा श्रमणोपासक बैठाहता त्या आव्थे,

अपूर्वदृष्टमद्भुतं पिशाचरूपम् एजमान=नात्र प्रप्ति समागच्छन्त पश्यति, दृष्टाश्रमी
 तः, भयरहितः, अग्रस्तः प्रासमपाप्तः अचलितः, अपाप्तशोभः अपभ्रातः, सभ्रा
 न्तिरहितः अनाकुलः, अव्यग्रः अनुद्विग्नः, अपरुम्पः अभिन्नमुखरागनयनवर्णः=
 अभिन्नो-अविकृतौ मुखरागनयनवर्णौ यस्य स तथा, तस्य भयाभावान्मुख
 रागोनयनवर्ण आन्यथा न अदीनविमानो जातइत्यर्थः मानसः=अदीनविमनः-न दीन
 दैन्यप्राप्त, नापि विमनः=दुर्जनः नापि विरुत मानस यस्य स तथा तस्य मनो-
 ऽप्यन्यथा न जातमित्यर्थः, तथा भूतः सन् पोतनहनस्य नौकायानस्यैकदेशे=एक
 भागे वस्त्रान्तेन=वस्त्राञ्चलेन खलु भूमिम्=उपवेशनस्थान प्रमार्जयति प्रमार्ज्य
 स्थानम्-उपवेशनार्हं स्थान सशोध्य जीवादिरहितं कृत्वा तत्र तिष्ठति=उपविशति,
 स्थित्वा=उपविश्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्त दशनख मस्तकेऽज्जालिं कृत्वा
 एव =वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-नमोऽस्तु अर्हद्भयो यावत् सिद्धिगतितानामधेय

अपूर्वदृष्ट-अद्भुत-पिशाच रूप को (एज्ज मान) नाव की तरफ आता
 हुआ (पासइ) देखा-तो (पासित्ता देखकर वह (अभीण) डरा नहीं
 (अतत्ये) घ्रस्त नहीं हुआ (अचलिए) धैर्य से चलायमान नहीं हुआ
 (असभते) घबराया नहीं (अणाउले) आकूल व्याकुल नहीं बना
 (अणुव्विगो) उद्विग्न नहीं हुआ (अभिन्न मुखरागणयणवन्ने) उस
 के मुख का राग और नयनों का वर्ण विकृत नहीं बना (अदीणविम
 णमाणसे) उस का मन न दीन बना और न विकृत ही बना (पोयव
 हणस्स एगदेससि वत्थ तेण भूमिं पमज्जइ) किंतु नौका यान के एक
 तरफ वस्त्राञ्चल से भूमि को प्रमार्जित करने लगा- (पमजित्ता)
 प्रमार्जित कर के फिर वह (ठाण ठाइ) बैठ ने के योग्य स्थान का
 सशोधन कर उसे जीवादि रहित कर रहा बैठ गया। (ठाइत्ता करयलओ

“ एज्जमान ” पोताना वहाणु तरइ आवतु “ पासइ ” जेथु त्यारे “ पासित्ता ”
 जेधने ते “ अभीण ” लय पाये नहि, “ अतत्ये त्रस्त थये नहि, “ अचलिए ”
 धैर्यथी विद्यावित थये नहि, “ असभते ” गबराये नहि, “ अणाउले व्याकुण
 थये नहि, (अणुव्विगो) उद्विग्न थये नहि, (अभिन्नमुखरागणयणवन्ने)
 तेना मोना रगअने आपोना वणुंनभा जराये विरुत थये नहि (अदीण
 विमणमाणसे) तेनु मन दीन अन्थु नहि तेमज विकृत थयु नहि
 (पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेण भूमिं पमज्जइ) ते वहाणुना ओक तरइनी
 भूमिने वस्त्रना छेडाथी प्रमार्जित करवा लाये। (पमजित्ता) प्रमार्जित
 करीने ते (ठाणठाइ) जेसवा योग्य स्थानतु सशोधन करीने स्थानने एव
 जेइथी रहित बनावीने त्या जेगीथये। (ठाइत्ता करयलओ एव बयासी)

=મિત્યાત્માન્નિવર્તનમ્, પ્રત્યાખ્યાન=પર્વદિનેષુ હરિતકાયાદિ ત્યાજ્યાનામિવશ્ય પરિત્યાગઃ, પોપધોપવાસઃ=પોપ=પુષ્ટિધર્મસ્ય વૃદ્ધિઃ ધત્ત ઇતિ પોપઽ =ચતુર્દશ્યષ્ટમ્ય-માવાસ્યાપૂર્ણિમાદિપૂર્વદિનાનુઠેયો વ્રતવિશેષઃ, પતેપા દ્રવ્દે તાન્ ચાલયિતું વા કરણયોગરૂપેણ પરિવર્તયિતુમ્, એવ ક્ષોભયિતુ વા એતાન્ એવ પરિપાલયામિ, અથવા પરિત્યજામીતિ ક્ષોભ વર્તુ, સ્વલ્પયિતુ દેશતો મહત્તુ મહત્તુ સર્વતો વા ઉજ્જિતુ દેશવિરતેસ્ત્યાગેન, વા પરિત્યક્તુ સમ્યક્ત્વસ્યાપિ ત્યાગાત્ વા, તદ્ યદિ સ્વલ્પ ત્વ શીલવ્રતં યાવત્ ન પરિત્યજસિ તદા તવાહમેતત્ પોતવહન નૌકાયાન દ્વાભ્યામહ્ગુલીભ્યા તર્જનીમધ્યમાભ્યા ગૃહ્ણામિ, ગૃહીત્વા સપ્તાષ્ટતાલ્પમાણમા-શ્રાન્ ગગનમાગાન્ યાવત્, ઝર્પ વિહાયસિ=ગગને 'ઉન્વિહામિ' ઉદ્વિધ્યામિ=પ્રાપયામિ, 'ઉન્વિહિતા' ઉદ્વિધ્ય=ઝર્પમાકાશે નીત્વા, 'અતો જલસિ,' અન્ત-

કો, ચતુર્દશી, અષ્ટમી, અમાવાસ્યા, પૂર્ણિમા આદિ પર્વદિનોં મે અનુષ્ઠેય વ્રત વિશેષ રૂપ પોપધ કો અન્યથા કરણ યોગ રૂપ સે પરિવર્તિત કરને કી તુમ હન્નેં હસ તરહ સે પાલો અથવા હન કા પરિત્યાગ કર દો હસ રૂપસે હન્નેં ક્ષુભિત કરને કી હન્નેં એક દેશ અથવા સર્વદેશ સે સ્વલ્પ કરને કી ભગ કરને કી દેશ વિરતિ કે છુડવાને કી અથવા સમ્યક્ત્વ કે પરિત્યાગ સે હન કે ત્યાગ કરવાને કી મુદ્ર મેં શક્તિ નહીં હૈ । અતઃ (જહ્ણં તુમ સીલવ્રત જાવળ પરિચ્ચયસિ તો તે અહ પોયવહ્ણ દોહિં અગુલિયાહિં નેષ્ઠામિ) તુમ હન સીલવ્રત આદિ કો કો સ્વય જોડ દો-યદિ નહીં છોડોગે તો મેં તુમ્હારી હસ નૌકા કો દો અગુલિયો સે-તર્જની ઓર મધ્યમા સે-પકડ લૂંગા (ગિણિહિતા સત્તદ્ તાલ્પમાણમેત્તાહ ઉદ્ધુ

અમાસ, પૂનમ વગેરે, પર્વના દિવસોમા અનુષ્ઠેય વ્રતવિશેષ રૂપ પોપધને, અન્યથા કરણયોગ રૂપથી પરિવર્તિત કરવાની, તમે આ મતો આ રીતે આચરો કે આનો પરિત્યાગ કરો આ પ્રમાણે તેમને ક્ષુભિત કરવાની, તેમને એકદેશ અથવા સર્વદેશથી ખસિત કરવાની-લગ કરવાની-દેશવિરતિના ત્યાગ અથવા સમ્યક્ત્વના પરિત્યાગથી તેમને પરિત્યક્ત કરાવડાવવાની માગમા તાઝાત નથી એથી

(જહ્ણં તુમ સીલવ્રત જાવળ પરિચ્ચયસિ તો તે અહ પોયવહ્ણ દોહિં અગુલિયાહિં નેષ્ઠામિ)

તમે પોતાની મેળેજ આ શીલવ્રત વગેરે નો ત્યાગ કરો જો તમે આ પ્રમાણે કરશો નહિ તો હું તમારા વડાપુને જો આગળીઓથી એટલે કે તર્જની અને મધ્યમા આગળીઓથી-પકડી પાડીશ

(ગિણિહિતા સત્તદ્તાલ્પમાણ મેત્તાહ ઉદ્ધુ વેદાસ ઉન્વિહામિ-ઉન્વિહિતાં અતો

—यत् केनापि न प्रार्थित मरण, तत् प्रार्थित येन, स अप्रार्थितप्रार्थित । यद्वा-
हे तत्सम्बोधनम् हे मरणमार्यक !—अप्रस्थित प्रस्थित । अप्रस्थितः येन प्रस्थित इव
सुमूर्धुरित्यर्थस्तस्य सम्बोधनम्, हे मरणगान्धर्व ! यावत् इह यावच्छब्देन
' दुरतपतलसखणा, हीनपुण्यचाउदसिया सिरिहिरिधीकिति ' इत्यन्तस्य सप्रहः ।
दुरन्तप्रान्तलक्षण ! दुरन्त विपाककटु प्रान्तम् अस्मान् लक्षण स्वभावो यस्य स
तथा, तस्यामन्त्रण, हीनपुण्य चातुर्दशिक । हीना क्षीणा पुण्या=चन्द्रकला शुभकार
कत्वात् यस्या सा हीनपुण्या=कृष्णपक्षीयेत्यर्थः, सा चामौ चतुर्दशी च हीनपुण्य
चतुर्दशी, तस्या जात', तत्सम्बोधनम् हे भाग्यहीन इत्यर्थः । श्रीहीनी कीर्तिपरि-
वर्जित । हे दरिद्र । हे निर्लज्ज । हे बुद्धिहीन ! हे कुलकलङ्कित ! श्रीः=लक्ष्मीः,
हीः=लज्जा, धी=बुद्धिः, कीर्तिः=यशः, ताभिः नो खलु कल्पते तवशीलव्रतगुण-
विरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासान्-तत्र शीलानि=सामायिकदेगायकाशिक्षपौषध-
तिथिसविभागख्यानानि, व्रतानि=पञ्चाशुव्रतानि, गुणाः=त्रीणिगुणव्रतानि, विरमण

(उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी) आकर उस ने अरहन्नक
से इस तरह कहा (हे भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया)
हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित । मरण की इच्छा करने वाला ।
यावत् शब्द से “ हे दुरन्त प्रान्त लक्षण ! हे हीन पुण्य चातुर्दशिक !
हे श्रीहीनी कीर्ति परिवर्जित ! हे कुल कलङ्कित ! (जो खलु कल्पे,
तव सीलव्यगुण वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए वा
एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्जित्तए वा परिच्चइ
त्तएवा) मुझे तुम्हारे द्वारा पालित शीलो को व्रतो को गुणव्रतों को
मिथ्यात्व की विनिवृत्ति को पर्व दिनों में हरित काय आदि के परित्याग

“ उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी ” आवीने तेले अरहन्नकेने आ प्रभाणे
कथ्थु—“ हे भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया ” हे अरहन्नक !
हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मृत्युने लेटवानी इच्छा राखनार ! ‘ यावत् ’ शब्दधी
हे दुरतपतल लक्षण ! हे हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हे श्रीहीनी कीर्ति परिवर्जित !
हे कुलकलङ्कित !

(जो खलु कल्पे, तव सीलव्यगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए
वा एव खोभेत्तएवा खडित्तए वा भजित्तएवा उज्जित्तए वा परिच्चइत्तएवा)

तमारो वडे आचरित शीलाने, व्रताने, शुश्रूषणाने, मिथ्यात्वानी विनि-
वृत्तिने, पर्वना दिवसोभा हरिकाय वगेरेना परित्यागने, औंश, आइम,

વચનાત્ 'ચાલિત્ત' ચાલયિતુમ્=અન્યથાભાવ કારયિતુ વા, 'સ્વોમિત્ત' સ્વોમયિતુ=સશયોત્પાદનેન સ્વોમ કર્તુવા, તથા-'વિપરિણામિત્ત' વિપરણમયિતુ=વિપરીતાઅધ્યવસાયોત્પાદનેનાપ્યન્યથાકર્તુ વા, કેનાપિ દેવાદિના શ્રાવકધર્માદ્ વિચાલયિતુ નાહ શમ્ય ડતિ સત્તિસાર્થઃ । તત્ સ્વલુ યા=યાદશો શ્રદ્ધા વર્તતે તત્-તથા કુરુ ત્વ યત્ કર્તુમિચ્છસિ તત્ કુરુષ્વેત્યર્થઃ 'ઇતિ કદ્દુ' ઇતિ કૃત્યા=ઇતિ સ્વાત્મન્યુક્તવા, અમીતઃ યાવદ્-અત્ર યાવન્નન્દન 'અતત્યે, અચલિત્ત, અસંભતે અણાડલે, અણુગ્વિગ્ને, ઇત્યેવા વદાના સગ્રહ', એતાન્યસ્મિન્નેવમૂત્રે વ્યાખ્યાતાનિ,

ણાઓ ચાલિત્ત' વા સ્વોમિત્ત' વા વિપરિણામિત્ત' વા તુમ ણ જા સદ્ધા ત કરહિ ત્તિ કદ્દુ અમી' જાવ અમિન્નમુહરાગણયણવન્ને અદીણ વિમગમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણી' ધમ્મજ્ઞાણોવગ' વિહરહ) હે દેવાનુપ્રિય દેવ ! મેં અરહન્નક નામકા શ્રમણોપાસક શ્રાવક હું ।

જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોં કે સ્વરૂપ કો જાનને વાલા હું । કિસીં મી દેવ મેં એસી શક્તિ નહીં હૈં જો મુજેં હસ નિર્ગન્ય પ્રવચન સે વિચલિત કર સકેં ઉસ મેં અન્યથા ભાવ રૂપ સે પરિણામસકેં ક્ષુભિત કર સકેં-સશયોત્પાદન સે મુજેં ઉમ્મ મેં સદિગ્ધ બના સકેં તથા વિપરિણામી બના સકેં-વિપરીત અધ્યવસાય કે ઉત્પાદન સે ઉસ મેં મુજેં વિપરીત બુદ્ધિ વાલા કર સકેં, તાત્પર્ય હસ કા યહીં હૈં કિ કોઈ મી દેવ એસા નહીં હૈં કિ જિસ કે દ્વારા મેં શ્રાવક ધર્મ સે વિચલિત કિયા જા સકૂ ।

હસલિયે હે દેવ ! તુમ્હારી જેસી શ્રદ્ધા હો વૈસા તુમ કરો । હસ

સ્વોમિત્ત'વા વિપરિણામિત્ત'વા તુમણ જા સદ્ધા ત કરેહિ ત્તિ કદ્દુ અમી' જાવ અમિન્નમુહરાગણયણવન્ને અદીણવિમગમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણી' ધમ્મજ્ઞાણોવગ' વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિયદેવ ! હું અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શ્રાવક છું

જીવ અજીવ વગેરેના તત્ત્વોના સ્વરૂપને જાણનાર છું । ઝોઈપણ દેવમા તાકાતનથી કે જે મને પોતાના નિર્ગુણપ્રવચનથી વિચ્છિન્ન કરી શકે, તેમા અન્યથા ભાવ રૂપથી પરિણામી શકે, ક્ષુભિતકર્તી શકે, સશય ઉત્તમ કરીને મને તેમા શંકાશીલ બનાવી શકે અને વિપરિણામી બનાવી શકે, વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી નિર્ગુણ પ્રવચન પ્રત્યે મને વિપરીત બુદ્ધિવાળો કરી શકે મતલબ એ છે કે ઝોઈપણ દેવમા આટલી તાકત નથી કે તે મને પોતાના શ્રાવક ધર્મથી ડગાવી શકે

એથી દેવ ! તમારી જેવી શ્રદ્ધા હોય તેમ કરો મનમા દેવને સંબોધીને

जले-जलमध्ये, ' णिवोलेमि ' निरोडयामि=निमज्जयामि, येन त्व ' अट्टदुह्व-
वसट्ठे ' आर्तदुर्घटवशात्=आर्तम्-आर्चध्यानम् दुर्घट=दिसादिदुर्घटनायुक्तत्वाद्
रौद्रध्यानार्त्त, तयोर्वशेन प्रज्ञतः-पीडितः, अतएव-'अममाहिपत्ते' अममाधिमाप्तः,
अकाले चैव=मरणकालात्पूर्वमेव जीयीतात् 'वरोविज्जसि' व्यपरोपयिष्यसे-व्यप
गतोभविष्यसि मरिष्यसीत्यर्थः । ततः पिशाचवचनश्रवणानन्तर सोऽरहन्नकः श्र
मणोपासकः त देव पिशाचरूप मनसा चैव एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अगदीतु=पि
शाचरूप देव स्वमनसि सम्बोध्य स्वात्मन्येव वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तशानित्यर्थः, हे
देवानुपिया । हे देव ! अह खलु अरहन्नको नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः
=जीवाजीवतत्त्वज्ञः, नो खलु अह शन्य केनापि देवेन वा यावत् नैर्ग्रन्व्यात् प्र

वेहास उन्विहामि-उन्विहिता अतो जलसि णिवोलेमि) और पकड़
कर सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक उसे ऊपर पानी में
डुबो दूंगा । (जेण तुम अट्टदुह्ववसट्ठे असमाहिपत्ते अकाले चैव
जीवियाओ वरोविज्जसि) जिससे तुम आर्त्त और दुर्घट-रौद्र-ध्यान
के वश से पीडित होते हुए असमाधिको प्राप्त हो जाओगे और मरण
काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे ।

(तएणं से अरहन्नए समणो वासए त देव मणसा चैव एव वया-
सी) इस तरह उस पिशाच रूप धारी देव के वचन सुनने के बाद उस
श्रमणोपासक अरहन्नक ने उस देव से अपने मन ही मन ऐसा कहा-
(अह ण देवानुपिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजी
वा जीवे नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावय-
जलसि णिवोलेमि)

अने पाडीने सात आठ ताल प्रमाण तेने ऊपर आकाशमा लई जईश
अने त्याधी पाण्डुभा रूपाडी भूझीश
(जे ण तुम अट्टदुह्ववसट्ठे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ वरोविज्जसि)
अेशी तमे आर्त्त अने दुर्घट-रौद्र-ध्यानथी पीडित थता असमाधिने
भेजवशे अने मृत्युकाण ना पळेला ज एवत वगरना थई जशे।
(तएण से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चैव एव वयासी)
आरीते पिशाच रूपवाणा देवनी पात सालागीने श्रमणोपासक अरहन्नके
देवने पोताना मनभा ज आप्रभाणु कछु

(अहण देवानुपिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजीवाजीवे
नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा

મૂલમ્—તથાં સે દિઠ્ઠે પિસાયરૂઠે અરહન્નગ સમણોવાસગં
દોઢ્ઢંપિ તચ્ચપિ એવં વયાસી—હં મો । અરહન્નગાં અદીણ
વિમણમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણીણ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ
વિહરહ, તથાં સે દિઠ્ઠે પિસાયરૂઠે અરહન્નગં ધમ્મજ્ઞાણો-
વગયં પાસહ, પાસિત્તા વલિયતરાગ આસુરુત્તે ત પોયવહણ દોહિ

કહ બના રહતા હૈ તો હસ કા પરિણામ ઉસે વિપાકકાલ મે કટુ હી
ભોગના પડેગા—ઉસે દુરન્ત પ્રાન્ત લક્ષણ ઇમ સયોધન પદ સે ચોધિત
કિયા હૈ । કૂળ્લ પક્ષ કી ચતુર્દશી મેં ચન્દ્રકલા ક્ષીણ રહતી હૈ—હસલિયે
શુભ કારક ચન્દ્રકલા સે ચિહીન હોને કે કારણ વહ ચતુર્દશી હીન પુણ્ય
માની જાતી હૈ દેવ કહતા હૈ કિ માલૂમ હોતા હૈ તેરા જન્મ હુઆ હૈ
અતઃ તૂ માર્ય હીન હૈ । ઇમલિયે અરહન્નક શ્રાવક કો ઉસ ને હીન
પુણ્ય ચાતુર્દશિક હસ સયોધન પદ સે ચોધિત કિયા હૈ । શ્રી હી આદિ
પ્રત્યેક મેં વર્જિત પદ કે સાથ સયોધન પદ લગાકર દેવ ને અરહન્નક
કો સચોધિત કિયા હૈ—જૈસે હે શ્રી વર્જિત હે હી વર્જિત આદિ । સામા-
યિક, દેશાવકાશિક, પૌપધ, અતિથિ સવિભાગ ચે શીલ હૈં । અણુવ્રત
૫ હૈં । ગુણવ્રત ૩ હૈં । યહ સપ શ્રાવક કા વર્મ હૈ । ઇસ તરહ ૪ શિક્ષા-
વ્રત, ૫ અણુવ્રત ઓર ૩ ગુણવ્રત ચે ૧૨ પ્રકાર શ્રાવક ધર્મ કે યહાં
પ્રકટ કિયે ગયે હૈં । સૂત્ર “ ૨૨ ”

કાળમા પકિણ્ણમ કટુ જ લોગવવુ પડશે આ બાણીને જ દેવે તેને “ દુરત
પ્રાત લક્ષણુ ” આ પદથી સંબોધ્યો છે કૃષ્ણ પસની ચૌદગના દિવસે ચક્રકળા
ક્ષીણરૂપે રહે છે એથી તે અમગળકારી ગણાય છે તે મગળકારી
નહીં હોવાથી તે ચૌદશ હીન પુણ્ય ગણાય છે દેવ તેને કહે છે કે તારે
જન્મ આવા સમયે જ થયો કે એથી તું અભાગિયો છે અરહન્નક શ્રાવકને
દેવે એટલા માટે જ હીનપુણ્યચાતુર્દશિક પાવડે સંબોધિત કર્યો છે શ્રી, હી
વગેરે દરેક પદની સાથે વર્જિત વિશેષણ લગાડીને જ દેવે અરહન્નકને સંબો-
ધિત કર્યો છે જેમ કે—‘હે શ્રીવર્જિત । હેહી વર્જિત । વગેરે સામાયિક,
દેશાવક શિક, પૌપધ, અતિથિમ વિભાગ આ બધા શીલ કે અણુવ્રત પાત્ર છે
ગુણવ્રત ત્રણ છે આ બધો શ્રાવકનો ધર્મ છે આરીતે આર શિક્ષવ્રત, પાત્ર
અણુવ્રત, અને ત્રણ ગુણવ્રત આમ બાર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ અહીં અર્થ
વામા આપ્યો છે ॥ સૂત્ર “ ૨૨ ” ॥

અભિન્નમુલ્કરાગનયનર્ણઃ=મયાભાગાદપ્રતિહતમુગ્ધનેત્રપતિભ, તથા-અશીનત્રિમનો
માનસ=મયસશયરહિતત્વાત્ વિશાદવૈમનસ્યરહિતચિત્તઃ, અતણ્વ-નિશ્ચલ'=સુધીરઃ
ધર્મે દૃઢતર इत्यर्थः, નિસ્પન્દઃ=કિંચિદપિસ્મરન્તિઃ, તૂળીક કૃતયાક્રમયમઃ સ
મૌન इत्यर्थ ધર્મધ્યાનોપગતઃ ધર્મ યાનમેવ શરણ કૃત્ય તત્પરાયણઃ વિહરતિ=
આસ્તેસ્મ ॥૬૦૨૨॥

પ્રકાર દેવ કો મન મેં સયોધન કરકે ઉસ અરહન્નક શ્રમણોપાસક ને
મન હી મન કહા-ઔર અમીત, અગ્રસ્ત, અચલિત, અમશ્રાન્ત, અના
કુલ, અનુદિગ્ન, ચિત્ત યના રહા । નિર્ભય હોને કે કારણ ઉસ કે મુલ્ક
ઔર નેત્ર કી કાતિ મે અન્તર નહી આયા ।

મય ઔર સશય સે રહિત હોને કી વજહ સે ઉસ કા ચિત્ત વિષાદ
અવ વૈમનસ્ય સે રહિત રહા । હસીલિયે અપને ધર્મ મેં દૃઢ યના હુઆ વહ
જરા મી ઉસ સે વિચલિત નહી હુઆ । ફિન્તુ ચુપચાપ મૌન ધારણ કર
અક ધર્મ ધ્યાન કો હી હસ સ્થિતિ મેં શરણ માન ઉસી મે વહ તત્પર
યના રહા । અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આદિ જો સયોધન પદ સૂત્ર મેં આવે હૈં
ઉન કા અર્થ હસ પ્રકાર હૈ-જિસે કોઈ મી નહીં ચાહતા હૈ એસા અપ્રા
ર્થિત મરણ હોતા હૈ ઉસે મી અરહન્નક શ્રાવક ચાહ રહા હૈ ।

હસલિયે દેવ ને ઉસે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત હસ સયોધન સે સબોધિત
કિયા હૈ । દેવ ને યહ સમજ કર કી યહ અરહન્નક અપને ધર્મ પર યદિ

। અરહન્નક શ્રમણોપાસકે પાતાના મનમા જ આમ કહ્યુ અને તે અમીત
અગ્રસ્ત, અચલિત, અમશ્રાન્ત, અનાકુળ, અનુદિગ્ન, ચિત્તથી શાન્તથઈને એસી
રહ્યો તે નિર્ભય હતો તેથી તેના મો અને આખોની કાતિમા જરાયે પરિવર્તન
થયુ નહિ

ભય તેમજ સશય વગર હોવાથી તેનુ ચિત્ત વિષા અને વૈમનસ્ય
રહિત હતુ એથી જ તે પોતાના ધર્મ પ્રત્યે દૃઢભાવ રાખતો તે જરાએ
વિચલિત થયો નહિ, પણ ચુપચાપ મૌન ધારણ કરીને ફક્ત ધર્મધ્યાનને જ
આ સ્થિતિમા શરણ માનીને તેમા તે તત્લીન થઈ ગયો અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત
વગેરે જે સયોધન પદો સૂત્રમા આગ્યા છે તેનો અથ આપ્રમાણે છે-કે જે
મરણ ને ભેટવાનુ કોઈપણ ધર્મ છે નહિ તે મરણને અરહન્નક શ્રાવક ધર્મથી રહ્યો
હતો એથી જ દેવે તેને અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આ ભતના સયોધનથી સબો
ધિત કર્યો છે અરહન્નક જે પોતાનો ધર્મને વળગી રહેયે તો તેનો વિષાક

ददधम्मे नो ददधम्मे । सीलव्यगुणे किं चालेति जाव परिच्चयइ
णो परिच्चयइ त्तिकट्टु, एव सपेहेमि, सपेहिता ओहि पउजामि,
पउजिता देवाणुप्पिया ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुर-
त्थिमं० उत्तरविउत्थियं० ताए उक्किट्ठाए गईए जेणेव समुद्धे
जेणेव देवाणुप्पिया । तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छिता देवा-
णुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया, भीया
वा०, त जण्णं सक्के देविदे देवराया वदइ सच्चेणं एसमट्ठे त
दिट्ठेणं देवाणुप्पियाण इड्ढी जुई जसे भाव परक्कमे लद्धे पत्ते
अभिसमन्नागए, त खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमतु णं
देवाणुप्पिया । णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्टु पजलिउद्धे
पायवडिए एयमट्ठ विणएणं भुज्जो२ खामेइ, खामित्ता 'अर-
हन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलयित्ता जामेव दिसि
पाउवमूए तामेव दिसि-पडिगए ॥ सू० २३ ॥

टीका।—‘तएण से दिव्वे’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स दिव्यः
पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी, अरहन्नरूपं० अरहन्नकृत्नामक श्रमणोपासक=श्रावकं
‘दोच्च पि’ द्वितीयवारमपि, तच्चपि=तृतीयवारमपि, एवम्=उक्तप्रकरणेण अवा
दीत्-हभो । अरहन्नक० । अप्रार्थित प्रार्थित । नो खलु कल्पते-तव शीलव्रत०

‘तएण से दिव्वे पिशायरूवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से दिव्वे पिशायरूवे) उस पिशाचरूप
धारी देव ने (अरहन्नग समणोपासग) उस श्रमणोपासक अरहन्नक
से (दोच्चपि तच्च पि) दुबारा तिवारा भी (एव वयासी) ऐसा ही
कहा की हे अरहन्नक० । अप्रार्थित प्रार्थित । मुझ में ऐसी शक्ति नहीं

‘तएण से दिव्वे पिशायरूवे’ इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यादयाद “से दिव्वे पिशायरूवे” ते पिशाचरूप धारी
देवे “ अरहन्नग समणोपासग” श्रमणोपासक अरहन्नकृत्थी “ दोच्च पि तच्च पि ”
शील अने त्रील वपत पणु “ एव वयासी ” आ प्रभावे न कलु-“ हे
अरहन्नक०, अप्रार्थित प्रार्थित तभारा शील विगरे श्रावक धर्मने अदलवानी हे

अगुलियाहि गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं
 एव वयासी-हं भो । अरहन्नगा । अप्पत्थियपत्थिया णो
 खलु कप्पइ, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विह-
 रइ । तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो सचाएइ निग्गं-
 थाओ० चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहं
 सते जाव निव्विन्ने त पोयवहणं सणिय२ उवरिं जलस्स
 ठवेइ, ठावित्ता त दिव्व पिसायरूव पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता
 दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अतल्लिक्खपडिवन्ने सखिं
 खिणियाइ जाव परिहिए अरहन्नग समणोवासयं एव वयासी
 -हं भो । अरहन्नगा । धन्नोऽसि णं तुम देवाणुप्पिया । जाव
 जीवियफले जस्स णं तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती
 लळा पत्ता अभिसमन्नगया । एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के
 देविदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए
 सुहम्माए बहूणं देवाणं० मज्झगते महया सद्देणं आइक्खइ४,
 एव खलु जव्वुदीवे२ भारहे वासे चपाए नयरीए अर-
 हन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ
 देवेण वा दाणवेण वा णिग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा
 जाव विपरिणामेत्तए वा । तएण अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स०
 णो एयमट्ठ सद्वहामि०, तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव
 समुप्पज्जेत्था, गच्छामि ण अरहन्नयस्स अतिये पाउव्वभवामि,
 जाणामि ताव अह अरहन्नग कि पिगधम्मे ? नो पियधम्मे

માત્રાન્ યાવત્ કુર્વં ગગને નીત્વાડરહન્નકે શ્રાવકમેવમ્=ઉત્તપ્રકારેણ અવાદીત્-
હમો ! અરહન્નક ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! નો સ્વલ્પ કલ્પતે ત્વ શીલવ્રતં તથૈવ=સો
ડરહન્નકઃ પૂર્વવદેવ યાવત્ ધર્મધ્યાનોપગતો વિહરતિ=આસ્તે સ્મ૦ ।

કિસી ભય કે મૌન સહિત ધર્મ ધ્યાન મેં હી મગ્ન દેસ્વા તો દેસ્વ કર વહ
વસ પર ક્રોધ કે આવેશ સે અત્યંત લાલ પીલા બન ગયા । ઓર ઉસ
પોતધ્યાન કો ઉસ ને અપની દોનો અગુલિયો-મધ્યમા એવ તર્જની અગુ
લિયોં સે-પકડ લિયા । (ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાહ જાવ અરહન્નગ એવે
વયાસી) પકડ કર વહ ઉસે ઉપર આકાશ ન સાત આઠ તાલ પ્રમાણ
આકાશ ભાગ તક લે ગયા-લે જાકર ફિર ઉસ મેં અરહન્ન શ્રાવક કો
હસ પ્રકાર કહા - (હ મો અરહન્નગા ! અપત્તિયપત્તિયા ! જો સ્વલ્પ
કપ્પહ તવ સીલવ્વય તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરહ) હે અરહન્નક !
હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મુજે તુમ્હારે હન શીલવ્રત આદિકોં કો વિચલિત
આદિ કરના ઉચિત નહીં હૈં અતઃ તુમ હી સુશી સે ઉન્હે છોડ દો-નહી
તો મેં તુમ્હારી હસ નૌકા કો યહા સે પટક કર પાની મેં ડુબો વૂગા-
જિસ સે તુમ અસમાધિ પ્રાપ્ત હોકર આર્તધ્યાનાદિ કે વશવર્ત્તિ બન મર-
ણકાલ સે પહિલે મૃત્યુકે વશ હો જાઓગે । દેવકે હસ કહ ને પર અર-
હન્નક શ્રાવકને કુછ બી ધ્યાન નહીં દિયા પ્રત્યુત ઉસે મન હી મન

કરીને ધર્મધ્યાનમા જ તટલીન બોયો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમા બરાઈ
લાલ પીળો થઈ ગયો, અને તેણે વહાણને પોતાની બે આગળીઓ-મધ્યમા
અને તર્જની-વડે પકડી લીધું “ ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાહ જાવ અરહન્નગ એવ વયાસી ”
પકડીને તે વહાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ જેટલું આકાશમા લઈ ગયો અને
લઈ જઈને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યું

(હ મો અરહન્નગા ! અપત્તિયપત્તિયા ! જો સ્વલ્પ કપ્પહ તવસીલવ્વય
તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરહ)

હે અરહન્નક ! હે આપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હું તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી
વિચલિત કરૂં તે યોગ્ય ન લેખાય એથી તમે સ્વલ્પશુશીથી પોતાની મેજે જ
તેમને ત્યજો નહિતો તમારા વહાણને હું અહીંથી પટકીને પાણીમા ડૂબાડી
દઈશ જેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્તધ્યાન વગેરેના વશવર્ત્તિ થશો
અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહેલા જ મૃત્યુને લેઈશો દેવની આ વાત પર
અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યું નહિ અને તેણે પોતાના મનમા જ

इत्यादि-येन त्वं मार्तदुर्घटवशातः अरमाधिप्राप्तः अवले चैव जीविताद् व्यपरो
पयिष्यसे इत्यन्तं पूर्वोक्तमेवावयव द्वितीयतृतीयवारमायुक्तवानित्यर्थः । तथापि
सोऽरहन्नकः श्रावकः अदीन विमनो मानसः=विषादवैमनस्य रहितचित्तः,
निश्चलः=धीरः, निस्पन्दः=भयामादृक् कम्परहितः=तृष्णीकः=भयरहिततत्त्वेन
संभयवार्ज्यपापारहितः यद्वा-कृतवाक् सयमः, धर्मध्यानोपगतः, धर्मध्यानक्षण-
मुपागतः चिदरति-आस्तेस्म० ।

ततस्तदन्तरं खलु स दिव्यः पिशाचरूपोऽरहन्नक धर्मध्यानोपगत पश्यति,
दृष्ट्वा बलिततरकम्=अत्यन्तम् आशु रूपं=शक्तिं क्रोधाविष्टस्तत् पोतवहन=नौका
यनं, द्वाभ्यामङ्गलीभ्याम्=तज्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णाति । गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाण
हैं कि मैं तुम्हारे इन शीलादिकों का परिवर्तन आदि कर सकू अतः
तुम स्वयं ही इन का परित्याग कर दो-तो ठीक है-नहीं तो मैं तुम्हारी
नौका को पानी में डुबा दगा ।

इस से तुम, आर्त्त रौद्रध्यान के वशवर्ती होकर असमाधि को
प्राप्त हो जाओगे-तथा मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो
जाओगे । इस तरह जैसे उस ने प्रथम बार कहा-द्वितीय और तृतीय
बार भी अरहन्नक श्रावक को वैसा ही कहा-(तएण से दिव्वे पिसाय
रूवे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पसित्ता बलियतराग आसु-
रुत्ते त पोयवहन दोहि अंगुलियाहिं गिण्हइ) इस के बाद जब उस
पिशाचरूप धारी देव ने अपनी बात पर ध्यान नहीं देते हुए अरहन्नक
श्रावक को विषाद वैमनस्य से रहित चित्त होकर निश्चल रूप से बिना

, तेभां केधं पणु जतने। ईरक्षर उरवानी भाराभा ताकात नथी, जे तमे पोतानी भेजेन
जेमने। त्याग करे। तो ठीक । नहीं तो तभारा वहाणुने हु पाणीभा दुणाडीदृश
तेथी तमे आर्त्त रौद्र ध्यानना वशवर्ती थधने असमाधिने प्राप्तउरेशे।
तेमज् मृत्युना समय पडेवा ज मृत्युने लेउरेशे। आ प्रभाणु जेम तेणु पडेवी
वणत कहुं हतुं ते प्रभाणु ज पीलु जने त्रीलु वणत पणु अरहन्नक
श्रावकने देवे कहुं

(तएण से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पसित्ता
बलियतराग आसुरुत्ते त पोयवहन दोहि अंगुलियाहिं गिण्हइ)

त्यार पाद पिशाचरूप धारी देवे अरहन्नक श्रावकने विषाद जने वैम
नस्य रहित चित्तवाणे थधने निश्चल रूपथी, लय वगर थधने, भीन धारणु

માત્રાન્ યાવત્ ઝવં ગગને નીત્વાઽરહન્નકે શ્રાવકમેવમ્=ઉક્તપ્રકારેણ અવાદીત-
હમો ! અરહન્નક ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! નો સ્વલ્પ કલ્પતે તત્ર શીલવ્રત-તથૈવ=સો
ઽરહન્નકઃ પૂર્વવદેવ યાત્ત ધર્મધ્યાનોપગતો વિહરતિ=આસ્તે સ્મ૦ ।

કિસી ભય કે મૌન સહિત ધર્મધ્યાન મેં હી મગ્ન દેસ્વા તો દેશ્વ કર વહ
ઉસ પર ક્રોધ કે આવેશ સે અત્યત લાલ પીલા બન ગયા । ઓર ઉસ
પોતયાન કો ઉસ ને અપની દોનો અગુલિયો-મ-યમા એવ તર્જની અગુ
લિયો સે-પકડ લિયા । (ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાઈ જાવ અરહન્નગ એવ
વયાસી) પકડ કર વહ ઉસે ડપર આકાશ ન સાંત આઠ તાલ પ્રમાણ
આકાશ ભાગ તક છે ગયા-છે જાકર ફિર ઉસ મેં અરહન્ન શ્રાવક કો
હસ પ્રકાર કહા - (હ મો અરહન્નગા ! અપત્થિયપત્થિયા ! જો સ્વલ્પ
કલ્પઈ તવ સીલવ્વય તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ) હે અરહન્નક !
હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મુજે તુમ્હારે હન શીલવ્રત આદિકોં કો વિચલિત
આદિ કરના ઉચિત નહીં હૈં અતઃ તુમ હી સુશી સે ઉન્હે છોડ દો-નહીં
તો મેં તુમ્હારી હસ નૌકા કો યહા સે પટક કર પાની મેં ડુધો દૂર્ગા-
જિસ સે તુમ અસમાધિ પ્રાપ્ત હોકર આર્તધ્યાનાદિ કે વશવર્ત્તિ બન મર-
ણકાલ સે પહિલે મૃત્યુકે વશ હો જાઓગે । દેવકે હસ કહ ને પર અર-
હન્નક શ્રાવકને કુછ ભી ધ્યાન નહીં દિયા પ્રત્યુત ઉસે મન હી મન

કરીને ધર્મધ્યાનમા જ તલ્લીન બેથો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમા ભરાઈ
લાલ પીળો થઈ ગયો, અને તેણે વહાણને પોતાની બે આગળીઓ-મધ્યમા
અને તર્જની-વડે પકડી લીધું “ ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાઈ જાવ અરહન્નગ એવ વયાસી ”
પકડીને તે વહાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ બેટણ આકાશમા લઇગયો અને
લઈ જઈને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યું

(હ મો અરહન્નગા ! અપત્થિયપત્થિયા ! જો સ્વલ્પ કલ્પઈ તવસીલવ્વય
તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ)

હે અરહન્નક ! હે આપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હું તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી
વિચલિત કરૂં તે થોડા ન લેખાય એથી તમે સ્વલ્પસુશીથી પોતાની મેળે જ
તમને ત્યજો નહિતો તમારા વહાણને હું અહીંથી પટકીને પાણીમા ડૂબાડી
ફંથા બેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્તધ્યાન વગેરેના વશવર્ત્તિ થશો
અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહેલા જ મૃત્યુને લેઈશો દેવની આ વાત પર
અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યું નહિ અને તેણે પોતાના મનમા જ

ततस्तदनन्तर खलु स पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी देवः, अरहन्नक यदा नो शम्नोति निर्ग्रन्थात् प्रवचनात् चालयितु वा क्षोभयितु वा विपरिणमयितु वा 'ताहे, तदा स पिशाचः 'सते' श्रान्तः=परिश्रम प्राप्तः स्थगनः, मनसा खिन्न इत्यर्थः, यावत्-अत्र यावत् करणेन-'तते' परितते इत्यनयो सग्रह । तान्तः-शरीरेण खेद प्राप्तः, परितान्तः=सर्पथा खिन्नः, 'निर्विन्ने' निर्भिणः=उपसर्गकरणात् प्रतिनिवृत्त, तत् पोतयहन=नौकायान, शनैः शनैरुपरिजलस्स, 'ठवेइ' स्थापयति० 'ठावित्ता' स्थापयित्वा तद् दिव्य पिशाचरूप 'पडिसाहरइ' प्रतिसहरति समोदित कर " मुझे इस निग्रन्थ प्रवचसे कोइ भी देव विचलित नहीं कर सकता है " ऐसा ही विचार-कहा-तथा अडिग भावसे निर्भय बन मौन लिये हुए अपने धर्मध्यानमे ही चह स्थिर रहा ।

(तएणं से पिसायरूवे अरहन्नग जाहे नो सचाएइ, निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणा मित्तए वा ताहे सते जाव निर्विन्ने त पोयवहण सणिय उवरिजलस्स ठवेइ) इस तरह वह पिशाच रूप धारी देव जय अरहन्नक आवक को निर्ग्रन्थ प्रवचन० से चलाने के लिये, उस से क्षुभित करने के लिये, विपरिणमित करने के लिये समर्थ नहीं हो सका तब श्रान्त और भग्न मन से खिन्न-होकर वह उपसर्ग करने रूप अपने कृत्य से प्रति निवृत्त हो गया । और धीरे २ आकाश से उतार उस पोतयान को उस ने पानी के ऊपर राख दिया । (ठावित्ता त दिव्य पिसायरूव पडिसाहरइ) , ,

विचार करीने कहु—“ आ निर्अथ प्रवचनथी भने को। पणु देव डटावी शक्ये नहि ” आभ विचारी ने निश्चय अने निर्अथ यधने ते मौन पाणतो ते पोताना धर्मध्यान भाज तल्लीन रह्यो

(तएण से पिसायरूवे अरहन्नग जाहे नो सचाएइ निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणमित्तए वा ताहे सते जाव निर्विन्ने त पोयवहण सणिय उवरिजलस्स ठवेइ)

आ प्रभाषे पिशाच रूपधारी देव न्यारे अरहन्न आवकने निर्अथ प्रवचनथी विचलित करवाभा, तेनाथी क्षुभित करवाभा, विपरिणमित करवाभा शक्तिमान थध शक्यो नही त्पारे श्रात अने लग्नमनथी जिन्त यधने उपसर्ग करवा इप पोताना कमथी प्रतिनिवृत्त थध गये अने आकाशभायी धीमेधीमे उतरीने तेबु वडाणु ने पाणी उपर मृगीणधु (ठावित्ता त दिव्य पिसायरूव पडिसाहरइ)

विलीनयति० । प्रतिसहस्रं=पिशाचरूपमन्तर्हित कृत्वा दिव्य=प्रशस्त परमसुन्दर
देवरूप विकुर्वति प्रादुर्भाषयति । विकुर्वित्वा = दिव्य देवरूप प्रादुर्भाव्य,
अन्तरिक्षप्रतिपन्नः=आकाशस्थितः, 'सखिसिणिग्याड' सर्किङ्किणीकानि यावद्
प्रवरवस्त्राणि परिहितः, स देवोऽरुहन्नक श्रमणोपासकमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेण,
अवादीत्-हभो ! अहो ! अरुहन्नक ! धन्योऽसि खलु त्व, हे देवानुप्रिय ! यावत्
त्वया जन्मजीवितफल लब्ध, यस्य खलु तव निर्ग्रन्थे प्रवचने इममेतद्रूपा प्रति-
पत्तिः=मम्यक्श्रद्धा लब्धा=उपार्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता०, अभिममन्वागता=

रखकर फिर उसने वह अपना दिव्य पिशाच का रूप समेट लिया-
अन्तर्हित कर लिया- (पडिसाहरित्ता दिव्य देवरूप विउव्वइ, विउव्वित्ता
अतल्लिक्खपडिक्खने सखिसिणिग्याड जाव परिहिण्ण अरुहन्नग जाव सम-
णोवासय एव वयासी) अन्तर्हित कर के फिर बाद में वह अपने
वास्तविक दिव्यरूप में आ गया ।

दिव्यरूप में आकर के उसने जो उस समय वस्त्रों को धारण कर
रखा था-वे क्षुद्र घटिकाओं से युक्त बड़े ही सुन्दर थे । आकाश में रह
कर ही उसने श्रमणोपासक अरुहन्नक से इस प्रकार कहा-(ह भो
अरिहन्नगा ! धन्यो सि ण तुम देवानुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्सण
तव निग्गये पावयणे इमेयारूवे पडिक्खत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया)
अहो अरुहन्नक ! तुम धन्य हो । हे देवानुप्रिय ! तुमने यावत् जन्म और
जीवन का फल प्राप्त कर लिया है जो इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में इस प्रकार

भूमीने तेण्ण पेत्तानु दिव्य पिशाचइय अ तडिंत्त करी वीधु

पडिसाहरित्ता दिव्य देवरूप विउव्वइ, विउव्वित्ता अतल्लिक्खपडिक्खने सखि-
णिग्याड जाव परिहिण्ण अरुहन्नग जाव समणोवासय एव वयासी)

अन्तर्हित करीने तेण्ण पेत्ताना साया दिव्य इयने इरी धारय्ता करी वीधु

दिव्य इयमा पडेरेला तेना वस्त्रो नानी नानी धूधरीओवाणा षण्ण सुइ
छत्ता आकाशमा ७ स्थिर रहीने तेण्ण श्रमणोपासक अरुहन्नकने आ प्रभाण्ण उधु-

(ह भो अरिहन्नगा उन्नोसि ण तुम देवानुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्स
ण तव निग्गये पावयणे इमेयारूवा पडिक्खत्ती लद्धा पत्ता अभिममन्नागया)

हे अरुहन्नक तमे धन्य हो ! हे देवानुप्रिय ! तमे अपूर्ण पण्ण जन्म
अने जीवननु इण भेगवा वीधु हे केम के आ निअ य प्रवचनमा आ रीते

સમ્યગાસેવિતા વર્તેતે ॥ હે દેવાનુપ્રિય ! एवम्=અમુના પ્રકારેણ ચલુ શકો દેવેન્દ્ર
=પરમૈશ્વર્યગત્સાદેવાનામિન્દ્રઃ, દેરાજઃ = દેવાના રાજા કાન્ત્યાદિગુણાધિક્યેન
વિરાજમાનત્વાદ્, સૌધર્મે=સૌધર્મનામકે પ્રથમે કલ્પે, સૌધર્માવતસકે વિમાને
સુધર્મ્યા સુધર્મ્યાયા સમાયા દેવસમાયા બહુનાં દેવાના મન્યગતઃ=મધ્યે સ્થિતઃ
મહતા શબ્દેન=ઉચ્ચે સ્વરેણ, 'આહ્વત્સૃ' આહ્વાતિ=સામાન્યરૂપેણ વ્રતીતિ,
ભાષતે=વિશેષતઃ કથયતિ, પ્રજ્ઞાપયતિ=સામાન્યતો વોધયતિ, પ્રરૂપયતિ, વિશેષતઃ
પ્રતિવોધયતિ ॥ કિમિત્યાહ ' एव खलु ' इत्यादिना ।

કી યહ સમ્યક શ્રદ્ધા પ્રાપ્ત કી હૈ ઓર હસે અપને આધીન કર લિયા
હૈ । તથો વહ શ્રદ્ધા હસ સમય તક મી તુમ્હારે દ્વારા અઙ્ગી તરહ
અચલ રૂપ મેં સેવિત હો રહી હૈ । (एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के
देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्म वडिसए विमाणे सभाए) सुह-
म्माए बहूण देवाण मज्झगए महया सदेण आह्वत्सई ४) मैंने तुम्हारे
साथ ऐसा क्यों किया इसका कारण यह है कि हे देवानुप्रिय ! एक
दिवस परम ऐश्वर्यशाली देवों के इन्द्र शक्त देवराज ने सौधर्म नाम
के प्रथम कल्प में सौधर्मावतसक विमान में अनेक देवों के बीच में
बैठकर अपनी सुधर्मासभा में उच्चस्वर से पहिले तो सामान्य रूप
से, कहा, बाद में भाषण द्वारा विशेष रूप से कहा । पहिले सामान्य
रूप से समझाया, बाद में विशेषरूप से समझाया । इस में उन्होंने ने
कहा- (एव खलु जंबूद्वीवे २ भारहे वासे चपाए नयरीए अरहन्नए सम

તમે સમ્યક શ્રદ્ધા મેળવી છે અને તેને સ્વાધીન બનાવ્યું છે' અત્યાર સુધી
પણ તમે તે શ્રદ્ધા ને જ સારી રીતે અચળ રૂપે વગમી રહ્યા છે

(एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्म वडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूण देवाण मज्झगए महए सदेण आह्वत्सई४)

મે જે કંઈ તમારી સાથે વર્તન કર્યું છે તેની પાછળનું કારણ આ
પ્રમાણે છે કે હે દેવાનુપ્રિય ! એક દિવસે પરમ-ઐશ્વર્યશાળી દેવોના ઈન્દ્ર
શક્ત દેવરાજે સૌધર્મનામના પહેલા કલ્પમાં સૌધર્માવતસક વિમાનમાં ઘણા
દેવોની વધે બેસીને પોતાની સુધર્માસભામાં બેઠા સાથે પહેલા તો સામાન્ય
રૂપે કહ્યું અને ત્યાર બાદ પોતાના ભાષણ વડે વિશેષ રૂપમાં કહ્યું તેઓ એ
પહેલા સામાન્ય અને ત્યાર પછી વિશેષ રૂપમાં સમજાવતા કહ્યું —

(एव खलु जंबूद्वीवे २ भारहे वासे चपाए नयरीए अरहन्नए समगोवात्सए

एव खलु जम्बूद्वीपेद्वीपे जम्बूद्वीपनामके द्वीपे भारते द्वेपे=दक्षिणभरतक्षेत्रे चरणाया नगर्याम् अरहन्नक' श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीनो यावत्-सम्यक्त्व-मूलदेशविरतिलक्षणे धर्मे दृढचित्तो वर्तते, असौ नो खलु शक्यं केनापि देवेन वा दानवेन वा इदमुपलक्षणम्- विन्नरेण वा, किंपुरुषेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा इतिसंयोज्यम्० । तत्र देवो वैमानिको ज्योतिष्को वा दानवो भवनपति, इतरे विन्नरादयो व्यन्तरभेदाः, 'णिग्गयाओ' नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितुं वा यावत् क्षोभयितुं वा, 'विपरिणामित्ते' विपरिणमयितुं=विपरीताभ्यवसायोत्पत्ति-भेदान्धथाभाव जनयितुं वा । जम्बूद्वीपान्तर्गतभरतक्षेत्रे चम्पानगरी निवासी-अरह-न्नक नामकः श्रावको केनापि देवादिना श्रावकधर्माच्चालयितुं न शक्यत इति भावः ।

णोचासए અહિગયજીવાજીવે નો સ્વલુ સવ્કે કેળઈ દેવેણ વા દાણ વેણ વા ણિગ્ગયાઓ પાવયણાઓ ચાલિત્તए वा जाव विपरिणामेत्तए वा) देखो-जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में दक्षिण भरत क्षेत्र में, चपा नाम की नगरी में जीव अजीव आदि तत्त्वों का ज्ञाता अरहन्नक नाम का श्रमणोपासक सेठ रहता है ।

यह सम्यक्त्व मूल देश विरति रूपधर्म में इतना दृढचित्त हैं कि यह किसी भी देव दानव, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व द्वारा अपने निर्ग्रन्थ प्रवचनरूप गृहीत धर्म से विचलित नहीं किया जा सकता है।

धुम्भित नहीं किया जा सकता है । विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उसमें अन्यथा भाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता है इन में वैमानिक एव ज्योतिषी देवो का देव पद से तथा भवनपति का दानव पद से ग्रहण हुआ है । शेष किन्नरादिको का कि जो व्यन्तर देव हैं उपलक्षण से ग्रहण किया गया है ।

અહિગય જીવાજીવે નો સ્વલુ સવ્કે કેળઈ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિગ્ગયાઓ પાવયણાઓ ચાલિત્તए वा जाव विपरिणामेत्तए वा)

જુઓ-જે જૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા દક્ષિણ ભરતક્ષેત્રમા અપ નામની નગરીમા એવ અણવ વગેરે તત્ત્વોને બાણનાર અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક સેઠ રહે છે,

તે સમ્યક્ત્વમૂળ દેશ વિરતિ રૂપ ધર્મમા આટલો બધો સ્થિર ચિત્ત છે કે ગમે તે દેવ દાનવ, કિન્નર કિંપુરુષ મહોરગ, ગંધર્વ વડે પણ પોતાના નિર્ગ્રંથ પ્રવચન રૂપ ધર્મથી તે વિચલિત થતો નથી

ધુભિત તેમજ વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી તેમા બીજો ભાવ ઉત્પન્ન થતો નથી અહીયા દેવપદથી વૈમાનિક અને જ્યોતિષી દેવોનુ તેમજ દાનવપદથી ભવનપતિનુ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યુ છે

તત = શ્રદ્ધાદેવેન્દ્રાચનશ્રવણાનંતરં સ્વલુ અહ દે દેવાનુપ્રિય ! શ્રદ્ધાસ્ય નો એ તમથં શ્રદ્ધામિ નો પ્રત્યેમિ નો રોચયામિ, શ્રદ્ધાકોક્તયાવ્યર્થ મમ વિશ્વામો ન જાત इत्यर्थः । ततः स्वलु ममायमेतद्वृष = उद्ध्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः, प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः सकल्पः समुत्पद्यत = समभवत्-गच्छामि स्वलु अह अस्स्यान्तिके = समीपे प्रादुर्भूयामि, तावद् अहम् अरहन्न, शस्त्रेण प्रशमितोऽरहन्नः स फीटशो वर्तते ' किं प्रियधर्मे ' किं प्रियधर्मा = प्रियोऽर्मा यस्य स प्रियधर्मा, प्रीतिभावेन मुखेन च धर्मस्य स्वीकारान् प्रियधर्मा वर्तते स्मिन्, अथवा ' नो प्रियधर्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-स्मिन् ' दृढधर्मे ' दृढधर्मा विपत्सुपस्थितास्वपिधर्मस्यापस्त्यागकरणात् दृढ = स्थिर' धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

તાત્પર્ય હસ કા કેવલ તક યહી હૈ કિ જવૂટીપ નામ કા એક દ્વીપ હૈ । ઉસ મેં ભરત ક્ષેત્ર નામ કા ક્ષેત્ર હૈ । ઉસ મેં ચપા નામ કી નગરી હૈ । યહ અરહન્નક નામ કા શ્રાવક ઉમ્મી નગરી કા નિવાસી હૈ । વહ અપને ધર્મ મેં इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित करने की किसी भी देव दानव में शक्ति नहीं है । (तएण अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठ सहहामि० तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था) जब शंकर देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा-तो उनके कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-श्रद्धा नहीं हुई वे उनके वचन मुझे रुचिकारक नहीं हुए । अतः मेरे मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित सकल्प उसका हुआ (गच्छामिण अरहन्नस्स अतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अह

તાત્પર્ય-આ પ્રમાણે છે કે જ બૂદ્ધીપનામે દ્વીપ છે તેમા ભરતક્ષેત્ર નામે ક્ષેત્ર છે તે ક્ષેત્રમા ચપા નામે નગરી છે તે અરહન્નક શ્રાવક ચપા નામે નગરીમા વસે છે તે પોતાના ધર્મમા એટલો બધો સુદૃઢ છે કે દેવ દાનવમા પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે

(તएण અહ દેવાણુપ્પિયા ! સવ્કસ્સ૦ ણો એયમટ્ઠ સહહામિ૦ તएણ મમ હ મેયારૂવે અજ્ઞત્થિયે જાવ સમુપ્પજ્જેત્થા)

ન્યારે શકે દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તેમની વાત સાંભળીને મને તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ ઝેઠો નહિ મને તેમના વચન ગમ્યા પણ નહિ એથી મારા મનમા આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સહકલ ઉત્પન્ન થયો

(ગચ્છામિ ણ અરહન્નસ્મ અતિય પાઉન્મવામિ જાણામિ તાવ અહ અરહન્નગં કિ

अथवा-‘ नो ददधम्मे ’ नो ददधर्मा सोऽरहन्नको नास्ति ददधर्मा ? स च शील-
व्रतगुणान् किं चालयति=अपनयति यावत् परित्यजति, किं वा नो परित्यजति अत्र
यावत् करणात्-क्षोभयति किं वा नो क्षोभयति ? खण्डयति किं वा नो खण्डयति ?
उज्झति किं वा नो उज्झति ? इति बोध्यम् । इति कृत्वा=इत्येव मनसि विचार्य,
एव सपेक्षे, सप्रेक्ष्य अवधिम्=अवधिज्ञान प्रयुञ्जे प्रेरयामि प्रयुज्य देवानुप्रियम् आ-
भोगयामि=पडयामि । आभोग्य उत्तरपौरस्त्यम्-ईशानकोणदिग्भागं गच्छामि,
गत्वा, ‘ उत्तरविउच्चिय ’ उत्तरवैक्रिय करोमि, कृत्वा तयोत्कृष्टया गत्या=देवस-
म्बन्धिन्या गत्या यत्रैव समुद्रः, यत्रैव देवानुप्रियस्तत्रैवोपागच्छामि, उपागत्य दे-

अरहन्नग किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे ददधम्मे नो ददधम्मे ? शील-
व्ययगुणे किं चालेंति, जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ) किं चलो अरह-
न्नक के पास चलें-और चलकर यह ज्ञातकरें कि अरहन्नक को धर्म प्रिय
है, कि नहीं है, वह धर्म में दद है कि नहीं है । वह अपने शीलों को,
व्रतों को और गुणों को छोड़ता है अथवा नहीं छोड़ता है, उन्हें क्षुभित
करता है, या नहीं करता है, उनका खडन करता है या नहीं करता है।
प्रवचन में एक देश से भी उस में अतिचार लगाता है या नहीं
लगाता है (त्तिमइड एव सपेहेमि) हे अरहन्नक ! मैंने ऐसा विचार
किया (सपेहिता ओहिं पडजामि) विचार करके फिर मैंने अपने अव-
धिज्ञान को जोड़ा (पडजित्ता देवानुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभो-
इत्ता उत्तरपुरत्थिम० उत्तर विउच्चिय० ताण उक्किट्ठाण गइए जेणेव देवा-
णुप्पिया तेणेव उवागच्छामि) अवधिज्ञान को जोड़ कर मैंने उसके द्वारा
आप देवानुप्रिय को देखा ।

पियधम्मे नो ददधम्मे ? शीलव्यय गुण किं चालेंति जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ

हे आत्मा अरहन्नकनी पास जेधये अने जेने तपास करीये के तेने
धर्म प्रिय छे के केम ? ते चेत्ताना शीवाने, मनोने अने शुछोने त्यजे छे के
केम ? तेमने क्षुभित करे छे के नहि ? तेमज तेमनु अडन करे छे के केम ?
प्रवचनमा जेक देसथी पणु तेमा अतिचार लागे छे के केम ? (ति कहुं एव
सपेहेमि) हे अरहन्नक ! मे आ प्रमाणे विचार कर्यो (सपेहिता ओहिं
पडजामि) विचार करीने मे भारा अवधिज्ञानथी स गति जेसाडी

(पडजित्ता देवानुप्पिय ओहिणा आभोएमि आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिम० उत्तर
विउच्चिय० ताण उक्किट्ठाण गइए जेणेव समुद्रे जेणेव देवानुप्पिया तेणेव उवागच्छामि
अने तेनी स गति वडे देवानुप्रिय तमने मे जेथा

તત = શ્રદ્ધાદેવેન્દ્રચરણશ્રવણાન્ તત્ સ્વલુ અહ હે દેવાનુપ્રિય ! પ્રક્રમ્ય નો પ
તમર્થ શ્રદ્ધામિ નો મત્યેમિ નો રોચ્યામિ, શ્રદ્ધાંકૃત્વાક્યાર્થ મમ વિશ્વાસો ન મત
इत्यर्थः । ततः स्वलु ममायमेतद्वप' = उद्ध्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः
प्रार्थितः, कल्पित, मनोगतः सकल्पः समुद्रपथतः = सममवत्-गच्छामि स्वलु अह
अवस्यान्तिके = समीपे प्रादुर्भूयामि, तावद् अहम् अरहन्न, ગરૂણ પ્રગમિતોઽરહન્ન
સ ફીટણો વર્તે ' કિ પ્રિયધર્મે ' કિ પ્રિયધર્મા = પ્રિયોધર્મો यस્ય સ પ્રિયધર્મા,
પ્રીતિભાવેન મુખેન ચ ધર્મસ્ય સ્વીકારાન્ પ્રિયધર્મા વર્તેતે સ્મિ, અથવા ' નો પ્રિ
યધર્મે ' નો પ્રિયધર્મા સ નાસ્તિ પ્રિયધર્મા, તથા-કિમર્મો ' દદ્ધધર્મે ' દદ્ધધર્મા
વિપત્સુપસ્થિતાસ્વપિધર્મસ્યાપરિત્યાગકરુણાત્ દદ્ધ = સ્થિર ધર્મો यस્ય મ દદ્ધધર્મા,

તાતપર્ય હસ કા કેવલ ાક યહી હૈ કિ જવૂદ્રીપ નામ કા એક દ્વીપ
હૈ । ઉસ મૈં ભરત ક્ષેત્ર નામ કા ક્ષેત્ર હૈ । ઉસ મૈં ચપા નામ કી નગરી
હૈ । યહ અરહન્નક નામ કા શ્રાવક ઉમ્મી નગરી કા નિવાસી હૈ । વહ
અપને ધર્મ મૈં હતના અધિક દદ્ધ હૈ કિ ઉસે અપને ધર્મ સે વિચલિત કર
ને કી કિસી બી દેવ દાનવ મૈં શક્તિ નહીં હૈ । (તણે અહ દેવાણુપિ
યા ! સક્કસ્સંણો ઇયમદ્ધ સદ્દહામિં તણે મમ હમેચારુવે અજ્ઞતિય
જાવ સમુપ્પજ્જેત્થા) જય શંક દેવેન્દ્ર ને હસ પ્રકાર કહા-તો ઉનેકે
કથન કો સુનનેકે બાદ હે દેવાનુપ્રિય મુજે ઉનેકે ઉન્ વચનો પર વિશ્વાસ-
શ્રદ્ધા નહીં હુઈ વે ઉનેકે વચન મુજે રુચિકારક નહીં હુય । અતઃ મેરે
મનમૈં હસ પ્રકાર કા અભ્યર્થિત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સકલ્પ ઉત્પન્ન
હુઆ (ગચ્છામિ ણ અરહન્નસ્સ અતિણ પાઉન્નભવામિ, જાણામિ તાવ અહ

તાતપર્ય-આ પ્રમાણે છે કે જવૂદ્રીપનામે દ્વીપ છે તેમા ભરતક્ષેત્ર નામે
ક્ષેત્ર છે તે ક્ષેત્રમા ચપા નામે નગરી છે તે અરહન્નક શ્રાવક ચપા
નામે નગરીમા વસે છે તે પોતાના ધર્મમા એટલો બધો સુદૃઢ છે કે દેવ
દાનવમા પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે

(તણે અહ દેવાણુપિયા ! સક્કસ્સંણો ઇયમદ્ધ સદ્દહામિં તણે મમ હ
મેચારુવે અજ્ઞતિય જાવ સમુપ્પજ્જેત્થા)

ન્યારે શંક દેવેન્દ્રે ' આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તેમની વાત સામળીને અને
તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ બેઠો નહિ અને તેમના વચન ગમ્યા
પણ નહિ એથી મારા મનમા આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત,
કલ્પિત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો

(ગચ્છામિ ણ અરહન્નસ્સ અતિણ પાઉન્નભવામિ જાણામિ તાવ અહ અરહન્નક કિ

સપ્તર્મ દૃઢતારૂપ ઇતિ, પરાક્રમઃ=ધર્મારાધનજન્યશક્તિવિશેષઃ, લબ્ધઃ=ઉપાર્જિતઃ, પ્રાપ્તઃ=સ્વાયત્તીકૃતઃ, અભિસમન્વાગતઃ=સમ્યગ્સેવિતઃ । અહો ! અરહન્નક ! ભવતામૃદ્ધચાદયો મયા દૃષ્ટા, યશ્ચ પરાક્રમો ધર્મારાધનાલ્લબ્ધઃ પ્રાપ્તોઽભિસમન્વાગતશ્ચ સોઽપિ મયા દૃષ્ટ ઇતિ ભાવઃ ।

તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ, खलु हे देवानुप्रियाः । भयन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्त हे देवानुप्रिया ! क्षन्तुमर्हन्ति भयन्तः । मत्कृताऽपराध क्षन्तु योग्या भवन्त इति भावः । नापि भूयोभूयः एव करणतया=पुनः पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुट=संयोजिताञ्जली कृतकरद्वयपुटः, पादपतितः पञ्चाङ्गनमनपूर्वक चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूप विनयेन=विन-

રૂપ પુરુષકાર આપકા ધર્મારાધન જન્ય શક્તિરૂપ પરાક્રમ, યે સઘ ગુણ મૈને દેઘ લિયા । ઇન સઘ ગુણોં કો આપને અઙ્ગી તરહ ઉપાર્જિતકિયા હૈ ।

અઙ્ગી તરહ ઇન સઘ કો આપને અપને આધીન ઘનાયા હૈ । ઔર અઙ્ગી તરહ સે ઇન સઘ ગુણોં કો આપને સેવિત કિયા હૈ । (ત હામેમિ, ણ દેવાણુપ્પિયા ! ઁમ તુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણાઙ મુજ્જો ૨ ઁવ કરણયાણ ત્તિકદ્દુ પજલિઙ્ગે પાયવઙ્ગિણ ઁયમદ્ધ વિણણ મુજ્જો ૨ હામેઙ) અતઃ હે દેવાણુપ્રિય ! આપ કો મૈં હાનાતા હ્ં । આપ દેવાણુપ્રિય મુજ્જે ક્ષમા કરે ! મૈંને અમી તક જો આપકે અપરાધ કિયે હૈ મૈં ઁન કી આપસે ક્ષમા હાહતા હ્ । આપ મેરે અપરાધોં કો ક્ષમા કરને યોગ્ય હૈ । અઘ આગે મૈં ઁસા નહીં કહ્ંગા । ઇસ પ્રકાર કહ કર ઁસ દેઘને અપને દોનો હાથોં કો જોઙા ઔર જોઙ કર ફિર ઁહ ઁસ અરહન્નક શ્રાવક કે ઘરણોં મૈં

આત્મિક ખજ, તમારૂં ધર્મમાદકરૂં પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂં તમારૂં પરાક્રમ
આ ખજા શુણો મે બેઘ લીધા છે તમે આ ખજા શુણો મારી પેઠે મેળવ્યા છે
આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે
શુણોનુ સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે

(ત હામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણાઙ મુજ્જો ૨ ઁવ કરણયાણ ત્તિકદ્દુ પજલિઙ્ગે પાયવઙ્ગિણ ઁયમદ્ધ વિણણ મુજ્જો ૨ હામેઙ)

ઔથી હે દેવાણુપ્રિય ! તમને હું ખમાવુ છું દેવાણુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મે જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા આહું છું તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમા કોઈ પણ વખત મારાથી આવુ અયોગ્ય વર્તન થયે નહિ આ રીતે કહીને તે દેઘ પોતાના બન્ને હાથ બેઙ્યા અને ત્યારમાઙ તેણે અરું નઙ શ્રાવકના પગમા

વાનુપ્રિયસ્યોપસર્ગ કરોમિ । નો ચૈવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! મીતા વા પ્રસિતા વા
ઉદ્વિગ્ના વા સજાતમયા વા જાતાઃ । તદ્-તસ્માદ્ યત્ સ્વલુ શકો દેવેન્દ્રો દેવરાજો
વદતિ, સત્યઃ સ્વલુ ણોઽર્થો દદૃષ્ઠ । તદ્ તસ્માત્ દદૃષ્ઠ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાનાં મધ
તામ્ ક્રુદ્ધિઃ=ગુણાનામૈશ્વર્યમ્, ઘૃતિઃ=આન્તર તેજઃ, યશઃ=શ્ર્યાતિઃ, યાવદ્-અથ
યાવન્નવ્દેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્ બલ=શારીર પરાક્રમ, યીર્યમ્=આત્મિક બલમ્, પુરુષકારઃ

દેવકર મેં ઈશાન કોણ કી ઓર ગયા । વહા જાકર મેંને ઉત્તર વૈક્રિય
કી રચના કી-રચના કર ઉસ દેવભવ સમ્યધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે જહાં
સમુદ્ર થા ઓર જહાં આપ દેવનુપ્રિય થે વહા મેં આયા (ઉવાગચ્છિન્તા
દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ) આકર મેંને ફિર આપ દેવાનુપ્રિયકે ઉપર
ઉપસર્ગ કરના પ્રારંભ કરદિયા । (જો ચેવળ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા ત
જળ્લં સવ્કે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે ણ एसमद्वे) પરન્તુ આપ દેવાનુ
પ્રિય મીત નહીં હુએ, વ્રસ્ત નહીં હુએ વ્રસિત નહીં હુએ ઉદ્વિગ્ન નહીં હુએ
ઓર ન ઉત્પન્ન હુઆ હૈ મધ જિસ કો એસ હી હુએ । હસ લિયે મેંને જૈસા
આપકે વિષય મેં શક્રદેવ રાજા દેવેન્દ્ર ને કહા વા વૈસા હી આપકો
દેખા-(ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે, લદ્દે પત્તે
અભિસમન્નાગ) અવ મેંને આપકે ગુણોં કા એશ્વર્ય દેવલિયા પ્રત્યક્ષ કર
લિયા । આપકી ઘૃતિ-આન્તરતેજ, આપકી શ્ર્યાતિ યાવત્ શબ્દ સે આપ
કા શારીરિક પરાક્રમ, આપકા આત્મિક બલ આપકા સ્વધર્મ મેં દૃઢતા

નેધને હું ઈશાન કોણ તરફ ગયો ત્યા નેધને મેં ઉત્તર વૈક્રિયની
રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સમ્યધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હતા
અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યા આવ્યો

(ઉવાગચ્છિન્તા દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ)

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(જો ચેવળ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા ત જળ્લં સવ્કે દેવિંદે દેવરાયા વદહ
સચ્ચે ણ एसमद्वे)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડરો નથી, વ્રસ્ત થયા નથી, વ્રસિત થયા
નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામા લય ઉત્પન્ન થયો નથી એથી તમારા
વિષે શક દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને જોતા બરાબર લાગે છે

(ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે લદ્દે પત્તે અભિસમન્નાગ)

હવે મેં તમારા શુભોની સમૃદ્ધિ નેધ લીધી છે તમારી ઘૃતિ આતર
તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શરાતન, તમારું

સ્વધર્મ દૃઢતારૂપ ઇતિ, પરાક્રમઃ=ધર્મારાધનજન્યશક્તિવિશેષઃ, લબ્ધઃ=ઉપાર્જિતઃ, પ્રાપ્તઃ=સ્વાયત્તીકૃતઃ, અભિસમન્વાગતઃ=સમ્યગ્ગાસેવિતઃ । અહો ! અરહન્નક ! ભવ તામૃદ્ધ્યાદયો મયા દૃષ્ટા, યથ્થ પરાક્રમો ધર્મારાધનાલ્લબ્ધઃ પ્રાપ્તોઽભિસમન્વાગતથ્થ સોઽપિ મયા દૃષ્ટ ઇતિ ભાવઃ ।

તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ, સ્વહ્રુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ । મનન્તઃ, હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ક્ષમન્તુ ભવન્તુ હે દેવાનુપ્રિયા ! ક્ષન્તુમર્હન્તિ મનન્તઃ । મત્કૃતાઽપરાધ ક્ષન્તુ યોગ્યા મનન્ત ઇતિ ભાવઃ । નાપિ ભૂયોભૂયઃ એવ કરણતયા=પુનઃ પુનરેવ ન કરિષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા=અમુક્ત્વા, પ્રાક્કલિપુટ=સયોજિતાઞ્ગલી કૃતકરદ્વયપુટઃ, પાદપતિત. પશ્ચાદ્ગ્નનમનપૂર્વક ચરણયોઃ પતિતઃ સન્ એતમર્થમ્=સ્વકૃતાપરાધરૂપ વિનયેન=વિન-

રૂપ પુરુષકાર આપકા ધર્મારાધન જન્ય શક્તિરૂપ પરાક્રમ, યે સ્વઃ ગુણ મૈને દેવ લિયા । હન સ્વઃ ગુણોં કો આપને અચ્છી તરહ ઉપાર્જિતક્રિયા હૈ ।

અચ્છી તરહ હન સ્વઃ કો આપને અપને આધીન બનાયા હૈ । ઔર અચ્છી તરહ સે હન સ્વઃ ગુણોં કો આપને સેવિત ક્રિયા હૈ । (ત સ્વામેમિ, ણ દેવાણુપ્પિયા ! સ્વમ તુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણાઙ્ગ મુજ્જો ૨ એવ કરણયાણ ત્તિકદ્દુ પજ્જલિઉઢે પાયવડિણ્ણ એયમદ્દુ વિણ્ણણ મુજ્જો ૨ સ્વામેહ) અતઃ હે દેવાનુપ્રિય ! આપ કો મૈં સ્વમાતા હૂં । આપ દેવાનુપ્રિય મુજ્જે ક્ષમા કરે ! મૈંને અમી તક જો આપકે અપરાધ ક્રિયે હૈ મૈં ઉન કી આપસે ક્ષમા ચ્હાહ્તા હૂ । આપ મેરે અપરાગોં કો ક્ષમા કરને યોગ્ય હૈ । અવ આગે મૈં એસા નહીં કહૂંગા । હસ પ્રકાર કહ્ કર ઉસ દેવને અપને દોનોં હાથોં કો જોઢા ઔર જોઢ કર ફિર વહ ઉસ અરહન્નક શ્રાવક કે ચરણોં મૈં

આત્મિક બળ, તમારૂં ધર્મભાદૃશ્ય પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂં પરાક્રમ આ બધા ગુણો મેં જોઈ લીધા છે તમે આ બધા ગુણો મારી પેઠે મેળવ્યા છે આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે ગુણોનું સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે

(ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણાઙ્ગ મુજ્જો ૨ એવ કરણયાણ ત્તિકદ્દુ પજ્જલિઉઢે પાયવડિણ્ણ એયમદ્દુ વિણ્ણણ મુજ્જો ૨ સ્વામેહ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હું ખમાવું છું દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મેં જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા આહું છું તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમાં કોઈ પણ વખત મારાથી આવું અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડ્યા અને ત્યારબાદ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમાં

વાનુપ્રિયસ્યોપસર્ગ કરોમિ । નો ચૈવ સલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! મીતા વા પ્રસિતા વા ઉદ્ધિન્ના વા સજાતમયા વા જાતાઃ । તદ્=તસ્માદ્ યત્ સલુ શકો દેવેન્દ્રોદેવરાજો વદતિ, સત્યઃ સલુ ઇપોડર્થો દૃષ્ટ । તદ્ તસ્માત્ દૃષ્ટા સલુ દેવાનુપ્રિયાણાં મ્મ સામ્ ક્રદ્ધિઃ=ગુણાનામૈશ્વર્યમ્, ઘૃતિઃ=આન્તર તેજઃ, યજ્ઞઃ=ચ્યાતિઃ, યાવત્-અથ યાવચ્છન્દેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્ બલ=શારીર પરાક્રમ, રીયમ્=આત્મિક રત્નમ્, પુરુષકારઃ

દેવકર મેં ઈશાન કોણ કી ઓર ગયા । વળાં જાકર મેંને ઉત્તર વૈક્રિય કી રચના કી-રચના કર ઉસ દેવભવ સમ્પન્ની ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે જહાં સમુદ્ર થા ઓર જહાં આપ દેવાનુપ્રિય થે વહા મેં આયા (ઉવાગચ્છિન્ના દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ) આકર મેંને ફિર આપ દેવાનુપ્રિયકે ઉપર ઉપસર્ગ કરના પ્રારંભ કરદિયા । (જો ચૈવ જ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા તં જળ્ણં સક્કે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે જણ ઇસમદ્દે) પરન્તુ આપ દેવાનુપ્રિય મીત નહીં હુણ, પ્રસ્ત નહીં હુણ પ્રસિત નહીં હુણ ઉદ્ધિન્ન નહીં હુણ ઓર ન ઉત્પન્ન હુઆ હૈ મય જિસ કો ઇસ હી હુણ । ઇસ લિયે મેંને જૈસા આપકે વિષય મેં શકદેવ રાજા દેવેન્દ્ર ને કહા થા વૈસા હી આપકો દેખા-(ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે, લદ્દે પત્તે અભિસમન્નાગણ) અથ મેંને આપકે ગુણોં કા ઇશ્વર્ય દેવલિયા પ્રત્યક્ષ કર લિયા । આપકી ઘૃતિ-આન્તરતેજ, આપકી ચ્યાતિ યાવત્ શબ્દ સે આપ કા શારીરિક પરાક્રમ, આપકા આત્મિક બલ આપકા સ્વધર્મ મે દૃઢતા

બોધને હું ઈશાન કોણ તરફ ગયો ત્યા બોધને મે ઉત્તર વૈક્રિયની રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સંગથી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હોતા અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હોતા ત્યા આવ્યો

(ઉવાગચ્છિન્ના દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ)

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(જો ચૈવ જ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા તં જળ્ણં સક્કે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે જણ ઇસમદ્દે)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડરો નથી, પ્રસ્ત થયા નથી, પ્રસિત થયા નથી, ઉદ્ધિન્ન થયા નથી તેમજ તમારામાં ભય ઉત્પન્ન થયો નથી એથી તમારા વિષે શક દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને જોતા બરાબર લાગે છે (ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે લદ્દે પત્તે અભિસમન્નાગણ) હવે મે તમારા શુભોન્ની સમૃદ્ધિ બોધ લીધી છે તમારી ઘૃતિ આત્મર તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શુરાતન, તમારું

पडिच्छित्ता मल्लीं विदेहवररायकन्न सदावित्ता त दिव्वं कुडल-
 जुयल मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ पिणाद्धित्ता पडि-
 विसज्जेइ तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावा
 वाणियगे विउलेणं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता
 रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ पडिविसज्जेइ, तएणं अरह-
 न्नग सज्जत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवाग-
 च्छति, उवागच्छित्ता भडववहरणं करेति, करित्ता पडिभंडं
 गिण्हति, गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव पोयपट्टणे
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोतवहणं सज्जेति, सज्जित्ता
 भंडं सकामेति, दक्खिणाणुकुलेणं वाउणा जेणेव चपा पोय-
 ट्ठणे तेणेव पोय लवेति, लवित्ता सगडी० सज्जेति, सज्जित्ता
 तं गणिमं ४ सगडी० संकामेति, संकामित्ता जाव महत्थ पाहुड
 दिव्वं च कुडलजुयल गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए
 अगराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता त महत्थ जाव
 उवणेति, तएणं चदच्छाए अंगराया त दिव्वं महत्थं च कुडल
 युगल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तं अरहन्नगपामोक्खे एव वयासी-
 -तुब्भे णं देवा०। वहुणि गामागार जाव आहिडह लवणसमुद्ध
 च अभिस्खण २ पोयवहणेहि आगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ
 कहिचि अच्छेरए दिट्ठपुब्बे ? तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा
 चदच्छायं अगरायं एव वयासी-एव खलु सामी । अम्हे इहेव
 चम्पाए नयरिए अरहन्नपामोक्खा वहवे सज्जत्ता णावा वा-
 णियगा परिवसामो, तएण अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च४

अभावेन भूयोभूय क्षमयति, क्षमयित्वा अरहन्नकस्पष्टे कुण्डलयुगले ददाति दत्त्वा
यस्यां दिशः स देवः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः = देवलोकं गत इत्यर्थः ॥ सू० २३ ॥

मूलम्-तएणं से अरहन्नए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिम्
पारेइ, तएणं ते अरहन्नगपामोम्खा नावा वाणियगा दक्खि-
णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छन्ति,
उवागच्छित्ता पोयं लंवेति, लवित्ता सगडिसागड सज्जेति, स-
ज्जित्ता तं गणिम ४ सगडि० सकामेति, संकामित्ता सगडी०
जोएन्ति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि सगडी-
सागड मोएइ, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थ महग्ग
महरिह विउल रायरिहं पाहुड कुडलजुयलं च गिण्हति, गि-
ण्हित्ता मिहिलं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० त महत्थ दिव्व
कुंडल जुयल उवणेंति । तएण तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ,

पचाग नमन पूर्वक नमस्कार किया नमस्कार कर उसने अपने अपराध
की उससे बड़े विनय के साथ बार २ क्षमा कराई । (स्वामित्ता)
क्षमा कराकर (अरहन्नस्स) उसने अरहन्नक श्रावक के लिये (दुबे
कुंडल जुयले दलयति-दलयित्ता-जामेव दिस्सि पाउम्भूए तामेव दिस्सि
पडिगए) दो कुंडल युगल दिये । देकर के फिर वह जिस दिशा से
आया था-प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस हो गया देव-
लोक को चला गया । सूत्र “ २३ ”

पचाग नमनपूर्वक नमस्कार किया अने चोताना अपराधानी गहु ४ विनय साथे
बार बार क्षमा करावी (स्वामित्ता) क्षमा करावीने (अरहन्नस्स, तेण्णे अरहन्नक श्रावकने
(दुबेकुंडलजुयले दलयति दलयित्ता जामेव दिस्सि पाउम्भूए तामेव दिस्सि पडिगए)

ये कुंडलोनी नेउ आपी ते आपीने ४ दिशाभाथा आयेउ हतो, प्रकट
थयो हतो ते ४ दिशा तरश्च देवलोकमा गतो रह्यो ॥ सू० “ २३ ” ॥

उत्तरणस्थानं वर्तने, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पोत=नाव, 'लवेति, लम्बयन्ति तीरस्थाने वरुण्डा रज्ज्वादिभिर्निबध्य स्थिरी कुर्वन्त० । 'लवित्ता' लम्बयित्वा शकटी शाकटिक=लघु कटवृद्धच्छटाणां समूहसज्जयन्ति=नवीनोपकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा त गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य चतुर्विध क्रयाणकसमूहशकटीशाकटिके 'सकामेति सक्रामयन्ति=स्थापयन्ति, सक्राम्य=तेऽरहन्नक प्रमुखाः सायात्रिकाः शकटीशाकटिक योजयन्ति=बलीवर्दादिभिर्योजित कुर्वन्ति, योजयित्वा शकटारूढास्ते यत्रैव मिथिला राजधानीवर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलाया राजधान्या बहिरग्रोद्याने=प्रधानोद्याने शकटीशाकटिक मोचयन्ति=शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक्कुर्वन्ति, मोचयित्वा मिथिलाया राजधान्या तन्म-

से जहा गभीर नाम का नौका के ठहर ने का स्थान था (बदर गाह था) वहा पहुचे । (उवागच्छित्ता पोय लवेति) वहा पहुच कर उन लोगों ने नौका को खडा कर दिया-तीर स्थित अनेक खूटों मे रज्ज्वादि से उसे बांधकर स्थिर कर दिया । (लवित्ता सगडसागड सज्जेति) खडा करके छोटी छोटी गाडियों को और गाडों को तैयार किया-नवीन उपकरण एव रज्ज्वादि से उन्हें सज्जित किया । (सज्जित्ता त गणिम ४ सगडि ४ सकामेति) सज्जित करके फिर उन्होंने उस गणिम, धरिम, मेय एव परिच्छेद्य रूप चतुर्विध-क्रयाणक को नौका से उतार कर उन गाडी गाडों मे भरा (सकामित्ता सगडी० जोएति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) भर कर फिर उन्होंने ने उन्हें जोता-जोत कर जहा मिथिला नगरी थी वहाँ वे आये । (उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अगुज्जाणमि सागडसगडी मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थ महग्घ महरिह विउल रायरिह पाहुड कुडलजुयल

(उवागच्छित्ता पोय लवेति) त्या पडोथीने तेज्जाजे नावने उली शशी डिनारानी डोरीज्जाथी तेने सारी रीते गाधी दीधी (लवित्ता सगड सागड सज्जेति) त्यार पछी नानी गाडीज्जा तेम-७ मोटा गाडाज्जा ने डोरीजा पगेरे साधनेथी सन्न कर्था (सज्जित्ता त गणिम ४ सगडि ४ सकामेति) सन्न कर्था जाइ तेमजे गबिभ, धरिभ, मेय अने परिच्छेद्य ३५ थार प्रडा रनी वेयाणुनी वस्तुज्जा ने नावभाथी उतारीने गाडीज्जा अने गाडाज्जा भा लरी (सकामित्ता सगडी० जोएति, जोपत्ता जेणेव महिला तेणेव उवागच्छति)

सामान कर्था पछी तेमजे गाडीज्जा अने गाडाज्जा ने नेतया अने नेतरीने न्या मिथिला नगरी डती त्या गया

(उवागच्छित्ता महिलाए रायहाणीए बहिया अगुज्जाणमि सगडीसागड

तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तएण
 से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्वे कुंडलजुयलं
 पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ, त एसणं सामी अम्हेहिं
 कुभगराय भवणांसि मल्ली विदेह० अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु
 अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली
 विदेह०, तएण चदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ,
 सम्माणेइ, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं चदच्छाये वाणि-
 यगजणियहरिसे दूत सदावेइ, जाव जइविय ण सा सयं रज्ज
 सुक्का, तएण से दूते हट्ठ जाव पहारेत्थ गमणाए, ॥ सू० २१॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सोऽरहन्नकः, ‘निरूपसर्गम्’
 उपसर्गभावो जातः, इति कृत्वा=इतिविज्ञाय प्रतिमा=साकारसत्त्वारूप नियम
 विशेष पारयति स्म० । ततस्तदनन्तर खलु ते ऽरहन्नकप्रमुखा नौकावाणिजकाः
 सायात्रिकाः दक्षिणानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरक गम्भीरनामक पोतपत्तन नौका

‘तएण से अरहन्नए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से अरहन्नए) उस अरहन्नक आवक
 ने (निरूप सगमामिति कहु) उपसर्ग दूर हो गया है ऐसा जानकर
 पडिम परेइ) अपने साकारी सथारे को पारित किया ।

(तएण ते अरहन्नग पामोक्खवा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेण
 वाएण जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति) इसके अनन्तर
 वे समस्त अरहन्नक प्रमुख सायात्रिक पोत वाणिक् दक्षिणानुकूल वायु

‘तएण से अरहन्नए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाइ (से अरहन्नए) ते अरहन्नक आवके निरुपस
 गामिति कहु) उपसर्ग (सकट) जतो रह्यो छे ओम भाणीने (पडिम परेइ)
 पोताना साकारी सथाराने पारित कथे

(तएण ते अरहन्नगपामोक्खवा नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेण वाएण जे
 गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति)

त्थार पछी जथा अरहन्नक प्रमुख सायात्रिक पोत वाणिक् दक्षिणानु
 कूल पवन्थी तथा गभीर नामे नावने लागरवावु जइर छवु तथा पडोया

च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छय=गृहीत्वा च मल्ली विदेह राज-
ति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्लया विदेह
। 'पिण्डेइ' पिण्डयति=पिण्ड करोति परिगणयतीत्यर्थः ।
सर्जयति=तां कन्यान्तः पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खलु
। तान् अरहन्नरुपमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्ध-
समान्य यायत् उच्छुल्क=शुल्काभावात् वितरति=ददाति । 'अरहन्न-
र्तुभ्यः क्रयविहयव्यपहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य
प्रदत्तवानिति भावः । प्रतीर्य=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्त्वा,

रा को भेट किये । (तण्ण कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव
पडिच्छत्ता मल्ली विदेहवररायकन्न सदावेइ सदावित्ता तं
जुयल मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिण्डइइ) कुभक राजा
रात्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय
कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या
सारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह
या मल्ली कुमारी को पहिरा दिये ।

पडिच्छत्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहां से दूतों के
यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया । (तण्ण से कुभए राया ते
सामोक्खे नावावणिगये विउले ण वत्थगघ जाव उस्सुक्क
इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सायात्रिकों को
अन्न, गन्धमाला, अलंकारों से सम्मान किया । सम्मान करके

ए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छत्ता मल्लीविदेह वररायकन्न
वित्ता त दिव्व कुडलजुयल मल्ली विदेह वरराज कन्नगाए पिण्डइइ)
राजाने ते सायात्रिकोनी नन्ना पेरनी खेट तेभए कुडोणे
यां पछी विदेहवरराजकन्या कुभकारीने जोलावी अर्ने
दिव्य कुडोणे विदेहवरराजकन्या कुभकारीने पडेशोव्या
पडिविसज्जेइ) पडेशोवीने ते पाये त्याथी कन्या

गणपामो

निउले ण वत्थ

हार्थं महाप्रयोजनक 'महग्घ' महाघं=बहुमूल्यक, महार्हं महता योग्य विपुल
विस्तीर्ण राजार्हं राजयोग्यं प्राभृतम्-उपहाररत्नादिक कुण्डलयुगल=देवेन दत्तं
कुण्डलद्वयं च गृह्णन्ति, गृहीत्या मिथिलामनुपविशन्ति । अनुपविश्य यत्रैव कुम्भकः
=कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिष्-
कीत शिर आवर्तं दशनस्य मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महाघं प्राभृत रत्नादिक दिव्यं
कुण्डलयुगलं च उपनयन्ति=राज्ञः पुरतः स्थापयन्ति । ततस्तदा खलु कुम्भको
राजा तेषाम्=अरहन्तकादीनां सायात्रिकाणां नौकावाणिजकानां यावत् रत्नादि-

ष गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिल अणुपविसति) वहा आकर उन लोगो
ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को
ढील दिया । ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने
के लिये उस महा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषों के योग्य
रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुडलों को
कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में
गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छति, उवाग-
च्छित्ता करयल० त महत्थ दिव्व कुडलजुयल उवणेंति) वहा जाकर
फिरवे जहा कुम्भक राजा थे वहां गये-वहा पहुचकर उन सबने राजा
को दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नम्र
स्कार किया ।

बाद में साथ में लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुडल

मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थ महग्घ महग्घि विउल रायरिहं
पाहुड कुडल जुयल च गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिल अणुपविसति)

त्या पडोत्थीने तेमण्णे गाडीओ आने गाडाओने छोडी दीधा आने त्यास
आड तेमण्णे मिथिला राजधानीमा जवा भाटे ते भडाप्रयोजननी सिद्धि भाटे
अहु कि मती भडापुग्घोने लायक ओवा रत्नो वगेरेनी खेट तथा देवे आपेवा
अने कुडलोने के ओओ राजने योग्य हुता ते लीधा आने लधने तेओ
मिथिला राजधानीमा गया

(अणुपविसित्ता जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छति उदागच्छित्ता करयल० त
महत्थ दिव्व कुडलजुयल उवणेंति)

त्या जधने तेओ ज्या कुलक राज हुता त्या पडोत्थ्या, त्या पडोत्थीने
तेओ अधाओ राजने अने छाथनी आबुद्धि अनावीने आने तेने मस्तके भूडीने
नमन कर्था पछी साथे लावेला रत्नो वगेरेना उपहार तेमज कुडलो तेमण्णे खेट कर्था

प्रभृत कुण्डलद्वय च प्रतीच्छति=ग्रहाति, प्रतीच्छय=टूट्वा च मल्लीं विदेहं राजं
वरकन्या शब्दयति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्लयां विदेहं
राजवरकन्याकाया 'पिणद्धेइ' पिणद्धयति=पिनद्ध करोति परिग्रापयतीत्यर्थः।
पिनद्धय प्रतिविसर्जयति=ता कन्यान्त' पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खल्लं
स कुम्भको राजा तान् अरहन्नप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्ध-
माल्यावद्धारेण समान्य यावत् उच्छुल्क=शुल्काभाय वितरति=ददाति। 'अरहन्न-
कादिभ्योव्यवहर्तृभ्यः क्रयवित्तयव्यपहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य
मित्याज्ञापत्र प्रदत्तवानिति भावः। प्रतीत्य=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्त्वा,

उन्होंने ने राजा को भेट किये। (तएण कुभए तेसिं सजत्तगाणं जावें
पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन सद्दावेइ सद्दावित्ता तें
दिव्व कुण्डलजुयल मल्लीए विदेहवरराजकनगाए पिणद्धइ) कुभक राजा
ने उन सायत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय
को स्वीकार कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या
मल्ली कुमारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह
वरराजकन्या मल्ली कुमारी को पहिरा दिये।

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहा से दूतों के
साथ कन्यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया। (तएण से कुभए राया ते
अरहन्नगपामोक्खे नावावणिगये विउले ण वत्थगथ जाव उस्सुक्क
वियरइ) इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सायत्रिकां को
विपुल, वस्त्र, गन्धमाला, अलंकारों से सम्मान किया। सम्मान करके

(तएण कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन
सद्दावेइ, सद्दावित्ता त दिव्व कुण्डलजुयल मल्लीए विदेह वरराज कनगाए पिणद्धइ)

कुभक राजाने ते सायत्रिकोनी रत्नो वगेरेनी लेट तेभन कुण्डलोने
स्वीकार्या स्वीकार्या पछी विदेहवर राजकन्या भट्टिकुमारीने भोलावी अने
भोलावीने अने दिव्य कुण्डलो विदेहवरराजकन्या भट्टिकुमारीने पहिराव्या

(पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ) पहिरावीने तेने दूतोनी साथे त्याथी कन्या
न्तपुरमा पडोयाडी

(तएण से कुभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणियगे विउले ण वत्थ
गथ जाव उस्सुक्क वियरइ)

त्यार पछी कुव्वाकरावणे अरहन्नक प्रमुख सायत्रिकोनु विपुल वस्त्र गन्ध
माला अलंकारोवटे सम्मान कयुं सम्मान करीने तेभनी वस्तुओने ४२ (भट्टिसूले)

હાર્થ મહામયોજનક 'મહથ' મહાર્થ=મહુમૂલ્યક, મહાર્થ મહતા યોગ્ય વિપુ
વિસ્તીર્ણ રાજાર્થ રાજયોગ્ય પ્રાપ્તમ્-ઉપહારરત્નાદિક કુણ્ડલયુગલ=દેવેન દ
કુણ્ડલદ્વય ચ ગૃહ્ણન્તિ, ગૃહીત્વા મિથિલામનુર્વાપન્તિ । અનુપવિસ્ય યત્રેવ કુમ્ભક
=કુમ્ભરુનામકો મિથિલાનરેશો વર્તેતે, તત્રેયોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય કરતલપરિ
હીત શિર આવર્તે દશનસ મસ્તકેઽક્ષરિલિ દૃત્વા તન્મહાર્થ પ્રાપ્ત રત્નાદિક દિવ્ય
કુણ્ડલયુગલ ચ ઉપનયન્તિ=રાજ પુરત સ્થાપયન્તિ । તતસ્તદા સ્વલુ કુમ્ભક
રાજા તેપામ્=અરહન્નકાદીના સાયાત્રિકાર્ણા નૌમાયાણિજકાના યાવત્ રત્નાદિ

ચ ગિણ્હતિ, ગિણ્હત્તા મિહિલ અણુપવિસતિ) વહાં આકર ઉન લોગો
ને મિથિલા રાજધાની કે ધારિર પ્રધાન યગીચે મેં ઉન ગાઢી ગાઢોં કો
ઢીલ દિયા । ઢીલ દેને કે તાદ ફિર ઉન્હેને મિથિલા રાજધાની મેં જાને
કે લિયે ઉસ મહા પ્રયોજન સાધક, મહુમૂલ્ય, મહાપુરુષો કે યોગ્ય
રત્નાદિકોં કો ભેટ (નજરાને) કો ઓર દેવ પ્રદત્ત ઉન દોનોં કુડલોં કો
કિ જો રાજા કે લાયક થે લિયા-ઓર લેકર વે મિથિલા રાજધાની મેં
ગયે (અણુપવિસિત્તા જેણેવ કુમ્ભ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગ-
ચ્છિત્તા કરયલ૦ ત મહત્થ દિવ્ય કુડલજુયલ ઉવળેંતિ) વહા જાકર
ફિરવે જહા કુમ્ભક રાજા થે વહા ગયે-વહા પહુચકર ઉન સધને રાજા
કો દોનો હાથો કી અજલિ કર ઓર ઉસે મસ્તક પર રત્નકર નમ
સ્કાર કિયા ।

ચાદ મેં સાથ મે લાયા હુઆ વહ રત્નાદિક રૂપ ઉપહાર ઓર કુડલ

મોણ્હ મોહિત્તા મિહિલાય રાયઢાણીય ત મહત્થ મહથ મહગિહ વિઝલ રાયરિહ
પોહુડ કુડલ જુયલ ચ ગિણ્હતિ, ગિણ્હત્તા મિહિલ અણુપવિસતિ)

ત્યા પહોચીને તેમણે ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડી દીધા અને ત્યાર
બાદ તેમણે મિથિલા રાજધાનીમા જવા માટે તે મહાપ્રયોજનની સિદ્ધિ માટે
બહુ કિમતી મહાપુરુષોને લાયક એવા રત્નો વગેરેની ભેટ તથા દેવે આપેલા
અને કુડળોને કે જેઓ રાજાને યોગ્ય હતા તે લીધા અને લઈને તેઓ
મિથિલા રાજધાનીમા ગયા

(અણુપવિસિત્તા જેણેવ કુમ્ભ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ ત
મહત્થ દિવ્ય કુડલજુયલ ઉવળેંતિ)

ત્યા જઈને તેઓ જ્યા કુલક રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને
તેઓ બધાએ રાજાને બે હાથની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને
નમન કર્યા પછી સાથે લાવેલા રત્નો વગેરેના ઉપહાર તેમજ કુડળો તેમણે ભેટ કર્યા

પકરણરજ્જ્યાદિભિઃ પરિપ્કુર્યન્તિ, સજ્જયિત્વા ભાણ્ડ સક્રામયન્તિ, સ્થાપયન્તિ દક્ષિણાનુકૂલેન વાયુના યજૈવ ચમ્પાપોતસ્થાન=ચમ્પાનગરીસમીપે નૌકાપતરણસ્થાન વર્તેતે તજૈવ પોત=નાવ લમ્બયન્તિ=તીર્થસ્થિતાનેકશઙ્કુપુ રજ્જ્વાદિભિર્વદ્ધ્વાસ્થિરી કુર્વન્તિ, લમ્બયિત્વા શકટીશાકટિક=લઘુશકટવૃહન્કટાકા સમૂહ સજ્જયન્તિ= પરિપ્કુર્યન્તિ, સજ્જયિત્વા તદ્ ગણિમ ધરિમ મેય પરિચ્છેદ્ય=ચતુર્વિધ ભાણ્ડ શકટી શાકટિકે શકટસમૂહે સક્રામયન્તિ=સ્થાપયન્તિ સક્રામ્ય યાવદ્ મહાર્થ પ્રાપ્ત દિવ્ય દેવેન દત્ત કુણ્ડદયુગલ ચ શૃહ્ણન્તિ, શૃહીત્વા ચમ્પાનગર્યા પ્રવિષ્ઠા ચન્દ્રન્ઝાયઃચન્દ્રન્ઝાયનામાઽક્ષરાજઃ = અદ્વદેશાધિપતિસ્તજૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તન્મહાર્થ યાવદ્

વહા આકર વે ઉન ભચનો મે ટહર ગયે-ઔર વહી રહતે હુએ વે અપની ક્રયાણક ગણિમાદિરૂપ વસ્તુઓં કા વિક્રયકરને લગે । ઔર ઉનકે વિક્રય સે જો મૂલ્ય ઉન્હે પ્રાપ્ત હોતા યા ઉસસે દૂસરી અપને વ્ય વહાર કે ઉપયોગી વસ્તુઓં કો સ્વરીદને લગે । ઇસ તરહ જય ઉન કા સગ્રહ હોચુકા તમ ઉન લોગોં ને ગાઢી ઔર ગાઢો કો ઉનસે ભરા-ઔર ભરકર મિયિલા નગરી સે પ્રસિયત હોકર જહા ગમ્બીરક નામ કા પોત પત્તન થા વહાં આયે । વહાં આકર ઉન્હોંને નૌકાયાન કો સજ્જિત કિયા (સજ્જિતા મહ સક્રામેતિ, દક્ષિણાનુકૂલેણ વાઝણા જેનેવ ચપા પોયટ્ટણે તેનેવ પોય લવેતિ-લખિત્તા સગઢીં સજ્જેતિ, સજ્જિત્તા ત ગણિમ ૪ સગઢીં સક્રામેતિ સક્રામિત્તા જાવ મહત્થ પાહુડ દિવ્વ ચ કુહલ જુયલ ગિણિત્તા જેનેવ ચદચ્છાએ અગારાયા તેનેવ ઉવાગચ્છતિ) સજ્જિત

રાજાની આજ્ઞા મેળવીને અરહન્નક સાચાત્રિઙે બધા રાજ માર્ગની પામે રાજ મહેલ હોતો ત્યા પહોચ્યા

ત્યા જઈને તેઓ મહેલમા રોકાયા અને ત્યા રહીને જ તેઓ પોતાની વેચાણુ માટેની વસ્તુઓનુ વેચાણુ કરવા લાગ્યા વેચાણુથી તેઓને જે કંઈ રકમ મળતી તેનાથી તેઓ પોતાના વેપાર માટેની બીજી વસ્તુઓની ખરીદી કરવા લાગ્યા આ પ્રમાણે વસ્તુઓનો મગ્ગ હે થયો ત્યારે તે લોકોએ ગાઢીઓ અને ગાઢાઓમા વસ્તુઓ ભરી અને આ પ્રમાણે મિથિલા નગરીથી પ્રસ્થાન કરીને તેઓ બધા ગમ્બીરક નામે પોત પત્તન હેતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓએ વહાણુને તૈયાર કર્યું

(સજ્જિતા મહ સક્રામેતિ દક્ષિણાનુકૂલેણ વાઝણા જેનેવ ચપાપોયટ્ટણે તેનેવ પોય લવેતિ લખિત્તા સગઢીં સજ્જેતિ સજ્જિત્તા ત ગણિમ ૪ સગઢીં સક્રામેતિ સક્રામિત્તા જાવ મહત્થ પાહુડ દિવ્વ ચ કુહલજુયલ ગિણિત્તિ ગિણિત્તા જેનેવ ચદચ્છાએ અગારાયા તેનેવ ઉવાગચ્છતિ)

‘રાયમગ્ગમોગાદે’ રાજમાર્ગમરગાદાન્ રાજમાર્ગમપીપાસમ્વિતાન્ આવાસાન્ નિવાસસ્થાનાનિ વિતરતિ=અરહન્નકાદીનાં યાસાર્થમાજ્ઞા દદાતિ, પ્રતિ ત્રિસર્જયતિ =એવ વ્યવસ્થા તદર્થે ત્રિધાય કુમ્ભકો રાજા સ્વનિર્દિષ્ટાનિ યાસસ્થાનાનિ ગન્તુ માદિશતિ સ્મેત્યર્થ । તતઃ સલુ અરહન્નક સાયાત્રિકા યત્રૈવ રાજમાર્ગમવ ગાહિતા=રાજમાર્ગસનિકૃષ્ટા આવાસા=યાસસ્થાનાનિ ર્તન્તે તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય રાજદત્તભવનેષુ નિવસન્તસ્તે માણ્ડવ્યવહરણ=ગણિમાદિવ્યમ્ય ક્રયાણકન-સ્તુજાતસ્ય વિક્રય કર્ણન્તિસ્મૃ । કૃત્વા પ્રાતિમાણ્ડ=સ્વકીય ગણિમાદિક માણ્ડ વિક્રીય તન્મૂલ્યેન પુનરન્યત્ ક્રીત સ્ત્રોપયોગિમ્તુજાતરૂપ માણ્ડ પ્રતિમાણ્ડ, તદ્ શુદ્ધન્તિ=સચિન્ત્યન્તિ, શુદ્ધોત્તરા શકટી ગારુટિક ભરન્તિ=પૂરયન્તિ ૧૦ મૃત્યા મિથિ લાનગરીતઃ પ્રસ્થિતા સન્તઃ યત્રૈવ ગમ્મિરકુ ગમ્મોરકાર્ય પોતપત્તન=નોંકારોહણ સ્થાન વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય પોતવહન=નોંકાયાન સજ્જયન્તિ=નવીનો

उन की वस्तुओं पर से कर-टेक्स-माफ कर दिया । इन व्यवहारी अरहन्तकादिकों से क्रय विक्रय के व्यवहार पर नियमित राज शुल्क मेरे नौकर न लेवे इस प्रकार का आज्ञा पत्र उन्हें लिखकर दे दिया । (विय रिक्ता रायमगमोगादेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ) शुल्क भाव विषयक आज्ञापत्र प्रदान करके राजा फिर उन्हें राजमार्ग के समीप में रहे हुए राजकीय मकान ठहरने के लिये देदिये । इस प्रकार उनकी व्यवस्था करके बाद में कुम्भक राजा ने वहाँ से उन्हें विदा किया (तएणं अरहन्नग सज्जत्ता जेणेव रायमगमोगादे आवासे-तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भडववहरण करेति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेति) राजा से बिना बिदा लेकर वे अर हन्नक सायात्रिक जन जहा राजमाग में राजकीय भवन थे वहाँ आये ।

માફ કર્યો વેપારી અરહન્નક પ્રમુખ વજેરની પાસેથી ક્રય વિક્રયના ઉપર મારા રાજ કર્મચારીઓ શુલ્ક(કર)લે નહિ આ પ્રમાણેનું આજ્ઞાપત્ર રાજાએ તેમને લખી આપ્યું

(વિયરિત્તા રાયમગમોગાદેઈ આવાસે વિયરइ, પડિવિસજ્જેइ)

શુલ્ક માફીનું આજ્ઞાપત્ર તેમને આપીને રાજાએ રાજમાર્ગની પાસે આવેલો પોતાનો મહેલ તેમને ઉતરવા માટે આપ્યો આ પ્રમાણે અવસ્થા કરીને કુલક રાજાએ ત્યાંથી તેમને વિદાય કર્યા

(તएणं अरहन्नग सज्जत्ता जेणेव रायमगमोगादे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरण करेति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेति)

प्रकारेणोक्तवान् हे देवानुप्रिया । यूय खलु बहून् ग्रामागरं यावत्-अत्र यावत्क
 रणादिद द्रष्टव्यम् 'ग्रामाकरनगरखेटकर्षट मडम्बद्रोणमुख पत्तन निगमसन्निवेशान्'
 इति तत्र ग्रामो जनपद, आकरः-सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानम् नगर-कररहित, सेट-
 धूलीप्रकार, कर्षटकुनगर, मडम्ब-दूरगति सन्निवेशान्तर, द्रोणमुख-जलपथस्थ
 लपथयुक्त, पत्तन - जलपथ - स्थलपथयोरेकतरेण युक्त, निगमो-वणिगृजनाधि
 ष्ठित, सन्निवेशः-कटकादीनामावासः, तान् ग्रामादीन् 'आहिंडह' आहिण्ड
 ध्वे=परिभ्राम्यथ, तथा लवणसमुद्र चामीक्ष्ण २ पोतवहनैः=नौकायानै, 'ओगाहेह'
 अवगाहध्वे=तरथ, तत्=तस्माद् यूय कथयत-अस्ति चापि युष्माभिः किमपि कुत्र
 चिद् आश्चर्य दृष्टपूर्वं पूर्वं युष्माभिर्यत् किमप्याश्चर्य कुत्रचिद् दृष्टमस्ति, तान्मग्रे
 वर्णयतेत्यर्थ । ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नरुप्रमुखाः व्यवहारिणश्चन्द्रच्छायमङ्ग-
 राजमेवमवादिषु =वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवन्तः-हेस्वामिन् । एव खलु वयमिहैव
 चम्पाया नगर्याम् अरहन्नरुप्रमुखा बहवः सायात्रा नौकावाणिजकाः परिवसामः,

सायात्रिक से इस प्रकार कहा-(तुम्हे ण देवाणुप्पिया बहूणि गामा
 गर जाव आहिंडह, लवणसमुद्र च अभिक्खण २ पोयवहणेहिं
 ओगाहेह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग अनेक ग्राम आकर आदि में
 परिभ्रमण करते रहते हो-तथा लवण समुद्र को भी नौका यानों से
 चार २ पार करते रहते हो (त अत्थियाइ मे केइ कहिं चि अच्छेए दिट्ठ
 पुब्बे ?) तो कहो यदि कहींपर आप लोगों ने कोई आश्चर्य देखा हो तो ।
 (तएण ते अरहन्नग पामोक्खा चदच्छाय अगाराय एव वयासी) ऐसा
 राजा की जिज्ञासा जानकर उन व्यवहारी अरहन्नक प्रमुखों ने अगद्वे-
 शाधिपति उन चदच्छाय राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु सामी
 अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बह्वे सजत्तगा णावा

(तुम्हेण देवाणुप्पिया बहूणि गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्र च
 अभिक्खण २ पोयवहणेहिं ओगाहेइ)

हे देवानुप्रियो ! तमे धणु गाम आकर वगेरेमा परिभ्रमणु करता न
 रडो छो तेमए लवणसमुद्रने पणु वडाणु वडे वारवार पार करता रडो छो

(त अत्थियाइ मे केइ कहिं चि अच्छेए दिट्ठपुब्बे !) तमे डोइ पणु
 नवाधनी वात नेध होय तो बतावे।

(तएण अरहन्नगपामोक्खा चदच्छाय अगाराय एव वयासी)

अगद्वेशाधिपति राजा चदच्छायनी जिज्ञासा बाधुनी अरहन्नक, प्रमुखो
 ओ तेने आ प्रभाणु उट्ठु—

(एव खलु सामी अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बह्वे

प्राभृत दिव्य कुण्डलयुगल चोपनयन्ति, चन्द्रच्छायनृपस्याग्रे स्थापयतीत्यर्थः । तत्र खलु चन्द्रच्छायनृपोऽङ्गराजस्तद् दिव्य महार्थं कुण्डलयुगलं च प्रतीच्छति—पुद्गाति, प्रतीच्छत्यगृहीत्या तान् अरहन्नरूपमुरान् नौकायाणि न कान् प्यमरादीन्—वक्ष्यमाण

करके उसमें गाड़ी और गाड़ों से उतर २ कर अपने भांडों को रखा । दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर फिर वे वहा से चले—और चलकर जहाँ चपा नगरी के समीप में नौका के ठहरने का स्थान था वहाँ आकर वहाँ लोगों ने लगड़ डाल दिया अपनी नौका को ठहरा दिया ।

नौका को ठहरा कर फिर गाड़ी और गाड़ों को मज्जित किया—सज्जित करने के बाद उसमें से गणिमादि वस्तुओं को उतार २ कर वहाँ गाड़ी और गाड़ों में भरा—भर कर फिर वे महार्थ साधक प्राभृत (भेट) को और दिव्य कुण्डलयुगल को लेकर चपा नगरी में प्रविष्ट हुए ।

वहाँ प्रविष्ट होकर जहाँ अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा थे—वहाँ गये । (उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति, तएण चदच्छाय अगाराया त दिव्व महत्थ च कुण्डलयुगल पडिच्छइ) वहाँ पहुँच कर उन लोगों ने उस महार्थ साधक भेट को और कुण्डलयुगल को राजा को भेट किया अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा ने उस भेट एवं दिव्य महार्थ कुण्डल युगल को स्वीकार कर लिया—(पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोस्से एवं वयासी) स्वीकार करके फिर उसने उन अरहन्नक आदि

तैयार करीने गाडीओ तथा गाडाओमाथी पोताना लाओने तेमा भूक्या दक्षिणानुत्तरण पवन पडेवा लाओये त्यारे तेओ त्याथी यादया अने य पा नगरीनी—पासे वडाएने उल्लु राखवानी जग्था हती त्या वगर नाभ्यु अने वडाए उल्लु राख्यु वडाए उल्लु राखीने गाडीओ अने गाडाओने तैयार करीने तेमा गल्लिभ वगेरे वस्तुओ वडाएमाथी उतारीने भूकी अने तैयार पछी भडार्थ साधक भेट अने दिव्य कुण्डली भेट लधने य पा नगरीमा गया

त्या जधने न्या अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा हता त्या गया

(उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति तएण चदच्छाय अगाराया त दिव्व महत्थ च कुण्डलयुगल पडिच्छइ)

त्या पडोखीने तेओओ भडार्थ साधक लेटने तेमज कुण्डली भेट राखने लेट करी अगेशना राजा चदछाये पल्लु ते लेट तेमज दिव्य भडार्थ कुण्डली भेटने स्वीकारी (पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोस्से एवं वयासी) स्वीकार्या पाद तेले अरहन्नक वगेरे सायानिडेने आ प्रभावे कल्लु —

‘મલ્લી’ મલ્લ્યા = મલ્લીનામ્ન્યા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ = સ્વકન્યકાયાસ્તદ્ દિવ્ય કુણ્ડલયુગલ પિનદ્વયતિ, પિનદ્વય = પરિધાપ્ય પ્રતિવિસર્જયતિ । હે સ્વામિન્ ! તદેષાં સ્વલ્પ અસ્માભિઃ કુમ્ભકસ્ય રાજો ભવને, મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા = વિદેહ રાજસ્ય કુમ્ભકસ્ય ત્વા સર્વગુણયુક્તત્વાત્ શ્રેષ્ઠા કન્યા, આશ્ચર્યં દ્રષ્ટુમ્ = અવલોકિતમ્ । તત્ નો સ્વલ્પ અન્યા કાઽપિ તાદૃશી દેવકન્યા વા યાન્ત્-અત્ર યાવચ્છન્દેનેદ દ્રષ્ટ વ્યમ્-‘અસુરકન્યા વા-નાગકન્યા વા યક્ષકન્યા વા ગંધર્વકન્યા વા રાજકન્યા વા’ ઇતિ । અસુરકન્યા વા નાગકન્યા વા યક્ષકન્યા વા ગંધર્વકન્યા વા રાજકન્યા વા, ઇતિ સંસ્કૃતમ્, યાદૃશી સ્વલ્પ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા, યાદૃશી મિથિલાગી

(તદ્દર્શને કુમ્ભક મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા ત દિવ્ય કુણ્ડલયુગલ પિણ્દ્રેહ) મેટ કો સ્વીકાર કરકે ઉસી સમય ઉન કુમ્ભક રાજા ને અપની વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કો બુલાયા-ઑર બુલાકર બે દો કુણ્ડલ ઉસે પહિના દિયે । (પિણ્દ્રિતા પહિવિસર્જજેહ) ઑર પહિના કર ફિર ઉસે કન્યાન્તઃ પુર મે પ્રતિ વિસર્જિત કર દિયા । (ત દર્શણ સામી અમ્હે હિં કુમ્ભકમવર્ણસિ મલ્લી વિદેહ અચ્છેર દિદ્દે, ત નો સ્વલ્પ અન્નાકાવિ તારિસિયા દેવ કન્યા વા જાવ જારિસિયાણ મલ્લી વિદેહ) હસ તરહ હે સ્વામીન્ ! હમને કુમ્ભક રાજા કે ભવન મેં સર્વ ગુણ સ પત્ત વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી રૂપ અશ્ચર્ય દેસા હૈ ।

હમારી દૃષ્ટિ મે અન્ય કોઈ બી એસી દેવ કન્યા, અસુર કન્યા, નાગ કન્યા, યક્ષ કન્યા, ગંધર્વ કન્યા અથવા રાજ કન્યા આશ્ચર્ય રૂપા નહી હૈ

ગયા ત્યા જઈને અમે તેનની સામે લેટ તેમજ કાનના કુડાની નેડ મૂકી

(તદ્દર્શને કુમ્ભક મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા ત દિવ્ય કુણ્ડલયુગલ પિણ્દ્રેહ)

લેટ સ્વીકારીને તેજ વળતે કુલક રાજાએ પોતાની વિદેહ રાજવરકન્યા મલ્લી કુમારીને બોલાવી અને બોલાવીને કુડાને તેને પહેરાવ્યા (પિણ્દ્રિતા પહિવિસર્જજેહ,) અને પહેરાવીને તેને કન્યાન્ત પુરમાં મોકલા દીધી

(ત દર્શણ સામી અમ્હે હિં કુમ્ભકમવર્ણસિ મલ્લી વિદેહઅચ્છેર દિદ્દે ત નો સ્વલ્પ અન્નાકાવિ તારિસિયા દેવકન્યા ત જાવ જારિસિયાણ મલ્લીવિદેહ)

આ પ્રમાણે હે સ્વામી ! અમે કુલક રાજાના મહેલમાં સર્વશુભ સ પત્ત વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના રૂપમાં આશ્ચર્ય જોયું છે

અમારી સામે બીજી ઝોઈ પણ દેવકન્યા અસુર કન્યા, નાગ કન્યા, યક્ષ કન્યા, ગંધર્વકન્યા, અથવા તે રાજકન્યા નથી કે જે એવી વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી જેવી આશ્ચર્ય રૂપા હોય

ततः खलु त्रयमन्यदा कदाचिद् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये गणिम च ४ गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक पोतवहने भूत्वा समुद्रे प्रस्थिताः, तथैव अहीनातिरिक्त = न न्यूनाधिक, किंतु यथादृष्ट तथैव भवतामग्रे कथयामः, यावत् = समुद्रे गच्छन्तो वयं गम्भीरपुरपत्तन = नौकावतरणस्थान प्राप्य शकटसमूहे रात्रि क्रयाणक भूत्वा मिथिलार्या नगर्यां गृहिस्थाने शकटसमूहमवस्थाप्य कुम्भरस्य राज्ञो दर्शनार्थं मिथिला नगरिं प्रविष्टाः, यावत् - कुम्भरस्य राज्ञः प्राप्त दिव्य कुण्डलयुगलं चोपनयामः, कुम्भरकृपायोपहारं वयं प्रदत्तवन्त इत्यर्थः । तदा खलु स कुम्भरः

वणियगा परिचसामो, तण्ण अम्हे अन्नया कयाइ गणिम च ४ तद्देव अहीणमतिरिक्त जाव कुम्भरस्स रत्तो उवणेमो) स्वामीन् सुनो हम अरहन्नक प्रमुख अनेक सायात्रिक पोत गणिक् यही चपा नगरी में रहते हैं

हम लोग किसी एक समय, गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक को पोत वहन में भरकर यहा से समुद्रीय रास्ते से होकर मिथिला राजधानी गये हुए थे । वहा हम ने जो कुछ देखा वह आपके समक्ष न न्यून रूप में और न अधिक रूप में किन्तु जैसा देखा वैसा ही हम निवेदित करते हैं—हम लोग नौका से यहाँ से प्रस्थित होकर गभीरक पोत पत्तन पर पहुँचे वहा उतर कर हम लोगो ने समस्त अपना क्रयाणक शकटों में भर दिया । वहा से चल कर फिर हम लोग मिथिला नगरी के बाहिर एक उद्यान में गाडियों को रख कर कुम्भर राजा के दर्शन करने के लिये मिथिला नगरी गये । वहाँ राजा के समीप पहुँच कर हम लोगो ने उन के समक्ष अपनी भेट रख दी और कानो के दो कुण्डल भी

सजत्तगा णावा वणियगा परिचसामो तण्ण अम्हे अन्नया कयाइ गणिम च ४ तद्देव अहीणमतिरिक्त जाव कुम्भरस्स रत्तो उवणेमो)

हे स्वामी । अमे अरहन्नक प्रमुख अनेक सायात्रिक पोत वाणिज्ये आही अ पानगरीमा ज रहीये छीअ

अमे कोइ वणत गणिम वगेरे आर जतनी वेयाणुनी वस्तुओ पोत वहन मा भूकीने आहीथी समुद्रना मार्गेथी मिथिला राजधानीमा गया डता त्या अमे के कछ जेथु छे ते तमारी सामे वधारे पडतु पणु नहि तेमज ओछु पणु नहि ओटव के त्या जेवी रीते के इपमा अमे जेथु छे ते विषे तमारी सामे निवेदन करीये छीअ अमे दोको आहीथी वडाणु वगे प्रस्थान करीने गलीरक पोतपत्तन उपर पडाव्या त्या उतरीने अमे वेयाणुनी अधी वस्तुओ गाडाओमा सरी त्थार पछी त्याथी आलीने मिथिला नगरीनी अहार उद्यानमा गाडीओने उलीराभीने कुलक राजन्ना दर्शन माटे मिथिला नगरीमा

अत्र यावत् कद्वणादिद्र द्रष्टव्यम्-शब्दयित्वा चैममादीत्-हे देवानुप्रिय । त्व
मिथिलाया नगर्या गत्वा कुम्भक राजान ब्रूहि-तव रुक्मका मल्ली चन्द्रच्छायो
वाञ्छति ' इति । यद्यपि च खलु सा स्वयं राज्यशुल्का = राज्यायीनी, एव
चेत्तस्याः समग्रं राज्यं समर्पयामीति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु स दृढचन्द्रच्छा-
यनृपाज्ञया हृष्टतुष्टः = भत्यन्तं प्रमुदितः सन् यावत् कतिपयं सैन्यसहितो रथारूढः
प्राधारयद् गमनाय = गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य
सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २४ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेणं समएण कुणाल नाम जणवए
होत्था, तत्थ ण सावत्थी होत्था, तत्थ णं रुपी कुणालाहि-
वई नाम राया होत्था, तस्स णं रुपिस्स धुया धारिणीए
देवाए अत्तया सुवाहुनाम दारिया, होत्था, सुकुमाल० रुवेण
य जोवणेणं लावणेण यउक्किट्ठाउक्किट्ठसरीरा जाया यावि

श्रवणसे मल्ली कुमारीके ऊपर जिसका अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे
उस चन्द्रच्छाय राजा ने उसी समय दूत को बुलाया । बुला कर उससे
ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नगरी में जाकर कुम्भक राजासे
कहो कि आपकी पुत्री मल्ली कुमारी को चन्द्रच्छाय राजा चाहते हैं ।

यदि वह पुत्री मेरे समस्त राज्य को चाहेगी तो मैं उसे अपना
समस्त राज्य समर्पित कर दूंगा । इस तरह वह दूत चन्द्रच्छाय राजा की
आज्ञा से हर्षित एवं सतुष्ट होता हुआ कतिपय सैन्य सहित वहां से
रथ पर आरूढ होकर मिथिला नगरी की ओर प्रस्थित हो गया । इस
तरह यह द्वितीय चन्द्रच्छाय नामके राजा का संभव कहा । सूत्र " २४ "

अच्छाय राजाके तरफ ७ दूतने भोलाओंके अने तेने कहु-हे देवानुप्रिय ।
तमे मिथिला नगरीमा ७धने कुलज राजाके जेहोके तमारी पुत्री मल्ली कुमारी
ने अच्छाय राजा आडे छे

जे ते पुत्री भास आआ राजाके पछु छिच्छे तो हु तेने पोतानु
रज्य समर्पवा तैयारे छु आ रीते दूत अच्छाय राजाकी आज्ञाथी हर्षित
तेमज सतुष्ट थतो नधी केटलाक सैन्यनी माथे त्याथी रथ उपर सवार थधने
मिथिला नगरी तरफ आह्यो आ प्रभाछे आ जीज अच्छाय नामना राजा
ना संभव विषे कहु ॥ सूत्र " २४ " ॥

भरस्य कुम्भरस्य कन्यका मल्ली दिव्याश्चर्यरूपा मिगनते, नारित ताह्वी
काऽपिदेवकन्या तथा न सन्त्यसुरकन्यकादयः काश्चिदपि तत्तुन्या इति भावः ।

ततस्तदनन्तर खलु चन्द्रच्छायनामा नृपस्तान् अरहन्नकप्रभुमान् सत्कार
यति=वस्त्रादिना तेषां सत्कार करोति, सम्मानयति-मधुरवचनादिना प्रशंसति ।
सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति । तेभ्योऽरहन्नकादिभ्यो व्यग्रहर्षभ्यः क्रयविक्रय
व्यवहारेषु राजकीय शुल्क मदोपभृत्यैर्न ग्रहीतव्यमित्याज्ञापनं दत्तं तान् विस
र्जयति स्मेत्यर्थः । ततः खलु चन्द्रच्छायो वाणिजकजनितहर्षः = अरहन्नकादि
वाणिजकवचनश्रवणेन मल्लीकुमार्या सजातानुरागः सन् दूत शब्दयति, यावद्=

जैसी कि विदेह राजपर कन्या मल्ली कुमारी है । (तण्णं चदच्छाए
ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता,
पडिविसज्जेइ, तण्णं चदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूत सहावेइ,
जाव जइ वि य ण सा सय रज्जसुक्का, तण्ण से दूते हट्ठे जाव
पहारेत्था गमणाए) इस प्रकार उन अरहन्नक प्रमुख सांघात्रिकों के
मुँहों से मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य श्रवण कर चदच्छाय राजा ने उन
अरहन्नक प्रमुख पोत वणिकों का वस्त्रादि प्रदान द्वारा सत्कार किया
और मधुर वचनादि द्वारा उनकी बहुत २ प्रशंसा की ।

बाद में उन्हें अपने पास से राजकीय शुल्क माफ कर विसर्जित कर
दिया उन्हें इस प्रकार का “ मेरे भव्य जन इन अरहन्नक आदि व्यवहारी
जनों से क्रय विक्रय के व्यवहार में राजकीय शुल्क न लेवें आज्ञा पत्र
लिखकर दे दिया । पश्चात् उन अरहन्नक आदि वणिग्जनों के वचनों के

(तण्णं चदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता, स
म्माणित्ता पडिविसज्जेइ तण्णं चदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूत सहावेइ जाव
जइ वि य ण सासय रज्जसुक्का तण्ण से दूते हट्ठे जाव पहारेत्था गमणाए)

आ रीते ते अरहन्नक प्रभुषा सांघात्रिकानां मोक्षी भट्टलीकुमारी इय
आश्चर्य साक्षणीने यद्वच्छाय राज्ञो अरहन्नक प्रभुषा ते पोत वाणिक्केना वस्त्र
वगेरे आपीने सत्कार कथौ तेमञ्ज मधुर वचनो वडे तेमना पूणञ्ज वभाणु कथां
त्यार जाइ राजकीय कर (भडेसुल) भाइ करीने तेमने विदाय करती
वणते “ मारा तमाम राजकर्मचारीओ अरहन्नक वगेरे वेपारीओ पासैथा
कथं विक्रयना व्यवहारमा राजकीय कर लेवो नहि ” आ ज्ञातनु आज्ञापत्र
लभी आप्थु त्यार पछी अरहन्नक वगेरे वणिक् जनोना मोक्षी साक्षणेला
वचनोथी भट्टलीकुमारी उपर जेमना हृदयमा प्रेम उत्पन्न थयो छे, जेवा ते

णेंति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवा-
गच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रूपी राया
सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए
रूवेण य जा० लाव० जाव विम्विहए वरिसघर सदावेइ,
सदावित्ता एव वयासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं
वहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं
ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिचि एयारिसए मज्जणए
दिट्ठपुव्वे जारिसए ण इमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ?
तएणं से वरिसधरे रूपि करयल० एव वयासी-एवं खलु
सामी ! अह अन्नया तुच्चेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ
ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्ज-
णगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं
न अग्घेइ, तएणं से रूपी राया वरिसघरस्स अंतिए एय-
मट्ठ सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहास दूतं
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-जाव जेणेव मिहिला नयरी
तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नो नृपस्य सवन्ध प्रस्तौति—‘ तेणं कालेण ’
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद = देशः, आसीत्,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(कुणाल नाम जनपद होत्था) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था ।

‘ तेण कालेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (कुणाल नाम

होत्था, तीसे णं सुवाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्ज-
 णए जाए यावि होत्था, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई
 सुवाहुदारियाए चाउम्मासियज्जणय उवट्ठिय जाणइ,
 जाणित्ता कोहुंवि य पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी
 -एवं खल्ल देवाणुप्पिया । सुवाहुदारियाए कल्ल चाउम्मासि-
 यमज्जणए भविस्सइ, त कल्लं तुब्भेण रायमग्गमोगाढसि
 मंडवं जलथलयदसद्धवन्नमल्ल साहरेह जाव सिरिदामगंडं
 ओलइंति । तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगरसेणिं
 सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणु-
 प्पिया । रायमग्गमोगाढसि पुप्फमडवसि णाणाविहपच्च
 वन्नेहि तदुलेहि णगर आलिहइ, तस्स बहुमज्झदेसभाए
 पट्टए रयेह, रएइत्ता जाव पच्चप्पिणाति, तएणं से रुप्पी
 कुणालाहिवई हत्थिक्खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए
 महया भडचडगरयहयरविदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसप-
 रिबुडे सुवाहुं दारियं पुरओ कट्ठु जेणेव रायमग्गे जेणेव
 पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिक्खंधाओ
 पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ, अणुपवि-
 सित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तएणं
 ताओ अते उरियाओ सुवाहुदारिय पट्टयसि दुरूहेति
 दुरूहित्ता सेयपीयएहि कलसेहि पहाणेंति, पहाणित्ता सव्वा-
 लकारविभूसिय करेंति करित्ता पिउणो पाय वदिउ उव

णैति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवा-
गच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रूपी राया
सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए
रूवेण य जा० लाव० जाव विम्हिए वरिसघर सदावेइ,
सदावित्ता एव वयासी-तुमणं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं
वहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं
ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए
दिट्ठपुब्बे जारिसए णं इमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ?
तएणं से वरिसघरे रुपि करयल० एव वयासी-एवं खलु
सामी । अह अन्नया तुब्भेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ
ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्ज-
णगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमं पि कलं
न अग्घेइ, तएणं से रूपी राया वरिसघरस्स अंतिए एय-
मट्ठ सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणगजणितहास दूतं
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-जाव जेणेव मिहिलानयरी
तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५ ॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नो नृपस्य सवन्ध प्रस्तौति—‘ तेण कालेण ’
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद = देश,, आसीत्,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(कुणाल नाम जनपद होत्था) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था ।

‘ तेण कालेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (कुणाल नाम

तत्र=तस्मिन् देशे खलु श्रावस्ती नाम नगर्यासीत् । तत्र=श्रावस्त्या नगर्यां खलु
 'रूपी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपति=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=मसिद्धः
 राजाऽऽसीत् । तस्य खलु रुक्मिणी दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भ-
 समुत्पन्ना, सुबाहुर्नाम=सुबाहुनाम्नी दारिका=रुक्मका आसीत् । सा सुबाहुदारिका
 कीदृशीत्याह—'सुमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=सोमलकरचरणवती, तथा-
 रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=तारुण्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती
 प्रधानेत्यर्थः, अतएव-उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलवनितागुणसम्पन्ना

(तत्स्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) उस जनपद-देश-में श्रावस्ती नाम की नगरी थी । (तत्स्थण रूपी कुणालाधिपति नाम राया होत्था-
 तस्सणं रूपिस्स धुया धारिणी देवीए अत्तया सुबाहुनाम दारिया होत्था) उस श्रावस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम रुक्मी था रहते थे । इस रुक्मी राजा की एक पुत्री थी । जिस का नाम सुबाहु था ।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी । (सुकुमाल० रुक्मेण य जोव्वणे ण लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था)
 इस के हाव और चरण ही अधिक सुकुमार थे । यह रूप-आकृति और वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी । इस कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री सबधी समस्त गुणों से युक्त

जनपद होत्था) कुणाल नामे जनपद ओटले के देश હતો । (तत्स्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) તે જનપદ-देशમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી

(तत्स्थण रूपी कुणालाधिपति नाम राया होत्था तस्स ण सप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहु नाम दारिया होत्था)

श्रावस्ती नगरीमा कुणाल देशना अधिपतिरुक्मी रहता होता रुक्मी राजा ने एक पुत्री હતી તેનું નામ સુબાહુ હતું
 धारिणी देवीना गलथी तेना जन्म થયો હતો

(सुकुमाल० रुक्मेण य जोव्वणे ण लावण्णेण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था)

तेના હાથપગ ખૂબ જ સુંદાર હતા તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ લાવણ્ય બધામાં સુદર ગણાતી હતી તેથી તે ખૂબજ સુદર અગોવાળી અને સ્ત્રી સબધી બધા ગુણોથી સુકત હતી

जाता चाप्यासीत्० । तस्याः खलु सुबाहुदारिकाया अन्यदाकदाचित् चातुर्मासिक
मज्जनरु=स्नान=स्नानमहोत्सवाप्यभूत् ततस्तदनंतरं स रुक्मीकुणालाधिपतिः
सुबाहुदारिकाया=स्वपुत्र्याश्चातुर्मासिकमज्जनरुमुपस्थितं जानाति० । ज्ञात्वा
कौटुम्बिकपुरुषान्=आज्ञाकारिणं पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एव
मवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! एव खलु सुबाहुदारिकायाः मम पुत्र्याः कल्ये=प्रभाते
द्वितीयदिवसेत्यर्थः चातुर्मासिकमज्जनरु चातुर्मासिकस्नानमहोत्सवो भविष्यति,
तत् तस्मात् कल्ये यूयं खलु राजमार्गमवगाढे=राजमार्गसन्निकृष्टे मण्डपे जलस्थ
लजदशार्धवर्णमालय=जलज स्थलज पञ्चवर्णपुष्पसमूहं सहरतं=समानयत, यावत्-

धी । (तीसेण सुबाहु दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था) एक दिन इस सुबाहु पुत्री के चातुर्मासिक स्नान महोत्सव
का समय आया (तएण से रूपी कुणालादिबई सुबाहु दारियाए चाउ-
म्मासिय मज्जणय उवट्टिय जाणइ) कुणाल देशाधिपति रुक्मि राजा को
अपनी पुत्री सुबाहु दारिका के चातुर्मासिक स्नानोत्सव का जब यान
आया-तत्र (जणित्ता कौटुम्बिय पुरिसे सदावेइ) ऐसा जान कर उस ने
कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर
उनसे ऐसा कहा- (एव खलु देवानुप्पिया ! सुबाहु दारियाए कल्लं
चाउम्मासिय मज्जणए भविस्सइ) हे देवानुप्रियो ! कल प्रातः काल
सुबाहु दारिका का चातुर्मासिक स्नान होगा । (त कल्ल तुम्हेण रायम
ग्गमोगाढसि मडव जलयल दसद्धवन्न मल्ल साहरेइ) अतः तुम लोग
राज मार्ग के समीप मुख्य मंडप में कल प्रातः काल ही जल, स्थल मे

(तीसेण सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासिय मज्जणए जाए यावि होत्था)

એક દિવને સુબાહુ પુત્રીને આતુર્માસિક સ્નાન મહોત્સવનો સમય આવ્યો.

(તણે સે કુણાલાદિબઈ સુબાહુ દારિયાએ ચાઉમ્માસિય મજ્જણય ઉવટ્ટિય જાણઈ)

કુણાલ દેશના રાજા રુક્મીને તેની પુત્રી સુબાહુને આતુર્માસિક સ્નાન
ત્સવનો જયારે વિચાર આવ્યો ત્યારે (જણિત્તા કૌટુમ્બિય પુરિસે સદાવેઈ) તેણે
કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) અને બોલાવીને આ
પ્રમાણે કહ્યું—

(એવખલુ દેવાનુપ્પિયા ! સુબાહુદારિયાએ સકલ્લ ચાઉમ્માસિયમજ્જણએ ભવિસ્સઈ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવારે સુબાહુ દારિકાનું આતુર્માસિક સ્નાન થશે

(ત કલ્લ તુમ્હેણ રાયમગ્ગમોગાઢસિ મડવ જળાથલ દમદ્ધવન્નમલ્લ સાહરેઈ)

એથી તમે આવતી કાલે સવારે રાજમાર્ગની પાસેના મુખ્ય મંડપમાં

तत्र=तस्मिन् देशे खलु आरस्ती नाम नगर्यासीत् । तत्र=आरस्त्या नगर्यां खलु
 'रूपी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपतिः=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=पतिद्वः
 राजाऽऽसीत्० । तस्य खलु रुक्मिणो दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भ
 समुत्पन्ना, सुबाहुर्नाम=सुबाहुनाम्नी दारिका=रुक्मका आसीत् । सा सुबाहुदारिका
 कीदृशीत्याह- 'सुमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=कोमलकरचरणवती, तथा-
 रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=तारुण्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती
 प्रधानेत्यर्थः, अतएव-उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलवनितागुणसम्पन्ना

(तत्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) उस जनपद-देश-में आरस्ती
 नाम की नगरी थी । (तत्थण रूपी कुणालाधिपति नाम राजा होत्था-
 तस्सणं रूपिस्स धुया धारिणीण देवीए अत्तया सुबाहुनाम दारिया
 होत्था) उस आरस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम
 रुक्मी था रहते थे । इस रुक्मी राजा की एक पुत्री थी । जिस का
 नाम सुबाहु था ।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी । (सुकुमाल० रूपेण
 य जोव्वणे ण लावण्येण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था)
 इस के हाव और चरण ही अधिक सुकुमार थे । यह रूप-आकृति और
 वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी । इस
 कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री सबधी समस्त गुणों से युक्त

जनपद होत्था) कुणाल नामे जनपद अटले के देश होते । (तत्थण सावत्थी
 नाम नगरी होत्था) ते जनपद-देशमा आरस्ती नामे नगरी होती

(तत्थण रूपी कुणालाधिपति नाम राजा होत्था तस्स ण रूपिस्स धुया धारि
 णीए देवीए अत्तया सुबाहु नाम दारिया होत्था)

आरस्ती नगरीमा कुणाल देशमा अधिपतिरुक्मी रहता होता रुक्मी-
 राजा ने एक पुत्री होती तेनु नाम सुबाहु हुतु

धारिणी देवीमा गर्भधी तेना जन्म भयो होते।

(सुकुमाल० रूपेण य जोव्वणे ण लावण्येण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा जाया
 यावि होत्था)

तेना लावण्यं भूणं ज सुकोमलं हुता ते रूप, आकृति, यौवन, तेमज्ज
 लावण्यं अधामा सुंदर गल्लानी हुती तेथी ते भूणं सुंदर अगोवाणी अने
 श्री सगंधी गंधा सुल्लोथी युक्ता हुती

बहुमध्यदेशभागे पट्टक रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्टं तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येव ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिरुक्मन्धवरगतः=गजरुक्मन्धोपरि वरासने विराजमानः, 'चाउरगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपटातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महामटचडगरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महामटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्पवेश्यः तथाविधो यः पहयरः समुदायस्तस्थ वृन्दः=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्दः समूहार्थवाचकः । अतः पुरपरिवारसपरिवृतः सुबाहु=सुबाहु-राजमार्गं के समीपं वने ह्ये पुष्प मडप मे अनेक रगों से रगे ह्ये चावलो से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेशभाए पट्टय रहेय) उसने ठीक बीचों बीच में एक पट्टक बनाओ—(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति) पट्टक बनाकर उन-लोगों ने राजा को इसकी पीछे खपरकर दी—उन्होंने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान की थी—वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी—(तएण से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरगिणी सेना के साथ २ महामटों के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

“ हे देवानुग्रिथे ! तमे सत्त्वरे राजभागां नी पासे अनाववामा आवेत्ता पुष्प-भउपमा अनेउ रगथी रगाअेत्ता शोभाथी नगरनी रथना उरे।

(तस्स बहुमज्झ देशभाए पट्टय रहेय) तेनी अशेणर अधवअे अेउ पट्टक अनावे। (रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति) आ प्रभाए पट्टक अनावेने तेअेअे राजने सूचना करी के हे स्वामी ! वे प्रभाए काम करवानी तमे अभने आशा आपी हती ते प्रभाए भु अमे तैथार करी दीधु छे

(तएण से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अहे उरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्ग जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ)

त्यार पछी ते कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी उपर सवार थधने चतुरगिणी सेनानी साथे साथे नेमा डोछपण्य चेमी राजे नहि तेवा भडा

અત્ર યાત્રચ્છન્દેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્-પરુચ સ્વલુ મહત્ શ્રીદામકાણ્ડમુપનયત, તસ્ય મળ્હ
પસ્ય સ્વલુ ઘનુમધ્યદેશભાગે એક મહત્ શ્રીદામકાણ્ડ યાત્ર પાટલાદિ પુષ્પસમૂહ
સહિત ગધધાણિ મુશ્વત્ ઉછોચે અલમ્બયતઃ ઇતિ તત્ત્વે કૌટુમ્બિક પુરુષાસ્થયેવ
મળ્હપમધ્યે ઉછોચે=ચન્દ્રાતપે શ્રીદામકાણ્ડમગ્નમ્બયન્તિ ॥ તત્ સ્વલુ સ રુમ્મી
કુણાલાધિપતિઃ સુવર્ણકારશ્રેણિઃ=સુવર્ણકારાન્ ગદયતિ, શત્રુચિત્રા એવ=વક્ષ્યમાણ
મકારેણાગાદીત્-મો દેવાનુપ્રિયા ! શિવમેત્ર=શીવમેત્ર, રાજમાર્ગમત્રગાઢે=રાજ
માર્ગાડડસન્ને પુષ્પમળ્હપે નનાવિધપદ્મશ્રૈણિઃ=અનેકવિધેઃ પદ્મવર્ણરજ્જિતૈસ્તન્દુલે
નૈગર આલિલ્હત=ચયત સ્વસ્તિકાધાકારૈ શ્રિત્રયતેત્યર્થ । તસ્ય લિગ્વિતચિત્રસ્ય
હત્પત્ત હુપ પચ વર્ણ કે પુષ્પોં કો લાક્ષર ઉપસ્થિત કરો ।

(જાવ સિરિદામ ગઢે ઓલહતિ) તથા એક ઘડા મારી શ્રી દામકાઢ-
ઘટત ઘડી લયી પુષ્પમાલા-મી લાના । જો પાટલ (ગુલાબ) આદિ પુષ્પોં
સે શુધા હુઆ હો ઓર જિસ મેં સે નામિકા કો તૃપ્તિ કરને બાલી
સુગંધ નિકલ રહી હો । ડસ મળ્હપ કે ઠીક ધીચો ધીચ ડપર તને હુપ
ચદરવામે ડસે લટકા દેના । ડસ તરહ રાજાકી આજ્ઞાનુસાર ડન કૌટુ
મ્બિક પુરુષો ને સઘ કાર્ય કર દિયા શ્રીદામ કાઢ કો વહા ડપર ચદરવા
મેં લટકા દિયા । (તણ સે રુપ્પી કુણાલાહિવૈ સુવન્નગારસેણિ સદા
વેદ, સદાવિત્તા એવ ચયાસી લિપ્પામેવ મો દેવાનુપ્રિયા ! રાયમગ્મમો
ગાઢસિ પુષ્કમઢવસિ જાણાવિહ પચવળ્ણેહિ તદુલેહિ જગર આલિહહ)
હસ કે બાદ ડસ કુણાલાધિપતિ રુમ્મી રાજા ને સુનારોં કો બુલાવા-
ઓર બુલા કર ડનસે જેસા કહા હે દેવાનુપ્રિયો । તુમ લોગ શીઘ હો

જળ તેમજ સ્થળના પચવળ્ણના પુષ્પો લાવો

(જાવ સિરિદામગઢે ઓલહતિ) તેમજ એક મોટો શ્રીદામકાઢ-મોટી
પુષ્પમાળા-પણ સાથે લાવો તે શ્રીદામકાઢ શુલાભ વગેરે પુષ્પોથી શુધાએલો
તેમજ નામિકા તૃપ્ત થાય તેવી સુવાસવાળો હોવો જોઈએ તેને મડપની
ખરોઝર વચ્ચે ઉપર તાણવામા આવેલા ચદરવામા લટકાવજો આ પ્રમાણે
રાજાની આજ્ઞા સાલળીને તે રાજ પુરુષોએ તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કામ પુર
કરી આપ્યુ શ્રીદામકાઢને અધવચ્ચે ચદરવામા લટકાવ્યો

(તણ સે રુપ્પી કુણાલાહિવૈ સુવન્નગારસેણિ સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ
ચયાસી લિપ્પામેવ મો દેવાનુપ્રિયા ! રાયમગ્મમોગાઢસિ પુષ્કમઢવસિ જાણા
વિહ પચવળ્ણેહિ તદુલેહિ જગરઆલિહહ)

ત્યારપછી કુણાલાધિપતિએ એનીએને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું—

બહુમધ્યદેશભાગે પટ્ટક રચયત, રચયિત્વા યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ । હે સ્વામિન્ ! યથા દેવેન સમાદિષ્ટ તથા સર્વ સાધિતમસ્માભિરિત્યેવ તે કથયન્તિ સ્મેત્યર્થઃ । તતસ્તદ-
નન્તરં ક્વલુ સ રુક્મી કુણાલાધિપતિર્હસ્તિસ્કન્ધવરગતઃ=ગજસ્કન્ધોપરિ વરાસને
વિરાજમાન, 'ચાઉરગિણી' ચતુરદ્વિણ્યા ગજાશ્ચરથપદાતિરૂપયા 'સેના' 'સેનયા'
'મહયા મહચઢગપહયરવિંદપરિક્લિષ્તે' મહામટચઢગરપહયરવૃન્દપરિક્લિષ્તઃ મહા-
મટાનાં ચઢગરઃ વિચ્છર્દઃ સમર્દઃ અન્યજનદુષ્પ્રવેશ' તથાવિધો ય પહયરઃ
સમુદાયસ્તસ્ય વૃન્દ=સમૂહઃ તેન પરિક્લિષ્તઃ=પરિવૃતઃ, 'ચઢગર' ઇતિ 'પહયર' ઇતિ
ચ દેશીયઃ શબ્દ સમૂહાર્થવાચકઃ । અતઃ પુરપરિગારસપરિવૃતઃ સુવાહુ=સુવાહુ-
રાજમાર્ગ કે સમીપ બને હુણ પુષ્પ મહાપ મે અનેક રંગોં સે રંગે હુણ
ચાવલોં સે નગર કી રચના કરો ।

(તસ્મિં બહુમજ્જદેસભાણ પટ્ટય રહેય) ઉસને ઠીક બીચો બીચ મેં
એક પટ્ટક બનાઓ—(રણ્ણ જાવ પન્નવિણાતિ) પટ્ટક બનાકર ઉન-
લોગોં ને રાજા કો ઇસકી પીછે ક્લપરકરદી—ઉન્હોં ને કહા સ્વામી ! જૈસા
કાર્ય કરને કે લિયે આપને આજ્ઞા પ્રદાન કીથી—વૈસાહી સબ કામ હમને
કર દિયા હૈ ઇસ પ્રકાર કી રાજા કો સૂચના કરદી—(તણ્ણં સે રૂપી
કુણાલાહિર્વર્દ્ધિ હત્થિ ક્લપરગણ ચાઉરગિણી સેના મહયા મહચઢગર
પહયરવિંદપરિક્લિષ્તે અતેઉરપરિયાલસપરિવુઢે સુવાહુ દારિય પુરઓ
કદ્દુ જેણેવ રાયમગ્ગે જેણેવ પુષ્પમહવે તેણેવ ઉવામન્દ્ર) ઇસ કે
બાદ બે કુણાલાધિપતિ રુક્મી રાજા હાથી પર બેઠ કર ચતુરગિણી સેના
કે સાથ ૨ મહામટોં કે સમૂહ સે કિ જિસ સે ખીતર ઓર કોઈ દુસરા

“ હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે રાજમાર્ગની પામે બનાવવામા આવેલા
પુષ્પ-મહાપમા અનેક રંગથી રંગાયેલા ચોખ્ખાવાં નગરની રચના કરો

(તસ્મિં બહુમજ્જ દેસભાણ પટ્ટય રહેય) તેની બરોબર અધ્યક્ષે એક
પટ્ટક બનાવો (રણ્ણ જાવ પન્નવિણાતિ) આ પ્રમાણે પટ્ટક બનાવીને
તેઓએ રાજાને સૂચના કરી કે હે સ્વામી ! જે પ્રમાણે કામ કરવાની તમે
અમને આજ્ઞા આપી હતી તે પ્રમાણે બધું અમે તૈયાર કરી દીધું છે

(તણ્ણ સે રૂપી કુણાલાહિર્વર્દ્ધિ હત્થિ ક્લપરગણ ચાઉરગિણી સેના
મહયા મહચઢગરપહયરવિંદપરિક્લિષ્તે અહે ઉરપરિયાલસપરિવુઢે સુવાહુ દારિય
પુરઓ કદ્દુ જેણેવ રાયમગ્ગ જેણેવ પુષ્પમહવે તેણેવ ઉવામન્દ્ર)

ત્યાર પછી તે કુણાલાધિપતિ રુક્મી રાજા હાથા ઉપર સવાર થઈને
ચતુરગિણી સેનાની સાથે આવે જેમા ઝોઠપલુ પેચી નડે નહિ તેવા મહા

नाम्नी दारिका=पुत्री, पुरत अग्रे कृत्वा यज्ञेय राजमार्गो यज्ञेय पुष्पमण्डपस्तत्रै-
वोपागच्छति, उपागत्य दम्तिस्कन्गान् प्रत्यरोहति=प्रत्यरतरति, प्रत्यवल्ह
पुष्पमण्डपमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य सिंहासनवरगतः 'पुरत्याभिमुह' पौरस्त्याभि
मुखः पूर्वदिग्मुखः, 'सन्निमन्ने' सन्निपण्णः=उपविष्ट । ततस्तदनन्तर 'ताओ'
ताः, 'अतेउरियाओ' आन्त पुरवासिन्वो वनिता सुबाहुदारिका पटके 'दुरुहेति'
दुरोहति=आरोहयन्ति उपवेशयन्तीत्यर्थः। दुरुह्य=आरोह्य भेतपीतकैः=राजतसौवर्णैः
कलशै स्नपयन्ति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषिता कुर्यान्ति, कृत्वा=भूषयित्वा, पितुः
पादौ वन्दितुमुपनयन्ति ततः सलु सुबाहुदारिका यज्ञेय रुक्मी राजा तत्रैवोपाग

मनुष्य घुस नहीं सकता है तथा अन्तः पुर से परिसृत होते हुए अपनी
पुत्री सुबाहुदारिका को आगे करके जहाँ राजमार्ग के समीप पुष्पमण्डप
बना हुआ था वहाँ आये। (उवागच्छित्ता हत्थिखघाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरुहत्ता पुष्पमण्डव अणुपविसइ-अणुविसित्ता सीहासनवरगए
पुरत्याभिमुहे सन्निमन्ने) वहाँ आकर वे हाथी के स्कन्ध से नीचे उतरे।
उतर कर पुष्प मण्डप में उपविष्ट हुए। वहाँ जाकर वे पूर्वदिशा की तरफ
मुख कर के श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गये। (तण्ण ताओ अन्ते उरियाओ
सुबाहुदारिय पट्टयति दुरुहेति, दुरुहत्ता सेयपीयएहि कलसेहि णव्वेति,
ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेति-करित्ता पिउणो पाय वदिउ
उव्वणेति) इस के बाद उन अन्तः पुर निवासिनी स्त्रियों ने सुबाहुदा-
रिका को पाट पर चढ़ाया-और चढ़ा करके-बैठा कर के-चादी और
सुवर्ण के श्वेत पीले कलशों से उसे स्नान कराया-स्नान कराने के बाद

लटोना समूहनी वच्चे तेमज्ज अन्तःपुरनी साथे पोतानी पुत्री सुबाहु दारिकाने
आगए राणीने न्या राजमार्गनी पासे पुष्पमण्डप छेता त्या गया।

(उवागच्छित्ता हत्थिखघाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता पुष्पमण्डव अणुपविसइ
अणुपविसित्ता सीहासनवरगए पुरत्याभिमुहे सन्निमन्ने)

त्या आवीने तेओ हाथीना उपरथी नीचे उतरथी उतरिने तेओ पुष्प
मण्डपनी अहर गया त्या जघने तेओ पूर्व दिशा तरइ भो करीने ओक
उत्तम आसन उपर भेसी गया।

(तण्ण ताओ अतेउरियाओ सुबाहुदारिय पट्टयति दुरुहेति दुरुहत्ता से
यपीएहि कलसेहि णव्वेति, ण्हावित्ता सव्वालकार विभासिय करेति करित्ता पिउणो
पाय वदिउ उव्वणेति)

त्यारवाह रत्नवासनी स्त्रीओओ सुबाहु दारिकाने पट्टक उपर चढ़ावी अने
तेना उपर भेसावीने चादी तेमज्ज सोनाना सङ्केह अने गीता मलजोडी मे

च्छति, उपागत्य पादग्रहण करोति । तत खलु स रुक्मीराजा सुबाहुदारिकामङ्गे= उत्सङ्गे निवेशयति, निवेश्य सुबाहुदारिकाया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च यावद् विस्मितः= आश्चर्यं प्राप्तः, वर्षधर=वर्षधरपुरुष अन्तः पुररक्षक पण्डपुरुष शब्दयति= आह्वयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अगादीत्=उक्तवान्- हे देवानुप्रिय ! त्व खलु मम दौत्येन=दूतो भूत्वा बहूनि ग्रामाकरनगरगृहाणि अनुप्रविशसि, तद् तम्माद्बृद्धि-अस्मिन्नापि त्वया कस्यचिद् राज्ञो वा ईश्वरस्य वा व्यवहारिणो वा मार्त्यगाहस्य वा श्रुतिनो वा कुत्रचिद् ईदृश मञ्जनक दृष्टपूर्व, फिर उसे समस्त अलकारो से विभूषित किया-विभूषित करके फिर वे उसे पिता के चरणों की चढ़ना करने के लिये ले चली ।

(तएण सुबाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रुप्पी राया सुबाहु दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए रुवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सहावेइ) सुबाहु दारिका भी जहा रुक्मी राजा विराजमान थे-वहा आई वहां आकर के उसने पिता के चरणों में नमन किया इस के बाद राजाने उस सुबाहुदारिका को उठाकर अपनी गोद में बैठा लिया बैठाकर उस सुबाहुदारिका के रूपसे यौवन से और लावण्य से विस्मित हुए उन राजा ने वर्षधर अत पुर के रक्षक नपुमक-कञ्चुकी को बुलाया (सहावित्ता एव वयासी-तुमण्ण देवाणुप्पिया । मम दोच्चेण गह्णीणं गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थियाइ ते कस्सइ

नवडावी, नवडावीने तेने अधा धरेष्वाओथी शशुगारी, शशुगारीने तेओ तेने पिताना अश्लोभा वदन भाटे लई गछ

(तएण सुबाहु दारिया जेणेव रुप्पीराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रुप्पीराया सुबाहुदारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए रुवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसर सहावेइ)

सुबाहु दारिका पण्डपुरुष रुक्मी राजा के हाथ में ली गयी थी। पिताना अश्लोभा वदन कर्त्ता त्थारणा० राजाके सुबाहु दारिकाने उठा लीने पिताना ओणाभा ओमाडी दीधी ओमाडीने सुबाहु दारिकाना रूप, यौवन अने लावण्यकी विस्मय पायेला राजाके वर्षधर शशुगारिना रक्षक नपुमक-कञ्चुकीने ओलाओया

(सहावित्ता एव वयासी तुमण्ण देवाणुप्पिया । मम दोच्चेण गह्णीणं गामागरनगर गिहाणि अणुपविससि, त अत्थिया ते कस्सइ रत्तो वा इसरस्स वा कहिं

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मञ्जनकम् ? । यतस्तदनन्तरं खलु स वर्षं धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डपुरुषः, रुक्मिणं करतलपद्मिणीं गृहीतं गिर आवर्तं दक्षनस्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमयादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जहम् अन्यदा=अन्यस्मिन् समये युष्माकं दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिगं राजधानीं प्रतिगतः, तत्र खलु मया कुम्भरूपस्य राज्ञो दृष्टिः=पुण्याः प्रभावस्या देव्या प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः मलय्याः=मल्लोनाम्न्याः, विदेहराजपरम्परायाः यद् मञ्जनकं दृष्टं, तस्य खलु मञ्जनकस्य=मल्लीमञ्जनकस्य, इदं सुबाहुदारिकाया मञ्जनकं शतस्रहसतमामपि=अक्षामपि कला=शोभाया अत्र 'न अग्नेह' नार्हति, न प्राप्नोती

रभो वा इसरस्स वा कर्हि चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठपुण्वे जारिसएण इमीसे सुबाहुदारियाए मञ्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरों में नगरों एवं घरों में जाते रहते हो, तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन मणोत्सव कहीं किसी राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्थवाहक अथवा किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए, तत्थण मए कुम्भकस्स रत्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मञ्जणए दिट्ठे, तस्स ण मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मञ्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढ़ाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठ पुण्वे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मञ्जणए

ओलावीने तेमळे आ प्रभाळे कळु-“ हे देवानुप्रियो ! तमे आभारा इतना इपभा घेवा आभा, आकारो, नगरो अने घरोमा अपर-अपर करता रहेछो तो अतावे के तमे पडेवा जेवो सुबाहु दारिका जेवो स्नपन मणोत्सव केछो राजा, ईश्वर, केछो व्यवहारी, केछो सार्थवाह अथवा केछो श्रेष्ठीने त्या जेयो छे ?

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी ! अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुम्भकस्स रत्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मञ्जणए दिट्ठे, तस्स ण मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मञ्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्घेइ)

आ प्रभाळे सालाणीने ते वर्षधरे अने छायणी अजली अनावीने तेने मस्तके भूझीने रुक्मी राजने कळु जे हे स्वामी ! हु केछो पथत तभारा इत

त्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स रुक्मी राजा वर्षधरस्य=वर्षधर पुरुषस्यान्तिके=समीपे
' एयमदृ ' श्रुत्वा निगम्य ' सेस तहेव ' शेष तथैव-शेषवृत्तान्त चन्द्रच्छायनृप
वद् बोध्यमित्यर्थः । तथाचाय सम्बन्धः-स रुक्मी-त वर्षधर प्रत्येवमवादीत्-
हे देवानुप्रिय ! कीदृशी मल्ली वर्तते, तदा वर्षधर आह-नो खलु अन्या कापि
तादृशी देवकन्या वा यावत् यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, अत्र यावच्छ
वदेनासुर नागयक्षगन्धर्वादि कन्यकाः संग्राह्या, ततः खलु स रुक्मी वर्षधरपुरुष

प्रकार कहा-हे स्वामिन । मे किनी समय आपका दूत होकर मिथिला
नगरी गया हुआ था-वहा मैंने कु भक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती
की कुक्षि से अवतरित हुई है मल्ली कुमारी का जो विदेह राजा की
पुत्रियो में सर्वोत्तम है जैसा स्नान महोत्सव देखा उसके समक्ष यह
सुधाहुदारीका का मञ्जनोत्सव लक्षाश-लाखमें अश को भी प्राप्त नहीं
कर सकता है । (तण्ण से रूपी राया परिसरस्म अति ए एयमदृ
सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मञ्जणगजणितहासे दूत सदावेह, सदा-
वित्ता एव वयासी जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
इस के बाद रुक्मी राजाने जब वर्षधर (कचुकी पुरुष) के
मुख से ऐसी बात सुनी तो उसका विचार कर उसने चन्द्रच्छाय राज
की तरह अर्थात् राजा ने वर्षधरसे मल्ली कुमारी के विषय में अपनी
जिज्ञासा प्रकट की-पूछा वह कैसी है-तब वर्षधर ने उस से कहा-हे
देवानुप्रिय ! क्या कहें-जैसी वह है ऐसी तो कोई भी कन्या नहीं है-न
ऐसी कोई देव कन्या है न कोई असुर कन्या है, न कोई नाग कन्या है,

तरीके मिथिला नगरीमा गये हुतो त्या मे प्रभावतीना गर्भधी नन्हेली
विदेह राजानी अधी पुत्रीओमा श्रेष्ठ कुलज राजानी पुत्री मल्ली कुमांगीना
जेथे स्नान भडोत्सव जेथे तेनी भागे सुमाहु दारिकाने स्नान भडोत्सव
लक्षार पणु वही शक्य तेम नथी

(तण्ण से रूपीराया परिसरस्म अति ए अयमदृ सोच्चा णिसम्म सेस तहेव
मञ्जणगजणितहासे दूत सदावेह, सदावित्ता एव वयासी जाव जेणेव महिला
नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

रुक्मी राजाओ नगरे वर्षधर (कचुकी पुरुष) ना मुण्ठेथी आ प्रभाछे
वात सालणी त्यारे तेना विषे विचार करीने तेछे चन्द्रच्छाय राजानी जेभ
ओटले के राजाओ वर्षधरने मल्ली कुमांगीना सणधमा पोतानी छिज्ज नञ्जु-
वता कछु के ते केवा छे ? त्यारे नयागमा वर्षधरे कछु के छे देवानुप्रिय !
शु छु ? जेवी ते कना छे तेवी तो कोर पणु नथी ओवी कोर नथी देवकन्या

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मञ्जनम् ? । यतस्तन्मन्तर खलु म वर्ष
 धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डितः, रक्षिण करतलपनिगृहीत निर आवर्त दक्षिण
 मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्य-
 स्मिन् समये पुष्पात् दीप्तयेन=दूतो भूत्वा मिथिन् राजधानीं प्रतिगतः, तत्र स
 मया कुम्भरस्य राज्ञो दुहितु=पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या प्रभावतीदेव्या आत्म-
 जायाः=अज्ञातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजवरस्यकायाः यद् मञ्ज-
 नकं दृष्ट, तस्य खलु मञ्जनरस्य=मल्लीमञ्जनरस्य, इदं सुबाहुदारिकाया मञ्जनक
 शतस्रहसतमामपि=लक्षामपि कला=जोनाया अश 'न अग्नेह' नाहति, न प्राप्नोती

रक्षो वा इसरस्स चा कहिं चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठपुण्वे जारिसएण
 इमीसे सुबाहुदारियाण मञ्जणए) घुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानु
 प्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरो में नगरों एव घरों
 में जाते रहते हो, तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कही किसी
 राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्धवाहक अथवा
 किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव ययासी-एव खलु सामी
 अह अन्नया कयाड तुम्हेण दोच्चेणं मिहिल गए, तत्थण मए कुम्भकस्स
 रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मञ्जणए
 दिट्ठे, तस्स णं मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाण मञ्जणए सयसहस्स
 इमपि कल न अग्नेह) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनों हाथों की
 अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढ़ाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठ पुण्वे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मञ्जणए
 ओलावीने तेमहे आ प्रभाहे कथु-“ हे देवानुप्रियो ! तमे अमार
 इतना इपमा धन्य आभो, आभारो, नगरों अने घरोंमा अपर-अपर करता रहे
 छे तो भतावे के तमे पहिला ओवो सुबाहु दारिका ओवो स्नपन महोत्सव को
 राजा, ईश्वर, कोई व्यवहारी, कोई सार्धवाहक अथवा कोई श्रेष्ठीने त्या जेथे छे ?

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव ययासी-एव खलु सामी ! अह
 अन्नया कयाड तुम्हेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुम्भकस्स रन्नो धूयाए
 पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मञ्जणए दिट्ठे, तस्स ण
 मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मञ्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्नेह)

आ प्रभाहे सालाणीने ते वर्षधरे जने हाथनी अजली बनावीने तेने
 भस्तके भूकीने रुक्मी राजने उद्यु हे हे स्वामी ! हु कोई वज्रत तमाश इत

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था
तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम
कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघ-
डिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं स-
द्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधिं सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगा-
रसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं
कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ,
णिवेसित्ता बहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ
सघडित्तए, तएणं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी—एव
खलु सामी ! अज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता
एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो
जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघाडित्तए,
तएण अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय
कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी नि-
डाले साहट्ठु एव वयासी—से केण तुब्भे कलायाण भवह ?
जे ण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघा-

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य समान्य प्रतिनिसर्जयति, ततः स उ स रुक्मी
कुणालाधिपतिः—मञ्जनजनितहर्षः = मल्लीमञ्जनरुगुणश्रवणमजात तद्विषयका-
रागः सन् दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—यायत् अत्र यावत्करणादिदं
द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिलां राजधानीं गत्वा कुम्भक राजान
ब्रूहि—‘ रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तव अन्यथा महीं वाञ्छति ’ इत्यादि । तत
खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रयास्वः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव
प्राधारयद् गमनाय = गन्तु प्रवृत्तः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बध
कथित ॥ सू० २५ ॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया
सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से बिस्
जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली
कुमारी के मञ्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी
में अनुगन्त चित्त हो कर दूत को बुलाया—बुलाकर फिर उससे ऐसा
कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम यहाँ से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ
और जाकर कुम्भक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा
तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते हैं । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार
हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय
राजा रुक्मी का सम्बध कहा गया है । सूत्र “ २५ ”

के नथी असुर कन्या के नथी यक्षकन्या के नथी गन्धर्व कन्या, वगेरे

आ रीते वर्षधरनी बात साबलणीने रुक्मी राजाके वर्षधरने सत्कार
कथ्यो अने सन्मान कथ्यो सत्कार तेमज सन्मान करीने तेमने पोतानी पासथी
विहाय कथ्यो तयारपछी कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजाके मल्ली कुमारीना
मञ्जनोत्सव तेमज गुणाना श्रवणथी हर्षित तथा ते कुमारीमा अनुगन्त चित्त
वाणा थधने इतने बोलाव्यो इतने बोलावीने तेने कथ्यो—हे देवानुप्रिय ! तमे
अर्हीथी सत्करे मिथिला राजधानीमा जाव्यो अने जधने कुलक राजाके कडे के
कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तमारी कन्या मल्ली कुमारीने आछे छे वगेरे

आ भ्रमाछे पोताना स्वामीनी आज्ञा भेजवीने इत रथ उपर सवार
थधने मिथिला नगरी तरङ्ग रवाना थयो आ रीते तृतीय राजा रुक्मीने सम्बध
कथेवामा आव्यो छे ॥ सूत्र ॥ २५ ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था
तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम
कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधो विसघ-
डिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं स-
द्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगा-
रसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं
कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ,
णिवेसित्ता बहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ
सघडित्तए, तएण सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्दावेत्ता एव वयासी—एव
खल्लु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता
एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो
जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघाडित्तए,
तएण अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय
कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी नि-
डाले साहट्ठु एव वयासी—से केण तुब्भे कलायाण भवह ?
जे ण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधि सघा-

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य समान्य प्रतिगिसर्जयति, ततः राट्ट स रुक्मी
कुणालाधिपतिः—मज्जनजनितद्वयः = मत्लीमज्जनरुग्णश्रवणसजात तद्विषयका-
रागः सन् दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—यावत् अत्र यावत्करणादिद
द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिला राजधानी गत्वा कुम्भक राजान
ब्रूहि—‘रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तव कन्यया मल्ली वाञ्छति’ इत्यादि । तत
खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रयास्ठः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव
प्राधारयद् गमनाय = गन्तु मरुतः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बन्ध
कथित ॥ सू० २५ ॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया
सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से बिछ
जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली
कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी
में अनुरक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया—बुलाकर फिर उससे ऐसा
कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम यहाँ से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ
और जाकर कुम्भक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा
तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते हैं । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार
हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय
राजा रुक्मी का सबध कहा गया है । सूत्र “ २५ ”

हे नथी असुर कन्या हे नथी यक्षकन्या हे नथी गन्धर्व कन्या, वगेरे

आ रीते वर्षधरनी बात सावणीने रुक्मी राजाके वर्षधरने सत्कार
क्यों अने सन्मान क्युं सत्कार तेमज्जन सन्मान करीने तेमने पोतानी पासेथी
विहाय क्युं त्पारपछी कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजाके मल्ली कुमारीना
मज्जनोत्सव तेमज्जन गुणाना श्रवणथी हर्षित तथा ते कुमारीमा अनुरक्त चित्त
वाणा यधने हूतने गोलाव्ये हूतने गोलावीने तेने कछु—हे देवानुप्रिय ! तेने
अहीथी सत्करे मिथिला राजधानीमा जाओ अने जधने कुलक राजाके कछो के
कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तमारी कन्या मल्ली कुमारीने आछे छे वगेरे

आ प्रभाणु पोताना स्वामीनी आज्ञा भेणवीने हूत रथ उपर सवार
थधने मिथिला नगरी तरफ रवाना थयो आ रीते तृतीय राजा रुक्मीने सबध
कहेवाभा आओ छे ॥ सूत्र ॥ २५ ॥

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गधव्व-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवरायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धमस्तावमाह—‘तेणं
कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,
तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तरं खलु तस्या मल्लया
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अयस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धानं योजनं, ‘विसघडिण’ विसघटितः=
भुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय
में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश या (तत्थण वाणा-
रसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सघी विसघडिण यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सघी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुम्भए राया सुवन्नगार सेणिं सदावेइ सदावित्ता एव

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेण कालेण तेण समएण’ ते वण्णते (काशी नाम जनपद
होत्था) काशी नामे देश हते । (तत्थण वाणाखी नगरी होत्था) तेभा भन्ना
रस नामे नगरी हती । (तत्थण सखे नाम काशीराया होत्था) तेभा काशी
देशना अधिपति शख नामे राज रहते । हते ।

(तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कु
डलजुयलस्स सघी विसघडिण यावि होत्था)

अथ वण्णतनी बात छे के विदेहराजवर कन्या भक्षी कुमारीना दिव्य
कुडलाने साधाने लाग पड़ी गये ।

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएण ते सुवन्नगारा
 कुभेण रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइ२ गिहाइ
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए
 मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता
 विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव
 वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जा-
 णंसि सगडीसागड मोएति, मोडत्ता महत्थं जाव पाहुड गि-
 ण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव
 कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव
 एवं वयासी-अम्हेणं सामी । मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं
 रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो
 णं सामी । तुब्भ बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा
 सुहसुहेणं परिवसिउ । तएणंसखे कासीराया त सुवन्नगारे एव
 वयासी-किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया । कुभएणं रन्ना निव्विसया
 आणत्ता ? तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी-एव खलु
 सामी । कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
 मल्लीए कुडलजुयलस्स सधीं विसघडिए, तएणं से कुभए
 सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता,
 त एएण कारणेण सामी । अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता,
 तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणु-
 प्पिया । कूभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखरायं एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधर्व-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अय चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धमस्तावमाह—‘तेणं
कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,
तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अयस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धान योजन, ‘विसघडिण्’ विसघटितः=
घटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय
में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वारणा-
रसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कूडलजुयलस्स सधी विसघडिण् यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सधी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सदावेइ सदावित्ता एव

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेण कालेण तेण समएण’ ते वण्णते (काशी नाम जनपद
होत्था) काशी नामे देश हते । (तत्थण वारणासी नगरी होत्था) तेभा वाना-
रसी नामे नगरी हती । (तत्थण सखे नाम काशीराया होत्था) तेभा काशी
देशना अधिपति शख नामे राजा रहते । हते ।

(तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कू-
डलजुयलस्स सधी विसघडिण् यावि होत्था)

अथ वण्णतनी बात छे के विदेहराज वर कन्या मल्ली कुमारीना दिव्य
कुडलानो साधानो लाग तूटी गये ।

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएणं ते सुवन्नगारा
 कुभेणं रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइ२ गिहाइ
 तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए
 मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमति, निक्खमित्ता
 विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव
 वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जा-
 णंसि सगडीसागड मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गि-
 ण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव
 कासीराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० जाव
 एवं वयासी-अम्हेणं सामी । मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं
 रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो
 णं सामी । तुव्व वाहुच्छायापरिग्गहिया निव्वभया निरुव्विग्गा
 सुहंसुहेणं परिवसिउ । तएणंसखे कासीराया त सुवन्नगारे एव
 वयासी-किन्न तुव्वे देवाणुप्पिया । कुभएणं रन्ना निव्विसया
 आणत्ता ? तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी-एव खलु
 सामी । कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
 मल्लीए कुडलजुयलस्स संधीं विसघडिए, तएणं से कुभए
 सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता,
 त एएणं कारणेण सामी । अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता,
 तएणं से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणु-
 प्पिया । कुभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूयं सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—‘ तेणं
कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,
तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धान योजन, ‘ विसघडिण ’ विसघटितः=
वुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय
में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश या (तत्थण वाराणा-
रसी नगरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिण यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सधी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुम्भ राया सुवन्नगार सेणिं सदावेइ सदावित्ता एव

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘ तेण कालेण तेण समएण ’ ते वण्णते (काशी नाम जनपद
होत्था) काशी नामे देश હતો (તત્થણ વારાણસી નગરી હતો) તેમા બના-
રસ નામે નગરી હતી (તત્થણ સખે નામ કાસીરાયા હોત્યા) તેમા કાશી
દેશના અધિપતિ શખ નામે રાજા રહેતો હતો ।

(તएण तीસે મલ્લીए વિદેહરાયવરકન્નાए અન્નયા કયાइ તસ્સ दिव्वस्स कु
डलजुयलस्स सधी विसघडिण यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય
કુડળોનો સાધનો ભાગ તૂટી ગયો ।

श्रद्धयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! अयं दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिः
 'सघाडेह' सघटयत सन्धानं संयोजनं कुरुत ततस्तदा खलु सा सुवर्णकारश्रेणिः
 एतम्=कुण्डलसंधानकरणरूपम् अर्थ=कार्यं तथाऽग्नयति कथयित्वा प्रतिशृणोति=
 स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव
 'सुवन्नगारभिसियाओ' सुवर्णकारभिसियाः सुवर्णकाराणां वृत्तिका' = आमनानि
 -उपवेशनस्थानानि तत्रैवोपगच्छति, उपागत्य सुवर्णकारभिसियासु-सुवर्णकारो-
 पवेशनस्थानेषु निविशति=उपनिशति निविश्य=उपविश्य, 'उद्भि' = अनेकविधै
 आयैः=साधनैः यावत्-अत्र यावत्करणात्-उपायैः=पयोगैः, स्थितिभिः=व्यवस्था
 भिरिति बोध्यम् । परिणमयन्ति=पूर्वस्वरूपं सम्पादयन्ति सा सुवर्णकारश्रेणि-
 स्तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं गृह्णीतुमिच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः ।

वयासी तुभ्येण देवानुप्रिया । इमस्स दिवस्स कुण्डलयुगलस्स सन्धिं
 सघाडेह) तस्य कुम्भक राजा ने सुवर्णकारों को बुलाया और बुलाकर उन
 से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग इस दिव्य कुण्डल युगल की
 संधि को जोड़ दो (तएण मा सुवन्नगारसेणी एयमद्दु तहत्ति पडि
 सुणेइ २, पडि सुणित्ता त दिव्व कुण्डलयुगलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव
 सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगार
 भिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता वह्हिं आपहिं य जाव परिणामे माणा
 इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुण्डल युगलस्स सन्धित्थं) उस सुवर्णकार श्रेणी
 ने कुण्डलों की संधि को जोड़ने रूप अर्थ को " तथास्तु कहकर स्वीकार
 कर लिया-और वे दोनों दिव्य कुण्डल राजा के पास से ले लिये । लेकर
 फिर वे सब जहाँ सुवर्णकारों के बैठने के स्थान थे वहाँ चले आये ।

(तएण से कुमए राया सुवन्नगारसेणिं सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तु
 भ्येण देवानुप्रिया ! इमस्स दिवस्स कुण्डलयुगलस्स सन्धिं सघाडेह)

त्यादि कुम्भक राजाએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું
 કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે આ દિવ્ય કુણ્ડળો નો સંધિ ભાગ જોડી આપો

(તएण सा सुवन्नगार सेणी एयमद्दु तहत्ति पडिसुणेइ २ पडिसुणित्ता त
 दिव्व कुण्डलयुगलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता वह्हिं आपहिं य
 जाव परिणामेमाणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुण्डलयुगलस्स सन्धित्थं)

તે સોનીઓએ તથાસ્તુ કહીને કુણ્ડળો નો તટ્ટેલા ભાગને જોડવાની
 આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને બંને દિવ્ય કુણ્ડળો રાજાની પાસેથી તેઓ એ
 લઈ લીધા લીધા પછી તેઓ યજ્ઞ બંધા સોનીઓને બેસવાના સ્થાન હતા

नो चैव खलु शक्नोति सप्रयत्नितुम् तैः सुवर्णकारैस्तस्य त्रुटितस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि सधटयितुमनेकोपाया कृताः, परंतु कुण्डल सन्नेर्यथोचित योजनाऽभावात्ते विफलप्रयत्ना अभूवन्निति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु सा सुवर्णकारश्रेणिर्यत्रैव कुम्भक-मिथिलाराजः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ऋतत्परिगृहीत शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जतिं कृत्वा=ऋद्वयं संयोज्य 'वद्धावेत्ता' वर्धयित्वा-'जयजये' ति शब्देनाभिनन्द्य, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् ! एव खलु अद्य यूयमस्मान् शब्दयथ, शब्दयित्वा यावत्=भवद्भिरेव वयमाज्ञप्ताः- 'अस्य कु-

आकर उन स्थानों में बैठ गये-बैठकर उन लोगों ने अनेक साधनों से, अनेक उपायों से अनेक व्यवस्थाओं से उस दिव्य कुण्डल के युगल की संधि को जोड़ने की इच्छा की, परन्तु (नो चैवण सचाएइ सघडित्तए, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छइ) वे उस संधि को यथोचित रूप से जोड़ने में समर्थ नहीं हो सके-अतः उन का समस्त प्रयत्न विफल हुआ- । इस तरह विफल प्रयत्न वाले हुए वे लोग जहां मिथिलाधिपति कुम्भक राजा थे-वहां गये उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी) वहां जाकर उस सुवर्णकार श्रेणी ने दोनों हाथों को जोड़कर राजाको बधाई दी-जय हो विजय हो इस तरह उसका अभिनन्दन किया-बाद में इस प्रकार कहा- (एव खलु सामी ! अज्ज तुग्गे अग्गे सदावेइ, सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह) स्वामिन् ! आपने आज हमलोगों को बुलाया था और

तथा आग्या त्या तेओ जेडा अने जेसाने ते बोडाओ जल जलना साधने, उपायो तेमअ अनेउ जलनी व्यवस्थाओधी जने कुडोना तूटेला लागने साधवाना प्रयत्नो ऽर्था पशु

(नो चैव ण सचाएइ सप्रयत्नितुम्, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छइ)

तेओ कुडोना तूटेला सधिलागने साधवाभा समर्थ थई शक्या नहि अने तेओना भधा प्रयत्नो निष्फल भन्त्या आ प्रभाणे निष्फल प्रयत्न वाणा तेओ भधा न्या मिथिलाधिपति कुलक राजा इत्ता त्या गया (उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी) त्या जधने ते सोनीओओ जने हाथ जोडी ने राजने जयथाओ जयथाओ आ प्रभाणे ना राण्ढोधी अलि-नदित कथा अने त्थार पछी ठडेवा लाज्या--

एव खलु सामी ! अज्ज तुग्गे अग्गे सदावेइ सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह)

કુણ્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ સઘટયત, સન્ધિ સઘટય=નુટિત સન્ધિ યોજિત્વા-એતામાર્જા
=મમાર્જસિ પ્રત્યર્પયત ' इति, તતઃ સ્વલુ વય તદ્ દિવ્ય કુણ્ડલયુગલ યક્ત્રીમઃ,
યત્રૈવ સુવર્ણકારવર્ષિકાઃ, યાત્ર-તત્રૈવોપાગન્ઝામઃ ઉપાગત્ય તત્રોપરિશ્વ વય કુણ્ડલ
યુગલસ્ય સન્ધિ સઘટયિતુ પ્રયત્ન કૃત્વત' પરતુ નો શક્તુમઃ સઘટયિતુ સયોજયિ
તુમ્, તત' તસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! એતસ્ય દિવ્યસ્ય કુણ્ડલસ્યાન્યત્
સદશ કુણ્ડલયુગલ ઘટયામઃ=સ્વયામ', તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ કુમ્ભ મો રાજા તસ્યાઃ
સુવર્ણકારશ્રેણ્યાઃ સુવર્ણકારસમૂહસ્ય અન્તિકે=સમીપે, એતમર્થ=કુણ્ડલસન્ધિસઘટન

બુલાકર એસા કહા થા કિ તુમ લોગ હસ દિવ્ય કુડલ યુગલ કી સધિ
કો કિ જો ટૂટ ગઈ હૈ-સ્વલુ ગઈ હૈ-ઠીક કર દો-જોડ દો-ઐર જોડકર
હમારી હસ આજ્ઞસિ કો પૂર્ણ કર હસ કી હમૈ સ્વર દો (તણ અમ્હે
ત દિવ્વ કુડલજુયલ ગિણ્હામો-જેણેવ સુવન્નાગારભિસિયાઓ જાવ
નો સચાણમો સઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ્સ દિવ્વસ્સ કુડલસ્સ
અન્ન સરિસય કુડલજુયલ ઘટેમો) હમને ઉસ દિવ્ય કુડલ યુગલ
કો હે લિયા થા-ઐર લેકર હમ લોગ જહા સુવર્ણ કારોં કે બેઠ ને કા
સ્થાન થા-વહા ચલે ગયે થે-વહાં વેઠકર હમ લોગોં ને અનેક સાધનો
દ્વારા, અનેક ઉપાયોં દ્વારા ઐર અનેક વ્યવસ્થાઓં દ્વારા હસ કુડલ
યુગલ કી સધિ કો જોડનેકા પ્રયત્ન કિયા-પરન્તુ યયોચિત રૂપસે જોડને
મૈં હમ લોગ સફલ પ્રયત્ન નહી હો સકે હૈ-અતઃ હે સ્વામિન્ ! આપકી
આજ્ઞા હો તો હમ હસ દિવ્ય કુડલકે મમાન ઐર દૂસરા કુડલ યુગલ
બના દેતે હૈં-(તણ સે કુભણ રાયા તીસે સુવન્નગારસેળીણ અતિણ એયમહ

હે સ્વામિન્ તમે આજે અમને બોલાવ્યા હતા અને બોલાવીને કહ્યું
હતુ કે તમે લોકો આ દિવ્ય કુડળોનો સધિ ભાગ તૂટી ગયો છે તેને સારો
કરી આપો, સાધી આપો અને સાધીને અમને ખબર આપો

(તણ અમ્હે ત દિવ્વ કુડલ જુયલ ગિણ્હામો જેણેવ સુવન્નાગારભિસિયા
ઓ જાવ નો સચાણમો સઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ્સ દિવ્વસ્સ કુડલસ્સ
અન્ન સરિસય કુડલજુયલ ઘટેમો)

અમે તે કુડળની જોડને લીધી અને લઈને જ્યાં સોનીઓને બેવસાની
જ્યાંઓ છે ત્યાં ગયા ત્યાં બેસીને અમે લોકોએ ઘણા સાધનો ઉપાધોને ઘણી
વ્યવસ્થાઓ વડે આ બંને કુડળોના તૂટેલા ભાગને સાધવાના પ્રયત્નો કર્યા, પણ
તેઓને યોગ્ય રીતે સાધવામા અમે લોકો સફળ થયા નથી, એથી હે સ્વામી !
આપની આજ્ઞા હોય તો આ દિવ્ય કુડળોનેવાજ બીજા કુડળો ધી આપીએ

योग्यताराहित्यरूप श्रुत्या=शब्दत कर्णगोचरीकृत्य, निश्चय्य=अर्थतोऽवगव्य, 'आसुरुत्ते' आशुरुत्तः=झटितिक्रोधाविष्टः, 'तिवलिय' त्रिवलिका=रेखात्रयाभिव्यक्ति कारिका, 'भिउडी' भ्रुकुटि वक्रीभूतभ्रुव, ललाटे=माले सहत्य=आन्ध्य-एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-अथ खलु यूय 'कलायाण' कलादाना-कलामाददत् इति कलादा' स्वर्णकारास्तेषां के भय ? न कोऽपीत्यर्थः ये खलु यूयमस्य कुण्डलयुगलस्य नो शक्नुथ सन्धि सघटयितुम् । ये खलु सुवर्णकारास्ते कलामात्र सुवर्णमादाय तद् वित्तस्य राजादीना मनोहर रुनरुमयमाभूषणादिक रचयन्ति यूय तु त्रुटितस्य सुवर्णसन्धेः सर्वोजनेऽप्यसमर्थाः स्थ तर्हि कलादाकुलोद्भवा यूयमिति कथं

सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते तिवलिय भिउडी निडाले साहट्टु एव वयासी) इस प्रकार उस सुवर्णकार श्रेणी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे विचार कर वह कुम्भर राजा उस पर झटिति क्रोध से लाल पीली आखों वाला हो गया-और भ्रुकुटि को मस्तक पर चढाकर इस प्रकार बोला (से केण तुम्हे कलायाण भवह ? जेण तुम्हे इमस्स कुडल जुयलस्स नो सचाएह सधि सघाडेत्तए ?) जब तुम लोग इस कुडल युगल की सधि को ही नहीं जोड़ सकते हो तो फिर तुम सुवर्णकार कैसे ? जो सुवर्णकार होते हैं वे तो कलामात्र (थोड़ा) भी सोनेका पसार कर ऐसे २ आभूषण उसके बना देते हैं जो राजादिकोके मनको भी हरण कर लेते हैं ।

तुम लोग तो दूटे हुए सुवर्ण की सधि को भी जोड़ने में अक्षम बन रहे हो तो फिर कैसे हम तुम्हें सुवर्णकारों के कुलो में उत्पन्न हुआ

तएण से कुमए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णि सम्म आसुरुत्ते तिवलिय भिउडी, निडाले साहट्टु एव वयासी)

आ रीते मोनीओना सुमेथी आ वात सालणीने अने ते विषे भदोअर विचाराने कुलक राज तेओना उपर भूषण कोधथी लाल पीला थर्गया अने सम्भदो उथी यढावीने आ प्रभाखे उडेवा लाग्या-

(सेकेण तुम्हे कलायाण भवह ? जेण तुम्हे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधि सघाडेत्तए ?)

तमे आ णने कुडलोना तूटेला सधिलागने न सधि राकवाभा अम भर्थ छे । त्यारे तमे सुवर्णकार कर्ध राने छे । नेओ सुवर्णकार होय छे तेओ तो कला मात्र पणु सोनु होय तेने इलावीने ओवा ओवा धरेलुओ तैया करी आपे छे छे जनावी राजओना मन पणु प्रस न थर्ग नय छे

तमे दोडो न्यारे तूटेला मोनानो साधो पणु नेही शकता नथी त्यारे अमे तमने सुवर्ण कारना कुणवा नन्हेला क्या आधारे भानी ओ ? (सुव

મન્યે, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान् ? इत्याह— ते ' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निव्विसए ' निर्विपयान् स्वदेशतो नि'क्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्यादूरहिर्गच्छथ ' इत्याज्ञां ददाति स्मेत्यर्थः ।

तत खल્લ ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्विपया स्वदेशतो निर्ग-
તામવિતુમ્ આજ્ઞાતાઃ સન્તઃ યત્રૈવ સ્વાનિ મ્યાનિ ગૃહાણિ, તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ,
ઉપાગત્ય ' સમહમત્તોવગરણમાયાए ' સમાહ્વામત્તોપરૂણમાદાય સ્વકીયમાહ્વામ-
નાધુપકરણ ગૃહીત્વા શરુટસમૂહેડ્વસ્થાપ્ય મિથિલાયા ગજધાન્યા મધ્યમધ્યેન
નિષ્ક્રામન્તિ= નિર્ગચ્છન્તિ, નિષ્ક્રમ્ય વિદેહસ્ય જનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન મ યે શૂચ્વા,
યત્ર કાશીજનપદઃ, યત્રૈવ વારાણસી તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ' અગુજ્ઞાણસિ'

માને । (સુવર્ણગારે નિવ્વિસए આળવેહ) હસ તરઠ કહ કર ઉસ કુ મ્બક
રાજા ને ઉન સુવર્ણકારોં કો અપને દેશ સે ઘહિર નિકલ જાને કી-આજ્ઞા
દે દી । (તર્ણ સે સુવર્ણગારા કુ મ્બેર્ણ રજા નિવ્વિસया આળત્તા સમા
ળા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છત્તા સમહામ-
ત્તોવગરણમાયાए મિહિલાए રાયહાળીए મજ્જ મજ્જેળ નિક્કલમતિ)
હસકે ઘાદ વે સુવર્ણકાર કુ મ્બક રાજા સે અપને દેશ સે ઘાહિર નિકલ
જાને કે લિયે આજ્ઞાસ હોકર જહા અપને ૨ ઘર થે વહા આયે । વહા આકર
ઉન્હોં ને અપને ૨ માહ માજન આદિ ઉપકરણો કો ગાહિયોં મેં ભરા
ઔર ભરાકર મિથિલા રાજધાની કે ઘીચો ઘીચ સે હોકર નિકલે ।
(નિકલમિત્તા વિદેહસ્સ જળવયસ્સ મજ્જ મજ્જેળ જેણેવ કાસી જળવए
જેણેવ વાળારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ઔર નિકલ વિદેહ જનપદ
કે મીતર સે હોકર જહા કાશી દેશ ઔર વનારસી નગરી થી વહા આયે ।

જગારે નિવ્વિસए આળવેહ) આ પ્રમાણે ડહીને કુભરાજએ તે સુવર્ણકારને
પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

તएળ સે સુવર્ણગારા કુમ્બેર્ણ રજા નિવ્વિસया આળત્તા સમાળા જેણેવ સાઈ
૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છત્તા સમહામત્તોવગરણમાયાए મિહિલાए
રાયહાળીए મજ્જ મજ્જેળ નિકલમતિ)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુભર રાજની પાસેથી પોતાના દેશમાંથી બહાર
નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં
આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભરીને અને
ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા

(નિકલમિત્તા વિદેહસ્સ જળવયસ્સ મજ્જ મજ્જેળ જેણેવ કામી જળવए
જેણેવ વાળારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને
વનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા

અગ્રોદ્યાને=પ્રધાનોદ્યાને, સગડીસાગડ ' શક્તીગાકટ=શુશકટવૃહઙકટાનાં
સમૂહ ' મોણિ ' મોચયન્તિ શકટેભ્યો વલીવર્દાન્ પૃથક્ કુર્વન્તિ મોચયિત્વા
મહાર્થ=મહાપ્રયોજનકયાવત્-મહાર્થ=મહામૂલ્યક મહાર્થ=મહત્તા રાજાદીના યોગ્ય,
મામૃતમ્=ઉપહાર ગૃહ્ણન્તિ, ગૃહીત્વા વારાણસ્યા નગર્યા મન્યમધ્યેન=વારાણસ્યા
નગર્યામધ્યે ભૂત્વા યજૈવ શઙ્ગ્વ' શઙ્ગ્વનામા કાશિરાજસ્ત્રૈવોપાગચ્છન્તિ ૦ ।
ઉપાગત્ય કરતલ૦ યાવત્ મસ્તકેઽજ્જલિ કૃત્વા એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-
હે સ્વામિન્ । એવ વય સ્વલુ મિથિલાયા નગર્યા કુમ્ભકેન રાજા નિર્વિપયાઃ=સ્વ-
દેશ નિર્ગતા મસ્તિમાજ્ઞા સન્ત ઇહ ' હૃવ્વમાગયા ' હૃવ્વમાગતા શીત્રમાગતાઃ,

(ઉવાગચ્છિત્તા અગ્નુજ્ઞાણસિ સગડી સાગડ મોણિ, મોહિત્તા મહત્થ
જાવ પાટુડ ગિણ્હતિ, ગિણ્હિત્તા વાણારસીણ નયરીણ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ
સલ્લે કાસી રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) વહા આકર ઉન્હોને અપની ૨
ગાડી ઓર ગાડો કો વહા કે વગીચે મે ઠહરા દિયા-ઓર ઠહરા
કર ફિર યે સવ મહાર્થસાધક-કીમતી તયા રાજાદિકો કે યોગ્ય મેટ
કો લેકર વાનારસી નગરી કે ત્રીચ સે હોકર જહા કાશી રાજ ઈલ્લ
રાજા થે વહા આયે ' (ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ જાવ એવ વયાસી-અમ્હેણ
સામી ! મિહિલાઓ-નયરીઓ કુમ્ભણ રન્ના નિવ્વિસયા આણત્તા સમાણા
ઈહ હૃવ્વમાગયા) વહા આકર ઉન્હોને દોનો હાયો કો જોડ કર ઓર
ઉનકી અજઞિ કો માયેપર રલ્લકર રાજા કો નમસ્કાર ક્રિયા, વાદ મેં
હસ પ્રકાર વે કહને લગે હે સ્વામિન્ ! હમલોગોં કો કુમ્ભક રાજા ને

ઉવાગચ્છિત્તા અગ્નુજ્ઞાણસિ સગડી સાગડ મોણિ, મોહિત્તા મહત્થ જાવ
પાટુડ ગિણ્હતિ, ગિણ્હિત્તા વાણારસીણ નયરીણ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ સલ્લે કાસી
રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

ત્યા આવીને તેઓ એ પોત પોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને ત્યાના
ખાસ ઉદ્યાનમાં રોક્યા અને રોકીને તેઓ બધા મહાર્થ સાધક બહુજ કીમતી
તેમજ રાજા વગેરે ને યોગ્ય એવી ભેટ હાથેને બનારસી નગરીની ઠીક વચ્ચે
થઈને ત્યા ગાંધીરાજ રાખરાજ હતા ત્યા ગયા

ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ જાવ એવ વયાસી અમ્હેણસામી ! મિહિલાઓ નયરીઓ
કુમ્ભણ રન્ના નિવ્વિસયા આણત્તા સમાણા ઇહ-હૃવ્વમાગયા)

ત્યા બંધને તેમણે બને હાયો બેડીને અબલી મસ્તકે મૂકીને રાજાને વદન
કયો અને તેઓ કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિન્ ! કુલક ગમ્મએ અમને લોકોને
મિથિલાનગરીથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે મિથિલાનગરીની બહાર કહા

મન્યે, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान् ? इत्याह— ते' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् 'निव्विसए' निर्दिषयान् स्वदेशतो गि'क्रान्तान् आज्ञापयति 'मम राज्यादूरहिर्गच्छव' इत्याज्ञा ददाति स्मेत्यर्थः ।

તત્ત્વલે સુવર્ણકારાઃ કુમ્ભેન=કુમ્ભકેન રાજા નિર્દિષયા સ્વદેશતો નિર્ગતામ્બિતુમ્ આજ્ઞાતાઃ સન્તઃ યત્રેવ સ્થાનિ સ્થાનિ ગૃહાણિ, તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય 'સમહમત્તોવગરણમાયાए' સમાખ્ડામત્તોપક્રુણમાદાય સ્વકીયમાખ્ડમાજનાદ્યુપકરણ ગૃહીત્વા શરુટસમૂહેઽવસ્થાપ્ય મિથિલાયા રાજધાન્યા મયમ્-યેન નિષ્ક્રામન્તિ=નિર્ગચ્છન્તિ, નિષ્ક્રમ્ય વિદેહસ્ય જનપદસ્ય મધ્યમ્-યેન મયે ભૂત્વા, યત્ર કાશીજનપદઃ, યત્રેવ વારાણસી તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય 'અગુજ્જાણસિ'

માને । (સુવર્ણગારે નિવ્વિસए આળવેહ) હમ તરહ કહ કર ઉસ કુમ્ભક રાજા ને ઉન સુવર્ણકારોં કો અપને દેશ સે બહિર નિકલ જાને કી-આજ્ઞા દે દી । (તएण સે સુવર્ણગારા કુમ્ભેણ રત્ના નિવ્વિસया આળત્તા સમાળા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમહામત્તોવગરણમાળાए મિહિલાए રાયહાળીए મજ્જ મજ્જેણ નિકલમતિ) હસકે વાદ વે સુવર્ણકાર કુમ્ભક રાજા સે અપને દેશ સે બહિર નિકલ જાને કે લિયે આજ્ઞાસ હોકર જહા અપને ૨ ઘર થે વહા આયે । વહાં આકર ઉઠ્ઠોં ને અપને ૨ માહ માજન આદિ ઉપકરણો કો ગાહિયો મેં ભરા ઓર ભરાકર મિથિલા રાજધાની કે વીચો વીચ સે હોકર નિકલે । (નિકલમિત્તા વિદેહસ્સ જળવયસ્સ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ કાસી જળવए જેણેવ વાળારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ઓર નિકલ વિદેહ જનપદ કે ખીતર સે હોકર જહા કાશી દેશ ઓર વનારસી નગરી થી વહા આયે ।

જગારે નિવ્વિસए આળવેહ) આ પ્રમાણે ડહીને કુલરાજએ તે સુવર્ણકારને પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

તएण સે સુવર્ણગારા કુમ્ભેણ રત્ના નિવ્વિસया આળત્તા સમાળા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમહામત્તોવગરણમાયાए મિહિલાए રાયહાળીए મજ્જ મજ્જેણ નિકલમતિ)

ત્યાર પછી તે સોનીએ કુલરાજની પાસેથી પોતાના દેગમાથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભર્યા અને ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા

(નિકલમિત્તા વિદેહસ્સ જળવયસ્સ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ કામી જળવए જેણેવ વાળારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને વનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા

पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=भद्रजातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः,
कुण्डलयुगलस्य सन्धिषिसघटित=त्रुटितः । ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार
श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयान्छब्देनेद द्रष्टव्यम्-
तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि-सघटयत सन्धि सघटय=त्रुटित
सन्धि योजयित्वा, एतामाज्ञा=ममाज्ञां, प्रत्यर्पयत” इति ततः खलु वय तद् दिव्य
कुण्डलयुगल गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-
स्वरूप सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि सघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परन्तु
नो शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्याऽऽस्माभिरेवमावेदि

धूयाण पभावइए देवीए अत्तयाण मल्लीए कुण्डलयुगलसस सधी विसघ-
डिए-तएण से कुभए सुवन्नगरसेणि सहावेइ, सहावित्ता जाव निव्वि
सया आणत्ता) हे स्वामीन् ! कुम्भक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती
की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो
कुडलों की सधी विघटित हो गई थी-सो कुम्भक राजाने हमसन सुवर्ण
कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की सधी
को जोड़ कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों
कुडलो को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर
बैठे आए-वहा बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन
कुडलो को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित सधी को जोड़ने का बहुत
प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे सनदित नहीं कर सके अतः
हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहा जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एव खलु सामी ! कुम्भगरस्स रन्नो धूयाण पभावइए देवीए अत्तयाण मल्लीए
कुण्डलयुगलसस सधी विसघडिए तएण से कुभए सुवन्नगरसेणि सहावेइ, सहा
वित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

हे स्वामीन् ! प्रभावती राज्ञीना गर्भवती जन्म पावेली कुम्भक राजनी
पुत्री मल्ली कुमारीना जे कुण्डलोना साधो तूटी गयो उल्लस राज्ञे भधा
सोनीञ्जाने मोलाव्या अने कछु के तमे लोडो आ कुण्डलोनी सधिने जेडी
आयो अमोअ तेमनी यासेथी कुण्डलो ल' लीधा मने लधने अमे भधा
पोतपोताना जेसवाना अथाने आवी गया त्या जेसीने अमोअ जत
जतना उपायोथी ते कुण्डलोने पडेलाना जेवा ज सारा जनापी आपवानी
अटले के तूटेवो मधि लाग इगी माधी आपवा माटे धण्डा प्रयत्नो कर्था पछु
ते कुण्डलोने पूर्ववत् सारा करवाभा अभर्थ थर्ध शक्या नहि अमे लोडो
राजनी पासो गया अने तेमने विनति करी के हे भद्रराज ! अमे गडु ज

તત્=તસ્માત્ इच्छामः खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं ग्राह्य-च्छाया परिग्रहीताः भुज-
च्छाया समाश्रिता अतएव निर्भयाः, निरुद्धिनाः=उद्वेगरहिता, सुखं सुखेन=
अतिसुखेन परिवस्तुमिच्छाम इति पूर्वेण सम्यन् ।

તતસ્તદનન્તર સલુ શદ્ધ કાશિરાજસ્તાન્ સુવર્ણકારાનેયમવાદીત્-હે દેવાનુ-
પ્રિયા ! કિં= કુત સલુ યૂયં કુમ્ભકેન રાજા નિર્વિપયા આજ્ઞાતા ? તતઃ સલુ તે
સુવર્ણકારાઃ શદ્ધમેયમવાદીત્-હે સ્વામિન્ । એ સલુ કુમ્ભકમ્પ રાજો દુઃકિત્ =
મિથિલાનગરી સે બહાર બહાજાને કી આજ્ઞા દી-સો હમલોગ બહાંસે
નિર્વાસિત હોરુર યહાં આયે હૈં-(ત इच्छामोऽण सामी ! तुभं ग्राह्य-
च्छाया परिग्रहीया निवभयानिविग्गा सुह सुहेऽण परिवसित) અત. હે
સ્વામિન્ ! આપકી ગ્રાહ્ય-છાયા કા આશ્રય લેરુર હમલોગ યહા નિર્ભય
ઔર નિરુદ્ધિમ્મ હોકર શાન્તિ પૂર્વક આનન્દ કે સાથ રહના ચાહ્તે હૈં
(તણ સલે કાસીરાયા તે સુવન્નાગારે એવ વયાસી) ઉનકી હસ પ્રકાર
કી વાત સુનને કે વાદ કાશી દેશાધિપતિ શામ્વ રાજા ને ઉનસે એસા
કહા-(કિન્ન તુભે દેવાણુપ્પિયા ! કુભણ રજ્ઞા નિવિસયા આણત્તા)
હે દેવાનુપ્રિયો ! કિસ કારણ સે કુમ્ભક રાજા ને આપ લોગોં કો મિથિ-
લાનગરી સે યાહર બહે જાને કી આજ્ઞા પ્રદાન કી-

(તણ તે સુવન્નાગારા સલ્લ એવ વયાસી) સુવર્ણકારોં ને પ્રત્યુત્તરમેં
શલ્લ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સલુ સામી ! કુમ્ભગસ્સ રજ્ઞો

કવાની આજ્ઞા કરવાથી એથી અમે ત્યાથી નિર્વાસિત થઇને અહીં આવ્યા છીએ
(તં इच्छामो ऽण सामी ! तुभं ग्राह्य-च्छाया परिग्रहीया निवभया निरुव्विग्गा
‘સુહ સુહે’ણ પરિવસિત)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમારી ગ્રાહ્ય-છાયાના આશ્રયમા અમે લોકો નિર્ભય
અને નિરુદ્ધિમ્મ થઇને શાંતિથી સુખેથી અહીં રહેવા ઇચ્છા રાખીએ છીએ
(તણ સલે કાસી રાયા તે સુવન્નાગારે એવ વયાસી)
તેમની આ પ્રમાણે (વન તી સાલજાને કાશી દેશાધિપતિ શ ય રાજાએ તેમને કહ્યું

(કિન્ન તુભે દેવાણુપ્પિયા ! કુમ્ભણ ગ્ન્ના નિવિસયા આણત્તા)
હે દેવાનુપ્રિયો ! કુલકે રાજાએ તમને શા ગરણથી મિથિલા નગરીની
બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(તણ તે સુવન્નાગારા સલ્લ એવ વયાસી)

સોનીઓએ જવાબમા શ ય રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिसंघटितं=वृद्धितं । ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्राप्यन्वयेनेदं द्रष्टव्यम्- तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि-संघटयत सन्धि संघटय=वृद्धितं सन्धिं योजयित्वा, एतामाज्ञा=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत” इति ततः खलु वयं तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूपं सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्याऽस्माभिरेवमावेदि-

धूयाणं पभावइए देवीए अत्तयाणं मल्लीए कुण्डलयुगलस्य सन्धिं विसंघटि-ए-तएणसे कुम्भए सुवर्णकारसेणिं सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता) हे स्वामीन् ! कुम्भक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुण्डलों की सन्धि विघटित हो गई थी-तो कुम्भक राजाने हमसब सुवर्ण कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की सन्धि को जोड़ कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुण्डलों को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर चले आए-वहाँ बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुण्डलों को पूर्वावस्थानाने के लिये वृद्धित सन्धि को जोड़ने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे संघटित नहीं कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहाँ जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एव खलु सामी ! कुम्भकरस्स रन्तो धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुण्डलयुगलस्य सन्धिं विसंघटि-ए-तएण से कुम्भए सुवर्णकारसेणिं सदावेइ, सदा-वित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

हे स्वामीन् ! प्रभावती राज्ञीना गर्भस्थी जन्म पायेली कुम्भक राज्ञनी पुत्री मल्ली कुमारीना मे कुण्डलोंना सन्धि टूटी गयी कुम्भक राज्ञे भधा सोनीओने मोलाओया अने कछु के तमे लोको आ कुण्डलोंनी अधिने नेडी आपो अमेओ तेमनी पासेथी कुण्डलो ली लीधा अने लधने अमे भधा पोतपोताना मेसवाना अथाने आवी गया त्या मेसीने अमेओ जत जतना उपायोथी ते कुण्डलोंने पडेवाना जेवा ज सारा भनावी आपवाना ओटले के टूटेले अधि भाग इरी सन्धि आपवा भाटे धणा प्रयत्नो कयो पण ते कुण्डलोंने पूर्ववत् सारा कवामा समर्थ थर शक्या नहि अमे लोको राज्ञनी पाये गया अने तेमने विनति करी के हे महाराज ! अमे पाइ ज

तम्-अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परंतु नो
शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरो गत्वाऽस्माभिरेव मयादित्-
अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयत्नं कृतवन्तोऽपि यय नो
शक्ताः सघटयितुम्, तस्मात् खलु हे स्वामिन् । एतत्सदृशमन्यतः कुण्डलयुगलं
घटयामः इति । ततः क्रोधाग्निष्टेन कुम्भकेन राज्ञा एव 'निर्विसया' निर्विषया
स्वदेशतो निर्गता भवितुम्, आज्ञप्ताः=आदिष्टाः ।

ततः स शङ्खः काशीराजः सुवर्णकारानेयमवादीत्-हे देवानुप्रिया । वीदशी
खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुष्टिता=पुत्री प्रभावत्या देव्या आत्मना=अज्ञाता, मल्ली
महाराजः हमलोग प्रयत्न करने पर भी इस कार्यमें असफल हो रहे
हैं-अतः आपको आज्ञा हो तो हम इन्हीं कुडलों जैसा कुडल और
यनादेवें-यस हमारा इतना ही कहना था कि राजा इकदम क्रोध के
आवेश में आ गये-और हमलोगों को अपने देश से निकल जाने की
आज्ञा दे बैठे । यस (त एएण कारणेण सामी ! अम्हे कु भएण निव्वि-
सया आणत्ता-तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवा
णुप्पिया ! कु भगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेह रायवर-
कन्ना) हे स्वामीन् यही कारण है कि जिससे हमलोग कु भक राजा के
द्वारा देश से निकल जाने के लिये आज्ञासहृण हैं-शङ्ख राजाने उन
सुवर्ण करों को अपने राज्यमें बसनेके लिये खुशी से आज्ञाप्रदान की ।

इस प्रकार सुनने के अनन्तर उस शङ्ख राजा ने सुवर्णकारों से
इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! कहो-कु भक राजा की वह विदेहवर

प्रयत्नो क्या होता था काममा अने सङ्ग थर्ध शक्या नहि अथी तमे आशा
आपो तो आ कुडलो जेवा ज थलीन जे कुडलो धडी आपीअे अमारी आ
वात साबणीने राज अेकदम लावयेण थर्ध गमा अने अमने पोताना देशथी
जहार जवानी आशा आपी दीधी

(त एएण कारणेण सामी ! अम्हे कु भए णं निव्विसया आणत्ता तएण से
सखे सुवन्नगारे एव वयासी केरिसियाण देवाणुप्पिया ! कु भगधूया पभावइए
देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना)

हे स्वामीन् ! यस अे कारणेने लीधे ज कुडल राजअे अमने देशवटी
आपो श थ राजअे ते जधा सोनीअेने पोताना देशमा रडेवानी खुशीथी
परवानगी आपी

सोनीअेनी आ जधी वात साबणीने श थ राजअे तेमने कहु डे-डे

વિદેહરાજવરકન્યા ? , તતઃ સ્વલુ તે સુવર્ણગારાઃ ગદ્ધ રાજાનમેવમવદન્-હે સ્વામિન્ ! નો સ્વલુ અન્યા કાચિત્ તાદૃશી દેવકન્યા યા ગન્ધર્વકન્યા વા યાવત્-અત્ર યાવચ્છેનેદ યોગ્યમ્-અસુરકન્યા નાગકન્યા યક્ષકન્યા વો ઇતિ, યાદૃશી સ્વલુ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લીમદૃશી કાઽપિ કન્યા લોકત્રયે નાસ્તીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ સ શદ્ધ' કાશીરાજઃ કુણ્ડલયુગલજનિતહર્ષઃ=કુણ્ડલયુગલમહત્ત્વશ્રવણમજા-તમલ્લોવિપયકાનુરાગ સન્ દૂત શબ્દયતિ, યાવત્-અત્ર યાવચ્છેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્-શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્રમેવ મિથિઞ ગત્વા કુમ્ભક રાજાન

રાજ કન્યા મલ્લી કુમારી-કિ જિસકા જન્મ પ્રભાવતી કી કુક્ષિ સે હુઆ હૈ-કૈસી હૈ ? (તપ્પણ તે સુવર્ણગારા સલ્વરાય એવ વયાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઠ તારિસિયા દેવકન્ના વા ગન્ધર્વકન્ના વા જારીસિયાળ મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તપ્પણ સે સલ્વે કુણ્ડલયુગલજનિતહાસે દૂય સદાવેહ, જાવ તહેવ પહારેત્ય ગમણાળ) ઇસકે પ્રત્યુત્તર મેં ડન સુવર્ણ કારોંને શલ્લ રાજા સે ઇસ પ્રકાર કહા હે સ્વામિન્ ! એસી તો કોઈ દેવ-કન્યા ઓ નહીં હૈ, ગન્ધર્વ કન્યા ઓ નહીં હૈ, અસુરકન્યા ઓ નહીં હૈ, નાગકન્યા ઓ નહીં હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ કન્યા હી હૈ કિ જૈસી વિદેહ વર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી હૈ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ કિ-મલ્લી કુમારી જૈસી કન્યા લોકત્રય મેં ઓ નહીં હૈ । ઇસ પ્રકાર કુણ્ડલયુગલ કે મહત્ત્વ શ્રવણ સે મલ્લીકુમારી કે વિપય મેં જિસે અનુરાગ (ભાવ ડ-ત્પન્ન હો ચુકા હૈ) એસે ડસ શલ્લ રાજાને દૂતકો બુલાયા-બુલાકર ડસ સે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ શીઘ્ર હી મિથિલા જાકર કુમ્ભક

દેવાનુપ્રિયો ! બતાવો કુણ્ડલ રાજાના વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી કે બેના જન્મ પ્રભાવતીના ગર્ભથી થયો છે તે ડેવી છે ?

(તપ્પણ તે સુવર્ણગારા સલ્વરાય એવ વયાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઠ તારિસિયા દેવકન્ના યા ગન્ધર્વકન્ના વા જારીસિયાળ મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તપ્પણ સે સલ્વે કુણ્ડલયુગલજનિતહાસે દૂય સદાવેહ, જાવ તહેવ પહારેત્ય ગમણાળ)

તેના જવાબમા સોનીઓએ શય રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામીન્ ! ડેવી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી છે તેવી તો દેવકન્યા પણ નથી, ગન્ધર્વકન્યા પણ નથી, અસુર કન્યા પણ નથી, નાગકન્યા પણ નથી અને યક્ષ કન્યા પણ નથી તાત્પર્ય એ છે કે-મલ્લીકુમારી ડેવી કન્યા ત્રણે લોકોમા પણ નથી

આ રીતે કુણ્ડોના મહત્ત્વ વિષે વાત સામળતા જ મલ્લીકુમારીના ઉપર ડેના મનમા અનુરાગ જન્મ પામ્યો છે એવા તે શય ગળાએ ઇતને બોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમા મત્તવે

બૂદ્ધિ-શક્તિ: કાશિરાજસ્તર કન્યકા મલ્લી 'ગાન્ઢતિ' ઇત્યાદિ । તથૈવ=પૂર્વોક્ત રુ-
ક્મિદૂતવત્, પ્રાધારયદ્ ગમનાય=તતઃ શક્તસ્ય કાશીરાજસ્યાત્તયા સ દૂતો રથા
રુઢ સન્ યતૈવ મિથિલાનગરી તતૈવ ગન્તુ પ્રવૃત્ત ઇત્યર્થઃ । ઇતિ ચતુર્થસ્ય શ્લોકસ્ય
રાજ્ઞઃ સમ્બન્ધઃ રૂપિત ॥ સુ. ૨૬ ॥

મૂલમ્—તેણ કાલેણ તેણ સમણં કુરુજણવણ હોત્થા, તત્થ
ણ હત્થિણાઊરનયરે અદીણસત્તૂ નામં રાયા હોત્થા, જાવ વિહ-
રહ, તત્થ ણં મિહિલાણ કુભગસ્સ પુત્તેપભાવઈણ અત્તણ મહ્છોણ
અણુજાણણ મલ્લદિન્નણ નામકુમારે જાવ જુવરાયા યાવિ હોત્થા
તણં મલ્લદિન્ને કુમારે અન્નયા કોઢુંવિયં સદાવેહ, સદાવિત્તા
એવં વયાસી-ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા । તુબ્બે મમ પમદવર્ણસિ
ણં મહ ચિત્તસમ કરેહ અણેગ જાવ પચ્છપ્પિણંતિ, તણ સે
મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેણિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-તુબ્બે
ણં દેવાણુપ્પિયા । ચિત્તસમ હાવભાવવિલાસ વિઠ્ઠોયકલિણહિં
રુવેહિં ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જાવ પચ્છપ્પિણહ, તણં સા ચિત્તગર
સેણી તહત્તિ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા જેણેવ સયાહ ગિહાહ
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા, તૂલિયાઓવન્નણ ય ગિણિહહ,

રાજાસે કહો કિ કાશી દેશાધિપતિ શાંલ રાજા આપકી કન્યા મલ્લી
કુમારી કો ચાહતે હૈ ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રકાર અપને રાજા કાશી રાજ કી આજ્ઞા સે વહ દૂત રથ પર
આરુઢ હોકર જહા મિથિલા નગરી થી ડસ ઓર ચલ દિયા । હસ તરહ
યહ ચતુર્થ શાંલ રાજા કા વૃત્તાન્ત પ્રકાર કહા ગયા હૈ । સૂત્ર " ૨૬ "

પહોચોઃ અને કુલક રાજાને કહો કે કાશી દેશાધિપતિ શાંલ રાજા તમારી
કન્યા મલ્લીકુમારીને આહો છે વગેરે

આ રીતે પોતાના રાજા કાશી રાજાની આજ્ઞા મેળવીને હત રથ ઉપર
સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો । આ
રીતે આ ચોથા શાંલ રાજાનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ. " ૨૬ " ।

गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता
भूमिभागे विरचइ, विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तसमं
हावभाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होन्था, तएणं एगस्स
चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलच्छापत्ता अभिसमन्नागया-
जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि
पासइ, तस्स णं देसाणुसारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ,
तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण
पायगुट्ट पासइ, तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं
खलु मम मल्लीए एवि पायगुट्टाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणो
ववेय रूव निव्वत्तित्तेए, एव संपेहेइ, सपेहित्ता भूमिभागं सज्जेइ,
सज्जित्ता मल्लीएवि पायगुट्टाणुसारेण जाव निव्वत्तेइ, तएणंसा
चित्तगरसेणी चित्तसभ हावभाव जाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव
मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ,
तएण मल्लदिन्ने चित्तगरसेणि सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता
सम्माणित्ता विपुल जीवियारिह पीइदाणदलेइ, दलित्ता पडि-
विसज्जेइ । तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल-
सपरिवुडे अम्मधार्इए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभाव-
विलास विव्वोयकलियाइ रूवाइ पासमाणे२ जेणेव मल्लीए
विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ
गमणाए ॥ सू०२७ ॥

ટીકા-અય પશ્ચમસ્યાદીનશત્રુનામો રાજ સમ્યન્ધમસ્તાયમાહ-‘તેણ કાલેજ’
 इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुरुजण्डः=कुरु नामको देशः, आसीत्,
 तत्र=तस्मिन् देशे, हस्तिनापुरे-नगरे अदीनशत्रुनाम राजाऽऽसीत्० यावद् विहरति
 -राज्य पालयन् स आस्त स्मेत्यर्थः ।

इत्थ तत्र खलु मिथिलाया कुम्भकस्य पुत्रः प्रभायत्या आत्मजः=अनुजातः,
 मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकाया अनुजातकः=लघुभ्राता, मल्लदत्तो नाम कुमारः,
 यावद्-राजनीतिकुशलो युराजश्चाप्यभूत् । ततस्तदनन्तर मल्लदत्तः कुमारः

‘ તેણ કાલેજ તેણ સમણ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેજ તેણ સમણ) उस काल और उस समयमें (कुरु
 जणवए होत्था-तत्थण हत्थिणाउरनयरे अदीण सत्तू नाम राया होत्था
 जाव विहरइ) कुरु नाम का देश या-उस में हस्तिनापुर नाम के नगर
 में अदीन शत्रु नाम के राजा रहते थे । ये न्याय नीति के अनुसार
 अपने राज्य का परिपालन अच्छी तरह से करते थे । (तत्थ ण मिहि
 लाए कुम्भकस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल दिमए
 नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था) उस मिथिला नगरी में कुम्भक
 राजा के यहां प्रभावती से एक पुत्र और हुआ था-जिस का नाम मल्ल
 दत्त कुमार था यह मल्ली कुमारी का छोटा भाई था ।

राजनीति में यह विशेष निष्णात था । अत राजा ने इसे युवराज

‘ તેણ કાલેજ તેણ સમણ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેજ તેણ સમણ) તે કાળે અને તે સમયે

(કુરુજણવए होत्था तत्थण हत्थिणाउरनयरे अदीणसत्तू नाम राया होत्था
 जाव विहरइ)

કુરુ નામે દેશ હતો તેમા હસ્તિનાપુર નામે નગરમા અદીનશત્રુ નામે
 રાજા રહેતો હતો તે ન્યાય અને નીતિને અનુસરીને રાજ્ય-શાસન
 ચલાવતો હતો

(તત્થ ણ મહિલાए कुम्भकस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल
 दिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था)

તે મિથિલા નગરીમા કુલક રાજાને ત્યા પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી એક
 પુત્રનો જન્મ થયો હતો તેનું નામ મલ્લદત્તકુમાર હતું અને તે મલ્લીકુમારીનો
 નાનો ભાઈ હતો રાજનીતિમા તે ખૂબ જ નિષ્ણાત હતો એથી રાજાએ યુવ
 રાજપદે તેની નીમણૂક કરી હતી

अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्- हे देवानुप्रियाः । गच्छत खलु युय मम 'पमदवणसि' प्रमदवने = अन्तःपुरस्थितोद्याने, एका महती 'चित्तसभ' चित्रसभा=चित्रगृह 'करेह' कारयत चित्रसभाया विशेषणमाह- 'अणेग' इति-अणेशखमसयसनिविद्ध 'अनेकस्तम्भशतसनिगिष्टम्, अनेके-अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचाकचिक्यचञ्चक्षुश्चित्ताहादजनरुमणिगत-विचित्रशिल्परचना सुशोभिता ये स्तम्भाः सुवर्णमयस्तम्भाः, तेषां शतैः सनिगिष्टम् =समन्वितम्, 'जाव पञ्चप्पिणति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-कौटुम्भिकपुरुषास्तथैव चित्रसभा कृत्वा मल्लदत्तस्य पुरः समागत्य तदाज्ञा निवेदयति, भवदाज्ञाऽनुसारेण सर्वं सावितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततः खलु स महद्वत्तश्चित्र-

का पद प्रदान कर दिया था । (तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडु विय०सदावेड सदावित्ता एव वयासी-गच्छहण देवाणुप्पिया । तुम्हे मम पमदवणसि एग मह चित्तसभ करेह अणेग जाव पञ्चप्पिणति) एक दिन मल्लदिन्न कुमार ने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ और प्रमदोद्यान में-अन्तःपुर-स्थित बगीचे में एक बड़ा चित्रगृह बनाओ ।

वह अनेक सुवर्ण मय स्तम्भशत से समन्वित हो । इन स्तम्भों में नाना वर्ण के चमकीले मणि जड़े हुए हो । जो अपनी चाकचिक्य से चक्षु और चित्त के आह्लादक हो । इन मणियों द्वारा उन स्तम्भों में विचित्र शिल्प रचना की गई हो । इस प्रकार मल्लदत्त कुमार की आज्ञा प्राप्त कर उन कौटुम्भिक पुरुषों ने उसी के अनुसार चित्रगृह की रचना

(तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुविय०सदावेड सदावित्ता एव वयासी गच्छहण देवाणुप्पिया । तुम्हे मम पमदवणसि एग मह चित्तसभ करेह अणेग जाव पञ्चप्पिणति)

એક દિવસે મલ્લદિનકુમારે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું--કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે પ્રમદોદ્યાનમાં જાઓ અને ત્યાં રણ-વાસના ઉગ્રાનમાં એક મોટું ચિત્રગૃહ તૈયાર કરો.

ચિત્રગૃહ સેકડો સોનાના થાલલાવાળું હોયુ જોઇએ તે થાલલાઓમાં ચમકતા ઘણા મણિઓ જડેલા હોવા જોઇએ પોતાના પ્રજારાથી જીનારાની આંખોને આજી દે તેવું તેમજ ચિત્તને આહ્લાદ આપનાર હોયુ જોઇએ મણિઓ વડે તેના થાલલાઓમાં જાતજાતના ગિટપની રચના કરવામાં આવેલી હોવી જોઇએ આ રીતે મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા મેળવીને કૌટુમ્બિક પુરુષોએ

કરશ્રેણિ=ચિત્રકારાન્ શન્દયતિ, શન્દયિત્વૈયમગાદીત્- હે દેવાનુપ્રિયા: ! યૂયં સહુ
 ચિત્રસમા=ચિત્રગૃહ 'દાસભાવવિલાસવિગ્નોયકલિર્ણદિ' દાસભાવવિલાસવિગ્નોયકલિતૈ:
 =શૃંગારભાવાભ્યા સજાતા સ્ત્રીચેષ્ટા દાસ:, ભાગ્યો મનોવિકાર, વિલાસો દાસભેદ:
 વિગ્નોયકલિઃ-અભિમતપ્રાપ્તાવપિગર્વાદનાદર:, અયમપિ દાસભેદ: । અન્યેત્વેવમાહુ —

દાસો મુલવિકાર: સ્યાદ્ ભાવશિત્તસમુદ્ભવ: ।

વિલાસો નેત્રજો જ્ઞેયો વિભ્રમો ભૂ સમુદ્ભવ: ॥૬૩૥

કરકે ઉસે સ્વચર દી કિ આપકી આજ્ઞાનુસાર હમને સત્ર કામ કર લિયા હૈ।

(તણસે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેણિ સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવ વયાસી)
 હસકે ઘાદ ઉસ મલ્લદત્ત કુમાર ને ચિત્રકારોં કો બુલવાયા ઓર બુલા
 કર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા-(તુભેળ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમ દાસભાવ
 વિલાસ વિગ્નોયકલિર્ણદિ રુવેદિ ચિત્તેદ ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ)
 હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ ચિત્રગૃહ કો દાસ, ભાવ, વિલાસ, એવ વિગ્નોય
 યુક્ત ચિત્રો સે ચિત્રિત કરો । સ્ત્રિયો કી જો ચેષ્ટા શૃંગાર એવ મનો
 વિકાર જન્ય હોતી હૈ-ઉસ કા નામ દાસ હૈ । માનસિક વિકૃતિકા નામ
 ભાવ હૈ । વિલાસ દાસ કા હી એક પ્રકાર હૈ । અભિ મત (ઇચ્છિત) કી
 પ્રાપ્તિ હોને પર ભી જો ગર્વ સે ઉસ મેં અનાદર હોતા હૈ-ઉસ કા નામ
 વિગ્નોયક હૈ । યહ ભી દાસ કા હી એક ભેદ હૈ । હન દાસ ભાવાદિકોં કે
 વિષય મેં કોઈ ૨ એસા ભી કહતે હેં કિ મુલ કા જો વિકાર હોતા હૈ
 વહ દાસ હૈ, ચિત્ત સે જો વિકાર ઉત્પન્ન હોતા હૈ, વહ ભાવ હૈ । નેત્ર

તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચિત્રગૃહનું નિર્માણ કરીને તેમને ખખર આપી કે
 આજ્ઞા મુજબ અમોએ બધું કામ પુરૂ કરી નાખ્યું છે

(તણ સે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેણિ સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવ વયાસી)

ત્યારબાદ મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રગૃહને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે-

(તુભે ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમ દાસભાવવિલાસવિગ્નોયકલિર્ણદિ રુવેદિ
 ચિત્તેદ, ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ચિત્રગૃહને હાવ, ભાવ, વિલાસ અને ગિમ્બોક્ષવાળા
 ચિત્રોથી ચિત્રિત કરો । સ્ત્રીઓની શૃંગાર અને મનોવિકાર જન્યને ચેષ્ટાઓ
 હાવ કહે છે માનસિક વિકૃતિનું નામ ભાવ છે અભિમત (ઇચ્છિત) ની
 પ્રાપ્તિ હોવા છતાં પણ ગર્વથી જે તે અનાદર હોય છે તેનું નામ વિગ્નોયક
 છે તે પણ હાવનો જ એક પ્રકાર છે આ હાવ, ભાવ વગેરેના વિષે કેવલાક
 આ પ્રમાણે પણ કહે છે કે મોનો વિકાર જ હાવ છે, ચિત્તથી જ ને-તે

एतैर्हावादिभिः कलितैर्च्युक्तैः, रूपैः=चित्रविशेषै चित्रयत=चित्रित कुरुत,
चित्रयित्वा यावत् प्रत्यर्पयत=ममाज्ञा मपादितेति मा कथयतेत्यर्थः । ततस्तदनन्तर
खलु सा चित्रकारश्रेणिः=तथेति='तथास्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृणोति=स्वीकुरु-
ते स्म । पतिश्रुत्य यत्रैव स्वकानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य 'तूलियाओ
वन्नएय' तूलिका वर्णकाश्च=तूलिका=केशमण्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, वर्णकान्=
पञ्चवर्णकद्रव्याणि, च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चित्रसभा तत्रैवानुभविसति, अनुभविस्य
भूमिभाग=चित्रविरचनस्थान 'विरचद्' वेवेक्ति=अनेत्य चित्रणीयमिति कृत्वा
रेखादिभिर्भित्त्यादी विभाग करोति, 'विरचित्ता' विविच्य=भूमिं सज्जयति
से जो भाव उत्पन्न होता है वह चित्तास एव भू से जो उत्पन्न होता है
वह विभ्रम है । जय इस प्रकार के चित्रों से वह चित्रगृह चित्रित हो
जावे-तब हमें इस की खबर दो-(तएण मा चित्तगरसेणी तहत्ति
पडिस्सुणेइ, पडिस्सुणित्ता जेणेव सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छइ उवा
गच्छित्ता तूलियाओ वन्नएय गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा
तेणेव अणुपविसइ) इस के बाद उस चित्रकार श्रेणि ने " तथास्तु "
इस प्रकार कहकर मल्लदत्त कुमार की आज्ञा को स्वीकार कर लिया-
और स्वीकार करके फिर वे सब के सब अपने २ घर आ गये-वहा
आकर उन्होंने ने अपनी २ तूलिकाओं को और वर्णको-पञ्चवर्ण वाले
द्रव्यों को लिया-लेकर जहा-वह चित्रगृह या उस ओर चल दिये ।
वहा आकर वे उस के अन्दर गये (अणुपविसित्ता भूमिभागे विरचेइ
विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सिज्जित्ता चित्तसभा हाव भाव जाव चित्तेउ

ભાવ છે, નેત્રથી જે ભાવ ઉત્પન્ન હોય છે તે વિલાસ અને લલાથી જે ઉત્પન્ન
હોય છે તે વિભ્રમ છે ન્યાયે આ પ્રમાણે તે ચિત્રગૃહ ચિત્રિત થઈ નય
ત્યાયે અમને તમે સૂચિત કરશે

(તર્ણ સા ચિત્તગરસેણી તહત્તિ પડિસુણેइ પડિસુણિત્તા જેણેવ સયાइ ગિહાइ
તેણેવ ઉવાગચ્છइ ઉવાગચ્છિત્તા તૂલિયાઓ વન્નણયગિણ्हइ, ગિણ्हિત્તા જેણેવ ચિત્ત-
સમા તેણેવ અણુપવિસइ)

ત્યારપછી તે ચિત્રકારોએ તથાસ્તુ' (સાડ) આ પ્રમાણે કહીને મલદત્ત
કુમારની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાને ઘેર
આવી ગયા ત્યા આવીને તેઓએ પોતપોતાની પીંટીઓ અને વર્ણકા એટલે-
કે પાંચ રંગવાળા દ્રવ્યોને માથે લીધા અને લઈને જે તરફ ચિત્રગૃહ હતું
તે તરફ રવાના થયા ત્યા પહોંચીને તેઓ તેમા પ્રવિષ્ટ થયા

અણુપવિચિત્તા ભૂમિમાગે વિરચેઃ વિરચિત્તા ભૂમિં સજ્જેइ, સજ્જિત્તા ચિત્ત

मार्जनादिभिः परिष्करोति, सञ्जयित्वा चित्तमभा 'हावभाव-जाव' हावभाव-
यावत्=हावभावविनासप्रयोगरहितैः, रूपैः चित्रविशेषैः, 'चित्तेउ' चित्रयितु
'पयत्ता' प्रयत्ता चाप्यभवत्। सा चित्रकारश्रेणिश्चित्रगृह हावभावादियुक्त चित्र-
विशेषैश्चित्रयितु प्रवर्ततेस्म 'इत्यर्थ' ।

ततः=तत्र खलु एकस्य चित्रकारस्य इमेयारूपा' इयमेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा
चित्रकरलब्धि =चित्रकरणविशिष्टशक्ति', मनसि यादृश रूप चिन्तयति तादृश करोत्येव
भूता लब्धिः, लब्धा=उपार्जिता, प्राप्ता=स्वायत्तिकृता, अभिसमन्वा गता=सम्यगासे-

पयत्ता यावि होत्था) अन्दर प्रविष्ट होकर मयसे पहिले उन्होंने ने चित्र
रचने के स्थान को रेखादि द्वारा अंकित किया

यहा इस प्रकार का चित्र काटना चाहिये इस प्रकार के विचार से
भित्ति के ऊपर रेखा आदि खींचकर उन्होंने ने उस का विभाग किया-
विभाग कर के फिर वहा की भूमि को उन्होंने ने साफ किया-साफ कर
के फिर वे चित्रकार उस चित्रगृह को हाव भाव आदि वाले चित्र
विशेषों से चित्रित करने में लग गये । (तएण एगस्स चित्तगस्स इमे
यारूवे चित्तगर लद्धी लद्धा, पत्ता अभि समन्वागया-जस्सण दुपयस्स
वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सण देसाणु-
सारेण तयाणुरूव रूवं निव्वत्तेइ) इन में एक चित्रकार ऐसा था जिसमें
चित्र करने की विशिष्ट शक्ति थी । इस ने इस शक्ति को पहिले से ही

सम हाव भाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था)

तेभा प्रवेशीने तेओओ सौ पडेला चित्र जनाववानी जग्था उपर
रेओओ जनावी

अर्धी आ प्रभाहे चित्र तैयार करवानु ठे आ प्रभाहे विचार करीने
सीत वगेरे उपर रेओओ वगेरे होरीने तेभने विलाज्जन कथुं, विलाज्जन
करीने ते स्थानने तेओओ स्वच्छ जनावु स्वच्छ जनावीने ते चित्रकारी
चित्रगृहने हाव भाव वगेरेना विशेष चित्रोथी चित्रित करवा लाग्या।

(तएण एगस्स चित्तगस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिममन्ना
गया, जस्सण दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स
ण देसाणुसारेण तयाणुरूव रूवं निव्वत्तेइ)

आ जधाओओ ओक चित्रकार ओवो पणु हुतो के तेभा चित्र तैयार
करवानी विशेष शक्ति हुती तेहे चोतानी चित्र जनाववानी आसाधार ।

विता, यस्य, खलु द्विपदस्य-मनुष्यादेर्ना चतुष्पदस्य गवादेर्वा, अपदस्य=चरण
रहितस्य सपदीशृङ्गादेर्वा, एकदेशमपि एकाङ्गमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण
चक्षुर्गोचरीकृतैकदेशानुसारेण 'तयाणुरुव' तदनु रूपं दृष्ट द्विपदादियोग्य, रूपं चित्र
'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति । ततस्तदनन्तरं खलु स चित्रकरदारको मल्लयाः=
मल्लीकुमारिकाया, 'जवणियतरियाए' यवनिक्कान्तरिताया =यवनिकया - पर
दारुणेन आवरणपटेन, अन्तरिताया'-व्यवहृताया परदाभ्यन्तरस्थिताया इत्यर्थः ।
जालान्तरेण=गवाक्षरन्ध्रेण पदाङ्गुष्ठं पश्यति-दृष्टवान् । ततः खलु तस्य चित्रकारस्य=
चित्रकारदारकस्य, अयमेतद्वृत्तः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूप, यावद्=विचारः समुदपद्यत-
श्रेयः=श्रेयस्करम् अभ्युदयजनक, खलु मम मल्लया अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण सदृशक=
मल्लीसमानयावद्-गुणोपपेत=मल्लया अङ्गेषु यत्र ये सौन्दर्यादिगुणाः तैः समन्वित,

उपार्जितं क्रिया-या-प्राप्तं क्रिया-था-उत्स मे यह विज्ञेयं चतुर था,
इस का इसे अच्छा अभ्यास था ।

यह जिस मनुष्यके, चतुष्पद गवादिके, अपठ सर्पादि अथवा वृक्षादि
के जिस किसी एक एक भाग को देख लेता तो उसी के अनुसार यह
उस का पूर्ण चित्र अंकित कर देता था । (तएण से चित्तगरदारए
मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण पायगुट्ट पासइ, तएण तस्स
चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पायगुट्टाणु-
सारेण सरिसगं जाव गुणोववेय रूपं निव्वत्तिए एव सपेहेइ) एक
दिन इस चित्रकार ने परदा के भीतर बैठी हुई मल्लिकुमारी के पैर
का अगूठा गवाक्ष छिद्र से देख लिया था सो उस के मन में ऐसा विचार
आया कि मेरे लिये यह श्रेयस्कर है कि मैं मल्ली कुमारीका भी पादा
ङ्गुष्ठानुसार यावत् गुणोपपेत उसी के जैसा चित्र बनाऊँ ।

पडेलेथी न भेजवेनी हती चित्रकणामा ते भूण न प्रवीण तेभन तेना ते
साहे । अथ्यामी हतो ।

ते चित्रकार माणसना, गाय वगेरे बापगाओना, माप वगेरे अपहोना
अथवा तो वृक्ष वगेरेना डेधपणु ओक लाग लेध लेतो अने त्यारमाइ ते
प्रमाणेना न आयेहुण तेभना चित्र होरतो हतो ।

(तएण से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण पायगुट्ट
पासइ तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पाय-
गुट्टाणुसारेण सरिसगं जाव गुणोववेय रूपं निव्वत्तिए एव सपेहेइ)

ओक द्विपद ते चित्रकारे पडहानी पाछण ओलेही मल्लीकुमारीना पगने
अगूठा गवाक्षना जालामाथी लेध लीथो त्यारे तेना मनमा ओम थयु के हु
मल्लीकुमारीना पगना अगूठना जेवु न सु-र चित्र होनाउ उइ

रूप=चित्र निर्वर्तयितु=रचयितुम् । एरम्=उक्तप्रकारेण, सप्रेक्षते=स चित्रकरदारको विचारयतिस्म । सप्रेक्ष्य=मनसि निमृश्य, भूमिभाग=चित्रकरणस्थान सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्कारोति, सज्जयित्वा मल्लया अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण यावत्=सदृशक गुणोपपेत रूप निर्वर्तयति=रचयतिम् । ततस्तदन्तर रलु सा चित्रकार-श्रेणिश्चित्तसभा 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलासविबोक्कलितैः रूपैः, चित्रैः 'चित्तेड' चित्रयति, चित्रयित्वा यत्रौ मल्लदत्त कुमारस्तत्रौरोपागच्छति, उपागत्य यावत् एतामाज्ञा प्रत्यर्पयति- हे स्वामिन् । भयदाज्ञानुसारेण चित्रगृह

मल्ली कुमारी के अंग में जहा २ जो जो सौन्दर्यादि गुण है उन सब गुणों को उस मल्ली कुमारी के चित्र में अंकित करूँ । ऐसा जब उस ने विचार किया- (सपेक्षित्ता) तो उस विचार के अनुसार (भूमि भाग सज्जेड, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुष्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेड, तएण सा चित्तगरसेणी चित्तसम हावभावजाव चित्तेड, चित्तिता जेणेव मल्ल दिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) उस ने वहाँ का भूमिभाग साफ किया-मार्जन, लेप आदि द्वारा उसे संस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उस ने वहाँ मल्ली कुमारी का भी दृष्ट पादाङ्गुष्ठ के अनुसार बिलकुल हृद्यहृ जैसे के तैसा गुणोपपेत रूप-चित्र अंकित कर दिया ।

इसके बाद उस चित्रकारो की श्रेणी ने उस चित्रगृह को हावभाव विलास एव विबोक्क वाले रूपों से-चित्रों से अंकित कर दिया-चित्रित कर दिया-चित्रित कर फिर वे सब के सब मल्लदत्त कुमार जहा बैठा

मल्ली कुमारीना अंगमा ज्जा ज्जा जे जे सौन्दर्याना शुद्धो छे ते ज्जा शुद्धोने ते मल्लीकुमारीना चित्रमा अंकित कइ आ प्रभावे ज्जादे तेजे विचार कर्यो- (सपेक्षित्ता) अने ते विचार ने अनुसरता ज

(भूमिभाग सज्जेड, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुष्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेड तएण सा चित्तगर सेणी चित्तसम हावभाव जावचित्तेड, चित्तिता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ)

तेजे ते ज्जाने म्वछ जनावी अने भाज्जन लेपन वजेरथी ते स्थानने साइ क्युं साइ क्यो जाइ तेजे पडेला जेयेला मल्ली कुमारीना पगना अङ्गना जेवु ज आजेहुण शुद्धोपेत इय चित्र अंकित क्युं

त्यार जाइ चित्रकरोअे ज्जादे चित्रगृहने हावभाव विलास अने विबोक्कना चित्रोथी चित्रित करी आप्थु त्थादे तेज्जे ज्जा ज्जा मल्लदत्त

चित्रितमस्माभिरित्येव चित्रकारश्रेणि. कथयति स्मेत्यर्थः। ततः सलु मल्लदत्तश्चित्र-
कारश्रेणि 'सकारेइ' सत्कारयति, वचनादिना, समानयति=वस्त्रादिना। 'सका-
रित्ता' सत्कार्य-सत्कार कृत्वा 'सम्माणित्ता' समान्य विपुल=विस्तीर्ण 'जीवि-
यारिह' जीविकारह-वृत्तियोग्य, 'पीडदाण' प्रीतिदान-परमहर्षहतुरु दान ददाति
दत्त्वा प्रतिविसर्जयति। ततः खलु मल्लदत्तोऽन्यदा-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये
स्नातोऽन्तः पुरपरिवासपरितुः 'अम्म गार्इए' अम्माधात्र्या=उपमात्रा सार्ध यत्रैव
चित्रसभा=चित्रगृह वर्तते, तत्रोपागच्छति। उपागत्य चित्रसभामनुपविशति=
चित्रगृहे प्रवेश करोति, अनुप्रविश्य हावभावविलासमिब्वोरुकरुलितानि रूपाणि=

था-वहा आये-आकर के उन्होने उससे कहा स्वामिन्। हमलोगो
आपकी आज्ञानुसार चित्र गृह को चित्रित कर दिया है-(तएण) इस
प्रकार चित्रकारों के मुख से सुनकर (मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणि-
सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिह पीड-
दाण दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ) मल्लदत्त कुमारने उस चित्रकार
श्रेणी का सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिरउस
ने उसे विपुल जीविकाके योग्य प्रीतिदान दिया-और बाद मे उसे
विसर्जित कर दिया। (तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल
सपरिवुडे अम्मगार्इए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ) इसके
पश्चात् किसी एक दिन वह मल्लदत्त कुमार स्नान कर के अन्तः पुर
परिवार से युक्त होकर अपनी अम्माधात्री के साथ जहा चित्रगृह था
वहाँ गया-(उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुपविमइ अणुपविसित्ता हावभाव

कुमार जेठा हुता त्या आव्या अने आवीने तेओओ आ प्रमाणे उद्धु-डे
डे स्वामिन्। तमारी आज्ञा सुजण अओओ चित्रगृह तैमार करी दीधु छे
(तएण) आ रीते चित्रकारे ना भोथी भावगीने

(मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणि सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता,
विपुलजीवियारिह पीडदाण दलेइ, दलित्ता पडिविमज्जेइ)

मल्लदत्त कुमारने चित्रकारोनु मल्लदत्त तेमज सम्मान उधु, सत्कार अने
सम्मान करीने तेओ तेमने पुष्कण प्रमाणभा अणुविकायोग्य प्रीतिदान आप्थु
अने ल्यार पछी तेओओने न्वानी रत्न आपी

(तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल सपरिवुडे अम्म गार्इए सद्धि
जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ)

त्या पत्री दोध ओक द्विस मल्लदत्त कुमार स्नान करीने श्रुवासना
परिवारने साथे लईने पोतानी अम्माधात्रीनी साथे ल्या चित्र गृह हुतु र्ता गये

ચિત્રાણિ પश्यન્ યઃ૧ મલ્લયા વિદેહરાજપુત્રકન્યાયાઃ, ' તયાણુરૂપે ' તદનુરૂપ= તત્સદૃશ, રૂપ=ચિત્ર ' ણિવ્યક્તિષ્ ' નિર્વ્યક્તિત = રચિત માસોત્ તર્જીવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય= ગન્તુ પ્રવર્તતેસ્મ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

મૂળ—તણં સે મલ્લદિન્ને કૂમારે મલ્લીષ વિદેહરાયવ-
કન્નાષ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્યક્તિય પાસઈ, પાસિત્તા ઇમેયારૂવે
અઙ્ગરિથિષ્ જાવસમુપજિત્થા—એસ ણં મલ્લીવિદેહરાયવરકન્ન
ત્તિકદ્દુ લજ્જિષ વીડિષ વિઅડે સણિયર પચ્ચોસકકઈ । તણ
મલ્લિદિન્ન અમ્મધાઈ પચ્ચોસકકત પાસિત્તા એવવયાસી—કિન્નં
તુમ પુત્તા । લજ્જિષ વીડિષ વિઅડે સણિ.ય સણિય પચ્ચોસકકઈ ?,

તણં સે મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈ એવ વયાસી—નો જુત્ત ણં
અમ્મો । મમ જેઠ્ઠાષ ભગિણોષ દેવયમ્મ્યાષ લજ્જાણિજ્ઞાષ મમ
ચિત્તગરણિવ્યક્તિય સમ્મ અણુપવિસિત્તષ્ ?, તણં અમ્મધાઈ
મલ્લદિન્ન કૂમાર એવ વયાસી—નો ખલ્લુ પુત્તા । એસ મલ્લી,
એસ ણ મલ્લીષ વિદેહરાયવરકન્નાષ ચિત્તગરણ તયાણુરૂવે

વિલાસવિમ્બોયકલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે જેણે મલ્લીષ વિદેહરાયવર-
કન્નાષ તયાણુરૂવે ણિવ્યક્તિષ્ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાષ) વહા જાકર ચિત્ર
ગૃહ મે પ્રવિષ્ટ હુઆ—પ્રવિષ્ટ હોકર હાવભાવ, વિલાસ એવ વિવ્યોક સે
યુક્ત ડન રૂપોંકો ચિત્રોં કો—વારર દેખતા હુઆ વહ જહા વિદેહ રાજવ
રકન્યા કા તદનુરૂપ ચિત્ર વના હુઆ થા ઉસ ઓર ગયા ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

(ઉવાગચ્છિત્તા ચિતસમ્મ અણુપવિપઈ અણુપવિસિત્તા હાવભાવવિલાસવિવ્યોય
કલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે ૨ જેણેવ મલ્લીષ વિદેહરાયવરકન્નાષ તયાણુરૂવે-
ણિવ્યક્તિષ્ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાષ)

ત્યા પહોચીને તે ચિત્રગૃહમા ગયો અને જઈને હાવભાવ વિલાસ
અને ણિવ્યોકવાણા તે ચિત્રને જોતા તે જ્યા વિદેહ રાજવર કન્યાના જેવું
જ ચિત્ર દોરેલું હતું તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર “ ૨૭ ” ॥

रूवे णिव्वत्तिए । तएण मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं
 सोच्चा आसुरुत्ते एव वयासी-केसणं भो चित्तयरए अपत्थिय
 पत्थिए जाव परिवज्जए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवय-
 भूयाए जाव निव्वत्तिए त्तिकट्ठु तच्चित्तगरवज्ज आणवेइ तएणं
 सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने
 कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयलपरिग्गहिय जाव
 वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी-एव खलु सामी । तस्स चित्तग-
 रस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया, जस्स
 णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ, त माणं सामी । तुव्वे तच्चित्तगरं
 वज्ज आणवेह, त तुव्वे णं सामी । तस्स चित्तगरस्स अन्न तथा
 णुरूव दड निव्वत्तेह । तएण से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स
 सडासग छिदावेइ छिदावित्तानिठ्विसय आणावेइ ॥ सू०२८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स मल्लदत्तः कुमारो
 मल्लया विदेहराजवरकन्याया-स्वाग्रजाताया भगिन्याः ‘तयानुरूपं’ तदनुरूप-
 मल्लीसदृश रूव-रूपं चित्रं, ‘निव्वत्तिय’ निर्वतित-वित्रकारदारकेण रचितं, पश्यति ।
 दृष्ट्वा ‘इमेयारूवे’ अयमेतद्रूप-अयं पश्यमाणस्वरूपः, ‘अज्जत्थिए’ आ-
 त्मिकः-आत्मगतः, यावत्-सकल्पः, ‘समुपज्जित्था’ समुपपद्यत-सजातः-एषा

‘तएण से मल्लदिन्ने कुमारे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) उस मल्लदत्त
 कुमार ने (विदेहराजवरकन्याए मल्लीण तथाणुरूव निव्वत्तिय पासइ,
 पासित्ता इमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित्था) विदेह राज की वर-

‘तएण से मल्लदिन्ने कुमारे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) तयार पास (से मल्लदिन्ने कुमार) ने भद्रे इत्युभादे
 (विदेह रायवार्त्ताए मल्लीर तथाणुरूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता इमे-
 यारूवे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित्था)

ચલુ મલ્લી વિદેહ રાજવરકન્યા, ડલિ કન્યા લજ્જિત' = સામાન્યતઃ, ગ્રીહિતઃ = વિશેષતઃ લજ્જિતઃ, વર્દઃ = સર્વથા લજ્જા પ્રાપ્તઃ સન્ ગનૈઃ ગનૈઃ 'પચ્ચોસકકહ' પ્રત્યવપચસ્કતે = તસ્માત્ સ્થાનાત્ પતિનિવર્તતેસ્મ । તતસ્તદનન્તર મલુ મઠદત્ત = મઠદત્ત કુમારમ્, 'અમ્માધાર્દ' અમ્મધાત્રી = માતૃપતિનિધિરૂપા ધાત્રીસ્તન્યાદિ દાનેન પોષિકા ઉપમાતેત્યર્થઃ, 'પચ્ચોસકકત' પ્રત્યવપચસ્કમાન પથાશ્ચિર્ત્તમાન દૃષ્ટ્વા એવ = વશ્યમાણ પ્રકારેણાવાદીત્-હે પુત્ર । કિં = કસ્માત્કારણાત્ ચલુ ૨૧ લજ્જિતો ગ્રીહિતો વર્દઃ = અત્યન્ત લજ્જિતઃ સન્ ગનૈઃ ગનૈઃ પ્રત્યવપચસ્કસે ? । તત ચલુ સ મલ્લદત્તકુમારઃ અમ્માધાત્રીમેવમગાદીત્-'અમ્મો !' હે અમ્મ ! 'નો જુત્ત' નો યુક્ત = નો

કન્યા મલ્લીકુમારીકા કિજો અપની ઘડી ઘટ્ઠિન શ્રી તદ્ભુરુપ ચિત્ર ચિત્ર-કાર દારક કે દ્વારા અદ્ધિત કિયા ગ ગ ઝ્યો હી દેવ્વા-તો દેવ્વકર ઉસ કે મન મેં હસ પ્રકાર કા સકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ-(તણ મલ્લી વિદેહ રાયવરકનનત્તિકકદ્દુ લજ્જિણ, વીહિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ) યહતો વિદેહરાજ કો વર કન્યા મલ્લી કુમારી હૈ । એસા વિચાર કરવહ પહિછે તો લજ્જિત હુઆ-વાદ મેં વિશેષરૂપ સે લજ્જિત હુઆ । ઓર હસ તરહ વહ દુઃખિત હોકર ધીરે ૨ વહા સે ચલદિયા । (તણ મલ્લદિન્ન અમ્મધાર્દ પચ્ચોસકકત પાસિત્તા એવ વયાસી-કિન્ન તુમ પુત્તા લજ્જિણ વીહિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ ?) હસ તરહ મલ્લીદત્ત કુમાર કો વહા સે ધીમી ૨ ચાલ સે જાતા હુઆ દેવ્વકર ઉસકી અમ્મા ધાય ને ઉસસે એસા કહા-ઝ્યો તુમ લજ્જિત-ગ્રીહિત એવ વિશેષ લજ્જિત હોકર યહા સે ધીરે ૨ ચલે જા રહે હો-(તણ સે મલ્લદિન્ને

જ્યારે પોતાની મોટી બહેન વિદેહવર કન્યા મલ્લીકુમારીતુ ચિત્રકારવડે દેશથેલુ આબેહૂળ ચિત્ર બેધુ ત્યારે તે બેતાજ તેના મનમાં વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (તણ મલ્લી વિદેહરાયવરકન ત્તિકકદ્દુ લજ્જિણ વીહિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ)

આતો વિદેહરાજની વરકન્યા મલ્લીકુમારી એ આમ વિચારીને પહેલાતો તે લજ્જિત થયો અને ત્યાર બાદ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે તે હુ ખી અવસ્થામાં ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો રહ્યો

(તણ મલ્લદિન્ન અમ્મધાર્દ પચ્ચોસકકત પાસિત્તા એવ વયાસી-કિન્ન તુમ પુત્તા લજ્જિણ વીહિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ ?)

આ રીતે મલ્લીકુમારને ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો બેધને તેની અબા ધાયે કહ્યું કે-તમે કેમ લજ્જિત-ગ્રીહિત અને અવિશેષ પીડિત થધને અહીંથી ધીમે ધીમે જઈ રહ્યા છો (તણ સે મલ્લદિન્ને અમ્મધાર્દ એવ ...)

ચિત્ત યલુ મમ ડ્યેષ્ટાયા મગિન્યા ગુરુદેવતભૂનાયાઃ, પૂજ્યાયા, લજ્જનીયાયાઃ= લજ્જતે યસ્યા સક્રાશાત્ મા લજ્જનીયા, 'કત્ય પ્રત્યયસ્ય પાહુલકૃત્વાદપાદાને- ડનીયર પ્રત્યયઃ' તસ્યા અગ્રે મમ ચિત્રકરનિર્વર્તિતા મમા=ચિત્રગૃહમ્ અનુપવેષ્ટમ્ અત્ર યલુ ચિત્રગૃહે મમ પૂજ્યા ડ્યેષ્ટા મગિની મલ્લીકુમારી સ્થિતાઽસ્તિ, તસ્માદત્ર મમ પ્રવેશકરણ નોચિત મિત્યર્થઃ. તતસ્તદનન્તર યલુ અમ્માધાત્રીમલ્લદત્ત કુમાર મેવાદીત્- હે પુત્ર ! નો યલુ=નિશ્ચયેન ઇપા મલ્લીપ્રતે, કિંતુ ઇતત્ યલુ મલ્લ્યા વિદેહરાજરકન્ધાયા શ્રિત્રકરેગ તદનુરૂપ રૂપ=ચિત્ર નિર્વર્તિત=રચિતમસ્તિ । તસ્માદત્ર લજ્જાકરણ તવ નોચિતમિતિ ભાવઃ ।

અમ્માધાઈ (અવ વયાસી) ઇસ પ્રકાર સુનકર ડસ મલ્લદત્ત કુમારને અમ્મા- ધાય સે ઇસા કહા-(ગો જુત્ત ણ અમ્મો ! મમ જેદ્વાળ મગિનીં ઇ ગુરુદેવભૂ- આઇ મમ ચિત્તગરણિવ્વત્તિય સમ અણુપવિસિત્તણ) મુક્કે ચિત્રકાર સે નિવર્તિત ઇસ ચિત્રગૃહમેં પ્રવેશ કરના ડચિત નહીં હૈ, કારણ યહા મેરી ગુરુદેવ જૈસા-પૂજ્ય તયા જિસકે સમક્ષ મે લજાતા હૈં-જિનકે સામને આતે જાતે મુક્કે લજ્જા આતી હૈ-ઇસી ઘડી ઘરિન ઘેઠી હુઈ હૈં ।

તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ ઇમ ચિત્રગૃહ મેં મેરી પૂજ્ય ઘરિન મલ્લી કુમારી ઘેઠી હુઈ હૈ ઇસલિયે ડનકે સમક્ષ મુક્કે યહાં પ્રવેશ કરતે હુઇ લજ્જા આતી હૈ । (તણ અમ્માધાઈ મલ્લદિન્ન કુમાર ઇવ વયાસી-નો યલુ પુત્તા ઇસ મલ્લી-ઇસણ મલ્લીં ઇ વિદેહરાયવરકન્ના ઇ ચિત્ત ગરણ તયાણુરૂવે ચિત્તે ણિવ્વત્તિં) ઇસા સુનકર અમ્માધાત્રી ડપમાતા ને મલ્લદત્ત કુમારસે ઇસ પ્રકાર કહા-હે પુત્ર ! યે સ્વય મલ્લી કુમારી નહીં હૈ-યહ તો વિદેહરાજકી ડત્તમ કન્યા ડન મલ્લી કુમારી કા ચિત્ર

આ પ્રમાણે સાક્ષીને તે મલ્લદત્ત કુમારે અજાધાય ને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-
(ગો જુત્ત ણ અમ્મો ! મમ જેદ્વાળ મગિનીં ઇ ગુરુદેવભૂયાં લજ્જણિ- જ્ઞાં મમ ચિત્તગરણિવ્વત્તિય સમ અણુપવિસિત્તણ)

ચિત્રકારો ઘડે ચિત્રિત કરવામા આવેલા આ ચિત્રગૃહમા પ્રવેશવુ મારા માટે ડચિત નથી ડેમકે ગુરુદેવ જેવી પૂજનીય તેમજ જેમની સામે જતા પણ હું લગ્નિત થાઉ છું એવા મારા મોટા બહેન અહીં બેઠા છે

મતલબ એ છે કે આ ચિત્રગૃહમા મારી પૂજન-બહેન મલ્લી કુમારી બેઠી છે એથી તેમની સામે જતા મને લગ્ન આવે છે

(તણ અમ્માધાઈ મલ્લદિન્ન કુમાર ઇવ વયાસી-નો યલુ પુત્તા ઇસમલ્લી ઇસણ મલ્લીં ઇ વિદેહ રાયવરકન્ના ઇ ચિત્તગરણ તયાણુરૂવે ચિત્તે ણિવ્વત્તિં)

આ પ્રમાણે સાક્ષીને અજાધારી ડપમાતા એ મલ્લદત્ત કુમારને કહ્યું કે
હે પુત્ર ! આ બને મલ્લીકુમારી નથી પણ આ તો વિદેહરાજની ડત્તમ

તતસ્તદન્તર સ્વલુ મલ્લદત્તઃ=મલ્લદત્તકુમાર, અમ્બાધાત્ર્યા ઇતમ્=ઉક્તરૂપમ્, અર્થ મૃત્વા, આશુસ્ત્વ=શીઘ્ર ક્રોધાગ્રિષ્ટઃ, ઇત્=અન્યમાણપ્રકારેણ, અગાદીત્-ક ઇત્ સ્વલુ મો. ! ચિત્રકારઃ 'અપત્થિયપત્થિય' અત્રાર્થિતપ્રાર્થિત' યત્ કેનાપિ ન પ્રાર્થયતે, તદપ્રાર્થિત મરણ તત્ પ્રાર્થિત યેન સોડપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત મરણાઠઠક્રમ્ ઇત્યર્થઃ યાત્રત્ પરિચર્જિતઃ=શ્રીદ્રોષ્ટિ કીર્તિ પરિચર્જિતઃ, ઇતદગ્રૈવા યયને પ્રાગ્ વ્યાખ્યાતમ્, યેન સ્વલુ મમ જ્યેષ્ઠાયા મગિન્યા ગુરુ દૈવતભૂતાયાઃ=પૂજ્યાયા, યાત્ર-તદનુરૂપ 'નિવૃત્તિષ્ઠિતિ' નિર્ગતિત્મ', ડતિઠ્ઠત્વા=ઇત્યુક્ત્વા, ત ચિત્રકાર વધ્ય=હન્તવ્યમ્. આજ્ઞાપયતિ યેન મલ્લીચિત્ર લિખિત સ ચિત્રકારો હન્તવ્ય ઇત્યાજ્ઞા દત્તવાનિત્યર્થઃ. તત સ્વલુ સા ચિત્રકર શ્રેણિરસ્યા ઉક્તરૂપાયાઃ કથાયા

કારને તદનુરૂપ ચિત્ર ધનાયો હૈ. ! હસલિયે ઘણા લડ્ડો કરના તુમ્હે યોગ્ય નહીં હૈં. (તણ મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈંણ ઇયમટ્ટ સોન્ઢા આસુરત્તે ઇવ વયાસી) અમ્બાધાય કે મુગ્ધ સે ઇસી ઘાત સુનને કે બાદ મલ્લ દત્ત કુમાર ને ડસ અપની અમ્બાધાય સે ક્રોધ મેં ભરે હુઈ હોકર હસ પ્રકાર કહાઃ-(કેસણ મો ! ચિત્તઘરણ અપત્થિયપત્થિય જાવ પરિવર્જિત્તે જેણ મમ જેટ્ટાણ મગિનીંણ ગુરુદેવભૂયાંણ જાવ નિવૃત્તિય) અરે ! કૌન ઇસા મરણ યાજ્ઞક તયા શ્રી દ્રોષ્ટિ, ઇવ કીર્તિ સે પરિચર્જિત ચિત્ર કાર હૈં કિ જિસને ગુરુદેવ જૈસા-પૂજ્ય મેરી જ્યેષ્ઠ મગિનીં કા ઘણાં તદ-નુરૂપ ચિત્ર ચિત્રિત કિયા હૈ. (સિઠ્ઠદુત ચિત્તગર વજ્ઞ આણવેઈ) હસ પ્રકાર કહકહ ડસને ડસ ચિત્રકાર કો વધ્ય ઘોષિત કર દિયા !

જિસ ચિત્રકાર ને મેરી પૂજ્ય જ્યેષ્ઠ મગિનીં કા ઘણાં ચિત્ર ઘણાં લિખા હૈ-તહ વધ્ય હૈ હસ પ્રકાર ડસને આજ્ઞા દેદી-(તણ સા

કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂળ દોરાયેલુ ચિત્ર છે એથી અહીં લલ્લા તમારા તમારા માટે યોગ્ય નથી (તણ મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈંણ ઇયમટ્ટ સોન્ઢા આસુરત્તે ઇવ વયાસી) અમ્બાધાય ના મોથી આ વાત સાલગીને મલ્લદત્ત કુમારે તે પોતાની અમ્બાધાય ને ક્રોધમા લગાડને કહ્યું કે-

(કેમણ મો ! ચિત્તઘરણ અપત્થિયપત્થિય જાવ પરિવર્જિત્તે જેણ મમ જેટ્ટાણ મગિનીંણ ગુરુદેવભૂયાંણ જાવ નિવૃત્તિય)

અરે ! એવો કોણ મૃત્યુને ચાહનાર શ્રી, હ્રી, ધૃતિ અને કીર્તિ રહિત ચિત્રકાર છે કે જેણે ગુરુદેવ જેવા પૂજ્ય મારા મોટા બહેનનુ અહીં આબેહૂળ ચિત્ર દોર્યું છે (સિઠ્ઠદુત ચિત્તગર વજ્ઞ આણવેઈ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે તે ચિત્રકારને વધ્ય (મારવા યોગ્ય) ઘોષિત કર્યો

મારા પૂજ્ય મોટા બહેનનુ જે ચિત્રકારે અહીં જે ચિત્ર દોર્યું છે તે વધ્ય છે આ રીતે તેણે પોતાની આજ્ઞા ઘોષિત કરી

લઘ્યાર્થ-જ્ઞાતાર્થ સતી યત્રેવ મહુદત. કુમારસ્તઙૈ તોપાગન્ઠતિ, ઉપન્ગત્ય કરંતલ પરિગૃહીત યાત્-શિર આવર્ત મસ્તકેઽઙ્ગલિં કૃત્વા જયવિજય શબ્દેન વર્ધયતિ=અભિનન્દયતિ, વર્ધયિત્વા, એવમવાદીત્-હે સ્વામિન્ ! એવ યલુ તસ્ય ચિત્રકરસ્ય, હમમેતદ્વૃપા=ચક્ષ્યમાણસ્વરૂપા ચિત્રકરલઘ્વિર્લઘ્વા=અર્જિતા પ્રાપ્તા=સ્વાયત્તીકૃતા અભિસમન્વાગતા=સમ્યગાસેવિતા, યસ્ય યલુ દ્વિપદસ્ય ચા યાત્-ચતુષ્પદસ્ય વા અપદસ્ય વા એકદેશમપિ પશ્યતિ તમ્ય યલુ દેશાનુસારેણ તદનુરૂપ રૂપ 'નિવ્વત્તેઈ' નિર્વર્તયતિ=રચયતિ, તત્=તસ્માત્ હે સ્વામિન્ ! મા યલુ યુય ત ચિત્રકર વધ્ય-

ચિત્તગરસેણી હમીસે કહાણ લદ્દહા સમાણા જેણેવ મલ્લદિન્ને કુમારે તેણેવ ઉવાગન્ઠડ, ઉવાગન્ઠિત્તા કરયલપરિગહિય જાવ વદ્ધાવેહ, વદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી-એવ યલુ સામી ! તસ્સ ચિત્તગરસ્સ હમેયારૂવા ચિત્તગરલદ્દીલદ્દા, પત્તા અભિસમન્નાગયા જસ્સણ દુપયસ્સ વા જાવ ણિવ્વત્તેઈ) હસ પ્રકાર હસ ઉક્ત રૂપ કથા કા હાલ જન ઉસ ચિત્રકાર શ્રેણી કો માલૂમ હુઆ-તય વહ જહા મલ્લદત્ત કુમાર યા વહાં પહુંચી પહુંચ કર ઉસને ઉસે દોનો હાથોં કી અજલિ ઘનાકર ઓર ઉસે મસ્તક પર ધરકર નમસ્કાર કરતે હુણ જય વિજય શબ્દોં ઠારા વધાઈ દી વધાઈ દેકર ફિર વહ હમ પ્રકાર કહને લગો-સ્વામિન્ ! હમ ચિત્રકાર કો હસ પ્રકાર કી વહ ચિત્રકાર લઘ્વિ પ્રાપ્ત હુઈ હૈ-ઉસ પર ઉસકા અધિ કાર જમ ગયા હૈ-ઉસ કા ઉસે અચ્છી તરહ અભ્યામ્મ હો ચુકા હૈ-કિ જિસકી વજહ સે વહ કિસી ભી દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, અપદ કા એક દેશ ભી દેશ્વકર ઉસકે અનુમાર તદનુરૂપ ચિત્રરચ દેતા હૈ । (ત માણ સામી ।

(તથા સા ચિત્તગરસેણી હમીસે કહાણ લદ્દહા સમાણા જેણેવ મલ્લદિન્ને કુમારે તેણેવ ઉવાગન્ઠડ, ઉવાગન્ઠિત્તા કરયલપરિગહિય જાવ વદ્ધાવેહ, વદ્ધાવિત્તા એવ વયામી એવ યલુ સામી ! તસ્સ ચિત્તગરસ્સ હમેયારૂવા ચિત્તગરલદ્દી લદ્દા, પત્તા અભિસમન્નાગયા જસ્સણ દુપયસ્સ ચા જાવ ણિવ્વત્તેઈ)

આ ગીતે ચિત્રકારને ઉપરની બધી વિગતની બાણ થઈ ત્યારે જ્યાં મદલદત્ત કુમાર હતો ત્યાં તેઓ પહોંચ્યા અને પહોંચીને બને હાથોની અબલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરતા જય વિજયના શબ્દો ઉચ્ચારતા તેણે કહ્યું—કે હે સ્વામિન્ ! તે ચિત્રકારને આ પ્રમાણેની વિશેષ શક્તિ પ્રાપ્ત થઈ છે તે કલા ઉપર તેના પૂરે પૂરે અધિકાર આવી ગયો છે તે સારી પહે અસ્પૃશ્ય થઈ ગયો છે જેથી તે ઓઈ પણ દ્વિપદ (માણસ) ચતુષ્પદ (પશુ) અને અપદ (સાપ વગેરે) ના કોઈ પણ એક દેશને બોળે તે મુજબ તેના જેવું જ ચિત્ર દોરી આપે છે (ત માણ સામી ! તુએ-

માજાપયત-પ્રધાર્યમાજાં મા કુરુતેત્યર્થઃ, તત્=તસ્માત્ હે સ્વામિન્ ! યુષ્મલ્લુ તસ્ય ચિત્રકરસ્યાન્ય તદનુરૂપ ચિત્રકરાપરાધસદૃશ, દણ્ડ ' નિવ્વત્તેહ ' નિર્વર્તયત=કુરુત। તતઃ=ચિત્રકરશ્રેણિસપ્તિનયચનશ્રયણાનન્તર, ચલુ સ મલ્લદત્તસ્તસ્ય - મલ્લીચિત્ર રચયિતુ, ચિત્રકરસ્ય ' સઢાસગ ' સન્દશરૂપ્=ઝરુનદ્ધયોઃ સન્નિ નાડીરૂપમિત્યર્થ, ' છિંદાવેદ્ ' છેદયતિ-કર્તયતિસ્મ યત્તુ-' સઢાસગતિ ' હસ્તો છેદયતિસ્મ' હિતિવ્યાખ્યાત-તદ જ્ઞાનપ્રિઝ્ઞમિતમ્-તેજીય ચિત્રકરેણ હસ્તિનાપુરે નગરે ગત્વા પુનર્મલ્લીચિત્ર રચિતમિત્યેતદર્થ મનિયોધકપૂલપાઠવિરોધાત્ હસ્તામાત્રે ચિત્રલેખના

તુઘ્મે તે ચિત્તાગર વજ્જ આણવેહ) હસલિયે હે સ્વામિન્ ! આપ ઉસ ચિત્રકાર કો મારને કી આજ્ઞા પ્રદાન ન કીજિયે (ત તુઘ્મેણ સામી ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્ન તયાણુરૂવ દહ નિવ્વત્તેહ, તણ્ણ સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ સઢાસગ છિંદાવેદ્, છિંદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેદ્) કિન્તુ હે નાથ ! આપ ઉસ ચિત્રકર કો યતાયે ગયે હસ ચિત્ર કે અનુસાર કિસી ઔર દૂસરે દહ કા નિર્ધારણકર દીજિયે-હસ પ્રકાર ચિત્રકાર શ્રેણી કે વચન સુનને કે વાદ મલ્લદત્ત કુમાર ને ઉસ મલ્લી કે ચિત્ર બનાને વાલે ચિત્રકાર કી ઝરુ ઔર જ ગાઔ કી સધિ કો છિંદવા દિયા-કતરવા દિયા-

(જો " સઢાસગતિ " કિસી ર ટીકાકાર ને ઁસા માન કર " ઉસ કે દોનોં હાથ કટવા દિયે " હસ પ્રકાર કા વ્યાખ્યાન કિયા હૈ વહ ટીક નહી જ્ઞાન હોતા હૈ-કારણ " હસી ચિત્રકાર ને હસ્તિનાપુર મૈં જાકર મલ્લી કુમારીકા ચિત્ર રચા હૈ " ઁસા જો આગે મૂલપાઠ આનેવાલા ઉસ

ત ચિત્તાગર વજ્જ આણવેહ) ઁથી હે સ્વામિન્ ! તમે તે ચિત્રકારને મારવાની આજ્ઞા માડી વાળો.

(ત તુઘ્મેણ સામી ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્ન તયાણુરૂવ દહ નિવ્વત્તેહ, તણ્ણ સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ સઢાસગ છિંદાવેદ્, છિંદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેદ્)

અને હે નાથ ! તમે ચિત્રકારને તે ચિત્ર બદલ બીજી ગમે તે સબ કરો આ પ્રમાણે ચિત્રકારના વચન સાંભળીને મલ્લદત્તકુમારે મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર બનાવનાર ચિત્રકારના હિરુઓ-બધાઓના સાધાઓને કપાવી દીધા.

" સઢાસગતિ " આ પ્રમાણેના પાઠના આધાર લઈને કેટલાક ટીકાકારો આમ માનતા થયા છે કે તે ચિત્રકારના બને હાથ પણ કપાવવામા આવ્યા હતા પણ હકીકતમા આ વાત સત્યથી વેગળી છે કેમકે ઁ જ ચિત્રકાર આગળ હસ્તિનાપુરમા જઈને મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર

समवात् । छेदयित्वा 'निविसय' निर्विषयम्-विषयाभिर्गत सन्देशात् बहिर्गन्तु-
मित्यर्थः, आज्ञापयति=आज्ञां दत्तवान् ॥ सू० २८ ॥

मूलम्-तएणं से चित्तगरए मल्लदिन्नेण निविसए आणत्ते
समाणे समडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयराओ णिक्ख-
मइ, णिक्खमित्ता विदेहजणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कूरु-
जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता भडणिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलं सज्जेइ, स-
ज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठाणुसारेण एव
णिव्वत्तेइ, णिवत्तित्ता कक्खनरासि लुब्भइ, लुब्भित्ता महत्थ
जाव पाहुड गिण्हइ, गिण्हिता हत्थिणापुर नयर मज्झ मज्झेणं
जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त
करयल जाव वच्चाविता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता
एव वयासी—एव खलु अह सामी ? मिहिलाओ राय-
हाणीओ कूभगस्स रत्तो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं
मल्लदिन्नेण कूमारेण निविसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए
तं इच्छामिण सामी । तुब्भ वाहुच्छाया परिगहिए जाव परि-
वसित्तए, तएण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारयं एवं

का फिर विरोध आवेगा । त्यों के बिना चित्र लिखना कैसे बन सकता
है । जवा कटवा देने के बाद फिर उस ने उसे अपने देश से बाहर
चले जाने की आज्ञा दे दी । “ २८ ”

भूण पाठ आगण आपसे तेनी साथे हाथ कपाववानी उक्त बात अध
पेसती नथी हाव वगर थिउर होगी न कर् रीते रागय ?

मल्लदिन्नेण कूमारेण निविसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए
आपसे ॥ सू० “ २८ ” ॥

वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया । मल्लदिण्णेणं निव्विसए
आणत्ते ? तएणं से चित्तयरदारए अदीसत्तूरायं एव वयासी-
एव खलु सामी । मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्त-
गरसेणि सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुव्वे ण देवाणु-
णुप्पिया । मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम
छिदावेइ, छिदावित्ता निव्विसय आणवेइ, त एव खलु सामी !
मल्लादिण्णे कुमारेण निव्विसए आणत्ते ।

तएण अदीणसत्तू राया त चित्तगर एव वयासी - से
केरिसए णं देवाणुप्पिया । तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे नि-
व्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खतराओ चित्तफल्य
णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तूस्स उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी
-एसणं सामी । मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स
रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्के
केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णगाए तयाणु-
रूवे रूवे निव्वत्तिए, तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे
दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी - तहेव जाव पहारेत्थ
गमणयाए ॥ सू० ॥

टीका—‘तएण से इत्यादि । ततस्तदन्तर खलु स चित्रकारो मल्लदत्तेन निर्वि-
पयः=देशनिर्गतो भवितुम् आज्ञाप्त सन् सभाण्डामत्रोपकरणमादाय=स्वगृहमागत्य

‘ तएण से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चित्तगरए) वह चित्रकार (मल्ल दिन्ने
ण, निव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्त कुमारसे देशसे बाहिर निकल

‘ तएण से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) तयारणाद (से चित्तगरए) चित्रकार (मल्लदिन्नेण निव्विसए
आणत्ते समाणे) मल्लदत्तकुमार वडे अपाञ्छेली देश गङ्गा नदी आना आलुणीने

स्वकोय भाण्डाद्युपकरण गृहीत्वा मिथिलातो नगरीतो निष्क्रामति=रहिर्निस्परति
निष्क्रम्य विदेह जनपद=विदेहदेशस्य म यमध्येन-मध्येभूत्वा प्राकृतत्वात् पष्ठ्यर्पे
द्वितीया, यत्रैव कुरुजनपदः=कुरुनामको देशः, यत्रैव हस्तिनापुर नगर, तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य 'भडणिकखेव' भाण्डनिक्षेप=भाण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति
कृत्वा 'चित्तफलम्' चित्रफलक=चित्रगोपपट्टकं यस्मिन् पट्टके चित्रं रचनीयं
वदित्यर्थः, सज्जयति=मार्जनलेपादिना सस्कारीति, सज्जयित्वा मल्लया विदेहराज

जाने के लिये आजस होता हुआ (समभटमत्तोवगरणमायाए मिहि-
लाओ जयरीओ णिखलमड णिखलमिता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण
जेणेव कुरु जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ) अपने
घर आया-वहा आकर उसने अपने भाण्ड आदि उपकरणों को लिया-
और लेकर फिर वह मिथिला नगरीसे बाहिर निकल गया-निकल कर
वह विदेह जनपद के बीच से होकर जहा कुरु जनपद था और जहा
हस्तिनापुर नगर था-वहा आये-(उवागच्छिता भडनिकखेव करेइ,
करित्ता चित्तफलम् सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लिए विदेहरायवरकन्नाए
पायगुट्टानुसारेण रूव णिब्बत्तेइ) वहा आकर के उस ने अपने भांड
आदि उपकरणों को यथास्थान रख दिया-रखकर के फिर उसने चित्र
फलक को-जिस में चित्र रचा जाता है उस पट्टिये को-मार्जन लेप
आदि से ठीक ठाक किया-अर्थात् पहिछे उसने उस पट्टि को साफ
किया पश्चात् उस पर रंग आदि का लेप लगाया ।

(समभटमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ जयरीओ णिखलमड णिखलमिता वि-
देह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ
ते पोताने घेर आव्थे अने त्याथी तेत्ते लाउ-वासथु वगेरे वस्तुओ लीधी
लधने मिथिला नगरीनी णडार नीउण्थे अने नीउणीने विदेह जनपदनी वग्गे
थधने न्या कुरुजनपद इत्तु अने न्या हस्तिनापुर नगर इत्तु त्या गथे।

(उवागच्छिता भडनिकखेव करेइ, करित्ता चित्तफलम् सज्जेइ, सज्जित्ता म-
ल्लिए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्टानुसारेण रूव णिब्बत्तेइ)

त्या जधने तेत्ते पोतानी लाउ वगेरे वस्तुओने उचित स्थाने गोठवी
लीधी अने गोठवाने चित्र दत्तकु-ओखे के जेमा चित्र होरवामा आवे छे
ते पाटियानु-भाजन लेपन वगेरे करीने तैयार क्युं मतवन्न आ प्रमाणे छे
के पडेला तेत्ते पाटियाने वग्गे णनायु त्थारपछी वग वगेरेना लेप क्यो

ચરકન્યાયાઃ પાદાહુષ્ઠાનુસારેણ રૂપ=નદ્રીય ચિત્ર નિર્વર્તયતિ । નિર્વર્ત્ય 'કક્ષતરસિ' રક્ષાન્તરે-રક્ષસ્ય=પાદોર્મૂલસ્ય અન્તરે=પ્રાપન્તરે 'હુષ્ઠઃ' છુપતિ ધરતીત્યર્થઃ । 'હુષ્પિત્તા' હુષ્વા=ધૃત્વા 'મહત્થ જાવ' મહાર્થ યાવત્-મહાર્થ, મહાર્થ, 'પાહુડ' પ્રામૃતમ્=અત્યાર, ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા દસ્તિનાપુર નગર-દસ્તિના પુરનગરસ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ-અદીનશત્રુરાજા તત્રૈયોપાગન્ઠતિ, અપાગત્ય ત કરતલ-યાવત્ કરતલ પરિગૃહીત શિર આવર્તે મસ્તકેઽજ્જલિ ઋત્વા જપત્યેતિ શબ્દેન વર્ધયતિ=અભિનન્દયતિ, વર્ધયિત્વા પ્રામૃતમુપચયતિ=અગ્રે સ્થાપયતિ ઉપનીય એવ

બાદ મેં વિદેહ રાજવર કન્યા મરિલી કુમારી કા ઉમકે ऊपर पाद के अगुष्ठ के अनुसार तदनुरूप चित्र रचा । (गिर्वचिक्ता कक्खतरसि छुम्भइ, छुम्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हइ, गिण्हित्ता, हत्थिणा पुर नयर मज्झ मज्झेण जेणेव अदीण सत्तूराया तेणेव उवागच्छइ) चित्र रचकर के फिर उसने उसे अपनी छात्र में दयाया-दया कर महार्थ यावत् महार्थ प्राभूत (यह मूल्य भेंट) लिया, और लेकर हस्तिनापुर नगर के बीचो बीच से होकर वह जहां अदीन शत्रु राजा थे वहां गया- (उवागच्छित्ता त करयल जाव वद्धावेइ, वद्धाचित्ता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी) वहां जाकर उसने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर राजा को नमस्कार किया बाद में जय विजय आदि शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी । बधाई देकर उस ने लाये हुए भेंट को उन के समक्ष रख दिया । रख देने के बाद फिर उस

ત્યારબાદ ચિત્રકારે પગના અંગુઠાને અનુરૂપ વિદેહ રાજવર કન્યા મરિલી કુમારીનુ આબેહૂબ ચિત્ર દોર્યું

(ગિર્વચિક્તા કક્ષતરસિ છુમ્મઇ, છુમ્મિત્તા મહત્થ જાવ પાહુડ ગિણ્હિત્તા, હત્થિણાપુર નયર મજ્ઝ મજ્ઝેણ જેણેવ અદીણસત્તૂરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઇ)

ચિત્ર દોર્યા પછી ચિત્રને બગલમાં દબાવીને મહાર્થ સાધક-બહુ જ મૂલ્યવાન ભેટ લીધી અને લઇને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં અદીનશત્રુ રાજા હતા ત્યાં ગયો

ઉવાગચ્છિત્તા ત કરયલ જાવ વદ્ધાવેइ वद्धाचित्ता पाहुड उवणेइ उवाणित्ता एव वयासी ત્યાં જઈને તેણે બને હાથોની અજલી બનાવીને તેને માથે મૂકીને રાજા ને નમન કર્યા અને ત્યાર બાદ તેણે 'જય વિજય' વગેરે શબ્દોથી રાજા ને વધામણી આપી વધામણી આપીને ચિત્રકારે પોતાની પાસેની ભેટ રાજાની સામે મૂકી ભેટ અર્પણ કર્યા બાદ તેણે રાજાને આ પ્રમાણે વિનંતિ કરી કે

मवादीत्-हे स्वामिन् । एव खलु अह मिथिलातो राजधानीत' कुम्भस्य राज्ञः पुत्रेण प्रभावत्वा देव्या जात्मजेन=मङ्गजातेन, मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय=देशान्निर्गन्तुम्=आज्ञप्तः सन् इह=अस्मिन् स्थाने, हव्य=शीतम् आगत । तत्=तस्मात् हे स्वामिन् ! इच्छामि खलु युष्माक वाहुच्छाया परिगृहीत'-भुजवलाश्रय गृहीत्वेत्यर्थः । यावत् परिवस्तुम्, अत्र-यावच्छब्देन-निर्भय, निरुद्विग्नः सन्, सुख सुखेन, इतिरोभ्यम् । ततः खलु सोऽदीनशत्रुराजा, त चित्रकरदारकमेवमवादीत् हे देवानुप्रिय ! किं=कुतः, खलु एव मल्लदत्तेन निर्विषयः-देशाद् परिगन्तुम्,

ने उन से इस प्रकार कहा-एव खलु अह सामी ! मिथिलाओ राय हाणीओ कुम्भसस् रण्णो पुत्तेण, पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेण कुमारेण निर्विसए आणत्ते समाणे इह हव्यमागए) हे स्वामिन् ! मिथिला राजधानी से वहा के कुम्भक राजा के पुत्र और प्रभावनी के अगज मल्लदत्त कुमार से देश से निर्वासित किया गया यहा आये हैं ।

(त इच्छामिण सामी ! तुम्ह बाहुच्छाया परिगृहिए जाव परिवसित्तए) अतः हे स्वामिन् ! मैं आपकी भुजच्छाया का आश्रय लेकर यहां रहना चाहते हैं । यहा " यावत् " शब्द से " निर्भयः " निरुद्विग्नः सन् सुख सुखेन " इस पाठ का संग्रह किया गया है । (तएण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारय एव वयासी-किन्नु तुम देवाणु प्पिया ! मल्लदिन्नेण निर्विसए आणत्ते) उस की इस प्रकार बात सुनकर अदीन शत्रु राजा ने उस चित्रकर दारक से इस प्रकार पूछा-

(एव खलु अह सामी ! महिलाओ रायहाणीओ कुम्भसस् रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेण कुमारेण निर्विसए आणत्ते समाणे इह हव्यमागए)

हे स्वामीन् ! मिथिला राजधानीना प्रभावती देवीना गर्भधी जन्म पाभेला कुलज राजाना पुत्र मल्लदत्तकुमार भने देशवटो आय्यो छे तेथी हु अही तभारे शब्बो आय्यो छु

(त इच्छामि ण सामी ! तुम्ह बाहुच्छाया परिगृहिए जाव परिवसित्तए)

ओथी छे स्वामी ! हु तभारी बाहुच्छायाना आश्रयभा अही रहेवा आहु छु अही ' यावत् ' पदथी ' निर्भय ' ' निरुद्विग्न सन् सुख सुखेन ' आ पाहने अअह करवाभा आय्यो छे

(तएण से अदीण सत्तूराया त चित्तगरदारय एव वयासी किन्नु तुम देवाणु प्पिया ! मल्लदिन्नेण निर्विसए आणत्ते)

आ पान सालणीने अदीनशत्रु राजाओ चित्रकरदारकने आ प्रभाओ छु

आज्ञप्त ! ततः स चित्रकरदारक, अदीनशत्रु राजानमेवमयागीत्-हे स्वामिन् !
 एव खलु मल्लदत्त कुमारोऽन्यदा यदाचित्=अन्यस्मिन् वस्मिंश्चित् समये,
 चित्रकरश्रेणिं चित्रकारान् शब्दयति=आहूतवान् । शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे
 देवानुप्रियाः ! यूय खलु मम चित्रसभा चित्रयत त चेव सव्वभाणियव्व ' तदेव
 सर्वं भणितव्वम्-इह चित्रकर विषयक सकूट पूर्वोक्तमेव वृत्तान्तं वान्यमित्यर्थः,
 ' जाय मम सडासअ छिंदावेइ ' यायम्मम सन्देशक छेदयति । चित्रयत ' इत्यादि,

हे देवानुप्रिय ! तुम किस कारण से मल्लदत्तकुमार से निर्वासित
 होने के लिये आज्ञप्त किये गये हो (तण्णं से चित्तयरदारण अदीण
 सत्तूराय एव वयासी-एव खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया
 कयाइ चित्तगरसेणिं सदावेइ, नदावित्ता एव वयासी-तुम्हेण देवा
 णुप्पिया ! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडासअ
 छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसये आणवेइ त एव खलु सामी ! मल्ल
 दिन्नेणं कुमारेण निव्विसये आणत्ते) उस चित्रकर दारक ने तब
 अदीन शत्रु राजा से कहा-हे स्वामिन् ! मल्लदत्त कुमार ने किसी एक
 समय चित्रकारों की श्रेणी को बुलाया और बुलाकर उस से ऐसा कहा
 कि हे देवानुप्रियों ! तुम लोग मेरे इस चित्रगृह को चित्रित करो इस
 तरह पहिले की सय घटना उस चित्रकार ने अदीनशत्रु राजा को उरु
 और जघाओं को छेदने तक की सुना दो । छिंदवा कर फिर उन्होंने मुझे

छे छे देवानुप्रिय ! मल्लदत्त कुमारे तमने शा क्षरवुथी देशभाथी निर्वासित
 थय् ज्वानी आज्ञा आपी छे ?

(तण्णं से चित्तयरदारण अदीण सत्तूराय एव वयासी-एव खलु सामी !
 मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगरसेणिं सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-
 तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम सडासअ
 छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसये आणवेइ त एव खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमा

छेदयित्वा निर्विषयम्=देशनिष्कासनमाज्ञापयति ' तदेव खलु हे स्वामिन् । अहं मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय आब्रूः ।

ततस्तदनन्तरं खलु अदीनशत्रु राजा तं चित्रकारमेव वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत् — हे देवानुप्रिय । तत् कीदृशं खलु त्वया मल्लयास्तदनुरूपं रूपं =चित्रं निर्वर्तितम् ? तत् खलु स चित्रकरदारकः कक्षान्तरात् = बाहुमूलाभ्यन्तराद् चित्रफलकं यस्मिन् मल्लयाश्चित्रं लिखितमासीत् तदित्यर्थः, 'णीणेइ' नयति = बहिर्नयति बहिष्करोतीत्यर्थः, 'णीणिता' नीत्वा अदीनशत्रोः राज्ञ उपनयति=अग्रे स्थापयति, उपनीय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् । एष खलु मल्लया-प्रिदेहराजपरकन्याया' पादाङ्गुष्ठानुसारेण तदनुरूपस्य तत्सदृशस्य रूपस्य चित्रस्य 'केड' कोऽपि कश्चित्, किञ्चिन्मात्रः 'आगार

देश से बाहर निकाल जाने के लिये आज्ञा दे दी । इस तरह मल्लदत्त कुमार से निर्वासित होता हुआ-मैं यहाँ आया हूँ ।

(तएण अदीणसत्तूराया त चित्तगर एव वयासी-से केरिसएण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएण से चित्तगरदारए कक्खतराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ) चित्रकर की इस बात को कर्णपथ करके अदीनशत्रु राजा ने उस चित्रकार से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ? मल्लीकुमारी का चित्र तुमने तदनुरूप कैसा बनाया था । इस प्रकार राजा को वचन सुनकर उस चित्रकरदारक ने अपनी कक्षा के भीतर से दबे हुए उस चित्र फलक को कि जिसमें मल्लीकुमारीका चित्र अंकित किया हुआ था बाहर निकाला और बाहर निकाल कर उसे अदीनशत्रु राजा के समक्ष रख दिया । (उवणिता एव वयासी) रखकर वह फिर इस

देशभाषी ण्हार जाता रहेवानो हुंकर कथो ठे त्याथी तेमनी आत्ता प्रभाण्णे ण्हार नीकणीने हुं अहाँ आयेथो धु

(तएण अदीण सत्तूराया त चित्तगर एव वयासी-से केरिसएण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएण से चित्तगरदारए कक्खतराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ)

चित्रकारनी बात साबणीने अदीनशत्रु राजाजे ते चित्रकारने कहुं के ठे देवानुप्रिय ! मल्लीकुमारीनु आणेहुं म चित्र तमे केवु होथुं हुतु ? आ रीते रामना वयने साबणीने चित्रगद्दारके मल्लीकुमागीना चित्रवाणु इलक णग लभाथी ण्हार कहुं अने तेने अदीनशत्रु राजाणी भांमे भूकी दीधु (उवणिता एव वयासी) भूकीने तेणु गन्ने कहुं जे—

આજ્ઞા ? તતઃ સ ચિત્રકરદારક , અદીનશત્રુ રાજાનમેયમવાદીત-હે સ્વામિન્ !
 એવં ત્વલુ મલ્લદત્ત કુમારોઽન્યદા યદાચિત્ત=અન્યસ્મિન્ ધર્મિશ્ચિત્ત સમયે,
 ચિત્રકરશ્રેણિ ચિત્રચારાન્ શબ્દયતિ=શાહુતયાન્ । શબ્દયિત્વા એવમવાદીત-હે
 દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુયં ત્વલુ મમ ચિત્રસભા ચિત્રયત ત ચેવ સન્વભાણિયન્વ ' તદેવ
 સર્વ ભણિતવ્યમ્-હહ ચિત્રકર ગિપયક સરુઠ પૂર્વોક્તમેવ વૃત્તાન્ત વાન્યમિત્યર્થઃ,
 ' જાવ મમ સઢાસઞ છિદાવેહ ' યાગ્નમમ સન્દેશક હેદયતિ । ચિત્રયત ' ઇત્યાદિ,

હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ કિસ કારણ સે મલ્લદત્તકુમાર સે નિર્વાસિત
 હોને કે લિયે આજ્ઞા કિયે ગયે હો (તણ્ણ સે ચિત્તચરદારણ અદીણ
 સત્તુ રાય એવ વયાસી-એવ ત્વલુ સામી ! મલ્લદિન્ને કુમારે અણ્ણયા
 કયાહ ચિત્તગરસેણિ સહાવેહ, સહાવિત્તા એવ વયાસી-તુભેણં દેવા
 ણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસભ ત ચેવ સન્વ ભાણિયન્વ જાવ મમ સઢાસઞ
 છિદાવેહ છિદાવિત્તા નિન્વિસય આણવેહ ત એવ ત્વલુ સામી ! મલ્લ
 દિન્નેણં કુમારેણ નિન્વિસયે આણત્તે) હસ ચિત્રકર દારક ને તબ
 અદીન શત્રુ રાજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! મલ્લદત્ત કુમાર ને કિસી એક
 સમય ચિત્રકારોં કી શ્રેણી કો બુલાયા ઓર બુલાકર હસ સે એમા કહા
 કિ હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ મેરે હસ ચિત્રગૃહ કો ચિત્રિત કરો હસ
 તરહ પહિલે કી સચ ઘટના હસ ચિત્રકાર ને અદીનશત્રુ રાજા કો ઊરુ
 ઓર જઘાઓ કો હેદને તક કી સુના દો । છિદવા કર ફિર હન્નેને મુક્કે

હે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશભાથી નિર્વાસિત
 થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(તણ્ણ સે ચિત્તચરદારણ અદીણ સત્તુ રાય એવ વયાસી-એવ ત્વલુ સામી !
 મલ્લદિન્ને કુમારે અણ્ણયા કયાહ ચિત્તગરસેણિ સહાવેહ સહાવિત્તા એવ વયાસી-
 તુભે ણ દેવાણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસભ ત ચેવ સન્વ ભાણિયન્વ જાવ મમ સઢાસઞ
 છિદાવેહ છિદાવિત્તા નિન્વિસય આણવેહ ત એવ ત્વલુ સામી ! મલ્લદિન્નેણં કુમા
 રેણ નિન્વિસયે આણત્તે)

ચિત્રકરદારકે બ્યારે અદીનશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામીન્ ! મલ્લદત્ત
 કુમારે એક વખતે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે
 દેવાનુપ્રિયો ! તમે મારા ચિત્રગૃહને ચિત્રિત કરો આ રીતે ચિત્રકારે અદીન
 શત્રુની સામે હુઝુઓ-જ ધાઓને કપાવવા સુધીની બધી વિગત રજૂ કરી અને
 તેણે અતે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જ ધાઓને કપાવીને મલ્લદત્તકુમારે મને ખેતાના

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः । एवभूतः सन् द्रुत शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा
दीत्—‘तद्देव’ तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद्
गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो स्थावरुढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी
तत्रैव गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थः । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः
कथितः ॥ सू० २९॥

मूळम्—तेण कालेणं तेणं समएण पचाले जणवए कपिल्ले
पुरे नयरे, तत्थण जियसत्तू नाम राया पंचालाहिवई होत्था,
तस्सण जियसत्तूस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे
होत्था, तत्थण मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेदं
जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएण साचोक्खा परिव्वाइया
मिहिलाए बहूण राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-
धम्मं च सोयधम्म च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पणवे-

है । (तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव
वयासी तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए) इत्त प्रकार चित्रकर के मुख से
सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा
प्रदान कर दिया । चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग
उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने
दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शाख ने अपने
दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा । की आज्ञा प्राप्त
कर वह दूत रथ पर आरुढ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस और
चल दिया ॥ सूत्र २९ ॥

तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी
तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए)

आ रीते चित्रकारना मोथी भधी विगत सावणीने राज्ञे तेने पोताना
राज्यभा रडेवानी आज्ञा आपी दीधी चित्रने लेउने न् अदीनशत्रु राज्ञना
भनभा भट्टिपुमारी भाटेने अनुराग उ पन्न थइ गथे राज्ञे तुरत ओक
इतने ओनाओये अने जेम काशीराज शजे पोताना इतने कहु इतु ते
प्रभावे न् तेले पणु पोताना इतने कहु आज्ञा भेजवीने इत रथ उपर नवार
थये अने ने तरइ मिथिला नगरी इती ते तरइ रवाना वये ॥ सूत्र “ २९ ” ॥

ભાવાપહોયારે ' આકારભાવમત્યવત્તારઃ=આકૃતિચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ, નિબ્ધત્તિષ્ ' નિર્વર્તિત, પાદાક્ષુષ્ઠામાત્રદર્શનાનુમિતત્વેન મત્કૃતચિત્રેણ પૂર્ણરૂપેનાકૃતિ ચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ. કિંતુ સ્વલ્પ એ પ્રકટીકૃત ઉત્પત્તિઃ નો સ્વલ્પ શરૂ કેનાપિ દેવેન વા યાત્-દાનવેન વા ગન્ધર્વેગ વા યક્ષેગ વા મલ્લ્યા વિદેહરાજવરકન્યાવાસ્તદનુ-રૂપ રૂપ નિર્વર્તયિતુમ્, તસ્યા મલ્લ્યા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ સ્વરૂપ લોકોત્તર ધર્ષનાતીત મસ્તિ, દર્શનાદેવ તત્સ્વરૂપસ્ય પૂર્ણ જ્ઞાન મપ્તિતુ ગ્રહ્યતે, ડતિ માત્રઃ । તતઃ સ્વલ્પ અદીનશત્રુઃ ' પઢિરૂવજણિયદાસે ' પ્રતિરૂપ જનિતદર્પઃ=પતિરૂપ=ચિત્ર તેન જનિતસ્તદર્શનસમુત્પન્નઃ, દર્પઃ=મુચ્ચ કાર્યે કારણોપચારાદનુરાગોડપિ દર્પે ઇત્યુચ્યતે, મલ્લીચિત્રકાનુરાગ ઉત્પત્તિઃ, સ યસ્યાસ્તિ સા તથા, મલ્લીચિત્ર દર્શન

પ્રકાર યોલા-(એસળ સામી ! મલ્લીચ વિદેહરાજવરકન્યાણ તયાણુરૂવ સ્સ રૂવસ્સ કેહ આગારભાવપડિયારે નિબ્ધત્તિષ્,ળો સ્વલ્પ સક્કે કેળહ દેવે ણ વા જાવ મલ્લીચ વિદેહરાયવરકળ્ણાણ તયાણુરૂવે રૂવે નિબ્ધત્તિષ્) હે સ્વામિન્ ! મૈને વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કે ઇસ પાદાગુષ્ઠા નુસાર સે અકિત કિયે ગયે ચિત્ર કા ધોહા સાહી-કિશ્ચિન્માત્ર-આકૃ તિષ્વ ચેષ્ટાકા આવિર્ભાવ ચિત્રણ કિયા હૈ-મૈને યહ ચિત્ર મલ્લીકુમારી કા,અકિત કિયા હૈ-વહ્ન ઉનકે અગુષ્ઠ કો દેલકર અવશિષ્ટ અઙ્ગાદિ કા અનુમાન લગાકર બનાયા હૈ ।

- હસલિયે ઇસ ચિત્ર મેં કિશ્ચિન્માત્રા મેં હી ઉનકે આકારાદિકા અ કન હુઆ હૈ પૂર્ણરૂપ સે નહીં । પૂર્ણરૂપ સે ઉન વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લી કુમારી કે તદનુરૂપ ચિત્ર બનાને મે ન કોઈ દેવતા સમર્થ હૈ, ન કોઈ દાનવ સમર્થ હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ સમર્થ હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ હી સમર્થ

(એસળ સામી ! મલ્લીચ વિદેહ રાજવરકન્યાણ તયાણુરૂવસ્સ રૂવસ્સ કેહ આગાર ભાવ પહોયારે નિબ્ધત્તિષ્ ણો સ્વલ્પ સક્કે કેળહ દેવેણ વા જાવ મલ્લીચ વિદેહરાયવર કળ્ણાણ તયાણુરૂવે રૂવે નિબ્ધત્તિષ્)

હે સ્વામીન્ ! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અશુ કાને જોઈને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મેં દોર્યું છે તેમના અશુકાને જોઈને જ બાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અકન ઓછી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આગેહૂબ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઈ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઈ ગાંધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः । एवभूतः सन् दूत शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा
दीत्-‘तद्देव’ तथैव=काशीराजः शब्दः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद्
गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी
तत्रैव गन्तु प्रवृत्त इत्यर्थः । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः
कथितः ॥ सू० २९॥

मृच्छ-तेणं कालेणं तेणं समएण पचाले जणवए कपिल्ले
पुरे नयरे, तत्थण जियसत्तू नाम राया पचालाहिर्वई होत्था,
तस्सण जियसत्तस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे
होत्था, तत्थण मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेदं
जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएण सा चोक्खा परिव्वाइयां
मिहिलाए बहूण राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-
धम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेय च आद्यवेमाणी पणवे-
है । (तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव
वयासी तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से
सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा
प्रदान कर दिया । चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग
उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने
दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शाख ने अपने
दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा । की आज्ञा प्राप्त
कर वह दूत रथ पर आरूढ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस और
चल दिया ॥ सूत्र २९ ॥

तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी
तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए)

आ रीते चित्रकारना मोथी भधी त्रिगत साधणीने राज्ञे तेने पोताना
गन्धमा रडेवानी आज्ञा आपी द्विधी चित्रने लेधने व अदीनशत्रु राजना
भनमा भट्टिकुभारी भाटेने अनुराग उपन्न थछ गये । राज्ञे तुरत ओक
इतने पोथाव्यो अने जेम काशीराज शत्रे पोताना इतने कछु छुटु ते
प्रभावे व तेवे पछु पोताना इतने कछु आज्ञा भेजवीने इत रथ उपर भवार
थयो अने जे तरइ मिथिला नगरी छती ते तरइ रवाना थयो ॥ सूत्र “ २९ ” ॥

ભાવાપહોયારે ' આકારભાવપત્યવત્તારઃ=આકૃતિચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ, નિવ્યત્તિ' નિર્વર્તિત, પાદાશ્લેષામાત્રદર્શનાનુમિતત્વેન મત્કૃતચિત્રેણ પૂર્ણરૂપેનાકૃતિ ચેષ્ટયોરાવિર્ભાવ કૃતુ સ્વરૂપ એ મત્કૃતકૃત ઉત્પત્તિઃ નો સ્વરૂપ કેનાપિ દેવેન વ યાવત્-દાનવેન વા ગન્ધર્વેણ વા યક્ષેણ વા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાસ્તદનુ-રૂપ રૂપ નિર્વર્તયિતુમ્, તસ્યા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયા, સ્વરૂપ લોકોપાર વર્ણનાતીત મસ્તિ, દર્શનાદેવ તત્સ્વરૂપસ્ય પૂર્ણ જ્ઞાન મચિતુ શક્યતે, ઇતિ માત્રઃ । તતઃ સ્વલ્પ અદીનશત્રુઃ ' પહિરૂપજણિયદાસે ' પ્રતિરૂપ જનિતર્હર્ષઃ=પ્રતિરૂપ=ચિત્ર તેન જનિતસ્તદર્શનસમુત્પન્નઃ, હર્ષઃ=મુગ્ધ કાર્યે કારણોપગારાદનુરાગોઽપિ હર્ષે ઇત્યુચ્યતે, મલ્લીચિત્રકાનુરાગ ઇત્યર્થઃ, સ યસ્યામ્તિ સ તથા, મલ્લીચિત્ર દર્શન

પ્રકાર ઘોલા-(એસળ સામી ! મલ્લીળ વિદેહરાજવરકન્યાળ તયાળુરૂવ સ્સ રૂવસ્સ કેહ આગારભાવપહિયારે નિવ્યત્તિળ,ળો સ્વલ્પ સક્કે કેળહ દેવે ણ વા જાવ મલ્લીળ વિદેહરાયવરકળ્ણાળ તયાળુરૂવે રૂવે નિવ્યત્તિળ) હે સ્વામિન્ ! મૈને વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કે હસ પાદાશ્લેષા નુસાર સે અકિત કિયે ગયે ચિત્ર કા ધોડા સાહી-કિશ્ચિન્માત્ર-આકૃ તિએવ ચેષ્ટાકા આવિર્ભાવ ચિત્રણ કિયા હૈ-મૈને યહ ચિત્ર મલ્લીકુમારી કા,અકિત કિયા હૈ-વહ ડનકે અગુષ્ઠ કો દેલકર અવશિષ્ટ અજ્ઞાવિ કા અનુમાન લગાકર વનાયા હૈ ।

- હસલિયે હસ ચિત્ર મેં કિશ્ચિન્માત્રા મેં હી ડનકે આકારાદિકા અ કન હુઆ હૈ પૂર્ણરૂપ સે નહીં । પૂર્ણરૂપ સે ડન વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લી કુમારી કે તદનુરૂપ ચિત્ર વનાને મે ન કોઈ દેવતા સમર્થ હૈ, ન કોઈ દાનવ સમર્થ હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ સમર્થ હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ હી સમર્થ

(એસળ સામી ! મલ્લીળ વિદેહ રાજવરકન્યાળ તયાળુરૂવસ્સ રૂવસ્સ કેહ આગારભાવ પહોયારે નિવ્યત્તિળ ણો સ્વલ્પ સક્કે કેળહ દેવેન વા જાવ મલ્લીળ વિદેહરાયવર કળ્ણાળ તયાળુરૂવે રૂવે નિવ્યત્તિળ)

૧ હે સ્વામીન્ ! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અંશુ ઠાને જોધને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મેં દોર્યું છે તેમના અંશુઠાને જોધને જ ખાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અકન ઓઝી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આજેહૂબ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઈ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઈ ગાંધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

મલ્લીએ પો સચાણ્ઠ કિચિ વિ પામોક્ષમાઢ્ઠિલત્તએ તુસિ-
ગિયા સંચિટ્ઠ્ઠ, તએણં ચોક્ષં મલ્લીએ વહુઓ દાસચેડોઓ
હીલેંતિ નિદતિ સ્વિસતિ ગરહતિ અપ્પેગઢ્યા હોરુયાલતિ
અપ્પેગઢ્યા મુહમકઢિયાઓ કરેંતિ, અપ્પેગઢ્યા વાઘાડીઓ
કરેંતિ, અપ્પેગઢ્યા તજ્જમાણીઓ નિચ્છુભંતિ ।

તએણ સા ચોક્ષા મલ્લીએ વિદેહરાયકરકન્નાએ દાસચે-
ડિયાહિ જાવ ગરહિજ્જમાણી હીલિજ્જમાણી આસુરુત્તા જાવ
મિસિમિસેમાણી મલ્લીએ વિદેહરાયવરકન્નાએ પઓસમાવજ્ઞઢ્ઠ,
મિસિય ગિળ્હઢ્ઠ, ગિળ્હિત્તા કળંતેઝરાઓ પઢિનિક્ષ્વમઢ્ઠ, પરિ-
નિક્ષ્વમિત્તા મિહિલાઓ નિગ્ગચ્છઢ્ઠ, નિગ્ગચ્છિત્તા પરિઠ્ઠાઢ્યા
સપરિવુડા જેળેવ પચાલજળવળ, જેળેવ કપિલ્લપુરે નયરે તેળેવ
ઝવાગચ્છઢ્ઠ, ઝવાગચ્છિત્તા કપિલપુરે વહૂળં રાઈસરં જાવ
પરુવેમાણી વિહરઢ્ઠ ॥ સૂં ૩૦ ॥

ટીકા—અથ પઠ્ઠસ્ય જિતશત્રુનામ્નો રાજ્ઞં સમ્બન્ધપસ્તાવમાઢ્ઠ—‘તેળ
કાલેળ’ ઇત્યાદિ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પશ્ચાલઃ અનુના પજાવનામ્ના

હસ તરહ યહ પશ્ચમરાજા કા સબધ પ્રકટ ક્રિયા હૈ । અવ છટેરાજા
કા સમ્બન્ધ પ્રકટ કરને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈં—

તેળ કાલેળ તેળ સમળેળ ઇત્યાદિ^૧ ॥

ટીકાર્થ—(તેળ કાલેળ તેળ સમળેળ) ઝસ કાલ ઓર ઝસ સમય મેં
(પચાલે જળવળ કપિલ્લે પુરે નયરે) પશ્ચાલ નામકા દેશ (જો અમી પજાવ

આ રીતે પશ્ચમરાજાનો સબધ પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે હવે છઠ્ઠા
રાજાનો સબધ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રગર કહે છે—

‘તેળ કાલેળ તેળ સમળેળ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(તેળ કાલેળ તેળ સમળેળ) તે ઝાળે અને તે અમથે (પચાલે જળવળ
કપિલ્લે પુરે નયરે) પચાલ નામે દેશ—એ અત્યાદે પશ્ચાલ નામે પ્રસિદ્ધ છે,

माणी परूवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ, तएण सा चोक्खा
 परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदडं च कुडिय च जाव धाउर-
 ताओ य गिण्हइ, गिणिहत्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनि-
 क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिव्वाइया सद्धि सपरिबुडा
 मिहिलं रायहाणिं मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे
 जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवा-
 गच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए
 भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
 पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी-तुब्भेण चोक्खे किंमूलए धम्मे
 पन्नत्ते ? तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्ली विदेहरायवर-
 कन्न एव वयासी-अम्हं णं देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे,
 जण्णं अम्हं किंचि असुइ भवइ, तएण उदएण य मट्टियाए
 जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्ख परिव्वाइय एव वयासी-चोक्खा । से जहानामए केई
 पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिण चोक्खा ।
 तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोवमाणस्स काई सोही ?,
 नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा । तुब्भेण पाणाइवाएण जाव
 मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स
 वत्थस्स रुहिरेण चेव धोवमाणस्स, तएण सा चोक्खा परिव्वा-
 इया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया
 कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था

મલ્લીએ ણો સચાણ્ઠ કિચિ વિ પામોક્ખમાઠ્ઠિલ્લત્તએ તુસિ-
ણિયા સંચિદ્ધિ, તણ્ણં ચોક્ખ મલ્લીએ વહુઓ દાસચેડાઓ
હીલેંતિ નિદતિ સ્વિસતિ ગરહતિ અપ્પેગઈયા હોરુયાલતિ
અપ્પેગઈયા મુહમક્કડિયાઓ કરેંતિ, અપ્પેગઈયા વાઘાડીઓ
કરેંતિ, અપ્પેગઈયા તજ્જમાણીઓ નિચ્છુભંતિ ।

તણ્ણં સા ચોક્ખા મલ્લીએ વિદેહરાયકરકન્નાએ દાસચે-
ડિયાહિ જાવ ગરહિજ્જમાણી હીલિજ્જમાણી આસુરુત્તા જાવ
મિસિમિસેમાણી મલ્લીએ વિદેહરાયવરકન્નાએ પઓસમાવજ્જઈ,
મિસિય ગિણ્ણઈ, ગિણ્ણિત્તા કણ્ણંતેઊરાઓ પઢિનિક્ખમઈ, પરિ-
નિક્ખમિત્તા મિહિલાઓ નિગ્ગચ્છઈ, નિગ્ગચ્છિત્તા પરિઠ્ઠાઈયા
સપરિવુડા જેણેવ પચાલજણવણ, જેણેવ કપિલ્લપુરે નયરે તેણેવ
ઊવાગચ્છઈ, ઊવાગચ્છિત્તા કપિલપુરે વહૂણ્ણં રાઈસરં જાવ
પરુવેમાણી વિહરઈ ॥ સૂં ૩૦ ॥

ટીકા—અથ પ્લસ્ય જિતશત્રુનામ્નો રાજ્ઞં સમ્બન્ધપસ્તાવમાહ—‘તેણ
કાલેણ’ ઇત્યાદિ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પચ્ચાલ. અનુના પજાવનામ્ના

હસ તરહ યહ પશ્ચમરાજા કા સમ્બ પ્રકટ ક્રિયા હૈ । અથ ડહેરાજા
કા સમ્બન્ધ પ્રકટ કરને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈં:—

તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ ઇત્યાદિ’ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ) ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મેં
(પચાલે જણવણ કપિલ્લે પુરે નયરે) પચ્ચાલ નામકા દેશ (જો અમી પજાવ

આ રતે પચ્ચમરાજાનો સમ્બ પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે ડવે છઠ્ઠા
રાજાનો સમ્બ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે—

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ) તે ડાણે અને તે સમયે (પચાલે જણવણ
કપિલ્લે પુરે નયરે) પચ્ચાલ નામે દેશ—એ અત્યારે પચ્ચાલ નામે પ્રસિદ્ધ છે.

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएण सा चोक्खा
परिवाइया अन्नया कयाई तिदडं च कुडिय च जाव धाउर-
त्ताओ य गिणहइ, गिणिहत्ता परिवाइगावसहाओ पडिनि-
क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिवाइया सद्धि सपरिवुडा
मिहिल रायहाणि मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे
जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए
भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
चोक्ख परिवाइयं एव वयासी-तुब्भेण चोक्खे किंमूलए धम्मं
पन्नत्ते ? तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्ली विदेहरायवर-
कन्न एव वयासी-अम्ह ण देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मं,
जण्णं अम्ह किञ्चि असुइ भवइ, तएणं उदएण य मट्ठियाए
जाव अविग्घेण संग्ग गच्छामो, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
चोक्खं परिवाइय एव वयासी-चोक्खा । से जहानामए केई
पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिण चोक्खा ।
तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोवमाणस्स काई सोही ?,
नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा । तुब्भेण पाणाइवाएणं जाव
मिच्छादंसणसल्लेणो नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स
वत्थस्स रुहिरेण चेव धोवमाणस्स, तएण सा चोक्खा परिवा-
इया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव बुत्ता समाणा सकिया
कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था.

दान स्वशास्त्रानुसारेण शौचादि धर्माणां विधि नियमभेदादि प्ररूपणां कुर्वती उपदर्शयन्ती=स्वाचरणेन साक्षात् कारयन्ती, विहरति=आस्तेस्म ।

ततस्तदनन्तर सा चोक्षा परित्राजिना अन्यदा रुदावित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये त्रिदण्ड=दण्डत्रय च कुण्डिका=कमण्डलु च यावत्-यातुरक्तानि वस्त्राणि गृह्णाति, गृहीत्वा 'परिव्वाहगावसहायो' परित्राजिकावसथात्=परित्राजिकानां मठात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य 'पविरल परिव्वाइया' पविरलपरित्राजिकाभिः=अल्पसख्यसन्ध्यामिकाभिः सार्व=सह, सपरिवृता=युक्ता मिथिला राजधानीं मिथिलाया राजगन्या इत्यर्थः स यम येन यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव 'कण्णते उरे' कन्यान्तः पुर, यत्रैव मल्ली विदेहरावरकन्या, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'उदयपरिकासियाए' उदरपरि

वह चोक्षा परित्राजिका मिथिला नगरी में अनेक राजेश्वर, तलवर, कौटुम्भिक, माण्डविक, श्रेष्ठी, सार्थवाह आदिकों के समक्ष दान धर्म शौच धर्म, और तीर्थाभिषेक का कथन करती थी, उन्हें अच्छी तरह समझाती थी उस शौचादि धर्मों की अपने शास्त्रानुसारविधि नियम आदि के भेद से प्ररूपणा करती थी और अपने आचरण से साक्षात् उन का प्रदर्शन भी करती थी । (तएण सा चोक्खा परिव्वाइया अज्जया कयाइ तिदड च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हत्ता परिव्वाहगावसहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्तो पविरलपरिव्वाइयासद्धि सपरिवुडा मिहिला रायहाणि मज्झ मज्झेण जेणेव कुम्भकस्स रत्तो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेह रायवरकन्ना-तेणेव उवागच्छइ) एक दिन वह चोक्षा परित्राजिका अपने त्रिदण्ड कमण्डलु, तथा गैरिक धातु से रक्त हुए चन्द्रों को लेकर

मिथिला नगरीमा चोक्षा परिव्वाजिका धर्या राजेश्वर, तलवर, कौटुम्भिक माण्डविक श्रेष्ठी सार्थवाह वगेरेनी सामे दानधर्म, शौचधर्म अने तीर्थास्थान विषे धर्म यत्था करती छती तेमने ते सारी पेटे शौच वगेरे धर्मो तेमन शास्त्रानुसार विधि नियम वगेरेना खेदोनी जाणतमा ममन्तवती छती अने जने जथा शौच वगेरे आचरणेने आचरिने प्रत्यक्ष रूपमा तेना देखाव करती छती (तएण सा चोक्खा परिव्वाइया अज्जया कयाइ तिदड च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हत्ता परिव्वाहगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्तो पविरलपरिव्वाइयासद्धि सपरिवुडा मिहिला रायहाणि मज्झ मज्झेण जेणेव कुम्भकस्स रत्तो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवर कन्नातेणेव उवागच्छइ)

अेक द्विपक्ष चोक्षा परिव्वाजिका पोताना त्रिदण्ड, उमउल्लु तेमन गेइथी

प्रसिद्ध जनपदः=देशः आसीत् तत्र= तस्मिन् देशे 'रुपिल्लपुरे' काम्पिल्यपुरे '=
=काम्पिल्यपुरनामके, 'नगरे' नगर, जितशत्रुनाम राजा पञ्चालाधिपतिरासीत्,
तस्य खलु जितशत्रो राजो धारिणीप्रमुख्या देवोसहस्रम् 'ओरोहे' अत्रोरे=अन्तः
पुरे आसन् ।

इत्थ मिथिलाया नगर्या खलु 'चोख्वा' चोक्षा=चोक्षानाम्नी परिव्राजिका
ऋग्वेद-यावत्-चतुर्वेद परिनिष्ठिता श्रुतिस्मृत्यादिसकलशास्त्राभिज्ञा चाप्यासीत् ।
ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मिथिलायां नगर्या गृह्णा राजेश्वर-यावत्
राजेश्वरतलवरकौटुम्भिकमाण्डभिरुपेष्ठिसार्थवाहपशूनीनां पुरतः = अग्रे, दान-
धर्म च शौचधर्म च तीर्थाभिषेक तीर्थजलस्नानधर्म च आख्यापयन्ती=आख्यानम्
-आख्याता कुर्वती कथयन्तीत्यर्थः, प्रज्ञापयन्ती=सम्यग प्रोधयन्ती, प्रकथयन्ती=

नामसे प्रसिद्ध है) था। उस देशमें काम्पिल्यपुर नामका नगर था। उसमें
पञ्चाल देश के अधिपति जित शत्रु राजा रहते थे। (तस्मिन् जियस
चुस्स धारिणी पामोख देवीसहस्र ओरोहे होत्था) उस जित शत्रु
राजा के अन्तः पुर में धारिणी प्रमुख ? एक हजार देवियां थीं। (तत्थ
ण मिहिलाए चोख्वानाम परिव्वाइया रिउव्नेय जाव परिणिट्ठिया यावि
होत्था) इम तरह मिथिला नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदों की तथा
स्मृति आदि समस्त शास्त्रों की परिज्ञाता चोक्षा नाम की परिव्रा
जिका भी रहती थी—(तएण सा चोक्त्वा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण
राइसर जाव सत्थवाहपभिइण पुरओ दाणधम्म च सोयधम्म च तित्था
भिसेय च अघवेमाणी पणवेमाणी परुवेमाणी उवदसेमाणी, विहरइ)

इतो ते देशमा काम्पिल्यपुर नामे नगर इत्तु तेमा पञ्चाल देशना अधिपति
जितशत्रु राजा रहता इति ।

(तस्मिन् जियसचुस्स धारिणी पामोख देवीसहस्र ओरोहे होत्था)

जितशत्रु राजाना रक्षुवासमा धारिणी प्रमुख ओइ इत्तर राज्ञीओ इती

(तत्थण मिहिलाए चोख्वानाम परिव्वाइया रिउव्नेय जाव परिणिट्ठिया
याविहोत्था)

मिथिला नगरीमा ऋग्वेद यजेर आरे वेदो तेमज्ज स्मृति यजेर अधा
गाओने जलुनारी ओक्षा नामे ओइ परि-व्राजिका रहती इती

(तएण सा चोक्त्वा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण राई सरजाव सत्थवाह
पभिइण पुरओ दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च अघवेमाणी पणवे
माणी परुवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ)

ચોક્ષા પરિવ્રાજકા મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા મેવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયે ! અસ્માક
 खलु शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, यत् खलु अस्माक किंचिदशुचिभवति, तत् खलु
 उदकेन=जलेन च मृत्तिरया-यावत्-शुचिभवति, एव सखु वय जलाभिषेकपूता
 त्मान. अविन्देन स्वर्गं गच्छामः ।

तत = चોક્ષાપરિવ્રાજિકાવચનશ્રવણાનન્તર खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या
 चोक्षा परिव्रजिनामेव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे चोक्षे ! तद् ययानामक-
 इद दृष्टान्तोपन्यासे-दृष्टान्त प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः-यथा कोऽपि पुरुषो रुधिर

(तएण सा चोक्खा परिव्वाडया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) प्रत्युत्तर मे उस चोक्षा परिव्राजिका ने विदेह राजवर कन्या
 उस मल्ली कुमारी से ऐसा कहा

(अम्हण દેવાણુપ્પિણ ! સોયમૂલળ ધમ્મે, જણ અમ્હ કિંચિ અમુડ
 भवड तएण उदएण य मड्डियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण
 मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी) हे देवानुप्रिये !
 हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है । इसीलिये हमारी कोई वस्तु
 जब अशुचि हो जाती है-तब हम लोग उसे जल एव मृत्तिका से पवित्र
 कर लेते हैं । इस तरह हम लोग जल स्नान से पवित्रात्मा होकर विना
 किसी विघ्न के शीघ्र ही स्वर्ग पहुँच जाते हैं ।

इस प्रकार चोक्षा का कथन सुनकर विदेह राज की उत्तम कन्या
 मल्ली कुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से ऐसा कहा- (चोक्खा-से

(तएण सा चोक्खा परिव्वाडया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी)

જવાબમાં ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાએ વિદેહ રાજવર કન્યાને આ પ્રમાણે
 કહ્યું કે—

(અમ્હણ દેવાણુપ્પિણ ! સોયમૂલળ ધમ્મે જણ અમ્હ કિં ચિ અમુડ મવડ,
 तएण उदएण य मड्डियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण मल्ली विदेहराय
 वरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયે ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે એટલા માટે અમારી
 ગમે તે વસ્તુ જ્યારે અશુચિ થા જાય છે ત્યારે અમે તેને પાણી અને
 માટીથી પવિત્ર કરીએ છીએ આ રીતે અમે પાણીમા સ્નાન કરાને પવિત્રાત્મા
 થઈ જઈએ છીએ અને નિર્વિઘ્ન રૂપે જલદી સ્વર્ગમા પહોંચી જઈએ છીએ

આ રીતે ચોક્ષાનુ કથન સાંભળીને વિદેહરાજની ઉત્તમ કન્યા મલ્લિકા
 કુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને કહ્યું કે—

एष्टायां=नलपक्षेपेण सिक्ता, दर्भोपरि 'पञ्चुत्थुयाए' प्रत्यस्तताया=प्रसारिताया
'मिसियाया' वृषिकायाम्=भामने निपीडति=उपविशति, निगध मल्ल्या
विदेहराजवरकन्यायाः पुरतो दानधर्मं च यावद् विहरति दानधर्मशौचधर्मादि-
कमाध्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती सा चोक्ता परिव्राजिका आस्ते स्म ।

ततः खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षा परिव्राजिकामेवमवादीत्-हे
चोक्षे ! तत्र खलु किं मूलो धर्मः प्रज्ञप्तः 'ततः=मल्लीयवन, श्रवणानन्तर खलु सा

परिव्राजकों के मठ से निकली और किननीक परिव्राजिकाओं को साथ
लेकर मिथिला राजधानी के घीचों घीच से होकर वह जहाँ कुम्भक
राजा का भवन था तथा उस में जहाँ कन्यान्तः पुर और उस में भी
विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी थी वहा आई- (उवाग-
च्छित्ता उदय परि फासियाए दम्भोवरि पञ्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ
वहा आकर वह जल से सिञ्चित हुए तथा दर्भ के ऊपर बिछाये गये
आसन पर बैठ गई । (निसिचित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्याए पुरओ
दाणधम्मं च जाव विहरइ) बैठकर उसने विदेह रायवर कन्या के समक्ष
दान, धर्म शौचधर्म आदि की कथा की-प्ररूपणा की (तएण मल्ली वि
देहरायवर कन्या-चोक्ख परिवाडय एव वयासी) बाद में विदेह राज
की उत्तम कन्या मल्लीकुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार
कहा- (तुम्हेण चोक्खे किं मूलं धम्मे पण्णत्ते ?) हे चोक्षे ! तुम्हारे
यहा धर्म किं मूलक (किस मूलक) प्रज्ञप्त हुआ है ।

रगेक्षा वञ्छोने लधने परिव्राजिकेना भठथी अड्डार नीकणी अने डेटवीक परि
व्राजिकाओनी साथे मिथिला राजधानी वञ्छे थधने न्या कुलकराजने भडेव
हुतो तेभज न्या कन्यान्त पुर अने तेभा पणु विदेहराजनी उत्तम कन्या
मल्लीकुमारी हुती त्या पछोथी

(उवागच्छित्ता उदय परिफासियाए दम्भोवरिपञ्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ)

त्या आवीने ते पाणी छाटेला दर्भना उपर पाथरवाभा आवेला आसन
उपर भेसी गध

(निसित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्याए पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ)
भेसीने तेले विदेहराजवर कन्यानी साथे दानधर्म, शौचधर्म वगेरेनी व्याख्या
करी (चोम्मस परिवाडय एव वयासी) त्यारपछी विदेहराजनी उत्तम कन्या मल्ली
कुमारीअे चोक्षा परिव्राजिकेने आ प्रभावे कहु के- ' तुमेण चोक्खे किं लण
धम्मे पण्णत्ते ?) हे चोक्षे ! तमाराभा धर्म किं मूलक प्ररूपित करवाभा

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्वेवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विद्भिच्छिष्या ' विचिकित्सिता= ' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्लया अत्र श्रद्धोत्पत्त्यस्यते किं वा नोत्पत्त्यते ' इत्येव विचिकित्सा=संशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा- ' भेयसमावृण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भेदः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपम्त समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्लया समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत प्रश्न समाधातु व्याकुलीनाता, इति भावः मल्लयाः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नहीं होती है । (तएण सा चोक्खा परिचाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव बुत्ता समाणा सकिया कखिया विद्भिच्छिष्या भेय समावृण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शका से युक्त बन गई, कोक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति सदेह और भेद (अपने मतव्य को विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मैं मल्ली कुमारीको उत्तर दूंगी-तो न मालूम वह उत्तर मन्चा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशक्ति बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूंगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नहीं होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिचाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव बुत्ता सकिया कखिया विद्भिच्छिष्या भेयसमावृण्णा जाया यावि होत्था)

आ प्रभाए विदेहरायवर कन्या भट्टीकुमारी वडे भभनववाभा आवेली चोक्षा परिव्राजिका स काथी युक्त थर्ग गऽ, काक्षाथी युक्त वध गर्ध, विचिकित्सा (क्षण प्राप्ति विशे स देह युक्त) अने वेद (पोतानी मान्यतानो नाश) समापन्न थर्ग गऽ भट्टीकुमारीने ज्वाणभा इ डोर्ग पणु वस्तु रज्जू करीश तो ते भाथी इशे के डेम ? आ नतनी भुज्जवण्णी चोक्षानु मन शङ्कित थर्ग गयु

“ जे भारे ज्वाण भरोअ नहि डोय तो जीने शे ज्वाण इ आपीश ? आ प्रभाए ते ज्वाणना विशे वाञ्छायुक्त थर्ग गर्ध “ भट्टीकुमारीने ज्वाण आप्या छता पणु तेने भारे ज्वाण डपर विन्हास जेअशे के डेम ? ” आ गीते ते विचिकित्सा युक्त थर्ग गऽ “ आ परिस्थितिमा भाडे शु करवु

કૃત=શોણિતલિપ્ત રક્ત રુધિરેણૈવ શોણિતલિપ્તસ્ય રક્તસ્ય રુધિરેણ ધાવ્યમાનસ્વ-
પ્રક્ષાલ્યમાનસ્ય કાઽપિ શોધિઃ ? નાયમર્થઃમમર્થઃ=રુધિરલિપ્તરક્તસ્ય રુધિરેણ કાપિ
શુદ્ધિર્ન ભવતીત્યર્થઃ । ચોક્ષે । ણમેવ=રુધિરમસદૃશસ્તદદૃષ્ટાન્તેનૈવ યુષ્માક સ્વ
પ્રાણાતિપાતેન યાવન્મિ પાદર્શનશલ્યેન=અષ્ટાદશપાપસ્થાનસેવનેન નાસ્તિ શુદ્ધિઃ=
ન ભવતિ કાચિદપિ શુદ્ધિ રાત્મન હત્યથ , યયૈવ તસ્ય રુધિરકૃતસ્ય વક્ત્રસ્ય રુધિ
રેણૈવ ધાવ્યમાનસ્ય=પ્રક્ષાલ્યમાનસ્ય નાસ્તિ શુદ્ધિઃ । તતઃ સ્વલ્પ=તત્પ્રમાણ સા
ચોક્ષા પરિગ્રાજિકા મલ્લયા પ્રિદેરાજરમ્ભ્યા એવમુક્તા સતિ 'સક્રિયા' શક્તિ
'કલ્પિયા' કાસિતા=યદિ મનતિ પ્રિયાર્યોત્તરન દાસ્યામિ તત્સમીચીન ભવિ
ષ્યતિ નવા ? ' હતિ સમ્યયુક્તા । 'યદિ મદ્વિચારિતિયુત્તર સમ્યગ્ ન ભવેતર્હિ

જહા નામણ કેઈ પુરિસે રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેડ્ડા અત્થિણ
ચોક્ષા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ધોવ્વમાણસ્સ કાઈ સોહી ?
નો ઇણદ્દે સમદ્દે એવામેવ ચોક્ષા ! તુબ્બેણ પાણાઢ્ઢાણ જાવ મિચ્છાદ
સણસલ્લેણ નત્થિ કાઈ સોહી, જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ
ચેવ ધોવ્વમાણસ્સ) ચોક્ષે ! જૈસે કોઈ પુરુષ રુધિર (રૂન) સે લિસ
હુણ વક્ક કો રુધિર (રૂન) સે હી ધોવે-તો કયા ચોક્ષે ! ઉસ રુધિર
લિસ વક્ક કી રુધિર સે ધોવે જાને પર કોઈ શુદ્ધિ હો સકતી હૈ ?
રુધિર સે લિસ વક્ક કી રુધિર સે ધોવે પર શુદ્ધિ હોતી હૈ-યહ વાત તો
કોઈ બી સમઘદાર પ્રાણી નહી માન સકતા હૈ । ઉસી તરહ હે ચોક્ષે !
પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય કે સેવન સે-અષ્ટાદશ પાપ-
સ્થાનો કે સેવન સે-આપ લોગો કી આત્મા કી બી કિસી તરહ સે
શુદ્ધિ નહી હો સકતી હૈ । જૈસે ઉસ રુધિર સે સને હુણ વક્ક કી રુધિર

(ચોક્ષા ! સે જહા નામણ કેઈ પુરિસે રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવે
ડ્ડા, અત્થિણ ચોક્ષા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ધોવ્વમાણસ્સ કાઈ
સોહી ? નો ઇણદ્દે, સમદ્દે એવામેવ ચોક્ષા ! તુબ્બેણ પાણાઢ્ઢાણ જાવ
મિચ્છાદસણસલ્લેણ નત્થિકાઈ સોહી, જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ
ચેવ ધોવ્વમાણસ્સ)

હે ચોક્ષે ! જેમ કોઈ માણસ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ
ધોવે તો શુ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવડાવવામા આવે તો
તેની શુદ્ધિ થઈ ગઈ કહેવાય ? આ વાત તો ગમે તે વ્યક્તિ પણ સમજી શકે
તેમ છે આ પ્રમાણે હે ચોક્ષે ! પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના
સેવનથી તમારા જેવા લોકો ॥ શુદ્ધિ કોઈપણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી
જેમ પેલા લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની શુદ્ધિ લોહીથી થઈ શકતી જ નથી તેમજ
મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી પણ શુદ્ધિ થતી નથી

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्वेवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विद्मिच्छिद्या ' विचिकित्सिता= ' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्ल्या अत्र श्रद्धोत्पत्त्यस्यते किं वा नोत्पत्त्यते ' इत्येव विचिकित्सा=संशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा- ' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भेदः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपस्त समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परित्राजिका मल्ल्या समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत प्रश्न समाप्तातु व्याकुलीजाता, इति भावः मल्ल्याः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नहीं होती है । (तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव बुत्ता समाणा सकिया कखिया विद्मिच्छिद्या भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परित्राजिका शका से युक्त बन गई, कोक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति संदेह और भेद (अपने मतव्य का विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मे मल्ली कुमारीको उत्तर दूगी-तो न मालूम वह उत्तर मन्चा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशक्ति बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नहीं होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव बुत्ता सकिया कखिया विद्मिच्छिद्या भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

आ प्रभाण्णे विदेहराजवत्तं कन्या भवतीकुमारी वडे समन्तववाभा आवेली चोक्षा परित्राजिका राकाथी युक्ता थर्ध गध, कोक्षाथी युक्ता थर्ध गध, विचिकित्सा (इण प्राप्ति विशे सदेह युक्ता) अने लेह (पोतानी मान्यतानो नाश) समापन्न थर्ध गध । भवतीकुमारीने जवाणभा हु डोई पणु वस्तु रज्जू करीश तो ते सारथी हसे के डेम ? आ नतनी मुळवण्णथी चोक्षानु मन शङ्कित थर्ध गधु

" जो भारो जवाण जरोजर नहि होय तो भीने सो जवाण हु आपीश ? आ प्रभाण्णे ते जवाणना विशे वाञ्छायुक्ता थर्ध गध " भवतीकुमारीने जवाण आय्या छता पणु तेने भारो जवाण उपर विश्वास जेमगे के डेम ? " आ गीते ते विचिकित्सा युक्ता थर्ध गध " आ परिस्थितिमा भागे शु कश्च

शक्नोति कचिदपि 'पामोक्त्वा' प्रमोक्षम्=प्रमुच्यते प्रश्नग्रन्थादनेनेति-प्रमोक्षः
 प्रश्नस्य परिहारम्, उत्तरमित्यर्थः 'आहक्वित्तए' आग्यातु=कथायितुम्, यद्वा
 चोक्त्वा परित्राजिमा मल्ल्याः प्रश्नस्योत्तरं यत्तुमममर्था जाता, तदा मा 'तुसि
 णीया' तूष्णीका=मौनावलम्बिनी भूत्वा 'सच्चिद्द' सतिष्ठते सस्यिता ।
 ततस्तदन्तरं खलु तां चोक्षा मल्ल्याग्रहण्यो दासचेटिका = दासपुत्र्यः 'हीलेंति'
 हिलन्ति-अवमानयन्ति, निन्दति-जात्यागुद्घाटनेन कुत्सन्ति, खिसन्ति-दोषकी
 र्त्तनेनोपदसन्ति, गर्हन्ते सर्वसमस निद्रा कुर्वन्ति, अप्येकिका एकाः काश्चित्-
 क्रोधयन्ति तस्याः कोपमुद्घाटयन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित्-'मुहमकडियाओ'
 मुखमर्कटिका=मुखानां तिर्यकानि कुर्वन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित् 'वग्धा
 डीओ करेंति, अप्येगइया तज्जमाणीओ निच्छुभति) इन

अब इस समय मुझे क्या करना चाहिये इस तरह का वह निर्णय नहीं
 कर सकने के कारण व्याकुल उन जाने से भेद समापन बन गई ।

(मल्लीए णो सचाएड किं चि त्रि पामोक्त्वा माहक्वित्तए तुसि
 णीया सच्चिद्द, तएण चोक्ख मल्लीए बहुओ दास चेडीओ हीलेंति,
 निंदति, खिसति गरहति) अतः वह मल्ली कुमारी को कुछ भी प्रमोक्षा
 प्रश्न का उत्तर-नहीं दे सकी, किन्तु चुपचाप बैठी रही । जब चोक्षा की
 ऐसी हालत मल्ली कुमारी की दास चेटियों ने देखी तो वे उसका
 अपमान रूप हीलना करने लग गई । जाती आदि के उद्घाटन से उस
 से घृणा रूप निंदा करने लगी । दोषों के कीर्तनसे उस का उपहास रूप
 खिसना करने लगी । सबके समक्ष उसके अवर्ण वादरूप गर्हणा करने
 लगी (अप्येगइया हेरुयालति, अप्येगइया मुहमकडियाओ करेंति अप्ये
 गइया वग्धाडीओ करेंति, अप्येगइया तज्जमाणीओ निच्छुभति) इन

बोधये ? ” आ जातना विवेकनी शक्ति यत्तु तेनी नारा पाभी હતી એવી
 તે વ્યાકુળ થઇને ભેદ સમાપન બની ગઈ હતી

(મल्लीએ ણો સચાએડ કિંચિ ત્રિ પામોક્ત્વામાહક્વિત્તએ તુસિણીયા સચ્ચિદ્દ,
 તएण चोक्ख मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदति, खिसति गरहति)
 એથી મલીકુમારીને તે જવાબમાં કંઈ પણ કહી શકી નહિ તે સાવ મૂળી
 થઇને એસી જ રહી મલીકુમારીની દાસ એટીઓએ એકાની આ પ્રભાણની
 સ્થિતિ બોધ ત્યારે તેઓ તેની અપમાનરૂપ હીલના કરવા લાગી બતિ વગેરેનું
 ઉદ્ઘાટન કરીને તેની ધૂણા રૂપ નિંદા કરવા લાગી તેના દોષોને ઝોલેતી ઉપહાસ
 રૂપ ખિસના કરવા લાગી બધાનાં સામે તેની અપભૂવાદ રૂપ ગર્હણ કરવા લાગી
 (અપ્યેગઇયા હેરુયાલતિ, અપ્યેગઇયા મુહમકકડિયાઓ કરેતિ અપ્યેગઇયા વગ્ધા-
 ડીઓ કરેતિ, અપ્યેગઇયા તજ્જમાણીઓ નિચ્છુભતિ)

डीओ' व्याप्राटिका=उपहासार्थं शब्दविशेषान् कुर्वन्ति, अप्येनिका एकाः काश्चित्
'तज्जमाणीओ' तर्जयन्त्यः - दुर्वचनतः, 'मम प्रश्नम्योत्तरं देहि, नो चेत् पश्चाद्
ज्ञास्यमि' इत्यादिना भीषयन्त्य इत्यर्थः । निच्छुभति निक्षिपन्ति=निस्सारयन्ति ।

ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मल्लया विदेहराजरुन्याया दासचे-
टिकाभिः 'यावत्-द्विल्यमाना निन्द्यमाना गर्ह्यमाणा, आशुरुक्ता=शीघ्र क्रोधाविष्टा
यावत् 'मिममिसेमाणी' मिससमिन्ती क्रोधानलेन जाज्वल्यमाना मल्लया विदेह
राजवररुन्याया 'पओसमावज्जइ' प्रद्वेषमापद्यते=परमद्वेषवती जाता । तत सा

मैं से किसी एक ने उसे क्रोध उद्भाषित-किया, किसी एक ने उस के
सामने अपना मुख मोड़ लिया, किसी एक ने उस की हँसी उड़ा ने के
लिये विशेष शब्दों का प्रयोग किया, किसी एक ने दुर्वचनो से उसे
तर्जित किया, किसी एक ने " मेरे प्रश्न का उत्तर दे, नहीं तो पीछे
तुझे मालूम पड़ेगी " इस तरह कहकर उसे डराया और वहा से निकाल
दिया । (तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडि-
याहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुत्ता जाव मिसि मिसे
माणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ,
गिण्हित्ता रुण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ) इस तरह विदेह राज कि
वरकन्यामल्ली कुमारी की दास चेटियो से अपमानित घृणित, और
निन्दित होती हुई वह चोक्षा परिव्राजिका, क्रोध से लाल हो गई, और
मिसमिसाती हुई क्रोध से जाज्वल्यमान होती हुई-वह विदेह राज की
उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के ऊपर परम द्वेषवती बन गई ।

तेज्जोभाथी केछके तेने कोधित ठरी, केरुओ तेनी सामेथा मे इरवी वीधु केछके
तेनी भरकरी करवा विशेष शब्दोने प्रयोग ठर्यो, केछके दुर्वचनोथी तेने
तिरस्कार ठर्यो, केछके तेने " भास सवालने जवाब आप नहिंतर तारी
जमर लछ लछशु " आ रीते पीछ अताची अने त्याथी अडार कादी भूझी
(तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्ज
माणी हीलिज्जमाणी, आसुत्ता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेह रायवररु-
न्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता रुण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ)

आ रीते विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीनी दास चेटीयोथी अपमानित,
घृषित अने निन्दित थती चोक्षा परिव्राजिका क्रोधभा लालयेण थरुगछ अने
क्रोधभा मगगती ते विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी प्रत्ये भूमर धर्पाणु-द्वेष
करनारी थरु गछ

ચોક્ષા પરિત્રાજિકા ' મિસિય ' દ્રુપિકા = જામન સ્વક્રીયમિતિમાવ, યદ્વાતિ
 યદ્વોત્વા ' ઋણતેઊરાઓ ' ઋન્યાન્તઃ પુરાત્ મલ્લ્યા મનાત્, પ્રતિનિષ્ક્રામતિ =
 નિઃ સરતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય મિથિલાતો નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય પરિત્રાજિકા સપરિવૃતા
 પ્રચિરલસન્યાસિકાભિર્યુક્તા, યત્રેવ પશ્ચાલજનપદઃ = પશ્ચાલનામકો દેશેઽસ્તિ,
 યત્રેવ = યસ્મિન્ દેશે કામ્પિલ્યપુર નામ નગર, તત્ર = તસ્મિન્ નગરે ઉપાગચ્છતિ,
 ઉપાગત્યચ્ચ કામ્પિલ્યપુરે નગરે વહ્ના રાજેશ્વરાદીના પુરતઃ સ્વમત યાવદ્-આરુયા
 પયન્તી પ્રજાપયન્તી પ્રરુપયન્તી વિહરતિ = આસ્તેસ્મ ॥ સૂ. ૩૦ ॥

મૂલમ્-તદ્દેશં સે જિયસન્તૂ અન્નદા કયાઈં અંતેઊરપરિયાલ
 સપરિવુડે એવ જાવ વિહરઈ, તદ્દેશં સા ચોસ્વા પરિવ્વાઈયા સપ-

હવે તે હવે સમય વહા સે અપના આમન ઉઠાયા-ઔર ઉઠાકર
 વહ કન્યાન્તઃ પુર સે-મલ્લી કુમારી કે ભવન સે ગહિર નિકલ આઈ ।
 (પડિ નિકલમિત્તા) ગહિર નિકલકર (મિથિલાઓ નિગગચ્છડ, નિગગ
 ચ્છિત્તા પરિવ્વાઈયા સપરિવુડા જેણેવ પચાલ જણવણ, જેણેવ કપિલ્લપુરે
 નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા કપિલ્લપુરે વહ્ણ રાઈસર૦ જાવ
 પરુવેમાણી વિહરઈ) ફિર વહ મિથિલા નગરી સે ચલ દી ।

ચલકર પરિત્રાજિકાઓં કો સાથ મેં લિયે હુએ જહા પાચાલ દેશ
 ઔર હવે જહા કામ્પિલ્ય નગર યા વહાં આઈ । વહા આકર વહ અપને
 મત કી અનેક રાશ્વજેર આદિકોં કે સમક્ષ આરુયાપના ઔર પ્રરુપણાક
 રતી હુઈ રહને લગી ॥ સૂ. ૩૦ ॥

તેણે તરત જ પોતાનું આમન ત્યાથી ઉપાડી લીધું અને કન્યાન્ત પુરથી
 એટલે કે મહલીકુમારીના મહેલથી તે બહાર નીકળી ગઈ (પડિનિકલમિત્તા)
 બહાર નીકળીને

(મહિલાઓ નિગગચ્છડ નિગગચ્છિત્તા પરિવ્વાઈયા સપરિવુડા જેણેવ પચાલ
 જણવણ, જેણેવ કપિલ્લપુરે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ઉવાગચ્છિત્તા કપિલ્લપુરે વહ્ણ
 રાઈ સર૦ જાવ પરુવેમાણી વિહરઈ)

તે મિથિલા નગરીમાંથી ચાલતી થઈ

પરિત્રાજિકાઓની સાથે તે ચાલતી ચાલતી તે ન્યા પાચાલ દેશ અને
 તેમાં પણ ન્યા કામ્પિલ્યનગર હતું ત્યા આવી ત્યા આવીને તે પોતાના ધર્મની
 ધણી રાજેશ્વર વગેરેની સામે આરુયાપના, પ્રજાપના અને પ્રરુપણા કરતા
 રહેવા લાગી ॥ સૂત્ર " ૩૦ " ॥

रिवुडा जेणेव जितसत्तूस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तु जएण विजएण वद्धावेइ ।
 तएण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ पासित्ता
 सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्ख सक्कारेइ, सक्कारित्ता
 आसणेणं उवणिमतेइ, तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए
 जाव भिसियाए निसीयइ, जियसत्तुं राय रज्जे य जाव अतेउरे
 य कुसलांदत पुच्छइ, तएण सा चोक्खा जियसत्तस्स रत्तो
 दाणधम्म च जाव बिहरइ, तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरो-
 हसि जाव बिम्हिए चोक्ख एव वयासी-तुमंण देवाणुप्पिया ।
 बहूणि गामागार० जाव अडसि, बहूणि य राईसर० गिहाई
 अणुपविससि, ते अत्थियाइ ते कस्सवि रत्तो वा जाव कहिचि
 एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे ? तएणं
 सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसिं अवहसिय करेइ, करित्ता
 एव वयासी-एव च सरिसए णं तुम देवाणुप्पिया । तस्स
 अगडदद्दुरस्स ? , केण देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे ? जियस ।
 से जहानामए अगडदद्दुरे सिया तथेव बुद्धे अण्णं अगड वा
 तलाग वा सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ-अय चेव अगडे
 वा जाव सागरे वा । तएण त कूव अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए,
 तएणं से कूवदद्दुरे त सामुद्ददद्दुर एव वयासी-से केसणं
 तुम देवाणुप्पिया । कत्तो वा इह हव्वमागए ? तएणं से सा-
 मुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया ।

अहं सामुद्दएददुरं, तएण से कूवददुरे तं सामुद्दय ददुर एव
 वयासी-के महलए णं देवाणुप्पिया । से समुद्दे ? तएणं से
 सामुद्दए ददुरे त कूवददुरं एव वयासी-महालए णं देवाणुप्पिया ।
 समुद्दे । तएणं से ददुरे पाएण लीहकड्डेइ, कड्डित्ता एव वयासी
 —एमहालएणं देवाणुप्पिया । से समुद्दे ? णो इणट्ठे समट्ठे,
 महालएणं से समुद्दे । तएणं से कूवददुरे पुरमत्थिमिलाओ
 तीराओ उप्पिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी-ए
 महालएणं देवाणुप्पिया । से समुद्दे ? णो इणट्ठे समट्ठे, तहव
 एवामेव तुमपि जियसत्तु अन्नेसि वड्डण राईसर जाव सत्थवा
 हपभिईण भज्ज वा भगिणीं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे
 जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओरोहे तारिसए णो अणस्स,
 त एव खलु जियस मिहिलाए नयरीये कुंभगस्स घूया पभा-
 वतीये अत्तया मल्ली नामति रुवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु
 अण्णा काई देयकन्ना या जारिसिया मल्ली, मल्लीए विदेह
 राययरकन्नाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयस
 हस्स तमपि कल न अग्घइ त्तिकट्ठु जामेय दिस पाउवभूया तामेव
 दिस पडिगया, तएणं से जियसत्तु परिव्याइया जणियहासे दूयं
 सदायेइ, सहावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३१ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततस्तदन्तरं स जितशत्रु अन्यदा कदाचित्

‘ तएण से जियसत्तु अन्नया कयाइ ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जियसत्तु, वह जितशत्रु (अन्नया कयाइ)

(तएण से जियसत्तु अन्नया कयाइ । इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाव (से जियसत्तु) जितशत्रु (अन्नया कयाइ) के।

=અ-યસ્મિન્ કર્મિશ્ચિન્ સમયે ' અતેરપરિચાલસપરિવુદે ' અન્તઃ પુરપરિવાર સપરિવૃતઃ=અન્તઃ પુરસ્ય પરિવારેણ=સ્ત્રીજનૈઃસપરિવૃત યુક્ત, એવ યાવદ્ વિહરતિ-તિષ્ઠતિ । ' તણ ' તતઃ=તદા, શ્વલુ સા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પરિવૃતા=સ્વશિષ્ય-સન્યાસિકા સહિત યત્રૈવ જિતશત્રો રાજો ભવન=પ્રાસાદઃ, યત્રૈવ=યસ્મિન્નેવ સ્થાને જિતશત્રુ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, જિતશત્રુ જયેન-પિજયેન=જય વિજય શબ્દ કીર્તનેન ' વદ્વાવેદ ' વર્ધયતિ । તત' શ્વલુ સ જિતશત્રુચોક્ષા પરિવ્રાજિકામ્ એજમાનામ્=આગચ્છતી પશ્યતી, દૃષ્ટ્વા સિંહાસનાદમ્બુતિષ્ઠતિ, અમ્બુતથાય ચોક્ષા સત્કરોતિ, સત્કૃત્ય આસનેન ' ઉવણિમતેઽ ' ઉપનિમન્ત્રયતિ=ઉપવેશનાર્થ પ્રાર્થ-

કિસી એક દિન (અતેરપરિચાલસપરિવુદે) અપને અન્તઃ પુર પરિવાર કે સાથ (એવ જાવ વિહરઈ) બેઠા હુઆ થા (તણ મા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકામ્) હતને મેં વહ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાઓંકે સાથર (જેણેવ જિતસત્તુસસ રણો ભવણે જેણેવ જિયસત્તુ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા જિયસત્તુ જણેવ વિજણેવ વદ્વાવેદ) જહા જિતશત્રુ રાજા કા મહલ થા ઓર જહા વે જિતશત્રુ રાજા વિરાજમાન થે વહા આઈ આકર ઉસને ઉન્હેં જય વિજય શબ્દોંસે ધન્યવાદ દિયા-(તણે સે જિયસત્તુ ચોક્ષ પરિવ્રાજિકામ્ એજમાણ પાસઈ, પાસિત્તા સીંહામણાઓ અમ્બુદેઈ, અમ્બુદિત્તા ચોક્ષ સકારેઈ, સકારિત્તા આસણેણ ઉવણિમતેઈ) જાવ ચોક્ષાપરિવ્રાજિકા કો જિતશત્રુ રાજાને આતે હુણ દેખા થા-તો વહ દેખતે હી અપને સિંહાસન સે ઉઠ બેઠા થા-ઓર ઉઠકર ઉસને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા કા આદર સત્કાર કિયા થા । આદર સત્કાર કરકે ઉસને ઉસે આસન પર

એક દિવસે (અતેરપરિચાલસપરિવુદે) પોતાના રણુવાસના પરિવારની સાથે (એવ જાવ વિહરઈ) બેઠા હતા (તણે સા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકામ્) તેટલામા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાઓની માથે

(જેણેવ જિતસત્તુસસ રણો ભવણે જેણેવ જિતસત્તુ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા જિયસત્તુ જણેવ વિજણેવ વદ્વાવેદ)

ન્યા જિતશત્રુ ગબને મહેલ હતા અને ન્યા જિતશત્રુ રાજા બેઠા હતા ત્યા ગઈ ત્યા પહોચીને તેણે રાજાને જય વિજય શબ્દોથી વધાવ્યા

(તણે સે જિયસત્તુ ચોક્ષ પરિવ્રાજિકામ્ એજમાણ પાસઈ, પાસિત્તા સીંહાસણાઓ અમ્બુદેઈ, અમ્બુદિત્તા ચોક્ષ સકારેઈ, સકારિત્તા આસણેણ ઉવણિમતેઈ)

જિતશત્રુ ગબએ ન્યારે ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આવતી બેઠ ત્યારે તેઓ પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને તેઓએ આદર મત્કાર કર્યો આદર મત્કાર કરીને રાજાએ તેને આસન ઉપર બેસવા માટે કહ્યું

યતિ । તણ ચોક્ષા 'ઉદગપરિફાસિયા' , ઉદગપરિસ્પૃષ્ટાયાં = જાન્ય પ્રત્યેયેગ સિત્તાયાં
 યાવત્-દર્મોપરિ પ્રત્યાસ્તૃતાયા 'મિસિયા' ટ્વિકાયાં નિમીયડ' નિમીદતિ = ઉપવિ
 શતિ । જિતશત્રુ રાજાને રાજ્યે ચ યાવદન્ત' પુરે ચ કુશલોદન્ત કુશલસમાચારં પૃચ્છતિ,
 તતઃ સ્વલુ સા ચોક્ષા જિતશત્રો રાજા. પુરતો દાનધર્મ ચ યાવદ્-શૌચધર્માદિકમા
 રૂપાપયન્તી પ્રજ્ઞાપયન્તી પ્રરૂપયન્તી વિહરતી = આસ્તે સ્મ । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ
 જિતશત્રુઃ, આત્માનઃ સ્વસ્પ, 'ઓરોહસિ' અપ્રોધે = અન્તઃ પુરે યાવદ્ વિસ્મિતઃ =
 આશ્ચર્યયુક્તઃ સન્ ચોક્ષામ્ એ = રક્ષણપકારેણ, અવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્વ
 સ્વલુ-વહ્નિ, ગ્રામાઋગ્યાત્ = ગ્રામાઋગ્યેટ્ઋષ્ટાદીનિ અટમિ = ગચ્છાસિ વહ્નિ

બેઠ જાને કે લિયે કહા- (તણ સા ચોરણા ઉદગપરિફાસિયા
 જાવ મિસિયા નિસીયહ) અતઃ વહ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા જલસે સિચ્ચિત
 હુણ યાવત્ આસન પર ચેઠ ગઈ ।

(જિયસત્તૂ રાય રજ્જે ય જાવ અતેઉરેય કુસલોદત પુચ્છઈ, તણ
 સા ચોક્ષા જિયસત્તુસ્સ રણો દાણધમ્મચ જાવ વિહરઈ) બેઠને કે બાદ
 ઉસને જિતશત્રુ રાજા સે રાજ્ય એવ અત. પુર કી કુશલવાર્તા પૂછી બાદ
 મેં ઉસને જિતશત્રુ રાજા કે સમક્ષ દાન ધર્મ શૌચ ધર્મ આદિકા કથન
 કિયા, પ્રરૂપણા કિયા પ્રજ્ઞાપન કિયા, (તણ સે જિયસત્તૂ અપ્પણો
 ઓરોહસિ જાવ વિમ્મિહ ચોક્ષ એવ વયાસો) હસકે બાદ ઉસ જિતશત્રુ
 રાજા ને અપને અન્તઃ પુર મેં વિસ્મિત હોકર ઉસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા સે
 હસ પ્રકાર કહા- (તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! વહ્નિ ગામાઋગ્યા જાવ અહસિ
 વહ્નિ ય રાઈસરં ગિહાઈ અણુપવિસસિ) હે દેવાણુપ્રિયો ! તુમ અનેક

(તણ સા ચોક્ષા ઉદગપરિફાસિયા જાવ મિસિયા નિસીયહ)

ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પાણી છાટેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ

(જિયસત્તૂ રાય રજ્જે ય જાવ અતે ઉરેય કુસલોદત પુચ્છઈ તણ ચોક્ષા
 જિયસત્તુસ્સ રણો દાણધમ્મ ચ જાવ વિહરઈ)

ત્યાર બાદ તેણે રાજાને રાજ્ય તેમજ રણુવાસની કુશળ વાર્તા પૂછી અને
 પરિવ્રાજિકાએ આ બધું કરીને જિતશત્રુ રાજાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ
 વગેરેનું કથન કર્યું, પ્રરૂપણું કર્યું અને પ્રજ્ઞાપન કર્યું

(તણ સે જિયસત્તૂ અપ્પણો ઓરોહસિ જાવ વિમ્મિહ ચોક્ષ એવ વયાસો)

રણુવાસમાં બેઠેલા રાજા જિતશત્રુએ તેની વાત સાંભળીને વિસ્મય પામતા
 પરિવ્રાજિકાને કહ્યું કે—

(તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! વહ્નિ ગામાઋગ્યા જાવ અહસિ વહ્નિ ય રાઈસરં
 ગિહાઈ અણુપવિસસિ)

च 'राईसर० गिहाइ' राजेश्वरादीना गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्मात् कथय-
अस्ति चापि, 'ते' त्वया कस्यापि राज्ञो वा यावत्-ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वः,
यादृशः खलु अयं समावरोधः ? अन्तःपुरम् ततस्तदनन्तरं खलु सा चोक्षा परिव्रा-
जिका जितशत्रुमीपदपहसितं करोति, कृत्वा एव प्रयामी ।

हे देवानुप्रिय ! एव च सदृशः खलु त्वं तस्य 'अगडददुरस्स' अवटददुरस्य
=कूपमण्डकस्य । चोक्षाया वचनं श्रुत्वा जितशत्रुचोक्षा पृच्छति-'केण' इत्यादि ।
कः खलु हे देवानुप्रिये ! सोऽवटददुरः=कूपमण्डकः ? चोक्षा परिव्राजिका कथ-
यति-तद् यथानामकम् = यथानामकमितिपदं दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः ।

ग्राम, आकर, खेट कर्षट आदिस्थानो मे जाती रहती हो, तथा अनेक
राजेश्वर आदि जनों के गृहों में प्रवेश भी करती रहती हो (त अस्थि-
याइ ते कस्स विरनो वा जाव कहिं चि एरिसण आरोहे दिट्ठिपुण्वे जारि-
सण ण इमे मह अवरोहे) तो कहो तुमने किसी राजा आदि का ऐसा
अन्तः पुर पहिले कभी कहिं देखा है ? कि जैसा मेरा यह अन्तः पुर है ।
(तएण सा चोक्खा परिव्राडया जियसत्तू ईसि अवहासेय करेइ, करित्ता
एव वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद उस चोक्षा परिव्राजिकाने पहि-
ले तो राजा को कुछ हँसाया बाद में हँसाते हुए उनसे ऐसा कहा-एव
च सरिसण ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स) हे देवानुप्रिय !
तुम तो उस कूपमण्डक के समान हो ऐसी चोक्षा की बात सुनकर बीच
में ही राजा ने उससे कहा (केण देवाणुप्पिण से अगडददुरे ? देवानु-

हे देवानुप्रिये ! तमे वल्लु आभ, आकर, जेटकर्णट वगेरे स्थानोभा अवर-
-अवर करेना रहे। छ। तेभज वल्लु राज्ञो वगेरेना भडेयोभा पणु नोयो छ।

त अस्थियाइ ते कस्स विरनो वा, जाव कहिं चि एरिसण आरोहे दिट्ठिपुण्वे
जारिसण ण इमे मह अवरोहे)

तो जातायो हे भरा जेयो रणवास कोछपणु राज्ञ वगेरेना तमे
जेयो छे

(तएण सा चोक्खा परिव्राडया जियसत्तू ईसि अवहासेय करेइ, एव करित्ता वयासी)

आ रीते सावजाने चोक्षा परिव्राजिकाये पडेला तो राजाने थोडा डसाव्यो
त्यार पछी डसावता तेभने कछु के-

(एव च सरिसण ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स)

हे देवानुप्रिय ! तमे तो पेला इवाना डेडा जेवा छे । थोड़ानी आ-
वान सवजाने राज्ञे वयेथी ज तेने कछु के (केण देवाणुप्पिण से अगड-

યથા-एकः कूपमण्डक. स्यात्=भासीत्, स खलु 'तत्थ' तत्र=तस्मिन् कूपे जातः, तत्रैव कूपे एव 'बुद्धे' दृढ.=दृढिगतः, अन्यम्-'आगड' अवट=कूप वा, 'तडाग' तडाग=कमलयुक्तागाधजलाशय वा, 'दह' दृढ=प्रसिद्ध, 'सर' सरः=सरोवर वा, सागर वा, अपश्यन्नेव मन्यते-अपमेवानटो वा यावत् सागरो वा । एतस्मात् कूपान्महाजलस्थानमन्यन्नास्तीत्येव मनसि जानातीति भाव । ततस्तदनन्तर खलु त्व कूपपति, 'अण्णे' अन्यः सामुद्रकः=समुद्रे जातः 'दददुरे' ददुरः=मण्डकः, हव्यमागतः=सहजगत्या समागत. । ततः खलु स कूपददुरः=कूपमण्डक त 'सामुद्दददुर' सामुद्रनिगमिन मण्डकम् एव=वक्ष्यमाण प्रकारेण अपादीत्-यथा क एव खलु त्व हे देवानुप्रिय ! 'कृतो' कृतः=कस्मात्

પ્રિય ! વહ કૂપમઢક કેસા હોતા હૈ ! (જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગઢ દદ્દુરે સિયા સે જ તત્થ જાણ તથેવ બુદ્ધે અન્નઅગઢ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ણહ અય ચેવ અગઢે વા જાવ સાગરે વા) હસ પ્રકાર જિતશત્રુ રાજા કી વાત સુનકર ચોક્ષો પરિવ્રાજિકા ને ડસસે કહા-જિતશત્રો સુનો મેં તુમ્હેં સમજાતી હૈં-જસે કોઈ એક કૂપકા મેંઢક કિ જો ડસી મે ઉત્પન્ન હુઆ હો ઓર ડસી મે પલપુષ કર વઢા હુઆ હો વહ જૈસે અપને કુપ કે સિવાય ઓર કિસી-કુપ કો, તડાંગ કમલયુક્ત અગાધ-સરોવર કો દ્રહ કો જલાશય વિશેષ કો, અથવા સમુદ્રકો કંઘી નહીં દેખતા હુઆ યેસા હી માનતા હૈ કિ યહી મેરા કુઆ ઓર દૂસરા કુઆ હૈ ? યાવત્ સાગર હૈ ।

હસ કુપ કે સિવાય ઓર દુસરા કોઈ વડા ભારી જલસ્થાન કહીં પર નહીં હૈં (તણ ત ક્વ અણ્ણે સામુદ્દ દદ્દુરે હવ્યમોગળ-તણ

દદ્દુરે ?) હે દેવાનુપ્રિય ! કુવાનો દેડકો કેવો હોય છે ?

(જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગઢદદ્દુરે સિયા સે જ તત્થ જાણ તથેવ બુદ્ધે અન્ન અગઢ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ણહ અય ચેવ અગઢેવા જાવ સાગરે વા)

આ પ્રમાણે જિતશત્રુ રાજાની વાત સામળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાએ તેને કહ્યું કે જિતશત્રો ! સામળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કોઈ એક કુવાનો દેડકો કે જે કુવામાં તે જન્મ્યો છે અને તે જ્યાં જાણી જાય છે તે જેમ પોતાના કુવા સિવાય બીજા કોઈપણ કુવા, તડાગ-કમળોવળું અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય વિશેષ અને મગધ જેવાં વખત ન બેવાથી એમ જ માને છે કે આ મારો

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ? ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी मण्डकोऽस्मि । ततः खलु स कूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्-‘ के महालए’ कियन्महालयः=क्रियान विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्र ? ततस्तदनन्तर खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्ण’, खलु देवा-

से कूबददूदुरे त सामुद्दददूर एव बयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कुण्पर उसी समय में कोड़ दूसरा समुद्र मे रहने वाला मेढक आगया-उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा-(से केषण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्यमागए ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो-इस समये कहा से आरहे हो ? (तएण से सामुद्दे ददूदुरे त कूबददूदुर एव बयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददूदुरे) हे देवानुप्रिय ! मे समुद्र का रहने वाला मेढक हूँ (तएण से कूब ददूदुरे त सामुद्दए ददूदुर एव बयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेढक ने उस समुद्र के निवासी ददूदुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवाणु-प्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा हैं ? (तएण से सामुद्दए ददूदुरे त कूबददूदुर एव बयासी) प्रत्युत्तर मे उस समुद्र निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया महालएण

सकुञ्चित विचार धरावता कूवाना देउकानी पासे भीजे ठाँव समुद्रमा रडेनारो देउके आण्यो तेने आनेलो जेधने कूवाना देउकाये समुद्रना देउजाने कछु— (से केषण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्यमागए ?) हे देवानुप्रिय ? तमे कछु छे ? अत्यारे तमे कयाथी आवो छे ? (तएण से सामुद्दे ददूदुरे त कूबददूदुर एव बयासी) जवाबमा ते समुद्रमा रडेनारो देउकाये कूवाना देउकाने आ प्रमाणे कछु छे (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए ददूदुरे) हे देवानुप्रिय ! हे समुद्रमा रडेनारो देउके छु (तएण से कूबददूदुरे त सामुद्दए ददूदुर एव बयासी) तेनी आ प्रमाणे पात भाषजाने कूवाना देउकाये ते समुद्रमा रडेनारो देउकाने आ प्रमाणे कछु छे (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय ? ते समुद्र केटलो भोटो छे ? (तएण से सामुद्दए ददूदुरे त कूबददूदुर एव बयासी) जवाबमा समुद्रना देउकाये तेने आ प्रमाणे कछु छे—

(एव खलु देवाणुप्पिया, महालए ण देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तएण से ददूदुरे

યથા-એકઃ કૂપમણ્ડકઃ સ્પાત્=આસીત્, સ સ્વલ્પ 'તત્થ' તત્ર=તસ્મિન્ કૂપે જાતઃ, તત્રૈવ કૂપે એ 'વુઢું' દૃઢ=ટર્કિગતઃ, અન્યમ્-'અગડ' અવટ=કૂપ વા, 'તડાગ' તડાગ=કમલયુક્તાગાધજલાશય યા, 'દહ' દૃઢ=પ્રસિદ્ધ, 'સર' સરઃ=સરોવર વા, સાગર યા, અપશ્યન્નેય મન્યન્તે-અયમેવાયટો વા યાવત્ સાગરો વા । એતસ્માત્ રૂપાન્મહાજલસ્યાનમન્યન્નાસ્તીત્યેય મનસિ જાનાતીતિ ભાવ । તતસ્તદનન્તર સ્વલ્પ ત રૂપપતિ, 'અળ્લે' અન્યઃ સામુદ્રકઃ=સમુદ્રે જાતઃ 'દદ્દુરે' દર્દુર=મણ્ડકઃ, હવ્યમાગતઃ=સહજગત્યા સમાગતઃ । તતઃ સ્વલ્પ સ કૂપદર્દુરઃ=કૂપમણ્ડક ત 'સામુદ્દદ્દુર' સામુદ્રનિયામિન મણ્ડકમ્ એવ=વશ્યમાણ પ્રકારેણ અવાદીત્-યથા ક એપ સ્વલ્પ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય ! 'કુત્તો' કુતઃ=કસ્માત્

પ્રિય ! વહ કૂપમણ્ડક કેસા હોતા હૈ ! (જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગડ દદ્દુરે સિયા સે ણ તત્થ જાણ તથેવ વુઢું અન્નઅગડ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાળે ચેવ મળ્લહ અય ચેવ અગડે વા જાવ સાગરે વા) હસ પ્રકાર જિતશત્રુ રાજા કી વાત સુનકર ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ને ડસસે કહા-જિતશત્રોં સુનો મેં તુમ્હેં સમજાતી હૈં-જસે કોઈ એક કૂપકા મેંઢક કિ જો ડસી મેં ઉત્પન્ન હુઆ હો ઓર ડસી મેં પલપુષકર વડા હુઆ હો ત્હ જૈસે અપને કુણ કે સિવાય ઓર કિસી-કુણ કો, તડાગ કમલયુક્ત અગાધ-સરોવર કો દ્રહ કો જલાશય વિશેષ કો, અથવા સમુદ્રકો કમી નહીં દેખતા હુઆ એસા હી માનતા હૈ કિ યહી મેરા કુઆ ઓર દુસરા કુઆ હે ? યાવત્ સાગર હૈ ।

હસ કુણ કે સિવાય ઓર દુસરા કોઈ વડા ભારી જન્મસ્થાન કહીં પર નહીં હૈં (તણ ત કવ અળ્લે સામુદ્દણ દદ્દુરે હવ્વમાગણ-તણ

દદ્દુરે ?) હે દેવાનુપ્રિય ! કુવાનો દેડકો ડેવો હોય છે ?

(જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગડદદ્દુરે સિયા સે ણ તત્થ જાણ તથેવ વુઢું અન્ન અગડ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાળે ચેવ મળ્લહ અય ચેવ અગડેવા જાવ સાગરે વા)

આ પ્રમાણે છત્થશત્રુ રાજાની વાત સામળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાએ તેને કહ્યું કે છત્થશત્રે ! સામળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કોઈ એક કુવાનો દેડકો કે જે કુવામાં તે જન્મ્યો છે અને તે જ ત્યાજી ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના કુવા સિવાય બીજા કોઈપણ કુવા, તડાગ-કમળોવ છું અગાધ સરોવર, ડ્રંક જલાશય વિશેષ અને સમુદ્રને કોઈપણ વખત ન જોનાથી એમ જ માને છે કે આ મારો કુવો જ બીજો કુવો છે યાવત્ સાગર છે

આ મારા કુવા સિવાય બીજું કોઈ મોટું સરોવર કે જન્મસ્થાન જગતમાં નથી (તણ ત કવ અળ્લે સામુદ્દણ દદ્દુરે હવ્વમાગણ) આ પ્રમાણે

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ? ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी मण्डूकोऽस्मि । ततः खलु स रूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्—‘ के महालए’ कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्र ? ततस्तदनन्तर खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्ण’, खलु देवा-

से कूबदददुरे त सामुद्रदददुर एव बयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कुण्ठपर उसी समय में कोई दूसरा समुद्र में रहने वाला मेढक आगया—उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा—(से केषण तुम देवानुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो—इस समय कहाँ से आ रहे हो ? (तएण से सामुद्दे दददुरे त कूबदददुर एव बयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा (एव खलु देवानुप्पिया ! अह सामुद्दए दददुरे) हे देवानुप्रिय ! मे समुद्र का रहने वाला मेढक हूँ (तएण से कूब दददुरे त सामुद्दए दददुर एव बयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेढक ने उस समुद्र के निवासी दददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवानुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा है ? (तएण से सामुद्दए दददुरे त कूबदददुर एव बयासी) प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा—(एव खलु देवानुप्पिया महालएण

सकुञ्चित विचार धरायता कूवाना देउजानी पास भीले कोथ समुद्रभा रडेनारे। देउके आये। तेने आवेले। नेधने कूवाना देउकाये समुद्रना देउजाने कछु— (से केषण तुम देवानुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ? तमे कोथ छे ? अत्यारे तमे क्याथी आवे। छे ? (तएण से सामुद्दे दददुरे त कूबदददुर एव बयासी) जवाजभा ते समुद्रभा रडेनारा देउकाये कूवाना देउजाने आ प्रभाछे कछु छे (एव खलु देवानुप्पिया ! अह सामुद्दए दददुरे) हे देवानुप्रिय ! हु समुद्रभा रडेनारे देउके छु (तएण से कूबदददुरे त सामुद्दए दददुर एव बयासी) तेनी आ प्रभाछे वात मालणीने कूवाना देउकाये ते समुद्रभा रडेनारा देउजाने आ प्रभाछे कछु छे (के महालएण देवानुप्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय ? ते समुद्र केटले। मोटे। छे ? (तएण से सामुद्दए दददुरे त कूबदददुर एव बयासी) जवाजभा समुद्रना देउकाये तेने आ प्रभाछे कछु छे—

(एव खलु देवानुप्पिया, महालए ण देवानुप्पिया ! समुद्दे, तएण से दददुरे

સુપ્રિય ! સમુદ્રઃ, તતસ્તદનન્તરં खलु म ददुरः=रूपमण्डक, पादेन रेखा कर्षति, कृद्धा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डक आह-‘ नायमर्थः समर्थः ’ इति अय रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तार बोधयितु न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-‘ महालय खलु स समुद्र ’ खलु=निश्चयेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य मण्डक न केनापि निर्देष्टु शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तरं ख स रूपददुरः, पौरस्थात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = रूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । गत्वा एवमवादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल. खलु हे देवानुप्रिय !

देવાણુપિયા ! સમુદ્રે, તળણ સે દદુરે પાળળ લીઠ કઢ્ઢેઢ, કઢ્ઢિત્તા એવ વયાસી, એ મહાલળળ દેવાણુપિયા ! સે સમુદ્રે ણો ઇળઢે સમઢે મહાલળળ સે સમુદ્રે) હે દેવાણુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર તો વહુત વઢા હૈ । હસ ધાન કો સુનકર હસ કૂપ મેઢક ને અપને પેર સે એક રેલા લેચી ઔર લેવકર ઘોલા હે દેવાણુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર ઇતના ખારી વિશાલ હૈ । પ્રત્યુત્તર મે હસ સમુદ્રવાસી મેઢક ને હસ કૂપ મેઢક સે કહા- નહીં વહ ઇતના વઢા નહીં હૈ-વહ તો હસ સે ખી અધિક વઢા હૈ અર્થાત્ રેલા સે નિર્દિષ્ટ જો વિસ્તાર હૈ વહ સમુદ્ર કે વિસ્તાર કો બતલાને મેં સમર્થ નહીં હો સકના હૈ-હસ કા વિસ્તાર તો કયા કહે-વહુત હી અધિક હૈ । (તળણ સે કૂવદદુરે પુરતિથમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉષ્કિ ઢિત્તા ણ ગચ્છહ, ગચ્છિત્તા એવ વયાસી એ મહાલળળ દેવાણુપિયા ! સે સમુદ્રે ણો ઇળઢે સમઢે) સમુદ્રવાસી મેઢક કી વાત સુનકર વહ કૂપ મેઢક અપને અગ્રવર્તી તીર સે રૂપ કે દૂસરે તીર પર ઉછલ ગયા-વહા

પાળળ લીઠ કઢ્ઢેઢ, કઢ્ઢિત્તા એવ વયાસી એ મહાલળળ દેવાણુપિયા ! સે સમુદ્રે ણો ઇળઢે સમઢે મહાલળળ સે સમુદ્રે)

હે દેવાણુપ્રિય ! સમુદ્ર તો ખહુ વિશાળ છે

આ વાત સાબળીને જવાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દેરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાણુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો ઘોટો નથી તે તો એના કરતા ખહુ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દેરીને જે વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અડિત કરવામાં અચકિતમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(તળણ સે કૂવદદુરે પુરતિથમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉષ્કિઢિત્તા ણ ગચ્છહ ગચ્છિત્તા એવ વયાસી, એ મહાલળળ દેવાણુપિયા ! સમુદ્રે ણો ઇળઢે સમઢે)

स समुद्रः ? , एव कूपमण्डस्य वचः श्रुत्वा समुद्रमण्डकं पुनराह—‘ नायमर्थं समर्थ ,
इति दर्शनादेव समुद्रस्य महत्त्वं ज्ञातं भवति ननु तन् कथमपि निर्देष्टुं वक्तुं च शक्यं
केनापीति भावः । तथैव=यथा स कूपमण्डस्तद्वदेव, एवमेव = उक्त प्रकारेणैव,
त्वमपि हे जितशत्रो ! अन्येषां बहूनां राजेश्वर-यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां भार्या वा
भगिनी वा दुहितर वा स्नुषा वा अपश्यन् जानासि-यादृशं ममैव खलु अवरोधः
=अन्तःपुरं, तादृशं नो अन्यस्य ।

जाकर कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तुम्हारे द्वारा निर्दिष्ट वह समुद्र क्या
इनका बड़ा है ? इस प्रकार कूप मेंदक के वचन सुन कर उस सामुद्रिक
मेंदक ने कहा—

भाई क्या घतलावें देखने से ही उस की महत्ता ज्ञात हो सकती
है । यह कहने की और निर्दिष्ट करने की बात नहीं हैं । उस का निर्देश
और कथन तो कोई कर ही नहीं सकता है । (तहेव एवामेव तुमपि
जियसत्तु ! अनेसिं घट्टण राईसर जाव सत्यवाह पमिईण भज्ज वा
भगिणीं वा धूय वा खुण्ड वा अपासमाणे जाणेसि-जारिसए मम चैव-
ण ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स) इसी तरह हे जितशत्रो ! तुमने
भी कभी और किसी राजेश्वर आदि सार्थवाह प्रभृतियों की भार्या को,
भगिनी को, दुहिता को, स्नुषा को देखा नहीं है—इसीलिये ऐसा मान
रहे हो कि जैसा अन्तः पुर हमारा हैं—वैसा और किसी का कही पर

समुद्रभा रडेनाश डेडकानी वात सालणीने ते कूवानो डेडके पोते न्या भेटो डेतो
ते कूवाना डिनारा डपरथी कूवाना पीला डिनारा डपर इही गथो अने त्या जधने कडेवा
दाग्यो डे डे देवानुप्रिय ! तमे जे समुद्रनी वात करो छे ते शु आटबो
भोटो छे ? आ रीते कूवाना डेडकानी वात सालणीने समुद्रना डेडकाओ कछु—

लाध शु कहीओ ? समुद्रने जेवाथी ज तेनी विशणतानु ज्ञान थई शके
तेम छे मुपेथी कडेवानी अने लीटीओ वगेरेथी निर्देय तो थछ शके तेमज छातुं नथी

(तहेव एवामेव तुमपि जियसत्तु ! अनेसिं घट्टण राई सरजाव सत्यवाह
पमिईण भज्जवा भगिणी वा धूय वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चैवण
ओराहे तारिसए णो अण्णस्स)

आ प्रभाणे ज डे जितशत्रो ! तमे पछु डोछ दिवस पीला डोछ राजेश्वर
वगेरे तेमज सार्थवाह वगेरेनी श्रीओने, जडेनने, डुडिताने, स्नुषा (पुत्रनी
वहु) ने लोछ नथी ओटवे ज तमे आभ भानो डो डे भारा जेवा रघुवास
भीजे कथाय डोय ज नहि,

સુપ્રિય ! સમુદ્રઃ, તતસ્તદનન્તરં खलु सा ददुर्दुरः=રૂપમણ્ડલ, પાટેન રેખા કર્ષતિ, કૃદ્વા, एवमयादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, તદા સમુદ્રમટ્ટક આહ-‘ નાગમર્યઃ સમર્થ ’ ઇતિ અય રેખયા નિર્દિષ્ટો વિસ્તારઃ સમુદ્રવિસ્તાર ગોધયિતુ ન શક્તિત્યર્થઃ । ઉક્તાર્થે હેતુમાહ-‘ મહાલય खलु स समुद्र ’ खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्व न केनापि निर्देष्टुं शक्यत इतिभावः । તતસ્તદનન્તરં ख स कूपददुर्दुरः पोरस्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्त्य=हृदयित्वा खलु गच्छति, = रूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । ગત્વા एवमयादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल. खलु हे देवानुप्रिय ।

देवाणुप्पिया ! समुद्रे, तण्ण से ददुदुरे पाण्ण लीह कड्डेइ, कड्डित्ता एव वयासी, ण महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्रे णो इणट्ठे ममट्ठे महालएण से समुद्रे) हे देवानुप्रिय । वह समुद्र तो बहुत बड़ा है । इस घात को सुनकर उस कूप मेंढक ने अपने पैर से एक रेखा खेंची और खेंचकर बोला हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र इतना भारी विशाल है । प्रत्युत्तर मे उस समुद्रवासी मेंढक ने उस कूप मेंढक से कहा- नहीं वह इतना बड़ा नहीं है-वह तो इस से भी अधिक बड़ा है अर्थात् रेखा से निर्दिष्ट जो विस्तार है वह समुद्र के विस्तार को बतलाने में समर्थ नहीं हो सकता है-उस का विस्तार तो क्या रुहे-बहुत ही अधिक है । (तएण से कूबददुदुरे पुरत्थिमिल्लओ तीराओ उप्पिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी ण महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्रे णो इणट्ठे समट्ठे) समुद्रवासी मेंढक की बात सुनकर वह कूप मेंढक अपने अग्रवर्ती तीर से रूप के दूसरे तीर पर उछल गया-वहा

पाएण लीह रुड्डेइ, कड्डित्ता एव वयासी ए महालएण देवाणुप्पिया ! से समुद्रे णो इणट्ठे समट्ठे महालएण से समुद्रे)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો ખહુ વિશાળ છે

આ વાત સાંભળીને રૂપાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો ચોટો નથી તે તો એના કરતા પશુ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જ વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અકિત કરવામાં અશક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(તएण से कूबददुदुरे पुरत्थिमिल्लओ तीराओ उप्पिडित्ता ण गच्छइ गच्छित्ता एव वयासी, ण महालए ण देवाणुप्पिया ! समुद्रे णो इणट्ठे ममट्ठे)

जिका - जनितहपः = चोक्षा पहिवाजिका -- वचनश्रवणानन्तरसजातमहेलीविषय
कानुरागः, दूत शब्दयति, शब्दयित्वा 'जाय पद्मारेत्यगमणाए' आगत-मिथिला
गन्तुमादिष्टवान् ततः स दूतस्तदाज्ञानुसारेण प्राधारयद् गमनाय मिथिला गन्तु
प्रवृत्तः। इति पण्णामपि राज्ञा सम्मन्धः पृथक् २ प्रोक्तः ॥ सू० ३१ ॥

मूलम्—तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं
दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएण छप्पि-
यदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता
मिहिलाए अगुजाणसि पत्तयंर खधावारनिवेसं करेति,
करिता मिहिलं रायहाणि अणुपविसंति, अणुपविसिंता
जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता पत्तयंर कर-
यलपरिगंहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अंजलि कहुं
साणर राईण वयणाइ निवेदेति, तएण से कुमए तासि
दूयाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते जीव तिवलियं

यी उसी दिशा तरफ बापिम चली गई। चोक्षा परिव्राजिका के वचन
सुनने के बाद जिसे मल्ली कुमारी के विषय में अनुराग उत्पन्न हो गया
है ऐसे उस जितशत्रु राजा ने दूत को बुलाया—और उस से मिथिला
जाने के लिये कहा—वह दूत भी अपने राजा की आज्ञानुसार मिथिला
नगरी तरफ जाने के लिये वहा रवाना हो गया। सूत्र “ ३१ ”

तरङ्ग पाछी जाती रही चोक्षा परिव्राजिका ने बोली भलीकुमारीना मोदय
विशे प्रशसाजनस राज्जे सावणीने जेना मनभा तेना मोटे अनुराग उत्पन्न
थये छे जेना ते जितशत्रु राजाजे इतने बोलाव्यो अन्त तेने मिथिला निवा
भाटे आज्ञा करी इत पोताना राजना हुकम प्रभावे मिथिला नगरी तरङ्ग
जवा उपडी गये ॥ सूत्र “ ३१ ” ॥

तदेव खलु हे जितशत्रो ! मिथिलायां नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञो दहिता=पुत्री,
प्रभायत्या आत्मजा=भद्रजाता मल्ली नाम इति, रूपेण=सुन्दराकृत्या च यौवनेन
च यावत् नो खलु अया कापि देवकन्या वा तादृशी विद्यते, यादृशी मल्ली ।
मल्लया विदेहराजवरकन्यायाञ्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठस्याय तवारोध अतसहस्र-
तमामपि कला=ललाशमपि नाहति ' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, सा चोक्षा परिव्राजिका
यस्या दिश प्रादुर्भूता, तामेव दिश प्रतिगता । ततः खलु स जितशत्रु पश्चिमा-

भी नहीं है । (त एव खलु जियसतू मिथिलाए नयरीए कुम्भगस्स
धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामति-रूपेण य जौवणेण जाव नो
खलु अण्णा काई देवकन्या वा जारिसिया मल्ली) इसलिये हे जितशत्रो !
सुनो- मिथिला नगरी में कुम्भक राजा की पुत्री जो प्रभावती की कुक्षि
से उत्पन्न हुई है मल्ली कुमारी है । वह रूप और यौवन से इतनी अधि-
क सुन्दरी है कि उस के समक्ष ऐसी कोई देव कन्या आदि कोई भी
कन्या सुन्दरी नहीं है- (मल्लीए विदेहरायवरकन्याए छिण्णस्स वि
पायगुट्ठस्स इमे तवारोहे सयसहस्रतमपि कल न अग्घइ, त्ति कट्ठ
जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया तएण से जियसतू परि
व्वाइया जणियहासे दूय सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए)
उस विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के कटे हुए पादाङ्गुष्ठ के
एक लाव वे अश बराबर २ भी यह आपका अवरोध भ्रन्तपुर नहीं है ।
इस प्रकार कहकर वह चोक्षा परिव्राजिका जिम दिशा से आई

(त एव खलु जियसतू मिथिलाए नयरीए कुम्भगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली
नामति रूपेण य जौवणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्या वा जारिसिया मल्ली)

ओला भाटे डे अतशत्रो ! सावणो, मिथिला नगरीमा प्रभावतीना
गर्भंथी जन्मेली कुलक राजनी पुत्री भट्टीकुमारी पोताना इय अने यौवनथी
ओटली पधी सुन्दरी छे के तेनी सामे तो देवकन्या पखु कछ ज नथी

(मल्लीए विदेहरायवरकन्याए छिण्णस्स वि पायगुट्ठस्स इमे तवारोहे सय
सहस्रतम पि कल न अग्घइ, त्ति कट्ठ जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसि
पडिगया तएण से जियसतू ' परिव्वाइया जणियहासे दूय सद्दावेइ सद्दावित्ता
जाव पहारेत्थ गमणाए)

विदेह राजनी उत्तम कन्या भट्टीकुमारीना कपाओला अजूहाना ओक
लाभमा लाग परापर पखु आ तमारो अवरोधजन (खुवास) नथी
आ प्रभावे कहीने ओक्षा परिव्राजिका ने दिशाथी आवी कती ते दिशा

निगच्छित्ता एगयओ मिलायति, मिलायित्ता जेणेव मिहिला
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि । ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ‘प्राधारयद् गमनाय’ गन्तुमुद्यताः ।
तत खलु पडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया
‘अगुज्जाणमि’ अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ ‘खधावारनिवेश’ स्तब्धावार-
निवेश=शिविरस्य ‘छावनी’ इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा,
मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

‘तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह
राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं के (दूयां) दूत (जेणेव
मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएणं छप्पियदूया जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छहों ही दूत एक
ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये । (उवागच्छित्ता
मिहिलाए अगुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेश करेंति, करित्ता मि
हिल रायहाणि अणुपविससि) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान
में उन सचने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी । छावनी डालकर
फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया—(अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए

तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (तेसिं जियसत्तू पामोक्खा ण उण्ह राईण)
जितशत्रु प्रमुखा छो राजाओंना (दूया) इतो (जेणेव मिहिला) न्ना मिथिला
नगरी इती (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ते तरइ पोतपोताना स्थानेथी उपडी
गया (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) ते छो इतो
यावता यावता ओडी साथे ४ न्ना मिथिला नगरी इती त्या आवी पडोत्था

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अगुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेश करेंति,
करित्ता मिहिल रायहाणि अणुपविससि)

त्या पडेथीने बधाओ मिथिला नगरीना प्रधान उद्यानमा पोतपोताना
पडाव नाप्थो पडाव नाप्थीने तेओ मिथिला नगरीमा गया (अणुपविसित्ता
जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) अने न्ना कुम्भक राजा इना त्या पडोत्था

भिउंडि एव वयासी-न देमिण अहं तुब्भ माहिं विदेहराय
 वरकण्णं तिकट्ठु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अव-
 द्दारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं
 राईणं दूया कुभएण रत्ता असक्कारिया असम्माणिया अव-
 द्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा २ जाणवया जेणेव सयाइं २
 णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवाग-
 च्छित्ता करयल परि० एव वयासी-एव खलु सामी । अम्हे
 जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव
 जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, तं ण देइणं
 सामी । कुभए माहिं विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं
 एयमट्ठु निवेदेति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिदूयाणं
 अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स
 दूयसपेसणं करेति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
 प्पिया । अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव
 निच्छूडा, त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह कुभगस्स जत्त
 गेणिहत्तए तिकट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठु पडिसुणेति, पडिसुणि-
 त्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं
 धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणार्हिं सेयवरचामरार्हिं महयाहय-
 गयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा
 सन्विट्ठीए जाव रवेणं सएहिं० नगरेहितो जाव निग्गच्छति

निगच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलायित्ता जणेव मिहिला
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि। ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ‘प्राधारयद् गमनाय’ गन्तुमुद्यताः।
तत खलु पडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया
‘अगुज्जाणसि’ अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ ‘खधावारनिवेश’ स्कन्धानार-
निवेश=शिविरस्य ‘छावनी’ इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा,
मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

‘तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं) छप्प
राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं के (दूता) दूत (जेणेव
मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएण छप्पियदूया जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छोहों ही दूत एक
ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये। (उवागच्छित्ता
मिहिलाए अगुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेश करेति, करित्ता मि
हिल रायहाणि अणुपविससि) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान
में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी। छावनी डालकर
फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया—(अणुपविससित्ता जेणेव कुम्भ

तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थापछी (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण उप्पह राईण)
जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं (दूता) दूता (जेणेव मिहिला) नगरी
नगरी छती (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ते तरक् पोतपोताना स्थानेथी उपडी
गया (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) ते छो छो दूता
यावता यावता छो छो साथ २ नगरी छती त्था आवी पडोव्था

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अगुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेश करेति,
करित्ता मिहिल रायहाणि अणुपविससि)

त्था पडोव्थीने नधाओ मिथिला नगरीना प्रधान उद्यानमा पोतपोतानो
पडाव नाथो पडाव नाथीने तेओ मिथिला नगरीमा गया (अणुपविससित्ता
जेणेव कुम्भ तेणेव उवागच्छति) अने न्था कुम्भको राजा छता त्था पडोव्था

भिउंडि एवं वयासी-न देमिणं अह तुव्व मल्लिं विदेहराय-
वरकण्णं तिकट्टु ते छप्पिट्ठए असक्कारिय असम्माणिय अव-
द्वारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं
राईणं दूया कुभएणं रत्ता असक्कारिया असम्माणिआ अव-
द्वारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२
णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवाग-
च्छिता करयल परि० एव वयासी-एवं खलु सामी । अम्हे
जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमगं चैव
जेणेव मिहिला जाव अवद्वारेणं निच्छुभावेइ, त ण देइणं
सामी । कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं
एयमट्ट निवेदेति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसि दूयाणं
अंतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अणमणस्स
दूयसपेसणं करेति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
प्पिया । अम्ह छण्ह राईणं दूया जमगसमगं चैव जाव
निच्छूडा, त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह कुंभगस्स जत्त
गेण्हित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणि-
त्ता णहाया सण्णद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं
धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणार्हिं सेयवरचामराहिं महयाहय-
गयरहपवरजोहकलियाए चाउरणिणीए सेणाए सद्धि सपरिबुडा
सव्विद्धीए जाव रवेणं सएहिं० नगरेहिंतो जाव निगगच्छति

असंमोन्व, च 'अवदारेण' अपद्वारेण = भवनपश्चाद्वागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुमानवेह' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखानां पत्न्या राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असंस्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वमाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः - हे स्वामिन् !

रिय अवदारेण णिच्छुभावेह) हे दूतों ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई-सत्कार किया और न कोई सन्मान-ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से, बाहिर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असंस्कारिया असंमानिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगार २ रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहां से प्रस्थित होकर जहां अपना २ जनपद था, वहां अपने २ नगर थे और उनमें भी जहां अपने २ राजा थे वहां आ गये ।

असंस्कारिय असंमानिय अवदारेण णिच्छुभावेह)

" हे दूतों भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजा को देने आपीश नहि " आ प्रभाछे कहीने राजाछे दूतोंने कोछ पछु इपमा भत्कार अने सन्मान न करता तेओने चोताना भडेलना पाछणना नाना पाछेथी भडार काढी भूक्या

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असंस्कारिया असंमानिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगार २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रभाछे छतशत्रु प्रमुख राजाओंना ते दूतो कुम्भकरान पडे असंस्कारित अने असमानित थता न्यारे भडेलना पाछवा पाछेथी भडार काढी भूक्या वीमा आव्या त्यारे तेओ त्याची श्रवना वधने न्या तेमनो जनपद (देश) 'हेतो' न्या तेमनु नगर छु अने तेमा पछु न्या तेमना राजा 'हेता त्या पडोव्या

प्रत्येक २ करवतल, परिगृहीत शिर भागतं मन्त्रकेऽजलिं कृत्वा स्वंगा स्वेकां रोगां
 'वयणाह' ययनानि=रुपनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको सजा
 तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखा' पठपि राजानो मल्ली
 ठेठेन्ति 'इत्येतदप्युक्तान्तं श्रुत्वा 'आशुस्ते' आशुस्ते=शत्रु क्रोधाविष्टः,
 यावत्=प्रियालिकां=रेखात्रययुतां भ्रुकुटिं=भ्रुयः । मण्डिल्यं ललाटे कुर्वन् त्वं=वक्ष्य
 मणिमंकोरेण, अगदीत=हे दूताः 'नो दास्यामि' खलु अहं युष्माकं राजस्यो
 मल्ली विदेहराजवरकण्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् पठपि दूतान् असकृत्,
 तेषां उवागच्छति) प्रवेशं कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आये (उवा
 गच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिगृहीत सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
 कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदंति) वहा आकर उनें सबोने भिन्न
 २ रूप से, कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे
 मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने
 क्रमशः अपने २ राजा का कर्ण उसे सुनाया-(तएण से कुम्भ तेसि
 दूयाण अन्तिण, एयमह सोच्चा आशुस्ते जावति वलिय भिउडि एव
 वयासी) जितशत्रु प्रमुख छो हो ही वृषति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को
 चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर
 वह कुम्भक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी
 भ्रिन्नलियुक्त भ्रुकुटि मस्तरु पर चढ़ गई ।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि पे
 अहं तुम्भ, मल्ली विदेह, रायवरकण्ण, ति कट्टु ते छप्पि, दूए, असक्का)

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिगृहीत, सिरसावत्त, दसनह मत्थए
 अजलि कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदंति) , , ,

त्या जणे तेओ अधाओ लुहा लुहा इपभा कुलक, राजने गने, धाधनी)
 अल्लि, भुतावीने अने, तेने, भस्तके भूकीने नमस्कार कया, अने नमस्कार करीने
 तेओओ वाराइरती पोतपोताना राजनो सदेशो तेमने कडी सलणाओ
 (तएण से कुम्भ तेसि दूयाण अतिए, एयमह सोच्चा आशुस्ते जावति व
 लिय भिउडि एव वयासी)

एतेश्च प्रमुखा छो 'छ' राजाओ भारी पुत्रा मल्लीकुमाडीने 'आडे' छ
 आ जतने सदेश इताना पोथी सालागीने कुलका राजा ओकदम शुस्से थडी
 गया, अने तणे देभाओवाणी तेमनी भ्रुकुटी लमरो पके थडी गयी ,

कोधता आवेशभा राजाओ ते इताने कडी सलणाओ के—

(न देमि ण अहं तुम्भ, मल्ली विदेहरायवरकण्ण, ति कट्टु ते छप्पि)

असंमान्य, च 'अवदारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असंस्कारिता असंमानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त यत्रैव स्वका २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषु। - हे स्वामिन्!

रिय अवदारेण णिच्छुभावेइ), हे दूतो! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा" ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई-सत्कार किया और न कोई सम्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकाल दिया। (तएण जियसत्तू पामोकखाण उण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असत्कारिया असम्माणिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगा २-रायाणो तेणेव उवागच्छति,) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहां से प्रस्थित होकर जहां अपना २ जनपद था, वहां अपने २ नगर थे, और उनमें भी जहां अपने २ राजा थे वहां आ गये।

असत्कारिय असम्माणिय अवदारेण णिच्छुभावेइ)

"हे दूतो! भारी पुत्रो विदेहराजपुत्र कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजाओं ने आपीश नहि" आ प्रभाषे कहीने राजाओं दूतोंने डोई पण्डु इषमा सत्कार अने सम्मान न करता तेओने पोताना भडेलना पाछणिना नाना आरखेथी जडाइ काढी भूझ्या

(तएण जियसत्तू पामोकखाण उण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असत्कारियो असम्माणिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रभाषे उतशत्रु प्रमुख राजाओंना ते दूतो कुलउराज पडे असत्कृत अने असमानित थता न्यारे भडेलना पाछळा आरखेथी जडाइ काढी भूझ्या वीमा आव्या त्यारे' तेओ त्याची रवाना वधने'न्या तेमना जनपद (देश)'डतो' न्या तेमनु नगर छुटु अने तेमा पण्डु न्या तेमना राजा' डता त्या पडोव्या,

प्रत्येक २, करवल, परिगृहीत शिर भागते मन्त्रकेऽञ्जलिं कृत्वा स्वे वा स्वेनां रोगां
 'वयणाड' ययनानि=रुथनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा
 तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखा' पठपि राजानो मल्ली
 ठञ्जिते' इत्येतदप्युक्तान्तं श्रुत्वा 'आसुरुते' आश्रुता=शोच्य क्रोधाविष्टः,
 यावत्=तिबलिकां=रेखाययुतां भ्रुकुटि=भ्रुयः सौटिल्य ललाटे कुर्वन् त्वं=वक्ष्य
 मणिपिंकारेण, अगादीत=हे दूताः 'नो दास्यामि सख अहं युष्माकं राजम्यो
 मल्ली विदेहराजवरकण्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् पठपि दूतान् असकृत्य,

तेष्वेव उवागच्छति) प्रवेशं कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आये (उवा-
 गच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिगृह्य सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
 कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति) वहा आकर उन्नं सर्वेने भिन्न
 २ रूप से, कुम्भक राजा तो दोनों हाथों की अजलि धनाकर और उसे
 मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्र-
 मशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएण से कुम्भए तेसिं
 दूयाण अन्तिए, एयमह सोच्चा आसुरुते जाव तिबलिय भिउडि एव
 वयासी)। जितशत्रु प्रमुख छहों ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को
 ब्याहरही हैं। इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर
 वह कुम्भक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी
 त्रिबलियुक्त भ्रुकुटि मस्तरु पर चढ़ गई।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि णं
 अहं तुब्भं, मल्ली, विदेह, रायवरकण्ण, ति कट्टु ते छप्पि, दूए, असक्का)

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिगृह्य सिरसावत्त दसनह मत्थए
 अजलि कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति)।

त्या जघने तेजो अधाये जुहा जुहा इममा कुलक, राजने गने, धायनी
 अजलि, अतापीने, अने तेने, मस्तके भूकीने नमस्कार कर्या अने नमस्कार करीने
 तेजोये वाराइरती पोतपोताना राजनो सदेशे तेमने कही सल्लणाये।
 (तएण से कुम्भए तेसिं दूयाण अन्तिए एयमह सोच्चा आसुरुते जाव तिब-
 लियं भिउडि एव वयासी)

एतेशु प्रमुखा छहों राजाओं 'भोरी' पुत्री मल्लीकुमारी ने आड़े हा-
 थों से इतना बोली सावलीने कुलक राजा को दम आसुरी शक्ति
 गयी, अने तब देखाओवाणी तेमनी भ्रुकुटी लभिरा चढ़ थड़ी गयी।

कोधता आवेशमा राजाये ते इतोने कही सल्लणाये के—।

(न देमि णं अहं तुब्भं, मल्ली, विदेहरायवरकण्ण, ति कट्टु ते, छप्पि, दूए)

असंमोन्नय, च 'अवहारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेह' निःसारयन्ति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिता असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनस्य शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषु, - हे स्वामिन् ।

रिय अवहारेण णिच्छुभावेह) हे दूतो ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओ के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतो को न कोई-सत्कार किया और न कोई सम्मान-ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असत्कारिया असम्मानिया अवहारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगा २-रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओ के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असंमानित होते हुए-जन महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा, अपना २ जनपद या, वहा अपने २ नगर ये, और उन-में भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये ।

असत्कारिय असम्मानिय अवहारेण णिच्छुभावेह)

" हे दूतो भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजाओने आपीश नहि " आ प्रभाणु कहीने राजाओ दूतोना डोर्ध पणु इपमा सत्कार अने सम्मान न करता तेओने पोताना भडेलना पाछणना नाना आण्णुथी भडार काढी भूझा

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुम्भएण रत्ता असत्कारिया असम्मानिया अपद्वारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ नगराइ जेणेव सगार रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रभाणु एतयत्तु प्रमुख राजाओना ते दूतो कुलउराज पडे असत्कृत अने असंमानित थता न्यारे भडेलना पाछला आण्णुथी भडार काढी भूझ वाभा आवा त्यारे तेओ त्यावी रवाना वधने न्या तेमना जनपद (देश) छतो, न्या तेमनु नगर छतु अने तेमा पणु न्या तेमना राजा छता त्या पछाव्या,

प्रत्येक २, करतल, परिगृहीत शिर भागतं, मन्त्रकेऽञ्जलिं कृत्वा स्वरा ग्येकांशो
 'वयणाह' यनानि=रुथनानि निवेदयन्ति स्म । ततश्चदनन्तरं स कुम्भको राजा
 तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुख्या पडपि राजानो मही
 ठेठन्ति' इत्येतदप्युच्यते । 'वृत्तान्ते' अर्थात् 'आशुसुते' आशुसुत=शीघ्र क्रोधान्वितः,
 यावत्-निवर्तितः=रेखाग्रयुतां भ्रुकुटि=भ्रुवः । मूर्ध्न्यं ललाटे कुम्भं एवं=वक्ष्य
 मणिमंकोरेण, अर्थात्=हे दूताः 'नो दास्यामि' खलु अहं युष्माकं राजम्यां
 मल्ली विदेहराजवरकण्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्या तान् पडपि दूतान् असंस्कृत्य,
 तेजैव उवागच्छति । प्रवेशं कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आवे (उवा-
 गच्छिता पत्तेय २ करयल परिगृह्य मिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
 कहडु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति) वहा आकर उन्नं सबोने भिन्न
 २ रूप से, कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे
 मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने के
 क्रमशः अपने २ राजा का काना उसे। सुनाया-(तएण से कुम्भ तैसिं
 दूयाण अन्तिए, एयमद्व सोच्चा आसुरुत्ते जावातिवलिप भिउडि एव
 वयासी)। जितशत्रु प्रमुख छो हो नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को
 चारही हैं। इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से। सुनकर
 वह कुम्भक राजा, इकदम क्रोधित हो गया-और, उसी समय, उसकी
 त्रिजलियुक्त भ्रुकुटि, मस्तक पर चढ़ गई।

५. इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि ण
 अह तुम्भ, मल्ली, विदेह, रायवरकण्ण, ति कहडुत्ते, छप्पि, दूए, असक्का।

(उवागच्छिता पत्तेय २ करयलपरिगृह्य मिरसावत्त, दसनह मत्थए
 अजलिं कहडु साण २ राईण वयणाणि, निवेदेति)।

॥ त्या, जडने तेजो जवाजे बुद्ध बुद्ध इप्रभा कुलक, राजने जने, डाधनी
 अजलि, जतावीने अने, तेने, मस्तके भूडीने नमस्कार कर्था, अने, नमस्कार करीने,
 तेजोजे वाराइरती पोतपोताना राजनी सहेशो तेमने 'कडी सलणाव्यो'
 (तएण से कुम्भ तैसिं दूयाण अन्तिए, एयमद्व सोच्चा आसुरुत्ते जाव ति
 लियं भिउडि एव वयासी)

॥ 'जितशत्रु प्रमुख' छो 'छ' राजा 'मोरी' पुत्री 'मल्लीकुमारी'ने 'थाडे' छे
 आ जतने सदेश इताना मोथी सालगीने। 'बुलडि' राजा 'जेकदम' गुस्से 'धडी'
 गयी, अने 'त्रेण' देणाजोपाणी तेमनी 'भ्रुकुटी' लमिरो पके 'धडी' गयी,

॥ 'मल्ली' आवेशभा राजाजे ते इताने 'कडी सलणाव्यो' के-
 ॥ (न देमि ण अह तुम्भ मल्ली विदेहरायवरकण्ण ति कहडु ते छप्पि दूए

અસંમાન્ય, ચ 'અવહારેણ' અપદ્ધારેણ=ભવનપશ્ચાદ્ધાગસ્વિતલ્પદ્ધારેણ ' ણિચ્છુમાવેહ' નિઃસારયતિ० ।

તત્તસ્તદનન્તર સ્વલુ તે જિતશત્રુપ્રમુખાણા પળ્લા રાજા દૂતાઃ કુભ્મકેન રાજાઃ
અસંત્કારિતાઃ અમન્માનિતા અપદ્ધારેણ નિ.સારિતા સન્ત. યત્રૈવ સ્વકાં ૨ =
આત્મીયાઃ ૨, ' જાણવયા ' જાનપદા = દેશાઃ, યત્રૈવ સ્વકાનિ ૨ નગરાણિ
યત્રૈવ સ્વકાઃ ૨ રાજાન આસન્, તત્રૈવોપાગન્ઠતિ; ઉપાયુગત્ય કરતેલપરિ
ગૃહીત દશનસ્થ શિર આવતં મસ્તકેઽઙ્ગલિ કૃત્વા, એવમવાદિધુ. — હે સ્વામિન્

રિય અવહારેણ ણિચ્છુમાવેહ) હે દૂતો ! મેં અપની પુત્રી વિદેહ રાજવર
કન્યા મલ્લીકુમારી તુમ્હારે રાજાઓ કે લિયે નહીં દૂગા " એસા કહકર
ડસને ડન દૂતો કો ન કોઈ સત્કાર કિયા ઓર ન કોઈ સન્માન-હી
કિયા-કિન્તુ ડન્હે ભવન કે પીછે ભાગ કે છોડે સે દરવાજે સે બાહિર
નિકાલદિયા । (તણ જિયસત્ પામોકલાળ ડળ્હ રાઈણ દૂયા કુભણ
રન્ના અસન્કારિયા અસમ્માણિયા અવહારેણ ણિચ્છુમાવિયા સમાણા
જેણેવ સગાર જાણવયા જેણેવ સયાઈ ૨ નગરાડ જેણેવ સંગા ૨ રાયાણો
તેણેવ ઉવાગન્ઠતિ.) હસ તરહ ડન જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ કે-વે
દૂત કુભક રાજા સે અસત્કૃત એવ અસમાનિત હોતે હુણ જય મહલ કે
પિંડલે છોડે સે દ્વાર સે બાહિર નિકાલ દિયે ગયે તય વે વહા સે પ્રસ્થિત
હોકર જહા, અપના ૨ જનપદ યા, વહા અપને ૨ નગર થે, ઓર ડન-મેં
મી જહા અપને ૨ રાજા થે વહા આ ગયે ।

અસન્કારિય અસમ્માણિય અવહારેણ ણિચ્છુમાવેહ)

“ હે દૂતો મારી પુત્રી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી તમારા રાજા
ઓને આપીશ નહિ ” આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ દૂતોનો ડોઈ પણ રૂપમા
સત્કાર અને સન્માન ન કરતા તેઓને પોતાના મહેલના પાછળના નાના
આગ્રેથી બહાર કાઢી મૂક્યા

(તણ જિયમત્ પામોકલાળ ડળ્હ રાઈણ દૂયા કુભણ 'રન્ના અસન્કારિયા
અસમ્માણિયા અવહારેણ ણિચ્છુમાવિયા સમાણા જેણેવ સગાર જાણવયા જેણેવ
સયાઈ ૨ નગરાડ જેણેવ સગાર રાયાણો તેણેવ ઉવાગન્ઠતિ)

આ પ્રમાણે શત્રુપ્રમુખ રાજાઓના તે દૂતો કુલડરાજ વડે અસત્કૃત
અને અસમાનિત થતા જ્યારે મહેલના પાછલા આગ્રેથી બહાર કાઢી મૂક્યા
વાંમા આગ્રે ત્યારે તેઓ ત્યાંની રવાના વધને જ્યા તેમનો જનપદ (દેશ) હોતો,
જ્યા તેમનું નગર હતું અને તેમા પણ જ્યા તેમના રાજા હતા ત્યા પહોંચ્યા.

एव खलु यं जितशत्रुपमुखाणां णणा राज्ञा दूताः 'जमगसमगं' युगपत्
 = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां
 राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्रं क्रोधान्निष्टः सन् 'न दास्या
 म्यहं मल्ली' मित्युक्त्वाऽऽमानसत्कृत्यासमान्य, अपहारेण 'निच्छुभावेइ' निःसा
 रयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः। ततः=तस्माद् न ददाति हे स्त्रामिन्। कुम्भको
 मल्लीं विदेर राजनरकन्याम् इत्युक्त्वा पडपि दूताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतमुक्तमर्थं
 निवेदयन्ति कथयन्तिस्म।

(उवागच्छिता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हे
 दोनों हाथों की अजलि चनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी।
 अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव
 मिहिला जाव अवहारेण निच्छुभावेइ) हे स्त्रामिन्! हम सत्र जितशत्रु
 प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहाँ
 पहुँचे-वहाँ पहुँचकर कुम्भक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये
 वहाँ जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें
 कहकर सुनाये सुनते ही वे कुम्भक राजा क्रोध से भर गये-और कहने
 लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देगे ऐसा कहते
 हुए उन्हो ने बाद में हमलोगों को असत्कृत एव असमानित कर अपने
 महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया।

(उवागच्छिता करयल परि०" एव वयासी) त्या आवीने तेमळे अने
 हाथेनी अजली अतावीने नमन कर्था

(एव खलु सामी! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमग
 समग चेव जेणेव मिहिला जाव अवहारेण निच्छुभावेइ)

अने वहु छे स्त्रामिन्! अमे अधा जितशत्रु प्रमुख छये छ राजाओंना
 दूतो अकेल समयमा ज्या मिथिला नगरी छती त्या पडोय्या, त्या पडो
 यीने कुलकराजना दर्शन भाटे अमे राजमहलमा गया त्या पडोयीने अमे
 दोडोअमे विनयनी साथे पोतपोताना राजांनो सदृश तेमने कही ललजाव्यो
 कुलकराज ते सदृशाओंने सालजता अशुस्से थप गया अने कडेवा लाग्या
 छे हु भारी पुत्री मल्लीकुमारी कोअने य आपीथ नहि आम कडेटा तेमळे
 अमने असत्कृत तेमज असमानित करीने पोताना मडेलना पाछगना नाना
 भारघाथी अकार कादी भूक्या

ततः खलु ते जितएनुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कूर्णगोचरीकृत्य, निश्चय्य=अर्थमयम्य' आशुस्त्रा'='शीघ्र क्रोधा विष्टा ' अणमणस्स ' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूनसपेण कुर्वन्ति, कृत्वा एव= वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषु -हे देवानुप्रिया ! एव खलु अस्माकं पण्णा राजा दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण ' णिच्छूढा ' निश्चिन्ताः= निः

(त ण देहण सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईण एयमद्व निवेदेति) अत हे स्वामिन् ! आप निश्चय्य समझे-कुभ करारा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देना है । ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजाओं के समक्ष की । (तएण से जियसत्तू पामोकत्ता उप्पिरायणो तेसिं दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा निसम्म असुरत्ता अणमणस्स दूय सपेसण करेति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एव वयामी-एव खलु देवानुप्रिया ! अम्ह उण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जाव णिच्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समचार कहलवाये-हे देवानुप्रियों ! देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुभक राजा के पास

(त ण देहण सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईण एयमद्व निवेदेति)

ओधी डे स्वामिन् ! तमे थोक्कसपेणे आ न्णोत्थो डे कुल्लो पोतानी विदेहराजवर न्या मल्लीकुमारी आपसे नहि आ प्रभावे कहीने छओ इतोओ पोतपोताना राजओनी साथे पोताना मतनी पुष्टि करी

(तएण से जियसत्तू पामोकत्ता उप्पिरायणो तेसिं दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा निसम्म असुरत्ता अणमणस्स दूयसपेसण करेति)

त्यारभाए एतथनु प्रमुण छओ राजओ इतोना मुओधी आ प्रभावे वात सावणीने अने तेने मशेणर समएने शुस्से वया अने पोतपोताना इतोने ओड णीज राजनी पास भोक्क्या

(करित्ता एव वयामी एव खलु देवानुप्रिया ! अम्ह राईण दूया जमग समगचेव जाव णिच्छूढा)

तेओओ ते इतोनी साथे आ नतने नदेश भोक्क्यो डे डे देवानुप्रियो ! आपणा छओ राजओना इतो ओकी वणते कुल्लराजनी पास गया त्या तेओ

एव खलु वयं जितशत्रुप्रमुखाणां पण्णा राज्ञा दूताः 'जमगसमग' युगपत्
 = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां
 राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्रं क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्या
 म्यहं मल्ली' मित्युक्त्वाऽऽस्मानसत्कृत्यासमान्य, अपहारेण 'निच्छुभावेड' निःसा
 रयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः। ततः=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन् ! कुम्भको
 मल्लीं विदेर राजपरकन्याम् इत्युक्त्वा पडपि दूताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतद्युक्तमर्थं
 निवेदयन्ति कथयन्तिस्म ।

(उवागच्छिता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हे
 दोनों हाथों की अजलि बनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी !
 अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव
 मिहिला जाव अवदारेण निच्छुभावेड) हे स्वामिन् ! हम सब जितशत्रु
 प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहा
 पहुँचे-वहा पहुँचकर कुम्भक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये
 वहा जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें
 कहकर सुनाये सुनते ही वे कुम्भक राजा क्रोध से भर गये-और कहने
 लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देगे ऐसा कहते
 हुए उन्होंने ने बाद में हमलोगों को असत्कृत एव असमानित कर अपने
 महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया ।

(उवागच्छिता करयल परि०" एव वयासी) त्या આવીને તેમણે અને
 હાથોની અજલી બતાવીને નમન કર્યા

(એવ ખલુ સામી ! અમે જિયસત્તૂ પામોક્ખાણ છણહ રાઈણ દૂયા જમગ
 સમગ ચેવ જેણેવ મિહિલા જાવ અવદારેણ નિચ્છુભાવેડ)

અને કહ્યું હે સ્વામિન્ ! અમે બધા જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ છ રાજાઓના
 દૂતો એક જ સમયમાં જ્યાં મિથિલા નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોં
 ચીને કુલકરાબના દર્શન માટે અમે રાજમહેલમાં ગયા ત્યાં પહોંચીને અમે
 લોકોએ વિનયની સાથે પોતપોતાના રાજાને સંદેશ તેમને કહી સંભળાવ્યા
 કુલકરાબ તે સંદેશોએને સાંભળતા જ ગુસ્સે થઈ ગયા અને કહેવા લાગ્યા
 કે હું મારી પુત્રી મલ્લીકુમારી કોઈનેય આપીશ નહિ આમ કહેતા તેમણે
 અમને અસત્કૃત તેમજ અસમાનિત કરીને પોતાના મહેલના પાછળના નાના
 બારણાથી બહાર કાઢી મૂક્યા

ततः खलु ते जितेष्टुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे,
एतमर्थं श्रुत्वा=ऋणगोचरीकृत्य निशम्य=अर्थमग्रम्य' आशुक्रता'=शीघ्र क्रोधा
विष्टा 'अणमणस्स' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंमेलनं कुर्वन्ति, कृत्वा एव=
वक्ष्यमाणप्रकारेण, अत्रादिषु -हे देवानुप्रिया ! एव खलु अस्माकं पण्णा राजा
दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण 'णिच्छूढा' निक्षिप्ताः= नि-

(त न देइण सामी ! कुमए मल्लि विदेहरायवरकन्न साण २
राइण एयमद्व निवेदेति) अत हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझे-कुभ
कराजा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देता है।
ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजा
ओं के समक्ष की। (तएण से जियसत्तू पामोकखा छप्पिरायणो तेसिं
दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अणमणस्स दूय
सपेसण करेति) इसके बाद उन जितेश्च प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों
के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने
२ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एव वयामी-एव
खलु देवानुप्पिया ! अम्ह उण्ह राईण दूया जमगसमगं चैव जाव णि-
च्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समाचार कहलवाये-हे देवानुप्रियों !
देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुभक राजा के पास

(त न देइण सामी ! कुमए मल्लि विदेहरायवरकन्न साण २ राइण
एयमद्व निवेदेति)

अथैहि डे स्वामिन् ! तमे योक्कसपण्णे आ लब्धीदिो डे कुलस पोतानी
विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी आपणे नहि आ प्रभाण्णे कहीने छये इतोअ
पोतपोताना राजअोनी साथे पोताना भतनी पुष्टि करी

(तएण से जियसत्तू पामोकखा छप्पिरायणो तेसिं दूयाण अतिए एयमद्व
सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अणमणस्स दूयसपेसण करेति)

त्यारभाड एतत्तश्च प्रमुख छये राजअो इतोना सुअेथी आ प्रभाण्णे
वात सावणीने अने तेने बरावर समएने गुस्से थया अने पोतपोताना
इतोने ओऽ णीज राजनी पासे भोक्कथा

(करित्ता एव वयामी एव खलु देवानुप्पिया ! अम्ह राईण दूया जमग
समगचैव जाव णिच्छूढा)

तेओअे ते इतोनी साथे आ लतने न देश भोक्कथे डे डे देवानुप्रियो !
आपण्णा छये राजअोना इतो ओकी वणते कुलसराजनी पासे गया त्या तेणे

सारिताः । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुमियाः ! अस्माकं कृष्णकायं कृष्णक
पराजयाय 'जत्त' यात्रा=युद्धयात्रा ग्रहीतुं श्रेय इति पूर्वमन्वयः । अत्रि
कृत्वा=इति परामृश्य-विचार्य, परम्परस्यैतन्मर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति, अत्रि
कृत्वा, ते जितशत्रुममुचाः पठपि राजानः स्नाताः सञ्जग्माः=युद्धोपकरण-करत्रादि
धारणेन सज्जीकृतशरीराः, अस्तिस्मन्मन्त्र्यगता =गजोपरिममालुङ्गाः, 'सज्जेव

पहुँचे-वहाँ उसने हम लोगों के दूतों का कोई भी स्वाकार और सम्मान नहीं किया-किन्तु उन्हें अपमानित कर अपने महल के पिछले छेदि दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया-त, अतः-(संघ खलु देवाणुप्पिया) अम्हं कुम्भकस्सज्ज गेणित्ताणं त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स पेयमंहु पडि सुणेंति, पडिसुणित्तां, ण्हायां, सण्णद्वा त्थिक्खवरगया सकोरेंतंहु वामेण उत्तेण धरिज्जमणेण उद्धुयेमाणाहिं सेयवरचामराहिं महण्णं हयं गयरुत्तपवरजोहकलियाण चाउरगिणीण सेणाणं सुद्धि मपरिबुद्धा संधि वीएजाव निगच्छति) हम लोगों का अब यही कर्तव्य श्रेयस्कर है कि हम लोग कुम्भक राजा को पराजित करने के लिये उन पर चढ़ाई कर दें। इस प्रकार का जब उन संघ की परामर्श हो चुका तब सब ने एक मत ही इस बात को मान लिया। मन लेने के बाद वे जितशत्रु प्रमुख संघ ही राजा नहीं छोड़कर युद्धोपकरणों से सुसज्जित हो गये। और हाथियों के एकधो पर आरुढ़ होकर महान ० एयो से-गुजों से-रथों से

આપણા હૃતોનો મહાર કે મન્માન કંઈજ કંઈ નથી, અને તેમને અધિમાનિત
કૃષિને થાતાના મહેવના પાછલા નાના આરણ્યી બહાર કાઢી મુકાવ્યા છે (ત) એથી
(સૈયં સ્વલું દૈવાણ્પિયા । અહ કુમંગસ જત મેળિત્તે તિકટ્ટે અણ
મણસ પ્યમદ પહિમુનેતિ, પહિમુનેતિ, પહાયા સળગદ્દા, દત્તિકધવરુગ્યા સકો
રતમહદામેણ છત્તેણ ધરિન્નમાણેણ ઉદ્ધુયમાણાદિ સેયવરામરાદિ મદ્યા દ્ય
ગયરહપરજોહકલિયાણ ચાઉરગિણીણ સેણાણ સદ્ધિ સપરિહુદા સન્વિહીણ જાવ
રવેણ સુપદિ ૨ નગરેદિતો જાવ નિમગ્ગતિ)

હવે અમારા માટે એક જ કર્તાવ્ય, શ્રેયસ્કર લાગે છે કે અમે કાનૂન
રાખીને હરાવવા માટે તેમના ઉપર આક્રમણ કરીએ - - -

જ્યારે આ પ્રમાણે બધાએ વિચાર કર્યો ત્યારે સહુએ એકમત થઈને આ નિર્ણય-સ્વીકારી લીધો ત્યારપછી જીતશક્ર પ્રમુખ બધા-સાથેના સ્નાન કરીને, ચુદા, માટેના, બધા, સાધનોથી સુસજ્જ થઈ ગયા અને, તેઓ, બધા

मल्लदामेण 'सकोरुण्टमाल्यदाम्ना=कोरुण्ट पुष्पमालमदामयुक्तेन ' छत्तेण धरिज्जि
माणेण उद्धुन्वमाणार्हिं सेयवरचामराहिं' उत्रेण त्रियमाणेन स्वस्वभृत्येन उद्धू
यमानैः श्वेतवरचामरैश्चयुक्ता', 'महयाहयगजरदपरजोहकलियाए' महाहय-
गजरथप्रवरयोधकलितया=महान्तश्च हयगजरथप्रवरयोधाश्चेति समाहारद्वन्द्वः महा-
हयगजरथप्रवरयोध, सेनाद्वत्वादेकवद्भाष्यं, तेन कलितया = युक्तया, अतएव-
चतुरङ्गिण्या सेनया सार्व सपरि कृता 'सन्विड्डीए' सर्वद्वर्था = राजचिह्नादि
रूपया युक्तः यावद्-रवेण = युद्धोत्साहार्थकतुर्यादि शब्देन स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो
नगरेभ्यो यावद् निर्गच्छन्ति, निगत्य, एकतः एकत्र-एकस्मिन् स्थाने मिलन्ति,
मिलित्वा ते जितशत्रुप्रमुखता पडपि राजानो यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव आधारयन्
गमनाय=गन्तु प्रवृत्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३२ ॥

प्रवर योधाओंसे कलित चतुरगिणी सेना को साथ लेकर अपने २ नगरों
से बाहिर निकले । हाथी पर जब ये राजा जन बैठे हुए थे उस समय
इन के ऊपर छत्र बारी भृत्यो ने कोरटक पुष्प माल्य दाम से युक्त छत्र
ताना हुआ था । चामर ढोरने वाले भृत्यजन उस समय इन के ऊपर
श्वेतवर चामर ढोर रहे थे । ये समस्त राजाजन राज्याय आह्लाद जनक
रूप सर्वद्वि से युक्त होकर ही उत्साह वर्धक तुर्यादि के शब्दों द्वारा
सस्तुत होते हुए-अपने २ नगरों से निकले थे । (निगच्छित्ता एगया
ओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
निकल कर ये सब एक स्थान पर मिल गये । मिलनेके बाद ये सब जितशत्रु
प्रमुख-उन्हों राजा फिर वहासे मिथिला नगरीकी ओर चल दिये । सू ३२।

हाथीओंना ऊपर सवार थधने भोटा घोडाओं, हाथीओं, रथो अने गडाहूर
घोडाओंनी अतु गिणी सेना साथे लधने घोतघोताना नगरनी गडार नीकल्या
हाथीओं ऊपर न्यारे गधा रान्गओं गेडा हता ते वणते उत्रधारी लथेओं
तेभना ऊपर डेर टक पुष्पभाट्य दामवाणु छत्र धधुं हतु आभर ढोणनारा
भृत्यजने ते समथे तेभना ऊपर सङ्केद आभर ढोणता हता ते गधा रान्गओं
रान्गार्थ आह्लादइइय सर्वद्विंयुक्त थधने उत्साह वधारनार तुर्यादिना गण्डो
वडे सस्तुत थता घोतघोताना नगराथी गडार नीकल्या हता

(निगच्छित्ता एगयाओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव
पहारेत्थ गमणाए)

गडार नीकलीने तेओ गधा ओक स्थाने ओकहा थथा ओकहा थधने तेओ गधा
उतशत्रु प्रमुख ओ रान्गओं त्याथा मिथिला नगरी तरङ्ग रवाना थथा ॥सू०३२॥

मूलम्—तएण से कुभए राया इमीसे कहाए लद्धदे समाने बलवाउयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव० हय जाव सेणं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरट० सेयवरचामराहि० महया मिहिल मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं जणवय मज्झमज्झेणं जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खधावरनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामो- क्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रत्ना संद्धि सपलग्गा यावि होत्था, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचि- धद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसि पडिसेहिंति, तएणसे कुभए जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहि हयमहित जाव पडिसेहिए समाने अत्थामे अवले अवीरिए जाव आधारणिज्जभितिकट्टु सिग्धतुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला- तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

‘तएण से कुभए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (सें कुभए इमीसे कहाए लद्धदे समाने बल

तएण से कुभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(त एण) त्थार ५छी (से कुभए इमीसे कहाए लद्धदे समाने बल

कथाया लब्धार्थः= ज्ञातार्थः मन् 'बलमाउय' बलन्यापृत=सैन्यन्यापारपरायण= सैन्यनायकमित्यर्थः, शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत् भो देवानुप्रिय । क्षिप्रमेव 'हयजाव सेण' हय०यावत्-सैन्य-हयगजरथप्रवरयोध-कलित चतुरङ्गयुक्त सैन्य 'सन्नाहेह' सन्नाहय=सन्नद्ध कुरु-सज्जीकुर्वित्यर्थः । यावत् प्रत्यर्पयति, ततोऽसौ सेनापति सैन्य सज्जीकृत्य, कुम्भक राजान निवेदयति-हे स्वामिन् ! सैन्यमस्माभिः सन्नद्धीकृतमिति । ततस्तदनन्तर स कुम्भको राजा स्नातः सन्नद्धः = युद्धोपकरणशस्त्रास्त्रकवचादि धारणेन सज्जीकृतगरीरः हस्ति-स्कन्धवरगत सकोरटमाल्यदाम्ना=कोरटपुष्परचितमालायुक्तेन उत्रेण स्वभृत्येन

वाडय सद्दावेह) कुम्भक राजा को जययह पता चला-तब उस ने अपने सेना नायकको बुलाया-(महाविक्ता एव बयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण सन्नाहेह जाव पञ्चवर्षिणह) भो देवानुप्रिय ! तुम जल्दी से जल्दी हय-गज-रथ एव प्रवर योधाओं से युक्त चतुरगिणी सेना को सजाओ । और इस की हमे पीछे आकर खबर दो-सेना नायक ने ऐसा ही किया सेना सजा कर राजा को खबर दी कि हे स्वामिन् ! हमने आप की आज्ञानुसार सैन्य सज्जित कर दिया है । (तएण कुम्भए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खव० सकोरट० सेयवर चामराहिं महया मिहिल मज्झ मज्झेण णिज्जाह) इस के बाद कुम्भक राजा ने स्नान कर अपने शरीर को युद्धोपकरणों से-शस्त्र अस्त्र एव कवचादि के कारण से-सज्जित किया । बाद में हाथों के स्कन्ध पर

वाडय सद्दावेह) कुम्भक राजाने स्नाने आवातनी लब्ध थप त्यागे तेले पोताना सेनापतिने भोलाव्ये (महाविक्ता एव बयासी) भोलावीने तेने कहु—

(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण सन्नाहेह जाव पञ्चवर्षिणह)

हे देवानुप्रियो ! तमे मत्तरे घोडा, हाथी, रथ अने घोडाहर योद्धाओं-वाणी चतुरगिणी सेना तैयार करे अने अभने भणर आपो सेनापतिछे पोतानु काम पुर्न कर्तुं, अने राजाने सूचना आपी के हे स्वामिन् ! तमारी आज्ञा प्रमाणे अमे सेना तैयार करी दीधी छे

(तएण कुम्भए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खव० सकोरट० सेयवरचामराहिं महया मिहिल, मज्झ मज्झेण णिज्जाह)

त्यारभाह कुम्भक राजाने स्नान कर्तुं अने पठी पोताना शरीरने युद्धना माधनेथी सुसज्ज कर्तुं ओटले के गजाने शस्त्र, अस्त्र, पथ वगेरे धारण क्यो तेओ हाथीनी उपर सवार थया, राजाने हाथो उपर सवार थयेला

मूलम्—तएण से कुभए राया इमीसे कहाए लद्धदे समाणे
 वलवाउयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव०
 हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए
 णहाए सण्णद्धे हत्थिग्वध० सकोरट० सेयवरचामराहि०
 महया मिहिल मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं
 जणवय मज्झमज्झेणं जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता खधावरनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामो-
 क्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ
 तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुभए
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रत्ता सद्धि
 सपलग्गा यावि होत्था, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि
 रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचि-
 धद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसि पडिसेहिंति,
 तएणसे कुभए जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहि हयमहित
 जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अवले अवीरिए जाव
 आधारणिज्जमितिकट्टु सिग्धतुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला-
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता
 मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

‘तएण से कुभए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (सें कुभए इमीसे कहाए लद्धदे समाणे बल

तएण से कुभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(त एण) त्या२ पछी (से कुभए इमीसे कहाए लद्धदे समाणे बल

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भरुस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलग्ना' सप्रच्छन्नाः—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभयम् । ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानं कुम्भकं राजानं 'हयमहिय-पवरवीरघाड्यनिविडियचिंधद्वयच्छत्तपडाग' इतमथितप्रवरवीर्याति-निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताक-दत्ताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता-ताडिता तथा घातिता घातम् आघातं व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महामटाः, यस्य स हतमथितप्रवरवीर्याति, आर्पत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मधारयः, तमेनभूतं नष्टसैन्यध्वजपतारमित्यर्थं 'किच्छप्पाणोवगय' कृच्छ्रपाणोपगत-कृच्छ्रे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं की प्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्ध के लिये कटिबद्ध होकर ठहर गये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रुप्रमुख उहों राजा जहा वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे—वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुम्भएण रत्ता सद्धि सपलग्ना यावि होत्था) आते ही उन लोगों ने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुम्भय राय हयमहियपवरवीरघाड्यनिविडियचिंधद्वयच्छत्तपडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिमि पडि से हिति) युद्ध में उन जितशत्रुप्रमुख छहों राजाओं ने कुम्भकराजा के कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) ओटलाभा तेओ छओ एतशत्रु प्रमुअ राअओओ कुलकराअ छता त्या पडोअ्या

(उवागच्छित्ता कुम्भएण रत्ता सद्धि सपलग्ना यावि होत्था) अने तेओओ तश्त अ युद्ध शत्रु ओरी दीधु

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुम्भय राय हयमहिय पवरवीरघाड्य निविडिय चिंधद्वयच्छत्तपडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिमि पडिसेहिति) युद्धमा तेओ जितशत्रु प्रमुअ छओ राअओओ कुलकराअ छता त्या पडोअ्या वीराने नानधी भारी नाअ्या, केटलाक वीराने लयकर रीते दीपी नाअ्या, अने केटलाक वीराने अअभी जनावी दीधा तेअअ गअ अिह् ३५ ध्वज—

प्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=वीज्यमानैः श्वतरचापरैर्युक्तः तथा-महा
हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरिजत, मर्मद्वर्षा सपन्नं तूरीमेया
दिवाघमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमयेन 'णिज्जाह' निर्याति=निर्गच्छति।
निर्याय विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्र देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते,
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खधावारनिवेश' स्मन्धावारनिवेश=स्मन्धावारस्य
शिविरस्य 'छावनी' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति। कृत्वा स
कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्ध-
ज्जः युद्धाय सज्ज शस्त्रास्त्ररुचयन्नेन युद्धार्थमुद्यतः सन्प्रतिष्ठति। ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये। उन के बैठते ही। उत्र धारियों ने उन के ऊपर
कोरट पुष्पो की माला से विराजित उत्र धारण किया चमर ढोर ने
बालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार
महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरङ्गिणी सेना से घिरे हुए अपनी
पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले। (णिगच्छि
त्ता विदेह जनपद मज्झ मज्झेण जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ)
निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहाँ अपने देश की सीमा
थी वहाँ पहुँचे।

(उवागच्छिता खधावारनिवेश करेइ) वहाँ पहुँच कर उन्होंने वहीं
अपनी छावनी स्थापित कर दी- (करित्ता जियसत्तु पामोक्खा छप्पिय
रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिह्णइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

नेछने छत्रधारियोंके कोरट पुष्पोनी भाषाथी शोभतु उत्र धर्यु आभरढोणतार
भृत्योंके आभरे ढोणतु शत्रु धर्यु आरीते महागज हय रथ वगैरे तेभज
चतुरङ्गिणी सेना युक्त यछने पोतानि पूरी तैयारी साथे मिथिला नगरीनी
पच्छेना राजमार्ग उपरथी अंदर नीडल्या

(णिगच्छित्ता विदेह जनपद मज्झ मज्झेण जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ)
नीडलीने विदेह जनपदनी पच्छे यछने ज्यो पोताना देशनी छट छटी त्या पडोल्या
उवागच्छिता खधावारनिवेश करेइ) त्या पडोल्याने तेज्योके त्या जसेनानी छावली
नाथी (करित्ता जियसत्तु पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे
पडिचिह्णइ)

त्यारणाह जितशत्रु प्रमुख छजे राज्ञेयानी प्रतीक्षा करता तेज्यो त्याज
युद्धने भाटे कम्भर कसीने शोभाया

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलग्ना' सप्रलग्नाः—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभयन् । ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानः कुम्भक राजान 'हयमहिय-पवरवीरघाट्यनिविडियचिधद्वयच्छत्रपडाग' इतमथितप्रवरवीरघातित-निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताक-हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता-ताडिताः, तथा घातिता घातम् आपात व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महामटा, यस्य स इतमथितप्रवरवीरघातितः, आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मप्रारयः, तमेवभूत नष्टसैन्यध्वजपताकमित्यर्थ 'किच्छप्पाणोवगय' कच्छप्पाणोपगत-कच्छे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओ कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहाँपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने मे वे जितशत्रु प्रमुख उहों राजा जहा वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे-वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्वि सपलग्ना यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीर घाट्यनिविडियचिधद्वयच्छत्रपडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से हिति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ ने कुम्भकराजा के कितनेक वीरो को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति)
केटलाभा तेओ छओ जितशत्रु प्रमुखा राजाओ न्या कुलकशान् हता तथा पडोत्थ्या

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्वि सपलग्ना यावि होत्था) अने तेओओ तश्च न युद्धं शङ्क करो दीधु

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर घाट्य निविडिय चिधद्वयच्छत्रपडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिति)

युद्धमा तेओ जितशत्रु प्रमुखा छओ राजाओओ कुलक २ नाना केटलाक वीराने नानथी भारी नाभ्या, केटलाक वीराने लयक २ रीते दीपी नाभ्या, अने केटलाक वीराने नभभी जनावी दीधा तेमन राज त्रिह ३५ ध्वज-

धियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=रीज्यमानैः श्वतवारचापरैर्युक्त' तथा-महा
हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरित्रत, मर्षद्वर्षा सपन्नः तूरीमेवा
दिवाधमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमयेन 'णिज्जाइ' निर्याति=निर्गच्छति ।
निर्याय विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्र देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते,
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खधावारनिवेश' सन्धावारनिवेश=सन्धावारस्य
शिविरस्य 'छावनी' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति । कृत्वा स
कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-
ज्जः युद्धाय सज्ज शस्त्रास्त्ररुचरणेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रवर्तितप्रति । ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये । उन के बैठते ही । उत्र धारियों ने उन के ऊपर
कोरट पुष्पो की माला से विराजित छत्र धारण किया चमर ढोर ने
बालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार
महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरगिणी सेना से घिरे हुए अपनी
पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले । (णिगच्छि
त्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहाँ अपने देश की सीमा
थी वहाँ पहुँचे ।

(उवागच्छिता खधावारनिवेश करेइ) वहाँ पहुँच कर उन्होंने वहीं
अपनी छावनी स्थापित कर दो- (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय
रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिद्धइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

नेधने छत्रधारीओओ केरट पुष्पोनी भाषाथी शोखतु छत्र धरुं आभरठोणनार
भृत्योओ आभरे। ठोणवानु शइ कथुं आ रीते महागज हय रथ वगेरे तेमज
चतुरगिणी सेना युक्त थधने पोतानि पूरी तैयारी साथे मिथिला नगरीनी
वन्धेना राजमार्ग उपरथी ओहार नीकल्या

(णिगच्छित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
नीकलीने विदेह जनपदनी वन्धे थधने न्या पोताना देशनी छट्टती त्या पडोअ्या
उवागच्छित्ता खधावारनिवेश करेइ) त्या पडोअ्याने तेओओ त्या जसेनानी छावणी
नाथी (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे
पडिचिद्धइ)

त्यारणाइ जितशत्रु प्रमुख छओ राजओनी प्रतीक्षा करता तेओ त्याज
युद्धने भाटे कम्मर कसीने रोक्या

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलग्ना' सपलग्ना-युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानं कुम्भकं राजानं 'हयमहिय-पवरवीरघाट्यनिविडियचिधद्वयच्छत्रपडाग' इतमथितप्रवरवीरघातित-निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताक-हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता-ताडिताः, तथा घातिता घातम् आघातं व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महामटाः, यस्य स हतमथितप्रवरवीरघातितः, आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मधारयः, तमेवभूतं नष्टसैन्यध्वजपताकमित्यर्थं 'किञ्छप्पाणोवगय' कृच्छ्रप्पाणोपगत-कृच्छ्रे-कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं की प्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्ध के लिये कटिबद्ध होकर ठहर गये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रुप्रमुख उहों राजा जहा वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे-वहा आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुम्भएण रत्ता सद्धि सपलग्ना यावि होत्था) आते ही उन लोगों ने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुम्भय राय हयमहियपवरवीरघाट्यनिविडियचिधद्वयच्छत्रपडाग किञ्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से हिति) युद्ध में उन जितशत्रुप्रमुख छहों राजाओं ने कुम्भकराजा के कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज-पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) ओटलाभा तेओ छओ अतशत्रु प्रमुखा राजाओ न्या कुम्भकराज उता त्या पडोत्था

(उवागच्छित्ता कुम्भएण रत्ता सद्धि सपलग्ना यावि होत्था) अने तेओओ तरेत व युद्ध शत्रु करो दीधु

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुम्भय राय हयमहिय पवरवीरघाट्य निविडिय चिधद्वयच्छत्रपडाग किञ्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिति) युद्धमा तेओ जितशत्रु प्रमुखा छओ राजाओओ कुम्भक राजाना केटलाक वीरेने जानथी भारी नाप्था, केटलाक वीरेने लयकर रीते टीपी नाप्था, अने केटलाक वीरेने जभभी बनावा दीधा तेभज गज चिह्न ३५ ३५५-

ઉપગતા यस્ય સ કૃચ્છપ્રાણોપગતન્ત પ્રાણસકટાપન્નમ્ ' દિશ દિશં '—એકમા દિશઃ—અપરા દિશ—' પડિસેદ્દેતિ ' પ્રતિપેદ્યતિ=નિગમયન્તિ તતસ્તદનન્તર સ્થુ સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુપ્રમુલૈઃ પદ્મવીરાજમિર્હતમધિત—યાત્ર પ્રવરવીરધાતિ ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કૃચ્છપ્રાણોપગતઃ પ્રતિપિદ્ધ સન્ અસ્થામા=આત્મચલરહિતઃ, અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એ ' અગ્રોરિણ '—અગ્રીયઃ=ઉત્સાહરહિતઃ । યાત્ર—' આધારણિજ્જ ' અધારણીયમ્—આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત તદ્ ગારણીય, ન ધારણી યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરચલમ્—અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્તમિત્યર્થઃ । ઇતિકૃત્વા—એવ વિચાર્ય, શીઘ્ર દ્વરિત યાત્ર ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તર્ગેશો

પ્રાણ ઘટત અધિક સકટ મે પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ ભાગના મી જાહતા થા—તો મી ઉન્હોં ને ઉસે દૂસરી ઓર ભાગને નહીં દિયા । (તણ સે કુમ્ભ જિયસત્ પામોસ્વેદિં છર્દિં રાઈદિં હ્યમહિતં જાવ પડિસેદિણ સમાણે અત્યામે અવલેઅગ્રીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકૃદ્ધ સિન્ધ તુરિય જાવ વેદ્ય જેણેવ મિથિલા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્) હસ તાહ જિતશત્રુ આદિ છર્દોં રાજાઓ સે હત મધિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જય સંકટ યુક્ત પ્રાણોવાલા બન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર ભાગને કે લિયે અસમર્થ હો ગયા તય આત્મચલ ઓર સૈન્યચલ સે રહિત બના હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરચલ કો અજેય માન કર વહા સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ચાલ સે જશ મિથિલા નગર થી ઉસ તરફ આયા ।

પતાકા—અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આશ્રિતમા ફસાઈ ગયા ત્યાથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તણ સે કુમ્ભ જિયસત્ પામોસ્વેદિં છર્દિં રાઈદિં હ્યમહિતં જાવ પડિ સેદિણ સમાણે અત્યામે અવલે અગ્રીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકૃદ્ધ સિન્ધ તુરિય જાવ વેદ્ય જેણેવ મિથિલા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્)

આ રીતે જિતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મધિત તેમજ ધાતિત થોદાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણ પાણુ બચાવે આશ્રિતમા ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાંથી નાસી જવાની પણ તક શુભાવી બેઠા ત્યારે આત્મચળ અને સૈન્યચળ વગર બનેલા તેઓ સાત્ર નિરૂત્સાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ગડપણે ચાલથી જ્યા મિથિલા નગરે હતી તે તરફ ર... થયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि
'पिहेइ' पिदधाति=आवृणोति । पिधाय 'रोहसज्जे' रोधमज्ज=रोधेन शत्रु-
भयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज=रक्षां कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्-तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणि
णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठंति,
तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अलभ-
तरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामो-
क्खाण छण्ह राईण अतराणिय छिद्दाणिय विरहाणिय मम्माणिय
अलभमाणेवहूहिआएहिय उवाएहि य उप्पत्तियाहिय वेणइया
ए हिय कम्मयाहिय परिणामियाहिय बुद्धीहि परिणामेमाणे
किचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-
यइ । इम च णं मल्लीं विदेहरायवरकन्ना णहाया जाव वहूहि
खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
कुभगस्स पायग्गहण करेइ । तएण कुभए मल्ली विदेहरायवर-
कन् नो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया । (अणुपवि-
सित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट
होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय
से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो
गया ॥ सूत्र ३३ ॥

त्या आवता न मिथिला नगरीमा तेज्जो प्रविष्ट थया

(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)

प्रवेशीने तेभज्जे मिथिलाना दरवाज्जोने षड् उवावी दीधा अने शत्रुनी
भीक्ष्णो आपवा ज्वाना भागेने षण् रक्षीने पोतानी रक्षा भाटे तेज्जो तत्पर
थई गया ॥ सूत्र " ३३ "

ઉપગતા यस્ય સ કૃત્તપ્રાણોપગતન્ત પ્રાણસઠ્ઠાપન્નમ્ ' દિશ દિશ ' = એકત્વા
 દિશઃ-અપરા દિશ-' પડિસેદેતિ ' પ્રતિપેધયતિ=નિચારયન્તિ તતસ્તદનન્તર લક્ષ
 સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુમુલ્લે' પદ્મીરાજમિર્હતમથિત-યાવત્ પ્રવરવીરવાલિ
 ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કૃત્તપ્રાણોપગત' પ્રતિપિદ્ધ સન્ અસ્થામા=આત્મચન્દ્રરહિતઃ,
 અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એ ' અવીરિણ ' = નીર્યઃ=ઉત્સાહરહિતઃ । યાવત્-
 'આધારણિજ્જ' અધારણીયમ્-આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત તદ્ધારણીય, ન ધારણી
 યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરચલમ્-અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્તમિત્યર્થઃ ।
 હતિકૃત્વા-એવ નિચાર્ય, શીઘ્ર ત્વરિત યાવત્ ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તત્રૈવો

પ્રાણ ઘટ્ટ અધિક સઠ્ઠ મેં પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ ભાગના
 મીં ચાહતા થા-તો મીં ડન્હોં ને ડસે દૂસરી ઓર ભાગને નહીં દિયા ।
 (તપ્પણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામાન્લેહિં છર્હિં રાઠ્ઠિં હ્યમહિતં જાવ
 પડિસેહિણ સમાણે અત્થામે અવલે અવીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકકુદ્ધ
 સિગ્ધ તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) હસ તરફ
 જિતશત્રુ આદિ છર્હોં રાજાઓ સે હત મથિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા
 ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જબ સંકટ
 યુક્ત પ્રાણોવાલા બન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર ભાગને કે
 લિયે અસમર્થ હો ગયા તવ આત્મેચલ ઓર સૈન્યચલ સે રહિત બના
 હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરચલ કો અજેય માન કર
 વહાં સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ચાલ સે જશ મિથિલા નગર થી
 હસ તરફ આયા ।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આક્રમ
 ક્રમમાં ગયા ત્યાથી તે ખીણ તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે
 છત્રશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તપ્પણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામાન્લેહિં છર્હિં રાઠ્ઠિં હ્યમહિતં જાવ પડિ
 સેહિણ સમાણે અત્થામે અવલે અવીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિક કુદ્ધ સિગ્ધ
 તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

આ રીતે છત્રશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મથિત તેમજ ધાતિત
 યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણ
 પણ બચારે આક્રમક ક્રમમાં ગયા અને રણભૂમિમાંથી નાસી જવાની પણ તક
 શુભાવી બેઠા ત્યારે આત્મચળ અને સૈન્યચળ વગર બનેલા તેએ સાત નિર
 ત્સાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી
 વેગયુક્ત અડપલેર ચાલથી જ્યાં મિથિલા નગરની હતી તે તરફ ચલા ગયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि 'पिहेइ' पिदयाति=आवृणोति । पिधाय 'रोहसज्जे' रोधमज्ज=रोधेन शत्रुभयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज=रक्षां कुर्वन् तिष्ठति ॥ सु० ३३ ॥

मूलम्-तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणि णिस्सचारं णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठति, तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्हं राईणं अतराणिय छिट्ठाणिय विरहाणिय मम्ममाणिय अलभमाणेवहूहि आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइया ए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहिय बुद्धोहि परिणामेमाणेऽ किचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ । इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव वहूहि खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहण करेइ । तएण कुभए मल्ली विदेहरायवरकन्नो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया । (अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो गया ॥ सूत्र ३३ ॥

त्या आवता म मिथिला नगरीमा तेज्जो प्रविष्ट थया

(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)

प्रवेशीने तेमज्जे मिथिलाना दरवाज्जोने ण ध उवापी दीधा अने शत्रुनी णीकथो आववा ज्वाना भागेने थयु देकीने पोतानी रक्षा भाटे तेज्जो तत्पर थय् गया ॥ सूत्र " ३३ "

ઉપગતા ચસ્ય સ કૃત્તપ્રાણોપગતરત પ્રાણસપ્તાપન્નમ્ ' દિશ દિશ '—એકસ્યા દિશઃ—અપરા દિશ—' પડિસેદ્દેતિ ' પ્રતિપેધયતિ=નિચારયન્તિ તતસ્તદનન્તર સ્થ સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુપ્રમુલૈઃ પદ્મીરાજમિર્હિતમથિત—યાવત્ પ્રવરવીરવાલિ ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કૃત્તપ્રાણોપગત' પ્રતિપિદ્ધ સન્ અસ્થામા=આત્મચલરહિત, અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એ ' અત્રીરિષ્ '—અત્રીર્યઃ=ઉત્સાહરહિત । યાવત્ 'આધારણિજ્જ' અધારણીયમ્—આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત તદ્ ધારણીય, ન ધારણી યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરચલમ્—અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્તમિત્યર્થઃ । ઇતિકૃત્વા—એવ ત્રિચાર્ય, શીઘ્ર ત્વરિત યાવત્ ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તન્નેવો

પ્રાણ ઘટ્ટ અધિક સકટ મેં પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ ભાગના બીં ચાહતા થા—તો બીં ઉન્હોં ને ઉસે દૂસરી ઓર ભાગને નહીં દિયા । (તપ્પણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામોમ્હેહિં છર્હિં રાઈર્હિં હ્યમહિતં જાન પડિસેદ્દિય સમાણે અત્થામે અવલેખવીરિય જાવ આધારણિજ્ઞમિત્તિકદ્દ સિન્ધ તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) હસ તગ્હ જિતશત્રુ આદિ છહોં રાજાઓ સે હત મથિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જબ સંકટ યુક્ત પ્રાણોવાલા બન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર ભાગને કે લિયે અસમર્થ હો ગયા તથા આત્મેચલ ઓર સૈન્યચલ સે રહિત બના હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરચલ કો અજેય માન કર વહા સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ચાલ સે જન્ મિથિલા નગર થી ઉસ તરફ આયા ।

પતાકા—અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આક્રમક દસાઈ ગયા ત્યાથી તે બીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તપ્પણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામોમ્હેહિં છર્હિં રાઈર્હિં હ્યમહિતં જાન પડિસેદ્દિય સમાણે અત્થામે અવલેખવીરિય જાવ આધારણિજ્ઞમિત્તિકદ્દ સિન્ધ તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

આ રીતે જીતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મથિત તેમજ ધાતિત યોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન વ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણ પણ ન્યારે આક્રમક દસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાંથી નાસી જવાની પણ તક શુભાવી બેઠા ત્યારે આત્મચળ અને સૈન્યચળ વગર બનેલા તેઓ સાત નિરૂત્સાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી વેગયુક્ત ઝડપવેર ચાલથી ન્યા મિથિલા નગરોં હવી તે તરફ રવાના થયા

‘णिसंचार’ निः संचार=यथा जनानां प्रवेशनिर्गमरूप संचारस्तत्र न स्यात् तथा,
‘णिरुच्चार’ निरुच्चार=उन्-उर् चरण=प्राकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप
जनानां यथा न भवेत् तथा, ‘द् दूय क्रिया विशेषण यद्वा-निरुच्चारम्-उन्चारः
पुरीष तद्विसर्गार्थं यज्जनानां वह्निर्गमन तद्वहित यथा स्यात् तथा, सर्वत’ सर्व-
दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ‘ओरुभित्ताण’ अरु य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवस्थां ज्ञात्वा
‘अभतरियाए’ आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरप्रतिन्याम् उपस्थानशालायाम्-
आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थः, सिंहासनवरगतः-राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः,
तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां पण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि,
विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर, अलभ-

मिहिला-तेणेव उवागच्छन्ति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस
तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे (उवागच्छित्ता मिहिल रायहा-
णि णिसंचार णिसच्चार सव्वओ समता ओरभित्ताण चिट्ठति) वहा
आकर उन्हीं ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे
मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति
कारण सर भी बाहर नहीं निकल सका (तएण से कुमए राया मिहिल
रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अभतरियाए उवट्ठाणसालाए सींहासणवरगए)
इस के अनन्तर कुम्भक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी
को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तब किले की भीतर रहे हुए सभामण्डप
मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह
राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

जितशत्रु प्रमुख छह राजाओं मिथिला नगरी तरफ बढा

(उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणि णिसंचार णिसच्चार सव्वओ समता
ओरभित्ताण चिट्ठति)

त्या मिथिला नगरीनी पासो आवीने सोओ तेओओ बरे नाओओ आ
रीते भाओओनी अपर ओवर सदतर गध यह गध

तएण से कुमए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अभतरियाए उव-
ट्ठाणसालाए, सींहासणवरगए)

त्यारणाइ न्हारे कुलक राजाओ पोतानी राजधानी मिथिला नगराने शत्रुओ वडे
घेराओली लेध त्यारे तेओओ मिथिलानी अहर सलाभ उभा सिंहासन उपर बैसीने

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि
य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्लो विदेहरायवरकन्नाकुभर्ग एव वयासी-तुवमेण ताओ अण्णदा
 मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुवम अज्ज ओहय मण
 सकप्पे जाव झियायह?, तएणं कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एवं
 वयासी-एव खल्ल पुत्ता तउ कज्जे जियसत्तूपमुखेहि छहि राईहिं दूया
 सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जि-
 यसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा परिकुविया
 समाणा मिहिल रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति । तएणं
 अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि
 अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्लो विदेहरायवरकन्ना
 कुंभय राय एव वयासी-माण तुवम ताओ । ओहयमणसकप्पा
 जाव झियायह, तुवमेणं ताओ तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह
 राईण पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह-तव
 देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ण तिकट्टु सज्जाकालसमयसि पविर-
 लमणुससि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह
 अणुप्पवेसित्ता गव्वभघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए
 दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुभए एव
 त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टोका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खल्ल जियसत्तूपमुखाः षडपि
 राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

‘तएण ते जियसत्तूपामोक्खा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएण ते जियसत्तूपामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्या२ भा६ (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
 मिहिला तेणेव उवागच्छति)

‘णिस्सचार’ निः सचार=यथा जनानां प्रवेशनिर्गमरूप. सचारस्तत्र न स्यात् तथा,
‘णिरुच्चार’ निरुच्चार-उन्-उ र् चरण=माकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप
जनानां यथा न भवेत् तथा, ‘द दूय क्रिया विशेषण यद्वा-निरुच्चारम्-उच्चारः
पुरीष तद्विस्मयार्थं यज्जनानां तद्विर्गमन तद्विहित यथा म्यात् तथा, सर्वत’ सर्व-
दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ‘ओरुभित्ताण’ अरु-य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवस्थां ज्ञात्वा
‘अभतरियाए’ अभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरातिन्याम् उपस्थानशालायाम्-
आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थ, सिंहासनवरगतः-राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः,
तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां पण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि,
विराण्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर, अलभ-

मिथिला-तेणेव उवागच्छन्ति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस
तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर वढे (उवागच्छित्ता मिथिल रायहा-
णिं णिस्सचार णिस्सच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताण चिद्धति) वहा
आकर उन्हों ने उस मिथिला राजधानीको सय ओरसे घेर लिया-इससे
मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति
कारण सर भी बाहर नहीं निकल सका (तएण से कुमए राया मिथिल
रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवव्हाणसालाए सीहासणवरगए)
इस के अनन्तर कुम्भक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी
को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तय किले की भीतर रहे हुए सभामण्डप
मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह
राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

जितशत्रु प्रमुख छह राजाओं मिथिला नगरी तरई वध-॥

(उवागच्छित्ता मिथिल रायहाणिं णिस्सचार णिस्सच्चार सव्वओ समता
ओरुभित्ताण चिद्धति)

त्या मिथिला नगरीनी पासो आवीने ओमेर तेओओ वेरे। नाओओ आ
रीते भाओओनी अपर ओवर सदतर गध थई गध

तएण से कुमए राया मिथिल रायहाणिं रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उव
व्हाणसालाए, सीहासणवरगए)

त्यारभाद ओओरे कुलक राजाओ चोतानी राजधानी मिथिला नगराने शत्रुओ वडे
घेराओली ओई त्यारे तेओओ किल्लानी अदर सभाभउमा सिंहासन उपर ओसीने

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्दाणि य विरहाणि
य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्ला विदेहरायवरकन्नाकुभगं एव वयासी-तुवभेण ताओ अण्णदा
 मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुवभ अज्ज ओहय मण
 सकप्पे जाव झियायह?, तएणं कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एवं
 वयासी-एवं खल्ल पुत्ता तज्ज कज्जे जियसत्तूपमुखेहि छहि राईहिं दूया
 सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएण ते जि
 यसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया
 समाणा मिहिलं रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति । तएणं
 अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अंतराणि ४
 अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 कुंभय राय एव वयासी-माण तुवभ ताओ । ओहयमणसकप्पा
 जाव झियायह, तुवभेणं ताओ तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह
 राईणं पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह-तव
 देमि मल्लि विदेहरायवरकण्णं तिकट्ठु सझाकालसमयसि पविर-
 लमणुसासि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह
 अणुप्पवेसित्ता गवभघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए
 दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुभए एवं
 त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टोका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खल्ल जियशत्रुप्रमुखा, षडपि
 राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

‘ तएण ते जियसत्तू पामोक्खा ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेजेव

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थार थाइ (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेजेव
 मिहिला तेणेव उवागच्छति)

‘ इम च ण ’ अस्मिन् काले खलु, अत्रार्पत्वात्मघ्नमर्थे द्वितीया मल्ली विदे-
हराजवरकन्या स्नाता यावद् उद्धीभिः ‘ खुज्जाहिं ’ कुज्जाभिः=वक्रसस्थानाभि
र्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैगोपागच्छति, उपागत्य राज पाद-
ग्रहण - चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्ली
विदेहराजवरकन्या ‘ णो आढाइ ’ नो आद्रियते नो परिजानाति, ‘ मल्ली समा-
गता ’ इत्यपि न जानाति एङ्गीकः मौनभावसहितः सतिष्ठतेस्म । ततस्तदनन्तर

दुःखित होने लगा (इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या, णाया जाव बहूहिं
खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह
राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणो से अलकृत शरीर
होकर अनेक वक्र सस्थान वाली दासियोंके साथ जहाँ कुभकराजा ये बहा
आई । (उवागच्छिता कुभगस्त पायगग्रहण करेइ) आकर उसने अपने
पिता कुभक राजा के चरणों में नमे (तएणं कुभए मल्लि विदेहरायव-
रकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिद्धइ) परन्तु व्यग्रचित्त
होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुभक राजा ने कोई
आदर नहीं किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी
आई हैं । केवल वह मौनभाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं
मल्ली विदेहरायवरकन्या कुभग एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या णाया जावबहूहिं खुज्जाहिं सपरि-
वुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ)

आ अरसाभा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीके स्नान क्युं अने त्यार
पछी वस्त्रो, आलखो तेमए अलकृतथी अलकृत थधने धाणी पक सस्थान
वाणी दासीकेनी साथे कुलक राजनी पासे गध

(उवागच्छिता कुभगस्त पायगग्रहण करेइ) अने त्या कधने तेके पोताना
पिता कुलक राजनी अरखोभा नमन क्युं

(तएण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ,
तुसिणीए सचिद्धइ)

व्याकुल चित्तवाणा कुलक राजाके विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीने
आदर क्यो नहि के अदर क्यो नहि राजने तो मात्र आटलु न जान
थ्यु के मल्लीकुमारी आवी छे

राज साव भूगा थजने जेसी न रहा (तएण मल्ली विदेहरायवर
कन्या कुभग एव वयासी) पितानी आवी खलत नोधने विदेहराजवर कन्या
मल्लीकुमारीके तेमने पूछ्यु के—

માન = અમાણુમ્, વદ્ભિઃ = , આયે = ઇંટસિદ્ધિઉપાયે - સાપ્રતંથ 'ઉપ્પત્તિયાહિ' ઔત્પત્તિકામિ = આભાત્તિકીમિઃ - ગ્રાસ્ત્રાભ્યાસેન યિને૨ સમુત્પન્નામિરિત્યર્થ, 'વેણડયાહિ' વૈનયિકીમિઃ = યિનયતઃ પ્રાપ્તામિઃ, 'કમ્મયાહિ' કાર્મિકામિઃ = અભ્યાસ લબ્ધામિશ્ચ અત્રાપિ ચકારા યાવયાગદ્ધાર ચોષકાઃ, બુદ્ધિમિઃ 'પરિણામેમાણે ૨' પરિણમયન્ પરિણમનકુર્વન્-અમાત્યેઃ સદ્ વિચારયન્નિત્યર્થઃ, કમપિ આય વા ઉપાય વા અલભમાનઃ 'ઓદ્યમણસકપ્પે' અપહતમનઃ સકલ્પઃ = વિધ્વસ્તમનોરયઃ સન્ યાવત્ 'સિયાયહ' યાયતિ = અર્તધ્યાન કુર્વન્નાસ્તેસ્મ ।

જિતશત્રુ પ્રમુખ છઠો રાજાઓં કે અવસરોં કો, દૂષણોં કો વિવરોં કો
 એવ ગુણદોષોં કો દેખને કી તારુ મેં રાખે લગા-પરન્તુ જય અપને જન
 શત્રુઓં કે ઉસે અવસર દૂષણ આદિ દેખને મેં નહીં આયે તય ઉસને
 વહીં, આયેહિં ય, ઉવાળહિં ય, ઉપ્પત્તિયાહિં ય, વેણડયાહિં ય, કમ્મ
 યાહિં ય પરિણામિયાહિં ય બુદ્ધીહિં પરિણામેમાણે ૨) અનેકવિધ હૃષ્ટ
 સિદ્ધિકારક ઉપાયોં સે ઉન્હે પરાસ્ત કરને કી યાત સોચી તથા ઔત્પ
 ત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી એવ પરિણામિ કી બુદ્ધિયોં સે મન્ત્રિયોં કે
 સાથ થઈકર ધાર ૨ હસ યાત કા વિચાર મી ક્રિયા પરન્તુ હસ સ્થિતિ
 મેં ઉસે (કિં ચિ આય વા ઉવાય વા અલભમાણે) જય હૃષ્ટ સિદ્ધિકારક
 કોઈ મી ઉપાય નજર નહીં આયા તય વહ (ઓદ્યમણસકપ્પે જાવ
 સિયાયહ) અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર અર્તધ્યાન કરને લગ ગયા-

જિતશત્રુ પ્રમુખ છઠે રાજાઓના અવસરોને, દૂષણોને, વિવરોને અને
 ગુણ દોષોને જોવા માટે લાગ જોતા એસી રહ્યા પણ જ્યારે આ કામમાં
 પણ તે સફળ થઈ શક્યા નહિ એટલે કે શત્રુ પક્ષના દૂષણો વગેરે તે જાણી
 શક્યા નહિ ત્યારે તેમણે

(વહીં, આયેહિં ય ઉવાયેહિં ય ઉપ્પત્તિયાહિય, વેણડયાહિય, કમ્મયાહિય,
 પરિણામિયાહિય, બુદ્ધીહિં પરિણામે માણે ૨)

જાતજાતના ઈષ્ટ સિદ્ધિ કરનારા ઉપાયોથી તેઓને હરાવવાની વાત ઉપર
 વિચાર કર્યો, તેમજ ઔત્પત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પારિણામિકી બુદ્ધિ
 યોથી મન્ત્રીઓની સાથે એનીને વારંવાર આ સમસ્યા ઉપર મતણા પણ
 કરી પણ એવી ગભીર હાલતમાં તેઓને (કિં ચિ આય વા ઉવાય વા અલભમાણે

જ્યારે ઈષ્ટ સિદ્ધિ માટેના કોઈ પણ ઉપાય જણાયો નહિ ત્યારે (ઓદ્યમણ
 સકપ્પે જાવ સિયાયહ) હું ખી થઈને આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા

‘ इम च ण ’ अस्मिन् काले खलु, अर्थात्वात्मपुत्रमर्थे द्वितीया मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावद् गृहीभिः ‘ खुज्जाहि ’ कुब्जाभिः=वक्रसंस्थानाभिर्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज पादग्रहण - चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्ली विदेहराजवरकन्या ‘ णो आढाइ ’ नो आद्रियते नो परिजानाति, ‘ मल्ली समागता ’ इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहितः सतिष्ठतेस्म । ततस्तदनन्तर

दुःखित होने लगा (इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या, ण्हाया जाव बहुहिं खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुम्भ तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणो से अलंकृत शरीर होकर अनेक वक्र संस्थान वाली दासियोंके साथ जहाँ कुम्भकराजा थे वहाँ आई । (उवागच्छित्ता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) आकर उसने अपने पिता कुम्भक राजा के चरणों में नमो (तएणं कुम्भ मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त होने से विदेहराजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुम्भक राजा ने कोई आदर नहीं किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी आई है । केवल वह मौन भाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्या कुम्भ एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या ण्हाया जावबहुहिं खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुम्भ तेणेव उवागच्छइ)

आ अरसाभा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीजे स्नान उथुं अने त्यार पछी वस्रो, आलखे। तेभए अलंकारोथी अलंकृत थधने धण्णी वक्र संस्थान वाली दासीजोनी साथे कुल्ले राजनी पासो गर्ह

(उवागच्छित्ता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) अने त्या नधने तेछे पोताना पिता कुल्ले राजनी अरखे।मा नमन उथुं

(तएण कुम्भ मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ)

व्याकुल चित्तवाणा कुल्ले राजाजे विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीजे आदर कथो नहिं के सत्कार कथो नहिं राजने तो मात्र आटलु न मान थयुं के मल्लीकुमारी आनी छे

राजा साथ भूजा थजिने जेसी न रह्या (तएण मल्ली विदेहरायवर कन्या कुम्भ एव वयासी) पितानी आवी छल्लव जेजिने विदेहराजवर कथा मल्लीकुमारीजे तेभने पूछथुं के—

મહી વિદેહરાજરક્ત્યા કુમ્ભકં રાજાનમેવ=ત્વમાગપ્રહારેણ, અત્રીત્-હે તાત!
 યુવ સ્વલુ અન્યદા=અન્યસ્મિન્ સમયે મામ્ 'એજમાણ' એજમાનામ્ આગચ્છન્તી
 યાત્-દૃષ્ટ્વા, આદ્રિય-એ, પરિજાનીય, ઉત્સરે 'નિવેસેહ' નિવેશયથ, કિં=કેન
 કારણેન સ્વલુ યુવમદ્યોપહતમનઃ સકલ્પો યાત્-ધ્યાયથ=શ્રાત્-યાન કુરુથ ? તત્
 =મહીવચનશ્રવણાનન્તર કુમ્ભકો રાજા મલ્લી વિદેહરાજરક્ત્યામેવમત્રાદીત્-
 હે પુત્રિ ! એવ સ્વલુ તવ કાર્યે વિરાદરૂપ કાર્ય નિમિત્તીકૃત્યેર્થ, જિતશત્રુપ્રભૈ-
 પદ્મીરાજભિર્દૂતાઃ સપેપિતાઃ, તે સ્વલુ મયા 'અસત્કારિયા' અમત્કૃતાઃ=અનાદતા

કો દેખકર ઉસ વિદેહવરરાજરક્ત્યા મલ્લિકુમારી ને ઉન સં પૂઞા-(તુમે
 ણ તાઓ અણયા મમ એજમાણ જાવ નિવેસેહ, કિણ તુમ્મ અજ્જે
 ઓહમણ સકપ્પે જાવ સિયાયહ) હે તાત ! પહિલે જય કમ્મી આપ મુક્કે
 આતી હુઈ દેખતે થે તો ઉસ સમય મેરા આદર કરતે થે-મુક્કે જાનછેતે
 થે, ઓર અપની ગોદ મેં થૈઠા લેતે થે-પરન્તુ આજ ક્યા કારણ હૈ જો
 આપ અપહતમન. સકત્પ હોકર ચિન્તાગ્રસ્ત થૈઠે હુણ હૈ

(તણ કુમળ મલ્લિ વિદેહરાજરક્ત્ય એવ વયાસી) હસ પ્રકાર
 સુન કર રાજાને અપની વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી સે કહા -
 (એવ સ્વલુ પુત્તા ! તવ કજ્જે જિય સત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છર્હિ રાઈ હિં દૂયા સપે
 સિયા તેણ મળ અસત્કારિયા જાવ નિચ્છુટ્ટા, તણ તે જિયસત્તૂ પામો
 ખલા તેસિં દૂયાણ અતિણ એમદ્દ સોચ્ચા પરિકુવિયા- સમાણા મિહિલ
 રાયદાર્ણિ નિસ્મચાર જાવ ચિદ્ધતિ) હે પુત્રિ ! તુમ્હારે સાથ વૈવાહિક-

(તુમે ણ તાઓ અણયા મમ એજમાણ જાવ નિવેસેહ કિણ તુમ્મ અજ્જે
 ઓહમણ સકપ્પે જાવ સિયાયહ

હે પિતા ! પહેલાં જમે ત્યારે મને આવતી બેતા ત્યારે મારાં તમે
 આદર કરતા હતા, મને બાણી લેતા હતા અને મને પોતાના બેળામા બેસા-
 ડતા હતા. પણ આજે શુ કારણે કે કે તમે ઉદાસ થઈને આર્તધ્યાનમા બેઠા છો.
 (તણ કુમળમલ્લિ વિદેહરાજરક્ત્ય એવ વયાસી) આ રીતે રાજાએ વિદેહ
 રાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે—

(એવ સ્વલુ પુત્તા તવ કજ્જે જિયસત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છર્હિ રાઈ હિં દૂયા સપેસિયા, તેણ
 મળ અસત્કારિયા જાવ નિચ્છુટ્ટા, તણ તે જિયસત્તૂ પામોખલા તેસિં દૂયાણ અતિણ
 એમદ્દ સોચ્ચા પરિકુવિયા સમાણા મિહિલ રાયદાર્ણિ નિસ્મચાર જાવ ચિદ્ધતિ)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण 'निच्छृढा' निक्षिप्ताः-निःसारिताः । तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुपिया' परिकुपिताः = अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्त, मिथिला राजधानी निःसचार यावत्-निरुच्चारः=सर्वतः समन्ताद्वरु य 'चिद्वृत्ति' तिष्ठन्ति । ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि! तेषा जितशत्रु प्रमुखानां पण्णा राज्ञा अन्तराणि ४ अलभमानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिक्यादिदुर्दिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपाय वा अलभमान अपद्वतमनः सरूपः सन् 'क्षियामि' ध्यायामि=भार्तध्यान करोमि ।

सबन्ध जोड़ने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतों से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए । और इसी लीये उन्होंने ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है । जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नहीं आनी जाती है । (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामो-क्खाण छण्ह राईण अतराणि ४ अलभमाण जाव क्षियामि) इसलिये हे पुत्रि ! मैं अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

हे पुत्रि ! जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओंके तभारी साथे लग्न करवाना विचारथी भारी पासे हूवे। नोऽवस्था हुता।

मे तेभना प्रस्तावने स्वीकार्यो नहिं अने तेभना हूतोना अनादर अने असमान करीने भइलना पाछणना नाना पारखेथी तेओने पहार कड़ावी भूक्या पोताना हूतानी पासेथी आ पधी विगत नखीने जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ भूमज शुभसे थया, अने हवे तेओओ मिथिला नगरीने यादे पानुथी घेरी लीधी छे तेना परिष्ठाये दोडोनी अवर जवर पध थई गछ छे कोरपणु कारखसर बाजे पहार जछ शकता नवी ओवी लयकर परिस्थिति जेषी थऽ छे (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण उण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव क्षियामि)

ओटला भाटे हे पुत्रि ! हल सुधी पणु हुं जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओंना अन्तर वगेरेने ओटले के अवसर वगेरेनी लागभा रह्यो पणु भने

મહ્લી વિદેહરાજયરકન્યા કુમ્મરુ રાજાનમેવ=રૂપમાગમત્તારેજ, અગ્રીત્-હે તાત !
 યુવ સ્વલુ અન્યદા=અન્યસ્મિન્ સમયે મામ્ ' ઇજ્જમાણ ' ઇજ્જમાનામ્ આગચ્છન્તી
 યાવત્-દૃષ્ટ્વા, આદિગમે, પરિજાનીય, ઉત્સદ્ધે ' નિવેસેહ ' નિવેગયય, કિં=કેવ
 કારણેન સ્વલુ યુવમધોપહતમનઃ સકલ્પો યાવત્-ધ્યાયય=આર્તિયાન કુરુય ? તત્
 =મહ્લીવચનશ્રવણાનન્તર કુમ્મરો રાજા મહ્લી વિદેહરાજયરકન્યામેવમગ્રાદીત્-
 હે પુત્રિ ! એવ સ્વલુ તત્ કાર્યે પ્રિયારૂપ કાર્ય નિમિત્તીકૃત્યેર્થ, જિતશત્રુમણ્વલૈઃ
 પદ્મીરાજભિદ્તાઃ સપેપિતા, તે સ્વલુ મયા ' અમરારિયા ' અમરકૃતાઃ=મનાદતા

કો દેવકર ઉસ વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારી ને ઉન સં પૂઝા-(તુભે
 ન તાઓ અળ્ળયા મમ ઇજ્જમાણ જાવ નિવેસેહ, કિળ્ળ તુભ અજ્જે
 ઓહયમળસકપ્પે જાવ શિયાયહ) હે તાત ! પહિલે જય કમ્મી આપ મુક્કે
 આતી હુઈ દેવલે થે તો ઉસ સમય મેરા આદર કરતે થે-મુક્કે જાનહેતે
 થે, ઓર અપની ગોદ મેં બેઠા લેતે થે-પરન્તુ આજ ત્યા કારણ હૈ જો
 આપ અપહતમનઃ સકલ્પ હોકર ચિન્તાગ્રસ્ત બેઠે હુળ હૈ

(તળ્ળ કુમળ મલ્લિ વિદેહરાયરકન્ન એવ વયાસી) ઇમ પ્રકાર
 સુન કર રાજાને અપની ત્રિદેહ રાજવર કન્યા મહ્લીકુમારી સે કહા -
 (એવ સ્વલુપુત્તા । તત્ કજ્જે જિય સત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈ હિં દ્યા સપે
 સિયા તેળ મળ અસક્કારિયા જાવ નિચ્છુડા, તળ્ળ તે જિયસત્તૂ પામો
 કલા તેસિં દ્યાળ અતિળ્ળ એમદ્ધ સોચ્ચા પરિકુવિયા- સમાળા મિહિલ
 રાયદાર્ણિ નિસ્મચાર જાવ ચિદ્ધતિ) હે પુત્રિ ! તુમ્હારે સાથ વૈવાહિક

(તુભે ન તાઓ અળ્ળયા મમ ઇજ્જમાણ જાવ નિવેસેહ કિળ્ળ તુભ અજ્જે
 ઓહયમળ સકપ્પે જાવ શિયાયહ

હે પિતા ! પહેલા ગમે ત્યારે મને આવતી લેતા ત્યારે મારા તમે
 આદર કરતા હતા, મને બાણી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામાં બેસા
 હતા હતા પછી આજે શુ કારણ છે કે તમે ઉભસ થઈને આર્તધ્યાનમાં બેઠા છો
 (તળ્ળ કુમળમલ્લિ વિદેહરાયરકન્ન એવ વયાસી) આ રીતે રાજાએ વિદેહ
 રાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે—

(એવ સ્વલુ પુત્તા તત્ કજ્જે જિયમત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈહિં દ્યા સપેસિયા, તેળ
 મળ અસક્કારિયા જાવ નિચ્છુડા, તળ્ળ તે જિયસત્તૂ પામો કલા તેસિં દ્યાળ અતિળ્ળ
 એમદ્ધ સોચ્ચા પરિકુવિયા સમાળા મિહિલ રાયદાર્ણિ નિસ્મચાર જાવ ચિદ્ધતિ)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण ' निच्छ्रद्धा ' निक्षिप्ताः-निः सारिताः । तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखस्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा ' परिकुपिया ' परिकुपिताः = अतिशयेन क्रोधाविष्टाः ' समाणा ' सन्त, मिथिला राजधानी नि सचार यावत्-निरुच्चार=सर्वतः समन्तादवरु य ' चिद्वृत्ति ' तिष्ठन्ति । ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि! तेषा जितशत्रु प्रमुखाणा पण्णा राज्ञा अन्तराणि ४ अलभमानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिकयादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपाय वा अलभमान अपहतमनः सकल्पः सन् ' क्षियामि ' ध्यायामि=मार्त-यान करोमि ।

सब-ध जोड़ने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे ,

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतों से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए । और इसी लीये उन्होंने ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है । जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नहीं आती जाती है । (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसन्नु पामो-क्खाण छण्ह राईण अतराणि ४ अलभमाण जाव क्षियामि) इसलिये हे पुत्रि ! मैं अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

हे पुत्रि ! जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओओ तमारी साथै लगन दरवाना विचारथी भारी पासे हूतो नोकड्या हुता

मे तेमना प्रस्तावने स्वीकार्यो नहिं अने तेमना हूतोना अनादर अने असमान करीने भडेखना पाठणना नाना पारखेथी तेओने पहार कडावी भूक्या पोताना हूतोनी पासेथी आ गधी विगत बखीने एतशत्रु प्रमुख छहो राजाओ भूम ज श्रुसे थया, अने हुवे तेओओ मिथिला नगरीने आरे जानुथी घेरी लीधी छे तेना परिखाओ लोकोनी अवर जवर भध थई गध छे कोरपिण्डु कारणसर लोको पहार जध शजता नयी ओवी लयकर परिस्थिति बली थज छे (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसन्नु पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव क्षियामि)

ओटला भाटे हे पुत्रि ! हल सुधी पण्डु हु एतशत्रु प्रमुख छहो राजाओना अन्तर वगेरेने ओटले के अवसर वगेरेनी लागभा रह्यो पण्डु भने

તતસ્તદનન્તરં ચ્વલુ સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્યા કુમ્ભક રાજાનમ્ એવ-
 વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અગ્રાદીત્-હે તાત ! ગુપ્ત ચ્વલુ મા અપહતમન સકલ્પો યાવત્-
 ધ્યાયથ, હે તાત ! ગુપ્ત ચ્વલુ તેષાં જિતશત્રુપશ્ચગ્માણા પળ્યા રાજા પ્રત્યેકં રહસિ
 દૂતસપ્રેષણ કુરુત, એક પ્રત્યેય વદત- ' તા=તુભ્ય દાસ્યામિ મટ્ટીં વિદેહરાજસ
 કન્યામ્ ' ઇતિ કૃત્વા=ઇત્યુત્ત્વા, સન્યાકાલસમયે - સૂર્યસ્તગતેસતિ ' પવિર-
 મણસસિ ' પ્રવિરલમનુષ્યે-માર્ગાદી વચ્ચિદ્ વચિદ્ પ્રવિરલા અત્પા મનુષ્યા વચ
 સ તથા ઘસ્મિન્, રાત્રિસદ્ભાવે સતોત્યર્થ તથા નિશાન્તે=વનઠલઠલે ધનિવર્જિતે,

કોઈં ખી છિદ્ર આદિ નહીં મિલ રતા હૈં । મૈને અનેક વિધ ઉપાયોં સે
 ઉન્હેં પરાસ્ત કરને કા વિચાર ખી કિયા-ઔત્પત્તિ કી આદિ બુદ્ધિયોં સે
 સચિવોં કે સાથ ઉન્હેં વશ કરને કી મત્રણા મી કી પરન્તુ સુદ્ધે કહ ખી
 ઉપાય હન્હેં વશ યાં પરાસ્ત કરને કા નજર નહીં આ રહા હૈ-અનઃ
 અપહતમનઃ સકલ્પ ચાલા ઘના હુઆ મેં હમ સમય ચિન્તાગ્રસ્ત હો
 રહા હૈં । (તણ સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના કુમય રાય એવ વયાસી)
 હમ પ્રકાર અપને પિતા કુમ્ભક રાજા કી વાત સુનકર ઉસ વિદેહરાજ
 વર કન્યા ને ઉન સે કહા - (માળ તુભે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા
 જાવં જિયાયહ) હે તાત ! આપ અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર યાવત્
 ચિન્તિત ન વને મેં હસ વિષયમેં આપકો ઉપાય યતલાતી હૈં (તુભેળ
 તાઓ તેસિં જિય સત્તૂ પામાકલાળ છળહરાયાળ પત્તેય રહસિય દૂય
 સંપેસે કરેહ) હે પિતાજી ! વહ ઉપાય યહ હૈં કિં આપ ઉન જિતશત્રુ
 પ્રમુખ રાજાઓ મેં સે પ્રત્યેક રાજા કે પાસ ઇકાન્ત મેં અવના દૂત

અત્યાર સુધી તેમનુ એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની બાજુ થઇ શકી નહિ ધણા
 ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મેં કયાં છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે
 બુદ્ધિઓથી મત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન
 બનાવવા કે હરાવવા માટેનો ડોઢ એક પણ ઉપાય બજાતો નથી એથી
 અપહતમન સકલ્પવાળો હું આર્તધ્યાનમા તલલીન થઇને બેઠો છું (તણ
 સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના કુમય રાય એવ વયાસી) આ રીતે પોતાના
 પિતા કુમ્ભક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને બધું કે-
 (માળ તુભે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા જાવં જિયાયહ) હે તાત ! અત્યારે
 તમે ચિન્તામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવુ છું
 (તુભેળ તાઓ તેસિં જિયસત્તૂ પામાકલાળ છળહરાયાળ પત્તેય રહસિય
 દૂયસ પેસે કરેહ) હે પિતા ! તમે જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાથી દરેક રાજાની
 પાસે એકાતમા પોતાનો દૂત મોકલો

प्रति निशान्ते जनानां निद्रोपगतत्वेन सर्वथा जनध्वनिमचाररहिते यस्मिन् काले कोऽपि मार्गे दूत न पश्येदिति भावः, प्रत्येक मिथिला राजधानीमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य गर्भगृहेषु अभ्यन्तरवर्तिमवनेषु अनुप्रवेशयत, ततो मिथिलाया राजधान्या द्वाराणि पिधत्, जाच्छादयत पिधोय रोहसज्जः—रोपेन प्रतिरोपेनाऽऽत्मरक्षा कुर्वन् तिष्ठत । ततः—मल्लीनाक्यश्रवणानन्तर सखु कुम्भको राजा मल्ल्या

भेजिये (एगमेग एव बदह—तब देभि मल्लि विदेहरायवरकण्ण च्चिरुदु सञ्जाकालसमयसि पचिरलमणूससि निसतसि पडि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह) वह दूत जाकर उन प्रत्येक से ऐसा—कहे कि हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी तुम्हें देंगे । ऐसा कहकर (दूतो से कहलवा कर) फिर उन राजाओं में से प्रत्येक राजा को आप ऐसे सध्याकाल के समय में—जब कि सूर्य बिलकुल अस्त हो गया हो—रात्रि का समय आ गया—हो मार्ग में भी कहीं कहीं पर ही थोड़े से मनुष्य का संचार हो रहा हो—मकान भी मनुष्यों की कल कल ध्वनि से रहित हो चुके हो—सबों के निद्राधीन बन जाने से जिन में से जन ध्वनि बिलकुल ही नहीं प्रकट हो रही हो अपनी मिथिला नगरी में बुलवाई ये—उन्हें प्रवेश कराईये (अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहेह पिहित्ता रोहसज्जे च्चिदुह तण्ण कुम्भए एवत चेव जाव पवे सेह, रोहसज्जे च्चिदुह) प्रवेश करावा कर उन्हें आप गर्भ गृहों में—ठहरा दीजिये ।

(एगमेग एव बदह तब देभि मल्लि विदेहरायवरकण्ण च्चिरुदु सञ्जाकाल समयसि पचिरलमणूससि निसतसि पडिनिसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह)

ते दूत तेमनी पासे जधने दरेडने आ प्रभाछे कडे के अभासी कन्या विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमने आपीशु आ प्रभाछे हत वडे दरेकनी पासे सदेश भोक्खीने ते सल्लोभाधी दरेकने तमे सध्याकाणना समये ज्यारे सुरज भरोपर अस्त थर गये। होय रात्रिने वणत थर गर होय, मार्गमा भहु ज थोडा भाणुसेानी अवज जवर थवा भाडी होय, भाणुसेना घोघाटथी धरो पणु ज्यारे सात थर गया होय त्यारे मिथिला नगरीमा ओलावे।

(अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहित्ता रोहसज्जे च्चिदुह तण्ण कुम्भए एव० त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे च्चिदुह) ओलावीने तेज्याने तमे गल गूढोमा रेडो।

તતસ્તદનન્તરં ચ્ચ લુ સા મલ્લી વિદેહરાયવરચન્યા કુમ્ભક રાજાનમ્ એવ-
વશ્યમાણપ્રકારેણ, અનાદીત્-હ તાત ! યુય ચ્ચ લુ મા અપહતમન સકલ્પો યાવત્-
ધ્યાયથ, હે તાત ! યુય ચ્ચ લુ તેષાં જિતશત્રુપશુગ્ધાણાં પળ્લા રાજા પ્રત્યેકં શક્તિ
દૂતસપ્રેષણ કુરુત, એકેક પ્રત્યેય યદત- ' તા=નુમ્ય દાસ્યામિ મર્ટીં વિદેહરાજસ
કન્યામ્ ' इति कृत्या=इत्युक्त्या, सन्याकाउसमये - शूर्येऽस्तगतेसति ' पवित्र-
मणूससि ' पवित्रमनुष्ये-मार्गादी ययचिद् ययचिद् प्रशिरला अल्पा मनुष्या यय
स तथा तस्मिन्, रात्रिसद्भावे सतोत्यर्थे तथा निशान्ते=जनकउरुले धनिवर्जिते.

કોઈ બી હિંદ્ર આદિ નહોં મિલ રહા હૈં । મૈને અનેક વિધ ઉપાયોં સે
ઉન્હેં પરાસ્ત કરને કા વિચાર બી ક્રિયા-ઔત્પત્તિ કી આદિ બુદ્ધિયોં સે
સચિવોં કે સાથ ઉન્હેં વઝા કરને કી મત્રણા બી કી પરન્તુ મુઝે કછ બી
ઉપાય હન્હે વઝા થો પરાસ્ત કરને કા નજર નહીં આ રહા હૈ-અતઃ
અપહતમનઃ સકલ્પ ચાલા ઘના હુઆ મૈં હસ સમય ચિન્તાગ્રસ્ત હો
રહા હૈં । (તદ્દણ સા મલ્લી વિદેહરાયવરચન્યા કુમ્ભ રાય એવ વયાસી)
હમ પ્રકાર અપને પિતા કુમ્ભક રાજા કી ઘાત સુનકર ઉસ વિદેહરાજ
વર કન્યા ને ઉન સે કહા - (માળ તુમ્હે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા
જાવ ઝિયાયહ) હે તાત ! આપ અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર યાવત્
ચિન્તિત ન થને મૈં હસ વિષયમેં આપકો ઉપાય વતલાતી હૈં (તુમ્હેળ
તાઓ તેસિં જિય સત્ પામોચ્છાળ છળ્હરાયાળ પત્તેય રહસિય દૂય
સપેસે કરેહ) હે પિતાજી ! વહ ઉપાય યહ હૈં કિ આપ ઉન જિતશત્રુ
પ્રમુખ રાજાઓ મૈં સે પ્રત્યેક રાજા કે પાસ એકાન્ત મૈં અપના દૂત

અત્યાર સુધી તેમનું એક પણ હિંદ્ર (ખામી) ની જાણ થઈ શકી નહિ થઈ
ઉપાયથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મેં કર્યા છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે
બુદ્ધિઓથી મત્રીઓની માથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન
બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી એથી
અપહતમન સંકલ્પવાળો હું આત્મધ્યાનમાં તાલીન થઈને બેઠો છું (તદ્દણ
સા મલ્લી વિદેહરાયવરચન્યા કુમ્ભ રાય એવ વયાસી) આ રીતે પોતાના
પિતા કુમ્ભક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યું કે-
(માળ તુમ્હે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા જાવ ઝિયાયહ) હે તાત ! અત્યારે
તમે ચિંતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવું છું
(તુમ્હેળ તાઓ તેસિં જિયસત્ પામોચ્છાળ છળ્હરાયાળ પત્તેય રહસિય
દૂયસપેસે કરેહ) હે પિતા ! તમે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાંથી દરેક રાજાની
પાસે એકાન્તમાં પોતાનો દૂત મોકલો

भूषा समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइ पिहेति, पिहित्ता
परम्मुहा चिट्ठति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियस-
त्तूपामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुब्भ देवाणुप्पिया । सएहिं २
उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपा-
मोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयति—एवं खलु देवाणु-
प्पिए । अम्हे इमेणं असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा सएहिं २
जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं
वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया । इमीसे कणग० जाव पडिमाए
कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ
एगमेगे पिंडे पविक्खप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोगलपरिणामे
इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स
पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरू-
वमुत्तपूइयपुरिसपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए
परिणामे भविस्सइ ?, तं मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । माणुस्स
एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्जह मुज्जह अज्जोववज्जह,
एव खलु देवाणुप्पिया । तुरहे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे
अवरविदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए
महव्वलपामोक्खा सत्तवि य वालवयसया रायाणो होत्था, सह-
जाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण कार-
णेण इत्थीन्नामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भ चोत्थं उव-
सपज्जित्ताण विहरइ, तएण अह छट्ठ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि.

विदेहराजवरकन्याया एवम्=उक्तप्रकारेणोक्त सन् तदेव=तथैव कृत्वा यावत्-
जितशत्रुप्रमुखान् पठपि रावः प्रवेशयति, प्रवेश्य रोषसज्जस्तिष्ठति ॥मृ० ३४॥

मूलम्-तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छापियरायाणो कळं
पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए जालंतरेहिं कणगमय
मत्थयाछिहु पउमुप्पलपिहाण पडिमं पासइ, एसण मल्ली विदे-
हरायवरकणणत्तिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे
य लावण्णे य मुच्छिया गिन्हा गढिया अज्झोववण्णा अणि
मिसाए दिट्ठीए पेहमाणार चिट्ठति ।

तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव सव्वा-
लकारविभूमिया बहूहि खुज्जाहिं जाव परिविखत्ता जेणेव जाल-
घरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ त पउम उवणेइ, तएण गंधे
णिच्चावइ, से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए
चेव । तएण ते जियसत्तूपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभि-

बाद में मिलिला राजधानी के द्वारों को बन्द करवा दीजिये । इस
प्रकार उन्हें यहा रोक कर आप अपनी आत्मरक्षा करिये । मल्ली कुमारी
के इन वचनों को सुनने के बाद कुम्भक राजा ने विदेह राजवर कन्या
उस अपनी पुत्री मल्लीकुमारी के कहे अनुसार वैसा ही किया । अर्थात्
दूतों द्वारा उन सध को अपने यहाँ बुलवा लिया एव उन्हें तल घरों में
ठहरा दिया । सूत्र “ ३४ ”

त्यार पढी मिलिला राजधानीना दरवाज्जो बध करावडावी हो, आ
रीते तेज्जोने अही बध करीने तमे आत्मरक्षा करे । विदेहराजवर कन्या
मल्लीकुमारीना वचनो साभगीने कुलक राज्जो तेज्जोने कहु ते सुख भू कहु
अट्ठे के इतो पडे तेज्जो बधाने पोताने त्या गोवावी दीधा अने गर्भशुद्धोभा
तेज्जोने रोक दीधा ॥ सूत्र “ ३४ ” ॥

भूषा समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठति, तएणंसा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियस-
तूप्पामोक्खे एवं वयासी-किण्णं तुव्वं देवाणुप्पिया । सएहिं २
उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह १, तएणं ते जियसतूपा-
मोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयति-एव खलु देवाणु-
प्पिए । अम्हे इमेणं असुभेणं गघेणं अभिभूया समाणा सएहिं २
जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसतूप्पामोक्खे एवं
वयासी-जइ ता देवाणुप्पिया । इमीसे कणग० जाव पडिमाए
कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ
एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे
इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासव्वस्स
पित्तासवस्स सुक्खसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरू-
वमुत्तपूइयपुरिसपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए
परिणाने भविस्सइ १, त मा ण तुव्वं देवाणुप्पिया । माणुस्स
एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्जह मुज्जह अज्झोववज्जह,
एव खलु देवाणुप्पिया । तुग्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे
अवरविदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए
महव्वलपामोक्खा सत्तवि य वालवयसया रायाणो होत्था, सह-
जाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण कार-
णेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुव्वं चोत्थं उव-
सपज्जित्ताण विहरइ. तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि.

सेसं तहेव सव्व, तएण तुव्वे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं
किञ्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुव्वे देसूणाइं वत्ती-
साइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुव्वं ताओ देवलोयाओ अणंतरे
अयं अइत्ता इहेव जंव्वीवेरजावसाइंर रज्जाइ उवसपज्जित्ताणं
विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ
अखएणं जाव दारियत्ताए पञ्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्टु जं थ तया भो जयत पवरामि ।

बुत्था समयं निवद्ध देवा ! तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः
यद्यपि राजानं कल्ये—द्वितीयदिवसे ‘पाउप्पभायाए’ प्रादुः प्रभाताया=प्रादुर्भूतः
सजातः, प्रभातः—प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसानं प्राप्ता
यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, ‘जलते सूरिए’ ज्वलति—उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता
मस्तकछिद्रा—मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ‘पउमुप्पलपिहाण’ पद्मोत्पलपिधाना=
छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्ता, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ‘एपा—राख
मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते’ इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्ल्या विदेहराजवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो
कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख उहाँ
राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय
अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से
(कणगमय मत्थयछिइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय
वस्तु प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्यागनाह (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल
पाउप्पमयाए रयणीए जलते सूरिए) ते जितशत्रु प्रमुख छोटे राजाओंके पीछे
दिवसे न्याये रात पूरी થઈ અને સૂરજ ઉદય પામ્યો ત્યારે (જાલ તરેહિ)
બારીઓના કાણાઓમાંથી (કણગમય મત્થયછિइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम
पासइ) जेना भाथाभा काण्ड छेत्तु तेवी सोनानी प्रातकृति (भूति) ने जेध
(एसणं मल्ली विदेहराजवरकण्णत्तिकइइ मल्लीए) रुवे य

कन्याया रूपे=मनोहाराकारे च यौवने वयसि लावण्ये-यौवनवयोजनितकान्ति
विशेषे च मूर्च्छिता-रूपयौवनलावण्यदर्शनेन मोहिताः, ' गिद्धा ' गृद्धाः=लोलुपाः,
' गदिया ' ग्रथिताः=निगूढचित्ता, अभ्युपपन्ना=अत्यन्तासक्ताः अनिमेपया निमेप-
पातरहितया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा २ अनुक्षण पुनः पुनर्विलोकयन्तस्तिष्ठन्ति स्म ।

ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावत्-सर्वालकार-
विभूषिता बह्विभिः कुब्जिकाभि र्यावत्-दासीभिः ' परिक्रित्ता ' परिक्षिप्ता=
परिवेष्टिता यत्रैव जालगृह गमाक्षयुक्त गृह, यत्रैव कनकप्रतिमा=स्वकीया सुवर्ण-

का पद्मोत्पल से ढका हुआ था देखा (एमण मल्ली विदेह रायवर कण्ण
स्ति कट्टु मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए रुवे य जोव्वणे य लावण्णे य मु-
च्छिया गिद्धा गदिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठए पेहमाणा २ चिट्ठति

देख कर अरे ! यह तो विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी हैं, ऐसा
जान कर वे सब उस विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी के रूप यौवन
एव लावण्य पर मूर्च्छित हो गये-मोहित हो गये, लोलुप हो गये । उन
में उन का चित्त बर गया । इस तरह अत्यन्त आसक्त होकर वे सब
के सब अनिमेप दृष्टि से बार २ उस की तरफ देखते रहे । (तएण
सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सञ्चालकारविभूसिया बह्वहिं
खुज्जाहिं जाव परिक्रित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिम तेणेव
उवागच्छइ) इस के पश्चात् विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी स्नान
आदि कर के समस्त अलंकारों से विभूषित शरीर हो अनेक कुब्जक
संस्थान वाली दामियों के साथ २ जहां वह जाल गृह और उस में भी

जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गदिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए-दिट्ठिए
पेहमाणा २ चिट्ठति)

नेधने " अरे आ तो विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी न छे " आभ
नल्लोने तेज्जे ण्धा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीना इप यौवन अने लाव
ण्यना प्रभावथी मूर्छित थय गया भेडित थय गया लोलुप थय गया तेमां
तेमनु चित्त बोटी गयु आ गीते भूण्ण आसक्ताथधने तेज्जे ण्धा बार बार
तेनी तरङ्ग नेत्ता रह्या

(तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सञ्चालकारविभूसिया बह्वहिं खु-
ज्जाहिं जाव परिक्रित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिम तेणेव उवागच्छइ)

सेसं तहेव सव्व, तएण तुव्वमे देवाणुप्पिया ! कालमासे काले
किञ्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुव्वमे देसूणाइं वत्ती-
साइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुव्वम ताओ देवलोयाओ अणंतरं
चयं चइत्ता इहेव जव्वदीवेरजावसाइंर रज्जाइ उवसपज्जित्ताणं
विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ-
क्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्टं ज थ तया भो जयत पवरामि ।

बुत्था समयं निवद्धं देवा । तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः
यद्यपि राजान कल्ये—द्वितीयदिवसे ‘पाउप्पभायाए’ प्रादुः प्रमाताया=प्रादुर्भूतः
सजातः, प्रमातः—प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रमाता तस्याम् अवसानं प्राप्ता
यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, ‘जलते सूरिए’ ज्वलति—उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता
मस्तकछिद्रा—मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ‘पउमुप्पलपिहाण’ पद्मोत्पलपिधानां=
छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ‘एपा—खलु
मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते’ इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्लया विदेहराजवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो
कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छोहों
राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय
अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से
(कणगमय मत्थयछिइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय
उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्या०भा० (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) ते एतशत्रु प्रमु० छ० रा०रा०रा० पी०
दिवसे न्या० रा० पूरी थ० अने सूर० उ०य पा०रा० त्या० (जाल तरेहिं)
पारीओना काष्ठाओभायी (कणगमय मत्थयछिइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम
पासइ) जेना भाथाभा काष्ठा उ०तु तेवी सोनानी प्रा०कृति (भूति) ने जेध

(एसणं मल्ली विदेहराजवरकणात्तिकइइ मल्लीए)

स्वे य

ततस्तदन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखात् राश
एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत् हे देवानुप्रियाः ! मि=केन कारणेन खलु यूय
स्वकैरुत्तरीयै यावत्-नासिका पिपाय पराङ्मुखास्तिष्ठथ ? ततः खलु ते जितश-
त्रुप्रमुखाऽऽ मल्ली विदेहराजवरकन्याम्, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति-हे देवानु-
प्रिये ! एव खलु वयमनेनाशुभेन-अनिष्टतरेण दुरभिगा गन्धेन, अभिभूताः सन्तः
स्वकैः २ यावत्-उत्तरीयैः स्व स्व नासिका पिपाय पराङ्मुखाः, 'विद्वामो'
तिष्ठामः=स्थिताः स्मः ।

(पिहित्ता परम्मुहा चिद्वति' तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्या ते
जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी) और दूसरी तरफ मुग्व करके बैठ
गये । जब मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या ने उन्हें इस प्रकार देखा
तो वह बोली- (क्रिण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं
जाव परम्मुहा चिद्वह तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली विदेह रायवर
कन्न एव वयति) हे देवानु प्रियो ! आप लोग क्यों अपने अपने उत्त
रीय वस्त्रों से अपनी २ नाक को ढक कर और पुतली की और से
मुँह फेरकर बैठ गये हैं । मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या की इस
प्रकार बात सुन कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उससे ऐसा कहा

(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गंधेण अभिभूया
समाणा सएहिं २ जाव चिद्वामो) हे देवानुप्रिये ! हमलोगो से यह
अशुभ गंध सहन नहीं हो रही है अतः हम लोग अपने २ उत्तरीय

(पिहित्ता परम्मुहा चिद्वति तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्या त जियसत्तू
पामोक्खे एव वयासी)

अने तेज्जो भवा भो देरीने जेसी गया अन्यारे विदेहराजवर कन्या
भन्दीकुमारी तेज्जोने आ प्रमाखे करता जेया त्यारे तेखे ढधु—

(क्रिण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिद्वह
तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एव वयति)

हे देवानुप्रिये ! तबे बोले जा करण्णुथी पोतानु नाव उत्तरीयपञ्चना छेडाधी
दाधीने प्रतिमाना तरङ्गथी भो देखा जेसी गया छो?

विदेहराजवर कन्या भन्दीकुमारीनी आ बात स भणीने एतशत्रु प्रमुख
छठे राजाओंसे तेने कहु—

(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा
सएहिं २ जाव चिद्वामो)

मयी प्रतिकृतिः, तत्रैरोपागच्छति, उपागत्य तस्याः कनकरूपप्रतिमायाः मस्तकात्
तत्-पिधानरूप पद्मम् 'अवणेइ' अपनयति=दूरीकरोति, पद्मापसारणेन कनकमय
प्रतिकृतेर्मस्तकोपरिस्थितरत्नप्रमुद्रादयतीत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु गन्धः=दूर
भिगन्धः, 'णिद्धावइ' निर्घावति=शीघ्रं वह्निर्निःसरति, तद् यथा नामकम्-
तथाहि-यथा-'अहिमडेति या' अहिमृतक इति या मृतमर्षस्य तीव्रदुर्गन्धः प्रसरति,
तद्वदित्यर्थः, स यावत्-गोमृतकइव, श्वमृतकइवेत्यादिगोधूमम् 'एत्तोत्रि'=
एतस्मादपिदुर्गन्धात् अशुभतर एवं-न्यन्तं मनो प्रिकृतिवनकस्तीव्रतरो दुःसहश्चैव
वर्त्तते । तत् खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेनाशुमेन गन्धेनाभिभूताः सन्त स्वैस्त्वकै-
रुत्तरीयैः उत्तरीयभूतैः, 'णासाइ' नासिकाः पिदधति=आच्छादयति पिधाय
'परम्मुहा' पराङ्मुखाः परान्वितमुखास्तिष्ठन्तिस्म ।

जहा वह सुवर्णमयी प्रतिमा थी वहा आई । (उवागच्छिता तीसे कणग
पडिमाण मत्थयाओ त पउम अवणेइ) वहा आकर के उस ने उस
कनक मय पुतली के मस्तक से उस कमल को हटाया (तएण गधे
णिद्धावइ) ढक्कन के हटते ही उस में से बहुत भारी दुर्गन्ध निकली
(से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चैव) वह दुर्गन्ध ऐसी
अशुभतर थी कि जैसी मरे हुए सर्प के सड़े शरीर की होती है-तथा
गोमृतक एवं श्वमृतक, की होती है । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा
तेण असुमेण गधेण अभिभूया समाणा सएहि २ उत्तरिज्जेहिं णासाइ
पिहेति) उस दुर्गन्ध के निकलते ही उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं
ने अपने २ उत्तरीय वस्त्राचलों से अपनी २ नाक को ढक लिया ।

(भूर्ति) डंती त्या गर्ध (उवागच्छिता तीसे कणगपडिमाण मत्थयाओ त पउम)
अवणेइ) त्या आवीने तेहे ते सोनानी भ्रिन्निमापइ रडेहु सोनाना कमणवाणु
ढाकलु उधाडु (तएण गधे णिद्धावइ) ढाकलु इर थता ज तेमाथी अत्यंत
भराव दुर्गन्ध नीकणवा लागी से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चैव)
ते दुर्गन्ध जोटली भराव डंती के भरेला सापना सडी गयेला शरीरनी तेभज
गोमृतक अने श्वमृतकनी होय छे

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा तेण असुमेण गधेण अभिभूया समाणा सए
हिं २ उत्तरिज्जेहिं णासाइ पिहेति)

दुर्गन्ध भंडार आवतानी साथे ज लुतशत्रु प्रमुख छहों राजाओंके
पोताना उत्तरीयवस्त्रना छेकाथी पोतपोतानु नाक ढाकी दीध

વાયોર્નિર્ગમનં નિઃ શ્વાસઃ તૌ દૂરૂપાવનિષ્ટૌ યસ્ય સ તથા, તસ્ય દૂરૂપમૂત્રપૂતિ-
કંપુરીપ પૂર્ણસ્ય=દૂરૂપેણ પૂતિકેન અનિષ્ટગન્ધવતા પુરીપેણ પૂર્ણસ્ય, તથા તત્ર-
શટનપટનવિધ્વંસનધર્મસ્ય=શટન-કુષ્ઠાદિરોગાકુલ્યાદેઃ પતનં ઝવરાદિના શૈથિલ્ય,
વિધ્વંસન=નાશઃ એતે શટનાદયો ધર્માઃ સ્વભાવા યસ્ય સ તસ્ય, કીદૃશ પરિણામો
ભવિષ્યતિ? અંશનાદ્યાહારાદુધૃતસ્યૈકેઋગ્રાસસ્ય પ્રતિદિવમ પ્રતિકૃતૌ પ્રક્ષિપ્તસ્ય યદિ

પુરિસ પુણસ્ત સ્મૃણ પઢણ વિદ્વસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિ-
સ્સઃ) હસ ઔદારિક શરીર કા પુદ્ગલ પરિણમન ઉસકી અપેક્ષા ભી
અધિકતર અનિષ્ટ દુર્ગંધ વાલા નહીં હોગા કયા ? અવશ્ય હોગા-કયોંકી
યહ કફ કા આશ્રય ભૂત હૈ । સમય ૨ પર હસસે વમન કા નિસ્સરણ
હોતા રહતા હૈ । પિત્ત ભી હસ સે નિકલતા રહતા હૈ । છુક, શોણિત,
એવ પીવ હસ મેં બાહિર બહતા હૈ । હસકા જો શ્વાસ ઓર ઉચ્છ્વાસ હૈ
વે મહા દુરૂપ-અનિષ્ટતર હૈ । યહ દુરૂપ મૂત્ર એવ અનિષ્ટ ગંધ વાલે મેલ
સે સદા ભરા રહતા હૈ । યહ શટન, પટન, તથા વિધ્વંસન ધર્મ વાલા હૈ ।
કુષ્ઠાદિ રોગ દ્વારા જો હસ કે અગુલિ આદિ અવગેવ ગિર જાતે હૈ ઉસ
કા નામ શટન હૈ । ઝવરાદિ અવસ્થા સે જો હસમેં શિથિલતા આ જાતી
હૈ ઉસ કા નામ પટન હૈ । નાશ હોને કા નામ વિધ્વંસન હૈ । કારણ
હસ કા હસ પ્રકાર હૈ કિ અંશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉત્પન્ન હુએ
એક ૨ ગ્રાસ કા જો પ્રતિદિન હસ પ્રતિકૃતિ મેં પ્રક્ષિપ્ત કિયા જાના હૈ

(હમસ્ત પુણ ઓરાલિય સરીરસ્ત લેલાસવસ્ત વ્તાસવસ્ત પિત્તાસવસ્ત છુક
સોણિય પૂયાસવસ્ત દુરૂવ ઉતાસનીસાસસ્ત દુરૂવમુત્ર પૂડયપુરિસ પુણસ્ત સ્મૃણ
પઢણ વિદ્વસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિસ્સઃ)

આ ઔદારિક શરીરનુ પુદ્ગલ પરિણમન તેના ઢરતા પણ વધુ અનિષ્ટ
દુર્ગંધવાળુ થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કંદુ આશ્રય છે આમાથી
વારવાર વમનનુ નિસ્સરણ થતુ રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતુ રહે છે
છુક, શોણિત (લોહી) અને ૫૩ આમાથી બહાર વહેતુ રહે છે આમાથી
એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને
અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હંમેશા ભરાએલુ રહે છે આ શરીર શટન, પટન,
તેમજ વિધ્વંસન ધર્મવાળુ છે કોઈ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળાંચો
વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનુ નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમા જે
શિથિલતા આવે છે તેને પટન કહેવાય છે નારા થવું તે વિધ્વંસન કહેવાય
છે આનુ કારણ બતાવવામા આવેલો કોળિયો જે એક એક કરીને દરેકને
આ પૂતળીમા નાખવામા આવ્યો છે તે બ્યારે આર્બુ તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

તતસ્તદનન્તર તેર્પા રાજાં વચન શ્રુત્વા સહ મલ્લો વિદેહરાજવરકન્યા તાન્
 જિતશત્રુપ્રમુખાન્ રાજ્ઞઃ પ્રત્યેવમગદીત્-હે દેવાનુપ્રિયા ! યદિ તાવત્ અસ્યાં કનક
 મય્યા યાનત્-પતિમાયા 'કલ્લાકર્લિલ' વલ્યાકન્યે=પતિદિવસ તસ્માદ્ મનોહ્રાદ્
 અશનપાનલાઘસ્યાઘાત્=ચતુર્વિધાઽઽહારાદ્ એકૈઃ પિઠઃ=ગ્રાસઃ પ્રશ્નિષ્પમાણઃ
 અપમેતદ્રૂપઃ=મનોવિકૃતિફારકસ્તીવ્રતરો દુઃસહો દુર્ગન્ધઃ, અશુભઃ=અનિષ્ટતરઃ
 પુદ્ગલપરિણામો જાત, તર્હિ પુનરોદારિકશરીરસ્ય શ્લેષ્માસ્રસ્ય=યસ્માત્ કફપ્રસ્રાવો
 ભવતિ તસ્ય, યાન્તાસ્રવસ્ય=યાન્તમ્-ઉદ્ગીર્ણં તસ્યાસ્રઃ પ્રસ્રાવો યસ્માદ્ ભવતિ
 તસ્ય, પિતાસ્રવસ્ય=પિત્તસ્યાસ્રો નિઃ સરણ યાનત્ તસ્યેત્યર્થઃ । તથા શુરુશોષિત-
 પૂયાસ્રસ્ય દૂરુપોન્છ્રાસ નિઃશ્વાસસ્ય=ગાઘવાયુપ્રહણમુન્છ્રાસઃ શરીરાન્તર્ગતસ્ય

વત્ત્રાચલોં સે નાક ઢક ઓર હસ તરફ મુંહ કર ફેર કર પેટ ગયે હૈ ।
 (તણ મલ્લો વિદેહરાયવર કન્યા તે જિયસત્ પામોકલે એ વયાસી)
 હૈસ કે અનન્તર વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી ને ઊન જિતશત્રુ
 પ્રમુખ રાજાંસે કહા—(જહ્તા દેવાણુપ્રિયા ! હમીસે કળગ ૦ જાવ
 પઢિમાએ કલ્લા કર્લિલ તાઓ માણુળાઓ અસળપાળલાહમ સાહમાઓ
 એમમેગે પિંઢે પત્રિલ્પમાણે ૨ હમેયારુવે અમુમે પોગલપરિણામે) હે દેવા,
 નુપ્રિયો ! હસ કનકમયી પુનલી મે મનોહ્ર અશન, પાન, લાઘ એ સ્વાઘ
 રૂપ ચતુર્વિધ આહારકા ઢાલા ગયા એકરે ગ્રાસ જ્ય હસ પ્રકારકા મનોવિ-
 કૃતિ જનક અશુભ તર પુદ્ગલ પરિણામરૂપ દુર્ગંધવાલા યન ગયા હૈ તો ।

(હમસ્સ પુળ ઓરાલિયસરીસ્સ લેન્તાસવસ્સ વતાસવસ્સ પિત્તા
 સવસ્મ સુવકસોળિયપૂયાસવસ્સ- ઝનાસનીસાસસ્સ દુરુવમુત્તપુઙ્ગ

હે દેવાનુપ્રિયે ! આ ખરાબ ગંધ અમારા માટે અસહ્ય થઈ પડી છે
 એથી અમે પોતપોતાના ઉત્તરીયના છેડાથી નાક ઢળાવીને અને આ તરફથી
 મો ફેરવીને બેસી ગયા છીએ (તણ મલ્લી વિદેહરાજવર કન્યા તે જિયસત્
 પામોકલે એ વયાસી) ત્યારપછી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ જિતશત્રુ
 પ્રમુખ રાજાઓને કહ્યું કે—

(જહ્તા દેવાણુપ્રિયા ! હમીસે કળગ ૦ જાવ પઢિમાએ કલ્લા કર્લિલ તાઓ
 માણુળાઓ અસળપાળલાહમ સાહમાઓ એમમેગે પિંઢે પત્રિલ્પમાણે ૨ હમેયારુવે
 અમુમે પોગલપરિણામે)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ સોનાની પૂતળીમા મનોહ્ર અશન પાન, લાઘ
 અને સ્વાઘ રૂપ ચાર ભતના આહારનો ન ખાએલો એક એક ઢોળીયો બનાવે
 આ પ્રમાણે મનોવિકૃતિજનક અશુભતર પુદ્ગલ પરિણામ રૂપ દુર્ગંધવાળો
 થઈ ગયો છે ત્યારે—

વાયોર્નિર્ગમનં નિઃ શ્વાસઃ તૌ દુરૂપાગ્નિષ્ઠૌ યસ્ય સ તથા, તસ્ય દુરૂપમૂત્રપૂતિ-
કંપુરીપૂર્ણસ્ય=દુરૂપેણ પૂતિકેન અનિષ્ટગન્ધવતા પુરીપેણ પૂર્ણસ્ય, તથા તન્ન-
શટનપટનવિધ્વંસનધર્મસ્ય=શટન-કુષ્ઠાદિરોગાકુલ્યાદેઃ પતનં જ્વરાદિના શૈથિલ્ય,
વિધ્વંસન=નાશઃ એતે શટનાદયો ધર્માઃ સ્વમાવા યસ્ય સ તસ્ય, કીદૃશ પરિણામો
ભવિષ્યતિ? અશનાદ્યાંહારાદુષ્ટતસ્યૈકૃગ્રાસસ્ય પ્રતિદિવમ પ્રતિકૃતૌ પ્રક્ષિપ્તસ્ય યદિ

પુરિસપુણસ્સ મંડળ પઢણ વિદ્વસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિ-
સ્સઃ) હસ ઔદારિક શરીર કા પુદ્ગલ પરિણમન ઉસકી અપેક્ષા ખી
અધિકતર અનિષ્ટ દુર્ગંધ વાલા નરોં રોગા કયા ? અવશ્ય રોગા-કયોંકી
યહ કફ કા આશ્રય ખૂન હૈ । સમય ૨ પર હસસે વમન કા નિસ્સરણ
હોતા રહતા હૈ । પિત્ત ખી હસ સે નિકલતા રહતા હૈ । શુક્ર, શોણિત,
એવ પીંચ હસ મેં ઘાઠિર વહતા હૈ । હસકા જો શ્વાસ ઓર ઉચ્છ્વાસ હૈ
વે મહા દુરૂપ-અનિષ્ટનર હૈ । યહ દુરૂપ મૂત્ર એવ અનિષ્ટ ગંધ વાલે મંલ
સે સદા ભરા રહતા હૈ । યહ શટન, પટન, તથા વિધ્વંસન ધર્મ વાલા હૈ ।
કુષ્ઠાદિ રોગ દ્વારા જો હસ કે અગુલિ આદિ અવયવ ગિરે જાતે હૈ ઉસ
કા નામ શટન હૈ । જ્વરાદિ અવસ્થા સે જો હસમેં શિથિલતા આ જાતી
હૈ ઉસ કા નામ પતન હૈ । નાશ હોને કા નામ વિધ્વંસન હૈ । કારણ
હસ કા હસે પ્રકાર હૈ કિ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉત્પન્ન હુએ
એક ૨ ગ્રાસ કા જો પ્રતિદિન હસ પ્રતિકૃતિ મેં પ્રક્ષિપ્ત કિયા જાતા હૈ

(હમસ્સ પુણ ઓરાલિય સરીરસ્સ સ્થેલાસવસ્સ વત્તાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુક
સોણિય પૂયાસવસ્સ દુરૂવ ઉસાસનીસાસસ દુરૂવમુન પૂડયપૂરિસ પુણસ્સ સઢણ
પઢણ વિદ્વસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિસ્સઃ)

આ ઔદારિક શરીરનુ પુદ્ગલ પરિણમન તેના ડરતા પણ વધુ અનિષ્ટ
દુર્ગંધવાળુ થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કંકરુ આશ્રય છે આમાથી
વારવાર વમનનુ નિસ્સરણ થતું રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતુ રહે છે
શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને પડ આમાથી બહાર વહેતુ રહે છે આમાથી
એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને
અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હ મેથા ભરાએલુ રહે છે આ શરીર શટન, પટન,
તેમજ વિધ્વંસન ધર્મવાળુ છે દાહ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળાંચો
વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનુ નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમા જે
શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે નાશ થવું તે વિધ્વંસન કહેવાય
છે આનુ કારણ બતાવવામા આવેલા કોળિયો જે એક એક કરીને દરરોજ
આ પૂતળીમા નાખવામા આવ્યો છે તે બ્યારે આવુ તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

पुद्गलपरिणामस्तीव्रतरोऽनिष्टतरोऽदुर्गन्धः मसरति, तर्हि पुनरस्यौदारिकशरीरस्य
 श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपटननिसनस्वमायस्य पुद्गलपरिणामस्तस्माद-
 प्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः । तस्मात् हे देवानुप्रियाः । यूयं खलु
 मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सङ्ग नो कुरुत, 'मा'
 इत्यस्य मत्येकमपिसम्पन्न । 'रज्जह' रज्जत-राग मा कुरुत, 'गिज्जह'
 गर्भध्वम् गृद्धिं तृष्णा मा कुरुत, 'रुज्जह' मृगत मोह नो कुरुत विषयदोष मा
 विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जह' अध्युपपद्यध्यम्-कामभोगानां ध्यान मा कुरुते-
 त्यर्थः । हे देवानुप्रियाः । एव खलु यूयं उपमितस्तृतीये भगवद्गणे अपरविदेहवा-
 पश्चिभीषमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां
 राजधान्या महायलममुखाः सप्तापि च बालवयस्य राजानः=राजकुलपृहीतजन्मानः ।

यदि इस प्रकार का ताव्र अनिष्टतर दुर्गन्ध रूप पुद्गल परिणाम है तो
 फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से
 परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एवं विध्वसन जिस का स्वाभाविक
 धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गन्ध वाला ही होगा

(त मा ण तुम्हे देवानुप्रिया । माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह,
 रज्जह गिज्जह, मुज्जह, अज्झोववज्जह) इसलिये हे देवानुप्रियों ! तुम
 लोग मानुष्य भव सखी काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव
 मत करो तृष्णा मत बढ़ाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही
 करो । (एव खलु देवानुप्रिया । तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे
 अवर विदेहवासे सलिलावसि विजण वीयसोगाए रायहाणीए मह
 वलपामोक्खा सत्तविय बालवयसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियों !

इस पुद्गल परिणामवाले थाय त्वारे आ औदारिक शरीरनु के जे श्लेष्म
 वगेरे बला भोगाथी लशब्देषु छे-अने शटन, पटन, अने विध्वसन जेनु स्वाभाविक
 धर्म छे-पुद्गल परिणाम जेना करता पणु वधु अनिष्ट दुर्गन्धवाणु छरी जे

(त मा ण तुम्हे देवानुप्रिया । माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह
 गिज्जह, मुज्जह, अज्झोववज्जह)

ज्येथी छे देवानुप्रियो । तमे भुत्थलवना काम लोगोभा क्षसाशे नडि,
 तेमा राग उत्पन्न करे नडि, तेना प्रति तृष्णानु वर्द्धन करे नडि, मुग्ध
 थाज्जे नडि अने तेना केछि द्विस पणु विचार करे जे नडि

(एव खलु देवानुप्रिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अपरविदेह
 वासे सलिलावसि विजण वीयसोगाए रायहाणीए महवलपामोक्खा सत्तविय
 बालवयसया रायाणो होत्था)

‘होत्या’ सजाता कीदृशाः ? इत्याह—‘सहजाया’ सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्षिताः सहक्रीडितकाः, ‘पञ्चइया’ प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः । ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह ‘इमेण कारणेण’ वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निव्वत्तेमि’ निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्ममित्यर्थः । येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रकर्म निर्वर्तितं तदाह—‘जइण’ इत्यादि । यदि खलु यूय चतुर्थ=चतुर्थभक्त तप, उपसपद्य विहरथ, ‘तए’ ततः=तदा खलु अह पण्ठ=पण्ठभक्त तप, उपसपद्य विहरामि=तिष्ठामि । शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेहक्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में “बालव यस्य” सात राजपुत्र थे । उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पञ्चइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे—और साथ ही बड़े हुए थे । साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे । निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी । (तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण तुव्वं चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का वध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते । यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिछे स्पष्ट किया जा चुका है ।

हे देवानुप्रिया ! हुं अने तमे आलथी त्रीम भवमा पश्चिम महा-विदेहक्षेत्रमा सलिलावती नामना विजयमा विप्रमान वीतशोका नामनी राजधानीमा ‘बालवयस्य’ सात राजपुत्रो हुता ते सभये अभासा नामो महाबल वगेरे हुता (सहजाया जाव पञ्चइया) अमे भधा साथे ज् ज्-भ्या हुता अने साथे साथे ज् भोरा थथा हुता भाटीमा पण् आपण्णे भधा साथे साथे ज्-भ्या हुता सभय आपता आपण्णे साते ज्णुअये दीक्षा धारण्ण करी हुती

(तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इस्त्रीनामगोत्रकम्म निव्वत्तेमि जइण तुव्वं चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व)

ते लवमा आ कारणथी स्त्रीनाम गोत्र कर्मनां वध कथे तमे भधा न्यारे चतुर्थभक्ता करता त्यारे हुं पण्ण तमारी साथे चतुर्थभक्ता तो करतो ज् पत्र गमे ते भडाना छेडण पारणाना द्विसे पण्ण छट्ठ वगेरे तपस्याओ करतो रहेतो हुतो (आ विपेनु भधु वणुन आ अध्ययनमा पहेलाज् करवामा आच्यु छे)

पुद्गलपरिणामस्तीतरोऽनिष्टतरोदुर्गन्धः प्रसरति, तर्हि पुनरस्योदारिकशरीरस्य श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपटनधिरंसनस्वभासस्य पुद्गलपरिणामस्तस्मादप्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः । तस्मात् हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सङ्ग नो कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्यन् । 'रज्जह' रज्यत-राग मा कुरुत, 'गिज्जह' गर्भध्वम् गृद्धिं तृष्णा मा कुरुत, 'रुज्जह' मृषत मोह नो कुरुत विषयदोष मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोवज्जह' अधुपपद्यध्यम्=कामभोगानां ध्यान मा कुरुतेत्यर्थः । हे देवानुप्रियाः ! एव खलु यूय उपमितस्तृतीये भयग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिमीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलानतीनामके विजये वीतशोकायां राजधान्या महाशूलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयस्य राजानः=रात्रकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तात्र अनिष्टतर दुर्गन्ध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एव विध्वसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गन्ध वाला ही होगा

(त मा ण तुम्हे देवानुप्रिया । माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्जह, मुज्जह, अज्झोवज्जह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मनुष्य भव सखी काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढ़ाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो । (एव खलु देवानुप्रिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवगहणे अवरविदेहवासे सलिलावसि विजण वीयसोगाए रायहाणीए मह बलपामोक्खा सत्तविघ बालवयसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियो !

इस पुद्गल परिणामवाण थाय त्थारे आ औदारिक शरीरतु के जे श्लेष्म वगेरे धत्ता भोगाथी लशओलु छे-अने शटन, पटन, अने विध्वसन जेतु स्वाभाविक धर्म छे-पुद्गल परिणाम ओना करता पणु पधु अनिष्ट दुर्गन्धवाणु छेशे ज

(त मा ण तुम्हे देवानुप्रिया । माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्जह, मुज्जह, अज्झोवज्जह)

ओथी छे देवानुप्रियो । तभे मनुष्यलवना काम लोगोभा इसाशो नछि, तेभा राग उत्पन्न करे नछि, तेना प्रति तृष्णानु पद्धन करे नछि, मुग्ध थाओ नछि अने तेना केछि द्विस पणु वित्थार करे ज नछि

(एव खलु देवानुप्रिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवगहणे अवरविदेहवासे सलिलावसि विजण वीयसोगाए रायहाणीए महबलपामोक्खा सत्तविघ बालवयसया रायाणो होत्था)

‘होत्था’ सजाता कीदृशाः ? इत्याह—‘सहजाया’ सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्धिताः सहक्रीडितकाः, ‘पञ्चइया’ प्रवर्जिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः । ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह ‘इमेण कारणेण’ वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निव्वत्तेमि’ निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्ममि-त्यर्थः । येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रकर्म निर्वर्तितं तदाह—‘जइण’ इत्यादि । यदि खलु यूय चतुर्द=चतुर्थभक्त तप, उपसपथ विहरथ, ‘तए’ ततः=तदा खलु अह पण्ठ=पण्ठभक्ततप, उपसपथ विहरामि=तिष्ठामि । शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान चीतशोका नाम की राजधानी में “पालव यस्य” सात राजपुत्र थे । उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पञ्चइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे—और साथ ही बड़े हुए थे । साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे । निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी । (तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण तुव्वं चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बंध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई वहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते । यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है ।

हे देवानुप्रिया ! हुं अने तमे आनथी त्रीम भवमा पश्चिम भडा-विदेहक्षेत्रमा सलिलावती नामना विजयमा विजमान चीतशोका नामनी राजधानीमा ‘पालवयस्य’ सात राजपुत्रो हुता ते सभये अभास नामो भडावल वगेरे हुता (सहजाया जाव पञ्चइया) अमे भधा साथे ज ज भ्या हुता अने साथे साथे ज मोटा थया हुता भाटीमा पण आपण्हे भधा साथे साथे ज रभ्या हुता समय आवता आपण्हे साते जण्णुअे दीक्षा धारण करी हुती

(तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोत्रकम्म निव्वत्तेमि जइण तुव्वं चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व)

ते भवमा आ कारणथी अनाम गोत्र कर्मानो भध कथो तमे भधा न्यारे अनुर्थभक्त करता त्यारे हुं पण तभारी साथे अनुर्थभक्त तो करतो पन गमे ते भडाना डेडण पारणाना द्विसे पण छट्ठ वगेरे तपस्याओ करतो रहैतो हुतो (आ विपेनु भधु वणुन आ अध्ययनमा पढेताज करवामा आव्यु छे)

अरिम नेषाध्ययने प्रागुत्तम-दोध्यम् । ततस्तदनन्तरं रत्न हे देवानुप्रियाः ! कृष्ण कालमासे काल कृत्वा जयते विमाने उत्पन्नाः=देवभव प्राप्ताः, तत्र रत्न युष्माकं देशानि द्वारिस्तसागरोपमानि स्थितिः, ततः रत्न युय तस्मादेवलोकादनन्तरं चय=देवशरीर, त्यक्त्वा इहैव=अरिमन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे जन्मलब्धा यावत्-
रवानि २ राज्या-युपसृप्य विहरथ, ततस्तदनन्तरं रत्न हे देवानुप्रिया ! तस्माद् देवलोकादायु क्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियत्ताए' दारिकतया पुत्रीभावेन 'पच्चायाया' प्रत्यायाता=सजाता-अथ तान जितशत्रुममुखान् पठपिराज्ञः पुनः

(तएण तुम्हे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयते विमाने उववण्णा-तत्थण तुम्हे देसूणाइ बत्तीसाइ सागरोवमाइ ठिई, तएण तुम्हे ताओ देवलोयाओ अणतरं चय चइत्ता इहेव जम्बूद्वीवे २ जाव साइ २ रज्जाइ उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुप्रियो ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहाँ आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जय यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहाँ से चक्कर इसी जम्बूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । (तएण अह देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्ख एण जाव दारियत्ताए पच्चायाया) तुम लोगो के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियो ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्ष्य हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

(तएण तुम्हे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयते विमाने उववण्णा तत्थण तुम्हे देसूणाइ बत्तीसाइ सागरोवमाइ ठिई, तएण तुम्हे ताओ देवलोयाओ अणतरं चय चइत्ता इहेव जम्बूद्वीवे २ जाव साइ २ रज्जाइ उवसपज्जित्ताण विहरइ)

हे देवानुप्रियो ! तमे काल मासमा मृत्युना वण्णते काव करीने जयत विमानमा देवपर्यायथी जन्म प्राप्ता तथा तमारी प्रधानी भत्रीस (३२) सागरनी स्थिति करता कर्क ओछी ओटली स्थिति थर्ध न्यारे आ स्थिति पूरी थर्ध लारे ततः ज तमे त्याथा यवीने आ जम्बूद्वीपमा उत्पन्न तथा छे अने पोतपोताना राज्यानु शासन यत्ताववा लाग्या छे

(तएण अह देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव दारियत्ताए पच्चायाया)

त्यारणाइ हे देवानुप्रियो ! हु पणु देवलोकाभाथी आयुक्षम होवा भदल आवीने अर्धी पुत्री रूपमा जन्म प्राप्ती छे

પૂર્વજન્મવૃત્તાન્ત સ્મારયન્તી મહી યદ્યોચત્ તદ્ ગાયયા પ્રાહ-કિં થ તય ઇત્યાદિ।
મો રાજાનઃ કિં તદ્ વિસ્મૃત યુગ્માભિઃ તદા=તસ્મિન્ કાલે પૂર્વભવે જય તપવરે=
જયન્તનામકેડુનુત્તરવિમાને 'દેવાઃ' દેવાભૂત્વા 'બુત્યા' યુયન્ ઉપિતઃ = નિરાસ
કૃતવન્તઃ, 'થ' ઇતિ રામચાલદ્વારે 'સમયનિરૂદ્ધા=વયં પરસ્પરેણ પ્રતિયોધનીયા'
ઇત્યેવ સકેતેન નિવદ્ધા = પરિચીતા, તા દેવસમ્બન્ધિની જાતિં જન્મ 'સમરહ'
સસ્મરતેતિ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

મૂલમ્-તણં તેસિ જિયસત્તપામોક્ષાણ છળહં રાયાણ મ-
હીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ અતિણ એયમદ્દંસોચ્ચા ણિસમ્મ સુમેળં
પરિણામેણ પસસ્થેણં અજ્ઞવસાણેણં લેસાહિ વિસુજ્ઞમાણીહિ
તયાવરણિજ્જાણં૦ કમ્માણે સ્વઓવસમેણ ઈહાવોહમગ્ગણગવેસણં
કરેમાણાણ સણિણજ્જાઇસરણે સમુપ્પન્ને એયમદ્દ સમ્મ અભિ-
સમાગચ્છતિ, તણં મલ્લી અરહા જિયસત્તપામોક્ષે છપ્પિ
રાયાણો સમુપ્પણજાઇસરણે જાણિત્તા ગમ્મધરાણ દારાઇ વિહા-
ડાવેઇ, તણં તે જિયસત્તપાનાંક્ષા જેણેવ મહી અરહા તેણેવ

इसी पूर्वोक्त-पूर्वजन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत प्रमुख राजाओं
को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्र-
कार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा “ किं थ तय पम्हुड्ड ” इत्यादि यह है ।
इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं ! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल
गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर
रहे हैं । सो “ हम परस्पर से एक दूसरे को प्रतिगोधित करेंगे ” ऐसी
प्रतिज्ञासे प्रतिरुद्ध उस देव अवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ છતરાત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી
મલ્લીકુમારીએ જે કંઈ બહુ છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-
(કિય તય પમ્હુદ્ધ) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ
જયન્તે ભૂલી ગયા છો કે બ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમાં
દેવ થઈને રહ્યા હતા તો “ અમે એક બીજાને પ્રતિગોધિત કરીશું ” આ
પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને મેળાવવા તે દેવસવતા જન્મને તમે યાદ કરો ॥સૂ. “૩૫”॥

અરિમન્નેવાધ્યયને પ્રાગુક્તવદ્બોધ્યમ્ । તતરત્તદનન્તર મ્લુ હે દેવાનુમિયાઃ । યૌ
કાલમાસે કાલ વૃત્તા જયન્તે વિમાને ઉત્પન્ના=દેવભવ માતાઃ, તપ્ન મ્લુ યુષ્માક
દેશોનાનિ દ્વાત્રિંશત્સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ, તતઃ મ્લુ યૌ તરમાદેવલોકાદનન્તર
વય=દેવશરીર, ત્યક્ત્વા રૈહૈ=અરિમન્નેઽ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે જ મલગ્ધા યાવત્-
સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનુપસપથ વિહરથ, તતરત્તદનન્તરસ્વરૂપ હે દેવાનુમિયા । તસ્માદ્
દેવલોકાદાયુક્ષયેણ વ્યુત્ત્વા યાન્ત-—‘દારિયત્તાપ’ દારિક્તયા પુત્રીભાવેન
‘પન્ચાયાયા’ મત્યાયાતા=સજાતા-અથ તાન જિતશત્રુમમુશ્વાન્ પટપિરાઙ્ગઃ પુનઃ

(તપ્ન તુભે દેવાણુપિયા ! કાલમાસે કાલ કિન્ચા જયતે વિમાણે
ઉવવણ્ણા-તત્થણ તુભે દેસૂણાઠ ધત્તીસાહ સાગરોવમાઠ ઠિઈ, તપ્ન
તુભે તાઓ દેવલોયાઓ અણતરં વય ચહિત્તા રૈહેવ જમ્બૂદ્વીવે ૨ જાવ
સાહ ૨ રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ) હે દેવાનુમિયો ! આપ લોગ કાલ
માસ મેં મૃત્યુ કે અવસર મેં કાલ કર-જયન્ત વિમાન મેં દેવ પર્યાય સે
ઉત્પન્ન હુએ । વહા આપ સય કી કુછ કમ ૨૨ ધત્તીસ સાગર કી સ્થિતિ
હુઈ । જય યહ સ્થિતિ સમાપ્ત હો ચુકી-તો ઉસી સમય આપ લોગ વહાં
સે ચવકર હસી જમ્બૂદ્વીપ મેં ઉત્પન્ન હો ગયે-ઔરઅપને ૨ રાજ્યોં કા ભોગ
કરને લગે । (તપ્ન અહ દેવાણુપિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઉક્લ
પ્ણ જાવ દારિયત્તાપ પન્ચાયાયા) તુમ લોગો કે વ્યુત્ત્વ હોને કે વાદ
હે દેવાનુમિયો ! મેં મી ઉસ દેવલોક સે આયુક્ષય હો જાને કે કારણ વ્યુત્ત્વ
હુઆ-ઔર વ્યુત્ત્વ હોકર કન્યા રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ગયા હૂં ।

(તપ્ન તુભે દેવાણુપિયા ! કાલમાસે કાલ કિન્ચા જયતે વિમાણે ઉવવણ્ણા
તત્થર્ણ તુભે દેસૂણાઠ ધત્તીસાહ સાગરોવમાઠ ઠિઈ, તપ્ન તુભે તાઓ દેવલોયાઓ
અણતરં વય ચહિત્તા રૈહેવ જમ્બૂદ્વીવે ૨ જાવ સાહ ૨ રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ)

હે દેવાનુમિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વળતે કાલ કરીને જ્યત
વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨)
સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી ઓટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ
પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાંથી ચલીને આ જમ્બૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છે
અને પોતપોતાના રાજ્યોનું શાસન ચલાવવા લાગ્યા છે

(તપ્ન અહ દેવાણુપિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઉક્લપ્ણ જાવ દારિયત્તાપ પન્ચાયાયા)

ત્યારબાદ હે દેવાનુમિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષમ હોવા બદલ
આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છું

પૂર્વજન્મવૃત્તાન્ત સ્મારયન્તી મહી યદ્વોચત્ તદ્ ગાયથા પ્રાહ-કિં થ તય ઇત્યાદિ।
મો રાજાનઃ કિં તદ્ વિસ્મૃત યુગ્માભિઃ તદા=તસ્મિન્ કાલે પૂર્વભવે જય તપવરે=
જયન્તનામકેડનુત્તરવિમાને 'દેવાઃ' દેવાભૂત્વા 'બુત્યા' યુવન્ ઉપિતઃ = નિયાસં
કૃતવન્તઃ, 'થ' ઇતિ વામ્બાલઢ્કારે 'સમયનિવદ્ધા=વયં પરસ્પરેણ પ્રતિયોધનીયા'
ઇત્યેવ સકેતેન નિવદ્ધાં = પરિગૃહીતા, તા દેવસમ્બન્ધિની જાતિં જન્મ 'સમરહ'
સસ્મરતેતિ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

મૂલમ્-તદ્દેવેણ તેસિ જિયસત્તપામોક્ષાણ છળહં રાયાણ મ-
હીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ અતિણ એયમદ્દંસોચ્ચા ણિસમ્મ સુમેણં
પરિણામેણ પસત્થેણં અજ્ઞવસાણેણં લેસાહિ વિસુજ્જમાણીહિ
તયાવરણિજ્જાણ૦ કમ્માણે સ્વઓવસમેણ ઈહાવોહમગ્ગણગવેસણં
કરેમાણાણ સણિજ્જાઇસ્સરણે સમુપ્પન્ને એયમદ્દ સમ્મં અભિ-
સમાગચ્છતિ, તદ્દેવેણં મલ્લી અરહા જિયસત્તપામોક્ષે છલ્પિ
રાયાણો સમુપ્પણજાઇસ્સરણે જાણિત્તા ગઠ્ઠમધરાણ દારાઇ વિહા-
ડાવેઇ, તદ્દેવેણં તે જિયસત્તપામોક્ષા જોણેવ મહી અરહા તેણેવ

इसी पूर्वोक्त-पूर्वजन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशतृ प्रमुख राजाओं
को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्र-
कार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा “ किं थ तय पम्हुट्ट ” इत्यादि यह है ।
इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं ! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल
गये कि जिसमें हम सखलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर
रहे हैं । सो “ हम परस्पर से एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे ” ऐसी
प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव अवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ છતરાત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી
મલ્લીકુમારીએ જે કંઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-
(કિંથ તય પમ્હુટ્ટ) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ
ભવને ભૂલી ગયા છો કે જ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમાં
દેવ થઈને રહ્યા હતા તો “ અમે એક બીજાને પ્રતિયોધિત કરીશું ” આ
પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને એળવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો ॥સૂ. “૩૫”॥

सकारेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभ-
एण रणणा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइर रज्जाइ जेणेव
नगराइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइं उव-
सपज्जित्ता विहरति, तएणं मल्ली अरहा 'सुवच्छरावसाणे
निक्खमिस्सामि' ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएण तेसि' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखाणां
पणा राज्ञा, मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया अन्तिके=पमीपे 'एयमट्ठ' एतमर्थ=
पूर्वभयवृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृद्यार्थं, शुभेन परिणामेन
प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेख्याभिः 'विमुञ्जमाणीहिं' विशुध्यन्तीः 'तयावरणिज्जाण'
तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां, कर्मणा क्षयोपशमेन 'ईहावोहमग्गगवेसण'
इहाऽपोहमार्गेण गवेसणम्-ईहा-मर्थं विशेष प्रियकसमालोचनाभिमुखो मतेवर्था-

'तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि

(तएण) इस के बाद (तेसि) जियसत्तूपामोक्खाणं छण्ह रायाण
मल्लीए विदेहराजवरकन्याए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण
परिणामेण पसत्थेणं अज्झवसाणेण लेसाहिं विमुञ्जमाणीहिं तयावर
णिज्जाणं० कम्माण खओवसमेण ईहावोयमग्गगवेसण करेमाणार्ण
सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख एहों राजाओं को जब
उन्होंने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और
उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त
अध्यवसाय से लेख्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेसि) जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहराजवरकन्याए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं
विमुञ्जमाणीहिं तयावरणिज्जाण० कम्माण खओवसमेण ईहावोयम गगवेसण
करेमाणार्ण सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

एतशत्रु प्रमुख छये राजाओये न्यारे विदेहराजवर कन्या मल्ली
कुमारीना सुभथी आ भधी पूर्वजवनी विगत सालणी अने भनभा तेना उपर
सारी चेठे विचार कथे त्यारे शुभ परिणामथी, प्रशस्त अध्यवसायथी लेख्या-
ओनी विशुद्धिथी तेभज तदावरणीय कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अपाह,

उवागच्छति, उवागच्छिता तएण महव्वलपामोक्खा सत्तविय
 वालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागयायावि होत्था तएणं मल्ली
 अरहा ते जियसत्तप्पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी-
 एव खल्ल देवाणुप्पिया । सत्सारभयउविग्गा जाव पव्वयामि, तं
 तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे ?
 तएणं जियसत्तप्पामोक्खा मल्लि अरह एव वयासी - जइणं
 तुब्भे देवाणुप्पिए सत्सार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिए !
 के अण्णे आलंघणे वा आहारे वा पडिवधे वा जह चेव णं
 देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हेइओ तच्चेभवग्गहणे बहुसु कज्जेसु
 य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणु-
 प्पिये ! इण्हिपि जाव भविस्सह, अम्हे वि य णं देवाणु० सत्सार
 भयउविग्गा जाव भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पियाण सद्धिं
 मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो । तएण मल्ली अरहा ते जियस-
 त्तपामोक्खे एव वयासी-जण्ण तुब्भे सत्सार जाव मए सद्धिं
 पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया सएहि रज्जेहि जेठ्ठे
 पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ
 दुरूहह दुरूढा समाणा मम अतिय पाउव्वभवह, तएण ते
 जियसत्तपामुक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठ पडिसुणोति, तएणं
 मल्ली अरहा ते जियसत्त० गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छिता कुभगस्स पाएसु पाडेइ, तएण कुभए ते
 जियसत्तपामोक्खे विपुलेण असण४

सकारेइ जाव पडिविसजेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभ-
एण रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइर रज्जाइ जेणेव
नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइं उव-
सपज्जित्ता विहरति, तएणं मल्ली अरहा 'सवच्छरावसाणे
निक्खमिस्सामि' ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएण तेमि' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेपा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा, मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया अन्तिके=ममीपे 'एयमट्ठ' एतमर्थ=
पूर्वभयवृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृद्यधार्य, शुभेन परिणामेन
प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेइयाभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यतीः 'तयावरणिज्जाण'
तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीना, कर्मणा क्षयोपशमेन 'इहावोदमग्गगवेसण'
इहावोदमार्गेण गयेरग्ग-ईहा-मर्थं विशेष त्रियम्समालोचनाभिप्लु बो मतेवर्था-

'तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि

(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह रायाण
मल्लीए विदेहरायवरकन्याए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण
परिणामेण पसत्थेणं अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर
णिज्जाणं० कम्माण खओवसमेणं ईहावोयमग्गणगवेसणकरेमाणार्ण
सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब
उन्हो ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और
उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त
अध्यवसाय से लेइयाओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

' तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहरायवरकन्याए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं
विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माण खओवसमेणं ईहावोयम गणगवेसण
करेमाणार्ण सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

एतशत्रु प्रमुख छहो राजाओओ ल्यारे विदेहराजवर कन्या मल्ली
कुमारीना सुभयो आ थयी पूर्वभवनी विगत सालणी अने मनमा तेना उपर
सारी पेठ विचार कथो ल्यारे शुभ परिणामथी, प्रशस्त अध्यवसायथी देश्या-
ओणी विशुद्धिथी तेमअ तदावरणीय कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अपोह,

પાર; વિચાર इत्यर्थ । स चात्र—“ किं मल्लो कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा संज्ञातः, अपिच देवभव प्राप्य जयन्तविमाने किं त्रयमवस्थिता आरुहे ” त्येवरूपो बोध्य । अपोह-निश्चय, स चेत्यम्-उक्तविचारे निरन्तरसञ्चनाया बुद्धे. परिणाम खल्वेवमभवत्-‘ मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन त्रय सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रमाणान्च जयन्तविमाने देयत्वेन सज्ञाता ” इति । ईहापोहाभ्यां

क्षયોપશમ સે ઈદા, અપોહ માર્ગેણ એવ ગવેષણ કરને પર સજ્ઞિ જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । અર્થ વિશેષ કો વિષય કરને ચાલી સમાલોચના ફી તરફ ઝુકતા હુઆ જો મતિ વ્યાપારરૂપ વિચાર હોતા હૈં ઉસકા નામ ઈદા હૈં । યદા હસકા સમન્વય હસ તરદ સે સમજના ચાહિયે-મલ્લી કુમારી ને જો પૂર્વભવીય વૃત્તાન્ત કહા હૈં વદ ત્યા ઉસી તરદ સે હુઆ હૈં

કયા દેવ ભવ કો પ્રાપ્તકર હમલોગ જયન્ત વિમાન મેં સાધ રહે હૈં ? ઈદા કે બાદ જો નિશ્ચય રૂપ મોધ હોતા હૈં ઉસકા નામ અપોહ હૈં-હસકા સબધ યદા હસ પ્રકાર સે જાનના ચાહિયે-જય ઉક્ત વિચાર મેં બુદ્ધિ સલગ્ન હો ગઈ તો ઉસકા પરિણામ હસ પ્રકાર નિકલા -ઠીક હૈં-મલ્લી કુમારી કે કથનાનુસાર હમ સાતોં અનગારોં ને તપોઅનુષ્ઠાન નિયમતઃ કિયા હૈં-હસસે ઉસકે પ્રભાવ સે હમલોગ કાલ માસ મેં કાલકર જયન્ત વિમાન મેં દેવ ફી પર્ણાય અવશ્ય ઉત્પન્ન હુદા હૈં । હસ પ્રકાર કા ઈદિત અર્થ મેં જો નિશ્ચયાત્મક વિચાર હોતા હૈં વદી અપોહ હૈં ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સસી-મતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે ‘ ઇહા ’ છે અહીંયા ઇહા વિષેનો સબધ આ રીતે સમજવો જોઈએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વભવની વિગત સાંભળીને રાજાએના મનમાં જે આ પ્રભાવેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વભવનું વૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું અરેખર તેમજ હશે !

દેવભવ મેળવીને શું અમે બધા એકી સાથે જયન્ત વિમાનમાં રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ મોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેનો સબધ અહીં આ પ્રભાવે સમજવો જોઈએ કે બનારે પૂર્વભવના વિચારોમાં બુદ્ધિ સલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રભાવેનો નિશ્ચય થયો કે ‘ ઠીક છે ’ મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અન ગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે લોકો કાળ માસમાં કાળ કરીને જયન્ત વિમાનમાં દેવની પર્ણાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઈશું ” એ અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ

નિશ્ચિતોર્થે માર્ગણગવેષણાયા દૃઢીભવતીત્યદઆહ - ' માર્ગણગવેષણ ' इति, માર્ગણ-ઈદાપોહાભ્યા નિશ્ચિતાર્થેઽન્વયધર્માલોચનઅન્વયઃ-સદ્ભાવ-યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ પરસ્પર સુહૃદ્ભાવ વિષયવિરાગદર્શનેન પૂર્વભવે સહાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ, તદનુ જયન્તવિમાનાવસ્થાન દૃઢ નિશ્ચીયતે, ગવેષણમ્-ઈદાપોહાભ્યા નિશ્ચિતેઽર્થે વ્યતિરેકધર્માલોચનમ્ વ્યતિરેકો નામ-અભાવઃ, યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ યદિ પરસ્પરસુહૃદ્ભાવો ન સ્યાત્, તથા યદિ વિષયવિરાગો ન સ્યાત્, તર્હિ પૂર્વભવસમ્બન્ધિ સહાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ જયન્તવિમાનાવસ્થાન ચ ન સ્યાત્, ઇત્યેવમન્વયવ્યતિરેક-ધર્માલોચનાદુક્તાર્થસ્ય નિશ્ચયો દૃઢતરો ભવતીતિ તદેવમીદાઽપોહમાર્ગણગવેષણં

ईहा और अपोह से निश्चिन किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है। मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा। और अपोह से निश्चिन हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना। जैसे ऐसा बिचार आता कि इन सातोमें जय परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं। गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चिन हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना। जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होने भी नहीं होता।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है। सभी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ધહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઈ જાય છે માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ધહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્નાર સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયન્ત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે ' ગવેષણ ' શબ્દનો અર્થ છે, ધહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ માનેમાં હમણા એડ બીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તેા પૂર્વભવમાં તેમજ સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયન્ત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવવામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઈ જાય છે સતી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર

પારઃ, વિચાર इत्यर्थ । स चात्र—“ किं मत्तो कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा सजातः, अपिच देवभव प्राप्य जयन्तविमाने किं ययमवस्थिता आस्मे ” त्येवरूपो बोध्य । अपोह-निश्चयः, स चेत्यम्-उक्तविचारे निरन्तरसम्भवाया बुद्धेः परिणाम स्वत्वेवमभवत्-“ मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन यय सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन सजाता ” इति । ईहापोहार्था

क्षયોપશમ સે ઈદા, અપોહ માર્ગેણ એવ ગવેષણ કરને પર સજિ જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । અર્થ વિશેષ કો વિષય કરને ચાલી સમાલોચના કી તરફ દુરુના હુઆ જો મતિ વ્યાપારરૂપ વિચાર હોતા હૈં ઉસકા નામ ઈદા હૈં । યદા હસકા સમન્વય હમ તરહ સે સમજના ચાહિયે-મલ્લી કુમારી ને જો પૂર્વભવીય વૃત્તાન્ત કહા હૈં ચદ યયા ઉસી તરહ સે હુઆ હૈં

કયા દેવ ભવ કો પ્રાપ્તકર હમ લોગ જયન્ત વિમાન મૈં સાથ રહે હૈં ? ઈદા કે બાદ જો નિશ્ચય રૂપ બોધ હોતા હૈં ઉસકા નામ અપોહ હૈં-હસકા સબધ યદા હસ પ્રકાર સે જાનના ચાહિયે-જય ઉક્ત વિચાર મૈં બુદ્ધિ સલગ્ન હો ગઈ તો ઉસકા પરિણામ હસ પ્રકાર નિકલા - ઠીક હૈં-મલ્લી કુમારી કે કથનાનુસાર હમ સાતોં અનગારોં ને તપોઅનુષ્ઠાન નિયમતઃ કિયા હૈં-હસસે ઉસકે પ્રભાવ સે હમ લોગ કાલ માસ મૈં કાલકર જયન્ત વિમાન મૈં દેવ કી પર્યાય અવશ્ય ઉત્પન્ન હુવ હૈં । હસ પ્રકાર કા ઈદિત અર્થ મૈં જો નિશ્ચયાત્મક વિચાર હોતા હૈં વહી અપોહ હૈં ।

માર્ગેણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સતી-અતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે 'ઇહા' છે અહીંયા ઇહા વિષેનો સબધ આ રીતે સમજવો જોઇએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વભવની વિગત સાંભળીને રાજાઓના મનમાં જે આ પ્રમાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વભવનું વૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું ખરેખર તેમજ હશે ।

દેવભવ મેળવીને શું અમે જાણા એકી સાથે જયન્ત વિમાનમાં-રજા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેના સબધ અહીં આ પ્રમાણે સમજવો જોઇએ કે બ્યારે પૂર્વભવના વિચારોમાં બુદ્ધિ સલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રમાણેના નિશ્ચય થયો કે 'ઠીક છે' મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે હોકા કાળ માસમાં કાળ કરીને જયન્ત વિમાનમાં દેવની પર્યાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઇશું આ રીતે ઇદિત અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ છે

નિશ્ચિતોર્થે માર્ગગવેષણાયા દૃઢીમદ્ભૂતિયત્તઆહ - ' મગ્ગગવેસર્ણ ' इति, માર્ગ-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતોર્થેઽન્વયધર્માલોચનઅન્વયઃ-સદ્ભાવ-યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ પરસ્પર સુહૃદ્ભાવ વિષયવિરાગદર્શનેન પૂર્વભવે સહાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ, તદ્વુ જયન્તવિમાનાવસ્થાન દૃઢ નિશ્ચીયતે, ગવેષણમ્-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતેઽર્થે વ્યતિરેકધર્માલોચનમ્ વ્યતિરેકો નામ-અભાવઃ, યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ યદિ પર સ્પરસુહૃદ્ભાવો ન સ્યાત્, તથા યદિ વિષયવિરાગો ન સ્યાત્, તર્હિ પૂર્વભવસમ્બન્ધિ સહાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ જયન્તવિમાનાવસ્થાન ચ ન સ્યાત્, इत्येवमन्वयव्यतिरेक-ધર્માલોચનાદુક્તાર્થસ્ય નિશ્ચયો દૃઢતરો ભવતીતિ તદેવમીદાઽપોદ્દામાર્ગગવેષણં

ईहा और अपोह से निश्चिन त्रिधागया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाना है । मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा । और अपोह से निश्चिन हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना । जैसे ऐसा विचार आता कि इन सोतोमें जय परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं । गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चिन हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना । जैसे इन सानों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नहीं होता ।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है । सजी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઇ બાક છે માર્ગણ શબ્દને અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્યારે સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) બોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જ્યત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે ' ગવેષણ ' શબ્દને અર્થ છે, ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ માનેમાં હમણા એક બીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમાં તેમનું સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જ્યત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવેલામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઇ બાક છે સજી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર

यूय संसारभयोद्धिना यावत् पत्रजय=प्रवर्जितय, अस्माकं खलु हे देवानुमियाः ! किमन्यदालम्बन वा सहायो वा कोऽन्य आधारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुमियाः । यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु वार्येषु च मेधिः मेधिव-
दालम्बनम्-आधारो वा किं च यूय प्रमाण=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद-
चक्षुर्भूतः=नेत्रत्वं समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा=धुरङ्गधुरः धर्मस्य धुर=वाहका
धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षाया यूयमास्त, तथैव खलु हे देवानुमियाः ।

की ऐसी पात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मछी
अरिहत से इस प्रकार कहा—(जड़णं तुम्हे देवाणुप्पिण ससार जाव
पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा
पडिवधे वा तह चेवण देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भव
ग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवा
नुप्रिये ! जब तुम ससार के भय से उद्धिग्न होकर यावत् दीक्षा
सयम अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! करो फिर हमें
तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा—कौन
हमारा आलबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य
करने से मना करने वाला होगा—कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये
धर्म का उपदेश दाना होगा— । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव
में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलबन रूप हुए आधार
भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुर्भूत

मदली अरिहतना आ प्रभाणु विचारो सावणीने ते एतगश्रु प्रमुण
छओ शानओओ मदली अरिहतने कहुं के

(जड़णं तुम्हे देवाणुप्पिण ससार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिण ! के
अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिवधे वा तह चेव णं देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे
इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था)

हे देवानुप्रिय ! ससार लयथी व्याकुल यद्यने न्याये तमे पाने दीक्षा
सयम स्वीकारवा छच्छेओ त्यारे हे देवानुप्रिये ! गतावे तमारा वगर अमारो
सहायक पीन्ने कोणुं छुंसे ? अमारो आवणन कोणुं छुंसे ? अमारो आधार
कोणुं छुंसे ? जोटा काम करता अभने रोकनार कोणुं छुंसे ? अमारो जेवा ने
सन्मार्गं तरङ्ग वाणनार धर्मना उपदेशक कोणुं छुंसे ? जेम आनथी पडेलाना
त्रीम लवमा अमारो माटे वण्णा कामोमा तमे मेधिनी जेम आलबन रूप
थया, आधार भूत थया प्रभाणु भूत थया, समविषम मार्गने गतावनार होवा
मदल यक्षुभूत थया, धर्मना मार्गमा प्रवृत्ति करवनार

‘इहंपि’ इदानीमपि यावद् भविष्यथ । वयमपि खलु हे देवानुमिया ! ससार मयोद्विग्ना यावद् भीता ‘जम्ममरणण’ जन्ममरणेभ्यः आर्पत्वात्पञ्चम्यर्थे पण्ठी, ‘देवानुप्पियाण’ देवानुमियै युष्माभिः सार्द्धं मुण्डा भूत्वा यावत्-प्रव्रजाम्=दीक्षा ग्रहीष्यामः, ततः-जितशत्रुप्रमुखान् तेषां वचनं श्रुत्वा, खलु मल्लो अहं तान् जितशत्रुप्रमुखान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं ससारमयोद्विग्नाः यावद् मया सार्धं प्रव्रजथ, तत्=तस्मात् गच्छत खलु यूयं हे देवानुमियाः । स्वेषु स्वेषु राज्ञेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् राज्ये स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषमहत्तवादिनी शिविकाः दूरोद्वत=शरोद्वत, दूरुदाः सन्तो ममान्तिकपादुर्भवत आगच्छत । ततस्तदनन्तर

हुण, वस्त्रं कां चुरा रूपं हुण-धर्ममार्गं मे प्रवृत्तिं कराने चाले हुण (तद्वा चेव ण देवानुप्पिए ? इहंपि जाव भविस्सह) उसी प्रकार हम भव में भी आप ही होवे (अम्हे वि य ण देवानु० ससारमयउद्विग्गा जाव भीया जम्ममरणण देवानुप्पियाण सद्धिं मुडा भवित्ता जाव पण्वयामो) इसलिये-हम भी हे देवानुमिये ! ससारभय से उद्विग्न बने हुए यावत् जन्म मरण से भीत हुए आप देवानुमिये ! के साथ ही मुडित होकर यावत् जिन दीक्षा ग्रहण करेंगे ।

(तएणं मल्लो अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी-जणं तुब्भे ससार जाव मण सद्धिं पण्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवानुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेठ्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह ठावित्ता पुरिससहस्स बाहिणीओ सीयाओ दुरुद्वह) इस के बाद मल्लो अरिहत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं से इस प्रकार कहा-यदि तुम सब ससारभय से उद्विग्न

थया (तद्वा चेव ण देवानुप्पिए ? इहंपि जाव भविस्सह) ते प्रभाण्णे आ लवभा पणु तमे न् अमने धर्मा प्रवृत्तिं उपावनां थाम्हे

(अम्हे वि य ण देवानु० ससारमयउद्विग्गा जाव भीया जम्ममरणणं देवानुप्पियाण सद्धिं मुडा भवित्ता जाव पण्वयामो)

ज्येष्ठान् भाट्टे हे देवानुमिये ! ससार लयथी व्याकुल तेभव न् जन्म मरणानां लयथी त्रस्त थयेना अम्हे पणु हे देवानुमिये तमारी साथे न् मुडित थयने जिन दीक्षा स्वीकारीशु

(तएण मल्लो अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयामी-जणं तुब्भे ससार जाव मण सद्धिं पण्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवानुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेठ्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्स बाहिणीओ सीयाओ दुरुद्वह)

त्यार पण्ठी भट्टी अरिहते शत्रु प्रमुख राजाओं ने आ प्रभाण्णे कथु हे ने तमे अधा ससार लयथी व्याकुल थयने भारी साथे जिन दीक्षा ग्रहण

यूय संसारभयोद्विग्ना यावत् पत्रजय=पत्रजिप्यथ, अस्माकं रत्न हे देवानुमियाः ! किमन्यदालम्बन या सहायो वा कौञ्च आशरो या=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव सख्य हे देवानुमियाः ! यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु धार्येषु च मेधिः मेधिव दालम्बनम्-आशरो या किं च यूय प्रमाण=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद्-चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा =धुरङ्गधुरः धर्मस्य धुर=वाहका धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षा यूयमास्त, तथैव रत्न हे देवानुमिया ।

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मछी अरिहत से इस प्रकार कहा—(जड़णं तुम्हे देवाणुप्पिण ससार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवा नुप्रिये ! जब तुम ससार के भय से उद्विग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमें तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा—कौन हमारा आलबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा—कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा—। जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलबन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुर्भूत

मदली अरिहत्तना आ प्रभाणु विचारो आलणीने ते छतशत्रु प्रमुख छहो राजाओओ मदली अरिहत्तने कहुं हे

(जड़णं तुम्हे देवाणुप्पिण ससार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा तह चेव ण देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्ता)

हे देवानुप्रिय ! ससार लयथी व्याकुल यधने न्यारे तमे येने दीक्षा संग्रम स्वीकारवा धम्मेओ छे त्यारे हे देवानुप्रिये ! जतावेो तमारा वगर अमारो सहायक णीजे कोणुं छे ? अमारो आवणन कोणुं छे ? अमारो आधार कोणुं छे ? जोटा काम करता अमने रोकनार कोणुं छे ? अमारा जेवा ने सन्मार्ग तरङ्ग वाणनार धर्मना उपदेशक कोणुं छे ? जेम आञ्जथी पडेलाना नीज लवमा अमारो भाटे वण्णु कामोभा तमे मेधिनी जेम आलबन रूप थया, आधार भूत थया प्रभाणु भूत थया, समविषम मार्गने जतावनार होवा जडव यक्षुभूत थया, धर्मनी धुराङ्ग थया, धर्मना मार्गभा प्रवृत्ति करावनार

ક્ષત્રેણ મત્કલેતિ, યાવત્-પ્રતિવિસર્જયતિ । તત્ સ્વલુ તે જિતશત્રુપ્રમુખા કુમ્ભકેન
રાજા વિવર્જિતાઃ મન્તઃ, યત્રેવ સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનિ, યત્રેવ નગરાગિ તત્રોપાગ
ચ્છન્તિ, ઉપાગત્વ સ્થાનિ ૨ રાજ્યાન્યુપાસાય વિહરન્તિ । તતઃ સત્ત્વ મટ્ટી ઓઠેન્
સંવચ્છતાસમાણે 'મયસ્તસાસાને-વર્ષદૂર્તી સત્થા ' નિઘ્નમિસ્તામિ ' તિ ' નિઘ્ન-
મિથામીતિ દોષા પ્રદી-યામીતિ મનમિ પ્રચાગ્યતિ=નિશ્ચિનોતિ મ્મ ॥ સુ. ૩૬॥

કુમ્ભક રાજાને સી ડન જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ કા વિપુલ અજનાદિ
રૂપ ચતુર્વિધ આજ્ઞા સે તથા પુરુષ; પશ્ચ, મય માલ્યાદિ સે મત્કાર
ક્રિયા । (જાય પશ્ચિમગ્ગેઝ) યાવત કિર ડન્હે વિવર્જિત કર દિયા ।
(તળે તે જિયમત્તુ પામોરુવા કુમ્ભ ન રણા વિમર્જિત્તા સમાળા
જેળેવ સાદ સાદ રજ્જાઢ જેળેવ નગરાઢ તેળેવ ઉપાગચ્છતિ ઉપાગચ્છિ
ત્તા મગાઢ રજ્જાઢ ઉપમવર્જિત્તા વિહરતિ તળે મટ્ટી ઓઠા સવચ્છ
રાસમાણે નિઘ્નમિસ્તામિ તિ મળ પહારેઢ) કુમ્ભ રાજા કે દ્વારા વિ
સર્જિત હોતે હુળ જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજા જર્હા અપને ૨ રાજ્ય ડીર ડન
મેં સી જહા અપને ૫ મટ્ટ યે વઢા આયે । વઢા આકર ધે સય અપને ૨
રાજ્ય કાયાં મેંમલગ્ન હો ગયે ।

વર્ષ સમાપ્ત હોને પર દોષા ચારણ પહુલા જેમા મહિ પ્રમુખે નિશ્ચિત
વિચાર કર લિયા । મૂલ " ૩૬ "

આદોશો તોગજ પુષ, વચ, ગ, માદ્ય વગેરેના નિવાર દર્શો (જાય
પશ્ચિમગ્ગેઝ) ત્યારબાદ તેઓને વિનાય દર્શો

(તળે તે નિયમત્તુ પામોરુવા કુમ્ભ ન રણા વિમર્જિત્તા સમાળા જેળેવ
સાદ સાદ રજ્જાઢ જેળેવ નગરાઢ તેળેવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગચ્છિત્તા મગાઢ રજ્જાઢ
ઉપમવર્જિત્તા વિહરતિ, તળે મટ્ટી ઓઠા સવચ્છરાસમાણે નિઘ્નમિસ્તામિ તિ
મળ પહારેઢ)

કુમ્ભ રાજાને ત્યાંથી વિનાય થડને છુટાવતુ પ્રમુખ ગત્તઓ ન્યાં પોત
પોતાનુ રાજ્ય અને તેમા પબુ ન્યા પોતપોતાના મહેલો દત્તા ત્યા ગયા ત્યા
જાડને તેઓ બધા પોત પોતાના રાજગામમાં પહોંચાડ ગયા

એ વર્ષ પડી દીક્ષા ધારણ કરીશ, મહલાં પ્રમુખે આ જાનને ચોક્કસ
વિચાર કરી લીધો દત્તો ॥ મૂલ " ૩૬ " ॥

खलु ते जितशत्रुप्रमुखा 'मल्लिस्स अरहतो' मन्त्या उईतः, एतमर्थ=उक्तमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति स्म ।

ततः खलु मल्ली अहंन्, तान् जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञो गृहीत्वा=सार्धनीत्या यज्ञेय कुम्भको राजा तत्रोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य पादयोः 'पाडेइ' पातयति=प्रणमयति, ततः खलु कुम्भको राजा तान् जितशत्रुप्रमुखान् विपुलेन=प्रचुरेण, अशनपानखाद्यस्वाग्नेन=चतुर्विधाऽऽहारेण, पुष्पपत्रामाल्या

होकर मेरे साथ जिन दीक्षाधारण करना चाहते हो तो हे देवानुप्रियो ! जाओ और अपने अपने राज्य में पहिले अपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करो-स्थापित करके फिर पुरुष सहस्र चाटिनी शिबिकाओं पर बैठो- (दुद्धा समाना मम अतिय पाडभगवह) उन पर बैठे हुए फिर हमारे पास आओ । (तएण ते जियसत्तू पामोकखा मल्लिस्स अरहओ एयमद्व पडिसुणेति) इस प्रकार उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं ने मल्ली अरिहत की इस घात को स्वीकार कर लिया । (तएण मल्ली अरहा-ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुभए-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि त्ता कुभगस्स पाएसु पाडेइ, तएण कुभए ते जियसत्तू पामोकखे विपुलेण असण ४ पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण समकारेइ) इस के पश्चात् उन मल्ली अरिहत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं को अपने साथ लिया और लेकर वे जहा कुम्भक राजा थे वहा पहुँचे वहा पहुँच कर उन्होंने ने कुम्भक राजा के चरणोंमें झुका कर उन से वदना करवाई ।

કરવા ઇચ્છતા હો તો હે દેવાનુપ્રિયો ! પોત પોતાના રાજ્યમાં તમે જાઓ અને ત્યાં પહેલા રાજગાદીએ પોતપોતાના મોટા પુત્રને બેસાડો અને પછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં બેસો (દુદ્ધા સમાના મમ અતિય પાડભગવહ) અને મારી પાસે આવો

(તएण ते जियसत्तू पामोकखा मल्लिस्स अरहओ एयमद्व पडिसुणेति)
મલ્લી અરિહતની આ વાતને જાણી જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્વીકારી લીધી
તएण मल्ली अरहा ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छि त्ता कुभगस्स पाएसु, पाडेइ, तएण कुभए ते जियसत्तू पामोकखे विउ-
लेण असण ४ पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण समकारेइ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરહતે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને પોતાની સાથે લીધા અને લઇને તેઓ જ્યાં કુભક રાજા હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને કુભક રાજાના અશ્વોમાં બંધન કરાવ્યા

કુભક રાજાએ પણ જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓનો વિપુલ અગત્ય રહે ચાર

द्वारेण सत्करोति, यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखा कुम्भकेन
राज्ञा विसर्जिताः मन्तः, यत्रैव स्वानि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रैवोपाग
च्छन्ति, उपागत्य स्वानि २ राज्यान्पुरसाय विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अर्हन्
संवच्छरात्रसाणे 'सवच्छरात्रसाने=र्यादूतौ सत्या ' निखलमिस्सामि ' ति ' निष्क-
मिष्यामीति दीक्षा ग्रहीष्यामीति मनसि प्रारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुम्भक राजाने भी उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि
रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र, गर माल्यादि से सत्कार
किया । (जाव पडिविसर्जेह) यावत् फिर उन्हें विसर्जित कर दिया ।
(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भए ण रण्णा विसज्जित्ता समाणा
जेणेव साइ साइ रज्जाइ जेणेव नगराइ तेणेव उवागच्छति उवागच्छि
त्ता सगाइ रज्जाइ उवमपज्जित्ता विहरति तएण मल्ली अरहा सवच्छ
रावसाणे निखलमिस्सामि ति मण पहारेइ) कुम्भक राजा के द्वारा वि
सर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहाँ अपने २ राज्य और उन
में भी जहाँ अपने ५ महल थे वहाँ आये । वहाँ आकर वे सब अपने २
राज्य कार्यों में लग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूँगा ऐसा महि प्रभुने निश्चित
विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

आहारोथा तेमअ पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य वगैरेथा सत्कार कर्था (जाव
पडिविसर्जेह) त्यागभाइ तेओने विहाय कर्था

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भए ण रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव
साइ साइ रज्जाइ जेणेव नगराइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइ
उवमपज्जित्ता विहरति, तएण मल्ली अरहा सवच्छरात्रसाणे निखलमिस्सामि ति
मण पहारेइ)

कुम्भक राजाने त्यागी विहाय थाने जितशत्रु प्रमुख राजाओं न्या पोत
पोतानु राज्य अने तेमा पणु न्या पोतपोताना महेवो छता त्या गया त्या
नधने तेओ यथा पोतपोताना राज्यजग्गमा परोवारि गया

ऐष्ट वर्ष पछी दीक्षा धारण करीश, मल्ली प्रभुओ आ जतने ओक्षम
विचार करी छीथो छता ॥ सूत्र " ३६ " ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेण समएण सकस्सासणं चलइ, तएणं सके देविदेइ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था—एवं खलु जवूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काणइ अरहताण निक्खममाणाण इमेयारूप अत्थ सपयाणं दलित्तए, त जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा ईदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमण देव सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया। जवूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, त गच्छह णं देवाणुप्पिया । जवूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणासि इमेयारूपे अत्थसपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेवमम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएण से वेसमाणे देवे सक्केण देविदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । जवूदीव दीव भारहं वासं मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो भवणांसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
 साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
 देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पडिसुणेति,
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति,
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वति, विउव्वि-
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूदीवे दीवे
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रत्नो
 भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
 पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य
 अणूणाइ सयसहस्साइं इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
 से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थर तहिर देसेर बहूओ
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुयादिणगभइभत्तवे
 यणा विपुल असणं पाणं खाइमसाइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता
 जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
 वा कप्पडिया वा पासदत्था वा गिद्धिन्था वा तेसिं य तहा

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएण सकस्सासण चलइ, तएणं
सके देविदेइ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ,
पउजित्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया
रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था-एवं खलु जंबूदीवे दीवे
भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रत्तो भवणासि मल्ली अरहा
निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम-
णागयाण सक्काणइ अरहताण निक्खममाणाणं इमेयारूप अत्थ
सपयाणं दलित्तए, त जहा-

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा ईदा दलयति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमाणं देव सदावेइ सदावित्ता एव वयासी
-एवं खलु देवाणुप्पिया। जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति
च सयसहस्साइ दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया । जंबु-
दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणसि इमेयारूपे
अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेवमम एयमाणत्तियं
पच्चप्पिणाहि, तएण से वेसमाणे देवे सक्केणं देविदेण देवराएण
एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ।
जंबूदीव दीवं भारहं वास मिहिल रायहाणि कुंभगस्स रत्तो
भवणासि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीति च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
देवा वेसमणेणं एव बुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा जाव पडिसुणेति,
पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति,
अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विउव्वति, विउव्वि-
त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जवूहीवे दीवे
जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स
रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रत्तो
भवणंसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य
अणूणाइ सयसहस्साइं इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थर तहि२ देसे२ बहूओ
महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुयादिणगभइभत्तवे
यणा विपुल असणं पाणं खाइमसाइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता
जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तद्वा

मूलम्—तेषां कालेणं तेण समएण सक्कस्सासण चलइ, तएणं सक्के देविदेइ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूवे अज्झत्थिण जाव समुप्पजित्था—एव खलु जब्बदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मण पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम णागयाण सक्काणइ अरहंताण निक्खममाणाण इमेयारूप अत्थ सपयाणं दलित्तए, त जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा ईदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमिण देव सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! जब्बदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया । जब्बदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणंसि इमेयारूपे अत्थसपदाण साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेवमम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमाणे देवे सक्केण देविदेण देवराएणं एव वुत्ते हट्ठे करयेल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! जब्बदीव दीव भारहं वास मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीति च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
 साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
 देवा वेसमणेणं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पडिसुणेति,
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमंति,
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रुवाइ विउव्वति, विउव्वि-
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जवूद्धावे दीवे
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रत्तो
 भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
 पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य
 अणूणाइ सयसहस्साइ इमेयारूवं अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
 से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थर तहिर देसेर बहूओ
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं वहवे मणुयादिणभइभत्तवे
 यणा विपुल असुणं पाणं खाइमसाइम उवक्खडेति, उवक्खडित्ता
 जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
 वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

आसत्थस्स वीरात्थस्स सुहासणरगयस्स तं विपुलं असणं४ परि-
भाएमाणा परिवेसेमाणा विहरति, तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव
वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइवसइ एवं भासइ, एवं पन्नवेइ, एवं
परुवेइ, एवं खल्ल देवाणु० । कुंभगस्स रण्णो भयणंसि सक्क-
कामगुणिय किमिच्छिय विपुलं असणं४ बहुणं समणाण य
जाव परिविसज्जइ ।

“ वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जइ बहुविहीयं ।

सुरअसुरदेवदाणव नरिद महियाण निम्बलमणे ॥१॥

तएणं मल्ली अरहा सबच्छरेणं तिन्निकोडिसया अट्टासीति
च होति कोडिओ असिति च सयसहस्साइ इमेयारूवं अत्थ
संपयाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३७ ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौधर्मस्य
शक्यस्य=इन्द्रस्य आसनं चरन्तिस्मिन्, ततः खलु शक्रो देवेन्द्र=देवानां मध्ये परमैश्व-
र्यवान् देवराज आसनं चरति पश्यति, दृष्ट्वा ‘ ओहिं ’ अत्रधि ‘ पउजइ ’ प्रयुङ्क्ते,
केन कारणेन ममामनं चरन्तीत्येतस्मिन् विषये स्वकीयोपगमं नयति स्पष्टार्थः ।
प्रयुज्य=अवधिज्ञानेन ‘ आभोएइ ’ आभोगयति=विशोभयति, मल्लो अहंन् समति

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीका—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(सक्कस्मासणं चलइ) इन्द्र का आसन चलायमान हुआ (तएण सक्के
देविदे देवराया आसण चाग्रिय पासइ, पासित्ता ओहि पउजइ, पउजि
त्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ) देवों के बीच में परम ऐश्वर्यवान्

“ तेण कालेण तेण समएण ” इत्यादि ॥

टीका—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते पणते (सक्क
स्मासण चलइ) इन्द्रनु आसन राजी उठ्यु

(तएण सक्के देविदे देवराया आसण चालिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउ
जइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ)

નિષ્ક્રમણ કર્તુમુદ્યક્તો વર્તત ઇતિ વિજ્ઞાનાતિ સ્મેત્યર્થ । ‘ આમોદ્તા ’ આમોગ
કૃત્વા ‘ ઇમેયારૂવે ’ અયમેતદ્રૂપઃ=અધ્યમાણસ્વરૂપ, આધ્યાત્મિક=આત્મનિષ્ઠઃ,
યાત્ સમ્પ્લવ’ સમુદપત્રત=સજાતઃ-એવં ચલુ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મધ્ય જમ્બૂદ્વીપે
ભારતે ભરતક્ષેત્રે દક્ષિણાર્ધ ભરતે, વર્ષે મિથિલાયા રાજધાન્યા કુમ્ભકસ્ય રાજો
ભવને મલ્લી અર્હન્ મનસિ પ્રધારયતિ-“ નિષ્ક્રામિષ્યામિ=અહ દીક્ષા ગ્રહીષ્યામિ”

શક દેવરાજ ને જ્યોં હી અપને આસન કો ચલાવમાન દેવા-તો દેવ
કર ઉસને અપને અવધિજ્ઞાન કો જોડા-જોડ કર મલ્લી અરિહત કો
ઉસને અવધિજ્ઞાન સે દેવા ।

યહા અવધિજ્ઞાન કો જોડને કા તાત્પર્ય યહ હૈં કિ જય ઇન્દ્રને અપને
આસન કો ચલાવમાન દેવા તો “ કિસ કારણ સે મેરા આસન કપા-
ચમાન હો રહા હૈં” ઇસ વિષયમેં અપને ઉપયોગ કો લગાયા । ઇસ પ્રકાર
સે અવધિજ્ઞાન-ઉપયોગ કા લગાના હી અવધિજ્ઞાન કા જોડના હૈં ।
(આમોદ્તા ઇમેયારૂવે અજ્ઞાતિય જાવ સમુપજ્જિત્યા-એવં ચલુ જમ્બૂ
દ્વીપે દીવે મારહે વાસે મિહિલાય કુમ્ભકસ્ય રણો ભવણસિ મલ્લી અરહા
નિવલ્લમિસ્સામિત્તિ મણ પહારેહ) મલ્લી અરિહત સપ્રતિ નિષ્ક્રમણ
કરને કે લિયે ઉચુક્ત હો રહે હૈં-એસા જાન કરકે ઉસકે મન મેં ઇસ
પ્રકાર કા યહ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ-ઇસ જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપ
મેં ભારત વર્ષ ક્ષેત્ર મેં મિથિલા નામકી નગરી મેં કુમ્ભક રાજા કે ભવન

બધા દેવોમા પરમ અર્થવાન દેવરાજ ઇન્દ્રે બ્યારે પોતાનુ આસન
ઢાલતુ બેથુ ત્યારે તેઓએ અવધિજ્ઞાનના મળધથી મલ્લી અરહતને બેથા
અહીં અવધિજ્ઞાનને બેડવાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે બ્યારે ઇન્દ્રે
પોતાના આસનને ડગમગ થતુ બેથુ ત્યારે આ કારણથી માર આસન ઢાલતુ
થયુ છે ? ” આ વિશે પોતાનો ઉપયોગ (ધ્યાન) ને લગાવ્યો આ ગીતે
અવધિજ્ઞાનને ઉપયોગમા લગાવવુ જ અવધિજ્ઞાનને બેડવુ તેમ કહેવાયછે

(આમોદ્તા, ઇમેયારૂવે અજ્ઞાતિય જાવ સમુપજ્જિત્યા એવં ચલુ જમ્બૂ
દ્વીપે દીવે મારહે વાસે મિહિલાય કુમ્ભકસ્ય રણો ભવણસિ મલ્લી અરહા નિવલ્લ-
મિસ્સામિત્તિ મણ પહારહ)

મલ્લી અરિહત હવે નિષ્ક્રમણના માટે તૈયાર થઈ રહ્યા છે આમ જાણીને
તેના મનમા આ જાતનો મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા
ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા, મિથિલા નામની નગરીમા, કુલકરાજના ભવનમા મલ્લીનામના
અરિહત પ્રભુ ‘ હુ દીક્ષા ધાવ્ણ કરીશ ? ” આ પ્રમાણે વિચાર કરી રહ્યા છે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतन्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुप्पन्नमगागयाण' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतानां
=भूतवर्तमानभविना, काञ्चन्यपरिणामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानां
यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामताभिमामेतदूपा=वश्यकामाणां 'अत्यसपयाण' अत्य
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुखा भवन्ति, तदा तेषा मातापित्रोर्गृहेऽर्थसपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः कियद्दत्तं ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

તિણેય ચ કોટિપયા અઢાસીતિ ચ હોતિ કોઢીઓ ।

અસિતિ ચ સપસદસ્તા ઇદા દલયતિ અરહાણ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણેવ ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિશ્ચ ભવન્તિ કોટથઃ ।

અશીતિશ્ચ શતપદસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણિ કોટિશતાનિ, અષ્ટાશીતિ કોટથઃ, અશીતિશતપદસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકારણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ ભવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં ભવન્તે
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કરૂંગા” એસા વિચાર
કર રહેં હું (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાગયાણ સવકાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિચ્ચમમાગાનાં હમેયારૂવ અત્ય સપયાણ દલિત્તણ)
હસ લિયે કાલત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોં કા પરમ્પરાગત યહ આચાર હૈ કિ હે
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર હુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરેં દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ પ્રદાન કરતે હું (ત જહા)
ઉસે કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ તીન સો કરોડ, અઢાસી કરોડ, ઓર
અસી લાખ સ્વર્ણ દીનારેં । વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય હન્દ્ર ઉન કે ભવન પર લાકર રલતે હું ।

(ત જીયમેય તીય પચ્ચુપ્પન્નમગા ગયાણ સવકાણ ૩ અરહતાણ ભગવતાણ
નિચ્ચમમાગાનાં હમેયારૂવ અત્યસપયાણ દલિત્તણ)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી ચાલતો આવેલો આ
પ્રમાણુનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થકર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણુ ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેનુ પ્રમાણુ આ પ્રમાણુ છે “ત્રણસો કરોડ, ઇંદ્રાશી કરોડ અને
એ શી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલુ દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોચાડે છે

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्कृता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिन्द्राणां मर्यादास्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकमने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'साहस्रं राहि' सहर=पापय । सहस्रं क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणतिय' आह्वितिकां प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पणं कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकात्

(एव स पेहेइ, મ પેહિત્તા વેસમણ દેવ સદાવેइ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) એસા વિચાર ઉસ શક્ત દેવેન્દ્ર ને કિયા । કર કે ફિર ઉસને વૈશ્રમણદેવ-કુબેર-કો બુલાયા-બુલાકર ઉસસે એસા કહા-(એવ લલુ દેવાણુપ્પિયા । જબૂદ્વીવે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીતિં ચ સયસહ-મ્સાહ દલહત્તણ) હે દેવાનુપ્રિય ! હસ જબૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત્ત્વર્ષ ક્ષેત્ર મેં મિથિલા નામ કો નગરી હૈ । ઉસ કે રાજા કુમ્ભક કે મહલ મેં મહી નામ કો તીર્થકર પ્રભુ હૈં વે દીક્ષા લેને કા વિચાર કર રહે હૈં । હસલિયે હન્દ્રો કા યહ પરમ્પરાગત નિયમ હૈ કિ વે ઉન કે નિષ્ક્રમણ મહોત્સવ કે સમય ત્રીન સૌ કરોડ, અઢાસી કરોડ, ઓર અસી લાખ સ્વર્ણ દીનારેં વાર્ષિક દાન મેં દેને કે લિયે ઉન કે માતા પિતાં કે મવન

(એવ સપેહેइ, સપેહિત્તા વેસમણ દેવ સદાવેइ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

તે શક્ત દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(એવ લલુ દેવાણુપ્પિયા ! જબૂદ્વીવે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીતિં ચ સયસહસ્રાહ દલહત્તણ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાંના રાજા કુલકના મહેલમાં મંદીરી નામના તીર્થકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી ગયા છે એટલા માટે હન્દ્રોનો આ વ્રતનો પરપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇકાદશી કરોડ અને એવી લાખ સોના મહેલો વાર્ષિક દાનના રૂપમાં તેમને ત્યાં ઘેર પહોંચાડે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत भावास
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुप्पन्नमगागयाणं' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतार्थ
=भूतवर्तमानभविनां, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः सक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानां
यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतदूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अत्यसपयाणं' अत्य-
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुखो भवन्ति, तदा तेषां मातापित्रोर्गृहेऽर्थमपद्रमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः क्रियद्द्रव्यं ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

તિષ્ણેય ચ કોટિમયા અઘાસીતિ ચ હોતિ કોટીઓ ।

અસિતિ ચ સપસહસા ઇદા દલયતિ અરહાણ ॥ ૧ ॥

ત્રીષ્ણેય ચ કોટિશતાન્યઘાશીતિશ્ચ ભવન્તિ કોટય' ।

અશીતિશ્ચ શતપહસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ત્રીણિ કોટિશતાનિ, અઘાશીતિ કોટયઃ, અશીતિગતસહસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકારણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ ભવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં ભવને
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કરુંગા” એસા વિચાર
કર રહેં હું (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાગયાણ સક્રાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિસ્સમમાગાનાં ઇમેયારૂવ અત્ય સપયાણ દલિસણ)
હસ લિધે કાલત્રયવર્તીં દેવેન્દ્રો કા પરમ્પરાગત ચત્ર આચાર હૈ કિ જે
દીક્ષા લેને કે લિધે તત્પર હુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરેં દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ત પ્રદાન કરતે હું (ત જહા)
ઉસેં કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ ત્રીન સૌ કરોડ, અઘાસી કરોડ, ઓર
અસ્સી લાખ સ્વર્ણ દીનારેં) વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય હન્દ્ર ઉન કે ભવન પર લાકર રખતે હું ।

(ત જીયમેય તીય પચ્ચુપન્નમગા ગયાણ સક્રાણ ૩ અરહતાણં ભગવતાણં
નિસ્સમમાગાનાં ઇમેયારૂવ અત્યસપયાણ દલિસણ)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી ચાલતો આવેલો આ
પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થ કર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે “ત્રણસો કરોડ, ધ્રુવાશી કરોડ અને
એ શી લાખ સ્વર્ણસુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થ કરોના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોચાડે છે

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय । एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतमहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वपाप्मिद्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकमवने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'सांहराहि' सहर=पापय । सहस्र क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमागच्छिय' आज्ञप्तिका प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पणं कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैगमुक्तो हृष्टः करतलपरिवृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिमुण्ड' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव सपેહેઠ, સપેહિત્તા વેસમણ દેવ સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) એસા વિચાર ઉસ શક્ર દેવેન્દ્ર ને કિયા । કર કે ફિર ઉસને વૈશ્રમણદેવ-કુવેર-કો ઘુલાયા-ઘુગ્ગર ઉસસે એસા કહા-(એવ લલ્લુ દેવાણુપ્પિયા । જબૂદ્દીવે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીતિં વ સયસહ-સ્સાહ દલહ્ત્તણ) હે દેવાનુપ્રિય ! હસ જબૂદ્દીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત્ત્ વર્ષ ક્ષેત્ર મે મિથિલા નામ કી નગરી હૈ । ઉસ કે રાજા કુમ્ભક કે મહલ્લ મેં મહી નામ કી તીર્થકર પ્રભુ હૈં વે દીક્ષા લેને કા વિચાર કર રહે હૈં । હસલિયે ઇન્દ્રોં કા યહ પરમ્પરાગત નિયમ હૈ કિ વે ઉન કે નિષ્ક્રમણ મહોત્સવ કે સમય ત્રીન સૌ કરોઢ, અઢ્ઢાસી કરોઢ, ઓર અસી લાલ્લ સ્વર્ણ દીનારેં વાર્ષિક દાન મેં દેને કે લિયે ઉન કે માતા પિતાં કે મવન

(એવ સપેહેઠ, સપેહિત્તા વેસમણ દેવ સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)
તે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુવેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(એવ લલ્લુ દેવાણુપ્પિયા ! જૂનદીવે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીતિં વ સય સદસ્સાહ દલહ્ત્તણ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જબૂદ્દીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાના રાજા કુલકના મહેવમા મઠની નામના તીર્થ ઠર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ બાતનો પર પરાયી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇકચાશી કરોડ અને એથી લાખ સોના મહોદો, વાર્ષિક દાનના રૂપમા તેમને ત્રી ગણેર પહોચાડે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीवमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुपन्नमगागयाण' अतीत प्रत्युत्पन्नानामतानां
=भूतवर्तमानभाविना, काज्यापरतिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम्
यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतद्रूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अत्यसपयाण' अत्य-
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुखो भवन्ति, तदा तेषां मातापितृगृहेऽर्थमपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः क्रियद्द्रव्यं ददतीत्यासाद्रूपायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

तिष्णेय य कोटिमया अद्वासीति च होंति कोटीओ ।

अસિતિ ચ સપસહસસા ઇદા દહયતિ અરહાણ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણ્યેવ ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિથ મવન્તિ કોટયઃ ।

અશીતિથ શતમહસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણિ કોટિશતાત્રિ, અષ્ટાશીતિ કોટયઃ, અશીતિશતસહસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકારણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ મવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં મવન્તે
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કરુંગા” એસા વિચાર
કર રહેં હૈં (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાગયાણ સવકાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિઃસ્રવમમાગાનાં હમેયારૂઢ અત્ય સપયાણ દલિસણ)
હસ લિયે કાલગ્રયવર્તી દેવેન્દ્રોં કા પરમ્પરાગત ચલ આચાર હૈ કિ જે
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર છુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરેં દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ત પ્રદાન કરતે હૈં (ત જહા)
ઉસં કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ તીન સૌ કરોડ, અદ્વાસી કરોડ, ઓર
અસ્સી લાગ્વ સ્વર્ણ દીનારેં । વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય હન્દ્ર ઉન કે મવન પર લાકર રલ્લતે હૈં ।

(ત જીયમેય તીય પચ્ચુપન્નમગા ગયાણ સવકાણ ૩ અરહતાણં ભગવતાણં
નિઃસ્રવમમાગાનાં હમેયારૂઢ અત્યસપયાણ દલિસણ)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી આલતો આવેલો આ
પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીથ કર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેણે પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે “ત્રણસો કરોડ, ઈકાદશી કરોડ અને
એકી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થ કરોડના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે.

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्र-
मता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिन्द्राणा
मर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीपे
भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकभवने इमामेतदूषामर्यसपद खलु 'साह-
राहि' सहर=मापय । सहस्र क्षिमेव=शीत्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आहसिका
प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः
करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेड'
प्रतिशृणोति=एव "कस्मियामि" इत्युत्तमा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव स પેહેડ, સ પેહિત્તા વૈસમણ દેવ સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)
એસા વિચાર ઉસ શક્ર દેવેન્દ્ર ને કિયા । કર કે ફિર ઉસને
વૈશ્રમણદેવ-કુવેર-કો બુલાયા-બુલાકર ઉસસે એસા કહા-(એવ લલુ
દેવાણુપિયા । જમ્બૂદ્વીપે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીર્નિ ચ સયસહ-
સ્તાહ દલહ્તણ) હે દેવાનુપ્રિય ! હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત
વર્ષ ક્ષેત્ર મેં મિથિલા નામ કી નગરી હૈ । ઉસ કે રાજા કુમ્ભક કે મહલ
મેં મહી નામ કી તીર્થકર પ્રભુ હૈં વે દીક્ષા લેને કા વિચાર કર રહે હૈં ।
હસલિયે હન્દ્રોં કા યહ પરમ્પરાગત નિયમ હૈ કિ વે ઉન કે નિષ્ક્રમણ
મહોત્સવ કે સમય ત્રીન સૌ કરોડ, અઢાસી કરોડ, ઓર અસી લાખ
સ્વર્ણ દીનારેં વાર્ષિક દાન મેં દેને કે લિયે ઉન કે માતા પિતાં કે ભવન

(એવ સપેહેડ, સપેહિત્તા વૈસમણ દેવ સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

તે રાકે દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ
કુવેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(એવ લલુ દેવાણુપિયા ! જમ્બૂદ્વીપે દીવે ભારહે વાસે જાવ અસીર્નિ ચ સય
સહસ્તાહ દલહ્તણ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા મિથિલા
નામની નગરી છે ત્યાંના રાજા કુલકના મહેલમા મહની નામના તીર્થ કર
પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે હન્દ્રોને! આ
ભવનો! ૫૦ પરાવી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહો-
ત્સવના વખતે ત્રણસો ષ્ઠાઈ, ઇંકચાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહોરો
વાર્ષિક દાનના રૂપમા તેમને ત્રી વેર પહોંચાડે

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत्-हे देवानुप्रियाः । गच्छत स्वच्छं पृथं
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो
भवने-त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिलक्षानि, इमामेतद्वा
मर्यसपद "साहरह" सहरत=प्रापयत सहस्य ममाश्रितिकां प्रत्यर्पयत । ततः स्वच्छं
तेजुम्भकादेवाः, 'वेसमणेण' वैश्रमणेन=एवमुक्ता सन्तो द्रष्टुं यावत् प्रति
शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'उत्तरपुरत्तियम्' उत्तर पौरस्त्यम्=ईशान-
कोणरूप 'दिसोभाग' दिग्भागम्, 'अववमति' अवकामन्ति, गच्छन्ति,
अवक्रम्य=गत्वा यावत्-उत्तरवेउच्चियाड रूपाः 'उत्तरवैक्रियाणि' रूपाणि विकु-
र्वन्ति विकुर्वगा कुर्वन्ति 'विकुर्विता' विकुर्विता, 'विकुर्व' इति सौम्रो धातु,
तेन ल्यब न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि 'वीडवयमाणा'
व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत वर्ष, यत्रैव मिथिला
राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य
राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्-अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षानि इमामेतद्-
रूपामर्थमम्पद 'साहरति' सहरन्ति=प्रापय । सहस्य-यत्रैव वैश्रमणो देवस्त
त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्त मस्तकेऽञ्जलिं

पर पहुँचावें (तं गच्छह्य देवाणुप्पिया । जम्बूद्वीपे दीवे भारहे वासे
मिहिलाण कुमगभवणसि इमेयारुवे अत्थ सपदाण साहराहि) अत
हे देवानुप्रिय । तुम जाओ-और जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत
वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुम्भक राजा के भवन पर इतनी
पूर्वोक्त अर्थ सपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता विष्णामेव मम एयमाण
स्सिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें हस्त की खबर दो । (तएण
से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल जाव
पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छह्य देवाणुप्पिया ' जम्बू द्वीपे दीवे भारहे वासे मिहिलाण कुमग
भवणसि इमेयारुवे अत्थसपदाण साहराहि)

ओटला भाटे डे देवानुप्रिय । तमे जज्जो आने जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा
स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमा विद्यमान मिथिला नगरीना कुलक राजाना भवन उपर
उद्धा सुज्जण अर्थ सपत्ति-ओटले के द्रव्य तेमने त्या पडोयाडो (साहरित्ता
विष्णामेव मम एयम) गादि) पडोयाडीने तमे अभने सुथित करे
(तएण से वेस) देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल
जाव पडिसुणेइ)

કૃત્વા યાવત્-પ્રત્યર્પયન્તિ, ભવદીયાજ્ઞાનુસારેણ સર્વસાધિતમસ્માભિરિતિ નિવેદયન્તિ સ્મ । તતસ્તદનન્તરં ચ્ચ સ વૈશ્રવણો દેવો યજ્ઞે વૈશ્વકો દેવેન્દ્રો દેવરાજસ્તત્રૈવોપાગ-
ચ્છતિ, ઉપાગત્ય કરતપરિગૃહીત દશનચ યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ ।

ગયે उस वैश्रवण देव ने हर्षित एव सतुष्ट होते हुए अपने दोनों हाथों की अजलि बना कर उसे मस्तक पर रक्खा और नमस्कार कर देवेन्द्र की बात स्वीकार कर ली । “ मैं ऐसा ही करूँगा ” इस प्रकार कह कर उस ने उन की आज्ञा मान ली ।

(પડિ સુણિત્તા જમણ દેવે સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુઝમે દેવાણુપ્પિયા ! જવૂદીવ દીવ ભારહ વાંસ મિહિલ રાયહાણિ કુમ્મ ગસ્સ ભવણસિ તિન્નેવ ય કોહિસયા અઢ્ઢાસીય ચ કોહીઓ આસે યં ચ સયસહસાઙ અયમેયારૂવ અત્થ સપયાણ સાહરેહ) આજ્ઞા માનકર ફિર ઉમ ને જૂમ્મકદેવોં કો બુલાયા ઓર બુલા કર ઉન સે એસા કહા-
હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ જવૂદીપ નામ કે ઇસ દ્વીપ મેં સ્થિત ભારત વર્ષ ક્ષેત્રાન્તર્ગત મિથિલા નામ કી રાજધાની મે જાઓ-ઓર જાકર વહા કે કુમ્મક રાજા કે મહલ મેં ત્રીન સૌ અઢ્ઢાસી કરોડ ૮૦, અસી લાખ સુવર્ણ દીનારે પહુંચાઓ (સાહરિત્તા) પહુંચા કર (મમ ઇયમાણાત્તિય પન્ચવ્વિણેહ) ફિર સુઝે ઇસ આજ્ઞા પ્રતિ કી પીછે લખર દો । (તણ

શક દેવેન્દ્ર દેવરાજ વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલા વૈશ્રવણ દેવ કુપેર હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને પોતાના બંને હાથોની અબલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને દેવેન્દ્રની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી “ હું આમ જ કરીશ ” આ પ્રમાણે કહીને તેમની તેણે આજ્ઞા સ્વીકારી

(પડિસુણિત્તા જમણ દેવે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છહ ણ તુઝમે દેવાણુપ્પિયા ! જવૂદીવ દીવ ભારહ વામ મિહિલ રાયહાણિ કુમ્મગસ્સ ભવણમિ તિન્નેવ ય કોહિસયા અઢ્ઢાસીય ચ કોહીઓ આસે યં ચ સયસહસાઙ અયમેયારૂવ અત્થસપયાણ સાહરેહ)

આજ્ઞા સ્વીકારીને તેણે જૂલક દેવાને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જ જવૂદીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં વર્તમાન મિથિલા નામની રાજધાનીમાં બાંધે અને જઈને ત્યાંના કુલક રાજાના મહેલમાં ત્રણસો કરોડ, ઇંકચાગી કરોડ, એ શી લાખ સોના મહેરો પકાયાઢો (મમ ઇયમાણાત્તિય પન્ચવ્વિણેહ) પહોંચાડયા બાદ મારી આજ્ઞા પ્રમાણે સપૂજ્યપણે કામ પૂર થઈ ગયું છે તેની અને ખબર આપો

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एममादीत्-हे देवानुमियाः ! गच्छत स्वस्व पूयं
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो
भवने-त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षानि, इमामेतद्गुण-
मर्थसपद "साहरह" सहरत=भाषयन् सहरत्य ममाज्ञसिक्तां प्रत्यर्पयत । ततः स्वस्व
तेजुम्भकादेवाः, 'वेसमणेण' यैश्रमणेन=एशमुक्ताः सन्तो दृष्टुं यावत् प्रति
शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=श्रीकृत्य, 'उत्तरपुरत्थिम' उत्तर पौरस्त्यम्=ईशान-
कोणरूप 'दिसीभाग' दिग्भागम्, 'अयममति' अयक्रामन्ति, गच्छन्ति,
अवक्रम्य=गत्वा यावत्-'उत्तरवेउच्चियाड रूपाड' उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकु-
र्वन्ति विकुर्वगा कुर्वन्ति 'विकुर्वित्ता' विकुर्वित्ता, 'विकुर्वा' इति सौत्रो धातु,
तेन व्यव न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिज्यगत्या देवसम्यन्धि 'वीडव्यमणा'
व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यनैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत उर्ष, यत्रैव मिथिला
राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य
राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानियावत्-अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षानि इमामेतद्गु-
णामर्थमप्यद 'साहरति' सहरन्ति=भाषय । सहरत्य-यत्रैव यैश्रमणो देवस्त
त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्त मस्तकेऽञ्जलि

पर पहुँचावें (त गच्छहण देवानुप्पिया ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वासे
मिथिलाए कुम्भगभवणसि इमेयारूवे अथ सपदाण साहराहि) अत
हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ-और जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत
वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुम्भक राजा के भवन पर इतनी
पूर्वोक्त अर्थ सपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाण
स्तिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो । (तएण
से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल जाव
पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छहण देवानुप्पिया ' जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते वासे मिथिलाए कुम्भग
भवणसि इमेयारूवे अथसपदाण साहराहि)

ओटला भाटे छे देवानुप्रिय ! तमे ज्ञेयाने जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा
स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमा विद्यमान मिथिला नगरीना कुलक राजाना लवन उपर
कह्या सुण्ण अर्थ सपत्ति ओटले छे द्रव्य तेभने त्या पडोयाओ (साहरित्ता
खिप्पामेव मम एयमाणस्तिय पच्चप्पिणाहि) पडोयाडीने तमे अभने सूचित करे

(तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल
जाव पडिसुणेइ)

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ મહી અર્હન્ 'કટાકર્લિ' કલ્યાણલ્પે=પ્રતિદિવસ 'જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ' યાવત્-માગધરુ પ્રાતરાશ, મગધદેશમશ્વન્ધિન પ્રાતરાશિં -પ્રામાતિરુ ભોજનકાલ યાવત્ આરમ્ભ પ્રહરદ્વયપર્યન્તં વહુભ્યઃ 'સળાહાણ ય' સનાથેભ્ય -સ્વસ્વામિકેભ્યશ્ચ 'અળાહાણ ય' અનાથેભ્યશ્ચ=રક્તેભ્યશ્ચ, 'પથિયાગ ય' પાન્થિકેભ્યઃ પન્થાન નિત્ય ગચ્છન્તીતિ પાન્થાસ્ત એવ પાન્થિકાસ્તેભ્યશ્ચ, 'પહિયાણ ય' પથિકેભ્યઃ-પથિ ગચ્છન્તીતિ પાથિકાસ્તેભ્યશ્ચ, 'કરોડિયાણ ય' કારોડિકેભ્યઃ=કરોડથા કપાલેન ચરન્તીતિ કરોડિકાસ્તેભ્યશ્ચ, 'સ્વપ્પરધારી' હિતિમાપાપ્રસિદ્ધેભ્યશ્ચ, 'કપ્પડિયાણ ય' કાર્પટિકેભ્ય -કર્પટશ્ચરન્તીતિ કાર્પટિકાસ્તેભ્યઃ, કન્થાધારિ-ભિક્ષુકેભ્ય, એકમેરુહિરણ્યકોટિમ્, તથા-'અટ્ઠ ચ સા જેનેવ વેસમણે દેવે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિન્ના કરયલ્લં જાવ પચ્ચપ્પિણતિ) રત્તવર ફિર વે જહાં વૈશ્રમણ દેવ થા વહાં ગયે વહા જાકર ઉન્હો ને હાથ જોડકર " આપકી આજ્ઞાનુસાર હમને કુમ્ભક રાજા કે ભવન અર્થ સપદા પહુંચા દી હૈ, એસી સ્વર ઉસે પીછે કર દી । (તણ મલ્લી અરહા કલ્લાકર્લિ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહુણ સળાહાણ ય અળાહાણ ય પથિયા ય પહિયાણ ય કરોડિયાણ ય કપ્પડિયાણ ય એગમેગ હિરણ્ણકોડિં અટ્ઠ ય અણૂગાહ સયસહસ્સાહ હમેયારુવ અત્થં સંપદાણ દલયહ) હસકે ઘાદ મલ્લી અરિહત પ્રમુ ને કલ્યાકલ્પ-પ્રતિ-દિન પ્રાતઃ સમય સે લેકર દોપહર તક અપને સનાથોં કો, અનાથોં કો, પન્થિકોં કો, પથિકોં, સ્વપ્પર ધારિયો કો, કન્થા ધારિયો કો પ્રતિદિવસ ૧ વર્ષ તરુ ૧ કરોડ ૮૦ અસ્મી લાસ સ્વર્ણ દીનારેં દી ।

(સાહરિત્તા જેનેવ વેસમણે દેવે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિન્ના કરયલ્લં જાવ પચ્ચપ્પિણતિ)

મૂકયા પંછી તેઓ જ્યાં વૈશ્રમણ દેવો હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેઓએ હાથ જોડીને " તમારી આજ્ઞા મુજબ અમેએ કુસત રાજાના લવનમાં અર્થ-સપત્તિ પહોંચાડી દીધી છે " આ પ્રમાણેની સૂચના કરી

(તણ મલ્લી અરહા । કલ્લાકર્લિ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહુણ સળાહાણા ય અળાહાણ ય પથિયાણય પરિયાણ ય કરોડિયાણ ય કપ્પડિયાણય એગમેગ હિરણ્ણકોડિં અટ્ઠ ય અણૂગાહ સયસહસ્સાહ હમેયારુવ અત્થસંપદાણ દલયહ) ત્યારબાદ મલ્લી અરહત પ્રમુએ કલ્યાકલ્પ દરરોજ મવારના પખતથી માટીને બપોરસુધી ઘણા સનાથોને, અનાથોને, પાથોને અને પથિકોને, સ્વપ્પરધારીઓને, કન્થાધારીઓને એક વર્ષ સુધી એક કરોડ એસી લાખ સોના મહોરો આપી.

ते जभगा देवा वेसमणेण एव घुत्ता समाणा इदं तुद्धा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीमाग अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तर वेउव्वियाह, रुवाह विउव्वति) इस के बाद वैश्रमण देव के द्वारा इस तरह अज्ञापित हुए उन जम्भकदेवों ने हर्षित एवं सतुष्ट होकर उस की आज्ञा को मान लिया-स्वीकार कर लिया-। स्वीकार कर वे ईशान कोण की ओर गये। वहा जाकर उन्होंने ने उत्तर वैक्रिय रूपों की विकुर्वणा की-(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइव्वयमाणा जेणेव जजूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुमगस्स रण्णोभवणे तेणेव उवागच्छति) विकुर्वणा करके फिर वे उस देव गति संधी उत्कृष्ट गति से यावत् चलते हुए जहा जजूदीप नाम का द्वीप भारत वर्ष नाम का क्षेत्र, उस में भी जहा मिथिला नाम की राजधानी उसमें भी जहा कुभक राजा का राज प्रासाद था-वहा आये।

(उवागच्छित्ता कुमगस्स रण्णो भवणसि तिन्नि कोडित्था जाव साहरति) वहा आकर उन्होंने ने कुभक राजा के भवन में तीनसौ अट्ठासी करोड और ८० लाख सुवर्ण दीनारसे भंडार भर दिया। (साहरि-

(तएण जभगा देवा वेसमणेण एव घुत्ता समाणा इदं तुद्धा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीमाग अवक्कमंति अवक्कमित्ता जाव उत्तर-वे उव्वियाह रुवाह विउव्वति)

त्यारभाह वैश्रवण्य द्वारा आज्ञापित वयेला जूलक देवाओ हर्षित तेभज सतुष्ट थधने तेनी आशाने भानी लीधी ओटले हे तेनी आशा स्वीकारी स्वीकार्या भाह तेओ धशान केओ तरह गया त्या अधने तेओओ उत्तर वैक्रिय रूपोनी विकुर्वणा करी

(विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइव्वयमाणा जेणेव जजूदीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुमगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छति)

विकुर्वणा कर्या पठी तेओ देवगति संधी उत्कृष्ट गतिथी आलता न्या जजूदीप नामे द्वीप, भारतवर्ष नामे क्षेत्र अने तेमा पण्य न्या मिथिला नामनी राजधानीमा कुलक राजानो भडेव डते त्या गया

(उवागच्छित्ता कुमगस्स रण्णो भवणसि तिन्नि कोडित्था जाव साहरति) त्या अधने तेओओ कुलक राजाना भडेवमा त्रयसे धक्याशीकरोड अने ओशी लाख सोनाभंडारे साक्षर-जलनामा भूमी दीधी

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्याः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था या, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाषमाणा' परिभाषयन्त.
=विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशायस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते. साध्वर्यं वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर चर्हा जो जैसे आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पथियावा पथिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखण्डी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्यस्म, वीसत्यस्स सुहासनवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाषमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्थों को, एव सुखासनवरगतों को उन विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वहीं पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिंघाडग जाव बहुजणो अणमणस्स एवमाइ
क्खइ, एव मामइ एव पन्नवेइ, एव परुवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहार तैयार करीने त्या गमे तेरा भावुओ आवता (त जहा) जेभके
(पथिया वा पथिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)
पथिक जन, अप्परधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाषण्डी धर्मने आश्वन्नारा
अने गृहस्थीओ गमे ते जत पथना लोके त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्यस्स, सुहासनवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ जधाने तेभज ते देशभा रहनेारा जीव धणु भावुओने, आश्व
स्थोने, विश्वस्थोने अने सुखासनवर गतोने ते पुष्कण प्रभावुभा जनापवाभा
आवेले आहार पडे यत्राभा आवतो छतो तेभज तेओने त्याज जमाडवाभा
पणु आवता छता

(तएण मिहिलाए रिं ग.डग जाव बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

अन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि 'अंशाणि एककोटिमष्टशानि च स्वर्णदीनाराणि इमामेतद्रूपामर्थसम्पदं 'दलयइ' ददाति ।

ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्या तत्र तत्र=प्रवाप्ता पुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे=शृङ्गाटकादौ यद्दीर्घमहानसगच्छाः ओदनादीनां पाकगृहाणि=कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथंभूता इत्याह—'दिन्न भक्ष्यभक्ष्येयणा' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप धर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा, यद्वा=भृत्तिर्मरण पोष्यगार्थिमन्नादिक, भक्त-स्व भोजनार्थ, वेतन-अशनादि सस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त वेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यम्—'उवक्खड्ढेति' उपस्क्रुवन्ति चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति 'तज्जहा' तद् यथा-

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहा पान्थिक शब्द से, तथा जय कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए हैं । (तएण से कुम्भ मिथिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभक्ष्यभक्ष्येयणा विपुल असण पाण खइम साइम उवक्खड्ढेति उवक्खड्ढित्ता जे जहा आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुम्भक राजा ने मिथिला राजधानी में जहाँ तहा अवान्तर पुर आदि में-उस प्रदेश में शृङ्गाटक आदि रास्तों में अनेक रसोई घर स्थापित करवा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे ।

इसके उपलक्ष्य में उन्हें तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहा से भोजन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहां से वेतन भी मिलता था । वे विपुल मात्रा में अशन पान, स्वाद्य, स्वाद्य तथा रूप

हरदोअ नित्य रस्ते आलता रडिनाशओ अड्डी 'पाथिक' शण्ठथी तेमज्ज डोअडि द्विपस रस्ते आलनाशओ 'पाथिक' शण्ठथी सभज्जवा नेधओ

(तएण से कुम्भ मिथिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभक्ष्यभक्ष्येयणा विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खड्ढेति, उवक्खड्ढित्ता जे जहा आगच्छइ)

त्यारण ६ कुल्लक राअओ मिथिला नगरीमा अघे अचान्तरपुर वगेरेमा ते प्रदेशोमा शृङ्गाटक वगेरे रस्ताओमा धण्ण रसोअ धरो स्थापित करावडाओ तेओमा धण्ण रसोअयाओ अशन, पान वगेरे इपमा पुअण प्रभाअुमा आरे जतना आहारो ते १२ करता डता

ओना जडल तेओने तथा तेमनी साधेना जीअ भाअुओने त्याअी दोअन भगुं डनुं अने रसोअ तेथार करनार भाअुओने पगार पअु भगतो डतो तेओ पुअण प्रभाअुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्यना इपमा जतना

पान्थिका वा, पथिका वा क़ारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्या वा' पाखण्डस्थाः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था ऽ, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाषमाणा' परिभाषयन्तः
=विभाग कुर्वन्त 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे गृहो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आमन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशास्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया गृहाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्मि, एव 'भासइ' भाषते, साश्चर्यं वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर वहाँ जो जैसे आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पयियावा पहिया वा क़रोडिया वा, कण्डिया वा पासडत्या
वा गिहत्या वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्थस्म, बीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाषमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तो को, एव सुखासनवरगतो को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिंघाडग जाव बहुजणो अणमणस्स एवमाइ-
क्खइ, एव मामइ एव पन्नवेइ, एव परूवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गमे तेरा भाषुमो आवता (तजहा) जेभके
(पयिया वा पहिया वा क़रोडिया वा कण्डिया वा पासडत्या वा गिहत्या वा)
पाथिक जन, अप्परधारी भिक्षुक, उधाधारी भिक्षुक, पाखडी धर्मने आश्रयनारा
अने गृहस्थीओ गमे ते जत पथना लोके त्या आवना

(तेसिय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष-
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ जधाने तेभज ते देशभा रहेंनारा जीव धण्णा भाषुमोने, आश्व-
स्थोने, विश्वस्तोने अने सुखासनवर गतोने ते पुष्कण प्रमाषुमा जनाववामा
आवेलेो आहार पके यवामा आवतो डतो तेभज तेओने त्याज जमाडवामा
पण्ण आवता डता

(तएण मिहिलाए रिंघाडग जाव बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

અન્યૂનાનિ પૂર્ણાનિ શતસહસ્રાણિ '=અશાણિ એકકોટિમણ્ડલાણિ ચ મ્વર્ણેદીનારામિ
દમામેતદ્દૃષામર્થસમ્પદ 'દલયઈ' દદાતિ ।

તતસ્તદનન્તર રાહુ કુમ્મકો રાજા મિથિલાયાં રાજધાન્યા તત્ર તત્ર=અવાન્તર
પુરાદૌ, તથા તસ્મિન્ તસ્મિન્ દેશેદેશે=શૃંગાટકાદૌ વહોમ્હાનસલાભાઃ ઓદનાદીનાં
પાકગૃહાણિ=કારયતિ । તતઃ સ્વલુ વહ્યો મનુષ્યાઃ તે કવયભૂતા ઇત્યાહ-'દિવ્ય
મહમ્ભત્તવેયણા' ઇતિ, દત્તભૃતિમક્તવેતનાઃ=દત્ત ભૃતિમક્તભ્રમણ દ્રવ્ય ભોજનસ્વરૂપ
વર્તન મૂલ્ય યેભ્યસ્તે તથા, યદ્વા-ભૃત્તિર્મરણ પોષ્યપર્ગાર્થિમત્ત્રાદિક, મક્ત-સ્વ
ભોજનાર્થ, વેતન-અશનાદિ સસ્કારકરણપારિશ્રમિક ચ તાનિ દત્તાનિ ભૃતિમક્ત
વેતનાનિ યેભ્યસ્તે તથા, ત્રિપુલમશનપાનસ્વાદ્યમ્-'ઉવસ્વલેતિ' ઉપસ્કુર્વન્તિ
ચતુર્વિધાહાર નિષ્પાદયન્તિ, ઉપસ્કૃત્ય, યે યથાડગન્ઠન્તિ 'તજહા' તદ્ યથા-

પ્રતિદિન-નિત્ય-માર્ગ ચલને ચાલે વ્યક્તિ યહાં પાન્થિક શબ્દ સે,
તથા જય કમી માર્ગ ચલને ચાલે વ્યક્તિ પથિક શબ્દ સે ગૃહીત હુમ્ હૈં ।
(તેણ સે કુમ્મક મિથિલાય રાયહાણીય નત્ય ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહુઓ
મહાણસસાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહમ્ભત્તવેયણા
વિપુલ અસણ પાણ સ્વાદમ સાદમ ઉવસ્વલેતિ ઉવસ્વલિત્તા જે જહા
આગચ્છઈ) હસ કે અનન્તર ડન કુમ્મક રાજા ને મિથિલા રાજધાની મેં
જહાં તહા અવાન્તર પુર આદિ મેં-ડસ પ્રદેશ મેં શૃંગાટક આદિ રાસ્ટો
મેં અનેક રસોઈ ઘર સ્થાપિત કરા દિયે, ડનમેં અનેક રસોઈયે અશન
પાન આદી રૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં બનાતે થે ।

હસકે ઉપલક્ષ્ય મે ડન્હે તથા ડનકે પોષ્ય વર્ગ કે લિયે વહા સે ભો
જન મિલના થા ઓર ડન ભોજન બનાતે ચાલોં કે લિયે વહા સે વેતન
મી મિલતા થા । વે વિપુલ માત્રા મે અશન પાન, સ્વાદ્ય, સ્વાચ તથા રૂપ

હરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ
કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા બેઠ્યો

(તેણ સે કુમ્મક મિથિલાય રાયહાણીય તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહુઓ
મહાણસસાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહમ્ભત્તવેયણા વિપુલ અસણ
પાણ સ્વાદમ સાદમ ઉવસ્વલેતિ, ઉવસ્વલિત્તા જે જહા આગચ્છઈ)

ત્યારબદ કુલ્લક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અવાન્તરપુર વગેરેમા
તે પ્રદેશોમા શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા
તેઓમા ઘણા રસોઈયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચારે
બતના આહારો તૈયાર કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી લોજન
મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો
તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, આદ્ય અને સ્વાદના રૂપમા બતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्याः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था या, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्तः
=विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे गृहो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः' तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भापत्ते. साधर्यं वक्ति, अपूर्व

चतुर्विध आहार को पका कर चर्हा जो जैते आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पयियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखंडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्यस्स, बीसत्यस्स सुहासनवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तो को, एव सुखासनवरगतो को उन विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाव बहुजणो अणमणजस्स एवमाइ-
क्खइ, एव भामइ एव पन्नवेइ, एव परुवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गमे तेरा भाणुयो आवता (त जहा) जेभके
(पयिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)
पाथिक जन, भर्त्ताधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखंडी धर्मने आश्रयनारा
अने गृहस्थीयो गमे ते वत पथना लोके त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्यस्स, सुहासनवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाए
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेजो अधाने तेभज ते देशमा रहेनारा णीण धणा भाणुयोने, आश्व
स्थेने, विश्वस्तोने अने सुखासनवर गतोने ते पुण्ण प्रभाणुमा भन्नावमा
आवेला आहार वडे यवामा आवतो डतो तेभज तेजोने त्याज नभाउवामा
पणु आवता डता

(तएण मिहिलाए रिं व डग जाव बहु जणो अणमणजस्स एवमाइक्खइ, एवं

મન્યુનાનિ પૂર્ણાનિ શતમહસ્રાગિ 'લક્ષાણિ એકચોટિમદૃષ્ટાણિ ચ સ્વર્ણદીનારાગિ
 હમામેતદ્વપામર્થસમ્પદ 'દલયઈ' દદાતિ ।

તતસ્તદનન્તર સલ્લુ કુમ્મકો રાજા મિથિલાયાં રાજધાન્યા તત્ર તત્ર=અવાન્તર
 પુરાદો, તથા તસ્મિન્ તસ્મિન્ દેશેદેશે=શૃંગાટકાદો વહીમેદાનસગલાઃ ઓદનાદીનાં
 પાકુગૃહાગિ=કારયતિ । તતઃ સલ્લુ વહ્યો મનુષ્યાઃ તે કવંભૂતા इत्याह-'दिन्न
 भइभक्तवेयणा' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः=दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप
 वर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा, यद्वा-भृत्तिर्मरण पोष्यमार्गार्थमन्नादिक, भक्त-स्व
 भोजनार्थ, वेतन-अशनानि सस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त
 वेतनानि येभ्यस्ते तथा, त्रिपुल्लमशनपानखाद्यखाद्यम्-'उपस्खडेति' उपस्कुर्वन्ति
 चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति 'तजहा' तद् यथा-

પ્રતિદિન-નિત્ય-માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ યહાં પાન્થિક શબ્દ સે,
 તથા જય કમી માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ પથિક શબ્દ સે ગૃનીત હુઈ હૈ ।
 (તેણ સે કુમળ મિથિલાઈ રાયદાણીઈ તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહૂઓ
 મહાણસમાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહમ્મત્તવેયણા
 વિપુલ અસણ પાણ સ્વાઈમ સાઈમ ઉવસ્ખડેતિ ઉવસ્ખડિત્તા જે જહા
 આગચ્છઈ) હસ કે અનન્તર ડન કુમ્મક રાજા ને મિથિલા રાજધાની મેં
 જહાં તશ અવાન્તર પુર આદિ મેં-ડસ પ્રદેશ મેં શૃંગાટક આદિ રાસ્ટો
 મેં અનેક રસોઈ ઘર સ્થાપિત કરગા દિયે, ડનમેં અનેક રસોઈયે અશન
 પાન આદી રૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં બનાતે થે ।

હસકે ઉપલક્ષ્ય મેં ડન્હે તથા ડનકે પોષ્ય વર્ગ કે લિયે વહા સે મો
 જન મિલતા થા ઓર ડન મોજન બનાને વાલોં કે લિયે વહાં સે વેતન
 મી મિલતા થા । વે વિપુલ માત્રા મેં અશન પાન, સ્વાદ્ય, સ્વાચ તથા રૂપ

દરદેશ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ
 કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા બેઠેએ

(તેણ સે કુમળ મિથિલાઈ રાયદાણીઈ તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહૂઓ
 મહાણસમાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહમ્મત્તવેયણા વિપુલ અસણ
 પાણ સ્વાઈમ સાઈમ ઉવસ્ખડેતિ, ઉવસ્ખડિત્તા જે જહા આગચ્છઈ)

ત્યારબદ કુલક રાબાએ મિથિલા નગરીમા બધે અવાન્તરપુર વગેરેમા
 તે પ્રદેશોમા શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા
 તેઓમા ઘણા રસોઈયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા આરે
 બાતના આહારો તૈ ૧૨ કરતા હતા

એના બહલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીબા માણસોને ત્યાંથી ભોજન
 મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો
 તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, આદ્ય અને સ્વાધના રૂપમા બાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्या वा' पाखण्डस्याः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था या, तेसिं च=तेषाम्=आगताना, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाषमाणा' परिभाषयन्त.
=विभाग कुर्वन्तः 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे वहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आमन्, ते पान्थिकादिभ्यः. तत्तद्देशानस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भाषते. माश्चर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वहाँ जो जैसे आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पयियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्या
वा गिहत्या वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर बारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखंडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्यस्म, वीसत्यस्त सुहासनवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाषमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तों को, एव सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाय बहुजणो अणमणस्स एवमाइ-
क्खइ, एव भासइ एव पन्नवेइ, एव परुवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गये तेरा भाणुमे आवता (त जहा) जेभके
(पयिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्या वा गिहत्या वा)
पाथिक जन, पथिकधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखंडी धर्मने आश्वस्थाना
अने गृहस्थीया गये ते जत पथना लोकें त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्यस्स, सुहासनवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष-
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेजो अधाने तेभज ते देशमा रहेंनारा जीण धणा भाणुमेने, आश्व-
स्थेने, विश्वस्तेने अने सुखासनवर गतेने ते पुष्कण प्रभाणुमा पन्नावामा
आवेले आहार पके यवामा आवतो हुतो तेभज तेजोने त्याज जमाउवामा
पक्ष आवता हुता

(तएण मिहिलाए रिण्डग जाय उहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

ભોજનદાન, ન શ્રુત નાપિદ્ધમિત્યાશ્રયેપૂર્વક ઝર્ણયતીત્વર્થ । એવ 'પન્નવેદ' પ્રજ્ઞાપયતિ વિસ્તારેણ ઝોધયતિ, એવ 'પન્નવેદ' પરુપયતિ-મદ્દષ્ટાન્ત ઝર્ણયતિ, કિમાન્વયાતીત્યાદ- 'એવ ચલુ' ઇત્યાદિ-એવ ચલુ હે દેવાનુપ્રિયા ! કુભગસ્ત રાજો ભવને 'સન્નકામગુણિય' સર્વકામગુણિત=મર્ચન્દ્રિયમુખજનક 'કિમિચ્છિય' કિમિચ્છિય=ચ્છાનુસાર વિપુલમગનપાનપાચમ્યાન્ન ચતુર્થ્ય શ્રમણેભ્યો બ્રાહ્મણે ભ્યશ્ચ, યાત્ વથા સમાગતેભ્યઃ સનાથાનાથપાનિયકાદિભ્ય પરિવેષ્યતે ।

“વરવરિયા ઘોસિજ્ઞઃ કિમિન્દ્રિય દિજ્જણ વહુવિહીય ।

સુરઅસુરદેવદાણવ નરિંદમહિયાણ નિકલ્લમણે ॥૧॥”

‘વરવરિયા’ વરવરિકા-વર વર=યાચસ્ય યાચસ્ય ઇતિ ઘોષણા, ‘ઘોમિજ્ઞઃ’

કુભગસ્ત રણ્ણો ભવણમિ મ્મન્ન કામગુણિય કિમિચ્છિય વિપુલ અસણ ૪ વહુણ સમણાણ ચ જાવ પરિવેસિજ્ઞેહ) હસ કારણ મિથિલો નગરી મેં શ્રુગાટક આદિ સ્થાનોં પર અનેક જન મિલ ૨ કર એક દૂસરે સે એસા કહને લગે, આશ્ચર્ય યુક્ત હોકર હસ પ્રકાર ચોલને લગે-વિસ્તાર પૂર્વક હસ પ્રકાર એક દૂસરે કો સમજાને લગે, તથા દૃષ્ટાન્ત દેકર ૨ હસ પ્રકાર ઘર્ણન કરને લગે-હે દેવાનુપ્રિયો ! કુભગ રાજા કે ભવન પર સર્વેન્દ્રિય સુખ જનક, અશન પાન, સ્વાથ એવ સ્વાચરૂપ ચતુર્વિધ આહાર અનેક શ્રમણોં કે લિયે, બ્રાહ્મણોં કે લિયે યાચત્ સમાગતોં કે લિયે, સનાથો અનાથોં કે લિયે ઓર પાંથિકોદિકોં કે લિયે હચ્છાનુસાર દિયા જાના હૈ (વરવરિયા ઘોસિજ્ઞઃ, કિમિચ્છિય દિજ્જણ વહુ વિહીય, સુર અસુર દેવ દાણવનરિંદ મહિયાણ નિકલ્લમણે) સુર અસુર, દેવ, દાનવ, એવ નરેન્દ્રોં દ્વારા પૂજ્ય તીર્થકરોં કે નિષ્કલમણ કે

માસહ એવ પન્નવેદ, એવ પરુવેદ, એવ ચલુ દેવાણુ ૦ ? કુભગસ્ત રણ્ણો ભવણમિ સન્નકામગુણિય કિમિચ્છિય વિપુલ અસણ ૪ વહુણ સમણાણ ચ જાવ પરિવેસિજ્ઞેહ)

એના લીધે મિથિલા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે સ્થાનોમા નાગરિકોના ટોળે ટોળા એકઠા થઇને આશ્ચર્ય પામતા વિસ્તારપૂર્વક એક-બીજાને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા, સમજાવવા લાગ્યા તેમજ દૃષ્ટાન્તો આપીને આ પ્રમાણે વર્ણન કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! કુભક રાજાના મહેલમા સર્વેન્દ્રિય સુખજનક અશન, પાન, પાચ અને સ્વાચરૂપ ચાર ભતનો આહાર ઘણા શ્રમણો, બ્રાહ્મણો, સમાગતો, સનાથો, અનાથો અને પાંથિકો વગેરેને માટે ઈચ્છા મુજબ આપવામા આવે છે

વરવરિયા ઘોસિજ્ઞઃ, કિમિચ્છિય દિજ્જણ વહુવિહીય, સુર અસુર દેવ, દાણવનરિંદ મહિયાણ નિકલ્લમણે)

સુર, અસુર, દેવ, દાનવ અને નરેન્દ્રોવડે પૂજ્ય તીર્થ કરોના નિષ્કલમણના સમયે “માગો, માગો” આ ભતની ઘોષણા કરવામા આવી છે, ધર્મી

घोष्यते किमिच्छय=किमिच्छकम् उच्छानुसार दीयते बहुविधिकम् । सुरासुरदेव दानग्रन्थेन्द्र महिताना=अर्हता तीर्थंश्रणा निष्क्रमणे ॥ १ ॥

ततः खलु मल्ली अर्हन् अस्य—‘मण पदारेड’ मनसि प्रधारयति, इत्यनेन सम्बन्धः । किं प्रधारयतीत्याह—‘सक्छरे’ सक्त्सरे खलु त्रीणि कोटिशतानि अष्टा दश च भवन्ति कोटयः । अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थकरनिष्क्रमणे दातव्यानि भवन्ति इमामेतद्रूपमर्थमपद खलु दत्ता निष्क्रमामि दीक्षा ग्रहीष्यामि इति ॥ सू० ३७ ॥

मूढम्—तेण कालेणंतेण समएण लोगंतिथा देवा वभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे सएहि२ विमाणेहि सएहि२ पासायवडिसएहि पत्तेय२ चउहि सामाणियसाहस्सीहि तिहि परिसाहिं सत्तहि अणिएहि सत्तहि अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अन्नेहि य वहूहि लोगतिएहि देवेहि सहि संपरिवुडा महया हयनट्टगीयवाइय जाव रवेण दिठ्वाइ भोगभोगाइ

समय में “मागो मागो,” ऐसी घोषणा कराई जाती है और अनेक प्रकार का किमिच्छक (तुम्हारी क्या इच्छा है) दान भी दिया जाता है । (तएण मल्ली अरहा सक्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होति कोडीओ असिन्ति च सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थ सपयाण दलइत्ता निक्खमोमिस्सि मण पदारेड) अवमरला अरिहत ने “एक साल में तीन सौ करोड़—तीन अरब अट्ठासी करोड़ ८० लाख स्वर्ण दीनारों तीर्थकर निष्क्रमण (दीक्षा अवसर पर) में दातव्य होती है सौ में इतनी अर्थ संपत्ति देकर दीक्षा ग्रहण करूंगा “ऐना मन में निश्चित विचार किया । सूत्र “३७”

नततु ‘किमिच्छ’ (तुम्हारी शुद्धि क्या है ?) दान पण्य आपवाभा आवे छे

(तएण मल्ली अरहा सक्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होति कोडीओ असिन्ति च सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थ सपयाण दलइत्ता निक्खमोमिस्सिमण पदारेड)

हुवे मल्ली अरहते “येउ वर्षमा त्रयसो उरोउ, त्रय अणज, अउयारी करोउ अरारी लाण मोना भोउरा तीर्थंउ निष्क्रमण (दीक्षाना समये) भा आपवाभा आवे छे तो हु आटवी अर्थ संपत्ति आपीने अ दीक्षा अडणु करीश” आ प्रभाणु मनभा बोद्धनपणु विचार उयो ॥ सूत्र “३७”

भुजमाणा विहरति, त जहा—‘सारस्सयमाइच्चा वद्धि—वरुणा
य गदतोया य । तुसिया अव्वावाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाया
॥ १ ॥ ” तएणं तेसि लोयतियाणं देवाणं पत्तेयं आसणाइं
चलति तहेव जाव अरहताणं निक्खममाणाण सवोहण करेत्त
एत्ति त गच्छामो णअम्हेवि मल्लिस्स अरहओ सवोहण करेमि
त्तिकट्ठु एव सपेहेत्ति, सपेहित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाय अव-
क्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति, समो
हणित्ता सखिज्जाइं जोयणाइ एव जहा जभगा जाव जेणेव
मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे जेणेव मल्ली
अरहा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना
सखिखिणियाइ जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० तार्हि
इट्ठाहि जाव वग्गूहि एवं वयासी—बुज्झाहि भयव । लोगनाहा ।
पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकर भविस्सइ
त्तिकट्ठु दोच्चपि तच्चपि एवं वयति, वयित्ता मल्लि अरह
वदति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया
तामेव दिसि पडिगया । तएण मल्ली अरहा तेहि लोगति-
एहि देवेहि सबोहिएसमाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा०
करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ । तुब्भेहि अब्भणुण्णाए
समाणे मुडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, अहासुह देवा० । मा
पडिवध करेहि, तएणं कुंभए कोडुबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता
एव वयासी—खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवणियाणं जाव भोमे

जाणांति, अण्णं च महत्थ जाव तित्थयराभिसेय उवट्टवेह जाव उवट्टवेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के ३ आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव अट्टसहस्स सोव-
णिण्याणं जाव अण्णं च त विउल उवट्टवेह जाव उवट्टवेति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविदे देवराया कुभराया य मल्लि अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुह नि-
वेसेइ अट्टसहस्सेणं सोवणिण्याण जाव अभिसिचइ, तएण मलिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सव्वितरवाहिरिय जाव सव्वओ समता परिधावन्ति, तएणं कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण जाव सव्वालकारविमू-
सिय करेइ, करित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव मणोरम सीयं उवट्टवेह, ते उवट्टवेति तएणं सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगंखभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्टवेह जावसावि सीया त चेव सीय अणुपविट्ठा ॥सू०३६॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये लोकान्तिका देवा ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानप्रतरे स्वकेषु स्वकेषु विमानेषु स्वकेषु

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (लोगतिया देवा उभलोए कप्पेरिट्टविमाण पत्थडे) लोकान्तिक देवों के जो ब्रह्मलोक नाम के कल्प में स्थित रिष्ट विमान पाथडे में वर्तमान

(तेण कालेण तेण समएण) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (लोगतिया देवा उभलोए कप्पे रिष्टविमाणपत्थडे) लोकान्तिक देवा के जेओ ब्रह्मलोके नामना कल्पमास्थित रिष्ट पाथडाभा रहेला

સ્વકેષુ પ્રાસાદાત્સકેષુ પ્રત્યેક ૨ ચતુર્થિઃ સામાનિકમહસૈ, તિસ્રમિઃ પરિપત્તિઃ
 સપ્તભિરનીકૈઃ = હસ્ત્યશ્વરથપદાતિમહિપગન્ધર્વાનાટ્યરૂપૈઃ સપ્તઋતૈઃ સપ્તભિરનીકા
 ધિપતિભિઃ, પોદશભિરાત્મરક્ષકદેવસહસૈઃ, અયૈશ્ચ મહુભિર્લોકાન્તિવૈદૈઃ સર્ણ
 સંપરિવૃતાઃ, 'મહયા' મહતા 'અહયનદ્રુગીયવાહ્ય રવેણ' અહત નૃત્યગીતવાદિપ્ર
 રવેણ = અહત = અપ્રતિહત, નૃત્યગીતવાદિપ્રાણા યો રવઃ = મધુરધ્વનિમ્તેન મોહ
 મોગાન્ = દિવ્યમુખમોગાન્ = શુભાના વિહરન્તિ - આસતે । તદ્યથા તેષા નામાન્યાહ -

"સારસ્વતમાહ્વા, વહ્નિ વરુણા ય ગદતોયા ય ।

તુસિયા અન્વાગાહા, અગ્નિન્ચા ચેવરિષ્ટા ય ॥૧॥" ઇતિ ॥

(૧) સારસ્વતાઃ, (૨) આદિત્યાઃ, (૩) વહ્નયઃ, (૪) વરુણાશ્ચ, (૫) ગર્તનો

(સર્ણ ૨ વિમાણેર્હિ, સર્ણ ૨ પાસાયવહ્નિસર્ણ પત્તેય ૨ ચર્ણ
 સામાણિયસાહસ્સીર્હિ તિર્હિ પરિસર્હિ સત્તર્હિ અણિર્ણ સત્તર્હિ અણિ
 યાહિર્વર્હિ સોલસર્હિ આયરસ્વદેવસાહસ્સીર્હિ અન્નેર્હિ વહ્નર્હિ લોગત-
 ણર્હિ દેવેર્હિ સર્હિ સપરિવુડા) અપને ૨ વિમાનોં મેં રહે દુષ્ટ અપને ૨
 શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદોં મેં અલગ ૨ ચાર ૨ હજાર સામાનિક દેવોં કે સાથ, ત્રીન ૨
 પરિપદાઓં કે સાથ, સાત ૨ અનીકોં કે સાથ, સાત ૨ અનીકાધિપતિયોં
 કે સાથ સોલહ ૨ આત્મ રક્ષક દેવોં કે સાથ તથા ઓર ઓ અન્ય લોકા
 ન્તિક દેવોં કે સાથ રહેતે હેં (મહયા હ્યનદ્રુગીયવાહ્ય, જાવ રવેણ
 દિવ્યાહ મોગમોગાહ શુભમાણા વિહરતિ) એવ જો નૃત્ય ગીત, તથા
 યાજોં કી અપ્રતિહત ધ્વનિ પૂર્વક દિવ્ય મોગોં મોગા કરતે હેં । (ત
 જહા) હન લૌકાન્તિક દેવોં કે આઠ ભેદ હોતે હેં એ આઠ ભેદ એ હેં -
 ૧ સારસ્વત ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ, ૪ વરુણ - ૫ ગર્તનોય, ૬ તુષિત,

(સર્ણ, ૨ વિમાણેર્હિ ૨ પાસાયવહ્નિસર્ણ પત્તેય ૨ ચર્ણ સમાણિય
 સાહસ્સીર્હિ તિર્હિ પરિસર્હિ સત્તર્હિ અણિર્ણ સત્તર્હિ અણિયાહિર્વર્હિ આયરસ્વ
 દેવ સાહસ્સીર્હિ અન્નેર્હિ વહ્નર્હિ લોગતર્હિ દેવેર્હિ સર્હિ સ પરિવુડા)

પોતપોતાના વિમાનોમાના ઉત્તમ પ્રાસાદોમા શુદ્ધશુદ્ધ ચાર હેનર સામા
 નિક દેવોની સાથે, ત્રણ ત્રણ પચ્ચિદાઓની સાથે, સાત સાત અનીકોની સાથે,
 સાત સાત અનીકાધિપતીઓની સાથે, સોળ સોળ આત્મરક્ષક દેવોની સાથે
 તેમજ બીજા પણુ લૌકાતિક દેવોની સાથે રહે છે

(મહયા હ્યનદ્રુગીય વાહ્ય જાવ રવેણ દિવ્યાહ મોગમોગાહ શુભમાણા વિહરતિ)

અને જેઓ નૃત્ય, ગીત તેમજ વાજાઓની અપ્રક્રિત ધ્વનિ પૂર્વક દિવ્ય
 લોગોનો ઉપલોગ કરતા રહે છે (ત જહા) આ લૌકાતિક દેવોના આઠ
 ભેદો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે - ૧ સારસ્વત, ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ, ૪ વરુણ,

યાશ્ચ, (૬) તુપિતાઃ, (૭) અવ્યાવાધાઃ, (૮) આગ્નેયાશ્ચ, એતેઽઙ્ઠી કૃષ્ણરાજ્ય
વકાશાન્તરસ્થાયિ-વિમાનાઽટકવાસિનઃ, તથા (૯) રિપ્તાશ્ચ = રિપ્તાશ્ચવિમાન-
પતરવાસિનઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તેષા લોકાન્તિકાના દેવાના પ્રત્યેકર આસનાનિ ચલન્તિ
તથૈવ યાવાત્-સૌધર્મેન્દ્રવદેવાપર્ધિ પ્રયુજ્જતે, પ્રયુજ્ય મલ્લીમર્હન્તમાભોગયતિ તતઃ
સ્વલ્વેયં સકલ્પઃ સમુદપત્રત-મલ્લી અર્હન્તિમિતુમિચ્છતિ, એવ મર્યાદાઽસ્તિ

૭ અવ્યાવાધ ૮ આગ્નેય એ આઠ લૌકાન્તિક દેવ કૃષ્ણ રાજ્ય
મિત્ર ૨ આઠ વિમાનો મેં રહેતે હું । તથા જો રિપ્ત હું એ રિપ્ત નામક વિમા-
ન પત્ર મેં રહેતે હું । (તણ) સો (તેસિં લોચતિયાણ દેવાણ પત્તેય ૨
આસનાઙ્ ચલતિ) હન લૌકાન્તિક દેવોં કે પ્રત્યેક કે આસાન કપિત હુણ

(તહેવ જાવ અર ત્તાણં દેવાણ નિવલ્લમમાણાણ સમોહણં કરેત્તણ
સ્તિ ત ગચ્છામોણ અમ્હે વિ મલ્લિસ્સ અરહઓ સમોહણ કરેમિ ત્તિકદ્ધુ
એવ સપેહેંતિ) અતઃ ઇન્હો ને સય ને અપને ૨ અવધિજ્ઞાન સે વિચાર
કિયા કિ હમારે આસન કપિત વયો હુણ હું સો જિસ તરહ સે સૌધ-
ર્મેન્દ્ર ને અપને આસન કપિત હોને કા કારણ જાન લિયા થા ઉસી
પ્રકાર ઇન્હોં ને ખી જોન લિયા । હસ તરહ કારણ જાનકર ઇન્હોં કે મન
મેં એસા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ મહી અર્હન્ ઘર સે નિકલ ને કી-દીક્ષા
અગીકાર કરને કી ઇચ્છા કર રહે હું સો હમ લૌકાન્તિક દેવોં કી એસી

૫ ગર્ભતાય, ૬ તુપિત, ૭ અવ્યાવાધ, ૮ આગ્નેય એ આઠ લૌકાન્તિક દેવ
કૃષ્ણરાજ્ય બુદા બુદા આઠ વિમાનોમા રહે છે તેમજ બે રિપ્ત છે તેઓ
રિપ્ત નામક વિમાન પત્રમા રહે છે (તણ) તો આ પ્રમાણે (તેસિં લોચતિ
યાણ દેવાણ પત્તેય ૨ આસનાઙ્ ચલતિ) આ બધા લૌકાન્તિક દેવોમાથી દરેકના
આસનો ડાલવા માડ્યા

(તહેવ જાવ અરહતાણ દેવાણ નિવલ્લમમાણાણ સમોહણ કરેત્તણ ત્તિ ત ગચ્છા
મોણ અમ્હે વિ મલ્લિસ્સ અરહઓ સમોહણ કરેમિ ત્તિ કદ્ધુ એવ સપેહેંતિ)

એટલા માટે આ બધા દેવોએ પોતપોતાના અવધિજ્ઞાન વડે વિચાર કર્યો
કે અમારા આસનો શા માટે ડાલવા માડ્યા છે ? તો જેમ ઇન્દ્રે પોતાના
આસનને ડાલવાનું ડાગ્ધુ લાગ્યું હતું તે પ્રમાણે આ બધાઓએ પણ લાણી લીધું

આ પ્રમાણે કારણની ખાત્રી કરીને તેમના મનમા આ જાતનો વિચાર
ઉદ્ભવ્યો કે મહી અર્હન્ ઘેરથી નીકળી જવાની-દીક્ષા સ્વીકારવાની ઇચ્છા
કરી રહ્યા છે, તો આ સમયે અમારા જેવા બધા લૌકાન્તિક દેવોની એવી

लोकान्तिरुदेयानां, यद् अर्हतां निष्क्रामतां सवोधनं वर्तुमिति = दीक्षास्तर
 बोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गच्छाम सल्ल वयमपि मल्लया अर्हतो सवोधन
 कुर्म इति कृत्वा एव सप्रेषन्ते=विचारयन्ति समेक्ष्य, उत्तरपुरित्य दिग्भागम्
 ईशानकोणम् अवक्रामन्ति, अवक्रम्य वैक्रियममुद्धातेन समवहति उत्तरवैक्रिय
 कुर्वन्ति । समयद्वय सखातानि योजनानि यावत्-दण्ड निःसारयन्ति, दण्ड
 रत्नमय कुर्वन्ति-कृत्वा च एव यथा जृम्भकाः-जृम्भयदेवद देवलोकमम्बन्धि
 दिव्यगत्या यावत्-यज्ञैव मिथिला राजधानी यज्ञैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन यत्रैव
 मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य अन्तरिक्षप्रतिपन्ना गगनस्थाः, सकि

मर्गदा हैं कि वैराग्य की मन में भावना उगो ही तीर्थकरों को आवे-
 तव उन्हें सवोधन करना-यह कहना कि भगवान् । यह दीक्षा के लिये
 उचित अवसर है । इसलिये हम लोग भी चलें और मल्ली अर्हत को
 सवोधन करें । ऐसा विचार कर (उत्तरपुरित्य दिग्भागाव अवक्रम
 मति, अवक्रमित्वा वेउच्चियसमुद्याणं समोहणति, समोहणित्वा
 सखिज्जाइ जोगगाइ एव जभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव
 कुम्भगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति) वे
 सब के सब लोकान्तिक देव ईशान कोण में गये-वहा जाकर उहाँ ने
 वैक्रिय समुद्धात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के उन्हीं
 ने अपने अत्मप्रदेशो को रत्नमय दण्डाकार रूप में बाहर निकाला ।

बाद में जृम्भक देवों की तरह वे सब देव लोक सबन्धी उत्कृष्ट गति
 से जहा मिथिला राजधानी थी-उस में भी जहा कुम्भक राजा का भवन

मर्गदा (प्रणालिका) डोय छे के तीर्थ करेना भनभा न्यारे वैराग्यनी भावना
 उद्भव के तरत न तेमने सवोधन करवु-ओटले के तेमने आ प्रभाण्डे विन ती
 करवी के छे भगवन । दीक्षा अहण करवाने आ उचित अवसर (समय) छे
 ओटले अमे पणु त्या नधने अने तेमने सवोधन करीये आभ विचार करीने

(उत्तर पुरित्य दिग्भागाव अवक्रममति अवक्रमित्वा, वेउच्चिय समुद्या
 णं समोहणति, समोहणित्वा, सखिज्जाइ जोगगाइ एव जहा जभगा जाव जेणेव
 मिहिला जेणेव कुम्भगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति)

तेमो भधा लौकिक देवो ईशान कोणमा गरा, त्या नधने तेमणे
 वैकीय समुद्धातथी उत्तर वैक्रियनी विकुर्वणा करी, विकुर्वणा बाद तेमणे पोताना
 आत्मप्रदेशोने रत्नमय दण्डाकार रूपमा न्हार कढया

त्यारपछी अलक देवोनी नेम तेमो भधा देवलोक सगंधी उत्कृष्टगतिथी
 न्या मिथिला राजधानी छती तेमा पणु न्या कुलक राजने भडेल अने
 भददी अर्हत विराजमान

क्लिणीकानि=क्षुद्रघण्टिनायुक्तानि यावद् वस्त्राणि 'पत्र परिहिया' प्रपरेण विधिना परिहिताः दिव्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, करतलपरिमृहीतदशनख शिर आवर्तं मस्तके-
ऽञ्जलिं कृत्वा ताभिरिष्टाभि कमनीयाभिर्वाग्निरेवमवादीत्-हे भगवन् ! हे लोक-
नाथ ! ' बुज्झाहि ' बोधय, भव्यजीवान् प्रपतय धर्मतीर्थचतुर्धिसन्धरूप
धर्मतीर्थप्रवर्तनस्य फलमाह—' जीवाण ' इत्यादि, जीवानां ' हीयसुहनिस्सेय
सकर ' हितमुखनिश्रेयसकर, हितकर - नरकनिगोदादि दुःखनिवारकत्वात्,

धा-उस में भी जहा मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये । (उवा
गच्छित्ता अतलिकपडिवन्ना सर्खिखिणियाड जाव वत्थाड पवरपरि
हिया करयल० तार्हि इट्ठाहिं जाव वग्गुहिं एव वयासी-बुज्झाहिं भयव ।
लोगनाहा ! पवत्ते हिं धम्मतिरथ जीवाण हिय सुहनिस्सेयसकर भवि
स्सइ) वहां आकर भी वे नीचे नहीं उत्तरे किन्तु आकाशमें अधर खड़े
बोले । उस समय उन्होंने ने पड़े सुन्दर वस्त्र जो कि क्षुद्र किंकिणियों से
युक्त थे पहिर रखे थे । अवर रहे हुए ही उन्होंने दोनों रथांकी अजुलि
बना और उसे मस्तक पर रख वहीं से मल्लि अर्हत को नमस्कार
किया बाद में वही मीठी २ मनोहर वाणियों द्वारा उन से इस प्रकार
कहा-हे भगवान् हे लोक नाथ ! भव्यजीवो को आप समझाओ चतुर्विध
संघरूप धर्मतीर्थ की आप प्रवृत्ति करो । इससे जीवों नरक निगोद
आदि के दुःखों से छुटकर वह धर्मतीर्थ हितकारी होगा । स्वर्ग आदि

(उवागच्छित्ता अतलिकपडिवन्ना सर्खिखिणियाड जाव वत्थाड पवर
परिहिया करयल० तार्हि इट्ठाहिं जाव वग्गुहिं एव वयासी बुज्झाहिं भयव । लोगनाहा
पवत्तेहिं धम्मतिरथ जीवाण हिय सुय निस्सेयसकर' भविस्सइ)

त्या पडेअथिने तेअो नीचे उतर्या नहिं पवु आकाशभा ७ अद्धर जेआ
रहीने जेआ-देवेअे ते वणने सुइ ७ वआ पडेरेआ इत्ता तेमना वओ नानी
नानी घुघरीअेअी शेआता इत्ता आकाशभा अद्धर रहीने ७ तेअेअे पोताना
अने छेअेनी अ ७ली अनावी अने तेने भरतके भूकीने त्याथी ७ मल्ली
अइ तने नमस्का ७ अ्या त्थारपछी पूअ ७ भीआ अने मनोअर वयनेा द्वारा
तेअे तेमने विनती कत्ता 'हेवा लाअ्या-' हे भगवन ! हे लोकनाथ ! तमे
अव्यअेअेने ज्ञान आये। चतुर्विध संघ उप धर्मतीर्थनी तमे प्रवृत्ति करो
अेनाथी अेअेने नरक निजो' वगेरेना इ जेअी सुअ अरावीने हितकारी धर्म
तीर्थ तरइ तेमने उ-अुअ अरे ते धर्मतीर्थ ते लोअेना भा ७ अर्ग वगेरेने
अमइ (अतीव) आनइ आपनार जेआथी सुअकर अगे तेमअ सुअित

लोकान्तिरुदेयानां, यद् अर्हतां नि
 धोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गन्
 कुर्म इति कृत्वा एव रं प्रेक्षन्ते=वि-
 ईशानकोणम् अक्रामति, अवक्रम्य
 कुर्वन्ति । समयदत्त सखातानि योऽ
 रत्नमय कुर्वन्ति-कृत्वा च एव यथा
 दिव्यगत्या यावत्-यत्रैव मिथिला राज
 मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छति उपागत
 मर्यादा हं कि वैराग्य की मन में
 तब उन्हें सपोधन करना-यह कहन्
 उचित अवसर है । इसलिये हम लं
 सपोधन करें । ऐसा विचार कर (
 मति, अवक्रमित्ता वेउविग्रससु
 सखिज्जाइ जोयगाइ एव जमगा
 कुभगस्स रण्णो भवणे, जेणेव मत्
 सब के सब लोकान्तिक देव ईशान
 वैक्रिय समुद्धात से उत्तर वैक्रिय की
 ने अपने अत्मप्रदेशो को रत्नमय
 बाद में जृम्भक देवों की तरह
 से जहा मिथिला राजधानी थी-

भयोदा (प्रख्यालिका) डाय छे के
 उद्भव के तरत ज तेभने सपोध
 कस्वी के डे जगवन । दीक्षा अह
 ओरके अभि पक्ष त्या जधये अने

(उत्तर पुराणियम दिसीभाय

एण समोहणति, समोहणित्ता, सर्वा
 मिथिला जेणेव कुभगस्स रण्णो

तेओ भधा लौकाति-
 वैकीय 'समुद्धातथी उत्तर

आत्मप्रदेशोने रत्नमय दरा

त्यारपछी ज लक्ष दे

ज्या मिथिला राजधानी

महली अर्हता विराजमान

કેઽઞ્જલિં કૃત્વા, એવમવાદીત્—ઈન્ઝામિ શ્વલુ હે અમ્મ ! હે તાત ! યુધ્ધામિરમ્બ-
નુજ્ઞાતઃ સન્ યુણ્ઢો ભૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્, માતાપિતરાવૃત્તુ.—ઢે દેવાનુપ્રિય !
યથાસુખ ભવેત તથા કુરુ, મા પ્રતિગ્રધ=વિલમ્બ મા કુરુ । તતઃ=મલ્લીમર્હન્ત
મેવમુક્ત્વા, શ્વલુ સ કુમ્મકઃ કોઢુમ્મિરુપુરુપાન્ શન્દયતિ શન્દયિતરા એવમવાદીત્
ક્ષિપ્રમેવાપ્તસહસ્રમ્—અષ્ટાધિકસહસ્ર(૧૦૦૮) સૌર્ગિમાના યાવદ૦ અત્ર યાવદિત્ય

થે—વહાં આયે । વહા આકર ઉત્તરે ને પહિલે ઉન્નેં દોનોં હાથ જોડ કર
ચરણોં મેં નમસ્કાર ક્રિયા । પાદ મેં હે ચોલે—કિ હે અમ્મ હે તાત ! મેં
આપ લોગો સે આજ્ઞા લેકર મહિત હો યાવત્ દીક્ષા લેના ચોઈતી હૂં આ
પત્ની આજ્ઞાસે મુઝે દીક્ષા લેના હે ઇમ પ્રકાર મલ્લીઅરિહતકી વાત સુન
કર ઉન કે માતા પિતા દોનો ને ઉન સે “ યથાસુખ દવાનુપ્રિય । ”
જેસે તુમ્હેં સુખ હો—તુમ વેસા કરો—રેરી મત કરો એસા કહા । (તણ
કુમ્મક કોઢુમ્મિય પુરિસે સદાવેઢ, સદાવિતા એવ વયાસી લિપ્પામેવ
અદ્દ સહસ્ર સોવણિયાણ જાવ મોમેઝજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્ત્વ જાવ
તિત્થયરામિસેય ઉવટ્ટવેદ જાવ ઉવટ્ટવેતિ) ઇસ કે વાદ કુમ્મક રાજાને
અપને કોઢુમ્મિક પુરુષોં કો બુલાગા ઔર બુલા કર ઉનસે એસા કહા—હે
દેવાનુ પ્રિયો ! તુમ લોગ ગ્રીષ્મ હી ૧૦૦૮ સુવર્ણ નિમિત્ત ત્તલશોં કો
રુપ્યમગ્ર ત્તલશોંકો યગિમય ત્તલશોં કો સુવર્ણ રુપ્ય નિર્મિત્ત ત્તલશોંકો,
સુવર્ણ મણિ નિર્મિત્ત ત્તલશોં કો, રુપ્યમણિ નિર્મિત્ત ત્તલશોં કો, સ્વર્ણ,

માતાપિતાના ચરણોમા નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યા કે હે
માતાપિતા ! હું તનારી આજ્ઞા મેળવીને મુહિત થાને તીક્ષ્ણ શ્રદ્ધા કરવા
આહુ છું ” મલ્લી અહંતાના મોથા આ પ્રમાણે વાત માલગીને તેમના માતા
પિતાઓએ તેમને ડહુ “ યથામુખ દેવાનુપ્રિય । ” એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે !
તમને જેમ મુખ પ્રાપ્ત વાય તેમ કરો અને મોહુ કરો નહિ

(તણ કુમ્મક કોઢુમ્મિયપુરિસે સદાવેઢ, મનાવિત્તા એવ રયાસી લિપ્પામેવ
અદ્દસહસ્ર સોવણિયાણ જાવ મોમેઝજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્ત્વ જાવ તિત્થય-
રામિસેય ઉવટ્ટવેદ જાવ ઉવટ્ટવેતિ)

ત્યારપછી કુમ્મક તાતએ પોતાના કોઢુમ્મિક પુરોને બોલાવ્યા અને
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે ડહુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક
હજાર આઠ (૧૦૦૮) મોનાના ડગથો, આનીના ૩૩થો, મણિમય ડગથો,
સોના અને ચાંદીથી બનાવેલા ડગથો, મોના અને મણિઓથી બનાવવામા

સુલકર સ્વર્ગાધમ્દાનન્દજનમ્ભવાત્, નિઃશ્રેયસકર-મોક્ષમાપન્મ્ભવાત્, મન્વિષ્વ
તીતિ કૃત્વા=ઉવત્વા, દ્વિતીયવારમપિ, તૃતીયવારમપિ યત્ર વદન્તિ, ઉવત્વા, મલ્લીપ્
અર્હન્ત વન્દન્તે નમસ્યન્તિ, વદિત્વા નત્વા યસ્યા યત્ર દિશ પ્રાદુર્ભૂતાસ્તામેવ
પ્રતિગતાઃ ।

તતસ્તદનન્તર ગ્વલુ મલ્લી અર્હન્ તૈર્લોકાન્તિર્દેવેઃ સચોધિતઃ મન્ યત્રૈવ
માતાપિતરૌ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગમ્ય કરત્પરિગૃહીત દગ્ધનમ્ શિરઃપ્રાવર્ત મસ્ત
કા અમન્દ અત્યન્ત અનન્દ કા પ્રદાતા હોને સે નત્ ધર્મતીર્થ ઉન્હે સુલ
કર હોગા । તથા મુક્તિ પ્રાપ્તિ ના કારણ હોને સે વહ ધર્મતીર્થ ઉન ભવ્ય
જીવોં કો નિઃશ્રેયસકર હોગા (તિફટ્ટુ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ યત્ર વયતિ,
વયિત્ત્વ મલ્લિ અરહ વદતિ, નમસતિ, વદિત્વા નમમિત્તા જામેવ દિસિ
પાઉચ્ચૂયા તામેવ દિસિ પડિગયા) હસ પ્રકાર કર કર ઉન લોકાન્તિક
દેવોં ને દુવારા તથા તિવારા મી જેસા હી કહા-કહ કર ફિર ઉન્હોં ને
મલ્લી અરિહત કો વદના કી-નમસ્કાર કિયા । વદના નમસ્કાર કરકે
ફિર વે જિસ દિશા સે પ્રકટ હુળ થે ઉસી દિશા કી તરફ ચલે ગયે ।

(તપ્પણ મલ્લી અરહા તેહિં લોગતિર્હિં દેવેહિં સચોહિં સમાણે
જેણેવ અમ્મા પિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છતિ-ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ્લં ઇચ્છામિ
ણ અમ્મયાઓ ! તુભેહિં અભણુણાં સમાણે મુઢે મવિત્તા જાવ પવ્વહ
ત્તણ, અહાસુહ દેવાણુમ્મા પડિવધ કરેહિં) હસ પ્રકાર ઉન લોકાન્તિક
દેવોં દ્વારા સચોધિત હોતે હુળ વે મલ્લી અરહત જહા અપને માતા પિતા

મેળવવાનુ કારણ હોવા બદલ તે ધર્મતીર્થ તે લલ્ય છવોના માટે નિઃશ્રેયસકર થશે
(તિફટ્ટુ દોચ્ચપિ યત્ર વયતિ, વયિત્તા મલ્લિ અરહ વદતિ, નમસતિ, વદિત્તા
નમસિત્તા જામેવ દિસિ પાઉચ્ચૂયા તામેવ દિસિ પડિગયા)

આ રીતે કહીને તે લોકાન્તિક દેવોએ ખીજ અને ત્રીજ વખત પણ આ
પ્રમાણે જ વિનતી કરી વિનતી કરીને મલ્લી અર્હ તને તે દેવોએ વહન અને
નમસ્કાર કર્યા વહના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ
થયા હતા તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા

(તપ્પણ મલ્લી અરહા તેહિં લોગતિર્હિં દેવેહિં સચોહિં સમાણે જેણેવ
અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છતિ-ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ્લં ઇચ્છામિ ણ અમ્મયાઓ
તુભેહિં અભણુણાં સમાણે મુઢે મવિત્તા જાવ પવ્વહત્તણ, અહા મુહ દેવાણુમ્મા
પડિવધ કરેહિં)

આ પ્રમાણે લોકાન્તિક દેવો વડે સચોધિત થતા મલ્લિ અરહત બધા
પોતાના માતાપિતા હતા ત્યાં આમ ત્યાં આવીને તેઓએ ની પહેલા પોતાના

કેઽજ્જલિં કૃત્વા, એવમવાદીત્—ઇન્દ્રામિ શ્વત્તુ હે અમ્મ ! હે તાત ! યુષ્માભિરમ્મ-
નુજ્ઞાતઃ સન્ યુષ્ઠો ભૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ , માતાપિતરાવૃત્તુ.—હે દેવાનુપ્રિય !
યથાસુખ ભવેત્ તથા કુરુ, મા પ્રતિનિધ=વિલમ્બ મા કુરુ । તતઃ=મટલીમર્હન્ત
મેવમુક્ત્વા, શ્વત્તુ સ કુમ્મત્ત. કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ શબ્દયિત્યા એવમવાદીત્
ક્ષિપ્રમેવાષ્ટસહસ્તમ્—અષ્ટાધિસ્સહસ્ત(૧૦૦૮) સૌવર્ણિયાના યાવદ્૦ અત્ર યાવદિત્ય

થે—ચહા આયે । ચહા આકર ઉન્હો ને પહિલે ઉન્હેં દોનોં હાથ જોડ કર
ચરણોં મેં નમસ્કાર કિયા । યાદ ઝેં લે ચોલે—કિ હે અમ્મ હે તાત ! મેં
આપ લોગો સે આજ્ઞા લેકર મહિત હો યાવત્ દીક્ષા લેના ચોહતી હૂં આ
પત્ની આજ્ઞાસે મુદ્દે દીક્ષા લેના હૈ ઇસ પ્રકાર મટલી અરિહતકી વાત સુન
કર ઉન કે માતા પિતા દોનો ને ઉન સે “ યથાસુખ દેવાનુપ્રિય । ”
જૈસે તુમ્હેં સુખ હો—તુમ વૈમ્મા કરો—રેગી મત કરો એસા કહા । (તણ
કુમ્મર કોટુમ્બિક પુરિસે સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવ વયાસી લિપ્પામેવ
અદ્દ સહસ્ત સોવર્ણિયાણ જાવ મોમેડજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્થ જાવ
તિત્થયરામિસેય ઉવદ્દવેદ્ જાવ ઉવદ્દવેંતિ) ઇસ કે બાદ કુમ્મર રાજાને
અપને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા ઓર બુલા કર ઉનસે એસા કહા—હે
દેવાનુ પ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮ સુવર્ણ નિમિત્ત રત્નશોં કો
રુપ્યમગ્ન રત્નશોંકો મગ્નિમય કઠશોં કો સુવર્ણ રુપ્ય નિર્મિત્ત રત્નશોંકો,
સુવર્ણ મગ્નિ નિર્મિત્ત કઠશો કો, રુપ્યમગ્નિ નિર્મિત્ત રત્નશોં કો, સ્વર્ણ,

માતાપિતાના ચરણોમા નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યા કે હે
માતાપિતા ! હું તનારી આજ્ઞા મેળવીને મુક્તિ થાને નીક્ષા શ્રદ્ધણ કરવા
આહુ છું ” મટલી અહં તના મોથી આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને તેમના માતા
પિતાઓએ તેમને કહ્યું “ યથામુખ દેવાનુપ્રિય ! ” એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે !
તમને જેમ મુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો અને મોડું કરો નહિ

(તણ કુમ્મર કોટુમ્બિકપુરિસે સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવ વયાસી લિપ્પામેવ
અદ્દસહસ્ત સોવર્ણિયાણ જાવ મોમેડજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્થ જાવ તિત્થય
રામિસેય ઉવદ્દવેદ્ જાવ ઉવદ્દવેંતિ)

ત્યારપછી કુમ્મર રાજાએ પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક
હજાર આં (૧૦૦૮) મોનાના ડાગશો, ચાનીના ડાગશો, મણિમય ડાગશો,
સોના અને ચાલીથી બનાવેલા ડાગશો, મોના અને મણિઓથી ગનાવવામા

નેનેદ વૌધ્યમ્-રૂપ્યમયાના, મણિમયાના, સુવર્ણરૂપ્યનિર્મિતાના તુર્વર્ણમણિનિર્મિતાના, રૂપ્યમણિનિર્મિતાના, સ્વર્ણરૂપ્યરત્નમયાનામિતિ । મૌર્મેયાનામ્ પાર્થિવાનાં ઘટાનામિતિ અન્યચ્ચ મહાર્થ યાત્-તીર્થકરાભિષેકમ્ તીર્થકરનિષ્ક્રમણાભિષેક સાધનમ્ ' ઉવદ્વેદ ' ઉપસ્યાપયત, પ્રાપયત, યાત્-ઉપસ્યાપયન્તિ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમરોઽસુરેન્દ્ર યાત્-અનુવૃત્ત પર્યવસાનાઃ= ચમરેન્દ્રાદારભ્યાન્યુતેન્દ્રપર્યન્તાધતુઃ પટ્ટિ સત્યકા ઇન્દ્રાઃ, આગતાઃ । તતસ્ત દનન્તરં સ્વલ્લ શક્રો દેવેન્દ્રો દેવરાજ' = મૌર્ધ્વેન્દ્ર, આભિયોગિકાન્ દેવાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-સિમમેગાપ્તસહસ્ર સૌવર્ણિકાનાં યાત્-અન્યચ્ચ તદ્

રૂપ્ય, મણિ નિર્મિત કલશોં કો મિટ્ટી કે કલશોં કો તથાં ઓર મી મહાર્થ-મહા પ્રયોજન સાધક ભૂત-તીર્થ કર-નિષ્ક્રમણાભિષેક (દિક્ષાકે) સાધનોં કો ઉપસ્થિત કરો । રાજા કી ઇસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર ઉન લોગો ને આજ્ઞાનુસાર સબ સાધનો કો ઉપસ્થિત કર દિયા ।

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુપ્પજ્જવસાણા આગયા, તણ સક્કે ૩ આભિયોગિણ દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં ચરમેન્દ્ર સે લેકર અચ્ચુ તેન્દ્ર પર્યન્ત ૬૪ ઇન્દ્ર આ ગયે । ઇસ કે અનન્તર શક્ર દેવેન્દ્ર દેવ રાજ ને-સૌધર્મેન્દ્ર ને-આભિયોગિક દેવોં કો બુલાયા-ઓર બુલોકર ઉન સે ઇસ પ્રકાર કહા-(સિપ્પામેવઅદ્દસહસ્સ સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિઝલ ઉવદ્વેદ, જાવ ઉવદ્વેતિ) તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮, સુવર્ણ આદિ કે નિમિત્ત કલશો કો તથા ઓર મી વિપુલ માત્રા મેં તીર્થકર

આવેલા ડગશે, સોના ચાકી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશે, માટીના કળશે તેમજ ખીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થ કર નિષ્ક્રમણાભિષેકના સાધનો લાવે । રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ બધા સાધનો લઈ આવ્યા

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુપ્પજ્જવસાણા આગયા, તણ સક્કે ૩ આભિયોગિણ દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માટીને અચ્ચુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે ઈન્દ્રો આવી પહોંચ્યા

ત્યારબાદ શક દેવેન્દ્ર અને દેવરાજ-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવાને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(સિપ્પામેવઅદ્દસહસ્સ સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિઝલ ઉવદ્વેદ જાવ ઉવદ્વેતિ) તમે લોકો મત્તવે એક હજાર આઠ (૧૦૦૮) સોના વજેશથી બનાવવામા આવેલા કળશે તેમજ ખીજા પણ તીર્થ કરના અભિષેક માટેના મા,

विपुल तीर्थरराभिषेकमावनमुपस्थापयत, यावद्-उपस्थापयन्ति । तेऽपिदेवो-
पस्थापिताः सर्वेऽपि कलशास्तानेव-कुम्भकोपस्थापितानेव कलशान् अनुप्रविष्टाः,
दिव्याः कलशा दिव्यानुभावेन कुम्भककलशेषु प्रविष्टास्तेन कुम्भककलशानां
शोभतिशय सजात इति भावः ।

ततस्तदनन्तर खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजः कुम्भको राजा च मल्लीमहन्तं
सिंहासने पौरस्त्याभिमुख=पूर्वदिशाऽभिमुख निवेशयति=उपवेशयति । अष्टसह-
स्रेण=अष्टाधिकसहस्रेण, सौवर्णिकानां यावत् अभिषिञ्चति, अष्टाधिकसहस्रसंख्यकैः
प्रत्येक कलशैः सौवर्णिकादि स्नपयतीत्यर्थः ततस्तदनन्तर खलु मल्ल्या भगवतो-
के अभिषेक के साधनों को उपस्थित करो । उन सब ने वैसा ही किया ।
(ते वि कल सा तेचेव कलसे अणुपविष्टा, तएण से सक्के देविंदे देव-
राया कुभराया य मल्लि अरह सीहासणं पुरत्याभिमुह निवेसेह) इस
तरह कुम्भक राजा द्वारा उपस्थापित कलशों के साथ २ वे सब दिव्य
कलशएक जगह मिलाकर रख दिये गये ।

इससे कुम्भक राजा के कलशों की शोभा और अधिक बढ़ गई ।
बाद में शक्र देवेन्द्र देवराज ने और कुम्भक राजा ने मल्ली अहन्त को
सिंहासनके उपर पूर्वाभिमुख करके बैठा दिया । (अष्टसहस्रेण सौवर्णि-
याण जाव अभिसिञ्चह, तएण मल्लीस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे
अप्पेगइया, देवा मिहिल च सम्भितरवाहिरिय जाव सव्वओ समता
परिधावति) बैठा ने के बाद फिर उन्होंने ने उन १००८, सुवर्ण आदि के-
प्रत्येक कलशों से उनका अभिषेक किया ।

प्रभाषुमा लावे। तेओ गधाओ तेम न् कथुं

(ते रि कलसा ते चेव कलसे अणुपविष्टा, तएण से सक्के देविंदे देवराया
कुभराया य मल्लि अरह सीहासणं पुरत्याभिमुह निवेसेह)

आ गीते कुलकशान् वडे भूकाओला उणशोनी साथे न् ते दिव्य कणशे।
पणु ओक न् स्थाने गोणी दीधा

ओनाथी कुलक शानना उणशोनी शेला जूम न् वधी गध त्थार पछी
शक देवेन्द्र देवराज् अने कुलक शानओ मल्ली अहन्तने सिंहासन उपर पूर्व
दिशा तन्ध मे राणीने मेसादी दीधा

(अष्ट सहस्रेण सौवर्णिगाणां जाव अभिसिञ्चह, तएण मल्लिस्स भगवओ
अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिल च सम्भितरवाहिरिय जाव सव्वओ
समता परिधावति)

मेसादीने तेओओ ओक छग्नर आठ मोना वगेदेना दरेके दरेक कणशथी
तेमने अभिषेक कथे

નેનેદ વોધ્યમ્-રૂપ્યમયાના, મણિમયાનાં, સ્તુર્ણમ્પ્યનિર્મિતાના તુર્ણમણિનિર્મિતાના, રૂપ્યમણિનિર્મિતાના, સ્વર્ણરૂપ્યરત્નમયાનામિતિ । મૌમેયાનામ્ પાર્થિવાનાં ઘટાનામિતિ અન્યન્ચ મહાર્થે યાત્-તીર્થકરમિષેકમ્ તીર્થકરનિષ્ક્રમણામિષેક સાધનમ્ ' ઉવદ્વેહ ' ઉપસ્થાપયત, પ્રાપયત, યાત્-ઉપસ્થાપયન્તિ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમરોડસુરેન્દ્રઃ યાત્-અચ્યુત પર્યવસાનાઃ=ચમરેન્દ્રાદારમ્યાચ્યુતેન્દ્રપર્યન્તાધતુઃ પટિ સરૂપ્યકા ઇન્દ્રાઃ, આગતાઃ । તતસ્ત્વ દનન્તરં ત્વલ્લ શક્રો દેવેન્દ્રો દેવરાજઃ=મૌધર્મેન્દ્ર, આભિયોગિકાન્ દેવાન્ શ્વન્દયતિ, શ્વન્દયિત્વા એવમવાદીત્-ક્ષિપમેવાપ્તસહસ્ત્ર સૌવર્ણિકાનાં યાત્-અન્યન્ચ તદ્

રૂપ્ય, મણિ નિર્મિત કલશોં કો મિટ્ટી કે કલશોંકો તથા ઓર શ્રીમહાર્થ-મહા પ્રયોજન સાધક ભૂત-તીર્થ કર-નિષ્ક્રમણામિષેક (દિક્ષાકે) સાધનોં કો ઉપસ્થિત કરો । રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર ઉન લોગો ને આજ્ઞાનુસાર સય સાધનો કો ઉપસ્થિત કર દિયા ।

(તેણ કાલેણ તેણ સમયે ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્યુતપરજ્જવ સાણા આગયા, તણ સરૂપ્યકા આભિયોગિંદે દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં ચરમેન્દ્ર સે હેકર અચ્યુતેન્દ્ર પર્યન્ત ૬૪ ઇન્દ્ર આ ગયે । હસ કે અનન્તર શક્ર દેવેન્દ્ર દેવ રાજ ને-મૌધર્મેન્દ્ર ને-આભિયોગિક દેવોં કો બુલાયા-ઓર બુલાંકર ઉન સે હસ પ્રકાર કહા-(ત્વિષ્ણમેવઅદ્વસદસસ સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિહલ ઉવદ્વેહ, જાવ ઉવદ્વેવંતિ) તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮, સુવર્ણ આદિ કે નિમિત્ત કલશોં કો તથા ઓર શ્રી વિપુલ માત્રા મેં તીર્થકર

આવેલા કળશો, સોના ચાદી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશો, માટીના કળશો તેમજ ખીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થ કર નિષ્ક્રમણામિષેકનાં સાધનો લાવો રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ બધા સાધનો લઈ આવ્યા

(તેણ કાલેણ તેણ સમયે ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્યુતપરજ્જવસાણા આગયા, તણ સરૂપ્યકા આભિયોગિંદે દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માટીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચાસઠે ઇન્દ્રો આવી પહોંચ્યા

ત્યારબાદ શક્ર દેવેન્દ્ર અને દેવરાજે-મૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(ત્વિષ્ણમેવઅદ્વસદસસ સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિહલ ઉવદ્વેહ જાવ ઉવદ્વેવંતિ)

તમે લોકો તત્કાલે એક હાતર ચાક (૧૦૦૮) સોના વગેરેથી બનાવવામા આવેલા કળશો તેમજ ખીજા પણ તીર્થ કરના અભિષેક માટેના સાધનો

न्द्रो देवराज -आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवा
नुमिया । क्षिमेव ' अणेगखभ०जात्र मणोरम सीय उगट्टवेह ' अनेकस्तम्भशत
सनिविष्टां यावद्-मनोरमा शिविकाम् उपस्थापयत्, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो
पस्तापितापि शिविका तामेव-कुम्भकोपस्थापितामेवशिविकामनुप्रविष्टा दिव्यानु-
भावेनेति भावः । सू०३८ ॥

मूलम्-तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-
ट्टित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरूहड,
दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेड सद्दावित्ता एव वयासी—
तुब्भे णं देवाणुप्पिया । णहाया जाव सव्वालकाराविभूसिया
मल्लिस्स सीय परिवहह जाव पगिवहति, तएण मक्के दावदे
देवराया मणा०माए दक्खिणिल्ल उवत्थि वाह गणहइ, ईसाणे
उत्तरिल्ल गेणहइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्टिल्ल, वली उत्तरिल्ल
हेट्टिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।
' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्टरोमकूवेहि । पच्छावहति
सीय, असुरिदसुरिद नागिदा ॥ १ ॥ चलचवलकुडलधरां,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया-और उनसे अनेक स्तम्भ
शत युक्त शिविका (पालखी)ले आने को करा-उन्होंने भी शीघ्रवैसी ही
शिविका(पालखी)लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य
प्रभाव से कुम्भक राजाकी शिविका के साथ मिल गई। सूत्र " ३८ "

शक्र देवेन्द्र देवराज पण आभियोगिक देवाने बोलाव्या अने तेभने सेकडे
थावलाओवाणी पालखी लाववाने हुकम कर्थे ते बोडे पण सत्तरे पावणी
वर्ध आव्या देवराजनी ते पालखी पोतानी दिव्य प्रभाथी कुलक राजनी
पालखी साथे गणी गध ॥ अत्र " ३८ " ॥

अभिषेके वर्तमानेऽप्येककाः=अप्येके-केचन देवा. मिथिलां राजधानीं च साम्ब
न्तरं वाह्य=अन्तर्गृह्य यावत्-सर्वतः=समन्तान्=दिशु विदिशु परिधावन्ति=
हर्षातिशयेन कूर्दन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं कुम्भस्यो राजा द्वितीयवारमपि ' उत्तरा
वक्रमण ' उत्तरावक्रमणम्=उत्तराभिमुखं मन्त्री निवेद्य यावत्-सर्वाङ्कारविभूषितां
करोति । कृत्वा, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दपिरा, परमवादीत्-हे देवा
नुमियाः ! सिममेव मनोरमा शिविकाप्रस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु शक्रो देवे

इस प्रकार जब मल्ली अर्हत का अभिषेक हो रहा था-तब कितनेक
देव हर्षातिशयके चशचर्त्ता होकर मिथिला नगरीमें भीतर और बहार सब
ओर-इधर से उधर कूद रहे थे । (तएण कुम्भ राया दोच्चपि उत्तराव
क्क्रमण जाव सन्वालकारविभूसिय करेइ करिता कोटुविषयपुरिसे सदावेइ
सदावित्ता एव वयासी) जब अभिषेक क्रिया समाप्त हो चुकी-तब कुम्भ
राजाने दूसरी बार फिर मल्ली अरिहन को पूर्वकी ओर मुख करके सिंहा
सन पर बैठाया-और उन्हें समस्त अलंकारों से विभूषित किया बाद में
कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव मनोरम सी
य उवट्टवेह, ते उवट्ट्वेति तएण सक्के १ आभियागिए ० खिप्पामेव
अणेव खम ० जाव मनोरम सीय उवट्टवेह जाव सा वि सीया त चेव
सीय अणुपविट्ठा) तुम लोग शीघ्र ही अनेक स्तम्भ शत युक्त एक शिविका
को उपस्थित करो-उन लोगों ने भी राजा की आज्ञानुसार शीघ्र
वैसीही शिविका लाकर उपस्थित कर दी । इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र

आ प्रभाञ्जे न्यारे आणाल्लु भट्ठी अर्द्धतने आभिषेक थछ रह्यो छतो
त्यारे मिथिला नगरीनी अहार अने अहर ओमेर हर्षातिशेकथी डेटलाक देव-
ताओ आभतेम हूँ रह्या छता

(तएण कुम्भ राया दोच्चपि उत्तरावक्रमण जाव सन्वालकारविभूसिय करेइ
करिता कोटुविषयपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

न्यारे अभिषेकनी विधि पूरी थछ त्यारे कुलक राजाओ भील वपत
भट्ठी अर्द्धतने पूर्वनी तरफ ओ राणीने ओसाउथा अने तेमने अथा धरे
छाओथी शङ्खगार्था त्थारपथी डोटु भिक पुशेने ओलावीने तेओने हुकम उर्यो के
(खिप्पामेव मनोरम सीय उवट्टवेह, ते उवट्ट्वेति, तएण सक्के १ आभियो
(गिए ० खिप्पामेव अणेव खम ० जाव मनोरम सीय उवट्टवेह जाव सावि
सीया त चेव सीय अणुपविट्ठा)

तमे दोडो सेकडो आललाओवाणी ओड पावणी भत्तरे लाये डोटु भिक
पुशेने पथ नन्दीथी राजनी आज्ञा सुजण पावणी लछ आ १२भाक

न्द्रो देवराज -आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवा
नुप्रिया ! क्षिप्रमेव ' अणेगखभ० जाव मणोरम सीय उवट्टवेह ' अनेकस्तम्भशत
सनिविष्टा यावद्-मनोरमा शिविकाम् उपस्थापयत, यावत् तापि शक्रो देवेन्द्रो
पस्तापितापि शिविका तामेव-कुम्भकोपस्थापितामेवशिविकामनुपविष्टा दिव्यानु-
भावेनेति भावः । सू० ३८ ॥

मलम्-तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-
ट्टित्ता जेणैव मणोरमा सीया तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीय दुरूहइ,
दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—
तुव्वमे णं देवाणुप्पिया । पहाया जाव सव्वालकारविभूसिया
मल्लिस्स सीय परिवहह जाव पग्विहति, तएण मक्कं दावदे
देवराया मणा०माए दक्खिणिह्ल उवहिह्ल वाह गणहइ, ईसाणे
उत्तरिल्लं गेणहइ, चमरे दाहिणिह्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्ल
हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।
' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्टरोमकूवेहि । पच्छावहंति
सीयं, असुरिंदसुरिद नागिंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुडलधरां,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया-और उनसे अनेक स्तम्भ-
शत युक्त शिविका (पालखी) ले आने को कहा-उन्होंने भी शीघ्र वैसी ही
शिविका (पालखी) लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य
प्रभाव से कुम्भक राजा की शिविका के साथ मिल गई। सूत्र " ३८ "

शक्र देवेन्द्र देवराज पण आभियोगिक देवाने बोलाव्या अने तेमने मेकडे
यासलाओवाणी पालणी लाववाने हुंम कर्यो ते बोडो पण सत्तरे पावुंभी
लई आव्या देवराजनी ते पालणी पोतानी दिव्य प्रलाधी कुलक राजानी
पालणी साथे लणी गइ ॥ सूत्र " ३८ " ॥

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहंति सीय
जिणिदस्स ॥ २ ॥ " तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीयं
दुरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्टट्टमंगलगा पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्टिया एव निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं
मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मग्गिभ-
तरचाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव
परिधावति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संभवणे उज्जाणे
जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालकारं मुंचइ, त पभावई
पडिच्छई । तएण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ ।
तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
खीरोदगसमुद्धे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा 'णमोऽरथुणं
सिद्धाण त्तिकट्ठु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं
मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाण माणु-
स्साण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य
सक्कस्स वेयण सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समय च णं
मल्ली अरहा सामाइय चरित्तं पडिवज्जं त समय च णं मल्लिस्स
अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।
मल्लीणं अरहा जे से हेमताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे
पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-
समयासि अट्टमेणं भस्सेण अपाणएणं अग्गिणीहि नक्खत्तेणं

जोगमुवागएणं तिहि इत्थीसएहि अर्विभतरियाए परिसाए,
 तिहि पुरिससएहि वाहिरियाए परिसाए सद्धिमुडे भवित्ता पव्व-
 इए । मल्लि अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइसु-तं जहा
 —“ णंदेय णदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य । अमरवइ,
 अमरसेणे, महसेणे, चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ ” तएणंसे भवणवइ
 मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिम करेति, करित्ता जेणेव नंदी
 सरवरे० अट्ठाहिय करेति करित्ता जाव पडिगया । तएण मल्ली
 अरहा जं चेव दिवस पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल-
 समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयांसि सुहास-
 नसवरगयस्स सुहेण परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणेहि पस-
 त्थाहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि तयावरणकम्मरयविकरणकर
 अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे
 समुप्पन्ने ॥ सू० ३९ ॥

टीका-‘ तएण मल्ली ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं त्वल्लु मल्लीं अहंन् सिंहासना
 दभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय यत्रैव मनोरमाशिरिका तत्रैवापागच्छति, उपागत्य मनो-
 रमा शिरिका ‘ अणुपयाहिणी करेमाणा ’ अणुप्रदक्षिणी कुर्वाणा=आनुकूल्येन

‘ तएण मल्ली अरहा-इत्यादि । ’

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद (मल्ली अरहा सींहासणाओ अब्भुट्ठेइ)
 मल्ली अहंत सिंहासन से उठे (अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमसीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणो
 रम सीय दुरुइइ, दुरुहित्ता सींहासणवरगये पुरत्थामिमुहे सन्निसन्ने)

“ तएण मल्ली अरहा ” इत्यादि

टीकार्थ-‘तएण’ त्पारमाह (मल्ली अरहा सींहासणाओ अब्भुट्ठेइ) भट्टी अहं त
 सिंहासन उपरथी उवा यथा

(अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरम
 सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरुहित्ता सींहासणवरगए पुरत्थामि
 मुहे सन्निसन्ने)

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहति सीय
जिणिदस्स ॥ २ ॥ ” तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीय
दुरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्टट्टमंगलगा पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्टिया एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तएण
मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मग्भि-
तरवाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव
परिधावन्ति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे
जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालकारं मुंचइ, त पभावई
पडिच्छई । तएण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ ।
तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स कैसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
खीरोदगसमुद्धे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा ‘णमोऽरधुणं
सिद्धाणं त्तिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं
मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ तं समय च णं देवाण माणु-
स्साण -य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य
सक्कस्स वेयणं सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समयं च णं
मल्ली अरहा सामाइय चरित्त पडिवज्जं त समय च णं मल्लिस्स
अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।
मल्लीणं अरहा जे से हेमताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे
पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-
समयसि अट्टमेणं भत्तेण अपाणएण अस्सिणीहि नक्खत्तेणं

તત સ્વલુ શક્રો દેવેન્દ્રો દેવરાજો મનોરમાયાઃ શિવિમાયા દક્ષિણિલ્લ=
દાક્ષિણાત્ય=દક્ષિણદિગ્ભાગસ્થમ્; 'ઉત્તરિલ્લ' ઉપરિતન ઉપરિભાગસ્ય 'વાહ'
વાહુ=દ્વંડ ગૃહ્ણાતિ ईशानः-ईशानेन्द्र.-'ઉત્તરિલ્લ' ઉત્તરદિગ્ભાગસ્થમ્ ઉપરિતન
વાહુ=દ્વંડગૃહ્ણાતિ, ચમર=ચમરેન્દ્રઃ 'દાહિણિલ્લ' દાક્ષિણાત્ય=દક્ષિણદિગ્ભાગસ્થ
'હેટ્ટિલ્લ' અધસ્તન દ્વંડ ગૃહ્ણાતિ, પલી=વલીન્દ્રઃ 'ઉત્તરિલ્લ' ઉત્તરીયમ્=ઉત્તર-
રભાગસ્થમ્ અધસ્તન દ્વંડ ગૃહ્ણાતિ અગ્રેષા દેવા. ભવનપતિ-વ્યન્તર-જ્યોતિષ્ક
વૈમાનિકેન્દ્રાઃ, 'જહારિહ' યથાઽર્હ-યથાયોગ્ય સ્વ સ્વ યોગ્યતાઽનુસાર મનોરમા
શિવિકા પરિવહન્તિ ।

“પુર્વિવ ઉક્તિવત્તા માણુસ્સેહિં તો હટ્ટરોમકૂવેહિ ।

પચ્છા વહતિ સીય અસુરિંદ-સુરિન્દ-નાગિંદા ॥ ૧ ॥

વાહ ગેળહ, ઈસાણે ઉત્તરિલ્લ વાહ ગેળહ ચમરે દાહિણિલ્લ
હેટ્ટિલ્લ, પલી ઉત્તરિલ્લ હેટ્ટિલ્લ અવસેસા દેવા જહારિહ મનોરમ સીય
પરિવહન્તિ) વાદ મે શક્ર દેવેન્દ્ર દેવ રાજા ને ઉસ મનોરમા શિવિકા કે
દક્ષિણ દિગ્ભાગવર્તી ઉપરકે દ્વંડે કો પકડા, ઈશાનેન્દ્ર ને ઉત્તર દિગ્ભા
ગસ્ય ઉપર કે દ્વંડે કો પકડા ચમરેન્દ્ર ને દક્ષિણદિગ્ભાગવર્તી નીચે
કે દ્વંડે કો પકડા ।

અવશિષ્ટ ભવન પતિ, વ્યન્તર જ્યોતિષ્ક એવ વૈમાનિક હન્દ્રો ને
અપની ૨ યોગ્યતાકે અનુસાર ઉસ શિવિકા કા પરિવહન કિયા । (પુર્વિવ
ઉક્તિવત્તા માણુસ્સેહિંતો હટ્ટ રોમકૂવેહિ । પચ્છાવહતિ સીય અસુરિંદ
સુરિંદ નાગિંદા) સત્ર સે પ્રથમ હર્પકે વશ સે રોમાન્ન યુક્ત હુણ મનુષ્યો
ને ઉસ શિવિકા કો અપને સ્કધો પર રહ્યા-વાદ મેં અસુરેન્દ્રો ને, સુરેન્દ્રો

(તણ સર્વકે દેવિંદે દેવરાયા મનોરમાય દક્ષિણિલ્લ ઉત્તરિલ્લ
વાહ ગેળહ, ઈસાણે ઉત્તરિલ્લ વાહ ગેળહ ચમરે દાહિણિલ્લ હેટ્ટિલ્લ વલીન્દ્ર
ઉત્તરિલ્લ હેટ્ટિલ્લ અવસેસાદેવા જહારિહ મનોરમ સીય પરિવહન્તિ)

ત્યાર બાદ શક્ર દેવેન્દ્ર દેવરાજે તે મનોરમ પાલખીના દક્ષિણ પાલખીના
દડાને આધે, ઈશાનેન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના ઉપરના દડાને આધે, ચમરેન્દ્રે
દક્ષિણ દિશા તરફના નીચેના દડાને આધે, બનીન્દ્રે ઉત્તર દિશા તરફના
દડાને આધે ।

પાટીના બધા ભવનપતિ, વ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક હન્દ્રોએ
પોતપોતાની યોગ્યતા મુજબ પાલખીનું પરિવહન કર્યું

(પુર્વિવ ઉક્તિવત્તા માણુસ્સેહિંતો હટ્ટરોમ કૂવેહિ પચ્છા વહતિ સીય અસુરિંદસુરિંદનાગિંદા)

પુલકિત અને હર્ષધેલા થયેલા માણુસોએ મીઠી પહેલા પાલખીને પોતાના

સ્વશુભવાઠ્ઠયા-સ્વદક્ષિણભાગે કુર્વતી, મનોરમાં શિવિકા ' દુરુહઃ ' દુરોહતિ= આરોહતિ, દુરુહ મિંદાસનવરગતઃ પૌરસ્ત્યામિમુરયઃ=પૂર્વદિશ્મુરયઃ સન્ સન્નિવળઃ। તતઃ સ્વલુ કુમ્ભકોઽપ્રાદશ ' સેણિપ્પસેણીઓ ' શ્રેણિ-પ્રશ્રેણી=શિવિકાવાહકાન્ -અગ્રાન્તરજાતીયપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્યા એવમવાદીત્=હે દેવાનુપ્રિયા ! યુય સ્વલુ સ્નાતા યાવત્-સર્ગાલંકારવિભૂષિતાઃ મલ્લ્યાઃ શિવિકા પરિવહત, સ્કન્ધોપરિધારયત યાવત્-પરિવહન્તિ ।

ઉઠકર વે જતાં વહ મનોરમ શિવિકાથી વહાં ગયે । વહાં જાકર વે ઉસ મનોરમ શિવિકા કો અપને શુભ કી વાઠ્ઠા સે અપને દક્ષિણ ભાગ મેં કરતે હુણ ઉસ શિવિકા પર આરુઢ હો ગયે આરુઢ હો કર ફિર વે પૂર્વ દિશા કી તરફ મુલ્લ કર કે ઉસ પર રલ્લે હુણ સિંહાસન પર બેઠ ગયે । (તણ કુમ્ભ અઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) હસ કે ઘાદ કુમ્ભક રાજા ને ૧૮, શ્રેણી પ્રશ્રેણી જનો કો-શિવિકા વાહક ૧૮ પ્રકાર કે અગ્રાન્તર જાતીય પુરુષો કો બુલાયા-ઑર બુલા કર ઉન સે એસા કહા-(તુમ્હેણ દેવાણુ પ્પિયા ! જ્ઞાયા જાવ સન્વાલકાર વિભૂસિયા મલ્લીસ સીય પરિવહર, જાવ પરિવહતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ સ્નાન કર તથા સમસ્ત અલકારોં સેવિભૂષિત હોકર મલ્લી અર્હત કી પાલઘી કો ઉઠાઑ રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા પાકર ઉન લોગો ને ઉસ પાલઘી કો અપને ૨ સ્કન્ધો પર ઉઠા કર રલ્લ લિયા (તણ સ્કન્ધે દેવિદે દેવરાયા મનોરમાણ દક્ષિણગિલ્લ ઉવરિલ્લ

અને ઉભા થઈને જ્યા મનોરમ પાલખી હતી ત્યા પહોંચ્યા ત્યા પહોંચીને તેઓ તે મનોરમ પાલખીને આત્મશ્રેયની ઇચ્છાથી પોતાની જમણી બાજુએ રાખીને તે મનોરમ પાલખી ઉપર ચઢીને તેઓ પૂર્વદિશા તરફ મોઢીને તેના ઉપર મૂકેલા સિંહાસન ઉપર બેસી ગયા

(તણ કુમ્ભ અઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) ત્યાર પછી કુલક રાજાએ અઢાર શ્રેણી પ્રશ્રેણીજનોને પાલખી ઉચકનારા અઢાર પ્રકારના અવાતર જાતિના પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આજ્ઞા આપી કે—

(તુમ્હે ન દેવાણુપ્પિયા ! જ્ઞાયા જાવ સન્વાલકારવિભૂસિયા મલ્હિસ સીય પરિવહર જાવ પરિવહતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સ્નાન કરો અને ત્યારબાદ બધા અલકારોથી અલકૃત થઈને મલ્લી અર્હતની પાલખીને ઉચકે રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ લોકોએ તરત સ્નાન કરીને પાલખીને પોતપોતાના બાજા ઉપર ઉચકી લીધી

અષ્ટસંખ્યકાનિ મહ્નલાનિ પુરતઃ=અગ્રે ' અદાણુપુઞ્ચીપ ' યથાનુપૂર્ણા=અનુક્રમેણ
પ્રપચ્ચિનાનિ-વલિનાનિ, એવ તેવાં નામાનિ-(૧) સોવત્થિય ' સ્વસ્તિકઃ, (૨)
સિરિવચ્છા ' શ્રીવત્સઃ, (૩) જાદિયાવત્ત ' નન્દ્યાવર્તઃ, (૪) વદ્ધમાણગ ' વર્ધમાનઃ
(૫) મદ્દાસણ ' મદ્દાસનમ્ (૬) ' કલસ ' કલશ, (૭) ' મચ્છ ' મત્સ્યુગ્મમ્,
(૮) ' દપ્પણ ' દર્પણવેતિ । એવ નિર્ગમો યાજમાલે જમાલિવન્નિર્ગમનં=નિર્ગમન
વર્ણન વિજ્ઞેયમ્ ।

તતઃ સ્વલુ મલ્લયા અર્હતો નિષ્ક્રામતઃ=નિષ્ક્રમણ કુર્વતઃ, અપ્પેરુકા -કેવન-
દેવા સ્વસ્ત્રવૈક્રિયશક્ત્યા મિથિયા રાજયાનીમ્-' સર્વિમતરયાહિરિય ' સામ્યન્ત-
રવાદ્યામ્ = અન્તર્વહિઃ ' આમિત્તપમજ્જિઓવલિત્ત ' આસિત્તપમાર્જિતોપલિપ્પામ્
આસિત્તા=રૂપજલરુણૈરભિપિત્તામ્, પશ્ચાત્ સમાર્જિતામ્=કચવરાધપનયનેન સશો-
ધિતામ્, તતઃ ઉપલિપ્પા સ્વલિપ્પા ચૂર્ણાદિના સંલિપ્પા કુર્વન્તિ, કૃત્વા યામત્-પરિ-
ધાવન્તિ=હર્ષોત્કર્ષણેતસ્તતઃ કુર્વન્તિ ।

આરુઢ હુપ મલ્લી અર્હતકે આગે સવ સે પહિલે ક્રમાનુસાર આઠ ૨ મગલ
દ્રવ્ય ઉપસ્થિત હુપ । ઉન્કે નામ યે હૈં

(૧) સોવત્થિય-સ્વસ્તિક (૨) સિરિવચ્છા-શ્રીવત્સ (૩) જાદિયાવત્ત
-નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણગ-વર્ધમાન (૫) મદ્દાસણ-મદ્દાસન (૬)
કલસ-કલશ (૭) મચ્છ-મત્સ્ય યુગ્મ (૮) ઔર દપ્પણ-દર્પણ
(એવ નિર્ગમો જહા જમાલિસ્સ) મલ્લી અર્હત કે નિર્ગમ કા વર્ણન જ-
માલિકે નિર્ગમ કી તરહ હી જાનના ચાહિયે । (તણ મલ્લીસ્સ અર-
હઓ નિસ્સલમમાણસ્સ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલ સર્વિમતરયાહિરિય આસિ
ય સમજ્જિઓવલિત્ત જહા ઉવવાઈણ જાવ પરિધાવતિ) જય મલ્લિ અર્હત
કા નિષ્ક્રમણ હો રહા થા ઉસ સમય કિતનેક દેવો ને અપની વૈક્રિયશ-

(૧) સોવાત્થિય,-સ્વસ્તિક, (૨) સિરિવચ્છા-શ્રીવત્સ, (૩) જાદિયાવત્ત-
નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણગ-વર્ધમાન, (૫) મદ્દાસણ-મદ્દાસન, (૬) કલસ-
કલશ, (૭) મચ્છ-મત્સ્યયુગ્મ, (૮) અને દપ્પણ-દર્પણ (અરીસો) (એવ
નિર્ગમો જહા જમાલિસ્સ) મલ્લી અર્હતના નિર્ગમનુ વર્ણન જમાલિના નિર્ગ-
મની જેમ જ બાણુબુ બોધ્યો

(તણ મલ્લિસ્સ અરહઓ નિસ્સલમમાણસ્સ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલ સર્વિમતર
યાહિરિય આસિયસમજ્જિઓવલિત્ત જહા ઉવવાઈણ જાવ પરિધાવતિ)

ન્યારે મહી અર્હતની નિષ્ક્રમણવિધિ ચાલતી હતી ત્યારે કેટલાક દેવોએ
પોતાની વૈદ્ય શક્તિ વડે મિથિલા રાજધાનીની અદર અને ખહાર બધે જળ

ચલચલકુડલધરા સન્નદ વિઝિયામરણધારી ।

દેવિદ દાણવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ ॥ ૨ ॥

‘પુલ્લિ’ પૂર્વ ‘ઉલ્લિખતા’ ઉલ્લિખતા સ્કન્ધોપરિનીતા મનુષ્યૈ, સા શિવિકા, મનુષ્યૈ કથમૂતૈરિત્યાહ-‘દ્વરોમકૂપેર્હિ’ દ્વરોમકૂપૈ દર્પવશેન રોમાશ્રયુક્તૈઃ, પથાત્-અસુરેન્દ્ર-સુરેન્દ્ર-નાગેન્દ્રાઃ શિવિકા યદન્તિ-સ્કન્ધોપરિનયન્તિસ્મ ॥ ૧ ॥ દેવેન્દ્ર-દાનવેન્દ્રા જિનેન્દ્રસ્ય જિણિકાં યદન્તિ’ इत्यन्वयः । તે દેવેન્દ્રાદયઃ કથમૂતા इत्याह-चलेत्यादि चञ्चल कुडलधरा=चलाय ते चल कुडलधराश्वेति विग्रह । पुनः किं भूता इत्याह-‘सन्नदविजिष्याभरणधारिणः’ स्वच्छन्द विकुर्विताभरणधारिणः=स्वच्छन्देन-स्वेच्छया विकुर्वितानि-वैक्रिय शक्तिसमुत्पादितानि आभरणानि-भूषणानि धारयितुं शीलं येषां ते तथा भूताः ॥ २ ॥

તતઃ સ્વલુ મલ્લયા અર્હતો મનોરમા શિવિકા દુરુદસ્ય=સમારુદસ્ય સતઃ ‘તત્પદમયાઈ’ તત્પદમતયા=સર્વતઃ પૂર્વમ્ ઇમાનિ અઠાઠમઙ્ગલકાનિ=અષ્ટગણિતાનિ

ને ઓર નાગેન્દ્રોં ને રખા । (ચલચલકુડલધરા સન્નદવિઝિયામરણધારી, દેવિદ દાણવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ) હન દેવેન્દ્રા દિકોં કે કુડલ ડસ સમય ઇધર સે ડધર અત્યન્ત ચચલ હો રહે થે । ઉન્હોં ને જો આમરણ ધારણ કર રહે થે વે અમી ઇચ્છાનુસાર વૈક્રિય શક્તિ સે સમુત્પાદિત કિયે હુઈ થે । હસ તરહ દેવેન્દ્રોં ઓર દાનવેન્દ્રો ને જિનેન્દ્ર કી શિવિકા કો અપને ૨ સ્કન્ધો પર રખા । (તત્પદ મલ્લીસસ અરહાઓ મનોરમ સીય દુરુદસસ સમાણસસ તત્પદમયાઈ હમે અદ્ધ અદ્ધમંગલગા પુરઓ અઠાણપુન્વીઈ સપદ્વિયા) હસ કે અનન્તર ડસ મનોરમ શિવિકા પર

ખલા ઉપર ઉચકી, ત્યારપછી અસુન્દ્રોએ, સુરેન્દ્રોએ અને નાગેન્દ્રોએ ઉચકી (ચલચલ કુડલધરા, સન્નદવિઝિયામરણધારી, દેવિદ, દાણવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ)

તે વખતે દેવેન્દ્ર વગેરેના કુડળો આમ તેમ ખૂળ હાલી રહ્યા હતા

ધારણ કરેલા આભરણોને દેવોએ પોતાની ઈચ્છા મુજબ વૈક્રિય શક્તિ વડે ઉત્પન્ન કરેલા હતા આ પ્રમાણે દેવેન્દ્રો અને દાનવેન્દ્રોએ જિનેન્દ્રની પાલખી પોતપોતાના ખલે ઉચકી હતી

(તત્પદ મલ્લિસસ અરહાઓ મનોરમ સીય દુરુદસસ સમાણસસ તત્પદમયાઈ હમે અદ્ધ અદ્ધમંગલગા પુરઓ અઠાણપુન્વીઈ સપદ્વિયા)

ત્યારબાદ મનોરમ પાલખી ઉપર બેઠેના મલ્લી અર્હંતની સામે સૌ પ્રથમ અનુક્રમે આઠ આઠ મંગળ દ્રવ્યો મૂકવામાં આવ્યા-તે દ્રવ્યોના નામો આ પ્રમાણે છે,

ततः रलु इन्द्रो देवेन्द्रो देवराजो मस्त्या अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्जितान्
 केशान् स्त्रे धरति प्रतिपद्य, क्षीरोदरमुद्रे प्रक्षिपति । तत रलु मल्ली अर्हन-
 'णमोऽत्युण सिद्धाण' नमोऽगु रलु रिद्धेभ्य' 'ति कृत्वा सामायिकचारित्र
 प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन् समये च रलु मल्ली अर्हन चारित्र प्रतिपन्न,
 तस्मिन्नेव समये रलु देवाना मनुष्याणा च 'णिग्घोसे' निर्घोष' शब्द', 'तुरिय
 णिणाय गीयवाइय निग्घोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च,
 शक्रवचनसदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिलुक्के' निलीन =तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छि
 त्ता खीरोदग्ग समुद्वे पक्खिवइ) उन मल्लिं प्रभुके लुचित केशोको शक्र
 देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र में रग्व लिया और रखकर क्षीर सागर में
 डुबे प्रक्षिप्त कर दिया । (तएण मल्ली अरहा " णमोऽत्युण सिद्धाणन्ति
 कट्ठु सामाइयचरित्त पडिवज्जइ) मल्ली अर्हत्तने " सिद्धों को नम-
 स्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र को धारण किया ।
 (ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ त समय च ण देवाण मा-
 णुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स
 वयणसदेसण णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हत ने
 चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवों और मनुष्यों का निर्घोष
 हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र
 की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग्ग-
 समुद्वे पक्खिवइ)

ते मल्ली प्रभुना लुचित वाद्योने शक्र देवेन्द्र देवराजे पोताना वस्त्रभा
 लध दीधा अने लधने क्षीर सागरभा तेज्याने नाथो दीधा

(तएण मल्ली अरहा " णमोऽत्युण चि कट्ठु सामाइय चारित्त पडिविसज्जइ)

मल्ली अर्हत्ते " सिद्धोने भारा नमस्कार " आ पाठनु पाठन करता
 सामायिक चारित्र धारण कर्तुं

(ज समय च ण मल्ली अर्हां चरित्त पडिवज्जइ, त समय च ण देवाण
 माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयण
 सदेसण णिलुक्के यावि होत्था)

न्यादे मल्ली अर्हत्ते चारित्रने स्वीकार कर्थो त्यादे देवो अने भावु
 सोना ध्येता डुध निर्वाधने तेभ्य वाज्ज्या अने गीतोना ध्वनिने शक्रेन्द्रे
 पोताना डुधमथी णध करावी दीधा

તતઃ સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ યત્રૈવ સદસામ્નયગમુગાન યત્રૈશશોકવરપાદપઃ,
તત્રૈશોરાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય શિશિકાત પ્રત્યરોઢતિ પ્રત્યપરુષાભરણાલકારં મુચ્ચતિ
તદાભરણાલકાર પ્રમાયતી=મલ્લયા જનની પ્રતિચ્છતિ વસ્ત્રાશ્ચલે ધારયતિ તત્
સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ સ્વયમેવ=સદસ્તેનૌ પચ્ચમુષ્ટિક લોચ શિરઃ કેશલુચ્ચન કરોતિ।

ક્તિ સે મિથિલા રાજધાની કો ખીતર ઘાહિર મે જલકળો સે સિશ્ચિત કર
દિયા થા, કૂઢા કરકુટ કે અપનયન સે ઉસે ત્રિલકૂલ સાફ સુધર કર
દિયા થા ઓર ચૂના આદી સે ઉસે લીપ પોન દિયા થા। યાવત્ હષોત્કર્ષ
સેવે હધર ઉધર ઉસમેં હચ્છાનુસાર સૂચ્ય કુદે ઓર ઉઠલે યે।

ઔપપાત્તિક સૂત્ર મેં નિષ્ક્રમણ કા જૈસા વર્ણન યહા ખી જાનના
ચાહિયે। (તણ મલ્લી અરહા જેગેવ સદસસવવળે ઉજ્જાળે જેગેવ અ
સોગવરપાયવે તેળેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહર,
પચ્ચોરુહિત્તા આભરણાલકાર મુચ્ચઈ, ત પમાવઈ પહિચ્છઈ) યે મલ્લી
અર્હત જહા સરસામ્નવન નામકા ઉચાન ઓર ઉસમે જહા અશોકવૃક્ષ
થા વહા પહુંચે વહાં પહુંચ કર વે ઉસ શિશિકા સે નીચે ઉતરે ઉતર કર
હચ્છોને અપને આભરણ ઓર અલકારોં કો ઉતારા-ઉતારે હુઅ ઉન આ
ભરણ ઓર અલકારોં કો ઉનકી માતા પ્રમાવતો ને અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં
રચ્ચ લિયા (તણ મલ્લી અરહા સયમેવ પચ્ચમુષ્ટિય લોચ કરેઈ) હસકે
બાદ ઉન મલ્લી અર્હત ને અગને કેશોં કા પચ્ચમુષ્ટિ લોચ કિયા।

સિચન કથું હંતુ કથરો વગેરે વાળીને તેને સ્પર્શ બનાવી અને ચુના વગેરેથી
ધોળી નાખ્યું હંતુ યાવત્ હપંધેવા થઇને તેઓ ખૂમ ઇચ્છા મુજબ ઉછળ્યા
અને કૂદ્યા હંતા

ઔપપાત્તિક સૂત્રમા નિષ્ક્રમણનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે, અહીં પણ તે
મુજબ જ સમજ લેવું જોઈએ

(તણં મલ્લી અરહા જેગેવ સદસસવવળે ઉજ્જાળે જેગેવ અસોગવરપાયવે
તેળેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહર, પચ્ચોરુહિત્તા આભરણાલકાર
મુચ્ચઈ, ત પમાવઈ પહિચ્છઈ)

મલ્લી અર્હત બ્યા સહસામ્નવન નામે ઉધાન અને તેમા પણ બ્યા અશોક
નામે વૃક્ષ હંતુ ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ પાલખીમાથી નીચે ઉતર્યા,
નીચે ઉતરીને તેમણે પોતાના આભરણ અને ધરેણાઓ ઉતાર્યા મલ્લી અર્હતના
આભરણ અને ધરેણાઓને તેમના માતા પ્રભાવતીએ પોતાના વસ્ત્રના છેડામા
લાઈ લીધા (તણ મલ્લી અરહા સયમેવ પચ્ચમુષ્ટિય લોચ કરેઈ) ત્યારપછી મલ્લી
અર્હતે પોતાના વાળોનું પચ્ચમુષ્ટિ લુચ્ચન કયું

તતઃ રત્નુ શ્વો દેવે દ્રો દેવરાજો મલ્લ્યા અર્હતઃ વેશાન પ્રતીચ્છતિ લુહિતાન
વેશાન વ્હે ધરાતિ પ્રતિચ્છતિ, ક્ષીરોદરમુદ્રે પ્રક્ષિપતિ । તત્ રત્નુ મલ્લી અર્હન-
' જમોડત્યુણ સિદ્ધાણ ' જમોડત્ રત્નુ રિદ્ધેય' િતિ કૃત્વા સામાયિકચારિત્ર
પ્રતિપદ્યતે=પ્રાપ્નોતિ । યસ્મિન સમયે ચ રત્નુ મલ્લી અર્હન ચારિત્ર પ્રતિપદ્ય
તસ્મિન્નેવ સમયે રત્નુ દેવાના મનુષ્યાણા ચ ' જિગ્ધોસે ' નિર્ઘોષઃ શબ્દઃ, ' તુરિય
જિનાય ગીયવાહય નિગ્ધોસે ય' તુર્યનિનાદગીતવાદિત્ર નિર્ઘોષશ્ચ=ગાનગીતધ્વનિશ્ચ,
શકવચનસંદેશન=શક્રેન્દ્રાણ્યા, ' જિલુકે ' નિલીન' =તિરોહિતઃ નિવૃત્ત ચાપ્યમવત્ ।

(તળણ સવ્કે દર્વિંદે દેવરાયા મલ્લિસ્સ કેસે પઢિચ્છહ પઢિચ્છિ
ત્તા સ્વીરોદગ સમુદ્દે પવિત્રવહ) એન મલ્લિ પ્રભુકે લુહિત વેશોકો શક
દેવેન્દ્ર દેવરાજ ને અપને વસ્ત્ર મે રત્ન લિયા ઔર રત્નકર ક્ષીર સાગર મે
બન્હે પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા । (તળણ મલ્લી અરહા ' જમોડત્યુણ સિદ્ધાણસિ
કદ્દુ સામાયિકચરિત્ત પઢિવજ્જહ) મલ્લી અર્હનને " સિદ્ધોં કો નમ-
સ્કાર હો " એસા પાઠ યોલ કર સામાયિક ચારિત્ર વો ધારણ કિયા ।
(જ સમય ચ જ મલ્લી અરહા ચરિત્ત પઢિવજ્જહ ત સમય ચ જ દેવાણ મા-
ણુસ્સાણ ય જિગ્ધોસે તુરિય જિનાય ગીયવાહયનિગ્ધોસે ય સવ્કસ્મ વ્યર્ણ
વ્યર્ણસદેસણ જિલુકકે યાવિ હોત્યા) જિન સમય મલ્લી અર્હત ને
ચારિત્ર કો અગીકાર કિયા થા ડસ સમય દેવો ઔર મનુષ્યો કા નિર્ઘોષ
હુઆ થા તયા વાજોં એવ ગીતોં કો જો ધ્વનિ હુઈ થી વહ સવ શક્રેન્દ્ર
કો આજ્ઞા સે બન્દ કર દી ગઈ ।

(તળણ સવ્કે દર્વિંદે દેવરાયા મલ્લિસ્સ કેસે પઢિચ્છહ પઢિચ્છિત્તા સ્વીરોદગ
સમુદ્દે પવિત્રવહ)

તે મલ્લી પ્રભુના લુહિત વાજોને શક દેવેન્દ્ર દેવરાજે પોતાના વસ્ત્રમાં
લઈ લીધા અને લઈને ક્ષીર સાગરમાં તેઓને નાખી દીધા

(તળણ મલ્લી અરહા ' જમોડત્યુણ સિદ્ધાણસિ કદ્દુ સામાયિક ચારિત્ત પઢિવિસજ્જહ)

મલ્લી અર્હતે " સિદ્ધોને મારા નમસ્કાર " આ પાઠનું વાચન કરતા
સામાયિક ચારિત્ર ધારણ કર્યું

(જ સમય ચ જ મલ્લી અરહા ચરિત્ત પઢિવજ્જહ, ત સમય ચ જ દેવાણ
માણુસ્સાણ ય જિગ્ધોસે તુરિય જિનાય ગીયવાહયનિગ્ધોસે ય સવ્કસ્મ વ્યર્ણ
સદેસણ જિલુકકે યાવિહોત્યા)

ન્યારે મલ્લી અર્હતે ચારિત્રને અગીકાર કર્યો ત્યારે દેવો અને માણુ
સોના ધ્યેશ હઈ નિર્ઘોષને તેમજ વાત્તઓ અને ગીતોના ધ્વનિને શકેન્દ્રે
પોતાના હકમથી બંધ કરાવી દીધા

यस्मिन् समये च खलु मल्ली अर्हन् सामायिक चारित्रं प्रतिपन्नः=मात्तवान्,
तस्मिन् समये च मल्ल्या अर्हतो मानुष्यधर्मादुत्तारं=प्रधान मन पर्यवज्ञान समु-
त्पन्नम्, गृहस्थदशार्थां ज्ञानत्रयमासीत् चारित्र्यगृहणानन्तरं तु तदानीमेव चतुर्थज्ञा-
नमभवदिति भावः । मल्ली खलु अर्हन् 'जेसे' यः सः हेमन्तानां मार्गशीर्षादि
मासचतुष्टयात्मकानां शीतकालानाम् द्वितीयो मासः चतुर्थ पक्षः-मार्गशीर्षस्या
द्यपक्षतथर्तुः पक्ष 'पोस सुद्धे' पौष शुद्धः, पौषमासस्य शुरुः पक्षः, तस्य खलु
पौषशुद्धस्य एकारसीपक्खेण' एकादशीपक्षे खलु एकादशीतिथेः पक्ष-अर्धं

(ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्तं पटिवज्जइ त ण मल्लिस्स
अरहाओ माणुसधम्मो उत्तरिए मणपज्जयमाणे समुप्पन्ने) सामायिक
चारित्र्य को अंगीकार करते ही मल्ली अर्हतको चौथा मन पर्यवज्ञान
उत्पन्न हो गया । गृहस्थ अवस्था में मल्ली अर्हत के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान
और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान जन्म जान थे । परन्तु ज्यो ही इन्होंने
चारित्र्य ग्रहण किया उसी समय इनको मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो
गया । (मल्ली ण अरहाजे से हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खेपोस
सुद्धे, तस्स ण पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेण पुव्वण्हकालसमयसि
अट्टमेणं भत्तेणं अपाणएण अस्सिणीहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएणं तिहिं
इत्थी सएहिं अर्हन्तरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए
परिसाए सद्धिं मुद्धे भवित्ता पव्वइए) मल्ली अर्हत ने जिस समय सर्व
विरतिरूप चारित्र्य अंगीकार किया था उस समय हेमतकालका द्वितीय
मास था, चौथा पक्ष था उसका नाम पौष मास था-पौष मासका शुरु

(ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्तं पटिवज्जइ त समय च ण मल्लिस्स
अरहाओ माणुसधम्मो उत्तरिए मणपज्जयमाणे समुप्पन्ने)

सामायिक चारित्र्यने स्वीकारतानी साथे ४ भट्ठी अर्हत्तने चौथु मन
पर्यवज्ञान उत्पन्न थई गयु गृहस्थ अपवस्थाभा भट्ठी अर्हत्तने मतिज्ञान,
श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान आ त्रष्टु ज्ञान ४-भज्जत हत्ता पणु न्यारे तेओओ
चारित्र्य अर्हत्तु क्युं त्यारे तेभने मन पर्यवज्ञान थई गयु

(मल्ली ण अरहा जेसे हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स ण
पोससुद्धस्स एकारसी पक्खे ण पुव्वण्हकालसमयसि अट्टमेण भत्तेण अपाणएण
अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएण तिहिं इत्थी सएहिं बाहिरियाए परिसाए
सद्धिं मुद्धे भवित्ता पव्वइए)

मल्ली अरहत्ते न्यारे २४ विरति ३५ चारित्र्य स्वीकार्य, त्यारे हेमत
क्षणो पीणो महीनो हतो चौथु पक्खवारिणु हत्तु ते भट्ठिनाउ नाम पोष

शकाले, पूर्वाह्नकालसमये, अष्टमेन भक्तेन 'अपाणएण' अपानकेन जलरहितेन अश्विनीनक्षत्रेण 'जोग' योग=चन्द्रयोगत् उपागतेन त्रिमि स्त्रीशक्तैः आभ्यन्तरिकया परिपदा, सार्धं तथा-त्रिमि' पुरुषशक्तैः बाह्यया परिपदा सार्धं मुण्डो भूत्वा मघजितः=दीना गृहीतवान् । मल्लया अर्हत् आभ्यन्तरिका परिपत् स्त्रीभिः, अन्येषा तीर्थरूपाणां पुरुषैराभ्यन्तरिका परिपत् सज्ञाता । मल्लीमर्हन्तमिमं वक्ष्यमाणा अस्त राजकुमारा अनुजिताः, तद् यथा-तेषा नामान्ये वम्—

णदे य णदिमित्ते, सुमित्त वलमित्त भाणुमित्ते य ।

अमरवड अमरसेणे, महसेणे चेव अट्टमए ॥ १ ॥

पक्ष था एकादशी का दिन था, पूर्वाह्नकालका समय था । अपानक चौबिहार अष्टम भक्त इन्होंने धारण कर रखा था, अश्विनी नक्षत्रका चन्द्रमाके साथ शुभ योग वर्त रहा था ।

तीन सौ इनकी अभ्यन्तर परिषदकी आर्थिका थी और बाह्य परिषद के तीन सौ पुरुष थे । सो उन सबके साथ इन्होंने दीक्षा धारण की थी । अन्यतीर्थकारों की आभ्यन्तर परिषद में स्त्रिया नहीं रहीं हैं ये तो इन्हीं की आभ्यन्तर परिषद में कहीं गई हैं । वहां तो आभ्यन्तर परिषदा में पुरुष ही रहे हैं । (मल्लि अरह इमे अट्ट रायकुमारा अणुपण्वइसु-त जहा - णदे य णदिमित्ते सुमित्त वलमित्त भाणुमित्तेय, अमरवड अमरसेणे महसेणे चेव अट्टमए) मल्ली अर्हन्त ने जिस समय दीक्षा धारण की उस समय इनके साथ जो आठ राजकुमार वीक्षित हुए थे-उनके नाम ये हैं ।

इत्तु पोष भडिनाने शुक्ल पक्ष इतो, अगियारसने द्विपक्ष इतो, पूर्वाह्न क्षणने वणत इतो, अपानक अष्टम भक्त तेमण्णे धारण कउलु इत्तु अश्विनी नक्षत्रने चन्द्रनी साथे शुभयोग थरु रह्यो इतो ।

तेमनी आक्य तर परिषदानी त्रयुसे आर्थिज्जो इती अने बाह्य परिषदानी त्रयुसे पुइयो इता तेजो गधानी साथे तेमण्णे दीक्षा धारण करी इती णीण तीर्थ उदेनी आक्य तर परिषदामा स्त्रीजो न इती जेमनी आक्य तर परिषदामा स्त्रीजो विषे वरुन कउल छे णीण तीर्थ उदेनी परिषदामा मात्र पुरुषो न रह्यो छे ।

(मल्लि अरह इमे अट्टरायकुमारा अणुपण्वइसु त जहा णदेय णदिमित्ते सुमित्तवलमित्तभाणुमित्तेय । अमरवड, अमरसेणे महसेणे चेव अट्टमए)

ये वणते मल्ली अर्हन्ते दीक्षा धारण करी इती ते मभये तेमनी साथे न वीक्षित थयेवा आठ राजकुमाराना नामो आ प्रमाणे छे—(१) नन्दकुमार,

(१) नन्दः-नन्दकुमार । (२) नन्दिमित्र-नन्दिमित्रकुमारः, (३) सुमित्र-सुमित्रकुमारः, (४) बलमित्रः-बलमित्रकुमारः, (५) भानुमित्रः-भानुमित्रकुमारः, (६) अमरपति, अमरपतिकुमारः, (७) अमरसेन-अमरसेनकुमारः, (८) महासेनः-महासेनकुमार इति ।

ततस्तदनन्तर खलु ते भवनपत्यादयश्चतुर्विधा देवा मल्ल्या अर्हतो निष्क्रमण-महिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वर नामाद्वीपस्तत्राष्टाहिकाम्=अष्टाहसाय्यं भुत्सव कुर्वन्ति कृत्वा च यावत्-यस्यादिशं प्रदुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः, ततः खलु मल्ली अर्हन् यस्मिन्नेव दिनसे प्रयजितः=दीक्षा गृहीतवान् तस्यैव दिवसस्य पश्चाद्, पराह्णकाल, समये-पश्चिमे महरे, असोकवरपादपस्याधः पृथिवीशिलापट्टके

(१) नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र कुमार (३) सुमित्र कुमार (४) बालमित्र कुमार (५) भानुमित्र कुमार (६) अमरपति कुमार (७) अमरसेन कुमार और (८) महासेन कुमार । (तएण से भवणं वहं ४ मल्लिस्स अरहओ निस्सवमणमहिमं करेति, करित्ता जेणेव नदीसरवरे० अट्ठाहिये करेति, करित्ता जाव पडिगया) भवनपति आदि चारों प्रकार के देवों ने मल्ली अर्हत के निष्क्रमण महोत्सव की खूब २ महिमा की और करके फिर वे आठों भाँ जो नदीश्वर द्वीप है वहाँ गये वहाँ जाकर उन्हीं ने अष्टाहिक महोत्सव किया । यह महोत्सव आठ दिनोंतक लगातार होता है । अष्टाहिक महोत्सव करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा तरफ वापिस चले गये । (तएण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वाहए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयसि असोकवरपायवस्स अहे पुढविसिलोपट्टयसि । सुहासणवरगं

(२) नन्दिमित्रकुमार, (३) सुमित्रकुमार, (४) बालमित्र कुमार, (५) भानुमित्र कुमार, (६) अमरपति कुमार, (७) अमरसेन कुमार, (८) महासेन कुमार ।

(तएण से भवणं वहं ४ मल्लिस्स अरहओ निस्सवमणमहिमं करेति, करित्ता जेणेव नदीसरवरे० अट्ठाहिये करेति करित्ता जाव पडिगया)

भवनपति वगैरे' बार जातना देवाओ भट्ठी अर्ह'तना निष्क्रमण भडो'त्सवने। भूषण महिमा जाये अने त्यारुपणी तेओ आठमा नदीश्वर द्वीपमा गया त्या पडोयीने तेभण्डे अष्टाहिक भडोत्सव उठ्यो आ भडोत्सव आठ दिवसे' सुधी सतत उठ्यो वायु छ' अष्टाहिक भडोत्सव व्यापे पूरा थयो त्यारे तेओ ने दिशा तरईथी अष्टाहिक भडोत्सव ते दिशा तरई जता रह्यो ।

(तएण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वाहए, तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयसि असोकवरपायवस्स अहे पुढविसिलोपट्टयसि सुहासणवरगयस्स सुहेण परिणा

સુખાસનવરગતસ્ય શુભેન પરિણામેન 'પસત્યેહિં' પ્રશસ્તૈ = શ્રેષ્ઠૈ - શુભૈઃ, 'અજ્ઞ-
વસાણે' અધ્યવસાનૈ = આત્મપરિણામૈ, પ્રશસ્તામિઃ લેશ્યામિઃ 'ત્રિમુજ્જમાણીહિં'
વિશુદ્ધ્યન્તીમિઃ તયાવરણક્રમરચચિકરણકર' તદાવરણકર્મરજોવિકરણકર-જ્ઞાના-
વરણીયાદિકર્મરજોવિક્ષેપક 'અપુવ્વકરણ' અપૂર્વકરણમ્ = અષ્ટમગુણસ્થાનકમ્ અનુ-
પ્રવિષ્ટસ્યાનન્ત વિપયાનન્તત્વાત્, યાવત્-અનુત્તર-સમસ્તજ્ઞાનપદ્ધાન, નિર્વ્યાધાતમ્-
અપ્રતિહત, નિરાવરણ = ક્ષાયિક, કૃત્સ્ન = સર્વાર્થગ્રાહકત્વાત્, પ્રતિપૂર્ણ = સકલાશયુ-
ક્તત્વાત્ પૂર્ણચન્દ્રવત્, 'કેવલવર નાણદસણે' કેવલવર જ્ઞાનદર્શન સમુત્પન્નમ્॥મૂ.૩૯॥

અર્થે, સુદેહ્યે પરિણામેણ પસત્યેહિં અજ્ઞવસાણેહિં પસત્યાહિં લેસાહિં
ત્રિમુજ્જમાણીહિં તયાવરણક્રમસ્ત ચિકરણકર અપુવ્વકરણ અણુ
પવિટ્તસ્ત અણતે જાવ કેવલવરનાણદસણે સમુપ્પન્ને) મલ્લી અર્હત
ને જિસ દિન દીક્ષા ધારણ કી ઉસી દિન પશ્ચિમ પ્રહર મે અશોક
વૃક્ષને નીચે રહે હુણ પૃથિવી શિલાપટ્ટક પર સુખાસન સે વિરાજમાન
અને શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન-આત્મ પરિણામ-એવ વિશુદ્ધ
પ્રશસ્ત-લેશ્યાઓ કે પ્રભાવસે સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય
મોહનીય ઓર અન્તરાય કર્મરૂપ રજકે વિક્ષેપક અનન્ત કેવલજ્ઞાન ઓર
કેવલદર્શન ઉત્પન્ન હો ગયે । અર્થાત્ દીક્ષા લેતે હી એક પ્રહરકે બાદ
કેવલજ્ઞાન પાણે । ક્ષપકશ્રેણી પર આરૂઢ હુઈ આત્માઓં કો, હી
યે દોનો કેવલજ્ઞાન ઓર કેવલદર્શન પ્રાપ્ત હોતે હે અન્ય કો નહીં
-તથા યહ શ્રેણી ઉવે અપૂર્વકરણ ગુણસ્થાન સે હી પ્રારંભ હોતી હૈ
અન્ય ગુણસ્થાન સે નહીં મલ્લી અર્હત ને બી-હસી-શ્રેણી પર આરોહણ

મેણ પસત્યેહિં અજ્ઞવમાણેહિં પસત્યાહિં લેસાહિં ત્રિમુજ્જમાણીહિં તયાવરણક્રમરચ-
ચિકરણકર અપુવ્વકરણ અણુપવિટ્તસ્ત અણતે જાવ કેવલવરનાણદસણે સમુપ્પન્ને)

જે દિવસે મહી અર્હતે દીક્ષા ધારણ કરી તે જ દિવસે છેલ્લા પહોરમા
અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વી શિલાપટ્ટક ઉપર સુખાસન પૂર્વક બેઠેલા તેઓને
શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન આત્મપરિણામ અને વિશુદ્ધ પ્રશસ્ત લેશ્યાઓના
પ્રભાવથી સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય મોહનીય અને અતરાય કર્મરૂપ
રજતુ વિક્ષેપક અનન્ત કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થયું ક્ષપક શ્રેણી
ઉપર આરૂઢ થયેલા આત્માઓને જ આ કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન મળે
છે બીજાઓને નહીં, તેમ જ આ શ્રેણી આઠમા અપૂર્વકરણ ગુણ સ્થાનથી જ
આરંભે છે, બીજા કોઈપણ ગુણસ્થાનથી નહીં. મલ્લી અર્હતે પણ આ શ્રેણી

મૂલમ્—તેણ કાલેણં તેણ સમણ સઠ્ઠવેવાણં આસણં
 ચલંતિ સમોસઠા કેવલમહિમં કરેંતિ કરિત્તા જેણેવ નદીસરં
 અટ્ટાહિય મહામોહિમં કરેંતિ કરિત્તા જામેવ દિસુ પાંડં પરિસા
 ણિગયા કુભણ્ણિ નિગ્ગચ્છઈ । તણં તે જિયસત્તુપાં છપ્પિ-
 જેટ્ટપુત્તે રજ્જે ઠાવેત્તા પુરિસસહસ્સવાહિણીઓ સીયાઓ દુરુહા
 સંવિઢ્ઢીંણ જેણેવ મલ્લી અં જાવ પજ્જુવાસતિ । તણં મલ્લી
 અં તીસે મહઈ મહાલયાણં કુભગસ્સ તેસિ ચં જિયસત્તુ પાસુ-
 વલાણં ધમ્મ કહેઈ । પરિસા જામેવં દિસીં પાંડવ્ભૂયા તમેવ
 દિસિ પહિગયા । કુંભણ સમણોવાસણં જાણં । પમાર્વઈય । તણં
 જિયસત્તુપાં છપ્પિરાયા ધમ્મ સોચ્ચા એવ વયાસી—આલિન્નેય

કર દિયા થા તમી જાકર ઉન્હેં 'ઇનકીપ્રાસિ હુઈ યહી થાત " અપુલ્લકરન
 અણુપલિટ્ઠસ્સ ' ઇન પદોદ્ધારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ । "અણતે જાવ " યહો
 જો "જાવ" પદ રખા ગયા હૈ ઉસસે "અનુત્તર નિર્વ્યાધાતમ્ નિરાવરણં
 , કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ ' ઇન પદોં કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । યે દોનોં અનત
 વિષયોં કો જાનતે હૈં ઓર દેખતે હૈં ઇસલિયે યે અનત હૈં । સમસ્ત
 જ્ઞાન ઓર દર્શનોં મેં યે પ્રધાન હૈં ઇસલિયે અનુત્તર હૈં । અપ્રતિહત
 હોને' સે યે દોનોં નિર્વ્યાધાત, ક્ષાયિક હોને સે નિરાવરણ સર્વાર્થ ગ્રાહક
 હોને સે કૃત્સ્ન, સકલાંશ યુક્ત હોને સે પૂર્ણ ચન્દ્ર કી તરફ પ્રતિપૂર્ણ કહે
 ગયે હૈં ॥ સુત્ર ૩૯ ॥

‘ઉપર આશહણ ડરી દીધું હતું ત્યારે જ તેમને એમની પ્રાસિ થઈ હતી એ જ
 વાત—“ અપુલ્લકરણ અણુપલિટ્ઠસ્સ ” આ પદોવડે દર્શાવવામા આવી છે “ અણતે
 જાવ ” અહીં જે “જાવ” પદ છે તેનાથી “ અનુત્તર નિર્વ્યાધાત નિરાવરણ,
 'કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ, આ પદો અહણ કરવામા આવ્યા છે આ બને અનત વિષ
 'યોને જાણે છે અને જુએ છે એટલા માટે તેઓ અનત છે, સમસ્ત જ્ઞાન અને
 દર્શનોમા તેઓ પ્રધાન છે એટલા માટે અનુત્તર છે અપ્રતિહત હોવા બદલ
 આ બને નિર્વ્યાધાત, ક્ષાયિક હોવાથી નિરાવરણ, સર્વાર્થ ગ્રાહક હોવાથી કૃત્સ્ન,
 સકલાંશયુક્ત હોવાથી પૂર્ણ ચન્દ્રની જેમ પ્રતિપૂર્ણ કહેવામા આવ્યા છે ૩૬

भते । लोए पलित्तेणं भते लोए जाव पव्वइया, चोदसपुव्विणो
अणते केवले० सिद्धा ।

तएण मल्ली अरहा सहसंववणाओ निक्खमइ, निक्ख-
मिक्का वहिया जणवयविहार विहरह । मल्लिस्सणं भिसगपामो-
क्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीसगणहरा होत्था । मल्लिस्सण
अरहओ चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्कोसेण, वधुमइपामो-
क्खाओ पणपणं अज्जिया साहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा
सायसाहस्सी, चुलसीइ सहस्सा सावियाण तिन्नि सयसाहसीओ
पण्णट्ठि च सहस्सा, छस्सया चोदसपुव्वीण, वीससया ओहि-
नाणीण, वत्तीस सया केवलणाणीण, पणतीण सया वेउव्वियाणं,
अट्ठसयामणपज्जवणाणीणं, चोदससया वाईणं, वीससया अणुत्तरो-
ववाइण । मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था त जहा
—जुयंतकरभूमी, परियायतकरभूमी य । जाव वीसइमाओ पुरिस-
जुगाओ जुयतकरभूमी । दुवासपरियाए अतमकासी । मल्लीणं
अरहा पणुवीस धणूइ मुड्ड उच्चत्तेणं । वण्णेणं पियगुत्तमे सम-
चउरससठाणे, वज्जरिसभणारायसघयणे, मज्झदेसे सुह सुहेणं
विहरित्ता जेणेव सम्मए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
समेयसेलसिहरे पाओवगमणुव्वण्णे । मल्लीण अरहा एग वाससय
अगारवासमज्जे वसित्ता पणपण वाससहस्साइ वाससयऊणाइं
केवलिपरियाग पाउणित्ता पणपण वाससहस्साइसव्वा उय पाल-
इत्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे, तस्स णं

चेत्तसुद्धरस चउत्थीए भरणीए णखत्तेणं अद्धरत्तकालसमयसि
 पचहि अज्जियासएहिं अट्ठितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार
 सएहि वाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं
 वग्घारियपाणी सीणे वयणिजे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं
 परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जवुदीवे पण्णत्तीए नंदी-
 सरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया। एव खल्लु जवू। सम
 णेणं भगवया महिमावीरेण अट्ठमस्स नामज्जेयणस्स अयमट्ठे
 पण्णत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ४० ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सर्वदेवना-
 शक्रस्य देवेन्द्रस्य तथाऽन्येषा सर्वोपाभिन्नाणां च, आसनानि चलन्ति स्म। तदा
 ऽवधिं प्रयुज्य मल्लया अर्हतं केवलोत्पत्तिं ज्ञात्वा यत्रैव मल्लो अर्हन् तत्रैव ‘समो

‘तेण कालेण तेन समएण’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) उस काल और उस समय
 में (सर्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसदा केवल महिम करेंति)
 करिस्ता जेणेव नदीसरे० अट्ठाहिय महामहिम करेंति, करिस्ता जामेव
 दिसपाउ० परिसा णिगगया कुभएवि निग्गच्छइ) समस्त देवों के शक्र
 देवेन्द्र के तथा अन्य समस्त इन्द्रों के आसन कपायमान हुए।
 आसनोके कपित होने का क्या कारण है इस प्रकार जब जाननेकी उन्होंने
 ने इच्छा की तो उसी समय उन्होंने ने अपने ३ अवधिज्ञान से देखा

‘तेण कालेण तेणं समएणं’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—तेण कालेण तेण समएण ते काले आने ते समये
 (सर्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसदा केवलमहिम करेंति करिस्ता जेणेव
 नदी सरे० अट्ठाहिय महामहिम करेंति, करिस्ता जामेव दिस पाउ० परिसाणिगगया
 कुभए वि निग्गच्छइ)

अथा देवताभ्यानां, शक्र देवेन्द्रना, तेभ्यः, जीम, अथा-धृन्द्रोना आसनेना
 डालवा भाउया तेभना आसनेना सा कारण्यथी उभयगवा भाउया छे ? आ नतनी
 न्यादे तेभना भनमा जिज्ञासा उत्पन्न भई त्वारे तरत भ तेभे पौतपोतानु

सदा ' समदसुताः=आगताः, आगत्य ' केवलमहिम ' केवलज्ञानोत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरो द्वीपरतत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अट्टाहिम ' अष्टाद्विका म हिमान अष्टदिवस्साध्यमुत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिश प्रतिगताः । तदनन्तर परिपत्-मिथिलाराजधान्या जनसमूहः मल्ल्या अर्हतो वन्दनार्थ निर्गता-मिथिलाराजधानीतो निःसृता । कुम्भफोऽपि निर्गच्छति स्म ।

ततः रलु ते जितजत्रुप्रमुखाः पिडप राजानः स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः समारूढाः सर्वैकद्वया सर्वैव्येण सकलवलेन सहिता यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्-पर्युपासते ।

की मल्ली अर्हत को केवल जान की उत्पत्ति हुई है । सो जहां मल्ली अर्हत थे वे सब वहां पर आये-आकर उन्हो ने केवलज्ञान की महिमा का उत्सव किया उत्सव कर जरा नदीश्वर द्वीप था फिर वे वहां आये वहां आकर उन्हों ने लगातार आठ दिन तक उत्सव किया । उत्सव कर के फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये । इस के बाद मिथिला राजधानीसे जन समुदाय मल्ली अर्हत को वदना करने के लिये निकला । कुम्भक राजा भी निकले । (तएण ते जियस-त्तूपा० छप्पि जेह्णुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ आरूढा सन्निव्हीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासति) इसके अनन्तर वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा अपने-अपने ज्येष्ठ पुत्रको राज्यपदमें स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकापर आरूढ हो सर्व यदि एव सकलवल

अवधिज्ञान जेउथु अवधिज्ञानथी तेओओ जएथु के मल्ली अर्हतमा केवण ज्ञाननी उत्पत्ति थई छे तेओओ जथा न्या मल्ली अर्हत डता त्या आओया त्या पडोथीने तेओओ केवणज्ञानना भडिमानो उत्सव उज्जओ उत्सव उज्जओ पछी तेओओ नदीश्वर द्वीपमा गया, त्या जधने तेओओ अतत आठ दिवस जुधी उत्सवो उज्ज० । उत्सवनी समाप्ति पछी तेओओ जे दिशा तरईथी प्रगट थया डता ते दिशा तरई जता रछा त्यारणाड मिथिला राजधानीथी मल्ली अर्हतना वदन माटे जनसमुदाय नीकओओ उलक राजा पणु नीकओओ

(तएण ते जियसत्तूपा० छप्पि जेह्णुत्ते ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुद्धा सन्निव्हीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासति)

त्यारपछी उतशत्रु प्रमुख छओ राजओ पोतपोताना ओग पुत्रने राज गाहीओ जेमाहीने पुरुष सहस्रवाहिनी पादधीओमा जेमीने सर्वसद्धि अने

ततः खलु मल्ली अर्हन् तस्या महाति महालयाया-अतिविस्तीर्णायाः पर्वदोज्ञे कुम्भकस्य राज्ञस्तथा तेषां च जितशत्रुप्रमुखाया राज्ञां धर्म-कथयति, परित्यज्य स्या एव दिशः प्रादुर्भूताः, तामेव दिशं प्रतिगता। कुम्भक श्रमणोपासको जातः, देशविरतिरूप धर्मं स्वीकृतवान्, प्रतिगतः। प्रभावती च श्रमणोपासिका जातः, प्रतिगता प्रभावती कुम्भको स्तस्थान गतयन्ती। ततः खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो धर्मं श्रुत्वा, प्रतिबुद्धा एवमवादिषु 'आलित्तेण भते लोए पलित्तेण भते

के साधजहा मल्ली अर्हन् विराजमान ये बह्व आये वहां आकर उन सबने मल्ली अर्हन् की अच्छी तरह उपासना की। (तएण मल्ली तीसे मह इमहालयाए ०००० धम्म कहइ) इसके बाद मल्ली अर्हन् ने उस अति विस्तीर्ण जनमेदिनी के समक्ष कुम्भक राजा तथा जितशत्रु प्रमुख उन उन्हीं राजाओं के समक्ष श्रुतचारित्र्य रूप धर्मका उपदेश दिया। (परिमा जामेव दिसि पांतामे दि० पडि०) उपदेश सुनकर वह जनमेदिनीरूप परिपदा जिस दिशासे आई थी उसी दिशा तरफ वह वापिस चली गई। (कुम्भक श्रमणोपासए जाए) कुम्भक राजा श्रमणोपासक बन गये। अर्थात् देशविरतिरूप धर्म उन्होंने स्वीकार कर लिया। (प्रभावईय) प्रभावती भी श्रमणोपासिका बन गई।

(तएण जियसत्तूपा० छप्पिराया धम्म सोच्चा एव बयासी) इसके बाद उस जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं धर्म का उपदेश सुनकर प्रतिबुद्ध हो इस प्रकार कहा-(अलित्तेण भते। लोए पलित्तेण भ

सकण भजनी साथे जया भट्ठी अर्हन्त विराजमान हुंता त्या पडोव्या त्या पडोव्याने तेजो अधाये भट्ठी अर्हन्तनी सारी चेठे उपासना करी

(तएण मल्ली अ० तीसे महइ महालयाए० धम्म कहइ) तयार पछी भट्ठी अर्हन्ते ते विशाण जन समुदाय, तेभज कुलक राजा अने जितशत्रु प्रमुख ते छये राजाओंनी साथे श्रुत चारित्र्य रूप धर्मना उपदेश आये। (परिमा जामेव दिसि पा तामेव दिसि पडि०) उपदेश सावणीने जनसमुदाय ने दिशा तरफ्थी आये। हुंता ते दिशा तरफ पावो जतो रह्यो (कुम्भक श्रमणोपासए जाए) कुलक राजा श्रमणोपासक थय गया हुंता अटले के देश विरतिरूप धर्मना तेजोअये स्वीकार कर्यो हुंता (प्रभावईय) प्रभावती पछु श्रमणोपासिका थय गया

(तएण जियसत्तूपा छप्पिराया धम्म सोच्चा एव बयासी) तयार पछी ७१ शत्रु प्रमुख छये राजाओंअये धर्मना उपदेशथी प्रतिबुद्ध थयने आ प्रभावो कहु ठे-

(आलित्तेण भत। लोए पलित्तेण भते। लोए जाव पव्वइया मेत्ता पुव्वि

લોહ' इति हे भदन्त ! भगवन् ! 'अलीप्ते' आदीप्तः=आ=समन्ताद् दीप्तः=ज्व-
लितः खल्वय लोकः, तथा हे भदन्त ! 'पलिप्ते' प्रदीप्तः=प्ररूपेण ज्वलितः-
खदिर कार्पासकाष्ठाग्निज्वालयेव तीव्रज्वाला युक्तः खल्वय लोकः, जन्मजरा
मरणादिदुःखानि वहस्तीव्रज्वाला इवास्मिन् लोके जीवान् प्रदहन्तीत्यर्थः ।
यावत्-प्रवर्जिताः=यथा कश्चिदादीप्ते गृहे प्रसुप्त नर बोधयेत् तथा हे भगवन्-
आदीप्ते लोके मोहनिद्रावशगतानस्मान् प्रतिरोच्य युष्माभिः श्रेयस्करो मोक्षमार्गं
प्रदर्शित तस्माद् भवतामन्तिके प्रवर्जिष्यामः' इत्युक्त्वा ते पटपि राजानः प्र-
वर्जितादीक्षा गृहीतवन्तः । ततश्चतुर्दशपूर्व्विणः=चतुर्दशपूर्व्वधारिणो भूत्वाऽनुक्र-

भते लोહ જાવ પચ્ચદ્વયા ચોદસપુવ્વિણો અળતે કેવલે સિદ્ધી) હે
ભદત ! યહ ચતુર્ગતિ રૂપ લોક આ - સમન્તાત્ - જ્વલિત હો રહા હૈ ।
હે ભદત ! યહ લોક અત્યત્ જ્વલિત હો રહા હૈ । કાર્પાસ કાષ્ઠ કી
અગ્નિજ્વાલાકે સમાન તીવ્ર જ્વાલાસે યહ લોક વ્યાપ્ત હો રહા
હૈ અગ્નિ કી તીવ્ર જ્વાલા જૈસે જન્મ, જરા યવ મરણ આદિ કે દુઃખ
જીવોકો સદા ડસ લોક મેં જલાતે રહતે હૈં । હે ભગવાન ! જૈસે કોઈ
વ્યક્તિ ઘર મેં આગ લગ જાને પર ડસમેં સુપ્ત હુએ વ્યક્તિ કો સચેત
કર દેતા હૈ-હસી તરહ આદીપ્ત હુએ હસ લોક મેં મોહ-નિદ્રાધીન બને હુએ
હમ લોગોં કો પ્રતિરોધિત કર આપને શ્રેયસ્કર મોક્ષમાર્ગ પ્રદર્શિત
કિયા હૈ- હસલિયે હમ આપકે પાસ દીક્ષા અગીકાર કરેંગે । હસ પ્રકાર
કહ કર ડન જિતશઙ્ગ પ્રમુખ છહોં રાજાઓં ને મલ્લી અર્હત કે સમીપ
દીક્ષા ધારણ કરલી । ચૌદહ પૂર્વ કે પાઠી હોકર ડન્હો ને નિરતિચાર
ગો અળતે કેવલે ૦ મિદ્ધા)

હે ભદન્ત ! આસમન્તાત્ (ચોથેર) આ ચતુર્ગતિરૂપ લોક સળગી રહ્યો
છે હે ભદન્ત ! આ લોક અત્યત્ જ્વલિત થઈ રહ્યો છે ૩ અને લોકડાની
અગ્નિ જ્વાળાઓની પેઠે તીવ્ર જ્વાળાઓથી આ લોક વ્યાપ્ત થઈ રહ્યો છે
અગ્નિની તીવ્ર જ્વાળાઓની જેમ હે મેશા જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરેના
હુએ આ લોકને સળગાવતા રહે છે હે ભગવન્ ! જેમ કોઈ માણસના ઘરમા
અગ્નિ સળગી ઉઠે ત્યારે સૂતેલા માણસને બીજે કોઈ બંધત કરે છે તે પ્રમાણે જ
પ્રજ્વલિત થતા આ લોકમા મોહ નિદ્રાવશ થયેલા અમારા જેવા લોકોને યોધ
આપીને તમે શ્રેયસ્કર મોક્ષ માર્ગ બતાવ્યો છે તેથી અમે હવે તમારી પાસેથી
દીક્ષા ધારણ કરીશુ આ પ્રમાણે વિનંતિ કરીને છતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજા
ઓએ મલ્લી અર્હતની પાસેથી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી ચૌદ પૂર્વના પાઠી થડને
તેમણે નિરતિચાર ચારિત્રનું પાલન કર્યું અને આ પ્રમાણે ધીમે ધીમે અનુક્રમે

મેળ નિરતિચાર ચારિત્ર પાલયિત્યાજ્ઞન કેવલરજ્ઞાનદર્શન યાવત્-સિદ્ધાઃ
સિદ્ધિસ્થાન ગતાઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલ મણી અર્હન્ સહસ્રામ્રવણાન્ નિષ્ક્રામતિ=નિર્ગચ્છતિ,
નિષ્ક્રમ્ય વહિર્જનપદવિહારં વિહરતિ । મલ્લયા સ્વલ મિપગપ્રમુખાઃ અષ્ટાવિંશતિ
ગણાઃ, અષ્ટાવિંશતિગણધરા અમયન્ । મલ્લયાઃ સ્વલ અર્હતશ્રત્યારિગત શ્રમણસહસ્રાણિ
' ઉક્કોસેળ ' ઉત્કર્ષેણ ઉત્કૃષ્ટા શ્રમણસપદમવત્ । તથા-વન્ધુમતિપ્રમુખાઃ પન્ન

ચારિત્ર કા પાલન કિયા । ઓર હમ તરહ ધીરેર ક્રમશઃ લે છહોંકે
છહોં કેવલ જ્ઞાન ઓર કેવલ દર્શનકે અધિકારિ થન ગયે ઓર અન્તમેં
સિદ્ધસ્થાન પર પહુંચ ગયે । -(તણ મલ્લી અરહા સહસ્રવળાઓ
નિક્ષરહ) મલ્લી અર્હત ઉસ સહસ્રામ્ર વનસે યાહર નિકલે (નિક્ષમિત્તા
બહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) નિકલકર ઉન્હોંને યાહરકે જનપદોં મેં
તીર્થકર પરમ્પરાકે અનુસાર વિહાર કરના પ્રારમ કરદિયા । (મલ્લિસ્સણ
' મિસગપામોક્ષા અઢાવીસ ગણ, અઢાવીસ ગણહરા, હોત્યા મલ્લિસ્સણ
અરહઓ ચત્તાલીસ સમણસાહસ્સીઓ ઉક્કોસેળ વધુમઇપામોક્ષાઓ
પણપન્નઅજ્જિયા સાહસ્સીઓ ઉક્કોસેળ સાવયાળ ઇગાસાય
સાહસ્સી ચુલસીઈ સહસ્સા સાવિયાળ તિન્નિસયસાયસીઓ પણ્ણ
ચ સહસ્સા) હન મણી અર્હત કે મિપગ પ્રમુખ ૨૮, ગણ (ગચ્છ)
થે ઓર ૨૮, ગણધર થે । ઉત્કૃષ્ટ સે હન મલ્લી અરહત પ્રભુ
કી શ્રમણ સપત્તિ ૪૦ હજાર કી થી । તથા ઉત્કૃષ્ટ કી અપેક્ષા વધુમતી

તેઓ છએ છ રાજાઓ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન માટે અધિકારી થઈ ગયા
અને છેવટે સિદ્ધસ્થાને પહોંચી ગયા (તણ મલ્લી અરહા સહસ્રવળાઓ નિક્ષમઈ)
મલ્લી અર્હત તે સહસ્રામ્રવણી બહાર નીકળ્યા (નિક્ષમિત્તા બહિયા જળવય
વિહાર વિહરહ) નીકળીને બહારના જનપદોમા તેમણે તર્થ કર પર પરા મુજબ
વિહાર કરવો શરૂ કર્યો

(મલ્લિસ્સ ણ મિસગપામોક્ષા અઢાવીસ ગણ, અઢાવીસ ગણહરા, હોત્યા
મલ્લિસ્સણ અરહઓ ચત્તાલીસ સમણ સાહસ્સીઓ ૦ ઉક્કોસેળ વધુમઇ પામોક્ષાઓ
પણપણ અજ્જિયાસાહસ્સીઓ ઉક્કોસેળ સાવયાળ ઇગા સાય સાહસ્સી, ચુલ
સીઈ સહસ્સા સાવિયાળ, ઇગા સાય સાહસ્સી ચુલસીઈ સહસ્સા સાવિયાળ
તિન્નિસય સાયસીઓ પણ્ણ ચ સહસ્સા)

મલ્લી અર્હતને મિપગ પ્રમુખ અઢાવીસ (૨૮) ગણ (ગચ્છ) હતા
અને અઢાવીસે (૨૮) ગણધર હતા ઉત્કૃષ્ટથી મલ્લી અર્હત પ્રભુની શ્રમણ
સપત્તિ ચાળીસ હજાર હતી તેમજ ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ બધુમતી પ્રમુખ ૫૫

पञ्चाशत् अर्यिकासहस्राणि उत्कर्षेण, उत्कृष्टा साध्वीसम्पत् पञ्चपञ्चाशत्सहस्रपरि-
मिता जातेत्यर्थः, तथा-श्रावकाणामेकशतसहस्राणि=एक लक्षम्, 'चुलसीति'
चतुरशीतिः सहस्राणि, श्रमणोपामकसंपदभूत् । तथा-श्राविकाणां त्रीणिशतसह-
स्राणि=त्रीणि लक्षाणि, पञ्चपष्टिसहस्राणि उत्कर्षेण, तथा-पट्शतानि चतुर्दश
पूर्विणा-चतुर्दश पूर्वधारिणा, तथा-विंशतिशतानि अवधिज्ञानिना, तथा-पञ्चत्रि-
शत्-शतानि 'वेउव्वियाण' वेकुर्गिकाणा=वैक्रियलव्वियधारिणा, तथा-अष्टशतानि
-मनः पर्यवज्ञानिना, तथा-चतुर्दशशतानि वादिना, तथा-विंशतिशतानि अनुत्त-
त्तरोपपातिकानाम् । मल्लया अर्हतः 'अतगडभूमी' अन्तकृद्भूमिः=अन्तकृत -

आदि ५५ हजार आर्यिकाएँ थी । इनके श्रावको की संख्या १ लाख ८४
हजार थी । श्राविकाएँ इनकी ३, लाख ६५, हजार थी । (छस्सया चौदस
पुव्वीण, बीमसया ओहिनाणीण वत्तीस सया केवलणाणीण पणतीण
सया वेउव्वियाण, अट्टसया मणपज्जवणाणीण चौदस मयावाईण बीस
सया अणुत्तरोववाइण (६००, चतुर्दश पूर्व के धारी मुनि गण थे ।
बीस सौ अर्थात् २०००, अवधिज्ञानी थे । ३२ सौ अर्थात् ३, हजार
दो सौ केवल ज्ञानी थे ३५ सौ वैक्रिय लब्धि के धारी थे । ८००, सौ मन
पर्यव ज्ञानी थे । चौदह सौ वादी थे । बीम सौ अनुत्तरोपपातिक थे ।
(मल्लिस्स अरहओ दुविहा अतगडभूमी य जाव बीसइमाओ पुरिस
जुगाओ जुयत्तर भूमी) इन मल्लीअर्हत की अतः कृद्भूमि-उसी भव
से मोक्ष जानेवाले का काल-दो प्रकारकी थी-(१) युगान्तकर भूमि

६०२ आर्यिकाओ ६०३ तेमना श्रावकोनी संख्या ओक लाख चौराशी ६०२
६०३ अने त्रष्टु लाख पासठ ६०२ तेमनी श्राविकाओ ६०३

(छस्सया चौदस पुव्वीण बीससया ओहिनाणीण वत्तीस सया केवलणाणीण
पणतीम सया वेउव्वियाण अट्ट सया मण पज्जवणाणीण, चौदस सया वाई ण
बीस सया अणुत्तरोववाइयाण)

छमे अतुर्दश पूर्वनाधारी मुनिगणो ६०४ २० से ओटवे डे जे ६०२
अवधिज्ञानी ६०४ ३२ से ओटवे डे त्रष्टु ६०२ जसे उवणज्ञानी ६०४ ३५
से वैडिअ लब्धिनाधारी ६०४ आठसे मन पर्यवज्ञानी ६०४ १४ से वादी
६०४ २० से अनुत्तरोपपातिक ६०४

(मल्लिस्स अरहओ दुविहा अतगडभूमी य जाव बीसइमाओ पुरिसजुगाओ
जुयत्तरभूमी)

मल्ली अर्हत्तथी अत कृद्भूमि-ते लवमा न मोक्ष मेणवनाशओने
काण-जे प्रकारनी ६०५ (१) युगान्तकर भूमि (२) पर्यायान्तकर भूमि भूमि

भवान्तकारिण तस्मिन्नेव जन्मनि मुक्तिर्नामिनः। तेषा भूमिः-कालः, कालस्य चाधारत्वेन कारणत्वाद् भूमित्वेन व्यपदेश । द्वित्रिधा=द्विभकारा, अभवत्, तद् यथा-युगान्तरभूमिः, पर्यान्तरभूमिश्च । यावद्-विंशतितमात् पुरुषयुगाद् युगान्तरभूमिः-अत्र द्वितीयार्थे पञ्चमी यावद् विंशतितम पुरुषयुगं-विंशतितम शिष्य यावदित्यर्थः। युगानि-कालमानविशेषाः, तानि क्रमानुसारिणि, युगानीव युगानि, युगसादृश्याद् गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषा अपि युगानि व्यवहियन्ते, तैः प्रमितायाऽन्तरभूमि स, युगान्तरभूमिः । मञ्जीजादारभ्य तत्तीर्थं पट्टानुपट्ट क्रमेण विंशतितम पट्टपुरुष यावत् साधवः सिद्धा अभूवन्, ततः पर सिद्धिगमन व्यवच्छेदोऽभूदिति भावः । पर्यायान्तरभूमिमाह-‘दुवासपरियाप अन्तमकासी’ इति, द्विवर्षपर्यायेऽन्तमकापीत्-इति अनेन-वाक्येन पर्यायान्तरभूमिः प्रोच्यते । पर्यायस्तीर्थरस्य केवलित्व कालस्तगात्रित्य याऽन्तरभूमिः सा पर्यायान्तर

(૨) પર્યાયાન્તર ભૂમિ । ભૂમિ શબ્દ સે કાલ તથા યુગ શબ્દ સે ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્યાદિ રૂપ પુરુષોં કા ગ્રહણ હુઆ છે । અતઃ ઇન ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્યાદિ રૂપ પુરુષોં કો આરમ્ભ કર જિસ મેં ઉસી ભવ સે મોક્ષ જાને વાંલોંકા પ્રમાણ પ્રમિત ક્રિયા જાવે વર યુગાન્તર ભૂમિ હૈ એમા યુગાન્તર ભૂમિ શબ્દકા વાચ્યાર્થ નિકલતા હૈ મલ્લી જિનસે લગાકર ઇનકે તીર્થમેં પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમસે વિંશતિતમ પટ્ટપુરુષ તક (વીસપેદિ) સાધુ સિદ્ધ હો ચુકે હૈ । ઉસકે વાદ સિદ્ધિ મેં જાનેકા વ્યવચ્છેદ હો ગયા । (દુવાસપરિયાપ અતમકાસી) હસ વાક્યસે પર્યાયાન્તર ભૂમિ સૂત્રકાર ને પ્રકટ કી હૈ ।

તીર્થકર કી કેવલી અવસ્થા કે પર્યાયરૂપ સમય કો હેકર જો અન્તર ભૂમિ હોતી હૈ ઉસકા નામ પર્યાયાન્તર ભૂમિ હૈ એસા હસ શબ્દકા

શબ્દથી કાળ તેમજ યુગ શબ્દથી ગુરુ-શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોનુ અહમ્મ થયુ છે એથી આ બધા ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોને આરભીને એમા તે ભવથી જ મોક્ષ મેળવનારાઓનુ પ્રમાણુ પ્રમિત (કેટલુ છે તેની ગણતરી) કરવામા આવે તે યુગાતકર ભૂમિ શબ્દનો વાચ્યાર્થ થાય છે મહોજનથી માડીને એમના તીર્થમા પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમથી વિશતિતમપટ્ટ પુરુષ સુધી સાધુઓ સિદ્ધપદ પામી ચૂકયા છે ત્યારપછી સિદ્ધિમા જવા માટે વ્યવચ્છેદ થઇ ગયો (દુવાસ પરિયાપ અતમકાસી) આ વાક્યથી સૂત્રકારે પર્યાયાન્તર ભૂમિ પ્રકટ કરી છે

તીર્થ કરની કેવળી અવસ્થાના પર્યાયરૂપ સમયથી લઇને જે અન્તકર ભૂમિ હોય છે, તેનુ નામ પર્યાયાન્તર ભૂમિ છે આ શબ્દનો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે જ

भूमिः । मरल्या अर्हतः केवलज्ञानस्य द्विवर्ष-पर्यायेसती तत्तीर्थं साधु अन्तमकार-
पीत्-भयान्तमकरोत् न ततः पूर्वं कश्चिदपीत्यर्थः ।

मल्ली खलु अर्हन् पञ्चविंशतिर्धनूपि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन=मल्लया अर्हतः शरीरमुच्च-
त्वेन पञ्चविंशतिर्धनुः परिमितमासीदित्यर्थः । वर्णेन प्रियङ्गुसमः नीलवर्ण इत्यर्थः ।
समचतुरस्रसंस्थानः, वज्ररूपभनाराचसदमन मध्यदेशे ग्रामानुग्राम सुखसुखेन विहृत्य
यत्रैव समेतः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, समेतश्चैलशिखरे पादपोपगमनोपपन्न
पादपोपगमन सस्तारक स्वीकृतवान् । मल्ली खलु अर्हन् एक वर्षशतम् अगारवासमध्ये

वाच्यार्थ निकलता है । मल्ली अर्हत को केवल ज्ञान उत्पन्न हुए जब
दो वर्ष हो गये तब उसके बाद ही उनके तीर्थ में अपने भवको अन्त
कर साधुजनों ने मुक्ति लाभ किया । इसके पहिले कोई साधु मुक्ति
मे नही गया । यही पर्यायान्त करभूमि है । (मल्ली ण अरहा पणुवीस
धणूइ सुहु उच्चत्तेण) इन मल्ली अरहत के शरीरकी ऊँचाई २५ धनुष
प्रमाण थी । (वण्णे ण प्रियगुसमे, समचउरससठाणे, वज्जरिसभणा
राय सघयणे) शरीर का वर्ण प्रियगु के समान नील था । संस्थान सम
चतुरस्र था । सहनन वज्र ऋषभ नाराच था (मज्झ देसे सुह सुहेण
विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समेय
सेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे) मध्य देश में सुख शान्ति पूर्वक विहार
कर ये प्रभु जहाँ समेत पवर्त था वहाँ आये । आकर उसी समेत शैल
शिखर पर पादपोपगमन सथारा उन्होंने ने धारण किया । (मल्ली ण अ

थाय छे मल्ली अर्हं तने देवज्ञान उद्भूय, तेना जे वर्ष पछी न तेमना
तीर्थभा पोताना लवभा अतकर साधुजनोके मुक्ति लाभ भेगये। जेना
पडेला ठोड साधुके मुक्ति भेगपी नथी, जे न पर्यायान्तकर भूमि छे मल्ली ण
अरहा पणुवीस धणूइ सुहु उच्चत्तेण) मल्ली अर्हं तना शरीरनी उचाई २५
धनुष प्रमाण छती (वण्णेण प्रियगुसमे, समचउरससठाणे, वज्जरिसभणाराय
सघयणे) शरीरनो रंग प्रियगुना जेवो नीलो छतो संस्थान समचतुरस्र
छतु सहनन वज्र ऋषभ नाराच छतु

(मज्झदेसे सुह सुहेण विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता समेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे)

सुख शांतिपूर्वक मध्य देशभा विहार करीने मल्ली प्रभु समेत पर्वत
उपर पडेया त्या पडेयीने तेजोश्रीके समेत जैल शिखर उपर पादपोप
गमन सथारे धारण करी

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्ताणि वर्षशतानानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्ताणि सर्वायुः क पाठयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमामचतुष्टयरूपाणा प्रथमो माम द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध =चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु च-द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकात्समये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिपदा, पञ्चभिरनगाशतैर्नाक्षया परिपदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणवास सहस्साइ
वाससय ऊणाइ केवलपरियाग पाउणिता पणपणवाससहस्साइ सब्बा
उय पालइत्ता) मे मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-याद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कम ५५ हजार वर्षतक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पहमे मासे दोच्चे पक्खे चैत्त सुद्धे, तस्सण चैत्तसुद्धस्स चात्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
विमतरियाए परिताए प चहिं अणगारसएहिं वाहरियाए परिताए मासि
एण भत्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)
उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्ष में अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिपदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणवास
सहस्साइ वासमपऊणाइ केवलपरियाग पाउणिता पणपणवाससहस्साइ सब्बा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्द्ध त प्रभु १ सौ वर्ष, घरभा रह्या त्यारपुष्ठी दीक्षा अडणु करीने

५५ हजार वर्षभा ओकसे ५५ आछा ओटले के ४६०० वर्षनु आयुध्य लोगवीने
केवली पर्यायभा रह्या आ रीते ५५ पयावन ५०२ वर्षनु आयुध्य लोगवीने

(जे से गिम्हाण पहमे मासे दोच्चे पक्खे चैत्त सुद्धे, तस्स ण चैत्त सुद्धस्स
चात्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं
अविमतरियाए परिताए पचहिं अणगारसयेहिं वाहरियाए परिताए मासिएण
भत्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमले ग्रीष्मकाणना पडेल मडिनाना जीण पणवाडीयाभा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षभा तेभा पणु थायना द्विसे व्यारे लखी नक्षत्रने अद्रनी
साथे योग थर रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना पणते आभ्यतर परिपद हुती त्यारे
पाचसौ आर्यिकाओनी साथे १ मडिनाय पान रक्षित लक्ष्य प्रत्याभ्यान् करीने

प्रत्याख्यानानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थ, व्याधारित पाणिः=पलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्मणि-सिद्धिः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाहिका महिमा=अष्टाहंसाध्यमहोत्सव देवैः कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते ही सिद्धि अवस्था प्राप्त करली ! (एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण) जिस प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्लि भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान ली चाहिये । (नदीसरे अष्टाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्लि प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं इस आठवें जाताध्य

अने डाथो इलावता अवशिष्ट वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र कर्मनो नाश थता न सिद्धि अवस्था भेगवी लीधी

(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण)

जे प्रभावे न जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमा ऋषभदेवने महिमा आलेखवामा आव्यो छे ते प्रभावे न मल्लि भगवानना निर्वाणने महिमा पणु नालुवे न्नेछ्ये (नदीसरे अष्टाहिया महिमा जाव पडिगया) मल्लि प्रभुना आ निर्वाणना कल्याण कारक महिमाने उत्सव देवताओये नदीश्वर द्वीपमा सतत आठ दिवसो सुधी उज्ज्यो त्यारपछी तेओ त्याथी जे दिशाभाथी प्रगट थया छता ते दिशा तरङ्ग पाछा जाता र्हा छवे सुधर्मास्वामी न जम्बूस्वामीने कहे छे—

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि)

हे न जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर-के जेओ सिद्धिस्थानना अधिपति

उपिस्ता=स्थित्यापञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्स्राणि वर्षशतानानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्स्राणि सर्वायुः कपालयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्षः चैत्रशुद्धः=चैत्रशुद्धः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु च-त्रयोगश्रुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकालसमये पञ्चमिरार्यिकाश्वतैराभ्य
न्तरिक्षया परिषदा, पञ्चभिरनगाराश्वतैराद्यया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणवास सहस्साइ
वाससय ऊगाइ केवलपरियाग पाउणिता पणपणवाससहस्साइ सब्बा
उय पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पदमे मासे दोच्चे पक्खे चैत्त सुद्धे, तस्सण चैत्तसुद्धस चत्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
विमतरियाए परिसाए पचहिं अगगारसएहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्ष में अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणवास
सहस्साइ वाससयऊगाइ केवल परियाग पाउणिता पणपणवाससहस्साइ सब्बा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घरमा रह्या त्यापछी दीक्षा अडणु करीने
पय ऊगार वर्षमा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४८०० वर्षनु आयुध लोगवीने
केवली पर्यायमा रह्या आ रीते पय पयावन ऊगार वर्षनु आयुध लोगवीने

(जे से गिम्हाण पदमे मासे दोच्चे पक्खे चैत्त सुद्धे, तस्स ण चैत्त सुद्धस
चत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं
अविमतरियाए परिसाए पचहिं अगगारसयेहिं वाहिरियाए परिसाए मासिएण
भक्तेण अपाणएण वग्धारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमणे ग्रीष्मकाणना पडेल्लो भडिनाना जीण पणवाडीयामा ओटले के
क्षेत्र शुद्ध पक्षमा तेमा पणु ओथना द्विसे ब्यादे लरणी नक्षत्रने अद्रनी
साथे योग थई रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना वभते आभ्यन्तर परिषद हुती त्यादे
पाथसे आर्यिकाओनी साथे १ भडिनानु पान रडित लकत प्रत्याप्यान करीने

प्रत्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थ, व्याधारित पाणिः=पलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणटे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च कर्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्साम्, यथा रूपभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाद्विका महिमा=अष्टादशमध्यमहोत्सव देवैः कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिगः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनों हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते ही सिद्धि अवस्था प्राप्त करली ! (एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण) जिस प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में रूपभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की गई है उसी तरह इन मल्लि भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान नी चाहिये । (नदीसरे अष्टाद्विया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने मल्लि प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८ दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अथ सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं इस आठवें ज्ञातः अथ

जाने डोथे इलावता अवशिष्ट वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र कर्मने नाश थता ज सिद्धि अवस्था भेजवी लीधी

(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण)

जे प्रभावे ज जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमा रूपभदेवने भडिमा आलेखवामा आये। छे ते प्रभावे ज मल्लि लगवानना निर्वाणने भडिमा पणु जणुवे न्तेधये (न दीसरे अष्टाद्विया महिमा जाव पडिगया) भड्डी प्रभुना आ निर्वाणना कट्याणु कान्ठ भडिमाने उत्सव देवताये नदीश्वर द्वीपमा सतत आठ दिवसे सुधी उज्जये त्थारपली तेये त्थाथी जे दिशाभाथी प्रगथ थथा डता ते दिशा तरङ्ग पाछा जता ग्हा डवे सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामीने कहे छे—

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि)

डे जम्बू ! श्रमण लगवान महावीरे-डे जेये सिद्धिस्थानना अधिपति

उपित्वा=स्थित्वापञ्चपञ्चाशदूर्ध्वमहस्ताणि उर्ध्वतो नानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशदूर्ध्वमहस्ताणि सर्वायुष्क पाउयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध = चैत्रशुद्धः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामरुनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । उर्ध्वरात्रकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिपदा, पञ्चभिरनगाराशतैर्वाहया परिपदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्ण वास सहस्साइ
वाससय ऊगाइ केवलपरियाग पाउणिच्चा पणपण्ण वाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पदमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चात्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
र्द्धितरियाण परिसाण पचहिं अगारसएहिं वाहिरियाण परिसाण मासि
एण भक्तेण अपाणएण वगारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिपदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अर्हा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्ण वास
सहस्साइ वाससयऊगाइ केवलपरियाग पाउणिच्चा पणपण्ण वाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहा त्यारपछी दीक्षा अकलु करीने
५५ हजार वर्ष मा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४६०० वर्ष आयुध लोगवीने
केवली पर्यायमा रहा आ रीते ५५ पयावन हजार वर्ष आयुध लोगवीने
(जे से गिम्हाण पदमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्स ण चेत सुद्धस्स
चात्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
र्द्धितरियाण परिसाण पचहिं अगारसएहिं वाहिरियाण परिसाण मासि एण
भक्तेण अपाणएण वगारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमले ग्रीष्मकालना पडेला भडिनाना जीण पण्णवाडीयामा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पण्ण वाथना दिवसे न्याइ लखी नक्षत्रना अद्रनी
साथे योग थई रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना वणते आभ्यन्तर परिपदा हुती त्याइ
पाचसो आर्यिकाओनी साथे १ महिनाउ

प्रत्याख्यानानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थ, व्याधारित-
पाणिः=प्रलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च
कर्मणि-सिद्धः=सिद्धिं गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभाणितव्या-यथा जम्बूद्वीप
प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-
इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाद्विक्ता महिमा=अष्टादशमहोत्सव देवैः
कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=
प्रतिनिवृत्ताः ।

रित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय
आयु नाम एव गोत्र कर्म के नष्ट होते ही सिद्धि अवस्था प्राप्त करली !
(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणितव्या जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण) जिस
प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की
गई है उसी तरह इन मल्ली भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान
नी चाहिये । (नदीसरे अट्टाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने
मल्ली प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८
दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे
प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी
से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स ना
यज्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिवेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर
ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके है इस आठवें जाताध्य

अने डाथो इलावता अवशिष्ट वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र कर्मनो नाश
थता न सिद्धि अवस्था भेजवी लीधी

(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणितव्या जहा जम्बूद्वीपपण्णत्तीण)

वे प्रभावे न जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमा ऋषभदेवना महिमा आलोचनामा आओये
छे ते प्रभावे न मल्ली भगवानना निर्वाणना महिमा पण्णत्ते नोछये
(न दीसरे अट्टाहिया महिमा जाव पडिगया) मल्ली प्रभुना आ निर्वाणना कट्याण्ण
कारइ महिमानो उत्सव देवताओये नदीश्वर द्वीपमा सतत आठ दिवसो सुधी
उओये त्यारपणी तेओ त्याथी वे दियामाथी प्रग यथा इता ते दिशा तरइ
पाछा नता रद्धा इवे सुधर्मास्वामी न जम्बूस्वामीने कहे छे—

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्जयणस्स
अयमट्ठे पण्णत्ते तिवेमि)

हे न जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर-के वेओ सिद्धिस्थानना अधिपति

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्साणि वर्षशतानानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्साणि सर्वायुक्तपात्रयित्वा यः स. ग्रीष्माण्णा ग्रीष्मकालान्
चैत्रादिमासचतुष्टयस्थाणा प्रथमो मास द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध = चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामरुनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिपदा, पञ्चभिरनगाशतैराशया परिपदा सद, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ
वाससय ऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता) मे मल्ली अरहत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पदमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चात्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
भिमतारियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिपदा की पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्णवास
सहस्साइ वाससयऊणाइ केवल परियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्द्धत प्रभु १ सौ वर्ष, घरमा रह्या त्व रपणी दीक्षा अल्लु करीने
५५ हजार वर्षमा अेकसेा वर्ष आछा अेटले के ४६०० वर्षनु आयुध्य लोगवीने
केवली पर्यायमा रह्या आ शीते ५५ पयावन हजार वर्षनु आयुध्य लोगवीने

(जे से गिम्हाण पदमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्स ण चेत सुद्धस्स
चात्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्वरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं
अभिमतारियाए परिसाए पचहिं, अणगारसयेहिं वाहिरियाए परिसाए मासिएण
भक्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमल्ले ग्रीष्मकाणना पडेल्ला भडिनाना जीन्त पण्णवाडीयामा अेटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पल्लु आयना द्विसे ब्यादे लखणी नक्षत्रने। चन्द्रनी
साथे योग थई रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना वणते आभ्यन्तर परिपद हुती त्याहे
पाचसेा आर्यिकाओनी साथे १ भडिनानु पान रहित लकत अत्याभ्यान करीने

॥ अथ नवमम् अध्ययनम् ॥

गतमष्टम् अध्ययन, साम्प्रत नवम प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहाय सम्बन्ध — पूर्वस्मिन् मायावतोऽनर्थः प्रोक्तः, न च भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थः प्रोच्यते, इति सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्—‘जइण भते’ इत्यादि ।

मूलम्—जइण भते । समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स णाय-
ज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते । नायज्झयणस्स
समणेणं जाव संपत्तेण के अट्टे पण्णत्ते ? एव खलु जवू । तेणं
कालेण चंषा नाम नयरी पुण्णभदे चेइए तत्थणं माकदी
नाम सत्थवाहे परिवसइ, अइए जाव अपरिभूए, तस्स ण भदा

—नववा अध्ययन प्रारम्भ—

अष्टम अध्ययन समाप्त हुआ । अब नौवां अध्ययन प्रारम्भ होता है इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस तरहसे संबन्ध है पूर्व अध्ययन में कहा गया है कि जो साधु मायावी होते हैं वे अनर्थ के पात्र होते हैं अर्थात् यदि उसके महाव्रतों में थोड़ा सा भी माया शल्य है तो वे उसे यथावत् फल जनक नहीं होते हैं—अब सूत्रकार इस अध्ययन द्वारा यह प्रकट करेंगे कि जो साधु भोगों से विरक्त नहीं होता है वह अनर्थका स्थान होता है और जो विरक्त होता है वह अपने प्रयोजनरूप अर्थको प्राप्त कर लेता है । इसी सम्बन्धको लेकर प्रारम्भ हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है (जइण भते । समणेण जाव सत्तण) इत्यादि ।

॥ नवमु अध्ययन प्रारम्भ ॥

आठम अध्ययन पुरे थयु छे नवमु अध्ययन हवे आरम्भ थाय छे आठमा अध्ययननी सथे आ अध्ययनने सणध आ प्रमाणे छे के आठमा अध्ययनमा ओ वत स्पष्ट करवामा आवी छे के के साधुओ मायावी होय छे तेओ अनर्थना पात्र होय छे ओले के जे तेना महाव्रतोमा थोडु पणु मायाशय (माया इप कटो) होय त्थारे तेओ तेमा थोअ इणना अधिकारी थता नथी हवे सूत्र १२ आ अध्ययनमा ओ वात स्पष्ट करवा छे के के साधु भोगाथी विरक्त थता नथी ते अनर्थनु स्थान धरि पडे छे अने के विरक्त होय छे ते ते ताना प्रयोजन उप अर्थने भेजनी ले छे आ विषयने लधने प्रारम्भ थता नवमा अध्ययननु आ पडेले सूत्र छे—

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-‘ एवं खलु जन् ’ इत्यादि । एवं खलु हे जन्म ! अत्र
णेन भगवता महावीरेण-यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन, अष्टमस्य
ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थ उक्तरूपो भावः प्रकृत कथितः इति ब्रवीमि अस्य
व्याख्यान पूर्वम् ॥ सू० ४० ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितके-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ
प्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज
गुरु-नालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाङ्ग-
व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्मावृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया अष्टममध्ययन संपूर्णम् ॥ ८ ॥

યન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ । અતઃ જૈસા પ્રશુને અપ
ને મુસ્તારચિન્દ સે કહો ઔર જૈસા ઉનસે મૈને સુના-વૈસા હી યહ તુમે
સેં કહા હૈ । સૂ૦ “ ૪૦ ”

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસી લાલશ્રી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્માવૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા આઠવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૮ ॥

થઈ ગયેલા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર લખ્યા મુજબનો અર્થ નિરૂ-
પિત કર્યો છે એટલા માટે પ્રભુએ પોતાના મુખારવિંદથી જે પ્રમાણે મને
કહ્યો અને જે સાંભળ્યો તે પ્રમાણે જ તમને મેં કહ્યો છે ॥ સૂ. ૪૦ ॥

આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત ।

तएण ते मार्गंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सच्चाएन्ति वहुहिं
आघवणाहि पणवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे
अकामा चेव एयमट्ट अणुजाणित्था । तएण तं मार्गंदियदारगा
अम्मापिऊहि अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च
मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्धं
वहुइ जोअणसयाइ ओगाढा ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्रा-
प्तेन—अष्टमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, नमस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्यय-
नस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? श्री सुधर्मास्वामी प्राह—एव खलु
जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् ममये चम्पानामनगरी । पूर्णभद्रं चैत्यम् । तत्र
खलु मारुन्दीनाम सार्थवाह परिचसति 'अहु' आढ्य = प्रभूतधनधान्यसपन्न,
'जाव अपरिभू' यावदपरिभूत केनाऽप्यपरिभूतनीय—सर्वजनमान्य इत्यर्थः ।
तस्य खलु भद्रानाम भार्या । तस्याः ख भार्याया आत्मजौ द्वौ सार्थवाहदारकौ

टीकार्थ—जम्बूस्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि (भते) भदन्त !
(जइण समणेण जाव सपत्तेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्टे पणत्ते
नवमस्सण केअट्टे पणत्ते) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धि
स्थान के भोक्ता बन चुके हैं अष्टम ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से
अर्थ प्रतिपादिन किया है तो हे भदन्त ! उन्ही श्रमण भगवान् महावीर
ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके हैं नौवें ज्ञाताध्ययन का
क्या भाव अर्थ प्रतिपादिन किया है ? (एव खलु जव ! तेण कालेण २
चपा नम नयरी, पुण्णभदे चेइए, तत्थण मारुन्दी नाम सत्थवाहे

टीकार्थ—' जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण ' इत्यादि ॥

जम्बू स्वामी सुधर्मास्वामिने प्रश्न करे छे के (भते !) छे लक्षन्त !

(जइण समणे ण जाव सपत्तेण अट्टमस्स अयमट्टे पणत्ते नवमस्स ण भते !
नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्टे पणत्ते ?)

जे श्रमणु भगवान् महावीर—के जेओ सिद्धस्थानना उपलोक्ता थअ
थक्या छे—आठमा ज्ञाताध्ययनना अर्थ उपर कइया मुज्जम निरूपिन क्यो छे
तो नवमा ज्ञाताध्ययनना अर्थ तेओओ डेनी रीते प्रगट् क्यो छे ?

(एव खलु जव ! तेण कालेण २ चपा नाम नयरी पुण्णभदे चेइए, तत्थण

नामं भारिया, तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था,
 तं जहा—जिणपालिए य जिणरक्खिए य, ततेणं तेसिं मागं-
 दियदारगाण अन्नया कयाई एगयओ साहियाणं इमेयारूवे
 मिहो कहासमुल्लावे समुप्पजित्था—एवं, खलु अम्हे लवणसमुदं
 पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा
 कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि निययघर हव्वमागया त सेयं
 खलु अम्हे देवाणुप्पिया । दुवालसमपि लवणसमुदं पोतवह-
 णेण ओगाहित्तए—त्तिकट्ठु अणमणस्स एयमट्ठ पडिसुणेति
 पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
 च्छित्ता एव वयासी—एव खलु अम्हे अम्मयाओ । एक्कारस
 वारा तं चेव जाव निययं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं
 अम्मयाओ । तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसम लव
 णसमुदं पोयवहणेण ओगाहित्तए । तएण ते मागंदियदारए
 अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया । अज्जग जाव
 परिभाएत्तए त अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सए इट्ठी
 सक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएण निरालबणेण लवणसमु-
 द्दोत्तरेणं ?, एव खलु पुत्ता । दुवालसमी जत्ता, सावसग्गा यावि
 भवइ, तं माणं तुब्भे, दुवे पुत्ता । दुवालसमपि लवणं जाव
 ओगाहेह, माट्ठु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तएणं मागं-
 दियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—एव खलु
 अम्हे अम्मयाओ । एक्कारसवारा लवण जाव ओगाहित्तए,

‘ઓગાઠા’ અવગાહિતવન્તી=ઉત્તીર્ણો, સર્વત્રાપિ ચ खलु सर्वयात्रासु आवा
‘લઢઢા’ લઢ્ઢાર્થે=પ્રાપ્તપ્રચુરધનો, ‘કયકજ્ઞા’ કૃતકાર્યો=સાધિતધનોપા-
ર્જનાદિસકલકાર્યો, ‘અણહસમગ્ગા’ અનધસમગ્રી = તસ્કરાદિહેતુકવિધાતરહિત-
સર્વસ્વો સતો પુનરપિ નિજગૃહ હન્યમાગતી=સર્વથા સકુશલ સમાયાતી, તત્=
તસ્માત્ ‘સેય’ ભેયઃ=ઉચિત खलु आवयोः देवानुप्रियः ? ‘દુવાલસમપિ’
દ્વાદશમપિ ચાર લવણસમુદ્ર પોતવહ્નેનાવગાહિતુમ્, ‘ત્તિક્કટ્ટુ’ इति कृत्वा=इति
विचार्याऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रुणुतः = સ્વીકૃતઃ પ્રતિશ્રુત્ય યત્રેવ અમ્માપિયરો
મદ્રા માકન્દી ચ સ્તઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતઃ, ઉપાગત્યૈવમગાદિષ્ટામ્-એવ खलु आवा

लवणसमुद्र पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाठा सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा
कयकज्ज्ञा अणहसमग्गा पुणरवि निययघर हवमागया) जहाज
द्वारा हम लोग लवण समुद्र से होकर ११ बार परदेश जा चुके हैं-जय
२ हम लोग बाहर परदेश गये-तब २ हमने वहाँ पर प्रचुर धन कमाया
है और कृत कार्य होकर वहाँ से निर्विघ्न रूप में अपने घर पापिस सकु
शल आये हैं-(त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । दुवाल समपि लवण
समुद्र पोतवहणेण ओगाहित्तए) इसलिये हे देवाणुप्रिय अप १२वीं
बार भी हम लोग जहाज द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर व्यापार कर
ने के लिये चले-तो अच्छा है । (त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ठ पडि
सुणेति) इस प्रकार का विचार कर उन दोनों ने एक दूसरे की बात को
मान लिया (पडिसुणित्ता जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ उवा
गच्छित्ता एव वयासी एव खलु अम्मयाओ एक्कारस वारा त चेव जाव

(एव खलु अम्हे लवणसमुद्र पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाठा सव्वत्थ
वि य ण लद्धट्ठा कयकज्ज्ञा अणह-समग्गा पुणरवि निययघर हवमागया)

વહાણુ વડે અમે હોઠો ૧૧ વખત દેશાવર ખેડવા નીકળ્યા હતા અને
આ પ્રમાણે ત્રાથી પુરૂષ ધન મેળવ્યું છે અમે પોતાના વેપારના પૂર્ણરૂપે
સફળ થઈને સકુશળ પાછા ઘેર ફર્યા છીએ

(તં સેય खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! दुवालसमपि लवणसमुद्र पोतवहणेण ओगाहित्तए)

એટલા માટે હે દેવાણુપ્રિય ! ૧૨મી વખત પણ આપણે વહાણુના એનીને
લવણ સમુદ્રમાં થઈને વેપાર કરવા દેશાવર માટે નીકળી પડીએ તો સાફ થાય.

ત્તિક્કટ્ટુ અણમણસ્સ એયમટ્ઠ પડિસુણેતિ)

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેઓએ એક મત થઈને આ વાત સ્વીકારી લીધી

(પડિસુણિત્તા જેણેવ અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા એવ વયાસી

આસ્તામ્, 'ત જહા' તથા=તથાહિ-જિનપાલિતશ્ર જિનરક્ષિતશ્ર । તતઃ સઙ્ગ
તયોર્માનન્દિકદારકયોરન્યદા યદાચિત્ એકત સદ્વિતાનામયમેતદ્વા મિયઃ કથા
સમુલ્લાપઃ સમુદપથત-એવ સ્વલુ આગા સ્વણસમુદ્ર પોતવદ્દનેન એકાદશચારાત્

પરિવસઙ્ગ અદ્દે જાવ અપરિભૂણ, તસ્સ મદ્દા નામ મારિયા) હસ પ્રકાર
જવ્વ સ્વામી કા પ્રદને સુન કર શ્રી સુધમી સ્વામી અને સમજાતે હૈંકિ
જવ્વ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રદન કા ઉત્તર હસ તરફ સે જ, ઉસ કાલ ઓર ઉસ
સમય મે ચપા નામકી નગરી થી । ઉસમેં પૂર્ણચંદ્ર નામકા ઉદ્યાન યા ।
ઉસ ચપા નગરી મેં માકદી નામકા સાર્થવાહ રહતા થા । યહ ધનધાન્ય
સેં સ્વયં પૂર્ણ થા । અતઃ અપરિ ભવનીય થા । કોઈં મી મનુષ્ય હસકા તિરસ્કાર
નહીં કર સુકતા થા-સર્વજન માન્ય થા । હનકી માર્યાકા નામ મદ્દા થા ।
(તીસેણ મદ્દાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા ત જહા જિણપાલિણ્ય
જિણ રક્ષિણ્ય ચ) ઉસ મદ્દા કે દો પુત્ર થે, (૧) જિન પાલિત (૨) જિનરક્ષિત
(તત્તેણ તેસિં માગદિય દારગાણ અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિયાણં હમે
યારુવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા) એક દિન કી વાત હૈંકિ
જય યે દોનો માકદી સાર્થવાહ કે પુત્ર એક જગહ મિલકર બેઠે હુએ થે-
તવ હનમેં પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર કી વાતચીત ચલી-(એવ સ્વલુ અન્હે

માકદીનામ સત્થવાહે પરિવસઙ્ગ અદ્દે જાવ અપરિભૂણ, તસ્સણ મદ્દા નામ મારિયા)
આ રીતે જ બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલગીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને
સમજાવતા કહે છે કે હે જ બૂ ! સાબળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચ પા નામે નગરી હતી તેમા પૂર્ણચંદ્ર
નામે ઉદ્યાન હતું માકદી નામે એક સાર્થવાહ તે ચ પા નગરીમા રહેનેા હતો
તે ધનધાન્યથી પૂર્ણરૂપે સમૃદ્ધ હતો, એટલા માટે તે અપરિભવનીય હતો
કોઈં પણ માણસની શક્તિ નહોતી કે તેનો તિરસ્કાર કરી શકે તે સર્વજન
માન્ય હતો તેમના પત્નીનું નામ મદ્દા હતું

(તીસેણ મદ્દાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા ત જહા જિણપાલિ
ણ્ય જિણરક્ષિણ્ય ચ)

તે બંદાને બે પુત્રો હતા-જિનપાલિત અને જિન રક્ષિત

(તત્તેણ તેસિં માગદિયદારગાણ અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિયાણ હમેયા
રુવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા)

એક દિવસે માકદી સાર્થવાહના અને પુત્રો એક જગ્યાએ બેઠા હતા
ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત કરવા લાગ્યા કે

સદ્ગ્રહઃ, અસ્ય છાયા—‘આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગત ચ વહુ હિરણ્ય ચ સુવર્ણ ચ કાસ્ય ચ દૂષ્ય’ ચ વિપુલધનકનકરત્નમણિમૌક્તિકશિલાપ્રવાલરક્તરત્નાદિકં સત્સારસ્વાપતેયમ્, અલ યાવત્ આસપ્તમાત્ કુલવશ્યાત્ પ્રકામ દાતુ, પ્રકામ ભોક્તુ, પ્રકામ ” ઇતિ । ‘અજ્જયપજ્જયપિપજ્જયાગણ’ આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગતમ્, આર્યક, -પિતામહ, પ્રાર્યકઃ=પિતુઃ પિતામહઃ, પિતૃપ્રાર્યક = પિતુઃ પ્રપિતામહઃ, તેભ્યઃ સકાશાદ્ આગત=વશપરમ્પરાયા પ્રાપ્ત, ‘વહુ’ પ્રમાણતો વહુલ ‘હિરણ્ય’ હિરણ્ય=રજત, ‘સુવર્ણ’ સુવર્ણ=પ્રતીત, ‘કસ’ કાસ્ય=ધાતુવિશેષઃ, ઉપલક્ષણ તાન્નાદીનામ્, ‘દૂસ’ દૂષ્ય=વસ્ત્ર ચીનાશુકાદિક ‘વિડલ’ વિપુલ=પ્રચુર ધનક-
ળગ ‘ધન=ગયાદિ, કળક=ધન્ય, ‘રયણ’ રત્નानિ = વર્કેતનાદીનિ, ‘મણિ’ મણયઃ=ચન્દ્રકાન્તાદ્યાઃ, ‘મોત્તિય’ મૌક્તિકાનિ પ્રતીતાનિ, ‘સત્રા’ શઙ્ખા=દક્ષિ-
ણાવર્ત્તાઃ, પ્રસિદ્ધાઃ, યત્પ્રભાગદ્ વિન્ન નિવૃત્તિઃ કુશલપ્રવૃત્તિશ્ચ ભગતિ ‘સિલપ્પ
વાલ’ શિલાપ્રવાલાનિ=વિદ્રુમાણિ, ‘રત્તરયણ’ રક્તરત્નાનિ=પદ્મરાગાઃ, તાન્યાદૌ-
યસ્ય તત્તાદૃશ ‘સત્સારસ્વાપજ્જે’ સત્સારસ્વાપતેય, સત્=વિદ્યમાન સ્વાધીન-
મિત્યર્થઃ, ‘સાર’=પ્રધાન સ્વાપતેય=દ્રવ્ય, ‘અલાહિ’ અલ=પરિપૂર્ણમ્ અસ્તિ
નિયત્પરિમિતમ્ ? ઇત્યાહ—‘જાવ’ ઇત્યાદિના, ‘જાવ’ યાવત્=યાવત્પરિમિતમ્
‘આસપ્તમાઓ કુલવસાઓ’ આસપ્તમાત્ કુલવશ્યાત્=અદ્યતનાદારભ્ય ભવિષ્યત્સ-

નિરાલબ્ધેણ લબ્ધસમુદ્ધોત્તારેણ) હસ પ્રકાર અપને દોનોં પુત્રોં કે
વચન સુનકર ડનસે મોતા પિતા ને હસ પ્રકાર કહા-હે પુત્રોં અપને યહા
આર્યક પ્રાર્યક એવ પિતૃપ્રાર્યકોં સે ચલા આયા વહુત સા હિરણ્ય
સુવર્ણ, કાસા તાંગા આદિ તથા ચીન આદિ કે વલ, ગાય મૈસ આદિ
ધન, ગેહ્ આદિ ધોન્ય, વર્કેતનાદિ રત્ન, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિગળ,
મૌક્તિક, દક્ષિણાવર્ત શલ્ક, મૂગા, પદ્મરાગ આદિ ઉત્તમ સે ઉત્તમ દ્રવ્ય
લૂબ ભરા પઢા હૈ-હસ પર અપને મિત્વાય કિસી ઓર દૂસરે કા અધિ-
કાર નહીં હૈં । વહ પ્રમાણ સેં હતના અધિક હૈ કિ આજકી પીઢીસે લેકર

સમુદપ કિ મે સપચવાણ નિરાલબ્ધેણ લબ્ધસમુદ્ધોત્તારેણ)

આ પ્રમ છે પોતાના બને પુત્રોની વત સાબણીને માત પિતાઓએ આ
રીતે કહ્યું કે હે પુત્રો ! આપણે ઘેર આર્યક, પ્રાર્યક અને પિતૃ પ્રાર્યકોથી
એટલું કરેલું ખૂબજ સોનું, ડાંસુ, તાણુ વગેરે તેમજ ચીન વગેરે દેશોના
વસ્ત્રો, ગાય, હેસ વગેરે ધન, ઘઉં વગેરે ધાન્ય, વર્કેતના વગેરે રત્નો, ચંદ્રકાન્ત
વગેરે મણિઓ, મોતીઓ, દક્ષિણાવર્ત શલ્ક, પદ્મરાગ વગેરે ઉત્ત
મોત્તમ દ્રવ્ય પુલકળ પ્રમાણમાં ભર્યું છે આ નપત્તિ ઉપરગુણીન કોઈને
આધિકાર નથી અને તે પ્રમાણમાં એટલી બધી છે કે તમારી આજની પેઢીથી

હે અમ્વતાતૌ ! પદ્મદશગારાન્ તદેવ યાવત્ નિનકુ મૃદ દૃવ્યમાગતૌ, તદ્ દૃષ્ટાવઃ
 સ્વલ્પ હે અમ્વતાતૌ ! યુષ્માભિરભ્યજુગાતૌ સન્ની દ્વાદશ ચાર સમુદ્ર પોતવહનેન-
 અવગાહિતુ=સમુત્તર્તુ સમુદ્રયાત્રા કર્તુમભિલ્પાત્ इत्यर्थः ।

તત્ સ્વલ્પ તૌ માકન્દિરુદારકૌ અમ્વાપિતરૌ એમનાદિષ્ટામ્-૩૬ ચ તે 'જાયા'
 જાતૌ=હે પુત્રો ! 'તે' યુવયોઃ 'અઝ્જગ જાવ' આર્યક યામ્, અત્ર યાવન્ ૩૭દેન
 'અઝ્જયપઞ્જય-પિઞ્જયપાગમ્' ચ મદુ હિરણે ય મુવણે ય કસે ય દમે ય
 વિઝલધનરુણગરયણમણિમોત્તિય સરસિલપ્પવાન્નરત્તરયણમાણ સત્તસારસાવજ્જે
 અગાહિ જાવ આવત્તમાઓ કુરુવમાઓ પદ્મમ દાઝ, પદ્મમ મોતુ, પદ્મમ " इति

નિયમ ધર દૃવ્ય માગયા-ત દૃષ્ટામો ન અમ્મયાઓ તુમ્હે હિ અમ્મણ
 ણ્યાયા સમાણા દુવાલસમ લવણસમુદ્ પોયવહ્ણેણ ઓગાહિત્તણ)
 માન કર ફિર વે દોનોં જહાં માના પિતા થે વહા ગયે વહા જાકર उनसे
 इस प्रकार कहा-हे मात तात । हम लोग ११ चार पोतवहन द्वारा ल
 वण समुद्र से होकर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जा चुके हैं
 वहा हमने अच्छी तरह से प्रचुर धन कमाया है और बिना किसी बिघ्न
 बाधा के वहा से वापिस घर सकुशल लौट आये हैं अब हमारा बिच्चा
 र १२^{वीं} चार भी पोतवहन द्वारा लवण समुद्र को पार कर बाहर पर-
 देश में व्यापार करने के लिये जानेका हो रहा है सो हम आपकी इस
 विषय में आज्ञा चाहते हैं-(तएण ते मागदिषद्वारण अम्मापियरो एव
 वयासी-इमेय ते जाया । अज्जग जाव परिभाएत्तण त अणुहोह ताव
 जाया । विज्जे माणुस्सएइड्डीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएण

एव स्वल्प अम्वयाओ एवकारमवारा त चेव जाव नियम धर दृव्यमागया त
 दृष્ટामोण अम्वयाओ तુम્હેहि અમ્મણ્યાયા સમાણા દુવાલસમ લવણસમુદ્ પોય
 વહ્ણેણ ઓગાહિત્તણ)

એક મત થઇને તેઓ બંને ત્યાથી માતા પિતાની પાસે ગયા અને
 તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે માતા પિતા ! અમે અચાર સુધીમા
 અગિયાર વખત વહાણ વડે લવણ સમુદ્રમા થઇને બહાર પરદેશમા વેપાર
 કરવા ગયા છીએ ત્યા જઈને અમારો પુષ્કળ પ્રમાણમા ધન મેળવ્યું છે અને
 ત્યાથી પાછા હોમ કુશળ નિર્વિઘ્ન રૂપે ઘેર આવી છીએ હમણા અમારો
 વિચાર વહાણ વડે જ ૧૨ મી વખત લવણ સમુદ્રને પાર કરીને પરદેશમા
 વેપાર કરવા માટે જનાનો થઈ રહ્યો છે તો એ માટે અમે તમારો આજ્ઞા
 માંગીએ છીએ

(તएण ते मागदिषद्वारण अम्मापियरो ए। वयासी इमेय ते जाया ।
 अज्जग जाव परिभाएत्तण त अणुहोह ताव जाया । विज्जे माणुस्सए इति सक्कार

વસ્તુવર્જિતેન વા 'લવણસમુદ્રોત્તારેણ' લવણસમુદ્રોત્તારેણ = લવણસમુદ્રોત્તરણેન 'કિં' કિં પ્રયોજનમ્ ? ન ક્ષિમપીત્યર્થઃ, યુવાભ્યામજૈવસ્થાતવ્ય ન કુત્રાપિ ગન્ત-વ્યમિતિ ભા. । પુનશ્ચ-એવ ચ્વલુ 'પુત્તા' હે પુત્રો ! દ્વાદશી યાત્રા 'સોવસગ્ગા' સોપસર્ગા=સોપદ્રવા વિન્ધવહુલા ચાપિ ભવતિ 'ત' તત્=તસ્માત્ મા ચ્વલુ હે પુત્રો યુવા દ્વાવપિ દ્વાદશ 'લવણં જાવ' લવણ યાવત્-લવણસમુદ્ર પોતવહનેન અવ ગાહેથામ્, યુવાભ્યા દ્વાદશવાર સમુદ્રાવગાહન ન કર્તવ્યમિત્યર્થઃ, માહુ 'ન ચ્વલુ યુવયોઃ શરીરસ્ય 'વાયત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ 'ભવિસ્સડ' ભવિષ્યતિ, 'યુવયોઃ શરીરે કાઽપિ વ્યાપત્તિર્ન ભવતુ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति ભાવઃ । -

તતઃ ચ્વલુ માકન્દિકદારકો અમ્બાપિતરૌ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમેવમ-વાદિષ્ટામ્-એવ ચ્વલુ આવા હે અમ્બતાતૌ ! એકાદશવારાન્ 'લવણ જાવ' લવણ ર્યં હૈ । કારણ હસકા યહી હૈ કિ તુમ દોનોં યહી પર રહો કહી ભી મત જાઓં । (એવ ચ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમી જત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુબ્હે દુવે પુત્તા દુવોલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુબ્મ સરીરસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સડ) દૂસરી વાત એક યહ ભી હૈ કિ હે પુત્રો ! વારહવી યાત્રા સોપસર્ગ-વિન્ધવહુલ-ભી હોતી હૈ । હસલિયે હે પુત્રો ! તુમ અવ ૧૨ વી વાર લવણસમુદ્ર કી પોત વહન સે યાત્રા મત કરો । મત તુમ્હારે શરીર પર કિસી ભી પ્રકાર કી વ્યાપત્તિ આઓ । યહી હમારી ભાવના હૈ । (તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચ-પિ એવ વયાસી) એસા સુનકર ડન માકદિ દોરકોં ને અપને ડન માતા પિતા સે દુવારા તિવારા ભી એસા હી કહા-(એવ ચ્વલુ અમ્હે અમ્મયાઓ

ત્યાદિ તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યાં સદતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેષાર કરવાથી શે લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બને પુત્રો અહીં જ રહો, ક્યાએ બાંચો નહિ

(એવ ચ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમીજત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુબ્હે દુવે પુત્તા ! દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુબ્મ સરીરસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સડ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિધ્નો પણ બહુજ નડતા રહે છે એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ બાતની આક્રમ આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી)

આ પ્રમાણે સાલગીને માકદી દારકોએ બીજુ અને ત્રીજુ વાર પણ પોતાના મતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે

સમપુરુષપર્યન્ત 'પ્રકામં દાઽ' પ્રકામ દાતુમ્=દીનદુઃસ્થિભ્યોઽસ્યર્થં વિતરીતુમ્,
 એવ પ્રકામ ભોયતુમ્=અત્યર્થં સ્વસ્યોપભોગાર્થમ્, પ્રકામમ્=અત્યર્થં 'પરિભાષણ'
 પરિભાજયિતુ=દાયાદાદિભ્યો વિમાના કર્તુમ્, પૂર્વપરમ્પરાપ્રાપ્તમિદં દ્રવ્યં હે પુત્રી!
 યુવયોર્મત્રિપ્યત્સમપુરુષપર્યન્ત પ્રકામદાનાર્થર્થં પરિપૂર્ણમસ્તીતિ ભાવઃ । 'તં'
 તત્—તસ્માદ્ યુવામ્ 'અણુહોહ' અનુભવત 'તાવ' તાવત્=પ્રથમ 'જાયા'
 જાતૌ=હે પુત્રી ! ત્રિપુલ=મચુર માનુષ્ક=મનુષ્યસમ્બન્ધીકમ્ 'દ્વીસકારસમુદય'
 ઋદ્ધિસત્કારસમુદયમ્, ઋદ્ધિગા-ચક્ષુઃ સુવર્ણાદિના, સત્કારઃ=જનકૃતવહુમાનસ્તસ્ય
 સમુદયઃ-બાહુલ્યં તમ્, મનુષ્યસમ્બન્ધિન ઋદ્ધિસત્કારસમુદાયસ્યાનુભવ કુલત
 યુવામિતિ ભાવઃ, અતઃ 'મે' યુવયોઃ 'સપચ્ચવાણ' સમત્યપાયેન=વિઘ્નવહુલેન
 'નિરાલમ્બણે' નિરાલમ્બનેન=નિષ્કારણેન, વિઘ્નવાધોપસ્થિતૌ ત્રાણાર્થમાલમ્બનીય
 તુમ્હારી સાત પીઢી તક કે લોગ ઉસે દીન દુ સ્થિયોં કો દાન મેં દેવેં બેઠે
 ૨ હચ્છાનુસાર જાવેં પીઢે હિસ્સેદારોં મેં ઉસકા વિભાગ મી કર દેવે
 તૌમી વશ પરમ્પરા સે ચલા આયા હુઆ યહ દ્રવ્ય કમી સમાપ્ત નહીં
 હો સકતા હૈ-હે પુત્ર ! તુમ્હારી સાત પીઢી તક કે પુરુષોં કો યહ દાના
 દિક મેં વિતરણ કરને કે લિયે પર્યાપ્ત હૈં । પિતામહ-દાદા કા નામ
 આર્યક હૈ । પિતા કે પિતા કે પિતા કો નામ પ્રાર્યક હૈ । પિતા કે પ્રપિ
 તામહ કા નામ પિતૃ પ્રાર્યક હૈં યહ સર્વ પાઠ "પરિભાષણ" કે પહિલે
 કા યાવત્ શબ્દ સે યહા ગૃહીત હુઆ હૈ । હસ િયે હે પુત્રોં ! તુમ
 દોનોં પહિલે મનુષ્ય ભવસમ્બન્ધી ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાય કા અનુભવ
 કરો । વિઘ્ન વહુલ તથા વિઘ્નવાદા કે ઉપસ્થિત હોને પર ત્રાણ કે લિયે
 આલમ્બનીયવસ્તુ સે વર્જિત એસે લવણ સમુદ્ર કે ઉત્તરણ સે કયા તાત્પ

માડીને સાત પેઢી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ દુ ખી માણસોને દાનમા આપે,
 બેસીને ઈચ્છા મુજબ આપ, પીત્રે લોકોને અને લાગ પડાવનારાઓમા પણ
 તેની વહેચણી કરે છતાંબે વશપરપરાથી સગ્રહાયેલી સપત્તિ સમાપ્ત થઈ
 જવાની નથી હે પુત્ર ! તમારી સાત સાત પેઢી સુધીના પુત્રોને માટે આ
 સપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમા વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ
 એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનું નામ
 પ્રાર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનું નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે આ પાઠ અહીં
 " પરિભાષણ " ના પહેલાના ' યાવત્ ' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે
 એટલા માટે હે પુત્ર ! તમે બંને પહેલા અનુબ લવના ઋદ્ધિ સત્કાર અથ
 વાથનો અનુભવ કરો બહુ વિદ્યો યુક્ત તેમજ વિદ્યો બાધાઓ આવી પડે

સમપુરુષપર્યન્ત 'પ્રકામં દાઽ' પ્રકામ દાતુમ્=દીનદુઃસ્થિઓડર્યર્થે વિતરીતુમ્,
 એવ પ્રકામ ભોક્તુમ્=અર્થસ્વસ્યોપભોગાર્થમ્, પ્રકામમ્=અર્થ 'પરિભાષત્ત'
 પરિભાજયિતુ=દાયાદાદિભ્યો વિભા.નં કર્તુમ્, પૂર્વપરમ્પરાપ્રાપ્તમિદ દ્રવ્ય હે પુત્રી !
 યુવયોર્મત્રિપ્યત્સમપુરુષપર્યન્ત પ્રકામદાનાર્થર્થે પરિપૂર્ણમસ્તીતિ ભાવ । 'તં'
 તત્—તસ્માદ્ યુવામ્ 'અણુહોઽ' અનુભવત 'તાવ' તાવત્=પથમં 'જાયા'
 જાતોં=હે પુત્રી ! વિપુલ=મનુર માનુષ્ક=મનુષ્યસમ્બન્ધીકમ્ 'હ્રીસકારસમુદય'
 ઋદ્ધિસત્કારસમુદયમ્, ઋદ્ધિ-ચલ્લ મુવર્ણાદિના, સત્કાર:=જનકૃતશ્રદ્ધામાનસત્સ્ય
 સમુદયઃ-ચાહુલ્ય તમ્, મનુષ્યસમ્બન્ધિન ઋદ્ધિસત્કારસમુદાયસ્યાનુભવ કલ્પ
 યુવામિતિ ભાવઃ, અતઃ 'મે' યુવયોઃ 'સપચ્ચવાણ' સમત્યપાયેન=વિઘ્નબહુલેન
 'નિરાલમ્બણેન' નિરાલમ્બનેન=નિષ્કારણેન, વિઘ્નવાધોપસ્થિતૌ ગ્રાણર્થમાલમ્બનીપ-

તુમ્હારી સાત પીઢી તક કે લોગ ઉસે દીન દુ સ્થિયોં કો દાન મેં દેવેં બેઠે
 ૨ હચ્છાનુસાર રાવેં પીવે હિસ્સેદારોં મેં ઉસકા વિભાગ મી વર દેવે
 તૌમી વશ પરમ્પરા સે ચલા આયા હુઆ યહ દ્રવ્ય કમી સમાસ નહીં
 હો સકતા હૈ-હે પુત્ર ! તુમ્હારી સાત પીઢી તક કે પુરુષોં કો યહ દાના
 દિક મે વિતરણ કરને કે લિયે પર્યાસ હૈં । પિતામહ-દાદા કા નામ
 આર્યક હૈ । પિતા કે પિતા કે પિતા કો નામ પ્રાર્યક હૈ । પિતા કે પ્રપિ
 તામહ કા નામ પિતૃ પ્રાર્યક હૈં યહ સવ પાઠ "પરિભાષત્ત" કે પહિલે
 કા યાવત્ શબ્દ સે યહ ગૃહીત હુઆ હૈ । હિસ િયે હે પુત્રોં ! તુમ
 દોનોં પહિલે મનુષ્ય મવસમ્બન્ધી ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાય કા અનુભવ
 કરો । વિઘ્ન બહુલ તથા વિઘ્નવાવા કે ઉપસ્થિત હોને પર ગ્રાણ કે લિયે
 આલમ્બનીયવસ્તુ સે વર્જિત એસે લવણ સમુદ્ર કે ઉત્તરણ સે કયા તાપ્

માડીને સાત પેઢી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ હુ ખી માણસોને દાનમાં આપે,
 બેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીને લેખવે અને લાગ પડાવનાશઓમાં પણ
 તેની વહેચણી કરે છતાંબે વશપરપરાથી સંગ્રહાયેલી સ પત્તિ સમાપ્ત થઈ
 જવાની નથી હે પુત્ર ! તમારી સાત સાત પેઢી સુધીના પુત્રોને માટે આ
 સ પત્તિ દાન વગેરેના રૂપમાં વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ
 એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનું નામ
 પ્રાર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનું નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે આ પાઠ અહીં
 " પરિભાષત્ત " ના પહેલાના ' યાવત્ ' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે
 એટલા માટે હે પુત્રો ! તમે બને પહેલા મનુષ્ય ભવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુ
 દાયનો અનુભવ કરો બહુ વિશ્વો શુક્ર તેમજ વિશ્વો બાધાઓ આવી પડે

વસ્તુવર્જિતેન વા 'લવણસમુદ્રોત્તારેણ' લવણસમુદ્રોત્તારેણ = લવણસમુદ્રોત્તરણેન
'કિં' કિં પ્રયોજનમ્ ? ન ક્ષિમપીત્યર્થઃ, યુવાભ્યામજૈવસ્થાતવ્ય ન કુત્રાપિ ગન્ત-
વ્યમિતિ ભા : । પુનશ્ચ-એવ खलु 'પુત્તા' હે પુત્રો ! દ્વાદશી યાત્રા 'સોવસગ્ગા'
સોપસર્ગા=સોપટવા વિન્નપહુલા ચાપિ ભવતિ 'ત' તત્=તસ્માત્ મા खलુ હે પુત્રો
યુવા દ્વાવપિ દ્વાદશ 'લવણં જાવ' લવણ યાવત્-લવણસમુદ્ર પોતવહનેન અવ-
ગાહેયામ્, યુવાભ્યા દ્વાદશવાર સમુદ્રાવગાહન ન કર્તવ્યમિત્યર્થઃ, માહુ 'ન खलु
યુવયોઃ શરીરસ્ય 'વાયત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ 'ભવિસ્સહ' ભવિષ્યતિ, 'યુવયોઃ
શરીરે કાઽપિ વ્યાપત્તિર્ન ભવતુ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति ભાવઃ ।

તતઃ खलु માકન્દિકદારકૌ અમ્માપિયરૌ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમેવમ-
વાદિષ્ટામ્-એવ खलુ આવા હે અમ્મતાતૌ ! એકાદશવારાન્ 'લવણ જાવ' લવણ
ર્થં હૈ । કારણ ઇસકા ચહી હૈ કિં તુમ દોનોં યહી પર રહો કહી બી મત
જાઓ । (એવ खलુ પુત્તા ! દુવાલસમી જત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ
ત માણ તુમ્હે દુવે પુત્તા દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ
તુમ્મ સરીરસ્સ વાયત્તી ભવિસ્સહ) દૂસરી વાત એક યહ બી હૈ કિં હે
પુત્રો ! વારહવી યાત્રા સોપમર્ગ-વિન્નવહુલ-બી હોતી હૈ । ઇસલિયે હે
પુત્રો ! તુમ અવ ૧૨ વી વાર લવણસમુદ્ર કી પોત વહન સે યાત્રા મત
કરો । મત તુમ્હારે શરીર પર કિસી બી પ્રકાર કી વ્યાપત્તિ આઓ ।
યહી હમારી ભાવના હૈ । (તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોઞ્ચ
પિ એવ વયાસી) એમા સુનકર ડન માકદિ દારકૌ ને અપને ડન માતા
પિતા સે દુવારા તિવારા બી એસા હી કહા-(એવ खलુ અમ્હે અમ્મયાઓ

ત્યારે તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યાં સદતર અભાવ
છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શેા લાભ છે ? મતલબ
એ છે કે તમે બંને પુત્રો અહીં જ રહો, કયાએ બાહ્યો નહિ

(એવ खलુ પુત્તા ! દુવાલસમીજત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુમ્હે દુવે પુત્તા
દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુમ્મ સરીરસ્સ વાયત્તી ભવિસ્સહ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિઘ્નો પણ બહુજ નડતા
રહે છે એવી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની
યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ વ્યતની આક્રમ
આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોઞ્ચપિ તત્ત્વપિ એવ વયાસી)

આ પ્રમાણે સાલગીને માકદી દારકોએ બીજી અને ત્રીજી વાર પણ
પોતાના મતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે

યાવત્-લવણસમુદ્રમગાહિતવન્તો યાત્ તન્દ્રેયઃ સત્તુ આધયોદ્ઘોદશં વાર પોત
વહનેન લવણસમુદ્રમગાહિતુમિતિ ॥

તતઃ સ્વલુ તૌ માયન્દિયદારકી અમ્યાપિતરૌ યદા નો શક્નુતઃ વહીમિઃ
'આધવળાહિ' આરયાપનામિઃ=સામાન્યોક્તિમિ, 'પળવળાહિ ય' પ્રજાપ
નામિઃ=વિશેષોક્તિમિથ 'આધવિત્તે વા' આરયાપયિતુ સામાન્યત પ્રતિવોધ-
યિતુ વા 'પળવિત્તે વા' પ્રજાપયિતુ=વિશેષતઃ પ્રતિવોધયિતું વા લવણસમુદ્રો
ત્રણતો નિવર્તયિતું ન શક્નુત ઇત્યર્થ, તદા 'અકામાચેવ' અકામૈવ=અન્ઠારહિતૈવ
સતી એતમ્=ઉક્તમર્થમ્ 'અણુજાણિથા' અણુજાનીત=સ્વીકૃતવન્તો । તતઃ સ્વલુ

એકારસવારા લવણ જાવ ઓગાહિત્તણ) કિ હે માત તાત । જવ હમ
લોગોં ને લવણ સમુદ્ર કી ૧૧ વાર પોત વહન ઠારા યાત્રા કરલી હૈ-તો
અથ ૧૨ વીં વાર ઉસકી યાત્રા કરને મે કયાં મય હૈ । ફસલિયે ૧૨ વીં
વાર ઉસકી પોત વહન ઠારા યાત્રા કરના મી હમ લોગોં કે લિયે શ્રેય
સ્કર હી હૈ । આપ હમારી કોહ ચિન્તા ન કરે । (તણ તે મગદીદારણ
અમ્માપિયરો જાહે નો સચાણ તિ વહૃહિં આધવળાહિ પળવળાહિ ય
આધવિત્તે વા પલ્લવિત્તે વા તાહે અકામા ચેવ એમદ્ અણુજાણિથા)
ફસ તરહ જય અપને દોનોં પુત્રો કો વે માતા પિતા અનેક વિધ
આહ્યાપનાઓં સે, સામાન્ય કથન સે, પ્રજાપનાઓં સે-વિશેષ કથન સે
સમજાને બુજાને મેં સમર્થ નહી રો સકે લવણ સમુદ્ર કી યાત્રાકે ઉનકે
વિચાર કો નહી વદલ સકેં તવ ઉન્હોં ને ઉન્હેં ઇચ્છા નહી હોને પર મી
ફસ અર્થ કી-લવણ સમુદ્ર કી પોત વહન દ્વારા યાત્રા કરને કી સ્વીકૃતી

(એવ સ્વલુ અમ્હે અમ્મયાઓ ! એકારસવારાલવણ જાવ ઓગાહિત્તણ)

હે માતા પિતા ! અમે ૧૧ વખત લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરી આવ્યા
છીએ તો ૧૨ મી વખત યાત્રા કરવામા લય શાનો હોય ? ૧૨ મી વખતની
વહાણુ વડે યાત્રા અમારા માટે તો મગજડારી જ થશે અમારી તમે કોઈ
પણ જાતની ચિંતા કરતા નહિ

(તણ તે મગદીદારણ અમ્માપિયરો જાહે નો સચાણતિ વહૃહિં આધ
વળાહિ પળવળાહિ ય આધવિત્તે વા પલ્લવિત્તે વા તાહે અકામા ચેવ એમદ્
અણુજાણિથા)

આ પ્રમાણે પોતાના બે પુત્રોને તેઓ અનેકવિધ આહ્યાપનોથી
સામાન્ય કથનથી-અને પ્રજાપનાઓથી-વિશેષ કથનથી સમજાવવામા અસમર્થ
થઈ ગયા, લવણની યાત્રા કરવાના તેમના નિશ્ચયને તેઓ દેરવી શક્યા
નહિ ત્યારે તે, ઇચ્છા ન હોવા છતાં વહાણુ વડે લવણસમુદ્રની
યાત્રા કરવા

તૌ માકન્દિકદારકૌ અમ્માપિતમ્યામભ્યનુતૌ મન્તૌ એકદ્વિત્રિચતુરાદિસત્યાક
મેણ ગણપિત્તા દીયમાન ત્રયાણચ=નાલિકેર પૂર્ણફલાદિકમ્, 'મેઝ્જ ચ'
મેય ચ=યત્ પલ-સેટિકા-હસ્તાદિના માન કૃત્યા દીયમાન વસ્તુજાત-દુગ્ધઘૃત-
તૈલવસ્ત્રાદિકમ્, 'પારિચ્છેજ્જ' પરિચ્છેય ચ=પ્રત્યક્ષતો નિરૂપાદિ પરીક્ષયા યદ્દી-
યમાન તત્-સુવર્ણમણિમુક્તાદિચ, એતત્સર્વં ગરિમગરિમાદિક વસ્તુજાત ગૃહીત્વા
'જહા અરહણ્ણગમ્મ' યથા અરહણ્ણકમ્ય પમા=યેન પ્રકારેણ અરહણ્ણકસ્ય=અસ્યૈ
વાપ્તમા વચને વર્ણિતસ્ય શ્રાવકસ્ય વર્ણનં તૈયમાત્ર પિત્તેય, 'જાવ' યાવત્ લવણસ

દેદી । (તણ તે માગદિય દારગા અમ્મા પિઝ્ઠિ અઞ્ઞણુણાયા સમાણા
ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગમ્મ જાવ
લવણમનુદ્ધ વહુદ્ધ જોયણમયાઠ ઓગાઢા) ઇસ તરહ માતા પિતા સે
આજ્ઞાપિત હુણ વે દોનોં માકદી સાર્થવાહ કે પુત્ર, ગણિમ, ધરિમ, મેય
ઔર પરિચ્છેય રૂપ ક્રપાણક વસ્તુનોં મો પોતમેં ભરકર અરહણ્ણક
સાર્થવાહ કી તરહ અનેક ગોજનોં તક લવણ સમુદ્રમે નિકલ ગયે । એક
દો ત્રીન ચાર ઇસ રૂપ સે ગિનકર જો વસ્તુ દી જાતી હૈ વહ ગણિમ હૈ
જૈસે નારિકેલ, સુપારી આદિ । જો તૈલ કર દી જાત વહ ધરિમ હૈ
ઔર નાપકર દી જાતી હૈ વહ મેય-જૈસે દુગ્ધ, ઘૃત, તૈલ, વસ્ત્ર,
આદિ । જો પ્રત્યક્ષસે પરીક્ષિત કર યા કસૌટી આદિ પર કસ કર
દી જાતી હૈ વહ પરિચ્છેય હૈ-જૈસે સુવર્ણ મણિ મુક્તા આદિ । અરહણ્ણક
શ્રાવકકા વર્ણનં હસી જ્ઞાતા વચનકે અષ્ટમ અધ્યયનમેં કિયા હૈ ॥ સૂ ૧ ॥

(તણ તે માગદિયદારગા અમ્માપિઝ્ઠિ અઞ્ઞણુણાયા સમાણા ગણિમ
ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગમ્મ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુદ્ધ
જોયણમયાઠ ઓગાઢા)

આ ગીતે બને માકદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને
ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેય ૩૫ વેચાણુ માટેની વસ્તુઓને વહાણુમા
ભરીને અરહણ્ણક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોગ્યતા સુધી લવણુ મનુદ્રમા પહોંચી
ગયા ગણતરી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામા આવે છે તે ' ગણિમ ' છે જેમ
કે નારિયેર, સોપારી વગેરે જે તૈલ ઢગીન અને માસ ઢગીને આપવામા
આવે છે તે ' ધરિમ ' છે, માપ ઢગીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી,
તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને ઢગોટી વગેરે ઉપર કસીને
અપાય છે તે પરિચ્છેય છે-જેમ કે મોતુ, મણિ, મોતી, વગેરે અરહણ્ણક શ્રાવક
વધુન જ્ઞાતાધ્યયનનાજ આઠમા અધ્યયનમા કથવામા આવ્યુ છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्तो यावत् तच्छ्रेयः खलु आवयोर्द्वादिर्वा वार पोत वहनेन लवणसमुद्रमवगादितुमिति ॥

ततः खलु तौ माघन्दिषदारकी अम्मापितरौ यदा नो शक्नुतः वहीभिः 'आधवणाहि' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभिः, 'पणवणाहि य' प्रज्ञापनाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आधवित्तए वा' आख्यापयितु सामान्यत प्रतिबोधयितु वा 'पणवित्तए वा' प्रज्ञापयितु=विशेषतः प्रतिबोधयितु वा लवणसमुद्रोत्तरणतो निवर्त्तयितु न शक्नुत इत्यर्थः, तदा 'अकामावेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उक्तमर्थम् 'अणुजाणित्था' अनुजानीत=स्वीकृतवन्तौ । ततः खलु

एककारसवारा लवण जाव ओगाहितए) कि हे मात तात । जब हम लोगो ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने में क्या भय है । इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेय स्कर ही है । आप हमारी कोई चिन्ता न करें । (तएण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाए ति बहूहि आधवणाहि पणवणाहि य आधवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रों को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने में समर्थ नहीं हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नहीं बदल सकें तब उन्होंने ने उन्हें इच्छा नहीं होने पर भी इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एककारसवारालवण जाव ओगाहितए)

हे माता पिता ! अभी ११ वખत लवण समुद्रनी यात्रा करी आव्या छीअे तो १२ भी वખत यात्रा करवाना लय शानो होय ? १२ भी वખतनी वडाणु वडे यात्रा अभास भाटे तो भगणजारी न थये अमारी तमे केछे पणु जातनी चित्ता करवा नहि

(तएण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाए ति बहूहि आधवणाहि पणवणाहि य आधवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था)

आ प्रभाणु चोत्ताना जने पुत्रोने तेओ अनेकविध आख्यापनाथी सामान्य कथनथी-अने प्रज्ञापनाओथी-विशेष कथनथी समझववाना असमर्थ थई गया, लवण समुद्रनी यात्रा करवाना तेमना निश्चयने तेओ इरवी शक्या नहि त्पारे तेओअे चोत्तानी छेछा न होवा छना वडाणु वडे लवणसमुद्रनी यात्रा करवानी आशा आपी दीधी।

તો માકન્દિકદારકો અમ્માપિતૃભ્યામભ્યનુજ્ઞાતૌ સન્તૌ એકદ્વિત્રિચતુરાદિસંખ્યાક્રમેણ ગણયિત્વા દીયમાનં ક્રયાણમ્=નાલિકેર પૂર્ણફલાદિકમ્, 'મેઝ્જ ચ' મેયં ચ=યત્ પલ-સેટિકા-હસ્તાદિના માન કૃત્વા દીયમાન વસ્તુજાત-દુગ્ધધૃત-તૈલમ્લાદિકમ્, 'પારિચ્છેજ્જ' પરિચ્છેય ચ=પ્રત્યક્ષતો નિમ્પાદિ પરીક્ષયા યદી-યમાન તત્-સુવર્ણમણિમુક્તાદિઃ, ચ, એતત્સર્વં ગરિમગરિમાદિક વસ્તુજાત ગૃહીત્વા 'જહા અરહણ્ણગસ્સ' યથા અરહણ્ણકમ્ય યથા=યેન પ્રકારેણ અરહણ્ણકસ્ય=અસ્યૈવાપ્તમા યયને વર્ણિતસ્ય શ્રાવકસ્ય વર્ણન તથૈવાત્ર વિજ્ઞેય, 'જાવ' યાવત્ લવણસ

દેદી। (તણ તે માગદિય દારગા અમ્મા પિક્કહિં અઘ્મણુગ્ગાયા સમાણા ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુદ્ધ જોયણમયાઢ ઓગાઢા) इस तरह माता पिता से आज्ञापित हुए वे दोनों माकदी सार्थवाह के पुत्र, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्य रूप क्रयाणक वस्तुओं को पोतमें भरकर अरहन्नक सार्थवाह की तरह अनेक योजनों तक लवण समुद्रमें निकल गये। एक दो तीन चार इस रूप से गिनकर जो वस्तु दी जाती है वह गणिम है जैसे नारिकेल, सुपारी आदि। जो तैल कर दी जाय वह धरिम है और नापकर दी जाती है वह मेय-जैसे दुग्ध, घृत, तैल, वस्त्र, आदि। जो प्रत्यक्षसे परीक्षित कर या कसौटी आदि पर कस कर दी जाती है वह परिच्छेद्य है-जैसे सुवर्ण मणि मुक्ता आदि। अरहन्नक श्रावकका वर्णन इसी ज्ञाता घयनके अष्टम अध्ययनमें किया है ॥सू. १॥

(તણ તે માગદિયદારગા અમ્માપિક્કહિં અઘ્મણુગ્ગાયા સમાણા ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુદ્ધ જોયણમયાઢ ઓગાઢા)

આ રીતે બંને માકદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમાં ભરીને અરહણ્ણક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોજનો સુધી લવણ સમુદ્રમાં પહોંચી ગયા ગણતરી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામાં આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ કે નારિયેર, સોપારી વગેરે જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામાં આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી, તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસોટી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેદ્ય છે-જેમ કે સોનું, મણિ, માતી, વગેરે અરહણ્ણક શ્રાવકનું

मुद्र वह्नि योजनशतानि 'ओगाढा' अग्राढी=अवगाहितवन्ती नौकाया तेन
गतयन्ताप्रित्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तएण तोसि मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणस
याइं ओगाढाणं समणाण अणेगाइ उप्पाइयसयाइं पाउब्भू-
याति, तं जहा—अकाले गज्जिय जाव थणियसद्धे कालियावाए
तत्थ समुट्टिए, तएणं सा णावा तेणं कालियावाएणं आहुणि-
ज्जमाणी२ सचालिज्जमाणी२ सखोभिज्जमाणी२ सलिलतिक्ख-
वेगेहि आयट्टिज्जमाणी२ कोट्टिमसि करयलाहए विव तेदूसए,
तत्थेव२ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धर-
णीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गग-
णतलाओ भट्टविज्जाविज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महा
गरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविवमहाजण-
रसियसद्धवित्तत्था ठाणभट्टा आसकिसोरी, णिगुजमाणीविव
गुरुजणदिट्ठा वराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचोपहार-
सयतालिया गलियलवणाविव गगणतलाओ रोयमाणीविव
सलिलगंढिविप्पइरमाणघोरसुवाएहि णवग्ग उवरमयभत्तुया
विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्धुया
महापुरवरी झायमाणाविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरि-
व्वाइया णिसासनाणीविव महाकतारविणिग्गयपरिस्संता
परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा
चयणकाले देववरवहूसज्जुणिणयकट्टकूवरा भग्गमेढीमो-
डियसहस्समाला सूलाइयवकपरिमासा फलहतरतडतडंतफुट्टत-
सधिवियलतलोहकीलिया

तसवगता आमगमल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव चित्ति-
ज्जमाणगुरुई हाहाकयकण्णधारणावियवाणियगजणकम्मगारवि-
लविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोय-
माणेहि वंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहि एगं मह अतो
जलगय गिरिसिहरमासायइत्ता सभग्गकूवतोरणा मोडियझय
दंडा वलयसयखंडिया करकरकरस्स तत्थेव विद्व उवगया,
तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपणियं
भडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जावि य होत्था ॥ सू० २ ॥

टीका—ततः खलु तयोर्माकन्दिरुदारकयोरनेकानि योजशतानि यावल्लवण
समुद्रमवगाहितयोः सतो 'अणेगाइ' अनेकानि=नानाविधानि 'उप्पाइयसयाइ'
उत्पातशतानि=उपद्रशतानि प्रादुर्भूतानि, 'तजहा' तद्यथा—'अकालेगज्जिए'
अकाले गर्जितम्=असमये मेघगर्जनम् १, 'जाव' यावत्—'अकाले विज्जुए'
अकाले विद्युत्=असमये विद्युद्विद्योतनम् २, 'अकाले थणियसदे' अकाले स्तनि

'तएण तेसि मागदिय दारगाण' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसि मागदियदारगाण) उन माकदीके
पुत्रों को जब कि वे (अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समगाण) लवण
समुद्र में अनेक योजनो तक निकल चुके थे (अणेगाइ उप्पाइयसयाइ
पाउब्भूयाइ) अनेक-सैकड़ों उत्पात प्रादुर्भूत हुए (त जहा) जैसे (अकाले
गज्जिय जाव थणियसदेकालियावाए तत्थ समुट्टिए) असमय में मेघ-
गर्जना हुई। यावत्-अकाल में विजली चमकने लगी। बिना समय के

(तएण तेसि मागदियदारगाण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (तेसि मागदियदारगाण) माकदी पुत्रोने-
के न्यारे तेओ (अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समगाण) लवण समुद्रमा
धणु योअनो सुधी हर पडोथी गया हता (अणेगाइ उप्पाइयसयाइ
पउब्भूयाइ) धणु मे कडोनी स भ्रामा उत्पातो थवा भाड्या (त जहा) नेम
के (अकाले गज्जिय जाव थणियसदे कालियावाए तत्थ समुट्टिए) अणो
मेघ गर्जना थवा भाडी, यावत्-अकाले आकशमा चीजणी अणूकवा भाडी वषाकाण
हतो नाह छताओ लय कर गर्जनाओ थवा भाडी अकाले लय कर व वाओडाथी
वातावरण आकात थई गयु

तश्चब्दः=असमये निःसृजर्जनम् ३, 'कालियावाए' कालिकागत=असमये महावातश्च ४, तत्र समुत्थित' । ततः खलु सा 'णावा' नौका=यस्या मारुन्दिक-दारकौ स्थितौ, तेन कालिकावातेन 'आहुणिज्जमाणी २' आधुयमाना १ पुनः पुनः कम्पमाना 'सचालिज्जमाणी २' सञ्चाल्यमाना २=स्थानात्-स्थानात्तर नयनेन मुहुर्मुहुः प्रचाल्यमाना, 'सखोभिज्जमाणी' मद्भोभ्यामाना=अधोनिप-त्यपुनरु-भ्रमुत्पतनेन पुनः पुनः सोम प्राप्यमाणा 'सलिलतिक्खवेगेहि' सलिलती-क्ष्णवेगैः-जलतीव्रतरङ्गवेगैः 'आयट्ठिज्जमाणी २ आवर्त्यमाना २ इतस्ततो वार वार चक्राकारेण भ्राम्यमाणा 'कोट्टिमे' कुट्टिमे=पापाणमद्भुमौ 'करयलाहए' करतलाहृतः=हस्ततलास्फालित, 'तेंदूए विव' रुन्दुकइव 'तत्थेव २' तत्रैव-तत्रैव-'ओवयमाणीए' अवपतन्ती=अधः पतन्ती 'उप्पयमाणीय' उत्पतन्ती=

ही घनघोर गर्जना होने लगी । बिना कालके ही भयकर आँधी आ गइ । (तएण सा णावा तेण कालियावाएण आहुणिज्जमाणी २ सचालि ज्जमाणी सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहि आयट्ठिज्जमाणी २ कोट्टिमसि करयलाहए विव ते दूसए तत्थेव २ ओव यमाणीय उप्पयमाणीय) इस कारण वह नौका उस अकालिक भयकर आँधी से बार बार कपित हो उठी बार २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डगमगाती हुई आने जाने लगी । बार बार कभी वह नीचे आती तो कभी ऊपर उठती ।

जल के तीक्ष्णवेग से वह कभी २ बार २ चक्राकार से इधर उधर घूमने लग जाती । जिस प्रकार पापाणवद्भूमि ऊपर गेद हाथसे आहत होकर नीचे ऊँचे बार २ उठलती है उसी तरह वह नौका भी कभी

(तएण सा णावा तेण कालियावाएण आहुणिज्जमाणी २ सचालिज्जमाणी सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहि आयट्ठिज्जमाणी कोट्टिमसि करयलाहए विव तेंदूए तत्थेव २ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय)

असमयना पापाजोडथी पडावु सतत उगमगत्ता लावु, बार बार ओक जग्गाओथी पसीने भीज स्थाने उगमगत्ता जग्गा लावु सतत उपमा केड वणन ते नीचे तो केड वणत उपर आ सीने नीचे उपर थवा भाउवु

पाणीना तीव्र वेगथी क्यारेक ते नाव बार बार पैडानी जेम आभतेम क्षरवा भाडी जेम पथरवाणी नक्कर जमीन उपर डोडा हाथ पडे हेकाय अने ते बारबार नीचे उपर थाय तेमज नाव पवु नीचे उपर उठगत्ता

ऊर्ध्वगच्छन्तीच, तथा सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेव धरणीतलाद् उप्पयमाणी' उत्प-
न्ती=ऊर्ध्वमुच्यन्ती, 'भट्टविज्जा' भ्रष्टविद्या=विस्मृतविद्या विद्या परकन्यकेव गगन
तलाद् 'ओवयमाणी' अवपतन्ती=अधोनिपतन्ती, 'महागरुडवेगवित्तासिया'
महागरुडवेगविद्यामिता=महागरुडवेगेन भयाक्रान्ता 'भूयगवरकन्यगाविव' भूयग-
वरकन्यकेव नागकन्येय 'विपलायमाणी' विपलायन्ती, 'महाजनरसियसद्वित्तया'
महाजनरसितशब्दविग्रस्ता=जनसमूहकोलाहलशब्देनभीता 'ठाणभट्टा' स्थानभ्रष्टा
=स्वस्थानच्युता 'आसकिसोरीविव' अश्वत्थिशोरीव=अश्वत्थावत् 'धावमाणी'
धावमाना, गुरुजणदिट्ठावराहा' गुरुजनदृष्टापराया=गुरुजनैः=मातापितृ-श्वशुरा-

२ वहीं २ बार २ नीचे ऊँचे उछलने लगती। (सिद्धविज्जाधरणीयला-
ओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्यगा इव) उस समय वह नौका ऐसी
जात होती थी कि मानो सिद्ध विद्यावाली कोई विद्यावर कन्या ही धर-
णीतल से निकलकर ऊपरको उठ रही है (भट्ट विज्जाहरकन्यगागणत-
लाओ ओवयमाणी विव) या जिसकी विद्याभ्रष्ट हो चुकी है जिसे
विद्या विस्मृत हो गई है-ऐसी कोई विद्यावर कन्या मानो आकाश से
नीचे उतर रही है-(महागरुडवेगवित्तामिया विपलायमाणी भूयग-
वरकन्यगाइव) या गरुड के भयोत्पादक वेगसे आक्रान्त हुड मानों कोई
नागकन्या ही इधर उधर भाग रही है (महाजनरसियसद्वित्तया ठाण-
भट्टा धावमाणी आस किसोरी विव) या जनसमूह के कोलाहल से
भयभीत होकर मानों कोई घोड़ी की बछेरी ही अपने ध्यान से भ्रष्ट
होकर इधर उधर दौड़ती फिर रही है (गुरुजणदिट्ठावराहा णिगुज माणी-

(सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्यगा इव) ते वप्पते
भोण भोमा उछलती ते नाव निद्ध विद्यावाणी केध विद्याधर कन्या पृथ्वी
उपरवी नीडणीने उपर उठती होय तेम लागती छती (भट्ट विज्जा विज्जाहर
कन्यगा गगनतलाओ ओवयमाणीविव अथवा तो विद्याभ्रष्ट थयेली, विद्या विस्मृत
थयेली ओवी केध विद्याधर कन्या आकाशमाथी नीचे उतरती होय, (महागरु-
डवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्यगा इव) अथवा तो गरुडना
सयोत्पादक वेगथी आकाश थयेली केध नागकन्या ज आमतेम नासभाग
उरती होय, (महाजनरसियसद्वित्तया ठाणभट्टा धावमाणी आसकिसोरी
विव) अथवा तो भाषुभोना घोघाटथी सयलीत थधने केध घोडीनु वछेइ तणे
लाभावी नाभीने आमतेम इद्धु उछलतु होय, (गुरुजणदिट्ठा वरहा णिगुज
माणी सुयणकुलकन्यगा विव) अथवा तो कुट्टुभना पडाओ जेओतु शुद्ध

દિભિર્દૃષ્ટઃ=અવલોકિતઃ અપરાધઃ=અસત્યવચનાદિરૂપો યસ્યાઃ સા તથોક્તા 'સુય-
 ન્નકુલકન્નગાવિવ' સુજનકુલકન્યકેવ=કુલવતીકન્યેવ 'ણિગુજમાણી' વિગુજ્ઞન્તી
 =અવ્યક્તશબ્દકુર્વતી, અધોનમન્તી યા, 'વીચીપહારસયતાલિયાવિવ' વીચીપહાર-
 શતતાહિતેવ=અનેકશતજલતરંગપહારૈસ્તાહિતેવ 'ધુમ્મમાણી' ધૂર્ણમાના=થર-
 થરેતિ કમ્પમાના, 'ગગણતલાઓ' ગતનતલાત્ 'ગલિયવઘ્ણાવિવ' ગલિતવન્ધ
 નેવ=ત્રુટિતવન્ધનેવ-આકાશાત્ ટિલ્વા પતિતેવદૃશ્યમાનેત્યર્થઃ, રોયમાણીવિવ
 સલિલગઠિવિવ્વિપ્પદમાણધોરસુવાણ્ હં ણવવહ્ ઉવરયમત્તુયા 'રુદતીવસલિલગ્રન્થિ
 વિપકિરદ્ ધોરાશ્રુપાતૈર્નવવધૂરુપરતભર્ત્વકા, 'ઉવરયમત્તુયા' ઉપરતભર્ત્વકા=મૃતમ-
 ર્ત્વકા નવવધૂરિવ=નવપરિણીતા વનિતેવ=સલિલભિન્નાગ્રન્થિય સલિલગ્રન્થિય'=
 સલિલાર્દ્રગ્રન્થયઃ, તેમ્બોવિપકિરન્તઃ=ક્ષરન્તિઃ, જલવિન્દવઃ તપ્વ ધોરાશ્રુપાતાસ્તૈ

સુયન કુલકન્નગાવિવ) યા ગુરુજનો દ્વારા જિસકા અસત્ય વચનાદિરૂપ
 અપરાધ દેખ લિયા ગયા હૈ એસી કોઈ કુલવતી કન્યા હી માનોં લજ્જા-
 વશ નીચે કી ઓર છુકી જા રહી હૈ। (વીચીપહાર સયતાલીયા વિવ
 ધુમ્મમાણી) હજારોં જલતર ગો કે પ્રહારોં સે તાહિત હોને કી વજહ સે
 હી માનો થર થર કંપતી હુઈ વહ નૌકા (ગગણતલાઓ ગલિયવધ્ણા
 વિવ) એસી દિખલાઈ દે રહી થી કિ બન્ધન ઢૂટ જાને સે આકાશ સે
 ગિર સી પડી હો।

અર્થાત્-જિસ પ્રકાર વધન ઢૂટ જાને સે કોઈ વસ્તુ ડહર સે નીચે
 ગિર પડતી હૈ-ઉસી તરહ વહ નૌકા મી અપના વધન ઢૂટ જાને સે માનોં
 આકાશ સે-ડહર સે-નીચે ગિર પડી હૈં। (રોયમાણીવિવ સલિલ
 ગઠિ વિવ્વિપ્પદમાણ ધોરસુવાણ્ હિં ણવવહ્ ઉપર યમત્તુયા) જિસ પ્રકાર
 અપને પતિદેવ કે મરજાને પર નવોઢા ઑંસુઓં કો વહાતી હુઈ રોતી હૈ

બાલુ વગેરે અપરાધો બાણી ગયા છે તેવી કોઈ લાજથી મો નીચુ ધાલીને
 મુળવતી કન્યા જતી હોય, (વીચીપહારસયતાલિયા વિવ ધુમ્મમાણો) હજારે
 મોબાબાના પ્રહારોથી અથડાઈને થર થર ધ્રુજતી તે નાવ (ગગણતલાઓ ગલિય
 વધ્ણા વિવ) એવી લાગતી હતી કે બાણે દોરી તૂટી જવાથી આકાશમાંથી
 નીચે પડી ગઈ હોય

એટલે કે જેમ બધન તૂટી જવાથી કોઈ વસ્તુ ઉપરથી નીચે આવી પડે
 છે તેવી જ રીતે બાણે કે આ નાવ પણ બધન તૂટી જવાથી આકાશમાંથી
 નીચે પડી ગઈ ન હોય ?

(રોયમાણીવિવ સલિલ ગઠિવિવ્વિપ્પદમાણા ધોરસુવાણ્ હિં ણવવહ્ ઉપરયમત્તુયા)

ચેતાના પતિના મૃત્યુ પામ્યા બાદ જેમ કોઈ નવોઢા-બુવાન પત્ની-

રુદ્રતીવ્ર, 'વિલવમાળી ત્રિવ પરચક્રરાયાભિરોહિયાપરમમહાભયાભિદ્યુયામહાપુરવરી' વિલપન્તીવ પરચક્રરાજાભિરુદ્ધા પરમમહાભયાભિદ્યુતામહાપુરવરી-શત્રુભૃતૈઃ પરચક્ર રાજૈરભિતઃ સર્વતો રુદ્ધા પરિવેષ્ટિતા, અતएव પરમમહાભયાદભિદ્યુતા તત્રત્યજનાના-ભયાર્તાના સર્વદિક્ષુ કોલાહલપૂર્વકં યદ્ અભિદ્રવણ પલાયન તેનાભિદ્યુતા અતएव વિલપન્તી જનાના સમયકોલાહલૈઃ વિલાપ કુર્વતીવ યથા મહાપુરવરી મહાનગરી

હસી પ્રકાર ઉસ નૌકા સે મી સલિલ સે આર્દ્ર હુઈ સધિયો સે જલ વિન્દુ સમૂહ ટપટપ વરસ રહા થા-અત માલૂમ પડતા થા કિ માનોં યહ આસુઓ કો છોડતી હુઈ રોહી રહી હૈ । (વિલવમાળી વિવ પરચવક્ર રાયાભિરોહિયા પરમમહાભયાભિદ્યુયા મહાપુરવરી) જિસ પ્રકાર શઙ્ગુ ભૂત પરચક્ર રાજાઓ સે સર્વ ઓર સે ઘિરી હુઙ કોઈ મહાનગરી યહુત અધિક ભયસે અભિદ્રુત હોતી હુઈ વિલાપ કરતી હૈ અર્થાત્ જઘ કોઈ મહાનગરી શઙ્ગુ ભૂત રાજાઓ કે દ્વારા ચારોં ઓર સે ઘેરલી જાતી હૈ તથ વહા કા પ્રત્યેક જન ભય સે આર્ત હોકર જહા જિસ સે ભાગતે બનતા હૈ વહ વહાં રોતા વિલપતા હુઆ ભાગ જાતા હૈ-જનતા મે હસ સે અધિક અધિક વિક્ષોભ ઉત્પન્ન હોકર હાય ૨ આદિકા શબ્દ ઉસકે મુખ સે સ્વતઃ નિકલને લગતા હૈ અતઃ વહ નગરી જૈસે ઉસસે આકુલ વ્યાકુલ બનજાતી હૈ-હસી પ્રકાર હસ નૌકા મેં વૈઠે હુણ યાત્રિયો કે મુખ સે મી હસ આપત્તિ કે સમય મે હાય ૨ આદિ શબ્દોં કે કોલાહલ સે વહાં કા વાતાવરણ આકુલ વ્યાકુલ બન રહા થા અત સૂત્રકાર ને હસ નૌકા કે

આખોમાથી આવણુ, ભાદરવાના જેમ આસુઓની ધારા વહાવતી ઉભી હોય તેમજ તે વહાણ પણ પાણીથી ભીનુ થઈને સાધાઓમાથી સતત જળપ્રવાહ વહાવી રહ્યું હતું એટલે એમ જણાતું હતું કે તે રહતું જ ન હોય !

(વિલવમાળીવિવ પરચક્રરાયાભિરોહિયા પરમમહાભયા ભિદ્યુયા મહાપુરવરી)

રાત્રુ બની ગયેલા બીજા બહારના ઘણા રાજાઓથી ઘેરાયેલી કોઇ મહા નગરી અત્યંત ભયત્રસ્ત થઈને વિલાપ કરવા માડે છે એટલે કે બ્યારે જોઈ મહાનગરી શત્રુ રાજાઓથી એમરે ઘેરાઈ બંધ છે ત્યારે નગરીમા રહેનારી દરેક વ્યક્તિ જેમ ભયભીત થઈને જના જેને નાસી જવાનું સરગ પડે છે ત્યા તે રહતી વિલપની નાની બંધ છે, પ્રબળજનોમા એનાથી ખૂબજ ત્રાસ ઉત્પન્ન થઈ બંધ છે અને તેઓના મોથી 'હાય' 'હાય' ના શબ્દો પોતાની એજે નીકળવા માડે છે આ પ્રમાણે તે નગરી જેમ વ્યાકુળ થઈ બંધ છે તેમ જ નાવમા ઘેટેલા યાત્રીઓના મોથી નીકળતા 'હાય', 'હાય' ના શબ્દોથી ત્યાનું વાતાવરણ વ્યાકુળ થઈ રહ્યું હતું સૂત્રકારે આ નાવને અનેક દુઃખન

મરતિ, તદ્વત્, 'જ્ઞાયમાણીવિવ કવહચ્છોભપ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહ્યા' કપટ
 છદ્મપ્રયોગયુક્તા યોગપરિવ્રાજકાધ્યાયન્તીત્ત્વ કપટધ્યાન=કુર્વન્તીત્ત્વ, અતએ પરમકપટ-
 પ્રયોગયુક્તા યોગપરિવ્રાજિકેવ=યોગિનીવદશ્યમાના, 'ળીસાસમાણીવિવ મહાકતાર
 વિળિગયપરિસ્સતા પરિણયવયા અમ્મયા' નિઃશ્વસતીત્ત્વ મહાકાન્તારવિનિર્ગતપરિશ્રાન્તા
 પરિણતવયસ્કા અમ્મયા યથા મહાકાન્તારવિનિર્ગતેન=મહાપનવિનિર્ગમનેનાપરિશ્રાન્તા=
 સ્વિન્ના પરિણતવયસ્કા=વૃદ્ધાવસ્થાપન્ના અમ્મેવ=પુત્રવતી માતેત્ત્વ નિઃશ્વસતીત્ત્વ ઝઘ્વાધો-

વિષય મેં એસી કલ્પના કી હૈ કિ માનોં યહ નૌકા પરચક્ર કે રાજાઓં
 સે સર્વ ઓર સે રોકી હુઈ મહાનગરી કે સમાન અત્યન્ત ભય સે અભિ
 દ્રૂત બન કર વિલાપ હી કર રહી હૈ । (જ્ઞાયમાણી વિવ કવહચ્છોભ
 વ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહ્યા) યહ નૌકા વકવત્ કપટ ધ્યાનકરને
 વાલી યોગ પરિવ્રાજિકાકે સમાન દિલ્લાઈ દેતી થી-જિસ પ્રકાર કપટ
 સે ધ્યાન કરને વાલી પરિવ્રાજિકા ક્ષણ ભર કે લિયે કબી સ્થિર હો જાતી
 હૈ ઓર કબી અસ્થિર-એક સી વૃત્તિ ઉસકી નહી રહતી ઇસી તરહ તરોઝોં
 સે ચલ બનાં હુઈ વહ નૌકા બી ક્ષણ ભરકે લિયે સ્થિર હો જાતી થી
 ઓર ફિર અસ્થિર બન જાતી થી એક સી વૃત્તિ ઉસકી નહો થી ।

(ળીસાસમાણી વિવ મહા કતાર વિળિગય પરિસ્સતા પરિણયવયા
 અમ્મયા) મહા ભયકર જગલ મેં ઝૂચી નીચી ભૂમિ પર ચલને સે પરિ
 શ્રાન્ત હુઈ જૈસે વૃદ્ધાવસ્થાપન પુત્ર વતી માતા દીર્ઘ નિશ્વાસો કો છોડ

રાજાઓથી આકાત થયેલી તેમજ લયત્રસ્ત થયેલી મહાનગરીની સરખામણી
 એટલા માટે જ કરી છે

(જ્ઞાયમાણી વિવ કવહચ્છોભપ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહ્યા)

આ નાવ બગલાની જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી યોગ પરિવ્રાજિકાની જેમ
 લાગતી હતી એટલે કે જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી પરિવ્રાજિકા થોડી ક્ષણો માટે
 સ્થિર થઈ જાય છે અને પછી તરત જ અસ્થિર બનવાગી થઈ જાય છે તે
 સ્થિરતાપૂર્વક મનને સ્થિર રાખી શકતી નથી તેમ આ નાવ પણ મોતઝોથી
 ચચળ થઈને થોડી ક્ષણો સ્થિર બની જતી અને પાછી તરત જ અસ્થિર થઈ
 જતી હતી, એક સરખી સ્થિતિમા રહી રાહતી જ નહોતી

(ળીસાસમાણી વિવ મહાકતારવિળિગયપરિસ્સતા પરિણયવયા અમ્મયા)

મહા ભયકર વનવગડામા ઉચી નીચી ધરતી પર ચાલનારી પશ્ચાન્ત
 થયેલી, ધરડી થયેલી પુત્રવતી માતા જેમ દીર્ઘ નિશ્વાસો બહાર ઠાઠતી લય

ગમનપતી, 'સોયમાળી ત્રિવ તવચરણલીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવદ્' શોચન્તીવ તપશ્ચરણલીણપરિભોગા ચ્યવનકાલે દેવવરવદ્:—તપશ્ચરણલીણપરિભોગા=મુક્તતપ-શ્ચરણફલા ચ્યવનકાલે=દેવભવસ્થિતિક્ષયસમયે દેવવરવધૂરિવ શોચન્તી=તદ્વસ્થિ તજનવિપ્રાદયોગાત્ શોક કુર્ણતીવ દૃશ્યતે । પુનઃ સા નૌકા કીદશી જાતા ઇત્યાદ- 'સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા' ઇત્યાદિ । 'સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા' સર્વૂર્ણિતકાષ્ટકૂવરા સર્વૂર્ણિતાનિ=અર્થ ચૂર્ણી ભૂતાનિ કાષ્ઠાનિ કૂવર ચ=મુસ યસ્યાઃ સા તથા, 'ભગમેઢી' ભગમેધિઃ ભગન.= ટિવ મેધિઃ=સકલનૌકાધારભૂતઃ સ્તમ્ભો યસ્યા સા તથા, 'મોહિયમહસ્તમાલા' મોહિતસહસ્તમાલા-મોહિતઃ=ભગનઃ સહસ્તમાલ.= સહસ્તસપ્તજનાપરભૂતો માલઃ=ઉપરિતનભાગો યસ્યા સા તથા, 'સૂલાઈયવક્રપરિમાસા' શૂલાચિતવક્રપરિમાસા શૂલાગ્રિતઈવ=શૂલારોપિતઈવ વક્ર.=કુબ્જઃ પરિમાસઃ

તી હુઈ લઢલહાને લગ જાતી હૈ—ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા મી તરગો સે આહત હોકર માનો ધકાગટ કી વજહ સે હી ચલને મેં લઢલહા રહી થી । (સોયમાળી ત્રિવ તવચરણલીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવદ્) તપશ્ચરણકાલે જિસને ફલ ભોગ લિયા હૈ—ઔર અવ જિસકે ચ્યવન કા સમય આ ગયા હૈ તેસી દેવાદ્વના જિસ પ્રકાર શોક સે વ્યાકુલ-ચચલ-બન જાતી હૈ ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા મી ત્રિલકુલ ચચલ બન ગઈ થી । (સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા) ઉસ સમય હિસ નૌકા કે કષ્ટ ઔર કૂવર મુસ-ચૂર્ણી ભૂત બન ચુકે થે । (ભગમેઢી) હિસકા અપના સકલ આધાર ભૂત સ્તમ્ભ દટ ચુકા યા । (મોહિયમહસ્તમાલા) સહસ્તસપ્તજનો કા આધાર ભૂત ઉપરિતન ભાગ હિસકા ભગન હો ચુકા યા । (સૂલાઈયવક્રપરિમાસા) શૂલ પર આરોપિત કિયે હુએ કે સમાન હિસકા પરિ-

ડીયા ખાવા માટે છે તેમજ તે નાવ પણ મોળાઓથી અથડાઈને બાંહે કે થાડીને લથડીયા ખાવા ન માડી હોય !

(સોયમાળી ત્રિવ તવચરણલીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવદ્)

તપત્તુ ફળ બેલે લોગવી લીધુ છે અને હવે પતન થવાનો સમય આવવાથી દેવાગના જેમ શોક વ્યાકુળ-ચચળ થઈ બાંધે છે, તે પ્રમાણે જ આ નાવ પણ ચચળ બની ડૂબી હતી (સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા) મોળાઓથી અથડાતા અથડાતા ત્યાં સુધી નાવના કાષ્ટ અને કૂવર-મુખ નાગ પામ્યા હતા (ભગમેઢી) નાવનો આધાર ભૂત સ્તમ્ભ (થાલડો) તૂટી પડ્યો હતો (મોહિયમહસ્તમાલા) હાથરો માણસો નથા આત્રય મેળવી રાંડે તવો નાવનો ઉપરનો ભાગ તૂટી ગયો હતો (સૂલાઈયવક્રપરિમાસા) શૂલ ઉપર મૂડવામા

=काष्ठविशेषो यस्याः सा तथा, 'फलहतरतडतडेतफुट्टतसविगलतलोहकीलिया' फलमान्तरेषु सयोजितफलरुचिरेषु 'तडतडे' ति शब्दः कुर्वन्त्यः, स्फुटन्तो= निघटमाना सन्धयः, अतएव विगलन्त्यो=निससरन्त्यो लोहकीलिका यस्या सा तथा, 'सव्वगवियमिया' सर्वाङ्गं विजृम्भिता=सर्गाङ्गैः=सर्वावयवैः विजृम्भिता= विवृतमुखा जाता या सा तथा, 'परिसडियरज्जू' परिशटितरज्जुः=गलितरज्जु-वती अतएव 'विसरतसव्वगत्ता' विसरत्सर्वगात्रा=विशीर्यमाणसर्वावयवा, आम गमल्लगभूया' आमरुमल्लभूता=अपक्वशरावसदृशा, 'अकयपुण्णजणमणोरहो विव' अकृतपुण्यजनमनोरथ इव, अकृतपुण्यः=हीनपुण्यो यो जनस्तस्य मनोरथ इव 'चित्तिज्जमाणगुरुई' चिन्त्यमानगुरीं चिन्त्यमाना- 'कथमेतामापद तरिप्यामी' ति-विचार्यमाणेव गुरीं=चिन्ताभारणेव गुरुका, 'हाहाकयरुण्णधारणावियवाणिय

मास काष्ठविशेष देहा हो गया था। (फलहतरतडतडेतफुट्टतसविगलतलोहकीलिया) काष्ठके पट्टियोको परस्पर जोड़नेके लिये जो संधियों में लोहेके बड़े कीड़े लगे हुए थे वे सब जब उसकी संधिया-जाड़ विघटित हो गईं तब उनमें बाहर निकल आये थे (सव्वगवियमिया) अतः समस्त इसके जुड़े हुए अवयव खुल गये थे। (परिसडियरज्जू) जितनी भी इस में रस्सिया लगी हुई थी वे सब की सब गल चुकी थीं। (विसरतसव्वगत्ता) इससे समस्त जोड़ खुल गये थे। (आम गमल्लगभूया) यह कच्चे मिट्टी के शरवाके समान हो गई थी। (अकय पुण्ण जणमणोरहो विव) अकृत पुण्य वाले मनुष्य के मनोरथ के समान यह निष्फल बन गई थी। (चित्तिज्जमाण गुरुई) मैं इस आपत्ति को अब कैसे पार करूँगी इस चिन्ता से ही मानो यह बहुत भारी

आवेदानी जेभ परिभास नाभनु काष्ठ विशेष-त्रासु थर्ध गयु डंतु (फल हतर तडतडेत फुट्टत सधि विगल तलोहकीलिया) बाडडाना पाटीयाओने जेक भीजनी साथे तेने साधा भेजववा जे दोण्डना मोटा भीलाओ काममा लेवाय छे ते भधा पाटियाओ न्यारेण्ण । जुदा थर्ध गया त्यादे भडार नीडणी आव्या डता (सव्वग वियमिया) आ भ्रमाणे नावना भधा जेडाओला साधाओ जुदा थर्ध गया डता (परिसडियरज्जू) तेनी भधी दोरीओ कडोवाध थुडी डती (विसरतसव्वगत्ता) तेना भधा साधाओ छग पडी गया डता (आम गमल्लगभूया) ते भाटीना काया कोडियानी जेभ थर्ध जर्ध डती (अकयपुण्ण जण मणोरहाविव) जेध पणु द्विसे जेछे जेकेय पुण्यनु काम कथुं नथी जेवा भायुसना मनोरथनी जेभ ते निष्फण थर्ध जर्ध डती (चित्तिज्जमाण गुरुई) आवी पडेवी आइतने साभने हु ठेवी रीते करीश ? के आ

ગજળક્રમ્મગારવિલવિઆ ' હાહાકૃતર્ણધારનાવિક્રવાણિજનનકર્મકરવિલપિતા
 હાહાકૃતૈ=હાહાકારયુક્તૈઃ કર્ણધારૈ=નિર્ચામકૈઃ, નાવિકૈ=પોતવાહકૈ, વાણિજ-
 જનૈ=વ્યાપારિજનૈઃ, કર્મકરૈ=ભૂતૈઃ વિલપિતા=વિલાપયુક્તા-ર્ણધારાદીના હાહા
 કારેણ વિલાપ કુર્વતીવેત્યર્થઃ 'જાણાવિહરયણપણિયસપુણ્ણા' નાનાત્રિધૈઃ રત્નૈ, પણ્યૈશ્ચ=
 વિક્રમ્યયસ્તુજાતૈઃ સમ્પૂણ્ણા=સમ્પ્રૃતા, વહુભિઃ પુરુષશતૈઃ રુદ્ધિ કુન્દધ્વિઃ શોચદ્ધિઃ,
 'તિપ્પમાણેહિ' તેપમાનૈઃ=અશ્રુણિ મુશ્ચદ્ધિ વિલપદ્ધિઃ,=વિલાપ કુર્વદ્ધિઃ, એક મહત્
 'અતોજલગય' અન્તર્જનગત=જલમધ્યસ્થિત ગિરિશિખરમાસાય=સપટ્ટચ 'સમગ્ગ
 કૂવતોરણા' સમગ્ગકૂવતોરણા-સમગ્ગઃ=ત્રુટિતઃ કૂપઃ=કૂપસ્તમ્ભઃ-યત્ર સિતપટો

યન ઘડી થી (હા હા કયકળધારણા વિવ વાણિયગજળક્રમ્મગાર
 વિલવિયા) હસ મેં જો કર્ણ ધાર, નાવિક, વ્યાપારિજન એવ નૌકર-
 ચાકર વૈઠે હુણ થે વે સવ કે સવ હાહાકાર કરતે હુણ વિલાપ કર રહે
 થે— અતઃ એસાં માલૂમ હોતા થા કિં ઉનકે હાહાકાર વિલાપો સે યહ
 નૌકાં સ્વયં વિલાપ કર રહી હૈં । (જાણા વિહરયણપણિય સપુણ્ણા) અ-
 નેક પ્રકાર કે રત્નો સે ણવ પણ્ય દ્રવ્યોં સે—વિક્રેય્યવસ્તુઓં સે—યહ
 નૌકા ભરી હુઈ થી । (રોયમાણેહિં કદ૦ સોય તિપ્પ૦ વિલવમાણેહિં
 વહુહિં પુરિસણિં એગ મહ અતોજલગય ગિરિસિહરમાસાયડત્તા) રુદન
 કરનેવાલે, આક્રન્દન કરનેવાલે, શોક કરનેવાલે, આશુઓં કો વહાને-
 વાલે એસે સૈકડોં પુરુષોં સે ભરી હુઈ યહ નૌકા એક વડે ભારી જલકે
 ખીતર રહે હુણ ગિરિકે શિખર સે ટકરા ગઈ—ટકરાતે હી (સમગ્ગકૂવ-

ળતની ચિતાથી જ તે નાવ ભારે વજનહાર થા પડી હતી (હા હા કય
 કળધારણા વિવ વાણિયગજળક્રમ્મગારવિલવિયા)

તેમા બેઠેલા કણ્ઠધાર, નાવિક, વેપારીઓ અને બીજા નોકર ચાકરો હાથ,
 હાથ, કરીને વિલાપ કરી રહ્યા હતા એથી એમ લાગતું હતું કે બધે તેઓના
 વિલાપથી જ આ નાવ ચોતે વિલાપ કરતી ન હોય ! (જાણાવિહરયણ પણિય
 સપુણ્ણા) ઘણી ળતના રત્નો અને વેચાણની વસ્તુઓથી આ નાવ પૂરેપૂરી ભરી
 હતી (રોયમાણેહિં કદ૦ સોય૦ તિપ્પ૦ વિલવમાણેહિં વહુહિં પુરિસણિં એગ મહ
 અતોજલગય ગિરિસિહરમાસાયડત્તા)

રડનારા, કરુણ આક્રંદ કરનારા શોકથી પીડાતા, એધાર આશુઓ
 વહેવડાવનારા, વિલાપ કરનારા એવા સેકડાં માણુસોથી ચિક્કાર ભરેલી તે નાવ
 આખરે પાણીની અંદરના જ પર્વત શિખર (ખડક) સાથે અવડાઈ પડી અને
 અથડાતાની સાથે જ (સમગ્ગકૂવતોરણા તેના કૃપન્તરો અને તેા હોા તૂટી

बध्यते सः, तथा तोरणानि च त्रुटितानि यस्याः सा तथा—‘मोडियन्नयदडा’ मोटि तध्वजदण्डा=त्रुटितध्वजकाण्डा, ‘वलयसयसडिया’ वलकशतरण्डिता वलमानां=दीर्घदास्त्रां शतानि खण्डितानि यस्याः सा, ‘करकस्त’ करकरेति शब्दकुर्वाणा तत्रैव समुद्रे ‘विद्व=विलयम् उपगता=माप्ता जले बुद्धितेत्यर्थः’। ततः खलु तस्या नौकाया भियमानाया=त्रुडिताया सत्या उद्व पुरुषा. ‘त्रिउलपणिय’ विपु लपणित=विपुल=प्रचुर पणित=पण्यद्रव्य विक्रय द्रव्यम् यस्मिन् तत् तादृश भाण्ड-मादाय ‘अतोमलसि’ अन्तर्जले=जलमध्ये ‘निमज्जाविय’ निमग्नाः=बुद्धिता अपि चाभूवन् ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएण ते मागदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणसुपराएसु कयक-रणां लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं मह फलगखड आसा-देति, जंसि च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने तसि च णं पदेससि एगे मह रयणदीवे णाम दीवे होत्था अणेगाइ जो-यणाइ आयामविकखभेणं अणेगाइ जोअणाइ परिकखेवेण

तोरणा) इसके कूपस्तम्भ और तोरण मग्न हो गये (मोडियन्नयदडा) ध्वजा दड टूट गया (वलयसयसडिया) षडे २ लवे २ सैकड़ों काष्ठखण्डित हो गये (करकरस्ततयेव विद्व उवगया) और यह कर २ शब्द करती हुई वहीं पर डूब गई। (तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए अतोमलमि णिमज्जाविय होत्था) इस तरह उस नौका के डूब जाने पर अनेक पुरुष प्रचुरपण्य द्रव्यवाले भाण्ड को लेकर जलके बीच में निमग्न हो गये ॥ सूत्र २ ॥

गया (मोडियन्नयदडा) ध्वज 'दड' टूटी गये। (वलयसयसडिया) मोटा मोटा विभाजित लाभा से कंडा काष्ठ टूटी गया। (करकरस्त तयेव विद्व उवगया) अने ते नाव 'कर कर' शब्द करती तथा पाष्ठीमा डूबी गई।

(तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए अतोमलमि णिमज्जाविय होत्था)

आ दीते नाव डूबी जवाथी धष्ठा भावुसे। पुण्ण प्रभावुमा द्रव्येथी सरेसा वासवुसा साथे पाष्ठीमा निमग्न थी गया ॥ सूत्र " २ " ॥

णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४, तस्स णं बहुम-
 उद्देसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेसए होत्था अब्भु-
 ग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४, तत्थणं
 पासायवडेसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति पावा
 चंडा रुद्धा साहासिया, तस्स णं पासायवडिसयस्स चउद्दिसि
 चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मार्गदियदारगा
 तण फलयखडेण उव्वुज्झमाणाः रयणदीव तेणं सबूढा यावि
 होत्था, तएणं ते मार्गदियदारगा थाह लभंति लभित्ता मुहुत्त-
 तर आससंति आससित्ता फलखड विसज्जेति विसज्जित्ता
 रयणदीवे उत्तरति उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसणं करेति
 करित्ता फलाइं गिण्हंति गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालि-
 एराण मग्गणगवेसणं करेति करित्ता नालिएराइं फोडेति फोडित्ता
 नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइ अब्भगेति अब्भगित्ता
 पोक्खरणी ओगाहिति ओगाहित्ता जलमज्जण करेति करित्ता जाव
 पच्चुत्तरति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयसि निसीयति निसीइत्ता
 आसत्था वसित्था सुहासणवरगया चपानयरिं अम्मापिउ
 आपुच्छण च लवणसमुद्देत्तारं च कालियवायसमुत्थण च पोत-
 वहणविवत्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च
 अणुचितेमाणाः ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति, तएण
 सा रयणदीवदेवया ते मार्गदियदारए ओहिणा आभोएइ
 आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालप्पमाण उड्ड वेहास

उप्पयइ२ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी२ जेणेव
 मागदियदारए तेणेव आगच्छइ आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते
 मागदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एवं वयासी-ह भो
 मागदियदारया । अप्पत्थियपत्थया जइ णं तुब्भे मए सद्धिं
 विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअ,
 अहण्ण तुब्भे मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा नो
 विहरह तो भे इमेणं निलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगा-
 सेणं असिणा खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउयाहि
 उवसोहियाइ तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तएणं ते
 मागदियदारगा रयणदीव देवयाए अतिए सोच्चाभीया करयल०
 एव जण्णं देवाणुप्पिया । वइस्ससि तस्स आणाउववायवयण-
 निदेसे चिद्धिस्सामो, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-
 दारए गेण्हति२ जेणेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छइ२
 असुभपोग्गलावहार करेइ२ सुभपोग्गलपक्खेव करेइ करित्ता
 पच्छा तेहि सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति
 कल्लाकल्लि च अमयफलाइं उवणेइ ॥ सू०३ ॥

टीका—ततः खलु तौ मारुन्किदारकौ 'छेपा' छेहो=चतुरौ 'दक्खा'
 दक्षौ=निपुणौ, 'पत्तट्ठा' प्राप्ताथौ=प्राप्त=ज्ञातः अर्थः=मायो याभ्या तौ 'कुसला'

‘तएण ते मागदिय दारगा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते मागदियदारगा) उन दोनों मागदि-
 यदारकों ने कि जो (छेपा, दक्खा, पत्तट्ठा, कुसला, मेहावी, निउणसिप्पो

‘तएण ते मागदियदारगा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार णाह (ते मागदियदारगा) तेओ ण ने मागदिय
 दारकोओ-डे ओओ

कुशलौ=सफलकलाविहौ 'मेधावी' मेधाविनौ=सुधियो णिउणसिण्णोवगया 'निपुणशिल्पोपगता=तरणादिविधानिपुणौ बहुषु=अनेकेषु 'पोयवहणसपरायेषु' पोतवहनसपरायेषु = पोतवहनस्य=नौकातरणस्य सपरायेषु = विघ्नेषु समुपस्थितेषु 'कयकरणा' कृतकरणौ=कृतकार्यौ बहुशोऽनुभूतसतरणकार्यौ, 'लद्धविजया' लब्धविजयौ=समुद्रपारगमनेन प्राप्तविजयौ 'अमूढा' अमूढौ=तरणादिक्रिया विवेकसम्पन्नौ 'अमूढहत्या' अमूढहस्तौ=तरणक्रियाकुशलहस्तौ एकमहत् फलसखण्डकाष्ठमयम् 'आमादेति' आसादयत = आलम्बितयन्तौ० । यस्मिंश्च खलु प्रदेशे तत् पोतवहन=प्रवहण 'विवन्ने' विपन्न=भग्न तस्मिंश्च खलु तस्मिन्नेव प्रदेशे एको महान् रत्नद्वीपो नाम द्वीपः 'होत्या' आसीत्, स कीदृशः ? इत्याह-

वगया, बहुषु पोतवहणसपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा, अमूढहत्या एग मह फलगखण्ड आसादेति) बडे चतुर थे, दक्ष थे, भावों को जानने वाले थे, सकल कलाओं के ज्ञाता थे, मेधावी थे, तरणादि विद्या में विशिष्ट योग्यता सन्ने थे, पोत संचालन में उपस्थित हुए बिना को पार करने वाले थे, अर्थात् ऐसी स्थितिमें जिन्होंने सस्तरण कार्य अनेक बार अभ्यस्त कर रखा था, समुद्रपार करने में जिन्हे विजय मिली थी, तरणादि क्रिया का विवेक जिन्हें बहुत अच्छी तरह था, जिनके हाथ तैरने में कभी रुकने नहीं थे-जो तरण क्रिया में बडे कुशल थे, एक बडे भारी काष्ठफलक खण्ड को प्राप्त कर लिया । (जमि च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने तस्मिंश्च ण पदेससि एगे मह रयणदीवेणाम दीवे होत्या, अणेगाइ जीअणानि आयामविक्खभेण अणेगाइ जीअ-

(ठेया, दक्खा पत्तट्ठा, कुसला मेधावी निउण सिण्णोवगया बहुषु पोतवहण सपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा अमूढहत्या एग मह फलग खण्डआमादेति

गुण न चतुर होता दक्ष होता, लावेने लब्धनारा होता, गंधी उणाओमा निपुण होता, मेधावी होता तरवा वगेरेनी उणाओमा निपुण होता, पोत संचालनमा वन्ने आवी पडेला विघ्ने हरदरी शकवानी शक्ति धरावता होता अट्टे उ ओवी परिस्थितिमा पणु डिमत्त न डारतागमे ते रीते तगीने पणु समुद्र पार करवामा शक्तिराणी होता तरवानी डियामा ओओ विशेष कुशल होता, तरती वपने पणु वेमना हाथे डोर् पणु स्थितिमा थाकता न नडि तरवामा ओओ गुण न कुशल होता-ओक मोटा लाकडाना पाटियाने पडती लीधु

(जमि च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने तस्मिंश्च ण पदेससि एगेमह रयणदीवेणाम दीवे होत्या, अणेगाइ जीअणाइ परिकखेवेण णाणा दुमसडमडि-उदेसे सस्तिरीए पासाइए ४)

'अणेगाइ' इत्यादि-अनेकानि योजनानि आयामप्रिक्कम्भेण=दैर्घ्यपरिणाहेन, अनेकानि योजनानि परिक्षेपेण=परिधिना, नानाद्रुमपण्डमण्डितोद्देश=अनेकवन पण्डमण्डितप्रदेश' सथीक=शोभासम्पन्न', प्रासादीय?—मनः प्रसन्नता हेतुतात्, दर्शनीय=नेत्राहादकत्वात्, अभिरूपः=अपूर्वसौन्दर्यस्त्वात्, प्रतिरूपः=प्रशस्नाकृति-कत्वात्० । तस्य खलु द्वीपस्य बहुमध्यदेशभागे=मध्यस्थले तत्र खलु एको महान् प्रासादावतसकः श्रेष्ठप्रासादो आसीत्० । स कीदृशः ? इत्याह—'अब्भुगय' इत्यादि—'अब्भुगय' अभ्युद्गतः=विशाल 'ऊसियण' उच्चैःतरुः=गगनतलस्पर्शी यावत् सथीकः=सुरूप=शोभनाकारः प्रासादीयः ४ । तत्र खलु प्रासादावतसके रत्न द्वीपदेवता नाम देवता 'रयणादेवी' इति प्रसिद्धा देवी परिवसति=निवास

णाइ परिवखेवेण णाणाडुमसडमंडिउद्देशे सस्सिरीण पासाइए ४) जिस प्रदेश में वह पोतवहन भग्न हुआ था, उसी प्रदेश में एक बड़ा भारी रत्नद्वीप नाम का द्वीप था । इसका आयाम और विष्कम्भ अनेक योजन का था । परिधि भी इसकी अनेक योजन की थी । नाना प्रकार के वृक्षों के समूह से इस का भीतरी बाहिरी प्रदेश हरा भरा बना हुआ था । यह द्वीप बहुत ही शोभासम्पन्न था । मन को प्रसन्न करनेवाला था । दर्शनीय था । तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त था । एवं आकृति में भी यह बड़ा अनिराम था । (तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण एगे मह पासा यवडेसए होत्था—अब्भुगयमूसियण जाव सस्सिरीण सुरूवे पासाईए ४) इस द्वीप के ठीक मध्य भाग में एक विशाल श्रेष्ठ प्रासाद था । यह बहुत अधिक ऊँचा था । अपनी ऊँचाई से यह आकाश तक को स्पर्श करता था । बहुत सुन्दर था । दर्शनीय आदि विशेषणों वाला था । (तत्थ ण

नाए जया इणी इती तेनी आसपासना प्रदेशमा ओक बहु मोटो रत्नद्वीप नामे द्वीपइते । आ द्वीपने आयाम अने विष्कम्भ घण्टा योजनो सुधी विस्तार पावेइते । आ द्वीपनी परिधि पण्ड घण्टा योजनो सुधीनी इती घण्टी गतना वृक्षाना समूहोथी ते द्वीपने अदर अने गडारने लाग लीइते छम देखाते । ते द्वीप भूण ४ सु २ इते । मनोहर इते, मनने प्रसन्न करे तेवे इते, दर्शनीय इते । अपूर्व सौन्दर्योथी ते युक्त इते । तेमज आकारमा पण्ड ते अत्यंत सुंदर इते ।

(तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण एगे मह पासायवडेसए होत्था—अब्भुगय मूसियण जाव सस्सिरीण सुरूवे पासाईए ४)

ते द्वीपनी वस्त्रे ओक विराण उत्तम भडेइ इते । ते भूण ४ लीया इते । पोतानी लीयाथी ते आकारने पण्ड स्पर्शते । ते भूण ४ सुंदर इते । दर्शनीय वगेरे विशेषताओथी युक्त इते ।

करोति । सा हीट्ठी ? इत्याह—‘ पाया ’ इत्यादि—‘ पाया ’ पापा=पापकर्मकर्त्री
स चण्डा=अत्यन्त लोपशीला, रौद्रा=हिंसादिकूरकर्मकारिणी, साहसिका=अविचार्य
कारिणी । तस्य खलु प्रामादायतमकस्य चतुर्दिशु चत्वारो वनपण्डा आसन्, ते
कीटगाः ? इत्याह—‘ किण्हा ’ इत्यादि—कृष्णा =नूतनमेखर्णाः, कृष्णावभासाः=
अतिहरितत्वेनायभासमानकृष्णकान्तय, इत्यादि । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ
तेन फट्फट्ठेन ‘ उव्वुज्झमाणा २ ’ उद्ध्वमानो २ उपरिजले गहन्तो २ तरन्तो २,
रत्नद्वीपान्ते खलु=रत्नद्वीपमीपे ‘ समुदा ’ सम्यूढो=समागतौ चाप्यास्ताम् ।

ततः खलु तत्र तौ माकन्दिदारकौ ‘ याह ’ रताय=समुद्रतलभूमेते=पादाभ्या
स्पृष्टवन्तौ लब्ध्वा मुहूर्तान्तरम्=अन्तर्मुहूर्तम् आव्रस्तः=विश्राम कुरुतः, आश्वस्य

पासायवडैसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पावा, चडा
रुदा, साहसिया तस्स ण पासायवडिसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसडा
किण्हा, किण्हाभासा, तएण ते नागदियदारगा तेण फलयाखडेण उव्वु
ज्झमाणा २ रयणदीवनेणं सबूढा यात्रि होत्था) उस श्रेष्ठ प्रासाद में
रत्न द्वीप देवना नाम की एक देवी कि जिम् का प्रसिद्धनाम ‘ रत्नदेवी ’
“ ऐसा या ” रहती थी ॥

यह अत्यन्त पापकर्म करती थी, सदा गुस्से में भरी रहती थी, हिं-
सादिकूरकर्म करने में बड़ी निपुणमति थी—जो मन में आता वही कर
डालती थी । उस श्रेष्ठ प्रासाद की चारों दिशाओं में चार वनखण्ड थे ।
वे नवीन मघ के वर्ण समान काले थे और सदा हरे भरे रहने के कार-
ण उनकी कांति भी काली ही निकलती थी । ये दोनों माकन्दि दारक
उस फलक खड की सहायता से जल पर-तैरते हुए—उम रत्नद्वीप के

(तत्थण पासायवडैसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पावा
चडा रुदा साहसिया तस्सण पासायवडिसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसडा, किण्हा
किण्हाभासा, तएण ते नागदियदारगा तेण फलयाखडेण उव्वुज्झमाणा २
रयणदीव तेण समुदा यात्रि होत्था)

ते श्रेष्ठ भडेलभा रत्नद्वीप देवता न भनी जेक देवी—जे जे ‘ रयणा देवी ’
नामे प्रसिद्धि पावेली હતી—રહેતી હતી હમેશા તે ગુસ્સામાં જ રહેતી હતી
તે હિંમા વગેરે કૂર કર્મો કરવામાં ખૂબ જ ચતુર હતી તે ઇચ્છા મુજબ
આચરણ કરતી હતી તે ઉત્તમ ભડેલની આદેશિઓ તરફ આર વનખડે
હતા તેઓ નવા વાદળના રંગના જેવા શ્યામ હતા અને હમેશા લીલા છમ
રહેવા બદલ તેમની કાંતિ પણ શ્યામ રંગની જ હતી અને માકંદી દારકો
લાકડા ઉપર તરતા તરતા રત્ન દ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યા હતા

परस्परस्य ' गत्ताड ' गात्राणि=अङ्गोपाङ्गानि अभ्यञ्जयतः=मर्दयतः, तदनु पुष्करिणी=गर्पी अवगाहेते=अतः प्रविशत, अवगाह्य जलमञ्जन=स्नान कुरुन', कृत्वा यावत् प्रत्युत्तरतः=गर्पीतो वहिर्निस्सृतौ, प्रत्युत्तीर्य=वहिर्निस्सृत्य पृथिवीशिलापट्टे निपीदतः=उपविष्टौ, निषद्य ' आसत्या ' आस्वस्थौ=ईपत्स्वस्थौ ' वीसत्या ' विस्वस्थो रमणीयनिर्मयस्थान मत्वा विशेषेण विश्राम प्राप्तौ सुखासनवरगतो=सुखदासने समुपविष्टो सन्तौ चम्पानगरीम्, अम्बापित्रा पृच्छन्तम्=समुद्रोत्तरणविषये तन्निषेधेऽपि द्वित्रिवार तदाज्ञायाचनच, लग्नसमुद्रोत्तार च, कालिकावातसमुत्थान

की-तलश करने पर वे भी उन्हें मिल गये । मिलते ही उन्होंने उन्हें फोडा-फोड कर उनमेंसे तेल निकाला-तेलनिकाल कर परस्पर में उन्होंने एक दूसरेके शरीर पर उससे मर्दन कीया-मर्दन करनेके बाद फिरवे पुष्करिणी में प्रविष्ट हुए-प्रविष्ट होकर उसमें उन्होंने ने स्नान किया स्नान करके फिर वे उससे ऊपर आये । ऊपर आकर पृथिवी शिलापट्टक पर बैठ गये । बैठकर वे वहाँ अश्वस्त बने । बाद में (सुहासणवरगया) सुखद आसन से बैठ कर उन दोनों ने (चपानयर्षि अम्मापिउ आपुच्छण लग्नसमुद्रोत्तारण च कालियवायसमुत्थर्ण च पोत वहणविवत्तिच फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचिते माणा २ ओहयमणसकप्पा जाव क्षियायेति) चपानगरी का माता पिता से पूछने का-लग्न समुद्र कि यात्रा करने के विषय में पूछने पर और उनके निषेध करने पर पुनः दुबारा तियारा उनसे आज्ञा प्राप्त करने का-लग्न समुद्र में उतरने का कालिका वायु के उत्थान का पोतके डूब जानेका फलक खड की प्राप्ति

तेल काढीने भूमि सरस रीते એક ખીખના શરીરે તેલ યોગવા લાગ્યા બરોબર તેલની માલિશ કરીને તેઓ પુષ્કરિણીમાં ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ સ્નાન કર્યું સ્નાન કરીને તેઓ બહાર આવ્યા અને એક શિલા ઉપર બેસી ગયા ત્યાં બેસીને તેઓ આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત બન્યા અને ત્યાર પછી (સુહાસણ વર ગયા) સુખાસન પૂર્વક બેઠીને તેઓ બને

(ચપાનયર્ષિ અમ્માપિઉઆપચ્છણ લગ્નસમુદ્રોત્તારણ ચ કાલિય વાય સમુત્થળ ચ પોતવહણવિવત્તિ ચ ફલયખડસ્સ આસાયણ ચ રયણદીવુત્તાર ચ અણુચિતેમાણા ૨ ઓહયમણસકપ્પા જાવ ક્ષિયાયેતિ

અ પા નગરીને, લવણ સમુદ્રની યાત્રા કરવા માટે માતાપિતાએ એકબી ના કહેવા છતાં બે ત્રણ વખત તેની તેજ વાત તેમની સામે મૂકીને આજ્ઞા મેળવવાનો, લવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરવાનો, અકાળે વાવાઝોડાથી નાવ ફૂળી

ચ, પોતવહનવિપત્તિચ, ફલકમ્બળસ્યાડ્ઽપાદન=સ્વીકરણચ, રત્નદ્વીપોત્તારચ 'અણુ
ચિત્તેમાગા' અનુચિન્તયન્તૌ=પુનઃ પુનઃ સ્મરન્તૌ 'ઓઢયમણસરૂપા' અપદ્મતમનઃ
સમ્ભવૌ=આર્ત-ધ્યાનસમ્પન્નો યાત્ 'શિયાણતિ' ધ્યાયત=પૂર્ણત્તાન્ત સ્મૃતવન્તૌ।
તત' સ્વલ્પ તસ્મિન્ સમયે સા રત્નદ્વીપદેવતા તૌ માગદિદારકૌ 'ઓહિણા'
અવધિના=અવધિજ્ઞાનેન 'આમોણ્' આમોગયતિ=પ્રશ્યતિ, આમોગયિતા=દૃષ્ટ્વા
'અસિફલગવગ્ગદત્થા' અસિફલગ્વ્યગ્ગદસ્તા=અસિના=તીક્ષ્ણસન્નેન ફલકેન='ઢાલ'
ઇતિ પ્રસિદ્ધેન વ્યગ્રો = ચન્ચલૌ ઇસ્તૌ યસ્યાઃ સા તથા, સત્તટ્ટનાલપ્પમાણ'
સપ્પાટ્ટનાલપ્પમાણ, સપ્પાટ્ટતાટ્ટક્ષપરિમિનમ્, 'ઉઢ્ડુ' ઝર્મ્મ=ઝર્મ્મમાગ 'વેહાસં'
વૈહાયસ=ગગનસમ્પન્નિરુમ્-અત્થુ ચૈરાકાશે 'ઉપ્પયહ્' ઉત્પત્તિ, =ઉચ્છલતિ, ઉત્પત્ય
તથા=પ્રમિદ્ધયા ઉત્ક્રુષ્ટયા યાવદ્ દેવગત્યા 'વીશ્વયમાણી' વ્યત્તિવ્રજન્તી ૨ =

કા ઓર ઉસકે સહારે સે રત્ન દ્વીપમે આકર ઉતર જાનેકા વાર-વિચાર-સ્મરણ કિયા। સ્મરણ કરતે ૨ અપને મનોરથ કી પૂર્તિ ન હોનેકે કારણ વે દોનો આર્ત ધ્યાન મે પડ ગયે। (તણ સા રચણદ્વીવદેવયા તે માગદિદારણ ઓહિણા આમોણ્, આમોહિતા અસિફલગવગ્ગદત્થા સત્તટ્ટનાલપ્પમાણ ઉઢ્ડુ વેહાસ ઉપ્પયહ્ ૨ તાહે ઉત્ક્રિદ્દાણ જાવ દેવ ગઈં વીશ્વયમાણી ૨ જેણેવ માગદિયદારણ તેણેવ આગચ્છહ, આગ ચિહ્વિતા આસુરુત્તા તે માગદિયદારણ સ્વરફરુસનિદુરવચ્ચેહિં એવ વયાસી) ઇતને મે ઉસ રત્નદ્વીપની દેવી ને ઉન દોનો માગદિદારકોં કો અપને અવધિજ્ઞાન સે દેશા-દેવ કર વહ તલવાર ઓર ઢાલ કો હાથો મેં લેકર આકાશ મે સાત આઠ તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઉપર તક ઉછલી ઉઝલ કર ફિર વહ ઉસ ઉત્ક્રુષ્ટ દેવ સવધિ ગતિ સે શીઘ્રતા પૂર્વક ચલની ૨

જવાનો, લાકડું મેળવીને તેની સહાયથી તરતા તરતા રત્નદ્વીપમા આવીને ઉત્તરના મુખીને વારવાર તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા આ બધી ઘટનાઓનું તેઓ સ્મરણ કરવા લાગ્યા આમ સ્મરણ કરતા કરતા જ્યારે પોતાના મનોરથો સફળ થતા ન જોયા ત્યારે તેઓ આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયા

(તણ સા રચણદ્વીવદેવયા તે માગદિદારણ ઓહિણા અમોણ્ હ, અમોહિતા અસિફલગવગ્ગદત્થા સત્તટ્ટનાલપ્પમાણ ઉઢ્ડુ વેહાસ ઉપ્પયહ્ ૨ તાહે ઉત્ક્રિદ્દાણ જાવ દેવગઈં વીશ્વયમાણી ૨ જેણેવ માગદિયદારણ તેણેવ આગચ્છહ, આગ ચિહ્વિતા આસુરુત્તા તે માગદિયદારણ સ્વરફરુસ નિદુરવચ્ચેહિં એવ વયાસી)

એટલામા તે રત્ન દ્વીપની દેવીએ તે બને માકડી દારકોને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધા અને જોઈને તે તરવાર અને ઢાલ હાથમા લઇને આકાશમા સાત આઠ તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઉપર ઉછળી અને ત્યારબાદ તે

શીઘ્રમભિગચ્છન્તી યત્રૈવ માકન્દિકદારકૌ તત્રત્રોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'આસુ
રતા' આશુરતા=શીઘ્ર ક્રુદ્ધા સતી તૌ માકન્દિકદારકૌ સ્વરધરપાનિરુદ્ધચ્ચનૈ =
કર્કશકઠોરરુદ્ધવચનૈરેયમવાદીન્- 'હમો' इति सगर्वमामन्त्रणम्, હમો માકન્દિક
દારકૌ । યુગમ્ 'અપત્થિયપત્થિયા' અપ્રાર્થિયપ્રાર્થકૌ=મરણગાઝકૌ રતા, યદિ
સ્વલુ યુવા મયા માદ્વં વિપુલાન્ ભોગભોગાન્-શબ્દાદિવિષયાન્ ભૂજાનાૌ વિહરત
'તો' તદા 'મે' યુવયોરુભયોરસ્તિ જીવિતમ્, અથ સ્વલુ યુવા મયા સાર્દ્ધ
વિપુલાન્ ભોગભોગાન્ ભુજાનાૌ નો વિહરન્ત 'તો' તદા 'મે' યુવયોર્દ્વયોરપિ
અનેન 'નીલુપ્પલગવલગુલિય-અયસિકુસુમપ્પગાસેણ' નીલોત્પલગવલગુલિકાઽ
તસીકુસુમપ્રાણેન-નીલોત્પલ=નીલકમલ, ગવલ=મહિપશૃંગ, ગુલિકા=નીલી
'ગુલી' इति प्रसिद्धा, અતસીકુસુમમ્ - 'અલસી' इति प्रसिद्ध धान्यवि

જહાં વે દોનો મરુદી સાર્યવાહ કે દારક થે વહા આઈ વર્હા આકર વહ
ક્રોધ સે ક્રોધિત હુઈં ઓરેં ઉન માકદીદારકોં સે કર્કશ-કઠોર એવ
રુદ્ધ વચન બોલતી હુઈં હસ પ્રકાર કહને લગી-(હ મો માગદિદારયા !
અપત્થિય પત્થિયા જર્ઘ્ણ તુભે મણ સર્દિં વિઝલાઈ ભોગભોગાઈ ભુજ
માણા નો વિહરહ તો મેં હમેણ નીલુપ્પલગવલગુલિય અયસિયકુસુમ
પ્પગાસેણ અસિણાં સુરધારેણ અસિણા રત્તગઢમસુયાઈ માઝ્યાઈ
ઉવસોહિયાઈ તાલ ફલાણીવસી સાઈ એગતે એહેમિ) અરે ઓ માગદી
કે દારકો ! માલૂમ પડતા હૈં કે તૂમ દોનો અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ-કે પ્રાર્થક-
ધાઠ્ઠક બન રહે હો- । યદિ તુમ લોગ મેરે સાથ વિપુલ શબ્દાદિ વિષયોં
કો ભોગો તવ હી તુમ દોનોં કા જીવન સુરક્ષિત બચ સકતા હૈં યદિ
મેરે સાથ વિપુલ શબ્દાદિ વિષયોકો નહીં ભોગ સકતે હો તો દેહો-નીલ

ઉત્કૃષ્ટ દેવની ગતિથી અડપથી ચાલતી ચાલતી ન્યા તેઓ બને માકદી
સાથવાહના પુત્રો હતા ત્યા આવી પહોચી અને કર્કશ-કઠોર તેમજ રુદ્ધ
વચનોનો પ્રયોગ કરતી માકદી દારકોને આ પ્રમાણે ડહેવા લાગી કે—

(હ મો માગદિદારયા ! અપત્થિયપત્થિયા જર્ઘ્ણ તુભે મણ સર્દિં વિઝલાઈ
ભોગભોગાઈ ભુજમાણા નો વિહરહ તો મેં હમેણ નીલુપ્પલગવલગુલિય અયસિય
કુસુમપ્પગાસેણ અસિણાં સુરધારેણ અસિણા રત્તગઢ મસુયાઈ માઝ્યાઈ ઉવસોહિ
યાઈ તાલ ફલાણીવ સીસાઈ એગતે એહેમિ)

અરે ઓ માકદી દારકો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત મૃત્યુને
ઈચ્છી રહ્યા છો. હવે ને તમે મારી સાથે રહીને પુણ્ય પ્રમાણુમા ચાળદાદિ
વિષયોને ભોગવવા માટે તૈયાર થાઓ તો જ તમારું જીવન બચી શકે તેમ
છે, ને તમે મારી સાથે શબ્દ વગેરે વિષયોને ભોગવવા અસમર્થ છો તે.

શેષપુર્ણ, તદ્વત્ પ્રકાશઃ=અતિશયમયગ્નોં यस્ય સ તથા, તેન 'સુરધારેણ' ક્ષુર
ધારેણ ક્ષુરવત્તીક્ષ્ણધારેણ 'અસિના' અસિના=લઢ્ઢેન 'રક્તગઢમસુયાઈ' રક્તગઢ-
શ્મશ્રુકે રક્તો=તરુણાવસ્થત્વેન લાલિમાયુક્તૌ ગઢૌ=કયોલૌ, શ્યામાનિ શ્મશ્રુણિ ચ
અયોસ્તે, 'માડયાઈ' માતૃકામ્યા=સ્વસ્વ માતૃમ્યા 'ઉપમોહિયાઈ' ઉપશોભિતે
શ્રૃંગારાર્થસમારચિતકેશવેશત્વાદપૂર્વશોભાસમ્પન્ને 'સીસાઈ' શીર્ષે=ઉપયોર્મસ્તકૌ
'તાલફલાળીય' તાડફલેઽવ ઊત્ત્વા એકાન્તે 'એઢેમિ' પ્રક્ષિપાપિ । તતઃ સ્વલુ-
તૌ માકન્દિરુદારકૌ રત્નદ્વીપદેવતયા અન્તિકે એતદ્વચન શ્રુત્યા ભીર્તૌ કરતલપરિ

કમલ, મહિપ શ્રૃંગ, નીલી, અલમી પુષ્પ કે સમાન અતિશય શ્યામ
વર્ણ ચાલી હસ તલવાર સે કિ જો છુરા કી ધાર કે સમાન તીક્ષ્ણ ધાર
ચાલી હૈ તુમ દોનોં કે મસ્તકોં કો કિ જો તરુણાઈ સે લાલ હુએ કયોલોં
સે યુક્ત હૈં, તથા અપની ૨ જનનિયોં-માતાઓં-દ્વારા જિન પર શોભા
નિમિત્ત સમારચિત કેશવેશ સે અપૂર્વ સૌંદર્ય ચાલા હૈ, તાડ ફલ કે
સમાન કાટકર એકાન્ત સ્થાન મેં ફેકડૂગી (તણ તે માગદિય દારગા
રયણદીવ દેવચાએ અતિએ સોચ્ચા મીચા કરચલ ॥ એવ જણ દેવાણુ
પિપ્યા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવચાયવયણનિદેસે ચિદ્વિસ્સામો-ત-
ણ સા રયણદીવદેવચા તે માગદિયદારાએ ગેળહતિ, ૨ જેણેવ પાસાયવ
ડિંસાએ તેણેવ ઉચાગચ્છહ ૨ અસુખ પોગ્ગલાવહાર કરેહ ૨ સુખપોગ્ગલ
પવલેવ કરેહ કરિત્તા પચ્છાએહિં વિડલાહ મોગ મોગાહ મુજમાણિ વિહરહ
કલ્લાકલ્લિં ચ અમય ફલાહ ઉવણેહ) હસ પ્રકાર વે દોનોં માકદો દારક

જુઓ નીલકમળ, મહિપશ્રંગ, નીલી અળશીના પુષ્પની જેમ ખૂબજ શ્યામ
રંગવાળી આ તરવારથી-કે જે છરાની ધારના જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી છે-તમારા
ખનેના માથાઓ કે જેઓ જવાનીથી લાલ લાલ થયેલા કપોલોવાળા છે,
કાળી દાદી અને મૂછોથી શોભી રહ્યા છે તેમજ પોતપોતાની માતાઓ વડે
કેશ વિન્યાસ કરવાથી અપૂર્વ સૌંદર્યથી જેઓ દીપ્તી રહ્યા છે તાડફળની જેમ
કાપીને હુ નિર્જન સ્થાન ફેંકી દઈશ

(તણ તે માગદિયદારગા રયણદીવદેવચાએ અતિએ સોચ્ચા મીચા કરચલ,
એવ જણ દેવાણુપિપ્યા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવચાયવયણનિદેસે ચિદ્વિસ્સામો
તણ સા રયણદીવદેવચા તે માગદિયદારાએ ગેળહતિ ૨ જેણેવ પાસાયવડિંસાએ
તેણેવ ઉચાગચ્છહ ૨ અસુખપોગ્ગલાવહાર કરેહ ૨ સુખપોગ્ગલપવલેવ કરેહ
કરિત્તા પચ્છાએહિં વિડલાહ મોગ મોગાહ મુજમાણિ વિહરહ કલ્લાકલ્લિં ચ
અમયફલાહ ઉવણેહ)

गृहीत शिरःपार्श्वं दशनस्य मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-एव च य खलु
कञ्चित्प्रेमयाणामपि प्रेष्य हे देवानुप्रिये । त्वमस्मदर्थं वदिष्यसि यदुत ' युवयोस्य
मारा ' इति, तदा ' तस्स ' तस्यापि ' आणाउवयायवयणनिदेसे ' आज्ञोपपा-
तवचननिर्देशे-आज्ञा=विधेयतयाऽऽदेशः, उपपातः=सेवा, वचनम्=अनियत आदेश-
एव निर्देशः=नियतार्थमुत्तरम्, एतेषा समाहारः, तत्र स्थास्याय=उपस्थास्यावः
किं पुनर्भवत्याः ? तदनुमत्या तव दामानुदासस्यापि दासत्व स्वीकरिष्याव इति
भावः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारहो गह्वाति, गृहीत्या
यत्रैव स्वस्य मासादावतसरुः=प्रधानवासमवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तयोः
शरीरे अशुभपुद्गलापहार करोति, कृत्वा शुभ पुद्गलमक्षेप करोति कृत्वा पश्चात् ताभ्यां

रयण देवी (रत्नद्वीपदेवी) के चचन सुनकर भयभीत हो गये । पश्चात्
उन्हो ने दोनों होयोंकी अजलि बनाकर और उसे अपने मस्तक पर रख-
कर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । आपका यदि कोई नौकर का भी
नौकर होगा और आप उसकी सेवा करनेके लिये भी हमसे कहेंगी-तो
हम उसकी भी आज्ञा सेवा, आदेश और निर्देश करने के लिये कटि-
पट्ट हैं-तो फिर आपकी सेवा करने आदि की तो बात ही क्या है ।

आपकी आज्ञा से तो हम आपके दासों के भी दामो की दासता
स्वीकार करने के लिये तैयार हैं । तो फिर आपकी दासता के लिये तो
कहना ही क्या है । इस प्रकार माकदी-दारको की बात सुनकर उस
रयणादेवी (रत्न द्वीप देवी) ने उन्हें अपने साथ लिया और लेकर वह
अपने श्रेष्ठ शास्ता में आ गई । वहां आकर उसने उन दोनों के शरीर
में से अशुभ पुद्गलों को दूर किया और शुभ पुद्गलों को डाल दिया ।

रयणादेवीना वचनो साधुजीने जने भाकदी दारको लयलीत थर्छ गया
तेयो जनेये छायोनी अजली जनावी अने तेने मस्तके मूझीने आ प्रभाछे
कछु ठे छे देवानुप्रिये । तमारा नोकर मे पछु कोर नोकर छाय अने तमे
अमने तेनी नोकरी पछु करावशे तो अमे तेनी पछु आज्ञा, आदेश अने
हुकम प्रभाछे अनुसरवा तैयार छीये तो तमारी सेवानी बात न रही कडेवी ?

तमारा हुकमथी तो अमे तमारा दासोना दासोनी दासता स्वीकारवा
तैयार छीये तो तमारी दासता भाटे छेवे अमारे कडेवानुज शु रडे ? आ
प्रभाछे माकदी दारकोनी बात साधुजाने रयणा देवी (रत्न द्वीप देवी) छे
तेयोने पोतानी भावे लीधा अने लधने ते पोताना अेक सौथी आग भडेवमा
गर्छ त्या अधने तेछे तेमना शरीरभाथी अशुभ पुद्गलो दूर कर्या अने शुभ

સાર્દ વિપુલાન્=ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ શુજાના વિહરતિ=આસ્તેસ્મ,
'કલ્લાકલ્લિચ' કલ્યાકલ્પિય=પ્રતિદિનં ચ અમૃતફલાનિ=અમૃતતુલ્યફળાનિ 'ઉવ-
ળેઈ' ઉપનયતિ=આનીય દદાતિ, તૌ ચ પ્રતિદિન તાનિ ફલાનિ શુજાનો તયા
સાર્ધ કામભોગાન્ સેવમાનો વિષ્ટતઃ ઇતિમાયઃ ॥ સૂ.૩ ॥

મૂલ્-તણ્ સા રયણદીવદેવયા સક્કવયણસંદેસણં સુટ્ઠિ-
-ણં લવણાહિવઙ્ગણા લવણસમુદ્દે તિસત્તલુત્તો અણપરિયટ્ઠિય-
વ્વેત્તિ જં કિંચિ તત્થ તણં વા પત્ત વા કટ્ઠં વા કયવર વા
અસુઙ્ગં પૂતિય દુરભિગંધમચોક્ખં તં સવ્વં આહુણિયર તિસત્ત-
લુત્તો એગતે એડેયવ્વંતિકટ્ઠુણિઉત્તા, તણ સા રયણદીવદેવયા
તે માગંદિયદારણ્ણ એવં વયાસી-એવં સલ્લ અહ દેવાણપ્પિયા ।
સક્કં સુટ્ઠિણં ત ચેવ જાવ ણિઉત્તા, તં જાવ અહ દેવાં ।
લવણસમુદ્દે જાવ એડેમિ તાવ તુભ્ભે ઇહેવ પાસાયવડિંસણ સુહ-
સુહેણ અભિરમમાણા ચિટ્ઠહ, જઈ ણં તુભ્ભે ઇયસિ અંતરંસિ
ઉવ્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા ભવેજ્ઞાહ તો ણં તુભ્ભે
પુરચ્છિમિહ્લ વણસડ ગચ્છેજ્ઞાહ, તત્થણ દોઁઁ સયા સાહીણા
ત જહા-પાઉસેય વાસારત્તેય,-(ગાહા)તત્થ ઉ કદલસિલિધદંતો
ણિરવરપુપ્ફપીવરકરો । કુડયજ્જુણાવિસુરભિદાણો પાઉસઉ-

પશ્ચાત્ ઉન દોનો કે સાથ વિપુલ ભોગ ભોગો-શબ્દાદિ વિષયોં કો
-ભોગને લગી । પ્રતિદિન વહ ઉન્હેં અમૃત ફલોં કો લાકર દેતી ઔર
વે દોનોં ઉન્હેં ળાતે । હસ પ્રકાર વે દોનોં સાર્થવાહ દારક ઉસકે સાથ
વહા કામભોગોં કો ભોગતે હુણ રહને લગે । “સૂ.૩”

પુદ્ગલોને મૂકી દીધા ત્યાર પછી રયણા દેવી તેઓ બનેની સાથે વિપુલ કામ
ભોગો શબ્દ વગેરે વિષયોને ઉપભોગ કરતી રહેવા લાગી હ મેશા તે તેઓ
બનેને અમૃત રૂણો લાવીને આપતી અને તેઓ પશુ રૂણો ખાતા આ રીતે
બને સાથેવાહ પુત્રો તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવતા રહેવા લા

ऊगयवरो साहिणो ॥१॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो ददुदुर
कुलरसियउज्जररवो । वरहिणविदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो
उऊपव्वतो साहिणो ॥२॥ तत्थणं तुव्वे देवाणुप्पिया । बहुसु
वावीसु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आलीघरएसु य माली-
घरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुह सुहेणं अभिरममाणा
विहरेज्जाह, जइणं तुव्वे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा
उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुव्वे उत्तरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह,
तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ
सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिगो । सारसचक्क-
वायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥१॥ तत्थ य सिय-
कुदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसडमडलतलो । तुसारदग-
धारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणा ॥ २ ॥ तत्थणं
तुव्वे देवाणुप्पिया । वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जइणं तुव्वे
तत्थवि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुव्वे
अवरिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा
वसते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकणिण-
यारासोगमउडो । ऊसित्तिलगवउलायवत्तो वसतउऊणरवती
साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मालियावासति-
यधवलवेलो । सीयिलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसा-
गरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जइ णं
तुव्वे देवा० । तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुव्वे
जेणेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पाडिवालेमा-

सार्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना विहरति=आस्तेस्म,
 'कल्लाकल्लिव' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उव-
 णेइ' उपनयति=आनीय ददाति, तौ च प्रतिदिन तानि फलानि भुञ्जानौ तथा
 सार्धं कामभोगान् सेवमानौ तिष्ठतः इतिभारः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसदेसणं सुट्ठि-
 एणं लवणाहिबइणा लवणसमुद्वे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय-
 व्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्त वा कट्ठं वा कयवर वा
 असुइं पूतियं दुरभिगंधमच्चोक्खं त सव्वं आहुणियर तिसत्त-
 खुत्तो एगते एडेयव्वंतिकट्ठुणिउत्ता, तएणं सा रयणदीवदेवया
 ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खल्लु अहं देवाणुप्पिया !
 सक्क० सुट्ठिएणं त चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अह देवा० !
 लवणसमुद्वे जाव एडेमि ताव तुव्वे इहेव पासायवडिसए सुह-
 सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुव्वे एयसि अंतरंसि
 उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुव्वे
 पुरच्छिमिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थण दो ऊऊ सया साहीणा
 त जहा-पाउसे य वासारत्तेय,—(गाहा)तत्थ उ कदलसिलिधदंतो
 णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणीविसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनों के साथ विपुल भोग भोगों—शब्दादि विषयों को
 —भोगने लगी । प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलों को लाकर देती और
 वे दोनों उन्हें खाते । इस प्रकार वे दोनों सार्धंवाह दारक उसके साथ
 वहा कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे । “सू० ३”

पुद्गलोने भूमी दीधा त्थार पथी रयखा देवी तेओ जनेनी साथे विपुल काम
 लोगो शण्ड पगेरे विषयोने उपलोग करती रहेवा लागी छ भेथा ते तेओ
 जनेने अमृत इयो लावीने आपती जने तेओ पथु इयो जाता आ रीते
 जने सार्धंवाह पुत्रो तेनी साथे काम लोगो लोगवता रहेवा सूत्र ३ ॥

કિમર્થ ? મિત્યાહ—‘જકિંચિ’ ઇત્યાદિ । યત્કિંચિત્તત્ત્વ ત્વ વા, પત્ર વા, કાપ્ઠ વા, કચર વા, અઘ્ચિ=નિષ્ઠા, પૂતિક્ક=અર્ધપક્કશોણિત, દુરભિગમ=દુર્ગન્ધયુક્ત વસ્તુજાતમ્ ‘અચોક્ષ્વ’ અચોક્ષ્મ=અપવિત્ર તિષ્ઠતિ તત્સર્ગમ્ ‘તિસત્ત્વુત્તો’ ત્રિસમકૃત્યઃ=અકર્ત્રિગતિવારમ્ ‘આહુણિય ૨’ આધૂય ૨ અપનીય ૨ એકાન્તે ‘એદેયન્વ’ ત્યક્તવ્યમ્ ઇતિ કૃત્વા ઇત્ય ઋતું ‘ણિઉત્તા’ નિયુક્તા=અધિકૃતા= આજ્ઞામેત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ સા રત્નદ્વીપદેવતા તૌ માકન્દિદારકૌ એમવાદીત્— એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયૌ ! શક્રમચનસદેશેન સુસ્થિતેન૦ તદેવ યાવત્—અહ નિયુક્તા, તદ્ યાવદ્દહ દેવાનુપ્રિયૌ ! લવણસમુદ્રે ‘જાવ’ યાવત્—યાવન્ઽન્દેન તત્ર ગત્વા

ચારોં તરફ સે ચક્કર લગાઓં (જ કિંચિ તત્થતળવા પત્તવા કઢ વા કચર વા અમુહ પૂતિય દુરભિગમમચોક્ષ્વ ત સન્વ આહુણિય આહુણિય તિસત્ત્વુત્તો એગતે એદેયન્વતિ ઋદ્ધુ નિઉત્તા) હસમેં જો કુઝ મી તુમેં વહા ત્વળ, પત્ર, કાપ્ઠ, કૂડા, વિષ્ટા અર્ધપક્ક શોણિત અથવા દુર્ગન્ધિત વસ્તુ અદિ અપવિત્ર પદાર્થ નજર આવેં ડન સવકો તુમ એકનીસ ઘાર મે વહા સે હટા ૨ કર એકાન્ત મે હાલ દેના ” હસ કામ પર નિયુક્ત કિયા । (તણ સા રચળદ્વીપદેવયા તે મગદિયદારણ એવ વયાસી— એવ સ્વલુ અહ દેવાણુપ્પિયા ! સવક૦ સુદ્ધિણ ત ચેવ જાવ ણિઉત્તા) હસકે ઘાદ હસ રત્ન દ્વીપ દેવતા—રચળા દેવીને ડન માકદી દારકોં સે એસા ઋહા—દેવાનુ પ્રિયો ! મેં સૌવર્મેન્દ્ર કી આજ્ઞા સે લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવકે દ્વારા ૨૧ ઘાર લવણ સમુદ્ર કે ચારો ઓર ચક્કર લગાને કે લિયે આજ્ઞાસ કી ગઈ હૂં અતઃ (ત જાવ અહ દેવાણુ ૦ લવણસમુદ્રે

(જ કિં ચિ તત્થ તળવા પત્તવા કઢ વા કચર વા અમુહ પૂતિય દુરભિગમ મચોક્ષ્વ ત સન્વ આહુણિય આહુણિય તિ સુત્તો એગતે એદેયન્વ તિ ઋદ્ધુ નિઉત્તા)

અને તેમા ગમે ત્યા ત્વળ, પત્ર, કાપ્ઠ, કચરો, વિષ્ટા અર્ધપક્ક શોણિત (લોહી) અથવા તો દુર્ગન્ધિત વસ્તુ અપવિત્ર પદાર્થ દેખાય તો તેને તમે એકવીશ વખત ફરતા ફરતા ત્યાથી લઇને એકાન્તમા ફર ફેડી દો સુસ્થિત દેવે દેવન્દ્રની આજ્ઞાની આ કામ રચણાદેવીને સોપ્યુ

(તણ સા રચળદ્વીપદેવયા તે મગદિયદારણ એવ વયાસી એવ સ્વલુ અહ દેવાણુપ્પિયા સવક૦ સુદ્ધિણ ત ચેવ જાવ ણિઉત્તા)

ત્યાર પછી તે રત્નદ્વીપ દેવના રચણા દેવીએ માકદીદરકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મને સૌધર્મેન્દ્રની આજ્ઞાથી લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવ વડે લવણ સમુદ્રની આરે જાણુએ એકવીશવાર ચક્કર મારવાની આજ્ઞા મળી છે એટલા માટે

णार चिट्टेज्जाह, माण तुव्मे दक्खिणिह्ण वणसंड गच्छेज्जाह,
 तत्थण महं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय
 महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणवि
 सेरोसपुण्णे अजणपुजनिंयेरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचल-
 चलतजीहे धरणि यलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवि-
 यडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधमेतघोसे अणा-
 गलियचंडतिव्वरोसे समुहि तुरिय चवल धमधमतदिट्ठीविसे
 सप्पे य परिवसत्ति, माण तुव्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ,
 ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ वइत्ता वेउव्वियसमु-
 ग्धाएण समोहइ समोहणिता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द
 तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय पयत्ता यावि होत्था ॥ सू०४ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता=रत्नद्वीपदेवी
 ‘सक्कवयणसदेसेण’ शक्रवचनसदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया ‘सुट्ठिएण’ सुस्थितेन=
 सुस्थितनामकदेवेन, ‘लवणाहिवइणा’ लवणाधिपतिना=लवणसमुद्रस्वामिना नियु-
 क्तैत्यन्वयं नियोजनप्रकारमाह—लवणसमुद्र ‘तिसत्तखुत्तो’ त्रिसप्तकृत्य—एकविं-
 शतिवारम् ‘अणुपरियट्ठियव्वे’ अनुपर्यटितव्य समन्तात्परिभ्रमणीय, इति,

“तएण सा रयण दीव देवया” इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सक्कवयणसदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञासे
 (लवणाहिवइणा) लवणाधिपति (सुट्ठिएण) सुस्थित देवने (सा-
 रयणदीवदेवया) उस रत्नद्वीप देवता—रयणा देवी को (लवणस
 मुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय व्वेत्ति) लवणसमुद्र के तुम २१ बार

(तएण सा रयणदीव देवया ‘इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार जाह (सक्कवयणसदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञाथी (लवणा-
 हिवइणा) लवण समुद्रना अधिपति (सुट्ठिएण) सुस्थित देवे (सा रयणदीवदेवया)
 ते रत्न द्वीप-देवता—रयणा देवीने लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय व्वेत्ति)
 कहुं के लवण समुद्रकी आरे जानुंछे तमे ओकगीथ पभत यद्धर लगावे।

શ્રાવણાદિ મામચતુષ્ટયસદૃશો રમણીયઃ સમય સદા વર્તત્ત્વમિતિભાવઃ । અત્ર વનપન્ડે પ્રાવૃદ્ધઋતુર્ગજરૂપકેણ વર્ણ્યતે-તત્રતુ=તસ્મિન્ 'પાઝસઝઝગયવરો' પ્રાવૃદ્ધઋતુગ-જવર 'સાહીણો' સ્વાધીનઃ અસ્તિતસ્ત્વેન સ્વાયત્ત સદા વર્તતે । સ કીદૃશ ?
 इत्याह-‘ कदलसिलिंधदत्तो ’ कदलसिलिन्ध्रदन्तः-कन्दलाः=नूतनलता, तत्प्र-
 धानाः सिलिन्ध्रा ये प्रावृषि पुष्यन्ति श्वेतकुसुमयुक्ताश्च भवन्ति तएव धवलत्व-
 साधर्म्यात् ढत्ता यम्य स तथोक्ता, पुनः ‘ णिउवरपुष्फपीवरकरो ’ निकुरवर-
 पुष्पपीवरकरः निकुर=वृक्षविशेषस्तस्य वरपुष्पाणि=आयामत्वेन-एकैकोपरि निस्सृ-
 तानि शुण्डाकारेण परिणतानि तान्येव पीवरः=स्थूलः करः=शुण्डा यस्य स तथोक्तः।
 पुनः ' कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो ' कुटलार्जुननीपसुरभिदानः-कुटजार्जुननीपवृक्ष-
 पुष्पाणि, तेषा सुरभिः=सुगन्धः स एवदान=मदजल यस्य स तथोक्त । एतादृशो
 वर्षा ऋतु गजराजः सदैव तत्र वर्तत इतिभावः ॥ १ ॥ अथ वर्षाऋतुः पर्वत,

वर्षा रात के हैं । (तत्पञ-कदला सिलिंधदत्तो णिउवरपुष्फपीवर
 करो, कुडयज्जुणणीव सुरभिदाणो पाउस ऊऊ, गयवरो साहीणो " १ "
 इन चार महिनो में जैसा समय रमणीय रहता है-वैसा समय वहां
 सदा रमणीय बना रहता है । मूत्रकार वनपड वर्तमान प्रावृड ऋतु का
 गज के रूपक से वर्णन करते हुए कहते हैं-कि कदल-नवीन लताएँ
 और सिलिंध्र-जो वर्षा में फूलते हैं और फूल जिनका सफेद होता है
 -ये दोनों ही जिसके दात हैं । निकुर-वृक्ष विशेष-के उत्तम पुष्प ही
 जिसके पीवर शुण्डादृढ हैं तथा कुटज अर्जुन एव नीप वृक्षोंके पुष्पोंकी
 सुगंधि ही जिसका मदजल है ऐसा वर्षाऋतु रूप गजराज उस वनमें सदा
 विचरण करता रहता है । निकुरवृक्षके पुष्प एक एकके ऊपर निकलते हैं ।

(तत्प उ कदलसिलिंधदत्तो णिउवरपुष्फपीवरकरो कुडयज्जुणणीव सुर-
 મિદાણો પાઝસ ઝ ઝ ગયવરો સાહીણો ॥ ૧ ॥

એ આર મહિનામા વાતાવરણ જેવું સોહામણું રહે છે તેવું ત્યા હરહ મેશા
 સોહામણું રહે છે સૂત્રકાર વનપડમા વર્તમાન પ્રાવૃદ્ધ ઋતુનું હાથીના રૂપકથી
 વર્ણન કરતા કહે છે કે-કદલ-નવી લતાઓ-અને સિલિંધ્ર-કે જે વર્ષા કાળમા
 ફૂલે છે અને જેના ફૂલ સફેદ હોય છે-આ બંને જ જેના દાતો છે નિકુર-
 વૃક્ષ વિશેષ-ના ઉત્તમ પુષ્પો જ જેની સુડોળ સૂદ છે તેમજ કુટજ, અર્જુન
 અને નીપ વૃક્ષોના પુષ્પોની સુવાસ જ જેનો મદ છે વર્ષા ઋતુ રૂપી એવો
 ગજરાજ તે વનમા હ મેશા વિચરણ કરતો જ રહે છે નિકુર વૃક્ષના પુષ્પો
 ક્રનાઉ પર નીકળે છે

તુણાદિકમપનીય ચૈકાન્તે ત્યજામિ તાવદ્ યુવામ્ ૠહેવ પ્રાસાદાવતસકે સુલસુલે
નાભિરમમાણીં તિષ્ઠતમ્, યદિ સ્વલુ યુવામ્, ઇતસ્મિન્નતરે 'ઉન્વિગ્માવા' ઉદ્વિ
ગ્નોવા=અત્રાવસ્થાનેન ચિન્નો, 'ઉસ્સુયા વા=ઉત્કણ્ઠિતૌ મનોરજ્જનમનસ્કાવિત્યર્થઃ,
'ઉપ્પુયા વા' ઉત્પ્લુતૌ ક્રીડોત્કણ્ઠિતમાનસૌ વા 'ભવેજ્જાહ' ભવેતમ્ યદત્રા-
સ્થાનેન યુવયોર્મનસ્યુદ્વેગ ઉત્કણ્ઠ ક્રીડનેચ્છા વા ભવેત્ 'તોણ' તદા સ્વલુ યુવાં
'પુરત્થિમિલ્લ' પૌરસ્ત્ય=પૂર્વદિશાસસ્થિત વનપણ્ડમ્=ઉદ્યાન 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છત
યુવાભ્યા રમ્ય પૂર્વદિશોદ્યાન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ, યતોઽઽ તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ક્રતૂ સદા
'સાહીણા', સ્વાધીની=વર્તમાનોસ્ત, તદ્યથા- 'પાઉસેય વાસારત્તેય' પ્રવૃદ્ધ
વર્ષારાત્રશ્ચ । તત્ર પ્રાવૃદ્ધ-અપાદ શ્રાવણી વર્ષારાત્રઃ-આદ્રપદાશ્વિની, તરિમન્ વનપણ્ડે

જાવ એદેમિ-તાવ તુન્મે ૠહેવ પ્રાસાદવર્ડિસં સુદ સુદેણ અભિરમમાણા
ચિદ્વહ જહ્ણ તુન્મે ઇયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્મા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા
ભવેજ્જાહ તોણ તુન્મે પુરચ્છિમિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ)મેં જયતક ૧૧ ચાર
ચક્કર લગાકર વશાકે તૃણ કાષ્ટ આદિ દૂર ફેંકનેકે કામમેં લગી રહ્ત તથ
તક હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ દોનોં હસી શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદમેં આનન્દસે રહના । યદિ
યહાં રહ્તે ૨ તુમ્હારે ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન હો જાવે અથવા મનોરજનકે લિયે ઉત્ક-
ઠિત હો જાવે અથવા ક્રીડાકરને કે લિયે લાલાયિત વન જાવે તો તુમ
દોનોં પૂર્વ દિશા મે સસ્થિત ઉદ્યાન મેં ચલે જાના (તત્થણ દો ઝ ઝ
સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસારત્તે ય) વહા સદા દો ક્રતુએ
વર્તમાન રહ્તી હેં । એકતો પ્રાવૃદ્ધ ક્રતુ દ્વસરી વર્ષા રાત-આષાઢ શ્રાવણ
યે નો મરિને પ્રાવૃદ્ધ ક્રતુ કે હેં-તથા આદ્રપદ એવ આશ્વિન યે દો માસ

(ત જાવ અહ દેવાણુ૦ લવણસમુદ્દે જાવ એદેમિ-તાવ તુન્મે ૠહેવ પ્રસાપ
વર્ડિસં સુદ સુદેણ અભિરમમાણા ચિદ્વહ જહ્ણ તુન્મે ઇયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્માવા
ઉસ્સુયા ॥ ઉપ્પુયાવા ભવેજ્જાહ તો ણ તુન્મે પુરચ્છિમિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ)

હુ જ્યા સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચકકર મારીત્યાના તૃણ કાષ્ટ વગેરેને દૂર
ફેંકવાના કામમા પરવાઈ રહુ ત્યા સુધી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બને આજ
શ્રેષ્ઠ મહેલમા સુખેથી રહેલો અહીં રહેતા એ તમને કટાણો આવવા લાગે,
મન તમારૂં ઉદ્વિગ્ન થઈ જાય મનોરજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા
કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામા ઉત્પન્ન થાય તો બને પૂર્વ દિશાના
ઉદ્યાનમા જતા રહેલો (તત્થણ દો ઝ ઝ સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસા
રત્તેય) તે ઉદ્યાનમા હરહ મેથા બે ક્રતુઓ હાજર રહે છે એક પ્રાવૃદ્ધ ક્રતુ
બને બીજી વર્ષા અપાદ આવણ આ બે મહિના પ્રાવૃદ્ધ ક્રતુના છે અને
આદ્રપદો અને આસો આ બે મહિના વર્ષા ક્રતુના છે

યુવા દેવાનુપ્રિયૌ વહ્નીષુ વાપીષુ ચ યાવત્ 'સરસરપતિયાસુ' સરઃ સર પશ્તિક્તિ
 કાસુ પરપર સલગ્નેષુ ગદ્ધુષુ સરસુ, યત્રૈકસ્માત્સરસોઽન્યસ્મિન્ તસ્માદપરસ્મિન્,
 એવ સચરણપરમ્પરયેદક સચરતિ, તાસુ । વહ્ધુષુ 'આલિઘરણસુ ય' આલિઘરણેષુ
 આલિઃ=રમ્યવનસ્પતિવિશેષસ્તસ્ય ગૃહેષુ 'જાવ' યાવત્-યાવચ્છબ્દેન-ઋદલીઘ-
 રેષુ ચ લતાગૃહેષુ ચ-અચ્છળગૃહેષુ ચ પ્રેક્ષણગૃહેષુ ચ પ્રસાધનગૃહેષુ ચ મોહનગૃહેષુ
 ચ શાલા (શાલા) ગૃહેષુ ચ જાલગૃહેષુ ચ ઇતિ સગ્રહઃ, વુસુમગૃહેષુ=પુષ્પગૃહેષુ
 ચ સુલ્લસુલેન=સુલ્લપૂર્વકમ્ 'અભિરમમાણા' અભિરમમાણૌ=ક્રીડા કર્વાણૌ વિહ-
 રત=તિગ્દતમ્ ।

પુત્રોં કો વહ રચનાદેવી સમક્ષા રહી છે । ઓર સાથ મેં યહ બી
 કહ રહી છે કિ (તત્તથળ તુભે દેવાણુષ્ણિયા । વહુસુ વાવી સુ ય
 જાવ સરસરપતિયાસુ ગદ્ધુસુ આલીઘરણસુ ય માલીઘરણસુ ય જાવ
 કુસુમઘરણસુ ય સુહ સુહેળં અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ) હે દેવા-
 નુપ્રિયો ! વહા તુમ અનેક વાપિકાઓં મેં યાવત્ અનેક સર સર પક્તિયોં
 મેં અલિઘરોં મેં ઋદલી ગૃહોં મેં લતા ગૃહોં મેં અચ્છળ ગૃહોં મેં પ્રેક્ષણ
 ગૃહોં મેં, પ્રસાધન ગૃહોં મેં, મોહન ઘરોં મેં, શાલા ગૃહોં મેં, જાલ ગૃહોં મેં,
 તથા પુષ્પ ગૃહોં મેં, સુલ્લપૂર્વક ક્રીડા કરતે હુઅ અપને સયમ કો વ્યતીત
 કરતે રહના । અનેક તાલાવ જહા પક્તિ વદ્ધ શ્રેણીમેં સ્થિત રહતે હં ઉસ
 કા નાગ સરપક્તિ છે । હન પક્તિ આકાર સ્થિત તાલાવો મેં એક
 એક દસરે તાલાવ કા જલ આતા જાતા રહતા છે । રમ્યવનસ્પતિ વિશેષ
 કે જો ગૃહ હોતે છે ઉનકા નામ આલિ ગૃહ છે । (જહ્ણ) યદિ (તુભે

પુત્રોને રચણા દેવી સમક્ષા રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે
 (તત્તથળ તુભે દેવાણુષ્ણિયા ! વહુસુ વાવીસુ ય જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલી-
 ઘરણસુ માલીઘરણસુ જાવ કુસુમઘરણસુ સુહ સુહેળ અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા તમે ધણી વાપિકાઓ (વાવો) મા યાવત્ ધણી
 સર સપક્તિઓ (સરોવરો) મા, આલિઘરોમા, ઋદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા,
 અચ્છળગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાલાગૃહોમા,
 જાલગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુષેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર
 કરતે જ્યા ધણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પકિતબદ્ધ હોય છે તેનું
 નામ સર સરપક્તિ છે આ પક્તિ આકારમા સ્થિત તળાવોમા એક બીજાના
 તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય
 છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (જહ્ણ) એ

રૂપકેણ વર્ણયતે—‘તત્થય’ તત્રચ=તર્જીવ=વનપણ્ડે વર્ષારાત્રઋતુપર્વતઃ સ્વાધીનો વર્તતે इत्येणेण सम्बन्धः । સમીદશ ? इत्याह—‘सुरगोपमणिविचित्रो’ सुगोपमणि विचित्र-‘सुरगोपा’=इन्द्रगोपाः वर्षाकाले समुत्पद्यमाना रक्तवर्णा जीव विशेषास्त- एव मणयः=पद्मसागादयस्तेर्विचित्र=रुधुरो यः स तथा । ‘दददुरकुलसियडज्जररवो’ ददुरकुलरसितोऽज्जरवः=ददुरकुल=मण्डूरसमृहस्तस्य रसित=निरन्तर शब्द , तदेव उज्जररवः=निर्झरशब्दो यत्र स तथा । ‘वरहिणविदपरिणद्धसिहरो’ बर्हिष्टन्दप रिणद्धशिखर-‘बर्हिष्टन्देन=मयूःसमृहेन परिणद्धा’=युक्ताः वृक्षास्मएव शिखराणि यत्र स तथा । एतादृशो वर्षारान्पर्वतस्तत्र सदैव वर्तत इतिभावः ॥ २ ॥ तत्र खलु

इस लिये वे लघार्हमें शुण्डादड जैसे प्रतीत होते हैं । (तत्थ य -सुरगोव मणिविचित्रो दददुर कुलरसिय उज्जररवो । वरहिणविद परिणद्धसिहरो वासारत्तो ऊऊ पव्वतो साहीणो) इस आर्या द्वारा सूत्रकार वर्षाऋतु का पर्वत के रूपक से वर्णन करते हैं-वे कहते हैं कि वर्षा काल में इन्द्रगोप नामक कीड़ा उत्पन्न होकर इधर उधर चमक ते हुए रात्रिमें दिखलाई पड़ते हैं ।- सो ये इन्द्रगोप कीड़े ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत में पद्मराग आदि मणियों के स्थानापन्न हैं । तथा पर्वत निर्झरों (झरना) के शब्दों वाला होता है सो इस वर्षा ऋतु रूप पर्वत में ददुरो का जो निरन्तर शब्द होता रहता है वही मानो निर्झरों का शब्द है । वर्षा ऋतु में मयूरो से वृक्ष युक्त रहा करते हैं क्योंकि वृष्टि होनेपर वे उन पर उड़ कर बैठ जाते हैं-सो ये मयूर युक्त वृक्ष ही जिस वर्षा ऋतु रूप पर्वत की चीटिया है । ऐसा वर्षा रात्रि रूप पर्वत उस वन में सदा काल रहता है । यह बात उन दोनों सार्यवाह

એટલા માટે નિકરવૃક્ષના પુષ્પો લબાઈની દૃષ્ટિએ સદા એવા લાગે છે

(તત્થ ય સુરગોવ મણિવિચિત્તો દદદુરકુલરસિયુજ્જરરવો । વરહિણ વિદપરિણદ્ધમિહરો વાસારત્તો ઉઊ પવ્વત્તો સાહીણો)

આ આર્યા વડે સૂત્રકાર વર્ષા ઋતુનું પર્વતના રૂપકથી વર્ણન કરે છે તેઓ કહે છે કે વર્ષાકાળે ઇન્દ્રગોપ નામે કીડા ઉત્પન્ન થાય છે અને તે આમ તેમ ચમકતો રાત્રીમાં દેખાય છે આ ઇન્દ્રગોપ કીડાઓ જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતમાં પદ્મરાગ વગેરે મણિઓના રૂપમાં છે પર્વતોમાં નિર્ઝરો (ઝરણાઓ) નો ધ્વનિ થતો રહે છે તે આ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વત ઉપર દેહકાઓનો જ નિરન્તર શબ્દ થતો રહે છે તે જ ઝરણાઓના શબ્દના રૂપમાં છે વર્ષાઋતુમાં વૃક્ષો ઉપર મોરો ઉડી ઉડીને ભેસી ભય છે તે આ મોરો જેના ઉપર બેસેલા છે એવા વૃક્ષો જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતના શિખરો છે એવો વર્ષાઋતુ રૂપી પર્વત તે વનમાં હવેશા નિવાસ કરતો રહેતો હતો આ વાત તેઓ બંને આ વાહ

યુવા દેવાનુપ્રિયૌ વહીષુ શાપીષુ ચ યાવત્ 'સરસરપતિયાસુ' સરઃ સર પદ્ધત્તિ
કાસુ પરપર સલગ્નેષુ વહુષુ સરસુ, યત્રૈવસ્માત્સરસોઽન્યસ્મિન્ તસ્માદપરસ્મિન્,
એવ સચરણપરમ્પરયોદક સચરતિ, તાસુ । વહુષુ 'આલિઘરણસુ ય' આલિઘરણ
આલિઃ=રમ્યવનસ્પતિવિશેષસ્તસ્ય ગૃહેષુ 'જાવ' યાવત્-યાવચ્છન્દેન-કદલીગૃ-
હેષુ ચ લતાગૃહેષુ ચ-અચ્છળગૃહેષુ ચ પ્રેક્ષણગૃહેષુ ચ પ્રસાધનગૃહેષુ ચ મોહનગૃહેષુ
ચ શાલા (શાલા) ગૃહેષુ ચ જાલગૃહેષુ ચ ઇતિ સગ્રહઃ, વુસુમગૃહેષુ=પુષ્પગૃહેષુ
ચ સુખસુખેન=સુખપૂર્વકમ્ 'અભિરમમાણા' અભિરમમાણૌ=ક્રીડા કર્વાણૌ વિદ્-
રત=તિષ્ઠતમ્ ।

પુત્રોં કો વહ રચનાદેવી સમજા રહી છે । ઓર સાથ મેં યહ બ્રી
કહ રહી છે કિ (તત્થળ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવી સુ ય
જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલીઘરણસુ ય માલીઘરણસુ ય જાવ
કુસુમધરણસુ ય સુહ સુહેળં અભિરમમાણા વિદરેજાહ) હે દેવા-
નુપ્રિયો ! વહા તુમ અનેક વાપિકાઓં મેં યાવત્ અનેક સર સર પત્તિયો
મેં અલિઘરોં મે કદલી ગૃહોં મે લતા ગૃહોં મેં અચ્છળ ગૃહોં મેં પ્રેક્ષણ
ગૃહોં મે, પ્રસાધન ગૃહોં મેં, મોહન ઘરોં મે, શાલા ગૃહોં મેં, જાલ ગૃહોં મે,
તથા પુષ્પ ગૃહોં મે, સુખપૂર્વક ક્રીડા કરતે હુણ અપને સયમ કો વ્યતીત
કરતે રહના । અનેક તાલાવ જહા પત્તિ વદ્ધ શ્રેણીમેં સ્થિત રહતે છે ઉસ
કા નામ સરપત્તિ છે । ઇન પત્તિ આકાર સ્થિત તાલાવો મેં એક
એક દુસરે તાલાવ કા જલ આતા જાતા રહતા છે । રમ્યવનસ્પતિ વિશેષ
કે જો ગૃહ હોતે હેં ઉનકા નામ આલિ ગૃહ છે । (જહ્ણ) યદિ (તુભે

પુત્રોને રચના દેવી સમજાવી રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે
(તત્થળ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવીસુ ય જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલી
ધરણસુ ય માલીઘરણસુ ય જાવ કુસુમધરણસુ ય સુહ સુહેળ અભિરમમાણા વિદરેજાહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) આ યાવત્ ઘણી
સર સરપત્તિઓ (સરોવરો) આ, આલિઘરોમા, કદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા,
અઞ્છળગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાલાગૃહોમા,
જાલગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુખેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર
કરો ન્યા ઘણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પકિતબદ્ધ હોય છે તેનું
નામ સર સરપત્તિ છે આ પકિત આકારમા સ્થિત તળાવોમા એક બીજાના
તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય
છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (જહ્ણ) ને

યદિ સ્વલ્પ પુત્ર્યુગામ્ 'તત્યવિ' તત્રાપિ=પૂર્વદિશાનનપળ્હેડપિ ઉદ્વિગ્નો વા, ઉત્સુકૌ વા, ઉત્સુતૌ=ક્રીડાર્થિનૌ યા ભયત તદા સ્વલ્પ યુવા દ્વાપિ 'ઉત્તરિલ્લ' ઉત્તરીયમ્=ઉત્તરદિક્સંસ્થિત વનપળ્હે 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છતમ્, યુગાભ્યા તત્ર ગન્ત વ્યમિત્યર્થ તત્ર સ્વલ્પ દ્વૌ ક્રતુ સદા સ્વાધીનો વર્તેતે, તત્રયા-શરચ્ચ હેમન્તશ્ચ, તત્ર શરદ્ક્રતુઃ=કાર્તિકમાર્ગશીર્ષરૂપઃ, હેમન્તર્તુશ્ચ=પૌષમાઘરૂપ ઇતિ । અથ શરદ્ક્રતુ વૃષભરૂપકેણ વર્ણયતિ-તત્ર તુ વનપળ્હે 'સરયુઽઽ ગોર્હ' શરદ્ક્રતુગોપતિઃ શરદ્ક્રતુરુપોટ્ટપભઃ 'સાહિણો' સ્વાધીનઃ સ્વાયતઃ સદા વર્તેતે, ઇત્યગ્રેણ સમન્વયઃ । સ કીદશઃ ? ઇત્યાહ—'સળસત્તવળ્ળકઽઽઓ' સનસપ્તર્ણરુદ્ધ, સનઃ=વલ્કલ્લપ ધ્રાનો વનસ્પતિવિશેષઃ, સપ્તર્ણઃ=સપ્તચ્છદાભિધનસ્પતિવિશેષઃ તયો પુષ્પાણ્યપિ

પૃથ્થવિ ઉન્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉષ્ણયા વા ભવેજ્જાહ, તોર્ગ તુભ્મે ઉત્તરિલ્લ વળસઢ ગચ્છેજ્જાહ, તત્થ ણં દો ક્કસયા સાહીણા, તંસરદો ય હેમતો ય, તત્થ ડ-સળસત્તવળ્ળકઽઽઓ નીલુપ્પલપડમનલિણતિગો । સારસ ચક્કવાયરવિત્તધોસો સરય ક્ક ગોવતી સાહીણો) તુમ દોનોંજનોં કા પૂર્વદિશા કે વનપળ્હે મેં મન ન લગે, ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન વન જાય, મનોરજન ન હો અથવા ઓર અધિક ક્રીડા કરને કે લિયે મન ઉત્કઠિત વન જાય તો તુમ વહા સે ઉત્તર દિશા મેં રહે હુણ વનપળ્હે મેં ચલે જાના । વહા સદા દોક્રતુણ વર્તમાન રહતી હૈ-૧ શરદ ક્રતુ ૨. હેમત ક્રતુ, કાર્તિક ઓર માર્ગશીર્ષ યે દો મહિને શરદક્રતુ કેહૈ, પૌષ ઓર માઘ યે દો મહિને હેમન્તક્રતુ કે હૈ । રચનાદેવી શરદક્રતુ કા વૃષભ કે રૂપક સે ઓર હેમન્તક્રતુકા ચન્દ્રમાકે રૂપકસે વર્ણન કરતી હુઈ ડન્હે સમજાતી હૈ

(તુભ્મ પૃથ્થવિ ઉન્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉષ્ણયા વા ભવેજ્જાહ તો નતુભ્મે ઉત્તરિલ્લ વળસઢ ગચ્છેજ્જાહ, તત્થ ણં દો ક્કસયા સાહીણા તંસરદો ય હેમતો ય તત્થ ડ સળસત્તવળ્ળકઽઽઓ નીલુપ્પલપડમનલિણતિગો । સારસ ચક્કવાયરવિત્ત ધોસો સરય ક્ક ગોવતી સાહિણો)

પૂર્વ દિશા તરફના વનપળ્હે તમને ગમતુ ન હોય, ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થઈ જતુ લાગતુ હોય, ત્યા તમારુ મનોરજન થતુ ન હોય, કે વધારે ક્રીડા કરવા માટે મન ઉત્કઠિત થઈ જતુ હોય તો તમે ત્યાથી ઉત્તર દિશા તરફ આવેલા વનપળ્હે જતા રહે બે ત્યા હર હ મેશ બે ક્રતુઓ હાજર રહે છે-(૧) શરદક્રતુ અને (૨) હેમન્તક્રતુ કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ આ બે માસ શરદક્રતુના છે તેમજ પૌષ અને માઘ આ બે માસ હેમન્તક્રતુના છે રચના દેવી તેઓ ર શરદક્રતુ વૃષભના રૂપકથી અને હેમન્તક્રતુ ચન્દ્રમાના રૂપકથી નિરૂપિત કરતા

सनसप्तपर्णानि, तान्येव गोलाकारोन्नतत्वसाधर्म्यात् ककुत्-स्कन्धदेशो यस्य स
तथोक्ता । पुन 'नीलोत्पलपत्रमनलिनसिंगो' नीलोत्पलपत्रमनलिनशृङ्गः-नीलो
त्पलपत्रमनलिनानि=नीलकमलविशेषास्तान्येव तीक्ष्णोन्नततया शृङ्गाकारपरिणतत्वात्
शृङ्गे यस्य स तथोक्तः । पुनः-'सारसचक्रवायरनियघोषो' सारसचक्रवाकरुतयोपा
-सारसचक्रवारूपक्षिणा रुतमेव=शब्द एव उच्चैस्त्वगाम्भीर्यसादृश्याद् घोषो =
ध्वनिर्यस्य स तथोक्तः । एतादृश' शरदऋतु वृषभस्तत्र सदैव नियत इति भावः ॥१॥

सम्प्रति हेमन्तऋतु राशिरूपकेण प्राह-'तत्थउ' तत्र तु वनपण्डे 'हेमत ऊऊ
ससी' हेमन्तऋतुशशी=हेमन्तर्चुरूपश्चन्द्र सदा स्वायीन इत्युत्तरेण सम्बन्धः । स
कीर्णः ? इत्याह-'मियकुद' अथ च जोण्हो' सितकुन्दधवलज्योत्स्नाः-सितकुन्दानि
=श्वेतपुष्पाणि तान्येव धरला=उज्ज्वल ज्योत्स्ना=चन्द्रिका यस्य स तथोक्तः । पुन
-'कुसुमियलोद्वणसडमडलतलो कुसुमितलोध्रवनपण्डमण्डलतल-कुसुमितः= पु
ष्पित लोध्रवनपण्डः, स एव श्वेतत्वसाधर्म्यात् - मण्डलतल = विभ्य यस्य स
तथोक्तः । 'तुपारदकधारापीवरकरो' तुपारदकधारापीवरकरः - तत्र तुपारा=
हिमज्जला, 'दकधारा' = जलविन्दुप्रवाहास्ता एव दैर्घ्य शैत्यसादृश्यात् पीवराः=
पुष्पा ऊराः = निरुणा यस्य स तथोक्तः । एव भूतो हेमन्तर्चुरूपश्चन्द्रस्तत्र सदैव
वर्तत इत्यर्थः ॥ २ ॥

कहती है-कि देखो शरदऋतुको हमने वृषभक्ता रूप इसलिये दिया है कि
इस ऋतुमें सन और सप्तपर्ण फूलते हैं इनके फूल गोल आकारके और
ऊँचे होते हैं । सो ये पुष्प ही जिस ऋतुका वृषभके ककुद (खदौला) है ।
नीलोत्पल आदि कमल ही जिस के शृङ्ग हैं । सारस और चक्रवाक
पक्षियों के शब्द ही जिसकी ध्वनि है ऐसा शरदऋतु रूप वृषभ उस
वन में सदा विचरण करता रहता है । (तत्थ य सिय कद ववलजोण्हो
कुसुमिय लोद्वणसडमडल तलो साहीणो) सितकुद-श्वेतपुष्प-ही
जिस की धवलज्योत्स्ना (चांदनी) है, कुसुमित लोध्रवनखट्टी जिसका
मडल है, हिमकग और विन्दु प्रवाह ही जिस की पुष्ट किरणें हैं ऐसा

समजावे છે કે જુઓ શરદઋતુને અમે વૃષભનુ રૂપ એટલા માટે આપ્યું છે
કે આ ઋતુમાં સપ્ત અને સપ્તર્ષુ ખીલે છે એમના પુષ્પો ગોળાકારના તેમજ
ઊંચા હોય છે તે આ પુષ્પોજ શરદઋતુ રૂપ વૃષભની ખાધ (કકુદ) છે
નીલોત્પલ વગેરે કમળો જ જેના સિંગડા છે સારસ અને ચક્રવાક પક્ષીઓ
ના શબ્દો જ જેના ધ્વનિ છે એવો શરદઋતુ રૂપ વૃષભ તે વનમાં હંમેશા
વિચરતો જ રહે છે (તત્થ ય સિયકદ વવલ જોણ્હો કુસુમિતલોદ્ધ્રવણસડ
મડલતલો સાહીણો) સિતકુદ-સફેદ પુષ્પો જ જેની સ્વચ્છ ચંદ્રિકા (ચાંદની)
છે, ખીનેડુ લોધ્ર વનજ જેનો મડળ છે, હિમકણ અને પાણીના વહેતા ટીપાઓ

તત્ર સ્વલુ યુવા હે દેવાનુપ્રિયો ! વહીપુ વાપીપુ ચ યાત્રદુ અમિરમમાણી
વિહરતમ્ = તત્ર ક્રીડા કુર્વન્તો તિષ્ઠતમ્ ।

યદિ સ્વલુ યુવા તત્રાપિ=ઉત્તરીયવનપણ્ડેઽપિ ઉદ્દિગ્નો વા યાત્રદુ ઉત્પ્લુતો વા
ભવેત તત્રા સ્વલુ યુગમ્ ' અવરિલ્લ ' અપરીય = પશ્ચિમદિશાસમ્બન્ધી વનપણ્ડ
ગચ્છતમ્, તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતુ સ્વાધીનો=સ્વાયત્નો સર્વદા વર્તમાનો સ્ત, તથા-
વસન્તથ ગ્રીષ્મથ, વસન્તઃ=ફાલ્ગુનચૈત્રલક્ષણ, ગ્રીષ્મઃ=વૈશાખજ્યેષ્ઠલક્ષણઃ । પૂર્વ
વસન્તઋતુ નરપતિરૂપકેણ વર્ણયતિ-'તત્થુ' તત્ર તુ પશ્ચિમદિગ્વર્તિવનપણ્ડે વસન્તર્તુ

હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્રમા ઉસવન મેં સદા પ્રકાશિત રહતા હૈ । (તત્થ ણ
તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! વહા
અનેક વાપિકાઈ યાવત્ પુણ્ણવર મી હૈં । સો તુમ ડનમેં મી આનદ સે
વિહાર કરના । (જહણ તુભ્મે તત્થ ઉવ્વિગ્ગા વા જાવ ઉસ્સુયા વા ભવે-
જ્જાહ તો ણ તુભ્મે અવિરિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઙ
સાહીણા) યદિ તુમ દોનોં જનોં કા મન ઉત્તરીયવનપણ્ડ મેં મી ન લગે-
વહા વહ ઉદ્દિગ્ગન યાવત્ ઉત્પ્લુત હો જાવે-તો તુમ દોનોં પશ્ચિમ દિશા
સમ્બધી વનખડમેં વહે જાના । વહાં દો ઋતુઈ સદા વર્તમાન રહતી હૈ
(ત જહા-વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થુ-સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમહો, ઉસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ઝઙ્ગરવહ સાહીણો)
વે દો ઋતુઈ ગ્રીષ્મ ઓર વસન્ત હૈં ।

ફાલ્ગુન ચૈત્ર યે દો મરિને વસન્તઋતુ કે હૈ । વૈશાખ ઓર જ્યેષ્ઠ
યે દો માસ ગ્રીષ્મઋતુ કે હૈં । ઇસ પશ્ચિમદિશા સવન્ધી વનખડ મેં વસ

નેની પુદ્ધિરેણુ છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્ર તે વનખા હેમશા પ્રકાશતો
રહે છે (તત્થ ણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ હે દેવાનુ
પ્રિયો ! ત્યા ધણુ વાવો યાવત્ પુણ્ણવરો પણુ છે તમે તેઓમા પણુ વિહાર કરને

(જહણ તુભ્મે તત્થ ઉવ્વિગ્ગા વા જાવ ઉસ્સુયા વા ભવેજ્જાહ તો ણ તુભ્મે
અવિરિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઙ સાહીણા)

ઉત્તરના વનખડમા પણુ જો તમને ખરેખર ગમે નહિ, ઉદ્દિગ્ગ થઈ
યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે જાને પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા જતા
રહેજો ત્યા જો ઋતુઓ સદા મોળુદ રહે છે

(ત જહા વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થુ-સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમહોઉસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ઝઙ્ગરવહ સાહીણો)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસન્ત છે ક્ષગ્ધ અને ચૈત્ર આ જો માત્ર
વસન્ત ઋતુના છે ત્યારે વૈશાખ અને જ્યેષ્ઠ આ જો માત્ર ગરમીની ઋતુના

નરપતિઃ=વસન્તઋતુરૂપો રાજા સ્વાધીનો વર્ત્તેત્ત્વમ્મન્યઃ । સ કીદ્દશઃ ? इत्याह-
 'सहकारचारुहारो' सहकारचारुहारः-सहकाराणि-सहकार पुष्पाणि-आम्रमञ्जर्यः,
 तान्येव बहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा । पुनः
 -'स्मियरष्णिगारासोगमउडो' स्मियरष्णिगाराशोऽमुकुटः-स्मियरानि=पला
 शकुमुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव
 मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुटः=किरीट यस्य स तथा । 'ऊसियतिलगणउलायवत्तो'
 उच्छ्रिततिलकपकुलातपत्रः-उच्छ्रितानि=उन्नतानि तिलकपकुलानि=तिलकवकुल-
 पुष्पाणि, तान्येव आतप=उन्नाकारपरिणतत्वेन उन्नत यस्य स तथोक्तः । एतादृशो
 वसन्तर्चनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण
 वर्ण्यते-'तत्थय' तत्र च पश्चिमदिग्धनपण्डे 'गिम्हउउसागरो' ग्रीष्मवर्तुषः
 सागरः=समुद्रः स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरत वर्तमानोऽस्ति । स कीदृशः ?
 इत्याह-'पाडलसिरीससलिलो' पाटलशिरीषसलिलः-पाटलशिरीषाणि=पाटला
 शिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिल=जलराशिरूप यस्य स तथा । 'मल्लि
 ययासतिथयवल्बेलो' मल्लिकावासन्तिका यलवेलः-मल्लिका वासन्तिका च लता-

ન્તઋતુ નરપતિ કે સમાન સદા વિચરણ કરતી રહતી હૈ-સહકાર (આ
 મ્ર) કી મજરિયા હી હસ વસન્તઋતુ રૂપી રાજા કે સુન્દર હાર હૈ । કિ
 શુક-કર્ણિકાર એવ અશોકકે પુષ્પ હી હસ રાજા કે મુકુટ હૈ । ઉન્નત
 તિલક વૃક્ષ એવ વકુલ વૃક્ષ કે પુષ્પ હી હસકે છત્ર હૈ । (તત્થ ય-પાડલ
 સિરીસસલિલો મલ્લિકાવાસન્તિકા યલવેલો, સીયલસુરભિઅનિલ મગ-
 રચરિઓ ગિમ્હઊઊ સાગરો સાદીણો) હસ પશ્ચિમદિશા સમ્પન્ધી
 ઘનપડ મેં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્ર કે સામાન સદા પસરા રહતા હૈ-ગુલાબ ઓર
 શિરીષ પુષ્પ યે હસ ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સમુદ્ર કે જલ હૈ । મલ્લિકા એવ વાસ

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનખા વસન્તઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હ મેશા
 વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આમ્રો) ની મજરીઓ આ વસન્તઋતુ
 રાજાના સુન્દર હારો છે ગિરુડ કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ
 રાજાના મુકુટ છે જીયા તિલક વૃક્ષો અને વકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે
 તત્થ ય પાડલસિરીસસલિલો મલ્લિકા વાસન્તિકા ય ધવલવેલો સીયલસુરભિ
 અનિલમગરચરિઓ ગિમ્હ ઊ ઊ સાગરો સાદિણો)

તે પશ્ચિમ દિશાના વનખામાં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હ મેશા પ્રસરાયેલો
 રહે છે ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી
 છે મલ્લિકા અને વાસન્તિકા લતા જ એના કિનારાઓ છે ઠંડો અને સુવાસિત

તત્ર સ્વલુ યુવા હે દેવાનુપ્રિયો ! વહોણ વાપીણુ ચ યાવદ્ અભિરમમાણો વિહરતમ્ = તત્ર ક્રીડા કર્વન્તો તિષ્ઠતમ્ ।

યદિ સ્વલુ યુવા તત્રાપિ=ઉત્તરીયવનપણ્ડેઽપિ ઉદ્વિગ્નો વા યાવદ્ ઉત્પ્લુતો વા ભવેત તત્રા સ્વલુ યુવામ્ 'અવરિહ્તં' અપરીય = પશ્ચિમદિશાસમ્બન્ધિત વનપણ્ડં ગચ્છતમ્, તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતૂ સ્વાધીનો=સ્વાયત્તો સર્વદા વર્તમાનો સ્તઃ, તથા-વસન્તથ ગ્રીષ્મથ, વસન્તઃ=ફાલ્ગુનચૈત્રલક્ષણ, ગ્રીષ્મઃ=વૈશાખજ્યેષ્ઠલક્ષણઃ । પૂર્વ વસન્તઋતુ નરપતિરૂપકેણ વર્ણયતિ-'તત્પત્ત' તત્ર તુ પશ્ચિમદિગ્વર્તિવનપણ્ડે યસન્તર્તુ

હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્રમા ડસવન મેં સદા પ્રકાશિત રહતા હૈ । (તત્થ ણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! વહા અનેક વાપિકાઈ યાવત્ પુણ્ણધર મી હૈં । સો તુમ ડનમેં મી આનદ સે વિહાર કરના । (જહણ તુભ્મે તત્થ ડવ્વિગ્ગા વા જાવ ડસ્સુયા વા મ્હે-જ્જાહ તો ણ તુભ્મે અવિરિહ્ત વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ડઙ્ગ સાહીણા) યદિ તુમ દોનોં જનોં કા મન ડત્તરીયવનપહ મેં મી ન લગે-વહા વહ ડદ્વિગ્ન યાવત્ ડત્પ્લુત હો જાવે-તો તુમ દોનોં પશ્ચિમ દિશા સમ્બન્ધી વનસહમેં વહે જાના । વહાં દો ઋતુઈ સદા વર્તમાન રહતી હૈ (ત જહા-વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ-સહકાર ચારુદારો, કિંસુય કણિયા રાસોગમડહો, ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ડઙ્ગણરવહ સાહીણો) વે દો ઋતુઈ ગ્રીષ્મ ઓર વસન્ત હૈં ।

ફાલ્ગુન ચૈત્ર યે દો મહિને વસન્તઋતુ કે હૈં । વૈશાખ ઓર જ્યેષ્ઠ યે દો માસ ગ્રીષ્મઋતુ કે હૈં । હસ પશ્ચિમદિશા સમ્બન્ધી વનસહ મેં વસ

નેની પુષ્પ કિરણો છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્ર તે વનમા હમેશા પ્રકાશિતો રહે છે (તત્થ ણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા ઘણું વાવો યાવત્ પુણ્ણધરો પણ છે તમે તેઓમા પણ વિહાર કરો)

(જહણ તુભ્મે તત્થ ડવ્વિગ્ગા વા જાવ ડસ્સુયા વા મ્હેજ્જાહ તો ણ તુભ્મે અવિરિહ્ત વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ડઙ્ગ સાહીણા)

ઉત્તરના વનખડમા પણ જો તમને ખરેખર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે જાને પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા જતા રહેજો ત્યાં જો ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે

(ત જહા વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ સહકાર ચારુદારો, કિંસુય કણિયા રાસોગમડહો ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ડઙ્ગણરવહ સાહીણો)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસન્ત છે ક્રાંતિ અને ચૈત્ર આ જો માસ વસન્ત ઋતુના છે ત્યારે વૈશાખ અને જ્યેષ્ઠ આ જો માસ અરબીની ઋતુના

વિશેષઃ, તા એવ તરજ્ઞાકારપરિણતત્વાદ ધન્યો=શુભ્રા વેળા યસ્ય સ તથા । 'સીય
 લસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરમ્યનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરભિશ્ચ
 યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોભ્રમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમચ્ચારો યત્ર સ
 તથોક્તઃ । એવિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિચિત ઇતિ ॥ તત્ર સ્વલુ વદીપુ વાપીપુ
 યાવદ્ અભિરમમાર્ણો વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગગ્રીર્વાનિક્રમેણ
 દ્વૌ દ્વૌ માસૌ દેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-વર્ષા-શરત્સન્નઃ પદ્મશત્રો ગપ્યન્તે ।
 યદિ સ્વલુ યુવા દેવાનુમિયૌ । તથાપિ=પાથિમદિગ્વનપળ્હેઽપિ ઉદ્ગિર્નાં ઉત્પ્લુતૌ

નિતિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈ-તટ હૈ-શીતલ સુરભિ પવન હી
 જિસમેં મગરોં કા સ ચાર હૈ । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસ્પતિ
 મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । (તત્થ ણ મહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) વર્ષાપર
 અનેક વાપિકાઈ આદિ મી હૈ । સો ડન મેં મી તુમ દોનોં આનન્દ
 કે સાથ વિચરણ કરતે રહના । (જઈણ તુમ્મે દેવો-તત્થ વિ-
 ઉવિગ્ગા, ઉસ્સુયા મહેજ્જાહ, તઓ તુમ્મે જેનેવ પાસાયવડિંસણ
 તેનેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિદ્દેજ્જાહ, માણ તુમ્મે
 દક્ષિણિલ્લ વનસડ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ એગે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
 ધોરવિસે, મહાવિસે, અઠ્ઠકાય મહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિમહિ
 સામૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુણ્ણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રસ્સચ્છે
 જમલ્લુયલચ્ચલચ્ચલત્તીહે, ધરણિયલવેણિભૂણ, ઉવ્વકડુડકુડિલ
 જડિલકકલ્લવિયડફળાડોવકરણદચ્છે, લોગાહારધમ્મમાણધમ્મ
 ધમેત્તયોસે અનાગલિયચ્ચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય ચલ્લ ધમ

પવન જ જેમા મગરોંનુ સ ચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનસ્પતિ
 સદા હોખર રહે છે (તત્થ ણ મહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ધણી વાવો
 વગેરે છે તમે ણને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જઈણ તુમ્મે દેવો-તત્થ વિ ઉવિગ્ગા ઉસ્સુયા મહેજ્જાહ તઓ તુમ્મે
 જેનેવ પાસાય વડિંસણ તેનેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિદ્દેજ્જાહ
 માણ તુમ્મે દક્ષિણિલ્લ વનસડ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ એગે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
 ધોરવિસે મહાવિસે અઠ્ઠકાયમહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલણ
 નયણવિસરોસપુણ્ણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રસ્સચ્છે જમલ્લુયલચ્ચલચ્ચલત્તી હે,
 ધરણિયલવેણિભૂણ ઉવ્વકડુ પુડકુડિલ જડિલકકલ્લવિયડફળાડોર કરણ
 વચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધમેત્તયોસે અનાગમિયચ્ચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય
 ચલ્લ ધમધમત દિઘ્ઘિવિસે સપ્પે ય પરિવસઈ')

હે દેવાનુમિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

વા ભવેત તદા રુહુ યુવા યત્રૈવ પ્રાસાદાવતસક'—સ્વાવાસભવન તત્રૈવ ઉપાગચ્છત
પુનઃ સ્વપ્રાસાદાવતસકે સમાગત્ય સ્થાતવ્યમિત્યર્થઃ, 'મમ' મા ચ 'પઢિવાલે-
માણા ૨' પ્રતિપાલયન્તૌ ૨=પ્રતીક્ષમાણૌ ૨ તિષ્ઠત, કિન્તુ મા રુહુ યુવા
'દક્ષિણિણુ' દાક્ષિણાત્ય=દક્ષિણદિશાસમ્બન્ધિક વનપંડ ગચ્છત=યુવાભ્યા
દક્ષિણદિગ્વર્તિત્વનપંઢે ન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ । કરમાત્? ઇત્યાહ—તત્ર રુહુ મહાનેઃ—
'ઉગ્રવિસે' ઉગ્ર વિપ યસ્ય સ તથોક્ત । વિપસ્ય—ઉગ્રત્વં દુર્જરત્વાત્ । એવમગ્રેઽપિ
સયોજ્યમ્ । એવ 'ચઢવિસે' ચણ્ટવિપઃ, ચણ્ટત્વં ક્ષતિતિ પ્રતિપ્રદેશ વ્યાપન્ત્વાત્ ।
'ઘોરવિસે' ઘોરવિપ, ઘોરત્વ પરમ્પરાતઃ પુરુષસહસ્રસ્યાપિ ઘાતકત્વાત્ । 'મહા
વિસે' મહાવિપ, મહત્ત્વ જમ્બૂદ્વીપ પરિમિતશરીરસ્યાપિ વિનાશન્ત્વાત્ । 'અહ
કાપ' અતિક્રાંયઃ—અન્યસર્પાપેક્ષયા દીર્ઘશરીરત્વાત્, મહાકાયઃ—અન્યસર્પાપેક્ષયા
સ્થૂળ શરીરત્વાત્ । 'મસિમહિસમૂસાકાલણ' મપીમહિપમૂપાકાલકઃ—મપી=કજ્જલ,
મહિપ પ્રમિદ્ધઃ, મૂપા=સુવર્ણ દ્રાવણપાત્રવિશેષઃ, એતેર્પાં દ્વ દ્વે મપીમહિપમૂપા.,

ઘમતદિદ્વીવિસે સપ્પે ય પરિવસહ) યદિ હે દેવાનુપ્રિયો' તુમ્હારા વહા
ન લગે—ઉદ્ધિગ્ન એવ ઉત્સુક વન જાવે તો ફિર તુમ અપને હસી શ્રેષ્ઠ
પ્રાસાદ મેં વાપિસ આ જાના ઓર યહી પર રહતે હુણ હમારી પ્રતીક્ષા
કરના । દક્ષિણ દિશા સવન્ધી વનપંડ મેં મત જાના । કારણ વહા
એક એસા વહો ભારી સર્પ રહતા હૈ કિ જિસ કા વિપ વહુત અધિક
દુર્જર હોને સે ઉગ્ર હૈ । વહુત ઝીઘ્ર પ્રતિ પ્રદેશમેં ફેલ જાને સે ચણ્ડ હૈ ।
પરમ્પરા સે પુરુષ સહસ્ર કા ઘાતક હોને સે ઘોર હૈ, જમ્બૂદ્વીપ કે ઘરાચર
શરીર કા ભી વિનાશક હોને સે મહાન્ હૈં । અન્ય સર્પોં કી અપેક્ષા
યહ સર્પ વહુત લગા હૈ । તથા વહુત સ્થૂળ હૈ । મપી—કજ્જલ—મહિપ—
મૈસા ઓર મૂપા—સુવર્ણ કે પિંચલાને કા પાત્ર વિશેષ કે સમાન યહ
અત્યન્ત શ્યામવર્ણ વાલા હૈ । હિસ કી દોનોં ઑંચો મે વિપ રહતા હૈ

પાછા આવતા રહેલો અને અહીંજ રહીને મારી રહુ એ બે દક્ષિણ દિશાના
વનખડમા તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યા એક બહુ મોટો સાપ રહે છે તેનું
ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉગ્ર છે પ્રતિ પ્રદેશમા તે સત્વરે પ્રસરી બંધ
છે એટલા માટે તે ચડ છે પરપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી
ઘોર છે જમ્બૂદ્વીપ એટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાગ કરી શકે તેમ છે
તેથી તે મહાન્ છે બીજા સાપો કરતા તે બહુ જ લાંબો તેમજ ખૂબ જ મોટો
છે મપી—કાજળ, મહિપ—ભેસો, અને મૂપા—સોનાને ઓગળાવવા માટેનું પાત્ર
વિશેષ—ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રંગ વાળો છે તેની બંને આંખોમા પણ

વિશેષઃ, તા એવ તરજ્ઞાકારપરિણતત્વાદ્ ધન્યો=શુભ્રા વેલા યસ્ય સ તથા । 'સીય
લસુરભિ અનિલમગસચરિયો' શીતલસુરમ્પનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરભિશ્ચ
યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોભ્રમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમચ્છારો યત્ર સ
તથોક્તઃ । એવિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિદ્યત ઇતિ ॥ તત્ર સલુ વદીષુ વાપીષુ
યાવદ્ અભિરમમાણૌ વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગગીર્ષાદિક્રમેણ
દ્વૌ દ્વૌ મામૌ દેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-ર્ષ્યા-શરત્સન્નઃ પદ્મશ્ચત્રો ગમ્યન્તે ।
યદિ સ્વલ્લ યુવા દેવાનુપ્રિયૌ । તગ્રાવિ=પાશ્ચિમદિગ્વનપન્થેઽપિ ઉદ્વિગ્નો ઉત્પ્લુતૌ

ન્તિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈ-તટ હૈ-શીતલ સુરભિ પવન હી
જિસમેં મગરોં કા સ ચાર હૈં । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસ્પતિ
મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । (તત્થ ણ વહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) યહીંપર
અનેક વાપિકાઈ આદિ બી હૈ । સો ડન મેં બી તુમ દોનોં જાનન્દ
કે સાથ વિચરણ કરતે રહના । (જહ્ણ તુબ્બે દેવો-તત્થ વિ-
ઉવિગ્ગા, ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ, તત્થો તુબ્બે જેણેવ પાસાયવડિસણ
તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ વિદ્ધેજ્જાહ, માણ તુબ્બે
દક્ષિણિલ્લ વનસહ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ઇમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે, મહાવિસે, અઙ્કાય મહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિમહિં
સામૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુણ્ણે અજણપુંજનિયરપ્પગાસે રસચ્છે
જમલજુયલચ્ચલચ્ચલત્તીહે, ધરણિયલલેણિભૂણ, ઉવ્વકકડ પુડકુડિલ
જહિલકકલ્લવિયડકળાહોવકરણદ્ધચ્છે, લોગાહારધમ્મમાણધમ
ધમેતથોસે અનાગલિયચ્ચડિત્તિવરોસે સમુહિં તુરિય ચલ્લ ધમ

પવન જ જેમા મગરોતુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનસ્પતિ
સદા હાજર રહે છે (તત્થ ણ વહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ધણી વાવો
વગેરે છે તમે યને-તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જહ્ણ તુબ્બે દેવો-તત્થ વિ-ઉવિગ્ગા ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ તત્થો તુબ્બે
જેણેવ પાસાય-વડિસણ તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ વિદ્ધેજ્જાહ
માણ તુબ્બે દક્ષિણિલ્લ વનસહ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ઇમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે મહાવિસે અઙ્કાયમહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલણ
નયણવિસરોસપુણ્ણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રસચ્છે જમલજુયલચ્ચલ્લત્તી હે,
ધરણિયલલેણિભૂણ ઉવ્વકકડ પુડકુડિલ જહિલકકલ્લવિયડકળાહોર કરણ
દ્ધચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધર્મેતથોસે અનાગલિયચ્ચડિત્તિવરોસે સમુહિં તુરિય
ચલ્લ ધમધમત્ત દિઢીવિસે સપ્પે ય પરિવસહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

वा भवेत् तदा खलु युवा यत्रैव प्रासादावतसकः=स्वावासभवन तत्रैव उपागच्छत
 पुनः स्वप्रासादावतसके समागत्य स्थातव्यमित्यर्थः, 'मम' मा च 'पडिवाले
 माणा २' प्रतिपालयन्तौ २=प्रतीक्षमाणौ २ तिष्ठत, किन्तु मा खलु युवा
 'दक्षिणिल्ल' दक्षिणात्य=दक्षिणदिशासम्बन्धिक वनपण्ड गच्छत=युवाभ्या
 दक्षिणदिग्वर्त्तिवनपण्डे न गन्तव्यमित्यर्थः । करमात्? इत्याह-तत्र खलु महानेरः-
 'उग्रविसे' उग्र विष यस्य स तथोक्त । विषस्य-उग्रत्व दुर्जरत्वात् । एवमग्रेसि
 सयोज्यम् । एव 'चडविसे' चण्टविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेश व्यापनत्वात् ।
 'घोरविसे' घोरविष, घोरत्व परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात् । 'महा
 विसे' महाविष, महत्त्व जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशकत्वात् । 'अइ
 काए' अतिकायः-अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः-अन्यसर्पापेक्षया
 स्थूल शरीरत्वात् । 'मसिमहिसमूसागलए' मपीमहिपमूपाकालकः-मपी=कज्जल,
 महिप ममिद्ध, मूपा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे मपीमहिपमूपाः,

घमतदिष्टीविसे सप्पे य परिवसइ) यदि हे देवानुप्रियो' तुम्हारा वहा
 न लगे-उद्विग्न एव उत्सुक घन जावे तो फिर तुम अपने इसी श्रेष्ठ
 प्रासाद में वापिस आ जाना और यही पर रहते हुए हमारी प्रतीक्षा
 करना । दक्षिण दिशा सबन्धी वनपण्ड में मत जाना । कारण वहाँ
 एक ऐसा बड़ो भारी सर्प रहता है कि जिस का विष बहुत अधिक
 दुर्जर होने से उग्र है । बहुत शीघ्र प्रति प्रदेशमें फैल जाने से चण्ड है ।
 परम्परा से पुरुष सहस्र का घातक होने से घोर है, जम्बूद्वीप के बराबर
 शरीर का भी विनाशक होने से महान् हैं । अन्य सर्पों की अपेक्षा
 यह सर्प बहुत लम्बा है । तथा बहुत स्थूल है । मपी-कज्जल-महिप-
 भैसा और मूपा-सुवर्ण के पिघलाने का पात्र विशेष के समान यह
 अत्यन्त श्यामवर्ण वाला है । इस की दोनों आँखों में चिप रहता है

पाछा आवता रडेले अने अर्डीज रहीने भारी रड लेले दक्षिण दिशाना
 वनपण्डमा तमे जता नहि केम के त्या ओक जहु मोटो साप रडे छे तेनु
 ओर भूण ज दुर्धर होवा गदल उग्र छे प्रति प्रदेशमा ते सत्वर प्रसरी जाय
 छे ओटला माटे ते यड छे परपराथी ज ते पुरुष सहस्रने मारनारो होवाथी
 घोर छे जम्बूद्वीप ओटला प्रमाणुना शरीरना पणु ते नाग करी थके तेम छे
 तेथी ते महान् छे जीजा सापो करता ते जहु ज बायो तेम ज भूम ज मोटो
 छे मपी-काज्जल, महिष-केसो, अने मूपा-सोनाने ओगणाववा माटेनु पात्र
 विशेष-नीलेम ते भूण ज काणा रगवायो छे तेनी जने आचोमा पणु

વિશેષઃ, તા એવ તરઙ્ગાકારપરિણતત્વાદ ધ્યન્ન=શુભ્રા વેલા યસ્ય સ તથા । 'સીય
 હસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરભ્યનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરભિશ્ચ
 યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોન્નમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમશ્ચારો યત્ર સ
 તથોક્તઃ । એવિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ ચિયત ઇતિ ॥ તત્ર સ્વલુ વદીપુ વાપીપુ
 યાવદ્ અભિરમમાણૌ વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગશીર્ષાદિક્રમેણ
 દ્વૌ દ્વૌ માસૌ હેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-વર્ષા-શરત્સન્નઙ્ગાઃ પદ્મ શ્રુતયો ગણ્યન્તે ।
 યદિ સ્વલુ યુવા દેવાનુપિયૌ । તન્નાવિ=પાશ્વિમદિગ્વનપન્થેઽપિ ઉદ્ગિર્નાં ઉત્પ્લુતૌ

ન્તિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈં-તટ હૈં-શીતલ સુરભિ પવન હી
 જિસમેં મગરોં કા સ ચાર હૈં । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસડ
 મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈં । (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) રહીંપર
 અનેક વાપિકાઈ આદિ બી હૈં । સો ડન મેં મી તુમ દોનોં આનન્દ
 કે સાથ વિચરણ કરતે રહના । (જહણ તુમ્હે દેવો-તત્થ વિ-
 ઉવ્વિગ્ગા, ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ, તત્થો તુમ્હે જેણેવ પાસાયવડિંસણ
 તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠેજ્જાહ, માણ તુમ્હે
 દક્કિલ્લિલ્લ વનસડ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ઇમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
 ધોરવિસે, મહાવિસે, અઙ્કાય મહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિમહિ
 સામૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુણે અજણપુજ્ઞનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે
 જમલજુયલચચલચલનજીહે, ધરણિયલવેણિભૂણ, ઉવ્વકડ પુડકુડિલ
 જહિલકકલ્લવિયડફળાહોવકરણદચ્છે, લોગાહારધમ્મમાણધમ
 ધમેતયોસે અનાગલિયચ્છટિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય ચવલ ધમ

પવન જ જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખડમા
 સદા હોજર રહે છે (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ધણી વાવો
 વગેરે છે તમે ણને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જહણ તુમ્હે દેવો-તત્થ વિ' ઉવ્વિગ્ગા ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ તત્થો તુમ્હે
 જેણેવ પાસાય'વડિંસણ તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠેજ્જાહ
 માણ તુમ્હે દક્કિલ્લિલ્લ વનસડ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ઇમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
 ધોરવિસે મહાવિસે અઙ્કાયમહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલણ
 નયણવિસરોસપુણે અજણપુજ્ઞનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે જમલજુયલચચલચલત જી હે,
 ધરણિયલવેણિભૂણ ઉવ્વકડ પુડકુડિલ જહિલકકલ્લ વિયડફળાહોવ કરણ
 દચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધમેતયોસે અનાગલિયચ્છટિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય
 ચવલ ધમધમત દિઘીવિસે સપ્પે ય પરિવસહ')

હે દેવાનુપિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમે'નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रमिद्धे ध्मायमानः=परिताप्यमानो लोहः
 तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्यान् धोप.=शब्दो यस्य स तथा ।
 'अणागलियचडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीत्रगेप', अनाकलितः=अपरि-
 मितः चण्डतीत्रः= अत्यन्तोगो रोपो यस्य स तथा । 'समुद्धि' श्वमुत्तिका=
 श्वमुत्तस्येवाऽऽचरणं भुनक्ति इव भक्षणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा
 स्यात्तथा 'धमधमतदिद्विगिसे' धमधमायमानद्विट्ठिगिपः-धमधमायमान=जाज्व-
 ल्यमानम् दष्टो विप यस्य स तथोक्तः, एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद्
 'माण' मा गच्छ युवा तत्र गच्छतमिति सम्भवः । अन्यथा-तत्र गमने-युवयो
 शरीरस्य व्यापत्तिं भविष्यति । एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि'
 द्वितीयमपि तृतीयमपि तार द्वित्रितारमित्यर्थः, एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय
 समुदात्तेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुदात्त करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता
 समवहत्य=समुदात्तं कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणममृद् त्रिस-
 त्कृ-वः=एकत्रितितारम् 'अणुपरियट्टेउ' अनुपरियट्टितु परितोऽट्टितु प्रवृत्ता
 चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोप है चर अनाकलित-अपरिमित-है । कुत्ते के भौंकने के समान
 इस की आवाज निकलती है । यह त्वरा सपन्न और चञ्चल ही चपल
 है । इस की दृष्टि में विप सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ
 सरीरगस्स वाचत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव
 वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द-
 त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों
 वहाँ मत जाना । नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी । इसी
 प्रकार उस रथणा देवी ने उन माकदि दारकों को द्वारारा भी-तिपारा
 भी-समझाया बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुदात्त

उग्ररोप अनाकलित-अपरिमित-छे कूतरानी असपानी जेम तेना अवाज
 नीकणतो २छे २ आ त्वरा सपन्न अने चञ्चल २ चपल छे ऐनी आपभा
 ओर छे मेथा जाज्वल्यमान २छे छे

(माण तुब्भ मरीरगस्म वाचत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि
 एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-
 ममुदत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टेय पयत्ता यावि होत्था)

ऐतला भाटे तमे जाने त्या जाता नछि नछितर तमारा शरीरनु कुशल
 २छेशे नछि आ प्रभावे २ ते रथणा देवीओ माकरीदा-डोने जे वार त्रय
 वार समजन्थो अने समजन्थानु ठाप पताचीने तेजे वैक्रिय समुद्घात कर्यो

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रमिद्धे ध्मायमानः=ररिताप्यमानो लोहः
तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् घोषः=शब्दो यस्य स तथा ।
'अणागलियचण्डतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीत्रोपः, अनाकलितः=अपरि-
मितः चण्डतीत्रः= अत्यन्तोयो रोपो यस्य स तथा । 'समुद्धि' श्वमुखिका=
श्वमुखस्येवाऽऽचरणं भुन इव भयणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा
स्यात्तथा 'धमधमतदिट्ठिसे' धमधमायमानदृष्टिप्रियः-धमधमायमान=जाज्व-
ल्यमानम् दृष्टौ प्रिय यस्य स तथोक्तः, एतादृशं सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद्
'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः । अन्यथा-तत्र गमने-युवयो
शरीरस्य व्यापत्तिं भविष्यति । एव सा तौ मारुन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि'
द्वितीयमपि तृतीयमपि पारं द्वित्रिशरमित्यर्थः, एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय
समुद्धातेन 'समोहणइ' समवदन्ति वैक्रियसमुद्धातं करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता
समनहत्थ=समुद्धातं कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणममृद्भ्रं त्रिस-
प्तं वः=एकत्रिंशतिवारम् 'अणुपरियट्ठेउ' अनुपर्यटितुं परितोऽटितुं प्रवृत्ता
चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोप है वह अनाकलित-अपरिमित-है । कुत्ते के भोकने के समान
इस की आवाज निकलती है । यह त्वरा सपन्न और चटुत ही चपल
है । इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुग्भ
सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव
वयइ २ वेउव्वियसमुग्धाएण समोहणइ २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुह-
त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों
वहाँ मत जाना । नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी । इसी
प्रकार उस रयणा देवी ने उन मारुदि दारकों को दुवारा भी-तिघारा
भी-समझायो बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्धात

उग्ररोप अनाकलित-अपरिमित-छे इतरानी असवानी जेभ तेनो अवाज
निकलतो रडे छे आ त्वरा सपन्न अने भूम २ अपण छे जेनी आपभा
अर ड भेसा जाज्वल्यमान रडे छे

(माण तुग्भ मरीरगस्म वावत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि
एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्धाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-
ममुदत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्ठेय पयत्ता यावि होत्था)

जेटला भारे तमे जने त्या जता नडि नडितर तभारा शरीरनु कुशल
रडेछे नडि आ प्रभावे ज ते रयणा देवीजे मारुदीदारकेने जे वार त्रष
वार समजाना अने समजानालु काम पताचीने तेजे वैक्रिय समुद्धात कथे

તા ઇવ કાલકઃ=શ્યામવર્ણઃ ' નયનવિસરોસપુષ્પે ' નયનવિપરોષપૂર્ણઃ - નયનયો વિપરોષથ, તાભ્યા પૂર્ણઃ ' અજનપુજ નિયરપ્પગાસે ' અજનપુજનિકરપ્રકાશઃ-
 વજ્રજલપુષ્પાના નિકરઃ= રાશિઃ તદ્વત્પ્રકાશઃ=કાન્તિર્યસ્ય સ તથોક્ત-અત્યન્ત
 શ્યામ इत्यर्थ. ' રત્તચ્છે ' રક્તાક્ષઃ = રક્તનેત્ર ' ' જમલજુયલચચલચલતજીહે '
 યમલજુગલચચલચલજિજ્ઞહ -યમલે=સદ્વર્તિની યુગલે=ઉમે ચચલે=ચપલે ચલન્તયો
 પુન'પુનર્વહિર્નિસ્સરન્તયો જિહે યસ્ય સ તથા । ' ધરણીયલવેણિભૂષ ' ધરણિતલવેણી
 ભૂત અત્તિદૈર્યશ્યામસ્ત્રાદિસાદૃશ્યાત્ પૃથિવ્યા કેશપાશસદૃશઃ ' ઉવકઠકુટ
 કુટિલજહિલયવત્કલવિયલકલ્પલલોચનરણદચ્છે ' ઉત્કટસ્ફુટકુટિલજટિલ વર્કશ-
 વિકટસ્ફટાટોપકરણદક્ષઃ - ઉત્કટ = ચલવતાઽ પિ ધ્યસયિતુમશક્યઃ, સ્ફુટઃ
 વ્યક્તઃ કુટિલઃ=વક્રઃ, જટિલઃ-સિંહવત્ શટાપુક્તઃ, વર્કશ=વક્રોરઃ, વિકટથ=
 અયદ્ધુરો યઃ કટાટોપ=કળાડચ્ચરઃ તસ્ય કરણે વિસ્તારણે દક્ષ =નિપુણઃ । લોહા
 ગરધમ્મમાણગમધમત ઘોસે ' લોહાકરધ્માયમાન ધમધમાયમાન ઘોષ - લોહા

યજ્ઞ વડા ગુસ્સે ધાજ છે । વજ્રજલ પુજ કી રાશિ કે સમાન યહ તિલકુલ
 કાલા છે । હમ કે દોનોં નેત્ર સદા લાલ રહતે હૈં । હસ કી સાથ ૨ રહી
 હુઈ દોનોં ચચલ જિહ્વાઈ વાર ૨ વાદર નિકલની રહતી હૈં । અત્યન્ત
 દીર્ઘ એવ શ્યામ હોને કે કારણ યહ દેખને મેં એસા લગતા છે કિ જૈસે
 માનો પૃથિવી રૂપ સ્ત્રી કી વેણી ચોટી હી હો । ચલવાન પુરુષ બી જિસે
 નષ્ટ નહીં કર સકતા હૈં જો વ્યક્ત હૈં, કુટિલ-વક્ર-હૈં, સિંહ કે સમાન
 શટા સપન્ન હૈં, વર્કશ હૈં, ઓર વિકટ-અયકર હૈં-એસી અપની કળા
 કે ફેલાને મેં યહ વડા ભારી દક્ષ હૈં । બદી મેં તપતે હુઈ લોહે કા જૈસે
 ધમ ધમ શબ્દ હોતા હૈં ઉસી પ્રકાર હસ સે નિકલા હુઆ શબ્દ બી ધમ
 ધમ એસી આવાજ કરતા હુઆ હી નિકલતા હૈં । હમ કા અત્યન્ત જો

ઝેર રહે છે તે બહુ જ ક્રોધી છે તજજના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે તેના
 બને નેત્રો હ મેશા રાતા રહે છે તેની સાથે રહેનારી બને છતો ચચળ
 તેમજ વારવાર બહાર નીકળતી રહે છે બહુ લાળો અને કાળો હોવાથી તે
 જોવામા એવો લાગે છે કે બહુ પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન
 હોય બગવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ
 વક્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સપન (કેશવાળી) છે, વર્કશ છે, અને વિકટ-
 ભય હર-છે એવી ચોતાની દૃષ્ટાને ફેલાવવામા તે ભારે દક્ષ છે બહુમા તપા-
 વવામા આવેલા લોખંડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ
 તેમાથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો તેનો

करे=लोहतापनस्थाने 'भट्टी' इति भाषाप्रसिद्धे ध्मायमानः=वरिताप्यमानो लोहः
तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् धोषः=शब्दो यस्य स तथा ।
'अणागलियचडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीत्रोपः, अनाकलितः=अपरि-
मितः चण्डतीत्रः= अत्यन्तोग्रो रोपो यस्य स तथा । 'समुहिं' श्वमुखिका=
श्वमुखस्येवाऽऽचरणं भुनक्ति इव भक्षणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा
स्वात्तथा 'धमधमतदिद्विप्पिसे' धमधमायमानदृष्टिप्रियः-धमधमायमानः=जाज्व-
ल्यमानम् दष्टो प्रिय यस्य स तथोक्तः, एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद्
'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः । अन्यथा-तत्र गमने-युवयो
शरीरस्य व्यापत्तिं भविष्यति । एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि'
द्वितीयमपि तृतीयमपि गार द्वित्रिगारमित्यर्थः, एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय
समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घातं करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता
समवहत्य=समुद्घातं कृत्वा तया=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्घातं त्रिस-
प्तकृ-वः=एकत्रिंशतिवारम् 'अणुपरियद्वेउ' अनुपर्यटितुं परितोऽटितुं प्रवृत्ता
चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

वज्ररोप है वह अनाकलित-अपरिमित-है । कुत्ते के भोंकने के समान
इस की आवाज निकलती है । यह त्वरा सपन्न और बहुत ही चपल
है । इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ
सरीरगस्स यावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव
वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्घा-
त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियद्वेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों
वहाँ मत जाना । नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी । इसी
प्रकार उस रघणा देवी ने उन माकन्दि दारकों को हुंकारा भी-तिवारा
भी-समघ्नायो बुद्धाया फिर समघ्ना बुद्धाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

उभयोऽपि अनाकलित-अपरिमित-छे कृतशानी असवानी जेम तेना अवाज
नीकणतो रडे छे आ त्वरा सपन्न अने भूम ज अपण छे ऐनी आपभा
अरे छेमेशा जाज्वल्यमान रडे छे

(माण तुब्भ सरीरगस्स यावत्ती भविस्सइ ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि
एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-
समुद्घात्तिसत्त खुत्तो अणुपरियद्वेय पयत्ता यावि होत्था)

ऐतदा माटे तमे अने त्या जाता नहि नडितर तभारा शरीरनु कुशल
रडेशे नहि आ प्रभावे ज ते स्थला देवीजे माकन्दिद्वन्द्वेने जे वार त्रय
वार समज्जोया अने समज्जन्तानु काप पतावीने तेजे वैक्रिय समुद्घात कथे

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स
पांसायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अण्णम-
मण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । रयणदीवदेवया
अम्हे एव वयासी--एव खलु अह सक्कवयणसदेसेणं सुट्ठिएणं
लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, त सेयं खलु अम्ह
देवाणुप्पिया । पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्सं
एयमट्ठ पडिसुणेति२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा-
गच्छंति२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघर-
एसु य जाव विहरंति, ततेण ते मागदियदारया तत्थवि सइं
वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२
तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं
ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्च-
त्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएण ते मा
गंदिय० तत्थवि सति वा जाव अलभ० अण्णमण्ण एव वयासी
--एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-
एवं खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठिएणं
लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति
तं भवियव्व एत्थकारणेणं, त सेयं खलु अम्ह दक्खिणिहं

किया । समुद्रात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण
समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

समुद्रात करीने ते पोतानी प्रसिद्ध देव गतिथी ओकवीस वणन लवणसमुद्रनी
आरे भागुओ भ्रमण करवामा प्रवृत्त थई गई ॥ सूत्र " ४ " -

वणसडं गमित्तए तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ट पडिसुणेति २
जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं
गंधे निज्जाति से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए
चेव, तएणं ते मार्गंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया
समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति२ जेणेव दक्खि-
णिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एग आघायणं
पासति अट्टियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगं च तत्थ
सूलायतय पुरिस कलुणाइ कट्टाइं विस्सराइ कुजमाण पासति,
पासित्ता भीता जाव सजातभया जेणेव सेसूलातियपुरिसे तेणेव
उवागच्छति२ ते सूलाइय एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ।
कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा
इमेयारूव आवत्ति पाविए १, तएणं से सूलाइयए पुरिसे मार्गं-
दियदारए एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया । रयणदीवेदेव-
याए आघयणे अहणं देवाणुप्पिया । जवूदीवाओ दीवाओ
भारहाओ वासाओ कागदीए आसवाणियए विपुल पणियभं-
डमायाए पोतवहणेण लवणसमुद ओयाए, तएण अह पोय-
वहणविवत्तीए निव्वुड्ढभंडसारे एगफलगखड आसाएमि, तएण
अह उवुज्झमाणे२ रयणदीवतेणं सवूडे, तएण सा रयणदीवदे-
वया मम ओहिणा पासइ२ मम गेणहइ२ मए सडिं विपुलाइ
भोगभोगाइ भुजमाणी विहरति, तएण सा रयणदीवदेवया
अण्णया कयाई अहालहुसगसि अवराहसि परिकुत्रिया समाणी
मम एयारूव आवति पावइ, त ण णज्जति णं देवाणुप्पिया ।

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स
पासायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अण्णम
मण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । रयणदीवदेवया
अम्हे एव वयासी- एव खलु अह सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिणं
लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेय खलु अम्हं
देवाणुप्पिया । पुरच्छिमिहं वणसड गमित्तए, अण्णमण्णस्स
एयमट्ठ पडिसुणेतिर जेणेव पुरच्छिमिहं वणसंडे तेणेव उवा-
गच्छंतिर तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघर-
एसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं
वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२
तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं
ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्च-
त्थिमिहं वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएणं ते मा
गंदिय० तत्थवि सति वा जाव अलभ० अण्णमण्ण एव वयासी
--एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-
एवं खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स वयणसंदेसेण सुट्ठिणं
लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति
तं भवियं एत्थकारणेणं, त सेय खलु अम्हं दक्खिणिहं

किया । समुद्रात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण
समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

समुद्रात करीने ते पोतानी प्रसिद्ध देव गतिथी ओक्कीय वणन लवणसमुद्रनी
आरे पाणुओ अभय करवाभा प्रवृत्त थई गर्ई ॥ सूत्र " ४ " ॥

पश्चात् मुहूर्तान्तरात्=रटिकाद्वयरूपमुहूर्तान्तरमित्यर्थात् प्रासादामतमके 'सङ्घा' स्मृति अतिव्याकुलचित्तनया भविष्यत्कालिकसुखबाहुल्यरूपा वा, 'रङ्ग' रति=मनोमुद वा 'धिङ्' धृति=चित्तस्वास्थ्य वा 'अलभमाणा' अलभमानौ सन्तौ अन्योन्यमेवमयादिष्टाम्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! रत्नद्वीपदेवता आगमेन मवादीत्-एव खलु अहं सक्रवचनसदेशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावद् व्यापत्तिर्भविष्यति, 'त' तत्=तस्मात्कारणात् त्रयः खलु आवयो हे देवानुप्रिय ! पौरस्त्य=पूर्वस्या दिशिस्थित वनपण्ड गन्तुम् । अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रुणुतः=

दारया) उन दोनो मारुदी के पुत्रो ने (तओ मुहूर्ततरस्स पासाय वडिसए सङ्घ वा रङ्ग वा धिङ् वा अलभमाणा अणमण एव वयासी) एक मुहूर्त भी उस श्रेष्ठ प्रासाद में अति व्याकुलित चित्त होने के कारण भविष्यत्कालिक सुख बाहुल्य रूप स्मृति को मनोमुद (मन को प्रसन्न करने वाला) रूप रति को और चित्तस्वास्थ्य रूप धृति को नहीं पाते हुए परस्पर में ऐसा विचार किया- (एव खलु देवानुप्रिया ! रयणहीवदेवया अम्हे एव वयासी) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवी ने हम लोगो से ऐसा कहा है कि (एव खलु अहं सक्रवचनसदेशेन सुद्विष्टेण लवणाहिचङ्गणा जाव वावत्ती भविस्सइ-त सेय खलु अहं देवानुप्रिया ! पुरञ्चि मिल्ल वणसड गमित्तए) " मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञानुसार लवण समुद्राधिपति सुस्थित देव ने ऐसा आदेश दिया है कि मैं २१ बार लवण समुद्र की प्रदक्षिणा करूँ " इत्यादि से लेकर

(तओ मुहूर्ततरस्स पासायवडिसए सङ्घ वा रङ्ग वा धिङ् वा अलभमाणा अणमण एव वयासी)

ते भडेलभा ओक मुहूर्त जेटला प्रभाषुना सभयभा पणु शाति भेजवी नडि तेओ व्याकुल चित्त होवाथी भविष्यभा प्राप्त थनारा सुभ ३५ स्मृतिने मनोमुद (मनने आनन्दित करना) ३५ रतिने आने चित्त स्वास्थ्य ३५ धृति प्राप्त न करता ओक भीषणी साथे विचार करवा लाग्या (एव खलु देवानुप्रिया ! रयणहीव देवया अम्हे एव वयासी) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवीओ अभने कछु छे के

(एव खलु अहं सक्रवचन सदेशेण सुद्विष्टेण लवणाहिचङ्गणा जाव वावत्ती भविस्सइ- त सेय खलु अहं देवानुप्रिया ! पुरञ्चि मिल्ल वणसड गमित्तए)

मने शक्रेन्द्रनी आज्ञाथी प्रेरणने लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देवे हुकम कथी छे के भारे ओकवीथ वणत लवण समुद्रनी प्रदक्षिणा करवी वगेदेथी

तुम्हंपि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ? तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमतथं सोच्चा णिसम्म वलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतय पुरिस एवं वयासी—कहणं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवे देवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थरिज्जामो ? तएण से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एव वयासी—एसणं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिह्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरू वधारी जक्खे परिवसति, तएण से सेलए जक्खे चोइसट्टमुद्धि-ट्टपुणमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महयार सहेण एव वदति कं तारयामि कं पालयामि ? त गच्छह णं तुब्भे देवा-णुप्पिया ! पुरच्छिमिह्ल वणसड सेलगस्स जक्खस्स महारिह पुप्फच्चणियं करेह करित्ता जाणुपायवडिया पजालिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा—क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वदह—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ॥सू०५॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि—ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ततः=

‘ तएण ते मागदिय दारया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) उस रयणा देवीके चले जाने के बाद (ते मागदिय

(तएण ते मागदिय दारया ’ इत्यादि

टीकार्थ—(नएण) त्या२ ५४ (ते मागदियदारया) ७ ने भा३ टी२ पुत्रोअ

वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीयु च यावद् आलिङ्ग्येभ्यु च यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिदरुदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैव पाश्चान्यो वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिदरुदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एव खलु हे देवानुमिय ! आवा रत्नद्वीपदेयता-एवमवदत्-एव खलु अह देवानुमियो ! शक्रस्य वचनमन्देशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावत् मा खलु युवयोः

सपन्धी वनपण्ड था वहा आये । वहा आकर उन्हो ने वावडिओ में स्नान किया-यावत् आलिङ्गरो में क्रीडा किया । (तण्ण ते मागदियदारगा तत्थ वि सइ वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति) परन्तु जब उन्हें वहा भी स्मृति आदि रूप कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहाँ से निकल कर पश्चिम दिशा सपन्धी वनपण्ड था वहा आये ।

वहा आकर उन्हो ने वावडिओ में स्नान किया और आलिङ्गरो आदि में परिभ्रमण किया । (तण्ण ते मागदिय० तत्थ वि सइ वा जाव अलभ० अणमण्ण एव वयासी) फिर भी उन माकदी-के उन दोनों पुत्रों को वहा शांति आदि कुछ भी नहीं मिला जब इस प्रकार की परिस्थिति उन्हो ने देखी तो परस्पर में ऐसा विचार किया (एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्टण्ण लवणादिवड्ढणा जाव माण

वनपण्डमा पडोत्था त्या पडोत्थीने तेओओ वावोमा स्नान कथुं यावत् आलिङ्गरोमा क्रीडाओ करी

(तण्ण ते मागदियदारगा तत्थ सइ वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति)

पण्ण त्या पण्ण तेभने ज्यारे स्मृति वगेरे इप कथं पण्ण सुभ भण्ण नडि त्यारे तेओ त्याथी नीकणीने पश्चिम दिशाना वनपण्डमा पडोत्था

पश्चिम दिशाना वनपण्डमा जधने तेओओ वावोमा स्नान कथुं अने आनिधरो वगेरेमा विवरणा कथुं

(तण्ण ते मागदिय० तत्थावि सइ वा जाव अलभ० अणमण्ण एव वयासी)

त्या पण्ण पडेलानी जेमज माकदी पुत्रोने कथं पण्ण जननी शांति वणी नडि आवी परिस्थितिमा तेओओ परस्पर भणीने विचार कथो क

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्टण्ण लवणादिवड्ढणा जाव माण

स्वीकुरुतः, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यनैव पीरत्यो वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागच्छ
तत्र खलु वापीषु च यावद् अभिरममाणौ आलिगृहेषु च यावद् विहरतः । ततः
खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमाणौ यत्रोत्तरीयो

शरीर का विभ्वस न हो यहा तक का रयणा देवी का सब कथन यहाँ
इन दोनों की घात चीत में लगा लेना चाहिये । इसलिये हे देवानुप्रिय !
हम लोगो को यही अब उचित है कि हम लोग पूर्वदिशा सषन्धी वन
खंड में चले । (अण्ण मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छि
मिल्ले वनसड तेणेव उवागच्छति २ तत्थ ण वावीसु य जाव अभिर-
ममाणा आलीघरएसु य जाव विहरति) हम प्रकार परस्पर में किये
इस विचार को उन दोनों ने मान लिया और मान कर जहां पूर्वदिशा
सषन्धी वनपण्ड था वहाँ गये-वहाँ जाकर उन्होंने ने बावड़ी आदि में
खूब मन चाहा क्रीडा की बाद में वे रम्य वनस्पति विशेष के घरों
आदि में क्रीडा करने लगे । (तएण मगदियदारया तत्थ वि सतिं वा
जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वणसडे तेणेव उवागच्छति तत्थ ण
वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरति) परन्तु उन माकड़ी
दारकों को वहा जय भविष्यत्कालीन सुख बाहुल्य रूप स्मृति आदि
कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहा से निकल कर जहा उत्तर दिशा

भाडीने तमारु शरीर नष्ट थाय नडि त्या सुधीनी राषा देवीनी उपर कड्या
मुज्जणी पधी विगत अडिं समभवती जेज्जे अरी डे देवानुप्रिय । डरे
अमने जेज्ज थोव्य देणाय छे डे अमे पूर्व दिशाना वनणडमा नथंजे

(अण्ण मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसडे तेणेव
उवागच्छति २ तत्थ ण वावीसु य जाव अभिरममाणा आलिघरएसु य जाव
विहरति)

आ प्रभावे जने जेके जीज्जना विज्ज शोथी सभत थया अने त्यार पधी
ज्या पूर्व दिशाना वनणड डने। त्या गगा, त्याज्जने तेज्जोवे वावो वगेरेमा
थूज्ज ज प्रभापुमा डीडाज्जो करी अने पधी तेज्जो त्याना ज रम्य वनस्पति
विशेषना गृहे। वगेरेमा डीडा करवा लाग्ग।

(तएण मागदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले
वणसडे तेणेव उवागच्छति तत्थ ण वावीसु य जाव आलिघरण्ण य जाव विहरति)

परा माकडी दारकोने त्या पथु ज्याने भविष्यतु सुख बाहुल्य रूप
स्मृति वगेरे कर्त मज्जु नडि त्यारे तेज्जो त्याधी नीकणीने उत्तर दिशाना

तत्र-गमनमार्गे गन्धः ' निद्राह ' निर्धारति=सायेग समायाति, कीदृशो गन्धः ?
इत्याह- ' से जहानामए ' तद् यथनामरूप-तथाहि- ' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक
इति वा=मृतसर्पकलेवरमिति वा यावत् ' एत्तो वि ' तस्मादपि मृतसर्पादिकलेव
रादपि ' अणिट्तराए चेव ' अनिष्टतर एव=यन्नामशरणेऽपि मनोऽतिविकृत
जायते । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ तेनाशुभेन गन्धेन ' अभिभूयसमाणा '
अभिमृतौ=व्याकुलौ सन्तौ स्पर्शेन उत्तरीयेण=उत्तरासङ्गेन ' दुपट्ठा ' इति प्रसिद्धेन
आस्य=मुखैरुद्देशरूप स्व स्व नामिकामित्यर्थः ' पिहेति ' पिष्टः=समाच्छादयतः,
पिधाय=नासिकामाच्छाद्य यत्र दाक्षिणाच्यो वनपण्टस्तत्रैवोपागतौ । तत्र खलु

उन्होंने आपस में निश्चित भी कर लिया । (पडिसुणिता जेणेव दक्खि
णिल्ले वणसडे तेणेव प्हारेत्थ गमणाए-तएण गधे निद्राति से जहा
नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्तराए चेव, तएण ते मागदियदारया ते-
ण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसति
पिहेति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया तत्थण मह एग
आघायण पासति) विचार निश्चित कर फिर वे दोनों जहा दक्षिणदिशा
सम्यन्धी वनपड धा उस ओर चल दिया । चलते २ उन्हें मार्ग में बहुत
बड़ी दुर्गन्ध आई । जैसी दुर्गन्ध मृत सर्प आदि सडे हुए कलेवर से
आती है उससे भी अधिक अनिष्टतर वह दुर्गन्ध थी ।

इस के अनन्तर उन दोनों माकदिके दारकों ने उस अशुभ गन्धसे
व्याकुल होकर अपने अपने मुख के एक देशरूप भाग नासिका को दु-
पट्टे के पश्चाद्देश से ढक लिया । ढक कर फिर वे दक्षिण दिशा समन्धी

(पडिसुणिता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव प्हारेत्थ गमणाए-तएण गधे,
निद्राति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्तराए चेव तएण ते मागदिय
दारया तेषं असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसति पिहेति २
जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया तत्थण मह एग आघायण पासति)
अने त्थार पछी तेज्जो जने जे तरइ दक्षिण दिशा समन्धी वनपड
हतो ते तरइ रवाना थ्या रस्तामा आलता आलता तेज्जोने ऐकइम पराज
दुर्गन्ध आवी भरीने सडी गयेवा सापना शरीरनी ज जेवी अनिष्टता दुर्गन्ध
छाय छे तेवी ज ते दुर्गन्ध पणु हती भाउही दारकोज्जे ते अशुभ गधथी
व्याकुल थधने पोताना मोना ऐक देश रुप लाग नाकने जेसना छेडाथी ढाडी
ढीधु ढाडीने तेज्जो आगण दक्षिण दिशाना वनपडमा गया त्या जता ज
तेज्जोने ऐक शूणी यदावनानी जग्ग्या जेध

શરીરસ્ય વ્યાપત્તિર્ભવિષ્યતિ, 'ત' તત્=તસ્માત્-શરણાદ્ ભવિતવ્યમત્ર કારણેન, તત્ચ્છેય ચલુ આપયો દાક્ષિણાત્ય વનપટ્ટ ગન્તુમ્, 'ઇતિકદ્દુ' ઇતિકૃન્વા ઇતિનિચાર્ય અન્યોન્યસ્યૈતમથં પ્રતિશ્રુણુત, પ્રતિશ્રુત્ય યત્રૈવ દાક્ષિણાત્યો વનપટ્ટસ્તત્રૈવ 'પદારેત્ય ગમનાપ્' પ્રધારયતો ગમનાય=ગન્તુ પ્રવૃત્તૌ પ્રસ્થિતામિત્યર્થઃ । તતઃ ચલુ=તદનુ

તુભ સરીરગસ્સ વાચ્તી ભવિસ્સહ ત ભવિયવ્ય एत्थ કારણેન ત સેય ચલુ અમ્હ દક્ષિણિલ્લ વણમહ ગમિત્તણ ત્તિકદ્દુ અણમણસસ एय-મદ્દ પહિસુળેતિ) હે દેવાનુપ્રિય યદ્ તો તુમ્હે જ્ઞાન હી હૈ કિ રયણઘીપ દેવતા-રયણાદેવી-ને જો જમલોગોં સે એમા કહા થા કિ મુક્કે શકેન્દ્ર કી આજ્ઞા સે લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવને લવણસમુદ્ધ કી ૨૧ વાર પર્યટના કરને કે લિયે કહા હૈ ઇત્યાદિ ૨ । સો તુમ દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધી વનપટ્ટ કે સિવાય ત્રીન દિશા સમ્બન્ધી વનપટ્ટોં મેં હી ચિત્ત કે ઉદ્ધિગ્ન આદિ હોને પર જાના વહા કી વાવઢિઓં આદિ મેં બી સ્નાન આદિ કર અપને મન કો આનદિત કરના દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધ વનપટ્ટ મેં નહી જાના વહા ઇક મહાકાય વિકરાલ સર્પ રહતા હૈ । કહી એમા ન હો કિ વહા જાને પર ઉસકે દ્વારા તુમ્હારી મૃત્યુ હો જાય-સો ઉસકે હસ કથન મેં કોઈન કોઈ કારણ અવશ્ય હોના ચાહિયે । અત્ત હસ કારણ કી જાચ કે લિયે હમેં દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધી વનપટ્ટ મેં જાના શ્રેષ્ઠ સ્કર હૈ । એસા ડન્હોને પરસ્પર મેં વિચાર કિયા । ઓર હસ વિચાર કો

તુભ સરીરગસ્સ વાચ્તી ભવિસ્સહ ત ભવિયવ્ય एत्थ કારણેન ત સેય ચલુ અમ્હ દક્ષિણિલ્લ વણમહ ગમિત્તણ ત્તિકદ્દુ અણમણસસ एय-મદ્દ પહિસુળેતિ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એ વાત તમે જાણતા જ હશે કે રત્નહીનતા દેવતા રચણા દેવીએ અમને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શકેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઈને લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે એકવીસ વાર સમુદ્રની ચારે બાજુ ભારે પરિભ્રમણ કરવું છે વગેરે તો તમે દક્ષિણ દિશા તરફના વનપટ્ટ સિવાય બાકીના ત્રણે દિશાના વનપટ્ટોમાં ચિત્ત ઉદ્ધિગ્ન થાય ત્યારે જલો ત્યાંની વાવો વગેરેમાં સ્નાન વગેરે કરીને પોતાના મનને પ્રમત્ત કરજો દક્ષિણ દિશા તરફના વનપટ્ટમાં તમારે જવું નહીં કેમ કે ત્યાં એક મોટો મહાકાળ વિકરાળ સાપ રહે છે કઈ એવું થાય નહિ કે તમે ત્યાં જાઓ અને તેની લપેટમાં આવીને તમારું મૃત્યુ થઈ જાય તો તેનો આ વાનમા કઈક રહસ્ય ચેક્ષ્મ હોવું જોઈએ એટલા માટે આ રહસ્ય વિશે ત્યાં જઈને આપણે કઈક જાણવું તો જોઈએ જ આમ પરસ્પર વિચાર કરીને તેઓએ ત્યાં જવાનો મક્કમ વિચાર પામ્યો જી લીધો

मेवमवादिष्टाम्-एतत्खलु हे देवानुप्रिय । कस्यापातन=वधस्थानम् ? त्वं च खलु-
कोऽपि कुतो वा कस्मात्स्यानात् इह हव्यमागतः समागतः ? केन वा इमाभेत
भूपामापत्तिं प्रापितः ? । ततः खलु स शूलार्चितकृ=शूलारोपितः पुरुषो माकन्दि-
दारकावेवमवदत्-एव खलु हे देवानुप्रियौ रत्नद्वीपदेवताया आघातन=रत्नद्वीप-
देवतया स्थापित वधस्थानम्-अहं खलु हे देवानुप्रियौ ! जम्बूद्वीपात्=जम्बूद्वीपा-
भिधानाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद्=भरतक्षेत्रात् माकन्दीनगर्या ' आसवाणियए '
अश्वपणिकः=अश्वव्यापारी त्रिपुल ' पणियभाड ' पणितभाण्ड=विक्रय वस्तु-
जातम्, आदाय=गृहीत्वा पोतवहनेन लग्नसमुद्रम् ' ओवाए ' अत्रयातः=अत्रगा-

प्रकार कहा-(एस ण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च णं केकओवा इह
हव्वमागए केणवा इमेयारुव आचत्ति पाविए ? तएण से सुलाइयए पुरिसे
मागदियदारए एववयासी-एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघ
यणे अहण देवाणुप्पिया ! जव्वुदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ काग
दीए आसवाणियाए त्रिपुल पणिय भडमायाए पोतवहणेण लग्नसमुद्र
ओवाए) ह देवानुप्रिय ! 'कस्साघयणे' यह शूली स्थान किसका है । तुम
कौन हो ? यहां कहासे आये हो ? और किसने तुम्हें इस आपत्तिमे डाला
है । उन की इस बात को सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन दोनों
मारुदी-दारकों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! यह शूली स्थान
रयणादेवीका है, मैं हे देवानुप्रियो ! जव्वुद्वीप नाम के द्वीपमे वर्तमान भरत
क्षेत्रस्थ कारुदी नाम की नगरी का निवासी अश्ववणिक-घोड़ों का
व्यापारी हूँ । मैं यहां से क्रियवस्तु समुद्र को लेकर नौकाद्वारा इस

(तएण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च णं केकओवा इह हव्वमागए
केणवा इमेयारुव आचत्ति पाविए ? तएण से सुलाइयए पुरिसे मागदियदारए
एववयासी-एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघयणे अहण देवाणु
प्पिया ! जव्वु दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागदीए आमवाणिगए
त्रिपुल पाणिय भडमायाए पोतवहणेण लग्नसमुद्र ओवाए)

हे देवानुप्रिय ! आ शूला स्थान कौन के ? तमे जेणु छे ? अही तमे
कथाथी आव्या छे ? अने जेणु तमागी आवी छालत उरी छे ? तेओनी वात
साअणीने शूली उपर लटकता भाजुसे माकदीदारकेने आ प्रभाणु कहु के छे
देवानुप्रियो ! आ शूला-स्थान रयणा देवीनु के छे देवानुप्रियो ! हु जव्वुद्वीप
नामना द्वीपमा विद्यमान भरतक्षेत्रने काउदी नामनी नगरीने रह्यो छे हु
अश्व वणिक्-घोड़ाने व्यापारी-छे, त्याथी हु वेवाणुनी वस्तुओ साथे लधने
नावपडे आ लवण समुद्रमा यात्रा करतो आव्यो छेतो (तएण अइ पोय

महदेकम् 'आघायण' आघातनम्=आघातस्यान उधस्यानमित्यर्थः पश्यतः, - तत् स्थान कीदृशम् ? इत्याह- 'अद्वियरासिसयसकुल' अस्थिराशिशतमकुलम्-अस्थनां राशिः=पुञ्जः, तेपा शतानि, तैः सङ्कुल=व्याप्तम् 'भीमदरिसणिज्ज' भीमदर्शनी यम्-दर्शनमात्रेऽपि भयजनकम् । पुनश्च तत्रैक 'सूलाइतय' शूलाचितक=शूलारोपित पुरुष 'कलुणाइ' कलुणानि=कलुणाजनकानि 'कट्टाइ' कट्टानि=हृदयदुःखोत्पादकानि 'विस्मराइ' विस्मराणि=मिकृतध्वनिकानि वचनानि 'कुज्जमाण' कुजन्तम्=अव्यक्तरूपेणोचरन्त पश्यतः । दृष्ट्वा च भीती 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन-प्रस्तौ प्रसितौ=त्रास प्राप्तौ उद्विग्नौ इति, 'सजातभया' सञ्जातभयौ=प्राप्त भयौ तौ यत्रैव स शूलाचितपुरुषस्यैवोपागच्छतः, उपागत्य त शूलाचित पुरुष

उस वनपड मे गये । वहा जाते ही उन्होंने ने एक शूली चढानेका का स्थान देखा । (अद्वियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगच तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्टाइ विस्मराइ कुज्जमाण पासति पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति) जिस में सैकड़ों हड्डियों के ढेर लगे हुए थे । एव जो देखने में बड़ा भयप्रद था । वही पर उन्होंने ने शूली पर चढे हुए एक पुरुष को देखा जो बहुत बुरी तरह चिला चिल्ला रहा था । उसके इस चिल्लाने की आवाज को सुनकर हृदय में दया का प्रवाह बहने लग जाता था । साथ २ में चित्तमें दुःख भी होने लगता था । उसको देखकर ये दोनों भयभीत हो गये । त्रास एव उद्वेगसे युक्त बन गये । इसी स्थितिमें ये दोनों जहाँ वहा शूलीपर चढा हुआ पुरुष था, वहा पहुँचे (उवागच्छित्ता) वहा पहुँच कर (त सूलाइय एव वयासी) वहाँ ने उस शूलारोपित मनुष्य से इस

(अद्वियरासिसयसकुल भीमदरमणिज्ज एग च तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्टाइ कुज्जमाण पामनि पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति)

त्या से कडो डाँडाओना ठगला पड्या हुता त्यानु दृश्य ओकेदम भयप्रद हुतु तेओओ त्या शूणी उपर चढेता ओक भाणुसने ओयो के जे भडुअ भराभ रीते करुणु केदन करी रह्यो हुतो तेनी करुणु लयाँ अवाजने सालगीने हृदयमाँ दयाने प्रवाह पडेता लागनेो हुतो अने साथे साथे तेनी ओपी हुदशा ओधने भनभा हु अ पणु थतु हुतु तेओ भने तेने ओधने डरी गया त्रास अने उद्वेग युक्त थरु गया आ प्रभाणु तेओ भने जना ते भाअम शूणी उपर लटकी रह्यो हुतो त्या गया (उवागच्छिता) त्या ओधने (त सूलाइय एव वयासी) तेओओ शूणी उपर लटकता भाणुसने आ भम

ता सती मामेतद्गुणमापत्तिं प्रापयति तन्न ज्ञायते खडुहे देवानुप्रियो । युवयोः रय-
नयोः शरीरयो का=कीदृशी आपत्तिर्भाविष्यति?, इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

ततः खडु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिरुदरकौ एवमगदीत्-एव खडु
हे देवानुप्रियो ! पौरस्त्ये वनपण्डे शैलकस्य यक्षस्य यक्षायतने शैलको नाम अश्व

समय मेरे द्वारा उसका थोड़ा सा अपराध बन गया सो उस थोड़े
से अपराध के घन जाने पर वह बहुत अधिक क्रुपित हो गई ।
क्रुपित होकर उसने मझे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है । अतः
हे देवानुप्रियो ! तुम दोनों के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन
जान सकता है-मैं इसीका विचार कर रहा हूँ । (तएणं ते मागदिय
दारया तस्स सूलाइयास्स अति एयमद्व सोच्चा गिसम्म वलियनरं
भीया जाव सजायभया सूलाइसय पुरिस एव वयासी) इस तरह उस
शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी
तरह हृदय से विचार कर वे दोनों मारुदी-दारक बज्जिनर- अत्यन-
भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्होंने ने फिर उस शूलारोपित
पुरुष से इस प्रकार कहा (कहण देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीव
देवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो ?) हे देवानुप्रिय ! हम लोग
कैसे इस रयणा देवो के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकने हैं- (तएणं
से सूलाइयए पुरिसे ते मागदिय० एव वयासी एमणं देवाणु प्पिया ! पुर

तेणे धम्मो भुज्ज कामे लोगे लोगन्था केअ ओअ वण्णते माराधी सडेअ
भूअ थअ गअ ते मारी सडेअ भूवयी पण्ण अत्थधिके गुस्से थअ गअ अने
तेणे त्थार पटी मारी आवी डावत करी छे अथी छे देवानुप्रियो ! तमार
शरीरनी पण्ण शी दशा थये ! ते केअ न्णणी शडे तेम छे हु अत्थारे ओअ
विचार करी रह्यो छु

(तएण ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्य अति एयमद्व सोच्चा
गिसम्म वलित्तर भीया जाव सजायभया सूलाइसय पुरिस एव वयामी)

आ शूली उपर लटकता माण्डसना मोधी आ गधी विगत न्णणीने
तेना उपर भूअ न गल्लीरताथी निरार करीने तेओ गने माकेही दारके
भूम न-अयसीत थअ गया यावत् अत्रस्त थनि तेओ गनेओ शूली उपर
लटकता माण्डमने आ प्रभावे कछु के

(कहण देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो)
हे देवानुप्रिय ! रयणा देवीना हाथमाधी अने नटनी केवा रीते मुक्त
प शकीओ ?

હિતવાન । તતઃ સ્વલ્પ અહ 'પોતપદ્મવિવત્તી' પોતપદ્મવિવત્તી, નૌનાયાં મગ્નાયાં
 સત્યાં 'નિવ્વુહ્મહસારે' નિવ્વુહિતમાણ્ડસારઃ જલનિમગ્નસ્તુતારઃ, એક ફળક-
 સ્વલ્પમાસાદયામિ । તતઃ સ્વલ્પ અહ 'ઉચ્ચુજ્જમાણે ૨ ઉદ્ધુધ્યમાનઃ ૨ ઉત્તરન્ ૨
 રત્નદ્વીપાન્તે=રત્નદ્વીપસમીપે સ્વલ્પ 'સવૂદે' સન્યૂદ=તીર પ્રાપ્તઃ । તતઃ સ્વલ્પ સા
 રત્નદ્વીપદેવતા મામ્ 'ઓહિણા' અવધિન=અવધિજ્ઞાનેન મર્યતિ, દૃષ્ટા મા ગૃહતિ,
 ગૃહીત્વા મયા સાર્દ્ધં વિપુલાન્ ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ 'શુજમાણી' શુજ્ઞાના
 'વિહરઈ' વિહરતિ=આસ્તેસ્મ । તતઃ સ્વલ્પ સા રત્નદ્વીપદેવતા, અન્યથા કદાચિદ્
 'અદ્દાલહુસગસિ' યથાલઘુસ્વકે યથાપ્રકારકે લઘુસ્વરૂપે સ્તોકમાત્રેષ્વરાધે પરિકુપિ

સ્રવણસમુદ્ર મેં ઉત્તરા (તણ અહ પોયવહણવિવત્તી) ભાગ્યવશાત્
 મેરી નૌકા હસ સમુદ્ર મેં ટકરા જાને સે દૂધગઈ । (નિવ્વુહ્મહસારે એક
 ફળગલ્પ આસાણમિ) હસ તરહ જિસકા સમસ્ત યસ્તુસાર જલનિમગ્ન હો
 પુકા હૈ એસે મુક્કે વહી પર એક કાષ્ઠફલક પ્રાપ્ત હો ગયા । (તણ અહ
 ઉચ્ચુજ્જમાણે ૨ રયણદીવ તેણ સવૂદે) ઉસકી મહાપતાસે તૈરતાહુઆમૈં હસ
 રત્નદ્વીપકે પાસ આપહુંચા । (તણ સા રયણદીવદેવયા મમઓહિણા પાસઈ)
 હતને મેં ઉસ રત્નદ્વીપદેવી ને મુક્કે અપને અવધિજ્ઞાન સે દેલ લિયા-
 (પાસિત્તા મમ ગેણ્હઈ, ગેણ્હિત્તા મમ સર્દિં વિપુલાઈ ભોગભોગાઈ શુજ
 માણી વિહરઈ તણસા રયણદીવદેવયા અળગયા કયાઈ અદ્દાલહુસગસિ
 અવરાહસિ પરિકુવિયા સમાણી મમ યયારૂવ આવત્તિ પાવેઈ ત ન
 ણજ્જહણ દેવાણપ્પિયા ! તુમ્હપિ હમેસિ સરીર ગાણ કા મળ્લે આવત્તી
 મવિસ્સઈ ?) દેલકર ઉસને મુક્કે અપને પાસ રલ લિયા । રલકર
 મેરે સાથ ઉસને મન વાહે સ્વલ્પ કાનભોગોંકો ભોગા । કિસી એક

વહણ વિવત્તી) હુહાંચિથી મારી નાવ આ સમુદ્રમા અથડાધને હુળી ગઈ
 (નિવ્વુહ્મહસારે એક ફળગ-લ્પ આસાણમિ) આ રીતે વેચાણની બધી જ
 વસ્તુઓ જ્યાંદે પાણીમા હુળી ગઈ ત્યારે પાણીમાજ એક લાકડુ મને મળી
 ગયું (તણ અહ ઉચ્ચુજ્જમાણે ૨ રયણદીવ તેણ સવૂદે) તેના ઉપર તરતો હું
 આ રત્નદ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યો (તણ સા રયણદીવદેવયા મમ
 ઓહિણા પાસઈ) એટલામા તે રત્નદ્વીપ દેવીએ મને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી નેહીલીધો

(પાસિત્તા મમ ગેણ્હઈ, ગેણ્હિત્તા મમ સર્દિં વિપુલાઈ ભોગભોગાઈ શુજમાણી
 વિહરઈ તણ સા રયણદીવદેવયા અળગયા કયાઈ અદ્દાલહુસગસિ અવરાહસિ પરિ-
 કુવિયા સમાણી મમ યયારૂવ આવત્તિ પાવેઈ ત ન ણજ્જહિ ણ દેવાણપ્પિયા ! તુમ્હપિ
 હમેસિ સરીરગાણ કામળ્લે આવત્તી મવિસ્સઈ ?)

એધને તેણે મને પોતાની પાસે રાખી લીધો અને રાખીને

ता सती मामेतद्रूपमापत्ति प्रापयति तन्न ज्ञायते खडुहे देवानुप्रियो । युवयोरप्यनयोः शरीरयो का=कीदृशी आपत्तिर्भाषिष्यति ? इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

ततः खडु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिदारकौ एवमगादीत्-एष खडु हे देवानुप्रियो ! पौरस्त्ये वनपण्डे शैलकस्थ यक्षस्य यक्षायतने शैलको नाम उश्व

समय मेरे द्वारा उसका थोडा सा अपराध बन गया सो उस थोडे से अपराध के घन जाने पर वह बहुत अधिक क्रुपित हो गई । क्रुपित होकर उसने मझे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है । अतः हे देवानुप्रियो ! तुम दोनों के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन जान सकता है-मैं इसीका विचार कर रहा हूँ । (तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अति एयमद्व सोच्चा णिसम्म बलियत्तरं भीया जाव संजायभया सूलाइसय पुरिस एव वयासी) इस तरह उस शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी तरह हृदय से विचार कर वे दोनों माकदी-दारक यजिनर- अत्यन्त-भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्होंने ने फिर उस शूलारोपित पुरुष से इस प्रकार कहा (कहणं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीव देवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो ?) हे देवानुप्रिय ! हम लोग कैसे इस रयणा देवो के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकने है- (तएणं से सूलाइयण पुरिसे ते मागदिय० एव वयासी एमण देवाणु प्पिया ! पुर

तेणे धन्धा मुज्ज कम्म लोगो लोगन्था केध जोड वज्जते भासधी सडेज्ज भूख थर्ध गर्ध ते भारी सडेज्ज भूखधी पणु अत्यधिक शुस्से थर्ध गर्ध अने तेणे त्थार पछी भारी आवी डालत करी छे ओथा डे देवानुप्रियो ! तभास शरीरनी पणु शी दशा थथे ? ते केणु जण्णी शके तेम छे हु अत्थारे ओज्ज विचार करी रह्यो छु

(तएण ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अति एयमद्व सोच्चा णिसम्म बलियत्तरं भीया जाव संजायभया सूलाइसय पुरिस एव वयासी)

आ शूली उपर लटकता भाणुसना मोधी आ गधी विगत जण्णीने तेना उपर भूम ज गलीरताथी निवार करीने तेजो जने माकदी दारके भूम ज-अवशीत थर्ध गया यावत् अत्यत्रस्त थर्ध तेजो जनेजो शूली उपर लटकता भाणुसने आ प्रभाणु कछु के

(कहण देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवीना हाथभाधी अजे जट्टी देवा रीते भुक्त भ शरीरे ?

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्त्तते । ततः खलु स शैलको यक्षः 'चोदसद्वमुद्दिष्ट-
पुण्यमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टमुद्दिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् 'उद्दिष्ट'
ति अमात्रास्याया पूर्णिमाया च तिथौ 'आगयममए' आगतसमये=आसन्नीभूता
वसरे 'पत्तसमए' प्राप्तसमये उपलब्धायसरे साक्षादेवात्रसरे, यथोचितसमय
सम्पाप्येत्यर्थं महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एव वदति- 'क तारयामि ?'
क पालयामि=रक्षयामि?, इति, 'त' तत् तस्मात् गच्छत खलु युवा हे देवानुप्रियो !
पौरुस्त्य वनपण्ड, शैलस्य यक्षस्य 'महरिह' महार्हा महायोग्या 'पुष्कच्चणिय'

च्छिमिल्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आ
सखवधारी जक्खे परिवसह) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस
शूलारोपित पुरुष ने उन मारुद्दी दारकों से इस प्रकार कहा । हे देवानु
प्रियो ! पूर्व दिशा की वनपण्ड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है ।
उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है । (तएण से सेलए
जक्खे चोदसद्वमुद्दिष्टपुण्यमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया २
सहेण एव वयह, क तारयामि, करालयामि ? त गच्छह ण तुम्हे देवानु
प्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुष्कच्चणिय
करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पज्जलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा
चिद्धह, जाहेण सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा क
तारयामि क पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पाल
याहि) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एव पूर्णमासी

(तएण से सुलाइए पुरिसे ते मागदिय० एव वयासी एसग देवानुप्पिया !
पुराच्छिमिल्ले वणमडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसख
धारी जक्खे परिमद)

तेओनी आ प्रभाओनी बात सालणीने ते शूणी उपर लटकता पुरुषे
मारुद्दी दारकोने कहु के हे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशाना वनपण्डमा ओक शैलक
यक्षनु यक्षायतन छे त्या अश्वरूपधारी शैलक नामे यक्ष रहे छे

(तएण से सेलए जक्खे चोदसद्वमुद्दिष्टपुण्यमासिणीसु आगयममए पत्त
समए महया २ सहेण एव वयह क तारयामि क पालयामि ? त गच्छह ण
तुम्हे देवानुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वण सड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुष्क
च्चणिय करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पज्जलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा
चिद्धह, जाहेण सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा क तारयामि
क पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि)

पुण्यार्चनिका कुरुत, कृत्वा जानुपादपतिता=जानुनीपादौ च भूमौ निधाय विनम्री
भूतौ पजलिउडा' प्राञ्जलिपुटौ सयोजितकरपुटौ, हस्तौ सयोज्येत्यर्थः 'विणएण'
विनयेन=नम्रभावेन 'पञ्जुवासमाणा' पर्युपासीना=त सेवमानौ तिष्ठतम्, यदा
खलु स शैलको यक्ष आगतसमये=अवमरे समागते प्राप्तसमये=उपलब्धासवरे एव
वदेत्- 'क तारयामि क पालयामि ?' इति तदा युवा वदतम्- हे शैलक यक्ष !
आवा तारय, आवा पालय । शैलको 'भे' युवाभ्यामाराधितो यक्ष 'पर'
समर्थ', स युवा रत्नद्वीपदेवताया हस्तात् 'साहत्थि' साक्षात् 'णित्थारेज्जा'
निस्तारयिष्यति=पार नेष्यति, सङ्कटान्मोचयिष्यतीत्यर्थः, अन्यथा=एवमकरणे 'भे'
युवयोः न जानामि अनयोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति
'मन्ने' मन्ने=अहं चिन्तयामि ॥ सू० ५ ॥

के दिन उचित समय प्राप्त होने पर बड़े जोर से ऐसा कहता है कि
मैं किसको तारू किसकी रक्षा करूँ ? इस लिये हे देवानुप्रियो !
तुम दोनों पूर्वदिशा सन्धी वनपड में जाओ और वहा उस शैलक
यक्ष की आराधना करो । आराधन करके फिर उस के समक्ष दोनों
घुटनों को और पैरो को टेककर- भूमिपर रखकर- अत्यन्त नम्र हुए
बड़े विनय के साथ दोनों हाथों को जोड़ कर उसकी उपासना करने
में लग जाओ । जब वह शैलक यक्ष अवसर आने पर बेसा कहे कि मैं
किसे तारू किसे रक्षित करूँ ? तो तुम दोनों कहना हे शैलक यक्ष !
हम दोनों को यहा से तारों हमारी रक्षा करो । (सेलए भे जक्खे
पर रयण दीव देवयाण हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा अण्णहा भे न
याणामि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ) इस तरह तुम

ते शैलक यक्ष श्री श, आठम, अभावस्था अने पूनमना दिवसे उचित
समय प्राप्त थता णहु भोटथी आ प्रभाण्णे उडे छे के डोने हु पार पडोयाहु ?
डोनी हु रक्षा कर ? ओटला भटे छे देवानुप्रियो ! तमे णने पूर्व दिशाना
वनपडमा जण्णे अने त्या ते शैलक यक्षनी आराधना करे आराधना करीने
तेनी सामे णने घुटण्णे अने पणो टेकाने घण्णा नम्र राण्ठोमा विनयनी
साथे णने हाथ जेडीने तेनी उपासना करवा लागे । ज्वारे ते शैलक-यक्ष
समय आवता आ प्रभाण्णे उडेवा लागे के डोने हु पार उताइ अने-डोनी
रक्षा कर ? त्यारे तमे णने विनती करना उडेने उ-डे शैलक यक्ष ! अमे
णनेने अहाँथी पाठ उतारे अभरी रक्षा करे ।

सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाण हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा
अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ)

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्चते । ततः खलु स शैलको यक्षः 'चोदसद्वुद्धिद्व-
पुण्यमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टमुद्धिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् 'उद्दिष्ट'
ति अमावास्याया पूर्णिमाया च त्रियी 'आगयममए' आगतसमये=आसन्नीभूता
वसरे 'पत्तसमए' प्राप्तसमये उपलब्धावसरे साक्षादेवावसरे, यथोचितसमय
सम्पाप्येत्यर्थ महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एव वदति-'क तारयामि ?
क पालयामि=रक्षयामि?, इति, 'त' तत् तस्मात् गच्छत खलु युवा हे देवानुप्रियो !
पौरस्त्य वनपण्ड, शैलस्य यक्षस्य 'महरिह' महार्हा महायोग्या 'पुष्कच्चणिय'

च्छिमिल्ले वणसड्ढे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आ
सरुवधारी जक्खे परिवसह) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस
शूलारोपित पुरुष ने उन मारुती दारकों से इस प्रकार कहा । हे देवानु
प्रियो ! पूर्व दिशा की वनपण्ड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है ।
उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है । (तएण से सेलए
जक्खे चोदसद्वुद्धिद्वपुण्यमासिणीसु आगयसमए पत्तममए महया २
सहेण एव वयह, क तारयामि, क पालयामि ? त गच्छह ण तुम्हे देवानु
प्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसड्ढे सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुष्कच्चणिय
करेह, करित्ता जाणुपायवड्डिया पज्जलिउडा त्रिणएण पज्जुवासमाणा
चिद्धह, जाहेण सेलए जक्खे आगतसमए पत्तममए एव वदेज्जा क
तारयामि क पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पाल
याहि) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एव पूर्णमासी

(तएण से सुलाइयए पुरिसे ते मागदिय० एव वगसी एसग देवानुप्पिया !
पुराच्छिमिल्ले वणमडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरुव
धारी जक्खे परिमद)

तेज्जानी आ प्रमाळोनी बात साक्षणीने ते शूणी उपर लटकता पुरुषे
मारुती दारकोने उल्लु के डे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशाना वनपण्डमा ओक शैलक
यक्षनु यक्षायतन छे त्या अश्वरूपधारी शैलक नामे यक्ष रहे छे

(तएण से सेलए जक्खे चोदसद्वुद्धिद्वपुण्यमासिणीसु आगयममए पत्त
समए महया २ सहेण एव वयह क तारयामि क पालयामि ? त गच्छह ण
तुम्हे देवानुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसड्ढे सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुष्क
च्चणिय करेह, करित्ता जाणुपायवड्डिया पज्जलिउडा त्रिणएण पज्जुवासमाणा
चिद्धह, जाहेण सेलए जक्खे आगतसमए पत्तममए एव वदेज्जा क तारयामि
क पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि)

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
 याए ण्यमद्वं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खहतो
 भे रयणदीवदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
 मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जणणं देवाणुप्पिया ।
 वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिहेसे चिद्धिस्सामो, तएणं से
 सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ२ वेउव्वि-
 यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइं दंडं
 निस्सरेइ निरसरित्ता दोब्बंपिवेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं
 विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एव वयासी—हं भो मागंदिया ।
 आरुह णं देवाणुप्पिया । मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
 हट्ठं सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति२ सेलगस्स पिट्ठि
 दुरुढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरुढे जाणित्ता सत्त-
 द्दुतालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उप्पयति, उप्पइत्ता य
 त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुदं मज्झमज्झेणं
 जेणेव जव्वुदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
 तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ‘तएण’ ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ
 तस्य शूलान्तिरस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य शीघ्रं, चण्डे=प्रबल, चपल,

‘तएण ते मागदिय०’ इत्यादि ।

टीका १—(तएण) इसके बाद (ते मागदिय दारया) वे दोनों माकदी
 के दारक (तस्स शूलाइयस्स अतिण ण्यमद्व सोच्चा) उस शूलारोपित

‘तएण ते मागदिय’ इत्यादि ।

टीका २—(तएण) त्थारपणी (ते मागदियदारया) तेजो जने भाकदी दारकेज्जे
 (तस्स शूलाइयस्स अतिण ण्यमद्व सोच्चा) शूली उपर बटकता पुरंधनी वात

मूलम्—तएण ते मागदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिप
 एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सिग्घ चंड चवलं तुरियं वेइयं
 जेणेव पुरच्छिमिह्हे वणसडे जेणेव पोक्खरिणि तेणेव उवा०
 पोक्खरिणि ओगाहति२ जलमज्जणं करेति२ जाइं तत्थ
 उप्पलाइं जाव गेण्हति२ जेणेव सेलगस्स जम्बस्स जक्खा-
 ययणे नेणेव उ०२ आलोए पणाम करेति२ महरिह पुप्फ-
 च्चणियं करेति२ जाणुपायवडिया सुस्सूममाणा णमसमाणा
 पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमये पत्तस-
 मए एव वयासी-क तारयामि क पालयामि ?, तएण ते
 मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता करयल० एव वयासी
 —एव खलु देवाणुप्पिया । तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्द
 मज्झं२ वीइवयमणाण सा रयणदीवदेवया पावा चडा रुद्धा
 खुद्धा साहसिया बहूहि खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि
 य पडिलोमेहि य सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य
 उवसग्गं करेहिइ, त जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया । रयणदी-
 वदेवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा

दोनों के द्वारा आराधित हुआ वह शैलक यक्ष तुम दोनों के रयणा-
 देवी के हाथ से साक्षात् निस्तारित करवा देगा—अर्थात् उस के सकट
 से तुम्हें छुड़वा देगा—नहीं तो कौन कह सकता है कि तुम्हारे शरीर की
 क्या दशा हो । मैं इसी बात का विचार कर रहा हूँ । सूत्र “ ५ ”

आ प्रमाणे तमारा वडे आराधायेवा ते तैवक यक्ष २ छा देवीना लपेट
 भाथी साक्षात् त ने जनेने मुक्त करये ओटवे के तेना सकटभाथी तमने
 ते छे। ११११११ नडित० तमारा शरीरनी शी दशा थये ? ते केणु नपडी थके
 तेम छे हु ओ न विचार करी रह्यो छु ॥ सूत्र “ ५ ” ॥

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
याए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खहतो
भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जणं देवाणुप्पिया ।
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिहेसे चिद्धिस्सामो, तएणं से
सेलए जम्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ२ वेउव्वि-
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइं जोयणाइं दंडं
निस्सरेइ निरसरित्ता दोच्चंपिवेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं
विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एवं वयासी—हं भो मागंदिया ।
आरुह णं देवाणुप्पिया । मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
हट्ठं सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति२ सेलगस्स पिट्ठि
दुरूढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्त-
ट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्ढ वेहास उप्पयति, उप्पइत्ता य
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं
जेणेव जव्वदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ‘तएण’ ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ
तस्य सूत्राक्षितरस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य शीघ्रं, चण्डं=प्रदल, चपल,

‘तएण ते मागदिय०’ इत्यादि ।

टीका १—(तएण) इसके बाद (ते मागदिय दारया) वे दोनों माकदी
के दारक (तस्स सूत्राइयस्स अतिण एयमट्ठ सोच्चा) उस सूत्रारोपित

‘तएण ते मागदिय’ इत्यादि ।

टीका २—(तएण) त्थारपथी (ते मागदियदारया) तेजो भ ने भाइ दी दारकेज्ये
(तस्स सूत्राइयस्स अतिण एयमट्ठ सोच्चा) शूणी ७५२ द्रष्टव्यता पुश्यनी वात

ત્વરિત, 'વેદ્ય' વેગિત=સવેગ યથામ્યાત્તયા શીઘ્રાતિશીઘ્રમિત્યર્થઃ યત્રૈવ પૌર-
સ્ત્ય ચનપણ્ડ, યત્રૈવ પુષ્કરિણી=ગાપી તત્રગોપાગચ્છતઃ, ઉપાગત્ય પુષ્કરિણીમક્ષ્યા
હેતે=અતઃ પ્રવિશતઃ, અવગામ જલમઙ્ગન=જલસ્નાન કુરુતઃ, કૃત્વા યાનિ તત્ર
ઉત્પલાં વા પન્થાનિ વા યાગ્દ્ ગૃહીતઃ, ગૃહીત્યા યત્રૈવ શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય યક્ષાપ
તન તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'આલોષ' આલોકે યક્ષદર્શને સતિ પ્રણામ
કુરુતઃ, કૃત્યા મહાહં=મહાયોગ્યા પુષ્પાર્ચનિકા કુરુતઃ, કૃત્યા જાનુપાદપતિતૌ=
વિનમ્રકાપૌ 'સુસ્મૃતમાણા' શૃણુપમાણૌ=યક્ષસેરાં કુર્વાણૌ 'જનમસમાણા' નમ
સ્વન્તૌ=નમસ્કાર કુર્વાણૌ 'પઙ્ગુવાસતિ' પર્યુપાસાતેસ્મ, સેરા કૃતવન્તૌ । તતઃ
શ્વલુઃ સ શૈલકો યક્ષ આગતસમયે પ્રાપ્તસમયે પરમગાદીત-'ક તારયામિ કપાલા

પુરુષ કે મુખ સે હસ યાત કો સુનકર (નિસમ્મ) ઓર ઉસે અપને
ચિત્ત મેં નિશ્ચિત કર (સિઘ્ધ ચડ ચવલ તુરિય વેદ્ય જેણેવ પુરચ્છિ-
મિલ્લે વળસડે જેણેવ પોક્ષરિણી તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ક, ઉવાગચ્છિત્તા
પોક્ષરિણી ઓગાહતિ, ઓગાહિત્તા જલમઙ્ગળ કરેતિ, કરિત્તા જાહ
તત્થ-ઉપ્પલાહ જાવ ગેળ્હતિ, ગેળ્હિત્તા જેણેવ સેલગસ્સ જક્ખસ્સ જ-
ક્ખાયયણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા આલોષ પનામ કરેતિ)
શીઘ્ર હી વહા સે વહુત જલ્દી ત્વરાયુક્ત ઘન જલ્દી ૨ દોડતે હુણે સે
હોકર જેહા વેહ પૂર્વ દિશા સઘન્ધી ઘનપણ્ડ-તથા પુષ્કરિણી ખી વહાં
આયે । વહાં આકર ઉન્હોને પુષ્કરિણી મેં અવગાહન કિયા ફિર સ્નાન
કિયા । ફિર ઉસ સે કમલ થે વહાં સે લિયા ઓર લેકર જહાં
શૈલક યક્ષ કા યક્ષાયતન થા ઉમ ઓર ચલદિયે । વહા પહુંચતે હી
ઉન્હો ને યક્ષ કે દિખલાહ પડતે નમસ્કાર કિયા । (કરિત્તા મહરિહ

સાભળીને (નિસમ્મ) અને તેને પોતાના મનમા ઠસાવીને

(સિઘ્ધ ચડ ચવલ તુરિય વેદ્ય જેણેવ પુરચ્છિમિલ્લો વળસડે જેણેવ પોક્ષ
રિણી તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ક ઉવાગચ્છિત્તા પોક્ષરિણી ઓગાહતિ, ઓગાહિત્તા જલ
મઙ્ગળ કરેતિ, કરિત્તા જાહ તત્થ-ઉપ્પલાહ જાવ ગેળ્હતિ, ગેળ્હિત્તા જેણેવ સેલગસ્સ
જક્ખસ્સ જક્ખાયયણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા આલોષ પનામ કરેતિ)

સત્વરે ત્યાથી શીઘ્ર ચાલથી દોડતા દોડતા જ્યા તે પૂર્વ દિશા સઘન્ધી
ઘનપણ્ડ તેમજ પુષ્કરિણી હતી ત્યા પહોંચ્યા ત્યા પહોંચીને તેઓ પુષ્કરિણીમા
ઉતર્યા અને સ્નાન કર્યું પુષ્કરિણીમા બેટલા કમળો ખીલ્યા હતા તેઓને
લઈ લીધા અને ત્યાર પછી શૈલક યક્ષના યક્ષાયતન તરફ સ્થાના થયા ત્યા
પહોંચીને તેઓએ યક્ષની સામે જતા જ નમન કર્યું

यामि ? ' इति । तत् खलु तौ माकन्दिदारकौ ' उट्टाए ' उत्पया स्वकीयो-
 ध्यानशक्त्या ' उट्टेति ' उत्तिष्ठतः, उत्पया करतलपरिगृहीत शिरआवर्त दशनख
 मस्तकेऽङ्गलि कृत्वा एमवादिष्टाम्- ' आवा तारय, आवा पालय ' इति । ततः
 खलु स शैलको यक्षस्तो माकन्दिदारकौ एमवादीत्-एव खलु हे देवानुमियौ !
 युवयो मेया सार्द्धे लवणसमुद्र मध्यमध्येन=अन्तरामार्गेण ' वीद्वयमाणा ' व्यति-

पुष्कवणिय करेति-करित्ता जाणु पायवडिया सुम्सुसमाणा णमसमाणा
 पज्जुवासति, तएण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वयासी-
 क तारयामि क पालयामि तएण ते मागदियदारया उट्टाए उट्टेति उट्टित्ता
 करयल० एव वयामी-अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं) नमस्कार कर
 फिर उन्हीं ने उस की आराधना-की । आराधन कर के फिर वे दोनों अपने
 घुटने और पैर टेक कर उस के चरणों पर पड़ गये । इस प्रकार पार २ उस की
 सेवा करते हुए वे वहा रहने लगे-जब उचित अवसर प्राप्त हुआ और उस
 शैलकयक्ष ने ऐसा कहा-कि- मैं किस को तारु, किस को पार उतारूं-तो उसी समय उठ कर इन दोनों
 माकदी दारकों ने उस से दोनों हाथ जोड़ कर ऐसा कहा-आप हमें तारिये हमें पार
 उतारिये-(तएण से सेलए जक्खे ते मागदिय० एवं वयासी) उस दोना माकदी-
 दारकों की इस बात को सुनकर उस शैलक यक्ष ने उन से ऐसा कहा- (एव
 खलु देवाणुप्पिया ! तुम्भ मएसदि लवणसमुद्र मज्झ २ वीद्वयमाणा सा रयणदीवदेव्या

(करित्ता महरिह पुष्कवणिय करेति-करित्ता जाणुपायवडिया सुम्सुसमाणा
 णमसमाणा पज्जुवासति, तएण से सेलए जक्खे आगत समए पत्तसमए एव वयासी
 क तारयामि क पालयामि तएण ते मागदिय दारया उट्टाए उट्टेति उट्टित्ता
 करयल० एव वयामी- अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं)

नमन करीने तेओओ तेनी आराधना करी आराधना करीने तेओओ ने
 जंगीन उपर घुटछो टेकीने तेना अरछोआ आणोटी गया आ रीते पार पार
 तेनी उपासना करता तेओओ ने त्या ज रहता लाग्या ज्यारे उचित समय
 आओ त्यारे शैलक यक्षे ओम कछु-के केने हु ताई अने केने पार उताई
 तत ज माकदी दारको जिला थया अने ने हाथ जोडीने यक्षने बिन ती
 करवा लाग्या के तमे अमने तारे अने पार उतारे (तएण से सेलए जक्खे
 ते मागदिय० एव वयासी) ने माकदी दारकोनी बिन ती सालणीने शैलक
 यक्षे तेओओने कछु के-

(एव खलु देवाणुप्पिया तुम्भ मए सदि लवणसमुद्र मज्झ २ वीद्वयमाणा

अनतोः=गच्छतो सतो सा रत्नद्वीपदेवता पापा=पापिष्ठा चण्डा=कोपशीला,
 रुद्रा=क्रूरा क्षुद्रा=तुच्छस्वभावा साहसिका=अविचारितकारिणी बहुभि 'खरणहिय'
 खरकैः=कठोरै, 'मउएहिय' मृदुकैः=सुकोमलै, 'अणुओमेहिय' अनुलोमैः=
 'मनोज्ञकूलैः, 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमै=मन प्रतिकूलभूतैश्च 'सिंगारेहिय'
 शृङ्गारैः=कामरागजनकैः 'कलुणेहिय' करुणैः=करुणाजनयैश्च 'उवसग्गेहिय' उप-
 सर्गैः=उपसर्गजनकचनै. 'उवसग्ग' उपसर्ग=उत्पात 'करेहिइ' कपिप्यति, तद्
 यदि खलु युग हे देवानुप्रियो ! रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थम् 'आढाहवा' आदि-

पावा चडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बहहिं खरणहिं य मउएहिं य अणु
 लोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य
 उवसग्ग करेहिइ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरे साथ लवण समुद्र में
 घीचों घीच के मार्ग से होकर चलो-जस समय वह पापिष्ठ, कोपशील,
 क्रूर, क्षुद्र एवं अविचारित कारिणी रयणा देवी तुम्हारे ऊपर अनेक
 कठोर, सुकोमल, मनोज्ञकूल, मनः प्रतिकूल कामराग जनक एवं कष्ट
 णोत्पादक ऐसे उपसर्ग वचनों द्वारा उवसर्ग-उत्पात-करेगी । (त जइण
 तुब्भे देवानुप्पिया ! रयणादीव देवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह
 वा अवयक्खह वा तो भे अह पिट्ठातो विहणामि अहण तुब्भे रयण दीव
 देवयाए एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो भे रयण
 दीव देवया हत्थाओ-साहत्थि णित्थरेमि) सो यदि हे देवानुप्रियो !
 तुम लोग रयणा देवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से

ण सा रयणदीवदेवया पावा चडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बहहिं खरणहिं य
 मउएहिं य अणुलोहि य पडिलोमे हि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं
 य उवसग्ग करेहिइ)

हे देवानुप्रियो ! भारी साथे लवण समुद्र-नी वन्देना भागंभा धधने
 तमे आलेशो ते वण्णते ते पापिष्ठ, कोपशील, क्रूर, क्षुद्र एवं अविचारितकारिणी
 रयणादेवी धध्वा कठोर, सुकोमल, मनगमता, मनने प्रतिकूल, कामरागने उत्पन्न
 करनाश एवं कुरुषोत्पादक उपसर्ग वचनो वडे उपसर्ग-उत्पात करेशे

(त जइण तुब्भे देवानुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ आढाहवा परि-
 याणहवा अवयक्खहवा तो भे अह पिट्ठातो विहणामि अहण तुब्भे रयणदीवदेवयाए
 एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणाह णो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवया
 हत्थाओ साहत्थि णित्थरेमि)

ले हे देवानुप्रियो ! तमे लोको रयणा देवीना आ उपसर्गं उप अर्थने
 सम्माननी दृष्टिमे लेशो अट्ठे हे तेना वचनेने तमे अत्तारेशो, स्वीकारेशो

येथे तदादर करिष्यथ', वा=अथवा 'परियाणह वा' परिजानीयः=स्वीकरिष्यथः
वा, अथवा 'अयक्खह वा' पठ्यथ = अवलोकयिष्यथ 'तो' तदा 'मे' युवा-
मह 'पिद्धाओ' पृष्ठात्=मम पृष्ठभागात् 'त्रिहुणामि' त्रिधुनामि पातयिष्यामि।
अथ खलु यदि युवा रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं नो आद्रियेथे, नो परिजानीयः,
'नो अयक्खह' ता प्रति नो पश्यतः, तदुपसर्गं सहिष्येथे इत्यर्थः 'तो' तदा
'मे' युवा रत्नद्वीपदेवताहस्तात् 'साहत्थि' स्वहस्तेन 'णित्थारेमि' निस्तार-
यामि=पार नेष्यामि। ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ शैलरू यक्षमेवमवादिष्टाम्-
य कञ्चन खलु हे देवानुग्रिय! त्वमाराध्यत्वेन वदिष्यति, यत्खलु 'युवयोरय-
माराध्यः' इति तस्य खलु=तस्यैव उपपातनिर्देशे=सेवावचनाज्ञाया 'चिद्धिस्सामो'
स्थास्याव किंपुनर्भवतः 'भवदाज्ञानुसारेणैव वसिष्यावहे इत्यर्थः। ततः खलु स
शैलको यक्षः 'उत्तरपुरत्थिम' उत्तरपौरस्त्यम् ईशानकोणसम्पन्निव 'दिसीभाग'
दिग्भागम् 'अवक्कमइ' अपक्रामति=गच्छति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समव-
हन्ति, समवहत्य=वैक्रियसमुद्घात कृत्वा सङ्ख्येयानि योजनानि यावत् सङ्ख्येय

देखोगे-अर्थात् उन वचनों का आदर करोगे-उन्हें स्वीकार करोगे, उन
पर ध्यान दोगे, तो मैं अपने पृष्ठ भागसे तुम लोगको उतार दूंगा-नीचे
पटक दूंगा-और यदि तुम लोग उस रचनादेवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ
का आदर नहीं करोगे, उन्हें स्वीकृत नहीं करोगे, उसकी तरफ नहीं देखोगे
-उसके द्वारा कृपण उपसर्गको सहन कर लोगे मैं तुम लोगोंको रचनादेवी
के हाथ से देखते २ छुड़ा दूंगा। (तएण ते मागदियदारया सेल्लग
जक्ख एववयासी-जण्ण देवाणुप्पिया। बहस्सइ तस्सण उववायवयणणि-
हेसे चिद्धिस्सामो, तएण से सेल्लए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अव-
क्कमइ, अवक्कमत्ता वेउन्विक्कसमुग्घाएण समोहणइ २ सखेजाइं जोय-

अने तेना उपर विचार करथे तो हु पोतानी पीछे उपरथी तमने उतारी
पाडीश अने नीचे ड्रेडी दधिश अने जे तमे अने रथला देवीना उपसर्गं इप
ते वयनेने आदर करथे नहि, स्वीकारथे नहि, तेनी तरङ्ग जेशे नहि, ते
ने कर्ध पणु उपसर्ग-उत्पात-करे ते तमे अभी देखे तो हु तमने ग्यला
देवीना हाथमाथी जेतनेतामा मुक्ता करावी दधिश

(तएण ते मागदियदारया सेल्लन जक्ख एव वयासी जण्ण देवाणुप्पिया।
बहस्सइ तस्सण उववायवयणणिहेसे चिद्धिस्सामो, तएण से सेल्लए जक्खे उत्तर
पुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमत्ता वेउन्विक्कसमुग्घाएण समोहणति२

યોજનપરિમિતમિત્યર્થઃ દણ્ડ 'નિસ્સરેઈ' નિસ્સારયતિ, નિસ્પાર્થ દ્વિતીયમપિનારં
વૈક્રિયસમુદ્ઘાતેન સમગ્રાન્તિ, સમગ્રહત્ય=દ્વિતીયગાર વૈક્રિયસમુદ્ઘાત કૃત્વા એકં
મહત્-અશ્વરૂપ વિકુર્વતિ-અશ્વરૂપસ્ય વિકુર્વણા કરોતીત્યર્થઃ, વિકુર્વિત્વા અશ્વરૂપ
કૃત્વા તૌ મામન્દિકદારકૌ એમમદન્-'હમો' હે દેવાનુપ્રિયો મામન્દિકદારકૌ!

જાણે દંડ નિસ્સરેઈ, નિસ્સરિત્તાં દોચ્ચપિ વેડવિગ્રસમુ ૦ ૨ ઈગ મહ
આસરૂવ વિઝવ્ઝ ૨ તે માગદિયદારણ એવ વયાસી) શૈલક યજ્ઞની
હસ પ્રકાર કી વાત સુનકરે ઉન માકડી દારકોં ને ઉસ શૈલક યજ્ઞ સે
ફિર હસ પ્રકાર સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! આપ જિસકે લિયે હમે આરા
ધ્યત્વેન રહેગે-હમ લોગ ઉસી કી સેવા કરને મેં ઉસી કે વચન માન
ને મેં ઓર ઉસી કી આજાનુવાર વર્તમાન કરને મેં લગ જાવેગે તો ફિર
આપકી તો વાત હી વ્યા હૈ । આપ તો હમ સે જસે કરેગે હમ લોગ
સર્વથો ઉસી કે અનુસાર ચલેગે । હસ કે વાદ વહ શૈલક યજ્ઞ હૈશાન
કોણ સચન્ધી દિગ્ભાગ કી ઓર ગયા । વહાં જાકર ઉસ ને વૈક્રિય
સમુદ્ઘાત સે ઉત્તર વૈક્રિય કી વિકુર્વણા કી-વિકુર્વણા કર કે ફિર ઉસ
ને અપને આત્મપ્રદેશોં કો સહ્યાત યોજન પર્યંત દર્પણાકાર રૂપ
મેં બહિર નિકલા-નિકાલ કર કે ફિર દુવારા ખી વૈક્રિય સમુદ્ઘાત
કિયા ઓર ફિર એક વહે ભારી અશ્વરૂપ કી । ઉસ ને વિકુર્વણા
કી । અશ્વરૂપ બનાકર ફિર વહ ઉન માકડી દારકોં સે બોલા-

સલ્લેનાઈ જોયળાઈ દંડ નિસ્સરેઈ, નિસ્સરિત્તાં દોચ્ચપિ વેડવિગ્રસમુ ૦ ૨ ઈગ
મહ આસરૂવ વિઝવ્ઝ ૨ તે માગદિય દારણ એવ વયાસી)

શૈલક યજ્ઞની આ પ્રમાણે વાત સાલણીને માકુડી દારકોંએ તેને કહ્યું કે
હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમને જે કાંઈને આરાધવાનો હુકમ કરશો, અમે લોકો
તેની સેવા કરવામાં, તેની જ આજ્ઞા સ્વીકારવા માં અને તેની આજ્ઞા પ્રમાણે જ
આચરણ કરવામાં તત્પર થઈ જઈશું ત્યારે તમારી તો વાત જ શી ગઈથી ?
તમે અમને જેમ કહેશો તેમ અમે સંપૂર્ણપણે અનુસરીશું ત્યારમા જ શૈલક
યજ્ઞ હૈશાન કાળુનાં દિગ્ ભાગ તરફ ગયો ત્યાં જ ને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાતથી
ઉત્તર વૈક્રિયાની વિકુર્વણા કરી અને વિકુર્વણા કર્યા બાદ તેણે પોતાના આત્મ-
પ્રદેશોને સંજ્ઞાત યોજન સુધી ઢાકાર રૂપે બહાર નીકળ્યા બહાર કાઢીને તેણે
ખીલ વાર પછી વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો અને ત્યાર પછી તેણે એક બહુ ઓટા
અથવા (ઘોડાના રૂપ) ની વિકુર્વણા કરી અશ્વરૂપ રૂપ બનાવીને તેણે માકડી
દારકોંને કહ્યું કે—

आरोहत खलु युवा मम पृष्ठे । ततः खलु तौ माकन्दिद्वारकौ हृष्टतुष्टौ शैलकस्य
यक्षस्य प्रणामं कुरुतः, कृत्वा शैलकस्य पृष्ठं दूरुढौ पृष्ठं प्रदेशे समारुढौ । ततः
खलु स शैलकस्ती माकन्दिद्वारकौ दूरुढौ=खपृष्ठाखुढौ ज्ञात्वा 'सत्तद्वृत्तालप्रमा-
णमेत्ताइ' सप्ताष्टतालप्रमाणमोगेन=सप्ताष्टतालवृक्षपरिमितान् गगनभागान् यावत्
'उड्डुवेहास' ऊर्ध्वविहायसि=उच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति, उष्पइत्ता, उत्पत्य च
तया प्रमिद्वया उत्कृष्टया त्वरितया देवगत्या लवणसमुद्रं मध्यमध्येन यत्रैव
जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारती वर्य=भारतक्षेत्र, यत्रैव चम्पानगरी तत्रैव प्रधार-
यति=गन्तुं प्रवृत्त ॥ सू० ६ ॥

(ह भो मागदिया ! आरुह ण देवाणुप्पिया । मम पिड्डमि-तएणं ते
मागदिय० हट्ट० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति करित्ता सेल-
गस्स पिड्डिं दुख्खा, नण्णं से सेलए ते मागदिय० दुख्खे जाणित्ता
सत्तद्वृत्तालप्रमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उप्पयइ, उप्पइत्ता यं ताए-
उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुदं मज्झं मज्झेण जेणेव जवूदीवे
दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चपानयरी तेणेव पहारेत्थं गमणाए) अरे
ओ देवानुप्रिय माकदी द्वारको ! तुम दोनों मेरी पीठ पर चढ़ जाओ ।
इस के बाद वे दोनों माकदी द्वारक हर्षित एवं सतुष्ट होते हुए प्रणाम
कर उस शैलक यक्ष की पीठ पर आरुढ़ हो गये । जब शैलक यक्ष ने
उन्हे अपनी पीठ पर चढ़ा जाना तो जानकर वह सात आठ ताल वृक्ष
प्रमाण बराबर क्षेत्रमें ऊपर आकाश में उछला । उछलकर फिर वह
अपनी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगति से लवणसमुद्र के ठीक बीचों

(ह भो मागदिया ! आरुहण देवाणुप्पिया । मम पिड्डमि-तएणं ते मागे-
दिय० हट्ट० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति करित्ता सेलगस्स पिड्डिं दुख्खा,
तएणं से सेलए ते मागदिय० दुख्खे जाणित्ता सत्तद्वृत्तालप्रमाणमेत्ताइ उड्डु वेहाम
उप्पयइ, उप्पइत्ता यं ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुदं मज्झं मज्जे
ण जेणेव जवूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चपानयरी तेणेव पहारेत्थं गमणाए)

अरे ओ देवानुप्रिय माकदी द्वारको ! तब भारी पीठ ऊपर ऐसी नान्यो-
त्यार पड़ी माकदी द्वारको हर्षित तेभज सतुष्ट तथा प्रणाम करीने शैलक यक्षनी
पीठ ऊपर ऐसी गया शैलक यक्षे तेओने पोटानी पीठ ऊपर सवार थड गयेला
नान्योने ते सात आठ तालवृक्ष प्रमाण बेटला क्षेत्रमा आकाशमा उठण्यो अने
उठण्योने ते पोटानी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगतिथी लवणसमुद्रनी गरीबारे

मू५-तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्धं तिसत्त-
 खुत्तो अणुपरियट्ठइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता
 जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागाच्छइ उवागच्छित्ता ते मार्गं
 दियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिहे
 वणसंडे जाव सब्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेतिर तेसिं
 मार्गदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पत्तिं वा अलभमाणी
 जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी
 ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मार्गदियदारए सेलएणं सद्धिं लव-
 णसमुद्धं मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता
 असिखेडग गेण्हइ गेणिहत्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जेणेव मार्गदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी-हं
 भो मार्गदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्ण तुब्भे जाणह ममं
 विप्पजहाय सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झं मज्झेण
 वीइवयमाणा त एवमवि गए । जइण तुब्भे मम अवयक्खह
 तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलु-
 प्पलगवल जाव एडेमि, तएण ते मार्गदियदारया रयणदीव
 देवयाए अंतिए एयमट्ठ सो० णेम० अभीया अतत्था अणु-
 त्तिग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ नो

धीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जम्बूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें
 जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल
 दिया ॥ सूत्र ६ ॥

पश्चेन्ना मार्गमाधी पसार यतो न्या जम्बूद्वीप नामे द्वीप तेभ्य न्या भरत
 क्षेत्र यने तेमा पक्ष न्या यथा नगरी हती ते तत्र रवाना यथे "६"॥

आढांति नो परि० णो अवयक्खति, आणाढायमाणा अपरि०
 अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सञ्छि लवणसमुद्दं मज्झंम-
 ज्झेणं वीइवयंति, तत्तेणं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय०
 जाहे नो सचाएइ वट्टहि पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए
 वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तएवा ताहे महुरेहिं
 सिगारेहि य कल्लणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउ पवत्ता यावि
 होत्था, हं भो मागंदियदारगा । जइणं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ।
 मए सञ्छि हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलि
 याणि य हिडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति
 अमणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सञ्छि लवणसमुद्दं मज्झं-
 मज्झेणं वीइवयह, तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स
 मम ओहिणा आभोएइ आभोएत्ता एव वयासी—णिच्चपिय णं
 अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा५ निच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे
 ५ निच्चपिय ण अहजिणरक्खियस्स इट्ठा५ निच्चपिय णं मम
 जिणरक्खिए इट्ठे५, जइणं ममजिणपालिए रोयमाणी कदमाणीं
 सोयमाणी तिप्पमाणी विलवमाणीं णावयक्खइ किण्णं तुम
 जिणरक्खिया । मम रोयमाणि जाव णावयक्खसि ?, तएण—
 सा पवररयणदीप्पस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं ।
 नाऊण वधनिमित्त उवरि मागंदियदारगाणं दोणहपि ॥ १ ॥
 दोसकलिया सलीलय णाणाविहचुण्णवासमीस दिव्व । घाण-
 मण निव्वुइकर सव्वोउयसुरभिकुमुमवुट्ठि पमुचमाणी ॥ २ ॥
 णाणामणिकणगरयणघटियखिंखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेण । दि-

मृ०५-तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्त-
 खुत्तो अणुपरियट्ठइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता
 जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागाच्छइ उवागच्छित्ता ते मार्गं
 दियदारया पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले
 वणसडे जाव सब्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेतिर तेसिं
 मार्गदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइ वा पत्तिं वा अलभमाणी
 जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी
 ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मार्गदियदारए सेलएणं सद्धिं लव-
 णसमुद्दं मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता
 असिखेडग गेण्हइ गेणिहत्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जेणेव मार्गदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी-हं
 भो मार्गदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्णं तुब्भे जाणह मम
 विप्पजहाय सेलएण जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेण
 वीइवयमाणा त एवमवि गए । जइणं तुब्भे मम अवयक्खह
 तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलु-
 प्पलगवल जाव एडेमि, तएणं ते मार्गदियदारया रयणदीव
 देवयाए अंतिए एयमट्ठ सो० णेम० अभीया अत्तत्था अणु-
 ठिवग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ 'नो

धीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जवूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें
 जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल
 दिया ॥ सूत्र ६ ॥

वन्धेना मार्गमाथी पसार थतो न्या जवूद्वीप नामे द्वीप तेभज न्या भरत
 क्षेत्र अने तेभा पखु न्या चपा नगरी छती ते तरश्च खाना थये ॥ सूत्र "६" ॥

कम्मदसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय, तएण जिणर-
क्खिय समुप्पन्नकलुणभावमच्चुगलत्थल्लणोहियमइं अवयक्खतं
तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं उव्विहति नियग-
पिट्ठाहि विगयसद्धं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण
जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास । मओसित्ति
जंपमाणी अप्पत्त सागरसलिलं गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्डं
उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता-
नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेणं खडाखडि करेति
तत्थ विलवमाण तस्स य रारसवहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरु
हिराइं उक्खित्तवलि चउदिसि करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—तत् ‘खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्र’
त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत्र तृण वा यावत् सर्वं पत्र
काष्ठादिकमुपनीय—एकान्ते ‘एडेइ’ एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावत-
सकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ मारुन्दिरुदारकौ प्रासादावतसके—अपश्यन्ती

‘तएण सा रयणदीवदेवया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने
(लवण समुद्र तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठति) लवण समुद्र की २१ बार
प्रदक्षिणा की—(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडे
सए तेणेव उपागच्छति) इस समय में उसे वहा पर जो तृणकाष्ठ पत्र
आदि मिला उस-सचको वहा से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में
डाल दिया। डालकर फिर वह जहा अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहा आई-

‘तएण सा रयणदीव देवया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्या० भा० (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीने (लवण
समुद्र तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठति) लवण समुद्रनी ओकवीश बार प्रदक्षिणा करी
(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उपागच्छत्तुं)
प्रदक्षिणा करती वज्जते रयणा देवीने त्या तृण, काष्ठ पत्र वगैरे जे कष्ट
पद जेवामा आण्यु तेने त्याथी हर ओकातमा द्वेकी द्विधु द्वेकीने ते पानाना
अभक्ष्यमा आवती स्त्री

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥
 होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिगिघण
 णिच्छक्क । थिण्ण णिक्खिअ अकयण्णुय सिढिल भाव निह्खज्ज
 लुक्ख अक्खुण जिणरक्खियं मज्झ हिययरक्खगा । ॥ ४ ॥ णहु
 जुज्जसि एक्खियं अणाहं अवधवं तुज्झचलणओवायकारियं उज्झिउ
 महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ
 खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविह सावयस-
 याउलधरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ
 पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे
 ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमडलागार सस्सिरीयं
 सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसानिभनयणं व-
 यणं पिवासागयाए सद्धो मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ
 मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय
 सरलमहुराइ पुणो२ कलुणाइ वयणाइ जंपमाणी सा पावा
 मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिअ
 चलमाणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्प-
 णयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
 तीसे सुदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वण-
 सिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य
 विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणप-
 णयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

कम्मदसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय, तएण जिणर-
क्खिय समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खत
तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं उव्विहति नियग-
पिट्ठाहि विगयसद्धं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण
जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास । मओसित्ति
जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्ड
उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता
नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिबरेण खंडाखडि करेति
तत्थ विलवमाण तस्स य रारसवहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरु
हिराइ उक्खित्तवलि चउदिसि करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—तत् ‘खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्र’
त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत् तृण वा यावत् सर्वं पत्र
काष्ठादिकमपनीय—एकान्ते ‘एडेइ’ एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावत-
सकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ मारुन्दिरुदारकौ प्रासादावतसके—अपश्यन्ती

‘तएण सा रयणदीवदेवया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने
(लवण समुद्र निस्सत्तलुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्र की २१ बार
प्रदक्षिणा की—(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडे
सए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहां पर जो तृणकाष्ठ पत्र
आदि मिला उस-सको वहां से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में
डाल दिया । डालकर फिर वह जहां अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहां आई-

‘तएण सा रयणदीव देवया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाद (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीने (लवण
समुद्र ति सत्तलुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्रनी ओड्डीथ वार प्रदक्षिणा करी
(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइं)
प्रदक्षिणा करती वधते रयणा देवीने त्या तृण, काष्ठ पत्र पजेरे ते डाल
पलु जेवामा आबुध तेने त्याथी दूर ओकातमा देखी दीधु देखीने ते पोचाना
भक्षेत्तमा आवती स्त्री

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥
 होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण
 णिच्छक्क । थिण्ण णिक्किव अकयण्णुय सिढिल भाव निहज्ज
 लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा । ॥ ४ ॥ णहु
 जुज्जसि एक्कियं अणाहं अवधव तुज्झचलणओवायकारिय उज्झिउ
 महण्णं । गुणसंकर । अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ
 खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविह सावयस-
 याउलधरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ
 पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे
 ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमडलागार सस्सिरीयं
 सारयनवकमलकुसुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसानिभनयणं व-
 यणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ
 मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय
 सरलमहुराइ पुणो२ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सा पावा
 मंगओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिए
 चलमाणे तेणैव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्प-
 णयसरलमहुरभणिएहि सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
 तीसे सुदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वण-
 सिरि च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य
 विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणप-
 णयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

માકન્દિકદારકૌ શૌલકેન સાર્દ્ધં લવણમુદ્ર મન્યમધ્યેન 'વીહવ્યમાણે' વ્યતિવ્ર-
જન્તો=પન્ડિતો પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા 'આસુરુતા' અશુરુતા=શીઘ્રકુપિતા 'અસિખેડગ'
અસિખેટકમ્, અસિથલજ્ઞ સ્ખેટકથ્થ ફલકઃ 'ઢાલ' इति। સિદ્ધઃ એતયો સમાહારે-
અસિખેટકમ્ ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા 'સત્તદ્વજાવ' સપ્તાષ્ટ યાવત્, સપ્તાષ્ટતાલપ્રમાણાન્
ગગનમાગાન્ યાવદ્ ઊર્ધ્વં વિદ્યારસિ ઉત્પતતિ, ઉત્પત્ય તથા ઉત્કૃષ્ટયા દેવગત્યા
યત્રૈવ માકન્દિકદારકૌ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્યૈમવાદીત્-'હમો' હે માકન્દિક
દારકૌ ! 'અપ્પતિયપત્થયા' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થકૌ=મરણાભિલાષિણૌ કિં સ્વલુ યુગ

ઉપયુક્ત ક્રિયા । (પંડિતો તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર
મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહવ્યમાણે પાસહ, પાસિન્ના આસુરુતા અસિખેડગં ગે-
ષહ, ગેષિન્ના સત્ત અદ્ધ જાવ ઉપ્પયહ ઉપ્પહન્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેનેવ
માગદિયં તેણેવ ઉવાં ૨ એવ વયાસી-હમો માકદિયં અપ્પતિયપ-
ત્થયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ એવમવિગણ)
ઉપયુક્ત કરકે ઉસને ઉન માકદીદારકૌ કૌ શૌલક કે સાથ લવણસમુદ્ર
મેં હોકર ઠીક ઘીચો ઘીચ કે માર્ગ સે જાતે હુણ દેખા । દેખરુર વહક્રોધ
સે ક્રોધિત હો ગઈ । ઉસને ઉસી સમય અપની તલવાર ઓર ઢાલ ઉઠા
ઈ । ઉઠાકર વહ સાત આઠા તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઉપર કી ઓર આકાશ
મેં ઉછલી । ઉઠલકર ફિર વહ ઉત્કૃષ્ટદેવ સમ્યન્ધી ગતિ સે ચલ કર
જહા વે માકદી-દારક થે વહાં આઈ । વહા આકર ઉસને ઉનસે હસ
પ્રકાર કહા । અરે ઓ માકદિ-દારક ! માલુમ પડતા હૈ તુમલોગ અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક ચન રહે હો-જિસે કોઈ બી નહીં ચાહે વહ અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ

(પંડિતો તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહ-
વ્યમાણો પાસહ, પામિન્ના આસુરુતા આસિખેડગ ગેષહ, ગેષિન્ના, સત્તઅદ્ધ જાવ
ઉપ્પયહ ઉપ્પયિન્ના તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેણેવ માગદિય તેણેવ ઉવાં ૨ એવ વયામી
હ મો માકદિયં અપ્પતિય પત્થયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ
એવમવિગણ)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકદી દારકોને શૌલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની
ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઈ
તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તગ્વાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ
તાલવૃક્ષ જેટલુ આકાશમા જિથે ઉછડી, ઉછડીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસબધી ગતિથી
સત્તરે જના માકદી દારકો હતા ત્યા પહોચી ગઈ, ત્યા પહોચીને તેણે
તેઓને એમ કહ્યું કે અરે જો ! માકદી દારકો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કેઈ

यत्रैव पौरस्त्य वनपण्ड यावत्सर्वतः समताद् मार्गगवेयणां करोति सामान्य विशेषतयाऽन्वेपति, कृत्वा तयोर्माकन्दिद्वारयोः कुत्रापि 'सुत्रा' 'गति' वा= वार्त्ता, 'सुद' या 'क्षुति'=तत्सम्बन्धिनीं श्रिकम्, अव्यक्तभाषण तच्चिह्न वा, 'पउत्ति' वा 'प्रवृत्ति'=वृत्तान्त या 'अलभमाणी' अलभमाना=अपानुवन्ती सती यत्रैवोत्तरीये=उत्तरदिग्भवे वनपण्डे एवमेव=पूर्वदेव पाश्चात्येऽपि यावद् अपश्यन्ती 'ओहि' अवधिम्-अवधिज्ञान 'पउजइ' प्रयुनक्ति=व्यापारयति, प्रयुज्य तौ

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया, पासायवडिसए अपासमाणी, जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे जाव सव्वओ समतामग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थेइ सुइ खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणी जे- भव उत्तरिल्ले वणसडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउजइ) वहा आकर उसने उसमें माकदी दारकोंको नहीं देखा-सो इस कारण वह जहाँ पूर्वदिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा आई वहाँ आ- कर उसने उनकी सबतरफ चारों ओर तपास की मार्गेणा गवेयणा की- परन्तु वहा कही पर भी माकदी दारकों की उसे न कोई बात सुनने में आई और न उनकी चिह्नरूप ठीक या अव्यक्त भाषण या कोई विशेष चिह्न ही देख ने में आया। और न उनकी वहा उसे कोई खबर ही मिली-इस तरह इन सब बातोंको नहीं प्राप्त करती हुई वह जहा उत्तर दिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा इसी तरह जहा पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा आई वहा कही पर भी उसे उनकी कोई बात बगैरह सुनने में देखने में जय नहीं आई-तब उसने अपने अवधिज्ञान को

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया पासायवडिसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे जाव सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थेइ सुइ खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वण- सडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउजइ)

त्या आलीने तेहे भाकदी दारकोने जेया नहिं त्थारे ते पूव दिशा तरइ वनपण्डमा पड़ेथी त्या तेहे तेजोनी ओमेर तपास करी, मार्गेणु गवेयणा करी पणु भाकदी दारकोने पत्तो भज्जे नहिं रथणुदेवीने भाकदी दारकोनी वातथीत पणु सालणवामा आवी नहिं तेमज्जे तेजोनी हयातीना पणु कोण थिहो जेमके छोड अथवा तो धीमेथी वातथीत वगेरे देभाया नहिं आ रीते ते त्याथी उत्तर दिशा तरइना वनपण्डमा गण त्थारपणी पश्चिम दिशाना वन पण्डमा ते गण त्या- पणु रथणु देवीने तेजोनी कोण पणु वातथीत वगेरे सालणाम नहिं त्थारे तेहे चोताना अवधिज्ञानने उपयोग करी

માકન્દિવારકૌ શૈલકેન સાર્દ લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન 'વીહવ્યમાણે' વ્યતિવ્ર-
જન્તૌ=ગન્ઠન્તૌ પડ્યતિ, દૃષ્ટ્વા 'આસુરુતા' જથુરુતા=શીઘ્રક્રુપિતા 'અસિખેડગ'
અસિખેટમ્, અસિશ્ચલ્લ સ્વેટમ્થ ફલકઃ 'ઢાલ' इति।सिद्धः एतयो समाहारे-
असिखेटमम् गृह्णाति, गृहीत्वा 'सत्तद्वजाव' सप्ताष्ट यावत्, सप्ताष्टतालप्रमाणान्
गगनभागान् यावद् ऊर्ध्वं विहायसि उत्पतति, उत्पत्य तथा उत्कृष्टया देवगत्या
यत्रैव माकન્દિવારકૌ ત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્યૈમવાદીત્-‘હમો’ હે માકન્દિક
વારકૌ ! 'અપ્પત્થિયપત્થયા' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થકૌ=મરણાભિલાષિણૌ કિં લલ યુગ

વપયુક્ત ક્રિયા । (પડજિત્તા તે માગદિયવારે સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર
મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહવ્યમાણે પાસદ, પાસિત્તા આસુરુતા અસિખેડગં ગે-
વ્હદ, ગેવિહ્તા સત્ત અદ્ધ જાવ ઉપ્પયદ ઉપ્પયિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેણેવ
માગદિયં તેણેવ ઉવાં ૨ એવ વયાસી-હમો માકદિયં અપ્પત્થિયપ-
ત્થિયા કિણ્ણ તુઞ્મે જાણદ મમ વિપ્પજહાય સેલણ એવમવિગ્)
વપયુક્ત કરકે વસને વન માકદીવારકૌ કૌ શૈલક કે સાથ લવણસમુદ્ર
મેં હોકર ઠીક વીચો વીચ કે માર્ગ સે જાતે હુણ દેખા । દેખકર વહક્રોધ
સે ક્રોધિત હો ગઈ । વસને વસી સમય અવની તલવાર ઓર ઢાલ વઠા
ઈ । વઠાકર વહ સાત આઠા તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ડુપર કી ઓર આકાશ
મેં વછલી । વઠલકર ફિર વહ ઉત્કૃષ્ટદેવ સમ્યન્ધી ગતિ સે ચલ કર
જહા વે માકદી-વારક થે વહાં આઈ । વહા આકર વસને વનસે હસ
પ્રકાર કહા । અરે ઓ માકદિ-વારક ! માલૂમ પડતા હૈ તુમલોગ અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બન રહે હો-જિસે કોઈ મી નહીં ચાહે વહ અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ

(પડજિત્તા તે માગદિયવારે સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહ-
વ્યમાણો પાસદ, પામિત્તા, આસુરુતા આસિખેડગ ગેવ્હદ, ગેવિહ્તા, સત્તઅદ્ધ જાવ
ઉપ્પયદ ઉપ્પયિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેણેવ માગદિય તેણેવ ઉવાં ૨ એવ વયાસી
હ મો માકદિયં અપ્પત્થિય પત્થયા કિણ્ણ તુઞ્મે જાણદ મમ વિપ્પજહાય સેલણ
એવમવિગ્)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકદી વારકોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની
ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઈ
તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તરવાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ
તાલવૃક્ષ જેટલું આગ્રશમા બીચે ઉછગી, ઉછગીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસબધી ગતિથી
સત્તર જ્યાં માકદી વારકો હતા ત્યાં પહોંચી ગઈ ત્યાં પહોંચીને તેણે
તેઓને એમ કહ્યું કે અરે ઓ ! માકદી વારકો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કંઈ

जानीयः—यत् 'मम' मा 'विषजहाय' विषजहाय=परित्यज्य शैत्रकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमभ्येन 'सीईवयमाणा' व्यतित्रन्ती सः तद् एवमपि=अनेन प्रकारेण यक्षपृष्ठावलम्बनेन 'गए' आर्वा गतौ=गृह प्राप्तौ, इति, युवा जानीय तद् भ्रान्तौस्थः। यदि खलु युवा 'मम' माम् 'अवयक्खह' पश्यत 'तो' तदा 'मे' युवयोरस्ति जीवितम्, अथ खलु मा न पश्यत 'तो' तदा 'मे' युवयोः अनेन 'नीलुप्पलगवल जाव' नीलोत्पलगवल यावन् अतिश्याम सुतीक्ष्ण खड्गेन शिरश्छिन्ना एकाग्ने एडेमि=प्रक्षिपामि=द्वयोरपि शिरश्छेत्स्यामीत्यर्थः। ततः खलु ता माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवताया अन्तिहे एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अभीतौ अग्रन्तौ अनुद्विग्नौ, अक्षुब्धौ असम्भ्रान्तौ सन्तौ रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं

है। उस के भी तुम चाहने वाले हो रहे हो। जो तुमलोग मुझे गोड़कर यक्ष शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर जा रहे हो। तो क्या इस तरह के जाने से तुमलोग हम घर पहुँच गये? यह मान रहे हो सो यह तुम्हारा भ्रम है। (जइण तुम्हे मम अवयक्खह तो मे अत्थिजीविय अहण णावक्खह तो मे इमेण नीलुप्पलगवलजावएडेमि) यदि तुम मेरी ओर देखो—मुझे चाहो—तो ही तुम्हारा जीवन बच सकता है—यदि तुम मुझे नहीं चाहते हो—मेरी तरफ नहीं देखते हो—तो—देखो इस नील कमल तथा महिष के शृंग के जैसे वर्णवाली—अतिश्याम सुतीक्ष्ण तलवार से मैं अभी तुम दोनों के मस्तक को छेदकर उसे ऐसे स्थान में डाल दूँगी कि जहाँ उसका पता भी नहीं लगेगा। (तएण ते मागदियदारयो रयणदीवदेवयाण अतिण एयमइ सो० णीस० अभीया

ध्विष्ठु नथी तेनी भूयु 'अप्रार्थित' थयु अने ते भाकही दारजे तने ध्विष्ठ नार थया डेमके तमे अने छोडीने यक्ष शैलकणी साथे लवण समुद्रनी बन्धे थधने जइ रह्या छे। तमे अत्यारे जेम समल रह्या हुरो के अमे डेमभेम (सधुशण) पोताने घेर पडोथी गया छीजे तो तमे भ्रमभा छे।

(जइण तुम्हे मम अवयक्खह तो मे अत्थि जीविय अहण णावक्खह तो मे इमेण नीलुप्पलगवल जाव एडेमि)

ले तमे भने ज थाडो—भने ज जुओ—तो तमारा जवननी सक्तामती छे ले तमे भने ध्वजता नथी, भारी तरई जेता नथी तो जुओ आ निलकभण तेभज ले तना शिजडा जेवा रगनी जूण ज रथाम रगतानी तेज तरवारथी हु तमारा भनेना भाया कापीने जेवी जअ्याजे देखी दधथ के तेनी कोधने अथर पछु पडी शके नहि

(तएण ते मागदिय दारया रयणदीवदेवयाण अतिण

नो आद्रियेते नो परिजानीतः 'नो अवयवत्वति' नो पश्यत', 'अणाढायमाणा' अनाद्रियमानौ=तमर्थं प्रति-आदर न कुर्वाणौ 'अपरिजानीतौ' अपरिजानीतौ तमर्थमस्वीकुर्वाणौ 'अणवयवत्वमाणा' तत्समुत्पन्नमप्यपश्यन्तौ शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन 'वीडयति' व्यतिव्रजत=मुखपूर्वक गच्छतः । तत खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिदारकौ यदा नो शक्नोति बहुभि 'पडिलोमेहिय' प्रतिशोभैश्च=प्रतिबलैश्च सर्मैश्चालयितु वा-शोभयितु वा 'विपरिणामित्तए वा' विपरिणामयितु=मनोवृत्ति परावर्तयितु 'लोभित्तए वा' लोभयितु=लुब्धौ वृत्तु वा

अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुमिया असभता रयणदीवदेवयाण एयमद्द नो आहति, णो परि० णो अवयवत्वति अणाढायमाणा अपरि० अणवयवत्वमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडयति) इस प्रकार वे माकन्दी-दारक रयणा देवों के मुख से इस बात को सुन कर और उसे हृदय में अवधृत कर भयभीत नहीं हुए व्रस्त नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए क्षुभित नहीं हुए, सभ्रान्त नहीं हुए घबड़ाये नहीं-और न उन्होंने ने रयणा देवों के इस अर्थ को आदर की दृष्टि से देखा न उसे स्वीकार किया, और न उस तरफ लक्ष्य ही दिया । इस तरह उस के वचनों का अनादर करते हुए उन्हें स्वीकार नहीं करते हुए तथा उनकी ओर लक्ष्य नहीं देते हुए वे दोनों उस शैलक यक्ष के साथ लवणसमुद्र के बीच में चलते ही गये ।

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो सचाएति, उह्हिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विप

अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुमिया असभता रयणदीव देवयाण एयमद्द नो आहति णो परि० णो अवयवत्वति अणाढायमाणा अपरि० अणवयवत्वमाणा सेलए जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडयति)

माकन्दी दारकाश्च रयणा देवीनां भुजेष्ठी आ प्रभाषे सा लग्नीने अने तेने हृदयमा धारय करीने अथ पाभ्या नहि व्रस्त तथा नहि, उद्विग्न तथा नहि क्षुभित तथा नही सभ्रात तथा नहि, अलराथा नहि अने तेओओ रयणुदेवीना अर्थने न तो सम्मानपूर्वक ज्ञेयो अने न तेना स्वीकार कर्थो ते तस्मै तेओओ सद्धं पणु लक्ष्य आभ्यु नहि लवण समुद्रनी वच्चे यधने तेओ अने शैलक यक्षनी साथे चोतानो पथ आपता व गथा

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो सचाएति, उह्हिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा

તદા મધુરૈ ' સિંગારેહિય ' શૃંગારૈઃ કામરાગોત્પાદકૈઃ ' કન્તુનેહિય ' કરુણૈઃ
 કરુણરસજનકૈશ્વોપસર્ગૈઃ ' ઉપસર્ગેઽયમ્ = ઉત્પાતયિતુ મૃત્તા
 ચાસ્યાધીન્ - હ મો દેરાનુપ્રિયો માકન્દિકદારકો ! યદિ સ્વલ્લ યુવાભ્યા મયા
 સાર્દ્ધ ' હસિયાણિય ' હસિતાની ચ ' રમિયાણિય ' રતાનિ=રમણાનિ અક્ષાદિમિ-
 છૂતાદિસ્વેલનાનિ, ' લલિયાણિય ' લલિતાનિ ચ-ઈષિતાનિ લીલ્યા મોજનાદિ-
 રૂપાણિ ' કીલિયાણિય ' ક્રોડિતાનિ=મલામ્ભાદનાદિરૂપક્રોડનાનિ ' હિંદિયાણિય '

રિણામિત્તાય વા લોમિત્તાય વા તાહે મટુરેહિં સિંગારેહિં, કન્તુનેહિં ય
 ઉવસર્ગેહિં ય ઉવસર્ગેઽ પવત્તા યાચિ હોત્થા) ફસ તરહ જય વહ
 રયણા દેવી ઉન માકદી દારકોં કો પ્રતિકૂલ અનેક ઉપસર્ગોં દ્વારા ચલો
 ચમાન કરને કે લિયે ક્ષુભિત કરને કે લિયે સમર્થ નહીં હો સકી તથ
 ઉસને કામ રાગોત્પાદક, તથા કરુણારસ જનક ઉત્પાતોં દ્વારા ઉપદ્રવ
 કરના પ્રારંભ કર દિયા । (હ મો માગદિયદારગા ! જહ્ણ તુઝમે હિં
 દેવાણુપિયા ! મમ સર્દિં હસિયાણિય રમિયાણિય લલિયાણિય
 કીલિયાણિય, હિંદિયાણિય, મોહયાણિય તાહે ણ તુઝમે સન્વાર્તિ
 અગણેમાણા મમ વિષ્ણજહાય સેલણ સર્દિં લવણમમુદ મજ્જ મજ્જે
 ણ વીહવયહ તણ સા રયણદીવદેવયા જિણરક્ષિયસ્સ મન ઓહિણા
 આમોણ્હ, આમોણ્ત્તા એવ વયાસી) વહ કર્ને લગી અરે ઓ દેવાનુપ્રિય !
 માકદી દારકોં । યદિ તુમ દોનોં ને મેરે સાથ હૈસી મજાક કિયા હૈ,
 કામ સુલોં કો મોગા હૈ, અથવા અક્ષાદિકોં દ્વારા ઘૂનાદિ ક્રીડાયેકો
 હૈ, સાથ ૨ વૈઠકર હ્ચ્છાનુસાર વિવિધ પ્રકાર કી મોજનાદિ કરને રૂપ

તાહે નહુરહિં સિંગારેહિં કન્તુનેહિં ય ઉવસર્ગેહિં ય ઉવસર્ગેઽ પવત્તા યાચિ હોત્થા)

રયણા દેવી માકદી દારકોને આ જાતના ધણા પ્રતિકૂળ ઉપમગોયી વિચ
 ક્ષિત કરવામા કે ક્ષુભિત કરવામા સમર્થ થઇ શકી નહીં ત્યારે તેણે કામરોગો
 ઉત્પાદક તેમજ કરુણારસ જનક ઉત્પાતો વડે ઉપદ્રવો શરૂ કર્યા

(હ મો માગદિયદારગા ! જહ્ણ તુઝમે હિં દેવાણુપિયા ! મમ સર્દિં હસિયાણિય રમિયા
 ણિય લલિયાણીય કીલિયાણિય હિંદિયાણિય મોહયાણિય તાહે ણ તુ મે સન્વાર્તિ
 અગણેમાણા મમ વિષ્ણજહાય સેલણ સર્દિં લવણમમુદ મજ્જ મજ્જે ણ વીહવયહ તણ
 સા રયણદીવદેવયા જિણરક્ષેયસ્સ મમ ઓહિણા અમોણ્હ, આમોણ્ત્તા એવ વયાસી)

તે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! માકદી દારકો ! જો તમે બને મારી
 સાથે હસી મજાક કરી છે, કામ મુખો ભોગવ્યા છે, અક્ષાદિજો વડે જુગાર
 વગેરે ક્રીડાઓ કરી છે, સાથે સાથે બેનીને મનગમતી અનેક આદારો

હિંદિતાનિચ=ઉદ્યાનાદિષુ ભ્રમણાનિ 'મોહ્યાણિય' મોહિતાનિ ચ=મોહનાનિ
કામરાગજનરુદ્ધાવભાવાદીનિ કૃતાનિ 'તાહે' તદા-તાદૃશે સમયે ઇતાદૃશ સુખા
નુભવાવસ્થાયાં સ્વલુ યુવા સર્ગાણિ=મયા સાર્દ્ધે હસિતાદીનિ 'અણેગમાણા'
અગ્ણય-તો=અનાદ્રિયમાણી 'મમ' મા નિરાધારા 'વિષ્ણજહાય' વિપ્રહાય=પરિત્યજ્ય
ઐલકેન સાર્દ્ધે લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન વ્યતિવ્રજયઃ=ગચ્છથ । તતઃ સ્વલુ પુનઃ સા
રત્નદ્વીપદેવતા જિનરક્ષિતસ્ય લઘુભ્રાતુઃ 'મણ' મનઃ=અન્તઃ કરગમ્ 'ઓહિના'
અવધિના અવધિજ્ઞાનેન 'આમોણ્હ' આમોગપતિ=પડયતિ આમોગપિત્વા=દૃષ્ટા-
પ્રમરુદ્-નિત્યમપિ ચ=પૂર્વમપિ સદૈવ ચ અહ જિનપાલિતસ્ય-તવજ્યેષ્ઠભ્રાતુઃ
અનિષ્ટા, અક્રાન્તા, અપ્રિયા અમનોજ્ઞા, અમનોમા=મનઃ પ્રતિહૃતામ્ભવમ્, નિત્યં
ચ મમ જિનપાલિતઃ-અનિષ્ટઃ, અક્રાન્તઃ, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અમનોમ્મ=મનઃ-
સ્વેદજનક આસીત્ । નિત્યમપિ ચ સ્વલુ અહ જિનરક્ષિતસ્ય તવ ઇષ્ટા યાવદ્ મનો
મ્મા, નિત્યમપિ ચ સ્વલુ મમ જિનરક્ષિતસ્ત્વમ્ ઇષ્ટો યાવદ્ મનોમ્મ, યદિ સ્વલુ
યથા મા જિનપાલિતો રુદ્ધી, ક્રન્દન્તી=શોક કુર્વાણા, 'તિષ્પમાણી' તેપમાનામ્=

લીલાઈં કરી હૈં, જલાવગાહનાદિ રૂપ નાના પ્રકાર કરી ચેષ્ટાઈં કરી હૈં,
ઉદ્યાન ઝાડકોં મેં સાથ ૨ ભ્રમણ કર્યા હૈં, તથા કામ રાગ જનક હાવ
ભાવ આદિ ક્રિયાઈં કરી હૈં તો ફિર ક્યોં અવ ઉન સવ હસિતાદિ ચેષ્ટા-
ઓં કરી ઉપેક્ષા કરકે તુમ દોનોં મુજે નિરાધાર છોડકર ઐલક કે સાથ
લવણ સમુદ્ર કે થીચ સે હોકર ચલે જા રહે હો । હસ પ્રકાર કહ કર ઉસ
રચના દેવી ને જિન રક્ષિત કે અન્તઃ કરણ કો અપને અવધિ જ્ઞાન કે
દ્વારા દેખા-દેખ કર વહ ફિર હસ તરહ કહને લગી-(નિચ્ચપિ ય ણ
અહ જિણપાલિયસ્સ અણિટ્ઠા ૫, નિચ્ચમમ જિણપાલિણ અણિટ્ઠે-નિચ્ચપિ
ય ણ અહ જિણરક્ષિયસ્સ ઇટ્ઠા, નિચ્ચપિ ણ અહ જિણરક્ષિયણ ઇટ્ઠે ૫,
જટ્ઠણ મમ જિણપાલિણ રોચમાણી, કદ્દાણી સોચમાણી તિષ્પમાણી વિલ
ચમાણી જોવગમ્મવટ્ઠ, કિણ્ણ તુમ જિણરક્ષિયયા । મમ રોચમાણિં જાવ

વગેરે રૂપ લીલાઓ કરી છે, જલાવગાહન વગેરેની ઘણી ભાવની થો । ઓ કરી
છે સાથે સાથે ઉદ્યાન વગેરેમા કર્યા છે તેમજ કામરાગજનક હાવભાવ વગેરેની
ક્રિયાઓ કરી છે ત્યારે હવે શુ ઝામ તે ણમ્મી હસિતાદિ ચેષ્ટાઓની ઉપેક્ષા
કરીને ૨ ને એકની નિરાધાર બનાવીને રીલક યક્ષની સાથે લવણસમુદ્રની
વચ્ચે થઈને બેઠા છે । આ પ્રમાણે ઝહીને તે રચણા દેવીએ ઇનરક્ષિતના
મનને પોતાના અવવિજ્ઞાન વડે ભેળુ અને બેધને તે કરી કહેના લાગી કે-

(નિચ્ચપિ ય ણ અહ જિણપાલિયસ્સ અણિટ્ઠા ૫ નિચ્ચમમ જિણપાલિણ
અણિટ્ઠે નિચ્ચપિ ય ણ અહ જિણરક્ષિયસ્સ ઇટ્ઠા નિચ્ચપિ ય ણ મમ જિણરક્ષિય

વિરહજનિતાર્તન્યાન કુર્વાણા, વિલપન્તી=વિલાપ કુર્વાણા 'નાયયસ્વહ' ન પશ્યતિ તથા કિં સ્વલ્પ ત્વમપિ હે જિનરક્ષિત ! માં રુદતીં યાવદ્ વિલપન્તીં 'નાયયસ્વહિ' ન પશ્યસિ ? એવં સા સ્તનદ્વીપદેવતા સોપાન્મ્મ વદતિ સ્મેતિ ।

તતઃ સ્વલ્પ તદનન્તરમ્-અથ પ્રચલિતમાનસ જિનરક્ષિત ત્રિજ્ઞાય સા યદ્વદતિ સ્વદ્ ગાથાષ્ટકેનાહ—

નાયયસ્વહસિ) યદ્ તો નિશ્ચિત્તં હૈં કિં મેં પરિલે સે જિનપાલિત કે લિયે અનિષ્ઠ, અકાન્ત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ ઈવં અમનોમ-મનઃ પ્રતિકૂલવદ્ રહી હૂં ઔર જિનપાલિત મી મેરે લિયે સદા અનિષ્ઠ' અકાન્ત આદિ રૂપ ધના રહા હૈં, મૈં તો જિન રક્ષિત કે લિયે હી સદા હૃષ્ટ આદિ રૂપ રહી હૂં ઔર જિનરક્ષિત મેરે લિયે હૃષ્ટ આદિ રૂપ સદા રહા હૈં તો હે જિન રક્ષિત ! યદિ મુક્ષ રોતી હુઈ આક્રન્દન કરતી હુઈ, શોક કરતી હુઈ વિરહ જનિત આર્તધ્યાન કરતી હુઈ ઔર વિલાપ કરતી હુઈ કી ઔર જિન પાલિત નહીં દેખતા હૈં તો કયા તુમ મી મુક્ષ રોતી હુઈ યાવત્ વિલાપ કરતી હુઈ કી ઔર નહીં દેખતે હો (તણ સા પવરરયણ-દીવસ્સ દેવયા ઓહિણા જિનરક્ષિતયસ્સ મણ નાઝણ વધનિમિત્ત ઉવરિં માગદિય દારગાણ દોણ્હપિ ॥ ૧ ॥) હસ તરહ ઉસ રચનાદેવી ને તાને મારતે હુણ જય કહા તત્ત જિનરક્ષિત્ત્વ કા મન ચલાયમાન હો ગયા । હસ સ્થિતિ મેં જો કુઝ ઉસ ને કહા વહ મુચ્ચકાર આઠ ગાથાઓ

હૃદયે ૫, જહણ મમ જિનપાલિણ રોયમાણી, કદમાણી, સોયમાણી તિષ્ણમાણી, વિલવમાણી, નાયયસ્વહ, કિણ્ણ તુમ જિનરક્ષિતયા । મમ રોયમણિં જાવ નાયયસ્વહસિ)

એ વાત તો ચોક્કસ પણે કહી શકાય કે હું, શરૂઆતથી જ જનપાલિતને માટે હંમેશા અનિષ્ઠ, અકાત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ-મનને પ્રતિ કૂળ જ ણની રહુ છું અને જનપાલિત પણ મારા માટે હંમેશા અનિષ્ઠ, અકાત વગેરે જ રહ્યા છે હું તો જનરક્ષિતને માટે હંમેશા ઈષ્ટ વગેરે રૂપમાં રહી છું અને જનરક્ષિત મારે માટે ઈષ્ટ વગેરે રૂપમાં સદા રહી છે ત્યારે હે જનરક્ષિત ! મને જો રડતી, આક્રન્દ કરતી, શોક કરતી, વિરહમાં આર્તધ્યાન કરતી અને આ રીતે વિલાપ કરતી કે જનપાલિત મારી સાચું જોતા નથી તો શું તમે પણ મને રડતી યાવત્ વિલાપ કરતી જોતા નથી

(તણ સા પવરરયણદીવસ્સ દેવયા ઓહિણા ૩ જિનરક્ષિતયમણ નાઝણ વધનિમિત્ત ઉવરિં માગદિય દારગાણ દોણ્હપિ “ ૧ ” ॥)

રચણા દેવીએ એ પ્રમાણે કટાક્ષ યુક્ત વચ્ચેના કહ્યા ત્યારે જનરક્ષિતનું મન ડગમગવા લાગ્યું આવી પરિસ્થિતિમાં જો કંઈ તેણે કહ્યું તે નર આઠ

सा प्रवर रत्नद्वीपस्य देवताऽवधिना तु जिनरक्षितस्य मनः । ज्ञात्वा वधनि-
मित्तम्=मारणार्थम् उपरि माकन्दिरुदारकयो द्वयोरपि ॥ १ ॥ ' दोसकलिया '
द्वेषकलिता=द्वेषयुक्ता ' सलीलय ' सलील=सलील ' नानाविहचुण्णवासमीस '
नानाविधचूर्णवासमिश्र नानाविधाः चूर्णवासा=चूर्णगन्धाः-पिष्टगन्धद्रव्याणि,
तैर्मिश्रा=युक्ता दिव्याम् । घ्राणमनोनिवृत्तिकरां=घ्राणमनमोस्तृप्तिकरा तादृशी
सर्वकुसुरभिक्षुसुमट्टि=सर्वकुसुमसुत्पन्नमुगन्धितपुष्पवृष्टि ' पमुचमाणी ' पमुचन्ती
॥ २ ॥ नानामणिकणरत्नघण्टिकाकिङ्किणीनूपुरमेखलाभूषणरवेण, सत्र-
नानाविधमणिमनकरत्नाना घण्टिकाः, किङ्किण्य=शुद्धघण्टिका । नूपुर-चरण-
भूषणम्, मेखलाभूषण=कटिभूषणम्, तेषा रवेण=शब्देन मञ्जुलवनिना दिशो
विदिशश्च पूरयन्ती=सशब्द कुर्वन्ती वचनमिद=वक्ष्यमाण ब्रवीति सा सकलुपा=

द्वारा कहते हैं-वह प्रवर रत्न द्वीप की देवता अवधिज्ञान से जिन रक्षित
के मन को जान कर मारने के लिये उन दोनों माकदी दारकों के ऊपर
(दोस कलिया) विद्वेषवती बन गई (सलील य नाणाविहचुण्णवास
मीस दिव्य ! घ्राणमणनिवृद्धकर सत्रोडयसुरभिक्षुसुमवृष्टिपमुच
माणी २) फिर उस ने उन के ऊपर बड़ी भारी लीला के साथ नाना
विधचूर्णवास मिश्रित एवं घ्राण और मन को तृप्ति कारक ऐसी दिव्य
सर्वकुसु सन्धी सुरभित कुसुमों की वृष्टि की । (नाणा मणिकणगर-
यण घटियखिखिणिगेऊर मेहलमूसणरवेण ' दिमाओ विदिमाओ
पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ) इस के बाद नाना प्रकार के
मणियोंकी, सुवर्णकी एवं रत्नोंकी घटिकाओंके झुड़ घटिकाओंके नूपुरों
के कटिभूषण के शब्द से-मञ्जुल आवाज से दिशाओ एवं विदिशाओं

गाथाओं वडे डडे छे-ते प्रवर रत्नद्वीपनी देवता अवधिज्ञानथी अनरक्षितना
भननी बात सनछने भारी नाभवाना विचारथी तेओ अने भाडही दारके
ऊपर (दोसकलिया) द्वेष धरावती थई गई (सलील य नाणाविहचुण्णवास-
दिव्य ! घ्राणमणनिवृद्धकर सत्रोडय सुरभिक्षुसुमवृष्टि पमुचमाणी २) त्पार पछी
तेछे तेओना ऊपर ल रे लीलाओनी साथे घण्टी जलतना सुगंधित शृङ्खलाने नाड
तेभर भनने तृप्त करे तेवा द्रव्यो अने अधी ऋतुओना सुगंधित पु पोनी वर्षा करी

(नाणामणिकणगरयणघटियखिखिणिगेऊरमेहलमूसणरवेण । दिमाओ विदि-
साओ पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ)

त्पार णाड घण्टी जलतना मण्डिओनी, सोनानी अने रत्नानी घट्टीओना,
पूथरीओना, आउराना, डडोराना शब्दथी मञ्जुल आवाजथी दिशाओ तेभर

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-दोष ! = हे मुग्ध !, वसुल = हे सुकुमार ! गोल = हे कठोर !
 हे नाथ ! दयित ! = हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे
 निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निछक्क ! = हे अपरज्ञानशून्य ! ' थिण्ण ! ' हे स्त्यान =
 हे निर्दयहृदय ! ' णिक्किव ' नि क्का ! = हे निष्कृप ! ' अकयण्णुय ' अकृतज्ञ !
 हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः ' सिद्धिलभाव ' शिथिलभाव ! = हे मन्द-
 भाव ! ' निल्लज्ज ' हे निर्लज्ज ! ' लुक्ख ' रुक्ख ! = हे प्रेमशून्य ! ' अकलुण '
 अकरुण ! = हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम ' हिययरक्खगा ' हृदयरक्षक ! = हे प्राण
 रक्षक ! ॥ ४ ॥ ' न ह्नु जुज्जसि ' नय युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एक
 काम्-अनाया = निराधाराम्, अवान्धवाम् = अपहाया तय ' चलण ओवायकारिय '
 चरणावपातकारिणः = गणसेविका = नाम् ' उज्झिउ = त्यक्तुम्, कयम्भूताम् ? ' अहण्ण '
 को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा- (होलवसुल-

गोलणाह, दइत, पिय, रमण, कत सामिय, णिग्घण णिच्छक्क, थिण्ण
 णिक्किव अकयण्णुयसिद्धिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणक्खिय
 मज्झ हिययरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार ! गोल-हे
 कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे
 स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निछक्क-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण
 हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे
 शिथिलभाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन
 रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः- (नहुज्जसि एकिय अणाह
 अपंधव तुज्ज चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह
 तुमे विट्ठणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हे मुझ चरण सेविका

विदिशाओने मुभरित करती ते पापीणीओ आ प्रभाओे कहु—

(होलवसुलगोलणाहदइतपिय, रयत, कत, सामिय, णिग्घणणिच्छक्क ! थिण्णणिक्किव
 अकयण्णुय सिद्धिलभाव निलज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४)

होल-हे मुग्ध !, वसुल-हे सुकुमार !, गोल-हे कठोर !, हे नाथ !,
 दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामीन् ! हे निर्घृण !
 स्नेहरहित ! हे निछक्क-अवसर ज्ञान शून्य ! थिण्ण-हे निर्दय हृदय ! हे
 निष्कृप ! हे अकृतज्ञ, कहेला उपकारोने नहि माननारा, कृतघ्न-हे शिथिल
 भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख ! हे प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! अनरक्षित !
 मेरा प्राण रक्षक तमे न हो ओटला भाटे—

(न हुज्जसि एकिय अणाह अवधन तुज्ज चलणओवायकारिय उज्झिउ
 अहण्ण गुणसकर ! अह तुमे विट्ठणा ण समत्था वि जीविउ खणपिय)

अन्याम्=अपूर्णमनोरथाम् । ' गुणसगर ' गुणसङ्कर=हे गुणसागर ! अह ' तुमे
विहगा ' त्वयोर्विहीना=त्वद्वियुक्ता न समर्थाऽपि जीवितु क्षणमपि-त्वा विना
क्षणमपि न जीविष्यामीत्यर्थः ॥ ५ ॥ पश्य, अनुनैव अहम् ' इमस्स उ ' अस्य तु
' अणेगझसमगरविविहसायसयाकुङ्किटस्स ' अनेकज्ञपमकरविविधश्चापदशवा
कुलगृहस्य अनेके ज्ञपाः=मत्स्याः, मकराः=ग्राहाः, विविधश्चापदा=नानाविध-
हिंसकजलचरजन्तयः, तेषां शतानि, तैः आकुल=व्याप्त गृहम्=अन्तर्भागो यस्य स
तस्य रत्नाकारस्य=लवणसमुद्रस्य म ये आत्मान ' वहेमि ' इति=नाशयामि तत्र
पुरतः, अतः हे जिनरक्षित ! त्वम् एहि=आगच्छ ' णियत्ताहि ' नियत्तस्व पुरतो-
गमनात्, यद्यसि त्व केनापि कारणेन कुपित, तर्हि ' खमाहि ' क्षमस्व ' एका
वराह ' एफपरायम्-अज्ञानवशात्सज्जातमेकमपराध मे=मम ॥ ६ ॥ ' तुज्झय ' तत्र

को असहाय निराधार अकेली छोड़ना योग्य नहीं है । मेरे अभीतक
कोई भी मनोरथ पूर्ण नहीं हुए हैं । हे गुणसागर ! मैं तुम्हारे बिना १
एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती हूँ । (इमस्स ३ अणेगझसमगर
विविह सावय सयाउलघरम्म । रयणागरस्स मज्झे अप्पाण वहेमि तुज्झ
पुरओणहिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एकावराहमे ६) देखो
मैं इसी समय अनेक प्रकार की-सैकड़ों मछलियों से मगरो से विविध
हिंसक जलचर जन्तुओं से व्याप्त हुए अन्तर्भाग वाले इस समुद्र के बीच
मैं तुम्हारे देखते २ अपने आपको डाल देती हूँ-अतः हे जिनरक्षिततुम
आओ-आगे मत बढ़ो, तुम यदि किसी कारण वश मेरे ऊपर कुपित
हो गये हो-तो मेरे अज्ञानवश हुए उस अपराधको क्षमा करो । (तुज्झ

भारा जेवी अरछोनी छानीने असहाय, निराधार अने अकेली भूझीने
जता रहेषु तभारा जेवाने भाटे योग्य कही शक्य नहिं छुछु भारी अके पण
छुछु पूरी थर्छ नथी छे शुष्णमागर ! तभारा वगर अके क्षण पण छु छुवी
शत्रु तेम नथी

(इमस्स उ अणेगझसमगरविविहसावयमयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे
अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओणहिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एकावराहमे ६)

जुओ, छु अत्थारे न घणी जातनी सेकडे माछजीओ, मगरो, घणी
जातना हिंसक जलचर प्राणीओथी युक्त आ समुद्री वन्धे तभारी सामे न
दूषी भइ छु भाटे छे अनरक्षित तमे आवे, आगण ज्यो नहिं गमे ते
हारजुथी ने तमे भारा उपर नाराज थर्छ गया छे तो भारा अज्ञानधी थयेदी
भूओने तमे भाइ करे

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-दोष ! = हे मुग्ध !, वसुल = हे सुकुमार ! गोल = हे कठोर !
 हे नाथ ! दयित ! = हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे
 निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निच्छक ! = हे अवसरज्ञानशून्य ! 'धिण' ! 'हे स्त्यान' =
 हे निर्दयहृदय ! 'णिक्कि' ! नि क्क ! = हे निष्कृप ! 'अकृण्णु' ! अकृतज्ञ !
 हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः 'सिद्धिभावा' शिथिलभाव ! = हे मन्द
 भाव ! 'निल्लज्ज' ! हे निर्लज्ज ! 'लुक्ख' ! रुक्ख ! = हे प्रेमशून्य ! 'अकलुण' !
 अकरुण ! = हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम 'हियरक्खगा' हृदयरक्षक ! = हे प्राण
 रक्षक ! ॥ ४ ॥ 'न ह्नु जुज्जसि' 'न न युज्जसे नैराहसि न योग्योऽसि त्वम् एक-
 काम्-अनाया = निराधाराम्, अवन्धवाम् = अपहाया तत्र 'चलण ओवायकारिय'
 चरणावपातकारिणः = गणसेविका = नाम् 'उज्झिउ = त्यक्तुम्, क्वम्भूताम् ? 'अहण्ण'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा- (होलवसुल
 गोलणाह, दइत, प्रिय, रमण, कत सामिय, णिग्घण णिच्छक, धिण
 णिक्किव अकृण्णुयसिद्धिभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणक्खिय
 मज्झ हियरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार ! गोल-हे
 कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे
 स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसरज्ञान शून्य ! धिण
 हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे
 शिथिल भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन
 रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः- (नहुज्जसि एकिय अणाह
 अवधव तुज्ज चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह
 तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हें मुझ चरण सेविका

विदिशाओने सुपरित करती ते पापीलीओ आ प्रभाओ कहु-—

(होलवसुलगोलणाहदइतप्रिय, रयत, कत, सामिय, णिग्घणणिच्छक ! धिणणिक्किव
 अकृण्णुय सिद्धिभाव निलज्ज लुक्ख अकलुण जिणक्खिय मज्झ हियरक्खगा ४)

होल-हे मुग्ध !, वसुल-हे सुकुमार !, गोल-हे कठोर !, हे नाथ !,
 दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामीन् ! हे निर्घृण !
 स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसर ज्ञान शून्य ! धिण-हे निर्दय हृदय ! हे
 निष्कृप ! हे अकृतज्ञ, करेला उपकारिने नहि माननारा, कृतघ्न-हे शिथिल
 भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख ! हे प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! अनरक्षित !
 मेरा प्राण रक्षक तमे न हो ओरला भाटे—

(न हुज्जसि एकिय अणाह अवधव तुज्ज चलणओवायकारिय उज्झिउ
 अहण्ण गुणसकर ! अहं तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खणपि ५)

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण 'सप्पणयसरलमहुराइ' सप्पणयसरलमहुराणि-स्नेह-
सहित सुखार्थबोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः 'कलुगाइ' करुणानि=करुणरम-
जनकानि 'वयणाइ' वचनानि 'जपमाणी' जल्पन्ती सा पावा 'मामगओ'
मार्गतः मार्गे इत्यर्थ 'समण्णेइ' समन्वेति=श्वाद्गच्छति 'पावहियया' पाप
हृदया=कुटिलान्त करुणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिजरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा
तैश्चैव सप्पणयसरलमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=रामरागाकृष्ट सन् रत्नद्वीप-
स्या देवतायास्तस्याः सुन्दरस्तनवधनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनत्रिय
च दिव्याम्, तथा 'सरभसउवगूहियाइ' सरभसोवगूढितानि=ससम्भ्रनक्रताब्धि-
नानि, यानि च 'विन्वोयविलसियाणि' विन्वोऽरु विलसितानि=विन्वोरा=

सुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ
वयणाइ जपमाणी सा पावमगओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार
-कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता बार २ स्नेह सहित, सुखार्थ
बोधक, मधुर एव करुणारसजनक वचनो को बोलती हुई मार्ग में उस-
के पीछे २ चलने लगी । (तएण से जिजरक्षिए चलमणे तेणेव भूष
णरवेण कण्णसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहि
सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरयणनहणयण कर
चरणनयणलावन्नरूपजोव्वणमिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विन्वो
य विलसियाणि० य विहसिय सरुडक्खदिट्ठि निस्ससिय मल्लिय उवल्लिय
ठियगमण णयखिज्जिय पामाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे
कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ वयणाइ जपमाणी सा पाव
मगओ समण्णेइ पावहियया ८)

आ सीते कुटिल हृदयवाणी ते २ नद्वीप देवता बारबार स्नेहमयित,
सुखार्थ बोधक मधुर अने कण्ठ-रसजनक वचनो उछेली भागमा तेने अनु
सरती आलना लागी

(तएण से जिजरक्षिए चलमणे तेणेव भूषणरवेण कण्णसुहमणोहरेण
तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहि सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
तीसे सुन्दरयणनहणवयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूपजोव्वणमिरिं च दिव्व
सरभसउवगूहियाइ विन्वोय विलसियाणि० य विहसिय सरुडक्खदिट्ठि निस्स-
सिय मल्लिय उवल्लिय ठियगमण णयखिज्जिय पामाइयाणि य सरमाणे
रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय)

ચ 'વિગયઘગમિતસમિમહલાગાર' વિગયનવિમલશશિમળલાગારમ્-વિગય
 ઘન=મેઘારહિતમ્ અનપ્ચ વિમલ=નિર્મલ શશિમળલ=ચન્દ્રમળલ, તસ્યેવાકાર=
 આકૃતર્યસ્ય તત્તગત્તમ્, સસ્તિરીય 'સત્રીક=શોભાસમ્પન્નમ્, 'સારયનવકમલ
 કુમુય કુવલયવિમલદલનિગરસરિસનિભનયણ' શારદનવકમલકુમુદકુવલય વિમલદલ
 નિકરસદશનિભનમનમ્ તત્ર શારદ=શરતકાલસમુત્પન્ન યન્નય નૂતન કમલ=સૂર્ય-
 વિકાશિપદ્મ કુવલય=ચન્દ્રવિકાશિપદ્મ, તેષા વિમલદલનિકરઃ = નિર્મલદલસમૂહઃ,
 તત્સદશો=તત્તુલ્યે નિમે-નિતરા દીપ્તિયુક્તે ચ નયને=નેત્રે યસ્મિન્ તત્ તયોક્તમ્,
 एतादृशशोभासम्पन्न 'वयण' वदन=मुखम्, 'पिपासागयाए' पिपासागताया =
 दर्शनात्मुख्येन समागतायाः श्रद्धा=वाञ्छा मे=मम 'पेच्छिउ' प्रेक्षितु=विलो
 कितु वर्त्तते 'जे' यस्मात् 'अवलोहि' अवगोह्य=पश्य 'ता' तावत् 'इओ
 मम' इतो मम=ममाभिमुख 'णाह' हे नाय ! 'जा' यावत्=यावत्કાલ તે=તથ
 'પેચ્છામિ' પ્રેક્ષે=પશ્યામિ 'વયણકમલ' વદનકમલ=મુલકમલમ્, ॥ ૭ ॥

ય વિગય ઘન-વિમલ-સસિમહલાગાર સસ્તિરીય સારય નવકમલ કુમુ
 યકુવલય-વિમલદલ-નિકરસરિસ-નિભનયણ વયણ પિપાસાગયાએ
 સદ્ધા મેં પેચ્છિઉ જો અવગોઈ તાહો મમ ણાહ જા તે પેચ્છામિ વયણ
 કમલ ૭) દર્શન કી ઉત્સુકતા સે આઈ હુઈ મેરીહચ્છા તુમ્હારે મુખ કો
 દેખને કે લિયે હો રહી હૈ । તુમ્હારા વહ મુખ મેઘ રહિત નિર્મલ ચન્દ્રમ-
 હલ કે સમાન આકૃતિ વાલા એવ વિશિષ્ટ શોભા સપન હૈ । હસકે દોનો
 નેત્ર શરદકાલીન નવીન કમલ, કુમુદ, એવ કુવલય કે દલનિકર કે
 સમાન અત્યન્ત દીપ્તિ શાલી હૈ । સૂર્યવિકાશીપદ્મ કા નામ કમલ, ચન્દ્ર
 વિકાશી પદ્મ કા નામ કુવલય હૈ । હસલિયે હે નાય ! હસ તરફ તુમ
 મેરી ઓર દેખો જયતક તુમ મેરી ઓર દેખતે રહોગે-તયનક મેં તુમ્હારે

(તુજ્ઞ ય વિગય ઘનવિમલસસિમહલાગાર સસ્તિરીય સારય નવકમલ
 કુમુય-કુવલય-વિમલદલ-નિકર-સરિસ-નિભનયણ વયણ પિપાસા ગયાએ સદ્ધામે
 પેચ્છિઉ જો અવગોઈ તાહો મમ ણાહ તે પેચ્છામિ વયણકમલ ૭)

દર્શનના ઉમળકાથી પ્રેરાઈને આવેલી મારી ઈચ્છા તમારા મુખને જોવાની
 થઈ રહી છે તમારૂં મુખ મેઘ રહિત નિમળ ચદ્રમહાની જેમ આકારવાળું
 અને સનિશેષ સીદ્ધિ યુક્ત છે અને નેત્રો શરદ-ઋતુના નવીન કમળ, કુમુદ
 અને કુવલયના દલનિકરની જેમ ઘણાં વૃત્તિમાન છે સૂર્ય વિકાશી પદ્મનું નામ
 કમળ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મનું નામ કુવલય છે એટલા માટે હે નાય ! તમે મારી
 તરફ જુઓ ન્યા મુખી તમે મારી તરફ જોતા રહેશો ત્યાં મુખી હું પણ
 તમારૂં મુખકમળ જોઈ લઈશ

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण 'सप्पणयसरलमहुराई' सप्पणयसरलमहुराणि-स्नेह-
सहितं सुखार्थगोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः 'कलुगाई' करुणानि=करुणरम-
जनकानि 'वयणाई' वचनानि 'जपमाणी' जल्पन्ती सा पाया 'मागओ'
मार्गतः मार्गे इत्यर्थ 'समण्णेइ' समन्वेति=अथाह्वयति 'पावहियया' पाप
हृदया=कुटिलान्त करुणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिणरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा
तैश्चैव सप्पणयसरसमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्टं सन् रत्नद्वीप-
स्या देवतायास्तस्या. सुन्दरस्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनत्रय
च दिव्याम्, तथा 'सरभसउवगूहियाई' सरभसोवगूहितानि=ससम्भ्रनकृताब्ज-
नानि, यानि च 'त्रिवोयविलसियाणिय' त्रिवोक विलसितानि=त्रिवोरा =

सुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराई पुणो २ कलुगाई
वयणाई जपमाणी सा पावमगओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार
-कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता चार २ स्नेह सहित, सुखार्थ
गोधक, मधुर एवं करुणारसजनक वचनों को बोलती हुई मार्ग में उस-
के पीछे २ चलने लगी। (तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूस
णरवेण कणसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं
सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथण नहणयण कर
चरणनयणलावन्नरुजोव्वणसिंरि च दिव्व सरभसउवगूहियाई विव्वो
य विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवल्लिय
ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे
कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराई पुणो २ कलुगाई वयणाई जपमाणी सा पाव
मगओ समण्णेइ पावहियया ८)

आ रीते कुटिल हृदयवाणी ते २ नदीप देवता बारबार स्नेहमयित,
सुखार्थ गोधक मधुर अने कइल्ला रसजनक वचनो उछेली मार्गमा तेने अनु
सरती आलस्य लागी

(तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूषणरवेण कणसुहमणोहरेण
तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
तीसे सुन्दरथणनहणवयणकर-चरण-नयण-लावन्नरुजोव्वणसिंरि च दिव्व
सरभसउवगूहियाई त्रिवोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्स-
सिय मलिय उवल्लिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे
रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय)

સ્ત્રીચેષ્ટા વિશેષાઃ, ત્રિલસિતાનિ=નેત્રવિકારાદિ લક્ષણાનિ ચ 'વિહસિય મકડકાવ
 દિદ્વિનિરસસિયમલિય ઉવલ્લિયથિયગમનપ્રણયલિજિનયપાસાદ્યાણિ ય' વિહસિત
 સમટાક્ષદૃષ્ટિનિઃ શ્વસિતમન્તિત પન્તિતસ્થિતગમનપ્રગયલિમિત પ્રસાદિતાનિ ચ-
 વિહસિતાનિ=હાસ્યાનિ, સમટાક્ષદૃષ્ટયઃ=સરિસારિજોમ્નાનિ, નિઃ શ્વસિત=
 નિઃ શ્વાસમોચનમ્, મલિતં=પુરુષામિલપિતમર્દનમ્, ઉવલ્લિતાનિ=ક્રીડાવિશેષ
 રૂપાણિ, સ્થિતમ્=ભવનનિવસનાદિમ્, ગમન=હસગત્યાસશ્રવણમ્, પ્રણય=સ્નેહ,
 વચનમ્, લિસન=રામકલહઃ, પ્રસાદિત=પ્રસન્નતારૂપમ્, એતાનિ સર્ગાણિ ચ 'સર-
 માણે', સ્મરન્=પુનઃ પુનઃ સ્મૃતિપથમાનયન્ 'રાયમોહિયમર્દ' રાગમોદિતમતિ.=
 કામરાગમૂર્છિતમતિ, 'અવસે' અવશ=વિવશ કામપરાધીન 'કમ્મવસગ' 'કમ્મ
 વસગત=કમ્મગતિપરવશઃ સન્ અસૌ જિનરક્ષિતસ્તા 'અવયવલ્લ' પદ્યતિ
 'મગ્ગઓ' માર્ગત' પૃષ્ઠત 'સવિલિય' સગ્રીહ=સલજ્જ દૃષ્ટવાનિત્યર્થ ।

સુર્ય દેને વાળે ઔર મન કો દરણ કરને વાળે ઉન્હીં ભૂષણો કે શબ્દોં સે
 તથા ઉન્હીં સપ્રણય સરલ મધુર ભાષણો સે जिसका रागभाव क्षीणुणित
 हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चंचल मनवाला बन गया । सो उस
 रयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनो की, वदन की दोनों
 करों ही दोनो चरणों की, लावण्य की, रूप एव यौवन की दिव्य श्री
 का तथा उसके ससभ्रमकृत आलिङ्गनों का, विबोधक तथा विलासो का,
 हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषामिलपित
 मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितो का भवनादिको मे निवाम करने
 आदि का उसकी हसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनो
 का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का चार २ स्मरण करता हुआ वह
 काम राग से मोहित मतिगला बन गया । इस तरह काम से पराधीन

તાર પછી કાનેને ગમતા અને મનને આકષનારા ઘરેલુઓના શબ્દોથી
 તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગભાવ બમણો વધી ગયો છે
 એવો તે જિનરક્ષિત ચચળ મનવાળો થઈ ગયો તે રચણા દેવીના બંને સુદર
 સ્તનોનું, જઘનોનું, વદનનું બંને હાથોનું, બંને ચંદ્રોનું, લાવણ્યનું રૂપ તેમજ
 યૌવનનું, વિવશીનું, તેના સમ્પ્રમકૃત આલિંગનોનું, વિબોધકનું વિલાસોનું,
 હાસ્યનું, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનું, શ્વાસ મોચનનું, પુરુષામિલપિત મર્દનનું,
 ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલપિતોનું ભવનો વગેરેના રહેવા કરવાનું તેની હસ જેવી
 ગતિનું, તેના પ્રણયવૃક્ષ્ય વચનોનું કામકલહનું તેની પ્રસન્નતાનું ચારવાર સ્મરણ
 કરતો કામરાગથી મોહિત મતિગળો થઈ ગયો આ રીતે કામગીરી થયેલો

ततः खलु जिनरक्षित समुत्पन्नकलुणभाव ता मति सजातदगार्द्रहृदयम्, अत एव 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ' मृत्युगलत्थल्लानोदितमति, मृत्युना=मृत्युराक्ष सेन 'गलत्थल्ला' = मण्डप्रदणरूपा, तथा नोदिता=स्वदेशगमनवैमुरयतया मृत्यु मुत्तमपेगसमुत्पन्नकृता मतिर्यस्य स तया तम् 'अवयक्खत' ता रत्नद्वीपदेवतां पश्यन्त तथैव=तयारूपेणैव यक्षश्च शैलकः 'जाणिऊण' ज्ञात्वा 'सणियर' शन शनैः 'उव्विहद' उद्विजहाति=उच्छालयति-'नियगपिट्ठाहि' निज पृष्ठाद् विगयसद्ध 'विगतश्रद्ध विगता=नष्टा श्रद्धा विश्वासो यववचने यस्य स तम्, स यक्षस्त स्वपृष्ठात्पातयावासेत्यर्थः ।

ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता 'निस्ससा' नृशसा=निर्दया 'कलुण' पश्यन्=दयनीयं जिनरक्षित 'सकलसा' सकलुपा=कलुपितहृदया शैलकपृष्ठात्

पना वह विचारा जिनरक्षित अशुभकर्म के चक्कर में पड़कर मार्ग में चलते २ उसकी ओर बार २ लज्जा सहित देखने लग गया । (तएण जिणरक्खिय समुत्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत' तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियर उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगय सद्ध) उत्पन्न हुआ है रयणा देवी के प्रति दया भाव जिसको ऐसे उस जिनरक्षित को कि जिम की मति कठ पकड़ कर मृत्यु रूपी राक्षस ने अपने मुख में प्रवेश के सम्मुख कर ली है रयणा देवी की ओर बार २ निहारता हुआ देखकर-जानकर धीरे २ अपनी पीठ पर से अपने वचनों में श्रद्धा बिहीन जान उडाल दिया । पटक दिया (तएण सा रयणा-दीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि

विश्रासे अनरक्षित अशुभ कर्मनी लपेभा आवीने भागभा चलते आलने। तेनी सामे बारबार लल्लयुक्त थधने जेवा लाये।

(तएण जिणरक्खिय समुत्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियर उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगयसद्ध)

रयणा देवीना भाटे जेना मनभा हया भाव जन्मये छे जेवा ने अन रक्षितने-उ जेना मतिनु गणु हणावीने मृत्युरूपी राक्षसे गणी जवा भाटे पोताना मोनी सामे करी लीधी छे-रयणादेवीनी तरङ्ग बारबार जेता जाणीने, तेना (यक्षना) वचनोभा अश्रद्धाणु थध गयेले। अभलने धीमे धीमे अन रक्षितने यक्षे पोतानी पीठ उपरथी ड्रेडी दीधो पट्टी दीधो।

(तएण सा रयणादीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलग-पिट्ठाहि ओवयत दास ! मओसिति जपमाणी अप्पच सागरसल्लिगेण्हिय वादाहि

स्त्रीचेष्टा विशेषाः, त्रिलसितानि=नेत्रत्रिकारादि रक्षणानि च 'विहसिय मरुडकव दिट्टिनिरससियमलिय उवल्लियटियगमणपणयखिज्जियपासाड्याणि य' त्रिलसित सफटाक्षदृष्टिनिः श्वसितमन्ति पन्थितस्थितगमनप्रणयखिमित प्रसादितानि च- विहसितानि=हास्यानि, सफटाक्षदृष्टयः=सविहारिजोम्नानि, निः श्वसित= निः श्वासमोचनम्, मलितं=पुरुषाभिलषितमर्दनम्, उपलन्तितानि=क्रीडाविशेष रूपाणि, स्थितम्=भवननिवसनादिभूम्, गमन=हसगत्यासञ्चरणम्, प्रणय=स्नेह, वचनम्, त्रिसन=रामकलहः, प्रसादित=प्रसन्नतारूपम्, एतानि सर्वाणि च 'सर- माणे', स्मरण=पुनः पुनः स्मृतिपथमानयन् 'रागमोहियमई' रागमोहितमति.= कामरागमूर्च्छितमति, 'अवसे' अवश=विवश कामपराधीन 'वम्मवसगए' कर्मवशगत=कर्मगतिपरवशः सन् असौ जिनरक्षितस्ता 'अवयक्खद' पश्यति 'मग्गओ' मार्गेत पृष्टत 'सविलिय' सत्रीड=सलज्ज दृष्टवानित्यर्थ ।

सुख देने वाले और मन को हरण करने वाले उन्हीं भूषणों के शब्दों से तथा उन्हीं सप्रणय सरल मधुर भाषणों से जिसका रागभाव क्षीणुणित हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चंचल मनवाला बन गया। सो उस रयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनों की, वदन की दोनों करों की दोनों चरणों की, लावण्य की, रूप एवं यौवन की दिव्य श्री का तथा उसके ससभ्रमकृत आलिङ्गने का, विवशक तथा बिलासे का, हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित-मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितो का भवनादिको में निवाम करने आदि का उसकी हसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनों का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह काम राग से मोहित मतिवाला बन गया। इस तरह काम से पराधीन

८-१२ ५४१ कानेने गमता अने मनने आक्षय नारा धरेष्ठाओना शण्डोधी तेमज प्रणयना सरण मधुर वचनोधी जेना राज भाव गमल्लो वधी गथो छे ओवे ते जनरक्षित यरण मनवाणो थर्छ गथो ते रक्षणा रेवीना जने सुदर स्तनोनु, जघनोनु, वदननु जने हाथोनु, जने थ पोनु, लावण्यनु इप तेमज यौवननु, विवश्रीनु, तेना ससभ्रमकृत आलिङ्गनोनु, विवशोक्तु विलसोनु हास्यनु, कटाक्षयुक्त दृष्टि विक्षेपनु, श्वास मोचननु, पुरुषाभिलषित मर्दननु, क्रीडा विशेष इप उपलपितोनु लवनो वगेरेभा रडेवा करवानु, तेनी हस जेवी गतिनु, तेना प्रणयपूष्ण वचनोनु कामकलहनु तेनी प्रसन्नतानु बारबार स्मरण करतो कामरागधी मोहित मतीवाणो थर्छ गथो आ रीते कामज्ज थरेवे

तत्र 'विन्यमाण' विन्यत=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवहिरस्म' सर-
सवधितस्य साभिमान वध प्रापितस्य 'वेत्तुण' गृहीत्या 'अगमगाढ' अज्ञाद्धानि
अज्ञोपाद्धानि=स्वचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=रुधिरलिप्तानि 'उक्खित्तमलि'
उत्क्षिप्तमलिम्=माराशप्रक्षेपणरूप वायसमलि-मिसमलि 'चउद्दिसि' चतुर्दिक्षु
करोति सा 'पजली' प्राञ्जलि=संयोजित करपुटा 'पहिट्ठा' ग्रहण्टा=हर्षितमनस्का
सती घातरूप स्याभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो । जो अम्ह निगंथो वा
निगंथो वा आयरियउवज्झायाण अतिए पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ
अभिलसइ से ण इह भवे चेव बहूण समणाणं४ जाय सं-
सार० अणुपरियट्ठिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ
अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवय-
णसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता
पडति ससारसायरे घोरे । भोगेहि निरवयक्खा तरति
ससारकतार ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तप्रान्तेनैव 'समणाउसो ।' हे श्रमणा
अपने घातरूप अभिलषित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक
हर्षित हुई । उस रत्नदेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन
रक्षित के रुधिर लिप्त अग उपांगो की चारो दिशाओ में वायस बलि के
जैसी बलिकी और दोनो हाथो को जोड़कर फिर बड़ी आनन्द मग्न
हुई । ॥ सू० ७ ॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणा !

करी नाश्या आ रीते पोतानां घातकी छत्था पूरी करता ते अत्यधिक प्रसन्न
थर्ध ते रयणा देवीओ बोद्धीथी णरउओवा कउडे कउडा थयेवा छनरक्षितना
अ गो, उपागोने सगव आउ दिशाओमा उगउडा वगेरेने भाटे बलि इपमा
के डी दीधा अने पछी अने हाथोने जोडीने ते आनन्दमग्न थर्ध गर्ध । सूत्र "७॥"

(एवामेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ—(एवामेव) आ प्रभाषे (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

‘ઓવયં ત’ અપત તમ્=સ્મદ્ગ્રે પતન્તમ્, ‘દાસ’ હે દાસ ! હે નીચ ! ‘મઓમિ’ મુનોઽસિ ત્વમ્, ઇતિ હ્રસ્વતી સતી ‘અપ્પત્ત સાગરસલિલ’ અપાત્ત સાગરમલિલ સમુદ્રનીરમમાપ્તમેવ મધ્ય ઇવ ‘ગેષ્ઠિય યાગર્હિ’ ટૂઠીન્યા યાદુભ્યામ્ । આરમન્ત=સરુણ રુદન્ત=ચીત્કુર્યન્તમિત્યર્થઃ ઝર્મ્મ ‘ઉન્વિહ’ ઉદ્વિજઠાતિ=ઉચ્છાલ્યતિ અમ્પરતલે=ગગનતલે, ‘ઓવયમાણ ચ’ અપતત્ત ચ પથાદધ પતન્ત ચ ‘મહલ ગ્મેણ’ ‘મણ્ડલાગ્રેણ=લગ્નેન’ ‘પહિચ્છિત્તા’ પ્રતિચ્છિન્ન=છિન્ન નીલોત્પલ ગવલાસી પ્રકાશેન=અતિશયાગેન અસિચ્ચરેણ=મુતીક્ષ્ણસગ્ગેન સખ્ખાલ્લહિ=લ્લહ-લ્લહ કરોતિ

ઓવયત દાસ ! મઓસિતિ જપમાણી અપ્પત્ત સાગરસલિલ ગેષ્ઠિય યાગર્હિ આરસત હહુ ઉન્વિહતિ અમ્પરતલે, ઓવયમાણ ચ મહલગ્મેણ પહિચ્છિત્તા નીલુપ્પલગવલઅયસિપ્પગાસેણ અસિચ્ચરેણ લ્લહાલ્લહિ કરેહ તત્થ વિલવમાણ તસ્સ ય સરસ ચહિયસ્સ યેત્તૂણઅગ મગાતિ સરુહિરાહ ઉન્નિલ્લત્ત વલિં ચહિસિં કરેહ મા પજલી પહિદ્ધા) इसके बाद नृशस-हृत्यारी-तयो कलुषित हृदयवाली उस रयणादेवीने शैलक यक्ष की पीठ से समुद्र में गिरते हुए जिनरक्षित को जप तक वह समुद्र में नहीं गिर पाया तब तक बीचमें ही अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और करने लगी हे नीच अब तु मर गयो । इस प्रकार सुमकर सक रुण विलाप-चित्तकार-करते हुए उस जिनरक्षित को उसने ऊपर उठाल दिया पश्चात् निचे गिरते समय उसने अपनी तलवार से दो टुकड़े कर दिये । दो टुकड़े करके फिर उसने नीलोत्पल, गवल एवं अतसी के पुष्प के जैसी वर्णवाली तीक्ष्ण तलवार से उसके खड्ग २ कर दिये । इस तरह

આરસત હહુ ઉન્વિહતિ અમ્પરતલે, ઓવયમાણ ચ મહલગ્મેણ પહિચ્છિત્તા નીલુપ્પલ ગવલ અયસિપ્પગાસેણ અસિચ્ચરેણ લ્લહાલ્લહિ કરેહ તત્થ વિલવમાણ તસ્સ ય સરસ ચહિયસ્સ યેત્તૂણ અગમગાતિ સરુહિરાહ ઉન્નિલ્લત્ત વલિં ચહિસિં કરેહ પજલી પહિદ્ધા)

ત્યારપછી નૃશસ-હૃત્યારી-તેમજ કલુષિત હૃદયવાળી રયણા દેવીએ વેલક યક્ષની પીઠ ઉપરથી ખમીને સમુદ્રમાં પડતા જોયો ત્યારે તે સમુદ્રમાં પડે નહિ તે પહેલા તેણે પોતાના બને હાથોથી તેને પકડી લીધો, અને તે કહેવા લાગી કે હે નીચ ! હવે તું મરાયો જ સમજ ગયણા દેવીની વાત સાંભળીને જન રક્ષિત ઝડપે વિલાપ કરવા લાગ્યો તે દેવીએ તે સ્થિતિમાં જ તેને ઉપર ઉઠાવ્યો અને ત્યારપછી નીચે પડતા જનરક્ષિતના તેણે પોતાની તલવારથી બે કકડા કરી નાખ્યા બે કકડા કર્યા બાદ પણ તેને નીલોત્પલ, ગવલ અને અતસીના પુષ્પ જેવી રંગવાળી તીક્ષ્ણ તલવારથી તેના શરીરના ૨ કકડા

तत्र 'विलम्बमाण' विग्रह-त=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवहियस्म' सर-
सवधितस्य साभिमान वध प्रापितस्य 'प्रेरण' गृहीत्या 'अगमगाइ' जङ्गाद्वानि
अङ्गोपाङ्गानि=स्पर्शचरणमस्तम्भादीनि स्रग्धिराणि=स्फुरितलिप्तानि 'उत्तिलत्तमलि'
उत्तिलत्तमलिम्=जामाशप्रक्षेपणरूप रायममलि-मिममलि 'चउदिमि' चतुर्विध
करोति सा 'पजली' प्राञ्जलि =सयोजित करपुटा 'पहिट्टा' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का
सती प्रातरूप स्थाभिलपित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो । जो अम्ह निगंथो वा
निगंथी वा आयरियउवज्जायाण अंतिए पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ
अभिलसइ से ण इह भवे चेव बहूण समणाणं जाव स-
सार० अणुपग्घिद्विस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—छलिओ
अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवय-
णसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता
पडंति ससारसायरे घोरे । भोगेहि निरावयक्खा तरंति
ससारकत्तारं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तश्रान्तेनैव 'समणाउसो।' हे श्रमणा
अपने घातरूप अभिलपित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक
हर्षित हुई । उस रत्नादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन
रक्षित के स्पर्श लिप्त अग उपांगों की चारों दिशाओं में वापस बलिके
जैसी बलिकी और दोनों हाथों को जोड़कर फिर बड़ी आनन्द मग्न
हुई । ॥ सू० ७ ॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ।

हरी नाभ्या आ रति पोताना घातकी धृष्ट्या पूरी करता ते अत्यधिक प्रसन्न
थर्ध ते स्थला देवीके बोहीथी परराकेला कड्डे कड्डा थयेला अनरक्षितता
अगो, उपांगाने सगर्भ आर दिशाओमा जाजडा वगेरेने भाटे बलि इधमा
इकी दीधा अने पछी अने हाथाने ओडीने ते आनन्दमग्न थर्ध गर्ध । सूत्र "७॥"

(एवामेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ—(एवामेव) आ प्रभावे (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ।

આયુષ્મન્તઃ । યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો યા નિર્ગ્રન્થી યા આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે
 પ્રવ્રજિતઃ સન્ પુનરપિ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્=પૂર્વત્યક્તાન્ ' આસાયઃ ' આસા-
 દયતિ=સ્વીકરોતિ, ' પત્યયઃ ' પ્રાર્થયતે=અપ્રાપ્તાન્ યાચતે, ' પીહેઃ ' સ્પૃહયતિ-
 ' અયાચિત-एवाय मष्ट भागान् ददाति तदा समीचीन स्यात् ' इत्यादि रूपं
 સ્પૃહા કરોતિ ' અમિલસઃ ' અમિલપતિ=દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ-વિષયેષુ વાઙ્ઠા કરોતિ,
 સ સ્વલુ ઇહ મવ એવ વહુના શ્રમણાના, વહીના શ્રમણીના, વહુના શ્રાવકાણા
 વહીના શ્રાવિકાણા મધ્યે ' જાત્ર ' યાત્ર-યાત્રન્ઠ-દેનેદ દૃશ્યમ્ - હીલનીય',
 નિન્દનીય, વિસનીયઃ=મર્સનીયઃ, ગર્હણીય', પરિમપ્રનીય =તિરસ્કરણીયો મવ્રતિ,
 પરલોકેઽપિ ચ સ્વલુ આગમિપ્યતિ કાલે યદ્દનિ ટ્ઢ્ઠાનિ=કર્ણનાસાચ્છેદનરૂપાણિ
 પ્રાપ્નોતિ યાત્ર-અનાદિકમ્-અનવદગ્રમ્=અનન્ત, દીર્ઘાધ્યાન=દીર્ઘમાર્ગ, દીર્ઘાદ
 વા દીર્ઘકાલિક ચાતુરન્તસસારકાન્તાર=ચાતુર્ગતિકસસારાદયીમ્ ' અણુપરિચ્છિ-
 સ્સઃ ' અનુપર્યટિપ્યતિ=પુનઃ પુનર્ન્રમિપ્યતિ, યથા વા સ જિનરસિત' । અત્રાર્થે
 દૃષ્ટાન્તયોજનાગાથાદ્વયેનાહ—

(જો અમ્હ નિર્ગથો વા નિર્ગથી વા આચરિયુવજ્ઞાયાણ અતિએ પવ્વહાએ) જો હમારા નિર્ગન્થ અથવા નિર્ગન્થી જન આચાર્ય તથા ઉપા-
 ધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ (પુનરવિ માણુસએ કામભોગે
 આસાયહ પત્યહ, પીહેહ, અમિલસહ) પુન મનુષ્ય ભવ સવન્થી કામ
 ભોગોં પૂર્વત્યક્ત વૈષયિક સુખો કો-સ્વીકાર કર લેતા હૈં ઉનકી ચાહના
 કરતા હૈં " વિના યાચના કિયે હી યહ મેરે નિયે ભોગોં કો દેદેવે તો
 અચ્છા હૈં " ઇસ પ્રકાર કી જો સ્પૃહા ઇચ્છા કરતા હૈં, યા દૃષ્ટાદૃષ્ટ
 શબ્દાદિ વિષયો મે વાઙ્ઠા કરતા હૈં (સે ણ ઇહ મથે ચેવ વહૂણં સમણા
 ણં ૪ જાવ સસાર • અણુ પરિચ્છિસ્સઃ જહાવ સે જિનરક્ખિએ છલિઓ

(જો અમ્હ નિર્ગથો વા નિર્ગથી વા આચરિય ઉવજ્ઞાયાણ અતિએ પવ્વહાએ)
 જે અમારો નિર્ગન્થ કે નિર્ગન્થી જન આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજીત થઇને

(પુનરવિ માણુસએ કામભોગે આસાયહ પત્યયહ, પીહેહ, અમિલસહ)

ફરી તે મનુષ્યભવના કામભોગો-પ્રવ્રજીત થતી વખતે છોડેલા મનુષ્યભવના
 વિષમ સુખો-ને સ્વીકારે છે, તે સુખોની ઇચ્છા કરે છે " હું વિષય સુખની
 ઝોની પસંદથી ભાગણી કરી નહિ ને ઝોની મેળે તે મને વિષમ સુખો આપે
 તો કેટલું સારુ થાય ' આ રીતે જે સ્પૃહા કરે છે, અથવા તે દૃષ્ટાદૃષ્ટ શબ્દ
 વગેરે વિષયોની ઇચ્છા કરે છે

(સે ણ ઇહ મથે ચેવ વહૂણ સમણાણ ૪ જાવ સસાર • અણુપરિચ્છિસ્સઃ

“ છલિઓ અવયવસ્વતો, નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધેણ ।

તમ્હા પવયણસારે, નિરાવયવસ્વેણ ભવિયવ્વ ॥ ૧ ॥

ભોગે અવયવસ્વતા, પઢતિ સસારમાયરે ઘોરે ।

ભોગેદિં નિરાવયવસ્વા, તરતિ સસારકતાર ॥ ૨ ॥ ” ઇતિ ॥

અસ્ય વ્યાખ્યા-છલિતઃ=અશ્વિતઃ, કઃ ? અવયવસ્વતો ’ પશ્યન્ રત્નદ્વીપ દેવતામ્-અવલોકયન્ જિનરક્ષિતો વિપ્રતારિત । ય ‘નિરાવયવસ્વો ’ અપશ્યકઃ-તસ્યા દેવતાયા અદર્શક તા ન દૃષ્ટન્નિત્યર્થ, સ જિનપાલિત ગત=ગૃહ પ્રાપ્ત ‘ અગ્નિગ્ધેણ ’ અગ્નિદેવેન=નિર્વાણતયા, સુસુખેન સ્વસ્થાન પ્રાપ્ત વાનિત્યર્થઃ । અથોપદેશમાહ-તસ્માત્ કારણાત્ પ્રવચનસારે=ચારિત્રે લગ્ને મતી ‘નિરાવયવસ્વેણ’

અવયવસ્વતો નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધેણ । તમ્હા પવયણસારે નિરાવયવસ્વેણ ભવિયવ્વ) વહુ હસ મન મેં હી અનેક અમંગા અનેકઅમણિયોં અનેક શ્રાવકોં એવ અનેક શ્રાવિકાઓં કે પીચ મેં હોલનીય હોતાહૈ, નિદનીય હોતા હૈ, લિસનોય હોતા હૈ, તયા પરમવ મેં મી અનેક કર્ણનાસિકાચ્છેદન આદિ રૂપ દહોં કો મોગતા હૈ એસા જીવ અનાદિ અનન્ત રૂપ હસ દીર્ઘ માર્ગ યા કાલ વાલે ચતુર્ગતિક સસાર કાન્તાર મેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરેગા । જિન રક્ષિત કા જો હમ વિયય મે દષ્ટાન્ત દિયા ગયા હૈ ઉસકી યોજના હસ પ્રકાર હૈ-જૈસે રચના દેવી કી તરફ દેખતા હુઆ જિનરક્ષિત ઠગા ગયા-ઔર ઉમકી તરફ નહીં દેખતા જિનપાલિત શીઘ્ર અપને ઘર પહુંચ ગયા-હમી તરફ ચારિત્ર કે પ્રાપ્ત કરલેને પર જો વ્યક્તિ શબ્દોદિ વિષયો કી વાઙ્ઠા સે રહિત હોતા હૈ

જહાવ સે જિનરક્ષિત છલિઓ અવયવસ્વતો નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધેણ ! તમ્હા પવયણસારે નિરાવયવસ્વેણ ભવિયવ્વ)

તે આ ભવમાજ ધણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તેમજ ધણા શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓની સામે હીલનીય હોય છે, નિદનીય હોય છે, ખિમનીય હોય છે (ભરસનીય હોય છે) તિરસ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, તથા ખીન જન્મમા પણુ ધણુ કાન, નાક કપાવવા વગેરે રૂપ સજનને ભોગવતો રહે છે આ જાતનો જીવ અનાદિ અનન્તરૂપ આ દીર્ઘ માર્ગ અથવા કાળવાળા ચતુર્ગતિક સસાર કાતારમા વારવાર શ્રમણ કરશે અહીં જીનરક્ષિત વિશે જે દૃષ્ટાન્ત આપવામા આવ્યું છે તેને આ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ જેમ ગ્યણુ દેવીની તરફ જોતા જીનરક્ષિત ઠગાયો અને તેની તરફ ન જોતા જીનપાલિત જોદ્ધમ પોતાને ઘેર પહોંચી ગયો તેમજ ચારિત્ર મેળવવા બાદ જે માણુસ શબ્દોદિ ભોગોની ઇચ્છા

અપચક્ષુરેન્ન=માત્રાપ્રાપ્ત-દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ વિષયાણામદર્શકેણ શબ્દાદિવિષયવાચ્છે
 રહિતેનેત્યર્થ મરિતવ્યમ્, ચારિત્ર શુદ્ધોત્તમા વિષયયાસનામુ છેશતોઽપિ મુનિના
 મૂર્છા ન વિધાતવ્યેતિ માત્ર ॥ ૧ ॥ અતઃપર મોગે ' મોગાન્=શબ્દાદિકાન્
 'અચક્ષુરતા' પશ્યન્ત્=ચાલકાન્તો જીવાઃ પન્તિ સસારસાગરે ઘોરે । યે મોગેષુ
 નિરચક્ષુઃ' અપચક્ષુઃ=ચાલકાદિતાઃ સન્તિ તે તરન્તિ પારયન્તિ સસારકાન્તાર
 =મરાટવીમ્ ॥ ૨ ॥ મૃં ૮ ॥

મૂલમ્-તદ્દેવ સા રચણદ્વીવદેવયા જેણેવ જિણપાલિણ
 તેણેવ ઉવાં વહૂહિ અણુલોમેહિ ચ પઢિલોમેહિ ચ સ્વરમ-
 હુરસિગારેહિ કલુણેહિ ચ ઉવસગેહિ ચ જાહે નો સચાણ્
 ચાલિત્તણ વા સ્વોભિં વિષ્ણં તાહે સતા તતા પરિતતા
 નિઠ્ઠિવણ્ણા સમાણા જામેવ દિસિ પાઉવમૂયા તામેવ દિસ
 પઢિગયા, તદ્દેવ સે સેલણ જક્ષે જિણપાલિણ સાદ્ધ લ-
 વણસમુદ્ધ મજ્ઞમજ્ઞેણ વીચવચ્છે ૨ જેણેવ ચપાનયરી તેણેવ
 ઉવાગચ્છે ઉવાગચ્છિત્તા ચપાણ નયરીણ અગુજ્ઞાણસિ
 જિણપાલિય પિટ્ઠાતો ઓચારેહિ ઓચારિત્તા યવ
 વયાસી-પસણ દેવાનુપ્પિયા । ચપાનયરી દીસેહિ ત્તિકદુ
 જિણપાલિય આપુચ્છેહિ આપુચ્છિત્તા જામેવ દિસિ પાઉવમુષ
 તામેવ દિસિ પઢિગણ ॥ સૂં ૯ ॥

વહુ હમ સસાર રૂપ અટવી સે પાર હો જાતા હૈ ઓર જો ઉસ અવસ્થા
 મે શબ્દાદિ વિષય મોગોની વાચ્છા કરતા હૈ વહુ સસાર રૂપ અટવી મે
 હુચતા રહતા હૈ-પડના રહતા હૈ । મૃત્ર " ૮ "

રાખતો નથી તે આ સસાર રૂપી અટવીની પાર પહોંચી જાય છે અને જે
 શબ્દ વગેરે વિષય-ભોગોની વાચ્છા કરે છે તે સસાર રૂપી અટવીમાં ફસાઈને
 તેમાં જ રૂખતો રહે છે ॥ સૂત્ર " ૮ " ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु तदनन्तरं जिनरचितवधानन्तरं सा रत्नद्वीपदेवता यत्रैव जिनपालितस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य बहुभिः—अनुलोमैः=अनुकूलैश्च, प्रतिशोमैः=प्रतिकूलैश्च ‘खरमहुरसिंगारेहिं’ खरमधुरशृङ्गारैः सरैः=कर्कशैः, मधुरैः=मिष्टैः कर्णमुखदैरित्यर्थः, शृङ्गारैः=शृङ्गाररसोत्पादकैः, करुणैश्च=करुणाजनकैः उपसर्गैरनुकूलरूपैश्च यदा त नो शक्नोति ‘चालित्तए वा’ चालयितुम्=अधीस्तामुत्पादयितुम्, ‘बोमित्तए वा’ बोधयितुम्=सुन्दरं कर्तुम्, विपरिणामित्तए’ विपरिणामयितुम्=मनः परिणाम परानर्त्तयितुं न समर्थऽभूत् तदा सा ‘सता’ शान्ता=शिथिला हतोत्साहा, श्रान्ता या=परिश्रमिता तान्ता=खिन्ना, परितान्ता=सर्वथा खेदमापन्ना ‘निव्विण्णा’ निर्विण्णा=मिमनम्भा सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता=समागता तामेव दिशं प्रतिगता=प्रतिनिवृत्ता ।

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा वच्छड इत्यादि ।
टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सारयणदीवदेवया) वह रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहां जिन पालित था (तेणेव उवागच्छड) वहां आई (वहहिं अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य जाहेनो सचाएहिं चालित्तए वा बोमि ० विप्प ० ताहे सतातत्ता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ ० तामेव दिस पडिगया) वहां आकर उन से अनेक अनुकूल प्रतिकूल, कर्कश, मधुर—कर्णसुखद—शृङ्गार रसोत्पादक, एवं करुणारस जनक उपसर्ग वचनो द्वारा उसे चलायमान करने का क्षुभित करने का और उसकी मनोवृत्ति को बदल देने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब वह उसे चलायमान करने के लिये, क्षुभित करने के लिये एवं उस की मनोवृत्ति बदलने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब हतोत्साह परिश्रमिता

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छड इत्यादि ।
टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (सा रयणदीवदेवया) ते रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) त्या एका पालित हुनी (तेणेव उवागच्छड) त्या आवी (वहहिं अणुलोमेहिं कलुणेहिं य उवसग्गे हि य जाहे नो सचाएहिं चालित्तए वा बोमि ० विप्प ताहे सतातत्ता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ ० तामेव दिस पडिगया)
त्या आवीने घण्टा मनुष्य, प्रति,ण, कर्कश, मधुर, कर्णसुखद शृङ्गार रसोत्पादक, अने उदया ममजनक उपसर्ग वचनो वडे तेने पोताना निव्वयथी मणिना लुलित उरवाना अने तेनी मनोवृत्तिने देखी नाभवाना भूषण

तत खलु स शैलको यक्षो जिनपालितेन सादं त्पणसमुद्र मध्यमध्येन
'वीश्वयइ वरतिप्रनति=गच्छति, व्यतिप्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अगुज्जाणसि' अगोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालित
पृष्ठात् अतारयति, अतार्य-एवमयदत्-एषा=पुरोर्त्तिनी खलु हे देवानुप्रिय !
चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्या=उत्पुस्त्या जिनपालितम् 'जापुच्छ' जापुच्छति=
तदनुज्ञा दृक्कति, आपुच्छ यस्य एव दिग्गः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत । सू० ९॥

खिन्न, परितान्त एव विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी
उसी दिशा की तरफ चली गई । (तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण
सद्धि लवणसमुद्ध मज्झ मज्जेण वीडवयइ २ जेणेव चपा नयरी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अगुज्जाणसि जिणपालिय
पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया । दीमइ
त्ति कट्टु जिणपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिंसि पाउम्भए
तामेव दिंसि पडिगए) इसके बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के
बीच में चलने लगा और चल कर जहाँ चपा नगरी थी-वहाँ आ पहुँचा
आकर के उसने चपा नगरी के प्रधान नगीचे में जिन पालित को अपनी
पीठ पर से उतार दिया । उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार
कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चपा नगरी दिखलाई देनी है । ऐसा कह कर
फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से
प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहाँ से चला गया । सूत्र ॥ ९ ॥

प्रयत्नो अर्था पशु ते त्या क्षवी नहि छेवटे ते इताश, थाकेली, पिन्न, परि
तात अने विमनस्क थजने ते जे दिशा तरक्षथी आवी હતી તે જ દિશા તરફ
પાછી જતી રહી

(तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धि लवणसमुद्ध मज्झ मज्जेण वीड
वयइ २ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अगु
ज्जाणसि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी एसण देवाणु-
प्पिया । चपानयरी दीमइ त्ति कट्टु जिणपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिंसि
पाउम्भए तामेव दिंसि पडिगए)

त्यार બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને આગળ વધતો જ
રહ્યો અને અતે જ્યાં ચપા નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને ચપા
નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમાં જનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી
દીધો, ઉતારીને તેણે જનપાલિતને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સામે
ચપા નગરી દેખાય છે ત્યારબાદ યક્ષ જનપાલિતને જ્યાં માટે પૂછ્યું અને
પૂછીને તે જ દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો ॥

मूलम्—तएणं से जिणपालिए चप अणुपविसइ, अणुप-
विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विल-
वमाणे जिणरक्खियवावत्ति निवेदेइ, तएणं जिणपालिए
अम्मापियरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धि रोयमाणो
वहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति करित्ता कालेण विगय-
सोया जाया, तएण जिणपालिय अन्नया कयाइ सुहासण
वरगत अम्मापियरो एव वयासी—कहण्ण पुत्ता । जिणर-
क्खिए कालगए १, तएण से जिणपालिए अम्मापिऊणं
लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवत्ति
च फलहखडआसायणं च रयणदीवुत्तार च रयणदीवदेवया
गिण्हणं च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायणं च
सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहण च रयणदी-
वदेवया उवसग च जिणरक्खियविवत्ति च लवणसमुद्दउ-
त्तरणं च वपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहाभूय-
मवितहमसदिद्ध परिकहेइ, तएणं से जिणपालिए जाव
अप्पसोगे जाव विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।
तेण कालेण तेण समएण समणे० समोमढे, धम्म सोच्चा
पव्वइए एक्कारसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो
सागरोवमे, महाग्निदेहे सिज्झिहिइ । एवामेव समणाउसो ।
जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरविआसायइ से ण जाव
वीइवइस्सइ जहा दा से जिणपालिए । एव खलु जन्नु ।

તત્ત્વ સ્વલુપ સ શૈલકો યક્ષો જિનપાલિતેન સાર્દ્ધં લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન
'વીજ્વયહ વ્યતિવ્રજતિ=ગચ્છતિ, વ્યતિવ્રજ્ય યત્રૌ ચમ્પાનગરી તત્રૌત્રોપાગચ્છતિ,
ઉપાગત્ય ચમ્પાયા નગર્યા 'અગુઝ્જાણસિ' અગ્રોધાને=મુગ્ધોધાને જિનપાલિત
પૃષ્ઠાત્ અવતારયતિ, અવતાર્ય-અવતારદત્-અપા=પુરોવર્તિની સ્વલુપે દેવાનુપ્રિય !
ચમ્પાનગરી દૃશ્યતે, इति कृत्वा=उत्पुस्तवा जिनपालितम् 'आपुच्छह' आपृच्छति=
तदनुज्ञा दृक्कति, आपृच्छय यस्या एव दिशः मादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत । सू० ९॥

ત્રિભ, પરિતાન્ત એવ વિમનસ્ક હોતા હુઈ વહ જિસ દિશા સે આઈ થી
ઉસી દિશા કી તરફ ચલી ગઈ । (તળણ સે સેલણ જગ્ગલે જિનપાલિણ
સર્દિ લવણસમુદ્ર મજ્જ મજ્જેણ વીજ્વયહ ૨ જેણેવ ચપા નયરી તેણેવ
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ચપાણ નયરીણ અગુઝ્જાણસિ જિનપાલિય
પિટ્ઠાઓ ઓચારેહ, ઓચરિત્તા એવ વયાસી-એસણ દેવાણુપ્પિયા ! દીસહ
ત્તિકદ્દહુ જિનપાલિય આપુચ્છહ આપુચ્છિત્તા જામેવ દિસિં પાઠ્ઠમૂણ
તામેવ દિસિં પઢિગણ) હસ કે ઘાદ વહ શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્ર કે
ધીચ મે ચલને લગા ઓર ચલ કર જહા ચપા નગરી થી-વહા આ પહુચા
આકર કે ઝમને ચપા નગરી કે પ્રધાન ઘગીચે મેં જિન પાલિન કો અપની
પીઠ પર સે ડતાર દિયા । ડતાર કરકે ફિર ડસને ડસ સે હસ પ્રકાર
કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યહ ચપા નગરી દિશ્વલાઈ દેની હૈ । એસા કહ કર
ફિર ડસને જિનપાલિન સે પૂઝા-ઓર પૂઝ કર વર જિસ દિશા સે
પ્રકટ હુઆ થા-ઉસી દિશા કી ઓર વહા સે ચલા ગયા । સૂત્ર ॥ ૯ ॥

પ્રયત્નો ધર્મા પશુ તે ત્યા ક્ષાવી નહિ છેવટે તે હતાશ, થાકેલી, ખિન્ન, પરિ
તાપ અને વિમનસ્ક થઇને તે જે દિશા તન્કથી આવી હતી તે જ દિશા તરફ
પાછી જતી રહી

(તળણ સે સેલણ જગ્ગલે જિનપાલિણ સર્દિ લવણસમુદ્ર મજ્જ મજ્જેણ વીજ
વયહ ૨ જેણેવ ચપાનયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ચપાણ નયરીણ અગુ
ઝ્જાણમિ જિનપાલિય પિટ્ઠાઓ ઓચારેહ, ઓચરિત્તા એવ વયાસી એસણ દેવાણુ-
પ્પિયા ! ચપાનયરી દીમહ ત્તિકદ્દહુ જિનપાલિય આપુચ્છહ આપુચ્છિત્તા જામેવ દિસિં
પાઠ્ઠમૂણ તામેવ દિસિં પઢિગણ)

ત્યાર બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને આગળ વધતો જ
રહ્યો અને અતે જ્યાં ચપા નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને ચપા
નગરીના પ્રધાન ઉદાનમા જનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી
દીધો, ઉતારીને તેણે જનપાલિતને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સાથે
ચપા નગરી દેખાય છે ત્યારબાદ યક્ષ જનપાલિતને જવા માટે પૂછ્યું અને
પૂછીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો . ૯ ॥

कुर्वन्ति, कृत्वा कालेन=कतियय दिवसानन्तरेण विगतशोकाः=शोकरहिता जाताः ।
ततः खलु जिनपालितम् अन्यदा कदाचित् सुखासनगरगत=सुखोपविष्टम् अम्बा-
पितरौ एवमवादिष्टाम्-कथ=केन प्रकारेण खलु हे पुत्र ! जिनरक्षितः कालगतः=
मृतः ? ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापित्रोः-लवणसमुद्रोत्तार च, कालिकवात-
समुत्थान, पोतवहनव्यापत्ति=नौकामग्न च, फलकखण्डासादन=फलकखण्डावलम्बन
च, रत्नद्वीपोत्तार च, रत्नद्वीपदेवताग्रहण च, भोगविभूति=भोगसम्पत्ति च, रत्न-
द्वीपदेवतायाः 'आघायण' आघातन=वधस्थान च, सूलाचितपुरुषदर्शन च,
शैलकयक्षारोहण च, रत्नद्वीपदेवतोपसर्ग च जिनरक्षितविपत्ति=जिनरक्षितमरण
लित, और उनके माता पिता ने मित्र जाति यावत् परिजनो के साथ
समस्त अनेक लौकिक मृतक कृत्य किये । (करिन्ता कालेण विगय सोया
जाया) बाद में जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ ये सब शोक
रहित बन गये और फिर यिलकुल शोक शून्य भी हो गये । (तएण
जिन पालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मा पियरो एव वयासी
कहण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए) एक दिन की बात है कि जब
जिनपालित आनन्द से बैठा हुआ था तब माता पिता ने उस से पूछा
पुत्र ! जिनरक्षित किस प्रकार से काल कवलित हुआ ? (तएण से
जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्रोत्तार च कालियवायसमु-
त्थण पोतवहनविवत्ति च फलहखडआसायण च रयणदीवुत्तार च
रयणदीवदेवया गिण्हण च भोगविभूइ च रयण दीवदेवयाएआघा-
यण च सूलाइय पुरिसदरिसण सेलगजक्ख आरुहण च रयण-

करी (करिन्ता कालेण विगय सोया-जाया) त्यारभाइ जेम जेम समय पसार
थतो गयो तेम तेम तेज्जे पोतानु हुअ पणु भूलता गया अने छेवटे उन
रक्षित विधेनु हुअ तेज्जेना हुइय पटल उपरथी साव लुसार्थ गयु

(तएण जिनपालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मापियरो एव वयासी
कहण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए)

त्यारे जेक दिवसे उनपालित आनन्दपूर्वक जेठा छतो त्यारे माता
पिताज्जे तेने पूछ्यु के डे पु । उनरक्षित कथ रीते भरख पाभ्यो छे ?

(तएण से जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्रोत्तार च कालियवायसमु
त्थण पोतवहनविवत्ति च फलहखड आसायण च रयणदीवुत्तार च रयणदीव
देवयागिण्हण च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायण च सूलाइय
पुरिसदरिसण सेलगजक्खआरुहण च रयणदीवदेवया उवसर्ग च जिणरक्खिय-

समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अय-
मट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ नवमं अज्झयण समत्त ॥

टीका—‘तएण जिणपालिए’ इत्यादि । ततः खलु जिनपालितश्चम्पामनु
प्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव सकृद् गृहं यत्रैव अभ्यापितरो तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य अभ्यापितरोः समीपे रुदन् यावद् विन्पन्=विलापं कुर्वन् जिणरक्षितव्या-
पत्तिं=जिणरक्षितमरणं निवेदयति=रुथयति, ततः खलु स जिनपालिताऽम्मा
पितरौ च मित्रज्ञातियात्परिजनेन सार्द्धं रुदन्तः सर्वे गृहानि लौकिकानि गतकृत्यानि

‘तएण से जिन पलिए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जिनपालिए चप अणुपविसइ) वह
जिन पालित चया नगरी में अनुप्रविष्ट हुआ । (अणुपविसिस्ता जेणेव
सए गेहे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ, प्रविष्ट होकर वह जहाँ
अपना घर और उस में भी जहाँ अपने माता पिता थे वहाँ गया ।
(उवागच्छिस्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खिय
बावत्ति निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापितरो मित्तणाइ जाव परि-
यणेण सद्धि रोयमाणा बह्विं लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति) वह जाकर
उस ने रोते हुए यावत् विलाप करते हुए माता पिता से जिनरक्षित
की मृत्यु हो जानेके समाचार कहे । इस के बाद रोते हुए उस जिनपा

‘तएणं से जिनपालिए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागणाइ (से जिनपालिए चप अणुपविसइ) अन
पालित चया नगरीभा गये।

(अणुपविसिस्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ)

त्या गेहेने ब्या तेनु घर अने तेमां पणु ब्या तेना मातापिता उता
त्या पछोच्ये।

(उवागच्छिस्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियबावत्ति
निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापितरो मित्तणाइ जाव परियणेण सद्धि रोयमाणा
बह्विं लोइयाइ मम किच्चाइ करेति)

त्या तेणे उता यावत् विलाप करता येताना मातापिताने अनरक्षितना
मृत्युना समाचार कइया त्यागछी अनपालित अने मातापिताओउ उता
मित्रज्ञातियावत् परिजनेने बेगा कहीने भरखु पछीनी पछी पछिओ पूरी

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवल्लतः=चम्पाया समागतः । जिनपालितो धर्म श्रुत्वा प्रजित एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि शस्त्रा ज्ञाननिपुणो जात । मासिकया सलेखनया काल कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेवलोके 'दो सागरोवमे' द्विमागरोपमक =द्विमागरोपमस्थितिः देवो जातः । महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति । एस्मे=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आयुष्मन्त ! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रजित सन् मानुष्यकान् कामभोगान् परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायड' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स खलु यावद् 'वीडवइस्सड' व्यतिप्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पारगमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः । इत्यमन दृष्टान्तयोजना—

को-कौम सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगे। (तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए, एक्कारसगवी मासिकेयाण्ण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायड, सेण जाव वीडवइस्सड, जहा वा से जिणपालिए' । एव खलु जवू ! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्म नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण भगवान् महावीर चम्पा नगरी में आये । जिन पालित धर्म का उपदेश सुन कर दीक्षित हो गया । ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन गया । अन्त में एक मास की सलेखना की संलेखना से ६० साठ भक्तों का छेदन कर जब काल किया-ता प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ । यह महा विदेह में सिद्धी गति को

छुभा लोगवता सुजेथी पोताने पणत पमार करवा लाग्ये।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए एक्कारसगवी मासिकेयाण्ण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायड, से ण जाव वीडवइस्सड, जहावा से जिणपालिए' । एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण नमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि)

ते काले अने ते समये श्रमणु भगवान् महावीर य पानगरीमा आल्या उनपालित तेमने उपदेश सालणीने दीक्षित थु गये। धीमे धीमे तेले अगियारे अणोनु ज्ञान भेजवी वीधु छेवटे अड भास ॥ तेले सलेखना करी सलेखनाथी ६० साठ लक्षोनु छेदन करीने काल उर्थो त्यादे प्रथम देवलोकाभा

च, स्वस्य लवणसमुद्रोत्तरण च, चम्पागमन पगट्टयचम्पानगरी समागतं च, शैल-
कयक्षपृच्छन=शैलकयक्षस्य जिनपालित प्रति स्वस्थानगमननिवेदनं च, एतस्मै
वृत्तान्तं 'जहाभूय' यथाभूत=यथाजातम्, 'अत्रिह' अत्रितय=तत्तयम्, 'अस-
दिह' असदिग्न-सदेहरहित परिक्रययति । ततः सलु म जिनपालितो यावद्
'अप्पसोए' अल्पशोकः=विगतशोकः यावद् विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादि
विषयान् भुज्जानो विहरति० ।

दीवदेव्याउवसग्ग च जिणरत्तियविस्सि च लवणसमुद्र उत्तरणं
च-चपागमणं च सेलगजज्जआपुच्छणं च जहाभूयमवित्तहमसदिह
परिकहेह) तत्र जिनपालित ने माता पिता से लवणसमुद्र में उतरने
से लेकर अचानक कालिक वायुका उठना नौका का नष्ट होना काष्ठ
फैलक का मिलना उसकी सहायता से रत्न द्वीप में उतरना वहा रयणा
देवी के द्वारा अपना ग्रहण होना उसके साथ भोग रूप विभूति का
भोगना, बाद में रयणा देवी के वधस्थान का देखना वहा शूलारोपित
पुरुष को देखना, शैलक यक्ष की पीठ पर चढ़ना रयणा देवी का उपसर्ग
करना, जिन रक्षित का मरण होना अपना लवणसमुद्र का पार करना
चंपा नगरी में पीछे आना और शैलकयक्ष का पुत्र कर अपने स्थान
वापिस चले जाना यहां तक का सब वृत्तांत जैसा हुआ था ठीक २
विना किसी सदेह के उस ने सुना दिया । (तएण से जिणपालिए
जावे अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ) इस के
बाद शोक रहित घना हुआ वह जिनपालित विपुल शब्दादि विषयों

विस्सि च लवणसमुद्र उत्तरणं च चपागमणं च सेलगजज्जआपुच्छणं च जहा-
भूयमवित्तहमसदिह परिकहेह)

त्यारे अनपाविते मातापिताने लवण समुद्रमा यात्रा करती वधते
आश्रिता पर्वतनी अथशमलुथी नाव इथी ज्वाना अकस्मातथी भाडीने लाक
शानी सहायताथी रत्नद्वीपना किनारा सुधी पछोयवु रयणा देवीनी लपेटमा
इसाववु, तेनी साथे काम लोगो लोगववा, रयणा देवीना वधस्थानने जेवु,
शुणी उपर लटकता भाणुसने जेवु, सेवक यक्षना पीठ उपर जेसवु, रयणा
देवीने उपात करवो, अनरक्षितनु भरषु थवु सकुणण पोतानी लवण समुद्र
यात्रा पूरी करवी, चपा नगरीमा आववु अने शैलक यक्षनु तेने पूछीने इरी
रत्नद्वीप तरइ रवाना थवु अर्ही सुधीनी जेठे जेठ वात तेले कही सलगावी
(तएण से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ)

त्यारेणाह निश्चित थयेवे अनपावित शब्द वगेरे विषयाने प्रभा

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवेष्टतः चम्पाया
समागतः । जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रजित एकादशाङ्गमिच्छन्=आचाराङ्गादि शस्त्रा
ज्ञाननिपुणो जातः । मासिकया सलेखनया कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेव-
लोके 'दो सागरोपमे' द्विसागरोपमक=द्विसागरोपमस्थितिः देवो जातः ।
महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति । एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आमु
ध्मन्त ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रजितः सन् मानुष्यकान् कामभोगान्
परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायड' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स
खलु यावद् 'वीइवइस्सइ' व्यतिप्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पार
गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः । इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-कामं सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगे।
(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए,
एस्कारसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोपमे, महाविदेहे
सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुण-
रवि आसायड, सेण जाव वीइवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए ।
एव खलु जवू ! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्म नायज्झयणस्स
अयमट्ठे पण्णत्ते च्चिबेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमणे
भगवान् महावीर चम्पा नगरी में आये । जिन पालित धर्म का उपदेश
सुन कर दीक्षित हो गया । ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन
गया । अन्त में एक मास की सलेखना की सलेखना से ६० साठ भक्तों
का छेदन कर जब काल किया-ता प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की
स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ । यह महा विदेह में सिद्धी गति की

एवमेव भोगवतो सुभेदी पोतानि वणत यमार करवा लाग्ये।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए एका
रसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोपमे महाविदेहे सिज्झिहिइ-
एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायड, से ण
जाव वीइवइस्सइ, जहावा से जिणपालिए । एव खलु जवू ! समणे ण भगवया
महावीरेण नवमस्म नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते च्चिबेमि)

ते काले अने ते समये श्रमणु लगवान् महावीर य पानगरीभा आव्या
एनपालित तेभने। उपदेश सालणीने दीक्षित थछ गये। धीमे धीमे तेहे
अगियारे अंगानु ज्ञान भेगवी दीधु छेवटे ओउ भासनी तेहे सवेअना करी
सवेअनाथी ६० साठ लक्षणो छेदन करीने काल द्योयें त्यागे प्रथम देवलोका
मे सागरोपमनी स्थितिवाणा देव तरीडे ते उत्पन्न वये। अविध्यभा ते भद्धा

યથા લાભાર્થિનો ગણિજો તથા શિવસુખાર્થિનો જીવો । યથા સમુદ્રયાત્રા તથા સસારયાત્રા યથા રત્નદ્વીપદેવતા મહાપાપા તથા અવિરતિ રાપાતસુતા પરિણામદુઃસ્વા । યથા - આઘાતસ્થાનભય તથા જન્મમરણભયમ્ । યથા રત્નાદેવી ચરિતાનુભવી શૂલારોપિતપુરુષસ્તથા અવિરતિ પરિણામવોધક ભયમ્ । યથા દેવીહસ્તાન્નિસ્તારકઃ શૈલકયક્ષસ્તથા ધર્મોપદેશકોઽન્નાવિરતિપરિણામજનિત કો પ્રાપ્ત કરેગા ।

इस तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा निर्ग्रन्थ श्रमणी जन यावत् प्रव्रजित होता हुआ परित्यक्त मनुष्य भव सवन्धी कामभोगों का पुनः सेवन नहीं करता है वह जिन पालित की तरह इस ससार के पार पहुँचेगा । दृष्टान्त की योजना यहा इस प्रकार से कर लेनी चाहिये जिस प्रकार लाभ के अर्थो वणिक् जन होते हैं वसी प्रकार शिव सुख के अर्थो जीव होते हैं । जिस प्रकार समुद्र यात्रा है उसी प्रकार ससार यात्रा है । समुद्र यात्रा में जैसे पापिनी रथणा देवी का मिछाप हुआ-उसी प्रकार इस ससार यात्रा में आपात सुख दायक और परिणाम में दुःखदायक अविरति का जीवों को समागम हो रहा है । वहाँ जैसे वध्यस्थान का भय जिन पालित एव जिन रक्षित को हुआ, उसी तरह इस ससार यात्रा में भी प्रत्येक जीव को जन्ममरण का भय लगा हुआ है । जिस प्रकार रथणा देवी के चरित का अनुभवी वह शूलारोपित पुरुष हमें वहा दिखाई देना है इसी प्रकार यहा भी अविरति के परिणाम का बोधक भय हमें सतत सचेत करता

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઈને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સવન્ધી કામભોગોનું ફરી સેવન કરતો નથી તે જનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાંતને અહીં આ રીતે બેસાડવું બોધ્ય છે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા જીવો હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમજ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામા જેમ પાપણી રથણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામા શરૂઆતમા મુખદાયક અને પરિણામમા દુઃખદાયક અવિરતિનો સમાગમ જીવને થતો રહે છે વધસ્થાનમા જેમ જનપાલિત અને જનરક્ષિત ભયતરસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામા પણ દરેકે દરેક જીવને જન્મ-મરણની બીક રહે છે જેમ રથણા દેવીના ફર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમજુ જોયો તેમ આ સસારમા પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાથી મુક્ત કરનાર શૈલક યક્ષને

દુઃખ નિસ્તારકો ગુરુઃ । યથા દેશોમોહિતર્જિનરક્ષિતસ્તથા-અવિરતિમોહિતમતિ-
ર્મુનિઃ । યથા શૈલકરૂપાશ્વઘૃચ્યુતો જિનરક્ષિતસ્તથા ગુરુપદિષ્ટજ્ઞાનાદિપશ્ચાચાર
બ્રહ્મો મુનિ । યથા રત્નાદેવ્યા તીક્ષ્ણકરવાલેન ગગને સ્ખન્ડશઃ કૃત તદગ્ન પરિતઃ
પ્રસિપ્ત નાનાવિધમકુરાદિ શ્વાપદસકુલે સમુદ્રે પતતિ તથા-અવિરત્યા વિપમપરિણા-
મેન નરકાવાસે સ્ખન્ડશઃ કૃત શરીરમનુભવન્નમૌ જમજરામરણાધનન્તદુઃખસમાકુલે
સસારે નિપતતિ । યથા દેવી કૃતોપસર્ગૈરશ્લુઘ્નો જિનપાશ્ચિતઃ સ્વસ્થાન જીવિત-

રહતાં હૈ । જિસ પ્રકાર દેવી કે હાથ સે છુડાને વાલા વહાં શૈલક યક્ષ
કહા ગયા હૈ હસી પ્રકાર યહા બી ધર્મ કે ઉપદેશક એવ અવિરતિ
પરિણામ જનિત દુઃખસે નિસ્તારક યે ગુરુજન પ્રકટ કિયે ગયે હૈ । જિસ
પ્રકાર જિન રક્ષિત દેવી કે દ્વારા મોહિત કિયા ગયા હમૈં કહાં ગયા હૈ
ઉસી પ્રકાર યહા બી અવિરતિ કે દ્વારા મોહિત મુનિજન સમજાવે
ગયે હૈ । જિસ પ્રકાર શૈલકરૂપ અશ્વ કી પીઠ પર સે જિન રક્ષિત
ચ્યુત હુઆ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ઉસી પ્રકાર ગુરુપદિષ્ટ જ્ઞાનાદિક પાંચ
આચાર સે બ્રહ્મ બના હુઆ મુનિ યહા હમે સમજાવા ગયા હૈ । જિસ
પ્રકાર રત્ના દેવી કી તલવાર સે સ્ખન્ડ ૨ કિયે ગયે જિન રક્ષિત કે અગ
ઉપાગ ઇધર ઉધર પ્રક્ષિપ્ત હોકર નાના વિધ મકરાદિશ્વાપદ સે સકુલ
હુપ સમુદ્ર મૈં ગિરે હૈ ઉસી પ્રકાર અવિરતિ કે વિપમ પરિણામ સે
નરકાવાસ મૈં સ્ખન્ડ ૨ કિયે ગયે શરીરકા અનુભવ કરતાં હુઆ બી યહ
જીવ જન્મ, જરા, ઔર મરણ, આદિ અનન્ત દુઃખો સે વ્યાપ્ત હુપ સસાર
મૈં પતિત હોતા હૈ । જિસ પ્રકાર રચના દેવી કૃત ઉપસર્ગો સે અશ્લુઘ્ન

આપણે જોયો તેમ અહીં પણ ધર્મના ઉપદેશક અને અવિરતિ પરિણામ જનિત
દુઃખમાથી મુક્ત કરનારા ગુરુજનો પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે જેમ દેવીના
મોહવાશની લપેટમા પડેલા અનરક્ષિત છે તેમજ અહીં પણ અવિરતિ વડે
મોહિત થયેલા મુનિઓ જોવામા આવે છે જેમ શૈલક યક્ષ રૂપી ઘોડાની પીઠ
ઉપરથી ખસી પડેલા અતરક્ષિતનુ વર્ણન ઉપર પ્રગટ કરવામા આવ્યું છે તેમજ
આ સસારમા પણ ગુરુપદિષ્ટ જ્ઞાન વગેરે પાંચ આચારોથી બ્રહ્મ થયેલા મુનિ
સમજવો જોઈએ જેમ રત્નાદેવીની તલવારથી કાઢા થયેલા અનરક્ષિતના અગો
ઉપાગો ઘણી ભતના મગર વગેરે જોયોથી વ્યાપ્ત સમુદ્રમા આમતેમ ફેકવામા
આવ્યા છે તેમજ અવિરતિના વિપમ પરિણામથી નરકવાસમા શરીરના કાઢાઓ
કરવામા આવે છે છતાંયે તે દુઃખને અનુભવતા આ જીવ જન્મ, જરા (ધડપણ)
મરણ વગેરે અનન્ત દુઃખોથી વ્યાપ્ત થયેલા આ સસારમા ફરી આવી પડે છે
જેમ રચના દેવીના ઉપસર્ગોથી અશ્લુઘ્ન થઈને અનપાશ્ચિત પોતાને ઘેર સંકુશળ

યથા લાભાર્થિનો વણિજી તથા શિવસુખાર્થિનો જીવો । યથા સમુદ્રયાત્રા તથા સસારયાત્રા યથા રત્નદ્વીપદેવતા મહાપાપા તથા અવિરતિ રાપાતસુખા પરિણામદુઃખા । યથા - આઘાતસ્થાનભય તથા જન્મમરણભયમ્ । યથા રત્નાદેવી ચરિતાનુભવી શૂલારોપિતપુરુષસ્તથા અવિરતિ પરિણામબોધક ભયમ્ । યથા દેવીહસ્તાન્નિસ્તારકઃ શૈલકચક્ષસ્તથા ધર્મોપદેશકોઽન્નાવિરતિપરિણામજનિત

કો પ્રાપ્ત કરેગા । હસ તહર હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો હમારા નિગ્રન્થ શ્રમણ અથવા નિગ્રન્થ શ્રમણી જન યાવત્ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ પરિત્યક્ત મનુષ્ય ભવ સબન્ધી કામભોગોં કા પુનઃ સેવન નહીં કરતા હૈ વહ જિન પાલિત કી તરહ હસ સસાર કે પાર પહુંચેગા । દૃષ્ટાન્ત કી યોજના યહા હસ પ્રકાર સે કર લેની ચાહિયે જિસ પ્રકાર લાભ કે અર્થો વણિક્ જન હોતે હૈં વસી પ્રકાર શિવ સુખ કે અર્થો જીવ હોતે હૈં । જિસ પ્રકાર સમુદ્ર યાત્રા હૈં વસી પ્રકાર સસાર યાત્રા હૈં । સમુદ્ર યાત્રા મેં જૈસે પાપિની રચના દેવી કા મિલાપ હુઆ-વસી પ્રકાર હસ સસાર યાત્રા મેં આપાત સુખ હાયક ઓર પરિણામ મેં દુઃખહાયક અવિરતિ કા જીવોં કો સમાગમ હો રહા હૈં । વહાં જૈસે વધસ્થાન કા ભય જિન પાલિત એવ જિન રક્ષિત કો હુઆ, વસી તરહ હસ સસાર યાત્રા મેં બી પ્રત્યેક જીવ કો જન્મ મરણ કા ભય લગા હુઆ હૈં । જિસ પ્રકાર રચના દેવી કે ચરિત કા અનુભવી વહ શૂલારોપિત પુરુષ હમે વહા દિખાઈ દેના હૈં હસી પ્રકાર યહાં બી અવિરતિ કે પરિણામ કા બોધક ભય હમેં સતત સચેત કરતા

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઈને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સબન્ધી કામભોગોનું ફરી સેવન કરતો નથી તે જનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાન્તને અહીં આ રીતે બેસાડવું જોઈએ કે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાલને ઈન્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈન્છનારા જીવો હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામાં જેમ પાપણી રચણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામાં શરૂઆતમાં મુખહાયક અને પરિણામમાં દુઃખહાયક અવિરતિનો સમાગમ જીવને થતો રહે છે વધસ્થાનમાં જેમ જનપાલિત અને જનરક્ષિત ભયતસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામાં પણ દરેકે દરેક જીવને જન્મ-મરણની ખીડ રહે છે જેમ રચણા દેવીના ફર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમજી જોયો તેમ આ સસારમાં પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાંથી મુક્ત કરનાર શૈલક ચક્ષને

અથ દશમમધ્યયનમ્ પ્રારમ્ભયતે ।

ગત નવમમ-યયનમ્, સામ્પ્રત દશમમારમ્ભયતે, તસ્ય પૂર્વેણ સહાય સમ્બન્ધઃ—
પૂર્વમવિરતિ—વિરતિમતોર્હાનિલામો પ્રોક્તૌ, અત્રુ પ્રમાદાપ્રમાદવતોર્ગુણહાનિ—તદ્
વૃદ્ધિરૂપાવનર્થાર્થોર્વર્ણયતિ, તત્ર જમ્બુસ્વામી સુધર્મસ્વામિન પૃચ્છતિ—‘જડ્ઞ ભતે’
શ્ત્યાદિ ।

મૂલમ્—જડ્ઞ ભતે । સમણેણં ણવમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ
અયમટ્ટે પણત્તે દસમસ્સ કે અટ્ટેં ? એવં ખલુ જબ્બ । તેણં
કાલેણ તેણ સમણં રાયગિં નગરે સામી સમોસઠે ગોયમસામી
એવ વયાસી—કહણ ભતે । જીવા વઢ્ઢતિ વા હાયંતિ વા ?
ગોં । સે જહા નામએ વહુલપક્કસસ્સ પાઙિવયાચદે પુણિમા-
ચંદ પણિહાય હીણો વણેણ હીણે સોમ્મયએ હીણે નિચ્છયાએ

દશમ અધ્યયન પ્રારમ્ભ ।

નૌવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અવ દશમા અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કૈ સાથ હસ પ્રકાર સચન્ધ હૈ—પહિલે અવિ-
રતિ વાલે કો હાનિ એવ વિરતિ વાલે કો લાભ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા
ગયા હૈ અવ હસ અધ્યયન મૈં યહ કહતે હૈં કિ જો પ્રમાદિ હોતા હૈ
હસકૈ ગુણોંક હાનિ હોતી હૈ, ઓર જો અપ્રમાદી હોતા હૈ હસ કૈ ગુણોં
કી વૃદ્ધિ હોતી હૈ । હસ તરહ ગુણ હાનિ ઓર તદ્ વૃદ્ધિ રૂપ અર્થ અનર્થ
કા વર્ણન સૂત્રકાર હસ અ યયન મૈં કર રહે હૈ । જમ્બુ સ્વામી હસી વાત
કો શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂઝ રહે હૈં ।

દશમુ અધ્યયન પ્રારમ્ભ

નવમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે અને હવે દશમુ અધ્યયન પ્રારમ્ભ કરીએ
છીએ દશમા અધ્યયનનેા એના પહેલાના અધ્યયન સાથે આ પ્રમાણેના
સબંધ છે—પહેલાના અધ્યયનમા અવિરતિવાળાને હાનિ (ગુડસાન) અને
વિરતિવાળાને લાભની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમ દર્શાવવામા આવ્યુ છે હવે આ
અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે જે પ્રમાદી હોય છે તેના શુણેને
હાનિ પહોચે છે અને જે અપ્રમાદિ હોય છે તેના શુણે વૃદ્ધિ પામે છે આ
રીને સૂત્રકાર આ અધ્યયનમા શુણેની હાનિ અને શુણેની વૃદ્ધિરૂપ અર્થ અનર્થનું
વર્ણન કરી રહ્યા છે જમ્બુ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને એ જ વાત પૂછી રહ્યા છે—

સુખં ચેમાસઃ સન્ પશ્ચાન્મોક્ષપદગામ્યમાત્, તથા-અવિરતિ કૃતોપસર્ગોરક્ષુન્ધ
સુસયમી-મુનિર્મોક્ષસ્થાન શિવસુખ ચ પ્રાપ્સ્યતીતિ ।

एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नयमस्य ज्ञाना उपनस्य
अयं=पूर्वोक्त अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=रूपित । 'चित्तेमि' इति प्रतीति पूर्वम् ॥ १० ॥

इति श्री-निश्चिखयात-जगद्गुरु-प्रसिद्धनाचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक-
लापात्रापरु-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्माणरु-पदिमानमर्द-श्रीशाहच-
प्रपतिकोल्हापुरराजपद-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज
गुरु-गालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदियारुपूज्यश्री-घासीला-
प्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथा ’ सूत्रस्यानगारधर्माभूतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया नवममध्ययनसंपूर्णम् ॥ ९ ॥

बनो जिन पालित अपने स्थान पर मकुशल लौट आया और वहा उस
ने अपने जीवन का सुख भोगा-पश्चात् वही मोक्षपद गाभी भी हुआ
उसी तरह अविरति कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध बना हुआ सुसयमी मुनि
मोक्षस्थान को प्राप्त कर शिव सुख को भोक्ता बनेगा । इस प्रकार हे
जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने इस नवम ज्ञाताध्ययन का यह-
पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है । उसी के अनुसार यह मैंने
तुम्हें समझाया है । सूत्र-॥ १० ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत “ ज्ञाता-
धर्मकथासूत्र ” की अनगारधर्माभूतवर्षिणी व्याख्या का नववा
अध्ययन समाप्त ॥ ९ ॥

પ્રાણો, આત્મે, ત્યા તેણે સુખેથી પોતાના દિવસો પસાર કર્યા અને છેવટે મોક્ષ
મેળવ્યો તેમજ અવિરતિકૃત ઉપસર્ગોથી નિર્લોક થયેલો સુસયમી મુનિ મોક્ષ
સ્થાનને મેળવીને શિવમુખને ઉલ્લેખ કરશે આ રીતે હે જંબૂ ! શ્રમણ-
ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે
તે મુજબ જ મે તને બધી વિગત સમજાવી છે ॥ ૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનુ નવમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाता-
ध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथित, स मया श्रुतः, किन्तु
दशमस्य ज्ञाता ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एव
खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=
श्रीमहावीरस्वामी 'समोसदे' समसुत =समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत्—
कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवा 'वड्ढति वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नु
वन्ति वा, 'हायति वा' हीयन्ते=हानिं प्रप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन,
प्रदेशतथापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनाप्रस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानीं प्राप्नु
नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

‘जइण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते) यदि हे भदन्त ! (समणेण० णवमस पाय-
अयमद्वे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का
पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस के अद्वे)० ?
दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्होंने ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार
जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के
अभिप्राय से कहते हैं कि (एव खलु जम्बू !) हे जम्बू सुनो तुम्हारे प्रश्न
का उत्तर इस प्रकार है—(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे
सामी समोसदे—गौतमस्वामी एव वयासी) उस काल में और उस
समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे
उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कइण भते ! जीवा
वड्ढति, वा हायति वा ? गो० से जहा नामण वड्ढलपइखस्स पाडिबया

“जइण भते ! समणेण “ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) ओ हे भदन्त ! (समणेण० णवमस पायअयमद्वे)
अयमद्वे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययनने पूर्वोक्त रूपे अर्थ
निर्दिष्ट किये हैं तो (दसमस के अद्वे ?) दशम ज्ञाताध्ययनने तेओओ गो
भाव अर्थ निर्दिष्ट किये हैं आ प्रमाणे जणू स्वामीना प्रश्नने सालाजीने
श्री सुधर्मास्वामी तेमने णधी वातनी स्पष्टता कव्वाना हेतुया कहे छे के
(एव खलु जम्बू !) छे जणू आलणो तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रमाणे छे के
(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे सामी समोसदे गौतमस्वामी एव वयासी)
ते काले आने ते समये राजगृह नामे नगरमा श्री भगवान् महावीर स्वामीनी
पधराभणी थछ ते समये गौतम स्वामीओ तेमने प्रश्न कये छे—

(कइण भते ! जीवा वड्ढति, वा हायति वा ? गो० से जहानामए वड्ढल-

हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए
 मंडलेण तयाणतर च णं वीयाचंदे पाडिवय चंद पणिहाय
 हीणतराय वण्णेण जाव मंडलेण तयाणतरं च ण तइआचंदे
 विइयाचंद पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं
 खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ जाव अमावस्ताचदे चाउद्दसं-
 चंद पणिहाय नट्टे वण्णेणं जाव नट्टे मंडलेण, एवामेव सम-
 णाउसो । जो अम्ह निगथो वा निगंथी वा जाव पव्वइए
 समाणे हीणे खतीए एव मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण मद्दवेणं
 लाघवेण सच्चेण तवेण चियाए अकिच्चयणयाए बभचेरवासेणं
 तयाणंतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेर
 वासेणं, एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ णट्टे खतीए
 जाव णट्टे बभचेरवासेणं, जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचदे
 अमावासाए चद पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मंड-
 लेणं तयाणतर च णं विइयाचदे पडिवयाचद पणिहाय अहि-
 ययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एव खलु एएण
 कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचदे चाउद्दसि चद पणि-
 हाय पडिपुण्णे वण्णेण जाव पडिपुण्णे मंडलेण एवामेव सम-
 णाउसो । जाव पव्वइए समाणे अहिए खतीए जाव बभ-
 चेर वासेण, तयाणतर च णं अहिययराए खतीए जाव बभ-
 चेरवासेण, एव खलु एएण कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पडिपुण्णे
 बभचेरवासेण, एव खलु जीवा वड्ढति वा हायति वा, एव खलु
 जवू । समणेण भगवया महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स
 अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ दसम णायज्झयण समत्त ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाता-
ध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भा० प्रज्ञप्त =स्थित, स मया श्रुतः, किन्तु
दशमस्य ज्ञाता ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्त ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एव
खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=
श्रीमहावीरस्वामी 'समोसदे समसुत =समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमादीव-
कथ खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः 'बहुति वा' उर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नु
वन्ति वा, 'हायति वा' हीयन्ते=हानिं प्राप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन,
प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनापस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानी प्राप्नु
नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या उर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

‘जहण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहण भते) यदि हे भदन्त ! (समणेण० णवमस्य णाय
अयमष्टे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का
पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अष्टे)० ?
दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्होंने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार
जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के
अभिप्राय से कहते हैं कि (एव खलु जबू !) हे जबू सुनो तुम्हारे प्रश्न
का उत्तर इस प्रकार है—(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे
सामी समोसदे-गोयमसामी एव वयासी) उस काल में और उस
समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारें
उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहण भते ! जीवा
बहुति, वा हायति वा ? गो० से जहा नामण उहुलपखस्स पाडिबया

“जहण भते ! समणेण” इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहण भते !) जे डे लहन् ! (समणेण० णवमस्य णायअयमष्टे)
श्रमण भगवान् महावीरे नवमा ज्ञाताध्ययनने पूर्वोक्त रूपे अर्थ
निष्पिण्ठ कथो छे तो (दसमस्स के अष्टे ?) इयमा ज्ञाताध्ययनने तेओओ शे
भाव अर्थ निरूपित कथो छे आ प्रभाए जणू स्वामीना प्रश्ने सालाणीने
श्री सुधर्मास्वामी तेभने णधी वातनी स्पष्टता कव्वाना डेनुया कडे छे डे
(एव खलु जबू !) डे जणू आलणे तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रभाए डे डे
(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे सामी समोसदे गोयमसामी एव वयासी)
ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगरमा श्री भगवान् महावीर स्वामीनी
पधराभणी थण ते समये गौतम स्वामीओ तेभने प्रश्न कथो डे—

(कहण भते ! जीवा बहुति, वा हायति वा ? गो० से जहानामण उहुल-

અત્યર્થે ભગવાન પૂર્ણાનિદિપ્તાન્તમાદ - હે ગૌતમ ! 'સં જહાનામ' તથા-નામકમ્-યથા ચ વહુલપક્ષસ્ય = ઋણપક્ષસ્ય 'પાઙિવ્યાચદે' પ્રતિપ- પચ્ચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર પ્રણિધાય-અપેક્ષ્ય, 'પ્રણિધાયે' તિ 'અપેક્ષ્યે' ત્યર્થક- મન્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ દીન = ન્યૂન, વર્ણન=શુદ્ધતારૂપેણ, દીનઃ

ચદે પુર્ણિમા ચદ પર્ણિહાય દીણો વર્ણેણ દીણે સોમ્મયાદ દીણે નિદિ-
યાદ દીણે કતીદ દિત્તીદ જુદ્દાદ છાયાદ પમાદ ઓયાદ લેસ્સાદ
(મહાલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વઢતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર
સે વઢતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત હોને સે ઓર પ્રદેશ કી
અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસહ્યાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત
પરિણામ વાલા કહા ગયા હૈ-અતઃ ઇસ સ્થિતિ મેં ન તો ડસ કી વૃદ્ધિ
હો સકતી હૈ ઓર ન ડસ કી હાની હી । કિન્તુ યહા જો ઇસ પ્રકાર
કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈ ડસ કા મન ઇસ પ્રકાર હૈ, કિ જબ આત્મા મેં
ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈ તો ડન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વઢતા
હૈ " ઁસા માન લિયા જાતા હૈ ઓર જબ ઇન્દ્રી આત્મિક ગુણો કી
વૃદ્ધિ આત્મા મે નહીં હોતી હૈ-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈ તો ઇસ સે જીવ
મેં હાનિ હો રહી હૈ ઁસા માન લિયા જાતા હૈ । ઇસી અપેક્ષા કો ઊકર
યહ પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈ । અબ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે
પહિલે ડસે હી દિપ્તાન્ત દ્વારા સમજાતે હૈ-વે કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! જૈસે

પક્વસ્સ પાઙિવ્યા ચદે પુર્ણિમાચદ પર્ણિહાય દીણો વર્ણેણ દીણે સોમ્મયાદ દીણે
નિદિયાદ દીણે કતીદ દિત્તીદ જુદ્દાદ છાયાદ પમાદ ઓયાદ લેસ્સાદ મહાલેણ)

હે ભદત ! ઊવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય
છે ? ઊવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક
ઊવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હ મેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો હોવામા આંચો
છે ઓથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે
નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આંચો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે
કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી
" ઊવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એ જ આત્મિક
ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે
" ઊવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ
પ્રશ્ન પૂછવામા આંચો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સી પહેલા
દેખાત વડે સમજાવતા હો છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુણ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

‘સૌમ્યયા’ સૌમ્યતયા=નેત્રાહ્વાદકતયા, હીનઃ નિદ્રયા’ સ્નિગ્ધતયા=સ્નેહોત્પાદકતયા, હીન =ન્યૂનઃ ‘ક્તી’ કાન્ત્યા-રૂમનીયતયા । એવમ્=અનેન પ્રમા-રેણ હીનશબ્દઃ સર્વત્ર લોચ્યઃ, યથા-હીનો દીપ્ત્યા=પ્રકાશેન, હીન ‘જુર્ણ’ દ્યુત્યા=વાચકિચ્ચેન, હીનઃ છાયયા=શોભયા, હીનઃ પ્રભયા=જ્યોતિષા, હીન ‘ઓયા’ ઓજસા=દાહશમનરૂપેણ, હીનઃ લેશ્યાયા=કિરણરૂપયા, હીનો=ન્યૂનો મળ્દલેન=વૃત્તાઽઽઽતયા, પૂર્ણિમાચન્દ્રાઽપેક્ષયા, પ્રતિપન્ચન્દ્રઃ સર્વથા ન્યૂનો મત્તતીત્યર્થઃ । તદનન્તર ચ લલુ દ્વિતીયાચન્દ્ર પ્રતિપદ=પ્રતિપત્તસ્મિન્નિન ચન્દ્રે ‘પણિહાય’ પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય હીનતરો=ન્યૂનતરો વર્ણેન યાવદ્ મળ્દલેન ભગતિઃ । તદનન્તર ચ લલુ તૃતીયાચન્દ્રો દ્વિતીયાચન્દ્ર પણિધાય હીનતરો વર્ણેન યાવદ્

કૃષ્ણપક્ષ કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા પૂર્ણિમા કે ચન્દ્રમાકી અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણ સે હીન હોતા હૈ, સૌમ્યતા-નેત્રાહ્વાદકતા-સે હીન હોતા હૈ, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-સે હીન-ન્યૂન-હોતા હૈ, કાતિકમનીયતા સે હીન હોતા હૈ, હસી તરહ દીપ્તિ સે, -દ્યુતિ સે-(ચમક સે)-છાયા-શોભા સે) પ્રભા સે-(જ્યોતિ સે) દાહશમન રૂપ ઓજસ સે, કિરણ રૂપ લેશ્યા સે, એવ વૃત્તાકારરૂપ અપને પરિમડલસે હીન રહતા હૈ-(તયાણતર ચ ણ યીયાચદે પાઙિવચ ચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મડલેણ-તયા-ણતર ચણ તદ્વચાચદે ત્રિઙ્યાચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મડલે ણ એવ લલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્તા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નટ્ટે વર્ણેણ જાવ નટ્ટે મડલેણ) હસકે ઘાદ્ કૃષ્ણ પક્ષ કે પ્રતિપદા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા દ્વિતીયા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર યાવત્ પરિમડલ તક ઓર અધિક ન્યૂન થન જાતા હૈ-હસકે ઘાદ્ દ્વિતીયા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા તૃતીયા કા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર પરિ-

પૂનમના ચન્દ્રની અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્રાહ્વાદકતાના શુભથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકાશથી), છાયા (શોભા) પ્રભાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂપ ઓજસથી કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતાના પરિમડલથી હીન રહે છે

(તયાણતરચ ણ યીયાચદે પાઙિવચ ચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણે ણ જાવ મડલે ણ તયાણતર ચ ણ તદ્વચાચદે ત્રિઙ્યાચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મડલેણ એવ લલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્તા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નટ્ટે વર્ણેણ જાવ નટ્ટે મડલેણ)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજનો ચન્દ્ર વધુ પરિમડલ વગેરે બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજના ચન્દ્ર

અત્યર્થે ભગવાન પૂર્વદ્વાનિદૃષ્ટાન્તમાહ - હે ગૌતમ ! ' સે જહાનામ ' તથા-નામરૂપ-યથા ચ વહુલપક્ષસ્ય = ઋણપક્ષસ્ય ' પાઙિત્રયાચદે ' મતિવ-પચ્ચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર મણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' મણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' ત્યર્થક-મવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીન. = ન્યૂનઃ, વર્ણન=પ્રકારરૂપેણ, હીનઃ

ચદે પુણિમા ચદ પણિહાય હીણો વણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધયાણ હીણે કતીંણ એવ દિત્તીંણ જુઈંણ ડાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે ચઢતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર સે ઘટતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત હોને સે ઓર પ્રદેશ કી અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસહ્યાત પ્રદેશ ઘાલા હોને સે સદા અવસ્થિત પરિણામ ઘાલા કહા ગયા હૈં-અતઃ ઇસ સ્થિતિ મેં ન તો ઉસ કી વૃદ્ધિ હો સકતી હૈં ઓર ન ઉસ કી હાની હી. કિન્તુ યહા જો ઇસ પ્રકાર કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં ઉસ કા મન ઇસ પ્રકાર હૈં, કિ જબ આત્મા મેં ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈં તો ઉન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વડતા હૈં " એસા માન લિયા જાતા હૈં ઓર જબ ઇન્દ્રી આત્મિક ગુણો કી વૃદ્ધિ આત્મા મેં નહીં હોતી હૈં-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈં તો ઇસ સે જીવ મેં હાનિ હો રહી હૈં એસા માન નિયા જાતા હૈં. ઇસી અપેક્ષા કો ઢેકર યહ પ્રશ્ન કિયા ગયો હૈં. અથ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે પહિલે ઉસે હી દૃષ્ટાન્ત દ્વારા સમજાતે હે-વે કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! જેસે

પ્રવલસ્સ પાઙિત્રયા ચદે પુણિમાચદ પાણિહાય હીણો વણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધયાણ હીણે કતીંણ એવ દિત્તીંણ જુઈંણ ડાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ)

હે ભદત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ ઠરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હું મેંશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એ જ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે " જીવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવું માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સી પહેલા દૃષ્ટાન્ત વડે સમજાવતા હો છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કૃષ્ણપક્ષની એકમનો ચંદ્ર

‘સૌમ્યયા’ સૌમ્યતયા=નેત્રાહારકતયા, હીનઃ નિદ્રયા’ સ્નિગ્ધતયા=સ્નેહોત્પાદકતયા, હીન =ન્યૂનઃ ‘વતી’ કાન્ત્યા-કમનીયતયા । એવમ્=અનેન પ્રકારેણ હીનશબ્દઃ સર્વત્ર વૉધ્યઃ, યથા-હીનો દીપ્ત્યા=પ્રકાશેન, હીન ‘જુર’ દ્યુત્યા=વાકચક્રેન, હીનઃ છાયા=શોભયા, હીન. પ્રમયા=જ્યોતિષા, હીન ‘ઓયા’ ઓજસા=દાહશમનરૂપેણ, હીનઃ લેશ્યા=કિરણરૂપયા, હીનો=ન્યૂનો મળ્હેન=વૃત્તાડકાતયા, પૂર્ણિમાચન્દ્રાડપેક્ષયા, પ્રતિપન્ચન્દ્રઃ સર્વથા ન્યૂનો ભવતીત્પર્યઃ । તદનન્તર ચ સ્વલુ દ્વિતીયાચન્દ્ર પ્રતિપદ=પ્રતિપત્તસ્થાનિન ચન્દ્રે ‘પણિહાય’ પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય હીનતરો=ન્યૂનતરો વર્ણેન યાવદ્ મળ્હેન ભવતિ । તદનન્તર ચ સ્વલુ તૃતીયાચન્દ્રો દ્વિતીયાચન્દ્ર પણિધાય હીનતરો વર્ણેન યાવદ્

કૃષ્ણપક્ષ કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા પૂર્ણિમા કી ચન્દ્રમાકી અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણ સે હીન હોતા હૈ, સૌમ્યતા-નેત્રાહારકતા-સે હીન હોતા હૈ, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-સે હીન-ન્યૂન-હોતા હૈ, કાતિકમનીયતા સે હીન હોતા હૈ, હમ્ની તરહ દીપ્તિ સે, -દ્યુતિ સે-(ચમક સે)-છાયા-શોભા સે) પ્રમા સે-(જ્યોતિ સે) દાહશમન રૂપ ઓજસ સે, કિરણ રૂપ લેશ્યા સે, એવ વૃત્તાકારરૂપ અપને પરિમંડલસે હીન રહતા હૈ-(તયાણતર ચ ણ ધીયાચદે પાડિવચ ચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મળ્હેણ-તયાણતર ચણ તદ્વચાચદે યિઢયા ચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મળ્હેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાહરસ પણિહાય નઠ્ઠે વર્ણેણ જાવ નઠ્ઠે મળ્હેણ) હમ્કે યાદ્ કૃષ્ણ પક્ષ કી પ્રતિપદા કી ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા દ્વિતીયા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર યાવત્ પરિમંડલ તક ઓર અધિક ન્યૂન બન જાતા હૈ-હમ્કે યાદ્ દ્વિતીયા કી ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા તૃતીયા કા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર પરિ-

પૂનમના ચન્દ્રની અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્રાહારકતાના શુભથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકાશથી), છાયા (શોભા) પ્રમાથી (જ્યોતિષથી) દાહશમનરૂપ ઓજસથી કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતાના પરિમંડલથી હીન રહે છે

(તયાણતરચ ણ ધીયાચદે પાડિવચ ચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણે જાવ મળ્હેણ તયાણતર ચ ણ તદ્વચાચદે યિઢયાચદ્ પણિહાય હીણતરાય વર્ણેણ જાવ મળ્હેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાહરસ પણિહાય નઠ્ઠે વર્ણેણ જાવ નઠ્ઠે મળ્હેણ)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજનો ચન્દ્ર વધુ પરિમંડલ ગણેર બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજના ચન્દ્ર

અત્યે ભગવાન પૂર્વદાનિદ્વિષ્ટાન્તમાહ - હે ગૌતમ ! ' રો જહાનામય ' તથા-નામકમ્-યથા ચ તદુલપક્ષસ્ય = ઋણપક્ષસ્ય ' પાઙિત્રયાચદે ' મતિપ-
પચ્ચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર મણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' મણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' ત્યર્થક-
મવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીન. = ન્યૂનઃ, ઝર્ણન=શુકતારુપેણ, હીનઃ

ચદે પુણિમા ચદ પણિઠાય હીણો વણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્દ
યાણ હીણે કત્તીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ છેસ્સાણ
મહલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વઢતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર
સે વઢતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત ેને સે ઓર પ્રદેશ કી
અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસ્તિયાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત
પરિણામ વાલા કહા ગયા હૈં-અતઃ ઇસ સ્થિતિ મેં ન તો ડસ કી વૃદ્ધિ
હો સકતી હૈં ઓર ન ડસ કી હાની હી. કિન્તુ યહા જો ઇસ પ્રકાર
કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં ડસ કા મન ઇસ પ્રકાર હૈં, કિ જબ આત્મા મેં
ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈં તો ડન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વઢતા
હૈં " એસા માન લિયા જાતા હૈં ઓર જબ ઇન્દ્રી આત્મિક ગુણો કી
વૃદ્ધિ આત્મા મેં નહીં હોતી હૈં-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈં તો ઇસ સે જીવ
મેં હાનિ હો રહી હૈં એસા માન લિયા જાતા હૈં. ઇસી અપેક્ષા કો ઢેકર
યહ પ્રશ્ન કિયા ગયો હૈં. અબ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરવે કે લિયે
પહિલે ડસે હી દ્વિષ્ટાન્ત દ્વારા સમજાતે હૈં-વે કહતે હું-હે ગૌતમ ! જૈસે

પ્રક્લસસ પાઙિત્રયા ચદે પુણિમાચદ પાણિઠાય હીણો વણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે
નિદ્દયાણ હીણે કત્તીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ છેસ્સાણ મહલેણ)

હે ભદત ! ઊવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય
છે ? ઊવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક
ઊવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હ મેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો
છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ રાકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે
નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતવમ આ પ્રમાણે છે
કે ન્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે શુણે વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી
" ઊવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને ન્યારે એજ આત્મિક
શુણેની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે
" ઊવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ
પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સી પહેલા
દેખાત વડે સમજાવતા કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુણ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

દ્વાદશવિધેન ‘ચિયાઈ’ ત્યાગેન=પુનિવૈયાટ્યકરગલક્ષણેન ‘અર્કિવળયાઈ’ અર્કિચ્ચનતયા નિપરિગ્રહતયા વમચેરવાસેન’ બ્રહ્મચાર્યવાસેન-બ્રહ્મણિ=કામસેવન પરિત્યાગરૂપે ચરણ=વિચરણ ચર્યં બ્રહ્મચર્યં, તત્ર ગ્રાસસ્તેન નવવાટિકા વિશુદ્ધમૈથુન વિરમણરૂપેન ‘હીનઃ’ ઇતિ સર્વત્ર સમ્યગ્ન્યઃ ક્ષાન્ત્યાદિદશવિવશ્રમણર્મરહિતો ભવતીત્યર્થઃ ।

તદનન્તર ચ સ્વલ્પ સ નિર્ગ્રન્થો ગા૦ હીનતરઃ ક્ષાન્ત્યા યાત્ત્ હીનતો બ્રહ્મ ચર્યવાસેન । એવ સ્વલ્પ એતેન ક્રમેણ=ક્રમશઃ પરિહીયમાનઃ ૨ સન્ નાટઃ=મર્મથા રહિતઃ ક્ષાન્ત્યા, યાત્ત્ નષ્ટો બ્રહ્મચર્યવાસેનાપિ ભવતિ । ક્ષાન્ત્યાદિ સર્વગુણરહિતો ભવતીત્યર્થઃ, યથા ચન્દ્રા નિત્યરાહુસસર્ગેન કૃષ્ણપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવમ કલાભિઃ ક્ષીયમાણઃ સન્ કૃષ્ણચતુર્દશ્યપેક્ષયાઽમાગ્રાસ્યાયા ગર્ગાદિના યાત્રમ્ખંડલેન નષ્ટો

જ્ઞાનાદિ રૂપ ૧૨ પ્રકાર કે તપ સે, મુનિજનોં કી વૈયાટ્યત્તિ કરને રૂપ ત્યાગ સે નિપરિગ્રહ રૂપ અકિચ્ચન્ય ધર્મ સે કામ સેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્ય મે વાસ કર ને સે-નવ કોટિસે વિશુદ્ધ અને હુણ બ્રહ્મચર્ય કે પાલન સે-હીન હૈ-અર્થાત્ ક્ષાન્તિ આદિ રૂપ દશ પ્રકાર કે યતિ ધર્મ સે રહિત હૈ-(તયાળતર ચ ણ હીળતરાઈ સ્વતીઈ જાવ હીળતરાઈ વમચે-રવાસેન એવ સ્વલ્પ ણેણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીઈ જાવ ણટ્ટે વમચેરવાસેન) અથવા જો માયુ યા સા ચી ક્ષાન્તિ સે લેકર બ્રહ્મચર્ય વે ઇસ તરહ ક્રમશઃ હીનર હોતે હુણ ક્ષાન્તિ આદિ વામસે હીનતર હૈ । સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ પર્યંતકે સમસ્ત ગુણોસે રહિત હો જાતે હૈ । જિસ પ્રકાર નિત્ય રાહુ કે સસર્ગ સે કૃષ્ણપક્ષકી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન કલાઓં સે પરિક્ષીણ હોતા હુઆ ચન્દ્ર કૃષ્ણચતુર્દશી કી અપેક્ષા અમા

માઈવથી, અત્પઉપાધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ ભાવલઘુતાથી અમૃથા ભાવશ્ચ રૂપ મત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રમારના તપથી મુનિજનોનાં વૈયાટ્યત્તિ કરના રૂપ ૧૦ ગથી નિપરીગ્રહ રૂપ અકિચ્ચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનું વક્ષણ કરનાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ અનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાન્તિ વગેરે રૂપ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(તયાળતર ચ ણ હીળતરાઈ સ્વતીઈ જાવ હીળતરાઈ વમચેરવાસેન એવ સ્વલ્પ ણેણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીઈ જાવ ણટ્ટે વમચેરવાસેન)

અથવા જે સાધુ કે માઁનીઓ ક્ષાન્તિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના શુભોથી હીન છે તેઓ આ ચક્રની પેઠેજ અનુક્રમે હીન થના ક્ષાન્તિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના સર્વે શુભોથી ગહિન થઈ જાવ છે જેમ હુમેચા રાહુના સમર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ ગળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચક્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણુ પરિમડળ વગેરે

મળ્ડલેન । એવ સલ્લુ એતેન ક્રમેગ પરિહીયમાન ૨ યાવદ્ અમારાસ્યાચન્દ્રઃ 'ચાઽ
 ઘર્ષિ' ચાતુર્દશ=ચતુર્દશીસમ્યગ્નિર્ન ચન્દ્રપાણિધાય=અપેક્ષ 'નદ્દે' નવટઃ=વિલુપ્તઃ
 વર્ણેન યાવત્ નદ્દો મળ્ડલેન=તૃતીયારરૂપેણ ।

'એવામેવ'—એવામેવ=મનેનૈવ પ્રમારેણ દે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માક
 નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થો વા યાવત્ પ્રવ્રજિત' સન્ હીનઃ 'સ્વતીષ' હાન્ત્યા=ક્ષમયા,
 એવ હીનઃ 'મુત્તીષ' મુસ્ત્યા=નિર્લોભતયા 'મુત્તીષ' મુસ્ત્યા=મનોયોગાદીના
 કુશલપ્રવૃત્તિલક્ષણયા, યોગનિરોધલક્ષણયા યા, 'અઙ્ગવેણ' આર્જવેન=સ્ફટિકવદ્
 બાહ્યાભ્યન્તરસરલમારૂપેણ, 'મદ્દવેણ' માર્દવેન=નિરભિમાનતાલક્ષણેન, 'લાઘ
 વેણ' લાઘવેન=દ્રવ્યભાવલઘુતાસપન્નેન-તત્ર-દ્રવ્યતોઽલ્પોપધિકૃત્વેન ભાવતો રાગ
 દ્વેષરહિતત્વેન, 'સત્ત્વેણ' સત્ત્વેન=અમૃષાભાષણરૂપેણ, 'તવેણ' તપસા=અશ્વનાદિ

મળ્ડલ તક ઓર અધિક યૂન હો જાતાં છે । હસ તરહ ક્રમશઃ હીન હી
 હોતા હુઆ અમાવસ્યા કા ચન્દ્રમા ચતુર્દશી કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા
 ધિલકુલ વર્ણ આદિ સે લગાકર અપને પરિમળ્ડલ તક વિલુપ્ત બન જાતા
 હૈ । (એવામેવ સમણાઁસો । જો અમ્હ નિમ્ગયો વા નિમ્ગયી વા જાવ પન્વહૈ
 સમાણે હીણે સ્વતીષ એવ મુત્તીષ અઙ્ગવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ
 સત્ત્વેણ, તવેણ, ચિયાષ, અર્કિચ્છણયાણ, વમચેરવાસેણ) હસી તરહ
 હૈ આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થીજન યાવત્
 પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ યદિ ક્ષમા સે હીન હૈ, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા
 મનોયોગદિકોં કી કુશલ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગનિરોધ રૂપ શુષ્ઠિ સે
 સ્ફટિત કી તરહ બાહ્ય ણ્વ આભ્યન્તર મેં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવ
 સે, નિરભિમાનતા રૂપ માર્દવ સે, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્યલઘુતા સે
 રાગ દ્વેષરહિત રૂપ ભાવ લઘુતા સે, અમૃષાભાષણ રૂપ સત્ત્વ સે, અન-

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમળ્ડળ બધી બાબતમા વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે
 આ રીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અભાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર ડરતા
 વર્ણ પરિમળ્ડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે

(એવામેવ સમણાઁસો ! જો અમ્હ નિમ્ગયો વા નિમ્ગયી યા જાવ પન્વહૈ
 સમાણે હીણે સ્વતીષ એવ મુત્તીષ મુત્તીષ અઙ્ગવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ, સત્ત્વેણ
 તવેણ, ચિયાષ, અર્કિચ્છણયાષ, વમચેરવાસેણ)

આ રીતે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી
 જન યાવત્ પ્રવ્રજિત થઈને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ
 વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ શુષ્ઠિ, સ્ફટિકની જેમ
 બાહ્ય તેમજ આંતરમા સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિર્મલ રૂપ

દ્વાદશવિધેન 'ચિયા' ત્યાગેન=મુનિવૈયાટૃત્યકરગલક્ષણેન 'અર્કિચળયા' અર્કિચ્ચનતયા નિષ્પરિગ્રહતયા વમચેરવામેણ 'બ્રહ્મચાર્યવાસેન-બ્રહ્મણિ=કામસેવન પરિત્યાગરૂપે ચરણ=ત્રિચરણ ચર્યં બ્રહ્મચર્ય, તત્ર વાસસ્તેન નવકાટિકા વિશુદ્ધમૈથુન વિરમણરૂપે 'હીનઃ' ઇતિ સર્વત્ર સમ્પન્નઃ ક્ષાન્ત્યાદિદગ્ધવિશ્રમણર્મરહિતો ભવતીત્યર્થઃ ।

તદનન્તર ચ સ્વલુ સ નિર્ગ્રન્થો વા૦ હીનતરઃ ક્ષાન્ત્યા યાત્ હીનતો બ્રહ્મ-ચર્યવાસેન । એવ સ્વલુ એતેન ક્રમેણ=ક્રમશઃ પરિહીયમાન' ૨ સન્ નપ્ટઃ=સર્વથા રહિત ક્ષાન્ત્યા, યાત્ નપ્ટો બ્રહ્મચર્યવાસેનાપિ ભવતિ । ક્ષાન્ત્યાદિ સર્વગુણરહિતો ભવતીત્યર્થઃ, યયા ચન્દ્રા નિત્યરાહુસસર્ગેણ કૃષ્ણમનિપદમારભ્ય પ્રતિદિવસ ક્લામ્ભિઃ ક્ષીયમાણઃ સન્ કૃષ્ણચતુર્દશ્યપેક્ષયાઽમાગ્રાસ્યાયા વર્ણાદિના યાવન્મળહેન નપ્ટો

જ્ઞાનાદિ રૂપ ૮૨ પ્રકાર કે તપ સે, મુનિજનોં કી વૈયાવૃત્તિ કરને રૂપ ત્યાગ સે નિષ્પરિગ્રહ રૂપ અર્કિચ્ચન્ય વર્મ સે કામ સેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્ય મે વાસ કર ને સે-નવ કોટિસે વિશુદ્ધ બને હુણ બ્રહ્મચર્ય કે પાલન સે-હીન હૈ-અર્થાત્ ક્ષાન્તિ આદિ રૂપ દશ પ્રકાર કે યતિ ધર્મ સે રહિત હૈં-(તયાળતર ચ ણ હીળતરાણ સ્વતીણ જાવ હીળતરાણ વમચે-રવાસેણ એવ સ્વલુ એણ ક્રમેણ પરિહાયમાણે ૨ જટ્ટે સ્વતીણ જાવ જટ્ટે વમચેરવાસેણ) અથવા જો સાધુ યા સા ચી ક્ષાન્તિ સે લેકર બ્રહ્મચર્ય વે ઇસ તરહ ક્રમશઃ હીનર હોતે હુણ ક્ષાન્તિ આદિ વાસસે હીનતર હૈ । સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ પર્યંતકે સમસ્ત ગુણોસે રહિત હો જાતે હૈં । જિસ પ્રકાર નિત્ય રાહુ કે સસર્ગ સે કૃષ્ણપક્ષકી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન કલાઓ સે પરિક્ષીણ હોતા હુઆ ચન્દ્ર કૃષ્ણચતુર્દશી કી અપેક્ષા અમા

માઈવથી, અટપઉપાધિ ૩૫ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત ૩૫ ભાવલઘુતાથી અમૃષા ભાષણ ૩૫ મત્યથી, અનશન વગેરે ૩૫ ૧૨ પ્રમારના તપથી મુનિજનોનાં વૈયાવૃત્તિ કરતા ૩૫ ૮ ગાથી નિષ્પરીગ્રહ ૩૫ અદિચન ધમથી, કામસેવન પરિત્યાગ ૩૫ બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરતાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાન્તિ વગેરે ૩૫ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(તયાળતર ચળ હીળતરાણ સ્વતીણ જાવ હીળતરાણ વમચેરવાસેણ એવ સ્વલુ એણ ક્રમેણ પરિહાયમાણે ૨ જટ્ટે સ્વતીણ જાવ જટ્ટે વમચેરવામેણ)

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાન્તિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના શુણ્ણથી હીન છે તેઓ આ ચક્રની પેઠેજ અનુક્રમે હીન થતા ક્ષાન્તિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના સર્વે શુણ્ણથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હુમેશા રાહુના સસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ જ્યાંઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચક્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌત્થની અપેક્ષા અમાસના દિવસે ત્રણ પરિભ્રમણ વગેરે

મળ્હેન । એ સ્વલુ એતેન ક્રમેગ પરિહીયમાન ૨ યાત્રદ્ અમાત્રાસ્યાત્રન્દ્ર 'ચાઝ
દસિ' ચાતુર્દશ=ચતુર્દશીસમ્પન્નિર્ન ચન્દ્રપાણિધાય=અપેક્ષ 'નદ્રે' નપ્ટઃ=વિલુપ્ત.
વર્ણેન યાત્રત્ નદ્રો મળ્હેન=ત્રુત્તાફારરુપેગ ।

'એવામેવ'—એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેન હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યોડસ્માર્ક
નિર્ગ્રન્થો યા નિર્ગ્રન્થો વા યાત્રત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ હીનઃ 'સતીએ' હાન્ત્યા=ક્ષમયા,
એવ હીનઃ 'મુત્તીએ' મુસ્ત્યા=નિર્લોભતયા 'મુત્તીએ' મુસ્ત્યા=મનોયોગાદીના
કુશલપ્રવૃત્તિલક્ષણયા, યોગનિરોધલક્ષણયા યા, 'અઝ્જવેણ' આર્જવેન=સ્ફટિકવદ્
ચાહ્યાઅભ્યન્તરસરલભાવરુપેણ, 'મહવેણ' માર્દવેન=નિરભિમાનતાલક્ષણેન, 'લાઘ
વેણ' લાઘવેન=દ્રવ્યભાવલઘુતાસપન્નેન-તત્ર-દ્રવ્યતોડલ્પોપવિરુદ્ધેન ભાવતો રાગ-
દ્વેપરહિતત્વેન, 'સન્ચેણ' સત્યેન=અમૃયાભાષણરુપેણ, 'તવેણ' તપસા=અશનાદિ

મહલ તક ઓર અધિક યૂન હો જાતા હૈ । હસ તરહ ક્રમશઃ હીન હી
હોતા હુઆ અમાત્રાસ્યા કા ચન્દ્રમા ચતુર્દશી કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા
થિલકુલ વર્ણ આદિ સે લગાકર અપને પરિમહલ તક વિલુપ્ત બન જાતા
હૈ । (એવામેવ સમણાઝસો । જો અમ્હ નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા જાવ પવ્વહા
સમાણે હીણે સ્વતિએ એવ મુત્તીએ અઝ્જવેણ, મહવેણ, લાઘવેણ
સન્ચેણ, તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચ્છણયાએ, વમ્મવેરાસેણ) હસી તરહ
હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થીજન યાત્રત્
પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ યદિ ક્ષમા સે હીન હૈ, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા
મનોયોગદિકોં કી કુશલ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગનિરોધ રૂપ મુત્તિ સે
સ્ફટિત કી તરહ ચાહ્યા એવ આભ્યન્તર મેં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવ
સે, નિરભિમાનતા રૂપ માર્દવ સે, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્યલઘુતા સે
રાગ દ્વેપરહિત રૂપ ભાવ લઘુતા સે, અમૃયાભાષણ રૂપ સત્ય સે, અન-

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણુ પરિમહલ બધી બાળતમા વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે
આ ગીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અમાત્રાસેનો ચન્દ્ર ચૌગણના ચન્દ્ર કરતા
વર્ણુ પરિમહલ વજેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દન વિલુપ્ત (અદશ્ય) થઈ જાય છે

(એવામેવ સમણાઝસો ! જો અમ્હ નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા જાવ પવ્વહા
સમાણે હીણે સ્વતીએ એવ મુત્તીએ મુત્તીએ અઝ્જવેણ, મહવેણ, લાઘવેણ, સન્ચેણ
તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચ્છણયાએ, વમ્મવેરાસેણ)

આ રીતે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે આમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી
જન યાત્રત્ પ્રવ્રજિત થઈને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ
વજેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ મુત્તિ, સ્ફટિકની જેમ
બાહ્ય તેમજ આંતરમા સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિર્મલતા રૂપ

મળ્ડલેન=વૃત્તાકારતયા ભવતિ । તદનન્તર ચ ચલુ દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપચ્ચન્દ્ર પ્રણિધાય અધિકૃતરઃ પૂર્વદિનાપેક્ષયા ણર્ણનાત્યધિકો ભવતિ યાવદ્ અધિકૃતસે મળ્ડલેન ભવતિ । ક્રમશો વૃદ્ધિ પ્રાપ્નોતિ એવ ચલુ એતેન ક્રમેણ ' પરિવૃદ્ધમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાન ૨ પ્રતિદિન વૃદ્ધિ લભમાનો ૨ યાવત્ પૂર્ણિમાચન્દ્ર ' ચાઉર્દશિ ' ચાતુર્દશં ચતુર્દશી સમ્બન્ધિન ચન્દ્ર પ્રણિધાય ' પઢિપુણ્ણે ' પ્રતિપૂર્ણ=સમ્પૂર્ણો વર્ણેન યાવત્ પ્રતિપૂર્ણો મળ્ડલેન-વૃત્તાકારરૂપેણ ભવતિ , પૂર્ણિમાચન્દ્ર' સકલકલા-કલાપકલિતતયા પરિપૂર્ણ મળ્ડલયાન ભવતીત્યર્થઃ ।

' એગમેવ ' એવમેઃ=એનેનૈઃ પ્રકારેણ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । ' જાન ? યાવત્-યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા ૨ જાચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે પ્રગ્નજિતઃ સન્ અધિકા=વૃદ્ધિ સમ્પન્નઃ લાન્ત્યા યાવદ્ અધિકો વ્રહ્મચાર્યગ્રાસેન । તદનન્તર ચ ચલુ

કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા અમાવાસ્યાં ક૯ ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણસે લે કર મહલ તક વર્ધમાન હોતા હુઆ અધિક હોતા હૈ, ઔર ઉસકે ઘાદુ દ્વિતીયા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણ સે લેકર મહલ તક અધિકતર હો જાતા હૈ-હસ તરહ ક૯ ક્રમ સે જૈસે પ્રતિદિન વૃદ્ધિ કો પ્રાસ કરતા હુઆ વહ ચન્દ્રમા જય પૂર્ણિમા તિથિ તક પહુંચ જાતા હૈ તો ચતુર્દશી તિથિ ક૯ ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા ઉસ દિન વર્ણ સે લેકર અપને મહલ સે પરિપૂર્ણ થન જાતા હૈ । ઉસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાય સે દીક્ષિત થનકર ક્ષાન્તિ ગુણ સે લેનર વ્રહ્મચર્યવાસ તક ક૯ ગુણો સે વૃદ્ધિસપન્ન હોતા હૈ ।

ઔર હસ તરહ હન સર સે ધીરે ધીરે વહ પહિલે કી અપેક્ષા ઔર અધિકતર સમ્પન્ન થન જાતા હૈ । હસ પ્રકાર ક્રમશઃ સમ્પન્ન થનતા હુઆ

જેમ શુદ્ધ પક્ષની એકમનો ચન્દ્ર અમાસના ચન્દ્ર કરતા વણું મહળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજાનો ચન્દ્ર જેમ એકમના ચન્દ્ર કરતા વણું પરિમહળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી હરેરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચન્દ્ર બ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોંચી બાય છે ત્યારે ચૌદશના ચન્દ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વણું પરિમહળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિઝ થ માધુ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પામેથી દીક્ષા મેળવીને ક્ષાન્તિ ગુણથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા શુભોચી વૃદ્ધિસપન્ન થઈ બાય છે

અને આ મીને આ બધા શુભોચી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપન્ન થઈ બાય છે આ વખણે અનુક્રમે શુભ સપન્ન થતો તે ક્ષાન્તિ બ્રહ્મ

મંત્રિ, તથૈવ મુનિઃ કુગુરુસસર્ગાત્ અસન્નપાર્શ્વસ્થાનિ સન્નાત્, વાન્તસમ્યક્ત્વ સમ્યન્ધાત્, પ્રમાદસ્થાનસેવનાત્, ચારિત્રાપરણમોદયાન્ચ ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણહાનિ પ્રાપ્તઃ સન્ નટો ભવતીતિ માત્ર ।

અથ વૃદ્ધિદૃષ્ટાન્તમાહ—

યથા વા શુક્લપક્ષસ્ય ગતિપન્ચન્દ્રોઽમાત્રાસ્યાયાશ્ચન્દ્ર મણિધાય=અપેક્ષ્ય-
અમાવાસ્યા ચ દ્રાપેક્ષયેત્યર્થ ‘અદિષ્’ અધિકો ગ્ણેન યાત્ અધિકો=વર્દમાનો

વસ્યા કે દિન વર્ણાદિ સે લેરુ પરિમંડલ તક કે અપને સમસ્ત ગુણો સે નંટ હો જાતા હૈ । ઉસી તરહ મુનિ કુગુરુકે સસર્ગ સે અથવા અર્થ સન્ન પાર્શ્વસ્થાદિકી સગતિ સે સમ્યક્ત્વ કે છૂટ જાને કે કારણ ઓર પ્રમાદસ્થાનો કે સેવન કરને કે કારણ ઉદિત હુગ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે પ્રભાવ સે ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિગુણો કી હાનિ કો પ્રાપ્ત કરતા હુઆ નંટ હો જાતા હૈ । અત્ર સૂત્રકાર વૃદ્ધિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે ઉસે દૃષ્ટાન્ત સે સમજાતે હૈ—(જાહવા સુક્રપક્ષસ્ત પડિવયાચદે અમાવાસાણ ચંદ્ર મણિધાય અદિષ્ વર્ણેણ જાત્ર અદિષ્ મંડલેણ તયાણતર ચ ન ત્રિદયા ચંદ્રે પડિવયાચદ મણિધાય અદિયયરાણ વર્ણેણ જાત્ર અદિયયરાણ મંડલેણ—એવ સ્વલુ એણ કમેણ પડિવુઢેમાણે ૨ જાત્ર પુણિમા ચંદ્રે ચાઉર્ધ્વિ ચંદ્ર મણિધાય પડિપુણે વર્ણેણ જાત્ર પડિપુણે મંડલેણ, એવામેવ સમાણાસો । જાત્ર પન્વરણ સમાણે અદિષ્ સ્વતીણ જાત્ર વમચેરવાસેણ તયાણતર ચ ન અદિયયરાણ સ્વતીણ જાત્ર વમચેરવાસેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિવુઢે માણે ૨ વમચેરવાસેણ) જેસે શુક્લ પક્ષ

પોતાના બધા ગુણોથી રહિત બની બાક છે તેમજ મુનિ પણ કુશુરના સસર્ગથી અથવા અસન્ન પાર્શ્વસ્થ વગેરેની સગતિથી સમ્યક્ત્વ રહિત થઇને પ્રમાદ સ્થાનેના સેવનથી ઉચ્ચ પામેલા ચારિત્ર મોહનીય કર્મના પ્રભાવથી અત્યંત ક્ષાતિ વગેરે ગુણોથી રહિત થઇને નારા પામે છે હવે સૂત્રકાર વૃદ્ધિને સ્પષ્ટ કરવાની ઇચ્છાથી દૃષ્ટાન્ત પૂર્વક મમળવતા કહે છે—

(જાહવા સુક્રપક્ષસ્ત પડિવયાચદે અમાવાસાણ ચંદ્ર મણિધાય અદિષ્ વર્ણેણ જાત્ર અદિષ્ મંડલેણ તયાણતર ચ ન ત્રિદયાચંદ્રે પડિવયાચદ મણિધાય અદિયયરાણ વર્ણેણ જાત્ર અદિયયરાણ મંડલેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પડિવુઢે માણે ૨ જાત્ર પુણિમાચંદ્રે ચાઉર્ધ્વિ ચંદ્ર મણિધાય પડિપુણે વર્ણેણ જાત્ર પડિપુણે મંડલેણ, એવામેવ સમાણાસો । જાત્ર પન્વરણ સમાણે અદિષ્ સ્વતીણ જાત્ર વમચેરવાસેણ તયાણતર ચ ન અદિયયરાણ સ્વતીણ જાત્ર વમચેરવાસેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિવુઢેમાણે ૨ વમચેરવાસેણ)

મળ્ડલેન=વૃત્તાકારતયા ભવતિ । તદનન્તર ચ રાત્રુ દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપચ્ચન્દ્ર પ્રણિધાય અધિકતરઃ પૂર્વદિનાપેક્ષયા ઝર્ણનાત્પધિકો ભવતિ યાવદ્ અધિકતરો મળ્ડલેન ભવતિ । ક્રમશો વૃદ્ધિ પ્રાપ્નોતિ એવ ચલુ એતેન ક્રમેણ ' પરિચુદ્ધેમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાન ૨ પ્રતિદિન વૃદ્ધિ લભમાનો ૨ યાવત્ પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ ' ચાતુર્દશિ ' ચાતુર્દશં ચતુર્દશી સમ્વન્નિન ચન્દ્ર પ્રણિધાય ' પઢિપુણ્ણે ' પ્રતિપૂર્ણ.=સમ્પૂર્ણો વર્ણેન યાવત્ પ્રતિપૂર્ણો મળ્ડલેન-વૃત્તાકારરૂપેણ ભવતિ , પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ સન્નત્કલા-કુલાપકલિતતયા પરિપૂર્ણ મળ્ડલવાન ભવતીત્યર્થઃ ।

' એવામેવ ' એવમે=એનેનૈવ પ્રકારેણ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । ' જાત્ ' યાવત્-યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા ૨ આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે મત્રજિત્ઃ સન્ અધિકઃ=વૃદ્ધિ સમ્પન્ન. જ્ઞાન્તયા યાવદ્ અગ્નિઃ બ્રહ્મચર્યવાસેન । તદનન્તર ચ ચલુ

કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા અમાવાસ્યા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણસે લે કર મઢલ તક વર્ધમાન હોતા હુઆ અધિક હોતા હૈ, ઔર ઉસકે વાદ્ દ્વિતીયા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણ સે લેકર મઢલ તક અધિકતર હો જાતા હૈ-હસ તરહ કે ક્રમ સે જૈસે પ્રતિદિન વૃદ્ધિ કો પ્રાપ્ત કરતા હુઆ વહ ચન્દ્રમા જય પૂર્ણિમા તિથિ તક પહુંચ જાતા હૈ તો ચતુર્દશી તિથિ કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા ઉસ દિન વર્ણ સે લેકર અપને મઢલ સે પરિપૂર્ણ થન જાતા હૈ । ડસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાય સે દીક્ષિત થનકર જ્ઞાન્તિ ગુણ સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ તક કે ગુણો સે વૃદ્ધિસપન્ન હોતા હૈ ।

ઔર હસ તરહ હન મત્ર સે વીરે ધીરે વહ પહિલે કી અપેક્ષા ઔર અધિકતર સમ્પન્ન થન જાતા હૈ । હસ પ્રકાર ક્રમશઃ સમ્પન્ન થનતા હુઆ

જેમ શુભ પક્ષની એકમનો ચંદ્ર અમાસના ચંદ્ર કરતા વર્ણ મળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજનો ચંદ્ર જેમ એકમના ચંદ્ર કરતા વર્ણ પરિમળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી ૬૨૨૧/૪ વૃદ્ધિ પામતો ચંદ્ર બ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોચી બાક છે ત્યારે ચૌદશના ચંદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વર્ણ પરિમળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પામેથી દીક્ષા મેળવીને જ્ઞાતિ શુભથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા શુભોથી વૃદ્ધિસપન્ન થઈ બાક છે

અને આ રીતે આ બધા શુભોથી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપન્ન થઈ બાક છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે શુભ સપન્ન થતો તે જ્ઞાતિ બ્રહ્મ

अधिकतरः=अत्यधिकः क्षान्त्या यावद् अस्मिन्मते ब्रह्मवर्धनासेन । एव खलु एतेन क्रमेण 'परिवर्द्धमाणे २' परिवर्धमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पण्डिते' प्रतिपूर्ण =सम्पन्नो ब्रह्मवर्धनासेन, क्षान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः ।

यथा चन्द्रो नित्यराहुससर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभिर्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमाया वर्णादिना यावन्मण्डलेन परिपूर्णो भवति तथैव भुनि कुगुरससर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणवर्मक्षयोपशमादिना क्रमशः क्षान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुयन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति ।

एव खलु=जीवा अनेन प्रकारेण क्षान्त्यादि गुणवृद्ध्या वर्द्धन्ते वा तेषां क्षान्त्या

बह्वक्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मवर्धनासे तक के समस्त गुणों से परिपूर्ण हो जाता है । जिस प्रकार राहु के ससर्ग के अपनयन से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपनी कलाओं से अभिवर्धमान होता हुआ चन्द्रमा क्रमशः शुक्लचतुर्दशी कि अपेक्षा पूर्णिमासी के दिन वर्णादि से लगाकर मण्डल तक की अपनी समस्त कलाओं से परिपूर्ण हो जाती है

इसी तरह भुनि भी कुगुर आदि के ससर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है । (एव खलु जीवा वद्वृत्ति, वा हायति वा, एव खलु जन्म समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमहे पण्णत्ते

अर्थवास वगेरे भधा शुद्धाथी परिपूर्णा यथं ज्ञायते जेम राहुना ससर्गरहितं यथने शुक्ल पक्षनी ओकमथी माडीने हररेण पोतानी कणाओनी वृद्धि करते। यद्र अनुक्रमे शुक्ल पक्षनी ओदश करता पूनमना द्विसे वधु परिमण्डण वगे रेनी पोतानी स पूणु कणाओथी परिपूर्णा यथं ज्ञायते

तमज्ज भुनि भव कुगुर वगेरेनी सोणत वगेरेने त्यज्जने तेभज्ज आदित्र परेषु कर्माणा क्षयोपशम वगेरेणी अनुक्रमे पोताना क्षान्ति वगेरे शुद्धाणी वृद्धि करते। केवलज्ञान, केवल दर्शन वगेरे शुद्धाथी परिपूर्णा यथं ज्ञायते

(एव खलु जीवा वद्वृत्ति, वा हायति वा एव खलु जन्म । समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमहे पण्णत्ते तिवेमि)

હીયન્તે વા । એવ સ્વલુ દે જન્મુઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ દશમસ્ય જ્ઞાતા-
ધ્યયનસ્ય અય=પૂર્વોક્તઃ અર્થ =ભાવ પ્રજ્ઞસ । ‘ત્તિવેમિ’ ઇતિ વ્રવીમિ પૂર્વવત્ ॥સૂ૦૧॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત - જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિત-
લલિતકલાપાલાપરુ - પરિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈઃશ્રન્યનિર્માપરુ-વાદિમાનમર્દક
શ્રીશાહુ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-ચાલવ્રહ્મચારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી
ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયા શ્રી જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્રસ્થાનગારધર્મામૃ-
તવર્ષિણ્યાખ્યાયા વ્યાખ્યાયાં દશમમધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૦ ॥

ત્તિવેમિ) હસ પ્રકાર ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ સે જીવ વઢતે હૈં ઓર ઉ
નકી હાનિ સે જીવ ઘટતે હૈં યહ કથન થન જાતા હૈં હસ તરહ હે જન્મુ!
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને દશવૈં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત અર્થ પ્રજ્ઞસ
કિયા હૈં । મૈંને ઉન્હો કે મુખ સે જૈસા સુના હૈં ઉસી કે અનુસાર
યહ કહા હૈં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર ”કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા દશવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૦॥

ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિથી જીવો વૃદ્ધિ પામે છે અને ક્ષાતિ વગેરે
ગુણોની હાનિથી જીવો ઘટે છે આ મ આ ડ્યનની સાર્થકતા સિદ્ધ થઈ જાય
છે આ પ્રમાણે હે જન્મુ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો
આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ અર્થ મેં તેમના મુખેથી જ પ્રમાણે
સાંભળ્યો છે તે જ પ્રમાણે તમારી સામે રજૂ કર્યો છે ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની
અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાન દ્વારા અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૦॥

अधिकतरः=अल्पिकाः क्षान्त्या यावद् अभिन्नतरो ब्रह्मवर्षासेन । एवं खलु एतेन क्रमेण 'परिवर्द्धमाणे २' परिपूर्णमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पडिपुन्ने' प्रतिपूर्ण =सम्पन्नो ब्रह्मवर्षासेन, क्षान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः ।

यथा चन्द्रो नित्यराहुससर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभिर्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमाया उर्णादिना यावन्मण्डलेन परिपूर्णो भवति तथैव मुनि कुगुरससर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणमर्थक्षयोपशमादिना क्रमशः क्षान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुयन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति ।

एव खलु=जीवा अनेन प्रकारेण क्षान्त्यादि गुणवृद्ध्या वर्द्धन्ते वा तेषां हान्या

वह क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मवर्षावास तक के समस्त गुणों से परिपूर्ण हो जाता है । जिस प्रकार राहु के ससर्ग के अपनयन से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपनी कलाओं से अभिवर्धमान होता हुआ चन्द्रमा क्रमशः शुक्लचतुर्दशी कि अपेक्षा पूर्णिमामा की दिन उर्णादि से लगाकर मण्डल तक की अपनी समस्त कलाओं से परिपूर्ण हो जाती है

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के ससर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है । (एव खलु जीवा वद्वृत्ति, वा हायति वा, एव खलु जब समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णसे

अर्थ=वास वगेरे अधा शुद्धोत्थी परिपूर्णा यथ नय छे तेम राहुना ससर्गशुद्धि यधने शुक्ल पक्षनी ओकमथी भाडीने हररेण पोतानी कणाओनी वृद्धि करतो अद्र अनुक्रमे शुक्ल पक्षनी चौदश करता पूनमना द्विसे वर्य परिमडण वगे रेनी पोतानी स पूर्य कणाओथी परिपूर्णा यथ नय छे

तेमज् मुनि पण्ण कुगुरु वगेरेनी सोभत वगेरेने त्यज्जने तेमज् चारित्र वरय् कर्मना क्षयोपशम वगेरेथी अनुक्रमे पोताना क्षाति वगेरे शुद्धोनी वृद्धि करतो केवलज्ञान, केवल दर्शन वगेरे शुद्धोत्थी परिपूर्णा यथ नय छे

(एव खलु जीवा वद्वृत्ति, वा हायति वा एव खलु जब । समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णसे तिवेमि)

पुष्पिका फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीवरे उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाणं बहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुंठा झोडा परिस-
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निर्गंथो वा निगंथी वा
 जाव पव्वइये समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्म संहति जाव
 अहियासे बहूण अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाण नो सम्म
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस ण मए
 पुरिसे देसविराहए पणत्ते । समणाउसो । जया णं सामुद्दगा-
 ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायति तदा णं
 बहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जावमिलायमाणा२ चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिका जाव उवसोभे-
 माणा२ चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निर्गंथो वा
 निगंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाण बहूणं
 गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ
 एसण मए पुरिसे देसाराहए पत्तत्ते । समणाउसो । जयाण नो
 दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाण सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाणं ४
 अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसणं मए

અથ એકાદશમધ્યયનં પ્રારભ્યતે—

ગત દશમમધ્યયન, સામ્પતમેકાદશમારભ્યતે । પૂર્વસ્મિક્ષધ્યયને કૃષ્ણશુક્લ પક્ષચન્દ્રદૃષ્ટાન્તેન પ્રમાદાપ્રમાદગતો ક્ષાન્ત્યાદિગુણદાનિગ્રદ્ધિભ્યામનર્થાનર્થો પ્રતિ પાદિતો, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थी પ્રદર્શયેતે, અથ જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—‘જહ્ણ ભતે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જહ્ણ ભતે । સમણેણ જાત સપત્તેણ દસમસ્સ નાય-
જ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પળણત્તે એકારસમસ્સ ણં ભતે ણાયજ્ઞયણ-
સ્સ કે અદ્દે પળણત્તે ?, એવં ચલ્લુ જવૂ । તેણ કાલેણર રાયગિહે
ગોયમે એવં વેયાસી—કેહણ ભતે । જીવા આરાહગાવા વિરાહગા
વા ભવાંતિ ?, ગોઁ । સે જહા ણામંણ ઇગસિ સમુદ્ધકુલસિ દાવ-
દ્ધવા નામ સુક્ખા પળણત્તા કિણ્ણા જાવ નિઝરુવમ્મૂયા પત્તિયા

દાવ દ્રવ (વૃક્ષ) નામક ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારભ

દશવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અબે ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારભ
હોતા હૈ । હસ અધ્યયનકા પૂર્વ અધ્યયનકે સાથ હસ પ્રકારસે સબન્ધ હૈ
કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં કૃષ્ણ ઓર શુક્લ પક્ષકે ચન્દ્રમા કે દૃષ્ટાન્ત સે
પ્રમાદી ઓર અપ્રમાદી સયમી કે ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણોં કી હાંનિ એવ વૃદ્ધિ
રૂપ અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોની પ્રતિપાદિત કી ગઈ હૈ । અબ હસ
અધ્યયન દ્વારા યદ્દ કહા જા રહા હૈ કિ જો સયમ માર્ગ કી આરાધના
તેમજ વિરાધના કરતે હૈ તે અર્થ ઓર અનર્થ કી પ્રાપ્તિ કે પાત્ર હોતે હૈ ।
જવૂ સ્વામી શ્રી સુધર્માસે પૂછતે હૈ કિ ‘જહ્ણ ભતે । સમણેણ’ ઇત્યાદિ ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમું અધ્યયન પ્રારભ

દશમું અધ્યયન પુર થઈ ચૂક્યું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરંભ
થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબંધ છે
પહેલાના અધ્યયનમાં કૃષ્ણ અને શુક્લ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાન્તથી પ્રમાદી અને
અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થતી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ
કરવામાં આવ્યું છે હવે આ અધ્યયનમાં જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ
વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ
કરવામાં આવે છે જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જહ્ણ ભતે । સમણેણ “ ઇત્યાદિ ॥

पुष्पिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीवर उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाण वहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुंन्ना झोडा परिस-
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणार चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निर्गंथो वा निर्गंथी वा
 जाव पव्वइये समाणे वहूण समणाणं ४ सम्मं संहतिं जाव
 अहियासे वहूण अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए
 पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो । जया णं सामुद्दगा-
 ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायति तदा णं
 वहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जावमिलायमाणार चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभे-
 माणार चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निर्गंथो वा
 निर्गंथी वा पव्वइए समाणे वहूणं अण्णउत्थियाणं वहूणं
 गिहत्थाणं सम्म सहइ वहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ
 एसण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो । जयाणं नो
 दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाण सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणार चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे वहूण समणाणं ४
 अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्म सहइ एसणं मए

અથ એકાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભયતે—

૧૧
ગત દશમમધ્યયન, સામ્પતમેકાદશમારમ્ભયતે । પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને કૃષ્ણપક્ષ-
પક્ષચંદ્રદૃષ્ટાન્તેન પ્રમાદામમાદયતો ક્ષાન્ત્યાદિગુણહાનિત્રદ્ધિભ્યામનર્થાનયોં પ્રતિ
પાદિતો, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थायौ प्रदर्शयेते, અથ જમ્બૂસ્વામી
પૂછતિ—‘ જઈણ મતે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જઈણ મતે ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દસમસ્સ નાય-
જ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે એકારસમસ્સ ણ મતે ણાયજ્ઞયણ-
સ્સ કે અદ્દે પપ્પણત્તે ?, एवं खलु जवू । તેણ કાલેણર રાયગિહે
ગોયમે એવં વેયાસો—કહણ મતે ! જીવા આરાહગાવા વિરાહગો
વા મવાંતિ ?, गो० । સે જહા ણામંપ્પણંસિ સમુદ્ધકુલસિ દાવ-
દવા નામ સુક્ખા પપ્પણત્તા કિણ્ણા જાવ નિઝરુવમ્મૂયા પત્તિયા

દાવ દ્રવ (વૃક્ષ) નામક ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ

દશવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અર્થે ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હસ અધ્યયનકા પૂર્વ અધ્યયનકે સાથ હસ પ્રકારસે સબન્ધ હૈ
કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં કૃષ્ણ ઓર શુક્લ પક્ષકે ચન્દ્રમા કે દૃષ્ટાન્ત સે
પ્રમાદી ઓર અપ્રમાદી સયમી કે ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણો કી હોનિ એવ બૃદ્ધિ
રૂપ અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોની પ્રતિપાદિત કી ગઈ હૈ । અબ હસ
અધ્યયન દ્વારા યહ કહા જા રહા હૈ કિ જો સયમ માર્ગ કી આરાધના
તથા વિરાધના કરતે હૈ વે અર્થ ઓર અનર્થ કી પ્રાપ્તિ કે પાત્ર હોતે હૈ ।
જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્માસે પૂછતે હૈ કિ ‘જઈણ મતે ! સમણેણ’ ઇત્યાદિ ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમું અધ્યયન પ્રારભ

દશમું અધ્યયન પૂર થઈ ચૂક્યું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરંભ
થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબંધ છે
પહેલાના અધ્યયનમાં કૃષ્ણ અને શુક્લ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાંતથી પ્રમાદી અને
અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થતી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ
કરવામાં આવ્યું છે હવે આ અધ્યયનમાં જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ
વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ
કરવામાં આવે છે જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જઈણ મતે ! સમણેણ “ ઇત્યાદિ ॥

पुष्पिया फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीव२ उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाण वहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुंन्ना झोडा परिस-
 डियंपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निर्गंथो वा निर्गंथी वा
 जाव पव्वइये समाणे वहूण समणाणं ४ सम्मं सहति जाव
 अहियासे वहूण अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए
 पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो । जया णं सामुद्दगा-
 ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायति तदा णं
 वहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जावमिलायमाणा२ चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभे-
 माणा२ चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निर्गंथो वा
 निर्गंथी वा पव्वइए समाणे वहूणं अण्णउत्थियाणं वहूणं
 गिहत्थाणं सम्म सहइ वहूणं समणाण ४ नो सम्म सहइ
 एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो । जयाणं नो
 दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाणं सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे वहूणं समणाणं ४
 अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्म सहइ एसणं मए

सर्वविराहए पणत्ते । समणाउसो ! जयाण दीविच्चगाविसामु-
 द्दगावि ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तया ण सव्वे
 दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, एवामेव समणाउसो
 जो अम्ह जाव पव्वइए समाणे वहुण समणाणऽवहुण अन्नउ-
 स्थियगिहत्थाण सम्मं सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पणत्ते ।
 एव खलु गोयमा । जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति,
 एवं खलु जवू । समणेण भगवया० एक्कारसस्स अज्झयणस्स
 अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एक्कारसम नायज्झयणं समत्त ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिर्गतिं
 सम्प्राप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिदृष्टिरूप अर्थः
 भावः प्रज्ञप्त =कथितः, अथ एकादशस्या ययमस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः=
 को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वाधी कथयति—एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले

टीकार्थ—(जइण भते ।) यदि हे भदत । (समणेण जाव सपत्तेण दस
 मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एक्कारसमस्स ण भत्ते । नायज्झय-
 णस्सके अट्ठे पणत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने कि जो मुक्तिको प्राप्त
 हो चुके हैं, दशवे ज्ञाता ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित
 किया है—उहो श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन
 का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जवू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा
 स्वामी उनसे कहते हैं कि (एव खलु जवू !) सुनो जो उन्हो ने ग्यारहवें

टीकार्थ—(जइण भते ।) हे भदत ।

(समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एक्कारसमस्स
 ण भत्ते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते)

मुक्ति भेजवेला श्रमणु भगवान् महावीरे दशमा ज्ञाताध्ययनने आ
 पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित क्यो छे तो तेज्जोश्रीज्जे अजियारने ज्ञाताध्ययनने
 शे। अर्थ निरूपित क्यो छे ? आ रीते जवू स्वामीना प्रश्नने सुधर्मा

સવ્વિરાહણ પળ્લન્તે । સમણાઉસો ! જયાણ દીવિચ્છગાવિસામુ-
 હ્ગાવિ ર્હસિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા જાવ વાયતિ તયા ણં સવ્વે
 દાવહ્વવા રુમ્ભા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવામેવ સમણાઉસો
 જો અમ્હ જાવ પઠ્ઠણ સમાણે વહૂણં સમણાણઃ વહૂણં અન્ન-
 ત્થિયગિહત્થાણં સમ્મ સહજ્જણ મણ પુરિસે સવ્વારાહણ પળ્લન્તે !
 એવ યલુ ગોયમા । જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા ભવતિ,
 એવ યલુ જિન્નુ । સમણેણ ભગવયાં એકારસસ્સ અજ્ઞયણસ્સ
 અયમદ્દે પળ્લન્તે તિવેમિ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ એકારસમ નાયજ્ઞયણં સમત્ત ॥ ૧૧ ॥

ટીકા—યદિ યલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મિદ્ધિગતિ
 સમ્પાત્તેન દશમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમ્=પૂર્વોક્ત પ્રકારો ગુણહાનિવૃદ્ધિરૂપ' અર્થઃ
 ભાવઃ પ્રજ્ઞસ્ય =રુચિત', અથ ઇકાદશસ્યા યયમસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પાત્તેન કોડર્થઃ=
 કો ભાવઃ પ્રજ્ઞસ્યઃ ? । સુધર્માસ્વામી રુચયતિ—એવ યલુ હે જન્નુઃ ! તસ્મિન્ કાલે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ મતે !) મદિ હે ભદત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ દસ
 મસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે એકારસમસ્સ ણ મત્તે । નાયજ્ઞય
 ણસ્સકે અદ્દે પળ્લન્તે) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રમુને કિ જો મુક્તિકો પ્રાપ્ત
 હો જુકે હૈં, દશવે જ્ઞાતા યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રતિપાદિત
 કિયા હૈ— ઉહો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રમુ ને ગ્યારહવે જ્ઞાતાધ્યયન
 કા કયા અર્થ કહા હૈ ? હસ પ્રકાર જન્નુ સ્વામી કે પૂઝને પર શ્રી સુધર્મા
 સ્વામી ડનસે કહતે હૈ કિ (એવ યલુ જન્નુ !) સુનો જો ડન્હો ને ગ્યારહવે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ મતે !) હે ભદત !

(સમણેણ જાવ સપત્તેણ દસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે એકારસમસ્સ
 ણ મતે ! નાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લન્તે)

મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ
 પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કયો છે તે તેઓશ્રીએ અગિયારમો જ્ઞાતાધ્યયનનો
 શો અર્થ નિરૂપિત કયો છે ? આ રીતે જન્નુ સ્વામીના મુખે આ રીતે કહ્યું

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा 'जुना' जीर्णाः=चिरकालीना. 'झोडा' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडा=शटितमूलस्वन्या इत्यर्थः, 'परिशद्विपपट्टपत्तपुष्प फला' परिशद्विपपण्डु पत्रपुष्पफला-परिशद्वितानि=जीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषां ते तथोक्ता, 'सुकाकनखओविव निलायमाणा' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः =शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- 'एवामेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण 'समणाउसो' हे श्रमणा आयुष्मन्तः 'योऽस्माकनिर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थो या यावत्प्रजितः सन् बहूना श्रमणानां गृहीनां श्रमणीनां गृहनाश्रयकाणां गृहीनां श्राविकानां कर्कशकठोर वचनाद्युपमर्गान् 'सम्म' सम्यक्

પશ્ચિમ દિશા સરન્ધી મદ સુગંધ જીતલ સમીર ચલને લગતા તો उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष थे वे ज्यो के त्यो अधिक शोभा सपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते । परन्तु उनमें जो दावद्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सड़े हुए थे जिनका मूल और स्त्र दोनो ज्वोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एव फल परिशद्वित हो झड़-चुके थे वे शुष्क वृक्षों के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणा उसो । जो अम्म निग्गयो वा निग्गयी वा पव्वाइण समणे गृहण अण्ण-उत्थियाण गृहण गिहत्थाण सम्म सहइ गृहण-समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अपना सा बी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावकों के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वचननादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જે સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાછમ દેખાતા હતા પણ તેઓમા જે દાવદ્રવ વૃક્ષો છુર્ષ્ હતા-જૂના હતા-શીર્ષ-સડી ગયેલા હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ ખોખલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશદ્વિત થઈને ખરી પડ્યા હતા તે તો સુગંધ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને ઊભા હતા

(एवामेव समणाउसो । जो अम्म निग्गयो वा निग्गयी वा पव्वाइए समणे गृहण अण्णउत्थियाण गृहण गिहत्थाण सम्म सहइ गृहण ममणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

પત્રિતા = પત્રયુક્તા 'પુષ્પિયા' પુષ્પિતા = પુપ્પયુક્તા, 'ફલિયા' ફલિતા = ફલ સમૃદ્ધા, 'હરિયગેરિ' રંગમાળા 'હરિતકુરારાજ્યમાનાઃ' = હરિતકેન = હરિતરંગેનાતિશયશોભમાના. 'મિરીષ' શ્રિયા = પત્રપુષ્પાદિ શોભયા અત્રી વાતીવ = અત્યંત ઉપશોભમાનાઃ શોભાસમન્નઃ, તિષ્ઠન્તિ । યદા ધ્રુવલુ = યસ્મિન્ કાલે 'દીવિચ્ચગા' દ્વિષ્ટાઃ = દ્વીપમમ્મગા 'ઈસિપુરેયાયા' 'ઈપત્પુરેયાતાઃ' સ્વલ્પા પૂર્વદિશાય, 'પચ્છાયાયા' પશ્ચાદ્વાતા = પશ્ચિમદિશાયવઃ 'મદાયાયા' મન્દ ઘ્રોતાઃ = શનૈઃ શનૈઃ સચ્ચારિણો ગાયત્ર', 'મહાયાયા' મહાગાતા = પ્રચણ્ડાયવઃ 'વાયતિ' વાન્તિ = ચલન્તિ તદા ધ્રુવલુ ગ્રહો દાયદ્રગા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ શ્રિયા સ્ત્રીવાતીશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । 'અપ્પેગહયા' અપ્પેઠકા = રતિપયા - સ્ત્રીકા

પત્ર યુક્ત છે, પુષ્પ યુક્ત છે ફલોં સે સમૃદ્ધ છે । હરિત વર્ણ સે યે સઘ અતિશય શોભાયમાન હો રહે છે । ઇસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે હનકી શોભા અત્યંત નિરાલી ઘની હુઈ થી । હસ કારણ યે વિશિષ્ટ શોભા સપન્ન બને હુઈ છે । (જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેયાયા પચ્છા યાયા મદાયાયા મહાયાયા વાયતિ, તયાળ ધ્રુવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહયા દાવદ્રવા સ્વલ્પા ઝુન્ના ઝોહા પરિસહિય પદ્મપત્તિ પુષ્પફલાસુમ્મરુલ્પાઓ વિવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્ધતિ) જિમ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સચ્ચી સ્વલ્પ દ્રવાઈ, પશ્ચિમ દિશા સચ્ચી સ્વલ્પ દ્રવાઈ, ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ તથા પ્રચણ્ડ વાયુઈ ચલને લગતી તો ઉસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે નિગલે, બને હુઈ ઝયો કે ત્યોં સ્વદે રહતે છે ઉનમેં કુષ્પ મી વિકાર નહીં હોતા થા । તાત્પર્ય ઇસકા યદ હૈ કિ જય ટાપૂ સે પૂર્વ દિશા

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એઓ એવિશેષ શોભા-સ પત્ર લાગતા હતા

(જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેયાયા પચ્છાયાયા મદાયાયા મહાયાયા વાયતિ તયાળ ધ્રુવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહયા દાવદ્રવા રુક્ષા ઝુન્ના ઝોહા પરિસહિય પદ્મપત્તિપુષ્પફલાસુમ્મરુલ્પાઓ વિવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્ધતિ)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વરેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધામે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ અથડ પવનો ફેલાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી એનેરા લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા એલા હતા તેજ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને એમા જ રહેતા હતા કહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મદ, સુગંધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પત્ર

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा ' जुन्ना ' जीर्णाः=चिरकालीना. ' झोडा ' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडाः=शटितमूलस्वन्वा इत्यर्थः, ' परिसडियपडुपत्तपुष्प फला ' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफलाः-परिशटितानि=जीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईपत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषा ते तयोक्ता, ' सुकाकवखओचिव निलायमाणा ' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः २=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण ' समणाउसो ' हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माकनिर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी या यावत्प्रजितः सन् बहूना श्रमणाना बहूनां श्रमणीना बहूनाश्चक्राण। बहूना आचिकाना कर्कशकठोर वचनाद्युपमर्गान् 'सम्म' सम्यक्

પશ્ચિમ દિશા સરન્ધી મદ સુગંધ ઝીતલ સમીર ચલને લગતા તો उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष ये वे ज्यो के त्यो अधिक शोभा सपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते । परन्तु उनमे जो दाव द्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सडे हुए थे जिनका मूल और स्क्रु दोनो खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एव फल परिशटित हो झड-चुके थे वे शुष्क वृक्षो के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणा उसो । जो अम्म निर्गन्धो वा निर्गन्धी वा पव्वाइण समाणे बहूण अण्ण उत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण-समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा साध्वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, आचको के और आचिकाओं के कर्कश, कठोर वचवचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જે સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાછમ દેખાતા હતા પણ તેઓમા જે દાવદ્રવ વૃક્ષો છુલ્લુ હતા-મૂળા હતા-શીર્ષ-સડી ગયેલા હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ ખોખલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશટિત થઈને ખરી પડ્યા હતા તે તો મુઝાઈ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને બેભા હતા

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निर्गन्धो वा निर्गन्धी वा पव्वाइण समाणे बहूण अण्णउत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

પત્રિતા = પત્રયુક્તા 'પુષ્પિયા' પુષ્પિતા = પુષ્પયુક્તા, 'કલિયા' કલિયા = ફલ સમૃદ્ધાઃ, 'હરિયગેરિ' નમાણા 'હરિતકારાજ્યમાનાઃ' = હરિતકેન = હરિતવર્ણનાતિશયશોભમાના 'મિરીષ' શ્રિયા = પત્રપુષ્પાદિ શોભયા અત્રી વાતીય = અત્ય તમ્ ઉપશોભમાનાઃ શોભાસમન્નઃ, તિષ્ઠન્તિ । યદા ચ્વલુ = ચલિન કાલે 'દીવિચ્ચગા' દ્વિષ્યા = દ્વીપમમ્મયાઃ 'ઈસિપુરેવાયા' 'ઈપત્પુરોગાતાઃ' મ્વલ્યા પૂર્વદિશાયવ, 'પચ્છાગાયા' પશ્ચાદ્ગાતાઃ = પશ્ચિમદિગાયવઃ 'મદાગાયા' મન્દ ગાતાઃ = શૈભૈઃ શૈભૈઃ સન્નારિણો વાયવઃ, 'મહાવાયા' મહાવાતા = મવળવાયવઃ 'વાયતિ' વાન્તિ = ચલન્તિ તદા ચ્વલુ ગદ્યો દાનદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ શ્રિયા સ્ત્રીશ્રીશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । 'અપેગદ્યા' અપેગદ્યા = અતિપયા - સ્ત્રીકા

પત્ર યુક્ત થે, પુષ્પ યુક્ત થે ફલો સે સમૃદ્ધ થે । હરિત વર્ણ સે યે સષ અતિશય શોભાયમાન હો રહે થે । હસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે હનકી શોભા અત્યત નિરાલી ઘની હુઈ થી । હસ કારણ યે વિશિષ્ટ શોભા સપન્ન બને હુઈ થે । (જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેવાયા પચ્છા ગાયા મદાવાયા મદાગાયા વાયતિ, તયા ણ ઘદ્વે દાનદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપેગદ્યા દાવદ્વા રુક્ષા જુન્ના ક્ષોડા પરિસદિય પદ્મપત્ત પુષ્પફલા સુકરુહવાઓ વિચ મિલાયમાણા ૨ ચિદ્ધતિ) જિસ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સચન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, પશ્ચિમ દિશા સચન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ તયા પ્રચળ વાયુઈ ચલને લગતી તો હસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે નિગલે, બને હુઈ જ્યો કે ત્યો ચ્વદે રહતે થે હનમેં કુચ્ચ મી વિકાર નહીં હોતા થા । તાત્પર્ય હસકા યદ્દે હે કિ જય દાપૂ સે પૂર્વ દિશા

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એઓ મેવિશેષ શોભા-સ પત્ર લાગના હતા

(જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેવાયા પચ્છાગાયા મદાગાયા મહાવાયા વાયતિ તયા ણ ઘદ્વે દાવદ્વા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપેગદ્યા દાવદ્વા રુક્ષા જુન્ના ક્ષોડા પરિસદિય પદ્મપત્તપુષ્પફલા સુકરુહવાઓ વિચ મિલાયમાણા ૨ ચિદ્ધતિ)

ન્યારે દ્વિપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રચલ પવનો કૃકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેરા લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા બિભા હતા તે જ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને બિભા જ રહેતા હતા કહેવાની મતલબ એ છે કે ન્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મદ, મુગધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પત્ર

દિક્ સમવા વાયવઃ મન્દગતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રવચ્ચન્તિ તદા સ્વલ્લ વહ્વે દાવદ્રવા
 વૃક્ષા જીર્ણા શ્લોઢા ગટિમૂલસ્કન્ત્યા યાવત્ મ્લાયત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગડ્યા'
 અપ્પેકકાઃ=રૂતિપયાઃ દાવદ્રવા વૃક્ષા પતિતા યાવત્ ઉપશોભમાના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
 એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
 વહૂનામ્ અન્યતીર્થિનાના વહૂના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહૂના
 શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=ચતુર્વિધસંઘસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એપ
 સ્વલ્લ પુરુષો 'મદ' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞસ્ત્ । હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ! યદા સ્વલ્લ
 નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વૈપ્પા.=દ્વોપસમ્પન્ધિન નો 'સામુદ્દગા' સામુદ્દકાઃ=સમુદ્રસમ્પન્ધિન
 ર્દીપપુરોવાતા પથ્થાદ્વાતા યાવત્ મહાગતા વાન્તિ તદા સ્વલ્લ મર્વે દ્રોવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

અમત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સમન્ધી વાયુ
 સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સમન્ધી વાયુ મન્દ વાયુ એવ મહા વાયુ ચલની હૈ
 ઉસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ શ્લોઢા-પત્ર પુષ્પાદિ
 વ્રજિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોભા રહિત હી ચ્વહે રહતે હૈં ઓર
 કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પોં સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર
 હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા
 નિર્ગ્રન્થ સાડુ એવ સા ચી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
 કે અનેક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં વો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
 લેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકો કે ચતુર્વિધ સગ કે-વચનોં વો
 સહન નહીં કરતા હે-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (સમ-
 ણા ડસો ! જયા ણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ર્દિસિ પુરે વાયા પચ્છા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે મમુદ્ર ઉપર થડને વહેતો આવે
 પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન ફૂંકાય છે ત્યારે ડેટલાક
 છાણુ-જૂના, શીણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઈને
 શોભાહીન વડને જ ઊભા રહે છે અને ડેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
 પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુગંધ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજિત થઈને ઘણા
 અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહ-થેના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઈને
 સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સઘના વચનોને
 જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ થયો છે

(સમણાડસો ! જાયાણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ર્દિસિ પુરે વાયા
 પચ્છાવાયા જાવ મહ વાયા વાયતિ ત્યાણ સન્વે દાદયા રુગ્ગા ઝાઢા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' સહતે=મુખાચરિકારદરણેન મર્ષતિ, 'સ્વમઈ' સમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વઈ, તિતિસતે-અદીનાભાવેન, 'અદિયાસેઈ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાડન્ત દરણેન સહત । અ ચ વદનામ્ અપતીર્થિકાનાં વદનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલવચનાનિ નો સમ્યક્=સમ્યગ્ભાવેનસહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે, એપ્પ લ્લુ=એમ્મ્મૂત્ પુરુષઃ 'મએ' મયા 'દેશવિરાદઈ' દેશવિરાધક. મહત્ત ।

પુનઃત્ર હે શ્રમણાઃ-આયુધ્મન્ત ! યદા સલ્લ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર સમ્બન્ધિનઃ ઈપ્તપુરોગાતાઃ સ્વલ્પપૂર્વદિગ્માચર, 'પચ્છાવાયા' પશ્ચાદ્વાતા =પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા છે. ઉન વચનો ૩૦. દુનરર જિનકે મુલ્લ આદિ મેં કોઈ વિકાર નહીં ફલકતા હૈ ક્રોધ નહીં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અદીન ભાવસે જો ઉન્હેં સહન કરતા હૈ, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ઉન્હેં અપને અન્તઃકરણ સે સહલેતા હૈ-તયા ક્રુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો જો સહન નહીં કરતા હૈ-યાવત્ ઉન્હેં અધ્યાસિત નહીં કરતા હૈ એસા વ્યક્તિ મૈને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ ક્રિયા હૈ । (સમણાડસો ! જયાળ સામુદગા ઈર્સિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાળ વઢવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાવમાળા ૨ ચિદ્વતિ, અપ્પે મહ્યા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાળે વહૂળ અળ્ણાડત્થિયાળ વહૂળ મિદ્ધત્થાળ સમ્મ સહઈ વહૂળ સમણાળ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસળ મપ્પ પુરિસે દેમારાહણ પળ્ણત્તે) પુનઃત્ર-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચ્ચેનાં સાલગીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર કોઈ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ ક્રુતીર્થિ દોના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચ્ચેનાં જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા ભાણસને મેં દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાડસો ! જયાળ સામુદગા ઈર્સિ પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાળ વઢવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાવમાળા ૨ ચિદ્વતિ, અપ્પેમહ્યા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાળે વહૂળ અળ્ણાડત્થિયાળ વહૂળ મિદ્ધત્થાળ સમ્મ સહઈ વહૂળ સમણાળ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસળ મપ્પ પુરિસે દેમારાહણ પળ્ણત્તે)

દિક્ સમગ્રા વાયવઃ મન્દ્રવાતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રવચ્ચન્તિ તદા સ્વલ્પ વહવે દાવદ્રવા
 વૃક્ષા જીર્ણા શ્લોઢા ગટિમૂલસ્ફુન્દ્યાં વાવત્ મ્લાયત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગડયા' '
 અપ્પેકકાઃ=રૂતિપથાઃ દાન્દ્રયા વૃક્ષા પત્રિતા વાવત્ ઉપશોમમોના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
 એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગન્ધો વા નિર્ગન્ધી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
 વહૂનામ્ અન્યતીર્થિમાના વહૂના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહૂનાં
 શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=ચતુર્વિધસદ્વસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એપ
 સ્વલ્પ પુરુષો 'મપ્' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ । હે આયુષ્મન્ત, શ્રમણાઃ । યદા સ્વલ્પ
 નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વૈપ્પા.=દ્વીપસમ્મન્થિન' નો 'સામુદગા' સામુદ્રગા'=સમુદ્રસમ્મન્થિન
 ર્દેવપુરોવાતા પથાદ્વાતા વાવત્ મહાગતા વાન્તિ તદા સ્વલ્પ મર્વે દ્રાવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

ભ્રમત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સગન્ધી વાયુ
 સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સગન્ધી વાયુ મન્દ્ર વાયુ એવ મહા વાયુ ચલની હૈ
 હસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ શ્લોઢા-પત્ર પુષ્પાદિ
 વ્રજિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોભા રહિત હી જ્વહે રહતે હૈં ઓર
 કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પો સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેભરે સુન્દર
 હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા
 નિર્ગન્ધ સાધુ એવ સાંઘી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
 કે અનેક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
 હેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકો કે ચતુર્વિધ સગ કે-વચનોં કો
 સહન નહીં કરતા હૈં-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (સમ-
 ણા હસો ! જયા ણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદગા ર્દેસિ પુરે વાયા પંચઝા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે મમુદ્ર ઉપર યધને વહેતો આઠો
 પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ્ર પવન અને પ્રચડ પવન ફૂંકાય છે ત્યારે કેટલાક
 છર્ણુ-જૂના, શીર્ણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થધને
 શોભાહીન વર્તેજ જોલા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
 પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુન્દર જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગન્ધ સાધુ અને સાધવીજન પ્રવ્રજિત થધને ઘણા
 અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહ-થેના પ્રતિજ્ઞ વચનોને સારી રીતે સમજી લધને
 સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સધના વચનોને
 જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ થયો છે

(સમણાહસો ! જાયાણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદગા ર્દેસિ પુરે વાયા
 પંચઝાવાયા જાવ મહ વાયા વાયતિ ટયાણ સન્ને દાદયા સ્વયા જુણા શ્લોઢા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' સહતે=મુખાધરિકારચરણેન મર્ષતિ, 'સ્વમઈ' સમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વહ, તિતિસતે-અદીનાભાવેન, 'અહિયાસેઃ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાઽન્ત ચરણેન સહન । અપ ચ ઘટનામ્ અપતીર્થિકાનાં બહુનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલચનાનિ નો સમ્પર્ક=સમ્પર્કભાવેન સહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે, એવં ચલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષઃ 'મય' મયા 'દેશવિરાઢય' દેશવિરાધક. પ્રજ્ઞસ ।

પુનશ્ચ દે શ્રમણાઃ-આયુષ્મન્ત ! યદા ચલુ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર સમ્યન્ધિનઃ ઈપત્પુરોચાતાઃ સ્વલ્પપૂર્વદિગ્ગાયયઃ 'પન્ત્રાયાયા' પન્નાદ્વાતા=પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હેં ડન ચચનોં ગો ડનકર જિનકે મુખ આદિ મેં કોઈ ધિકાર નહીં છલકતા હૈ ક્રોધ નહોં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અદીન ભાવસે જો ડન્હેં સહન કરતા હૈ, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ડન્હેં અપને અન્તઃ કરણ સે સહલેતા હૈ-તયા ક્ષુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો જો સહન નહીં કરતા હૈ-યાવત્ ડન્હેં અધ્યાસિત નહોં કરતા હૈ એસા વ્યક્તિ મને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા હૈ । (સમણાડમો ! જયા-ળ સામુદગા ઈર્મિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાળ બહવે દાવદવા રુઝ્વા જુળ્ળા શોડા જાવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્વતિ, અપ્પે ગહયા દાવદવા રુઝ્વા પત્તિયા પુપ્ફિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વતિ એવામેવ સમણાડમો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પન્વહણ સમાળે બહુળ અળ્ળાડત્થિયાળ વહુળ મિહત્થાળ સમ્મ સહઈ વહુળ સમણાળ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસળ મય પુરિસે દેસારાહણ પળ્ળસે) પુનશ્ચ-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચ્ચેનાં સાભાગીને જેના એ વગેરે અગો ઉપર ક્રોધ પણ વિકાર સરખાએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ ક્ષુતીર્થિ કેના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચ્ચેનાં જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને એ દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાડમો ! જયાળ સામુદગા ઈર્મિ પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાળ બહવે દાવદવા રુઝ્વા જુળ્ળા શોડા જાવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્વતિ, અપ્પેગહયા દાવદવા રુઝ્વા પત્તિયા પુપ્ફિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વતિ એવામેવ સમણાડમો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પન્વહણ સમાળે વહુળ અળ્ળાડત્થિયાળ વહુળ મિહત્થાળ સમ્મ સહઈ વહુળ સમણાળ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસળ મય પુરિસે દેસારાહણ પળ્ળસે)

દિક્ સમગ્રા વાયવઃ મન્દગતા મહાગતા વાન્તિ=પ્રવળન્તિ તદા સ્વલ્લ વદ્ધે દાવદ્રવા
વૃક્ષા જીર્ણા શ્લોઢા ગદિમૂલસ્કન્ધા યાવત્ મ્લાયત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપેગદયા'
અપેક્રકાઃ=રુતિપયાઃ દાનદ્રવા વૃક્ષા પતિતા યાવત્ ઉપશોમમાના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકાનાં વહૂના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહૂના
શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=વતુર્નિધમહ્વસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એપ
સ્વલ્લ પુરુષો 'મર્' મયા દેશારાગ્રઃ પ્રજ્ઞસઃ । હે આયુષ્મન્ત, શ્રમણાઃ । યદા સ્વલ્લ
નો 'દીવિચ્છગા' દ્વૈપ્યા=દ્વીપસમ્યન્વિન નો 'સામુદ્રગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્રસમ્બન્ધિન
ઈષપુરોવાતા પશ્ચાદ્વાતા યાવન્ મહાગતા વાન્તિ તદા સ્વલ્લ મર્વે દ્રાવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

ક્ષમત શ્રમણો । જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સમન્ધી વાયુ
સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સમન્ધી વાયુ મન્દ વાયુ એવ મહા વાયુ ચલની હૈ
હસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ શ્લોઢા-પત્ર પુષ્પાદિ
વ્રજિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોમા રહિત હી સ્વદે રહતે હૈં ઓર
કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પો સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર
હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો । જો હમારા
નિર્ગ્રન્થ સાધુ એવ મા ઘી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
કે અનેક ગૃહસ્થો કે પ્રતિકૂલ વચનો વો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
હેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકો કે ચતુર્વિધ સગ કે-વચનોં કો
સહન નહીં કરતા હૈં-વહ મેરે દ્વારા દેશારાગ્ર પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (સમ-
ણા હસો) જયા ણ નો દીવિચ્છગા ણો સામુદ્રગા ઈસિ પુરે વાયા પચ્છા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે સમુદ્ર ઉપર થાને વહેતો આઠો
પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન ક્રૂકાય છે ત્યારે ડેટલાડ
શુભ્ર-જૂના, શીષુ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થાને
શોભાહીન થાને જ ઊભા રહે છે અને ડેટલાડ દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુન્દર લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
શ્રમણો ! જે અમારા નિઃશ્રય સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થાને ઘણા
અન્યતીર્થિકાના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનોને આરી રીતે સમજ લાધને
સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સધના વચનોને
જે સહન કરતો નથી તે આરા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ થયો છે

(સમણાહસો ! જાયાણ નો દીવિચ્છગા ણો સામુદ્રગા ઈસિ પુરે વાયા
પચ્છાવાયા જાવ મહાવાયા વાયતિ હયાણ સન્ધે દાદરા રજવા જુળ્યા શ્લોઢા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહૃ' સહતે=મુલાયયિકારરરણેન મર્પતિ, 'સ્વમહ' સમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વહ, તિતિસતે-અદીનાભાવેન, 'જહિયાસેહ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાઽન્ત રરણેન સહત । અ ચ ઘટનામ્ ં પતીર્થિકાનાં ઘટનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિફલચનાનિ નો સમ્પર્ક=સમ્પર્ગભાવેનસહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે, એપ સ્વલુ=પ્રસ્મૃત' પુરુષઃ 'મણ' મયા 'દેશવિરાઢદ' દેશવિરાધકઃ પ્રજ્ઞસ ।

પુનઃત્ર હે શ્રમણા-આયુષ્મન્ત ! યદા સ્વલુ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર સમ્વન્ધિનઃ ઈપત્પુરોચાતાઃ સ્વલ્યપૂર્વદિગ્માયવઃ 'પચ્છાવાયા' પશ્ચાદ્વાતા=પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હે એ વચનો નો રુનરુર જિનકે મુખ આદિ મેં કોઈ વિકાર નથી ફલકતા હૈ ક્રોધ નથી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અદીન ભાવસે જો બન્હે સહન કરતા હૈ, નિર્જરા કી ભાવના સે જો બન્હે અપને અન્તઃ કરણ સે સહલેતા હૈ-તયા ક્રુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિફલ વચનોં કો જો સહન નહી કરતા હૈ-યાવત્ બન્હે અધ્યાસિત નહીં કરતા હૈ એસા વ્યક્તિ મેને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ ક્રિયા હૈ । (સમણાડસો ! જયાણ સામુદગા ઈર્મિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ ઘહવે દાવદવા રુસ્વા જુળ્લા શોડા જાગ મિલાપમાણા ૨ ચિદ્ધતિ, અપ્પે મહ્યા દાવદવા રુસ્વા પત્તિયા પુષ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિદ્ધતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વણ સમાણે ઘટ્ટણ અળ્લણત્થિયાણ ઘટ્ટણ મિહત્થાણ મમ્મ સહૃ ઘટ્ટણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહૃ એસણ મણ પુરિસે દેસારાદણ પળ્લણ્ણે) પુનઃત્ર-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને બેના એ વગેરે અગો ઉપર કોઈ પણ વિકાર સરળોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી બે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી બે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ ક્રુતીર્થિ કોના ગૃહસ્થોને પ્રતિફળ વચનોને બે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા ભાણસને એ દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાડસો ! જયાણ સામુદગા ઈર્મિ પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ ઘહવે દાવદવા રુસ્વા જુળ્લા શોડા જાગ મિલાપમાણા ૨ ચિદ્ધતિ, અપ્પેમહ્યા દાવદવા રુસ્વા પત્તિયા પુષ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિદ્ધતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વણ સમાણે ઘટ્ટણ અળ્લણત્થિયાણ ઘટ્ટણ મિહત્થાણ મમ્મ સહૃ ઘટ્ટણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહૃ એસણ મણ પુરિસે દેસારાદણ પળ્લણ્ણે)

સમ્યક્ સહતે એપ્પ સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષ 'મણ' મયા સર્વારાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ, એવ સ્વલુ=અનેન પ્રકારેણ હે ગૌતમ ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા ભવન્તિ । સુધર્મા

અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન આદિ નહોં કરતા હૈ એસા યહ સાધ્વાદિજન મેરે દ્વારા સર્વ વિરાધક પ્રજ્ઞસ ક્રિયા ગયા હૈ । (સમણા ડસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્ધગાવિ હીંસિં પુરે વાયા પચ્છા વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સચ્ચે દાવદ્વા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, એવામેવ સમણા ડસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિણ સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્નડત્થિય મિહત્થાણ સમ્મ સદ્દિ એસણ મણ પુરિસે સચ્ચારાદણ પણ્ણત્તે । એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા વા ભવન્તિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય દ્વીપોત્થ મી તથા સમુદ્રોત્થ મી હીંસણુરોવાત પશ્ચાઘાત યાવત્ વહતે હૈં ઉસ સમય પુણ્ણિત પત્તિત આદિ સમસ્ત દાવ-દ્રવ વૃક્ષ શોભો સપન્ન હી વને રહતે હૈં । હીંસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા સાધુ સાધ્વીજન દીક્ષિત હોતા હુઆ અનેક શ્રમણાદિકોં કે ચતુર્વિધ સઘ કે-તથા અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન કર લેનાં હૈં એસા સાધુ આદિ જન મેરે દ્વારા સર્વારાધક

પણ ચતુર્વિધ મધના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સાચી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કરવામા આવ્યા છે

(સમણાડસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્ધગા વિ હીંસિં પુરે વાયા પચ્છા-વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સચ્ચે દાવદ્વા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધ તિ, એવા-મેવ સમણાડસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિણ સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્ન-ડત્થિયમિહત્થાણ સમ્મ સદ્દિ એસણ મણ પુરિસે સચ્ચારાદણ પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા વા ભવન્તિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! ત્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉત્થના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચડ વચનો કુકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દાવ-દ્રવ વૃક્ષો શે ભા ન પત્ત થઈને જ ઊભા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે આમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનો સામળીને

જોડા યાવદ્ મ્લાન્તસ્તિષ્ઠન્તિ, અપ્પેરુઠા = રૂપિપયાઃ યાવદ્ ડાપોમમાનાસ્તિ
 ષ્ઠન્તિ । એવમેવ દે શ્રમણા આયુષ્મન્ત ! યાવન્ પ્રગ્જિત સન્ બહુના શ્રમણાનાં ૪
 ચતુર્વિધસદ્ધસ્ય, બહુનામ્ અન્યતીર્થિકગૃહસ્થાના વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે, એ
 સ્થલ પુરુષઃ 'મણ' મયા સર્વવિરાધક' પ્રગ્જાત । શ્રમણા આયુષ્મન્ત । યદા સ્થલ
 'દીવિન્ચગાવિ' દ્વૈષ્યા અપિ 'સામુદ્રગાવિ' સામુદ્રસા અપિ ઈપત્પુરોચાતા પશ્ચાદ્વાતા
 યાવદ્ વાન્તિ તદા સ્થલ સર્વે દ્રાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિના યાવત્ ત્રિયા ઉપશોભમાનાઃ ૨
 તિષ્ઠતિ । એવમેવ દે શ્રમણા આયુષ્મન્ત ! યોઽસ્માકં યાવત્ પ્રગ્જિત સન્ બહુના
 શ્રમણાના ૪ = ચતુર્વિધસદ્ધસ્ય બહુનામ્ અન્યતીર્થિકગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલ વચનાનિ

વાયા જાવ મહાવાયા વાયતિ-તયાણ સર્વે દાવદ્રવા રુક્ષા જુષ્ણા જોડા
 જાવ મિલાયમાણા ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા જાવ ઉવસોમે માણા ચિદ્ધતિ,
 એવામેવ સમણાડસો ! જાવ પન્વદ્દણ સમાણે વહૂણ સમાણાણ ૪ વહૂણ
 અન્નઉત્થિયગિહત્યાણ નો સમ્મ સહદ્દ એસણ મણ પુરિસે સર્વ વિરાદિયે
 પણ્ણત્તે) હે આયુષ્મન્ શ્રમણો જિસ મમય ન તો દોપોત્થ પૂર્વ દિશા
 સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, પશ્ચિમ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, ધીરે ૨ ચલને
 વાલી વાયુઈ એવ પ્રવળ વેગ શાલી વાયુઈ ચલતે હૈં ઓર ન સમુદ્રોત્થ
 પૂર્વ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, પશ્ચિમ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ
 ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ એવ પ્રવળ વેગ શાલી વાયુઈ ચલતે હૈં ઉમ
 સમય ઓ જીર્ણ શીર્ણ દાવદ્રવ વૃક્ષ મ્લાન્ હી રહતે હૈં-ઓર જો પત્ર
 પુષ્પાદિકો સે યુક્ત હોતે હૈં વે ઓ જૈસે હોતે હૈં વૈસે હી બને રહતે હૈં
 હસી તરહ હૈ આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગન્થ સાધુજન એવ
 નિર્ગન્થ સાધ્વી જન દીક્ષિત હોતા હુઆ ઓ ચતુર્વિધ સઘ કે ઓર

મિલાયમાણા ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા જાવ ઉવસોમે માણા ચિદ્ધતિ, એવામેવ સમણા-
 ડસો ! જાવ પન્વદ્દણ સમાણે વહૂણ સમાણાણ ૪ વહૂણ અન્નઉત્થિયગિહત્યાણ નો
 સમ્મ સહદ્દ એસ ણ મણ પુરિસે સર્વ વિરાદિયે પણ્ણત્તે)

હે આયુષ્મન્ શ્રમણો ! ત્યારે દીપોના પૂર્વ દિશાના આજા પવનો, પશ્ચિમ
 દિશાના પવનો ધીમે, ધીમે વહેતા પવનો, અને પ્રત્યંક વેગથી કૂકાતા પવનો વહેતા
 નથી અને સમુદ્ર પરથી વહેતા પૂર્વ દિશાના આજા પવનો, ધીમે ધીમે વહે
 નારા પવનો, અને પ્રત્યંક વેગે કૂકાતા પવનો વહેતા નથી ત્યારે પશ્ચિમ
 દિશા દાવદ્રવ વૃક્ષો તો મ્લાન્ (કરમાયેલા) રહે છે અને પત્રપુષ્પ વગેરેથી
 સપત્ત દાવદ્રવ વૃક્ષો પણ જેવા છે તેવા જ રહે છે, આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગન્થ સાધુઓ અને નિર્ગન્થ સાધ્વીઓ નિર્ગન્થ

સમ્યક્ સહતે એપ્પ સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષ 'મય' મયા સર્વારાધકઃ પ્રજ્ઞાતઃ, એવ સ્વલુ=અનેન પ્રકારેણ હે ગૌતમ ! જીવા આરાહ્યા વા વિરાધ્યા ભવન્તિ । સુધર્મા

અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થો કે વચનો કો અચ્છી તરહ સહન આદિ નહીં કરતા હૈ એસા યહ સાધ્વાદિજન મેરે દ્વારા સર્વ વિરાધક પ્રજ્ઞાત કિયા ગયા હૈ । (સમણા ડસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગાવિ ઈસિ પુરે વાયા પચ્છા વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સવ્વે દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવામેવ સમણા ડસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિય સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્નઉત્થિય ગિહિયાણ સમ્મ સદ્દિ એસણ મય પુરિસે સન્વારાદિય પળ્લત્તે । એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાહ્યા વા વિરાહ્યા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમ્મસ અજ્ઞયણસ્મ અયમદ્દે પળ્લત્તે તિવેમિ) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય ક્ષીપોત્ય ભી તથા સમુદ્દોત્ય ભી ઈપત્તુરોવાત પશ્ચાદ્વાત યાવત્ વહતે હૈ ઉસ સમય પુષ્પિત પશ્ચિત આદિ સમસ્ત દાવદ્રવ વૃક્ષ શોભા સપન્ન હી બને રહતે હૈ । ઈસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા સાધુ સાધ્વીજન દીક્ષિત હોતા હુઆ અનેક શ્રમણાદિકોં કે ચતુર્વિધ સઘ કે-તથા અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન કર લેતા હૈ એસા સાધુ આદિ જન મેરે દ્વારા સર્વારાધક

પણ ચતુર્વિધ સઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞાત કરવામા આવ્યા છે

(સમણાડસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગા વિ ઈસિ પુરે વાયા પચ્છા-વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સવ્વે દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવા-મેવ સમણાડમો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિય સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્ન-ઉત્થિયગિહિયાણ સમ્મ સદ્દિ એસણ મય પુરિસે સન્વારાદિય પળ્લત્તે ! એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાહ્યા વા વિરાહ્યા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમ્મસ અજ્ઞયણસ્મ અયમદ્દે પળ્લત્તે તિવેમિ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! બ્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચંડ પવનો ફૂંકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દાવ દ્રવ વૃક્ષો શોભા સપન્ન થઈને જ બિલા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનો સામળીને

સ્વામી પ્રાહ-एव खलु=पूर्वोक्तप्रकारेण हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरस्य
यावत्सिद्धिगतिं संप्राप्तेन एकादशस्य अय=पूर्वोक्तप्रकार अर्थः=भावः प्रकृतः ।
'चित्तेमि' इति ब्रवीमि, इति पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पत्यश्च दशभाषाकलितञ्जलिक
लापालापक-प्रसिद्धद्वयवर्धनैरुग्रन्यनिर्मापक-आदिमानमर्दक श्रीशाहू-
अपतिकोल्हापुरराजपदच-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-गालगल्लवारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-
व्रतिविरचिताया 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्रस्यानगारधर्माभूतव
विष्णवार्याया व्याख्याया एकादशमं पद्यं समाप्त ॥ ११ ॥

રૂપ સે પ્રજ્ઞ સ હુઆ હે । હસ પ્રકાર હે ગૌતમ ! જીવ આરાધક ઔર
વિરાધક હોતે હે । સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂસ્વામી સે કરતે હે કિ હે જમ્બૂ !
હસ પૂર્વોક્ત રૂપ સે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ કો
પ્રાપ્ત કર ચુકે હે ગ્યારહવે જ્ઞાનાધ્યયન કા યદ અર્થ પ્રજ્ઞ સ ક્રિયા હે ।
એસા મેને તુમ સે જૈસા સુના હે વૈસા યદ કહા હે । હસ મેં નિજ કી
કુઠ બી કલ્પના નહી હે । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલालજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર" કી અનગાર ધર્માભૂતવર્ણી વ્યાર્યા કા ગ્યારહવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વોપદેશક રૂપે
પ્રસન્ન થાય છે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો
હોય છે સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂસ્વામીને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! સિદ્ધિગતિ
પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર
મુજબનો અર્થ પ્રસન્ન કર્યો છે એ જે ગીતે સામળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી
સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા એ મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેરું નથી ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર
ધર્માભૂતવર્ણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

અથ દ્વાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભયતે-

ગતમેક્ષાદ્ગત યતન, સાપત દ્વાદશમારમ્ભયતે, પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને ચારિત્રસ્યા-
રાધકત્વ તદ્ વિરામકત્વ ચ પ્રોક્તમ્ ઇહ તુ ઉદમ્દટ્ટાન્તેન મલીમમપરિણામપરિણ-
મિતાન્તઃ કરણાનામપિ ભવ્યાના સુગુરુપરિકર્મ તત્રાગ્રિરાધકત્વ ભવતીતિ પ્રદર્શયતે-
અત્રેદમાદિસૂત્રમ્—‘જહ્ણ ભતે’ इत्यादि ।

મૂલમ્-જહ્ણ ભતે । સમણેણ જાત્ર સંપત્તેણં એકારસમસ્સ
નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં ધારસમસ્સ ણં નાયજ્ઞયણસ્સ કે
અદ્દે પપ્પણત્તે ?, एवं खलु जवू । तेणं कालेण२ चंपा नाम
नयरी पुण्णभद्वे चेइए जितसत्तू राया धारिणीदेवी, अदीण-

ચારહવા અ યયન પ્રારમ્ભ ”

જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ પ્રધાન કા વર્ણન

ચારહવા અધ્યયન સમાપ્ત થી ચુકા અર ચારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
હૈ । હમ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સચન્ધ હૈ-પૂર્વ અ-ધ્યયન
મેં જો જીવ ચારિત્ર કા પાલન કરતા હૈ વહ આરાધક ઓર જો હસસે
વિપરીત ભાવ વાલા હોતા હૈ વહ વિરાધક હૈ યહ પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ ।
અથ હસ અધ્યયન મેં ઉદક કે દૃષ્ટાન્ત સે યહ પ્રકટ ક્રિયા જાયગા કિ
જિન ભવ્ય જીવોં કા અન્ત. કરણ મલીન પરિણામોં સે પરિણત હો રહ્યા
હૈ-પરન્તુ ઉનમેં યદિ સુગુરુ પરિકર્મતા-ગુણ વિશેષ કા ગ્રહણ કરના હૈ
તો ઉસસે વર્હા ચારિત્રારાધકતા ઓ જાતી હૈ ‘જહ્ણ ભતે !’ इत्यादि ।

જિતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ પ્રધાનનુ ખારમુ અધ્યયન

અગિયારમુ અધ્યયન સમાપ્ત થઈ ચૂકયું છે અને હવે ખારમુ અધ્યયન
પ્રારમ્ભ થાય છે આનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે કે
પહેલાના અધ્યયનમાં જે જીવ ચારિત્રનું પાલન કરે છે તે આરાધક અને જે
એના વિપરીત ભાવવાળો હોય છે તે વિરાધક છે એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી
છે આ અધ્યયનમાં ઉદકના દૃષ્ટાન્તથી આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ થશે કે જે ભવ્ય
જીવોનું અન્ત કરણ (અંતર) ખરામ પરિધામોથી પરિણત થઈ રહ્યું છે, પણ
તેમનામાં જે સુગુરુ પરિકર્મતા ગુણ વિશેષનું શ્રદ્ધા કરવું છે તો ત્યાં ચારિત્ર
રાધકતા આવી બાધ છે જ હ્ણ ભતે इत्यादि

સ્વામી પ્રાદ-પ્રત્ય સ્વલુ=પૂર્વોક્તપ્રકારણ હે જન્મ્યુ. ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ
યાત્ત્વમિદ્વિગતિ સપ્રાપ્તેન પ્રકાદશસ્ય અય=પૂર્વોક્તપ્રકાર અર્થ:=માત્ર પ્રજ્ઞાતઃ ।
'તિવેમિ' इति ब्रवीमि, इति पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री-विश्वविरपात-जगद्गुरु-प्रसिद्धनावरूपश्च दशभाषाकलितकलितक-
लापालापक-प्रविष्टद्वगधपद्यनैकग्रन्थनिर्माणक-यादिमानमर्दक-श्रीशाहून्त्र-
त्रपतिकोल्हापुरराजपदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालगुरुवारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिव्यकरपूज्यश्री घासीलाल-
प्रतिविरचिताया 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्रस्यानगारधर्माभूतव
र्षिण्यारचाया व्याख्यायां एकादशमध्ययन समाप्त ॥११॥

રૂપ સે પ્રજ્ઞાત હુઆ હૈ । હસ પ્રકાર હે ગૌતમ ! જીવ આરાધક ઔર
વિરાધક હોતે હૈ । સુધર્મા સ્વામી જન્મસ્વામી સે કહતે હૈ કિ હે જન્મ !
હસ પૂર્વોક્ત રૂપ સે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ કો
પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ગ્યારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યદ અર્થ પ્રજ્ઞાત કિયા હૈ ।
એસા મૈને તુમ સે જૈસા સુના હૈ વૈસા યદ કહા હૈ । હસ મૈનિજ કી
કુઝ મી કલ્પના નહી હૈ । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા
ધર્મકથામુદ્ધત્ત" કી અનગાર ધર્માભૂતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા ગ્યારહવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

સારી પેઠે સહન કરી હે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વારાધક રૂપે
પ્રજ્ઞાત થાય છે આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! એવો આરાધકો અને વિરાધકો
હોય છે સુધર્મા સ્વામી જન્મસ્વામીને કહે છે કે હે જન્મ ! સિદ્ધિગતિ
પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર
મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞાત કર્યો છે એ જે રીતે સામળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી
સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા મે મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેરું નથી ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જ્ઞાતાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર
ધર્માભૂતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुनाम कुमार=जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिन्यादिबुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रज्जधुराचितए' राज्यपुराचिन्तकः=राज्यभारचिन्तक 'समणो वामए' श्रमणोपासक=श्रावणोऽभिगतजीवाजीवभासीत् । तस्याश्रमपाया नगर्या वहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिहोदक परिखा=दुर्गम्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीना प्रवेष्टुमशक्या गर्तरूपावेष्टनाकारभूमिः, तत्र सम्भृतमुदक परिहोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रमिद्ध चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ? । हे जवू ! सुनो—जो उन्होंने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है— (तेण कालेण तेण समण चपा नाम नयरी पुणमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी । उसमें पूर्णमद्र नाम का उद्यान था । उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था । इस ही धारिणी देवी नाम की रानी थी । अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था । यह युवराज था । (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचितए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था । यह औत्पत्तिकी आठि चारो प्रकार की बुद्धि से सपन्न था । यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था । जीव अजीव आदि तन्त्रो का यह ज्ञाता था और श्रमणोपासक था । (तीसे ण चपाए णयरीए गहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में—ईशानकोण में—परिहोदक—खाईमें जल भरा था । दुर्ग (किल्ला)के चारो ओर बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समण चपा नाम नयरी पुणमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

ते जणे अने ते भभये थपा नाभे नगरी હતી તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું અને તે યુવરાજ હતો (સુબુદ્ધિ અમન્ચે જાવ રજ્જધુગ ચિત્તે સમણોવાસે) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મંત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકા વગેરે આઠે પ્રકારની બુદ્ધિસપન્ન હતો અને ગાંધ્યનું ગામન તેના હાથમાં જ હતું જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसे ण चपाए णयरीए गहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था)

થપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ—જ્ઞાન કોણમાં—પરિહોદક ખાઈમાં પાણી ભર્યું હતું દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પામે

સત્તુ નામ કુમારં જુવરાયા યાત્રિ હોત્યા, સુવૃદ્ધી અમચ્ચે
 જાવ રજ્જધુરાચિત્તે સમણોવાસે, તીસેણ ચપાણ ણયરીણ
 વહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમેણ એગે પરિહોદણ યાત્રિ હોત્યા, મેય-
 વસામંસરુહિરપૂયપડલપોચ્છડે મયગકલેવરસછળ્લે અમણ્ણે
 વળ્લેણ જાવ પાસેણ, સે જહા નામણ અહિમડેડ વા જાવ
 મયકુહિયવિળ્લકિમિણવાવળ્ણદુરભિગધે કિમિજાલાડલે
 સંસત્તે અસુદ્ધિગયવીભત્થદરિસણિજ્જે, ભવેયારુવે સિયા ?,
 ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એત્તો અણિદ્દુતરાણ ચેવ પાસેણ વળ્ણત્તે ॥સૂ. ૧॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામીપ્રાહ—યદિ સ્વલુ મદન્ત ! હે ભગવન્ ! શ્રમણેન યાવત્સ-
 મ્પાપ્તેન એકાદશસ્થ જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞતઃ દ્વાદશસ્થ સ્વલુ
 જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય કોડર્થ પ્રાપ્તઃ ? શ્રો સુધર્માશ્વામી કથયતિ—એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ !
 તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમ્પા નામ નગરી, પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય, જિતશ્ચત્રાજા,

જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈ કિ (જહ્ણ મતે !
 સમણેણ જાવ સપત્તેણ એકારસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં વારસ
 મસ્સ ણ નાયજ્ઞયણસ્મ કે અદ્દે વળ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જમ્બૂ !) હે મદન્ત !
 યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો મિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો
 પ્રાપ્ત હો જુકે હૈં ગ્યારહવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ અર્થ
 નિરૂપિત કિયા હૈ—તો કહિયે ડન્હો ને વારહવે જ્ઞાતાધ્યયનકા કયા અર્થ

ટીકાર્થ—જમ્બૂસ્વામી શ્રીસુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જહ્ણ મતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ એકારસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં
 વારસમસ્સ ણ નાયજ્ઞયણસ્મ કે અદ્દે વળ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જમ્બૂ !)

હે મદન્ત ! સિદ્ધગતિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર અગિયારમા
 જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે ભાવ—અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તે તો તેઓશ્રીએ
 બારમા અધ્યયનનો શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે હે જમ્બૂ સાહેબો તેઓ
 શ્રીએ બારમા અધ્યયનનો જે રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તે આ પ્રમાણે છે—

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुनाम कुमारः=जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिन्यादिवुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रज्जधुराचित' राज्यपुराचिन्तक=राज्यभारचिन्तक 'समणो वासए' श्रमणोपासक=यावतोऽभिगतजीवो जीव आसीत् । तस्याश्चम्पाया नगर्या वहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिहोदक परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीना प्रवेष्टुमशक्या गर्तरूपावेष्टनाकारभूमि, तत्र सम्भृतमुदक परिखोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रमिद चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयसा'

प्ररूपित किया है ? । हे जव ! सुनो—जो उन्होंने १२वें अध्यायनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है—(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी पुण्णभदे चेइण जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी । उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था । उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था । इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी । अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था । यह युवराज था । (सुबुद्धी अमचचे जाव रज्जधुराचितए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था । यह औत्पत्तिकी आदि चारो प्रकार की बुद्धि से संपन्न था । यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था । जीव अजीव आदि तत्त्वों का यह ज्ञान था और श्रमणोपासक गा । (तीसे ण चपाए णयरीए उहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में—ईशानकोण में—परिखोदक-खाईमें जल भरा था । दुर्ग (किल्ला)के चारो और बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी पुण्णभदे चेइण जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

ते जण्णे अने ते भग्गे यथा नामे नगरी હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું અને તે યુવરાજ હતો (સુબુદ્ધિ અમચ્છે જાવ રજ્જધુગ ચિંતણ સમણોવાસણ) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મંત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસંપન્ન હતો અને ગત્યનું જ્ઞાનન તેના હાથમા જ હતું જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेण चपाए णयरीए उहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था)

यथा नगरांनी णहण उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग—इशान कोणमा—परिखोदक भाषमा पाणी भर्युं હતું દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

इत्यादि, 'मेयवसामसरुहिरपूयपडउपोचड' मेदोससामसरुहिरपूयपडलपोचड 'मेदः=शरीरस्थधातुविशेषः, वसा=स्थिरगतस्निग्धधातुविशेषः, 'चर्वी' इति प्रसिद्धः मांस=मसिद्ध रुधिर=शोणित, पूय=त्रिहृतरुधिरम्, तेषा पटलेन=सम्पूहेन पोचड=मिश्रित सनुदुबुदमित्यर्थः। 'मयगकलेवरसछन्ने' मृतककलेवरसछन्ने=श्वमाजारादिमृतकलेवरसमृतम्। 'अमणुण' अमनोपम्-अरुचिकरं योनेन 'जाव' यावत्-गन्धेन रसेन स्पर्शेन च मनोविकृतिजनकमित्यर्थः। तदेव सट्टान्तं प्रश्नोत्तरेण वर्णयति-'स जहानामए' तद् यथा नामरुम्-यथा दृष्टान्तम्-यथा- 'अहिमडेइवा' अहिमृतकमिति ग=गर्भमृतम्, 'गोमडेइवा' गोमृतकमिति वा 'जाव' यावत्-एव यावच्छब्देन-श्वमृतक, माजारामृतक, मनुष्यमृतक, महिष

उस से लगा हुआ एक गोलाकार घड़ी भारी ग्वाई थी। इस की वजह से शत्रु उस दुर्ग-किल्ले में सहसा-एकाएक प्रविष्ट नहीं हो सकते। इस में पानी भरा रहता है। इस का नाम खातिकोदक भी है। (मेयवसामसरुहिर-पूय-पडल-पोचड मेयगकलेवरसछन्ने अमणुण्णे वण्णेण जाव फासेण-से जहा नामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्टकिमिणवावण्णदुरभिगघे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णोइणट्टे समट्टे एतो अणिट्टत्तराए चैव जाव फासेण पण्णत्ते यह परिखा का पानी, मेदावसा-चर्वी-मांस, रुधिर, पूय-पीय, के समूहसे मिश्रित था। कुत्ते, माजारा आदि के मृत शरीरों से युक्त था। अरुचिकारक था गन्ध, रस एवं स्पर्श से यह मनो विकृति जनक बना) हुआ था। इसी यात को दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया जाता है-जिस प्रकार मर जाने के बाद श्वमृतक-मरे हुए कुत्ते का कलेवर बिल्ली का

गोलाकार एक मोटी आधी छती तेथी शत्रु ओकाओक सरणताथी दुर्गभा प्रवे शिवानी हिंमत करी शकता नहोता, तेभा पाणी अरेलु छतु आनु जीनु नाभ 'आतिकोदक' पणु छे

(मेयवसा मसरुहिरपूयपडलपोचड मेयगकलेवरसछन्ने अमणुण्णे वण्णेण जाव फासेण से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय कुहिय विणट्ट किमिणवावण्णदुरभिगघे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? णो इणट्टे समट्टे, एतो अणिट्टत्तराए चैव जाव फासेण पण्णत्ते)

आ परिभा-आधनु पाणी पुष्कण प्रमाणभा मेदा, वसा, रुधरी, मांस, रुधिर, दोही, पूय, -परुथी मिश्रीत छतु इतरा, जिलाडा वगेरेना भरी गयेला शोथी ते युक्त छतु ते अरुचिकारक छतु अने गंध, रस तथा स्पर्शथी मनोविकृतिजनक छतु ओ न वान दृष्टात वडे अही रजु करवामा आवे छे नेम भरी अथा पञ्जी श्वमृतक भरी गयेला इतरानु केवर (शरीर) जिलाडीनु कलेवर,

મૃતક, મૂપકમૃતક, અશ્વમૃતક, હસ્તિમૃતક, સિંહમૃતક, વ્યાધ્રમૃતક, વૃકમૃતક= વૃક: 'મેડિયા' ઇતિ પ્રસિદ્ધ:-શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતકલેયસ્, દ્વીપિકમૃતક= દ્વીપિક:-ચિત્રક: 'ચીતા' ઇતિપ્રસિદ્ધ: શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતશરીસ્, ઇતિ સગ્રાહ્યમ્, કીદશાવસ્થાપન્ન તદ્દિમૃતાદિકમ્ ? ઇત્યાહ--'મયકુહિયવિગ્નદ્ધ કિમિણવાવળ્લદુરભિગધે' મૃતકુચિતવિનિષ્ટકૃમિમદ્ વ્યાપન્નદુરભિગન્ધમ્=મૃત= જીવવિપ્રમુક્તમાત્રમેવ કુચિત શટિત, વિનષ્ટ=સ્વાકારતો નષ્ટ વાયુજલભરણેન દતિ- વત્સ્યૂલતામુપગતમિત્યર્થ:, કૃમિવત્=ચિરકાલિકત્વાત્કૃમિમકુલમ્, અતएव વ્યાપન્ન= સર્વદિક્ પ્રસૂત દુરભિગન્ધમ્=અતિશયદુર્ગન્ધયુક્તમ્ । 'કિમિજાલાલે' કૃમિજાલા-

કલેવર, મનુષ્ય કા કલેયર મહિષ મૈસે કા કલેવર, હુહા કા કલેવર, ઘોડે કા કલેવર, હાથી કા કલેવર, સિંહ કા કલેવર, વ્યાધ્ર કા કલેવર, વૃક કા કલેવર, દ્વીપિક કા કલેવર કુચિત, વિનષ્ટ, કૃમિમત, વ્યાપન્ન એવ દુરભિગધ યુક્ત કૃમિજાલાકુલ-કીડો સે વ્યાપ્ત તન્મય, અશુચિ, વિકૃત એવ ધીમત્સ, દૃશ્ય રૂપ હો જાતે હૈં-સો ઇન સવ સે મી અધિક અનિષ્ટતર-અત્યત ઘૃણા જનક-વહ લ્હાઈ કા જલ થા । મરને કે વાદ શરીર જો સડને લગ જાતા હૈં ઇસ કા નામ કુચિત હૈં । વાયુ ઓર જલ કે ભર જાને સે જિમ પ્રકાર મશક ફૂલ જાતી હૈં ઉસી પ્રકાર જીવ રહિત હોને કે વાદ જો શરીર ફૂલ જાતા હૈં ઇસ કા નામ વિનષ્ટ હૈં । ઇસ સ્થિતિ મે વહ પદાર્થ અપને પૂર્વાકાર સે મિત્રાકાર વાલા હો જાતા હૈં । જો શરીર ઘટ્ટત દિનો તક જીવ રહિત પડા રહતા હૈં ઉસ મે સડ જાને કી વજહ સે કીડે પડ જાતે હૈં-ઇમ કા નામ કૃમિમત્ હૈં । જિસ મે સે

માણસનુ કલેવર, પાડાનુ કલેવર, ઉદરનુ કલેવર, ગોડાનુ કલેવર, હાથીનુ કલેવર, સિંહનુ કલેવર, વાઘનુ કલેવર, વરુનુ કલેવર અને દ્વીપડાનુ કલેવર, કુચિત, વિનષ્ટ, કીડાઓવાળુ, વ્યાપન્ન અને દુરભિ-ગન્ધયુક્ત કૃમિઓથી આક્રાંત કીડાઓથી વ્યાપ્ત-તન્મય, અશુચિ વિકૃત અને ધીમત્સ દૃશ્યવાળુ વર્ધ નય છે તેમ એના ઠરતા પણ વધુ અનિષ્ટતર અત્યત ઘણાજનક તે આઈનુ પાણી હંતુ મરણ પછી શરીર મડવા માટે ડે તેને 'કુચિત' કહે ડે જેમ પવન અને પાણીથી ભરાએલી મરાક ફૂલીને મોટી થઈ નય છે તેમજ નિર્જીવ થયેલુ શરીર પણ કુલાઈને મોટુ થઈ નય ડે તેનુ નામ 'વિનષ્ટ' ડે પદાર્થની ન્યારે આવી સ્થિતિ થાય ડે ત્યારે તે પહેલાના આકાર પ્રકારથી માવ શિત્ર આકાર વાળોથઈ નય છે શરીર બહુ ટ્વિનો નિર્જીવ વર્ધને મડદાના રૂપમા પડી રહે છે ત્યારે તે મડી જ્વાથી તેમા કીડાઓ પડી નય છે, અને કૃમિમત્ કહે છે,

કુલ = કૃમિપુણ્યુક્ત યત તત્રાવયતે પુત્રીભૂતકૃમિવ્યાપ્તમ્, આત્મ 'સસત' સસત્ત તન્મયમિત્યર્થઃ, 'અસુદ્ધિગમયતીમત્યદરિમણિજ્જ' અશુચિવિકૃતત્રીમત્સ દર્શનીયમ્ અશુચિ=અસ્પૃશ્યત્વાદપરિત, પ્રિયત=પ્રિયામ્યુક્ત, ત્રીમત્સ=ધૃજિત દર્શનીય=દૃશ્ય યસ્ય તત્તથોક્તમ્ 'એવારુપેસિયા' એતદ્રૂપ સ્યાત્-ન્નિમ્ અદિષ્ટતાદિ સદૃશ સ્યાત્-અસ્તિ ?, ઇતિ પ્રશ્નો ભવેત્ ભગવાનાઃ- 'નો ઇણદે સમદે' નાયમર્થ સમર્થઃ-નૈતાદૃશ કિન્તુ- 'એત્તો' એતસ્માદપિ અણિદ્વતરાણ ચેત્ર 'અનિષ્ટતરમેવ અત્યન્તઘૃણાજનક યાવત્ સ્પર્શેન પ્રાપ્તમ્ ॥ મુ. ૧ ॥

મૂલમ્-તણ સે જિયસત્ત રાયા અણયા કયાઙ્ પહાણ
કાયવલિકમ્મે જાવ અપ્પમહગ્ધાભરણાલકિયસરીરે વહૂહિં રાઈ-
સર જાવ સત્થગાહપભિઈહિ સદ્ધિ ભોયણવેલાણ ભોયણમડવસિ
સુહાસણવરગણ વિપુલ અસણઃ જાવ વિહરતિ, જિમિયમુત્તુત-
રાગણ આયતે ચોક્ખે પરમસુદ્ધભૂયે તસિ વિપુલસિ અસણઃ
જાવ જાયવિમ્હણ તે વહવે રૂંસર જાવ પભિઈણ એવ વયાસી-
અહો ણ દેવાણપ્પિયા ! ઇમે મણુણે અસણઃ વણ્ણેણ ઉવવેણ
જાવ ફાસેણ ઉવવેણ અસ્સાયણિજ્જે વિસ્સાયણિજ્જે પીયણિજ્જે
દીવણિજ્જે દપ્પણિજ્જે મયણિજ્જે વિહણિજ્જે સઠિવદિયગાયપલ્હાય-
ણિજ્જે, તણ તે વહવે રૂંસર જાવ પભિઈઓ જિયસત્ત એવ
વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુબ્બે વયઈ અહો ણ ઇમે
મણુણે અસણઃ વણ્ણેણ ઉવવેણ જાવ પલ્હાયણિજ્જે, તણં

ચારોં ઓર-દુર્ગંધ ફેલ રહી હો उस का नाम दुरभिग्न है । सड जाने
के बाद जिस के अग उपाग सब तरफ विग्वरे हुए पडे हो उस का नाम
व्यापन्न है । यहा मृतक शब्द से जीव रहित शरीर लिया गया है । सूत्र ॥ १ ॥

'જેમાથી ચોમેર દુર્ગંધ પ્રસરી રહે છે તેને 'દુરભિગ્ન' કહે છે મરુદ સડી
ગય છે અને તેના બધા અંગો ઉપાગો ચોમેર વિખેરાઈ ગયા તેને 'વ્યાપન્ન'
કહે છે અહીં મૃતક શબ્દથી નિશ્ચય શરીર સમજવું જોઈએ. "૧" ॥

जितसत्तू सुबुद्धिअमच्च एव वयासी—जहा ण सुबुद्धी । इमे
मणुण्णे असण४ जाव पल्हायणिज्जे, तएण सुबुद्धी जितसत्तू-
स्सेयमट्ट नो आढाइ जाव तुसिणीए सच्चिट्ठइ, तएण जिय-
सत्तू सुबुद्धि दोच्चंपि तच्चपि एव वयासी—अहो ण सुबुद्धी ।
इमे मणुन्ने त चेवजाय पल्हायणिज्जे, तएण से सुबुद्धी अमच्चे
जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एवबुत्ते समाने जितसत्तू राय-
एव वयासी—नो खल्लु सामी । अम्ह एयसि मणुण्णसि असणं
४ केइ विम्हए, एव खल्लु सामी । सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भि-
सद्दाए परिणमति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दाए परि-
णमति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति दुरूवावि
पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति सुब्भिमग्धावि पोग्गला दुब्भि-
ग्धत्ताए परिणमति दुब्भिमग्धावि पोग्गला सुब्भिमग्धत्ताए परि-
णमति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति दुरसावि पोग्गला
सुरसत्ताए परिणमति सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परि-
णमति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति पओग-
वीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला पणत्ता, तएण से
जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ट
नो अटाइ नो परियाणई तुसिणीए सच्चिट्ठइ, तएण से जिय-
सत्तू अण्णया कथाई ण्हाए आसखधवरगण महया भडचरगर
आसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अद्रसाम-
तेण वोइवयड । तएण जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण

गधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेणं आसग पिहेइ,
एगतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ
एव वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए । अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए
चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एवं वयासी—तहेव
ण त सामी । जं णं तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए
अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव
अमणामतराए चेव, तएण ते वहवेराईसर पभिइओ जाव एव
वयासी—तहेव ण त सामी । ज ण तुब्भे एव वयह, अहो णं
इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ
वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तुसुबुद्धिं अमच्चं
एव वयासी — अहो णं सुबुद्धि । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए,
चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण
से जियसत्तु राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी
--अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रत्ता
दोच्चपि तच्चपि एव बुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु
सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव खलु
सामी । सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमत्ति, त
चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला
पणत्ता, तएण जियसत्तु सुबुद्धि एवं वयासी—मा ण तुमं

देवाणुप्पिया ! अप्पाण च परं च तदुभय वा वट्ठहि य अस-
 व्भावुवभावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेण थ वुग्गाहेमाणे वुप्पाए-
 माणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झरिथिए- अहो
 ण जियसत्तू सते तच्चे ताहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते
 भावे णो उवलभति, तं सेय खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सताणं
 तच्चाण तहियाण अवितहाण सम्भूताण जिणपण्णत्ताण भावाणं
 अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए, एव सपेहेइ, संपे-
 हित्ता पच्चतिएहि पुरिसेहि सद्धि अंतरावणाओ नवए घडएय
 गेणहइ, गेण्हत्ता सज्जाकालसमयसि पविरलमणुस्संसि णिसं-
 तपडिनिसंतसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
 च्छित्ता त फरिहोदगं गेणहावेइ गेणहावित्ता नवएसु घडएसु
 गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवा-
 वित्ता लछियमुद्धिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ
 दोच्चपि नवएसु घडएसु, गालवेइ गालवित्ता नवएसु घड-
 एसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता सज्जक्खार पक्खिवावेइ
 लछियमुद्धिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ तच्चपि
 णवएसु घडएसु जाव सवसावेइ एव खलु एएणं उवाएणं
 अतरा गलावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरि-
 वसावेमाणे २ सत्तर राईदिया विपरिवसावेइ, तएणं से
 फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणसि उदगरयणे जाए यावि
 होत्था अच्चे परे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेण उववेए

गंधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेणं आसग पिहेइ,
 एगंत अवक्कमइ, अवक्कमिता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ
 एव वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए । अमणुण्णे
 वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए
 चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एव वयासी—तहेव
 ण त सामी । ज णं तुब्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए
 अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइ वा जाव
 अमणामतराए चेव, तएण ते वहवे राईसर पभिइओ जाव एव
 वयासी—तहेव णं त सामी । ज ण तुब्भे एव वयह, अहो णं
 इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ
 वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तु सुबुद्धि अमच्च
 एव वयासी — अहो णं सुबुद्धि । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
 वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए,
 चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सच्चिदइ, तएण
 से जियसत्तु राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी
 -अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रत्ता
 दोच्चपि तच्चपि एव बुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु
 सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगति केइ विम्हए, एव खलु
 सामी । सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमति, त
 चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला
 पणत्ता, तएण जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी—मा ण तुमं

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्टवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणं कओ उवलद्धे ? तएणं सुबुद्धी जिय-सत्तू एव वयासी- एसण सामी ! से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी ! तुम्हे तथा मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सदहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झरिथए समुप्पज्जिस्था, अहोणं जियसत्त सते जाव भावे नो सदहहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेयखलु मम जियसत्तूस्स रत्तो सताण जाव सव्वभूयाण जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ट उवाइणावेत्तए, एवं सपे-हेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी-तुम ण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमा-इक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सदहहइ३ असद्दहमाणे३ अविभतर-ट्ठणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणु-प्पिया ! अतरावणाओ नवघडए पडए य गेणहह जाव उदग-सभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेति सभा-रित्ता जियमत्तूस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विदियगा-यपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा०२ करयलसि आसादेइ आसादित्ता त उदगरयण वण्णेण उववेय४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता हट्ठुट्ठे वट्ठहि उदगसभाणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जितसत्तूस्स रण्णो पाणियघरिय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी तुम च ण देवाणुप्पिया । इम उदगरयणं गेणहाहि२ जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तएण से पाणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता त उदगरयण गिणहाइ गिणिहत्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएण से जियसत्तू राया त त्रिपुल असण४ आसाएमाणे जाव त्रिहरइ, जिमिय-भुत्तुत्तरागए यात्रि य णं जाव परमसुइभूए तसि उदगरयणे जायविम्हए ते वहवे राईसर जाव एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया । इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे तएणं वहवे राईसर जाव एव वयासी—तहेव ण सामी । जेण्ण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हाणिज्जे, तएण जियसत्तू राया पाणियघरिय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया । उदगरयणे कओ आसादिते ?, तएण से पाणियघरिए जियसत्तू एव वयासी—एम णं सामी । मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अतियाओ आसाइए तएण जियसत्तू सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—अहो ण सुबुद्धी केण कारणेण अह तव अणिट्ठे५ जेण तुम मम कल्लाकल्लि

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्टवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया । उदगरयणं कओ उवलद्धे ? तएण सुबुद्धी जिय-सत्तू एव वयासी-- एसण सामी । से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी । एस से फरिहोदए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी । तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सदहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पजित्था, अहोण जियसत्त संते जाव भावे नो सदहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेयखलु मम जियसत्तूस्स रत्तो सताणं जाव सब्भयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ट उवाइणावेत्तए, एव सपे-हेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी-तुम ण देवाणुप्पिया । उदगरयण जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी । एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमा-इक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सदहइ३ असद्दहमाणे३ अब्भितर-ट्ठणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणु-प्पिया । अतरावणाओ नवघडए पडए य गेणहह जाव उदग-सभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेति सभा-रित्ता जियमत्तूस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगा-यपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

वयासी-सुबुद्धी । एएणं तुमं सता जाव सवभूया भावा कओ उवलढ्ढा ? तएण सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयामी-एएण सामी । मए सता जाव सवभूया भावा जिणवयणाओ उवलढ्ढा, तएणं जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी-त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तव अतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्तं केवलपन्नत्त चाउज्जामधम्म परिकहेइ, तमाइक्खइ जहा जीवा वज्झति जाव पचअणुव्वयाइ, तएण जियसत्तु सुबुद्धिस्स अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठं सुबुद्धिं अमच्चं एव वयासी -सद्वहामि ण देवाणुप्पिया । निग्गंथ पाववणइ जाव से जहेव जं तुब्भे वयह, त इच्छामि णं तव अंतिए पचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवधं तएणं से जियसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्च-स्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडि-वज्झइ, तएण जियसत्तु समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमण जियसत्तु राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज नवरजियसत्तु आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिया । तएणं सुबुद्धी जेणैव जियसत्तु तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी-एवं खल्ल सामी । मए थेराण अतिए धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएण अहं सामी संसारभउविग्गे भीए जाव इच्छामिण तुब्भेहि अब्भणुत्ताए स० जाव पव्वइत्तए, तएणं जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी-अच्छासु ताव देवाणु-

पिया । कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ
 पच्छा एगयओ अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तएण
 सुबुद्धी जियसत्तुस्स एयमठ्ठ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तुस्स
 सुबुद्धीणा सद्धि विपुलाइ माणुस्स० पच्चणुवभवमाणस्स दुवा-
 लसवासाइ वीइकताइ तेणं कालेण२ थेरागमणं तएण जिय
 सत्तु धम्म सोच्चा एव ज नवरं देवाणुपिया । सुबुद्धि आमं-
 तेमि, अहासुह, तएण जियसत्तु जेणेव सए गिहे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सुबुद्धि सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-
 एवं खलु देवाणुपिया । मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुम णं
 किं करेसि ?, तएण सुबुद्धी जियसत्तु एव वयासी-जाव के अन्ने
 आहारे वा जाव पव्वयामि, त जइणं देवाणुपिया जाव पव्व-
 यहि त गच्छह णं देवाणुपिया । जेट्ठपुत्त च कुडुवे ठावेहि
 ठावित्ता सीय दुरुहित्ताण मम अतिए पाउवभवइ, तएण जिय-
 सत्तु कोडुवियपुरिमे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण
 तुब्भे देवाणुपिया । अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेय उव-
 ट्ठवेह जाव अभिसिचति जाव पव्वइए । तएणं जियसत्तु एक्का-
 रस अगाइ अहिज्जइ वहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे
 तएणं सुबुद्धी एक्कारसअगाइ अहिज्जइ वहूणि वासाणि जाव
 सिद्धे । एव खलु जवू । समणैणं भगदया महावीरेण वारस-
 मस्स णायज्झयणस्स अयमठ्ठे पण्णत्ते तिवेमि ॥ सू० ५ ॥

॥ वारसम नाअज्झयण समत्त ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । तत्र खलु ॥ जितशत्रू राना=वम्पाधिपति अन्यदा

કદાચિત્=અરુદા સ્નાત. ' કયવલિક્રમે ' કૃતવલિક્રમા=ફત ચાતવાધર્મભાદિ
 વિભાગઃ યાવદ્ અલ્પમદાર્પાભરણાદૃતશરીરઃ વદ્મિઃ રાજેશ્વર યાવન્ સાર્યવાહ
 પ્રમૃતિભિઃ સાર્દ્ધં ભોજનવેલાર્યાં ભોજનમણ્ડપે સુહાસનવરગતો ત્રિપુલમ્ અશનમ્=
 અન્નાદિક, પાન=પાનીયમપાણસાદિય, સ્વાદ્ય=દ્રાક્ષાપાદામાદિક સ્વાદ્ય=લવગ
 પૂર્ણફલાદિક ચતુર્વિધમપ્યાહારમાસ્તાદ્યન ' જાવ વિહરહ ' યાવત્ વિસ્વાદ્યન્,
 પરિભોગયન્, પરિભાષ્યમાન., પરિશુદ્ધાનો વિહરતિ । ' જિમિયશ્ચુત્તરામણ '

‘ તણ સે જિયસત્ત રાયા ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) હસકે પાંદ (સે જિયસત્ત ગયા) વે જિતશત્રુ રાજા
 (અન્નયા કયાહ) કિસી ઈક સમય (પઠાણ ચયવલિક્રમે જાવ અપ્પ
 મહગ્ધા ભરણાલકિયસરીરે વહ્મિ રાહસર જાવ સત્યવાહપમિર્ઠિર્હિ
 સર્દિં ભોયણવેલાણ ભોયણ મઢવસિ સુહાસનવરગણ વિહલ અસણ ૪ જાવ
 વિહરહ) સ્નાન કરકે તથા વલિક્રમ-વાયસ આદિ કે લિધે અન્નાદિ કા
 વિભાગ-દેન કરકે અલ્પ મારવાલે વહુમૂલ્ય અલકરોકો પરિનેહુણ ભોજન
 કરને કે સમય મેં ભોજન શાલા મેં સુન્દર આસન પર આક્રમ બેઠ ગયે ।
 હસ સમય હનકે સાથ મેં ઓર મી અનેક રાજેશ્વર આદિ સાર્યવાહ
 પર્યન્ત સમસ્ત જન થે । વહા હન સત્તકે સાથ વે વહાં આશનપાન આદિ
 ચારોં પ્રકાર કા આહાર કરને લગે । અન્નાદિક અશન પીને યોગ્ય પદાર્થ
 પાન, દ્રાક્ષા પાદામ આદિ સ્વાદ્ય ણવ લવગ સુપારી આદિ સ્વાદ્ય હૈ ।

‘ તણ સે જિયસત્ત રાયા ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારપછી (સે જિયસત્ત રાયા) તે હિતશત્રુ રાજા (અન્નયા
 કયાહ) કૌર્ધ વખતે

(પઠાણ કયવલિક્રમે જાવ અપ્પમહગ્ધામરણાલકિયસરીરે વહ્મિ રાહ-
 સર જાવ સત્યવાહપમિર્ઠિર્હિ સર્દિં ભોયણવેલાણ ભોયણમઢવસિ સુહાસનવરગણ
 વિહલ અમણ ૪ જાવ વિહરહ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિક્રમ જોટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે
 અન્ન વગેરેનો ભાગ આપીને વજનમા હલકા પશુ ડિમતમા બહુ ભારે એવા
 અલકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રસોઈ ઘરમા આવીને સુદર આસન
 ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે ખીજ કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્ય
 વાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર
 બાતના આહારો જમવા લાગ્યા અન્ન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન,
 દ્રાવ્ય, બદામ વગેરે ખાદ્ય અને લવિગ-ઓપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે

જિમિતશુક્તોત્તરાગત - જિમિત. = શુક્તયાન્, શુક્તોત્તર = મોજનાનન્તરમ્ આગત =
 ઉપવેશનસ્થાન પ્રાપ્ત, કિમ્બૂતઃ સન્ ? इत्याह- 'आयते' जाचान्त श्रद्धोदकेन
 कृतचुल्लु, 'चोक्खे' चोक्ष = सिक्खादिलेपरहित, अतएव 'परमसुइभूए'
 परमशुचिभूतः = परमशुद्धः तस्मिन् त्रिपुलेऽन्नपानखाद्यम्वाये यावद् 'जाय
 विम्हए' जातविस्मयः = समुत्पन्नपरमाश्चयो जितशत्रू राजा तान् गहून् ईश्वर
 यावत्-प्रभृतीन्-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-श्रेष्ठि सेनापति सार्यवाह
 प्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! इदं 'मणुण्णे' मनोज्ञ = मर्वथा

(જિમિયશુક્તોત્તરાગત આયતે ચોક્ખે પરમસુઈભૂએ તસિ વિઝલસિ અસણ
 ૪ જાવ જાયવિમ્હએ તે ગ્રહવે ઈસર જાવ પમિહએ એવ વયાસી) જય
 અચ્છી તરહ મોજન હો ચુકા-વે સગકે સય બેઠક મેં આપે । બેઠક મેં
 આને કે પહિલે ચે હાય મુંહ ધોકર ચિલકુલ સાફ હો ચુકે થે । અન્ના
 દિકકે સીત જો इनके हाथ पैरों मे कहीं २ पड़ गये थे-उन्हें जल से
 इन्होंने साफ कर दिया था-यो दिया था । इस तरह परम शुचीभूत
 होकर राजाने उस विपुल आशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध
 आहार में विस्मित आश्चर्ययुक्त बन कर उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक,
 कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति एव सार्यवाह आदिकों से इस प्रकार कहा-
 (अहोण देवानुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण उववेए जाव फासे ण
 उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्प-
 णिज्जे मयणिज्जे, विहणिज्जे, सन्निदिग्गाय पल्लायणिज्जे) देवानु

(જિમિયશુક્તોત્તરાગત આયતે ચોક્ખે પરમસુઈભૂએ તસિ વિઝલસિ અસણ-
 ૪ જાવ જાયવિમ્હએ તે ગ્રહવે ઈસરજાવ પમિહએ એવ વયાસિ)

ત્યાદે તેઓ અરસ રીતે તૃપ્ત થઇને જમી રહ્યા ત્યાદે તેઓ સર્વે બેઠ
 કમા આવ્યા બેઠકમા આવતા પહેલા તેઓ હાથ એ ધોઈને સ્વચ્છ થઇ ચૂક્યા
 હતા અન્ન વગેરેના દાણા તેમના શરીર ઉપર જમતી વખતે પડી ગયા હતા
 તેઓને પાણીથી ધોઈને સાફ કર્યા આ રીતે એકદમ પવિત્ર થઇને પુષ્કળ
 પ્રમાણમા તૈયાર કરવામા આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદયુક્ત ચાર
 બાતના આહારથી નવાઈ પામેલા રાજાએ બીબા સાથે રહેલા ઈશ્વર, તલવર, માડ
 લિક કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠ સેનાપતિ અને સાર્યવાહ વગેરેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(અહો ણ દેવાણુપ્પિયા ! इमे मणुण्णे असण ४ ण्णेण उववेए जाव फासेण
 उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मय
 णिज्जे विहणिज्जे सन्निदिग्गाय पल्लायणिज्जे)

કદાચિત્=એકદા સ્નાત. ' કયરલિકમ્મે ' કૃતપત્તિકર્મા=કૃત વાયવાધર્મભાદિ વિભાગઃ યાવદ્ અલ્પમદાર્ધામરણાદૃતશરીરઃ નદુમિ રાજેશ્વર યાવત્ સાર્થવાહ પ્રશૃતિભિઃ સાર્દ્ધે ભોજનવેલાયાં ભોજનમણ્ડપે સુહાસનવરગતો વિપુલમ્ અશનમ્=અન્નાદિક, પાન=પાનીયમપાણમાદિક, શ્વાય=દ્રાક્ષાવાદામાદિક સ્વાય=લવગ પૂર્ણફલાદિક ચતુર્વિધમપ્યાહારમાસ્વાદયન ' જાવ વિહરહ ' યાવત્ વિસ્વાદયન, પરિભોગયન્, પરિભાજ્યમાનઃ, પરિશુદ્ધાનો વિદરતિ । ' ત્રિમિયશ્રુત્તરામણ '

‘ તણ સે જિયસત્તુ રાયા ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (से जियसत्ता गया) वे जिनशत्रु राजा (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (जहाए कयरलिकममे जाव अप्प महग्घा भरणालकियसरीरे वहहिं राइसर जान सत्थवाहपभिर्ईहिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयण मण्डवसि सुहासणवरगए विउल असण ४ जाव विहरह) स्नान करके तथा यलिकर्म—वायस आदि के लिये अन्नादि का विभाग—देन करके अल्प भारवाले बहुमूल्य अलकरोको पहिने हुए भोजन करने के समय में भोजन शाला में सुन्दर आसन पर आरुग बैठ गये। उस समय उनके साथ में और भी अनेक राजेश्वर आदि सार्थवाह पर्यन्त समस्त जन थे। वहा इन सबके साथ वे वहाँ आशनपान आदि चारों प्रकार का आहार करने लगे। अन्नादिक अशन पीने योग्य पदार्थ पान, द्राक्षा वादाम आदि श्वाय एव लवग सुपारी आदि स्वाय है।

‘ તણ સે જિયસત્તુ રાયા ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(તણ) त्यारपछी (से जियसत्ता गया) ते जिनशत्रु राजा (अन्नया कयाइ) कैछि वणते

(જહાણ કયરલિકમ્મે જાવ અપ્પમહગ્ધામરણાલકિયસરીરે વહહિં રાઈસર જાવ સત્થવાહપભિર્ઈહિં સદ્ધિં ભોયણવેલાણ ભોયણમણ્ડવસિ સુહાસણવરગણ વિઉલ અપણ ૪ જાવ વિહરહ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અપીને વજનમા હલકા પણ ડિમતમા બહુ ભારે એવા અલકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રમોઈ ઘરમા આવીને સુદર આસન ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્થ વાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અથન પાન વગેરે ચાર બતના આહારો જમવા લાગ્યા અન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાખ, બદામ વગેરે ખાધ અને લવિગ-સુપારી વગેરે સ્વાય છે

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेत
मर्थ नो आद्रियते यावत् तूष्णीक = सन्मौनः सतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रुः सुबु-
द्धिममात्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः-अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इदं
मनोज्ञं तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम्, ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जित
शत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन् जितशत्रुः राजानमेवमवादीत्-नो
उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हा स्वामिन् ! जैसा आप कहते हैं आहार
वैसा ही था । वह बड़ा ही मनोज्ञ एवं शुभवर्ण से युक्त था । यावत्
समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था । (तएण
जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) अपनी बात का इन्वर आदि
समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से
भी यही बात कही कि (अहो ण सुबुद्धी-इमे मणुण्णे असण ४ जाव
पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध प्रशानादि रूप यह
आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था । (तएण
सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ, जाव तुसिणीए सचिद्धई) इस
प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशाना सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने
राजा की इस बातकी अनुमोदना नहीं की-प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप
ही बैठा रहा-(तएण जियसत्तू सुबुद्धि दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी

उववेए जाव पल्हायणिज्जे)

हा स्वामिन् ! अरेअर जेभ तमे ठडे छो तेभ आहार पणु जेवे। ४
ढतो ते भूभ ४ मनोज्ञ अने शुभवर्ण वाणो ढतो यावत् स पूरु शरीर अने
इन्द्रियोने आनंद प्रशानाडार ढतो (तएण जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव
वयासी) पोताना कथन विशे इत्थर वगेरे णधाओथी समर्थन प्राप्त करीने
राजज्जे पोताना अमात्य (भत्री) सुबुद्धिने पणु जे- वात कही डे

(अहोण सुबुद्धी इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

हे सुबुद्धि ! अतावे, मनोज्ञ य २ णतने। अथन वगेरे ३प आ आहार
डेढो। णधो शुभवर्णो युक्त यावत् आनंद आपनार ढतो।

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ जाव तुसिणीए सचिद्धई)

आ रीते राजाना मुणोथी आहार विशेना वणाणु सालगी सुबुद्धि
अमात्ये तो तेभनी वात ने टेके आप्थो नहि पणु ते मात्र भूगे थधने
गेसी ४ रक्षी

तएण जियसत्तू सुबुद्धि दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे

મનસ્તુષ્ણિકરમ્ અશન પાન સ્વાદ્ય ર્ગેન=શુભર્ગેન ઉપપેત યાવત્ સ્પર્ગેનોપપે
તમ્, ' આસાયણિજ્જે ' આસ્વાદનીયમ્=આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' વિસ્માયણિજ્જે '
વિસ્વાદનીય=વિશેષત આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' પીણણિજ્જે ' પીણનીય=મમસ્તેન્દ્રિય
પ્રીતિजनरुम्, ' દીપણિજ્જે ' દીપનીય=જઠરાગ્નિદીપનક શરીરમૈન્દર્યजनक वा,
' દપ્પણિજ્જે ' દર્પનીય=ચલजनरुम्, મયણિજ્જે ' મદનીય=કામોદીપકમ્ ' બિંહ
ણિજ્જે ' વૃહણીય=સકલધાતુપચયजनरुम्, સર્ગેન્દ્રિયગાત્રમહાદનીય=સકલેન્દ્રિય-
શરીરસુખजनरु वृत्तते । તતઃ સ્વલુ તે ગદ્ય-ઈશ્વર યાત્ત સાર્થસાઠમ્ભૂતયો જિત
શત્રુ મત્યેવમવદન્ ' તહેવ ' તથેવ તાદૃશમેવ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યત્પલુ યુયં વદ્ય,
અહો ! સ્વલુ ઇદ મનોજ્ઞમશન પાન સ્વાદ્ય સ્વાદ્ય ચતુર્વિધમપ્યાહાર વર્ગેન ઉપપેત

પ્રિયો ! મનકો તૃપ્તિ કરને વાલા યદ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર
કિતને અઠ્ઠે શુભવર્ણ સે યુક્ત થા, કિતને અઠ્ઠે શુભ સ્પર્શ સે યુક્ત
થા કિતના અઠ્ઠા આસ્વાદનીય એવ વિશેષરૂપ સે સ્વાદનીય યા હસે
સ્વાકર સમસ્ત ઇન્દ્રિયા તૃપ્ત હો ગઈ હૈં । યદ જઠરાગ્નિ તા દીપક હૈં, અ
થવા શારીરિક સૌન્દર્ય કા જનક હૈં । ચલચર્ચક હૈં । કામોદીપક હૈં ।
હસે સ્વાને વાલે કી સમસ્ત ધાતુણ ઉપચિત્ત હો જાતી હૈં । સમસ્ત ઇન્દ્રિ
યો એવ શરીર કો હસકે સ્વાને સે આનન્દ પહુંચ રહા હૈં । તાત્પર્ય યદ
ચતુર્વિધ આહાર ઘડા હી આશ્ચર્યકારક હૈં (તણ તે વહેવે હસર જાવ
પમિદ્હઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) ઓર અધિક કયા કહું યદ તો બહુત
હી અધિક ઉત્તમ થા । રાજા કી હસ પ્રકાર વાત સુનકર ડન ઈશ્વર
આદિ અનેક સાર્થવાહોને ડન જિતશત્રુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા (તહે
વ ણં સામી ! જણ તુઠમે વદદ-અહો ણ હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

હે દેવાનુપ્રિયો ! મનને તૃપ્ત કરનારો આ આરાન વગેરેનો આર ભતનો
આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો
સરસ આસ્વાદનીય-અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને
ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઈ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદીપક છે તેમજ શારીરિક
સૌન્દર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદીપક છે અને જમવાથી
બધી ધાતુઓ ઉપચિત્ત (વૃદ્ધિ પામવું) થઈ જાન છે આ આહારથી બધી
ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલબ એ છે કે આ
આર ભતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (તણ તે હસર જાવ
પમિદ્હઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ
ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શકા નથી રાજાની આ વાત સાંભળીને તે
ઈશ્વર વગેરે ઘણા સાર્થવાહોએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(તહેવ ણ સામી ! જણ તુઠમે વદદ-અહો ણ હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

યાવત્ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહાદનીયમસ્તિ । તત્ સ્વલુ સુબુદ્ધિરમાત્યો જિતશત્રોરેત
મર્થ નો આદ્રિયતે યાવત્ તૂષ્ણીક = સન્મૌનઃ સત્તિષ્ઠતે । તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુ-
દ્ધિરમાત્ય દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિવારમેત્રમવાદીત્-અહો ! સ્વલુ હે સુબુદ્ધે ! इद
મનોન તદેવ યાવત્સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહાદનીયમ્, તતઃ સ્વલુ સ સુબુદ્ધિરમાત્યઃ જિત
શત્રુણા દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમેત્રમુક્તઃ સન્ જિતશત્રુ રાજાનમેત્રમવાદીત્-નો
ઉવવેઍ જાવ પલ્હાયણિજ્જે) હા સ્વામિન્ ! જૈસા આપ કહ્તે હે આહાર
વૈસા હી થા । વહ વહા હી મનોજ્ઞ એવ શુભવર્ણ સે યુક્ત થા । યાવત્
સમસ્ત શરીર એવ ઇન્દ્રિયોં કો આનન્દ પહુંચાને વાલા યા । (તણ
જિતસત્ સુબુદ્ધિં અમચ્ચ એવ વયાસી) અપની વાત કા હશ્વર આદિ
સમસ્ત જનોં દ્વારા સમર્થન પ્રાપ્ત કર રાજા ને અપને અમાત્ય સુબુદ્ધિ સે
ભી યહી વાત કહી કિ (અહો ણ સુબુદ્ધી-इमे मणुण्णे असण ४ जाव
पल्हायणिज्जे) હે સુબુદ્ધે કશે, મનોજ્ઞ ચતુર્વિધ અશનાદિ રૂપ વહ
આહાર કિતના અચ્છા શુભ વર્ણોપેત યાવત્ પ્રહાદનીય થા । (તણ
સુબુદ્ધી જિયસત્સૂસેયમદ્દ ણો આદાહ, જાવ તુસિણીણ સચિદ્દહ) હિસ
પ્રકાર રાજા દ્વારા આહાર કી પ્રશંસા સુનકર ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને
રાજા કી હિસ વાતકી અનુમોદના નહી કી-પ્રત્યુત વહ સુનકર ખુપચાપ
હી બેઠા રહા-(તણ જિયસત્ સુબુદ્ધિં દોચ્ચ પિ તચ્ચ પિ એવ વયાસી

ઉવવેઍ જાવ પલ્હાયણિજ્જે)

હા સ્વામિન્ ! ખરેખર જેમ તમે કહો છો તેમ આહાર પણ એવો જ
હતો તે ખૂબ જ મનોજ્ઞ અને શુભવર્ણ વાળો હતો યાવત્ સ પૂર્ણ શરીર અને
ઇન્દ્રિયોને આનંદ પમાડનાર હતો (તણ જિતસત્ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ
વયાસી) પોતાના કથન વિશે ઈશ્વર વગેરે બધાઓથી સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને
રાજાએ પોતાના અમાત્ય (મંત્રી) સુબુદ્ધિને પણ એજ વાત કહી કે

(અહોણ સુબુદ્ધી इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

હે સુબુદ્ધિ ! બતાવો, મનોજ્ઞ ચાર ભત્રીનો અશન વગેરે રૂપ આ આહાર
કેટલો બધો શુભવર્ણો સુક્ત યાવત્ આનંદ આપનાર હતો

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્સૂસેયમદ્દ ણો આદાહ જાવ તુસિણીણ સચિદ્દહ)

આ રીતે રાજાના મુખેથી આહાર વિશેના વખાણ સાંભળીને સુબુદ્ધિ
અમાત્યે તો તેમની વાત ને ટેકો આપ્યો નહિ પણ તે માત્ર મૂંઝો થઇને
બેઠી જ રહ્યો

તણ જિયસત્ સુબુદ્ધિં દોચ્ચ પિ તચ્ચ પિ એવ તયામી-अहो ण सुबुद्धी । इमे

મનસ્વૃત્તિકરમ્ અશન પાન શ્વાધ સ્વાધ ઝર્ણેન=શુભઝર્ણેન ઉપપેત યાવત્ સ્પર્શેનોપચે-
તમ્, ' આસાયણિજ્જે ' આસ્વાદનીયમ્=આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' વિસ્સાયણિજ્જે '
વિસ્વાદનીય=વિશેષત આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' પીણિજ્જે ' પીણનીય=સમસ્તેન્દ્રિય
પ્રીતિજનકમ્, ' દીપણિજ્જે ' દીપનીય=જઠરાગ્નિદીપનક શરીરસૌન્દર્યજનક વા,
' દપ્પણિજ્જે ' દર્પનીય=ચલજનકમ્, મયણિજ્જે ' મદનીય=કામોદીપકમ્ ' વિહ
ણિજ્જે ' વૃહણીય=સકલધાતુપચયજનકમ્, સર્વેન્દ્રિયગાત્રમહાદનીય=સકલેન્દ્રિય-
શરીરસુખજનક વર્તેતે । તતઃ સ્વલુ તે વદહ-ઈશ્વર યાત્ સાર્યગાદમમૃતયો જિત-
શત્રું પ્રત્યેવમવદન્ ' તહેવ ' તયેવ તાદૃશમેવ સ્વલુ હે સ્વામિન ! યત્સ્વલુ યુય વદય,
અહો ! સ્વલુ ઇદ મનોજ્ઞમશન પાન શ્વાધ સ્વાધ ચતુર્વિધમપ્યાહાર વર્ણેન ઉપપેત

પ્રિયો ! મનકો તૃપ્તિ કરને વાળા યદ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર
કિતને અચ્છે શુભવર્ણ સે યુક્ત થા, કિતને અચ્છે શુભ સ્પર્શ સે યુક્ત
થા કિતના અચ્છા આસ્વાદનીય એવ વિશેષરૂપ સે સ્વાદનીય યા હસે
સ્વાકર સમસ્ત ઇન્દ્રિયા તૃપ્ત હો ગઈ હૈં । યદ જઠરાગ્નિ ના દીપક હૈ, અ
થવા શારીરિક સૌન્દર્ય ના જનક હૈ । ચલચર્ચક હૈ । કામોદીપક હૈ ।
હસે સ્નાને વાળે ની સમસ્ત ધાતુણ ઉપચિત્ત હો જાતી હૈં । સમસ્ત ઇન્દ્રિ
યો એવ શરીર નો હસકે સ્નાને સે આનન્દ પહુંચ રહા હૈ । તાત્પર્ય યદ
ચતુર્વિધ આહાર વડા હી આશ્ચર્યકારક હૈ (તણ તે વહેવે હસર જાવ
પમિહઓ જિયસત્તૂ એવ વચાસી) ઓર અધિક ઝગા કહૂં યદ તો વહુત
હી અધિક ઉત્તમ થા । રાજા ની હસ પ્રકાર વાત સુનકર ને ઈશ્વર
આદિ અનેક સાર્યવાહોને ને જિતશત્રુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા (તહે
વ ન સામી ! જણ તુઠમે વદહ-અહો ન હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

હે દેવાનુપ્રિયો ! મનને તૃપ્ત કરનારો આ આરાન વગેરેનો આર નાતનો
આહાર ડેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, ડેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, ડેટલો
સરસ આસ્વાદનીય-અને અવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને
ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઈ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદીપક છે તેમજ શારીરિક
સૌંદર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદીપક છે એને જમવાથી
બધી ધાતુઓ ઉપચિત્ત (વૃદ્ધિ પામવું) થઈ જાય છે આ આહારથી બધી
ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલબ એ છે કે આ
આર નાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (તણ તે હસર જાવ
પમિહઓ નિયસત્તૂ એવ વચાસી) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ
ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શંકા નથી રાજાની આ વાત સાંભળીને તે
ઈશ્વર વગેરે ઘણા સાર્યવાહોએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(તહેવ ન સામી ! જણ તુઠમે વદહ-અહો ન હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

સુરુપા અપિ પુદ્ગલા* દુરુપતયા=કુત્સિતરૂપતયા પરિણમન્તિ દૂરુપા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરુપતયા પરિણમન્તિ । સુરભિગધા અપિ પુદ્ગલા શુભગન્ધવન્તઃ પુદ્ગલા અપિ દુરભિગન્ધતયા પરિણમન્તિ દુરભિગન્વા અપિ પુદ્ગલા* સુરભિગન્ધતયા=સુગન્ધરૂપેણ પરિણમન્તિ। સુરસા અપિ=શુભરસવત્તોઽપિ પુદ્ગલા દુરસતયા=અશુભરસતયા=પરિણમન્તિ, દૂરસા અપિ પુદ્ગલા સુરસતયા શુભરસરૂપેણ પરિણમન્તિ। શુભસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ દુસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ, દુસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલા શુભસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ । ‘પદ્મોગ-

હસી તરહ (સુરુવા વિ પોગ્ગલા દુરુવત્તાણ પરિણમન્તિ પરિણમન્તિ) જો અશુભ રૂપ વાલે પુદ્ગલ હોતે હૈં વે શુભરૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં ઓર જો શુભરૂપ સે પરિણમે હુણ પુદ્ગલ હોતે હૈં વે અશુભ રૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં । (સુભિગધાવિ પોગ્ગલા દુભિગધત્તાણ પરિણમન્તિ, સુરસાવિ પોગ્ગલા દુરસત્તાણ પરિણમન્તિ, દુરસાવિ પોગ્ગલા સુરસત્તાણ પરિણમન્તિ, દુહ્ફાસાવિ પોગ્ગલા સુહ્ફાસત્તાણ પરિણમન્તિ, પદ્મોગવીસ સા પરિણયા વિ ય ન સામી પોગ્ગલા પળ્લસા) જો પુદ્ગલ સુરભિ ગધ રૂપ સે પરિણમે હુણ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ દુરભિ ગધ રૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં । હસી તરહ જો પુદ્ગલ શુભરસરૂપ સે પરિણમે હુણ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ કુત્સિતરૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં ઓર જો કુત્સિત રૂપ વાલે પુદ્ગલ હોતે હૈં વે હી શુભરસ રૂપવાલે પુદ્ગલ વન જાતે હૈં । જો પુદ્ગલ શુભ સ્પર્શ રૂપ સે પરિણમે હુણ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રૂપ મેં પરિણમ

નય છે આ પ્રમાણે (સુરુવા વિ પોગ્ગલા દુરુવત્તાણ પરિણમન્તિ પરિણમન્તિ) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણમિત થઈ નય છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે

(સુભિગધા વિ પોગ્ગલા દુભિગધત્તાણ પરિણમન્તિ, સુરસાવિ પોગ્ગલા દુરસત્તાણ પરિણમન્તિ, દુરસાવિ પોગ્ગલા સુરસત્તાણ પરિણમન્તિ દુહ્ફાસા વિ પોગ્ગલા સુહ્ફાસત્તાણ પરિણમન્તિ, પદ્મોગવીસમા પરિણયા વિ ય ન મામી પોગ્ગલા પળ્લસા)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે આ ગીતે જે પુદ્ગલો સરસ રૂપમાં પરિણત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કુત્સિત (ખરાબ) રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે અને જે કુત્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સરસ રૂપવાળા પુદ્ગલો બની નય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन् मनाद्ये-अन्नपानव्यायस्वाद्ये कोऽपि विस्मय,
एव खलु हे स्वामिन् ! सुविमसदा सुरभिश्चन्द्राः=मशस्तशब्दा अपि पुद्गला भूमाः
शब्दपुद्गला अपील्यर्थ. ' दुर्विमसद्वाच ' दुरभिश्चन्द्रतया परिणमन्ति, दुरभिश्चन्द्रा
अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरभिश्चन्द्रतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति ।

-अहो ण सुबुद्धी । इमे मणुण्णे त चेव जाव पत्थायणिज्जे तण्ण से
सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव युत्ते समाणे जितसत्तू
राय एव वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु
राजाने दुबारा एव तिवारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ
चतुर्विध आहार कितना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर
एव इन्द्रियो को आनन्द पहुँचा ने वाला था । इस प्रकार दुबारा तिवारा
जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा
से इस प्रकार कहा-(नो खलु सामी अम्ह एयसि मणुण्णसि असण
४ केइ विम्हए-एव-खलु सामी सुविमसद्वाचि पुग्गला दुर्विमसद्वाच
परिणमति, दुर्विमसद्वाचि पुग्गला सुविमसद्वाच परिणमति) स्वामि
न् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार में कोई आश्चर्य
नहीं हो रहा है । कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे
अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द
रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं ।

मणुण्णे त चेव जाव पत्थायणिज्जे-तण्ण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्च पि
तच्चपि एव युत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને શ્રુત્ય । જોકેયો જોઇને જિતશત્રુ ગળાએ બીજી ત્રીજી
વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોગ્ન ચાર જાતના આહાર
કેટલો બધો સરમ શુભવર્ણો પેત યાવત આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ
આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ
અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(નો खलु सामी अम्ह एयसि मणुण्ण सि असण ४ केइ विम्हए एव खलु
सामी सुविम सदा चि पुग्गला दुर्विम सद्वाच परिणमति दुर्विम सदाचि पुग्गला
सुविम सद्वाच परिणमति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોગ્ન અશન વગેરે ચાર જાતના આહાર વિશે મને
કંઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય
છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ
શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ રૂપ

સુરુપા અપિ પુદ્ગલાઃ દૂરુપતયા=કૃત્સિતરૂપતયા પરિણમન્તિ દૂરુપા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરુપતયા પરિણમન્તિ । સુરભિગધા અપિ પુદ્ગલા શુભગન્ધન્તઃ પુદ્ગલા અપિ દુરભિગન્ધતયા પરિણમન્તિ, દુરભિગન્ધા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરભિગન્ધતયા=સુગન્ધરૂપેણ પરિણમન્તિ । સુરસા અપિ=શુભરસત્તોડપિ પુદ્ગલાઃ દૂરસતયા=અશુભરસતયા=પરિણમન્તિ, દૂરસા અપિ પુદ્ગલા મૂરસતયા શુભરસરૂપેણ પરિણમન્તિ । શુભસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ દુસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ, દુસ્સ્પર્શા અપિ પુદ્ગલા શુભસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ । 'પત્રોગ-

इसी तरह (सुरूवा वि पोगगला दुरूवत्ताए परिणमति परिणमति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते हैं वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते हैं वे अशुभ रूप से परिणम जाते हैं । (सुब्भिगधावि पोगगला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोगगला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोगगला सुरसत्ताए परिणमति, दुहकासावि पोगगला सुहकासत्ताए परिणमति, पत्रोगवीससा परिणया वि य ण सामी पोगगला पण्णत्ता) जो पुद्गल सुरभि गध रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल दुरभि गध रूप से परिणम जाते हैं । इसी तरह जो पुद्गल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल कृत्सितरूप से परिणम जाते हैं और जो कृत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते हैं । जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

નય છે આ પ્રમાણે (સુરુવા વિ પોગગલા દુરુવત્તાએ પરિણમતિ પરિણમતિ) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણમિત થઈ નય છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે

(सुब्भिगधा वि पोगगला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोगगला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोगगला सुरसत्ताए परिणमति दुहकासा वि पोगगला सुहकासत्ताए परिणमति, पत्रोगवीससा परिणया वि य ण सामी पोगगला पण्णत्ता)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે આ ગીતે જે પુદ્ગલો સુરસ રૂપમાં પરિણત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કૃત્સિત (ખરાબ) રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે અને જે કૃત્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સુરસ રૂપવાળા પુદ્ગલો બની નય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ નય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेवमिन् मनाद्ये-अशनपानस्वाद्यम्यात्रे मोऽपि विस्मय,
एव खलु हे स्वामिन् ! सुम्भिसदा सुरमिशब्दाः=पशन्तशब्दा अपि पुद्गला भूमाः
शब्दपुद्गला अपील्यर्थ ' दुम्भिसद्दत्ताए ' दुरमिशब्दतया परिणमन्ति, दुरमिशब्दा
अपि पुद्गला=अभूमाः शब्दपुद्गला अपि सुरमिशब्दतया=भूमशब्दतया परिणमन्ति ।

-अहो ण सुबुद्धी । इमे मणुण्णे त चेव जाव पट्हायणिज्जे तएण से
सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू
राय एव वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु
राजाने दुयारा एव तियारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ
चतुर्विध आहार किनना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर
एव इन्द्रियों को आनन्द पहुँचा ने वाला था । इस प्रकार दुयारा तियारा
जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा
से इस प्रकार कहा-(नो खलु मामी अम्ह एयमि मणुण्णसि असण
४ केइ विम्हए-एव-खलु मामी सुम्भिसद्दवि पुग्गला दुम्भिसद्दत्ताए
परिणमति, दुम्भिसद्दवि पोग्गला सुम्भिसद्दत्ताए परिणमति) स्वामि
न् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार में कोई आश्चर्य
नहीं हो रहा है । कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे
अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द
रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं ।

मणुण्णे त चेव जाव पट्हायणिज्जे-तएण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि
तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને સૂચ્ય : બેઠેલા બેઠેને જિતશત્રુ ગળાએ બીજી ત્રીજી
વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર ભાતના આહાર
કેટલો બધો સરમ શુભવર્ણો પેત યાવત આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ
આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ
અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(નો खलु मामी अम्ह एयसि मणुण्ण सि असण ४ केइ विम्हए एव खलु
मामी सुम्भिसदा वि पुग्गला दुम्भिसद्दत्ताए परिणमति दुम्भिसदावि पोग्गला
सुम्भिसद्दत्ताए परिणमति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર ભાતના આહાર વિશે મને
કઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય
છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ
શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ

नाति=नाद्वीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मोनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरुन्धवरगतः
=जात्याश्वष्टपृष्ठासुद्ध 'महया भडचडगर०' महाभटचड करपडकरवृन्दपरिक्षितः
'आसवाहणियाए' अश्ववाहनक्रायायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया 'निज्जायमाणे' नि-
र्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्त्रेण 'अभिभूए समाणे' अभिभूत=व्याकुलित
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयपट्टेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन
आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-
च्छति अपक्राम्य तान् बहून् राजेश्वर यावत् मनृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर
निकला । उनके साथ महामत्तों का समुदाय भी चल रहा था । चलते
२ वे उसी परिखोदक (खाई) के पास से होकर निकले । (तएण जियसत्तू
तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण
आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईमर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण
ते बहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने
उस परिखोदक की अशुभ गव से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

जितशत्रु राजा स्नान करीने घोड़ा उपर सवार था और अश्वक्रीडा करवा
माटे घेरेथी बहुर नीकल्या नेमनी साथे साथे महान् बटोने ससुदाय पल्लु
चालतो छतो चालता चालता तेओ ते ४ परिजोदक-आध-नी पाने थधने नीकल्या

(तएण जितमत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण
उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईमर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बहवे राई सर
पभिइओ एव वयासी)

जितशत्रु गन्धे परिजोदक-आध-नी अराण गधथी व्याधुण थधने
जेताना जेसथी नाकने ढाकी छीधु अने त्थार भाद तेओ आधनी पासेवी

વીસસાપરિણયાત્રિ' પ્રયોગત્રિસ્રતા પરિણતા એવિ, પ્રયોગેત્ત્વમ્=પ્રયોગપરિણામેન જીવ
કૃતવ્યાપારેણ વિસ્રસયા=વિસ્રમાપરિણામેન સ્વભાવેનૈવ ન પરિણતા:=એકાસ્વમાયા
અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તાઃ સુગન્ધાદય પુદ્ગલ' દશગ્દાન્તિત્વેન દુઃશગ્દાદયશ્ચ સુશ-
ગ્દાદિરુપેણ પરિણતા इत्यर्थ પુદ્ગલાઃ ચલુ માન્તીતિ દે મ્યામિન્ ' પ્રજ્ઞા=મગ
વતા કથિતા । તત્ ' ચલુ સ જિતશત્રુઃ સુગુદેરમાત્મ્યમ્ એમ્=ઉત્કર્ષરુપેણ ' આ-
સ્વમાણસ્મ ' આવશ્ણાણસ્ય=ઋચયત', એતમ્=પૂર્વોક્તમ્ અર્થમ્=શગ્દાદિપુદ્ગલાં
શુભાશુભપરિણામરુપ ભાવ નો આદ્રિયતે=તદાશ્રયસ્યાઽઽદરન કરોતિ, નો પરિજા

જાતે હૈં ઔર જો પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રુપ મેં પરિણમે જુદા હોતે
હૈં વે હી પુદ્ગલ શુભસ્પર્શરુપ મેં પરિણમ જાતે હૈ । इस प्रकार का
परिणमन पुद्गलों में जीवकृत व्यापाररुप परिणाम से और स्वाभाविक
रुप से होता रहता है । एक अवस्था से अवस्थान्तर की प्राप्ति
प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है । इस परिणमन से कोई
भी द्रव्य अछूता नहीं है । इसी परिणाम का नाम स्वाभाविक
परिणमन है । यह बात प्रभुने स्वयं प्रतिपादित की है । (तएण से
जितसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइस्सवमाणस्स ४ एयमइ नो
अढाइ, नो परियाणई, तुसिणीए सच्चिदइ, तएण से जियसत्तु अण्ण
या कयाई ण्हाए आसखघवरगए महया भडचडगर आसवाहिणीयाए
निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामते ण चीइवयइ) अमात्य
सुबुद्धि की इस बात को सुनकर जिनशत्रु राजा ने उसकी इस
बात का आदर नहीं किया-उसकी बातको स्वीकार नहीं किया । केवल

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ
સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે આ જાતનુ પુદ્ગલોમા પરિણમન જીવકૃત
વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમા થતુ રહે છે એક અવસ્થા
માથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમા થતી રહે છે આ પરિણમન
એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પછે સમજવુ જોઈએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમા આ
જાતનુ પરિણમન થતુ જ રહે છે પ્રભુએ સ્વયં આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(તएण से जितसत्तु सुबुद्धिस्म अमच्चस्स एवमाइस्सवमाणस्स ४ एयमइ
नो अढाइ नो परियाणई, तुसिणीए सच्चिदइ, तएण से जियसत्तु अण्णया कयाई
ण्हाए आसखघवरगए महया भडचडगरआसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स
फरिहोदगस्स अदूरसामतेण चीइवयइ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનને
આદર કર્યો નહિ, ફક્ત મહાગાને તે રૂપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मोक्षमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरकन्यवरगतः
=जात्याश्वपृष्ठाहृद् 'महया भडचडगर०' महाभटचड करपहकरदृन्दपरिक्षिप्तः
'आसगाहणियाए' अश्वगाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया 'निज्जायमाणे' नि-
र्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन 'अभिभूए समाणे' अभिभूत=व्याकुलित
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयस्त्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन
आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदयाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-
च्छति अपक्राम्य तान् बहून् राजेश्वर यापत् मभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठे रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर
निकला । उनके साथ० महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते
२ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू
तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण
आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बहवे ईसर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण
ते बहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने
उस परिखोदक की अशुभ गंध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

जितशत्रु राजा स्नान करीने बोडा उपर सवा० थया अने अश्वक्रीडा करवा
भाटे बेश्थी भडार नीकल्या तेभनी साथे साथे भडान लटोने। समुदाय पशु
यावतो डतो यावता यावता तेओ ते ४ परिजोदक-भाई-नी पासे थपने नीकल्या

(तएण जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण
उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते बहवे ईसर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते उहवे राई सर
पभिइओ एव वयासी)

जितशत्रु राजाओ परिजोदक-भाई-नी थराण गधथी व्याकुण थपने
पोताना भेसथी नाकने ढाकी लीधु अने थार भाड तेओ भाईनी पासेथी

વીસસાપરિણયાત્રિ' પ્રયોગવિસ્તારા પરિણતા યપિ, પ્રયોગેન=પ્રયોગપરિણામેન જીવ
કૃતવ્યાપારેણ વિસ્તારા=વિસ્તારપરિણામેન સ્વાભાવેનૈવ ચ પરિણતા:=એકાવસ્થાયા
અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તાઃ સુગદાદય પુદ્ગલ દશદાદિત્વેન દુઃશબ્દાદયશ્ચ સુશ-
બ્દાદિરૂપેણ પરિણતા इत्यर्थं પુદ્ગલાઃ સ્વલુ માન્તીતિ દે સ્વામિન્ ' પ્રજ્ઞા=મગ
ચતા કથિતા । તતઃ સ્વલુ સ જિનશત્રુ. સુબુદ્ધેરમાત્મ્યસ્ય ઇત્તમ્=ઉક્તરૂપેણ ' આ-
વસ્તમાણસમ ' આચક્ષાણસ્ય=કથયત, ઇતમ્=પૂર્વોક્તમ્ અર્થમ્=શત્રુદાદિપુદ્ગલાના
શુભાશુભપરિણામરૂપ માત્ર નો આદિયતે=તદ્વાચ્યસ્યાડ્ઠદરન કરોતિ, નો પરિજ્ઞા

જાતે હૈં ઓર જો પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રૂપ મેં પરિણમે દૃષ્ટ હોતે
હૈં વે હી પુદ્ગલ શુભસ્પર્શરૂપ મેં પરિણમ જાતે હૈં । હસ પ્રકાર કા
પરિણમન પુદ્ગલોં મેં જીવહૂન વ્યાપારરૂપ પરિણામ સે ઓર સ્વાભાવિક
રૂપ સે હોતા રહતા હૈં । ઇક અવસ્થા સે અવસ્થાન્તર કી પ્રાપ્તિ
પ્રત્યેક સમય પ્રત્યેક દ્રવ્ય મેં હોતી રહતી હૈં । હસ પરિણમન સે કોઈ
મી દ્રવ્ય અછૂતા નહીં હૈં । હસી પરિણામ કા નામ સ્વાભાવિક
પરિણમન હૈં । યહ વાત પ્રમુને સ્વય પ્રતિપાદિત કી હૈં । (તણ સે
જિતસત્ત્વ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇવમાહસ્સમાણસ્સ ૪ ઇયમદ્ધ નો
અઢાહ, નો પરિયાણઈ, તુસિણીઈ સચ્ચિદ્ધઈ, તણ સે જિયસત્ત્વ અણ્ણ
યા કયાઈ ણ્હાઈ આસલ્લવરગઈ મહયા મહચ્ચલગર આસલ્લાહિણીયાઈ
નિજ્જોયમાણે તસ્સ ફરિહોદગસ્સ અદૂરસામતે જ વીહવયઈ) અમાત્ય
સુબુદ્ધિ કી હસ વાદ કો સુનકર જિનશત્રુ રાજા ને ડમકી હસ
વાત કા આદર નહીં કિયા-ડસકી વાનકો સ્વીકાર નહીં કિયા । કેવલ

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ
સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થઈ બાક છે આ બાતનુ પુદ્ગલોમા પરિણુમન ઇવકૃત
વ્યાપાર રૂપ પરિણુમથી અને સ્વાભાવિક રૂપમા થતુ રહે છે એક અવસ્થા
માથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમા થતી રહે છે આ પરિણુમન
એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પો સમજવુ બોધ્યે દરેકે દરેક દ્રવ્યમા આ
બાતનુ પરિણુમન થતુ જ રહે છે પ્રભુએ સ્વય આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(તણ સે જિતસત્ત્વ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇવમાહસ્સમાણસ્સ ૪ ઇયમદ્ધ
નો આઢાઈ નો પરિયાણઈ, તુસિણીઈ સચ્ચિદ્ધઈ, તણ સે જિયસત્ત્વ અણ્ણયા કયાઈ
ણ્હાઈ આસલ્લવરગઈ મહયા મહચ્ચલગરઆસલ્લાહિણીયાઈ નિજ્જોયમાણે તસ્સ
ફરિહોદગસ્સ અદૂરસામતેજ વીહવયઈ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાબળીને છતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો
આદર કર્યો નહિ, ફક્ત મહાગાને તે રૂપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मोनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरुन्धवरगतः
=जात्याश्वपृष्ठारूढ 'महया भडचडगर०' महाभटचड करपडकरद्वन्दपरिक्षितः
'आसवाहणियाए' अश्वगहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया 'निज्जायमाणे' नि-
र्यान्=निर्गन्तुं तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजः तस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिप्रजति । ततः तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्त्रेण 'अभिभूए समाणे' अभिभूत=व्याकुलित-
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयपत्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन
आस्य=सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-
च्छति अपक्राम्य तान् बहून् राजेश्वर यापत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर
निकला । उनके साथ २ महामतों का समुदाय भी चल रहा था । चलते
२ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू
तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गवेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण
आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते वहवे ईसर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण
ते वहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने
उस परिखोदक की अशुभ गंध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

जितशत्रु राजा स्नान करीने घोड़ा उपर सवार थाया अने अश्वक्रीडा करवा
भाटे घेरथी जडार नीकल्या तेमनी भाये साथे भडान लटोने। समुदाय पणु
यावतो छतो यावता यावता तेजो ते ४ परिजोदक-भाई-नी पासे थधने नीकल्या

(तएण जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गवेण अभिभूए समाणे सएण
उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्कमइ अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते वहवे राई सर
पभिइओ एव वयासी)

जितशत्रु राजाये परिजोदक-भाई-नी जराण गंधधी व्याजुण थधने
ताना जेसथी नाकने ढाडी लीधु अने त्थार भाड तेजो भाईनी पासेथी

કૌંટુભિઃ-શ્રેષ્ઠિ-સેનાપતિ સાર્વપાઠાદીન એવાદીત્-અહો ! રત્ન હે દેવાનુ-
પ્રિયા ! કીદૃશ્વં ઇદં પરિતોદકમમનોજ્ઞ ધર્મેન ગન્ધેન રસેન સ્પર્શેન, તદ્ યથાના
મરુત્મ્ । તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્ ણ્તસ્માદપિ અનિષ્ટતરઅમનોજ્ઞતરમન-
આમતરક્રમેવાસ્તિ । તતઃ સ્વલ્પં તે વદ્યો રાજેશ્વરમમૃતયો યાવદેવમવાદિપુઃ-તથૈવ
સ્વલ્પં તત્ હે સ્વામિન્ । યત્સ્વલ્પં ગૂયમેવ વદ્ય-અહો ! સ્વલ્પં ઇદં પરિતોદકમમનોજ્ઞ
ધર્મેન રસેન ગન્ધેન સ્પર્શેન, તદ્ યથા નામરુત્મ્-તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્

ચલને લગે । ચલતે ૨ ઝન્ટોને અપને સાથ રહે છુપ રાજેશ્વર ૨, તલવર,
માહમ્બિક, કૌંટુભિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, એવ સાર્વપાઠ આદિસે કહા હે
દેવાનુપ્રિયો ! દેવો-યદ પરિતોદક(ગાઈઝા જલ)વર્ણસે ગદ્યસે, રસસે એવ
સ્પર્શસે કિતના અગ્રિઅમનોજ્ઞ ધન રહા હૈ । જૈસે મરે હુપ સર્પ આદિકે
સહે વિનષ્ટ આદિ અવસ્થાપત્ર કલેવર કી દુર્ગંધ આતી હૈ-ઉસ સે બી
અધિક તર અનિષ્ટ દુર્ગંધ ઇસ જલ કી આ રહી હૈ । રાજા કી ઇસ
પ્રકાર વાત સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને ઇસ પ્રકાર
કહા-(તહેવ ણ સામી ! જ ણ તુઝમે એવ વચહ, અહો ણ ઇમે ફરિહો-
દણ, અમણુણે વળ્ણેણ ૪ સે જહા નામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામ
તરાણ ચેવ, તણ સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ
સુવુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચ્ચિદ્ધહ) હે સ્વામિન્ । આપ જૈસા
કહતે હૈ યદ પરિતોદક વૈસા હી વર્ણ, રસ, ગદ્ય, ઓર સ્પર્શ સે અમ

હર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર,
તલવર, માહમ્બિક, કૌંટુભિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે
હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિતોદક-ખાઈ-વહુથી, ગદ્યથી, રસથી, અને
સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-અરાણ-લાગે છે મરેલા સાપ વગેરેના સડી
ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપત્ર કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે
તેના કરતા પણ વધારે અરાણ ગદ્ય આ પાણીમાથી આવી રહી છે રાજાની આ
પ્રમાણે વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું -

(તહેવ, ણ સામી ! જ ણ તુઝમે એવ વચહ અહો ણ ઇમે ફરિહોદણ અમણુણે
વળ્ણેણ ૪ સે જહાનામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામતરાણ ચેવ, તણ સે જિય
સત્તુ સુવુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ સુવુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચ્ચિદ્ધહ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વહુ, રસ, ગદ્ય અને સ્પર્શથી
અમનોજ્ઞ આ ખાઈ કે મરીને સડી ગયેલા આપ વગેરેના જેવી

अमनआमतरकमेवास्ति । तत खलु स जितशत्रु सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्-अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन ४, कीदृशम् ? इत्याह- ' से जहा नामए ' तद् यथा नामक=यथादृष्टान्त निरूप्यते-अहिमृतकमिति वा यावद् एत स्मादपि=अहिमृतकादिभ्योऽपि अनिष्टतरम् अमनोज्ञतरम् अमनआमतरमेव वर्तते । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यावत् तूष्णीक सतिष्ठते । तत खलु स जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्य द्वितीयमपि तृतीयमपि तारमेवमवादीत्-अहो ! खलु ' त चेव ' तदेव पूर्वमेव राजा वदति । ततः तदनन्तर खलु स सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रुणा

नोज्ञ है । जैसे मरे हुए सर्पादिक के सड़े आदि अवस्थापन्न कलेवर से दुर्गंध आती है उसी तरह की इस से भी अधिक अनिष्टतर असह्य दुर्गंध इस से आ रही है । इस प्रकार अपनी यात का समर्थन प्राप्तकर जितशत्रु राजा ने अपने सुबुद्धि अमात्य प्रधान से कहा- हे सुबुद्धे ! यह परिखोदक वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से दिलकुल अमनोज्ञ बन रहा है । जिस प्रकार मरे हुए सर्प आदि के सड़े गले आदि अवस्था पन्न कलेवर से अधिक अनिष्ट तर दुर्गंध निकलती है उससे भी अधिक अनिष्टतर दुर्गंध इससे निकल रही है । इस प्रकार अपने राजाकी यात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उसका आदर नहीं किया-उसे स्वीकार नहीं किया केवल चुपचाप ही रहा । (तएण से जियसत्तूराया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी-अहोण तचेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तू रणा दोच्चपि तच्चपि एववुत्ते समाणे एव वयासी नो खलु सामी ! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव

अनिष्टतर, असह्य दुर्गंध आवे छे तेना करता पणु वधारे भगण आ दुर्गंध छे आ रीते पोतानी वातनु समर्थन प्राप्त करीने जितशत्रु राजाये पोताना सुबुद्धि अमात्य प्रधानने कहु ठे छे सुबुद्धे ! आ परिणोदक-गार्ध-पणु, रस गंध अने स्पर्शमा ओकदम अमनोज्ञ-भराण-धर्ध गंध छे भरीने सडी गयेला साप वगेरेना अवस्थापन्न कलेवर-शरीर-थी जेवी अनिष्टतर दुर्गंध आवे छे तेना करता पणु पणु अनिष्टतर-भराण-दुर्गंध आ गार्ध भावी आवी रही छे आ रीते राजाणी वात सावणीने सुबुद्धि अमात्ये तेना आदर कर्यो नहि, तेना स्वीकार कर्यो नहि पणु चुपचाप धरिने ज आलतो रह्यो

(तएण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी अहोण त चेव तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रणा दोच्चपि तच्चपि एव वजे समाणे एव वयासी नो खलु सामी ! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए,

કૌટુમ્બિક-શ્રેષ્ઠિ-સેનાપતિ સાર્યગાહાદીન યમાદીત્-અહો ! રત્ન હે દેવાનુ-
પ્રિયા ! કૌટુમ્બિક પરિશોદકમમનોજ્ઞ વર્ણેન ગન્ધેન રસેન સ્પર્શેન, તદ્ યથાના
મક્રમ્ । તથાહિ-અહિમૃતક્રમિતિ વા યાવદ્ ણતસ્માદપિ અનિષ્ટરત્નમનોજ્ઞતરમન-
આમતરક્રમેઽસ્તિ । તતઃ સ્વલ્લુ તે વહ્યો રાજેશ્વરમમૃતયો યાવદેવમત્રાદિપુ-તથૈવ
સ્વલ્લુ તત્ હં સ્વામિન્ । યત્સ્વલ્લુ યુયમેવ વદય-અહો ! સ્વલ્લુ હં પરિશોદકમમનોજ્ઞ
વર્ણેન રસેન ગન્ધેન સ્પર્શેન, તદ્ યથા નામક્રમ-તથાહિ-અહિમૃતક્રમિતિ વા યાવદ્

ચલને લગે । ચલતે ૨ ઉત્તોને અપને સાથ રહે નુપ રાજેશ્વર ૨, તલવર,
માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, એવ સાર્યગાહા આદિસે કહા હે
દેવાનુપ્રિયો ! દેવો-યદ પરિશોદક(ગાઈના જલ)વર્ણસે ગંધસે, રસસે એવ
સ્પર્શસે કિતના અત્રિક અમનોજ્ઞ યન રહા હૈ । જૈસે મરે નુપ સર્પ આદિકે
સહે ચિનષ્ટ આદિ અવસ્થાપત્ર કલેવર કી દુર્ગંધ આતી હૈ-ઉસ સે બી
અધિક તર અનિષ્ટ દુર્ગંધ હસ જલ કી આ રહી હૈ । રાજા કી હસ
પ્રકાર ઘાત સુનકર ડન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનો ને હસ પ્રકાર
કહા-(તહેવ ણ સામી ! જ ણ તુમ્હે એવ વચહ, અહો ણ હમે ફરિહો-
દપ, અમણુણે વણેણ ૪ સે જહા નામપ અહિમહેદ્ વા જાવ અમણામ
તરાપ ચેવ, તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ
સુબુદ્ધિ અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચિદ્ધહ) હે સ્વામિન્ ! આપ જૈસા
કહતે હૈ યદ પરિશોદક વૈસા હી વર્ણ, રસ, ગંધ, ઓર સ્પર્શ સે અમ

હર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર,
તલવર, માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે
હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિશોદક-ખાઈ-વર્ણથી, ગંધથી, રસથી, અને
સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે મરેલા સાથ વગેરેના સહી
ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપત્ર કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે
તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ ગંધ આ પાણીમાંથી આવી રહી છે રાજાની આ
પ્રમાણે ઘાત સાલળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું—

(તહેવ, ણ સામી ! જ ણ તુમ્હે એવ વચહ અહો ણ હમે ફરિહોદપ અમણુણે
વણેણ ૪ સે જહાનામપ અહિમહેદ્ વા જાવ અમણામતરાપ ચેવ, તણ સે જિય
સત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ સુબુદ્ધિ અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચિદ્ધહ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી
અમનોજ્ઞ આ ખાઈ છે મરીને સહી ગયેલા સાથ વગેરેના જેવી

तत् खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान=स्वकं च परम्=अन्यं च तदुभय=स्वपररूपं समन्तमेव वा बह्वीभिश्च 'असम्भावु-
व्भावणार्हि' असद्भावोद्भावनाभिः असत्ताम्=अविद्यमानानां भावानां=वस्तुधर्माणां
या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभिः=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः 'मिच्छ-
त्ताभिनिवेशेण य' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासाशेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः
'बुग्गाहेमाणे' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्यं ग्राहयन् 'बुष्पाए-
माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिं जनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणां कुर्यान् मा तिष्ठेत्यर्थः ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । (तएण जियसत्तू सुबुद्धिं
एव वयासी-माणं तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा
बह्वहिं य असम्भावुव्भावणार्हि मिच्छत्ताभिनिवेशेण य बुग्गाहेमाणे
बुष्पाहेमाणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो
ण जियसत्तू सत्ते तच्चे तहिण अविताहे सम्भूणं जिणपण्णत्ते भावे णो
उवलभति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से
इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावोद्भावक
वचनों से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो
स्वरूप विद्यमान नहीं है-उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का
प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से
इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार की प्ररूपणा
से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं
से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-माणं तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाणं
च परं च तदुभयं वा बह्वहिं य असम्भावुव्भावणार्हि मिच्छत्ताभिनिवेशेण य
बुग्गाहेमाणे बुष्पाएमाणे विहराहि तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो
ण जियसत्तू सत्ते तच्चे तहिण अविताहे सम्भूणं जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति)

एतशत्रु राजाये आ प्रभाणुं सालणीने अमात्य सुबुद्धिने आ प्रभाणुं
कलु के डे देवानुप्रिय ! तमे आ रीते असद्व्भावना लापसं पयनोत्थी-अवि-
द्यमान वस्तुधर्मोत्थी प्रतिपादनाओत्थी वस्तुनु वे स्वइयं वस्तुमा डा-रं नथी
ते स्वइयने वस्तुमा अतापनारी वाणीओत्थी अने मिथ्यात्वाभिनिवेशानां आग्र-
होत्थी आ लतनु निरूपणुं करो नहि आवी प्ररूपणुत्थी पोतानी नतने अथावता
रडो अने णीलओने पणु आवी अडी प्ररूपणामा इसाववानी येष्टां करो नहि,
तमे ओडी माथे पोतानी लतने के णील माणुसने आवी प्ररूपणुनी लपेटमा
सेवानी वेशिरां करो नहि गमनी आ प्रभाणुं वात सालणीने सुबुद्धिं प्रधा-

રાજા દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ ત્રારમ્ એમુક્તઃ=સન એમમદત્-નો સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! મમ એતસ્મિન્ પરિચ્છોદકે કોઽપિ વિસ્મય , કથમ્ ? इत्याद-एव स्वलु हे स्वा मिन् ! सुरभिः-दाः=शुभशब्दा अपि पुद्गला. शुभा अपि शब्दपुद्गला इत्यर्थः ' दुष्मिसदृताए ' दुरभिःशब्दतया=अशुभशब्दतया परिणमन्ति एव ' त चेव ' तदेव सर्वं रूपरसगन्धस्पर्शसाम्यन्विनः शुभाः अपि पुद्गला अशुभरूपादितया परि णमन्तीत्यर्थ यावत् प्रयोगवित्तसा परिणता जीवकृतप्रयोगेन स्वभावत एव वा परिवर्तनशीला. अपि च स्वलु हे स्वामिन् ! पुद्गला प्रज्ञप्ताः भगवद्भि कथिता ।

સ્વલુ સામી ! સુખ્મિ સદ્ધાવિ પોગ્ગલા દુઃખ્મિ સદ્ધાતાળ પરિણમતિ, તચેવ જાવ પઓગવીસસા પરિણયાવિ ય ણ સામી ! પોગ્ગલા પળ્ણસા) અમાત્ય કો ચુપચાપ ઘડા હુતા દેવ્યકર જિતશત્રુ રાજા ને ઉસ અમાત્ય સુબુદ્ધિ સે દુધારા ઔર તિચારા ખી પઢિલે રી જૈસા કહા હસ તરહ દુધારા તિચારા જિતશત્રુ રાજા દ્વારા કહે ગયે ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને એસા કહા કિ સ્વામિન્ । હમે હસ પરિચ્છા કે ઉદક મેં કોઈ આશ્ચર્ય નહી હો રહા હૈ કારણ કિ જો પુદ્ગલ પઢિલે શુભ શબ્દ રૂપ સે પરિણમે હુણ હોતે હૈ વે હી કાલાન્તર મેં પ્રયોગ ઔર વિત્તસા પરિણામ સે અશુભ શબ્દ રૂપ પરિણમ જાતે હૈ । હસ તરહ જૈસા ઉસને મનોજ્ઞ ચતુર્વિધ આહાર કે વિષય મેં પહિલે પ્રતિપાદન કિયા હૈ વૈસા હી યહાં પર ખી ઉસને પ્રતિપાદિત કિયા । પુદ્ગલોં કા યહ હસ તરહ કો પરિણમન મેં અપની નિજ કલ્પના સે નહી કહ રહા હૈ પ્રત્યુત હસ મેં વીતરાગ પ્રમુ કી આજ્ઞા હૈ । ઉન્હો ને હમી તરહ કા પૌદ્ગલિક પરિણ

એવ સ્વલુ સામી ! સુખ્મિ સદ્ધાવિ પોગ્ગલા દુઃખ્મિસદ્ધતાળ પરિણમતિ ત ચેવ જાવ પઓગવીસસા પરિણયાવિ ય ણ સામી ! પોગ્ગલા પળ્ણસા)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને શુપચાપ જોધને રાજા જિતશત્રુએ ખીજ અને ત્રીજ વાર પહેલાની જેમ જ હુ પૂછાએલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે નબળને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! આ આધના પાણીમા અને કંઈ નવાઈ જેવું લાગતું નથી કેમકે જે પુદ્ગલો પહેલા શુભ શબ્દ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ કાલાન્તરમા પ્રયોગ અને વિત્તસા (સ્વાભાવિક રીતના) પરિણામથી અશુદ્ધ શબ્દ રૂપમા પરિણત થઈ જાય છે આ રીતે અમાત્યે મનોસ ત્રાર જાતના આહારો વિશે જે જાતના વિચારો રજૂ કર્યા હતા તે જ જાતના વિચારો આ અશુભ રૂપ આઈ જોધને પણ પ્રકર કર્યા અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે પુદ્ગલોના આ રીતે પરિણમનની વાત મારી પોતાની કલ્પનાથી પણ વીત રાગ પ્રભુની જ એ આજ્ઞા છે તેઓશ્રીએ પૌદ્ગલિક પરિણમન આ રીતે જ પોતાની દેશના વડે નિરૂપિત કર્યો છે

तत् खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीन्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान=स्वरूपं च परम्=अन्यं च तदुभय=स्वपरस्वरूपं समन्तमेव वा बह्वीभिश्च 'असम्भावु-व्भावणाहिं' असद्भावोद्भायनाभिः असताम्=अविद्यमानानां भावानां=वस्तुधर्माणां या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभिः=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः 'मिच्छ-त्ताभिनिवेशेण य' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासाशयेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः 'बुग्गाहेमाणे' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्य ग्राहयन् 'बुष्पाए-माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिजनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणां कुर्यान् मा तिष्ठेत्यर्थः ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । (तण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहुहिं य असम्भावुव्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेशेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाहेमाणे विहराहिं, तण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो ण जियसत्तू सत्ते तच्चै तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलमत्ति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावोद्भावक वचनों से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नहीं है-उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार की प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बहुहिं य असम्भावुव्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेशेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाएमाणे विहराहिं तण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो ण जियसत्तू सत्ते तच्चै तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलमत्ति)

एतत्तन्तु राज्ञो आ प्रभाषे साधणीने अमात्य सुबुद्धिने आ प्रभाषे कल्लु के छे देवानुप्रिय ! तमे आ रीते अमहाभावनां लावड वयनोत्थी-अविद्यमान वस्तुधर्मोत्थी प्रतिपादनाओत्थी वस्तुनु वे स्वरूप वस्तुमा डाअर नथी ते स्वरूपने वस्तुमा ज्ञातवनारी वाणीओत्थी अने मिथ्यात्वाभिनिवेशाना आग्रहोत्थी आ ज्ञातनु निरूपण करो नहिं आवी प्ररूपणात्थी पोतानी ज्ञातने ज्ञातवता रहे। अने जीणओने पणु आवी झूठी प्ररूपणांमा दसाववानी चेष्टा करो नहिं, तमे ओझी माथे पोतानी ज्ञातने के जीण माणुसने आनी प्ररूपणांणी लपेटमा सेवानी डेरिया करो नहिं राजनी आ प्रभाषे वात साधणीने सुबुद्धि प्रधा

તતઃ=તદનન્તર રાજા સદચાર્તાલાપાનન્તર સત્ત્વ સુતુદે=સુધુદ્ધિનામામાત્યસ્ય અ
 યમેતદ્ભૂવ=અક્ષ્યમાણપ્રકાર આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગ
 તમકલ્પથ નાનારૂપો વિચારઃ સમુપપન્નત અદો !=પ્રાશ્ચર્યમેતદ્ યત્ત્વલુ જિતશત્રુ
 રાજા 'સતે' સત્ = પ્રિયમાનાર્ 'તથે' તત્ત્વાનિ = તત્ત્વરૂપાન્ તત્ત્વ-
 વતો વા સ્વત્વપરત્વયુક્તાન્ 'તદિદ્' તત્ત્વાન્ = સત્યાન્ યદ્વા—'તદિદ્'
 તથા ચ-હતિ-દ્રાયા, તથેતિ ચિનોતીતિ, અવ્યયમિદમ્-માત્રયાઽપ્યન્યૂનાધિકાન્
 'અવિતહે' અવિતયાન્ = અવિત્રમાનાસત્યાન્ 'સંભૂષ' સદ્ભૂતાન્=મત્તાયુક્તાન્
 'જિણવણ્ણત્તે' જિનપ્રજ્ઞાન્ = જિનમાપિતાન્ ભાવાન્ 'નો ઉવમ્મટ' નોપ
 લભતે, તત્=તસ્માત્ વારણાત્ શ્રેય = સમીર્ષીત સ્વલુ મમ યત્-જિતશત્રો
 રાજા સત્તા તત્ત્વાના તત્ત્વાનામ્ અવિતયાના સદ્ભૂતાના જિનપ્રજ્ઞાના ભાવનામ્
 'અભિગમણદ્વયાઈ' અભિગમનાર્થતાયૈ=સમ્પગમરોધાય એતર્થમ્=પુદ્ગલાનામપરા-

સાથે હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા કે જાલ મેં ન ઢાલો । રાજા કી હસ
 પ્રકાર વાણી સુનકર સુતુદ્ધિ પ્રધાન કે મન મેં એસા વિવિધ પ્રકાર કા
 વિચાર ઉત્પન્ન હુમા-યહાં વિચાર કે હન ઔર વિશેષણોં કા ગ્રહણ કર
 લેના ચાહિયે—“ચિન્તિત પ્રાર્થિત, કલ્પિત” । યહ વહે આશ્ચર્ય કી
 વાત હૈ જો જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન, તત્ત્વરૂપ-અથવા વિવિધ પ્રકાર
 કી વિવક્ષા સે સ્વત્વ પરત્વ રૂપ સે યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ન ન્યૂન ઔર ન
 અધિક, અવિતથ, સત્તા યુક્ત એસે જિન પ્રજ્ઞ, ભાવો કો નહીં સમજ
 રહા હૈ-અર્થાત્ જિતશત્રુ રાજા કે ધ્યાન મેં યહ વાત નહીં આ રહી હૈ
 કિ જિન પ્રજ્ઞ (પ્રરૂપિત) માત્ર સત્ય હોતે હૈ, અવિતથ હોતે હૈ અન્યૂન
 અનતિરિક્ત હોતે હૈ, અનેક વિવક્ષાઓં કો લેકર હન મેં નાનો ધર્મ
 વિશિષ્ટતા હોતી હૈ-(ત) હસ લિયે (સેય સ્વલુ મમ, જિયસત્તુસ્સ રણો
 સતાણ તત્ત્વાણ તદિયાણ અવિતયાણ સંભૂતાણ જિણવણ્ણસાણ ભાવા

નના મનમા અનેક વિચારો ઉદ્ભવ્યા અહીં વિચાર મળે છે આ વિશેષણોનું
 ગ્રહણ પણ કરીલેવું એપણે કે “ચિન્તિત પ્રાર્થિત કલ્પિત” આ એકદમ નવાઈ
 જેવું લાગે છે કે જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન તત્ત્વ રૂપ-અથવા તો વિવિધ પ્રકાર
 રાગી વિવક્ષાથી સ્વત્વ પરત્વ રૂપથી યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ઘણું ઓછું પણ નહિ
 અને ઘણું વધારે પણ નહિ, અવિતથ સત્તા યુક્ત એવા જિનપ્રજ્ઞના લાવોને સમજ
 રહ્યા નથી એટલે કે જિતશત્રુ રાજા આ વાતને સમજી શક્યા નથી કે જિન પ્રજ્ઞ
 વહે નિરૂપિત થયેલા લાવો સત્ય હોય છે, અવિતથ હોય છે, અન્યૂન અનતિરિક્ત
 હોય છે, અનેક વિવક્ષાઓને લઈને તેમનામાં નાના ધર્મ વિશિષ્ટતા હોય છે (ત) માટે

(સેય સ્વલુ મમ જિયસત્તુસ્સ રણો સતાણ તત્ત્વાણ અવિતયાણ

परपरिणमनरूप भावम् 'उत्तरावगात्रिण' उपादायितु=ग्राहयितु मम श्रेय, इति पूर्वण सम्प्रत्ययः। स सुसुद्धिमात्रम् एवम्=अने। प्रचारेण सप्रेयते=विचारयति, सप्रेय 'पञ्चतिर्हि' प्रत्यन्तिनैः=ममीपस्यै प्रतिपन्ननिदशवर्तिभिः पुरुषैः सार्द्धम् 'अतरावगात्रिणो' अन्तरावगात्रिण=दृष्टमात्र 'वाजार' इति भाषा प्रमिष्ठान्, यद्वा-ग्रामान्तरावर्तिकुम्भकादृष्टात् नवकान्=नूतनान् घटाश्च दृष्ट्वाति, दृष्ट्वा सन्ध्याशालसमये सर्गास्तकाले 'पविरलमणुत्तमसि' पविरलमणुत्तमसि पविरल = स्तोकाः मणुत्तमसि यस्मिन् समये म पविरलमणुत्तमसि=सन्ध्याकाले हि मणुत्तमसि गमनागमन स्वरूप भवति तादृशे मम इत्यर्थः, पुन 'निसतपट्टिनिसतसि' निशान्त प्रतिनिशा ते=मणुत्तमसिवाभासमये यौव परिशोदक तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तत् परिशोदक ग्राहयति, ग्राहयित्वा नवकेषु=नूतनेषु घटेषु 'गालावेड' गालयति, यद्वादिष्ट कारयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तान् 'लडियमुत्ति' लडियमुत्ति=लाडितान् लाडिलेपयुक्तान्

ण अभिगमणद्वयाण एवमद्व उदाहणावित्तण एव सपेहेड) मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु राजा को मत्स्वरूप, भाव युक्त तत्पररूप, अतिथ, और सद्भूतरूप ऐसे जिन प्रज्ञप्त भावों का अच्छी तरह बोध कराने के लिये और इस पुद्गलो के-अपरपर परिणमन रूप भाव को ये ऐसे ही है, इस तरह मनवाने के लिये उन्हें समझाऊँ। इस प्रकार उस ने विचार किया- (सपेहिता पञ्चतिर्हि पुरिसेहिं सद्धि अतरावगात्रिणो नवण, उडण य गेण्हट, गेण्हित्ता सञ्जाकालसमयसि पविरलमणुत्तसि निसतपट्टिनिमतसि जेणेव करिहोदण तेणेव उवागच्छट, उवागच्छित्ता त करिहोदग गेण्हवेड गेण्हवित्ता नवणसु घडणसु गाला

सब्भूताण निणयणत्ताण भावाण अभिगमणद्वयाण एवमद्व उदाहणावित्तण एव सपेहेड)

डवे भावे उत्तशत्रु राजाने मत् स्वरूप, भावयुक्त तत्पर रूप, अतिथि अने सद्भूत इति एवा एतप्रज्ञप्तना एवमेने सारी पेटे नमनववा नेठये तेमल पुद्गलोना अपरपर पञ्चिभन इव भाव विशे पणु "तेओ तो ओवा न ०" आ गते नमनववानी केशिना करवी नेठये अभात्ते आ प्रभात्ते विचार द्यो

(सपेहिता पञ्चतिर्हि पुरिसेहिं सद्धि अतरावगात्रिणो नवण उडण य गेण्हट, गेण्हित्ता सञ्जाकालसमयसि पविरल मणुत्तसि निसत पट्टिनिसतसि जेणेव करिहोदण उवागच्छट, उवागच्छित्ता त करिहोदग गेण्हवेड गेण्हवित्ता नवणसु घडणसु गालावेड गालयित्ता नवणसु उडणसु पस्त्रिवावेड, पस्त्रिवावित्ता

મુદ્રિતાન્=મુદ્રાદ્યક્ષિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા 'સત્તરત્તં' સપ્તરાત્ર=સપ્તરાત્રિન્દિવ
 પર્યન્ત પરિવસાવેદ્' પરિવાસયતિ=સ્થાપયતિ, તદ્વત્ 'દોઞ્ચપિ' દ્વિતીયમપિ
 વારપુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ ગાલયતિ, ગાલયિત્વા પુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ
 પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય તેષુ ઘટેષુ 'સઙ્ગત્વા સર્વેશ્વાર= 'મઙ્ગીવાર' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્,
 સઘો મસ્મ ગા પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય ત્યાઙ્ગિતમુદ્રિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા સપ્તરાત્ર
 યાવત્ પરિવાસયતિ, સ્થાપયતિ । એવં 'તચ્ચપિ' તૃતીયમપિ વાર પુનરપરેષુ નવકેષુ
 ઘટેષુ યાવત્ સમાસયતિ=મમ્યસ્માપયતિ । એવં સ્વલ્પ જાતેન ઉપાયેન=અનેનેવ
 ક્રમેણ અન્તરા=મધ્યેમધ્યે ગાલયન્, અન્તરા=મધ્યેમ યે પ્રક્ષેપયન્ અન્તરા ચ
 વિપરિવસાવેમાણે' વિપરિવાસયન્ ૨ સપ્ત સપ્ત રાત્રિન્દિવાનિ=
 અહોરાત્રિણિ વિપરિવાસયતિ । તતઃ સ્વલ્પ તત્પરિગ્ગોદક 'સત્તમસત્તયમિ' સપ્તમ
 વેદ્, ગાલાવિત્તા, લઙ્ગિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્,
 દોઞ્ચપિ નવણ્સુ ઘડણ્સુ ગાલાવેદ્ ગાલાવિત્તા નવણ્સુ ઘડણ્સુ પક્ષિ
 વાવેદ્, પક્ષિવાવિત્તા લઙ્ગિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત
 પરિવસાવેદ્ દોઞ્ચપિ નવણ્સુ ઘડણ્સુ ગાલાવેદ્, ગાલાવિત્તા નવણ્સુ
 ઘડણ્સુ પક્ષિવાવેદ્) વિચાર કરકે ફિર ઉસને અપને સમીપસ્થ રહે
 છુપ પુરુષો સે-સેવકો સે યાજાર સે અથવા ગ્રામાન્તરવર્તી કુમ્ભકાર કે
 હાટ સે નવીન ઘડોં કો મળવાયા । ઉન્હેં લેઝર વહ સૂર્યાસ્ત કાલ કે
 સમય જવ કિ મનુષ્યોં કા આના જાના સ્વલ્પ હો ગયા ઓર ધીરે ૨
 વહ જથ યિલકુલ વદ હો ગયા જહા પરિલોદક થા વહા પહુંચા । વર્ષા
 પહુંચ કર ઉસને ઉન ઘડોં મેં પાની છાન કર ભરવાયા । ભરવા કર
 ફિર ઉસે ઓર દ્સરે ઘડોં મેં ભરવાયા । ભરવા કર ફિર ઉન પર ઉસને
 લાક્ષાદિક કી મુહર લગવાઈ । લગવા કર ઉન્હેં સાત દિનરાત તક એક
 લઙ્ગિયમુદિતે, કરાવેદ્ કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્, દોઞ્ચપિ નવણ્સુ ઘડણ્સુ
 પક્ષિવાવેદ્, પક્ષિવાવિત્તા લઙ્ગિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્,
 દોઞ્ચપિ નવણ્સુ ઘડણ્સુ ગાલાવેદ્, ગાલાવિત્તા નવણ્સુ ઘડણ્સુ પક્ષિવાવેદ્)

વિચાર કરીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બળાર અથવા ગામના નશ્તક
 કુભારની હુકાનમાથી નવા માટલાઓ મંગાવડાવ્યા માટલાઓને લઈને તે
 બ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બંધ થઈ ગઈ
 ત્યારે તે ખાઈની પાસે પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે માટલાઓના પાણી ગાળીને
 ભરાવ્યું ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમાં પણ પાણી ગાળીને ભરાવ્યું પાણી
 ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બંધ કરાવડાવીને ગાત દિવસ સુધી

सप्तके परिणम्यमानेसति एकोनपञ्चाशद्वोरात्रेण व्यतीतेषु मत्सु तत्परिखोद-
कम्-उदकरत्नं जातं चाप्यभयम् । कीदृशं जातम् ? इत्याह-‘अच्छे’ अच्छ=स्वच्छ

जगह रखवा दिया । फिर दुबारा भी उसने और दूसरे नवीन घडों में पानी छान कर भरवाया । भरवा कर फिर उस जल को उसने और दूसरे घडो में भरवाया । (पम्बिवावित्ता) भरवा कर (सज्जखार पम्बिवावेड लडिय मुद्धिते कारवेड्) उन में उसने सज्जीखार डलवा दिया । डलवा कर उन पर लाक्षादिक के छेप की मुहर लगवा दी । (कारवित्ता सत्तरत्त परिवसावेड) लगवा कर उन्हें एक ओर रखवा दिया (तच्चपि नवएसु घडएसु जाव सवसावेड्, एव खलु एण उवाएण अतरा गलावेमाणे अतरा पम्बिवावेमाणे अतराय विपरिवावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवावेड्) तीसरी बार भी उसने उपर नवीन घडों में छानकर पानी भरवाया-भरवाकर पहिले की तरह ही उसने सब काम करवाया-फिर उन्हें अच्छी तरह एक ओर रखवा दिया । इस तरह के उपाय से उसने घीव २ में उस जल को पुनः २ छानकर उनमें भरवाया और भरवा २ कर सात २ दिन तक उन घडों को एक २ ओर रखवा दिया । (तएण से फरिहोदण मत्तमसत्तयसि परिणम माणसि उदगरयणे जाये) इस प्रकार करते २ जब ४९ दिन समाप्त हो

એક જગ્યાએ માટલાઓને મૂકાવડાવ્યા બીજી વખત તેણે બીજા નવા ઘડાઓમા પાણી ગાળીને ભરાવડાવ્યું ભરાવડાવીને તે પાણીને ગાળીને બીજા માટલાઓમા ભરાવડાવ્યું (પમ્બિવાવિત્તા) ભરાવડાવીને

(સજ્જખાર પમ્બિવાવેડ લડિયમુદ્ધિતે કારવેડ)

તેણે માટલાઓમા માણખાત નખાવડાવ્યો માણ ખાર નખાવડાવીને તેણે માટલાઓને બરાબર બધે ડરાવડાવી (કારવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેડ) સીલ કરાવડાવીને માટલાઓને એકઠાનું મૂકી દીધા

(તત્ત્વપિ નવસુ ઘડસુ જાવ સવસાવેડ, એવં ચલુ એણ ઉવાએણ અતરા પમ્બિવાવેમાણે અતરાય વિપરિવાવેમાણે ૨ સત્ત ૨ રાઈ દિયા વિપરિવાવેડ)

ત્રીજી વખત પણ તેણે બીજા નવા માટલાઓમા પાણી ભરાવડાવ્યું ભરાવીને પહેલાની જેમજ બધી વિધિ કરી અને માટલાઓને એક તરફ મૂકાવી દીધા આ પ્રમાણે કરતા તેણે વચ્ચે વચ્ચે કેવલીએ વખત વાગવાગ ગાળીને માટલાઓમા પાણી ભરાવ્યું અને ત્યારપછી સાત દિવસ માટે માટલાઓને એક ખાતું મૂકાવો દીધા

(તएण से फरिहोदण सत्तमसत्तयमि परिणममाणमि उदगरयणे जाये)

મુદ્રિતાન્=મુદ્રાદ્યદ્ધિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા 'સત્તરત્ત' સપ્તરાત્ર=સપ્તરાત્રિન્દિવ
 પર્યન્ત પરિવસાવેદ ' પરિવાસયતિ=સ્થાપયતિ, તદનુ 'દોચ પિ' દ્વિતીયમપિ
 વારપુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ ગાલયતિ, ગાલયિત્વા પુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ
 પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય તેષુ ઘટેષુ 'સજ્જસ્વાર' મર્જસ્વાર='સજ્જીસ્વાર' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્,
 સઘો મસ્મ યા પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય લઙ્ઠિતમુદ્રિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા સપ્તરાત્ર
 યાવત્ પરિવાસયતિ, સ્થાપયતિ । અપ 'તચ પિ' તતીયમપિ વાર પુનરપરેષુ નવકેષુ
 ઘટેષુ યાવત્ સત્તામયતિ=સમ્યક્ સ્થાપયતિ । એ સ્વલુ એતેન ઉપાયેન=અનેનૈવ
 ક્રમેણ અન્તરા=મધ્યેમમધ્યે ગાલયન્, અન્તરા=મધ્યેમ મે પ્રક્ષેપયન્ અન્તરા ચ
 વિપરિવસાવેમાણે' વિપરિવાસયન્ ૨ સ્થાપયન્ ૨ સપ્ત સપ્ત રાત્રિન્દિવાનિ=
 અહોરાત્રિણિ વિપરિવાસયતિ । તતઃ સ્વલુ તત્પરિગોદક 'સત્તમસત્તયમિ' સપ્તમ

વેદ, ગાલાવિત્તા, લઙ્ઠિયમુદ્ધિતે કરાવેદ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિ
 વાવેદ, પક્કિવાવિત્તા લઙ્ઠિયમુદ્ધિતે કરાવેદ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત
 પરિવસાવેદ દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ
 ઘડણ્ણુ પક્કિવાવેદ) વિચાર કરકે ફિર ઉસને અપને સમીપસ્થ રહે
 હુપ પુરુષો સે-સેવકો સે યાજાર સે અથવા ગ્રામાન્તરવર્તી કુભકાર કે
 હાટ સે નવીન ઘડોં કો મગવાયા । ઉન્હેં લેકર વહ સૂર્યાસ્ત કાલ કે
 સમય જય કિ મનુષ્યોં કા આના જાના સ્વલ્પ હો ગયોં ઓર ધીરે ૨
 વહ જય ચિલકુલ પદ હો ગયા જહા પરિચોદક યા વહાં પહુંચા । વર્તા
 પહુંચ કર ઉસને ઉન ઘડોં મેં પાની છાન કર ભરવાયા । ભરવા કર
 ફિર ઉસે ઓર દૂસરે ઘડોં મેં ભરવાયા । ભરવા કર ફિર ઉન પર ઉસને
 લાક્ષાદિક કી મુહર લગવાઈ । લગવા કર ઉન્હેં સાત દિનરાત તક એક

લઙ્ઠિયમુદ્ધિતે, કરાવેદ કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ, દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ
 પક્કિવાવેદ, પક્કિવાવિત્તા લઙ્ઠિયમુદ્ધિતે કરાવેદ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિવાવેદ)

વિચાર ઢીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બબ્બર અથવા ગામના નજીક
 કુભારની હુડાનમાથી નવા માટલાઓ મગાવડાવ્યા માટલાઓને લઈને તે
 ત્યાં સૂર્ય અસ્ત પાડ્યો અને માણસોની અવરજવર બેકદમ બધ થઈ ગઈ
 ત્યાં તે ખાઈની પાસે પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે માટલાઓના પાછી ગાળીને
 ભરાવ્યું ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમા પણ પછી ગાળીને ભરાવ્યું પાછી
 ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બધ ડરાવવાથીને માત્ર દિવસ સુધી

प्रहादनीय ज्ञात्या हृष्ट-तुष्टः पटुभिः ' उदगमभारणिज्जेहि ' उदकसभारणीयै = जलसुगन्धकरणयोग्यै केतकीपाटलादिद्रव्यैः ' सभारेइ ' सभारयति = सस्कारयति सभारयित्वा जितशत्रो राज्ञः ' पाणियप्रय ' पानीयहारक यस्य हस्ताद्वारा पानीय पिबति त शब्दयति, शब्दयित्वा एवमसादीत्-त्वं च खलु हे देवानुप्रिय ! उदमुदकरन् गृहाण, गृहीत्वा जितशत्रो राज्ञो भोजनवेलायाम् उपनय । ततः खलु पानीयहारकः सुबुद्धिरस्य = सुबुद्धिनामकामात्यस्य एतमर्थः=राज, पानीय

उदगसभारणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणिय घरिय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुमच ण देवाणुप्पिया इम उदरगयण गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि) इसके बाद वह सुबुद्धि अमात्य जहाँ वह उदक रत्न था वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने उस उदकरत्न को हाथ में लेकर चखा । चख कर जब उसे यह बात हो चुका कि यह उदक रत्न वर्णादि से युक्त यावत् सर्वेन्द्रिय गात्र प्रहादनीय बन गया है तो वह बहुत ही आनन्दित एवं स्तुष्ट हुआ बाद में उसने उस जल को सुगन्धित करने वाले केतकी पाटल (गुलाब) आदि द्रव्य से सस्कारित किया-सस्कारित करके फिर उसने जितशत्रु राजा को जो पानी पिलाने वाला भृत्य था उसे बुलाया बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को लो-और लेकर जब जितशत्रु राजा के भोजन करने का समय होवे तब उसे उनके पाम में डालना । (तएण से पणियघरिय सुबुद्धिय-सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरिय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुम च ण देवाणुप्पिया इम उदरगयण गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि)

त्यारपछी अमात्य सुबुद्धि तथा उदकरत्न (पाणी) डालु त्या गथे। त्या जधने तेणे उदकरत्न (पाणी) ने हथेली वरुं लउने आभ्यु आभ्या भाइ तेने अभे लाव्यु के अरेअर आ उदकरत्न (पाणी) वरुं वगेरे सुखेथी सुकन यावत् जधी उन्दिथे। अने शरीरने आनंद पमाडे तेवु थउ गयु छे त्यारे ते अभे अभे अने मत्तुष्ट थये। त्यार पछी तेणे पाणीने सुवासित कर नाग केतकी पाटल (गुलाब) वगेरे द्रव्येथी पाणीने सस्कारित क्युं पाणीने सस्कारित क्युं भाइ अमात्ये एतज्जु सज्जने पाणी पीवडापनार नेउरने जावा ये अने जावावीने तेने म्हुं के छे देवानुप्रिय । सज्जने अभवाने वणत थाय त्यारे तु आ उदकरत्न (पाणी) तेमनी पामे लउ जणे

(तएण से पणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमद पडिमुणेइ, पडिमुणित्ता त

निर्मलत्वात्, 'पत्ये' पत्यम्=आरोग्यजनकत्वात्, 'जच्चे' जात्यम्=उत्तमगुण-
 रत्त्वात्, 'तणुण' तनुक=भारेण शुक पाचयन्त्यात्, 'फलिहण्णाभे' स्फटिक-
 र्णाभ=स्फटिकमणिर्णतुत्य र्णन-उपेतम् ५ = प्रशस्तर्णगन्धरसस्पर्शैर्युक्तम्
 'आसायणिज्जे' आसादनीयम्=आम्वादयोग्य यावत् सर्वेन्द्रिय गात्रप्रहादनीय
 जातम् । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यत्र तद् उदकरत्न तत्रोपागच्छति, उपा-
 गत्य करतले=हस्ततले गृहीत्वा तद् 'जागाण्ड' आम्वादयति आम्वाय तद्
 उदकरत्न वर्णेनोपपेतम् ४ र्णादुपपेतम् - आम्वादनीय यावत् सर्वेन्द्रियगात्र
 चुके तत्र वह परिग्रोदक उदकरत्न श्रेष्ठजल रूपे परिणमित हो गया ।
 (अच्छे पत्ये जच्चे तणुण फलिहण्णाभे वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे
 जाव सन्विदियगायपल्हायणिज्जे) यह उदकरत्न निर्मल होने से त्रिल
 कुल स्वच्छ हो गया आरोग्य जनक होने से पत्य रूप बन गया उत्तम
 गुणवाला होने से श्रेष्ठ दिग्मनेलगा शीघ्र पचने के योग्य हो जाने के
 कारण भार में वह बहुत हलका हो गया, और स्फटिकमणि के वर्ण
 समान वर्ण से युक्त हो गया । इसके वर्ण, रस और स्पर्श सब
 प्रशस्त-श्रेष्ठ बन गये । यह आम्वादनीय हो गया यावत् समस्त इन्द्रि-
 यों को एवं शरीर को तृप्ति करने वाला बन गया । (तणुण सुबुद्धी
 अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करय
 लसि आसादेइ, आमादित्ता उदगरयण वर्णेण उववेय ४ आसाय
 णिज्जे जाव सन्विदियगाय पल्हायणिज्ज जाणिस्ता इड्ठ तुड्ठे बह्विहि

आ रीते त्यादे ४८ द्विसे। पूरा थया त्यादे ते भाधु उउरत्त (पाष्णी)

उत्तम पाष्णीना इपमा परिणुत थर्ध गयु

(अच्छे पत्ये जच्चे तणुण फलिहण्णाभे वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे जाव
 सन्विदियगायपल्हायणिज्जे)

ते उदकरत्न (पाष्णी) निर्माण होवा पहल ओकहम स्वच्छ थर्ध गयु इतु
 आरोग्यजनक होवाथी पथ्य इय थर्ध गयु इतु, उत्तम गुण-स पक्ष होवाथी
 श्रेष्ठ होवातु इतु, शीघ्र पाचन थाय तेवु होवाथी पन्नमा ते भूय न् उलङ्क
 थर्ध गयु इतु पाष्णीना वर्णु गंध, रस अने स्पर्श आ भधा शुद्ध प्रशस्त
 श्रेष्ठ इपमा परिणुत थर्ध गया इता ते आस्वादनीय थर्ध गयु इतु यावत्
 अधी धन्द्रियोने तेमन् शरीर तृप्त करनार जनी गयु इतु

(तणुण सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
 करयलसि आसादेइ, आसादित्ता त उदगरयण वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे
 जाव सन्विदियगाय पल्हायणिज्ज जाणिस्ता इड्ठ तुड्ठे बह्विहि उदगसमारणिज्जेहि

મૃત્=પરમપવિત્ર સ રાજા તસ્મિન્ ઉદકરત્નજાતમિમ્મયઃ=સજાતજલસ્વાદકૌતુકઃ તાન્ ગૃહ્ણન્ રાજેશ્વર યાત્-રાજેશ્વર-તલવર - માહમિકકૌટુમ્બિકેમ્ય-શ્રેષ્ઠી સેનાપતિસાર્થવાહપ્રમૃતીન્ એવમવદત્-અહો ! આશ્ચર્યમેતત્ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ઉદમુદકરત્નમ્ અચ્છ યાવત્-સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમસ્તિ । તત, સ્વલ્પ વહ્નો રાજેશ્વર યાવત્સાર્થવદ્-પ્રમૃતય એમવાદિષુઃ-તથૈવ સ્વલ્પ હે સ્વામિન્ ! યત્ સ્વલ્પ યૂય વદથ યાત્દ એવમેવ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીય વર્તતે । તત, સ્વલ્પ જિતશત્રુ

લિયે યે । હસ પરમ શુચિમૃત વનકર અપની વૈઠક પર વૈઠે હુણ્ ઉન જિતશત્રુ રાજા કો ઉમ ઉદકરત્ન કે આસ્વાદન મે વડા હી આશ્ચર્ય હો રહા થા । ઉસી આશ્ચર્ય મે હૂવે નુણ્ ઉન રાજા ને અપને પાસ પૈઠે હુણ્ રાજેશ્વર તલવર, માહમિક, કૌટુમ્બિક, હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ ઓર સાર્થવાહક આદિ જનો સે હસ પ્રકાર કા (અહોણ દેવાનુપ્રિયા ! હમે ઉદગરયણે અચ્છે જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ ગ્રહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુઁમે વદહ જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂરાયા પાણિયધરિય સદ્ધાવેઙ્, સદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી-એમણ તુઁમે દેવાનુપ્રિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાહણ ?) દેવાનુપ્રિયો ! દેખો યહ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ જલ) કિતના અચ્છા નિર્મલ યાવત્ સમસ્ત હિન્દ્રિયો ણવ શરીર કો આનન્દ દેનેવાલા હૈ । હસ પ્રકાર રાજા કા કથન સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને હસ રાજા સે એસા કહા-સ્વામિન્ આપ જૈસા કહતે હૈ, યહ જલ

હીધા હતા આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઇને પોતાની એકદમ એકેલા રાજા હતશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદકરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઇ જેવું લાગતું હતું ઉદકરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઈના વિચારો કરતા રાજાએ પોતાની પાસે એકેલા રાજેશ્વર, તલવર, માહમિક, કૌટુમ્બિક, હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેના પતિ અને સાર્થવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યું

(અહોણ દેવાનુપ્રિયા ! હમે ઉદગરયણ અચ્છે જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ ગ્રહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુઁમે વદહ જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂ રાયા પાણિયધરિય સદ્ધાવેઙ્, સદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી એમણ તુઁમે દેવાનુપ્રિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાહણ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જમતી વખતે પીધેલું ઉદકરત્ન (પાણી) કેટલું બધું નિર્મળ અને બધી હિન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનન્દ પ્રમાણનાર છે આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ ગમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ અથાથ છે પાણી ખરેખર

પાનરૂપ ભાવ પ્રતિશ્રુતિ=સ્ત્રીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય તદુદકરત્ન ગૃહ્ણા, ગૃહીત્વા
 જિતશત્રોઃ રાક્ષો ભોજનવેલાયામ્ ઉપસ્થાપયતિ । સતઃ ચત્તુઃ સ જિતશ રાજા વદ્
 વિપુલમ્ અશનપાન-લાઘ-સ્વપ્રામ્-આસ્વાદયન્ યાવદ્ વિહરતિ । 'જિમિયશ્ચુ
 ત્તરાગણ વિ' જિમિતશ્ચોત્તરાગતોઽપિ ચ સ્વલુ-જિમિતમ્=આસ્વાદિત શ્વત્મ
 ઉદરપૂરણપૂર્વકમ્, તદુત્તરમ્ આગત્=સ્વોપવેશનસ્થાને પ્રાપ્તઃ, કીંશ સન્?
 इत्याह-यावत्-आचान्तः=कृतचुलुङ्, अतएव चोक्षः=निलेप. गच्छ' परमशुचि

સ્સ પયમદ્વ પહિસુણેઢ, પહિસુણિત્તા ત ઉદગરયણ ગિણ્ઢાઢ, ગિણ્ઢિત્તા
 જિનસત્ત્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવઢ્ઢવેઢ તણ્ણ સે જિયસત્ત્ ગયા ત
 વિપુલ અસણ ૪ આસાણમાણે જાવ વિહરઢ) હસ પ્રકાર ઉસ પાનીય
 હારક ને સુબુદ્ધિ અમાત્ય કી હસ યાનકો માન લિયો ઓર માનકર ઉસ
 ઉદકરત્ન કો-શ્રેષ્ઠ નિર્મલજલ કો-લે લિયો-લેકર ઉસને ઉસે જિતશત્રુ
 રાજા કે ભોજન કરને કે સમય ઉપસ્થાપિત કર દિયા-તાકિ વે હમ
 જલ કો પીવે । હસકે વાદ જિતશત્રુ રાજા કા જવ ભોજન કરને કા
 સમય આયા તવ ઉસને અશનાદિ રૂપ ૪ ચારો પ્રકાર કા આહાર લૂબ
 હચ્છાનુસાર કિયા ઓર ઉસ ઉદકરત્ન કો પિયા । (જિમિય શ્ચુત્તરા
 ગણ યાવિયણ જાવ પરમસુહમ્ણ તસિ ઉદગરયણે જાવ વિમ્હણ તે વહવે
 રાઈસર જાવ એવ વયાસી) જવ જિતશત્રુ રાજા અચ્છી તરહ લા પી
 ચુકે તવ વે અપને ઉપવેશન કે સ્થાન મેં વેઠક મે-આયે । વેઠક મેં આને
 કે પહિલે ઉન્હોને કુલ્લા આદિ કરકે અપને મુખ કો અચ્છી તરહ ધો
 લિયા થા ઓર હાથ વગેરહ મી અચ્છી તરહ પ્રક્ષાલિત કર (ધોકર)

ઉદગરયણ ગિણ્ઢાઢ ગિણ્ઢિત્તા, જિયસત્ત્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવઢ્ઢવેઢ, તણ્ણ સે
 જિયસત્ત્ ગયા ત વિપુલ અસણ ૪ આસાણમાણે જાવ વિહરઢ)

આ રીતે પાણીવાળા નોકરે સુબુદ્ધિ અમાત્યની વાત સ્વીકારી લીધી અને
 સ્વીકારીને તે ઉદકરત્ન-શ્રેષ્ઠ નિર્મળ પાણીને-ત્યાથી લઈને જમવાની વખતે
 જીતશત્રુ રાજાની સામે તેમને પીવા માટે પહોંચાડી દીધું ત્યાર પછી જ્યારે
 જીતશત્રુ રાજાનો જમવાનો વખત થયો ત્યારે રાજા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતના
 આહારે ખૂબ તૃપ્ત થઈને ધચ્છા સુખ જમ્યા અને તે ઉદકરત્ન (પાણી) ને પીધું

(જિમિયશ્ચુત્તરાગણ યાવિ ય જાવ પરમસુહમ્ણ તસિ ઉદગરયણે જાવ
 વિમ્હણ તે વહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી)

રાજા જીતશત્રુએ આમ સારી રીતે જમવાનું પતાવી દીધું ત્યારે તેઓ
 ત્યાથી પોતાના ઉપવેશનના સ્થાનમાં એટલે કે બેઠકમાં આવ્યા બેઠકના આવતા
 પહેલાં તેઓએ ઠાંગળા વગેરે કરીને મો અને હાથોને ધોઈને ખનાવી

મૃત. = પરમપવિત્ર સ રાજા તસ્મિન્ ઉદકરત્નજાતગ્નિમયઃ = સજાતજલસ્વાદકો
તુકઃ તાન્ ગૃહ્ણન્ રાજેશ્વર યાત્-રાજેશ્વર-તલવર - માહમ્નિકકૌટુમ્બિકેભ્ય-
શ્રેષ્ઠિ સેનાપતિસાર્થવાહપ્રમૃતીન્ એવમવદત્-અહો ! આશ્ચર્યમેતત્ સ્વલ્પ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! હૃદયુદકરત્નમ્ અન્ન યાવત્-સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમસ્તિ । તત, સ્વલ્પ
બહવો રાજેશ્વર યાવત્સાર્થવહ-પ્રમૃતય એમવાદિપુઃ-તથૈવ સ્વલ્પ હે સ્વામિન્ ! યત્
સ્વલ્પ યૂય વદથ યાવદ્ એવમેવ સર્વેન્દ્રિગાત્રપ્રહ્લાદનીય વર્તતે । તત. સ્વલ્પ જિતશત્રુ

લિયે યે । હમ્ પરમ શુચિમૃત વનકર અપની ઘેઠક પર વૈઠે હુણ્ ઉન
જિતશત્રુ રાજા કો હમ્ ઉદકરત્ન કે આસ્વાદન મે ગહા હી આશ્ચર્ય હો
રહા થા । ઉસી આશ્ચર્ય મે હૂવે હુણ્ ઉન રાજા ને અપને પાસ વૈઠે હુણ્
રાજેશ્વર તલવર, માહમ્નિક, કૌટુમ્બિક, હમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ ઓર
સાર્થવાહક આદિ જનો સે હમ્ પ્રકાર કા (અહોણ દેવાણુપ્રિયા ! હમે
ઉદગરયણે અન્ન જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ બહવે રાઈસર
જાવ એવ વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુન્મે વદહ જાવ એવ ચેવ
પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂરાયા પાણિયધરિય સદાવેહ, સદાવિત્તા
એવ વયાસી-એસણ તુન્મે દેવાણુપ્રિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાહ્ણ ?)
દેવાનુપ્રિયો ! દેલ્હો યહ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ જલ) કિતના અન્ન નિર્મલ
યાવત્ સમસ્ત્ત્વેન્દ્રિયો એવ શરીર કો આનન્દ દેનેવાલા હૈ । હમ્
પ્રકાર રાજા કા કથન સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનો ને
હમ્ રાજા સે એસા કહા-સ્વામિન્ આપ જૈસા કહતે હૈ, યહ જલ

હીધા હતા આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઇને પોતાની એકદમ ખેડેલા રાજા
જિતશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદકરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઇ
જેવું લાગતું હતું ઉદકરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઇના વિચારે કરતા રાજાએ
પોતાની પાસે ખેડેલા રાજેશ્વર, તલવર, માહમ્નિક, કૌટુમ્બિક, હમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેના
પતિ અને સાર્થવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યું

(અહોણ દેવાણુપ્રિયા ! હમે ઉદગરયણ અન્ન જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હા-
ણિજ્જે તણ્ણ ગૃહ્ણે રાઈસર જાવ એવ વયાસી તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુન્મે વદહ
જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂ રાયા પાણિયધરિય સદાવેહ, સદાવિત્તા
એવ વયાસી એમણ તુન્મે દેવાણુપ્રિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાહ્ણ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જમતી વખતે પીધેલું ઉદકરત્ન (પાણી) કેટલું બધું
નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનન્દ પ્રમાડનાર છે આ રીતે
રાજાની વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ રાજાને આ
પ્રમાણે કહે-સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ યથાર્થ છે પાણી ખરેખર

રાજા પાનીયદારક શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એમયદત્-અત્ ગ્લુ ન્ હે દેવાનુપ્રિય !
 ઉદકરત્ન પ્રમાણપુદ્ગલ કુતઃ કરમાન્સથાનાત્ ' જામાઘ્ ' જામાદિત્વ=પ્રાપ્ત્મ્ ? ।
 તતઃ સ્વલુ મ પાનીયદારક જિતશત્રુમેતપાદીન્-અત્ ગ્લુ હે રામામિ ! મયા
 ઉદકરત્ન સુબુદ્ધેરન્તિમાદાસાદિત્મ્ । તતઃ ગ્લુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધિરમાત્ય ગત્યતિ,
 શબ્દયિત્વા એમયદત્-અત્ । સ્વલુ હે સુબુદ્ધે ! કેન કારણેનાદ તમાનિષ્ઠ

ચેના હો છે-અહુન અપિઠ સ્વચ્છ એ સમસ્ત ઇન્દ્રિયો તો, શરીર
 તો આનંદ દાયક છે હમકે પાદ જિતશત્રુ રાજાને પાનીયદારક તો
 બુલાયા ઓરબુલાકર ઉમસે જેના કહા-હે દેવાનુ પ્રિય ! યદ ઉદકરત્ન
 (શ્રેષ્ઠ જલ)-તુમને કહા સે પ્રાપ્ત કિયા છે । (તણ સે પાણિયધરણ
 જિયમત્તૂ એવ વયાસી-અસણ સામી ! મળ ઉદગરયણે સુબુદ્ધિસ્સ
 અનિયાઓ આનાહણ તણ જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ સદા
 ચિતા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે
 પજેણ તુમ મમ રૂલ્લા કર્તિલ ભોયણવેલાળ હમ ઉદગરયણ ન ઉવટ્ટવેસિ
 ? ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?) રાજાતો
 હમ બાન તો સુનકર ઉસ પાનીયદારક ને ઉનસે કહા-હે સ્વામિન્ !
 મૈને યદ ઉદકરત્ન સુબુદ્ધિ પ્રધાન કે પાસ સે પાંચા છે । હસકે પાદ
 જિતશત્રુ રાજા ને સુબુદ્ધિ પ્રધાન તો બુલાયા-બુલાકર ઉસસે હસ પ્રકાર
 કહા-હે સુબુદ્ધે ! મૈ કિસ કારણ સે તુમ્હારે લિયે અનિષ્ઠ, અકાન્ત,

તેવુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્ભળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનંદ
 આપનાર હતુ ત્યારપછી છતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલા
 વીને તેને કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે
 કયાથી મેળવ્યું છે ?

(તણ સે પાણિયધરણ જિયમત્તૂ એવ સુબુદ્ધિસ્સ અનિયાઓ અસાદે તણ
 જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદાચિતા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ
 કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે પજેણ તુમ મમ રૂલ્લાકર્તિલ ભોયણવેલાળ હમ ઉદગરણ
 ન ઉવટ્ટવેસિ ! ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?)

રાજાની આ વાત સાંભળીને પાણીવાળાએ જવાબમાં રાજાને કહ્યું કે હે
 સ્વામિન્ ! આ ઉદકરત્ન (પાણી) હું સુબુદ્ધિ અમાત્યની પાસેથી લાવ્યો
 છું રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સુબુદ્ધિ ! શા કારણથી હું તમારા માટે આગત,

અકાન્ત, અપ્રિયઃ, અમનોજ્ઞ, અમનઆમોઽસ્મિ યેન ત્વ મમ 'ઋણાઋણિ' કલ્યા-
કલિય=પ્રતિદિન ભોજનવેલાયામિદમુદકરત્ન નોપસ્થાપયમિ, તદેતત્ સ્વલુ ત્વયા હે
દેવાનુપ્રિય ! ઉદકરત્ન કુત ઉપલબ્ધમ્ ? । તત્ સ્વલુ સુબુદ્ધિ જિતશત્રુમેવમવા-
દીત્-એતત્સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! તત્=યદ્ મનદ્વિઃ=પૂર્વદૃષ્ટ મેદોઽસાદિદુર્ગ-ધયુક્ત
તદેવ પરિચોદક=પરિશ્વાનલ વર્તતે । તત્ સ્વલુ સ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેવમવદત્-
કેન કારણેન હે સુબુદ્ધે ! એતત્ પરિચોદકમ્ ? । તત્ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યુય
તદા મમ એવાચક્ષાણમ્ય પ્રજ્ઞાપયતઃ, સજ્ઞાપયતઃ, વિજ્ઞાપયતઃ=વારવાર પ્રતિપાદયત

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ એવ અમન આમ બન રહો છું કે જિસસે તુમ પ્રતિ
દિન મેરે લિયે ભોજન વેલા મે ડસ ઉદક રત્ન કો ઉપસ્થાપિત નહી
કરતે હો ? તો કહો હે દેવાનુપ્રિય ! યહ ઉદક રત્ન તુમને કહા સે પાયા
હે ? (તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી એસણ સામી ! સે ફરિ
હોદણ, તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-કેણ કારણેણ સુબુદ્ધી !
એસસે ફરિહોદણ ? તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસીએવ-સ્વલુ સામી !
તુમ્હે તયા મમ એવાચક્ષમાણસ્સ ૪ એમદ્દ નો સદ્દહહ, તણ મમ
હમેયારુલ્લે અજ્ઞતિયે સમુપ્પજ્જિત્યા) તવ સુબુદ્ધિ પ્રધાનને જિતશત્રુ
રજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ ઉદક રત્ન વહી પરિચોદક હે । જિત-
શત્રુ ને કહા યહ પરિચોદક કિસ કારણ સે એગા ઉદક રત્ન બન ગયા
હે । સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને તવ એસા કહા- હે સ્વામિન્ ! જવ મૈને આપસે
હસ પ્રકાર કહા થા હસ પ્રકાર પ્રભુપિત કિયા થા, હસ પ્રકાર સજ્ઞાપિત
કિયા થા, વિજ્ઞાપિત કિયા થા- વાર વાર આપસે પ્રતિપાદિત કિયા થા

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમન આમ થઈ પડ્યો છું કેમ કે હ મેશા જમવાના
વખતે મારા માટે આજના જેવું ઉદક રત્ન (સાડ પાણી) તમે ઉપસ્થાપિત
નરતા નથી-મૂનાવડાવતા નથી ? હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, આવું ઉદક રત્ન
તમારે ક્યાથી મેળવ્યું છે ?

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી એસણ સામી ! સે ફરિહોદણ, તણ
સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-કેણ કારણેણ સુબુદ્ધી એસ મે ફરિહોદણ ? તણ
સુબુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ સામી ! તુમ્હે તયા મમ એવાચક્ષમાણસ્સ
૪ એમદ્દ નો સદ્દહહ, તણ મમ હમેયારુલ્લે અજ્ઞતિયે સમુપ્પજ્જિત્યા)

ત્યારે સુબુદ્ધિ પ્રધાને જિતશત્રુ રાબને કહ્યું કે હે સ્વામી ! આ ઉદકરત્ન
(સાડ પાણી) તે જ ખાઈનું પાણી છે રાબાએ અમાત્યને ફરી પૂછ્યું કે
ખાઈનું પાણી આવું સન્સ કેવી રીતે થઈ ગયું ? જવાબમાં સુબુદ્ધિ અમાત્યે
કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! પહેલા મે તમારી સામે આ પ્રમાણે પ્રતિપતિ કર્યું હતું,
આ પ્રમાણે સજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વિજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વારવાર પ્રતિપાદિત

રાજા પાનીહારક શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એમયદત્-અત્ સ્વલુ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય !
 ઉદકરત્ન પ્રમાણપુદ્ગલ કુત્ત' કરમાન્મથાનાત્ ' જામાણ' જામાદિત્-પ્રાપ્તમ્ ? !
 તત્ત' સ્વલુ મ પાનીયહારકો જિતશત્રુમેતાયાદીન્-અત્ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! મયા
 ઉદકરત્ન સુબુદ્ધેરન્તિમાદાસાદિતમ્ । તત્ત' સ્વલુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધિરમાત્મ્ય ગચ્ચયતિ,
 શબ્દયિત્વા એમયદત્-અહો ! સ્વલુ હે સુબુદ્ધે ! કેન કારણેનાત્ તરાનિષ્ઠઃ

ચેનાતો હૈ-અહુન્ અગ્નિઃ સ્વચ્છ એવ મમસ્ત્ત્વ ઇન્દ્રિયો તો, શરીર
 કો આનન્દ દાયક હૈ હમકે યદ જિતશત્રુ રાજાને પાનીયહારકકો
 બુલાયા ઓરબુલાકર ઉમસે ગેમા કતા-હે દેવાનુ પ્રિય ! યદ ઉદકરત્ન
 (શ્રેષ્ઠ જલ)- તુમને કતા સે પ્રાપ્ત કિયા હૈ । (તણ સે પાણિયધરણ
 જિયમત્તૂ એવ વયાસી-અસણ સામી ! મમ ઉદગરયણે સુબુદ્ધિસ્મ
 અતિયાઓ આમાણ તણ જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ સદા
 વિતા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેળ કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે
 પજેણ તુમ મમ ફલ્લાકર્લિલ મોચણવેલાએ હમ ઉદગરયણ ન ઉવદ્ધવેસિ
 ? ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?) રાજાકી
 હમ વાન કો સુનકર ઉસ પાનીયહારક ને ઉનસે કતા-હે સ્વામિન્ !
 મૈને યદ ઉદકરત્ન સુબુદ્ધિ પ્રધાન કે પાસ સે પાંચા હૈ । હસકે યદ
 જિતશત્રુ રાજા ને સુબુદ્ધિ પ્રધાન કો બુલાયા-બુલાકર ઉમસે હમ પ્રકાર
 કતા-હે સુબુદ્ધે ! મૈ કિસ કારણ સે તુમ્હારે લિયે અનિષ્ઠ, અકાન્ત,

તેષુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનન્દ
 આપનાર હતુ ત્યારપછી જિતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલા
 વીને તેને કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે
 કયાથી મેળવ્યું છે ?

(તણ સે પાણિયધરણ જિયમત્તૂ એવ સુબુદ્ધિસ્મ અતિયાઓ અસાદે તણ
 જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદાવિતા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેળ
 કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે પજેણ તુમ મમ ફલ્લાકર્લિલ મોચણવેલાએ હમ ઉદગરણ
 ન ઉવદ્ધવેસિ ! ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?)

રાજાની આ વાત સાંભળીને પાણીવાળાએ જવાબમાં રાજાને કહ્યું કે હે
 સ્વામિન્ ! આ ઉદકરત્ન (પાણી) હું સુબુદ્ધિ અમાત્યની પામેલો લાવ્યો
 છું રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સુબુદ્ધિ ! શા કારણથી હું તમારા માટે અ અકાન્ત,

હારક શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવ યદામિ-ત્વ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિય ! ઉદકરત્ન જિત શત્રો રાજો ભોજનવેળાયામુપનય તદેતેન કારણેન હે સ્વામિન્ ' એતત્તત્ત-તદેવ યદ્ધ વદ્ધિ દૃષ્ટપૂર્વ પરિચોદકમ્ । તતઃ સ્વલ્પ જિતશત્રુ રાજા સુસુદ્ધેરમાત્યસ્ય એવમાચ ક્ષાણસ્ય ૪ એતમર્થમ્- ' હદમેતદેવ પરિચોદકમ્ ' इत्येव रूप भाव नो श्रद्धाति.

રાજા કો સદ્ભૂત વિચ્ચમાન- યાવત્ જિન પ્રજ્ઞસ ભાવો કા વોધ કરાને કે લિયે ઔર ડનસે ઇન્હે યે ણેસે હી હૈ, ઇસ રૂપ સે મનવાને કે લિયે એસા પ્રયત્ન રૂઠું કિ જિસસે ડનકી શ્રદ્ધા આદિ ડન પર જમ જાવે ઔર વે ઇસ યાત કો માનને લગ જાવે । ' એવ સપેહેમિ ૨ નચેવ જાવ પાણિય ઘરિય સદ્ધાવેમિ સદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરય- ણ જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવણેહિ, ત એણ્ણ કારણેણ સા- મી ! એસ સે ફરિહોદણ ! તણ્ણ જિયસત્તુ રાયા સુસુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ એવમાઙ્કલમાણસ્સ ૪ એવમદ્ધ નો સદ્દહ ૩) એસા મૈને વિચાર ક્રિયા વિચાર કરકે ફિર મૈને પાનીયહારક કો બુલાયા- બુલાકર ડસ સે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ ઇસ ઉદક રત્ન કો જિતશત્રુ રાજા કે ભોજન કે સમય પર લે જાના । ઇસ કારણ સે હે સ્વામિન્ । જો આપને પહિલે પરિચોદકુ દેલા થા-વહી યહ પરિચોદકુ હૈ-ઔર ઇસ રૂપ મેં પરિણત હો ગયા હૈ । જિતશત્રુ રાજા ને ઇસ પ્રકાર કહને વાલે ૪ સુસુદ્ધિ અમાત્ય કે ઇસ અર્થ કો કિ યહ વહી પરિચોદકુ હૈ અપની શ્રદ્ધા કા વિષય નહી બનાયા પ્રતીતિ કા વિષય નહી બનાયા, અપની

માટે અને એ લાવો ખરેખર એવા છે, એવુ ઠપાવવા માટે પ્રયત્નો કરવા બોધએ બેથી તેઓને આ લાવો ઉપર સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ બેસી બાય અને તેઓ આ વાતને સ્વીકાર પણ કરે

(એવ સપેહેમિ ૨ ત ચેવ જાવ પાણિયઘરિય સદ્ધાવેમિ સદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણ જિયમત્તુસ્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવણેહિ ત એણ્ણ કારણેણ સામી ! એસ સે ફરિહોદણ । તણ્ણ જિયસત્તુ રાયા સુસુદ્ધિસ્સ અ મચ્ચસ્સ એવમાઙ્કલમાણમ્મ ૪ એવમદ્ધ નો મદ્દહ ૩)

આ પ્રમાણે મે વિચાર કર્યો વિચર કરીને મે પાણી લાવનારને બોલાવ્યો અને બોલાવીને ડહુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ ઉદ્ધરત્ન (સારા પાણી) ને છતશત્રુ રાજા બ્યારે જમવા માટે બેસે ત્યારે લઈ જાવો એટલા માટે હે સ્વામી ! તમે પહેલા ખાઈનુ બે પાણી બેથુ છે તે જ આ પાણી છે અને આ તો તે પાણીનુ જ ઉપાતર છે સુસુદ્ધિ અમાત્યની આ વાત પર-કે આ પાણી તે જ ખાઈનુ છે રાજા છતશત્રુને વિશ્વાસ થયો નહિ રાજાએ અમાત્યની વાત

इत्यर्थः एतम्=पुद्गलानां शुभाशुभरूपेण परिवर्तनलक्षणम् अर्थम्=भावो नो
 श्रद्धात्थस्म=मद्वाक्योपरिश्रद्धा नो कृतवन्तः, ततः=तत्र खलु मम अयमेतद्भूषः=
 वक्ष्यमाणः-आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः सकल्पः
 नानाविधो मानसिको विकल्पः इत्यर्थः समुद्रपथन-अहो ! खलु जितशत्रु
 राजा सतो यावद् भागान् नो श्रद्धाति नो प्रत्येति नो रोचयति तत् श्रेय खलु
 मम जितशत्रो राज्ञः सता यावत् मद्भूतानां जिनपञ्चानां भागानाम् अभिगम
 नार्थाय=अवबोधाय एतमर्थम् ' उपाङ्गणावेत्तए ' -उपादाययितु=प्राप्तयितुं श्रेयइति
 पूर्वेण सम्बन्धः, एव समेक्षे=अहं पर्यालोचयितवान्, समेक्ष्य तदेव यावत् पानीय-

કિ પુદ્ગલોં કા શુભાશુભ રૂપસે પરિણમન હોતા રહના છે- નાના રૂપ
 સે ડનકા પરિવર્તન હોતા રહતા છે યહ પરિવર્તન હોના ડનકા સ્વાભા
 વિક લક્ષણ છે પરંતુ જય આપને ડસ ભાવ કો શ્રદ્ધા મેં પરિણત નહીં
 કિયા-મેરે વચનોં પર આપકો વિશ્વાસ નહીં જમા તય મુઝે હમ પ્રકાર
 કા આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત નાના પ્રકાર કો
 વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ (અહોણ જિયમત્તૂ સતે જાવ ભાવે નો સદ્દહઢ, ન
 પત્તિયાહ, રોણહ, ત સે ય રાલુ મમ જિયસત્તૂસ્સ રણ્ણો સતાણ જાવ
 સઘ્ભૂયાણ જિણપન્નત્તાણ ભાવાણ અભિગમણદ્વયાણ ઇયમદ્ધ ઉવાહ
 ણાવેત્તણ) દેલ્હો યહ કિતને આશ્ચર્ય કી વાત છે કિ જો જિતશત્રુ રાજા
 સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત્ જિન પ્રજ્ઞસ ભાવો કો અપની શ્રદ્ધા કા વિષય
 ભૂત નહીં વના રહે છે ડન પર પ્રતીતિ નહીં કર રહે છે, ડન પર અપની
 રુચિ નહીં જમા રહે છે । હસલિયે મુઝે યહ ઉચિત છે કિ મેં જિતશત્રુ

કથું હંતુ કે શુભાશુભ રૂપમા પુદ્ગલોં પરિણમન થતુ જ રહે છે અનેક
 રૂપમા તેઓમા પરિવર્તન થતુ જ રહે છે આલુ પરિવર્તન તેઓંનુ એક
 સ્વાભાવિક લક્ષણ છે પણ બ્યારે તમે મારી આ વાત શ્રદ્ધાપૂર્વક સાંભળી નહિ,
 મારા કથન ઉપર વિશ્વાસ કયોં નહિ, ત્યારે મારા મનમા આ જાતના આધ્યા
 ત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત મનોગત ઘણા વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે—

(અહોણ જિયસત્તૂ સતે જાવ ભાવે નો સદ્દહઢ, નો પત્તિયાહ, નો રોણહ, ત
 સેય રાલુ મમ જિયસત્તૂસ્સ રણ્ણો સતાણ જાવ સઘ્ભૂયાણ જિણપન્નત્તાણ ભાવાણ
 અભિગમણદ્વયાણ ઇયમદ્ધ ઉપાઙ્ગણાવેત્તણ)

જુઓ આ કેવી આશ્ચર્યની વાત છે કે હતશત્રુ રાજા સદ્ભૂત વિદ્યમાન
 યાવત્ હનપ્રજ્ઞસના ભાવો ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવતા નથી, તેમના ઉપર વિશ્વાસ
 મૂકતા નથી અને ચોતાની રૂચિ પણ તેમના પ્રત્યે જમાવતા નથી એટલે મારે
 હવે હતશત્રુ રાજાને સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત્ હનપ્રજ્ઞસભાવોનો બોધ આપવા

સંસ્કૃત । તેડપિ તૈવ સમારયતિ, સમાર્ય જિતશત્રો' ' ઉવર્ણેતિ ' ઉપનયન્તિ= સંમીપમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ શિતશત્રુ રાજા તદુદકરત્ન કરતલે આસ્વાદયતિ, આસ્વાદનીય યાવત્ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહાદનીય તદુદક જ્ઞાત્વા સુબુદ્ધિમેમાત્ય ક્ષેપ્દ યતિ, શબ્દયિત્વા ઇયમવદત્-દે સુબુદ્ધે । એતે સ્વલ્લ ત્વયા સન્તઃ=વિધમાનાઃ ' જાંવ ' યાવત્ સદ્ભૂતાઃ ભાવાઃ કુત ઉપલબ્ધાઃ ? । તતઃ સ્વલ્લ સુબુદ્ધિજિતશત્રુમેવમવદત્-એતે સ્વલ્લ હે સ્વામિન્ । મયા સન્ત યાવત્ સદ્ભૂતા ભાવાઃ જિનવચનત ઉપલબ્ધાઃ

ફિર ઉસે સંસ્કારિત કરો । હસ પાઠ કો સમુચિત રૂપે સંમન્વિત કરને કે લિયે જૈસા પીછે લિખા ગયા હૈ વૈસા હી સંબન્ધ યહાં જાને છેના ચાહિયે । રાજા કી આજ્ઞાનુસાર ઉન લોગો ને વૈસા હી કિયા । સંસ્કારિત કરકે ફિર વે લોગ ઉમે જિતશત્રુ રાજા કે પાસ છે ગયે । જિતશત્રુ રાજા ને ઉસ સંસ્કારિત ઉદક કો અપની હથેલી પર રક્ત્વા-ઔર ઉસે ચલા-જવ ચલ કર ઉસે યહ વિશ્વાસ હો ગયા કિ યહ જંલ આસ્વાદનીય એવ સર્વેન્દ્રિય-ગાત્ર પ્રહાદનીય બન ગયા હૈ તબ ઉસ ને સુબુદ્ધિ અમાત્ય કો બુલવાયા । બુલવા કર ઉસ સે એસા કહા- (સુબુદ્ધી ' ! એણ તુમે સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા કઓ ઉવલદ્ધા તણ સુબુદ્ધી જિય સત્તૂ એવ વયાસી-એણ સામી મણ સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા જિણ-વયણાઓ ઉવલદ્ધા, એણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-ત ઇચ્છામિણે દેવાણુપ્પિયા ! તબ અતિણ જિણવયણ નિસામેત્તણ) સુબુદ્ધે ! વે વિચર્માને યાવત્ સદ્ભૂત ભાવ તુમને કહા સે ઉપલબ્ધ કિયે હૈ ' તથ સુબુદ્ધિ ને

માટેના બધા ઉપાયો તેમજ દ્રવ્યોથી પાણીને નિર્મળ બનાવેા પહેલાની જેમજ અહીં પણ આગળની બધી વિગત બાણી લેવી બેઠએ તે લોકોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધું કામ પૂર કયું પાણી બ્યારે નિર્મળ થઈ ગયું ત્યારે તે લોકો પાણીના માટલાઓને રાજાની સામે લઈ આવ્યા રાજાએ અનેક સંસ્કારો વડે નિર્મળ બનાવેલા પાણીને હથેળી ઉપર લીધું અને તેને આખ્યું આખ્યા બાદ રાજાને આ પ્રમાણે વિશ્વાસ થઈ ગયો કે ખરેખર આ પાણી આસ્વાદનીય અને સર્વેન્દ્રિય ગાત્ર-પ્રહાદનીય થઈ ગયું છે ત્યારે તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું

સુબુદ્ધી ' એણ તુમે સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા કઓ ઉવલદ્ધા તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ વયાસી એણ સામી મણ સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા જિણવયણાઓ ઉવલદ્ધા એણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી ત ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! તબ અતિણ જિણવયણ નિસામેત્તણ)

હે સુબુદ્ધે ! એ વિધમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવો તમે કયાથી મેળવ્યા

નો પ્રત્યેતિ, નો રોચયતિ, અશ્રદ્ધાન, અપ્રતિયન્, આરોચમાન, 'અન્નમતરઠા
 ણિજ્ઞે' અમ્યન્તર સ્થાનીયાન્=સ્વસમીપરિવતાન્ પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્કા
 એવમવદત્-ગચ્છત સ્વલ્લ યુય દે દેવાનુપ્રિય ! 'અતરાવળાઓ' અન્તરાવળાત્=
 ગ્રામમધ્યસ્થિત કુમ્ભકારહટાત્ નવધટકાન્ 'પઢણ' પટર્ણશ્રિ=જલગાલનવલ્લ
 સ્વળ્હાન્ શૂલીત યાત્રદ્ ઉદકસમારણીયૈઃ ઉદકમસ્કારયોગ્યૈઃ દ્રવ્યૈ સમારયત=
 રુચિકા વિષય નહીં પનાયા (અસદ્દેશમાણે ૩) ઇમ પ્રકાર શ્રદ્ધા રહિત
 રુચિ રહિત, પ્રતીતિ રહિત ઘને હુણ રાજા જિતશત્રુને (અન્નિમતરઠાણિજ્ઞે
 પુરિસે સદાવેદ) અપને પાસ મેં સદા રહેને વાલે પુરુષોં કો બુલાયા (સ
 દાવિત્તા એવ વયાસી) બુલાકર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—(ગચ્છહર્ણ
 તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અતરાવળાઓ નવધટણ પઢણ ય ગેળહર, જાવ
 ઉદગસમારણિજ્ઞેહિં દન્વેહિં સમારેહ તે વિ તહેવ સમારેતિ,
 સમારિત્તા જિયસત્તૂસ્સ ઉવળેતિ, ઉવળિત્તા તળણ જિયસત્તૂરાયા
 ત ઉદકરયણ કરયલસિ આસાણ્હ, આસાયણિજ્ઞ જાવ સન્નિવિદિ-
 યગાય પલ્હાયણિજ્ઞ જાણિત્તા સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદા-
 વિત્તા એવ વયાસી) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ જાઓ ઓર બાજોર
 સે નવીન ઘડોં કો એવ જલ છાન ને, કે લિયે વચ્છોં કે લઘોં કો
 છઘોં કો-લે આઓ ! યહા અન્તરાવળા કા અર્થ "ગ્રામ કે મધ્ય મેં
 સ્થિત કુમ્હારો કા હાટ યા સામાન્ય બાજાર હૈ । તેસા હી અર્થ હસ
 શબ્દ કા પહિલે ક્રિયા ગયા હૈ । યાવત્ ઉદક સસ્કાર યોગ્ય દ્રવ્યોં સે

ઉપર ન તે પ્રતીતિ પણ થઈ અને ન તે પ્રત્યે પોતાની અભિરુચિ બતાવી
 (અસદ્દેશમાણે ૩) આ ગીતે શ્રદ્ધા, રુચિ અને પ્રતીતિ રહિત થયેલા રાજા
 શત્રુશત્રુએ (અન્નિમતરઠાણિજ્ઞે પુરિસે સદાવેદ) હ મેશા ચોવીસે ડલાક પોતાની
 પાસે રહેનારા બાણુસોને બોલાયા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને
 તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું

(ગચ્છહર્ણ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અતરાવળાઓ નવધટણ પઢણ ય ગેળહર જાવ
 ઉદગ સમારણિજ્ઞેહિં દન્વેહિં સમારેહ તે વિ તહેવ સમારેતિ, સમારિત્તા જિયસત્તૂ-
 સ્સ ઉવળેતિ, ઉવળિત્તા તળણ જિયસત્તૂરાયા ત ઉદકરયણ કરયલસી આસાણ્હ
 આસાયણિજ્ઞ જાવ સન્નિવિદિયગાયપલ્હાયણિજ્ઞ જાણિત્તા સુબુદ્ધિ અમચ્ચ
 સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બન્નમતરમા બાળો અને ત્યાથી નવા માટલાઓ
 તેમજ પાણી ગાળવા માટે વચ્છોના ઢકડા બરીલી લાવો 'અન્તરાવળા'નો અર્થ
 ગામની વચ્ચેનું કે બારેનું બન્નર કે સામાન્ય બન્નર છે પહેલા પાપુ આ શબ્દનો
 અર્થ આ પ્રમાણે જ કરવામા આવ્યો છે ત્યારબાદ પાણીને

ન્દિતઃ હર્પવશવિસર્પદ્ હૃદય' સુબુદ્ધિમમાત્યમેવમત્રાદીત્-શ્રદ્ધામિ સ્ખલ્લે હે દેવાનુ પ્રિય ! નૈર્ગન્થ્ય પ્રવચન 'તત્યમેતત્' ઇત્યાદિ યાવત્ તદ્ યથૈવ યદ્ યુયં વદથ, તત્=તસ્માત્કારણાત્ ઇચ્છામિ સ્ખલ્લ તવાત્તિકે પચ્ચાણુવ્રતિક સમશિક્ષાવ્રતિક યાવદ્ એવ દ્વાદશવિધ શ્રાવકધર્મમ્ 'ઉપમપજ્જિત્તા' ઉપસમ્પધ=સ્વીકૃત્ય વિહરુમ્ । યથા સુખ હે દેવાનુપ્રિય ! હે રાજન્ ! યદિ રોચતે તદા એવમેવ કુરુ તત્ર મામ-

સુનકર ઓર વસે હૃદય મે અવધારિત કર વહુત હી અધિક પ્રસન્ન એવ તુષ્ટ હુણ । હર્પ સે ગદ્ગદ્ હોકર ઝન્હોને સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે હસં પ્રકાર કાહા-(સદ્દહામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગય પાવયણ ૩ જાવ સે જહેવ જ તુઁમે વયહ, ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિણ પચ્ચાણુવ્વડ્ય સત્તસિ-ક્ષાવડ્ય જાવ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરિત્તણ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પઢિવધં તણ સે જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિણ પચ્ચાણુવ્વ-ડ્ય જાવ દુવાલસવિહ સાવયધમ્મ પઢિવજ્જહ, તણ જિયસત્તૂ સમણો વાસણ અભિગયજીવાજીવે જાવ પઢિલામે માણે વિહરહ) હે દેવાનુ પ્રિય ! મેં હસ નિર્ગન્થ્ય પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતા હું હસ પર રુચિ કેરતા હું યહ નિર્ગન્થ્ય પ્રવચન સર્વથા સત્ય હૈ ઇત્યાદિ યાવત્ જૈસા તુમ ફરતે હો વહ વૈસા હી હૈ । હસ લિયે મેં તુમ્હારે પાસ પચ્ચ અણુવ્રત સાત શિ-ક્ષાવ્રત રૂપ દ્વાદશ વિધ શ્રાવક ધર્મ કો સ્વીકાર કરના ચાહતાહું । હસ પ્રકાર રાજા કી વાત સુનકર સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને ઉસસે કહા-હે દેવાનુ-પ્રિય ! તુમ્હે જિસ પ્રકાર સુખ હ-વૈસા કરો પ્રમાદ ન કરો શુભ કર્મ મેં

સાલણીને એને તેને શરીરમા અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ થયો હતો થી ગળગળો થઈને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે--

(સદ્દહામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગય પાવયણ ૩ જાવ સે જહેવ જ તુઁમે વયહ ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિણ પચ્ચાણુવ્વડ્ય સત્તસિક્ષાવડ્ય જાવ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરિત્તણ અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પઢિવધં તણ સે જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિણ પચ્ચાણુવ્વડ્ય જાવ દુવાલમવિહ સાવયધમ્મ પઢિવજ્જહ તણ જિયસત્ત સમણોવાસણ અભિગયજીવાજીવે જાવ પઢિલામેમાણે વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગન્થ્ય પ્રવચનમા હું શ્રદ્ધા રાખુ છું, આમા હું રુચિ રાખુ છું આ નિર્ગન્થ્ય પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે બેબુ તમે કહો છો તેવું જ આ નિર્ગન્થ્ય પ્રવચન છે એથી હું તમારી પાસેથી પણ અતુલ્ય અને સાત શિક્ષા વ્રત ૩૫ આર (૧૨) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા આહુ છું આ રીતે રાજાની વાત સાલણીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ ગમે તેમ કરો પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમા મોહુ કરવું યોગ્ય

તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેયમપદત્-તદ્દ્વ ઇન્દ્રિયામિ સ્વલુ દે દેવાનુપ્રિય ! તત્ત્વ-
 ન્તિકે જિનવચન ' નિસામેત્તણ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુમ્ । તત્ત્વ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિત
 શત્રોર્વિચિત્ર=અદ્ભુત પૂર્વમશ્રુત કેવલિપ્રજ્ઞસ=જિનભાષિત ધર્મ=શ્રુતચારિત્રત્ત્વ
 પરિકથયતિ, ' તમાઝ્ઘલ્લહ ' તમારય તિ=તદેવ પ્રતિપાદયતિ-' જહા ' યથા=
 યેન-કર્મસયોગેન જીવા ગમ્યન્તે યેન ચ મુચ્યન્તે યાત્ પચ્છાણુતતાનિ । તત્ત્વ
 સ્વલુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધેરન્તિકે ધર્મ શ્રુત્વા નિશમ્ય=હૃદિસમવધાર્ય દ્વણ્ણુત્તિત્તાન-

જિતશત્રુ રાજા સે ઇસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ । યે વિશ્વમાન યાવત્
 સદ્ભૂત ભાવ મેને જિન પ્રવચન સે ઉપલબ્ધ કિયે હૈ । જિતશત્રુ ને તથ
 સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મે તુમ્હારે પાસ જિન પ્રવચન
 કો સુનના ચાહતા હૈ । (તણ સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વસ વિચિત્ત
 કેવલીપ્પન્ત ચાઉજ્ઞામ ધમ્મ પરિકહેઠ, તમાઝ્ઘલ્લહ, જહા જીવા વજ્ઞ
 તિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિસ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્છા
 ણિસમ્મ દ્વઠ્ઠં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી) સુબુદ્ધિ પ્રધાન ને તથ
 જિતશત્રુ રાજા કો પૂર્વ મેં કમી નહી સુના ગયા એસા કેવલિ પ્રજ્ઞસ-
 સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્રદ્વારા પ્રતિપાદિત ચાતુર્યામ વાલા શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સુના-
 યા । ઉસે હી વિસ્તાર રૂપ સે ઉન્હેં સમજાયા । જીવ જિસ પ્રકાર કર્મો
 સે બધતે હૈ, ઓર જિસ પ્રકાર કર્મો સે મુક્ત હોતે હૈ-છૂટતે હૈ યહ
 સુનાયા સમજાયા યાવત્ શ્રાવક ધર્મરૂપ પચમ અણુવ્રતોં કો સમજાયા
 હસ તરહ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે મુખ સે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિશ્વમાન
 યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મે જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે, જિતશત્રુએ
 સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું જિનપ્રવચન
 સાંભળવાની ઈચ્છા રાખું છું

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વસ વિચિત્ત કેવલિપ્પન્ત ચાઉજ્ઞામ ધમ્મ પરિકહેઠ
 તમાઝ્ઘલ્લહ, જહા જીવા વજ્ઞતિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિ-
 સ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્છા ણિસમ્મ દ્વઠ્ઠં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જિતશત્રુ રાજાને પહેલા કોઈપણ વખતે સાંભળેલા નહિ
 એવો કેવળી પ્રજ્ઞસ-સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામવાળો શ્રુત-ચારિત્ર
 રૂપ ધર્મ સાંભળાવ્યો અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો એ પ્રમાણે એવ કર્મો
 વડે બધાય છે અને એ પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિગેની બધી વિગત
 કહી સંભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાંચ અણુવ્રતોને સમ
 જાણ્યા આ રીતે જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યના સુખેથી

ન્દિતઃ હર્પવશવિસર્પદ્ હૃદયઃ સુવુદ્ધિમમાત્યમેવમવાદીત્-શ્રદ્ધામિ સ્વલ્લે હે દેવાનુ-
પ્રિય ! નૈર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન 'તત્યમેતત્' રૂપાદિ યાત્ તદ્ યયૈવ યદ્ યૂયં વદયં,
તત્=તસ્માત્કારણાત્ ઇચ્છામિ સ્વલ્લ તવાન્તિકે પચ્ચાણુવત્તિક સપ્તશિક્ષાવત્તિક યાવદ્
એવ દ્વાદશવિધ શ્રાવરુધર્મમ્ 'ઉપસપજ્જિત્તા' ઉપસમ્પદ્ધ=સ્વીકૃત્ય વિહર્તુમ્ ।
યથા સુખ હે દેવાનુપ્રિય ! હે રાજન્ ! યદિ રોચતે તદા એવમેવ કુરુ તત્ર માપ

સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મે અવધારિત કર વહુત હી અધિક પ્રસન્ન
એવ તુષ્ટ હુએ । હર્પ સે ગદગદ હોકર ઉન્હોને સુવુદ્ધિ અમાત્ય સે હસે
પ્રકાર કાહા-(સદ્દામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગથ પાવયણ ૩ જાવ સે
જહેવ જ તુઝમે વયહ, ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિએ પચ્ચાણુવ્વહ્ય સત્તસિ-
ક્ષાવહ્ય જાવ ઉપસપજ્જિત્તાણ વિહરિત્તએ, અદાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા
પઢિવધ૦ તણ સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિએ પચ્ચાણુવ્વ-
હ્ય જાવ દુવાલસવિહ સાવયધમ્મ પઢિવજ્જહ, તણ જિયસત્તુ સમણો
વાસએ અભિગયજીવાજીવે જાવ પઢિલામે માણે વિહરહ) હે દેવાનુ-
પ્રિય ! મેં હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતા હું હસ પર રહિ કરતા
હું યહ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સર્વથા સત્ય હૈ રૂપાદિ યાવત્ જૈસા તુમ કહતે
હો વહ વૈસા હી હૈ । હસ લિયે મેં તુમ્હારે પાસ પચ્ચ અણુવત સાત શિ-
ક્ષોવત રૂપ દ્વાદશ વિધ શ્રાવક ધર્મ કો સ્વીકાર કરના ચાહતાહું । હસ
પ્રકાર રાજા કી વાત સુનકર સુવુદ્ધિ અમાત્ય ને ઉસસે કહા-હે દેવાનુ-
પ્રિય ! તુમ્હેં જિસ પ્રકાર સુખ હ-વૈસા કરો પ્રમાદ ન કરો શુભ કર્મ મેં

સાલણીને એને તેને શરીરમા અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ
થયો હર્ષથી ગળગળો થઇને તેણે સુવુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે--

(સદ્દામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગથ પાવયણ ૩ જાવ સે જહેવ જ તુઝમે વયહ
ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિએ પચ્ચાણુવ્વહ્ય સત્તસિક્ષાવહ્ય જાવ ઉપસપજ્જિત્તાણ
વિહરિત્તએ અદાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પઢિવધ૦ તણ સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિસ્સ
અમચ્ચસ્સ અતિએ પચ્ચાણુવ્વહ્ય જાવ દુવાલમગિહ સાવયધમ્મ પઢિવજ્જહ તણ
જિયસત્ત સમણોવાસએ અભિગયજીવાજીવે જાવ પઢિલામેમાણે વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનમા હું શ્રદ્ધા રાખુ છું, આમા હું
રુચિ રાખુ છું આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે બેબુ તમે કહેો છો
તેવું જ આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન છે એથી હું તમારી પાનેથી પચ્ચ અણુવત એને
સાત શિક્ષા વત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા આહુ છું
આ રીતે રાજાની વાત સાલણીને સુવુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય !
તમને જેમ ગમે તેમ કરો પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમા મેહુ કરવું યોગ્ય

તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેયમપદત્-તદ્દ્વિદ્યમિ સ્વલુ દે દેવાનુપ્રિય ! તવા-
ન્તિકે જિનવચન ' નિસામેત્તણ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુમ્ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિત
શત્રોર્વિચિત્ર=અદ્ભુત પૂર્વમશ્રુત કેવલિપ્રજ્ઞસ=જિનભાષિત ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ
પરિકથયતિ, ' તમાદ્ધક્વહ ' તમાગય તિ-તદેય પ્રતિપાદયતિ-' જહા ' યથા=
યેન-કર્મસયોગેન જીવા વખ્યન્તે યેન ચ મુચ્યન્તે યાગત્ પચ્ચાણુગતાનિ । તત
સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધેરન્તિકે ધર્મ શ્રુત્વા નિશમ્ય=હૃદિસમવધાર્ય દ્વણ્ણુવચિત્તાન-

જિતશત્રુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ ! યે વિચ્ચમાન યાવત્
સદ્ભૂત ભાવ મૈને જિન પ્રવચન સે ઉપલબ્ધ ક્રિયે હં । જિતશત્રુ ને ત્થ
સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મેં તુમ્હારે પાસ જિન પ્રવચન
કો સુનના ચાહતા હું । (તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત
કેવલીપન્નત્ત ચાઉજ્જામ ધમ્મ પરિકહેહ, તમાદ્ધક્વહ, જહા જીવા વજ્ઞા
તિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્છા
ણિસમ્મ દ્વહં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી) સુબુદ્ધિ પ્રધાન ને ત્થ
જિતશત્રુ રાજા કો પૂર્વ મેં કમી નહી સુના ગયા એસા કેવલિ પ્રજ્ઞસ-
સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્રદ્વારા પ્રતિપાદિત ચાતુર્યામ વાલા શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સુના
યા । ઉસે હી વિસ્તાર રૂપ સે ઉન્હેં સમજાયા । જીવ જિસ પ્રકાર કર્મો
સે બધતે હેં, ઓર જિસ પ્રકાર કર્મો સે મુક્ત હોતે હે-છૂટતે હેં યહ
સુનાયા સમજાયા યાવત્ આવક ધર્મરૂપ પચમ અણુવ્રતોં કો સમજાયા
હસ તરહ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે મુગ્ધ સે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિચ્ચમાન
યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મે જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે જીતશત્રુએ
સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું જીનપ્રવચન
સાલગવાની ઈચ્છા રાખું છું

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત કેવલિપન્નત્ત ચાઉજ્જામ ધમ્મ પરિકહેહ
તમાદ્ધક્વહ, જહા જીવા વજ્ઞાતિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ
સ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્છા ણિસમ્મ દ્વહં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને પહેલા કેઇપણ વખતે સાલગેલો નહિ
એવો કેવળી પ્રજ્ઞસ-સર્વજ્ઞ જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામવાળો શ્રુત-ચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સાલગાવ્યો અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો જે પ્રમાણે જીવ કર્મો
વડે બધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત
કહી સાલગાવી અને સમજાવી યાવત્ આવક ધર્મ રૂપ પાંચ અણુવ્રતોને સમ
જાવ્યા આ રીતે જીતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યને

નીના સમવસરણ જાતમ્ । જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિરમાત્યથ નિર્ગચ્છતિ=વમશ્રવણાર્થ
 ગ્રામાઙ્ઘર્હિર્નિસરતિ સુબુદ્ધિઃ વર્મશ્રુત્વા 'અન્યત્સર્વં પૂર્વવત્, નવર=વિશેષસ્ત્વ
 યમ્ યત્ જિતશત્રુ રાજાનમાપૃચ્છામિ યાવત્-યુષ્માક સમીપે મત્રજામિ દીક્ષા પ્રહિષ્યા-
 મીત્યર્થ । સ્થવિરાઙ્ઘુ -યથામુખ હે દેવાનુપ્રિય ! મા પ્રતિગ્ધ કુરુ । તતઃ खलु
 સુબુદ્ધિ યેવ જિતશત્રુન્ત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય એમવાદીત્-એવ खलु હે
 સ્વામિન્ ! જિતશત્રો ! મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મ નિશાન્ત =શ્રુતઃ સોઽપિ
 ધર્મોમે ' ઇચ્છિએ ' ઇષ્ટ=વાઙ્ઘિતઃ, ' પહિન્ચિએ ' પ્રતીષ્ટ =વિશેષતો વાન્ચિત ,
 ' અભિત્સુએ ' અભિરુચિત =આસેવનરૂપેણ સર્વથા વાઙ્ઘિત । તત. खलુ તસ્માત્
 કારણાત્ અહ હે સ્વામિન્ ! સસારમઉગ્ગિગે ' સસારમયોદ્ધિગ્નઃ=સસારમયવ્રસ્તઃ

મય મે-ઔર उनके आवक वर्म के पाञ्चन करने के समय में-स्थविर
 मुनियो का वहा आगमन हुआ । जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य
 धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप
 आये । सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्वविर मुनियो से निवेदन
 किया-मदन ! मे जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर
 मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ । स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का
 अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जिससे सुख हो
 वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलग्न करना हितावह नहीं है । इस तरह
 सुबुद्धि वहाँ से आकर जहाँ जितशत्रु राजा थे वहाँ आया वहाँ आकर
 कहा-स्वामिन् ! मैंने स्वविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना
 है । वह मुझे बहुत ही स्वा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है,
 मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ़ गई है । मे चाहता कि मैं

હતા તે શાળે અને તેઓ જ્યારે આવજ ધર્મનું પાલન કરતા હતા તે સમયે-
 ત્યા સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા છતાંજ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ
 માટે પોતપોતાને ત્યાથી નીકળીને તેમની પાસે પહોંચ્યા ધર્મનો ઉપદેશ સાલ
 બીને સુબુદ્ધિએ મુનિએ ને વિનતી કરી કે હે ભદ્રત ! છતાંજ રાજાની આજ્ઞા
 મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને
 મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા આહુ છું સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો
 બાબતે કહ્યું કે હે દેવનુપ્રિય ! તમને જેમા મુખ મળતું હોય તેમ કરો સારા
 કામોમા મોડુ કરવુ થો ય કહેવાય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાથી
 આવ્યાને છતાંજ રાજાની ખબર પડોચો અને તેણે રાજાને વિનતી કરતા કહ્યું કે
 હે સ્વામી ! સ્થવિર મુનિઓના મોથી મે ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને
 ખૂબ જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે વિશેષ રૂપમા હું
 તેને આહવા લાગ્યો છું મારી ઈચ્છા છે કે સચમ ધાવણ કરીને પોતાનું જીવન

તિવન્વ કુરુ=શુભકાર્યે વિલમ્બો ન કરણીયત્યર્થઃ । તતઃપરં સ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધે-
સ્માત્યસ્યાન્તિકે પચ્છાણુવતિક યાત્ત્વ દ્વાદશવિધ શ્રાવકધર્મ પ્રતિપદ્યતે । તતઃ
સ્વલુ જિતશત્રુ શ્રમણોપાસક 'અભિગયજીગાજીને' અભિગતજીગાજીર.=પરિશ્રવ
જીવાજીરસ્વરૂપ' યાત્ત્વ પ્રામુકૈપણીયૈરશનાદિભિઃ શ્રમણનિર્ગ્રન્થાન્ પ્રતિલામયન્
=આહારાદિ દદન્ વિદરતિ=તિષ્ઠતિસ્મ । તસ્મિન્ કાલે જિતશત્રુરાજ્યશાસનકાલે
તસ્મિન્ સમયે=શ્રાવકધર્મપ્રતિપાલનસમયે 'થેરાગમણ' સ્થવિરાગમન=સ્થવિરમુ-

વિલમ્બ કરના યોગ્ય નહીં છે-ઇસ તરફ સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે મુલ્ક સે
સુનકર જિતશત્રુ રાજા ને વસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે પાંચ અણુવત એક
સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ દ્વાદશ પ્રકાર કા શરસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર લિયા ।
ઇસ તરફ વે જિતશત્રુ રાજા શ્રમણોપાસક યન ગયે । ઓર જીવ એક
અજીવ તત્ત્વ કે સ્વરૂપ જાતાં મીં હો ગયે । પ્રમુક ણ્વણીય આહારાદિ
શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ સાધુઓં કે લિયે પ્રદાન કરને લગે । (તેણ કાલેણ તેણ
સમણ થેરાગમણ જિયસત્તૂ રાયા સુબુદ્ધી ય નિગ્ગચ્છઈ, સુબુદ્ધી ધમ્મ
સોચ્છા જ નવર જિયસત્તૂ આપુચ્છામિ જાવ પન્વયામિ, આહાસુદ્ધ દેવા-
ણુપ્પિયા । તણ સુબુદ્ધી જેણેવ જિયસત્તૂ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિ-
ત્તા, એવ વયાસી-એવ સ્વલુ સામી ! મણ થેરાણ અતિણ ધમ્મે નિસતે,
સે વિ ય, ધમ્મે ઇચ્છિણ પઢિચ્છિણ, અભિરુહણ, તણ અહ સામી ! સ-
સારમહાવિગ્ગે મીણ જાવ ઇચ્છામિણ તુવમેહિં અગ્ગણુનાણ સં જાણ
પવહત્તણ) વસ કાલ જિતશત્રુ રાજા કે રાજ્યશાસન કાલ મેં-વસ સ

દેખાય નહિ આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી વાત સાંભળીને જિતશત્રુ
રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્ય પાસેથી પાંચ અણુવત અને સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ
બાર પ્રકારનો શુદ્ધસ્થ ધર્મ સ્વીકારી લીધો આ પ્રમાણે તે જિતશત્રુ રાજા
શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને જીવ તેમજ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને સમજનારા
પણ થઈ ગયા પ્રામુક એપણીય આહાર વગેરે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ સાધુઓને
આપવા લાગ્યા

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ થેરાગમણ જિયસત્તૂ રાયા સુબુદ્ધી ય નિગ્ગચ્છઈ,
સુબુદ્ધી ધમ્મ સોચ્છા જ નવર જિયસત્તૂ આપુચ્છામિ જાવ પન્વયામિ અહાસુદ્ધ દેવા
ણુપ્પિયા । તણ સુબુદ્ધી જેણેવ જિયસત્તૂ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા એવ
વયાસી એવ સ્વલુ, સામી મણ થેરાણ અતિણ ધમ્મે નિસતે, સે વિ ય ધમ્મે ઇચ્છિણ
પઢિચ્છિણ, અભિરુહણ, તણ અહ સામી ! સસારમહાવિગ્ગે મીણ જાવ ઇચ્છામિ
ણ અગ્ગણુનાણ સં જાવ પવહત્તણ)

તે કાળે અને તે સમયે એટલે કે જિતશત્રુ રાજા બ્યારે શાસન કરતા

नीना समदसरण जातम् । जितशत्रु राजा सुबुद्धिरमात्यथ निर्गच्छति=वमश्रवणार्थ
ग्रामावद्विर्निस्सरति सुबुद्धि' वर्मश्रुत्वा 'अन्यत्सर्वं पूर्ववत्, नवर=विशेषस्त्व
यम् यत् जितशत्रु राजानमावृज्यामि यावत्-युष्माक समीपे मत्रजामि दीक्षा ग्रहिष्या-
मीत्यर्थ । स्थविराउचु-यथासुख हे देवानुप्रिय । मा प्रतिबन्ध कुरु । ततः खलु
सुबुद्धि र्यत्रेव जितशत्रुस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु हे
स्वामिन् । जितशत्रो । मया स्थविराणामन्तिके धर्म निशान्त=श्रुतः सोऽपि च
धर्मो मे ' इच्छिष्ट' इष्ट=वाञ्छितः, ' पडिच्छिष्ट' प्रतीष्ट=विशेषतो वाञ्छित,
' अभिच्छिष्ट' अभिरुचित=आसेवनरूपेण सर्वथा वाञ्छित । ततः खलु तस्मात्
कारणात् अहं हे स्वामिन् । ससारमउगिगमे' समारमयोद्विग्न=ससारमयप्रस्तः

मय में-और उनके आचक वर्म के पालन करने के समय में-स्थविर
मुनियों का वहाँ आगमन हुआ । जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य
धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप
आये । सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियों से निवेदन
किया-भदन् ! मैं जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर
मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ । स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का
अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें जिससे सुख हो
वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है । इस तरह
सुबुद्धि वहाँ से आकर जहाँ जितशत्रु राजा थे वहाँ आया वहाँ आकर
कहा-स्वामिन् । मैंने स्थविर मुनिजनों के सुख से धर्म का उपदेश सुना
है । वह मुझे बहुत ही रचा है, मेरी उच्छा का विषय भूत बन गया है,
मेरी चाहना उम तरफ विशेष रूप से उठ गई है । मैं चाहता कि मैं

हूँ तो दोगे अने तेजो ब्यारे श्रावण धमनु पालन करता हूँ तो सबथे-
त्या स्थविर मुनिजो आग्या एतशत्रु राजा अने सुबुद्धि अमात्य धर्मश्रवण
भाटे पोतये ताने लाथी नीकणीने तेमनी पासे पडोअ्या धर्मने उपदेश साल
णीने सुबुद्धिजे मुनिजे ने विनती कही के छे लहत । एतशत्रु राजानी आजा
मेणवीने तेमज्जीण पणु धला व्यवव्याजो वगेरे उरीने तमागी पासे आवीने
मुनि दीक्षा धारण करवा आहु छु स्थविराजे सुबुद्धि अमात्यना विचारो
लाखीने कहु के छे देव अनुप्रिय । तमने जेमा सुण मणतुं होय तेम उरो सारा
काओमा भोडु करवु योअय उरेवाय नहि आ रीते आजा मेणवीने सुबुद्धि त्याथी
आवाने एतशत्रु राजानी जने पडोअ्यो अने तेजे राजने विनती कृता कहु के
छे स्वामी । स्थविर मुनिजोना भोथी जे धर्मने उपदेश मागज्यो छे ते मने
भूषण गभी जयो छे भागी छिअ ते तज्ज आकर्षा छे विशेष उपमा हु
तेने आहवा लाग्यो छु भारी छिअ छे के समय धारण उगीने पोतानु एवन

‘ભીષ’મીતઃ જન્મમરણાદિ દુઃસ્વેમ્યો મય માસઃ, અન્ય યાવદ્ દૃશ્યમિ સ્વલ
યુષ્માભિરમ્યનુજ્ઞાતઃ સન્ યાવત્ સ્થવિરાણામન્તિકે પ્રગ્નિતુમ્ । તતઃ સ્વલ જિત-
શત્રુઃ સુબુદ્ધિમેવમવાદીત્-‘અચ્છામુ’ તિષ્ઠેમ યય તાગદ્ ગૃહે દે દેવાનુમિય !
કતિપયાનિ યર્ષાણિ, ઉદારાન્ યાવત્-માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્ ભુજ્ઞાનાઃ સન્તઃ,
તતઃ પશ્ચાત્-તદનન્તર શન્દાદિપ્રિયોયમોગાનન્તરમ્ ‘અગમ્યઓ’ એકુતઃ-સાર્દમ્
સ્થવિરાણામન્તિકે મુણ્ડો ભૂત્તા યાવત્ પ્રગ્નિષ્યામઃ । તતઃ સ્વલ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રો-
રેતમર્વ-પશ્ચાદીક્ષાગ્રહણરૂપ માન પ્રતિશૃણોતિ-સ્ત્રીકરોતિ । તતઃ સ્વલ તસ્ય જિત
શત્રોઃ સુબુદ્ધિના સાર્દે ત્રિપુલાન્ માનુષ્યકાન્ ભોગભોગાન્ મત્યનુભવતો દ્વાદશ

સયમ ધારણ કર અપને જીવન કો સફલ પનાઁ । હસ લિયે હે સ્વા
મિન્ । સસાર મય સે ઉદ્ધિગ્ન યના હુઆ મ જન્મ મરણ કે દુલો સે મય
મીત હોકર વાહતા હૂં કિ આપસે આજ્ઞાપિત હો સ્થવિરો કે પાસ દીક્ષા
ધારણ કરલૂ । (તર્ણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી અચ્છામુ તાવ દેવાણુ
કહવયાહિતિ વાસાહ ઊરાલાહ જાવ ભુજમાણા તઓ પચ્છા અગમ્યઓ થેરાણ
અતિય મુઢે મવિત્તા જાવ પન્વહસ્સામો) અમાત્ય કિ હસ વાત કો
સુનકર જિતશત્રુ રાજાને ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે હસ પ્રકાર કહો ।
દેવાનુમિય ! હમ લોગ કુછ વર્ષોં તક મનુષ્ય મવ સવન્ધી પ્રચુર કામ
મોર્ગોં કો મોગતે હુય અમી ઘર પર હી રહેં । હસ કે વાદ એક સાથ
સ્થવિરોં કે પાસ મુણ્ડિત હોકર યાવન ફિર દીક્ષિત હો જાયેગે ।
(તર્ણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ, અયમદ્ પહિસુમેહ, તર્ણ તસ્સ જિયસત્તૂ
સ્સ, સુબુદ્ધિના સાર્દિ ત્રિપુલાહ, માણુસ્સં પચ્છણુમ્ભવમાણસ્સ વુલાલ

સદ્ગુણ બનાવવું માટે હે સ્વામી ! સસાર ભયથી ઉદ્ધિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના
દુઃખથી ભય પામેલો હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા
મેળવવાની ઇચ્છા રાખુ છું

(તર્ણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-અચ્છામુ તાવ, દેવાણુપિયા ! કહવયા
હિતિ વાસાહ ઊરાલાહ જાવ ભુજમાણા તઓ પચ્છા અગમ્યઓ થેરાણ અતિય મુઢે મવિત્તા
જાવ પન્વહસ્સામો)

અમાત્યની એ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને
આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુમિય ! મનુષ્યલવના કામસુખોની મજા માણવા
માટે અમે થોડા વર્ષોં હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમાં રહીએ તો સાર ત્યારપછી એકી
સાથે આપણે બને સ્થવિરોની પાસે મુકિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું

(તર્ણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ અયમદ્ પહિસુમેહ, તર્ણ તસ્સ જિયસત્તૂસ્સ સુબુ
દ્ધિના સાર્દિ ત્રિપુલાહ માણુસ્સં પચ્છણુમ્ભવમાણસ્સ ૬)

વર્ષાણિ વ્યતિક્રાન્તાનિ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે દ્વાદશ વર્ષવ્યતિક્રાન્તે સતીત્યર્થઃ સ્થવિરાગમન સજાત, તદ્દર્શન-તદા સ્વલુ પરિપન્નિર્ગત । જિતશત્રુરપિ સ્થવિરાન્તિકે ધર્મ શ્રુત્વા ' એવ ' એવમેવ પૂર્વોક્ત સુબુદ્ધિ વદેવ સર્વ નગર=વિશેષસ્ત્વ યમ્-યત્ હે દેવાનુપ્રિયા ! સુબુદ્ધિમ્ આમન્ત્રયામિ, જ્યેષ્ઠપુત્ર રાજ્યે સ્થાપયામિ, તતઃ સ્વલુ=તત્પથાત્ યુષ્માકમન્તિકે યાવત્-મુળ્હો ભૂત્વા આગારાત્=અગારભાવાત્ અનગારિતા=સાધુતા પ્રવ્રજામિ । સ્થવિરા ક્તુ - હે દેવાનુપ્રિય ! યથામુલ્લ=યથા

સર્વોસાદૃ ધીદ્વક્કનાદૃ તાદૃ તેણ કાલેણ ૨ ચેરાગમણ તદ્દર્શન જિયસત્તુ ધર્મ સોચ્ચા એવ જ નગર દેવાનુપ્રિયા ! સુબુદ્ધિ આમતેમિ, જેદ્વપુત્ર રજ્જે ઠાવેમિ, તદ્દર્શન તુલ્લ અતિદ્દર્શન જાવ પલ્લયાસિ) હસ પ્રકાર સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને જિતશત્રુ રાજા કી હસ વાત કો સ્વીકાર કર લિયા । હસ તરહ સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે સાથ વિપુલ મનુલ્લ ભવ સમન્ધી કામ ભોગો કા અનુભવ કરતે હુદ્દર્શન જિતશત્રુ રાજાકે ૧૨ વર્ષ નિકલ ગયે । ઉત્તકાલ ઓર ઉત્ત સમય મેં-અર્થાત્ ૧૨ વર્ષ વ્યતીત હો જાને કે સમય મેં સ્થવિરોકા વહાં આગમન હુદ્દર્શન । નગર કી પરિપદ સ્થવિરોં કા આગમન સુનકર ધર્મ સુનને કી ભાવના સે ડન સ્થવિરોં કે પાસ આઈ । જિતશત્રુ રાજા મી આયે ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનકર જિતશત્રુ રાજા સચેત હો ગયે । ડન્હોં ને કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં આપસે દીક્ષા લેના યાહતા હૂં અતઃ પહિલે સુબુદ્ધિ અપને અમાત્ય સે પૂઝલૂં-ઓર અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો રાજ્ય મેં સ્થાપિત કરદૂં-વાદ મેં આપ કે પાસ સુદિત હોકર અગાર ભાવ સે અનગાર અવસ્થા સ્વીકાર કરલૂંગો । (અહામુહ,

તેણ કાલેણ ૨ ચેરાગમણ તદ્દર્શન જિયસત્તુ ધર્મ સોચ્ચા એવ જ નગર દેવાનુપ્રિયા સુબુદ્ધિ આમતેમિ જેદ્વપુત્ર રજ્જે ઠાવેમિ તદ્દર્શન તુલ્લ અતિદ્દર્શન જાવ પલ્લયામિ)

આ રીતે સુબુદ્ધિ અમાત્યે જિતશત્રુ રાજાની વાતને માની લીધી સુબુદ્ધિ અમાત્યની સાથે કામભોગો ભોગવતા જિતશત્રુ રાજાને આમને આમ જ ગાર વર્ષ પસાર થઈ ગયા તે કાળે અને તે સમયે જ્યેષ્ઠ કે કામમુખો ભોગવતા જિતશત્રુ રાજાને જ્યારે ગાર વર્ષો પસાર થઈ ગયા ત્યારે ત્યા સ્થવિરો આજ્યા નગરની પરિપદો સ્થવિરોં આગમન સાલણીને ધર્મનો ઉપદેશ સાલણવા માટે સ્થવિરોંની પાસે પહોંચી જિતશત્રુ રાજા પણ ત્યા ગયા અને ધર્મનો ઉપદેશ સાલણીને રાજા સાવધાન થઈ ગયા તેજીએ સ્થવિરોંને વિનતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હું તમારી પાસેથી દીક્ષા લેવા ચાહું છું હું પહેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યને પૂછી લઉં અને પછી મારા જ્યેષ્ઠ પુત્રને રાજ્યભાર સોંપી દઉં ત્યારે જ તમારી પાસે આવીને સુદિત થઈશ ને અગારભાવથી અનગાર અવસ્થા સ્વીકારીશ.

‘મીષ’મીતઃ જન્મમરણાદિ દુઃસ્વેમ્યો ભય પ્રાપ્તઃ, અતઃવાં યાવદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુપ્તમાભિરમ્યનુજ્ઞાત’ સન્ યાત્રત્ સ્થવિરાણામન્તિકે પ્રવ્રજિતુમ્ । તતઃ સ્વલુ જિત શત્રુઃ સુબુદ્ધિમેવમવાદીત્-‘અચ્છામુ’ તિષ્ઠેમ યય તામદ્ ગૃહે દે દેવાનુપ્રિય ! કતિપયાનિ વર્ષાણિ, ઉદારાન્ યાવત્-માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્ ભુજ્ઞાતાઃ સન્તઃ, તતઃ પશ્ચાત્=તદનન્તર શબ્દાદિચિપોયભોગાનન્તરમ્ ‘અગમ્યઓ’ એકતઃ=સાર્દમ્ સ્થવિરાણામન્તિકે મુળ્કો ભૂત્તા યાત્રત્ પ્રવ્રજિષ્યામઃ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રો-રેતમર્થ=પશ્ચાદીક્ષાગ્રહણરૂપ ભાવ પ્રતિશ્રુણોતિ=સીકરોતિ । તતઃ સ્વલુ તસ્ય જિત શત્રોઃ સુબુદ્ધિના સાર્દં વિપુલાન્ માનુષ્યકાન્ ભોગભોગાન્ મત્યનુભવતો દ્વાદશ

સયમ ધારણ કર અપને જીવન કો સફલ ઘનાઞ્જ । હસ લિયે હે સ્વામિન્ । સસાર ભય સે ઉદ્ધિગ્ન વના કુઆ મં જન્મ મરણ કે દુલ્હો સે ભય મીત હોકર ચાહતા હૈં કિ આપસે આજ્ઞાપિત હો સ્થવિરો કે પાસ દીક્ષા ધારણ કરલ્હ । (તપ્પણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી અચ્છામુ તાવ દેવાણુ કહવયાહિતિ વાસાહ ઊરાલાહ જાવ મુજમાણા તઓ પચ્છા અગમ્યઓ થેરાણ અતિપ મુઢે મવિત્તા જાવ પન્વહસ્સામો) અમાત્ય કિ હસ વાત કો સુનકર જિતશત્રુ રાજાને ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે હસ પ્રકાર કહો । દેવાનુપ્રિય ! હમ લોગ કુહ વર્ષોં તક મનુષ્ય ભવ સવન્ધી પ્રચુર કામ મોગોં કો મોગતે હુપ અમી ઘર પર હી રહેં । હસ કે વાદ એક સાથ સ્થવિરોં કે પાસ મુળ્કિત હોકર યાવત્ ફિર દીક્ષિત હો જાયે ગે । (તપ્પણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ, અયમઢ પઢિસુણેહ, તપ્પણ તસ્સ જિયસત્તૂસ્સ, સુબુદ્ધિના સાર્દં વિપુલાહ, માણુસ્સં પચ્ચણુન્નુવમાણસ્સ ડુવાલ

સદ્ગુણ બતાવવું માટે હે સ્વામી ! સસાર ભયથી ઉદ્ધિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના દુખોથી ભય પામેલો હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખુ છું

(તપ્પણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-અચ્છામુ તાવ, દેવાણુપ્પિયા ! કહવયા હિતિ વાસાહ ઊરાલાહ જાવ મુજમાણા તઓ પચ્છા અગમ્યઓ થેરાણ અતિપ મુઢે મવિત્તા જાવ પન્વહસ્સામો)

અમાત્યની એ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યભવના કામસુખોની મળ માણવા માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમાં રહીએ તો સાર ત્યારપછી એકી સાથે આપણે બંને સ્થવિરોની પાસે મુકિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું

(તપ્પણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ અયમઢ પઢિસુણેહ, તપ્પણ તસ્સ જિયસત્તૂસ્સ સુબુદ્ધિના સાર્દં વિપુલાહ માણુસ્સં પચ્ચણુન્નુવમાણસ્સ ડુવાલમવાસાહ વોઠ્ઠક્રતાહ,

યદિ મયાન્ પ્રત્નજતિ તદા મે ક્ષોડન્ય આધારો વા યાવત્-અહમપિ જ્યેષ્ઠપુત્ર કુટુમ્બે સ્થાપયિત્વા ભવતા સાદ્ધં પ્રત્નજામિ । જિતશત્રુ પ્રાઢ-તદ્ યદિ સ્વલ્લ હે દેવાનુપ્રિય ! યાવત્ પ્રત્નજેઃ તદ્ ગચ્છત્ સ્વલ્લ હે દેવાનુપ્રિય ! જ્યેષ્ઠપુત્ર ચ કુટુમ્બે સ્થાપય, સ્થાપયિત્વા શિવિકા દુરુહ મમાન્નિકે પ્રાદુર્ભવ, ઇતિ શ્રુત્વા સ સુબુદ્ધિરમાત્યઃ રાજાજ્ઞાનુસારેણ સર્વં કૃત્વા યાવત્ પ્રાદુર્ભવતિ । તતઃ સ્વલ્લ જિતશત્રુઃ કૌટુમ્બિક પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-ગચ્છત્ સ્વલ્લ યૂય હે દેવાનુપ્રિયા ! અદીનશત્રોઃ કુમારસ્ય રાજ્યાભિષેકમુપસ્થાપયન્ યાવત્ તે રાજાજ્ઞા પ્રાપ્યાદીનશત્રુ

કર જિન દીક્ષા ધારણ કરના ચાહતા હું । કહો તુમ્હારી વ્યા રાય હે ? જિતશત્રુ રાજા કો હસ યાત કો સુનકર અમાત્ય સુબુદ્ધિ ને ડનસે કહા—યદિ ઓપ દીક્ષા ધારણ કરના ચાહતે હૈ, તો અત્ર મેરે લિયે આપકે સિવાય ઓર કૌન દુસરા આધાર હો સકતા હૈ । અતઃ મૈં ભી અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુટુમ્બ મૈં અપને સ્થાન પર સ્થાપિત કર આપકે સાથ હી દીક્ષિત હોના ચાહતા હું । અમાત્ય સુબુદ્ધિ કી હસ ધાનના કો સુન કર જિતશત્રુ ને ડસસે કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! યદિ તુમ મેરે સાથ હી દીક્ષિત હોના ચાહતે હો તો જાઓ—ઓર અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુટુમ્બ મૈં સ્થાપિત કરો—સ્થાપિત કર ફિર શિવિકા પર આરુઢ હો મેરે પાસ આ જાઓ । (જાવ પાડબ્મવહ, તણ જિયસત્તૂ કોટુપ્રિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી - ગચ્છહણં તુબ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયાભિસેય ઉવઢવેહ, જાવ અભિસિંચતિ, જાવ પવ્વહણ, તણ્ણં જિયસત્તૂ ણકારસઅગાહ અહિજ્જહ) સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને રાજા

દીક્ષા ધારણ કરવા ઇચ્છુ છુ બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જિતશત્રુ રાજાની આ વાત સામળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિએ તેને કહ્યું કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હું પણ મોટા પુત્રને કુટુમ્બના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉં છુ અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સામળીને જિત શત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુટુમ્બના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાલખી ઉપર સવાર થઈને મારી પાસે આવી જાવ

(જાવ પાડબ્મવહ, તણ જીવસત્તૂ કોટુપ્રિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છહ ણ તુબ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયાભિસેય ઉવઢ વેહ જાવ અભિસિંચતિ જાવ પવ્વહણ, તણ જિયસત્તૂ ણકારસઅગાહ અહિજ્જહ)

તે મનસિ સુખ સ્યાત્તથા કુરુવેત્યર્થઃ । તત્. સત્ત્વ જિતશત્રુયૈર્નૈવ સ્વક ગૃહં તૃતીયો
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુબુદ્ધિ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમપદત્-એવ સત્ત્વ હે
દેવાનુપ્રિય ! પથા સ્યવિરાણામન્તિકે ધર્મોનિશાન્તઃ, મોડપિ ચ ધર્મે ઇષ્ટઃ, પ્રતીષ્ઠઃ,
અમિરુચિતઃ, તસ્માદ્દ મુણ્ડો ભૂત્યા અગારાદ્ અનગારિતા પ્રત્રજામિ, એવ ચ સત્ત્વ
કિં કરોપિ=તવ કા વાચ્છા વર્તતે इत्यर्थः । તત્ સત્ત્વ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રુમેવમવાદીત્-

તપ્તણ જિયસત્તૂ જેનેવ સપ્પગિહે તેનેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા,
સુબુદ્ધિ સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી- એવ સત્ત્વ દેવાણુપ્પિયા ! મપ
યેરાણ જાવ પવ્વજ્જામિ, તુમ ન કિં કરેસિ, તપ્તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ
વયાસી-જાવ કે અન્ને આહારે વા જાવ પવ્વજ્જામિ, ત જડ્ડણ દેવાણુ-
પ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ્ણ ન દેવાણુપ્પિયા ! જેટ્ટ પુત્ત ચ કુહુંવે
ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ન મમ અતિપ પાડમ્મવહ) સ્થવિરો ને
કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યથા સુખ-તુમ્હે જૈસે સુખ હો વૈસા કરો-હિતાવહ
કાર્ય મે વિલગ્ન કરના ઉચિત નહીં હૈ । હમ્મકે અનતર વે જિતશત્રુ રાજા
વહાં સે અપને ઘર પર આયે । વહાં આકર ઉન્હેને અપને અમાત્ય સુબુદ્ધિ
કો બુલાયા બુલાકર ઉસસે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિય । મૈને સ્થવિરો
સે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુનો હૈ । વહાં ધર્મ મુક્કે વહુત હી
અધિક ઇષ્ટ, પ્રતીચ્છિત હુઆ હૈ । મેરે અન્તઃ કરણ મેં વહાં સમા ગયા
હૈ । હસ લિયે મે અવ મુહિત્ત હોકર હસ અગાર અવસ્થા કા પરિત્યાગ

(અહા સુદ, તપ્તણ જિયસત્તૂ જેનેવ સપ્પગિહે તેનેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા
સુબુદ્ધિ સદાવેદ સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સત્ત્વ દેવાણુપ્પિયા ! મપ યેરાણ જાવ
પવ્વજ્જામિ તુમ ન કિં કરેસિ, તપ્તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ વયાસી, જાવ કે અન્ને
આહારે વા જાવ વજ્જામિ ત જડ્ડણ દેવાણુપ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ્ણ દેવાણુ
પ્પિયા ! જેટ્ટ પુત્ત ચ કુહુંવે ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ન મમ અતિપ પાડમ્મવહ)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હું દેવાનુપ્રિય ! 'યથા સુખ' એટલે કે તમને
જેમા સુખ મળતું હોય તેમ કરેા સારા મામોમા મોડું ડરવું યોગ્ય નથી ત્યારપછી
જીતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય
સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હું દેવાનુપ્રિય !
મે સ્થવિરોની પાનેથી શ્રુતચારિત્ર ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે ધર્મ
મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે મારા અંતરમા તે
ખૂબ જ ઉડે પહોંચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા તે વ્યાપ્ત
થઈ ગયો છે માટે હું હવે મુક્તિ થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યાજીને જીવ

यदि भगान् प्रजति तदा मे ऋऽन्य आधारी वा यावत्-अहमपि ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयित्वा भवता साद्धं प्रजामि । जितशत्रु प्राह-तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रजः तद् गच्छ खलु हे देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्र च कुटुम्बे स्थापय, स्थापयित्वा शिविका दूरुह्य ममान्निके प्रादुर्भव, इति श्रुत्वा स सुबुद्धिरमात्यः राजाज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा यावत् प्रादुर्भवति । ततः खलु जितशत्रुः कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया ! अदीनशत्रोः कुमारस्य राज्याभिषेकमुत्स्थापयत यावत् ते राजाज्ञा प्राप्यादीनशत्रु

कर जिन दीक्षा धारण करना चाहता हूँ । कहो तुम्हारी क्या राय है ? जितशत्रु राजा की इस बात को सुनकर अमात्य सुबुद्धि ने उनसे कहा—यदि आप दीक्षा धारण करना चाहते हैं, तो अब मेरे लिये आपके सिवाय और कौन दूसरा आधार हो सकता है । अतः मैं भी अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में अपने स्थान पर स्थापित कर आपके साथ ही दीक्षित होना चाहता हूँ । अमात्य सुबुद्धि की इस भावना को सुन कर जितशत्रु ने उससे कहा—हे देवानुप्रिय ! यदि तुम मेरे साथ ही दीक्षित होना चाहते हो तो जाओ—और अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करो—स्थापित कर फिर शिविका पर आरुढ़ हो मेरे पास आ जाओ । (जाव पाउव्भवइ, तएण जियसत्तू कोट्टवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी - गच्छहण तुव्मे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेइ, जाव अभिसिंचति, जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुबुद्धि अमात्य ने राजा

दीक्षा धारण करवा छल्लु छु ओलो तभारे शे निवार छे ? एतशत्रु राजानी आ वात सामजीने अमात्य सुबुद्धिअ तेने कहु छे जे तमे दीक्षित थवा छल्लो छे त्यारे तभारा सिवाय भीने भारे ओणु आधार छे अथवा थर्ध शके छे ? ओटला माटे हु पणु मोटा पुत्रने कुटुम्बना वडा तरीके नीभीने तभारी साथे ज दीक्षा स्वीकरी लउ छु अमात्य सुबुद्धिनी आ वात सामजीने एत शत्रुअ तेने कहु छे हे देवानुप्रिय ! जे भारी साथे ज दीक्षित थवानी तभारी छल्लो छाय तो तमे मोटा पुत्रने कुटुम्बना वडा तरीके नीभो अने त्यारपणी पावणी उपर सवार थधने भारी पास आवी जव

(जाव पाउव्भवइ, तएण जीयसत्तू कोट्टवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुव्मे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेइ जान अभिसिंचति जाव पव्वइए, तएण जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ)

તે મનસિ સુખ સ્યાત્તથા કુરુવેત્યર્થઃ । તતઃ સલ્લુ જિતશનુર્યૈવેવ સ્વક ગૃહં તૃણો
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુબુદ્ધિ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમપદત્-અર્થ સલ્લુ હે
દેવાનુપ્રિય ! મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મોનિશાન્તઃ, મોડપિ ચ ધર્મે દૃષ્ટઃ, પ્રતીષ્ઠઃ,
અભિરુચિતઃ, તસ્માદ્દઃ મુણ્ડો ભૂત્યા અગારાદ્ અનગારિતા પ્રત્રજામિ, એવ ચ સલ્લુ
કિં કરોપિ-તવ કા વાઙ્મયાર્ચતેત્યર્થઃ । તત્ સલ્લુ સુબુદ્ધિર્જિતશનુમેવમવાદીત્-

તત્તણ જિયસત્તૂ જેનેવ સળગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા,
સુબુદ્ધિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી- અર્થ સલ્લુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ
યેરાણ જાવ પવ્વજ્જામિ, તુમ ણં કિં કરેસિ, તત્તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ
વયાસી-જાવ કે અન્ને આહારે વા જાવ પવ્વજ્જામિ, ત જહ્ણ દેવાણુ-
પ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા ! જેદ્ધ પુત્ત ચ કુહુવે
ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ણ મમ અતિણ પાઠમ્મવદ્) સ્થવિરોં ને
કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યથા સુખ-તુમ્હેં જૈસે સુખ હો વૈસા કરો-હિતાવહ
કાર્ય મેં વિલય કરના ઉચિત નહીં હૈ । હમકે અનતર વે જિતશનુ રાજા
વહાં સે અપને ઘર પર આવે । વહાં આકર ઉન્હોને અપને અમાત્ય સુબુદ્ધિ
કો બુલાયા બુલાકર ઉસસે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિય ! મૈને સ્થવિરોં
સે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાં હૈ । વહ ધર્મ મુક્કે વદ્ધત હી
અધિક દૃષ્ટ, પ્રતીચ્છિત હુઆ હૈ । મેરે અન્તઃ કરણ મેં વહ સમા ગયા
હૈ । હસ લિયે મે અવ મુહિત હોકર હસ અગાર અવસ્થા કા પરિત્યાગ

(અહા સુહ, તત્તણ જિયસત્તૂ જેનેવ સળગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
સુબુદ્ધિ સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સલ્લુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ યેરાણ જાવ
પવ્વજ્જામિ તુમ ણ કિં કરેસિ, તત્તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ વયાસી, જાવ કે અને
આહારે વા જાવ વજ્જામિ ત જહ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ ણ દેવાણુ
પ્પિયા ! જેદ્ધ પુત્ત ચ કુહુવે ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ણ મમ અતિણ પાઠમ્મવદ્)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! ‘યથા સુખ’ એટલે કે તમને
જેમા સુખ મળતું હોય તેમ કરે સારા કામોમા મોડું કરવું યોગ્ય નથી ત્યારપછી
જિતશનુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય
સુબુદ્ધિને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !
મે સ્થવિરોની પામેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે ધર્મ
મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે મારા અંતરમા તે
ખૂબ જ ઊંડે પહોંચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા તે વ્યાપ્ત
થઈ ગયો છે માટે હું હવે મુહિત થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યજીને જવ

પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ત્વલુ છે જન્મૂઃ ' શ્રમણેન ભગવતા શ્રીમહાવીરેણ યાત્રત્ સિદ્ધિગ-
તિનામધેય સ્થાન સમ્પ્રાપ્તેન દ્વાદશસ્ય ઉદકારુપસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય=પૂર્વોક્ત-
પ્રકારઃ અર્થઃ=ભાવ પ્રજ્ઞા 'ત્તિવેમિ' ઇતિ વ્રવીમિ યથા ભગવાન્મુલાચ્છ્રુત તથૈવ
તુભ્ય પ્રતિપાદયામિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ઇતિ શ્રી-ત્રિશ્વવિદ્યાત-જગદૂલ્લસ-પ્રસિદ્ધવાચરુપશ્ચદશભાષારુલિતલલિતક-
લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈરુગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છ-
વ્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત-'જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-બાલગ્રન્થચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-
વ્રતિવિરચિતાયા 'જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ' સૂત્રસ્થાનગારધર્મામૃતવ-
ર્ષિણ્યાભ્યાયા વ્યાખ્યાયા દ્વાદશમધ્યયન સર્પૂર્ણમ્ ॥૧૨ ॥

કો પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામી સે કહતે હૈં-હે જબૂ !
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
હો જુકે હૈં હસ દ્વાદશ ઉદકારુપ જ્ઞાતા-ધ્યયન કા હસ પ્રકાર સે યહ
પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને ઉન ભગવાન્ કે
મુલ સે સુના હૈ વૈસા હી યહ તુમ સે કહા હૈ । અપની તરફ સે હસ મેં
કુલ્હ બી મિલાવટ નહીં કી હૈ । સૂત્ર ॥ ૨ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા-
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર" કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા વારહવાં
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે
કે હે જબૂ ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકારુપ
જ્ઞાતા-ધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે એ ભગવાનના
શ્રીમુખથી જેવો અર્થ આભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એ
આમા પોતાની મેળે કાંઈ પણ વાત ઉમરી નથી ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી

વ્યાખ્યાનુ બારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

રાજ્યેऽમિપિશ્ચતિ યાત્-જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિનાઽમાત્યેન સહ પ્રવ્રજિતઃ । તતઃ
 સ્વલુ જિતશત્રુરેકાદશાઙ્ગાનિ અગ્રીતે । વહ્નિર્વર્ષાણિ પર્યાયઃ=શ્રામણ્યપર્યાયઃ ।
 માસિકયા સહેલ્લનયા સિદ્ધઃ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિ રેકાદશાઙ્ગાનિ-અગ્રીતે, વહ્નિ
 વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયિત્વા યાત્સિદ્ધઃ । સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एवम्=

કે કહે અનુસાર સવ કાર્ય વૈસા હી ક્રિયા । બાદ મેં વહ જિતશત્રુ રાજા
 કે પાસ આ ગયા । જિતશત્રુ રાજા ને હસ કે અનતર કૌટુંબિક પુરુષો
 કો બુલાયા-બુલાકા ઉનસે એસા કહા-દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જ્ઞાઓ
 ઓર યુવરાજ અદીન શત્રુ કુમારકા રાજ્યાભિષેક કરો । રાજાકી આજ્ઞા-
 નુસાર ઉન લોગોને વૈસા હી ક્રિયા -અદીન શત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય
 કે સાથ દીક્ષિત હો ગયે । રાજર્ષી જિતશત્રુને ૧૧ ગ્યારહ અંગોકા અધ્યયન
 ક્રિયા । (વહ્નિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાઈ સિદ્ધે, તણ સુબુદ્ધી ઇગાર
 રસ અગાહ અહિજ્જહ, વહ્નિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે । એવ સ્વલુ જબ્ ! સમ
 ણેર્ણ મગવયા મહાવીરેણ વારમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ ઇયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિ
 વેમિ) અનેક વર્ષોંતક શ્રામણ્યપર્યાય કા પાલન ક્રિયા । બાદમેં એક માસ
 કી સહેલ્લનાસે ૬૦ મત્તોકા અનશન દ્વારાછેદન કર વે સિદ્ધાવસ્થાપન
 હો ગયે । સુબુદ્ધિ સુનિરાજ ને ૧૧ ગ્યારહ અંગોકા અચ્છી તરહ અધ્યયન
 ક્રિયા-ઓર વહુત વર્ષોંતક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર સિદ્ધ અવસ્થા

૧૪+૩ સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાની આજ્ઞા સુજબજ બધુ કામ પતાવી હીધુ ત્યાર
 પછી તે રાજાની પાસે આવ્યો । જિતશત્રુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને
 બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો બધા
 અને યુવરાજ અદીનશત્રુ કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરો । રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને
 તે લોકોએ બધી નિધિ પૂરી કરી હીધી આ પ્રમાણે અદીનશત્રુકુમારને રાજ્યા
 સને બેસાડીને જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યની સાથે દીક્ષિત થઈ ગયા
 રાજાકામિ જિતશત્રુએ અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન કર્યું

(વહ્નિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાઈ સિદ્ધે, તણ સુબુદ્ધી ઇગારસઅગાહ
 અહિજ્જહ, વહ્નિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે । એવ સ્વલુ જબ્ ! સમણેગ મગવયા મહાવીરે
 ણ વારમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ ઇયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

તેઓએ ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું ત્યારપછી એક
 માસની સહેલ્લનાથી ૬૦ સત્તોનુ અનશન દ્વારા છેદન કર્યું અને ત્યારબાદ
 તેઓ સિદ્ધ થઈ ગયા । સુનિરાજ સુબુદ્ધિએ પણ સારી પેઠે અગિયાર
 અંગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું

पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरेण यावत् सिद्धिग-
तिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन द्वादशस्य उदकाख्यस्य ज्ञानाध्ययनस्य अय=पूर्वोक्त-
प्रकारः अर्थः=भाव प्रज्ञप्त ' त्विमि ' इति ब्रवीमि यथा भगवान्मुखाच्छ्रुत तथैव
तुभ्य प्रतिपादयामि ॥ सू० २ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-
प्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगरधर्माभूतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया द्वादशमध्ययन सपूर्णम् ॥१२ ॥

को प्राप्त कर लिया । सुधर्मा स्वामी जब स्वामी से कहते हैं-हे जबू !
श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त
हो चुके हैं इस द्वादश उदकाख्य ज्ञाताध्ययन का इस प्रकार से यह
पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित किया है । सो जैसा मैंने उन भगवान् के
मुख से सुना है वैसा ही यह तुम से कहा है । अपनी तरफ से इस में
कुछ भी मिलावट नहीं की है । सूत्र ॥ २ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाता-
धर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगरधर्माभूतवर्षिणी व्याख्याका पारह्वां
अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી મુધર્મા સ્વામી જ બૂ સ્વામીને કહે છે
કે હે જ બૂ ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકાખ્ય
જ્ઞાતા-ધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે મે ભગવાનના
શ્રીમુખથી જોવો અર્થ જાણવો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે મે
આમા પોતાની મેળે કાઈ પણ વાત ઉમરી નથી ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગરધર્માભૂતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનું બારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

ટીકા—જમ્બૂ સ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ ભદન્ત । શ્રમણેન ભગવતા મહા-
વીરેણ યાવત્ સંપાત્તેન, મિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન ગતેન, દ્વાદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય
'અયમદ્વે' અયમર્થઃ = સસર્ગવિશેષવશાદ્ ગુણદ્વિધિરૂપોઽર્થઃ. 'પણ્ણત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ=
પ્રરૂપિતઃ, તર્હિ તદનન્તરમ્ ત્રયોદશસ્ય ચ ભદન્ત । જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય, શ્રમણેન
ભગવતા મહાવીરેણ ઓઽર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—એવ સ્વલુ
હે જમ્બૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નામ નગરમાસીત ।

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે) હે ભદન્ત । યદિ (સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ)
શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને (જાવ સંપત્તેણ તારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ
અયમદ્વે પણ્ણત્તે તેરમસ્સ ણ ભતે । ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા
મહાવીરેણ કે અદ્વે પણ્ણત્તે) કિ જો મિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કે માગી
યન થુકે હૈ યાવત્તે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ નિર્દિષ્ટ
કિયા હૈ—તો હે ભદન્ત ડન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ઉસ તેરત્તે
જ્ઞાતાધ્યયન કા કયા માધ-અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ? (એવ સ્વલુ જમ્બૂ !
તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે નામ નયરે હોત્યા, ગુણસિલ્લ પેહણ,
સમોસરણ, પરિસા નિગ્ગયા) હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કો પ્રદન સુનકર
શ્રી સુધર્મ સ્વામી ડન્હે સમજા ને કે નિમિત્ત કહતે હૈ કિ જમ્બૂ ! સુનો
તુમ્હારે પ્રદન કો ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં
રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ઉસ નગર કે યહિર્ભાગ મેં ગુણશિલક
નામ કા ચૈત્ય થા । ઉસ મેં ભગવાન્ મહાવીર પ્રસુ આયે । પ્રસુ કે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે) હે ભદન્ત । એ (સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ)
શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—

(જાવ સંપત્તેણ તારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્મ અયમદ્વે પણ્ણત્તે તેરમસ્સ ણ ભતે ।
ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ કે અદ્વે પણ્ણત્તે)

કે જો સિદ્ધિગતિ મેળવેલા છે—આરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર દેખા
ગુણ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે હે ભદન્ત ! તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહા
વીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો જો ભાવ—અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે નામ નયરે હોત્યા,
ગુણસિલ્લ પેહણ, મમોમણ પરિસા નિગ્ગયા)

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીને પ્રશ્ન નાલણીને સુધર્મા સ્વામી તેમને સમ
જાવવા માટે કહેવા લાગ્યા કે હે જમ્બૂ ! સાલણો, તમારો પ્રશ્નનો ઉત્તર આ
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તે નગરની

અથ ત્રયોદશમમધ્યયનમ્ પ્રારમ્ભ્યતે ।

ગત દ્વાદશમમધ્યયનમ્, સમ્પત્તિ ત્રયોદશમારમ્ભ્યતે-અસ્થાન્યયનસ્ય પૂર્વેણ સહાડય સમ્પન્ધઃ-પૂર્વસ્મિન્ અધ્યયનં સસર્ગવિશેષશ્ચાદ્ ગુણવૃદ્ધિરુક્તા, ઇહ તુ ત્રયોદશેઽધ્યયને તદ્ભાગાત્ ગુણદાનિરુચ્યતે इत्येव પૂર્વાધ્યયનેન સહ અયમેવ સવદ્ધ તમ્ચેદમાદિ શૂનમાહ-' જહ્ ણ મતે ' इत्यादि ।

મૂલમ્-જહ્ ણ મતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ વારસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પળ્લન્તે, તેરસ મસ્સ ણ મંતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ કે અટ્ટે પળ્લન્તે ? એવં ખલ્લુ જવ્વુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ રાયગિહે ણામ નયરે હોત્થા, ગુણસિલણ ચેદ્ધણ, સમોસરણ, પરિસા નિગ્ગયા । તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ સોહમ્મે કપ્પે દહરુવડિસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ, દહુ રંસિ સીહાસણસિ દહરે દેવે, ચહિ સમાણિયસાહસ્સીહિં ચહિ અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવં જહા સૂરિયામ્હો જાવ દિવ્વાઈ ભોગમ્હોગાઈ મુજમાણો વિહરઈ ॥ સૂ. ૧ ॥

—, જહ્ મણિયાર નામ કા તેરહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ'—

૧૨યારવા અધ્યયન સમાપ્ત હો જુકા । અથ તેરહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા હૈ । ઇસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથે ઇસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં સસર્ગ (સત્સર્ગ) વિશેષ કે વશ સે ૦ ગુણ વૃદ્ધિ કહી ગઈ હૈ—યહા ઇસ તેરહવે અધ્યયન મેં ઇસ કે અભાવ સે ગુણ હાનિ કહી જાવેગી । ' જહ્ ણ મતે ! સમણેણ ' इत्यादि । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

છુદ્ધ મણિયાર નામે તેરમું અધ્યયન પ્રારભ

જારમું અધ્યયન પૂરૂ થઈ ચૂકયું છે હવે તેરમું અધ્યયન પ્રારભ થાય છે આ અધ્યયનની સાથે આ બાતનો સબંધ છે કે પહેલાના અધ્યયનમાં સસર્ગ (સોમત) વિશેષથી ગુણ વૃદ્ધિ બતાવવામાં આવી છે આ તેરમા અધ્યયનમાં સસર્ગ વિશેષના અભાવથી ગુણ-હાનિ નિરૂપવામાં આવશે

જહ્ ણ મતે ! સમણેણ इत्यादि

मूलम्—इमं च ण केवलकप्प जवूदीव दीव विउलेणं ओ-
हिणा आभोएमाणेर जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगए।
जहा सूरियाभे । भतेति भगव गोयसे समणे भगव महा-
वीरं वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अहो णं
भते । द्दुरेदेवे महड्डिए महज्जुइए महावले महाजसे महा-
सोक्खे महाणुभावे द्दुरस्सण भते । देवस्स सा दिव्वा देवड्डी
देवज्जुई कहिगया कहि पविट्ठा गोयमा । सरीर गया सरीर
अणुप्पविट्ठा, कूडागारदिट्ठतो । द्दुरेणं भते । देवेणं सा दिव्वा
देवड्डी देवज्जुई, किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिस-
मन्नागया ? एव खलु गोयमा । इहेव जवूदीवे दीवे भारहे
वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तत्थ
णं रायगिहे णयेरे णंदे णाम मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते० ।
तेणं कालेणं तेण समएण अह गोयमा । समोसढे, परिस्ता
णिग्गया । सेणिए राया णिग्गए तएण से णंदे मणियारसेट्ठी इ-
मीसे कहाए लद्धे समणे णहाए० पायचारेण जाव पज्जुवासइ।
णंदे धम्म सोच्चा णिसम्म समणोवात्सए जाए । तएणं अह
रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि, तए
णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य
अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य अलुस्सूसणाए य
सम्मत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहि २ मिच्छत्तपज्जवेहि परिवड्ढु-
माणेहि २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था तएणं नंदे

તસ્ય નગરસ્ય પહિર્ભાગે શુણ્ગિલક નામ ચૈત્યમાસીન્ । તત્ર ભગવતો મહાવીરસ્ય સમવસરણ સજાતમ્ । નગરદર્શનાર્થં પરિપન્નિર્ગતા । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'સોદ્દમ્મેકપ્પે' સૌધર્મે કપ્પે=સૌધર્મનામ્નિ દેવગોકે દર્દુરાવતસકે વિમાને, સમાયા સુધર્માયા દર્દુરે સિંહામને દર્દુરો દર્દુરનામહો દેવ 'ચઙ્ઠિં સામાણિયસાહસ્સીહિં' ચતસ્રમિ સામાનિકમાહસીમિ ચતુસ્સદસસરયકૈઃ-સામાનિક દેવૈઃ, તથા 'ચઙ્ઠિં અગ્ગમહિસીહિં મપરિમાહિં' ચતસ્રભિરગ્રમદિપીમિ સપરિપદ્ધિ = સ્વસ્વ પરિપત્તસદિતામિશ્રતુઃ સરયકામિઃ પટ્ટદેવોમિ. સપરિવૃત્ત' 'એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ' શુજમાણો વિહરહ' એવ યથા સૂર્યામો રાજ પ્રશ્રીયસૂત્રે-સૂર્યામદેવસ્ય વર્ણન પ્રોક્ત તદ્વદત્રાપિ ગોઢ્યમ્, યાવત્-દિવ્યાન્ ભોગભોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરતિ ॥ મુ. ૧ ॥

વદના કરને કે લિયે પરિપદ આવી ઓર દેશના સુનકર વાપિસ ચલી આવી (તેણ કાલેણ તેણ સમણ સોદ્દમ્મે કપ્પે દદ્દુરવઙ્ઠિંસણ વિમાણે સમાણ સુદ્દમ્માણ, દદ્દુરસિ સીહાસણસિ, દદ્દુરે દેવે ચઙ્ઠિં સામાણિય સાહસ્સીહિં ચઙ્ઠિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ શુજમાણો વિહરહ) ડસી કાલ ઓર ડસી સમય મેં સૌધર્મ નામ કે દેવ લોક મેં દર્દુરાવતસક વિમાન મેં સુધર્મા સમા મેં દર્દુર સિંહાસન પર દર્દુર નામ કા દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવો કે એવ અપની ૨ પરિપદ સહિત ચાર પટ્ટ દેવિયો કે સાથ સૂર્યામદેવ કી તરહ દિવ્ય કામ ભોગો કા અનુભવન કરતા હુઆ બેઠા થા । રાજ પ્રશ્રીય સૂત્ર મેં સૂર્યામ દેવ કા વર્ણન યહા પર બી જાનના ચાહિયે । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

બહાર શુશ્રીવક નામે ચૈત્ય (જીન દેશસર) હતુ તેમા ભગવાન મહાવીર આબ્યા પ્રભુને વદન કરવા માટે નગરની પરિવદ આવી અને દેશના સાધાગીને પાછી જતી રહી

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ સોદ્દમ્મે કપ્પે દદ્દુરવઙ્ઠિંસણ વિમાણે સમાણ સુદ્દમ્માણ, દદ્દુરસિ સીહાસણસિ, દદ્દુરે દેવે ચઙ્ઠિં સામાણિયસાહસ્સીહિં ચઙ્ઠિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ શુજમાણો વિહરહ)

તે જાણે અને તે સમયે સૌધર્મ નામના દેવલોકમા દદ્દુર સિંહાસન ઉપર દર્દુર નામે દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવોની અને પોતપોતાની પરિપદ સહિત ચાર પટ્ટ દેવીઓ (પટ્ટરાણીઓ) ની સાથે સૂર્યામ દેવની જેમ દિવ્ય કામ સુખોને અનુભવતા બેઠા હતા " રાજ પ્રશ્રીય સૂત્ર " માં સૂર્યામ દેવનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે અહીં પણ તે પ્રમાણે જ વર્ણન બાણી લેવું બેઠ્યું ॥ સુ. "૧"

चाउक्कोणासमतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजला
संछण्णपत्तविसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसो
गंधियपुडरिय महापुडरीय सयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोव-
वेया परिहत्थभमतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-
रियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘ इम च ण ’ इत्यादि । स ददुरको देवः इम च खलु ‘ केवल-
कप्प ’ केवलकल्प = सम्पूर्ण जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ‘ ओहिणा ’ अधिना
—अधिज्ञानेन ‘ आभोएमाणे २ ’ आभोगयन आभोगयन् = बारवारमव
लोकयन् ‘ जाव ’ ‘ नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए ’ यात्रनाट्यविधिमुपदर्श्य
प्रतिगतः ‘ जहा सूरियाभे ’ यथा सूर्याभः, सूर्याभदेववत् । तद् गमना
नन्तर भदन्त । इति सगोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर—
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमास्यत्वा एवमवदत्—अहो ! खलु भदन्त ? ददुरो

‘ इम च ण केवलकप्प ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—वह ददुरकदेव (इम च ण केवलकप्प जम्बूद्वीप २) इस केवल
कल्प-सम्पूर्ण-जम्बूद्वीप नाम के द्वीप को (विउलेण ओहिणा) अपने
विपुल अधिज्ञान से (आभोए माणे २) बार २ देखता हुआ (जाव
नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) यावत् नाट्य विधि को दिखला कर
चला गया (जहा सूरियाभे) सूर्याभदेव की तरह (भतेति भगव
गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव
वयासी) उस के चले जाने के बाद हे भदन्त । इस प्रकार से संबोधित
करके भगवति गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु से इस प्रकार
पूछा (अहो ण भते ! ददुरे देवे महड्डिए महज्जुडए महाउळे, महाजसे

‘ इम च ण केवलकप्प ’ इत्यादि

ते ददुरक देव (इम च ण केवलकप्प जम्बूद्वीप २) आ उवल कल्प-
सम्पूर्ण-जम्बूद्वीप नामना द्वीपने (विउलेण ओहिणा) पोताना अधिज्ञानथी
(आभोएमाण २) बार बार लेतो (जाव नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) यावत्
नाट्य विधितु प्रदर्शन जातावीने लेतो रह्यो (जहा सूरियाभे) सूर्याभ देवनी
लेभ (भतेति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, णमसइ, वदित्ता
णमसित्ता एव वयासी) तेना जवा पछी श्रमण भगवान् महावीर प्रभुना
अरहोभा भगवान् गौतमे ‘ हे भदन्त ! ’ अवी रीते संबोधीने तेओओ प्रभुने
आ प्रभावे कथुं हे—

मणियारसेट्टी अन्नया गिम्हकालसमयांसि जेट्टामूलंसि मासंसि
 अट्टमभत्तं परिगेणहइ परिगेणिहत्ता पोसहसालाए जाव विह-
 रइ, तएणं णदस्स अट्टमभत्तांसि परिणममाणसि तणहाए
 छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए
 समुप्पज्जित्या—धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ
 जेसि णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ
 जाव सरसरपत्तियाओ जत्थ ण बहुजणो णहाइ य पियइ य
 पाणिय च सवहइ, त सेय खल्ल मम कल्ल पाउ० सेणिय
 आपुच्छित्ता रायगिहस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभार-
 पव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयासि भूमिभागंसि
 जाव णंद पोक्खरणि खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ कल्ल
 पाउ० जाव पोसह पारेइ पारित्ता णहाए कयवलिकम्मे मित्तणाइ
 जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेणहइ गेणिहत्ता
 जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव
 पाहुड उवट्टवेइ उवट्टवित्ताएव वयासी—इच्छामि ण सामी।
 तुब्भेहि अब्भणुत्ताए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव
 खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएण णदे सेणिएण
 रत्ता अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ० रायगिह मज्झ मज्झेणं
 निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णंद पोक्खरणि
 खणाविउ पयत्ते यावि होत्था, तएण सा णंदा पोक्खरणी
 अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि ०

एव खलु हे गौतम ! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृह नगर, गुण-
शिलक चैत्य, श्रेणिको राजाऽऽसीत् । तत्र खलु राजगृहे नगरे नन्दनामा मणि-
कारश्रेणी आढ्यो दीप्तोऽपरिभूतः परिवसति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे
गौतम ! अहं तत्र राजगृहे समवसतः परिपन्निर्गता श्रेणिको राजा निर्गतः । ततः
खलु स नन्दो मणिकार श्रेणी अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् स्नातः पादचारेण=
पादाभ्यामेव न तु रथाश्वादि यानेन ' जाव पज्जुवासइ ' मम वन्दनार्थमागतो
वन्दित्वा नमस्यित्वा च यथास्थानमुपविश्य पर्युपास्तेरम् । नन्दः नन्द-
मणिकारश्रेणी यमं = श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्या श्रमणोपासक = श्रावको
जातः । ततः खलु अहं (महावीरस्वामी) राजगृहात् प्रतिनिष्क्रान्तो बहिर्जनपद

पक्षा किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जम्बूद्वीपे दीपे
भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलण चेइए सेणिए राया तत्थणं
रायगिहे नगरे णदे णाम मणियारसेट्ठी अहुं दित्ते०) गौतम स्वामी
प्रभु से पूछते हैं भदत् ! दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि और दिव्य देव
धुति किस प्रकार से उपार्जितकी, किस प्रकार से अपने आधीन की
और किस प्रकार उसे अपने भोग के विषय भूत बनाई ? प्रभु ने कहा
गौतम ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-इसी जम्बूद्वीप नाम के
द्वीप में, भरत क्षेत्र में, राजगृह नाम के नगर में गुण शिलक नाम का
चैत्य था । नगर के राजा का नाम श्रेणिक था । उस राजगृह नगर में नन्द
नामका मणिकार श्रेणी रहता था । यह बहुत ही आढ्य-धन संपन्न-एव
अपरिभूत-जनमान्य-या (तेण कालेण तेण समएण अहं गोयमा ।
समोसडे, परिस्ता निग्गया, सेणिए, राया निग्गए, तण्ण से णदे मणि

किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे
रायगिहे नगरे गुणसिलण चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नगरे णदे णाम
मणियारसेट्ठी अहुं दित्ते०)

गौतम स्वामी प्रभुने पूछे छे डे डे भदत् ! दर्दुर देवे ते दिव्य देवर्द्धि
अने दिव्यधुति केवी रीते भेजनी, केवी रीते पोताने आधीन बनावी अने
केवी रीते तेने पोताना उपलोग योग्य बनावी ? प्रभुणे उहुं डे डे गौतम !
तभारा प्रश्नो उत्तर आ प्रभाणु छे डे अहे जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भरत
क्षेत्रमा राजगृह नामना नगरमा शुणशीलक नामे चैत्य इत्तु ते नगरना
राजानु नाम श्रेणिए इत्तु ते राजगृह नगरमा नन्द नामे मणिकार श्रेणि रहते।
ते णहुं च आढ्य-धनान्न-अपरिभूत-जनमान्य (नगरमा पूछते) इते।

तेण कालेण तेण समएण अहं गोयमा । समोसडे, परिस्ता निग्गया, सेणिए

દેવો મહર્દિકો મહાદ્યુતિઃ, આશ્વર્યકારિ મહદ્ગર્ભાદિયુક્તોઽય વર્તતે દર્દુરસ્ય
 ચલુ ભદન્ત । દેવસ્ય સા દિવ્યા દેવર્દિદેવદ્યુતિઃ કુગ ગતા કુઝ પ્રવિષ્ટા ? યા
 પૂર્વં દૃષ્ટેતિ ભાવઃ । ભગવાનાદ-હે ગૌતમ ! સા દિવ્યા દેવર્દિઃ દેવદ્યુતિશ્ચ તસ્ય
 શરીર ગતા શરીરમનુપ્રવિષ્ટા । અત્ર 'કૂઢાગારદિદૃતો' કૂટાગારદૃષ્ટાન્તો બોધઃ ।
 કૂટાગારદૃષ્ટાન્તસમન્વયાય ગૌતમસ્ય ભગવતો મહાવીરસ્ય ચ ઉક્તિઃ પ્રયુક્તિ-
 ધોનિર્દિષ્ટપ્રકારેણ જ્ઞેયા-ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ હે ભદન્ત ! =હે ભગવન્ । દર્દુરેણ
 દેવેન સા દિવ્યા દેવર્દિઃ દેવદ્યુતિઃ કથ=કેન પ્રકારેણ લઘા=સમુપાર્જિતા પ્રાપ્તા=
 આયત્તીભૂતા અભિસમન્વાગતા=સમ્યક્સ્વભોગપિપયીકૃતા ? ભગવાનાદ—

મહાસૌમ્યે, મહાણુભાવે, દદ્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવસ્સ સા દિવ્વા દેવિઢ્ઠી
 દેવજ્જુઈ કહિં ગયા, કહિં પવિઢ્ઠા) હે ભદત ! અભીરયહ દર્દુર દેવ આશ્વર્યકારી
 સહદ્રય્યાદિ સે યુક્ત થા, સો હમ્મ સમય ઉસ દર્દુર દેવ કી હે ભદત ! વહ
 પૂર્વદૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દિ, દેવદ્યુતિ કહા ગઈ, કહાં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ ? (ગોયમા !
 સરીર ગયા, સરીર અણુપ્પવિઢ્ઠા) હસ પ્રકાર ગૌતમ કા પ્રશ્ન સુનકર
 પ્રભુ ને ડન સે કહા-હે ગૌતમ ! વહ દિવ્યદેવર્દિ ઓર દિવ્ય દેવદ્યુતિ
 ડસ દર્દુર દેવ કે શરીર મેં ચલી ગઈ હૈ, શરીર મેં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ હૈ ।
 (કૂઢાગાર દિદૃતો) હસ વિષય મેં કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત પ્રયુક્ત હુઆ હૈ ।
 હસી કૂટાગારદૃષ્ટાન્ત કે સમન્વય કે લિયે ભગવાન્ ગૌતમ ઓર મહા-
 વીર પ્રભુ કી યહ ઉક્તિ પ્રયુક્તિ અધોનિર્દિષ્ટ પ્રકાર સે જાનની ચાહિયે
 (દર્દુરે ણ મતે દેવેણ સા દિવ્વા દેવિઢ્ઠી દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લઢ્ઠા કિણ્ણા

(અહોણ મતે ! દદ્દુરે દેવે મહર્દિપ મહજ્જુઈ, મહાવહે, મહાજસે, મહા
 સૌમ્યે, મહાણુભાવે દદ્દુરસ્સ ણ મતે । દેવસ્સ સા દિવ્વા દેવિઢ્ઠી દેવજ્જુઈ કહિં
 ગયા, કહિં પવિઢ્ઠા)

હે ભદત ! હમણા તો આ દર્દુર દેવ આશ્વર્યકારી મહર્દિ પગેદથી
 સપત્ત હતો આ સમયે દર્દુરક દેવની હે ભદત ! તે પૂર્વ દૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દિ,
 દેવદ્યુતિ કયા જતી રહી છે ? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે ? (ગોયમા ! સરીર
 ગયા, સરીર અણુપ્પવિઢ્ઠા) આ રીતે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાલળીને પ્રભુએ તેમને
 કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે દિવ્ય દેવર્દિ અને દિવ્ય દેવદ્યુતિ તે દેવ દર્દુરકતા
 શરીરમા પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે શરીરમા જતી રહી છે (કૂઢાગારદિદૃતો) આ
 વિશેષ ટાગાર દૃષ્ટાન્ત આપવામા આનુ છે આ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્તના સમન્વય માટે
 ભગવાન ગૌતમ અને મહાવીર પ્રભુની ચર્ચાનીચે લખ્યા મુજબ બાબુવી

(દદ્દુરેણ મતે ! દેવેણ સા દિવ્વા દેવિઢ્ઠી દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લઢ્ઠા ।

अन्यदा=एस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेष्ठा मूलमि माससि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य या च द्वेण सह योगो भवति पोर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलान्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे उत्पद्यः, 'अट्टमभक्त' अष्टमभक्तम्-उपवासनरूप तप परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषशालाया 'जाव विहरइ' यावत् पौषाणि =समाश्रितपौषा विहरति । तत' ख नन्दस्य= नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृणया क्षुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सन अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिक =

लगा (तण्णं से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइ असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाण्य, अणुसासणाण य असुस्ससणाण य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवहुमाणेहिं २ मिच्छत्त विपडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-मद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा नम्यस्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यास्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दृष्टापन्न बन गया= मिथ्यात्वी हो गया । (तण्णं णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकात्समयसि, जेष्ठा मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ, २ पोसहसालाण जाव विहरइ, तण्ण नदस्स अट्टमभक्तसि, परिणममाणसि, तण्हाण छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए सनुपज्जित्था) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तण्ण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जु वासणाण य अणुसासणाण य असुस्ससणाण य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवहुमाणेहिं २ मिच्छत्त विपडिवन्ने जाए यावि होत्था)

त्याथी भारा विहार उर्थी पछी डोछ वणते अमाधुना दश नथी, कुशुनुना ससर्ग (सागत) थी सहगुरुओंकी अनासेवनाथी, सुगुरुना उपदेशाने आलण वानी तड नडि भगवाथा सुगुरुनी पामेथी धर्न नडि साभलवाथी तेभज् सग्यकत्व उप पर्यव-परिणाम अनुकमे क्षीयमाण (नष्ट) होवाथी अने मिथ्यात्वइय पर्यव परिणाम अनुकमे वृद्धि पाभवाथी मिथ्यात्व दृष्टापन्न थड गथे-मिथ्यात्वी गड गथे (तण्ण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकात्समयसि, जे मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ २ पोसहसालाण जाव विहरइ तण्ण नदस्स अट्टमभक्तसि परिणममाणसि, तण्हाण उडाण य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए सनुपज्जित्था) डोछ ओड दिवसे उणाणाना ओठ भडिनाभा

विहार विहारामि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा रुदाचिन्त 'असाहु
दसणेणय' असाहुदर्शनेन=सुगुरुमसर्गेण 'अपज्जुवासणा' अपर्युपासनया च=
सुगुरोनासेज्जेन 'अणुसासणा' य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन
'असुसूसाणा' य' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मव्यवस्थाभावेन च, तथा
'सम्मत्तपज्जवेहि' सम्मत्तपर्ययै 'परिहायमाणेहि' परिहीयमानै २ क्रमशः
क्षीयमाणै 'मिञ्छत्तपज्जवेहि' मिञ्छात्पर्ययै 'परिह्वमाणेहि' परिवर्द्धमानै=
पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिपुण्यतै सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिञ्छात्त्व मिथ्यात्वभाव
प्रतिपत्तिः=माप्त=मिञ्छात्त्वी जातश्चाप्यभूत् । ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी

चारसेट्टी इमीसे कहाण लद्धे समाणे ण्हाण० पायचारेण जाव पज्जु-
वासइ, ण दे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासण जाण) उसी काल
में और उसी समय में हे गौतम । मैं उस राजगृह नगर में विहार करता
हुआ पहुँचा । वहाँ का समस्त परिपदा बदना नमस्कार करने के लिये
शुणशि शक्य मे आई । श्रेणिक राजा भी आया । जब उस मणि
कार श्रेष्ठी नद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान
आदि से निश्चिन्त होकर पैदल ही मेरी बदना करने के लिये आया ।
वहाँ आकर वह बदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया । उसने
श्रुत चारित्र्य रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया
अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया । (तएण अहं रायगिहाओ पडि
निक्खत्ते उहिया जणवयविहार विहारामि) इसके बाद मैं वहाँ से
राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएण से णद मणियारसेट्टी इमीसे कहाण लद्धे समाणे ण्हाण०
पायचारेण जाव पज्जुवासइ, ण दे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासण जाण)

ते गणे अने ते सभये डे गौतम ! हु विहार करतो करतो राजगृह नगरमा
पहुँच्यो नगरनी परिषदा शुश्रूषीवक नैत्यमा बदना अने नमस्कार करवा भाटे
आवी श्रेष्ठिक राजा पण्ड वदन तेमञ्च नमन करवा भाटे आओ । उता भण्डि
यार श्रेष्ठि नदने ज्यारे मारा आपवाना समाचारो भज्या त्यारे ते स्नान
वृद्धेथी परिवारीने पणपाणा न भने वदन करवा भाटे आओ । त्या आवीने
वदन तेमञ्च नमन करीने ते उचित स्थाने जेगी गयो श्रुतचारित्र्य धर्म
व्याख्यान साधनीने ते गृहस्थ धर्म धारण करी लीयो ओठले डे ते श्रमणो
पासक थर्ध गयो (तएण अहं रायगिहाओ पडिनिक्खत्ते उहिया जणवयविहार
विहारामि) तयारपछी हु त्याथी-राजगृह नगरथा नीग्यो अने नीकणीने पडार
जनपदोमा विहार करवा लाग्यो

अन्यदा=एस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेष्ठा मूलमि माससि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य वा च द्वेण सह योगो भवति पौर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलान्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, 'अट्टमभक्त' अष्टमभक्तम्-उपवासग्ररूपं तप परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालाया 'जाव विहरइ' यावत् पौषाणि =समाश्रितपौषः विहरति । ततः ख नन्दस्य=नन्दाभिषमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृणया सुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सन. अयम्=वक्ष्यमाणप्रकाशः आध्यात्मिक =

लगा (तएण से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाड असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाएय, अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवट्ठमाणेहिं २ मिच्छत्त विण्डिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असायु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-सद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तत्र सम्पत्तरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया=मिथ्यात्वी हो गया । (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकात्समयसि, जेष्ठा मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएण नदस्स अट्टमभक्तसि, परिणममाणसि, तण्हाण छुहाण, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिएण समुपज्जित्वा) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तएण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाड असाहुदसणेण य अपज्जु वासणाए य अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवट्ठमाणेहिं २ मिच्छत्त विण्डिवन्ने जाए यावि होत्था)

त्याथा भारा विकार ज्यों पछी डोह वणते अभाधुना दर्शनही, कुशुनुना ससर्ग (सोअत) थी सद्गुरुओंकी अनासेवनाथी, सुगुरुना उपदेशने आलस्य पानी तक नहि भगवाया, सुगुरुनी पायेवी धर्म नहि आभलवाथी तेमअ सम्यक्त्व उप पर्यव-परिणाम अनुक्रमे क्षीयमाण (नष्ट) होवाथी अने मिथ्यात्वइय पर्यव परिणाम अनुक्रमे वृद्धि पाववाथी मिथ्यात्व दशापन्न यथ अथो-मिथ्यात्वी जइ अथो (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकात्समयसि, जे मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ तएण नदस्स अट्टमभक्तसि परिणममाणसि, तण्हाण छुहाण य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिएण समुपज्जित्वा) डोह अथे द्विसे उनाणाना जेठ भडिनामा

विहार विहरामि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा वदचित् 'असाधु
दसणेणय' असाधुदर्शनेन=कुगुरुमसर्गेण 'अपज्जुवासणाण' अपर्युपासनया च=
सुगुरोरासेउनेन 'अणणुसासणाण य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन
'असुसम्पणाए य' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मव्यवस्थाभावेन च, तथा
'सम्मत्तपज्जवेहि' सम्मत्तपर्ययै 'परिहायमाणेहि' परिहीयमानै २ क्रमशः
क्षीयमाणै 'मिउत्तपज्जवेहि' मिउत्तपर्ययै 'परिउत्तमाणेहि' परिवर्द्धमानै=
पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिप्राप्तयै सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिउत्तत्व मिथ्यात्वभाव
प्रतिपत्ति=माप्त=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत् । ततः खलु नन्दोमणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे कहाण लद्धे समणे णाण० पायचारेण जाव पज्जु-
वासइ, णदे धम्म सोच्चा, जिसम्म समणोवासण जाण) उसी काल
में और उसी समय मे हे गौतम । मैं उस राजगृह नगर में विहार करता
हुआ पहुँचा । वहाँ का समस्त परिपदा बदना नमस्कार करने के लिये
शुगति रुक चैत्य मे आई । श्रेणिक राजा भी आया । जय उस मणि
कार श्रेष्ठी नद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान
आदि से निश्चित होकर पैदल ही मेरी बदना करने के लिये आया ।
वहा आकर वह बदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया । उसने
श्रुत चारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया
अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया । (तएण अह रायगिहाओ पडि
निकखते उहिया जणवयविहार विहरामि) इसके बाद मैं वहा से
राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदो में विहार करने

राया गिगए, तएण से णद मणियारसेट्ठी इमीसे कहाण लद्धे समणे णाण०
पायचारेण जाव पज्जुवासइ, णदे धम्म सोच्चा, जिसम्म समणोवासण जाण)

तेकाणेअने तेसमयेहे गौतम । हु विहार करते करते राजगृह नगरभा
पडोअये नगरनी परिपदा शुगशीलक चैत्यभा बदना अने नमस्कार करवा माटे
आवी त्रेणिक राजा पण बदना तेमअ नमन उरवा माटे आव्या छता भणु
यार त्रेणि नदने ज्यारे भारा आववाना समाचारो भल्या त्यारे ते स्नान
पूजेदेथी परवारीने पगपाणा न भने बदना करवा माटे आव्यो त्या आवीने
बदना तेमअ नमन करीने ते उचित स्थाने जेसी गये श्रुतचारित्ररूप धर्मनु
व्याख्यान साधणीने तेले गृहस्थ धर्म धारण करी लीये ओटले हे ते श्रमणो
पासक थर गये (तएण अह रायगिहाओ पडिनिकखते उहिया जणवयविहार
विहरामि) तारपछी हु त्यथी-राजगृह नगरभा नीक्यो अने नीकणीने विहार
जनपदोभा विहार करवा लाग्यो

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व
भागे इत्यर्थः. ' वस्तुपाठगरोदयसि ' वस्तुपाठरुचिते=वस्तुपाठकाना=गृहादि-
निर्माणशास्त्रनिपुणाना=भूगर्भविद्याविशारदाना रुचित'=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन्
तादृशे भूमिभागे=भूप्रदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वापी खनयितुम् ।
इति कृत्वा=इति मनसिनिधाय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण मपेक्षते,=विचारयति, सप्रे-
क्ष्य कल्पे प्रादुर्गमभाताया यावत्-रज्न्या तेजसा ज्वलतिमूर्त्ये=सूर्योदये सति पौषधं
पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्सपरिवृतः महार्थं ' जाव
रायारिह ' महार्थं महार्हं विपुल राजार्हमाभूत गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अथ यही उचित है कि मे भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक
राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार
पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता
पास करे उस स्थान पर एक नदा नामकी बावडी को खुदवाऊ । इस
प्रकार उस ने अपने मन मे विचार किया । (सपेहिता कल्ल पा० जाव
पोसह पारेइ पारेत्ता एहाए कयबलिकम्म मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव
उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ, उवट्टवेत्ता एव वयासी-
इच्छामिण सामी ' तुम्मेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया
जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ') विचार करके उसने प्रातः
काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर
पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवृत्त कर
काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

भने अने योअ्य हागे छे ई ई हु पाणु आवती दावे भवार थता न ० छिउ
राजनी आजा भेणवीने राजगृह नगरनी अकार छथान डोणभा वैलार पर्वतनी
तणेटीमा वास्तुशास्त्रने ज्ञाणुनारा ने स्थानने पमह करे ते स्थान उपर अेक
नदा नामे वाव जोदावु आ रीते तेले मनभा विचार ठ्यो (सपेहिता कल्ल
पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता एहाए कयबलिकम्म मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा०
उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ उवट्टवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी ।
तुम्मेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह
देवाणुप्पिया ।) विचार करीने तेले भीत द्विसे सवार सूर्योदय थता पौषध
पा०ये अने पौषध पाणाने तेले स्नान ठ्यु अने त्थारपडी कागडा वगेरे

આત્મગતોવિચાર સમુદપચત । તદેવાહ-‘ ધન્નાણત ’ ઇત્યાદિ-ધન્યાઃ સ્વલુ તે રાજેશ્વરયાગત્સાઠર્થેવાહપ્રભૃતય, યેષા સ્વલુ રાજગૃહસ્ય યદિ. વહ્યો વાપ્યઃ= સામાન્યઃ પુન્કરિણ્યઃ=સ્મન્યુક્તા યાગત્-સરઃ સર પદ્ધત્કિત્તા=યગૈસ્માત્મરસો ઽસ્મિન્ સરસિ જલ પ્રવહતિ, એ સરસા જગજ્ઞયાના પદ્ધત્કૃતઃ પદ્ધત્કિત્થૂતા જલા શયા દત્તર્થઃ ત્રિધન્તે, યત્ સલુ વહુજનઃ=જનસમુદાયઃ સ્નાતિ ચ પિવતિ ચ તથા- પાનીય ચ સપ્રહતિ=તતો જલ નગતિ । તત્=તસ્માત્ત્રેય = ઽચિત્ સલુ મમ કલ્યે= પ્રાદુષ્પ્રમાતાયા રગન્યા સૂર્યોદયે સતીત્યર્થ, શ્રેણિક રાજાનમાપૃચ્ચ રાજગૃહસ્ય

જેઠ માસ મે મળિકાર શ્રેષ્ઠી નદ ને અષ્ટમ ભક્ત કિયા તીન ઉપવાસ કિયે— ઓર પૌષધ શાલા મેં રહા— । જય ઉસકી યહ તપસ્યા પૂર્ણ પ્રાપ્ત હો રહી થી તવ ઉસે તૃષ્ણા પિપાસા ઓર ક્ષુધા ને વ્યાકુલ કર દિયા । ઉસ સમય ઉસે ઇન્ન પ્રકાર કા વિચાર આયા— (ધન્નાણ તે રાઈસર જાવ સત્થવાહપમિયઓ જેસિણ રાયગિહસ્સ યહિયા વહઓ વાવીઓ પોક્કલરણીઓ જાવ સરસરપતિયાઓ જત્થળ વહુજનો પહાઈ ય, પિયડ ય, પાણિય ચ સવહઈ ત સેય મમ કલ્લ પાડઁ સેણિય આપુચ્છિત્તા રાય ગિહસ્સ યહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિમાપ વેમારપવ્વયસ્સ અદૂર સામતે વસ્તુપાઠગરોદ્દયસિ ભૂમિભાગસિ જાવ ણદ પોક્કલરણિં સ્વળા વેત્તપ્પ સ્તિકદ્દુ એવ સપેહેદ્દ) રાજેશ્વર સે હેતર સાર્થવાહ પ્રભૃતિ વે જન ધયવાદ કે પાત્ર હૈં કિ જિનકી રાજગૃહ નગર કે બાહર અનેક વાવહિયા હૈં, —પક્તિ ભૂત જલાશય હૈં કિ જિન મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હૈં, અનેક જન પાની પીતે હૈં અનેક ડન મેં સે પાની હે જાતે હૈં । તો મુક્કે મી

મળિકાર શ્રેષ્ઠી નદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો—ત્રણ ઉપવાસ કર્યો—અને પૌષધશાળામાં રહ્યો બન્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (ધન્નાણ તે રાઈ સર જાવ સત્થવાહપમિયઓ જેસિણ રાયગિહસ્સ યહિયા વહઓ વાવીઓ પોક્કલરણીઓ જાવ સરસરપતિયાઓ જત્થળ વહુજનો પહાઈ ય, પિયડ ય, પાણિય ચ સવહઈ ત સેય કલ્લ પાડઁ સેણિય આપુચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ યહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે વિસિમાપ વેમારપવ્વયસ્સ અદૂરસામતે વસ્તુપાઠગરોદ્દયસિ ભૂમિભાગ સિ જાવ ણદ પોક્કલરણિં સ્વળાવેત્તપ્પ સ્તિકદ્દુ એવ સપેહેદ્દ) રાજેશ્વરથી માંડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ધણી વાવો છે, પક્તિભૂત જલાશયો છે—કે જેમાં ધણા માણસો સ્નાન કરે છે, ધણા માણસો પાણી પીએ છે, ધણા તેઓમાંથી પાણી લઈ બાય છે તો હવે

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व
भागे इत्यर्थः. ' वस्तुपाठगरोदयति ' वस्तुपाठरुचिरे=वस्तुपाठकानां=गृहादि-
निर्माणशास्त्रनिपुणानां=भूगर्भविद्याप्रसारदाना रुचितः=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन्
तादृशे भूमिभागे=भूमिदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वार्पी खनयितुम् ।
इति कृत्वा=इति मनसिनिगम्य एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण समक्षते,=विचारयति, सप्रे-
क्ष्य कल्पे प्रादुर्गमाताया यावत्-रजण्या तेजसा ज्वलतिस्वर्ये=सूर्योदये सति पौषधं
पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्सपरिवृतः महार्थं ' जाव-
रायारिह ' महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हमाभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव त्रेणिको

अथ यही उचित है कि मे भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक
राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार
पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता
पास करे उस स्थान पर एक नदी नामकी बावड़ी को खुदवाऊ । इस
प्रकार उस ने अपने मन में विचार किया । (सपेक्षिता कल्ल पा० जाव
पोसह पारेह पारेत्ता ग्हाए कयलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव
उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ, उट्टवेत्ता एव वयासी-
इच्छामिण सामी ! तुभेहिं अन्नणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया
जाव खणावेत्ताए, अहासुह देवाणुप्पिया ।) विचार करके उसने प्रातः
काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर
पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निपट कर
काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

अने अने योग्य ठागे ७ ई हु पणु आवती दावे भवार थता न श्रुति
राजनी आजा मेणवीने राजगृह नगरनी गडार ईशान कोणमा वलार पर्वतनी
तलेटीमा वास्तुशास्त्रने ज्ञाणुनाग ७ स्थानने पमह करे ते स्थान उपर अेक
नदी नामे वाव जोदावु आ रीते तेणे भनमा विचार ज्यो (सपेक्षिता कल्ल
पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता ग्हाए कयलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा०
उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ उट्टवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी !
तुभेहिं अन्नणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्ताए, अहासुह
देवाणुप्पिया ।) विचार करीने तेणे नीत्त द्विसे सवार सूर्योदय थता पौषध
पा०ये अने पौषध पाणाने तेणे स्नान क्यु अने त्थारपट्टी कागडा वगेरे

આત્મગતોચિચાર સમુદ્પદ્યત । તદેવાહ-‘ ધન્નાણત ’ ઇત્યાદિ-ધન્યાઃ સ્વલુ તે રાજેશ્વરયાપ્તસાર્થવાદપ્રભૃતય, યેષા સ્વલુ રાજગૃહસ્ય વદિઃ બહુઓ વાપ્યઃ= સામાન્યઃ પુન્કરિણ્ય=સ્મન્યુક્તાઃ યાત્ર-સરઃ સર પટ્ટિકાઃ=યત્રૈકસ્માત્સરસો ઽસ્મિન્ સરસિ જલ પ્રવહતિ, એ સરસા જગત્યાના પદ્મકયઃ પદ્મિક્તિભૂતા જલા શયા इत्यर्थઃ વિદ્યન્તે, યત્ર સ્વલુ મહુજનઃ=મનસમુદાયઃ સ્નાતિ ચ પિવતિ ચ તથા- પાનીય ચ સવહતિ=તતો જલ નાતિ । તત્=તસ્માત્ત્રેય =ઠચિત સ્વલુ મમ કલ્યે= માદુષ્પ્રમાતાયા રજન્યા સૂર્યોદયે સતીત્યર્થ, શ્રેણિક રાજાનમાપૃચ્ચ રાજગૃહસ્ય

જેઠ માસ મે મળિકાર શ્રેષ્ઠી નદ ને અષ્ટમ ભક્ત ક્રિયા ત્રીન ઉપવાસ કિયે—ઔર પૌષધ શાલા મેં રહા— । જય ઉસકી યજ્ઞ તપસ્યા પૂર્ણપ્રાય હો રહી થી તવ ઉસે તૃણા પિપાસા ઔર ક્ષુધા ને વ્યાકુલ કર દિયા । ઉસ સમય ઉસે હન પ્રકાર કા વિચાર આયા— (ધન્નાણ તે રાઈસર જાવ સત્યવાદપ્રમિયઓ જેસિણ રાયગિહસસ વહિયા બહુઓ વાવીઓ પોક્તરણીઓ જાવ નરસરપતિયાઓ જત્યળ બહુજનો પશાદ ય, પિયદ ય, પાણિય ચ સવહદ ત સેય મમ કલ્લ પાડ૦ સેજિય આપુચ્છિતા રાય ગિહસસ પહિયા ઉત્તરપુરતિયમે દિસિમાય વેમારપવ્વયસસ અદૂર સામતે વસ્તુપાઢગરોઈયસિ ભૂમિભાગસિ જાવ જદ પોક્તરણિ સ્વળા વેત્ત ઇ ત્તિકદ્દુ ઇવ સપેહેદ્) રાજેશ્વર સે હેકર સાર્થવાહ પ્રભૃતિ વે જન ધન્યવાદ કે પાત્ર હૈ કિ જિનકી રાજગૃહ નગર કે બાહર અનેક વાવહિયા હૈ,—પક્તિ ભૂત જલાશય હૈં કિ જિન મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હૈં, અનેક જન પાની પીતે હૈ અનેક ઉન મેં સે પાની હે જાતે હૈં । તો મુઝે બી

મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો—ત્રણ ઉપવાસ કર્યો—અને પૌષધશાળામાં રહ્યો જ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (ધન્ના ણ તે રાઈ સર જાવ સત્યગ્રહપ્રમિયઓ જેસિણ રાયગિહસસ વહિયા બહુઓ વાવીઓ પોક્તરણીઓ જાવ નરસરપતિયાઓ જત્યળ બહુજનો પશાદ ય, પિયદ ય, પાણિય ચ સવહદ ત સેય કલ્લ પાડ૦ સેજિય આપુચ્છિતા રાયગિહસસ વહિયા ઉત્તરપુરતિયમે વિસિમાય વેમારપવ્વયસસ અદૂરસામતે વસ્તુપાઢગરોઈયસિ ભૂમિભાગ સિ જાવ જદ પોક્તરણિ સ્વળાવેત્ત ઇ ત્તિકદ્દુ ઇવ સપેહેદ્) રાજેશ્વરથી માહીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ધણી વાવો છે, પક્તિભૂત જાણશયો છે—કે જેમા ધણા માણ્યો સ્નાન કરે છે, ધણા માણ્યો પાણી પીએ છે, ધણા તેઓમાથી પાણી લઈ લય છે તે હવે

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्,
सा कीदृशी जाता ? इत्याह- 'चाउकोणा' इत्यादि- 'चाउकोणा' चतुष्कोणा=
समतीरा समम्=उन्नतत्वात्नतत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्या' सा तथोक्ता,
'अणुपुष्पसुजायवप्पगभीरसीयलजला' अनुपूर्वे सुज्ञानप्रगम्भीरशीतलजला-
अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभाररूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप्प=
केदाराकार जलस्थान तत्र गभीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा,
'सछणपत्तविसमुणाला' संछन्नपत्रविसमृणाला=सछन्नानि=जलेनातरितानि
जलमग्नानान्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि मिसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-चर्चा पहुँचकर उसने नदा नाम की बावड़ी खुदवानी प्रारम्भ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणां २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्ब सुजयावप्पगभीरसीयलजला, सछणपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुय नलिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयकुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तउप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस बावड़ी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

आधीने ते राजगृह नगरनी वन्ने थधने नीकल्ले। नीकलीने ते वान्तुराअना निष्पुतो वडे णताववाभा आवेत्ता स्थान उपर पडोव्वे। अने त्या जलने तेले नदा नामनी वाव जोहववी थइ ढरी दीधी (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्बसुजायवप्पगभीरसीयलजला सछणपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुयनलिणसुभगसोगधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयकुल्लकेसरोववेया परिहत्थयमत्तमत्तउप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) आभ दरेण जोहता जोहता छेवटे ओक द्विगे नदा पुष्करिणी वाव) स पूषुपुले जोहाध गध तेने थार पुष्पा डता दिनाराने लाग तेने ओक सरजो डने ओट्टे डे जेथे नीथे नडोते। आ वावनु अगाधडा पाणीथी लरेलु नीथेनु जण स्थान अणु ज डे

राजा तत्रैषोपागच्छति, उपागत्य यावत्प्राभृतम् उपस्थापयति उपस्थाप्या एवमवा
 दीत्-इच्छामि खलु हे स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातं सन् राजगृहस्य बहिः
 'जाय खणावेत्तए' यावत्-उत्तमपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्याद्रसामन्ते
 वास्तु पाठकरुचिते भूमिभागे यावत् नन्दा पुष्करिणीं खनयितुम् । श्रेणिको पाठ-
 पथासुख हे देवानुप्रिय ! इच्छानुसारं कुरु । ततः खलु नन्द श्रेष्ठी श्रेणिकेन
 राज्ञाऽभ्यनुज्ञातः सन् हृष्टतुष्टः राजगृहस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य वस्तु
 पाठकरुचिते भूमिभागे नन्दा पुष्करिणीं खनयितुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत् । ततः खलु सा
 मित्रादिजनो से परिवृत्त होकर उसने महार्थ साधक यावत् बहुत कीमती
 राजा को भेंट करने योग्य पदार्थ लिया । छेकर वह जहाँ श्रेणिक राजा
 था वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार
 किया और फिर वह भेंट उनके समक्ष रखी । बाद में राजा से उसने
 इस प्रकार कहा हे स्वामिन् मैं आपसे आज्ञा प्राप्तकर राजगृह नगर के
 बाहर ईशान कोण में वैभार गिरि के पार्श्वभाग में एक पुष्करिणी बन
 घाना चाहता हूँ । राजा ने उस की बात सुनकर उससे कहा हे देवानु
 प्रिय ! यथासुखम्- तुम्हारी जैसी इच्छा हो उस के अनुसार
 वैसा ही करो । (तएण ण दे सेणिएण रत्ता अब्भणुत्ताए समाणे हट्ठं
 रायगिह मज्झ मज्जेण निगगच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि
 णद पोक्खरणिं खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) उस प्रकार श्रेणिक राजा
 से आज्ञा प्राप्त कर वह भणिकार श्रेष्ठी नद बहुत ही अधिक आनन्दित
 एवं सतुष्ट हुआ । बाद में वहाँ से आकर वह राजगृह नगर के बीच से

पक्षीओं ने अलग-अलग अपनी-अपनी अतिरिक्त कथुं तयारआइ घेतानी मित्र-भंडीने
 साथे लड़ने-लड़ार्थ साधक यावत् बहुत किमती राजने लेट करवा योग्य पदार्थों
 दीधा लड़ने ते न्या श्रेष्ठिक राज लड़ता त्या गये त्या पक्षीयोंने तेले भने
 लड़ने लड़ने राजने नमस्कार कथां अने पक्षी लेट तेमनी साथे अर्पण करी
 तयारआइ राजने विनती करता तेले कछु के छे स्वामी ! तमारी आज्ञा भेज
 वीने हू राजगृह नगरनी गडार ईशान कोणमा वैभार पर्वतनी तणेदीमा ओष्ठ
 पुष्करिणी (वाव) जोदावपानी भारे धमिछ छे राजने तेनी बात सालगीने
 तेने कछु-के छे देवानुप्रिय ! “ यथा सुखम् ” तमारी जेवी धमिछा होय पुगीथी
 तने ते प्रमाणे करे (तएण ण दे सेणिएण रत्ता अब्भणुत्ताए समाणे हट्ठं
 रायगिह मज्झ मज्जेण निगगच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णद पोक्खरणिं
 खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) आ रीते श्रेष्ठिक राज पासैथी आज्ञा भेजवीने
 ते भणिकार श्रेष्ठि नद भूभञ्ज आनन्दित तेमज सतुष्ट थये तयार

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्,
सा कीदृशी जाता ' इत्याह- ' चाउकोणा ' इत्यादि- ' चाउकोणा ' चतुष्कोणा=
समतीरा समम् = उन्नतत्वापन्नतत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्याः सा तथोक्ता,
' अणुपुत्रसुजायवर्षगभीरसीयलजला ' अनुपूर्वे सुजायवर्षगभीरसीयलजला-
अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभाररूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वर्ष =
कैदाराकार जलस्थान तत्र गभीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा,
' सछण्णपत्तविसमुणाला ' संछन्नपत्रिसमुणाला=सछन्नानि=जलेनान्तरितानि
जलमग्नानोन्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि प्रिसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल-

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-वहाँ पहुँचकर उसने नदा नाम की बावड़ी खुद-
वानी प्रारम्भ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुत्रेण खणमाणा
२ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुत्र सुज-
यावर्षगभीरसीयलजला, सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुय-
नल्लिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिह-
त्थममन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइ-
या पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्त-
विक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे।
तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस बावड़ी
का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा
बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

आवीने ते राजगृह नगरनी वन्थे थधने नीकज्ये नीकणीने ते वास्तुशास्त्रना
निष्ठातो वडे णताववाभा आवेदा स्थान उपर पडोव्थे अने ता जग्गे तेछे
नदा नामनी वाव जोहववी शङ्खरी दीधी (तएण सा नदा पोक्खरणी अणु
पुत्रेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपु
त्रसुजायवर्षगभीरसीयलजला स छण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुयनल्लिणसुभ
गसोग धियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहृत्ययममन्तमत्त
छप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) आभ ६२३
जोहता जोहता छेवटे ओक द्विमे नदा पुष्करिणी वाव) व पृथुपथे जोहाध गध
तेने थार पुत्ता डता डिनाराने भाग तेने ओक सरजोडते ओट्टे उठ्ठे नीचे
नडोते आवावतु अगाधडा पाणीथी लरेतु नीचेतु जल स्थान भूषण ७ ७३

नालानि यस्या सा तथा । ' बहुप्लपउमकुमुपनलिणसुभगसौगधियपुडरीप
महापुडरीयसयपत्तमहस्सपत्तपफुल्लकेशरोववेया ' बहुप्लपमकुमुदनलिनसुभगसौग
न्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रमफुल्लकेशरोपपेता-बहूनि = बहूविधानी
उत्पलानि पद्मानि च=सामान्यकमलानि कुमुदानि=चन्द्रविकासिकमलानि नलि
नानि=विशिष्टगन्धयुक्तकमलानि सुभगानि=सुन्दराणि सौगन्धिकानि=सध्यावि
कासिकमलानि, पुण्डरीकाणि=श्वेतकमलानि, महापुण्डरीकाणि=महाश्वेतकमलानि,
शतपत्राणि=शतदलकमलानि सहस्रदलकमलानि, कीटशानि एतानि ? इत्याह-
मफुल्लकेशराणि=विकसितकेशराणि, तैरुपपेता=व्याप्ता । ' परिहृत्यभ्रमन्मत्तच
पयअणेगमउणगणमिहुण्णियरियसल्लुअइय मधुरसरनाडया ' परिहृत्यभ्रमन्मत्तचप
पदानेकशकुनगगमिधुनशन्दोन्नतिकमधुरस्वरनादिता- ' परिहृत्य ' इतिदेशीशब्दो
ऽयम्, परिहृत्या ' =मचुराः, भ्रमन्तः=इतस्ततो विचरन्तः मत्ताः=मकरन्दपानो
न्मत्ताः पदपदा =भ्रमरास्तेषाम्, तथा-अनेकेषा=ननाविधानां शकुनगणाना=
हससारसादिपक्षिसमूहानां मिथुनाना=युगलरूपाणां शब्दोन्नतिकाः=उत्कृष्टयुक्ता ये
मधुरस्वरः तै नादिता=शब्दायमानेत्यर्थः प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा-
मतिरूपा-अत्यन्तरमणीयेत्यर्थः ॥ सू०२ ॥

कमल दल कमल कद और कमल नाल सदा जल से अन्तरित हो रहे
थे । यह अनेक प्रकार के विकसित केशरों वाले उत्पलों से, कमलों से,
चन्द्रविकाशी कुमुदों से, विशिष्ट गन्ध वाले कमलों से सन् या विकाशी
सुन्दर सौगधिकों से श्वेतकमलों से, महा पुण्डरीकों से, शतपत्र वाले
कमलों से और सहस्र पत्र वाले कमलों से आच्छादिन हो रही थी ।
इधर भ्रमण करते हुए अनेक भ्रमरों के कि जो मकरन्द पान से उन्म
त्त बन रहे थे, तथा नाना प्रकार के पक्षिगणों के-हस, सारस आदि
पक्षि समूह के-युगलों के उत्कृष्ट शब्द युक्त मधुर स्वरों से वाचालित

हत्तु, गलीरहत्तु अने अनुकमे निष्पन्न करवाभा आन्धु हत्तु आभा कमलदल, उभण
कद, अने कमलनाण ह भेषा पाण्णीथी द डायेवा (अतरित) रहैता हत्ता आ वाव
धल्ली जतना विकसित केशरोवाणा उत्पद्धानी, उभजोथी, अद्रविकाशी कुमुदोथी
विशिष्ट सुगन्धवाणा उभजोथी, सध्या विडासी सुन्दर सौग धिकोथी सहैद कम
जोथी, महा पुडरीकोथी, शतपत्रवाणा उभजोथी अने सहस्र (हज्ज) पत्र
वाणा उभजोथी द डायेली हत्ती आ वाव मकरद (पुष्परस) ने भ्वाह लधने
उन्मत्त थर्ध गयेला आभतेम उडता धल्लु कमराओना तेमज धल्लु जतना
पक्षीओना ह स, सारस वगेरे पक्षी समूहोना पक्षीयुगवोना उ

मूलम्—तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी णदाए पोक्खरणीए
 चउट्ठिसिं चत्तारि वणसडे रोवावेइ । तएणं ते वणसडा अणु-
 पुव्वेण सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा य वण-
 सडा जाया किंहा जाव निकुरंवभूया पत्तिया पुप्फिया जाव
 उवसोभेमाणा चिट्ठति । तएणं नदे मणियासेट्ठी पुरच्छिमि-
 ल्ले वणसडे एगं मह चित्तसम करावेइ अणेगखभसयसनिविट्ठ
 पासाइय दरिसणिज्जअभिरूव पडिरूव तत्थ णं वड्ढणि किण्हाणि
 य जाव सुक्खिलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तक-
 म्माणि लेप्पकम्माणि गथिमवेढिमपूरिमसद्याइमाइं उवदसि-
 ज्जमाणाइ चिट्ठसि, तत्थ णं वड्ढणि आसणाणि य सयणाणि
 य अत्थुयपच्चत्थुयाइ चिट्ठति, तत्थणं वहवे णडा य णट्ठा य
 जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्म करेमाणा विहरति, राय-
 गिहविणिग्गओ य जत्थ वड्ढजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसण-
 सयणेसु सन्निसन्नो य सत्तुयट्ठो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य
 साहमाणो य सुहसुहेण विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । तत् खलु म नन्दो मणिगारश्रेष्ठी नन्दाया
 पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चतुरो वनपण्डान् रोपयति कारयतीत्यर्थः । ततः खलु
 पत्नी हुई थी । यह चट्टत प्राप्तादीय, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप
 थी—तात्पर्य अत्यंत रमणीय थी ॥ सूत्र २ ॥

‘तएण से णंदे मणियार सेट्ठी’—इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से णंदे मणियारसेट्ठी) उस मणिगार श्रेष्ठी

स्वश्रेष्ठी सुपरित (शब्दयुक्त) यर्थ रही होती आ वाव भूण न प्राप्तादीय,
 दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप होती ओटवे के ते अत्यंत रमणीय होती सूत्र २

(तएण से णंदे मणियार सेट्ठी—इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्पारणाद (से णंदे मणियारसेट्ठी) ते मण्डिका श्रेष्ठी नंदे

ते वनपण्डाः 'अणुपुण्ड्रेण' अनुपूर्वेण = अनुक्रमेण 'सारस्वित्जमाणा' सरक्ष्यमाणाः = पशुपक्ष्याद्युपद्रातः 'सगोविज्जमाणा' सगोप्यमानाः हिमवनदनादिभ्यः, 'सबद्धिज्जमाणा य' समर्थ्यमानाश्च=जलसेकादिना वृद्धिमाप्ता सन्तः वनपण्डाः पूर्णरूपेण परिणता जाताः । कीदृशास्ते जाताः ? इत्याह—'किण्हा' इत्यादि 'किण्हा' ऋणा=हरितत्वातिशयेन कृष्णवर्णा 'जाव' यावत्—'निकुरबभूया' महामेघनिकुरम्भूताः सजलजलधरनिकुरसदृशाः पत्रिताः पुष्पिताः 'जाव उवसोभेमाणा २' यावत्—श्रिया=वनपण्डश्रिया अतीव उपशोभमाना २ तिष्ठन्ति । ततः खलु नन्दः मणियार श्रेष्ठी पौरस्त्ये वनपण्डे एका महती चित्तसभा कारयति । कीदृशाम् ? इत्याह—'अणेगे' त्यादि—'अणेगावभ

नदने (णदाए पोऋत्तरणीए चउद्धिसिं) नदा पुष्करिणी की चारों दिशाओं में (चत्तारिवणसडे रोवावेइ) चार वनपण्ड आरोपित करवाये (तण्ण ते वणसडा अणुपुण्ड्रेण सारस्वित्जमाणा सगोविज्जमाणा सबद्धिज्जमाणा य वणसडा जाया किण्हा जाव निकुरबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति) आरोपित किये गये वे चारो वनपण्ड क्रमशः सरक्षित होते हुए—पशु पक्षी आदि के उपद्रव से बचते हुए—एव हिम वर्षा—दवाग्नि आदि से रहित होते हुए खूब वृद्धिगत हो गये । इन में चारों ओर हरियाली २ छा गई—इस से ये काले काले दिखलाई देने लगे—ऐसे मालूम देते थे मानो जल से भरे हुए मेघहों । पत्र और पुष्पों से युक्त होने के कारण इन की जोभा कुछ निराली ही बन गई थी । (तण्ण णदे मणियार सेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसडे एग मह चित्त

(णदाए पोऋत्तरणीए चउद्धिसिं) नदा पुष्करिणी (वाव) नी थारे आलु (चत्तारिवणसडे रोवावेइ) चार वनपण्डे रोवावेइ (तण्ण ते वनसडा अणुपुण्ड्रेण सारस्वित्जमाणा सगोविज्जमाणा सबद्धिज्जमाणा य वणसडा जाया किण्हा जाव निकुरबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति) रोवावेइ ते थारेथार वनपण्डे अनुक्रमेण सरक्षित भूता—पशुपक्षी वगेरेना उपद्रवो नी सरक्षा येइ अने हिम वननो अग्नि (दवानव) वगेरेथी सरक्षित भूने भूष वृद्धि पाभ्या तेजोभा अमेर हरीयाणी प्रसगी गधं तेथी तेजो श्याम देभावा लाय्या हता आले के पाक्षीथी लदेला मेघ होय पादडा अने पुष्पोथी युक्त होना अदल तेजोनी शोभा अज्जम निराणी यधं गधं हती (तण्ण णदे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसडे एग मह चित्तसम कारवेइ, भ

सयसनिविद्ध ' अनेकस्तम्भशतसनिविष्टा=नानाविधमणिमाणिक्यादि निर्मितस्तम्भशतसनिविद्धा प्रासादीया दर्शनीयाम्, अभिरूपा, प्रतिरूपाम् । तत्र खलु चित्र सभाया बहूनि=बहुविधानि कृष्णानि च ' जाव ' यावत्-नीलानि च, पीतानि च, रक्तानि च, शुभ्रानि च, ' रुद्रकम्पाणिय ' काष्ठकर्मणि च=काष्ठशिल्पानि ' पोत्यकम्पाणि ' पुस्तकर्मणि=पुस्तकेषु बह्व ताडपत्रमृगलादिषु कर्मणि=लेखन कर्मणि, चित्रकर्मणि=भित्तिरूपेषु चित्ररूपाणि, लेप्यकर्मणि=मृत्तिकासेटिकादिना बल्ल्याधारारचनानिरोपस्थाणि ' गंधिमवेष्टिमपूरिमसघाहमाद् ' ग्रन्थिम-वेष्टिमपूरिम-सघातिमानि, तत्र ग्रन्थिमानि-कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानि, वेष्टिमानि=यानि लतादिवेष्टनतो निष्पादितानितानि पूरिमाणि यानि छिद्रादिपूरणेन निष्पाद्यन्ते कनकादि पुतलिकारत् तानि, सघातिमानि=यानि

सभ करावेड, अनेकखमसयमनिविद्ध प्रासादय हरिसणिज्ज अभिरूव-पडिरूव तत्थ ण वग्णि किण्हाणि य जाव सुक्खिलाणि य कट्टकम्पाणि य पोत्यकम्पाणि चित्तकम्पाणि, लेप्यकम्पाणि गंधिमवेष्टिम पूरिम सघाहमाद् उवदमिज्जमाणाइ २ निवृत्ति) उस मणिकार श्रेष्ठी नद ने पूर्व दिशा सबन्धी वनपड मे एक बडी भारी चित्रसभा बनवाई । यह चित्रसभा नाना प्रकार के मणिक्यादि निर्मित हुए सैकड़ों स्तभों से युक्त थी । प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप थी । उस चित्र सभा मे उसने अनेकविध कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और लाल रंगों से काष्ठ के ऊपर शिल्प कार्य करवाये, पुस्तकर्म करवाये-बह्व, ताड पत्र, कागज आदिकों में लेख लिखवाये, चित्र कर्म करवाये-भित्ति आदिकों के ऊपर नाना प्रकार के चित्र अंकित करवाये, लेप्य कर्म करवाये-

सयस निविद्ध प्रासादय हरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव तत्थ ण बह्वणि किण्हाणि य जाव सुक्खिलाणि य कट्टकम्पाणिय पोत्य कम्पाणि चित्तकम्पाणि लेप्यकम्पाणि गंधिम-वेष्टिम-पूरिमसघाहमाद् उवदमिज्जमाणाइ २ निवृत्ति) भण्डि २ श्रेष्ठी नदे ते पूर्व दिशा तरुना वनपडमा ओड जुल्लारे चित्रसभा बना-वडावी ते चित्रसभा धरणी जतना भण्डिओ भाण्डिओ वगेरेयी बनाववाभा आवेला ओवा सेकडा थाबलाओवागी हुती ते प्रासादीय दर्शनीय अभिरूप अने प्रतिरूप हुती ते चित्रसभाभा तेहे धरणी जतना कृष्ण नील पीत (पीणा), श्वेत (सदे) ओ लाल रगेथी दाष्ठ (लाकडा) ना उपर शिल्प काम करावडाओ पुस्तकर्म करावडाओ, पत्र, ताडपत्र कागज वगेरे उपर लेखो लाभावडाओ-चित्रो दोरावलाओ, भित्ति वगेरे उपर अनेक जतना चित्रो दोरावडाओ, लेप्य कर्म करवाडाओ, भाटी लाल भाटी वडे वट्टी वगेरेनी तेभा

વસ્તુમમૂઢેન નિષ્પાદ્યન્તે લોહજાટાદિમીઢયાદિયત્, તાનિ, એતાનિ પશુવંદ્યો-
 દિરૂપાણિ ' ઉપદસિજ્જમાણાઃ ૨ ' ઉપદસ્યમાનાનિ ૨ લોકેરન્યોન્ય પુનઃ પુનરે-
 પેદ્યમાનાનિ તિષ્ઠન્તિ=સન્તિ । તાં ચલુ વહુનિ ' આસનાણિય ' આસનાનિ=
 ષેત્રકાષ્ઠાદિનિર્મિતાનિ ચતુર્મોળાદિમ્પાણિ શયનાનિ=શયનયોગ્યાનિ સાર્દ્ધતૃતીયે-
 હસ્તેપરિમિતાનિ ફલકાગ્રીનિ, વીજ્ઞાનીત્યાહ- ' અત્યુય ' इत्यादि- ' अत्युय
 चचत्थुयाइ ' આસ્તનપ્રત્યાસ્તતાનિ, આસ્તતાનિ મૃદુલચ્છાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ, ષ-
 ત્યોસ્તતાનિ = તદુપરિ પુનઃપુનર્દુઃખાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે ।
 પુનર્થે-તત્ત્વ ચલુ વહુનો નદાથ્થ=ગાનનૃત્યમર્ત્તાર. ' જટ્ટા ય ' નૃત્તા. કેચ્છમજ્જવિ-
 ક્ષેપમાત્રેણ નર્તનશીલથ યાત્ ' દિલ્લમહમ્મત્તવેયણા ' દત્તમૃતિમક્તવેતના.-દત્તા!

મિઢી, ચરિયામિઢી સે ગહી આદિ કી ડમ્મમેં રચના કરાઈ । અન્થિમ,
 વેષ્ટિમ, પૂરિમ, ઇવ સધાતિમ આદિ અનેકુ ચેલ મી ડસ મેં દિચ્છલાળ
 (તત્થેણ વહુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ ય, અત્યુ ય પચ્ચત્થુયાઈ ચિટ્ટતિ
 તત્થેણ વહુવે જટ્ટાય જટ્ટા ય, જાવ દિલ્લમહમ્મત્તવેયણા તાલાયકમ્મ
 કરેમાણા વિહરતિ) અનેક આસન, શયન, જો આસ્તુત પ્રત્યાસ્તુત થે
 થે મી ડસમેં રચાયે, વેત્ર અથવા કાષ્ઠ આદિ સે નિર્મિત ચતુષ્કિકાદિ
 હેપ-કુર્સી આદિરૂપ જો હોતે હેં થે ઓમન હે એવ માઢે ત્રીન હાથે કે
 જો કાષ્ઠ ફલક-નચ્છતા આદિરૂપ હોતે હેં કિ જિન પર અચ્છી તરેહ
 સોયા જા સકના હેં થે શયન હેં । ઇન આસન શયનો કે ડપર મૃદુલ
 વચ્છાદિ, વિઝા હુઆ થા ઇસલિયે થે આસ્તુત થે, ઓર ડન મૃદુલ વચ્છા
 દિકો કે ડપર ઓર મી ડૂસરા પલગ પોસ વિઝા હુઆ થા ઇસ લિયે થે
 પ્રત્યસ્તુત થે । નદ સેઠ ને ડસ ચિત્ર સમા મેં નરો કો નર્તો કો-નૃત્યે

ચેના ઠરાવડાવી અથિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સધાતિમ વગેરે ઘણાં જાતની
 રમતો પશુ તેમા દોરાવડાવી (તત્થેણ વહુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ, ય, અત્યુય
 પચ્ચત્થુયાઈ ચિટ્ટતિ, તત્થેણ વહુવે જટ્ટાય જટ્ટા ય, જાવ દિલ્લમહમ્મત્તવેયણા
 તાલાયકમ્મ કરેમાણા વિહરતિ) ઘણાં આમનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તુત
 પ્રત્યાસ્તુત હતા-પશુ તેમા મૂકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામાં
 આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ ખુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને
 સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખ્તા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી
 રીતે સુઈ શકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ
 વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલા થા માટે જ તેઓ આસ્તુત હતા તે કોમળ
 વસ્ત્રો વગેરે ઉપર જે પાથરેલું હતું એટલા માટે એઓ પ્રત્યા-
 સ્તુત હતા નહ

શ્રુતિઃ=ગાન્યાદિરૂપ પારિશ્રમિકમ્, મક્તમ્=ઓદનાદિરૂપ વેતન=નૃપ્યકાદિરૂપ
પરિશ્રમિકમ્, एतेषा द्वन्द्वे શ્રુતિમક્તવેતનાનિ, દત્તાનિ શ્રુતિમમક્તવેતનાનિ યેભ્ય-
સ્તે તથોક્તા પુરુષાઃ ' તાલાચરમ્ ' તાલાચરકર્મ=નટાદિ સમ્પન્નિક ગીતવા-
દિત્રાદિકર્મ કુર્વાણા વિહરન્તિ=તિષ્ઠન્તિ સ્મ । અ ચ-રાજગૃહમિનિર્ગતઃ=વાયુ-
સેવનાર્થ રાજગૃહનગરાદ્ બહિર્નિષ્કૃતઃ વહુજનો=જનસમુદાયઃ ' જત્ય ' યત્ર ચિત્ર-
સભાયામાગત્ય તેષુ પૂર્વન્યસ્તેષુ=પૂર્વમ્યાપિતેષુ આસનશયનેષુ કથિત્ ' સનિસ-
ન્ધાય ' સનિષ્ણઃ=અપવિષ્ટ', કથિત્ ' સતુયદ્દો ય ' સત્ત્વગૃહત્થ શયિતઃ, કથિત્

કારકોં કો ધાવત્ શ્રુતિ, મક્ત એવ વેતન દેકર તાલચર કર્મ કરાને
વાલોં કો ખી નિયુક્ત કર રલા ધા । જો ગાન નૃત્ય કર્મ કરતે હેં વે નટ
હેં । જો કેવલ અગ વિલેપ માત્ર સે હી નૃત્ય ક્રિયા પ્રદર્શિત કરતે હેં વે
નૃત્ત હેં । ધાન્યાદિ રૂપ પારિશ્રમિકાના નામ શ્રુતિ, ઓદનાદિરૂપ પારિશ્ર-
મિકાના નામ મક્ત એવ નગદી પૈસા રૂપ આદિ રૂપ પરિશ્રમિકાના
નામ વેતન હેં । નટાદિ સમ્પન્ની ગીતનૃત્ય વાદિત્ર આદિ કર્મ કો જો
કરતે હેં ડનકા નામ તાલચર હૈ । તપલે આદિ રજાને વાલે વ્યક્તિ તા-
લાચરો મેં હેં । (રાયાગિહવિણિગગાઓ ય જત્ય વહુજનો તેસુ પુવ્વન્ત્યે
સુ આસનસયનેસુ સનિસન્ધો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેન્ડમાણો
ય સાહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગર સે વાયુ સેવન-
ધૂમને-કે લિયે નિકલે હુણ અનેક જન ડસ ચિત્ર સના મેં આતે ડનમેં
કિતનેક જન વહા પૂર્વન્યસ્ત ડન આસન શયનોં પર વેઠ જાતે, ઔર
કિતનેક જન સો જાતે, કિતનેક જન ગીતવાદિત્રોં કો સુનતે, કિતનેક

લક્ષ્મી અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ ખીન પશુ તાલચર કર્મ કર
નાશઓની નીમણુંક કરી હટી જોઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે
જોઓ લક્ષ્મી અગ વિલેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણના
રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે શ્રુતિ મહેનતાણના રૂપમા ઓદન (રાધેના ચોખા)
વગેરે આપે તે લક્ષ્મી અને રોકડા નાણા આદી વગેરેના નિંડા મહેનતાણના
ખદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાજીત્ર વગેરે કર્મ
કરનારાઓ ' તાલચર ' છે તખલા (નરલા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલ-
ચરે છે (રાયાગિહ વિણિગગાઓ ય જત્ય ગૃહજનો તેસુ પુવ્વન્ત્યેસુ આસનસય-
નેસુ સનિસન્ધો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેન્ડમાણો ય સાહેમાણો ય સુહ
સુહેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગરના હરવા કરવા માટે નીડજેલા ઘણા માણસો
ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેવાડ માણસો તે પૂર્વે મૃગપડાવેલા
આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને ડંટલાડ સૂઈ જતા, ડંટલાડ ગીત,

વસ્તુમમૂઢેન નિષ્પાદ્યન્તે લોહઝાઝાદિમીઢ્યાદિયત્, તાનિ, એતાનિ પશુપેદ્યાં
 દિરૂપાણિ ' ઉપદસિજ્ઞમાણાઃ ૨ ' ઉપદશ્યમાનાનિ ૨ લોરેરન્યોન્ય પુનઃ પુનઃ
 પેદશ્યમાનાનિ તિષ્ઠન્તિ=સન્તિ । તા સહુ બહુનિ ' આસનાણિય ' આસનાનિ=
 ઘેત્રકાષ્ઠાદિનિર્મિતાનિ ચતુરંગોનાદિરૂપાણિ શયનાનિ=શયનયોગ્યાનિ સાદૃશત્વતીય-
 હસ્તપરિમિતાનિ ફલકાદીનિ, ધીરશાનીત્યાહ- ' અત્યુય ' દત્ત્યાદિ- ' અત્યુયપ-
 ચ્ચત્યુયાઃ ' આસ્તનપ્રત્યારત્તાનિ, આસ્તતાનિ મૃદુલચ્છાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ, ઘે-
 ત્યોસ્તતાનિ = તદુપરિ પુનઃપુનર્દુરૂપાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ તિષ્ઠન્તિ=ચર્તન્તે ।
 પુનશ્ચ-તત્ર સહુ ગ્રહયો નટાશ્ચ=ગાનનૃત્યચર્ચારઃ ' જટ્ટા ય ' નૃત્તા. કેરલમન્નદિ
 ક્ષેપમાત્રેણ નર્તનશીલાશ્ચ યાત્ ' દિગ્ગમદ્ભક્તવેયણા ' દક્ષમૃતિમક્તવેતના-દત્તાં

મિટ્ટી, સ્થરિયામિટ્ટી સે ગદ્દી આદિ કી ઉસમેં રચના કાવાઈ । અન્થિમ,
 વેષ્ટિમ, પૂરિમ, એવ સધાતિમ આદિ અનેક સ્થેલ મી ઉસ મેં દિલ્લાવ
 (તત્ત્વેણ વદ્દુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ ય, અત્યુ ય પચ્ચત્યુયાઃ ચિદ્દત્તિ
 તત્ત્વેણ વદ્દે જટ્ટાય જટ્ટા ય, જાવ દિગ્ગમદ્ભક્તવેયણા તાલાયકમ્મ
 કરેમાણા વિહરતિ) અનેક આસન, શયન, જો આસ્તુત પ્રત્યાસ્તુત થે
 વે મી ઉસમેં રસવાયે, વેત્ર અથવા કાષ્ઠ આદિ સે નિર્મિત ચતુષ્કિકાદિ
 રૂપ-કુર્સી આદિરૂપ જો હોતે હેં વે આસન હેં એવ સાઠે ત્રીન હાથે કે
 જો કાષ્ઠ ફલક-નક્ષત્રા આદિરૂપ હોતે હેં કિ જિન પર અઢી તરેહ
 સોર્યા જા સકના હેં વે શયન હેં । ઇન આસન શયનોં કે ઉપર મૃદુલ
 વસ્ત્રાદિ, ઘિડા હુઆ થા હસલિયે વે આસ્તુત વે, ઓર ઉન મૃદુલ વસ્ત્રા
 વિકો કે ઉપર ઓર મી દૂસરા પલગ પોસ ઘિડા હુઆ થા હસ લિયે વે
 પ્રત્યસ્તુત થે । નદ સેઠ ને ઉસ ચિત્ર સમા મેં નટોં કો નટોં કો-નૃત્ય

રચના ઠરાવડાવી અન્થિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સધાતિમ વગેરે ઘણી જાતની
 રમતો પણ તેમા ઠરાવડાવી (તત્ત્વેણ વદ્દુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ, ય, અત્યુય
 પચ્ચત્યુયાઃ ચિદ્દત્તિ, તત્ત્વેણ વદ્દે જટ્ટાય જટ્ટા ય, જાવ દિગ્ગમદ્ભક્તવેયણા
 તાલાયકમ્મ કરેમાણા વિહરતિ) ઘણા આમનો, ઘણી પધારીઓ કે જે આસ્તુત
 પ્રત્યાસ્તુત હતા-પણ તેમા મુકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામા
 આવેલી અત્યુજિગ વગેરે રૂપ પુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને
 સાડા ત્રણ હાથના જે લાખડાના તળતા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી
 રીતે સુઈ ગકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ
 વસ્ત્રો વગેરે પાવરેલા હતા એટલા માટે જ તેઓ આસ્તુત હતા તે કોમળ
 વસ્ત્રો વગેરે ઉપર એક જીજુ વસ્ત્ર પાથરેલું હતું એટલા માટે એઓ પ્રત્યા-
 સ્તુત હતા નહ શેઠે તે ચિત્રસભામા નટોં, નૃત્ત-નાચનારા માણસો-ભૂતિ,

શ્રુતિ.=ધાન્યાદિરૂપ પારિશ્રમિકમ્, મક્તમ્=ઓડનાદિરૂપ વેતન=રૂપ્યકાદિરૂપ
પારિશ્રમિકમ્, એનેપા ઇન્દ્રે શ્રુતિમક્તવેતનાનિ, વૃત્તાનિ શ્રુતિમમક્તવેતનાનિ ચેભ્ય-
સ્તે તથોક્તા પુરુષાઃ ' તાલાચરક્રમ ' તાલાચરક્રમ=નટાદિ સમ્પન્ધક ગીતવા-
દિત્રાદિકર્મ કુર્વાણા વિહરન્તિ=તિષ્ઠન્તિ સ્મ । અથ ચ-રાજગૃહનિર્ગતઃ=વાયુ-
સેવનાર્થ રાજગૃહનગરાદ્ પદ્મિર્નિમ્મૃતઃ વહુજનો=જનસમુદાય. ' જત્ય ' યત્ર ચિત્ર-
સભાયામાગત્ય તેષુ પૂર્વન્યસ્તેષુ=પૂર્વેઆપિતેષુ આસનશયનેષુ રુશિત્ ' સનિસ-
ન્ધાય ' સનિવણઃ=ઉપવિષ્ટઃ, રુશિત્ ' સતુયદ્યો ય ' સત્વગૃત્તથ શયિતઃ, રુશિત્

કારકોં કો પાત્ર શ્રુતિ, મક્ત એવ વેતન દેકર તાલચર કર્મ કરને
ધાલોં કો ખી નિયુક્ત કર રચા ધા । જો ગાન નૃત્ય કર્મ કરતે હૈં વે નટ
હૈં । જો કેવલ અગ વિલેપ માત્ર સે હી નૃત્ય ક્રિયા પ્રદર્શિત કરતે હૈં વે
નૃત્ત હૈં । ધાન્યાદિ રૂપ પારિશ્રમિકાના નામ શ્રુતિ, ઓડનાદિરૂપ પારિશ્ર-
મિકાના નામ મક્ત એવ નગદી પૈસા રૂપ્ય આદિ રૂપ પારિશ્રમિકાના
નામ વેતન હૈં । નટાદિ સમ્પન્ધી ગીતનૃત્ય આદિત્ર આદિ કર્મ કો જો
કરતે હૈં ઉનકા નામ તાલચર હૈં । તત્તલે આદિ યજોને વાલે વ્યક્તિ તા-
લાચરોં મેં હૈં । (રાયાગિહ વિણિગગા ય જત્ય વહુજનો તેષુ પુઞ્વન્ત્યે
સુ આસનસયનેષુ સનિસન્ધો ય સતુયદ્યો ય સુણમાણો ય પેન્ડમાણો
ય સાહેમાણો ય સુદ્ર સુદેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગર સે વાયુ સેવન-
ધૂમને-કે લિયે નિકલે હુણ અનેક જન ઉસ ચિત્ર સભા મેં આતે ઉનમેં
કિતનેક જન વહા પૂર્વ-ચસ્ત ઉન આસન શયનોં પર વેઠ જાતે, ઓર
કિતનેક જન સો જાતે, કિતનેક જન ગીતવાદિત્રોં કો સુનતે, કિતનેક

લક્ષ્મ અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ ખીન પણ તાલચર કર્મ કર
નારાઓની નીમણુક કરી હતી જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે
જેઓ ફક્ત અગ વિલેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણના
રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે શ્રુતિ મહેનતાણના રૂપમા ઓડન (રાધેવા ઓળા)
વગેરે આપે તે લક્ષ્મ અને રોકડા નાણા આદી વગેરેના નિકલ મહેનતાણ
બદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાગ્ય વગેરે કર્મ
કરનારાઓ ' તાલચર ' છે તબલા (નરઘા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલ-
ચરો છે (રાયાગિહ વિણિગગા ય જત્ય વહુજનો તેષુ પુઞ્વન્ત્યેસુ આસનસય-
નેસુ સનિસન્ધો ય સતુયદ્યો ય સુણમાણો ય પેન્ડમાણો ય સાહેમાણો ય સુદ્ર
સુદેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગરના હરવા કરવા માટે ની-જેવા ધણા માણસો
ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૂકાવડાવેલા
આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઈ જતા, કેટલાક ગીત,

‘सुणमाणो य’ शृण्वतश्च गीतगादिनादिक कर्णनिपयी कुर्वन् ऋश्वत् ‘पेच्छपाणो य’
प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिक पश्यन् ‘साहेमाणो य’ कथयन्=परस्पर कथा कुर्वन्-
श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वक सानन्द विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएण णंदे दाहिणिछेवणसडे एगं मह महाणससाल
करावेइ अणेगखभसयसंनिविट्ठ जाव पडिरूव तत्थ ण बहवे
पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असणं४ उवक्खडेति बहूणं
समणमाहणअतिहि किवणवणीसगाण परिभाएमाणा परिवेसे-
माणा विहरति, तएण णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिछे वण-
संडे एग मह तेगिच्छियसाल करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठ जाव
पडिरूव, तत्थ ण बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुयाय जाणुयपुत्ता
य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण बाहियाण
य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ करेमाणा
२ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा
तेसि बहूणं बाहियाण य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय
ओसहभेसज्जभत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा २ विहरति,
तएण णंदे उत्तरिछे वणसडे एग मह अलकारियसभ करावेइ
अणेगखभसयसंनिविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ ण बहवे अलका-
रियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण समणाण य माहणाणय
अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाणय दुब्बलाणय अलंका-
रियकम्म करेमाणा २ विहरति । तएण तीए णदाए पोक्ख-

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत
करते हुए बड़े आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

वाद्यत्रोने साधणता, डेटवाड नृत्यो वगेरे जोता अने डेटवाड पासे पासे
जेसीने गपसप करता सुजेथी पोतानो वअत पसार करता डता ।

रिणीए वहवे सुणाहा य अणाहा य पथिया य करोडिया य
कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्टहाराय अप्पेगइया
पहायंति अप्पेगइया पाणिय पियति, अप्पेगइया पाणिय सव-
हति अप्पेगइया विसज्जियसेय जल्लमलपरिस्समनिद्विखुप्पिवासा
सुह सुहेणं विहरति । रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो
किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरय
अणेग सुउणगणरुयरिभियसकुलेसु सुहसुहेणं अभिरममाणो
२ विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण णदे’ इत्यादि । तत् खलु नन्दः श्रेष्ठी दाक्षिणात्ये वन-
पण्डे एका महतीं महानसशाला=पाकशाला कारयति । कीदृशीम् ? इत्याह—
‘अणेग’ इत्यादि—अनेकसम्भगतसन्निविष्टा यात्रप्रतिरूपाम् । तत्र खलु बहवः
पुरुषा दत्तभृतिभक्तवैतना=पारिश्रमिकदानेन नियुक्ता पाकरुर्मकराः विपुलम्

‘तएण णदे दाहिणिल्ले’—इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे) नद श्रेष्ठी ने (दाहिणिल्ले) दक्षि
णदिशा सबन्धी (वणसडे) वनघड मे (एग मह) एक बड़ा भोरी (म
हाणससाल) रसोदघर—भोजन शाला (करावेइ) वनवाया । (अणेग
खभसयसन्निविट्ठ जाव पडिरुव, तत्थण वहवे पुरिमा दिन्नभइमत्त वेयणा
विपुल असण४ उवक्खडेंति वट्टण समण—माहण—अतिहि—किरणवणीप-
गाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणाविहरति) यह रसोदघर सैकड़ों खभो
के ऊपर खड़ा किया गया था । बड़ा ही रमणीय था । इस में अनेक
पुरुष रसोई बनाने का काम करने के लिये नियुक्त किये गये थे । उन्हें

‘तएण णदे दाहिणिल्ले’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थार ५ श्री (णदे) नद शेडे (दाहिणिल्ले) दक्षिण दिशाना
(वणसडे) वनघडभा (एग मह) एक बहुत विशाल (महाणससाल) रसोद
घर—भोजनशाला—(करावेइ) बनावडावा (अणेगखभसयसन्निविट्ठ जाव पडि
रुव तत्थण वहवे पुरिसा दिन्नभइमत्तवेयणा विपुल असण४ उवक्खडेंति वट्टण
समण—माहण—अतिहि—किरणवणीपगाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरति)
आ भोजनशाला सेकड़ों आलस्योनी होती ते भूषण रमणीय होती तेभा
—तो तैयार करवा भाटे धुआ भाषुसो नियुक्त करवाभा आन्या होता तेआने

‘सुणमाणो य’ शृण्वतश्च गीतयादित्रादिकं कर्णनिपयी कुर्वन् ऋषित् ‘पेच्छमाणो य’ प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिकं पश्यन् ‘साहेमाणो य’ कथयश्च=परस्पर कथा कुर्वन् श्लाघयन् या सुखमुखेन=सुखपूर्णं सानन्दं विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएण णंदे दाहिणिछेवणसडे एगं मह महाणससाल करावेइ अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरूव तत्थ ण बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाण परिभाएमाणा परिवेसे-माणा विहरति, तएण णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिछे वण-सडे एगं महं तेगिच्छियसाल करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुयाय जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं बाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसि बहूणं बाहियाण य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्म करेमाणा २ विहरंति, तएण णंदे उत्तरिछे वणसडे एग मह अलकारियसभ करावेइ अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ ण बहवे अलका-रियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य माहणाणय अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाणय दुब्बलाणय अलका-रियकम्म करेमाणा २ विहरति । तएण तीए णदाए पोक्ख-

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत करते हुए बड़े आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

वाल्मीकि ने साधुगता, डेटलाड नृत्यो वगेरे जेता अने डेटवाड पासे पासे जेसीने गपसप करता सुजेथी पोतानो वधत पसार करता छता।

ચિકિત્સાશાલાયા, સ્વલુ પદ્મો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકા=ચિકિત્સાશાસ્ત્રમનધીન્વાપિ વૈયપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિચારણવિધિજ્ઞાશ્ચ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાપેદિના મુતાશ્ચ, તથાકુશલ-સ્વકીયતર્કતથિચિકિત્સાદૌ મંયીણાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષા પુત્રાશ્ચ દત્તશ્રુતિભક્તવેતનાઃ ગ્રહના 'વાહિયાણ' વ્યાધિતાના વિશિષ્ટ દુસ્ત્રવનકુઠાદિરોગગ્રના, 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિ' યાણ ય' રોગિકાણા દુર્બલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેજ્જ્ઞકરેમાણા' ચિકિત્સા=વ્યાધિપ્રતીકાર, કુર્વન્ત, પ્રિદ્ધન્તિ । તસ્યા શાલાયા અન્યે ચાત્ર વહનઃ પુરુષાઃ દત્તશ્રુતિભક્તવેતનાસ્તેષા ગ્રહના વ્યાધિતાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્બ-

ન્દર થી । હસ મેં અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, શ્રુતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેર નિયુક્ત કિયે હુણ થે । યે વહા અનેક વ્યધિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વહા ઓર ઓ પરિચારક મનુષ્ય શ્રુતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુણ યે-જો હન વ્યાધિન ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔપધ, મૈપડ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે થે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈદ્યો કી પ્રવૃત્તિ દેર ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર છેતે હૈં એસે વ્યક્તિ યહા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈં । જો અપની તર્કજ્ઞા કે ઘલપર ચિકિત્સા આદિ મે નિપુણ હોતે હૈં વે યહા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈં । વિશિષ્ટ દુસ્ત્રોત્પાદક કુઠાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેં હૈં એસે મનુષ્ય યહા વ્યાધિત શબ્દ કે વાચ્ય હુણ હૈં । ઇક

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ કુશલ પુત્રો, શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માર્ગ માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકોનો શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માર્ગ, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ લેખન્ય, ભક્ત અને પાનધી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ બે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કંઠી ગીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધું લેખને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે એ તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે બે પોતાની તર્કપ્રાશસ્તિના આધારે ઇલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' રાખના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુસ્ત્રોત્પાદક કુઠ વગેરે રોગથી બે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

अशनम् ४ चतुर्विधमाहारम् उपस्कुर्यन्ति । इदं श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीप-
काना-परिभाजयन्तः २=विभाग कुर्यन्तः, परिवेषयन्तश्च विहरन्ति ।

ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी 'पञ्चत्थिमिले' पाश्चात्य=पश्चिमदिग्भागस्थे
वनपण्डे एका महती 'तेणिच्छियसाल' चिकित्साशाला=रोगापनयनशाला ' करा-
वेह ' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भगतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपा, तत्र=तस्या

पारिश्रमिक रूप में भृति, भक्त और वेतन दिया जाता था । ये ४ चारों
प्रकार का आशनादि रूप आहार उसमें घनाया करते थे । अनेक श्रमण
ब्राह्मण, अतिथि एवं वनीपकोंको-याचकोंको यहासे भोजन दिया जाता
था । कोई २ वही खाते थे और कोईकोई अपने विभागको लेजाते थे ।
(तदण णदे मणियारसेट्ठी पञ्चत्थिमिले वणसडे एग मह तेणिच्छिय-
साल करावेह, अणोगखभसयसनिविद्ध जाव पडिरूव, तत्थ ण बह्वे-
वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणु य पुत्ता य कुसला य कुसल
पुत्ता य दिन्नभइमत्तवेयणा बहूण विहायाण य गिलाणाण य रोगियाण
य दुक्खलाण य तेइच्छ करेमाणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बह्वे
पुरिसा दिन्नभइमत्तवेयणा तेसि बहूण बाहियाण य रोगियाण य गिला-
णाण य दुक्खलाण य ओसहभेसज्जमत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा
२ विहरति) इस के बाद उस नद माणिकार श्रेष्ठी ने पश्चिम दिशा
सम्बन्धी वनपण्ड में एक बड़ी भारी चिकित्साशाला-औषधालय-बन
वाई । यह भी सेकड़ों ख नों के ऊपर गवड़ी की गई थी । बहुत ही सु

पोताना भडेनताथु भदल भूति, लक्ष्मि अने वेतन (पगार) आपवामा आवतु
हेतु थारे जताना अशन वगेरे आहारो तेमा जनावता हता धत्ता श्रमणो
ब्राह्मणो, अतिथियो अने वनीपको-याचनाराओ-ने त्याथी लोअन आपवामा
आवतु हेतु तेओमाथी डेटलाक तो त्या न नभी लेता हता अने डेटलाक
पोतानु लालु लई जता हता (तदण णदे मणियार सेट्ठी पञ्चत्थिमिले वणसडे
एग मह तेणिच्छियसाल करावेह, अणोगखभसयसनिविद्ध जाव पडिरूव, तत्थ ण
बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ताय जाणुयाय जाणुयपुत्ताय कुसलाय कुसलपुत्ताय दिन्न भइ
भत्तवेयणा बहूण बाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुक्खलाण य तेइच्छ करे-
माणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बह्वे पुरिसा दिन्नभइमत्तवेयणा तेसि बहूण
बाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुक्खलाण य ओसहभेसज्जमत्तपाणेण पडियार
कम्म करेमाणार विहरति) त्थारभाह ते भण्डिकार शेडे पश्चिम दिशाना वनपडमा
ओइ भहु विशाण पाया उपर चिजित्सा शाणा (इवाणानु) जनावताथी ओ
पथु सेकडो थाललाओथी जवली करवामा आवी हती तेम न थु

ચિકિત્સાશાલાયા, સ્વલુ પુત્રો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' શાયકા=ચિકિત્સાશાલ્યમનવીન્દ્યાપિ વૈયત્રનિદર્શનેન વ્યાધિમારણવિધિજ્ઞાશ્ચ, ઘાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાવેદિના મુતાન્, તથાકુશલઃ=સ્વકીયતર્કતશ્ચિકિત્સાદૌ મનીષાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષા પુત્રાશ્ચ દત્તશ્રુતિભક્તચેતના. ગ્રહના 'વાહિયાળ' વ્યાપિતાના વિશિષ્ટઃ સ્વજનકુળાદિરોગમના, 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિયાળ ય' રોગિકાણા દુર્બલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેજઃઝરેમાણા' ચિકિત્સા=વ્યાપ્તિપતીશ્ચ, કુર્વન્ત, વિદ્વન્તિ । તસ્મા શાલાયા ખન્યે ચાત્ર વદન' પુરુષાઃ દત્તશ્રુતિભક્તચેતનાસ્તેષા ગ્રહના વ્યાધિનાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્બ-

ન્દર યી । હસ મેં અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, શ્રુતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેર નિયુક્ત કિયે હુળ યે । યે દશા અનેક વ્યધિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે યે । વહા ઓર ખી પરિચારક મનુષ્ય શ્રુતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુળ યે-જો ઇન વ્યાધિન ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔષધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે યે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈદ્યો કી પ્રવૃત્તિ દેવ ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર છેલે હૈં એસે વ્યક્તિ યહા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુળ હે । જો અપની તર્કના કે ઘલપર ચિકિત્સા આદિ મેં નિપુણ હોતે હૈં વે યહા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુળ હૈં । વિશિષ્ટ ડું લોત્પાદક કુળાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેહૈં ંસે મનુષ્ય યહા વ્યાપિત શબ્દ કે વાચ્ય હુળ હૈં । ઇક

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ પુત્રો, શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા મદદ માણુસોની, ગ્લાન માણુસોની, રોગીઓની, ડમન્ટેર માણુસોની ચિકિત્સા (ડવાઈ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકઓને શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ મદદ, ગ્લાન, રોગી અને ડમન્ટેર માણુસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ ને વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કેની ગીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધુ બોધને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે તે માણુસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે ને પોતાની તર્કશાક્તિના આધારે ડિવાઈ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' રૂપના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ ડું જો-તેમને કુલ વગેરે મેળથી ને પીડાતા રહે છે એવા માણુસો અહીં વ્યાપિત

અશનિમ્ ૪ ચતુર્વિધમાહારમ્ ઉપસ્કુરન્તિ । રૂદ્ના શ્રમણગ્રાહ્યનાતિથિકૃપણવનીપ-
કાના-પરિભાજયન્તઃ ૨=વિભાગ કુર્યન્તઃ, પરિવેપયન્તશ્ચ વિહરન્તિ ।

તતઃ खलु नन्दो मणिगारश्रेष्ठी 'पच्चत्थिमिह' पाश्चात्ये=पश्चिमदिग्भागस्थे,
वनपण्डे एका महती 'तेमिच्छियसाल' चिकित्साशाखा=रोगापनयनशाला ' करा
वेह ' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपा, तत्र=तस्या

પારિશ્રમિક રૂપ મેં ભૂતિ, ભક્ત ઓર વેતન દિયા જાતા થા । યે ૪ ચારો
પ્રકાર કા આશનાદિ રૂપ આહાર ઉસમેં વનાયા કરતે થે । અનેક શ્રમણ
ગ્રાહ્યના, અતિથિ એવ વનીપકોકો-યાચકોકો યહાસે ભોજન દિયા જાતા
થા । કોઈ ૨ વહી જાતે થે ઓર કોઈ કોઈ અપને વિભાગ કો લેજાતે થે ।
(તત્ત્વેણ નંદે મણિગારસેટ્ટી પચ્ચત્થિમિરલે વગસડે એક મહ તેનિચ્છિય-
સાલ કરાવેહ, અણેગલ્લભસયસનિવિદ્ધ જાવ પઢિરૂવ, તત્થેણ વહવે
વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તા ય જાણુયા ય જાણુ ય પુત્તા ય કુસલા ય કુસલ
પુત્તા ય દિગ્ગમ્મભક્તવેયણા વહૂણ વાહિયાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ
ય દુગ્ગલ્લાણ ય તેદ્ધિચ્છ કરેમાણા ૨ વિહરતિ, અણ્ણે ય એત્થ વહવે
પુરિસા દિગ્ગમ્મભક્તવેયણા તેસિં વહૂણ વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલા
ણાણ ય દુગ્ગલ્લાણ ય ઓસહમેસજ્જમ્મત્તવાણેણ પઢિયારકમ્મ કરેમાણા
૨ વિહરતિ) હસ કે બાદ ઉસ નદ માણિકાર શ્રેષ્ઠી ને પશ્ચિમ દિશા
સમ્બન્ધી વનપડ મે એક બહી ભારી ચિકિત્સાશાલા-ઔષધાલય-વન
બાઈ । યહ બી સેકડો જ્ઞ મોં કે ઉપર ગ્વહી કી ગઈ થી । વહુત હી સુ

પોતાના મહેનતાણા બદલ ભૂતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપવામા આવતું
હતું ચારે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમા બનાવતા હતા ધણી શ્રમણો
ગ્રાહ્યો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ-ને ત્યાંથી ભોજન આપવામા
આવતું હતું તેઓમાથી કેટલાક તો ત્યા જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક
પોતાનું ભાણું લઈ જતા હતા (તત્ત્વેણ નંદે મણિગાર સેટ્ટી પચ્ચત્થિમિરલે વગસડે
એક મહ તેનિચ્છિયસાલ કરાવેહ, અણેગલ્લભસયસનિવિદ્ધ જાવ પઢિરૂવ, તત્થેણ
વહવે વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તા ય જાણુયા ય જાણુયપુત્તા ય કુસલા ય કુસલપુત્તા ય દિગ્ગમ્મ
ભક્તવેયણા વહૂણ વાહિયાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુગ્ગલ્લાણ ય તેદ્ધિચ્છ કરે
માણા ૨ વિહરતિ, અણ્ણે ય એત્થ વહવે પુરિસા દિગ્ગમ્મભક્તવેયણા તેસિં વહૂણ
વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલાણાણ ય દુગ્ગલ્લાણ ય ઓસહમેસજ્જમ્મત્તવાણેણ પઢિયાર
કમ્મ કરેમાણાર વિહરતિ) ત્યારબાદ તે મણિકાર શેઠે પશ્ચિમ દિશાના વનપડમા
એક બહુ વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા (હોસ્પિટાલ) બનાવડાવી એ
પણ સેકડો ચાલણાઓથી ભરી કરવામા આવી હતી તેમજ ખુબ

ચિકિત્સાશાલાયા, સહુ પ્રથમો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકા=ચિકિત્સાશાસ્ત્રમનવીન્દ્યાપિ વૈયપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિચારણવિધિજ્ઞાશ્ચ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાવેદિના મુતાશ્ચ, તથાકુશલઃ-સ્પર્કીયતર્કતથ્ચિકિત્સાદૌ મવીણાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષા પુત્રાશ્ચ દત્તશ્રુતિભક્તવેતના. વહૂના 'વાહિયાળ' વ્યાપિતાના વિશિષ્ટ દુ સ્તનનકુઠાદિરોગપ્રતા 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિ' યાળ ય' રોગિકાણા દુર્બલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેદ્-ઉદ્ગરેમાણા' ચિકિત્સા= વ્યાપ્રપતીન્નાર, કુર્વન્ત, પ્રિદ્શન્તિ । તસ્યા શાલાયા અન્યે ચાત્ર પ્રહવ' પુરુષાઃ દત્તશ્રુતિભક્તવેતનાસ્તેષા પ્રહૂના વ્યાધિનાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્બ-

ન્દર યી । હસ મે અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, શ્રુતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેસર નિયુક્ત કિયે હુણ થે । યે દહા અનેક વ્યભિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વહા ઓર બી પરિચારજ મનુષ્ય શ્રુતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુણ થે-જો હન વ્યાધિન ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔષધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે થે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈયો કી પ્રવૃત્તિ દેવ ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર હેતે હૈ એસે વ્યક્તિ યહા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈ । જો અપની તર્કણા કે ઘલપર ચિકિત્સા આદિ મે નિપુણ હોતે હૈ વે યહા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈ । વિશિષ્ટ દુ સ્વોત્પાદક કુઠાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેહૈ એસે મનુષ્ય યહા વ્યાપિત શબ્દ કે વાચ્ય હુણ હૈ । એક

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારજનો શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનવા સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ જ્યા વગરજ ને વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કેરી ગીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધુ જોઇને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુજ્ય થયો છે જે પાતાની તર્કણાચક્તિના આધારે ઇલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' રાખેના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુ સ્વોત્પાદક કુઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાપિત

જાતા ચ 'ઓસદ્ભેવજ્ઞમત્તપાણે' ઔપધ ભૈષજ્યમત્તપાનેન=ભૌષધમેકદ્રવ્ય સાધ્ય, ભેવજ=ભનેન્દ્રવ્યસયોગનિષ્પન્ન મત્તપાનમ્-આહારઃ, પાનમ્=પાનીય, તેન, 'પદ્ધિપારકમ્મ' પ્રતિચારકર્મ=સેવારૂપ કર્મ કુર્વન્તો વિહરન્તિ ।

તત્સદનન્તરં સ્વલુ નન્દઃ નન્દનામામણિઠારશ્રેષ્ઠી, 'ઉત્તરિલ્લે' ઉત્તરીયે વનપણ્ડે એકાં મહર્તી 'અલકારિયસમ' અલકારિકસમા=નાપિતકર્મશાળા કાર યતિ, કીદશીમ્ ? અનેકસ્તમ્મશતસનિવિટ્ટા યાપત્-પતિરૂપામ્, તત્ત તસ્યા નાપિતકર્મશાળાયા વહ્નોડલદ્ધારિક પુરુષા=નાપિતાઃ, દત્તમૃતિમત્તવેતનાઃ વહ્નો

દ્રવ્ય સાચ દવાકા નામ ઔપધ છે ઔર જો અનેક દવાઓંકે સયોગસે દવાઈ તૈયાર કી જાતી હૈ વહ ભૈષજ્ય હૈ (તળણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વળસડે એગ મહ અલકારિયસમ કરાવેહ અળેગસ્તમસય સનિવિટ્ટ જાવ પઢિરુલ, તત્ત્ય વહવે અલકારિયપુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા વહ્ણ સમણાણ ચ માહ-ણાણ ચ અગાહાણ ચ મિલાણાણ ચ રોગિયાણ ચ દુઘ્ઞનાણ ચ અલકારિય કમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ તીણ નદાણ પોક્કલિક્કિણીય વહવે સળાહા ચ અળાહા ચ પથિયા ચ વહિયા ચ કરોહિયા ચ કપ્પહિયા ચ તળહારા ચ પત્તહારા ચ કટ્ટહારા ચ અપ્પેગહ્યા ણ્હાયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય પિયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહ્યા વિસજ્જિય સે ચ જલ્લમલ પરિસ્સમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) હસ કે બાદ ઉસ મણિ-કાર શ્રેષ્ઠી નદે ને ઉત્તર દિશા સચન્વી વનપણ્ડ સે એક વહી ખારી નાપિત કર્મ શાળા ઘનવાઈ । ચહ ખી સૈકઠોં સ્વભો સે નિર્મિત્ત કી ગઈ

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનું નામ 'ઔપધ' છે અને જે અનેક (ધણી) દગઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામા આવે છે તે ભૌષધ્ય છે (તળણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વળસડે એગ મહ અલકારિયસમ કરાવેહ અળેગસ્તમસય સનિવિટ્ટ જાવ પઢિરુલ, તત્ત્ય વહવે અલકારિયપુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા વહ્ણ સમણાણ ચ, માહણાણ ચ, અળાહાણ ચ, મિલાણાણ ચ, રોગિયાણ ચ, દુઘ્ઞનાણ ચ, અલકારિયકમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ તીણ નદાણ પોક્કલિક્કિણીય વહવે સળાહા ચ અળાહા ચ પથિયા ચ, વહિયા ચ કરોહિયા ચ કપ્પહિયા ચ તળ હારા ચ, પત્તહારા ચ કટ્ટહારા ચ અપ્પેગહ્યા ણ્હાયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય પિયતિ અપ્પેગહ્યા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહ્યા વિસજ્જિય સે ચ જલ્લમલપરિસ્સમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે ઉત્તર દિશાના વનપણ્ડમા એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હનમ શાળા) ધનાવડાવી તે પશુ સેકડો થાલવાઓ ઉપર બાધવામા આવી હતી જેવામા તે ખૂબ જ

श्रमणानां च ब्राह्मणानां च मनाथानां च ग्लानानां च रोगिणानां च दुर्बलानां चालङ्कारिकर्म कुर्वन्तः २ विहरन्ति ।

ततस्तदनन्तरं सल्लु तस्या नदाया पुष्करिण्या यदयः सनाथाश्च अनाथाश्च पान्तिकाश्च पथिकाश्च करोटिकाश्च कार्पटिकाश्च तृणहारकाश्च पत्रहारकाश्च माष्ठहारकाश्च 'अप्येगइया' अप्येगइया = अप्येके-केचन, 'ण्हायति' स्नान्ति = स्नानं कुर्वन्ति, अप्येककाः - पानीयं पिबन्ति, अप्येककाः - पानीयं सपद्यन्ति, भरन्ति, अप्येककाः = केचन 'विसज्जियसेयजलमलपरिस्समनिःसुप्पिवासा' विजितस्वेदजलमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासा विमज्जिता अपनीता दूरीकृता रवेदजलमलरूपा शरीरमलास्तथापरिश्रमनिद्राक्षुभुक्षापिपासाश्च यैस्ते तथाविधा मनुष्याः 'सुह सुहेण' सुखं सुखेन अतिसुखेन विहरन्ति । 'मित्ते' किमपि तद्वर्ण्यते - राजगृहमिति

थी । देवने मे बड़ी सुहावनी थी । इस मे अनेक नापित (नाई) भृति भक्त एवं वेतन देकर नियुक्त किये गये थे । ये वहा अनेक श्रमणों के ब्राह्मणों के, सनाथ अनाथ जनो के, ग्लानो के, रोगियों के एवं दुर्बलों के चाल बनाया करते थे । उस नदा पुष्करिणी में कितनेक सनाथ कितनेक पान्तिक, कितनेक पथिक, कितनेक करोटिक, कितनेक कार्पटिक, कितनेक तृण हारक-घास ढोने वाले कितनेक पत्र हारक कितनेक कण्ठ हारक-लकड़हारे-स्नान करते पानी पिया करते और कितनेक उस में से पानी भरा करते । कितनेक स्वेद, जल मल रूप शरीर के मैल को उस के जल से दूर करते और कितनेक परिश्रम, निद्रा बुभुक्षा एवं पिपासा को उस बापिका के सहारे से शांत किया करते । इस तरह अनेक जन उस पुष्करिणी से बहुत आनंदित रहते । (रायगिरि विणि

भनोअम लागती હતી તેમા ધણુ નાપતો (હબો) ભૂતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ ત્યા ધણુ શ્રમણોના, બ્રાહ્મણોના, સનાથ તેમજ અનાથજનોના, ગ્લાનોના, રોગીઓના અને દુર્બળ માણુઓના વાળ ઝાપતા હતા તે નદા પુષ્કરિણી (વાવ) મા કેટલાક સનાથ, કેટલાક પાથિક, કેટલાક પથિક, કેટલાક કરોટિક, કેટલાક કાર્પટિક, કેટલાક તૃણહારક (ચારના ભાગઓ ઉચ્ચનારા) કેટલાક પત્રહારક કેટલાક કાષ્ઠહારક, (લાડના વગેરે વેચવાને વધો મનારા) સ્નાન કરતા હતા, પાણી પીતા હતા અને કેટલાક તો તેમાથી પાણી ભરતા રહેતા હતા કેટલાક માણુઓ તો સ્વેદ, જળમા ઉપર તરી આવત શરીરના મેલ ને પાણીમાથી બહાર કાઢતા હતા અને ધીન કેટલાક માણુઓ પરિશ્રમ, નિદ્રા બુધ્ધ અને તરમ તે પાણી પીને મટાડતા હતા આ રીતે ધણુ માણુઓ તે પુષ્કરિણીમા આનંદ-

લાના ચ 'ઓસદ્ભેષજ્ઞમત્તપાણેણ' ઔપધ ભૈષજ્યમત્તપાનેન=ઔપધમેકદ્રવ્ય સાધ્ય, ભેષજ=અનેકદ્રવ્યસયોગનિષ્પન્ન મત્તપાનમ્-આહારઃ, પાનમ્=પાનીય, તેન, 'પદ્ધિપારકર્મ્મ' પ્રતિચારકર્મ્મ=સેવારૂપ કર્મ્મ કુર્વન્તો વિહરન્તિ ।

તત્સાદનન્તરં સ્વલુ નન્દઃ નન્દનામામણિકારશ્રેષ્ઠી, 'ઉત્તરિલ્લે' ઉત્તરીયે વનપન્ડે એકા મહતી 'અલકારિયસમ' અલકારિકસમા=નાપિતર્મ્મશાળા કારયતિ, કીદ્રશીમ્ ? અનેકરત્તમ્મગતસનિવિષ્ટા યાત્ત-પ્રતિરૂપામ્, તત્ર તથ્યા નાપિતર્મ્મશાળાયા વહોડોન્નદ્ધારિક પુરુપાઃ=નાપિતાઃ, દત્તમૃતિમત્તવેતનાઃ વહૂનાં

દ્રવ્ય સાધ્ય દ્વાકા નામ ઔપધ છે ઔર જો અનેક દ્વાઓંકે મયોગસે દ્વાઈ તૈયાર કી જાતી છે વદ્ ભૈષજ્ય છે (તણ્ણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વનસડે એગ મહ્ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગસમસય સનિવિદ્ધ જાવ પડિરૂઢ, તત્થ વદ્વે અલકારિયપુરિસા દિન્નમદ્ધમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય માહ-ણાણ ય અગાહાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુવ્વન્નાણ ય અલકારિય કમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ્ણ તીએ નદાણ પોક્કસરિણીએ વદ્વે સણાહા ય અણાહા ય પથિયા ય વહિયાય કરોડિયા ય કપ્પડિયા ય તણહારા ય પત્તહારા ય કદ્દહારા ય અપ્પેગહ્યા ણ્હાયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય પિયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહ્યા વિસડ્ઝિય સે ય જલ્લમલ પરિસમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુદ્ધ સુદ્ધેણ વિહરતિ) ઇસ કે બાદ ડસ મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદને ઉત્તર દિશા સચન્વી વનપડ મે એક વડી ભારી નાપિત કર્મ શાળા વનવાઈ । યદ્ધે ભી સૈકડોં સ્વભો સે નિર્મિત્ત કી ગઈ

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનું નામ 'ઔપધ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામાં આવે છે તે લૈપન્ય છે (તણ્ણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વનસડે એગ મહ્ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગસમસય સનિવિદ્ધ જાવ પડિરૂઢ, તત્થ વદ્વે અલકારિયપુરિસા દિન્નમદ્ધમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય, માહણાણ ય, અણાહાણ ય, ગિલાણાણ ય, રોગિયાણ ય, દુવ્વન્નાણ ય, અલકારિયકમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ્ણ તીએ નદાણ પોક્કસરિણીએ વદ્વે સણાહા ય અણાહા ય પથિયા ય, વહિયા ય કરોડિયા ય કપ્પડિયા ય તણહારા ય, પત્તહારા ય કદ્દહારા ય અપ્પેગહ્યા ણ્હાયતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિય પિયતિ અપ્પેગહ્યા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહ્યા વિસડ્ઝિય સે ય જલ્લમલ પરિસમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુદ્ધ સુદ્ધેણ વિહરતિ) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે ઉત્તર દિશાના વનપડમાં એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હનમ શાળા) બનાવડાવી તે પશુ સેકડો થાલવાઓ ઉપર બાંધવામાં આવી હતી જેવામાં તે ખૂબ જ

य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहे-
माणो य सुहसुहेणं विहरइ, त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे
लोए । सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीविक्खफले नदस्स मणिया-
रस्स, तएणं रायगिहे सिघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एव-
माइक्खइ ४ धन्ने णं देवानुप्पिया । णदे मणियारे सो चैव
गमओ जाव सुहसुहेणं विहरइ । तएण से णंदे मणियारे
बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिस्सम्म हट्ठतुट्ठे धाराहय-
कलवगंपिव समूसियरोमकूवे पर सायासोक्खमणुभवमाणे
विहरइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘ तएण णदाए ’ इत्यादि । तत्तरतदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या
बहुजनः ‘ ण्हायमाणो य ’ स्नानं कुर्वन् ‘ पीयमाणो य ’ पिवन् पानीयं च संबह-

‘ तएण णदाए पोक्खरिणीए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य
पियमाणो य पाणियं च सबहमाणो य बहुजणो अणमण एव वयासी-
धण्णे ण देवानुप्पिया । णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीविक्खफले
जस्सण इमेया रूवा णदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडि रूवा, जि-
स्साणं पुरत्थिमिल्ले त चैव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिह
विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य
सतुयट्टो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) उस नदा
पुष्करिणी में स्नान करने वाला पानी पीनेवाला और उस में से पानी

‘ तएण णदाए पोक्खरिणीए ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्याग्याह (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य, पियमाणो य
पाणियं च सबहमाणो य बहुजनो अणमण एव वयासी धण्णे ण देवानुप्पिया ।
णदे मणियारसेट्ठी कयत्थ जाव जम्मजीविक्खफले जस्सण इमेयारूवा णदा पोक्ख-
रिणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जिस्साण पुरत्थिमिल्ले त चैव सव्व चउसु वि वण-
सडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य
सतुयट्टो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) ते नदा पुष्करिणी
(वाय) भा स्नान करना, पाणी पीना, अने तेभाधी पाणी भरना, दरेके
दरेके भावुस परस्पर आ प्रभावे पातो करना लाग्या के छे साध । भवियारे

ર્ગતોઽપિ 'યત્ર વહુજનઃ' જલરમણત્રિવિદમજ્જનકયલિલયા ધરયકુસુમસત્થરયઅનેગ
સડળગણન્યરિમિતસકુલેમુ' જલરમણત્રિવિદમજ્જન રદલીલતાગૃહકુસુમશસ્ત-
રજોઽને રુશકુનગણરુતરિમિતસકુલેપુ=તત્ર જલરમણૈઃ- જત્રક્રીડાદિભિઃ, ત્રિવિદમ-
જ્જનૈ-વહુરિધૈઃ સ્તનૈ, રદલીના લતાના ચ ગૃહકૈઃ કુસુમશસ્તરજોભિઃ=કુસુ-
'માના પુષ્પાણા, ઘસ્ટૈ=સુગંધયુક્તૈઃ, રજોભિઃ=પરાગૈશ્ચ, અને રુશકુનગણરુતૈ.=
વહુવિધપક્ષિગણાના રૈ-શબ્દૈશ્ચ, રૈ કીટશૈરિત્યાદ-રિમિતૈ સ્વરયુક્તૈ-મધુરૈ-
રિત્યર્થઃ, સકુલેપુ=યુક્તેપુ વનપંડેપુ, સુસ મુસેનાભિરમમાણ ૨ વિહરતિ, મૂ. ૪॥

- મૂલમ્-તર્ણં પંદાણ પોલ્લરિણીણ વહુજનો પ્હાયમાણો
'ય પિયમાણો ય પાણિય ચ સંવહમાણો ય અન્નમન્ન એવ વયા-
સી-ધણે'ળ દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારસેટ્ઠી કયથ્થે જાવ
જસ્મજીવિયફલે જસ્સણંડમેયારૂવા પંદા પોલ્લરણી ચાડકોખા
'જાવ પાંડરૂવા, જિસ્સા ણં પુરત્થિમિલ્લે ત ચેવ સઠ્ઠવ ચડસુ વિ-
વણસડેસુ જાવ રાયગિહે વિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજનો આસણેસુ

ર્ગઓ વિ જત્થ વહુજનો કિં તે જલરમણ વિવિદમજ્જનકયલિલયા
'ધરય કુસુમ સત્થરય અનેગઅભિરમમાણો ૨' વિહરડ) ઓર અધિક
કયા કહે-રાજગૃહ નગર સે વાહિર નિકલે હુણ પ્રાય સમી જન વિવિધ
પ્રકાર કી જલ ક્રીડાઓં સે નાના પ્રકાર કે મજ્જનો 'સે, કદલી' ઓર
લતાઓં કે ઘરોં સે, પુષ્પો કી સુગંધિત રજ સે, ઓર અનેક વિધપક્ષી
ગણોં કે મધુર શબ્દો સે યુક્ત હન વનપંડોં મે આનંદ સે ઇથલોતે હુણ
વિચરણ કિયો કરતે યે । સૂત્ર ॥ ૪ ॥

પૂર્વક પોતાને વખત ગાળતા હતા । (રાયગિહવિણિગ્ગઓ વિ જત્થ વહુજનો કિં
'તે જલરમણવિવિદમજ્જનકયલિલયા ધરય કુસુમ સત્થરયઅનેગસડળગણન્યરિમિય
'સકુલેસુ સુહ સુદ્દેણ અભિરમમાણો ૨ વિહરડ) અને ખીશુ તો વધારે શુ કહીએ
રાજગૃહ નગરની બહાર આવનારા ઘણા માણસો ઘણી જાતની જળ-કીડીઓ
અને ઘણી જાતના મજ્જનો (સ્નાન) કરીને તેમજ કદલી અને લતાગૃહોથી,
પુષ્પોની સુગંધિત રજથી અને ઘણા પક્ષીઓના મધુર કલરવથી યુક્ત આ
વનપંડોમાં આનંદથી મસ્ત થઈને લહેર કરતા હતા-વિચરણ કરતા હતા. "૪"

य सयणेषु य सन्निसन्नो य सतुयद्वो य पेच्छमाणो य साहे-
माणो य सुहसुहेण विहरइ, त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणंदे-
लोए । सुलुहे माणुस्सए जम्म-जीवियफले नदस्स मणिया-
रस्स, तएणं रायगिहे सिधाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एव-
माइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया । णदे मणियारे सो चेव
गमओ जाव सुहसुहेणं विहरइ । तएण से णंदे मणियारे
बहुजणस्स अतिए एयमइ सोच्चा णिस्सम्म हट्टतुडे धाराहय-
कलवगंपिव समूसियरोमकूवे पर सायासोक्खमणुभवमाणे
विहरइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण णदाए’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्यां
बहुजनः ‘ण्हायमाणो य’ स्नानं कुर्वन् ‘पीयमाणो य’ पिवन् पानीयं च संवह-

‘तएण णदाए पोक्खरिणीए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य
पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य बहुजणो अणमण्ण एव वयासी-
धण्णे ण देवाणुप्पिया) णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले
जस्सण इमेया रूपा णदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडि ह्वा, जि-
स्साण पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिह
विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेषु य सयणेषु य सन्निसन्नो य
सतुयद्वो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) उक्तं नदा
पुष्करिणीं मे स्नानं करने वाला पानी पीनेवाला और उस में से पानी

‘तएण णदाए पोक्खरिणीए’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्याग्याह (णदाए पोक्खरिणीए ण्हायमाणो य, पियमाणो य
पाणियं च संवहमाणो य बहुजणो अणमण्ण एव वयासी धण्णे ण देवाणुप्पिया ।
णदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवि फले जस्सण इमेया रूपा णदा पोक्ख-
रिणी चाउक्कोणा जाव पडिह्वा, जिस्साण पुरत्थिमिल्ले त चेव सव्व चउसु वि वण-
सडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेषु य सयणेषु य सन्निसन्नो य
सतुयद्वो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुह सुहेण विहरइ) तेनैव पुष्करिणी
(‘वाप’) भा स्नानं करने, पाणी पीने, अने तेमाथी पाणी बनाने, दरेके
दरेके भावस्य परस्पर आ प्रभावे वातो करवा लाग्या के छे लाध । भविष्यते

માનઃ=ઘટાદિભિર્નયન્ ચાન્યોન્યમેવમવાદીત્-ધન્યઃ સ્વલુ છે દેવાનુમિયાઃ નન્દો
મણિકારશ્રેષ્ઠી કૃતાયો યાવત્-સુલબ્ધજન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદ્ભૂપા
નન્દા=નન્દાનામ્ની, પુષ્કરિણી ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે ' ત્રિસ્તાણ '
યસ્યા સ્વલુ પુષ્કરિણ્યાઃ પોસ્ત્યે તદેન સર્વં ચતુર્ગપિ યનપણ્ડેષુ યાવત્-રાજગૃહ-
વિનિર્ગતો યત્ રહુજન આસનેષુ ચ શયનેષુ ચ સનિવણ્ણઃ=સમ્યક્પ્રકારેણોપવિષ્ટશ્ચ
' સતુયદ્દો ' સત્વગૃહ્ણત્=શયિત' કૃતપાર્થપરિવર્તનશ્ચ, ' પેચ્છમાણ ' પ્રેક્ષમાણઃ
વનપણ્ડશ્રિય પશ્યન્ 'સાહેમાણો' કથયન્=તદ્વિપયરુઠ્ઠા કુર્મન્ શ્લાગયન્ વા સુલ
સુલેન=અતિસુલેન વિહરતિ । તત્-તસ્માદ્ ધન્યઃ કૃતાર્થ કૃતપુણ્યઃ કૃતાનન્દો
નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠીલોકે સુલબ્ધ માનુષ્યજન્મજીવિતફલ યસ્ય નન્દસ્ય મણિકા

ભરને વાલા પ્રત્યેક જન આપસ મેં હમ પ્રકાર સે વાત ચીત કિયા કરતા
કિ હે માઈ । મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ ' હૈ । વહ કૃનાર્થ હો
ગયા । ડસને અપને જન્મ ઓર જીવનકા ફલ અઠ્ઠી તહર સે પા લિયા
કિ જિસમે યહ ચારકોનોં વાલી યાવત્ પ્રતિરૂપ નદા નામ કી સુન્દર
વાપિકા બનવાઈ હૈ । ઓર ડસકે ચારોં ઓર ચાર વનખડ બનવાયે હૈ ।
પૂર્વ દિશા સબન્ધી વનપડ મેં એક વિશાલ ચિત્રસમા બનવાઈ હૈ
હત્યાદિ રૂપ સે પહિલે કા કહા ગયા સબ સબન્ધ યહાં સમજ્ઞ હેના
ચાહિયે । હન ચાર વનપડોમેં યાવત્ રાજગૃહ નગરસે નિર્ગત પ્રત્યેક જન
બિહે હુએ આસનો પર શયનો પર પેઠ કર, હેટ કર, વનપડ કી શોભા
કા નિરીક્ષણ કરતા હુઆ, તદ્વિપયક કથા-વાર્તા-કરતા હુઆ બડે
આનંદ કે સાથ વિચરણ કરતા હૈ । (ત ધન્ને કયત્થેકયપુન્ને કયાણંદે
લોએ ! સુલલ્લે માણુસ્સણ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયો છે તેણે પોતાના જન્મ છવ
નતુ ફળ સારી રીતે મેળવી લીધું છે કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી
પ્રતિરૂપ વગેરે શુભોચી યુક્ત ઓવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને
વાવને ચારે ખાણુએ ચાર વનપડો બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન
પડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં
સમજી લેવું જોઈએ એ ચારે વનપડોમા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસો
આસનો તેમજ શયનો ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનપડની શોભાને જોતા,
તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનપડ સબન્ધી વખાણુ) ઓટલે કે ચર્ચાઓ કરતા
સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (ત ધન્ને કયત્થે કયપુન્ને કયાણંદિ લોએ ।
સુલલ્લે માણુસ્સણ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ રાયગિદ્દે સિંધા
દગ જાવ બહુજણો અન્નમન્નસસ એવમાદિક્કપ્પદ ૪ ધન્નેણ જેજાણી... । નન્દે

રસ્ય શ્રેષ્ઠિનઃ, અત્ર સમ્પન્ધમામાન્યે પૃષ્ઠી । એવ રાજગૃહત્રિનિર્ગતોવહુજનરતત્રસ્થિતો
વદતીત્યર્થ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ' મિત્રાહગ જાવ મહુજનો '
શૃંગાટકાદિયાવન્મહાપથપયેષુ મહુજન', અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પર, એવમાહવાતિ, માપતે,
પ્રજ્ઞાપયતિ, પ્રરૂપયતિ । ક્રિમારયાતીત્યાહ-હે દેવાનુમિય ! ધન્ય. સ્વલુ નન્દો
મણિકારઃ 'સો ચેવ ગમઓ' સ એવ ગમક =અત્ર પૂર્વોક્ત એવ પાઠો વાચ્ય, કૃતાર્થ
કૃતપુણ્ય, યામત્-સુલભ જન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ ઇયમેનદ્રૂપા નન્દા પુષ્કરિણી
ચતુષ્કોણા યામત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે, યામત્-મહુજન.-સુખસુખેન વિહરતિ । તતઃ

રાયગિહે સિંધાહગ જાવ મહુજનો અન્નમન્નસ્સ એવમાહસ્વહ ૪ ધન્ને ન
દેવાણુપ્પિયા ! નદે મણિયારે સો ચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણં વિહરહ,
તણ સે નદે મણિયારે મહુજનસ્સ અતિણ એમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ
હટ્ટુરુદ્ધે ધારાહ્યકલ્લગ પિત્ત સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોચ્ચમણુમ્મ
વમાણે વિહરહ) હમ લિયે નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી વિશેષ રૂપ સે ધન્ય
વાદાર્હ હૈ । વિશિષ્ટ પુણ્યજાલી હૈ । ઓર વિશિષ્ટ આનન્દ કા મોક્તા હૈ ।
હસ લોક મેં મનુષ્ય જન્મ ઓર જીવન કા ફલ હસ ને પ્રાપ્ત કર લિયા
હૈ । હસી તરહ કી રાજગૃહ નગર કે શૃંગાટક આદિ મહા માંગો પર
લહે હોકર અનેક જન પરસ્પર મેં વાત ચીત કિયા કરતે, પરસ્પર મેં
સમાપણ કરતે, પ્રજ્ઞાપના કરતે ઓર પ્રરૂપણા કરતે રહતે-વે કહતે-હે
માઈ ! નદ મણિકાર પેષ્ઠી કો ધન્યવાદ હૈ, વહ કૃતાર્થ હૈ, કૃત પુણ્ય
હૈ । ઊસી ને અપને મનુષ્ય ભવસવધી જન્મ ઓર જીવન કો પા લિયા
હૈ-જિસ ને યહ હતની સુન્દર ચાર કોન વાલી નદા પુષ્કરિણી બનવાઈ
હૈ । જહા અનેક જન સુખ પૂરક વિચરણ કરતા હૈ । ઇત્યાદિ પહિલે કા

મણિયારે સોચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણ વિહરહ, તણ સે નદે મણિયારે
મહુજનસ્સ અતિણ એમદ્ધ સોચ્ચા ણિમમ્મ હટ્ટુરુદ્ધે ધારાહ્યકલ્લગ પિત્ત
સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોચ્ચમણુમ્મમાણે વિહરહ) એથી નદ
મણિયાર ખરેખર અવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યજાળી છે અને
વિશિષ્ટ આનન્દનો ઉપભોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવ-
નનું ફળ તેણે સંપૂર્ણપણે મેળવી લીધું છે આ ગીતે જ રાજગૃહ નગરના
શૃંગાટક વગેરે રાજમાંગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વતો કરતા
હતા મલાપણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા
હતા તેઓ કહેતા કે હે સાધ ! નદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે ખરેખર
કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સવધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી
સરસ નદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બધાવી છે ત્યાં ઘણા માણસો સુખેથી

માનઃ=ઘટાદિભિર્નયન્ ચાન્યોન્યમેયમવાદીત્-ધન્યઃ સ્વલુ છે દેવાનુમિયાઃ નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી કૃતાથો યાવત્-સુલંધજન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદ્વૂપા નન્દા=નન્દાનામ્ની, પુષ્કરિણી ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે ' જિસ્સાણ ' યસ્યા સ્વલુ પુષ્કરિણ્યાઃ પૌરસ્ત્યે તદેવ સર્વં ચતુર્ધ્વપિ વનપણ્ડેષુ યાવત્-રાજગૃહ વિનિર્ગતો યત્ર વદ્ધુજન આસનેષુ ચ શયનેષુ ચ સનિષળઃ=સમ્યક્પ્રકારેણોપવિષ્ટશ્ચ ' સતુયદ્ધો ' સત્વગૃહતઃ=શયિતઃ કૃતપાર્થપરિચર્તનશ્ચ, ' પેચ્છમાણ ' પ્રેક્ષમાણઃ વનપણ્ડશ્રિય પદ્યન્ 'સાહેમાણો' કથયન્=તદ્વિષયક્રુકથા કુર્વન્ શ્લાગ્યન્ વા સુલુ સુલેન=અતિસુલેન ચિહરતિ । તત્-તસ્માદ્ ધન્ય' કૃતાર્થ કૃતપુણ્યઃ કૃતાનન્દો નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠીલોકે સુલંધ માનુષ્યજન્મજીવિતફલ યસ્ય નન્દસ્ય મણિકા

ખરને ચાલા પ્રત્યેક જન આપસ મેં ડમ પ્રકાર સે વાત ચીત કિયા કરતા કિ હે ખાઈ ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ હૈ । વહ કૃતાર્થ હો ગયા । ડસને અપને જન્મ ઓર જીવનકા ફલ અઠઠી તહર સે પા લિયા કિ જિસમે યહ ચારકોનોં ચાલી યાવત્ પ્રતિરૂપ નદા નામ કી સુન્દર વાપિકા વનવાઈ હૈ । ઓર ડસકે ચારોં ઓર ચાર વનખડ વનવાયે હૈ । પૂર્વ દિશા સબન્ધી વનપડ મે એક વિશાલ ચિત્રસભા વનવાઈ હૈ હત્યાદિ રૂપ સે પહિલે કા કહા ગયા સબ સબન્ધ યહાં સમજ્ઞ લેના ચાહિયે । ઇન ચાર વનપડોમેં યાવત્ રાજગૃહ નગરસે નિર્ગત પ્રત્યેક જન બિઠે હુએ આસનો પર શયનો પર વૈઠ કર, લેટ કર, વનપડ કી શોખા કા નિરીક્ષણ કરતા હુઆ, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-કરતા હુઆ બઢે આનંદ કે સાથ વિચરણ કરતા હૈ । (ત ધન્ને કયત્યેકયપુન્ને કયાણંદે લોએ ! સુલદે માણુસ્સણ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયો છે તેણે પોતાના જન્મ છવ નનુ ફળ સારી રીતે મેળવી લીધું છે કેમકે તેણે આ આર ખૂણુઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણોથી યુક્ત એવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને વાવને આરે બાબુએ આર વનપડો બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન પડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવું જોઈએ એ આરે વનપડોમા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસે આસનો તેમજ શયનો ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનપડની શોભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા- (વનપડ સબન્ધી વખાણો) એટલે કે ચર્ચાઓ કરતા સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (ત ધન્ને કયત્યેકયપુન્ને કયાણંદે લોએ । સુલદે માણુસ્સણ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ રાયગિદે સિંધા ઢગ જાવ વહુજણો અજમજરસ અવમાદ્કસદ ૪ ધન્નેણ દેવાણિ । ણંદે

રસ્ય શ્રેષ્ઠિન., અત્ર સમ્પન્ધમામાન્યે પૃષ્ઠી । એ રાજગૃહવિનિર્ગતોવહુજનરતત્રસ્થિતો
વદતીત્યર્થ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ‘ સિંઘાડગ જાવ મહુજનો ’
શૃંગાટકાદિયાત્રમહાપથપથેષુ મહુજન’, અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પર, એવમાહ્યાતિ, માપતે,
મજાપયતિ, પ્રરૂપયતિ । કિપારયાતીત્યાદ-હે દેવાનુમિય ! ધન્ય. સ્વલુ નન્દો
મણિકાર. ‘સો ચેવ ગમઓ’ ત એવ ગમઠુ =અત્ર પૂર્વોક્ત એવ પાઠો વાચ્ય, કૃતાર્થ
કૃતપુણ્યઃ, યાવત્-સુલભ્ય જન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ ઇયમેતદ્વ્યા નન્દા પુષ્કરિણી
ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા ર્વર્તતે, યાવત્-મહુજન -સુખસુખેન વિહરતિ । તતઃ

રાયગિહે સિંઘાડગ જાવ મહુજનો અન્નમન્નસ્સ એવમાહસ્વહ ૪ ધન્ને ણ
દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે સો ચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણં વિહરહ,
તણ સે ણદે મણિયારે મહુજણસ્સ અતિણ એયમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ
દ્ધતુદ્ધે ધારાહયકલગ્ગ પિત્ત સમૂત્તિત્ત રોમકૂવે પર સાયા સોચ્ચમણુમ-
વમાણે વિહરહ) ઇસલિયે નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી વિશેષ રૂપ સે ધન્ય
વાદાર્થે હૈ । વિશિષ્ટ પુણ્યશાલી હૈ । ઓર વિશિષ્ટ આનન્દ કા ભોક્તા હૈ ।
ઇસ લોક મે મનુષ્ય જન્મ ઓર જીવન કા ફલ ઇસ ને પ્રાપ્ત કર લિયા
હૈ । ઇસી તરહ કી રાજગૃહ નગર કે શૃંગાટક આદિ મહા માર્ગો પર
જાહે હોકર અનેક જન પરસ્પર મે વાત ચીત કિયા કરતે, પરસ્પર મે
સમાપણ કરતે, પ્રજ્ઞાપના કરતે ઓર પ્રરૂપણા કરતે રહતે-વે કહતે-હે
માઈ ! નદ મણિકાર પેષ્ઠી કો ધન્યવાદ હૈ, વહ કૃતાર્થ હૈ, કૃત પુણ્ય
હૈ । ઊસી ને અપને મનુષ્ય ભવસમધી જન્મ ઓર જીવન કો પા લિયા
હૈ-જિસ ને વહ ઇતની સુન્દર ચાર કોન વાલી નદા પુષ્કરિણી બનવાઈ
હૈ । જહા અનેક જન સુખ પૂર્વક વિચરણ કરતા હૈ । ઇત્યાદિ પહિલે કા

મણિયારે સોચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણ વિહરહ, તણ સે ણદે મણિયારે
મહુજણસ્સ અતિણ એયમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ દ્ધતુદ્ધે ધારાહયકલગ્ગ પિત્ત
સમૂત્તિય રોમકૂવે પર સાયા સોચ્ચમણુમવમાણે વિહરહ) એથી નદ
મણિયાર ખરેખર સવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને
વિશિષ્ટ આનન્દનો ઉપભોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવ-
નનુ રૂપ તેણે મ પૂણ્ય પણે મેળવી લીધું છે આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના
શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર જિલા રહીને ઘણા માણુમે પરસ્પર વ તો કરતા
હતા સલાપણુ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણુ કર્યા કરતા
હતા તેઓ કહેતા કે હે ભાઈ ! નદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે ખરેખર
કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સમધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી
સરસ નદા નામે આર ખૂણવાળી વાવ બધાવી છે ત્યા ઘણા માણુમે મુખેથી

खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी गृहजनस्यान्तिके एवमर्थश्रुत्वा दृष्टतुष्टः ' धाराहय-
 वलयगपि ' धाराहतकदम्बकमित्र=मेघधाराभिराहत यत्कदम्बकुसुम तद्वत्-
 ' समृसियरोगकूबे ' समुच्छितरोमरूपः समुल्लभितरोमरन्त्रः सजातरोमाश्च इत्यर्थः,
 परम=उत्कृष्ट ' सायामोऽत्रमणुभवमाणे ' शातसौरपमनुभवन्=बहुजनकृत-
 स्वात्मप्रशंसाश्रयणजनित शातगौरवोदयेनामन्दमानानन्दोल्लसितचित्तः। सन् वि-
 रति=आस्तेस्म ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नयाकयाई
 सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउव्भूया त जहा—“ सासे १,
 कासे २, जरे ३, दाहे ४, कुच्छिसूले ५, भगदरे ६। अरिसा ७,
 अजीरए ८, दिट्ठिमुद्धसूले ९-१० अरोअए ११” ॥१॥ अच्छिवेयणा
 १२, कन्नवेयणा १३, कडू १४, दउदरे १५, कोढे १६। तएणं
 से णदे मणियारसेट्ठी सोलसहि रोगायकेहि अभिभूए समाणे
 कोडुंविषयपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं
 तुब्भे देवाणुप्पिया। रायगिहे सिघाडग जाव पहेसु महयाऱ
 सदेणं उग्घोसेमाणाऱ एव वदह—एव खलु देवाणुप्पिया। णंदस्स

सन्, वक्तव्य यहा लगा लेना चाहिये। मणिकार श्रेष्ठी नद अनेक जनों
 के मुख से इस अपनी प्रशंसा रूप अर्थ को सुनता तो सुन कर बहुत
 अधिक आनंदित एव सतुष्ट बन जाता। मेघ की धारा से आहत
 कदम्ब, पुष्प के समान उस के शरीर भर में रोमांच हो आते। इस तरह
 अनेक जनकृत अपनी प्रशंसा के श्रवण से जनित शातगौरवोदय से
 अमन्द आनंद उल्लसित बना रहता। सूत्र ॥ ५ ॥

विशेष्य करे छे-वगेरे अच्छी पण पूर्ववत् वर्षा न समञ्ज लेवु जेठ ओ भिक्षार
 श्रेष्ठि नद धणु भाणुसेना गोवी पोताना वणाणु सालणीते त्यारे णहु व
 आनदित अने सतुष्ट थठ जेतो डेतो मेघनी धाराओथी आहत कदम्ब पुष्पनी
 जेम तेनु शरीर रोमांचित थठ जेतु डेतु आ रीते धणु भाणुसेना भुजेथी
 पोताना वणाणु सालणीने ते शत गौरवोदयथी जूम व आनदमा भस्स
 रडेते डेतो ॥ सूत्र " ५ " ॥

मणियारसेट्टिस्स सरीरगसि सोलसरोगायका पाउब्भूया तं जहा-
 'सासे जाव कोढे' तजो ण डच्छइ देवाणुप्पिया । वेज्जो वावेज्ज-
 पुत्तो वा जाणओ वार कुसलो वार नदस्स मणियारस्स तेसि
 च णं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामेत्तए
 तस्स णं देवाणुप्पिया । मणियारे विउल अत्थसपयणं दलयइ
 त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाणत्तिय
 पच्चप्पिणह, तेहि तहेव पच्चप्पिणति, तएण रायगिहे इमेयारूव
 घोसण सोच्चा णिसम्म वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुस-
 लपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलि-
 याहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य
 सएहि २ गिहेहितो निक्खमति निक्खमित्ता रायगिहं नयरं
 मज्झ मज्झेण जेणेव णदस्स मणियारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवा-
 गच्छति उवागच्छित्ता णदस्स सरीर पासति, तेसि रोगायकाण
 'णियाणं पुच्छति णदस्स मणियारसेट्टिस्स वट्ठुहि उव्वलणेहि य
 उवट्ठणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहिय विरेयणेहि य सेयणेहिय
 अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वेत्थिकम्मेहि
 य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य
 सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य
 मूलेहि य कदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य वीएहि य
 सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहिय भेसज्जेहि य डच्छतितेसि
 सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, नो चेव णं
 सचाएति उवमामेत्तए, तएण ते वहवे वेज्जा य ६ जाहे नो
 संचाएति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एवमवि रोगायक उव-

સામિત્તણ તાહે સતા તતા જાવ પડિગયા । તણ નદે તેહિ
સોલસેહિ રોગાયંકેહિ અભિભૂણ સમાણે ણદા પોમ્મ્વરણીણ
મુચ્છીણ ગિછે ગઢિણ અજ્જોવવણે તિરિવ્વજોણિણિં નિવ-
દ્દાઉણ વદ્ધપણિણ અટ્ટદુહટ્ટવસટ્ટે કાલમાસેકાલ કિચ્ચા નદાણ
પોમ્મ્વરણીણ દ્વરીણ કુચ્છિસિ દ્વરિત્તાણ ઉવવન્ને ॥સૂ.૦૬॥

ટીકા—‘તણ તસ્મ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु नन्दस्य मणिकार-
श्रेष्ठिनः, अन्यदा रुदाचित्-प्रपल्लतरगातगौरवजनितकर्मोदयेन शरीरे पोडश
रोगाताङ्का. तत्र रोगा.=स्वल्पकालस्थायिनो ज्वरादय, आतङ्काः=चिरस्थायिनः
कुष्ठादयः, माड्भूताः, तद् यथा—

सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिमुळे ५ भगदरे ६ ।

अरिसा ७ अजीरण ८ दिद्धिमुद्ध ९-१० सुळे अरोअण ११ ॥ १॥

अच्छिवेयणा १२ उन्नवेयणा १३ कड्ड १४ इउदरे १५ कोढे १६ १ ॥

(१) श्वास = ऊर्ध्वश्वास, (२) कास = श्लेष्मविकार, (३) ज्वरस्ताप, (४)

‘तण तस्स नदस्स’ इत्यादि ॥

टीકાર્થ—(તણ) इसके बाद (तस्स नदस्स) मणियारसेष्ठिस्स
अन्नया कयाई सरीरगसि सोलस रोगायका पाउम्भूया तजहा—उस
मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रपल्लतर
शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क
प्रकट हुए—स्वल्प कालक जो बीमारी शरीर में रहती है—जैसे ज्वर
आदि—वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती
है जैसे कुष्ठादि—वे आतङ्क कहलाते हैं । वे सोलह ये हैं—१ श्वास
—उर्ध्वश्वास, २ कास—खासी, ३ ज्वर—ताप, ४ दाह—दाहज्वर, ५ कुक्षि-

‘તણ તસ્સ નદસ્સ’ इत्यादि—

टीકાર્થ—(તણ) तयारपछी (तस्स) नदस्स मणियार सेष्ठिस्स अन्नया कयाई सरी
रगसि सोलस रोगायका पाउम्भूया—त जहा ते मणिकार श्रेष्ठिना शरीरमा डोई એક :
વખતે પ્રબળતર શાત ગૌ વ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬ રોગો અને આતંકો પ્રગટયા
થોડા વખત સુધી શરીરમા જે માદગી રહે છે એમ કે તાર વગેરે તે રોગ અને જે
મદગી શરીરમા કાયમ માટે રહે છે એમ કે કોઈ વગેરે તે આતંક કહેવાય છે તે
સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)શ્વાસ—ઉર્ધ્વ શ્વાસ, (૨)કાસ—ઉધરમ, (૩)જ્વર—

दाहः=दाहज्वरः, (५) कुक्षिशूल, (६) भगदर, (७) अर्श =गुदाङ्कुररोग, (८) अजीर्ण =आहारस्यापरिणति, (९) दृष्टिशूल-नेत्रशूलम् (१०) मूर्धशूल=मस्तकशूलम्, (११) " अरोचण " अरोचक =भोजनादावरुचिः, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना (१४) मण्डू =मूर्ज, (१५) दकोदर-जलोदर (१६) कुष्ठ ।

ततः खलु स नन्दो मणिफार पोडशभीरोगातङ्गेरभिभूतः सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रिया ! गच्छत खलु यूय राजगृहे शङ्गाटक यावद्-महापथयेषु महता महता शब्देनोद्बोध्यन्तः २ एव -हे देवानुप्रिया ! एव खलु नन्दस्य मणिफारश्रेष्ठिनः शरीरके पोडशरोगा तङ्काः प्रादुर्भूता, तद् यथा स्वामी यावत् कुठ । तत्=तस्माद् य खलु इच्छति हे देवानुप्रिया ! वैद्यो वा, वैद्यपुत्रो वा, ज्ञायको वा, ज्ञायकपुत्रो वा कुमलो वा, कुशपुत्रो वा, नन्दस्य मणिफारस्य तेषां च खलु पोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि

शूल, ६ भगदर, ७ अर्श-व्यासीर ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिशूल, १० मस्तक शूल ११ अरोचक-भोजनादि मे रुचि का अभाव, १२ अक्षिवेदना १३ कर्णवेदना १४ खाज १५ जलोदर १६ कुष्ठ (तण्ण मणिफारसेट्ठी णदे सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूण समणे कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदा-चित्ता एव व्यासी गच्छइ ण तुव्भे देवानुप्पिया ! रागिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणो २ एवं वयह-एव खलु देवानुप्पिया ! णदस्स मणिफारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायका पाउवभूया-त जहा-मासे जाव कोडे ' त जो ण इच्छइ देवानुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुमलो वा २ नदस्स मणिफारस्स तेसिं च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगम वि रोगायक उवसामेत्तए

ताव, (४) दाह-दाहज्वर (५) कुक्षिशूल, (६) भगदर, (७) अर्श-ङ्कुररोग, (८) अजीर्ण-अपरिणति (९) दृष्टिशूल (१०) मस्तकशूल (११) अरोचक भोजनादि मे रुचि का अभाव, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना, (१४) खाज-ज्वर, (१५) कुष्ठ (१६) कोडु (तण्ण मणिफारसेट्ठी मे णदे सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूण समणे कोडु वियपुरिसे सदावेड, सदाचित्ता, एव व्यासी, गच्छइ ण तुव्भे देवानुप्पिया ! रागिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणो २ एवं वयह एव खलु देवानुप्पिया ! णदस्स मणिफारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोगायका पाउवभूया-त जहा-मासे जाव कोडे त जो ण इच्छइ देवानुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुमलो वा २ नदस्स मणिफारस्स तेसिं च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगमविरोगायक उवसामेत्तए तस्स ण देवानुप्पिया !

સામિત્તે તાહે સતા તતા જાવ પડિગયા । તણ નદે તેહિ સોલસેહિ રોગાયકેહિ અભિભૂણ સમાણે ણદા પોમ્સવરણીણ મુચ્છીણ ગિછે ગઢિણ અજ્જોવવણે તિરિક્કલજોણિણિ નિવ-
દ્ધાઉણ વઢ્ધપણિણ અદ્દુહદ્દવસદ્દે કાલમાસેકાલ કિચ્ચા નદાણ પોમ્સવરણીણ દ્દહરીણ કુચ્છિસિ દ્દહરત્તાણ ઉવવન્ને ॥સૂ.૦૬॥

ટીકા—‘તણ તસ્મ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु नन्दस्य मणिकार-
श्रेष्ठिनः, अथवा रुदाचित्-प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोदये शरीरे षोडश
रोगाताङ्काः तत्र रोगा = स्वल्पकालस्यापिनो ज्वरादयः, आतङ्का = चिरस्थायिनः
कुष्ठादयः, मादुर्भूताः, तद् यथा—

सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिमुळे ५ भगदरे ६ ।

अरिसा ७ अजीरण ८ दिद्धिमुद्ध ९-१० सुळे अरोअण ११ ॥ १॥

अच्छिवेयणा १२ उअवेयणा १३ कइ १४ दउदरे १५ कोढे १६ १ ॥

(१) श्वास = ऊर्ध्वश्वासः, (२) कास = श्लेष्मविकारः, (३) ज्वरस्ताप, (४)

‘तण तस्स नदस्स’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તણ) હમકે ઘાદ (તસ્સ નદસ્સ) મણિયારસેદ્ધિસ્સ
અન્નયા કયાઈ સરીરગસિ સોલસ રોગાયકા પાઝન્ભૂયા તજહા-ઉસ
મણિકાર શ્રેષ્ઠી કે શરીર મેં કિસી ઇક સમય યે પ્રબલતર
શાત ગૌરવ જનિત કર્મ કે ઉદય સે ૧૬ રોગ ઓર આતઙ્ક
પ્રકટ હુણ-સ્વલ્પ કાલનક જો બિમારી શરીર મેં રહતી હૈ-જૈસે જ્વર
આદિ-વે રોગ, ઓર જો બિમારી શરીર મેં ચિરસ્થાયી હોકર રહતી
હૈ જૈસે કુષ્ઠાદિ-વે આતક કહલાતે હૈ । વે સોલહ યે હૈ-૧ શ્વાસ
-ઉર્ધ્વશ્વાસ, ૨ કાસ-શ્વાસી, ૩ જ્વર-તાપ, ૪ દાહ-દાહજ્વર, ૫ કુક્ષિ-

‘તણ તસ નદસ્સ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તણ), તારપટી (તસ્સ નદસ્સ) મણિયાર સેદ્ધિસ્સ અન્નયા કયાઈ સરી
રગસિ સોલસ રોગાયકા પાઝ મૂયા-ત જહા તે અભિહાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમા કેઈ એક
વખતે પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬ રોગો અને આતકો પ્રગટયા
થોડા વખત મુખી શરીરમા જે માદગી રહે છે જેમ કે તાવ વગેરે તે રોગ અને જે
મદગી શરીરમા કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોઢ વગેરે તે આતક કહેવાય છે તે
સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)શ્વાસ-ઉર્ધ્વ શ્વાસ, (૨)કાસ-ઉદરમ (૩)જ્વર-

ततस्तदनन्तरं सल्ल राजगृहे नगरे इमामेतद्गुणो घोषणा श्रुत्वा निश्चय्य बह्वो
वैद्या यावत् कुशलपुत्रा 'सत्थकोमहत्थगया य' शस्त्रकोमहत्थगताश्च हस्ते भुरादि-
शस्त्रभाजनधारकाः, 'कोसगपायहत्थगया य' कोसगपायहत्थगताः चर्ममयोप-
करणधारिणः, 'सिल्लियाहत्थगया य' शिल्पिकाहत्थगताः=किराततित्ताधौपध-
धारिण 'गुल्लियाहत्थगया य' गुल्लिकाहत्थगताश्च हस्ते द्रव्यसयोगनिर्मितवटिका
धारिणः, औपयभैषज्यहत्थगताश्च स्त्रकेभ्यः स्त्रकेभ्यो निष्कामन्ति=निर्गच्छन्ति,
निष्काम्य राजगृहं मध्यमं येन यत्रैव नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनो गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगो ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और
बाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी । (तएण रायगिहे इमेयारुव घोसण सोच्चा
णिसम्म बह्वे वेज्जाय वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थको महत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया य सिल्लियाहत्थ गया य
गुल्लिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य मण्हिरगिहेहिं तो निक्ख-
मति, निक्खमिस्सा रायगिहं नयर मज्झ मज्झे ण जेणेव नदस्स मणि-
यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार की घोषणा सुन कर
और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत्
कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनो को,
चर्ममय उपकरणों को किरात तित्ता औपध को गोलियों को, औपध
भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले । और निकल कर राजगृह
नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहाँ

कौटुम्बिक लोगोंने उसी आज्ञा प्रमाणे ही घोषणा (बह्वे) करी अने तयार
पडी नदने तेनी भणर आयी (तएण रायगिहे इमेयारुव घोसण सोच्चा
णिसम्म बह्वे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोमहत्थ
गया य कोसगपायहत्थगया य सिल्लियाहत्थगया य गुल्लियाहत्थगया य ओसह
भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्खमति, निक्खमिस्सा रायगिहं
नयर मज्झ मज्झेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति)
आ रीते घोषणा सालणीने अने तेना विसे विचार करीने राजगृह नगरमाधी
धला वैद्यो, वैद्यपुत्रो, यावत् कुशलौ अने कुशलपुत्रो पोतपोताना हाथेमा
क्षुरा वगेरे शस्त्रो अने भाजनो, चर्ममय उपकरणो अटले के आभडाना
साधनो, किरातक (किरियातु) औपधाने, गोणीआने, औपध लेपन यने लधने
पोतपोताना धराथी अडार नीडण्णा अने नीडणीने राजगृह नगरनी पच्चे
यधने ज्या भण्डार श्रेष्ठिनदनु घर छत्तु त्या पडोव्या (उवागच्छति नदस्स

रोगातङ्गमुपगमयितुम् इच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः, तस्य खलु हे देवानुप्रियाः । नन्दो मणिंकारश्रेष्ठी विपुला=मङ्गलाम्, “अत्यमाय” अर्गसपद खलु ददाति= दास्यति, इति इत्या=एवमुक्त्वा द्वितीयमारमपि तृतीयमारमपि धोषणा धोषयत । धोषयित्वा एताममाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, तथैव प्रत्यर्पयन्ति=यथा नन्दमणिकार श्रेष्ठिनां कौटुम्भिकपुरा आदिष्ठास्तथैव ते इत्या निवेदयन्ति स्मेत्यर्थः ।

तस्मिन् देवानुप्पिया । मणिकारे विडल अत्यसपय दलयइ त्ति कइहु दोच्चपि तच्चपि घोसण घोसेह) इन १६ प्रकार के रोगातकों से व्यथित हुए उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ-और राजगृह नगर के श्रृंगाटक आदि गडे २ मार्गों में जोड़ जोड़ से इस प्रकार की धोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रियो ! मणिकार श्रेष्ठी नंद के शरीर में सोलह रोगातक उत्पन्न हुए हैं-वे स्वाम से लगा कर कुण्ठ तक हैं-इस लिये हे देवानुप्रियो ! सुनो-चाहे वैद्य हो या वैद्य पुत्र हो ज्ञायक हो या ज्ञायक पुत्र हों कुशल हो चाहे कुशल पुत्र हों कोई भी क्यों न हो-जो इन १६ प्रकार के रोगातकों में से एक भी रोगातक उपशमित कर देगा-हे देवानुप्रियो उसके लिये मणिकार श्रेष्ठी नंद विपुल मात्रा में अर्घ्य सपदा प्रदान करेगा । इस प्रकार की धोषणा को तुम लोग २-३ बार धोषित करना । (घोसित्ता एवमाणत्तिर्य पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणति) धोषित कर फिर हमें इस की खबर देना । इस प्रकार नंद की आज्ञा प्राप्त कर उन

मणिकारे विडल अत्यसपय दलयइ त्ति कइहु दोच्चपि तच्चपि घोसण घोसेह) मणि जतना रोग अने आतकेथी पीडायेवा मणिकार श्रेष्ठी नंदे कौटुम्भिक पुरेधेने जेलावा अने जेलावीने तेजे तेमने कहे के हे देवानुप्रियो । तमे जेला अने राजगृह नगरना श्रृंगाटक गजेरे राजमार्गों उपर आ प्रभावे मोटेथी घोषणा कराने कहे के हे देवानुप्रियो । मणिकार श्रेष्ठी नंदना शरीरमा सोण रोगातके उत्पन्न थाय छे तेजो आसथी माडीने कुछ सुधी सोण रोग अने आतकेपर्यन्त छे माटे हे देवानुप्रियो । सालणे, वेध डोय के वैद्यपुत्र डोय, ज्ञायक डोय के ज्ञायकपुत्र डोय, कुशल डोय के कुशलपुत्र डोय, गमे ते डोय, जे आ मणिकार श्रेष्ठिना सोण रोग अने आतकेमाथी ओक रोग अथवा तो ओक आतके पणु भटाडी शकसे हे देवानुप्रियो । मणिकार श्रेष्ठि नंद तेने पुत्रग प्रभावेमा धन संपत्ति आपसे आ प्रभावेनी घोषणा तमे बारबार जे त्रुण वभत घोषित करे । (घोसित्ता एवमाणत्तिर्य पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणति) घोषणा करीने तमे अभने अगर आपो आ रीते नानी आते ते

ततस्तदनन्तर खलु राजगृहे नगरे इमामेतद्रूपा घोषणा श्रुत्वा निश्चय्य बहवो
वैद्या यावत् कुशलपुत्रा 'सत्थकोमहत्थगया य' अस्त्रकोशहस्तगताश्च हस्ते भुरादि-
शस्त्रभाजनधारकाः, 'कोसगपायहत्थगया य' कोसकपात्रहस्तगताः चर्ममयोप-
करणधारिणः, 'सिलियाहत्थगया य' गिलिकाहस्तगताः=किराततित्ताधौपध-
धारिण 'गुलियाहत्थगया य' गुलिकाहस्तगताश्च हस्ते द्रव्यसयोगनिर्मितवटिका
धारिणः, औषधमैषज्यहस्तगताश्च स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो निष्कामन्ति=निर्गच्छन्ति,
निष्कम्य राजगृह मध्यम-येन यत्रैव नन्दम्य मणिकारश्रेष्ठिनो गृह तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगो ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और
घाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी । (तएण रायगिहे इमेयाह्व घोसण
सोच्चा णिसम्म बह्वे वेज्जाय य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य
सत्थको सहत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया य सिलियाहत्थ गया य
गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्ख-
मति, निक्खमिन्ता रायगिह नयर मज्झ मज्जे ण जेणेव नदस्स मणि-
यारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार की घोषणा सुन कर
और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत्
कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनो को,
चर्ममय उपकरणों को किरात तित्त औषध को गोलियों को, औषध
मैषज्य को छे छेकर अपने २ घरों से निकले । और निकल कर राजगृह
नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहाँ

कौटुम्बिक बोझोले शे.नी आशा प्रभावे न घोषणा (ठंडरे) करी अने त्या
पछी नदने तेनी भणर आपी (तएण रायगिहे इमेयाह्व घोसण सोचा
णिसम्म बह्वे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ
गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह
भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्खमति, निक्खमिन्ता रायगिह
नयर मज्झ मज्जेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्टिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति)
आ रीते घोषणा श्रावणीने अने तेना विशे विचार करीने राजगृह नगरभाथी
धला वैद्यो, वैद्यपुत्रो, यावत् कुशलो अने कुशलपुत्रो पोतपोताना हाथोभा
क्षुरा वगेरे शस्त्रो अने भाजनो, चर्ममय उपकरणो ओटले के थाभडाना
साधनो, किरातक (उरियातु) औषधोने, गोणीओने, औषध लपन्यने लधने
पोतपोताना घडोवी पहार नील्यो अने नीकणीने राजगृह नगरनी वच्चे
यधने नया भविज्ज श्रेष्ठि नदनु घर छेत्तु त्या पडोव्या (उवागच्छिता नदस्स

ઉપાગત્ય નન્દસ્ય શરીર પશ્યન્તિ, દૃષ્ટ્વાતે તેષા રોગાતઙ્કાના ' ણિયાણ ' નિદાનમ્-
 ઉત્પત્તિમારણ પૃચ્છન્તિ, નન્દસ્ય મણિઠારશ્રેષ્ઠિનસ્તે પૈઘા બહુભિઃ=વહુવિષે
 ' ઉચ્ચલણેહિ ય ' ઉદ્વલનૈશ્વ=દેહોપલેપનવિશેષૈશ્વ, ' ઉચ્ચટ્ટણેહિ ય ' ઉદ્વર્તનૈશ્વ=
 મલાપર્પકદ્રવ્યસયોગવિશેષેણ શરીરોપમર્દનૈશ્વ, ' મિણેટ્ટપાણેદિય ' સ્નેહપાનૈશ્વ=
 ઔપધપરિપકઘૃતાદિપાનૈશ્વ, યમનૈઽ, વિરેચનૈશ્વ સેચનૈઽ=ઉણ્ણજલાભિપેકૈઃ ' અવ

પહુંચે । (ઉપાગચ્છિત્તા નદસ્મ મરીર પાસતિ, તેસિ રોગાયકાણ ણિયા
 ણ પુચ્છતિ ણદસ્સ મણિયારસેટ્ઠિસ્સ મહ્ઠિઃ ' ઉચ્ચલણેહિ ય ઉચ્ચટ્ટણેહિ
 ય, સિણેહપાણેહિ ય વમણેહિ ય, વિરેયણેહિ ય સેયણેહિ ય અવદસણેહિ
 ય અવણ્ણણેહિ ય અણુવાસણેહિ ય વત્થિકમ્મેહિ ય નિરુદ્ધેહિ ય સિરા-
 વેહેહિ ય તચ્છણાહિ ય, પચ્છણાહિ ય, સિરાવેહેહિ ય તપ્પણાહિ ય,
 પુટ્ટપાણેહિ ય, છલ્લીહિ ય વલ્લીહિ ય મૂલેહિ ય, કદેહિ ય પત્તેહિ ય
 પુપ્ફેહિ ય, ફલેહિ ય, ઘીણહિ ય, સિલિયાહિ ય, ગુલિયાહિ ય, ઓસ-
 હેહિ ય, મેસજ્જેહિ ય, ઇચ્છતિ તેસિ સોલસણ્ઠ રોગાયકાણ યગમવિ
 રોગાયક ઉવસામિત્તણ નો ચેવ ણ સચાણિ ઉવસામેત્તણ) વદા પહુંચ
 કર ઉન્હો ને નદ સેઠ કે શરીર કો દેખા દેખ કર ઉન રોગાતકો કે
 નિદાન કો-મૂલ કારણ કો-પૂછા । વાદ મેં ઉસ મણિકોર શ્રેષ્ઠી નદ કા
 ઉન વૈદ્યો ને અનેકવિધ ઉદ્વલનો સે દેહોપલેપન વિશેષ સે, સ્નેહપાનો
 સે-ઔપધિયો મેં પકાવે ગયે ઘૃનાદિકે પિલાને સે, વમન કરાને સે,

શરીર પાસતિ તેસિ રોગાયકાણ ણિયાણ પુચ્છતિ, ણદસ્સ મણિયારસેટ્ઠિસ્સ મહ્ઠિઃ
 ઉચ્ચલણેહિ ય, વમણેહિ ય, વિરેયણેહિ ય, સેયણેહિ ય, અવદસણેહિ ય, અવણ્ણણેહિ ય,
 અણુવાસણેહિ ય વત્થિકમ્મેહિ ય નિરુદ્ધેહિ ય, સિરાવેહેહિ ય, તચ્છણાહિ ય, પચ્છણાહિ ય,
 સિરાવેહેહિ ય, તપ્પણાહિ ય, પુટ્ટપાણેહિ ય, છલ્લીહિ ય, વલ્લીહિ ય, મૂલેહિ ય, કદેહિ
 ય, પત્તેહિ ય, પુપ્ફેહિ ય, ફલેહિ ય, ઘીણહિ ય, સિલિમાહિ ય, ગુલિયાહિ ય, ઓસહેહિ
 ય, મેસજ્જેહિ ય, ઇચ્છતિ તેસિ સોલસણ્ઠ રોગાયકાણ યગમવિ રોગાયક ઉવસા
 મિત્તણ, નો ચેવ ણ સચાણિ ઉવસામેત્તણ) ત્યા જઈને તેઓએ નદ શ્રેષ્ઠિના
 શરીરને તપાસ્યું, તપાસીને તે રોગ અને આતંકોના નિદાન (રોગનું મૂળ
 કારણ) વિશે પૂછપરછ કરી ત્યારબાદ વૈદ્યોએ મણિકોર શ્રેષ્ઠિની ઘણી બાતના
 ઉદ્બલનોથી-શરીરના લેપ વિશેષથી, ઉદ્વર્તનોથી-મલાપર્પક દ્રવ્ય સયોગ
 વિશેષને શરીર ઉપર ઓળવાથી, સ્નેહપાનોથી-ઔપધીઓમા પરિપકવ થયેલા
 ધી વગેરે તે પીવડાવવાથી, વમન (જીલ્ડી) કરાવવાથી વિદેયન

दृष्टोहि य ' अनदहनैः दम्भनैः-तप्तलोहकोशादिना शरीरावयवविशेषे दाहकर
 णैश्च ' अण्डाणेहि य ' अवस्नानेः=शरीरे ण्डूयनादिवारणार्थं तदनुकूलद्रव्यमिश्रि-
 तजलस्नानैश्च, ' अणुवासणेहि य ' अनुवासनेः=विरेचनविशेषैः-यन्त्रद्वारेणापान-
 मार्गेण तैलादीनामुदरे प्रवेशनरूपैश्च ' वस्तिकर्मोहि य ' वस्तिकर्मणि =मलनिर्ग-
 मार्थं गुदे वर्त्यादिप्रक्षेपैः, ' निरुहेहि य ' 'निरुह' =द्रव्यपक्वतैलप्रयोगेण विरेचन-
 विशेषैश्च ' सिरावेहिदेहि य ' शिरावेधे =विकृतरूपधिरनिस्सारणार्थं नाडीवेधैश्च,
 ' तच्छणाहि य ' तक्षणैः=क्षुरादिना त्वक् छेदनैश्च, ' पच्छणाहि य ' प्रतक्षणैः=
 क्षुरादिनाहस्तलाघवेन त्वक् प्रतनूकणैश्च, ' सिरावेदेहि य ' शिरावेष्टैः=नाडी-
 वेष्टनैश्च, तप्पणाहि य ' तर्पणैश्च=स्निग्धद्रव्येण शरीरसंवाहनैश्च, ' पुटपागेहि य '
 पुटपाकैः=पाकविशेषनिष्पन्नौषधविशेषैश्च, ' उल्लीहि य ' छलीभिश्च=निम्बादित्वग्भिः,

विरेचन कराने से, उष्णजल से स्नान कराने से तकुआ आदि को
 अग्नि में तपाकर उसका शरीर के किसी अवयव विशेष में डाम देने
 से अवस्नानों से-खाज-आदि मिटाने के लिये शरीर पर तदनुकूल
 द्रव्य मिश्रित जल से बार २ स्नान कराने से अनुवासनों से-यत्र द्वारा
 अपान मार्ग से उदर में तैलादिकों के पहुँचाने से, वस्तिकर्मों से-मल
 को निकालने के लिये गुदा में वर्त्यादि के प्रवेश कराने से, निरुहों से
 द्रव्यपक्वतैल के प्रयोग से विरेचन करवाने से, शिरावेध से-विकृत
 खून को निकालने के लिये शिरा-नस के काट देने से-नाडीवेध से-
 तक्षण से क्षुरा आदि द्वारा चमड़ी के काट देने से, प्रतक्षण से क्षुरा
 आदि द्वारा हस्तलाघव पूर्वक चमड़ी के छील देने से, शिरावेष्ट-नाडी
 वेष्टन से, स्निग्ध द्वारा शरीर की मालिश कराने से, पुटपाक से-
 पाक विशेष से तैयार की गई औषधियों से, छालो से-निम्ब आदि की

गरम पाणीसे स्नान कराववाची, लोणउ वगेरेने अग्निमा तपावीने शरीरना
 ठोड विशेष अवयवने डामवाची अवस्नानोची-अरबु वगेरे भटाडवा भाटे
 शरीर उपर तदनुकूल द्रव्यमिश्रित पाणीमा बारबार स्नान कराववाची, अनु
 वासनोची-यत्र वडे शुद्ध-मागची चेटमा तेल वगेरे पडोयाडवाची, वस्ति
 कर्मोची-मजने गडार काढवा भाटे शुद्धमा वर्त्यादिने प्रविष्ट कराववाची निरु
 होची-द्रव्यमा परिपक्व थयेला तेलना प्रयोगची, विरेचन कराववाची, शिरावेधची
 भराण लोहीने गडार काढवा भाटे शिरा-नसने जपवाची-नाडीवेधची, प्रतक्षणची
 छरा वगेरेची गडु व कुशजताची चामडीने छोटवाची, शिरावेष्टची-नाडी
 वेष्टनची, स्निग्ध पदार्थ वडे शरीरना उपर भावीश करवाची, पुटपाकची-पाक
 विशेषची तैयार करवामा आवेली औषधीओची, छालो (छाल) ची-नि ज

‘बल्लीहि य’ बल्लीभीथ=गहन्यान्-न्तामिश्र, तथा-मूल, कन्देश्व पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, गीजैश्च, शिलिकाभिश्च=चिरानतिमृतैःचिरायता इतिप्रसिद्धैरोषभि विशेषै गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च इच्छन्ति तेषा पोडशाना रोगातङ्का नामैकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम् । ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च ‘जाहे’ यदा नो शक्नुवन्ति तेषा पोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, तदा श्रान्ता=श्रमातुरा, तान्ता=विश्रा=परितान्ताः=सर्वथाखिन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थो इत्यर्थं यावत्-प्रतिगता=स्वस्व स्थान गतरतः ।

ततः खलु नन्दस्वै पोडशमीरोगातङ्कैश्चाभिभूतः सन् नन्दा पुष्करिण्या ‘मुच्छिष्टे’ मूर्च्छितः=मूर्छा प्राप्तः आसक्तः ग्रथितः=उद्धात्मपरिणाम, ‘अज्ज्ञोव वन्ने’ अद्युपपन्नः=सर्था निरन्तर तद्गायतया तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्तः २ छाल से, गुडु ज्यादि-गिलोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, गीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शात करने की चिकित्सा की । परन्तु वे उसके एक भी रोगातकको उपशमित नहीं कर सके । (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएँति ते सिं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता ततो जाव पडि गया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातकों में से एक भी रोगातक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एव तान्त होकर अपने २ पर चले आये । (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिष्टे गिद्धे गदिह अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्ख जोणिण्हिं निषट्ठाउण बद्ध

वृक्षेऽनी छाद्येथी, शुडु न्यादि-अणो वणेरे लताओथी तेभ ७ भूण, ४ डो, पत्र, पुष्प, फल, गी, शिलिका-चिरायता, गोणीओ, औषध, लैपन्यथी ते सोण शैग अने आतकोभाथी ओक शैग अने ओक आतकने भटाउवा भाटे चिद्धिसा (धुत्ताण) करी पणु ते लोको तेना ओके य शैग अने ओक य आतकने पणु भटाउवाभा शक्तिमान् थय शक्या नहि, (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएँति वेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता जाव पडिगया) न्यादे अधा वैद्यो ६, ते सोण रोगानकोभाथी ओकेय शैग अने आतकने पणु भटाउवाभा समर्थ थय शक्या नहि त्यारे श्रात अने तात थधने पोतपोताने घेर पाछाणता रह्या (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समाणे नदा पोक्खरणिए मुच्छिष्टे गिद्धे गदिह अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्खजोणि

योनिषु निवद्धायुःकः, उद्धप्रदेशिकः प्रदेशमन्यापेक्षया, अट्टदुहद्वयसद्वे ' आर्त-
दुःखार्तिवशात् = आर्त = मनसा दुःखितः, दुःखार्त = देहेन, वशात् = पुष्करिणीसमा-
सक्तेन्द्रियवशेन तत्सुखप्रियोगमम्भानया पीडितः = एतेषा कर्मभारये आर्तदुःखा-
र्तवशात् = आर्त यानोपगतइत्यर्थः कालमासे काल कृत्वा नन्दाया पुष्करिण्यां
'दददुरीए कुच्छिडसि' ददुर्याः कुक्षो = मण्डकीगर्भे 'दददुरत्ताए' ददुर्गताया मण्डकतया,
उत्पन्नः सजातः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—तएणं णंदे दहरे गव्भाओ विणिम्मुक्के समाणे
उम्मुक्कवालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणेऽ विहरइ, तएणं णंदे दहरे पोक्खरणीए
वहूजेणे णहायमाणो य पियइय पाणिय च सवहमाणो अन्न-

पणसिए अट्टदुहद्वयसद्वे काल मामे काल किच्चा नदाए पोक्खरणीए
दददुरीए कुच्छिडसि दददुरत्ताए उववन्ने) उन सोलहुरोगातकोसे अत्यन्त
व्यथित हुआ वह नद नदा पुष्करिणी में मूर्च्छितमति एव अत्यन्त
आसक्त मन होता हुआ तन्मय आत्मपरिणामवाला बन गया—सो इस
कारण उसने प्रदेश बंध की अपेक्षा से तिर्यञ्च आयु का बंध कर लिया।
मन से दुःखित देह से, व्यथित एव पुष्करिणी में समा सक्त अन्तः-
करण से उसके सुखके वियोग की सम्भावना करके अत्यन्त पीडित
बने हुए अर्थात् आर्तध्यान के वशवर्ती हुए उसने मृत्यु के समय देह
का परित्याग किया सो मर कर वह उस नदा पुष्करिणी में एक मेंढकी
के गर्भ में मेंढक की पर्याय से उत्पन्न हो गया। सूत्र ॥ ६ ॥

गर्हि, निवद्धाया वद्धपणसिए अट्टदुहद्वयसद्वे कालमासे काल किच्चा नदाए
पोक्खरणीए दददुरीए कुच्छिडसि दददुरत्ताए उववन्ने) मोक्ष देश अने आत्-
माधी भूमि ७ ठाणेले ते नद अस्ति न। वावभा मूर्च्छित मति ओले के
अत्यंत आसक्त मनरी तन्मय आत्मपरिणाम युक्त बंध गये ओधी तेने
प्रदेशबंधनी अपेक्षासे तिर्यञ्च आयुने बंध करी लीधे मनथी दुःखी,
शरीरथी व्यथित अने पुष्करिणी (वाव) मा आसक्त अन्तःकरणथी ओले
के तेना सुपना वियोगनी सम्भावना करीने भूमि ७ पीडित थने—आर्तध्यान
करता तेणे मृत्युना समय देह छोड्यो देह छोडीने नद अस्ति ते नदा पुष्करिणी
मा ७ ओले देडकीना गर्भमा देडकाना पर्यायथी उत्पन्न थइ गये। सूत्र ६

‘वल्लीहि य’ वल्लीभीथ=गङ्गान्यादि-ज्वाभिश्च, तथा-मूलैश्च, कन्दैश्च पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, गीजैश्च, शिलिकाभिश्च=चिरान्ततिष्ठैः चिरायता इति प्रसिद्धैरोषभि विशेषैः गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च इच्छन्ति तेषां षोडशानां रोगात्कृत्वा नामेकमपि रोगात्कृत्वा उपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम् । ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च ‘जाहे’ यदा नो शक्नुवन्ति तेषां षोडशानां रोगात् कृत्वा नामेकमपि रोगात्कृत्वा उपशमयितुम्, तदा श्रान्ता=श्रमातुरा, तान्ता=खिन्ना=परितान्ताः=सर्वाश्चिन्नाः रोगात्कृत्वापनेतुमसमर्थो इत्यर्थं यावत्-प्रतिगताः=स्वस्व स्थानं गतवन्तः ।

ततः खलु नन्दस्त्वैः षोडशमीरोगतद्वैश्चामिभूतं सत् नन्दा पुष्करिण्या ‘मुच्छिष्टे’ मूर्च्छितः=मूर्च्छा प्राप्तः आसक्तः ग्रथितः=यदात्मपरिणामः, ‘अज्ज्ञो व वन्ने’ अधुपपन्नः=सर्वा निरन्तरं तद्वापयत्या तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्तः २ छाल से, गुडु ज्यादि-गिन्नेय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, गीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शांत करने की चिकित्सा की । परन्तु वे उसके एक भी रोगातक को उपशमित नहीं कर सके । (तएण ते बहवो वैज्जा य ६ जाहे नो सचाएँति ते सिं सोलसण्ह रोगायक्राण एगमवि रोगायक उरसामित्तए, ताहे सता तता जाव पडि गया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातकों में से एक भी रोगातक को शमित करने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एवं तान्त होकर अपने २ घर चले आये । (तएण नन्दे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समणे नन्दा पोक्खरणिणए मुच्छिष्टए गिद्धे गडिण अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्खजोणिणहिं नियद्धाउए बद्ध

वगेरेनी छालेथी, गुडु ज्यादि-गजेो वगेरे लताओथी तेभज भूण, ऽहो, पत्र, पुष्प, फल, गी, शिलिका-चिरायता, गोणीओ, औषध, लैषज्यथी ते सोण रोग अने आतडोभाथी ओक रोग अने ओक आतडने मटाउवा भाटे चिकित्सा (धृत्वाण) करी पणु ते लोको तेना ओके य रोग अने ओक य आतडने पणु मटाउवाभा शक्तिमान थय शक्या नहि, (तएण ते बहवो वैज्जा य ६ जाहे नो सचाएँति वेसि सोलसण्ह रोगायक्राण एगमवि रोगायक उरसामित्तए, ताहे सता जाव पडिगया) ज्यारे पधा वैजो ६, ते सोण रोगानडोभाथी ओकेय रोग अने आतडने पणु मटाउवाभा समर्थ थय शक्या नहि त्यारे आत अने तात थयने पोतपोताने घर पाछाणता न्ह्या (तएण नन्दे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समणे नन्दा पोक्खरणिणए मुच्छिष्टए गिद्धे गडिण अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्खजोणि

अभिगिणहइ-कप्पड से जावजीव छट्टुंछट्टेण अणिक्खित्तेण
तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्टुस्स वि य णं
पारणगंसि कप्पड से णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फामुण्णं
ण्हाणोदएणं उम्मदण्णंछोलिचाहि य विति कप्पमाणस्स विह-
रित्तए, इमेयारुय अभिग्गह अभिगेणहइ, जावज्जीवाए छट्टु-
छट्टेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण नदे’ इत्यादि, ततः खलु नन्दो ददुरी गर्भाद्=गर्भवासाद्
विनिर्मुक्तः=निर्गत सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीत बालवयस्क’, ‘विज्ञाय
परिणयमित्ते’ विज्ञातपरिणतमात्र ददुरजातीयकूदनादिविज्ञानसमम्पन्नः, नन्दाया-
पुष्करिण्याम् अभिरममाण २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=काल यापयतिस्म।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या राजगृहविनिर्गतो बहुजन’ स्नान
कुर्वन्, जल पिबन्, पानीय च सपहमानः, अन्योन्य=परस्परम् आग्याति-

‘तएण णदे ददुदुरे गम्भाओ’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे ददुदुरे) वह नद सेठका जीव ददुर
(गम्भाओ विणिम्मुक्के समणे उम्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते
जोवणगमणुप्पत्ते नदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भा-
वास से बाहिर निकल कर जन बालभाव से रहित हो गया और उसे
ददुर जाति का कूदना आदि आ गया—तब वह यौवन अवस्था सपन्न
होकर नदा पुष्करिणी में नार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने
समय को व्यतीत करने लगा। (तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे

‘तएण णदे ददुदुर गम्भाओ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारपछी (णदे ददुदुरे) नद शेडने छव हेडडाना (गम्भाओ
विणिम्मुक्के समणे उम्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते जोवणगमणुप्पत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भाभाथी णडाए आरीने न्नादे
ओटे। थउ गथे ओटवे डे गथपणु वटावीने जुवान थउ गथे अने भीन
हेडडानी जेग कूवानु, वगेरे आवडी गथु त्याडे ते जुवान थधने नदा पुष्
रिणीमा न वारवार डीडा कत्ता मुण्णो पोताने वण्णत पमार करवा लाग्थे।
(तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे ण्हायमाणो य पियइ २ पानिय च सवइ

मन्नस्स एवमाइक्खइ४ धन्नेण देवाणुप्पिया । णंदे मणियारे
जस्स णंदे मणियारं जस्स ण इमेयारूवे णंदा पुक्खरणी चाउ-
क्कोणा जाव पडिस्वा । जस्म णं पुरत्थिमिह्ले वणसडे चित्तसभा
अणेगखभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्भजीवियफले, तएणं
तस्स ददुरस्स त अभिक्खणं अभिक्खणं बहुजणस्स अतिए
एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए५-से वहिं मन्ने
मए इमेयारूवे सहे णिसत्तपुवे त्तिट्ठु सुभेण परिणामेण जाव
जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्मं समागच्छइ, तएण तस्स
ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु अह इहेव राय-
गिहे नयरे णंदे णाम मणियारं अड्ढे० जाव अपरिभूए । तेण
कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसडे, तएणं
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसि-
क्खावइय जाव पडिवन्ने, तएण अह अन्नया कयाइ असाहु-
दसणेण य जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने, तएण अह
अन्नया कयाई गिम्हकालसमयसि जाव उपसपजित्ताणं
विहरामि, एव जहेव चिता आपुच्छणा नदा पुक्खरिणी वण-
सडा सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए ददुरत्ताए
उव्वन्ने, त अहो ण अह अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निगं-
थाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिभट्ठे त सेय खलु मम समयमेव
पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उव्वसपजित्ताणं
विहरित्तए, एव सपेहेइ सपेहित्तापुव्वपडिउन्नाइ पचाणुव्वयाइ
सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह

अभिगिण्हइ-कप्पड मे जावजीव छट्ठंछट्ठेण अणिम्वित्तेण
तवोकम्मेषं अप्पाण भावेमाणस्त विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं
पारणगसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुणं
एहाणोदएण उम्मदणोछोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्त विह-
रित्तए, इमेयारूप अभिगह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठं-
छट्ठेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण नदे’ इत्यादि, तत्. खलु नन्दो ददुरी गर्भाद्=गर्भवासाद्
विनिर्मुक्तः=निर्गत सन् उन्मुक्तबालभाव=व्यतीत बालवयस्क, ‘विज्ञाय-
परिणयमित्ते’ विज्ञातपरिणतमात्र ददुरजातीयकूदनादिविज्ञानमसम्पन्नः, नन्दाया-
पुष्करिण्याम् अभिरममाण २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=काल यापयतिस्म।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या राजगृहविनिर्गमो बहुजन’ स्नान
कुर्वन्, जल पिबन्, पानीय च सपहमान’, अन्योन्य=परस्परम् जागव्याति-

‘तएण णदे ददुदुरे गम्भाओ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे ददुदुरे) वह नद सेठका जीव ददुर
(गम्भाओ विणिम्मुक्के समणे उम्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते
जोव्वणगमणुपत्ते नदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भा-
वास से बाहिर निकल कर जन बालभाव से रहित हो गया और उसे
ददुर जानि का कूदना आदि आ गया—तब वह यौवन अवस्था सपन्न
होकर नदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने
समय को व्यतीत करने लगा । (तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे

‘तएण णदे ददुदुरे गम्भाओ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारथ श्री (णदे ददुदुरे) नद सेठने ७७ देठाना (गम्भाओ
विणिम्मुक्के समणे उम्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भाधी गहारे आनीने नदारे
भोटो थल गये। ओठवे डे जयपल्लु पटावीने जुवान थल गये। अने भीन्त
देठानी जेग कृवानु, वगेरे आवडी गयु त्याडे ते जुवान थलने नदा पुष्प
रिल्लीभा न पारवार डीडा कृता सुजेरी पोताने। वणत पमार करवा लाग्ये।
(तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे णदायमाणो य पियइ न गणिय च सवह

સાપતે પ્રજાપયતિ પ્રરૂપયતિ-વન્ય. સત્ત્વ હે દેવાનુપ્રિય ! નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી
 યસ્ય સ્વલુ ઇયમેતદ્વૃષ્ટા નન્દાપુસ્કરિણી ચતુઃકોણા સમતીરા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે,
 યસ્યાઃ સ્વલુ નન્દાયાઃ પુસ્કરિણ્યા પૌરસ્ત્યે વનપથે ચિત્રમભાડનેસ્તમ્મજતસનિ
 વિષ્ટા તથૈવ ચતુર્ણા વનપથેષુ ચતસ્રઃ સભા અનેકસ્તમ્મજતસનિવિષ્ટાઃ સન્તિ,
 યાવત્ તસ્ય નન્દમણિકારનેષ્ટિનઃ સુલઘ્ન માનુષ્યક જન્મજીવિતફલમ્ ।

જહાયમાળો ય પિયઢ ય પાણિય ચ સચ્ચમાળો અન્નમન્નસ્સ ઇવમાહ-
 ક્વહ ૪) ઉસ નદા પુસ્કરિણી મેં જય રાજગૃહ નગર કે લોગ આકર
 સ્નાન કરતે, પાની પીતે, ઉસમે સે પાની ભરતે તો ઉસ સમય વે
 પરસ્પર મેં ઇસ પ્રકાર સે ઘાન ચીત કરતે, સાપ્રણ કરતે પ્રજાપના
 એવ પ્રરૂપણા કરતે કિ (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે
 જસ્સ ણ હમેયારૂવા ણદા પુસ્કરિણી ચાઉસ્કોણા જાય પઢિરૂવા)
 હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ હૈ કિ જિસ કી યહ
 ચતુષ્કોણ વાલી તથા સમતીર વાલી નદા પુસ્કરિણી બહુત હી સુરમ્ય
 ધની હૈ । (જસ્સ ણ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે ચિત્તસભા અણેગસ્વમ્મ
 તહેવ ચત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિય ફલે-તણ તસ્સ દ્વદુરસ્સ ત
 અભિક્કલ્લ ૨ બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ હમેયારૂવે
 અવ્વમ્મત્થિય ૬) જિસ કે પૂર્વ દિશા સવન્ધી વનપડ મેં અનેક સૈકઢોં
 સ્વમ્મો સે ચિરાજિત ચિત્ર સભા બની હુઈ હૈ । ડસી તરહ કી ચારોં
 વનપડોં મેં ચારોં સભાઈ હૈ । યાવત્ ઉસ મણિકાર નદ શ્રેષ્ઠી કે મનુષ્ય

માળો અન્નમન્નસ્સ ઇવમાહકવહ ૪) નદા વાવમા ન્યારે રાજગૃહ નગરના
 લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ
 પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સલામણો કરવા માડતા, પ્રજાપના
 અને પ્રજાપણા કરવા માડતા કે (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે જસ્સ
 હમેયારૂવા ણદી પુસ્કરિણી ચાઉકોણા જાય પઢિરૂવા) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર
 શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર પૃથ્વાવાળી તેમજ સરથા કિનારા
 વાળી નદા વાવ બહુ જ રમ્ય બધાવી છે (જસ્સ ણ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે
 ચિત્તસભાઅણેગ સ્વમ્મ તહેવ ચિત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિયફલે-તણ
 તસ્સ દ્વદુરસ્સ ત અભિક્કલ્લ ૨ બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચા ણિસમ્મ
 હમેયારૂવે અવ્વમ્મત્થિય ૬) વાવના પૂર્વ દિશાના વનપડમા સે ડા થાભલાઓથી
 શ્રાભતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનપડોમા ચાર સલામો
 તૈયાર કરાવડાવી છે અરેઅર તે મણિકાર નદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

તતઃ તલુ તસ્ય દર્દુરસ્ય તદમીક્ષણ=પૌનઃ પુન્યેન, વહુજનસ્યાન્તિકે એતમર્થ
શ્રુત્વા નિશમ્ય, અયમેતદ્ભૂપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપ. આધ્યાત્મિક આત્મગતોવિચારઃ,
યાવન્મનોગતઃ સકલ્પઃ સમુદ્પત્યતઃ કિં સ્વરૂપ ? इत्याह—‘ સે કહિંમન્ને ’
इत्यादि । ननुह मन्ये—कुत्रापि मया अयमेतद्भूय शब्द. ‘णिसतपुण्वे’ निशान्तपूर्व.
श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धा. यवसायेन
यावत्—जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुर’ ‘पुण्वजाइ’=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक्
समागच्छति = स्मरति । तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्भूप=वक्ष्यमाणस्वरूप.
‘अज्झत्थिए’ आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकलप = स्मरणरूप. ‘समुप्प
जिञ्च्या’ समुदपद्यत—सजातः, तद् यथा—एव खलु अह इहैव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल हे । उस ने अपने मनुष्य जन्म और
जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनों के
मुख से बार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें
हृदय में अवशृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आ-ध्यात्मिक
विचार यावत् मनोगत सकलप उत्पन्न हुआ—(से कहिं मन्ने मए इमे
याख्वे सहे णिसतपुण्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे
संसुप्पन्ने, पुण्वजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददुुरस्स इमेयाख्वे
अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले
सुना है—इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अभ्यवसाय के वश से
जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के
वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस
प्रकार—वक्ष्यमाण रूप सकलप उत्पन्न हुआ । (एव खलु अह इहेव

અને સફળ થઈ ગયા છે તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી
પેઠે મેળવી લીધું છે આ ગીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારવાર પોતાના
વખાણુ સાબળીને અને હૃદયમાં અવધૂત ડગીને દેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યા-
ત્મિક વિચાર યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે—(સે કહિં મને મए इमेया
ख्वे सहे णिसतपुण्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने,
पुण्वजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददुुरस्स इमेयाख्वे अज्झत्थिए) મને
એમ થાય છે કે આ રીપ્પે પહેલા મે સાબળા કે આ બાતના વિચારથી
તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે બાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું એથી તેણે
પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત બાણી લીધી ત્યારબાદ તે દેડકાને આ રીતે
વક્ષ્યમાણુ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે
(एव खलु अह इहेव रायगिहे नगरे ण्हे णाम मणियारे अइहे जाव अपरि-

પ્રાપ્તે પ્રજ્ઞાપયતિ પ્રરૂપયતિ-ધન્ય. સ્વલુ છે દેવાનુપ્રિય ! નન્દો મણિકારરશ્રેષ્ઠી
 યસ્ય સ્વલુ ઇયમેતદ્રૂપા નન્દાપુષ્કરિણી ચતુઃકોણા સમતીરા યાત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે,
 યસ્યાઃ સ્વલુ નન્દાયા. પુષ્કરિણ્યા ધૌરસ્ત્યે વનપથે ચિત્રમભાડનેકસ્તમ્મજતસનિ
 વિષ્ટા તથૈવ ચતુર્ણા વનપથેષુ ચતસ્રઃ સભા અનેકસ્તમ્મજતસનિવિષ્ટા. સન્તિ,
 યાવત્ તસ્ય નન્દમણિકારગેષ્ઠિનઃ સુલભ માનુષ્યક જન્મજીવિતકમ્ ।

પ્રજ્ઞાપયમાણો ય પિયહ ય પાણિય ચ સચ્ચમાણો અન્નમન્નસ્સ ઇવામા-
 ક્ષવહ ૪) ઉસ નદા પુષ્કરિણી મેં જય રાજગૃહ નગર કે લોગ આકર
 સ્નાન કરતે, પાની પીતે, ઉસમે સે પાની ભરતે તો ઉસ સમય વે
 પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે યાત ચીત કરતે, આપ્રણ કરતે પ્રજ્ઞાપના
 એવ પ્રરૂપણા કરતે કિ (ધન્નેણ દેવાનુપ્રિયા ! જદે મણિયારે
 જસ્સ જ હમેયારૂવા જદા પુષ્કરણી ચાઉકોણા જાવ પઢિહવા)
 હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદા કો ધન્યવાદ હૈં કિ જિસ કી ગહ
 ચતુષ્કોણ વાલી તથા સમતીર વાલી નદા પુષ્કરિણી બહુત શી સુરમ્ય
 ઘની હૈં । (જસ્સ જ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે ચિત્તસભા અણેગલ્લમ્
 તહેવ ચત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિય ફલે-તણ તસ્સ દ્વદુરસ્સ ત
 અભિક્ષણ ૨ વહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા ણિસમ્મ હમેયારૂવે
 અન્નમત્થિણ ૬) જિસ કે પૂર્વ દિશા સયન્ધી વનપથ મેં અનેક સૈકઢો
 લ્લમ્મો સે વિરાજિત ચિત્ર સભા યની હુઈ હૈં । ડસી તરફ કી ચારો
 વનપથો મેં ચારો સભાઈ હૈં । યાવત્ ઉસ મણિકાર નદા શ્રેષ્ઠી કે મનુષ્ય

માણો અન્નમન્નસ્સ ઇવામાક્ષવહ ૪) નદા વાવમા ત્યારે રાજગૃહ નગરના
 લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમજ પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ
 પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સલાખણો કરવા માડતા, પ્રજ્ઞાપના
 અને પ્રરૂપણા કરવા માડતા કે (ધન્નેણ દેવાનુપ્રિયા ! જદે મણિયારે જસ્સજ
 હમેયારૂવા જદી પુષ્કરણી ચાઉકોણા જાવ પઢિહવા) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર
 શ્રેષ્ઠી નદાને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ ચરખા કિનારા
 વાળી નદા વાવ બહુ જ રમ્ય બધાવી છે (જસ્સજ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે
 ચિત્તસભાઅણેગ લ્લમ્મ તહેવ ચિત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિયફલે-તણ
 તસ્સ દ્વદુરસ્સ ત અભિક્ષણ ૨ વહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચા ણિલ્લમ્મ
 હમેયારૂવે અન્નમત્થિણ ૬) વાવના પૂર્વ દિશાના વનપથમાં સે ડા થાલલાઓથી
 શોભતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ત્યારે ચાર વનપથોમાં ચાર સભાઓ
 તૈયાર કરાવડાવી છે ખરેખર તે મણિકાર નદા શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

તતઃ તલુ તસ્ય દર્દુરસ્ય તદમીક્ષ્ણ=પીન. પુન્યેન, વહુજનસ્યાન્તિકે એતમર્થ
શ્રુત્વા નિશમ્ય, અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપઃ આધ્યાત્મિક આત્મગતોવિચારઃ,
યોગ્મનોગતઃ સકલ્પ સમુદપ્યત । કિં સ્વરૂપ ? इत्याह-‘ से कहिंमन्ने ’
इत्यादि । ननुह मन्ये-कुनापि मया अयमेतद्रूप शब्द. ‘णिसतपुण्वे’ निशान्तपूर्व.
श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्ध।-यवसायेन
यावत्-जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुरः ‘पुवजाइ’=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक्
समागच्छति = स्मरति । तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूप =वक्ष्यमाणस्वरूप.
‘अज्झत्थिए’ आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकलप = स्मरणरूप ‘समुप्प
ज्जित्था’ समुदपद्यत-सजात’, तद् यथा-एव खलु अह इहैव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल है । उस ने अपने मनुष्य जन्म और
जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनो के
मुख से बार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें
हृदय में अवशृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक
विचार यावत् मनोगत सकलप उत्पन्न हुआ-(से कहिं मन्ने मए इमे
याह्वे सहे णिसतपुण्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे
समुप्पन्ने, पुवजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददर्दुरस्स इमेयाह्वे
अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले
सुना है-इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से
जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के
वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस
प्रकार-वक्ष्यमाण रूप सकलप उत्पन्न हुआ । (एव खलु अह इहेव

ખને સફળ થઈ ગયા છે તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી
પેઠે મેળવી લીધું છે આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારંવાર પોતાના
વંખાણુ સાબળીને અને હૃદયમાં અવધૂત કરીને ફેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યા-
ત્મિક વિચાર યાવત્ મનોગત નકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે-(સે કહિં મન્ને મए इमेया-
ह्वे सहे णिसतपुण्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने,
पुवजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददर्दुरस्स इमेयाह्वे अज्झत्थिए) મને
એમ થાય છે કે આ રીતે પહેલા મે સાબળના છે આ જાતના વિચારોથી
તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું એથી તેણે
પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત જાણી લીધી ત્યારબાદ તે ફેડકાને આ રીતે
વક્ષ્યમોણુ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે
(‘एव’ खलु अह इहेव रायगिहे नगरे णे जे नाम मणियारे अइहे जाव अपरि

નામ મણિકાર. જાદવો યાદપરિભૂત આસમ્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શ્રમણો
 ભગવાન્ મહાવીર* સમગ્સત, તતઃ સ્વલ્પશ્રમણસ્યમગતો મહાવીરમ્યાન્તિકે
 પચ્ચાણુવતિક સપ્તશિક્ષાત્રતિક દ્વાદશરિધ ગૃહ્ધિર્મ પ્રતિપન્ન*, તતઃ સ્વલ્પહમન્યદા
 કદાચિદ્ અસાધુદર્શનેન ચ યાત્-મિથ્યાત્વ વિપતિપન્ન*, તતઃ સ્વલ્પહમન્યદા કદા-
 ચિદ્ ગ્રીષ્મકાલસમયે યાત્-પૌષપશાલાયા પૌષધમુપગમ્ય સ્વલ્પ વિહરામિ, 'એવ
 યથૈવચિન્તા, આપૃચ્છના, નન્દાપુષ્કરિણી, વનપણ્ડા, સભાઃ તદેવ સર્વમ્' તથૈવ-
 ચિન્તાદિક દર્દુરેણ પૂર્વભૂવે કૃત તથૈવ તત્ સર્વ સ્મૃત, તદ્ યદા-મમ તત્રાપ્તમમકે

રાયગિહે નયરે જાદે જામ મણિયારે અદ્દે જાવ અપરિભૂત । તેણ કાલેણ
 તેણ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ ભગ
 વઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિમ્સાવહય જાવ પઢિવન્ને)
 મૈં હસી રાજગૃહ નગરમેં નદ નામ કા મણિકાર શ્રેષ્ઠી થા । વિશેષ રૂપસે
 ધન વાન્યાદિ સર્પાત્ત શાલી એવ જન માન્ય થા । उस काल और उस समय
 में श्रमण भगवान् महावीर वहा आये-सो मैंने उनसे पांच अनुव्रत एवं
 सात शिक्षाव्रत रूप श्रावक धर्म अंगीकार करलिया था । (तण्ण अह
 अन्नया कयाई असाहुदसणेण य जाव मिच्छत्त विपडिवन्ने) किसी
 एक समय असाधु के दर्शन से तथा और भी कई निमित्तो से मैं मि-
 थ्यात्व भाव रूप से परिणत हो गया-(तएण अह अन्नयाकयाई गिम्ह
 कालसमयसि जाव उवसपज्जित्ताण विहरामि, एव जहेव चिंता आ-
 पुच्छणा नदापुखरिणी वनसडा, सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए
 पुखरिणीए ददुदुरत्ताए उववन्ने, त अहोण अह अहन्ने, अपुन्ने, अक-

ભૂપ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ
 ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિમ્સાવહય જાવ પઢિવન્ને) હું
 પહેલા આ રાજગૃહ નગરમાં જ નદ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠી હતો હું વિશેષ
 રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમાં પ્રખ્યાતો) હતો
 તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા એ
 તેઓશ્રી પાસેથી પાંચ આણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ
 સ્વીકારી લીધો હતો (તણ અહ અન્નયા કયાઈ અસાહુ દસણેણ ય જાવ
 મિચ્છત્ત વિપડિવન્ને) કોઈ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ બીજા પણ
 ઘણા કારણોથી હું મિથ્યાત્વભાવ રૂપમાં પરિણત થઈ ગયો (તણ અહ
 અન્નયા કયાઈ ગિમ્હકાલસમયસિ જાવ ઉવસપજ્જિત્તા ણ વિહરામિ, એવ જહેવ
 ચિંતા આપુચ્છણ નદા પુસ્કરિણી વનસડા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાએ
 પુસ્કરિણીએ દદુદુરતાએ ઉવવન્ને, ત અહોણ, અહ અહન્ને, અપુન્ને, અક-

परिणम्यमाने पिपासया क्षुधया चाभिभूतस्येत्य चिन्ता सजाता “धन्याः खलु ते लोका येपा जलाशया विद्यन्ते, तस्मात् कल्ये श्रेणिक राजानमापृच्छध राजगृहस्य वहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नन्दानाम्नी पु रुरिणी खनयितु श्रेय इति” । अथैव विचिन्त्य श्रेणिक प्रत्यापृच्छता कृत्वा तदाऽज्ञया मया नन्दापृच्छरिणी कारिता,

यपुन्ने निगर्गधाओ पावयणाओ नड्डे भट्टे परिब्भट्टे त सेय खलु मम सयमेव पुब्बपडिक्खत्ताह पचाणुब्बयाह सत्तसिक्खावयाह उवमपज्जित्ता ण विहरित्ताण) किसी समय में ग्रीष्मकाल में यावत् पौषधशाला में पौषध धारण कर बैठा हुआ था-इस प्रकार मुझे वहा ऐसी चिन्ता हुई आपृच्छता हुई, नदा पुष्करिणी कराने का विचार हुआ, वनपडों, सभाओ के बनाने का विचार हुआ-यह सब विषय पूर्वभव का उसे स्मृत हो आया-अर्थात् उसे यह बात याद आई-कि जब मैं अष्टम-भक्त की तपस्या का नियम धारण कर पौषध शाला में बैठा हुआ था तब मेरी वह तपस्या पूर्णप्राप्त हो रही थी-उस समय मुझे पिपासा और क्षुधा की याधा ने आकुलित परिणाम वाला बना दिया । सो मुझे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-कि वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्होंने उनवाये हुए जलाशय विद्यमान हैं । इसलिये मे भी प्रात काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह के बाहिर ईशान कोण में नदा नाम की एक बावड़ी खुदवाऊंगा । इस प्रकार विचार कर फिर मेने श्रेणिक राजा से पूछा तो उन्होंने ने मुझे इस की आज्ञा देदी मैंने

निगर्गधाओ पावयणाओ नड्डे भट्टे परिब्भट्टे त सेय खलु मम सयमेव पुब्ब पडिक्खत्ताह प चाणुब्बयाह सत्तसिक्खावयाह उवमपज्जित्ताण विहरित्ताण) कैध अेक्क वण्ठे उनाणाभा यावत् पौषधशालाभा पौषध धारण करीने भेट्ठे हत्ते त्यादे भारा मनमा अेवे विचार उद्दलब्धे अेवी आपृच्छता थध, नदा पुष्करिणी तैयार कराववाने विचार थये, वनपडो तेभज सभाअेने जनावध ने विचार थये, अे रीते पडेलाना ज्जमनी जधी वातयाद आवी अेटवे के तेने आ जतनु स्मरणु ययु के त्यादे हु अष्टम लक्ष्मणी तपस्यानु मत लधने पौषधशालाभा भेट्ठे हत्ते भारी अष्टम लक्ष्मणी तपस्या पूरी थवानी हती ते वण्ठे तरस अने लूणनी पीड अे भने व्याकुल जनवी दीधे त्यादे भने विचार आव्थे । के ते बोधे धन्यवादन लायक छे के जेमना वडे भधायेला ज्जालाशये अत्यादे पणु हयात छे अेथी हु पणु सवार थता ज श्रेष्ठिक राजनी आज्ञा भेजवीने राजगृह नगरनी जहार धशान कैलुमा नदा नामे वाव भधावडावु आ रीते विचार करीने जे श्रेष्ठिक राजने त्यादे पूछथु त्यादे तेभणु भने तेनी आज्ञा

નામ મણિકાર. આઠ્ઠ્યો યાદપરિભૂત ધાસમ્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શ્રમણો
 ભગવાન્ મહાવીરઃ સમપ્સૃત, તતઃ સ્વલ્પશ્રમણસ્યમગતો મહાવીરસ્યાન્તિકે
 પચ્ચાણુવતિક સપ્તશિક્ષાત્રતિક દ્વાદશત્રિધ મૃદ્ધિધર્મે પ્રતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલ્પહમન્યદા
 કદાચિદ્ અસાધુદર્શનેન ચ યાત્-મિથ્યાત્વ વિપતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલ્પહમન્યદા કદા-
 ચિદ્ ગ્રીષ્મઋત્સમયે યાત્-પૌષઃશાલાયા પૌષધમુપાપય સ્વલ્પ વિહરામિ, 'એવ
 યથૈવચિન્તા, આપૃચ્છના, નન્દાપુષ્કરિણી, વનપંડા, સભાઃ તદેવ સર્વમ્' તથૈવ-
 ચિન્તાદિક દર્દુરેણ પૂર્વભૂવે કૃત તથૈવ તત્ સર્વં સ્મૃત, તદ્ યથા-મમ તત્રાપ્તમમકે

રાયગિહે નયરે જાદે જામ મણિયારે અઢે જાવ અપરિભૂત । તેજ કાલેજ
 તેજ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ ભગ
 વઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવહય સત્તસિક્કાવહય જાવ પઢિવન્ને)
 મેં હસી રાજગૃહ નગરમેં નદ નામ કા મણિકાર ઁછી થા । વિશેષ રૂપસે
 ધન ધાન્યાદિ સર્પત્તિ શાલી એવ જન માન્ય યા । ઉસ કાલ ઔર ઉસ સમય
 મેં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર વહા આયે-સો મેંને ઉનસે પાચ અણુવત એવ
 સાત શિક્ષાવત રૂપ શ્રાવક ધર્મ અગીકાર કરલિયા યા । (તણ અહ
 અન્નયા કયાઈ અસાહુદમણેજાવ જાવ મિચ્છત્ત વિપઢિવન્ને) કિસી
 એક સમય અસાધુ કે દર્શન સે તયા ઔર મી કઈ નિમિત્તો સે મેં મિ-
 થ્યાત્વ ભાવ રૂપ સે પરિણત હો ગયા-(તણ અહ અન્નયાકયાઈ ગિમ્હ
 કાલસમયસિ જાવ ઉવસપજ્જિજ્ઞાણ વિહરામિ, એવ જહેવ ચિંતા આ-
 પુચ્છણા નદાપુસ્કરિણી વનસઢા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાપ
 પુસ્કરિણીએ દદ્દુરત્તાએ ઉવવન્ને, ત અહોણ અહ અહન્ને, અપુન્ને, અક-

ભૂપ । તેજ કાલેજ તેજ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ
 ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવહય સત્તસિક્કાવહય જાવ પઢિવન્ને) હું
 પહેલા આ રાજગૃહ નગરમા જ નદ નામે મણિકાર ઁછી હતો હું વિશેષ
 રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમા પ્રખાતો) હતો
 તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા એ
 તેઓશ્રી પાસેથી પાત્ર અણુવતો અને સાત શિક્ષાવતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ
 સ્વીકારી લીધો હતો (તણ અહ અન્નયા કયાઈ અસાહુ દસણેજા જાવ
 મિચ્છત્ત વિપઢિવન્ને) ડોઠ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ ખીળ પશુ
 ઘણા કારણોથી હું મિથ્યાત્વભાવ રૂપમા પરિણત થઈ ગયો (તણ અહ
 અન્નયા કયાઈ ગિમ્હકાલસમયસિ જાવ ઉવસપજ્જિજ્ઞાણ વિહરામિ, એવ જહેવ
 ચિંતા આપુચ્છણ નદા પુસ્કરિણી વનસઢા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાપ
 પુસ્કરિણીએ દદ્દુરત્તાએ ઉવવન્ને, ત અહોણ, અહ અહન્ને, અપુન્ને, અકયપુન્ને

न्यदा रुदाचित्-पोडशरोगातङ्का' भादुर्भूताः। वहवो वैद्यास्तत्रागता' परत्वेकमपि
रोगातङ्कमुपशमयितुमसमर्था सन्त प्रतिगताः। ततरतैरोगातङ्कैरभिभूत' खलु
नन्दापुष्करिण्या मूर्च्छितोऽहं तत्सुखवियोगसभाजनयाऽऽर्तं पानोपगतः सन् काल
मासे कालं कृत्वा अत्रैव नन्दापुष्करिण्या दर्दुरस्तथा सजातोऽस्मि । इत्थं जातिस्म-
रणं प्राप्य स दर्दुरं स्वात्मनि विचारयति-'त अहोण जह अहन्ने' इत्यादि, तत्=
तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमधन्यः, अपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थात् प्रवच-
नाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वमतिपन्नानि=पूर्व
भगवद्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विद्वर्तुम् इत्येव ममेक्षते=

उदय से अतिशय आनन्द का अनुभव करने लग जाता । किसी एक
समय मुझे मणिकार श्रेष्ठी के भव में उस प्रचलित शात गौरवजनित
कर्म के उदय से १७ रोगातक शरीर में प्रकट हुए । अनेक वैद्य आये,
परन्तु वे मेरे एक भी रोगातक को शमित करने में समर्थ नहीं हो
सके । सो वापिस चले गये । इस तरह उन रोगातकों से अभिभूत
हुआ मैं नदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की
संभावना से आर्त-ध्यान में पड़कर मृत्यु के अवसर में मरा । सो इसी
नदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ । इस तरह
जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया
देखो यह कितने खेद की बात है-मैं कितना अवन्ध हूँ कितना पापी
हूँ कितना अकृत पुण्य हूँ जो मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इस-
लिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मैं स्वयं अब पूर्व भव में अमीकृत
किये गये पाच अणुव्रतोंको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लूँ ।

आनन्दमा भग्नं यथं जेतो ढतो । जेथं जेड सभये भण्डितर शेठना लवमा भारा
शरीरमा प्रणजतर शात गौरव जनित उर्भना उदयथी मोण देग अने आतक
प्रकट थया धल्ला वेद्यो आत्मा पण तेजो भारो जेड देग पञ्च भटाडी शक्या
नहिं वेद्यो पण निराश थधने पाछा जता रह्या ढता आ रीते देग अने
प्रातजेथी पीडित थधने हुं नदा वावमा जेमान थधने सुणना वियोगनी
संभावनाथी ज आर्तध्यान करतो छेपटे मृत्युना सभये भरलु पाभ्यो मृत्यु
आद हुं जे नदा वावमा ज हेडजाना पर्यायथी उत्पन्न थयो छु आ रीते
जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थता ते हेडकाजो चोताना भनमा विचार कर्यो जे-अरे ।
अरे । हुं डेटको गंधा अधन्य छु पापी छु अने अमृतपुण्य छु निर्ग्रन्थ
प्रवचनथी भ्रष्ट थर्ने ज भारी आवी दशा थर्छे, जेथी डरे हुं पूर्वलवमा
स्वीकारेला पाच अणुव्रतो, अने शिक्षाव्रतोने स्वीकारी लई (एव सपेदेइ सपे

તતસ્તેસ્યાઃ પુષ્કરિણ્યાશ્વત્તુર્દિશુ વનપટ્ટા આરાપિતાઃ સરક્ષિતાઃ સવર્ધિતાઃ, તત સ્તેષુ વનપટ્ટેષુ પૌરસ્ત્યે ચિત્રસભા, દાક્ષિણાત્યે મહાનસશાલા, પાશ્ચાત્યે ચિકિત્સા શાલા, ઔદીચ્યે વનપટ્ટેડલકારિકસભા મયા કારિતા, ઇતિ । ' યાવત્-નન્દાયાં પુષ્કરિણ્યા દર્દુરતયોપપન્નઃ ' તતો રાજગૃહપિનિર્ગતો મહુજનસ્તત્ર પુષ્કરિણ્યાં સ્નાનં કુર્વન્ જલ પિપ્પન્ પાનીય ઘટાદિર્મિન્યન્ પરસ્પરમેવમયાદીત્-મો દેવાનુપ્રિયાઃ ! ધન્યઃ કૃતાર્યં સ્વલુ નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદ્વા નન્દાપુષ્કરિણી ત્યોદિ, તત્ પ્રશંસાવચનમહ મહુજનસ્યાન્તિકે શ્રુત્યા દ્વષ્ટુષ્ઠઃ સાતગૌરવસુત્વમનુભવન્ આસમ્ । તત સ્વલુ મમ મણિકારશ્રેષ્ઠિભયે પ્રપલતરશાતગૌરવજનિતકર્મોદયેના-

નન્દા નામ કી પુષ્કરિણી ડન્હી કી આજા સે વન વાઈ । ઉસ કી ચારોં દિશાઓં મેં ચાર વનપટ્ટ લગવાયે વે સરક્ષિત્ત હોકર સ્વચ્છ અચ્છી વૃદ્ધિ ગત્ત હુએ ઉન વનપટ્ટો મેં સે જો પૂર્વ દિશા સવન્ધી વનપટ્ટ થા ઉસમેં મેંને એક ચિત્ર સભા વનવાઈ દક્ષિણ દિશા સવન્ધી વનપટ્ટ મેં એક મેંને નસ શાલા, પશ્ચિમદિશા સવન્ધી વનપટ્ટ મેં ચિકિત્સા શાલા ઓર ઉત્તર દિશા સવન્ધી વનપટ્ટ મેં અલકારિક સભા વનવાઈ । રાજગૃહનગર સે નિર્ગત્ત અનેક જન ઉસ પુષ્કરિણી મેં સ્નાન કરતે-પાની પીતે ઓર ઉસ મેં સે પાની ઓ ભરતે-તથ પરસ્પર મિલકર વે હસ પ્રકાર સે વાત ચીત્તે કરતે કિ મો દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર નન્દ શ્રેષ્ઠી ધન્યવાદ કા પોષ્ઠ હૈ, કૃતાર્ય હૈ-જિસને હતની અચ્છી હસ નન્દા પુષ્કરિણી કો વન વાંચો હૈ । હસ તરહ કે પ્રશંસાત્મક વચને સુનકર મેં હર્ષોત્કુલ ગાત્ર હો જાતો, મેરા ચિત્તે સંતુષ્ટ હો જાતો । મેં ઉસે સમયે જ્ઞાત ગૌરવ કે

આપી દીધી તેમની આજ્ઞાથી જ મેં નન્દા નામે પુષ્કરિણી બધાવી છે તેની આરે દિશાઓમા આર વનપટ્ટો રોપાવ્યા સુરક્ષિત થયેલા વનપટ્ટો ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા પૂર્વ દિશા તરફના વનપટ્ટમા મેં એક ચિત્રસભા બનાવડાવી હતી દક્ષિણ દિશાના વનપટ્ટમા એક વિશાળ મહાનસ શાળા (રસોઈ ઘર), પશ્ચિમ દિશાના વનપટ્ટમા ચિકિત્સાલય (દવાખાના) અને ઉત્તર દિશાના વનપટ્ટમા અલકારિક સભા બનાવડાવી રાજગૃહ નગરના ઘણા માણસો પુષ્કરિણીમા સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને તેમાથી પાણી ભરતા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત્ત શરૂ કરવા માડતા કે હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠ ધન્યવાદને લાયક છે કૃતાર્ય છે, કેમકે તેણે કેવી સરખ નન્દા પુષ્કરિણી બનાવડાવી છે આ રીતે પોતાના જ વખાણ સાલણીને હું ખુશ ખુશ (હર્ષોત્કુલ) થઈ જતો અને મોંઘે હેયું સંતોષ થઈ જતું હતું હું તે વખતે જ્ઞાત ગૌરવના ઉદયથી ખૂબ જ

न्यदा रुदाचित्-पोडशरोगातङ्का' प्रादुर्भूता । वहवो वैद्यास्तत्रागता' परत्वेकमपि
रोगातङ्कमुपशमयितुमसमर्था सन्त प्रतिगताः । ततरतैरोगातङ्कैरभिभूतः खलु
नन्दापु'रुणिषा मूर्च्छितोऽहं तत्सुखवियोगसमात्रनयाऽऽर्तं यानोपगतः सन् काल-
मासे कालं कृत्वा अत्रैव नन्दापु'रुणिषा दर्दुरतया सजातोऽस्मि । इत्थं जातिस्म-
रणं प्राप्य स दर्दुरं स्वात्मनि विचारयति-'त अहोण जह अहन्ने' इत्यादि, तत्=
तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमवन्ध्य, जपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्त्यात् प्रवच-
नाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वप्रतिपन्नानि=पूर्व
भवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विद्वर्तुम् इत्येव ममेवमेव=

उदय से अतिशय आनन्द का अनुभव करने लग जाता । किसी एक
समय मुझे मणिङ्कार श्रेष्ठी के भव में उस प्रचलित शात गौर्ग्वजनित
कर्म के उदय से १६ रोगातक शरीर में प्रकट हुए । अनेक वैद्य आये
परन्तु वे मेरे एक भी रोगातक को शमित करने में समर्थ नहीं हो
सके । सो वापिस चले गये । इस तरह उन रोगातकों से अभिभूत
हुआ मैं नदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की
संभावना से आर्त यान में पड़कर मृत्यु के अवसर में मरा सो इसी
नदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ । इस तरह
जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया
देखो यह कितने खेद की बात है-मैं कितना अवन्ध्य हूँ कितना पापी
हूँ कितना अकृत पुण्य हूँ जो मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इस-
लिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मैं स्वयं अब पूर्व भव में अङ्गीकृत
किये गये पाच अणुव्रतोंको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लूँ ।

आनन्दमा भञ्ज यच्च जेतो हुतो । केचिं श्रेष्ठं समये भण्डितार श्रेष्ठो लवमा भारा
शरीरमा प्रभणतार शात गौर्ग्व जनित उर्भना उदयथी भोग जेग अने आतक
प्रकट थया धल्ला पयो आल्या पल्ल तेजो भारो जेक रोग पल्ल भटाडी गकथा
नहि वैद्यो पल्ल निराश थजने पाछा जता गह्या हुता आ गीते रोग अने
आतकेथी पीडित थजने हु नहा वापमा जेमान थजने सुभना वियोगनी
संभावनाथी ज आर्तध्यान करतो देवटे मृत्युना समये भण्डु पाभ्यो मृत्यु
भा हु जे नहा वापमा ज देउजाना पर्यायथी उत्पन्न थयो छु आ गीते
जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थता ते देउकाजे पोताना भनमा विचार क्यो के-अरे ।
अरे । हु जेतो जेथी अवन्ध्य छु पापी छु अने अकृतपुण्य छु निर्ग्रन्थ
प्रवचनथी भ्रष्ट थजने ज भारी आवी दशा थज छे, जेथी हरे हु पूर्णलवमा
स्वीकारेला पाच अणुव्रतो, अने शिक्षाव्रतोने स्वीकारी लउ (एव सपेदेइ सपे

विचारयति, सप्रेक्ष्य पूर्णप्रतिपन्नानि पञ्चाणुत्रतानि सप्तशिक्षात्रतानि आरोहति=
 धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः । आरुह्य=आदशत्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण
 स्वरूपम्, अभिग्रहमभिमृह्णाति-कल्पने मे यावज्जीव 'उद्धृष्टेण' पष्ठपष्ठभक्तन,
 'अणिस्त्रित्तेण' अनिस्त्रित्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणाऽऽ
 त्मान भावयत.=आत्मनः शुभपरिणाम रर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेषां सम्बन्धः ।
 अपिच-पष्ठम्यापि--पष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दाया. पुष्करिण्या.
 'परिपेरतेसु' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=मासुकेन=भविष्यते, स्नानोदकेन 'उम्महणो-
 छोलियाहि य' उ-मर्दनोछोलिताभिः=उद्धर्तनानुद्धर्तिताभिः लोकैर्दोहोद्धर्तने कृते
 सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यच्चूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः,
 वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाहं कुर्वत. विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेषां न्वयः । इममेत

(एव सपेवेइ, सपेहिता पुण्यपट्टिचत्ताइ पचाणुव्वयाइ सत्त सि
 क्खावयाइ आरुहेइ, आरुहिता इमेयारुव्व अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्प
 मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिस्त्रित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा
 णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया । विचार करके पूर्व
 प्रतिपन्न पच अणुत्रतों को सात शिक्षात्रतों को उसने स्वयं धारण कर
 लिया । धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं
 अब जीवन पर्यन्त अन्तर रहित पष्ठ पष्ठ भक्त की तपस्या से अपने
 आत्मपरिणामोंको बढ़ाता रहूँगा । (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ
 मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्महणो-
 छोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव्व अभिग्गह अ
 भिगिण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हिता पुव्व पट्टिचत्ताइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहिता
 इमेयारुव्व अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्ठेण अणिस्त्रित्तेण
 तवो कम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) आ रीते तेसु विचार ज्यो विचार
 करीने पूर्व अवभा स्वीकारेला पाय आणुनो आने सात शिक्षात्रताने तेसु
 पोते ७ धारण करी लीध । धारण करीने तेसु जे जतने । नियम लीध । जे
 छठे जवननी छेवी पण सुधी अन्तर रहित पष्ठ पष्ठ भक्तानी तपस्या वडे
 भास । आत्म परिष्कारानी वृद्धि करतो ७ रहीथ (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि
 कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फसुण ण्हाणोदएण उम्महणोलो
 छोलियाहिय वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव्व अभिग्गह अभिगिण्हइ, जाव
 ज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव विहरइ) आने छठे भक्तानी धारणाना ७ ६८

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्ण यावज्जीव पृष्ठपृष्ठेन=पठपठमवतेन यावत्-स ददुरोऽ
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप कर्मणाऽऽत्मानं भावयन् निहरति=आस्तेस्मा मृ० ७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अहं गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो ण्हयमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासांसां एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स ददुस्स बहुजणस्स
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जत्थिए ५
समुप्पज्जित्था-एव खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणं ३ वदामि जाव
पज्जुवासांमि एव सपेहेइ सपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किट्ठाए ददुरगईए वीइवयमाणे जेणेव मम
रेत्थ गमणाए, इमं च ण सेणिए राया

पारणाके दिन में नदा पुक्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोर्द्धर्तन करने पर ओपभूत डधर उधर पतित
यव चूर्णादि निर्मल पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस करह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर घृत पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ मृत्र ७ ॥

वाचना दिन रात्री आगे शाशुना अचित्त स्नानोदकथी तेमज्ज खोजे पडे देडाइ
वर्तन ज्यो पट्टी वधेवा आने अभतेम वेराउने पडेवा जवना दो वगेथी
पोताना पिडने शरीरने निर्वाह करीय आ रीते तेबु अभिग्रह लई दीधे।
आम अभिग्रह धारण करीने देडेगे पण्ड भक्तनी तपस्या जेने आत्मशुद्धि
करवाभा तल्लीन धई गये मूत्र " ७ "

વિચારયતિ, સપ્રેક્ષ્ય પૂર્વપ્રતિપદ્ધાનિ પચાણુત્રતાનિ સમગ્નિશ્ચાત્રતાનિ આરોહતિ= ધારયતિ સ્વીકરોતીત્યર્થઃ । આરુહ=દ્વાદશત્રત્રાન્યદ્વીકૃત્ય, ઇમમેતદ્વૃપ=વક્ષ્યમાણ સ્વરૂપમ્, અભિગ્રહમભિગૃહ્ણતિ-કલ્પતે મે યાગ્જ્ઞોર ' છદ્વ છદ્વેણ ' પઠ્ઠપઠ્ઠમ્ભવતેન, ' અણિત્તિલ્લેષેણ ' અનિશ્ચિત્તેન-અન્તરરહિતેન અવિશ્રાન્તેનેત્યર્થઃ તપઃ કર્મણાઽઽત્માન ભાવયત=આત્મનઃ શુભપરિણામ યર્થયતઃ, વિદ્ધતું કલ્પતે ઇતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ । અપિચ-પઠ્ઠમ્યાપિ--પઠ્ઠમ્ભક્તસ્યાપિ ચ પારણકે કલ્પતે મે નન્દાયાઃ પુષ્કરિણ્યાઃ ' પરિપેરતેસુ ' પરિપર્યન્તેપુ=તટપુ=પ્રામુક્યેન=અવિચિત્તેન, સ્નાનોદ્ધકેન ' ઉમ્મદ્ગ્નો છોલિયાહિ ય ' ઉમ્મદ્ગ્નોછોલિતાભિઃ=ઉદ્ગર્જનાદુર્ગ્ગરિતાભિઃ લોકૈર્દોહોદ્ગર્જનૈ કૃતે સતિ શેષભૂતા ઇત્યતઃ. પતિતા યા યગ્ચૂર્ણાદિનિર્મિત્તપિષ્ટિકાસ્તાભિરિત્યર્થઃ, વૃત્તિ કલ્પયત શારણ્યાત્રાનિર્ગ્રહ કુર્યત વિદ્ધતું કલ્પતે ઇતિ પૂર્વેણાન્યયઃ । ઇમમેત

(અથ સપેલેહ, સપેલિત્તા પુઠ્ઠપઠ્ઠિવન્નાહ પચાણુવ્વયાહ સત્ત સિ ક્ષ્વાવયાહ આરુહેટ, આરુહિત્તો ઇમેયાન્વ અભિગ્રહ અભિગિળ્હ-કપ્પ મે જાવ જીવ છદ્વ છદ્વેણ અણિત્તિલ્લેષેણ તવો કમ્મેણ અપ્પાણ ભાવેમા ણસ્સ વિહરિત્તે) ઇસ પ્રકાર ડસને વિચાર કિયા । વિચાર કરકે પૂર્વ પ્રતિપદ્ધ પચ અણુવ્વનો કો માન શિક્ષાવ્રતો કો ડમને સ્વય ધોરણ કર લિયા । ધારણ કરકે ફિર ડમને ઇસ પ્રકાર કા નિયમ લે લિયા કિ મેં અવ જીવન પર્યંત અન્તર રહિત પઠ્ઠ પઠ્ઠ ભક્ત કી તપસ્યા સે અપને આત્મપરિણામો કો વઢાનો રહુંગા । (છદ્વસ્મ વિ ય ણ પારણગસિ કપ્પહ મે ણદાણ પોક્કચરણીણ પરિપેરતેસુ ફાસુણ ધ્વાણોદ્ગણ ડમ્મદ્ગ્નો-છોલિયાહિ ય વિત્તિ કપ્પેમાણસ્સ વિહરિત્તે, ઇમેયારુવ અભિગ્રહ અ મિગેળ્હ, જાગ્જ્ઞોર છદ્વ છદ્વેણ જાવ વિહરહ) ઔર છદ્વ ભક્ત કી

હિત્તા પુઠ્ઠ પઠ્ઠિવન્નાહ પચાણુવ્વયાહ સત્તસિક્ષ્વાવયાહ આરુહેટ, આરુહિત્તા ઇમેયારુવ અભિગ્રહ અભિગિળ્હ, કપ્પ મે જાવ જીવ છદ્વ છદ્વેણ અણિત્તિલ્લેષેણ તવો કમ્મેણ અપ્પાણ ભાવેમાણસ્સ વિહરિત્તે) આ રીતે તેણે વિચાર ડ્યો વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમા સ્વીકારેલા પાપ આણુવ્વને અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા । ધારણ કરીને તેણે એ ભવતો નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પળ સુધી અન્તર રહિત પઠ્ઠ પઠ્ઠ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ । (છદ્વસ્મ વિ ય ણ પારણગસિ કપ્પહ મે ણદાણ પોક્કચરણીણ, પરિપેરતેસુ ફમુણ ધ્વાણોદ્ગણ ડમ્મદ્ગ્નોછો લિયાહિય વિત્તિ કપ્પેમાણસ્સ વિહરિત્તે, ઇમેયારુવ અભિગ્રહ અભિગેળ્હ, જાવ જ્ઞોર છદ્વ છદ્વેણ જાવ વિહરહ) અને છદ્વ ભક્તની પાસેના

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्ण याज्जजीव पृष्ठपृष्ठेन=पृष्ठपृष्ठभ्रतेन यावत्-स ददुरी-
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप कर्मणाऽऽत्मान भावग्न विहरति=आस्तेस्मा सु०७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अहं गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो प्ह यमाणो य ३ अन्नमन्नं एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणेइ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासामो एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स
अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जत्थिए ५
समुप्पड्डिजत्था-एव खल्ल समणे भगवं महावीरे इहेव गुणासि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणां३ वदामि जाव
पज्जुवासामि एव सपेहेइ सपेहिता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किट्ठाए ददुरगईए वीइवयमाणे जेणेवमम

रेत्थ गमणाए, इम च णं सेणिए, राया

पारणाके दिन में नदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोहर्तन करने पर शेषभूत डधर उबर पतित
यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस तरह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर धृत पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

वाचना छिन रानी आरे णाणुना अचित्त स्नानोदकथी तेमज्ज बोजे पडे देहाइ
वर्तन ज्था पछी वधेवा अने अमतेम वेराजि पडेवा जवना बो वगेरेथी
पोताना पिडने शरीरने निर्वाह करीया आ रीते तेखे अभिग्रह लई दीधे।
आम अलिग्रह धारण करीने देडके पथे लक्ष्मणी तपस्या करी। आत्मशुद्धि
करवामा तल्लीन थी गयो सूत्र " ७ "

विचारयति, सप्रेक्ष्य पूर्वमतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति=
धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः । आरुह्य=ढाढश्रमनान्यद्गीकृत्य, इममेतद्वृत्त=वक्ष्यमाण
स्वरूपम्, अभिप्रदममिष्टुद्वाति-रुल्लते मे यावज्जीव ' उद्धुद्धेण ' पष्ठपष्ठभक्तन,
' अणिस्त्रित्तेण ' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थं तप' कर्मणाऽऽ
त्मान भावयत =आत्मनः शुभपरिणाम र्पयतः, विहर्तुं रुल्लते इति पूर्वैण सम्बन्धः ।
अपिच-पष्ठम्यापि--पष्ठभक्तस्यापि च पारणके रुल्लते मे नन्दायाः पुंरुणिष्या'
' परिपेरतेसु ' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुणेन=अचित्तेन, स्नानोदकेन ' उम्महणो
छोलियाहि य ' उमर्दनोछोलिताभिः=उद्धर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्धर्तने कृते
सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यच्चूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः,
वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाहं कुर्वत. विहर्तुं रूप्ते इति पूर्वैणान्वयः । इममेत

(एव सपेवेड, सपेहिता पुत्रपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्त सि
क्कवावयाइ आरुहेड, आरुहिता इमेयारुव अभिगगह अभिगिण्हइ-कप्प
मे जाव जीव छट्ट छट्टेण अणिस्त्रित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा
णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया । विचार करके पूर्व
प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वयं धारण कर
लिया । धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं
अब जीवन पर्यन्त अन्तर रहित पष्ठ पष्ठ भक्त की तपस्या से अपने
आत्मपरिणामोंको बढ़ाना रहूँगा । (छट्टस्स वि य ण पारणगंसि कप्पइ
मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदण्ण उम्महणो-
छोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव अभिगगह अ
भिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) और छट्ट भक्त की

हिता पुत्र पडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्कवावयाइ आरुहेड, आरुहिता
इमेयारुव अभिगगह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ट छट्टेण अणिस्त्रित्तेण
तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) आ रीते तेले विचार उथो विचार
करीने पूर्व अवमा स्वीकारेला पाय आछुनते अने सात शिक्षाव्रताने तेले
पोते न धारण करी लीध । धारण करीने तेले ये नतने नियम लीधे के
छवे जवननी छेटी पण सुधी अन्तर रहित पष्ठ पष्ठ भक्तनी तपस्या नडे
भारा आत्म परिणामोनी वृद्धि करतो न रहीश (छट्टस्स वि य ण पारणगं
कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदण्ण उम्महणो
छोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव अभिगगह अभिगेण्हइ, जाव
ज्जीवाए छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) अने छट्ट भक्तनी धारणा

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्ण यावज्जीव पट्टपण्ठेन=पण्डपट्टमतेन यावत्-स ददुरोऽ
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप र्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरति=आस्तेरमा मृ० ७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अह गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे पगिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो ण्हयमाणो य ३ अन्नमन्नं एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणे३ इहेव गुणसिलए चेइए समोमढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासामो एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स दद्दस्स बहुजणस्स
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जतिथए ५
समुप्पज्जित्था-एव खल्लु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणां३ वदामि जाव
पज्जुवासामि एव सपेहेइ सपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किट्ठाए दद्दगईए वीइवयमाणे जेणेवमम
रेत्थ गमणाए, इम च णं सेणिए, राया

पारणाके दिन में नदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोवर्तन करने पर शेषभूत डधर उबर पतित
यव चूर्णादि निर्मल पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस करह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर धून पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ मृत्र ७ ॥

पावना छिन सानी आरे णाज्जुना अचित्त स्नानोदकथी तेमए लोको पडे देइइ
वर्तन ज्यो पळी वधेया अने अमतेम वेराउने पडेया व्यवना लो वगेरेथी
येताना पिंडने शरीरने निर्वाह करीथ आ रीते तेले अभिग्रह लई वीधि
आम अलिग्रह धारण करीने देइको पण्ड लज्जानी तपस्या जेणे आत्मशुद्धि
करवाभा तल्लीन धई जये सूत्र " ७ "

भभसारे णहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सुब्बालकारविभू-
 सिए हत्थिखंधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं
 सेयवरचामराहि उद्धुब्बमाणाहि ह्यगयरहमहया भडचडगर-
 कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवदए
 हव्वमागच्छइ, तएण दहुरे सेणियस्स रत्तो एगेणं आसकिसो-
 रएणं वामपाएणं अवकंते समाणे अंतनिग्घाइए कएयावि होत्था,
 तएणं से दहुरे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
 अधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
 परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
 मम धम्ममायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुब्बि पिय णं मए
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइ ११ पच्च-
 क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
 अतिए सब्ब पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सब्ब परिग्गहं पच्च-
 क्खामि जावजीवं, सब्ब असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
 जंपि य णं इम सरीर इड्ड कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरि-
 मेहिं ऊसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु, वोसिरइ तएण दहुरे कालमासे
 काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दहुरवडिसए विमाणे उववा-
 यसभाए दहुरे देवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा । दहुरेणं सा
 दिव्वा देविड्डी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । दहुरस्स णं भत्ते ।
 देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता १ गोयमा । चत्तारि पलि
 ओवमाइ ठिई पण्णत्ता, से ण भंते । दहुरे देवे ता ११ १२

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं
गच्छिहिइ कहि उववज्जिहिइ गोयमा । महाविदेहेवासे
सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाण
अंतं करोहिइ य । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं
तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिवेमि ॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम नायज्झयणं समत्तं ॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीरः स्वामी कथयति—‘तेण कालेण’ इत्यादि ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म द्दुर्ः पण्डभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भाव-
यन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम । अहगुणशिलके चैत्ये=
गुणशिल्पकनामकोद्याने समसूतः=प्राप्तः । परिउद्=राजगृहनगरनिवाभिना जनानां
समूहः, निर्गता=मा द्रष्टुं वन्दितुं नगरान्दर्शिनःसूता । ततः खलु नन्दाया
पुक्करिण्या गृहजनः स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पनीयं च सवहन् अन्योन्यमेवमवा-
दीत्—भो देवानुप्पियाः ! श्रमणो भगवान् महावीरः स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये
समवसूतः, तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्पियाः ! श्रमण भगवन्त महा-
वीरस्वामिनं वन्दामहे नमस्यामः वन्दित्वा नत्वा यावन्-पर्युपास्महे=सेवां कुर्म,
अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्-सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, ‘अणु-

‘तेण काले ण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकाय—(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें
(अह गोयमा । गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निगगया, तएण नदाए
पुक्खरिणीए गृहजणो प्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवानु-
प्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसठे, त गच्छामो ण
देवानुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय
मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि—

टीकाय—तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समयमें (अह गोयमा ।
गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निगगया, तएण नदाए पुक्खरिणीए गृहजणो
प्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवानुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए
चेइए समोसठे, त गच्छामो ण देवानुप्पिया ! समण भाव महावीर वदामो जाव
पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ)

भंभसारे णहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभू-
 सिए हस्तिखधवरगए सकोरंटमह्छदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं
 सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणाहि ह्यगयरहमहया भडचडगर-
 कलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवदए
 हव्वमागच्छइ, तएण दहुरे तेणियस्स रत्तो एगेणं आसकिसो-
 रएणं वामपाएणं अवकंते समाणे अतनिग्घाइए कएयावि होत्था,
 तएणं से दहुरे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
 अधारणिज्जमित्तिकट्ठु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
 परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्ठु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
 मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुठ्वि पिय णं मए
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइ. १९ पच्च-
 क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
 अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्च-
 क्खामि जावजीवं, सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
 जपि य णं इम सरीर इट्ठ कत्त जाव मा फुसत्तु एयपि णं चरि-
 मेहि ऊसासेहि वोसिरामि त्तिकट्ठु, वोसिरइ तएणं दहुरे कालमासे
 काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दहुरवडिसए विमाणे उववा-
 यसभाए दहुरे देवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा । दहुरेणं सा
 दिव्वा देविट्ठी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । दहुरस्स ण भते ।
 देवस्स केवइयकाल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा । चत्तारि पलि
 ओवमाइ ठिई पण्णत्ता, से णं भते । दहुरे देवे ता- ५५

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं
गच्छिहिइ कहि उववज्जिहिइ गोयमा । महाविदेहेवासे
सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाणं
अंतं करोहिइ य । एव खलु जव्वु । समणेण भगवया महावीरेणं
तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम नायज्झयण समत्तं ॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीर. स्वामी कथयति—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म द्दुर्ः पण्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भाव-
यन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहगुणशिलके चैत्ये=
गुणशिल्पनामकोद्याने समवसृतः=प्राप्तः । परिइद्=राजगृहनगरनिवासिना जनाना
समूहः, निर्गता=मा द्रष्टुं वन्दितुं नगराब्दकिर्निःसृता । ततः खलु नन्दाया
पुष्करिण्या बहुजनं स्नानं कुर्वन् जलं पिवन् पनीयं च सपहन् अन्योन्यमेवमवा
दीत्—भो देवानुप्पियाः ! श्रमणो भगवान् महावीर स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये
समवसृतः, तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्पियाः ! श्रमण भगवन्त महा-
वीरस्वामिन वन्दामहे नमस्याम’ वन्दित्वा नत्वा यावन्—पर्युपास्महे=सेवां कुर्म,
अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्—सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, ‘अणु-

‘ तेण काले ण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीका—(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें
(अह गोयमा । गुणसिलए चेइए समोसठे परिआ निग्गया, तएण नदाए
पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी—देवानु-
प्पिया । समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसठे, त गच्छामो ण
देवानुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय
मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीका—तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (अह गोयमा ।
गुणसिलए चेइए समोसठे परिआ निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो
ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी—देवानुप्पिया । समणे ३ इहेव गुणसिलए
चेइए समोसठे, त गच्छामो ण देवानुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो जाव
पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ)

गामियन्ताए' अनुगामिकतायै परभवेऽनुगमनार्थं भविष्यति, इति परस्परमवदत् ।
ततः खलु तस्य ददुरस्य बहुजनस्यान्तिकाद् एवमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य अय-
मेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एव खलु श्रमणो भगवान् महावीरः ।

गौतम ! मैं मे विहार करता हुआ गुणशिलक नाम के उद्यान आया ।
राजगृह नगर निवासी मनुष्यों का समूह मेरी वदना करने के लिये
तथा मेरे दर्शन के लिये अपने २ स्थान से आये-उस समय नदा
पुष्करिणी में अनेक मनुष्य स्नान करते हुए जल पीते हुए और पानी
भरते हुए परस्पर में इस प्रकार से बात-चीत कर रहे थे-मो देवानु-
प्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर यही पर गुण शिलक क्षेत्र में पधारे
हुए हैं-इसलिये हे देवानुप्रियो ! चलो-आओ चलो श्रमण भगवान्
महावीर को वदना करें नमस्कार करें । वदनो नमस्कार कर फिर उन
की पर्युपासना-सेवा करें । यही बात इस भव में, परभव में हमारे
लिये हितकारक होगी, यावत् सुखविधायक होगी, क्षेमकारक, निश्रेय-
सकारक एवं अन्य भव में साय जाने वाली होगी । (तएण तस्स ददुरस्स
बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा, निसम्म अयमेयास्सवे अज्झत्थिए ५
समुप्पज्जित्था) तो इस प्रकार की बात चीत जब उस ददुर ने उन
अनेक मनुष्यों के मुख से सुनी-तो सुनकर और उसे हृदय में धारण
कर उसके मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-(एव खलु समणे

हे गौतम ! शुशुगिलक नामका उद्यानमा हु विहार करतो करतो आओ
राजगृह नगरमा नागरिकेना समूहो भने वदन करवा तेमज दर्शन करवा
भाटे पातपाताने घेरथी भारी पासे आओ ते समये नदा वावमा धनु
भाणुसो स्नान करता, पाणी पीता भने पाणी भरता आ प्रमाणे वातो करवा
बाग्या के हे देवानुप्रियो ! अही शुशुगिलक क्षेत्रमा ज लगवान भडावीर स्थानी
पधारेला छे, ओला भाटे हे देवानुप्रियो ! आलो आपणे श्रमण लगवान
भडावीरने वदन तेमज नमस्कार करीने तेमनी पर्युपासना-सेवा-करीओ आ
सब तेमज परलवमा ओ वात ज आभारा भाटे श्रेयइय थशे यावत् सुख
विधायक थशे भरेभर ओ वात ज क्षेमकारक निश्रेयसकर भने धीन लवमा
पणु साथे रहेशे (तएण तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा,
निसम्म, अयमेयास्सवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) ते भाणुसोनी ओ पातो
देउकाओ पणु सांभणी भने तेने धारण करी वीधी त्पारपणी तेना मनमा आ
गतनो विचार रुच्यो के (एव खलु समणे भगव महावीरे इदं गुणशिलक क्षेत्र
धर्मोसदे, त गच्छामि ण समणे ३ वदामि, जाव पञ्जुवासामि

स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृतोऽस्ति । तत्-तस्माद् अहमपि गच्छामि
खलु श्रमण भगवन्त महावीर यन्दे नमस्यामि एव सपेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य
नन्दायाः पुष्करिणीत शनै शनैरुत्तरति=गहिर्नि' सरती, उत्तीर्य यत्रैव राजमार्ग-
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथा (१) 'उत्किट्टाए' उत्कृष्टया, अर्थाद् बोध्यम्-
(२) "तुरियाए (३) चवलाए, (४) चडाए, (५) सिग्घाए, (६) उद्धुयाए, (७)
जयणाए, (८) छेयाए, " इति । तत्र-उत्कृष्टया-ददुराणा गतौ य उत्कर्षस्तेन-
युक्तागतिरुत्कृष्टा तयेत्यर्थः । त्वरितया-मनस औत्सुक्येन युक्ता त्वरिता तथा,

भगव महावीरे इहेव गुणसिलए चेडएँ समोसढे, त गच्छामि णं संम
ण ३ चंदामि जाव पज्जुवांसामि एव सपेहेइ, सपेहिता णदाओ
पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु यहा
गुण शिलक उद्यान में आये हुए है तो चलू श्रमण भगवान् महावीर को
बंदना करू यावत् उनकी पर्युपासनां करू । ऐसा उसने विचार किया-
विचार कर के फिर वह उस नंदा पुष्करिणी से धीरे २ बाहिर निकला-
(उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए
उत्किट्टाए ददुर गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अतिए तेणेव पहारेत्थ
गमणाए) बाहिर निकल कर फिर वह जहा राजमार्ग था, उस ओर
चल दिया । वहा पहुँच कर फिर वह उस उत्कृष्ट ददुर गति से चलता
हुआ मेरी ओर घटा । यहा " तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए,
उद्धुयाए, जयणाए, छेयाए " इन पदों का भी संग्रह कर लेना चाहिये
उस ददुर की गति को उत्कृष्ट इसलिये कहा है कि ददुरो की गति में

सपेहिता णदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमणु लगवान भडावीर प्रभु
अहो शुष्किल उद्यानभा पधारेडा छे त्थारे हु पणु श्रमणु लगवान भडा
वीरने वदन यावत् तेमनी पर्युपासना-सेवा कइ आ जतने तेणु विचार
कथो, विचार कथो पछी ते नद्ध वावमायी धीमे धीमे गडार नीकल्यो
(उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उत्किट्टाए ददुर
गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) गडार नीकणीने
ते ने तरइ राजमार्ग हुतो ते तन्इ आलवा भाड्यो त्थारपछी ते पोतानी
उत्कृष्ट (शीघ्र) देडकानी गतिथी आलतो आलतो भारी तरइ आव्यो अहो
(तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए, उद्धुयाए, जयणाए छेयाए) आ पदेने
पणु संग्रह कव्यो जेधंजे ते देडकानी गति उत्कृष्ट ओटला भाटे पणुववाभा
आवी छे के देडकाओनी गतिभा ने उत्कृष्ट होय छे ते गति तेनार्थो युक्त

શામિયતાં ' અનુગામિકતાયૈ પરમથેડનુગમનાર્થ મશિયતિ, इति परस्परमववत् ।
 ततः खलु तस्य ददुरस्य बहुजनस्यान्तिकाद् एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य अय-
 मेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एव खलु श्रमणो भगवान् महावीर'

જૌતમે ! મેં મેં વિહાર કરતા હુઆ ગુણશિલક નામ કે ઉચ્ચાન આયા ।
 રાજગૃહ નગર નિવાસી મનુષ્યો કા સમૂહ મેરી વદના કરને કે લિયે
 તથા મેરે દર્શન કે લિયે અપને ૨ સ્થાન સે આયે-ઉસ સમય નદા
 પુષ્કરિણી મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હુઅ જલ પીતે હુઅ ઓર પાની
 ખરતે હુઅ પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે વાત-ચીત કર રહે થે-ઓ દેવાનુ
 પ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર યહી પર ગુણ શિલક ચૈત્ય મેં પધારે
 હુઅ હૈં-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચલો-આમ્રો ચલેં શ્રમણ ભગવાન
 મહાવીર કો વદના કરે નમસ્કાર કરે । વદનો નમસ્કાર કર ફિર ઉન
 કી પર્યુપાસના-સેવા કરે । યહી વાત હસ ભવ મેં, પરભવ મેં હમારે
 લિયે શિતકારક હોગી, યાવત્ સુખવિધાયક હોગી, ક્ષેમકારક, નિશ્રેય-
 સકારક એવ અન્યભવ મેં સાવ જાને વાલી હોગી । (તણ તસ્સ દદ્દુરસ્સ
 બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા, નિસમ્મ અયમેયાલ્લવે અજ્ઞતિણ ૫
 સમુપ્પજ્જિત્થા) તો હસ પ્રકાર કી વાત ચીત જવ ઉસ દદુર ને ઉન
 અનેક મનુષ્યોં કે સુખ સે સુની-તો સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં ધારણ
 કર ઉસકે મન મેં હસ પ્રકાર કા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-(એવ ચલુ સમણે

હે જૌતમ ! શુશુશિલક નામના ઉચ્ચાનમા હુ વિહાર કરતો કરતો આવ્યો
 રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો અને વદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા
 માટે વાતવોતાને ઘેરથી ભારી પાસે આવ્યા તે સમયે નદા વાવમા ઘણા
 માણસો સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને પાણી ભરતા આ પ્રમાણે વાતો કરવા
 લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહીં ગુણશિલક ચૈત્યમા જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી
 પધારેલા છે, એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન
 મહાવીરને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ આ
 ભવ તેમજ પરભવમા એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયસ્પ થશે યાવત સુખ
 વિધાયક થશે ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને ખીજ ભવમા
 પણ સાથે રહેશે (તણ તસ્સ દદ્દુરસ્સ બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા,
 નિસમ્મ, અયમેયાલ્લવે અજ્ઞતિણ ૫ સમુપ્પજ્જિત્થા) તે માણસોની એ વાતો
 દેડકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી ત્યારપછી તેના મનમા આ
 બલતો વિચાર સ્ફુર્તો કે (એવ ચલુ સમણે ભગવ મહાવીરે રહેવ ગુણસિલક વૈદ્ય
 સર્વોત્તમ, ત ગચ્છામિ ણ સમણે ૩ વદામિ, જાવ 'પગ્ગુવાસામિ

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिस्मारुहः, सकोरुणमाल्यदास्ना-कोरुणकुसुममालया,
छत्रेण घ्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वतरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितै,
हयगजरथमहाभटचटकरमलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुर्द्विण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवदको हव्य-शीत्रम्,
आगच्छति, ततः खलु स ददुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्निसोरण'
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्वाङ्' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'आंत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निपट कर और कौतुक, मगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जल्दी आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरुट
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस्स किसोरण वाम
पाएण अकृते समाणे अतनिग्वाङ्कए यावि होत्था तएण से ददुरे
अत्थामे अब्बले अकीरिण अपुरिस्कारपरक्कमे अधोरणिज्ज मित्ति
कट्ठु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अज्जलि
कट्ठु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के पच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

अधिक राजा भने वदन करवा भाटे तैयार थया तेओ स्नानथी परवाराने
कौतुक, मगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी उपर भवार थधने
अडपथी आवी रह्या हुता ते वणते तेओ अधी जतना अलंकारथी विभूषित
हुता तेभना उपर डोरट पुष्पोनी भाणाथी शोभतु छत्र छत्रधारीओओ तावेलु
हुतु अमर ढोलनार नोकरे तेभना उपर शुभ्र उत्तम थमरे ढोली गह्या हुता
हय (घोडा) गज, रथ अने महाभटाना स हथी युक्ता अतुर गिणी सेनाथी
तेओ वीटणायेला हुता (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसन्निसो
रण वामपाएण अकृते समाणे अतनिग्वाङ्कए यावि होत्था तएण से
ददुरे अत्थामे अब्बले अकीरिण अपुरिस्कारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्ठु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अज्जलि कट्ठु एव वयोसी)
हडका भारतो ते हडके अधिक रत्नना डोर् अक घोडाना टहना डाना पगथी
आक्रान्त थय गये ओटवे के तेना डाना पग तेना उपर पडी गये तेथी

ચપલયા-શરીરચાપલ્યેન યુક્તયા, ચણ્ડયા-તીવ્રયા, અતપ્ત ધીમ્રયા, ઉદ્ધુતયા-
અશેષ શરીરાવયવકમ્પપત્તયા, જયિન્યા અન્યદર્દુરગતિજેન્યા, છેકયા-અપાયપરિ-
હારે નિપુણયા, દર્દુરગત્યા-મણ્ડુરગત્યા 'વીઢયમાણે' વ્યતિવ્રજન્ ૨-મહા
વેગેન ગચ્છન્ ૨, યત્રૈવ મમાન્તિક તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગન્તુ પ્રવૃત્ત ।
અસ્મિન્નેવ સમયે ઉચ્ચાનરક્ષકમુગ્ધાન્મમાગમન શ્રુત્યા શ્રેણિકો રાજા ભમસારઃ =
ભમસારાપરનામક, સ્નાતઃ કૃતકાતુરમદ્ગલપાયથિત. સર્વાલંકારવિભૂષિત',

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈ વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી । ઉસ મેંઢક કે મન મેં
ઘડી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ ભરી હુઈ
થી-હસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી । શરીર કી ચપલતા સે
યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, ધીમ્રતા સે યુક્ત હોને કે
કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે રૂપન સે યુક્ત હોને કે કારણ
અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ,
ઔર અપાયોં કો વચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ
ચણ્ડ, શોઘ્ર ઉદ્ધુત, જયની, ઔર છેક इन विशेषणों वाली थी । इम
च ण सेणिए राया भमसारे ण्हाए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सब्वा-
लकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुवमाणहिं ह्यगयरहमहया भइचङ-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उचान रक्षक के मुख से मेरा आगमन
सुनकर " भमसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी बदना

હતી તે દેડકાના મનમાં ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમાં ઉત્સુકતાને લીધેજ
ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા
બદલ, ધીમ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કંપનથી યુક્ત
હોવા બદલ, બીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા નિગિચ્છતા યુક્ત હોવા બદલ
અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશઃ
ચપળ, ચડ, ધીમ્ર, ઉદ્ધુત, જયની અને છેડ આ વિશેષણોવાળી હતી
(ઇમ ચણ સેણિયરાયા ભમસારે ણ્હાए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सब्वा
लकारविभूसिए, हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर
चामराहिं उद्धुवमाणहिं ह्यगयरहमहया भइचङगरकलियाए चाउरगिणीए
सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉચ્ચાન રક્ષકના
મુખથી મારા આગમનની વાત સાંભળીને ' ભમસાર ' એ બીજા નામવાળા

इस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिस्तिमास्त्वं, सकोरुणमाल्यदाम्ना-कोरुणकुसुममालया,
छत्रेण प्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तदृतेन, श्वेतरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितै,
हयगजरथमहाभटचटकरफलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुर्गङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवदको हव्य-शीघ्रम्,
आगच्छति, ततः खलु म ददुर्' श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्निशोरण'
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः, देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्वाङ्ग' अन्वनिर्घातितः=अन्वस्य 'अत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जट्टी २ आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरुण
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किमोरण वाम
पाएण अक्कते समाणे अतनिग्वाङ्गकए यावि होत्था तएण से ददुरे
अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे अधोरणिज्जमिस्ति
कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं
कट्टु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के पच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

श्रेणिक राजा भूने वदन करवा भाटे तैयार था। तेओ स्नानधी पम्पाराने
कौतुक, मगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी ऊपर सवार थधने
अडपधी आवी रह्या हुता ते वणते तेओ गंधी नतना अवकादेधी विभूषित
हुता तेमना ऊपर कोरुण पुष्पोनी भाणाथी शालतु छत्र छत्रधारीओओ तावेलु
हुतु यमर ढोलनार नोकरे तेमना ऊपर शुभ्र उत्तम यमरे ढोणी रह्या हुता
हय (घोडा) गज, रथ अने महाभटाना स गइथी युत्त यतुर गिणी सेनाधी
तेओ वीटजायेवा हुता (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिमो
रण वामपाएण अक्कते समाणे अतनिग्वाङ्गकए याविहोत्था तएण से
ददुरे अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमिस्ति कट्टु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयोसी)
इइका भागते ते देउडे श्रेणिक राजाना कोरु ओर घोडाना टट्टना डाना पगथी
आक्रान्त थप गये। ओटले के तेना डानो पग तेना ऊपर पड़ी गये। तेथी

ચપલયા-શરીરચાપલ્યેન યુક્તયા, ચણ્ડયા-તીવ્રયા, અતઃપ્ર શીઘ્રયા, ઉદ્ધુતયા-
અશેષ શરીરાવયવકમ્પવત્પા, જયિન્યા અન્યદર્દુરગતિજેત્ર્યા, છેક્રયા-અપાયપરિ-
હારે નિપુણયા, દર્દુરગત્યા-મઢ્ઢગત્યા 'ત્રોઢ્યમાણે' વ્યતિવ્રજન્ ૨-મહા
વેગેન ગચ્છન્ ૨, યત્રૈવ મમાન્તિક તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય-ગન્તુ પ્રવૃત્ત ।
અસ્મિન્નેવ સમયે ઉગ્રાનરક્ષકમુલાન્મમાગમન શ્રુત્યા શ્રેણિકો રાજા ભભસારઃ =
ભભસારાપરનામક, સ્નાતઃ કૃતકૌતુકમદ્ગલપાયથિતઃ સર્વાલંકારવિભૂષિતઃ,

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈ વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી । ઉસ મેઢક કે મન મેં
ઘડી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ મરી હુઈ
થી-હસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી । શરીર કી ચપલતા સે
યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, શીઘ્રતા સે યુક્ત હોને કે
કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે રૂપન સે યુક્ત હોને કે કારણ
અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ,
ઔર અપાયોં કો વચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ
ચણ્ડ, શોઘ્ર ઉદ્ધુત, જયની, ઔર છેક્ર इन विशेषणों वाली थी । इम
च ण सेणिए राया भभसारे ण्हाए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सव्वा-
लकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणहिं ह्यगयरहमहया भइचङ्ग-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के मुख से मेरा आगमन
सुनकर " भभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी वदना

હતી તે દેડકાના મનમાં ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમાં ઉત્સુકતાને લીધેજ
ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા
બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના અધા અવયવોના કંપનથી યુક્ત
હોવા બદલ, ખીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા નિશ્ચિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ
અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશઃ
ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉદ્ધુત, જયની અને છેડ આ વિશેષણોવાળી હતી
(ઇમ ચણ સેણિયરાયા ભભસારે ણ્હાએ કયકૌઉયમગલપાયચ્છિત્તે સવ્વા
લકારવિભૂસિયે, હત્થિસધવરગએ સકોરટમલ્લદામેઞે છત્તેણ ધરિજ્જમાણેણ સેયવર
ચામરાહિં ઉદ્ધુવ્વમાણાહિ હ્યગયરહમહયા ભઇચઙ્ગરકાલિયાએ ચાઉરગિણીએ
સેણાએ સદ્ધિં સંપડિબુડે મમ પાયવદએ હવ્વમાગચ્છઇ) તે વખતે ઉગ્રાન રક્ષકના
મુખથી મારા આગમનની વાત સાંભળીને ' ભભસાર ' એ ખીજા નામવાળા

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिस्तरमाह, समोरण्टमाल्यदाम्ना-कोरण्टकुसुममालया,
छत्रेण धियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेत्वरचामरैरुद्धूयमानेः=स्वभृत्यैर्वीजितै,
हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवन्दनो हव्य-शीघ्रम्,
आगच्छति, ततः खलु स ददुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्सोरण'
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूत, देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्गाडए' अन्वनिर्गतितः=अन्वस्य 'आँत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जल्दी २ आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरट
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
दोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरङ्गिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तण्ण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किमोरण वाम
पाएण अकृते समाणे अत निग्गाडएकए यावि होत्या तण्ण से ददुरे
अत्थामे अगळे अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे अधोरणिज्ज मित्ति
कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं
कट्टु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के बन्धे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

श्रेणिक राजा भूने पढ़न करवा भाटे तैयार थया तेओ स्नानथी पग्गारिने
कौतुक, मगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी उपर सवार थयने
अडपथी आवी रह्या हुता ते वण्णने तेओ ण्थी जलता अलंकारोथी विभूषित
हुता तेमना उपर डोरट पुष्पोनी माणाथी गोभतु छत्र छत्रधारीओओ तावेलु
हुतु अमर ढोलनार नोकरे तेमना उपर शुभ्र उत्तम अमरे ढोलो ग्या हुता
हय (घोडा) गज, रथ अने मंडालटोना स षड्थी युक्त अतुर गिणी सेनाथी
तेओ वीटणाथेला हुता (तण्ण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किमो
रण वामपाएण अकृते समाणे अत निग्गाडएकए यावि होत्या तण्ण से
ददुरे अत्थामे अगळे अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयोसि)
हुडका भागते ते हुडका श्रेणिक राजाना डोई ओके घोडाना टट्टना डण्णा पगथी
आक्रान्त थय गथे ओटले के तेना डणो पग तेना उपर पडी गथे तेथी

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-
अशेष शरीरावयवकम्पयत्या, जयिन्या अन्यददुर्गतिजेज्या, छेकया-अपायपरि-
हारे निपुणया, ददुर्गत्या-मण्डूकगत्या 'वीक्ष्यमाणे' व्यतिव्रजन् २-महा-
वेगेन गच्छन् २, यज्ञैर ममान्तिक तज्ञैर माधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्त ।
अस्मिन्नेव समये उग्रानरक्षकमुखान्ममागमन श्रुत्या श्रेणिको राजा भभसारः =
भभसारापरनामक, स्नातः कृतकोतुम्भद्वलपायश्चित्त सर्वालंकारविभूषितः,

जो उत्कर्ष होता है वह उस उत्कर्ष से युक्त थी । उस मेंढक के मन में
बड़ी भारी उत्सुकता थी-सो उस उत्सुकता से वह गति भरी हुई
थी-इस कारण वह उस की गति त्वरित थी । शरीर की चपलता से
युक्त होने के कारण, तीव्र होने के कारण, शीघ्रता से युक्त होने के
कारण, समस्त शारीरिक अवयवों के रूपन से युक्त होने के कारण
अन्य साधारण ददुर्गों की गति की अपेक्षा विशिष्ट होने के कारण,
और अपायों को बचा २ कर चलने के कारण वह गति क्रमशः चपल
चण्ड, शोघ्र उद्धुत, जयनी, और छेक इन विशेषणों वाली थी । इस
चण सेणिए राया भभसारे ण्हाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वा-
लंकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं ह्यगयरहमहया भइचड-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उग्रान रक्षक के मुख से मेरा आगमन
सुनकर " भभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी बदना

हती ते देउकाना भनभा आरे उत्सुकता हती तेनी गतिभा उत्सुकताने लीधेज
त्तरा आवी गर्ध हती शरीरनी यपणताथी युक्त होवा भइल, तीव्र होवा
भइल, शीघ्रता युक्त होवा भइल, शरीरना अधा अवयवोना रूपनथी युक्त
होवा भइल, भीम साधारण देउकाओ गति जस्ता त्वरितता युक्त होवा भइल
अने अपायो (आक्षतो) थी सावध यधने आलवा भइल ते गति क्रमश
यपण, यउ, शीघ्र, उद्धुत, जयनी अने छेक आ विशेषणोवाणी हती
(इस चण सेणिएराया भभसारे ण्हाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वा
लंकारविभूसिए, हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर
चामराहिं उद्धुव्वमाणाहिं ह्यगयरहमहया भइचडगरकलियाए चाउरगिणीए
सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ) ते वपन्ते उग्रान रक्षकना
मुअथी भारा आगमननी बात सासणीने ' भभसार ' ओ भीम नामवाणा

સ્વલુ મમ ધર્માચાર્યાય શ્રમણાય ભગવતે મહાવીરાય યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાને
સમાપ્તકામાય, પૂર્વમપિ=પૂર્વભવેડપિ ચ સ્વલુ મયા શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીર
સ્યાન્તિકે સ્થૂલઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાન્યાતઃ, યાવત્-સ્થૂલઃ પરિગ્રહઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ;
યાવત્કરણાત્-સ્થૂલઃ મૃપાવાદસ્થૂલાદત્તાદાન-સ્થૂલ-મૈથુન-પ્રત્યાખ્યાન વોધ્યમ્,
તદ્દેહાનીમપિ=અસ્મિન્ ભવેડપિ તસ્યૈવાન્તિકે સર્વ પ્રાણાતિપાત પ્રત્યાખ્યામિ
યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ પ્રત્યાખ્યામિ યાવજ્જીવમ્, યદપિ ચ સ્વલુ ઇદ શરીરમિષ્ટ
કાન્ત યાવત્ મા સ્પૃશન્તુ રોગાતઢ્ઢા, એતદપિ શરીર સ્વલુ 'ચરિમેહિ' ચરમૈઃ=
અન્તિમૈઃ 'ઝસાસેહિ' ઝન્હવાસૈઃ=પ્રાણનિર્ગમૈ 'વોમિરામિતિકદ્દુ' વ્યુત્સજામિતિ

પાણાદિવાય પચ્ચક્કવામિ જાવ સઘ્વ પરિગ્ગહ પચ્ચક્કવામિ જાવ જીવ
સઘ્વં અસણ ૪ પચ્ચક્કવામિ જાવ જીવ જ પિ ય ણ ઇમ સરીરં ઇદ્ધ કત્ત
જાવ મા ફુસતુ ણ્ય પિ ણ ચરિમેહિં ઝસાસેહિં વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ
વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ અર્હત ભગ-
વતો કો મેરા નમસ્કાર હો, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
કરને કો કામના વાલે મેરે ધર્માચાર્ય, શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો
મેરા નમસ્કાર હો । પૂર્વભવ મેં મી મેં સ્થૂલ રૂપ સે પ્રાણાતિપાત કા
પરિત્યાગ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે સમીપ કિયા થા । ઇસી તરહ
સ્થૂલ મૃપાવાદ કા સ્થૂલ અદત્તાદાન કા સ્થૂલ મૈથુન કો, એવ સ્થૂલ
પરિગ્રહ કો મી પ્રત્યાખ્યાન કિયા થા । એ સ્થૂલ મૃપાવાદ આદિ યાવત્
શબ્દ સે યહાં ગૃહીત હુએ હૈં નો એવ ઇસ ભવ મેં મી ડન્હી કે સમીપ
સર્વ પ્રાણિતિપાત યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ કા યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરતા
હૈં । તથા અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્ય રૂપ સે ચતુર્વિધ આહાર કા મી
જીવન પર્યન્ત પરિત્યાગ કરતા હૈં । તથા જો ઇષ્ટ, કાન્ત યહ મેરા શરીર

પચ્ચક્કવામિ જાવજીવ જ પિ ય ણ ઇમસરીરં ઇદ્ધં કત્ત જાવ મા ફુસતુ ણ્યપિ ણ
ચરિમેહિં વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ વોમિગ્ગ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત
કરેલા અર્હત ભગવતને મેરા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને
મેળવવાની ઇચ્છા કરનારા મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા
નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની
નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ ગીતે ૪ સ્થૂલ મૃપાવાદનુ, સ્થૂલ
અદત્તાદાનનુ, સ્થૂલ મૈથુનનુ, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું
હતુ સ્થૂલ મૃપાવાદ વગેરે અહીં 'યાવત્' શબ્દ વડે મગૃહીત થયા છે ત્યારે
હવે હું આ ભવમા પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત મને પરિ-
ગ્રહનુ મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરું છું તેમજ ૭૨ ઈષ્ટ, કાન્ત આ મારે શરીર
છે-કે જેના માટે મારા મનમા આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઇ પણ

इति प्रसिद्धस्य, निर्घात-अन्त्रनिर्घातः, स सजाओऽस्येति अन्त्रनिर्घातितः-
श्रुटितान्त्रा कृतश्चाप्यभवत् ।

તતઃ સ્વલુ સ દર્દુરઃ 'અત્યામે' અસ્થામા=હીનપરાક્રમઃ ગમનશક્તિરહિત
इत्यर्थः अवल=मनोबलरहितः-खिद्य इत्यर्थः अवीर्यः-दतोत्साहः, 'अपुरिसकार-
परकमे' अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषकारः पराक्रमश्च न विद्येते यस्य मोऽपुरुषकार
पराक्रमः । पुरुषार्थहीनइत्यर्थः । 'अपारगिज्जमिनिरुद्ध' 'अधारणीयमिति कृत्वा=
अधारणीयमिदं शरीरमिति विचार्य, एकान्तमवकाममिति=एकान्तं-जनसंचाररहित
स्थान मार्गस्य प्रान्तभाग कथंचिद् गच्छति, अरुम्य करतलपरिगृहीत मस्तकेऽ-
ञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्-एव उदयमाणस्वरूपेण स्वगमनस्युक्त्यान् 'नमोऽस्त्युण जाव
सपत्ताण ' नमोऽस्तु स्वलु अर्हद्भयो भगवद्भयो यावत्-सिद्धिगतिनामयेय स्थान
સપ્રાપ્તેશ્ચ, "નમોઽસ્તુ મમ ધર્માપરિયસ્સ જાવ સપાવિઠકામસ્સ 'નમોઽસ્તુ

समय उस की आते दृष्ट गई । आंतों के दृष्टते ही वह दर्दुर गमन शक्ति
से रहित हो गया, मानसिक बल उस का जाता रहा-उत्साह उस का
इकदम उलझ भिन्न हो गया, पुष्पार्थ और पराक्रम मानों उस में हैं ही
नहीं ऐसा वह हो गया । जब उसने यह देखा कि यह शरीर अब टिक
नहीं सकना तब यह उड़ी कठिनताइसे जन संचाररहित एकान्त स्थान
में चला गया । वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर
और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार मन ही मन में कहा (नमो-
स्त्युण जाव सपत्ताण नमोस्त्युणं मम धर्मापरिणस्स जाव सपाविउ-
कामस्स पुर्वि पियण मण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण सुव्वं

દેહકાના આતરકા તૂટી ગયા આતરકા તૂટતા જ તે દેહકો હાલવા ચાલવામાં
અસમર્થ થઈ ગયો તેનું આત્મમણ નષ્ટ થઈ ગયું તેનો ઉત્સાહ મદ થઈ
ગયો તે પુષ્પાર્થ તેમજ પરાક્રમ રહિત થઈ ગયો બ્યારે તેને એમ લાગ્યું
કે હવે એ શરીર ટકતું મુશ્કેલ છે, ત્યારે તે બહુ જ પ્રયત્નથી એક તરફ બધા
માણસોની અવર જવર હતી નહિ ત્યાં જતો રહ્યો ત્યાં જઈને તેણે પોતાના
બે હાથોની અજળિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને મનમાં જ તેણે આ
પ્રમાણે કહ્યું—' નમોસ્ત્યુગ જાવ સપત્તાણ નમોસ્ત્યુગ મમ ધર્માપરિયસ્સ જાવ સપા
વિઠકામસ્સ પુર્વિ પિયણ મણ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતિણ સુવ્વં
इवाय पञ्चक्षामि जाव सव्व परिगह पञ्चक्षामि जाव जंवि,

સ્વલુ મમ ધર્માચાર્યાય શ્રમણાય ભગવતે મહાવીરાય યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાને
સપાપ્તુકામાય, પૂર્વમપિ=પૂર્વભવેડપિ ચ સ્વલુ મયા શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીર-
સ્યાન્તિકે સ્થૂલઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાર્યાત્, યાવત્-સ્થૂલઃ પરિગ્રહઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ;
યાવત્કરણાત્-સ્થૂલ* મૃપાવાદમ્થૂલાદત્તાદાન-સ્થૂલ-મૈથુન-પ્રત્યાખ્યાન યોધ્યમ્,
તદ્દાદાનીમપિ=અસ્મિન્ ભવેડપિ તસ્યૈવાન્તિકે સર્વ પ્રાણાતિપાતં પ્રત્યાખ્યામિ
યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ પ્રત્યાખ્યામિ યાવજ્જીવમ્, યદપિ ચ સ્વલુ ઇદ શરીરમિષ્ટં
કાન્ત યાવત્ મા સ્પૃશન્તુ રોગાતઙ્કા, એતદપિ શરીર સ્વલુ 'ચરિમેહિ' ચરમૈઃ=
અન્તિમૈઃ 'જસાસેહિ' જ-હ્વાસૈઃ=પ્રાણનિર્ગમૈ 'યોમિરામિતિકદુ' વ્યુત્સજામિતિ

પાણાદિવાય પચ્ચક્ખામિ જાવ સઽય પરિગ્ગહ પચ્ચક્ખામિ જાવ જીવં
સઽવ અસણ ૪ પચ્ચક્ખામિ જાવ જીવ જ પિ ય ણ ઇમ સરીર ઇદ્ધ કત
જાવ મા ફુસતુ ણ્ય પિ ણ ચરિમેહિં જસાસેહિં વોસિરામિ સ્તિ કદ્દુ
વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત દુષ્ઠ અર્હત ભગ-
વતો કો મેરા નમસ્કાર હો, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
કરને કી કામના વાલે મેરે ધર્માચાર્ય, શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો
મેરા નમસ્કાર હો । પૂર્વભવ મેં બી મેંને સ્થૂલ રૂપ સે પ્રાણાતિપાત કા
પરિત્યાગ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે સમીપ કિયા થા । હસી તરહ
સ્થૂલ મૃપાવાદ કા સ્થૂલ અદત્તાદાન કા સ્થૂલ મૈથુન કો, એવ સ્થૂલ
પરિગ્રહ કો બી પ્રત્યાખ્યાન કિયા થા । યે સ્થૂલ મૃપાવાદ આદિ યાવત્
શબ્દ સે યહો ગૃહીત દુષ્ઠ હૈં તો અવ હસ ભવ મેં બી ઉન્હી કે સમીપ
સર્વ પ્રાણિતિપાત યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ કા યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરતા
હૈં । તથા અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્ય રૂપ સે ચતુર્વિધ આહાર કા બી
જીવન પર્યન્ત પરિત્યાગ કરતા હૈં । તથા જો ઇષ્ટ, કાન્ત યહ મેરા શરીર

પચ્ચક્ખામિ જાવજીવ જ પિ ય ણ ઇમમરીર ઇદ્ધ કત જાવ મા ફુસતુ ણ્યપિ ણ
ચરિમેહિં વોસિરામિ સ્તિ કદ્દુ વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત
કરેલા અર્હત ભગવતને મેરા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને
મેળવવાની ઇચ્છા ડગાગ મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા
નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની
નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ ગીતે જ સ્થૂલ મૃપાવાદનું, સ્થૂલ
અદત્તાદાનનું, સ્થૂલ મૈથુનનું, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનું પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું
હતું સ્થૂલ મૃપાવાદ વગેરે આહી 'યાવત્' શબ્દ વડે સગૃહીત થયા છે ત્યારે
હવે હું આ ભવમાં પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત સર્વ પરિ-
ગ્રહનું મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરે છું તેમજ જે ઈષ્ટ, કાન્ત આ મારે શરીર
છે તેના માટે મારા મનમાં આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઈ પણ

કૃત્વા=શરીરં વ્યુત્પજતિ-પરિત્યજતિ, ભગવાનાહ-હે ગૌતમ ! તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ
 દર્દુરઃ-કાલમાસે કાલ કૃત્વા યાવત્-સૌધર્મે કલ્પે 'દદ્દુર વડિસણ વિમાણે' દર્દુરા
 યતસકે વિમાણે=દર્દુરદેવતયા 'ઉવવન્ને' ઉપપન્નઃ-ઉપપાત-જન્મ પ્રાપ્ત ઇત્યર્થ !

દર્દુરચરિતમુત્તવા-ભગવાન્ મહાવીરઃ સ્વામી માહ-'એવ સ્વલુ ગોયમા !'
 ઇત્યાદિ । હે ગૌતમ ! એવ સ્વલુ દર્દુરેણ સા દિવ્વા દેવદિં લંબા ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા
 સ્વયત્તીકૃતાઽભિસમન્નાગતા-સમ્યક્ સેવિતા । ગૌતમઃ પૂન્ઠતિ-'દદુરસ્સ'
 ઇત્યાદિ । દર્દુરસ્ય સ્વલુ દેવસ્ય હે મદન્ત ! કિયત્કાલ્પયન્ત મિયતિઃ પ્રજ્ઞતા ?

હૈં કિં જિસ કે પ્રતિ મેરી યદ્ધ ધારણા રહતી થી, કિં ઇસે કોઈં બી રોગા
 તક સ્પર્શ ન કરેં ઉસકો બી મેં અન્તિમ શ્વાસોં તક મમત્વ ભાવસે રહિત
 હોકર છોડતા હૂં । ઇસ પ્રકાર કરકે ઉસને સબ કા પરિત્યાગ કર
 દિયા । (તદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કલ્પે
 દદ્દુરવડિસણ વિમાણે ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવતાણ ઉવવન્ને-એવ
 સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્વા, દેવિટ્ઠી, લંબા, પત્તાઅભિસમન્ના
 ગયા) ઇસકે બાદ વહ દર્દુર કાલ અવસર કાલ કરકે યાવત્ સૌધર્મ
 કલ્પ મેં દર્દુરાવતસક વિમાન મેં ઉપપાત સભા મેં દર્દુર દેવતા કી
 પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયા । ઇસ પ્રકાર દર્દુર કા ચરિત્ર કહકર ભગવાન્
 મહાવીર સ્વામી ને ગૌતમ સે કહા-કિં હે ગૌતમ ! ઇસ પ્રકાર
 સે ઉસ દર્દુર દેવ ને વહ દિવ્ય દેવદિં ઉપાર્જિત કી હૈં, અપને આધીન
 કી હૈં ઓર ઉસે અપને ભોગકે યોગ્ય બનાઈ હૈં । અબ ગૌતમ શ્રમણ
 ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી સે પુનઃ પૂછતે હૈં કિં-'દદુરસ્સ ણ મતે ! દેવ
 સ્સ કેવદ્દયકાલ ઠિદ્દપ્પણત્તા ? ગોયમા ! વત્તારિ પલિઓવમાઈ ઠિદ્દ

રોગ અને આતક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્ત વગર થઇને છેલ્લી
 પણ સુધી ત્યજુ છું આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી
 (તદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કલ્પે દદ્દુરવડિસણ વિમાણે
 ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવતાણ, ઉવવન્ને એવ સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્વા,
 દેવિટ્ઠી, લંબા, પત્તા અભિસમન્નાગયા) ત્યારબાદ તે દેડકા કાળના મમથે કાળ
 કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતસક વિમાનમા ઉપપાત સભામા દર્દુર
 દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને
 ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર
 દેવે તે દિવ્યદેવધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગ
 વવાને લાયક બનાવી છે હવે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમ ફરી પૂછે
 છે કે (દદ્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવસ્ય કેવદ્દયકાલ ઠિદ્દપ્પણત્તા ? ગોયમા ! વત્તારિ

भगवानाह—हे गौतम ! ददुरस्य खलु देसस्य चत्वारि पल्लयोपमानि स्थितिः प्रज्ञा । पुनर्गौतमः पृच्छति—‘ सेण ’ इत्यादि स खलु हे भदन्त ! ददुरो देवन्तस्माद् देवलोकाद् आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चय त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपात-जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति—‘ गोयमा ’ इत्यादि । हे गौतम ! स खलु ददुरो देवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण देवलोकाच्छ्रुतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वास्यति सर्वदुःखानामन्त करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से ण भते । ददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चट्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! ददुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम ! चार पल्लयोपम की स्थिति उसकी वहा हुई है । पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह ददुर देव वहा से—उस देवलोक से—आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का—देव सन्धी शरीर का—परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उववज्जिहिइ) कहा पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया—(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, वुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह ददुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चक्कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्तकर वहाँ से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता से ण भते । ददुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चट्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! त्या ददुर देवनी डेटली स्थिति थछ छे ? प्रभु उछे छे छे छे गौतम ! तेनी आरपट्थोपम डेटली स्थिति थछ छे गौतम की तेओओनी पूछे छे छे छे भदन्त ! ते ददुर देव त्याथी—ते देवलोकाभाथी—आयुधना क्षय, लवना क्षय, तेभज स्थितिने क्षय थया भाद शरीरने—देवसभाधी शरीरने त्यजने क्या जगे ? (कहिं उववज्जिहिइ) क्या जन्म प्राप्त करे ? भगवाने आ प्रश्नने जवाब आ प्रमाणे आप्ये छे (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, वुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइय) हे गौतम ! ते ददुर देव आयुधना क्षय थया भाद, लवना क्षय थया भाद, अने स्थितिने क्षय थया भाद देवलोकाभाथी यनीने महाविदेह क्षेत्रमा जन्म प्राप्त कराने त्याथी ज सिद्ध थये विमल—केवल लोकालोक

કૃત્વા=શરીરં વ્યુત્સૃજતિ-પરિત્યજતિ, મગયાનાહ-હે ગૌતમ ! તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ
 દર્દુરઃ=કાલમાસે કાલ કૃત્વા યાવત્-સૌધર્મકલ્પે 'દર્દુર ઋદિસણ વિમાણે' દર્દુરા
 વતસકે વિમાણે=દર્દુરદેવતાયા 'ઉપવન્ને' ઉપવન્નઃ-ઉપપાત-જન્મ પ્રાપ્ત ઇત્યર્થ ।

દર્દુરચરિતમુત્ત્વા-મગયાન્ મહાવીરઃ સ્વામી માહ-'એવ સ્વલુ ગોયમા !'
 ઇત્યાદિ । હે ગૌતમ ! એવ સ્વલુ દર્દુરેણ સા દિવ્યા દેવદિદ્ધિ લેન્વા ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા
 સ્વયત્તીકૃતાઽભિસમવાગતા-સમ્યક્ સેવિતા । ગૌતમઃ પૃન્હતિ-'દર્દુરસ્સ'
 ઇત્યાદિ । દર્દુરસ્ય સ્વલુ દેવમ્ય હે મદન્ત ! ક્રિયત્કાલ્પયન્ત મ્યિતિઃ મજ્ઞાતા ?

હૈં કિં જિસ કે પ્રતિ મેરી યહ ધારણા રહતી થી, કિં ઇસે કોઈં ખી રોગા
 તક સ્પર્શ ન કરેં ઉસકો ખી મૈં અન્તિમ શ્વામીં તક મમત્વ ભાવસે રહિત
 હોકર છોડતા હૂં । હિસ પ્રકાર કરકે ઉસને સય કા પરિત્યાગ કર
 દિયા । (તપ્પણ સે દર્દુરે કાલમાસે કાલ કિન્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે
 દર્દુરઋદિસણ વિમાણે ઉવવાયસમાણ દર્દુરદેવત્તાણ ઉવવન્ને-એવ
 સ્વલુ ગોયમા ! દર્દુરેણ સા દિવ્યા, દેવિદ્ધી, લદ્દા, પત્તાઅભિસમમા
 ગયા) હિસકે ઘાદ વહ દર્દુર કાલ અવસર કાલ કરકે યાવત્ સૌધર્મ
 કલ્પ મે દર્દુરાવતસક વિમાન મે ઉપપાત સમા મેં દર્દુર દેવતા કી
 પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયા । હિસ પ્રકાર દર્દુર કા ચરિત્ર કહકર ભગવાન્
 મહાવીર સ્વામીં ને ગૌતમ સે કહા-કિં હે ગૌતમ ! હિસ પ્રકાર
 સે ઉસ દર્દુર દેવ ને વહ દિવ્ય દેવદિદ્ધિ ઉપાર્જિત કી હૈં, અપને આધીન
 કી હૈં ઔર ઉસે અપને ભોગકે યોગ્ય બનાઈ હૈં । અવ ગૌતમ શ્રમણ
 ભગવાન્ મહાવીર સ્વામીં સે પુનઃ પૂછતે હૈં કિં-'દર્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવ
 સ્સ કેવહ્યકાલ ઠિદ્ધિપણ્ણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ પલિઓવમાઈ ઠિદ્ધિ

રોગ અને આતક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્તર વગર થઇને છોડી
 પણ સુધી ત્યજુ છું આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી
 (તપ્પણ સે દર્દુરે કાલમાસે કાલ કિન્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે દર્દુરઋદિસણ વિમાણે
 ઉવવાયસમાણ દર્દુરદેવત્તાણ, ઉવવન્ને એવ સ્વલુ ગોયમા ! દર્દુરેણ સા દિવ્યા,
 દેવિદ્ધી, લદ્દા, પત્તા અભિસમન્નાગયા) ત્યારબાદ તે દેહકો કાળના સમયે કાળ
 કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતસક વિમાનમા ઉપપાત સમામા દર્દુર
 દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો આ રીતે દેહકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને
 ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર
 દેવે તે દિવ્યદેવર્ષિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગ
 વવાને લાયક બનાવી છે હવે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમ ફરી પૂછે
 છે કે (દર્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવસ્ય કેવહ્યકાલ ઠિદ્ધિ પણ્ણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ

भगवानाह—हे गौतम ! ददुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रवृत्ता । पुनर्गौतमः पृच्छति—‘सेण’ इत्यादि स खलु हे भदन्त ! ददुर्गे देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण च त्वत्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपात-जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति—‘गोयमा ।’ इत्यादि । हे गौतम ! स खलु ददुरो देवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे उपै जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्षयति परिनिर्वस्यति सर्वदुःखानामन्त करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से ण भते ! दददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चडत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदत ! ददुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम ! चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहा हुई है । पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह ददुर देव वहा से—उस देवलोक से—आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का—देव सबन्धी शरीर का—परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उव्वज्जिहिइ) कहाँ पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया—(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, वुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह ददुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चबकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्त कर वहाँ से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पल्लोवमाइ ठिई पण्णत्ता से ण भते ! दददुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चडत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! त्या ददुर देवनी केटली स्थिति थछ छे ? प्रभु जे छे ते छे गौतम ! तेनी आरपटथोपम केटली स्थिति थछ छे गौतम इगी तेओश्रीने पूछे ते छे हे भदन्त ! ते ददुर देव त्याथी—ते देवयोक्कमाथी—आयुष्यना क्षय, भवना क्षय, तेमज स्थितिना क्षय थया भाद शरीरने—देवस भधी शरीरने त्यल्लने कया जगे ? (कहिं उव्वज्जिहिइ) कया जन्म प्राप्त करेगे ? लगवाने आ प्रश्नने जवाब आ प्रमाणे आप्थे हे (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइय) हे गौतम ! ते ददुर देव आयुष्यना क्षय थया भाद, भवना क्षय थया भाद, अने स्थितिना क्षय थया भाद देवलोअथी अवीने भड्डा-विदेह क्षेत्रमा जन्म प्राप्त करीने त्याथी न सिद्ध थये विमल—केवल लोकरी

સુપ્રમાસ્વામી જમ્બૂસ્વામીન માહ-‘ એવ જલુ સમણે ’ ઇત્યાદિ, હે જમ્બુઃ !
 एवं खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य, अयम्=उक्त
 स्वरूपः, अर्थ प्रज्ञातः, ‘ इति ब्रवीमि ’-अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ॥ ८ ॥

इति श्री-विश्वनिर्मुपात-जगद्गुरुभ-प्रसिद्धाचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक-
 लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्मापक-रादिमानमर्दन-श्रीशाहच्छ
 प्रपत्तिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज
 गुरु-गालप्रज्ञाचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाल-
 प्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
 पिण्याख्याया व्याख्याया त्रयोदशमः ययन सपूर्णम् ॥ १३ ॥

હોગા, સમસ્ત કર્મકૃત વિકાર સે રહિત હોને કે કારણ સ્વસ્થ હોગા
 और इस प्रकार समस्त दुःखों का यह अन्त करने वाला हो जावेगा ।
 (एवं खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण तेरसमस्स नायज्झयण
 स्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) इस प्रकार जवू स्वामी को समझाकर
 अय गौतम उन से कहते हैं हे जवू । श्रमण भगवान् महावीरने इस
 तेरहवें ज्ञाताध्ययन का उक्त रूप मे अर्थ प्ररूपित किया है । मैंने जैसा
 उनके मुख से इसे सुना वैसा ही यह तुमसे कहा है । अपनी ओरसे
 मिलाकर इसमे कुछ नहीं कहा है ॥ सूत्र ८ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી વાસીલાલજી મહારાજ કૃત
 “ જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
 તેરહવા અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

ते सकल बीकाबीकने जलुनार थशे, समस्त (भधा) कर्माधी मुक्त थशे, समस्त
 કર્મકૃત વિકાર વગર થયા બદલ તે સ્વસ્થ થશે અને આ રીતે બધા હુ ખોનો
 તે અન્તકરનાર થઈ જશે (એવ જલુ જવૂ । સમણેન ભગવયા મહાવીરેણ તેરસમસ્સ
 નાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ઠે પણ્ણત્તે ત્તિ વેમિ) આ રીતે જખૂ સ્વામીને સમજાવીને
 ગૌતમ તેમને કહે છે કે હે જખૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા
 જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે એ જોવો તેમના મુખથી
 સાબળ્યો છે તેવો જ તમને કહ્યો છે એ આમા પોતાની મેળે જોયેરીને કઈજ
 કંઈ નથી ॥ સૂત્ર “ ૮ ” ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય વાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
 વ્યાખ્યાનુ' તે

